श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन-ग्रन्थ

(बाँठिया - समग्र)

प्रधान - सम्पादक

डा० रमेश चन्द्र शर्मा

महामन्त्री एवं सम्पादक

(बाँठिया समग्र खण्ड)

डा० गिर्राज किशोर अग्रवाल

सह-सम्पादक

डा० बालकृष्ण गुप्त *आचार्य भगवानदास शर्मा*

सम्पादक

(शोध खण्ड)

डा० ए० एल० श्री वास्तव

प्रधान-संयोजक

श्री तनसुखराज डागा

---- प्रकाशक ----

श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान - समारोह समिति

२७-ए, साकेत कालोनी, अलीगढ़ - २०२ ००१ (उ०प्र०)

आत्म निवेदन

समाज, साहित्य तथा संस्कृति की भूमियों को अपने ज्ञान, कर्म तथा श्रद्धा से प्रकाशमान करने वाले श्री हजारीमल बॉठिया ने जीवन को शक्ति, सौहार्द, सांस्कृतिक–समृद्धि तथा ऐतिहासिक–गौरव का जो सौन्दर्य प्रदान किया है वह पद्म–पत्रों पर सुशोभित–नीहार कणों की भॉति शीतलतादायक और परम आह्लादकारी है। विषम परिस्थितियों से निरन्तर संघर्ष करते हुए उन्होंने जो सफलता प्राप्त की है, वह गरम धातु को पीट–पीट कर बनाये गये तारों से नि:सृत संगीत की स्वर–लहरी के समान है।

दान देने से लक्ष्मी और सरस्वती दोनों ही में और भी वृद्धि होती है– ऐसी मानसिकता के जल से पवित्र श्री बॉठिया जी 'नगर श्रेष्ठ', 'उदारमना', विरल व्यक्तित्व के धनी, साहित्य–प्रेमी, नर–रत्न, लक्ष्मी–सरस्वती के संगम, ब्रज के गौरव, जन–जन के हितैषी, सेवा एवं मुखर पुरुषार्थ के प्रतीक, संस्कृति के अग्रदूत, अद्भुत व्यक्ति, जहांगीरी इन्साफ के प्रतीक, आदि न जाने कितने विशेषणो से अभिहित किये गये हैं, पर सचमुच वे "न इति", "न इति" है– वे इन्हीं तक सीमित नहीं है, इनसे भी कुछ अधिक हैं, बहुत अधिक हैं। बडी से बडी, अलंकृततम शब्दावली भी इनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को अपनी सीमा मे नहीं बॉध सकती।

श्री बॉठिया जी के अभिनन्दन की रूपरेखा गत वर्ष आरम्भ की गई थी। इस कार्यक्रम को वर्तमान रूप देने मे जिन स्वजनो, परिजनों, मित्रों, विद्वानों, आदि का सहयोग मिला है, उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन।

अभी इस ग्रंथ का प्रथम खण्ड (बॉठिया समग्र) ही प्रकाशित हो सका है। वह भेंट किया जा रहा है। दूसरे खण्ड मे विद्वानों के शोध–लेख प्रकाशित किये जायेंगे। आशा है, वह भी शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा।

अभिनन्दन–ग्रंथ के सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक भी धन्यवाद के पात्र है, जिन्होने अत्यन्त परिश्रम–पूर्वक इस कार्य मे पूर्ण सहयोग दिया है।

तनसुखराज डागा
संयोजक

प्रकाशक -
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति
27-ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ़ - 202 001 (उ०प्र०)

प्राप्ति स्थान -
● मंत्री
पंचाल शोध संस्थान
52/16, शक्कर पट्टी, कानपुर 208 001 (उ०प्र०)
फोन नं० 362901

● मंत्री
हाथरस शोध संस्थान
बाँठिया हाउस, हाथरस, 204 101 (उ०प्र०)
फोन नं० 30057

प्रथम संस्करण मूल्य - रु० 1100/-
सन् 1995

लेजर टाइप सेटिंग -
कम्प्यूटर आर्ट
14/62, सराय दीन दयाल, जी.टी. रोड
अलीगढ़ - 202 001 (उ०प्र०)
फोन नं० (0571) 27869

मुद्रक -
प्रभात प्रिंटिंग प्रेस
कृष्णा टोला, अलीगढ़ (उ०प्र०)

सम्पादकीय

श्री हजारीमल बाँठिया के व्यक्तित्व से उनके सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। उनमें कुछ ऐसा निरालापन है जो स्वतः ही एक अपनत्व की भावना जगाता है। बहुत छोटी उम्र से ही उन्होंने समाज, साहित्य तथा संस्कृति की सेवा के क्षेत्र में पदार्पण कर दिया था। तब से आज तक वे निरन्तर उस पथ पर आगे बढ़ते गये हैं जो कभी सकरा नहीं होता, अनवरत रूप से विस्तृत होता जाता है। और इसके विस्तार के साथ ही बाँठिया जी का व्यक्तित्व भी महान से महानतर होता गया है। जीवन के प्रत्येक अवसर ने समय की कसौटी पर कसकर उनकी आत्मा को निरन्तर प्रांजल और दिव्य ही किया है।

आशीर्वाद और प्रोत्साहन से सिंचित तथा परिश्रम से पुष्ट किशोर हजारीमल का व्यक्तित्व पादप दिन–प्रति–दिन पल्लवित, पुष्पित होता हुआ आज एक विशाल वृक्ष बन गया है। विशेष रूप से राजस्थानी साहित्य, पुरातत्व एवं संस्कृति के क्षेत्र में उन्होने जो कार्य स्वयं किये हैं अथवा इनमें संलग्न अन्य मनीषियों को सर्व–प्रकारेण जो सहायता प्रदान की है, उसकी सुगन्ध ने भारत ही नहीं इटली तक को सुवासित किया है।

सरस्वती के उपासको पर लक्ष्मी कदाचित ही अपनी कृपा करती है–श्री हजारीमल बाँठिया के संदर्भ में यह विचार निरर्थक हो गया है। लक्ष्मी और सरस्वती दोनो का ही उनपर समान रूप से वरद हस्त रहा है। मद्रास के बीसेन्ट नगर में सागर–तट पर एक मन्दिर है "महालक्ष्मी मन्दिर"। इसमें सरस्वती "विद्या–लक्ष्मी" के रूप में प्रतिष्ठित है। अतः मैं यह कहूँ कि विद्या और सम्पत्ति दोनों ही मनुष्य की "शोभा" और "श्री" हैं तो यह अन्यथा न होगा। ऐसा सयोग विरलों में ही मिलता है, और इस दृष्टि से बाँठिया जी भी "विरल व्यक्तित्व" वाले हैं।

ऐसे विरल व्यक्तित्व से सम्पन्न श्री हजारीमल जी बाँठिया का अभिनन्दन उनके गुणो का ही अभिनन्दन है। वह व्यक्ति जो लक्ष्मी सम्पन्न होकर भी निरभिमानी है, सौहार्द की साक्षात् प्रतिमा है, ज्ञान का मौन साधक है, कर्म से तप पूत है, धर्म से विनयशील श्रावक है, और मर्म से मानव–प्रेमी है।

बाँठिया जी के अभिनन्दन ग्रंथ की योजना कोई दस–बारह वर्ष पूर्व कुछ मित्रों ने बनाई थी, पर अनेक कारणों से वह क्रियान्वित नहीं हो पाई। जो सामग्री उस समय एकत्रित की गई थी वह भी सब स्मृति–शेष हो गई। गत वर्ष मार्च ६४ मे मेरा एक निजी कार्य से हाथरस जाना हुआ। पता चला कि बाँठिया जी आये है। मिलने पर मैंने अभिनन्दन वाली चर्चा छेड़ दी। उन्होंने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ दिन उपरान्त वे अलीगढ आये, मैंने पुन. चर्चा की और उनसे स्वीकृति ले ली। पूर्व प्रबंध–सम्पादक आचार्य भगवान दास शर्मा से बात हुई। शनै–शनै बाँठिया जी के मित्रों, शुभ चिन्तको, बन्धु–बान्धवों आदि के बारे में सूचनाये एकत्रित करके पत्राचार आरम्भ किया। सभी ओर से प्रोत्साहन मिला। बाँठिया जी के संग्रह से भी प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई। कार्य शनैः शनै आगे बढता गया और आज यह जिस रूप में भी है, आपके सम्मुख है। अच्छाइयां आपकी, त्रुटियाँ मेरी। संस्मरण कुछ अधिक हो गये हैं पर इन्हें कम करने से भेजने वालों की भावनाओं को आघात पहुँचता।

'वीरायतन' राजगृह मे श्री रिखबदास जी भंसाली (कार्यवाहक अध्यक्ष) तथा श्री तनसुखराज जी डागा (सयोजक) से २५ जनवरी १६६५ को विस्तृत चर्चा करके सम्मान–समारोह की रूपरेखा निर्धारित की गयी थी। उसी के आधार पर कार्य आगे बढता रहा। समय–समय पर प्रधान सम्पादक डॉ० रमेशचन्द शर्मा तथा शोध खण्ड के सम्पादक डॉ० ए० एल० श्री वास्तव से भी पत्राचार चलता रहा। प्रस्तुत खण्ड की सामग्री सकलन तथा योजना में डॉ० बालकृष्ण गुप्ता (कानपुर) तथा आचार्य भगवानदास शर्मा (हाथरस) से जो सहयोग मिला है, उसके लिए मैं उनके प्रति भी आभारी हूँ।

श्री हजारीमल जी बाँठिया ने जो महत्वपूर्ण कार्य किये हैं, उनके परिप्रेक्ष्य में श्री बाँठिया जी का अभिनन्दन करते हुए हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

डॉ० गिर्राजकिशोर अग्रवाल

□

राष्ट्रगौरव श्री नवलमल के. फिरोदिया (पूना) के
साथ श्री हजारीमल बांठिया (१५ अगस्त १९६२)।

संरक्षक

श्री विशम्भरनाथ पाण्डे
संसद सदस्य (राज्यसभा)
(भू० पू० राज्यपाल उड़ीसा)
१, लोदी एस्टेट, नई दिल्ली – ३

श्री बी. आर. कुम्भट
(भू० पू० आयकर आयुक्त)
अध्यक्ष राजस्थान एसोसिऐशन
राजस्थान भवन, कराची खाना, कानपुर – १
संयोजक एवं स्वागताध्यक्ष
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति

श्री कन्हैयालाल सेठिया
सुप्रसिद्ध राजस्थानी राष्ट्रकवि
सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३, मेंगोलेन, कलकत्ता – १

श्री नन्द किशोर जालान
अध्यक्ष अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन, कलकत्ता
४, सिनागॉग स्ट्रीट, कलकत्ता – १

उपाध्यक्ष

श्री हरखचन्द नाहटा

२१, आनन्द लोक, नई दिल्ली

धर्मनिष्ठ, जैन समाज मे अग्रणी, लगभग ५० धार्मिक–सामाजिक संस्थाओ से सम्बन्धित। अनेक संस्थाओं में उच्च पदाधिकारी। गल्ला, कपड़ा, किराना के प्रमुख व्यापारी, भू–सम्पत्ति व्यवसायी, फिल्म–फाइनेन्सर, अनेक पुस्तको के तथा शोध–निबन्ध लेखक।

उपाध्यक्ष

श्री किशन बोथरा

बीकानेर वूलन मिल्स

श्रीनाथ कटरा, भदोही (वाराणसी)

प्रतिष्ठित, व्यवसायी, तथा उद्योगपति

धार्मिक सामाजिक संस्थाओं मे सदैव तत्परता से सहयोग–प्रदाता। अनेक संस्थाओ मे पदाधिकारी।

ऊनी कालीन उद्योग मे विश्वप्रसिद्ध कालीन–निर्माता।

उपाध्यक्ष

श्री केशरी चन्द सेठिया

२३, चेल्लागल स्ट्रीट, शेनाय नगर, मद्रास – ३०

बीकानेर के धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं राजकीय कार्य क्षेत्रो मे अग्रणी सेठिया परिवार मे जन्म। बचपन से ही सामाजिक तथा धार्मिक लेखन में रुचि *क्रान्तिकारी विचार। अनेक धार्मिक, सामाजिक तथा* शैक्षिक संस्थाओं से जुडे हैं।

सामाजिक, धार्मिक विषयो पर कहानी – संग्रह भी प्रकाशित

उपाध्यक्ष

श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल

स्टेट बैंक आफ इण्डिया के समीप,

कायमगज (जि० फर्रुखाबाद)

कायमगज के प्रसिद्ध व्यवसायी, अनेक सामाजिक, शैक्षिक तथा धार्मिक संस्थाओं से सम्बद्ध। तम्बाकू निर्माता ऐसोसियेशन कायमगंज के अध्यक्ष। पंचाल शोध–संस्थान तथा काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद के कार्यों मे सक्रिय सहयोग।

शिक्षा–प्रेमी, सी० पी० विद्या निकेतन कायमगंज के संस्थापक–अध्यक्ष।

कर्त्तव्य और निष्ठा के प्रतिमान

श्री नवलमल के० फिरोदिया

३२, गनेश खिण्ड रोड, पूना (महाराष्ट्र)

धीवादी चिन्तक, साहित्य एवं संस्कृति के उन्नायक, समाज हित न मणि, सुप्रसिद्ध उद्योगपति, अध्यक्ष 'वीरायतन' राजगृह (नालंदा)

अध्यक्ष

दास भंसाली

लोहिया लेन, कलकत्ता

के प्रमुख व्यवसायी

समाजसेवा में सक्रिय, देश की मूर्धन्य जैन धार्मिक संस्थाओ, ओं, चिकित्सालयों आदि में तन, मन, धन, से सक्रिय सहयोग।

प्रधान संयोजक

श्री तनसुखराज डागा **F.C.A.**

२, आशुतोष मुखर्जी मार्ग, कलकत्ता

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाज सेवी, देश की अनेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सेवाभावी संस्थाओं में उत्तरदायित्व वहन करने वाले पदाधिकारी, जैन समाज के क्रिया–कलापो मे विशिष्ठ योगदान। महामंत्री वीरायतन राजगृह, (नालंदा)

महामंत्री

डा० गिर्राज किशोर अग्रवाल

२७–ए, साकेत कालोनी, अलीगढ

मंत्री, हाथरस शोध संस्थान, हाथरस

सचिव, साकेत सहकारी आवास समिति अलीगढ

समाज सेवा तथा सांस्कृतिक गतिविधियो से सक्रिय रुप से जुडे हुए

सह-संयोजक

श्रीमती मंजु अग्रवाल

१२६, व्यू फोर्थ, एडिनबर्ग (यू०के०)

बाल-शिक्षा के क्षेत्र से जीवन आरम्भ।

सामाजिक सेवा कार्यो मे रुचि

सह-संयोजक

श्री रिखब बिरानी

२४/३८, बिरहाना रोड, कानपुर

सह संयोजक एव स्वागत मन्त्री

जैन समाज की धार्मिक सामाजिक संस्थाओं में तन, मन, धन,

से सक्रिय सहयोग

नगर के प्रतिष्ठित समाज-सेवी व्यवसायी।

राजस्थान एसोसियेशन कानपुर के सहमंत्री।
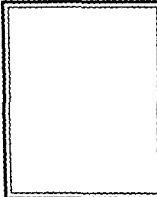
सह-संयोजक

श्री गजराज बाँठिया (सी. ए.)

४०,ए. न्यू हनुमान लेन, कालबा देवी रोड

बम्बई – ४००००२

सुशिक्षित, समाज सेवी, छत्री-उद्योग मे अग्रणी, मिलनसार, हंसमुख।

सह-संयोजक

श्री विनय ओसवाल, हाथरस

प्रसिद्ध समाज-सेवी, पत्रकार,

अनेक धार्मिक-सामाजिक संस्थाओ से सम्बद्ध,

अलीगढ जनपद में प्रतिष्ठित उद्योगपति,

अध्यक्ष, श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति,

अलीगढ जनपद शाखा

उपाध्यक्ष

श्री रिखव चन्द जैन (T.T.)

चेयरमैन – तिरुपति टैक्सनिट लि०
८७९, ईस्ट पार्क रोड, नई दिल्ली . ११०००५
समाज सेवी, होजरी उद्योग मे भारत में अग्रणी,
अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओ के संस्थापक एवं अध्यक्ष

सह-संयोजक

श्री ललित नाहटा

२१, आनन्द लोक, नई दिल्ली – ४६
बीकानेर के प्रसिद्ध नाहटा परिवार में जन्म। प्रख्यात समाज सेवी तथा व्यवसायी। व्यापारिक क्षेत्र मे उपलब्धियों के फलस्वरूप १९८४ – ८५ में "जैन मिलन व्यापार उद्योग रत्न" एवार्ड से विभूषित। अनेक कम्पनियों के डाइरेक्टर, ट्रस्टी, फिल्म–फाइनेन्सर, धर्मध्यान, सत्संग, तथा तीर्थाटन में विशेष रुचि।

सह-संयोजक

श्री सूरजमल पुगलिया

प्रबन्धक, यूको बैंक, नागौर (राजस्थान)
अनेक जैन संस्थाओं के मंत्री, कोषाध्यक्ष एव न्यासी। धार्मिक संस्थाओं की स्थापना, विकास तथा उत्सवों आदि मे तन, मन, धन से सहयोग। यूको बैंक द्वारा सम्मानित, श्रमण साहित्य संस्थान दिल्ली द्वारा उत्कृष्ट सेवाओ के लिये १९८८ में तत्कालीन वित्तमंत्री श्री नाराणदत्त तिवारी द्वारा सम्मानित।

सह-संयोजक

श्री मानमल बाँठिया

१०१, बाहुबली अपार्टमेन्ट, २० महावीर नगर, इन्दौर (म०प्र०)
नागपुर निवासी प्रमुख समाज सेवी श्री हजारीमल बाँठिया के पुत्र। बैंक के अतिरिक्त ४० वर्ष तक शासकीय सेवा में उच्च पदाधिकारी। कर्मठता, ईमानदारी एवं धर्म निष्ठा के हेतु प्रख्यात। बैतूल एवं राजगढ आदि पिछडे क्षेत्रों मे भी कार्य। धार्मिक तथा सामाजिक सेवा–कार्यों में सलग्न, पद और प्रसिद्धि से निस्पृह।

प्रमुख संरक्षक

श्री भसाली परिवार – कलकत्ता, बीकानेर
श्री डागा परिवार – कलकत्ता, बीकानेर
श्री नाहटा परिवार – दिल्ली, बीकानेर
श्री बॉठिया परिवार – हाथरस, कानपुर

विशिष्ठ संरक्षक

श्री चन्द्र प्रकाश जी अग्रवाल
कायमगज

श्री नेमचन्द जी खजान्ची
कोबे (जापान)
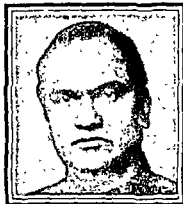
श्री रिखब चन्द जी जैन
नई दिल्ली

संरक्षक

१. स्व० सेठ मानक चन्द जी बेताला, मदरास
२. स्व० सेठ बागमल नाहर परिवार, देशनोक, बीकानेर
३. सेठ जेठमल केशरीचन्द सेठिया, मदरास
४. सेठ डालचन्द अशोक कुमार, श्री श्रीमाल, बीकानेर
५ सेठ भैरुदान विमलचन्द नाहटा, बीकानेर
६. सेठ स्व० नेमिचन्द जी कांकरिया परिवार, ब्यावर
७ सेठ कँवर लाल जी सुराना, आगरा
८ सेठ पूनमचन्द अजित कुमार नाहटा, दिल्ली
६. सेठ कुन्दनमल क्रान्तिकुमार पारीख, दिल्ली
१०. श्रीमती शान्तिदेवी उमेशचन्द ओसवाल, कानपुर
११. सेठ अगरचन्द विजयचन्द नाहटा, बीकानेर
१२. श्री हेमचन्द शंखवाल, दिल्ली
१३. सेठ रिखबचन्द गजराज बॉठिया, बम्बई
१४. सेठ फतहचन्द हँसमुखलाल बॉठिया, बम्बई
१५ सेठ ज्ञानमल शिखरचन्द मिन्नी, कलकत्ता

सम्पादक मण्डल (बाँठिया – समग्र खण्ड)

प्रधान सम्पादक -

डा० रमेश चन्द्र शर्मा

प्रोफेसर कला व संग्रहालय शास्त्र व निदेशक,
भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्व–विद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०)
(पूर्व निदेशक मथुरा संग्रहालय, लखनऊ संग्रहालय तथा
इण्डियन म्यूज़ियम कलकत्ता
अध्यक्ष – म्यूज़ियम एसोसियेशन आफ इण्डिया
सभापति – वृन्दावन शोध संस्थान एवं वृज कला केन्द्र मथुरा
को–आर्डीनेटर इन्दिरागाँधी नेशनल सेण्टर फार आर्ट्स, वाराणसी
कला तथा पुरातत्व विषयक अनेक पुस्तको के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति–प्राप्ति लेखक

सम्पादक -

डा० गिर्राज किशोर अग्रवाल

२७–ए, साकेत कालोनी, अलीगढ (२०२००१) उ०प्र०
० कवि ० लेखक ० चित्रकार ० शिक्षक
पूर्व अधिष्ठाता – ललित कला संकाय, आगरा विश्व–विद्यालय आगरा
पूर्व संयोजक – चित्रकला शोध–समिति तथा चित्रकला अध्ययन–समिति,
आगरा विश्व–विद्यालय, आगरा
पूर्व अध्यक्ष – चित्रकला विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ
महामंत्री – श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति

सह - सम्पादक

डा० बालकृष्ण गुप्त, कानपुर

शिक्षक तथा साहित्य सेवी
संयोजक एवं स्थानीय सम्पादक, श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन–ग्रन्थ समिति
तथा श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति।
संयोजक – हिन्दी साहित्य सम्मेलन कानपुर अधिवेशन १९८९ ई०

सह - सम्पादक

आचार्य भगवानदास शर्मा

साहित्यरत्न
निर्भय नगर, हाथरस – २०४१०१ उ०प्र०
लेखक एवं पत्रकार एवं आकाशवाणी वार्ताकार
सहमंत्री – हाथरस शोध संस्थान, हाथरस

अनुक्रम

शुभकामनाएँ

१ माननीय श्री खुर्शीद आलम खाँ, राज्यपाल, कर्नाटक
२. माननीय श्री मोतीलाल वोरा, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश
३ श्री अटल बिहारी बाजपेयी, नेता प्रतिपक्ष, लोकसभा
४ श्री नरेन्द्र नाहटा, मंत्री जनशक्ति नियोजन, म० प्र०
५ श्री बलरामसिंह यादव, खान राज्यमत्री भारत सरकार
६ श्री बलराम जाखड, कृषिमंत्री, भारत सरकार
७ श्री भैरोंसिंह शेखावत, मुख्यमंत्री, राजस्थान
८. श्री मुरली मनोहर जोशी, संसद सदस्य, राज्यसभा
६ आचार्य चन्दना जी, वीरायतन, राजगृह (बिहार)
१० श्री चन्द्रस्वामी जी महाराज, नई दिल्ली
११ गणि मणिप्रभ सागर जी, उज्जैन (म० प्र०)
१२ गणि महिमाप्रभ सागर जी, पाली (राजस्थान)
१३ श्री नरेश चन्द्र चतुर्वेदी, कानपुर
१४. आचार्य पद्म सागर सूरि, दिल्ली
१५ श्री विशम्भर नाथ पाण्डे, ससद सदस्य, राज्यसभा
१६ श्री नन्दकिशोर जालान, कलकत्ता
१७ श्री चम्पालाल डागा, बीकानेर (राजस्थान)
१८ मुनि श्री रूपचन्द्र जी महाराज, नई दिल्ली
१६ गुरुदेव श्री चित्रभानु जी, न्यूयार्क
२०. डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा, वाराणसी (उ० प्र०)
२१ श्री जयानन्द मुनि, जयपुर (राजस्थान)
२२ श्री बागमल बॉठिया, रामपुरा (कोटा)
२३ श्री अब्दुल वहीद कमल, बीकानेर (राजस्थान)
२४. श्री कष्णचन्द्र बेरी, वाराणसी
२५ श्री नेमचन्द खजांची, कोबे (जापान)
२६ श्री प्रेमचन्द अग्रवाल, हाथरस
२७. श्री मुरली मोहन तिवारी, कानपुर
२८ श्री उमराव सिंह गर्ग, दिल्ली
२६ श्री एस० के सेन०, कानपुर
३० श्री एस० एम० सेनगुप्ता, कानपुर
३१ श्री टी० दास० गुप्ता, कानपुर
३२ श्री जे० एस० झवेरी, दिल्ली
३३ श्री शिखरचन्द मिन्नी, कलकत्ता
३४ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत, जयपुर
३५ डॉ० आचार्य नलिनीश त्रिगुणायत, फर्रुखाबाद
३६ डॉ० वीरेन्द्र तरुण, हाथरस
३७ आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी, हाथरस
३८ श्री कुमुदेश बाजपेयी, कानपुर
३६ श्री गिर्राज किशोर नीरव, हाथरस
४० डॉ० जगदीश लवानिया, हाथरस
४१ श्री हरि शर्मा उस्ताद, हाथरस
४२ डॉ० मनोहर शर्मा,
४३ श्री अरुण नागर, उरई
४४ अलका रामपुरिया, भीलवाडा
४५ जिन उदयसागर सूरि, सेलाना, रतलाम
४६ श्री डालचन्द जैन, सागर
४७ श्रीमती रत्नप्रभा सखवाल, दिल्ली
४८ श्री रिखबचन्द जैन, दिल्ली
४६ श्री प्रकाश सी कानूनगो, बम्बई
५० श्रीमती विजय नाहर, बम्बई
५१ श्री हनुमान सरावगी, रॉची
५२ श्रीमती ललिता मोदी, वाराणसी
५३ श्री मागीलाल बोथरा, कानपुर
५४ Shri N.K. Firodia, Pune
५५ श्री हरखचन्द नाहटा, दिल्ली
५६ श्री राजेन्द्र कुमार श्रीमाल, जयपुर
५७ श्री घेवरचन्द जैन
५८ डॉ० राकेश तिवारी, लखनऊ
५६ प्रो० रमेश तिवारी, विराम
६० श्री अरुण नागर, उरई
६१ श्री वीरेश कात्यायन, कानपुर
६२ डॉ० जयन्ती भट्टाचार्य, वाराणसी
६३ डॉ० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी, वाराणसी
६४ श्री विनोद कुमार जैन, महोबा
६५ श्री अशोक गौड, हाथरस
६६ श्री कमलसिंह रामपुरिया, कलकत्ता
६७ श्री जगन्नाथ मदनलाल, इलाहाबाद
६८ श्री बसन्तीलाल जैन, नीमच
६६ Shri K.L. Sethia, Calcutta
७० Shri Deep Chand Nahta, Calcutta
७१ Shri Mahendra Bumar
७२ Shri Sanwal Ram & C.

संस्मरण

श्री हजारीमल बाँठिया - पत्रों के प्रकाश में

विविध रचनाएँ

बाल साहित्य

पुरातत्वाचार्य पद्मश्री-

बाँठिया फाउन्डेशन

व्यक्ति एक : संस्थाएँ अनेक पृष्ठ 1-17

श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा आयोजित विशिष्ट समारोह

श्री बाँठिया - रचित साहित्य

धार्मिक साहित्य पृष्ठ

पूर्वज एवं महापुरुष

श्री हजारीमल जी बाँठिया

श्री हजारीमल बाँठिया का संक्षिप्त परिचय

नाम– श्री हजारीमल बाँठिया
दादा– श्री स्व० किसनचन्द जी बाँठिया
पिता– श्री स्व० फूलचन्द जी बाँठिया
गोद पिता– श्री स्व० बुलाकीचन्द जी बाँठिया
माता– श्रीमती मगनबाई बाँठिया
गोद माता– श्रीमती सुन्दरबाई बाँठिया
(स्व० साध्वी चन्द्रश्री जी महाराज)
बहनें– श्रीमती जमनाबाई रतनलाल डागा
श्रीमती मीनाबाई रतनचन्द चोपडा
जन्मस्थान– बीकानेर (राजस्थान)
जन्मतिथि– ता० २४ सितम्बर १९२३ ई०
(वि० स० १९८१–आसौजबदी १०)
धर्मपत्नी– श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया
विवाह– शनिवार ता० ३० नवम्बर १९४० ई०
सतान– चार पुत्र एव दो पुत्रियाँ
१ श्री कातीलाल जैन, एम ए एम काम
२ श्री राजकुमार बाँठिया, इन्जीनियर
३ श्री प्रकाशचन्द बाँठिया, बी–एस सी
४ श्री सुरेन्द्र कुमार बाँठिया, बी ए.
५ श्रीमती विजया बच्छराज नाहर, एम ए.
६ श्रीमती रेणु सुरेशकुमार रैदानी, एम ए
सतति– चार पौत्र–पाँच पौत्रियाँ
तीन दौहित्र–एक दौहित्री
(सिद्धार्थ, श्रेणिक, रजत, धर्मेन्द्र)
शिक्षा हाईस्कूल सन् १९४२ ई०, इण्टर अनुत्तीर्ण
व्यवसाय– सन् १९४५ ई० से हाथरस मे मामा के यहा नौकरी से प्रारम्भ
सन् १९५६ से निजी व्यवसाय, आढत, दालमिल आदि
वर्तमान मे– गल्ला व तेल के उत्तर भारत मे प्रमुख व्यापारी, आढती, मिल मालिक
प्रतिष्ठान– हाथरस कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई

साहित्यिक कार्य

१– विविध विषयों पर अनेक शोधपूर्ण लेखो का विविध पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशन। अपने प्रकार की भारत मे प्रथम पुस्तक 'आल इण्डिया ट्रेड डायरेक्टरी' का लेखन व संपादन सन् १९४७ ई०।

उन्होंने कहा था................

"भाई हजारीलाल (हजारीमल बाँठिया) होनहार है और उसको खूब तैयार होना चाहिये - यही हमारी शुभकामना है।"

-- पुरातत्वाचार्य मुनि श्री जिनविजय जी

२० मई, १९४१

"मैं चाहता हूँ तुम्हारी प्रतिभा हजारी नाम के अनुसार हजारों लेख लिखने व हजारों विषयों में चमक उठे - बस यही।"

-- साहित्य वाचस्पति श्री अगरचन्द नाहटा

२ जून, १९४०

"श्री बाँठिया जी जैसे यशस्वी कृतिकार और समाजसेवी राष्ट्रीय आदर्शों और उसकी गरिमामय परम्पराओ के मूर्त्त प्रतीक हैं।"

-- बलराम जाखड़ (कृषि मंत्री, भारत सरकार)

२८ अप्रैल, १९९५

"श्री बाँठिया जी स्वयं एक संस्था हैं। धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने बहुत कुछ कार्य किया है।"

-- आचार्य पद्म सागर सूरि

२ अप्रैल, १९९५

"श्री बाँठिया जी कर्म-पुरुष हैं।"

-- गणि मणिप्रभसागर

"महान उद्देश्यों के लिये समर्पित जीवन का नाम है श्री हजारीमल बाँठिया।"

-- आचार्य चन्दना

"श्री बाँठिया जी के साथ रहने से अभ्यास होता है कि हम किसी फलवान वृक्ष के नीचे यात्रायित हैं जो फल-फूल और छाया देता है.......वे मेरे प्रति आस्थाशील हैं, इसे मैं अपनी उपलब्धि मानता हूँ, क्योंकि उनकी श्रद्धा मुझे सदैव ऊर्जा प्रदान करती है।"

-- श्री चन्द्र स्वामी जी महाराज

२६ जून, १९९५

"बाँठिया जी शिक्षा, संस्कृति व समाज-सेवा के क्षेत्र मे दीप-स्तम्भ की भाँति समादृत हैं।"

-- डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा (निदेशक-भारत कलाभवन, काशी हि० वि० वि०)

७ जुलाई, १९९५

"आप (हजारीमल बाँठिया) स्वयं एक महान समाज-सेवक हैं। अतः आपका भी आदर होना परमावश्यक है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आपके सम्मान में एक महत्वपूर्ण अभिनन्दन-ग्रंथ प्रकाशित हो, जिससे आपके जीवन से प्रेरणा पाकर आम मानव को भी लाभ मिल सके।"

-- डॉ० वृजेन्द्र नाथ शर्मा (कीपर राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

१३ अक्टूबर, १९७८

● ● ● ●

के निर्माण, पुल के निर्माण, पानी– वितरण योजना, सहकारी क्षेत्र में सूत मिल का निर्माण, भारतीय धर्मशाला निगम द्वारा धर्मशाला आदि के निर्माण मे विशेष प्रयास किया। "काम्पिल्य कल्प" अत्यन्त शोधपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन कराया।

३– सन् १९४७ में कनारा बैंक हाथरस की शाखा की स्थापना में सहयोग तथा सन् १९७५ में इण्डियन बैंक (राष्ट्रीयकृत बैंक) की कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, हाथरस, बीकानेर शाखाओं की स्थापना में विशेष सहयोग। बैंक के चेयरमेन श्री जी० लक्ष्मी नारायण ने विशेष आभार माना।

शैक्षणिक एवं साहित्यिक कार्य

१– तिलक शिशु मन्दिर (मांटेसरी) हाथरस की स्थापना सन् १९५८ ई०।

२– श्री सी० एल० आर० एन० सेकसरिया उ० मा० विद्यालय, हाथरस की प्रबन्ध समिति के सदस्य।

३– श्रीमती सुरजोबाई उ० मा० बालिका विद्यालय हाथरस के संस्थापक अध्यक्ष।

४– पी० सी० बागला कालेज, हाथरस मे स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ करवाने मे प्राचार्य श्री के० एल० सिंघल को विशेष सहयोग।

५– "काका हाथरसी" हीरक जयन्ती पर ब्रजभाषी क्षेत्र के विकास के लिए आकाशवाणी केन्द्र, मथुरा की स्थापना में विशेष प्रयास।

६– श्रेष्ठ राजस्थानी साहित्य एव भाषा के विकास के लिए "सेठ फूलचन्द बाँठिया पुरस्कार", प्रतिवर्ष विद्वानो को राजस्थानी ज्ञान–पीठ संस्थान, बीकानेर के माध्यम से। ब्रज–शोध–संस्थान, हाथरस के माध्यम से ब्रजभाषा पुरस्कार भी प्रतिवर्ष।

७– कानपुर में "पंचाल शोध संस्थान" की स्थापना में विशेष सहयोग, संस्थापक सदस्य एवं कार्यवाहक अध्यक्ष। "पंचाल" जर्नल के प्रबन्ध संपादक।

८– सन् १९८४ ई० मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का ४६वाँ वार्षिक अधिवेशन आयोजित कराया जिसमे स्वागत मंत्री का दायित्व निभाया।

जातीय कार्य

१– सन् १९६४ ई० में उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन तृतीय अधिवेशन हाथरस के संयोजक एवं स्वागत मत्री। इस अधिवेशन के सभापति थे उद्योगपति श्री सीताराम जैपुरिया (तत्कालीन राज्य सभा सदस्य), मारवाडी शिक्षा कोष की स्थापना मे सहयोग।

२– अ० भा० मा० सम्मेलन कलकत्ता की महासमिति के सदस्य, सम्मेलन के प्रति गत ४४ वर्षो से लगाव। वर्तमान मे उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन के उपाध्यक्ष सन् १९८४ में चुने गये। कई वर्षों तक प्रधान मंत्री एव कोषाध्यक्ष रहे।

३– बाँठिया फाउन्डेशन के संस्थापक अध्यक्ष, बाँठिया गोत्र के इतिहास का संकलन एव प्रकाशन।

४– भारतीय जनसंघ हाथरस के १० वर्ष तक अध्यक्ष। सन् १९४७ मे प्रथम बार हाथरस में जनसंघ का विधायक चुने जाने मे अध्यक्ष के रूप मे प्रमुख सहयोग और श्रेय। कु० श्री रामशरणसिंह विजयी हुए। माननीय श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्री नानाजी देशमुख आदि नेताओं से प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

५– सन् १९७१ ई० के बाद से राजनीति से सन्यास, उसके पश्चात् सामाजिक, साहित्यिक, एवं धार्मिक कार्यों के प्रति समर्पित।

६– सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता–प्रेम–आदर तथा "कपिल महोत्सव" सन् १९७८ ई० मे सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन। सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्यो से गहन सम्पर्क।

७– उत्तर प्रदेश के जैन तीर्थो (कल्याणक भूमि) के जीर्णोद्धार एव विकास में विशेष अभिरुचि।

२– भारतीय मित्र परिषद् की स्थापना सन् १६३६ ई०, बीकानेर में। सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार की अध्यक्षता में प्रथम अधिवेशन सन् १६४३ ई०।

३– ब्रज–कला केन्द्र, हाथरस के संस्थापक सदस्य एवं प्रथम उपाध्यक्ष। ब्रज–कला केन्द की केन्द्रीय समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष।

४– "काका हाथरसी" हीरक जयन्ती के संयोजक एवं स्वागत मंत्री सन् १६६४ ई० में। इस समारोह का उद्‌घाटन किया तत्कालीन सूचना प्रसारण मंत्री श्री राजबहादुर ने, अध्यक्षता की स्वनाम धन्य कवि श्री हरिवंशराय बच्चन ने। आशीर्वाद सुप्रसिद्ध हास्यकवि श्री गोपाल प्रसाद व्यास द्वारा।

५– श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशक एवं संयोजक। प्रथम भाग का विमोचन सन् १६७६ में विश्व प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं वैज्ञानिक डा० दौलतसिंह कोठारी द्वारा। दूसरे भाग का विमोचन सन् १६७८ में श्रीमती इंदिरा गाधी (ता० २१–४–७८) द्वारा।

६– चन्द्रश्री प्रकाशन ग्रंथमाला से कई ग्रंथों का प्रकाशन।

पुरातत्व सम्बन्धी कार्य

१– इतालवी विद्वान डा० एल० पी० तैस्सीतोरी के समाधि स्थल की खोज और सन् १५४६ ई० में उसका निर्माण जिसका उद्‌घाटन इतालवी राजदूत द्वारा ता० २२–११–५६ ई० को। समारोह के अध्यक्ष थे सुप्रसिद्ध भाषाविद् डा० स्व० श्री सुनीतिकुमार चटर्जी कलकत्ता। कानपुर तुलसी उपवन मोती झील मे डा० एल० पी० तैस्सीतोरी की मूर्ति स्थापित कराई सन् १६८५ मे।

२– कंपिल (फर्रुखाबाद) क्षेत्र में अनेक पुरातत्व के महत्व की मूर्तियों की खोज एवं "पंचाल पुरातत्व–संग्रहालय" की स्थापना। "पंचाल जनपद" के विकास के लिए काम्पिल्य–महोत्साव का संयोजन सन् १६७८ ई० मे, जिसका उद्‌घाटन किया तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव ने। पुरातत्व संग्रहालय का उद्‌घाटन किया प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी सागर ने। इस आयोजन के संरक्षक थे श्री रमेश नारायण त्रिवेदी आई० ए० एस० तत्कालीन जिलाधिकारी फर्रुखाबाद सन् १६८४ ई० मे पंचाल–पुरातत्व–सेमिनार के संयोजक एवं संस्थापक सदस्य "पंचाल–शोध–संस्थान" कानपुर। पंचाल शोध संस्थान के कार्यवाहक अध्यक्ष, अब तक इस संस्थान के नौ अधिवेशन हो चुके हैं। पंचाल शोध पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक।

३– सन् १६६४ में हाथरस शोध–संस्थान की स्थापना।

सामाजिक कार्य

१– सन् १६४७ ई० मे नगरपालिका हाथरस के सदस्य निर्वाचित, पालिका के जागरुक सदस्य के रूप में कार्य किया और उपाध्यक्ष के रूप में छैः माह तक कार्यवाहक अध्यक्ष का कार्य किया। हाथरस के शमशानगृह तथा सडको का सुधार, चौराहों का सुन्दरीकरण। हाथरस में दादावाडी नगर व दादावाडी रोड की स्थापना। उस वक्त नगर पालिका के अध्यक्ष थे रोव रामबाबूलाल (बिजली मिल वाले) हाथरस।

२– कंपिल (फर्रुखाबाद) क्षेत्र में सार्वजनिक अस्पताल का निर्माण, धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया द्वारा, ता० २२ मार्च १६७५ ई० को शिलान्यास। जिसका उद्‌घाटन किया तत्कालीन राज्यपाल डा० एम० चेन्नारेडी उ० प्र० ने ता० २२ सितम्बर १६७६ ई०। जैन श्वेताम्बर मंदिर व धर्मशाला का जीर्णोद्धार व विकास काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद् के माध्यम से। संयोजक एव मंत्री के नाते कंपिल गाँव को सरकार से टाउन–एरिया व पर्यटन केन्द्र घोषित कराया। कंपिल के विकास में –सड़कों

बाहर भीतर सर्वतोभद्र

बाहर भीतर सर्वतोभद्रः शुभ
भाषा - साहित्य - संस्कृति एवं शोध के संगम-पुरुष
धर्मपरायण - समाज नारायण-सेवोपासक
उपाध्यक्ष अ० भा० श्री जैन श्वे० खरतरगच्छ महासंघ
उदारमना उद्योगपति - श्री हजारीमल बाँठिया

ओंकार श्री,
पूर्व सचिव, राजस्थानी भाषा - संस्कृति अकादमी,
बीकानेर

अनकहे सुखो–दु:खों से जुडे– रमते जूझते– राजस्थान के जीवट–धनी प्रवासी उद्यमियो में, जनसेवा–धनियो में एक नाम चेतनावंत– श्री हजारीमल बाँठिया का है। बीकानेर के मूलवासी श्री हजारीमल बाँठिया का जन्म २४ सितम्बर १९२४ को हुआ। अल्पायु मे ही इन्हें अकेला छोड इनके पिता श्री फूलचन्द बाँठिया ब्रह्मलीन हो गये। पितृ वियोग के साथ ही श्री हजारीमल बाँठिया का जीवन कथा की– 'कष्ट से इष्ट की ओर' का चुनौती भरा अध्याय प्रारम्भ होता है। यह अध्याय समय ने लिखा है। समय से बडा न कोई रचनाकार है, न कोई उपचारक– तारक।

पितृ–विहीन श्री हजारीमल बाँठिया से सांवरिया रूठा नहीं। यह प्रभू–कृपा ही का प्रताप कहिये कि इन्हें माँ मिली श्रीमती मगनबाई सरीखी, जो दृढ रही अपने साधना पथ पर, उसकी करुणा, उसकी सेवासु भावना तथा अतरात्मा की सात्विक साहसिकता ने बालक 'हजारी' को जीवन और जगत में, जसरूपी हजारे के फूल की तरह हंसमुखी सदासुखी श्रावक शक्ति दी।

हिम्मते मरदां मददे खुदा

माँ देती है सत्य पथ पर चलने की प्रेरणा। माँ होती है एक जीवत संस्कार–पीठ। भाग्यवान होता है सुपुत्र किसी माँ का तो श्री हजारीमल बाँठिया सरीखा कि जो मातृ– शक्ति सम्पन्न होकर जीवन को अपने लिए ही नहीं औरो के लिए जीने के लायक बना देता है, एक प्रेरक जीवन–धनी के रूप में। श्री हजारीमल बाँठिया के जीवन–सूत्र साफ–साफ सुलझे हुए हैं। इसीलिए ये आज एक सुलझे हुए व्यवसायी हैं, मौन निस्पृह स्वाध्यायी– अध्यवसायी। हिम्मत और हौसले का पर्याय है श्री हजारीमल बाँठिया। कारण, एक राजस्थानी जन–कथन गूजंता है–"कायरों का साथ माताजी नहीं देती।"

जीवट धनी श्री हजारीमल बाँठिया, डिग्रीधारी नहीं हैं, महाकवि रवीन्द्र की तरह इन्होंने जो सीखा घर मे, जीवन मे और जगत मे। एक मायने में स्वशिक्षित हैं– सुसंस्कृत और शालीन आपका सिवस्व सेंस कमाल का है, तगडा है आपका आई क्यू। इसीलिए तो हाथरस मे आपने बतौर नौकर के व्यापारी प्रतिष्ठान मे सेवानुभव का एक दशक गुजारा, उसी मे उन्हें उस कालावधि मे बाजार की, व्यापार की, लेन देन की, कारोबार की, सौदे–सट्टे की, मूल्यो की, घटत–बढत की, माग–पूर्ति से लेकर अप्रत्याशित हानि–लाभ की सारी गणित का ज्ञान हो गया।

८– संस्थापक सदस्य एवं अध्यक्ष–श्रीमद् राजचन्द्र मिशन, हाथरस।
९– आध्यात्मिक सदस्य–श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम पो० हम्पी (कर्नाटक) से विशेष लगाव।
१०– अध्यक्ष एवं संस्थापक–के० बुलाकीचन्द फूलचन्द बाँठिया चेरीटेबिल ट्रस्ट, कानपुर। ट्रस्ट के माध्यम से अनेक संस्थाओं को आर्थिक सहयोग।
११– अध्यक्ष एवं संस्थापक– कानपुर चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, कानपुर।
१२– संस्थापक सदस्य– हाथरस मर्चेन्ट्स चैम्बर, हाथरस (उ०प्र०)।
१३– सदस्य– मर्चेन्ट्स चैम्बर आफ उत्तर प्रदेश, कानपुर।
१४– उपाध्यक्ष एवं चेयरमेन– अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ, दिल्ली, तथा उत्तर प्रदेश खरतरगच्छ महासंघ कानपुर।
१५– ट्रस्टी– अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर।
१६– ट्रस्टी– सेठ शंकरदान नाहटा कलाभवन, बीकानेर।
१७– ट्रस्टी एवं अध्यक्ष– श्री जैन भवन ट्रस्ट, पालीताना (गुजरात)।
१८– चन्द्रश्री प्रकाशन मन्दिर, हाथरस।
१९– संयोजक एवं कोषाध्यक्ष– श्री वर्धमान जैन सार्वजनिक चिकित्सालय, कम्पिल (फर्रुखाबाद) उ०प्र०।
२०– मंत्री– काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद, कानपुर–कंपिल।
२१– सदस्य एवं संयोजक– श्री जैन श्वेताम्बर महासभा उत्तर प्रदेश,हस्तिनापुर एवं संयोजक– भगवान विमलनाथ जैन तीर्थ, कंपिल।
२२– संरक्षक सदस्य– राजस्थान एशोसियेशन राजस्थान भवन, कानपुर। इस संस्था के विकास मे विशेष सहयोग एवं रुचि।
२३– संपादक– बालोपयागी पत्रिका "वीर पुत्र" मासिक अजमेर के भू० पू० संपादक एवं बाल–साहित्य में रुचि। "अमर शहीद अमरचन्द बाँठिया" पुस्तक का संपादन एवं प्रकाशन।
२४– अध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर संघ, हाथरस। नवीन जैन मन्दिर जीर्णोद्धार कमेटी के संयोजक।
२५– श्री जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस बम्बई के स्टेंडिंग कमेटी के सदस्य।
२६– मंत्री– श्री मारवाडी पुस्तकालय एवं वाचनालय, कानपुर।
२७– रुचि– वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रति अपार श्रद्धा। जैनियों के दिगम्बर एव श्वेताम्बर समाज की एकता में विश्वास और कार्य। मानव मात्र से प्रेम।
२८– सदस्य– चार्टर्ड सदस्य लायन्स क्लब हाथरस।
२९– सदस्य– वीरायतन, राजगृह कार्य समिति के सदस्य।

अन्य– हिन्दी के साथ राजस्थानी भाषा एवं ब्रज भाषा के विकास में विशेष समर्पण भावना। और भी अनेक सामाजिक, साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्ध। उनके लिए कार्य व सम्पूर्ण सहयोग।

शौक– पर्यटन, तीर्थ यात्रा, सादा जीवन उच्च विचार, स्वच्छता पसद, श्वेत परिधान, टिकिट संग्रह, पुरातत्व के महत्व की वस्तुओं में विशेष रुचि।

श्रद्धेय गुरु– युग प्रधान, योग–योगीन्द्र स्व० सहजानन्दघन जी महाराज हम्पी (कर्नाटक)।

श्रद्धेय इष्ट– युग प्रधान श्री दादाजी महाराज पर अपार श्रद्धा एवं विश्वास।

शोध-यायावरी श्री बाँठिया जी

प्रसिद्ध भाषाविद् इटैलियन विद्वान डा० एल० पी० तैस्सितोरी को काल की विस्मृति से, शाश्वत रूप से जनस्मृति मे प्रसंगित, संदर्भित एवं चर्चित रखने की अविस्मरणीय भूमिका आपने निभाई जो युगों-युगों तक भावी पीढी के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगी। आपने ही बीकानेर में डा० तैस्सितोरी की समाधि खोजी। अपने अर्थ-योग से आपने इस समाधि को सुभव्य निर्माण-स्थली के रूप में रूपातरित किया। सन् १९८५ मे आपने ही कानपुर के 'तुलसी उपवन' में रामायण ग्रंथ शोधक डा० एल० पी० तैस्सितोरी की 'बस्ट' (अर्द्धमूर्ति) को स्थापित करवाया। देश-प्रदेश सहित डा० तैस्सितोरी की जन्मभूमि उदीने (इटली) मे इस विद्वान की जन्मशती श्रृंखला को प्रवर्तित करने की अनुकरणीय पहल की।

आपकी सांस्कृतिक संचेतना ने ही इन्हें शोध व पुरातत्व की पगडंडियों पर आगे बढने का साहस दिया। श्री हजारीमल बाँठिया ने इस लक्ष्यसिद्धि हेतु राजस्थान के पीलीबंगा, कालीबंगा, रंगमहल, बडोपल, पल्लू, भटनेर, सूरतगढ, रतनगढ, की शोध यात्राओ के क्रम में राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक डा० रमेशचन्द्र शर्मा के साथ भारत भ्रमण सहित वर्ल्ड हेरीटेज स्थल हम्पी (कर्नाटक), अहिच्छत्रा, रामनगर, बरेली, कंपिल, फर्रुखाबाद, भीतरगांव कानपुर, अतरंजी खेडा, एटा, संकिसा, तथा कन्नौज प्रभृति क्षेत्रो की शोध-यायावरी का उग्रविहार किया।

रचना धर्मी श्री बाँठिया जी

श्री हजारीमल बाँठिया एक सुलेखक और सुसंपादक-प्रकाशक हैं। आपके कई शोधपूर्ण लेख छपे हैं 'रिसर्च जर्नल्स' में। आपकी रचना-धर्मिता के कई रंग हैं।

पचाल शोध पत्रिका के आप प्राण स्तम्भ हैं। आपके सुपुत्र श्री राजकुमार को इस पत्रिका का मैनेजिंग डायरेक्टर बनाकर आपने अपने उत्तराधिकार को शोधोन्मुख करने की पहल की है।

अध्यात्म क्षेत्रोद्धारक श्री हजारीमल बाँठिया

श्री बाँठिया एक सुधर्मशील श्रावक- साधक- स्वाध्यायी संघ सेवी हैं। आपने जैनसमाज के पवित्र तीर्थ-स्थलो के उद्धार-हेतु कई कारगर कदम उठाये हैं।

श्री हजारीमल बाँठिया की देन

जैन जगत की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक उन्नति व प्रगति के क्षेत्र में जब कभी किसी का नाम उल्लेखित होगा तो उस समय पट्टिका मे जैन तीर्थोद्धारक, पुरातत्व शोधक, पत्रिका प्रकाशक, शोध संस्थान संस्थापक, भाषा-साहित्य व संस्कृति के समायोजक, सामाजिक व व्यावसायिक जाग्रति के साथ-साथजन हितैषी राजनेता, समाजसेवी के रूप में अंग्रत अंकित होगा श्री हजारीमल बाँठिया। इतनी बहुआयामी गतिविधियों वाला उद्योगपति जैन जगत में विरले रूप में दिखता है कहीं। श्री हजारीमल बाँठिया की देन के दो पहलू प्रमुख हैं- प्रथम पहलू है जैन तीर्थों की पुरातात्विकता के बल पर तीर्थों का उद्धार। दूसरा पहलू है- समाज जाग्रति के क्षेत्र में प्रवृत्त संस्थानो को शक्ति प्रदान कर उनमें सह भागिता निभाना।

चिरस्मरणीय कीर्ति श्री हजारीमल बाँठिया की

'जस रा आखर जो हिया जाता जुगां न जाय'। श्री हजारीमल बाँठिया ने भारत व इटली के सांस्कृतिक जनद्वार की एक कालजयी भूमिका निभाई है। इटली वासी डा० एल० पी० तैस्सितोरी की स्मृति को- बीकानेर, कानपुर, तथा उसके

माँ के पेट से काई कुछ सीख कर नहीं आता। मुनि शुकदेव का अपवाद मले हो। श्री हजारीमल बाँठिया ने व्यवसाय के क्षेत्र मे जो कुछ सीखा वो जीवन से, जगत से, और अपने जीवट से ही। इसी के बल पर उसी कानपुर में जिन्दादिली से एक समय के व्यापारिक गद्दी के नौकर ने, अंततः मिल मालिक की हैसियत पाई।

श्री हजारीमल बाँठिया की हाथरस से कानपुर की व्यावसायिक प्रगति यात्रा का आज का कीर्तिमान पुनः इस बात को पुष्ट करता है कि श्री हजारीमल बाँठिया ने "मधुर आयल्स प्रा० लि० के चेयरमेन, तथा राजा पलसेज प्रा० लि० के प्रबंध निदेशक के रूप में अपना स्वयं का जो व्यवसाय-तंत्र पनपाया है उसका मान आज अंतः-भारतीय स्तर पर स्थापित है, ओद्योगिक व व्यावसायिक क्षेत्र मे। "मधुर ट्रेडर्स" ने इस व्यावसायिक मान के नूतन कीर्तिमान की बागडोर अपने उत्तराधिकारियों को सौंपकर, श्री हजारीमल बाँठिया अपने व्यवसाय तंत्र के मार्गदर्शक हैं और एक दूरदर्शी नियन्ता। जीवन के सातवें दशक की दहलीज पार कर रहे है २४ सितम्बर १९९५ के दिन। व्यापार का पार पाकर आरंपार सिद्ध हो रहे हैं, अब दिनोंदिन सार्वजनिक जीवन के बहुकोणीय मंच पर।

श्री बाँठिया सार्वजनिक क्षेत्र में

सार्वजनिक शब्द साधारण नहीं हैं क्योकि 'सर्व' की साधना अति दुष्कर है। सर्व-साधारण में ही बसता है सर्वेश्वर-जनेश्वर-जिनेश्वर। श्री हजारीमल बाँठिया के जीवन की बहुत सारी उजली परतों मे एक परत कहीं उनके मूल्यांकन मे दब न जाये इसलिए हम शुरु-शुरु में ही संकेत दे कि आप कोरे व्यापारी नहीं हैं, कोरे धर्मानुरागी नहीं हैं, केवल खरतरगच्छ महासघ उपाध्यक्ष ही नहीं हैं, राष्ट्र-स्तर पर मात्र गुणानुवादक ही नहीं हैं, विदेशी राजस्थानी विद्वान डा० एल० पी० तैरिसतोरी के तथा अपने कुल के कालजयी शहीद श्री अमरचन्द के। संस्थाओं के संस्थापक, दर्जनों प्रतिष्ठानों के पदाधिकारी, शोध संस्थानों, पत्रिकाओं, प्रकाशकों तथा अपने कुल के ट्रस्ट-फाउन्डेशन के नियामक श्री हजारीमल बाँठिया एक राजनीति-निपुण नेता भी रहे हैं।

हाथरस का बाँठिया जस एक गतिशील नेतृत्व का

श्री हजारीमल बाँठिया उछलकर या पीछे के दरवाजे से कहीं नहीं पहुँचते। आपने हाथरस प्रवास काल में अपने जीवन के पाँचवे-छटे दशक में इस नगर की म्युसिपैलटी की मेम्बरी ग्रहण की, इसके उपाध्यक्ष रहे और कार्याध्यक्ष भी। हाथरस नगर साक्षी है कि इसको सुन्दर बनाने में श्री हजारीमल बाँठिया का नेतृत्व सुन्दरतम रहा। सडकों का कलेवर विस्तारा आपने, श्मशान गृह का सुघड-निर्माण करवाया आपने। कंपिल क्षेत्र में सार्वजनिक अस्पताल, जैन श्वेताम्बर मन्दिर तथा धर्मशाला की निर्माण धारा के प्रवाहक रहे हैं श्री हजारीमल बाँठिया। जनता व शासन की भागीदारी का संतुलन गुर कोई सीखे तो श्री हजारीमल बाँठिया से। एक कुशाग्र राजनेता के रूप मे, राजनीति चिंतक व आम आदमी के प्रवक्ता के रूप मे, सार्वजन हित-कर्त्ता के रूप में श्री हजारीमल बाँठिया का हाथरस, कानपुर कार्यक्षेत्र आपकी दक्षता, क्षमता, तथा कुशलता को सिद्ध करता है- सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में।

श्री हजारीमल बाँठिया ने राजनीति की मूल्यहीनता व बढती हुई अपराधिता का साथ कभी नहीं दिया, कारण उन्होंने ऐसा जीवन जिया नहीं। अतः व्यापारिक मनोरथ साधते हुए उन्होने राजनीति का सात्वीकरण कर जन-सेवा का जो सुकृत साधा उसका पूर्ण तोष लिए अब आपने अपना सारा ध्यान सांस्कृतिक व आध्यात्मिक उन्नयन की ओर उन्मुख करने की गति तेज कर दी है। आप देश-प्रदेश की बहुआयामी रचनाधर्मी शक्तियो के केन्द्र बने हुए हैं आज।

श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन समारोह की विशिष्ट झाँकियाँ

राजस्थान भवन कानपुर, दि० 25-9-95

श्री नरेन्द्र माहटा (मंत्री जनशक्ति नियोजन म० प्र०) राजस्थान भवन हाल में प्रवेश करते हुए। साथ में हैं श्री प्रकाश चन्द्र बाँठिया।

अभिनन्दन समारोह में मंच पर आसीन हैं बाँये से दायें क्रमशः श्री बी० आर० कुम्मट (स्वागताध्यक्ष), डॉ० पी० के० अग्रवाल (महामंत्री), श्री नरेन्द्र माहटा (मुख्य अतिथि), श्री नरेश चन्द्र चतुर्वेदी (अध्यक्ष) तथा श्री हजारीमल बाँठिया।

जन्मभूमि उदीने (इटली) में चिरस्मरणीय स्वरूप देते हुए एक विदेशी विद्वान के प्रति एक स्वदेशी श्रीमान् का ऐसा स्नेह, अप्रतिम है, अभिनन्दनीय है। आपने यह कार्य पूर्ण करने का जीवन व्रत ले रखा है। अभी आपके कई स्वप्न अधूरे पड़े हैं। डा० तैस्सितोरी तो निमित्त हैं इनकी राजस्थानी मातृ भाषा–संस्कृति चेतना का। आपके मामाजी श्री अगरचन्द जी नाहटा जो विश्व विश्रुत राजस्थानी–जैन विद्वान हुए हैं, आपने इनकी कीर्ति उजागर कर अपनी व अपने कुल की कीर्ति को चिरस्मरणीय रूप दे दिया है।

श्री हजारीमल बाँठिया - एक मूल्यांकन

श्री हजारीमल बाँठिया, अपने बूते पर, भरोसे पर, सब काम करते हैं। आज भारत की खरतरगच्छ जैन सम्प्रदाय की अग्रणी श्रावक व जनसेवी विभूतियों में श्री हजारीमल बाँठिया का नाम कलोंकित है। आप की करुणा, ममता का प्रवाह देखना हो तो 'बाँठिया फाउन्डेशन' तथा श्री बुलाकीचंद फूलचन्द बाँठिया ट्रस्ट की गतिविधियो को देखिये। आपने अपने ट्रस्ट से प्रतिवर्ष एक लब्धप्रतिष्ठ राजस्थानी विद्वान को, सृजेता को पुरस्कृत करने का प्रण ले रखा है, बरसो से यह क्रम जारी है। श्री हजारीमल बाँठिया एक सात्विक साहसिक व्यवसायी हैं और एक अविश्रान्त जनसेवी। आपके जीवन की बहुआयामिता का मूल्याकंन अधूरा रहेगा अगर हम आपकी पृष्ठ शक्ति स्वरूपा आपकी धर्म पत्नी श्री जतनकुमारी जी को भूलते हैं तो। जैसे आप वैसे ही आपकी दयामयी, सेवाभाविनी, अतिथि पालिका, कुल संस्कार मालिका– धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी जी अविस्मरणीय हैं, कारण आपने अपने चारो पुत्रो श्री कांतिलाल, श्री राजकुमार, श्री प्रकाशचन्द्र तथा श्री सुरेन्द्र तथा दोनों पुत्रियो को उच्च शिक्षा से सम्पन्न तो किया ही है, कुल– संस्कार दीक्षा के क्षेत्र मे आपने अपने पति के साथ जो कुल–तप साधा है उसी ने श्री हजारीमल बाँठिया को जिन्दाबाद रखा है, जीवन व जगत में ।

श्री हजारीमल बाँठिया एक जीती–जागती मिसाल हैं संस्कृति व व्यवसाय संगति की। आपकी डा० तैस्सितोरी के प्रति श्रद्धाभावना से अभिभूत हो, इटली देश के उदीने के सुसंस्कृत राज समाज चेताओं ने १६८५ व १६६४ मे दो बार श्री हजारीमल बाँठिया जी को डा० तैस्सितोरी सम्मानार्थ बुलाकर सम्मानित किया है। श्री हजारीमल बाँठिया गत वर्ष सितम्बर माह मे डा० तैस्सितोरी सेमिनार में भाग लेने इटली के 'उदीने' नगर मे पहुँचे। आपके सम्मान में उदीने के प्रेसीडेण्ट ने 'राजभवन' मे एक शानदार भोज दिया–६ सितम्बर १६६४ के दिन। उसी शाम को श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा डा० तैस्सितोरी पर दिये गये उदीने–सेमिनार भाषण को इटली में प्रमुख पत्रों में प्रमुखता से प्रसारित कर आपका, डा० तैस्सितोरी व भारत सहित राजस्थानी भाषा, साहित्यिक संस्कृति का मानवर्द्धन किया। यह बडी बात है। श्री बाँठिया स्वयं एक मूल्य हैं रचना धर्मिता व कर्मठता के। उनका चरितांकन करना संस्कृति का संकीर्तन करना है, आध्यात्मिक चेतना का अभिनन्दन करना है।
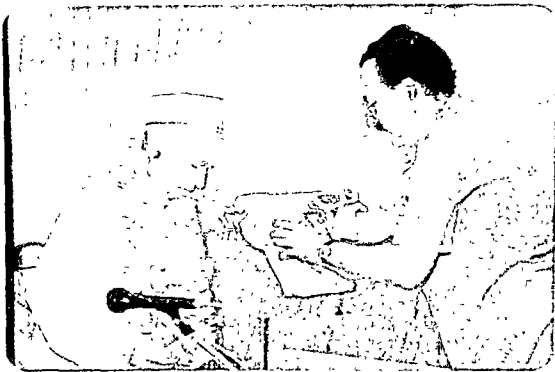
पूर्वांचल खरतरगच्छ महासंघ के उपाध्यक्ष श्री पदमचन्द नाहटा अ० भा० खरतरगच्छ महासंघ की ओर से श्री हजारीमल बाँठिया को शाल भेंट करते हुए।

नाहटा परिवार की ओर से श्री हजारीमल बाँठिया को मोमेंटम भेंट करते हुए श्री ललित नाहटा, दिल्ली।

सन्देश
तथा
शुभकामनाएँ

शुभकामनाएँ

Balram Singh Yadava

राज्य मंत्री
(स्वतंत्र प्रभार)
खान मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–११०००१
भारत

MINISTER OF STATE
(INDEPENDENT CHARGE)
MINISTRY OF MINES
SHASTRI BHAWAN,
NEW DELHI-110001
INDIA

२२ अप्रैल, १६६५

प्रिय डा० गुप्त,

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हजारीमल बाँठिया जी २५ सितंबर ६५ को ७१ वर्ष पूरे कर ७२वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं तथा इस अवसर पर उन्हें एक वृहद् अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जायेगा। खुशी के इस अवसर पर श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह श्री बाँठिया जी को अति सुखमय एवं लम्बी आयु प्रदान करें।

इस अवसर पर प्रेरक एवं जीवनोपयोगी सामग्री से परिपूर्ण वृहद् एवं उत्साहवर्धक ग्रंथ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका
ह०
बलराम सिंह यादव

डा० बालकृष्ण गुप्त,
संयोजक एवं स्थानीय सम्पादक,
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
५२/१६, शक्कर पट्टी,
कानपुर, उ०प्र०

नरेन्द्र नाहटा
मंत्री,
जनशक्ति नियोजन

अ. शा. पत्र क्रमांक 2759
बी२. 74 बंगले, भोपाल

दूरभाष : 550347
निवास : 550961
552014

भोपाल, दिनांक 22/7/95

:: संदेश ::

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि दिनांक 25 सितम्बर, 95 को कानपुर में श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान-समारोह का आयोजन किया जा रहा है। श्री हजारीमल जी सा० बाँठिया ने समाज की जो सेवा की है, समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

मैं सम्मान-समारोह के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

ह०
(नरेन्द्र नाहटा)

डा० गिर्राज किशोर अग्रवाल,
२७-ए- साकेत कालोनी,
अलीगढ़ (उ०प्र०)

मुख्य मंत्री
राजस्थान

जयपुर,
दिनाक 6 मई 1995

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री हजारीमल जी बाँठिया 24 सितम्बर, 95 को अपने जीवन के 72वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं तथा इस अवसर पर गठित समिति द्वारा एक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

समाज एवं साहित्य सेवा महत्त्वपूर्ण कार्य है तथा साथ में व्यावसायिक दायित्व भी हो तो यह दुरूह कार्य है। लेकिन यदि दृढ़ इच्छा शक्ति एवं संकल्प के साथ कार्य किया जाय तो कोई समस्या नहीं। इस दृष्टि से बाँठिया जी का जीवन-दर्शन प्रेरणादायी है।

मुझे विश्वास है कि बाँठिया जी के 72 वें वर्ष की यात्रा एवं अभिनन्दन ग्रंथ की सामग्री इस दिशा में प्रेरणा पैदा करने में सार्थक होगी।

मैं बाँठिया जी के स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की कामना करते हुए आयोज्य सभी उपक्रमों की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

भैरोंसिंह शेखावत

डा० सं० 1785

कृषि मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली . 110001
AGRICULTURE MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI- 110 001

दिनांक 28 अप्रैल, 1995

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति, अलीगढ़ के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हजारीमल बाँठिया जी के ७१ वर्ष पूरे कर ७२वें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर उनके सम्मान स्वरूप दिनांक 24 सितम्बर, 1995 को राजस्थान भवन, कानपुर में आयोजित ''श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन ग्रंथ समिति'' द्वारा उन्हें एक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जा रहा है।

श्री बाँठिया जी जैसे यशस्वी कृतिकार और समाजसेवी, राष्ट्रीय आदर्शों और उदात्त गरिमामय परम्पराओं के मूर्त्त प्रतीक हैं। यथा नाम तथा गुण। उदार स्वभाव, सादा जीवन उच्च विचार पारदर्शी आचरण उनके व्यक्तित्व के विशेष गुण हैं। यदि यह कहा जाये कि वह अपने आप में एक संहिता हैं, तो अतिशयोक्ति न होगी।

मैं ''अभिनन्दन ग्रन्थ'' के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

ह०
बलराम जाखड़

शुभाशंसा

आचार्य - चन्दना

महान उद्देश्यो के लिए समर्पित जीवन का नाम है श्री हजारीमल बाँठिया।

श्री हजारीमल जी बाँठिया की दृढ सकल्प शक्ति हिमगिरि सी अविचल है, तो सहृदयता पवित्र गगा-सी प्रवहमान है। चिंतन चक्र विशाल परिधि को घेरता है तो प्रशंसा एवं आत्मश्लाघा से विमुख अन्तर्मुखी जीवन-चर्या परिधि का केन्द्र है। मंदिर के गर्भगृह मे अखंड प्रज्ज्वलित नदादीप सा समर्पण है तो पूज्य गुरुदेव श्री के क्रान्तिकारी, विचारो से उद्दीप्त अग्निज्वाला सा तेजस्वी कर्म-क्षेत्र है। जिसकी भूमि के अन्दर गहरी उतरी जडे हैं, ऐसे सुदीर्घ ऊँचाई एवं व्यापक विस्तार के लिए वट वृक्ष सा महान् जीवन है। इस प्रकार सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी हैं श्री बाँठिया जी।

श्री बाँठिया जी का तीर्थ क्षेत्रो के प्रति बचपन से गहरा लगाव रहा है। इतिहास के पन्नो मे तथा जनता की स्मृति मे भुलाये गये अनेक तीर्थों को उजागर करके पुन इतिहास एव पुरातत्व मे अमिट स्थान दिलाया है।

उद्योग तथा व्यवसाय के क्षेत्र मे अनेक सस्थानो को विकसित किया। युवाशक्ति को स्वय अर्थ भार वहन करके व्यवसाय मे लगाया है।

अनेक विद्यार्थियो को अपने घर पर सारी सुविधाऐं प्रदान करके पढाया है। स्वतन्त्र रूप से जीवन निर्वाह के साधन उपलब्ध कराये हैं।

साहित्य सृजन मे आपकी प्रतिभा की देन समुज्जवल है। विद्वद्वृन्द को प्रोत्साहन देना एवं पुरस्कृत करना आपका सहज स्वभाव है।

बीकानेर वर्षावास की आपकी सेवाएं स्मृति पटल पर अभी ताजा पुष्प सी महकती हैं। वीरायतन के प्रति भी आपकी निष्काम सेवा निरन्तर बनी रहती है। यथा नाम तथा गुण मेरी शिष्या साध्वी श्री सम्प्रज्ञा जी की आर्हती दीक्षा आप श्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई है।

भारत से दूर सुदूर देश लन्डन में मुझे जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि समिति श्री बाँठिया जी का अभिनन्दन कर रही है। यह होना भी चाहिए था। उनका यह अभिनन्दन उनके प्रति हमारी कृतज्ञता का ज्ञापन ही है।

मैं श्री बाँठिया जी के स्वस्थ निरामय सक्रिय सुदीर्घ जीवन के लिए शुभाशंसा अर्पित करती हूँ। श्री बाँठिया जी मंगलकारी कार्यों के नवनिर्माण मे सदैव सक्रिय रूप से अग्रसर रहे।

समिति के पावन अनुष्ठान की सफलता के लिए शुभ भावना।
समग्र शुभाशंसा के साथ

डॉ० मुरली मनोहर जोशी
सांसद सदस्य (राज्य सभा)

18 मई, 1995

संदेश

श्री बाँठिया जी के साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के बारे में मैंने पढ़ा है। उनका जैन ग्रंथों के प्रकाशन में योगदान निश्चय ही महत्वपूर्ण है। सामाजिक क्षेत्र में भी चिकित्सालय और विद्यालय स्थापित करने में बाँठिया जी प्रयत्नशील रहे हैं। ऐसे प्रतिष्ठित समाजसेवी का अभिनन्दन ग्रंथ तैयार करने के लिए श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति बधाई की पात्र है।

मैं हृदय से मंगल कामना करता हूँ कि श्री बाँठिया जी चिरायु हों और समाज को अपनी सेवाओं का लाभ प्रदान करते रहें। मैं समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

ह०
मुरली मनोहर जोशी

गणि मणिप्रभसागर

विद्वद्वर डॉ० श्री गिर्राज किशोर जी अग्रवाल •
सादर धर्म लाभ।

आपके पत्र द्वारा यह ज्ञातकर मन प्रमोद–भावों मे डूबा है कि श्री हजारीमल जी बाँठिया का सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया कर्म–पुरुष हैं। इनके पूरे परिवार मे परम्परा कर्मठता व देश–सेवा की लगन है।

वृद्धावस्था में भी कार्यक्षमता उनके विशाल भाल से प्रतिपल चमकती है।

निश्चित ही ऐसी नि स्वार्थ जनसेवी और प्रखर प्रतिभा के सम्मान का आयोजन आह्लादकारी है।
यह सम्मान समारोह इनके जीवन के हर पहलू का स्पर्श करता हुआ जन–जन के लिए प्रेरणादायी बनेगा, ऐसी आशा करता हूँ।

मैं उनके उन्नत जीवन के लिए व समारोह की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

उज्जैन
१४–७–१९९५

ह०
(मणिप्रभसागर)

शुभकामनाएँ

जगदाचार्य

श्री चन्द्र स्वामी जी महाराज

सी० १८–१६ कुतुब इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नयी दिल्ली– ११००१६ (इन्डिया)
फोन : ६१–११–६८६८२६, ६६६४८२६, ६८६७३४५, ६८६४२६७,६८६८२६६
फैक्स : ६१–११–६८५२०८०

।। ॐ शक्ति ॐ ।।

दिनांक– २६.०६.१६६५

आशीर्वचन

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सुख्यात समाज सेवी श्री हजारीमल जी बाँठिया का उनकी इकत्तरवीं जन्म जयंति के शुभ अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित कर सम्मान किया जा रहा है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया का मेरे साथ आत्मीय संबंध है। उनके आस्था सेतु से सदैव मेरा हृदय जुड़ा रहा है। उनके साथ मेरे संबंधों के इतिहास का हर अध्याय पुरातन होकर भी नव्यमान है। श्री हजारीमल जी बाँठिया के जीवन का व्याकरण सहज सरल है क्योंकि उनमें मर्यादा के विराम संशय का कोई प्रश्न चिन्ह नहीं है। उनकी विचार सोच किसी कोष्ठक में नहीं बंधी है। वे अपने चिंतन को आचरण के साथ जोड़कर अजात-शत्रु बने हैं।

राजस्थानी साहित्य संस्कृति तथा भाषा के समुन्नयन में श्री हजारीमल जी बाँठिया का योगदान सर्व विदित है। राजस्थानी संस्कृति की सौंधी महक उनके व्यक्तित्व की साक्षी है। समृद्धि के शिखर पर पहुँचकर भी उनके अकिंचन मनोभावों को देखकर लगता है कि वे श्रमण संस्कृति के अपरिग्रह दर्शन को अपना जीवन-मूल्य स्वीकार करते हैं। उनकी सफल जीवन यात्रा का यही रस रहस्य है कि वे संपति के साथ स्वयं को संपृक्त नहीं करते हैं तभी तो वे लक्ष्मी पुत्र होकर भी सरस्वती के सहज उपासक हैं।

श्री हजारीमल जी बाँठिया के साथ रहने से आभास होता है कि हम किसी फलवान वृक्ष के साथ साक्षात्कृत हैं जो फल फूल और छाया देता है। मेरे पास बाँठिया जी की स्मृति से जुड़े शताधिक प्रसंग हैं। वे मेरे प्रति आस्थाशील हैं इसे मैं अपनी उपलब्धि मानता हूँ क्योंकि उनकी श्रद्धा सदैव मुझे ऊर्जा प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि श्री बाँठिया जी का यह सम्मान समारोह आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देगा। उनके सम्मान में प्रकाश्य अभिनन्दन ग्रंथ सारस्वत साधना का प्रतीक होगा। मैं अपने अनंत आशीर्वाद देकर इस सम्मान समारोह के साथ अपनी सहभागिता अनुभूत कर आनंदित हूँ। श्री बाँठिया जी के चिर यशस्वी जीवन के कामना के साथ।

ह०

(जगदाचार्य चंद स्वामी)

गणि मणिप्रभसागर

विद्वद्वर डॉ० श्री गिर्राज किशोर जी अग्रवाल
सादर धर्म लाभ।

आपके पत्र द्वारा यह ज्ञातकर मन प्रमोद–भावों में डूबा है कि श्री हजारीमल जी बाँठिया का सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया कर्म–पुरुष हैं। इनके पूरे परिवार में परम्परा कर्मठता व देश–सेवा की लगन है।

वृद्धावस्था में भी कार्यक्षमता उनके विशाल भाल से प्रतिपल चमकती है।

निश्चित ही ऐसी निःस्वार्थ जनसेवी और प्रखर प्रतिभा के सम्मान का आयोजन आह्लादकारी है। यह सम्मान समारोह इनके जीवन के हर पहलू का स्पर्श करता हुआ जन–जन के लिए प्रेरणादायी बनेगा, ऐसी आशा करता हूँ।

मैं उनके उन्नत जीवन के लिए व समारोह की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

उज्जैन
१४–७–१९९५

ह०
(मणिप्रभसागर)

जगदाचार्य

श्री चन्द्र स्वामी जी महाराज

सी० १८-१६ कुतुब इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नयी दिल्ली– ११००१६ (इन्डिया)
फोन : ६१-११-६८६८२६, ६६६४८२६, ६८६७३४५, ६८६४२६७,६८६८२६६
फैक्स : ६१-११-६८५२०८०

।। ॐ शक्ति ॐ ।।

दिनांक– २६.०६.१६६५

आशीर्वचन

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सुख्यात समाज सेवी श्री हजारीमल जी बाँठिया का उनकी इक्यासीवीं जन्म जयंति के शुभ अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित कर सम्मान किया जा रहा है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया का मेरे साथ आत्मीय संबध है। उनके आस्था सेतु से सदैव मेरा हृदय जुड़ा रहा है। उनके साथ मेरे संबंधों के इतिहास का हर अध्याय पुरातन होकर भी नव्यमान है। श्री हजारीमल जी बाँठिया के जीवन का व्याकरण सहज सरल है क्योंकि उनमें मर्यादा के विराम संशय का कोई प्रश्न चिन्ह नहीं है। उनकी विचार सोच किसी कोष्ठक में नहीं बंधी है। वे अपने चिंतन को आचरण के साथ जोड़कर अजात-शत्रु बने हैं।

राजस्थानी साहित्य संस्कृति तथा भाषा के समुन्नयन में श्री हजारीमल जी बाँठिया का योगदान सर्व विदित है। राजस्थानी संस्कृति की सौंधी महक उनके व्यक्तित्व की साक्षी है। समृद्धि के शिखर पर पहुँचकर भी उनके अकिंचन मनोभावों को देखकर लगता है कि वे श्रमण संस्कृति के अपरिग्रह दर्शन को अपना जीवन-मूल्य स्वीकार करते हैं। उनकी सफल जीवन यात्रा का यही रस रहस्य है कि वे संपत्ति के साथ स्वयं को संपृक्त नहीं करते हैं तभी तो वे लक्ष्मी पुत्र होकर भी सरस्वती के सहज उपासक हैं।

श्री हजारीमल जी बाँठिया के साथ रहने से आभास होता है कि हम किसी फलवान वृक्ष के साथ यात्रायित हैं जो फल फूल और छाया देता है। मेरे पास बाँठिया जी की स्मृति से जुड़े शताधिक प्रसंग हैं। वे मेरे प्रति आस्थाशील हैं इसे मैं अपनी उपलब्धि मानता हूँ क्योंकि उनकी श्रद्धा सदैव मुझे ऊर्जा प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि श्री बाँठिया जी का यह सम्मान समारोह आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देगा। उनके सम्मान में प्रकाश्य अभिनन्दन ग्रंथ सारस्वत साधना का प्रतीक होगा। मैं अपने अनंत आशीर्वाद देकर इस सम्मान समारोह के साथ अपनी सहभागिता अनुभूत कर आनंदित हूँ। श्री बाँठिया जी के चिर यशस्वी जीवन के कामना के साथ।-

ह०

(जगदाचार्य चंद्र स्वामी)

नरेश चन्द्र चतुर्वेदी

पूर्व ससद सदस्य (लोकसभा कानपुर)
भू० पू० महासचिव – अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (आई)
सदस्य – अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

दूरभाष २९४६२८ एवं २९२२२६
१११/७८, अशोक नगर,
कानपुर – २०८०१२

दिनांक २२–४–९५

प्रिय अग्रवाल जी,

श्री हजारीमल बाँठिया के सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इससे बहुत प्रसन्नता हुई। श्री हजारीमल बाँठिया मेरे बहुत पुराने परिचित मित्र हैं। मैं उनकी निष्ठा और लगन से काम करने की उनकी प्रवृति से भली– भाँति परिचित हूँ। श्री हजारीमल बाँठिया साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में गम्भीरतापूर्वक काम करने वाले विशिष्टजन हैं। उनके द्वारा स्थापित पचाल शोध संस्थान सास्कृतिक जगत का एक महत्वपूर्ण कार्य है। समय–समय पर इस संस्थान के द्वारा गम्भीर विषयो पर अन्वेषण और विवेचनात्मक चर्चाएँ होती रहती हैं। श्री हजारीमल बाँठिया जी स्वय एक गम्भीर साहित्यिक सुरुचि के व्यक्ति है। व्यापार व्यवसाय में प्रसिद्ध व्यक्ति होते हुए भी वे सदैव साहित्यिक व सास्कृतिक कार्यों मे भाग लेते हैं और सक्रिय रहकर अपना योगदान देते है। श्री बाँठिया जी राजस्थान के उसी परम्परा के प्रतिनिधि हैं जिसकी ज्योति श्री अगरचन्द नाहटा और श्री भँवरलाल नाहटा ने जागृत की थी। उनकी ७१वीं जयन्ती पर उन्हे मैं हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ और आयोजकों को बहुत–बहुत धन्यवाद।

सप्रेम– ।

आपका
ह०
(नरेश चन्द्र चतुर्वेदी)

डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल,
२०-ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ (उ०प्र०)

कामना

डॉ० गिर्राज किशोर जी अग्रवाल
महामंत्री – श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति
अलीगढ़

अमृत आशीष,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री हजारीमल जी बाँठिया का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है साथ ही उनकी सुदीर्घ सेवाओं के लिए अभिनन्दन–ग्रंथ भी प्रकाशित हो रहा है।

श्री बाँठिया जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। एक व्यावसायिक व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने समाज, धर्म, साहित्य, और मानवता की सेवा में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है उसके चलते वे आज ही नहीं वरन् आगामी पीढी के लिए भी अभिनन्दनीय बने रहेंगे।

हमने उन्हें बचपन से ही कर्मठ एवं समाज–सेवा के क्षेत्र मे सदा अग्रणी पाया है। देश का शायद ही ऐसा कोई संघ हो जो श्री बाँठिया जी से अपरिचित हो। हमने तो उन्हें हर जगह देखा है, उनकी सेवाओं की सभी स्थानो पर प्रशंसा सुनी है।

कम्पिल तीर्थ के पुनर्विकास में आपकी जो भूमिका और सक्रियता रही उसके कारण पूरे जैन समाज के द्वारा वे अभिनन्दन के पात्र बने हैं। ऐसे ही चिकित्सा आदि क्षेत्रों मे भी इनका अवदान है।

यद्यपि श्री बाँठिया जी कोई बहुत बड़े विद्वान व्यक्ति नहीं हैं परन्तु श्रेष्ठ साहित्य का प्रकाशन, उसका विस्तारण, साथ ही विश्रुत विद्वानो एव साहित्यकारों को सम्मान जनमानस तक जोड़ने मे आपकी बेहद रुचि रही है। इसका परिणाम है कि आपने श्री अगरचन्द भँवरलाल नाहटा जैसी विश्रुत, विद्वत् प्रतिभाओ का चिर स्मरणीय अभिनन्दन करवाया, अभिनन्दन ग्रथ प्रकाशित किये। तैस्सीतोरी जैसी महान प्रतिभाओं को समाज के समक्ष प्रसारित और स्थापित करने में भी आप ही का नाम सुनने–पढने मे आता है।

श्री बाँठिया जी के तो हमसे अत्यन्त समर्पित आत्मीयता भरे सम्बन्ध हैं। प्रति वर्ष वे हमारे पास आते हैं, परिचर्या करते हैं, साथ ही नये मार्ग दर्शन एवं कार्य क्षेत्र के लिए सदा वे उत्सुक दिखाई देते है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया के ७१वें जन्म दिवस पर हम उनके स्वास्थ्य और सेवा–वृद्धि की कामना करते हैं। परमात्मा मानवता की सेवा के लिए उनका जितना अधिक–से–अधिक उपयोग करना चाहे, अवश्य करे। प्रभु करें इनके प्राण अन्त तक सेवा मे ही समर्पित रहे।

ह०
(गणि महिमा प्रभ सागर)
श्री शांतिनाथ मंदिर
पाली (राज०)

विशम्भरनाथ पांडे
संसद सदस्य
(राज्य सभा)

१ लोधी एस्टेट
नई दिल्ली–११० ००३
फोन : ४६२६८७०

दिनांक १५ जून, १९९४

प्रिय श्री अग्रवाल जी,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री हजारीमल बाँठिया के सम्मान में एक समारोह समिति का गठन किया गया है जो २५ सितम्बर १९९५ को श्री बाँठिया जी को अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करेगी।

मैं श्री बाँठिया जी के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्री बाँठिया जी स्वस्थ जीवन के साथ अधिकाधिक समाज और साहित्य तथा संस्कृति की सेवा करते रहें।

शुभेच्छु
ह०
(विशम्भरनाथ पांडे)

डा० गिरांज किशोर अग्रवाल
२७-ए, साकेत कालोनी,
सुरेन्द्र नगर, पो० अलीगढ़,
उत्तर प्रदेश
पिन– २०२००१

ह्रीँ

Acharya Padma Sagar Suri

श्री हजारी मल बाँठिया सम्मान समारोह समिति

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि एक योग्य व्यक्ति का अभिनन्दन किया जा रहा है। श्री हजारीमल जी का जीवन एक खुला पुस्तक जैसा है। उनके कार्य से उनके जीवन का परिचय मिल जाता है। धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यों में उनका खूब सुन्दर योगदान रहा है। जैन समाज के लिए यह गौरव का विषय है कि योग्य व्यक्ति का योग्य अभिनन्दन किया जा रहा है। समारोह की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामना जानेंगे।

२१–७–६४

ह०
(पद्म सागर सूरि)

आचार्य पद्म सागर सूरि

साहित्य प्रेमी–

श्री हजारी मल जी बाँठिया अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है, जानकर प्रसन्नता हुई। बाँठिया जी स्वयं एक संस्था हैं। धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने बहुत कुछ कार्य किया है। साहित्य जगत मे भी उनका प्रवेश रहा है। अभिनन्दन ग्रंथ के द्वारा लोगों को उनके जीवन से, उनके कार्यों से प्रेरणा मिलेगी। ग्रंथ प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामना मैं भेज रहा हूँ।

शुभेच्छुक–
ह०
(आचार्य पद्म सागर सूरि)

दि० २–४–६५

तार "साधुमार्गी" फोन : २६८६७

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

(राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम १९५८ के अन्तर्गत रजिस्टर्ड)
प्रधान कार्यालय– 'समता भवन' बीकानेर (राजस्थान)

क्रमांक २१४२ दिनांक ३०–८–९४

श्री युत डॉ० गिर्राज किशोर जी अग्रवाल
अलीगढ

सादर जयजिनेन्द्र

मान्यवर,

आपका पत्र प्राप्त हुआ तथा यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि समाजसेवी श्री तनसुखराज जी डागा की अध्यक्षता मे आयोजित संगोष्ठी मे साहित्य रसिक संस्कृति प्रिय श्री हजारीमल जी बाँठिया का अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है।

हमारे लिए और भी हर्ष की बात है कि श्री बाँठिया बीकानेर की धरती के गौरवशाली सपूत हैं। श्री बाँठिया एक लक्ष्मीपति होते हुए साहित्य, संस्कृति और लोकजीवन मे जैसी अगाध रुचि रखते है, वह स्पृहणीय है।

उनका सरल, सहज व्यक्तित्व और उनकी निरन्तर तथा अनथक रूप से अर्पित समाज सेवाओं का अभिनन्दन समाज और राष्ट्र मे गुण पूजा के भाव को प्रोत्साहित करेगा ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

मै स्वयं तथा संघ की ओर से श्री हजारीमल जी बाँठिया के अभिनन्दन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

इस प्रशस्त, शुभकार्य के सभी आयोजन–कर्ता भी साधुवाद के पात्र हैं।
पुन श्री बाँठिया जी का अभिनन्दन।

सधन्यवाद एवं सादर।

आपका
ह०
(चम्पालाल डागा)
मन्त्री

NANDKISHORE JALAN

Office:
4, Synagogue Street, Calcutta-700001
Ph 242-6566, 242-2585, 242-3626
Gram. "PURITY" Telex No : 021-4442
Fax : (9133)242-2749

Resident.
26, Amherst Street, Calcutta-700009
Ph 350-0581, 350-4747

दिनाक 26-5-95

प्रिय बालकृष्ण जी,

आपका ता० 15-4-95 का पत्र मिला। श्री हजारीमल बाँठिया के सम्मान में ता० 25 सितम्बर 95 को कानपुर मे समारोह करना सुनिश्चित किया है यह बड़ी हर्ष की बात है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया का सार्वजनिक जीवन अपने आप मे काफी महत्वपूर्ण रहा है और साथ ही अनुकरणीय भी। उत्तर प्रदेश में अ० भा० मा० सम्मेलन को क्रियाशील करने मे उनके अमूल्य योगदान का मैंने समय-समय पर अवलोकन किया है और साथ ही पंचाल शोध संस्थान की आत्मा के रूप में वे देश के लिए शोध के कार्य में अविस्मरणीय योगदान के द्वारा अपनी संस्कृति और सभ्यता के भूले-बिसरे अध्यायो को जनमानस के सामने उभार कर लाने में सक्षम रहे हैं।

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न क्षणो में जो अवदान देश व समाज को देता है वही चिर-स्मरणीय रहता है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया के ७१ वर्ष पूरे कर ७२वें वर्ष में प्रवेश करने के दिन यानि 25 सितम्बर को हो रहे उनके सम्मान समारोह के अवसर पर उनके समृद्धिशाली, शतायु, एवं समाजसेवा के क्षेत्र मे नये कीर्तिमान स्थापित करने के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

आपका
ह०
(नन्दकिशोर जालान)

डा० बालकृष्ण गुप्त
५२/१६, शक्कर पट्टी
कानपुर-(उ०प्र०)

JAIN MEDITATION INTERNATIONAL CENTER
Anon -profit educational organization
Founded by Poojya Gurudev Shree Chitrabhanuji

401 EAST 86TH STREET # 20A, NEW YORK 10028 212 534-6090

MAY 29, 1995

My dear Dr. G. K. Agrawal,

I am very glad to receive your letter announcing that you are celebrating Hajarimalji's seventy-first birthday and are felicitating the services which he has done unstintingly with dedication.

Hajarimalji is a man who deserves blessings for his time and zeal with which he has engaged his life to serve the needy.

I send my love and blessings to him on this celebration.

Love and Blessings,
Sd
(Chitra bhanu)

DR. G. K. AGRAWAL
GENERAL SECRETARY
SHRI HAZARIMULL BATHIA
SAMMAN SAMAROH SAMITI
27-A, SAKET COLONY
ALIGARH 202 001
INDIA

शुभकामनाएँ

Regd No s/23691

Phone 6821348

मानव मंदिर मिशन
MANAV MANDIR MISSION

संस्थापक
गुरुदेव मुनिश्री रूपचन्द्र जी महाराज

जैन आश्रम, रूप विहार, रिंग रोड
सराय काले खां बस अड्डा के सामने,
नई दिल्ली-११० ०१३

क्रमांक ५१८

दिनांक ३ अप्रैल, १९९५

प्रिय महामंत्री श्री अग्रवाल जी,

आप द्वारा प्रेषित श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान–समारोह सम्बन्धी परिपत्र मिला। उसके अनुसार आपकी सेवा मे पूज्य गुरुदेव श्री रूपचन्द्र जी महाराज का संदेश भेज रहा हूँ।

समाज – सेवी श्री हजारीमल बाँठिया के सम्मान समारोह का संवाद पढकर मन आनन्दित हुआ। उनके द्वारा देश, धर्म और समाज को जो अनमोल सेवाएँ मिलती रही हैं उनका मूल्यांकन होना ही चाहिए। भगवान् महावीर ने कहा कि गुणी जनो के प्रति अपना प्रमोद भाव प्रकट करना कर्म – निर्जरा का महान हेतु है।

श्री बाँठिया जी समाज के गौरव हैं। गौरवपूर्ण व्यक्तित्व के आदर–स्मरण से समाज का अपना गौरव बढता है। इसके साथ ही औरों की सेवा की पावन प्रेरणा मिलती है। श्री बाँठिया जी चिरायु हो। समाज को उनकी विविध आयामी सेवाओ का लाभ लम्बे समय तक मिलता रहे, यही मंगल कामना है।

धन्यवाद के साथ–––

कार्यालय सचिव–अवधेश शास्त्री
मानव मंदिर मिशन, नई दिल्ली

शुभकामनाएँ

दुनिया में हर व्यक्ति अपने लिए, निजी स्वार्थ के लिए, या परिवार के लिए कुछ न–कुछ करने मे व्यस्त रहता है, परन्तु विरले ही वह व्यक्ति होते हैं जो निःस्वार्थ भाव से दूसरो के लिए कुछ करते हैं। यही वे व्यक्ति हैं जो अपनी और अपने कार्य की अमिट छाप समाज, राष्ट्र व विश्व के लिए छोड जाते हैं।

श्री हजारीमल बाँठिया उन गिने चुने व्यक्तियों मे से एक हैं जिन्होंने जहां अपने परिवार के लिए तो किया ही है, निःस्वार्थ भाव से जन सेवा मे भाग लेकर एक ऐसी अमिट छाप छोडी है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

मेरा श्री बाँठिया से निजी सम्पर्क नहीं रहा। यदा–कदा अवश्य पत्र व्यवहार हुआ। लेकिन जो भी जानकारी मुझे अन्य व्यक्तियो से उनके बारे मे मिलती रही उसके आधार पर मैं यही कह सकता हूँ कि उनका जीवन अनुकरणीय रहा है।

श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति ने अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन हाथ मे लेकर एक ऐसा कार्य किया है जिससे श्री बाँठिया के कृतित्व पर सदैव प्रकाश पडता रहेगा। मै समिति को इस कार्य के लिए साधुवाद देता हूँ। साथ ही यह भी आशा करता हूँ कि श्री बाँठिया अपने इस कार्य को भविष्य मे भी उसी लगन से करते रहेगे जिस लगन से वे अब तक करते रहे हैं। उनके दीर्घ आयु की कामना करते हुए मैं अपनी ओर से उन्हें जन्म–दिवस पर बधाई देता हूँ।

१४–८–६५

ह०
(बागमल बाँठिया)
(पत्रकार व स्वतंत्रता सेनानी)
३६८ भाटा पाड़ा रामपुरा, (कोटा) ३२४००६

अभिनन्दन

डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा
पूर्व महानिदेशक कुलपति
राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान

श्री हजारीमल बाँठिया का अभिनन्दन भारतीय संस्कृति का सम्मान है। उन्होंने कला, संस्कृति, इतिहास, साहित्य की जितनी सेवा की है उसका मूल्यांकन दुष्कर है। किशोरावस्था से ही लक्ष्मी के साथ सरस्वती के प्रसाद से शिक्षा व साहित्यजगत् से उनका सतत्सम्बंध बना रहा और तन, मन, धन से हर क्षेत्र मे प्रशंसनीय योगदान किया। भारत में ही नहीं इटली के विद्वानो ने भी उनकी भूरि–भूरि सराहना की।

सरलता, सज्जनता और स्नेह की प्रतिमूर्ति हैं श्री हजारीमल बाँठिया जी। शोध गोष्ठियो का आयोजन, शोधार्थियों को प्रोत्साहन, विद्वानो से सम्पर्क व सम्मान, पुरास्थलों का निरीक्षण और सुविधानुसार लेखन व प्रकाशन उनके सद्व्यसन हैं जिसके फलस्वरूप बाँठिया जी शिक्षा, संस्कृति व समाज–सेवा के क्षेत्र में दीप–स्तम्भ की भाँति समादृत हैं।

मैं उनके सद्भाव, सहजता, निष्ठा व कर्मठता को नवीन पीढ़ी के लिए अनुकरणीय मानता हूँ और उनका हृदय से सम्मान व अभिनन्दन करता हूँ।

दि० 7-7-95

प्रोफेसर कला व संग्रहालय शास्त्र व
निदेशक, भारत कला भवन,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

मंगल-कामना

जयपुर ता० १६-८-९४

धर्म धरा बीकानेर में जिस पुन्य शाली महानुभाव ने जन्म लिया
बीकानेर के ही रत्न श्री मान् अगरचंद जी नाहटा एवं भंवरलाल जी नाहटा जिनके परिवार के है
धार्मिक भावना के साथ जिनका जीवन साहित्य सेवा एवं समाज सेवा मे ओत–प्रोत है
दान वृति जिनके जीवन को सुगधमय बना रही है

ऐसे निराभिमानी अरिहंत प्रभु के उपासक समाजसेवी श्रीमान् हजारीमल जी बाँठिया को उनकी समाजसे से प्रभावित होकर जो अभिनन्दन ग्रंथ उनके भव्य व्यक्तित्व को उजागर करते हुए समर्पित किया जा रहा है उसके लि हमे बडी खुशी है।

जिनेश्वर प्रभु से प्रार्थना है कि श्री मान् बाँठिया जी धर्म भावना के साथ विशेष प्रकार से समाजसेवा करते रहें। हम उनके दीर्घ एवं मंगलमय जीवन की कामना करते हैं।

ह०
(श्री बुद्धिमुनि जी के शिष्य)
जयानन्दमुनि

स्थापित : १६०५

हिन्दी प्रचारक संस्थान

उत्कृष्ट साहित्य के प्रकाशक
पिशाचमोचन, वाराणसी–२२१०१०

मान्य भाई,

श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह का परिपत्र मिला। हिन्दी प्रचारक पत्रिका में बाँठिया जी का परिचय प्रकाशित कर रहे हैं।

भारत के ऐसे साहित्यिक सपूत का सम्मान कर आप लोग साहित्य जगत को आदर दे रहे हैं।

मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

आपका
ह०
(कृष्णचन्द्र बेरी)

डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल,
महामंत्री, श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति
२७–ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ़।

कोबे (जापान)

प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व के धनी
श्री बाँठिया जी

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री हजारीमल जी बाँठिया का नागरिक अभिनन्दन किया जा रहा है। वास्तव में श्री बाँठिया जी का अभिनन्दन भारतीय संस्कृति का सम्मान है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया बडे मृदु भाषी एव व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। आपने जीवन भर इतिहास के पन्नो मे दबे हुए क्रांतिकारियो, इतिहासकारो व साहित्यकारो की जीवनीयों को प्रकाश मे लाने का प्रयास किया है। पंचाल शोध संस्थान के आप स्तम्भ हैं। कपिल तीर्थ का उद्धार करके आपने जैन शासन की अपूर्व सेवा की है।

इस शुभ अवसर पर उपस्थित होने की मेरी हार्दिक इच्छा है लेकिन विदेश रहने के कारण संभव नहीं जान पडता। मेरी शुभकामनाएं है कि श्री बाँठिया जी दीर्घायु हों और भारतीय संस्कृति की सेवा करते रहें।

(प्रेम चंद संजाती)

स्थायी पता–
रांगड़ी मोहल्ला
बीकानेर (राजस्थान)

शुभकामनाएँ

दीपै वारां देस ज्याँरा साहित जगमगै

मिमझर

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं सांस्कृतिक संस्थान

Rajasthani Language, Literature and Cultural Organization

स्थापित १९८३, पंजीकृत
केन्द्रीय कार्यालय
नेहरू चौक शीतला गेट,
बीकानेर–३३४ ००५

दिशाबोधक डॉ० माधोदास व्यास, अन्नाराम सुदामा, चन्द्रदान चारण, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

२४–४–९५

परम आदरणीय,

डॉ० गिर्राज किशोर जी अग्रवाल,
सादर अभिवादन

आगामी २५ सितम्बर ९५ को आदरणीय श्रीयुत हजारीमल जी बाँठिया का आप श्रीजन द्वारा उनके स्तुत्य एवं श्लाघनीय सुकृत्यों के परिणाम स्वरूप, एवं विशेषकर उनकी राजस्थानी की अटूट एवं निष्ठापूर्ण सेवाओं के उपलक्ष में एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है। यह राजस्थानी एवं राजस्थान के लिए गौरव का विषय है। इस सुकार्य के लिए आप को कोटि–कोटि बधाई। कृपया स्वीकारें।

आप श्रेष्ठ जन प्रवासी होकर भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, और अपनी मिट्टी से जुड़े हुए हैं, यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। इस प्रकार के आयोजनों से आपके प्रवास स्थल के जन–जन तक आप के मूल के उन गुणों एवं विशिष्टताओं को प्रचार–प्रसार मिलेगा जिसके लिए प्रत्येक राजस्थानी अपने आप को गौरवान्वित होने का आभास करेगा। एक बार पुनः आपको कोटि–कोटि बधाई तथा यह आशा की जाती है कि पूरे आयोजन की विस्तृत जानकारी से अवगत कराने की महती अनुकम्पा करेंगे।

आपका
ह०
(अब्दुल वहीद कमल)
महामंत्री

शुभकामना

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि कुछ शुभ–चिंतक मित्र श्री हजारीमल जी बाँठिया की ७१वीं जन्म–जयन्ती के अवसर पर एक अभिनन्दन – ग्रंथ प्रकाशित कर रहे हैं और सम्मानित कर रहे हैं। मैं इस श्रेणी मे आता हूँ या नहीं, मुझे मालूम नहीं– फिर भी इस शुभ अवसर के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्री बाँठिया जी का स्नेह–प्रेम लम्बे समय तक बनाये रखने की शक्ति दे। परिचय के लगभग तीस वर्ष बाद भी श्री बाँठिया जी का एक साधारण साथी के प्रति इतना स्नेह–प्रेम है, यह असाधारण बात है।

उमरावसिंह गर्ग,
४५५२, महावीर बाजार
क्लाथ मार्केट, दिल्ली–६

सुरेन्द्रनाथ सेन बालिका विद्यालय, इण्टर कालेज

मालरोड, कानपुर महानगर - २०८ ००१

दिनाक १७–८–९५

सेवा मे

सचिव,
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति
अलीगढ़।

प्रिय बन्धु

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि आप लोग महान विभूति श्री हजारीमल जी बाँठिया के सम्मान मे एक समारोह का आयोजन करने जा रहे है। श्री बाँठिया जी एक महान, सहृदय, दानी, एव ज्ञानी पुरुष है जिन्होंने जन शिक्षा, धार्मिक कार्यक्रमो एव समाजोत्थान के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मै लम्बी अवधि से उनसे परिचित हूँ। श्री बाँठिया जी की कार्य–पद्धति, सुचारु रूप से परिचालन एव लगन आदि अनुकरणीय है। मै उनके शतायु होने की कामना करता हूँ। आपको मेरी हार्दिक बधाई, कि आपने श्री बाँठिया जी जैसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व के सम्मान मे समारोह आयोजित किया है। मैं आपके इस कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

भवदीय
ह०
(एस० के० सेन०)
सेक्रेट्री

शुभकामनाएं

।। वैश्य समाज अमर रहे ।।

अखिल भारतीय वैश्य महासभा

हाथरस (उ0 प्र0)

दिनांक २६/०६/९५

मान्यवर,

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि श्री हजारीमल जी बाँठिया का ७२वां जन्म दिन मनाने की तैयारियां की जा रही हैं।

अखिल भारतीय वैश्य महासभा की ओर से तथा अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ तथा बधाई। स्वीकार कर कृतज्ञ करें।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आप शतायु हो तथा ईश्वर आपको स्वस्थ व सुखी रखे।

आप हाथरस के तथा समाज के गौरव हैं आपको पुनः अपनी ओर से तथा वैश्य महासभा की ओर से ७२वे जन्म दिन पर बधाई देना अपना कर्तव्य समझता हूँ तथा हर्ष का अनुभव करता हूँ।

धन्यवाद

आपका
प्रेम चन्द अग्रवाल (गोरई वाले), मंत्री

• •

श्री बाँठिया जी

श्री बाँठिया जी से मेरा सम्बन्ध लगभग २२ वर्षों से है। उसके कुछ समय पहले ही [illegible] के लिए आये थे। उस समय कोई खास व्यापार नहीं था। पर वह [illegible]ता, समय के क्षण-क्षण का सदुपयोग एवं उत्साह से कार्य से व्या[illegible]पारी के अलावा, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं लोकहित के [illegible]ये- कपिल अस्पताल की स्थापना, पंचाल शोध संस्थान, औ० [illegible]नपुर में स्थापना, दो बार इटली तथा विदेशों की यात्रा, मारवाड़ी सम्मेलन, [illegible] सम्मेलन, आदि-आदि उनकी बहुमुखी सेवाएँ बहुत बड़ी हैं। इसके साथ ही वह उदारचित, गुप्तदान देना और लोगों की आर्थिक, शारीरिक सेवा करना तथा सदा प्रसन्न रहना उनका स्वभाव है।

चाहे उनका सीधा-सादा रहन-सहन साधारण है पर उनकी सूझ-बूझ एवं बुद्धि इतनी कुशाग्र है कि उन्हें अपने देश में ही नहीं विदेश में भी लोगों को उनसे मिलने की चाह रहती है।

परमात्मा उन्हें शतायु करे और इसी प्रकार देश व समाज की सेवा करते रहें-यही मेरी प्रार्थना है।

दि० ४ अप्रैल १९९५

मुरली मोहन तिवारी
अतिथि सदन
गोविन्द नगर कानपुर

Nikhil Bharat Banga Sahitya Sammelan

निखिल भारत बंगा साहित्य सम्मेलन

(H. O. New Delhi Kali Bari Mandir Marg, New Delhi - 110 001)
KANPUR SHAKHA
(Estd. April 1925 Re-Estd. Aug. 1992)

Date 18.8.95

The Secretary,
Shri Hazari Mull Banthia,
Samman Samaroh Samity,
27A, Saket Colony,
Aligarh (U P.)

Dear Sir,

We are happy to learn that a Samman Samaroh has been arranged for the great religious personality Shri Hazari Mull Banthia, a dedicated soul towards oppressed humanity. His literary works are also well acclaimed in the society

We wish all success to Samaroh.

Yours sincerely,
Sd
(T.Das gupta)
President
NIKHIL BHARAT BANGA SAHITYA SAMMELAN
KANPUR BRANCH

THE HINDU

Madras : Madurai : Coimbatore
Bangalore : Delhi : Hyderabad
Vishakhapatnam.

S. M. SEN GUPTA
CORRESPONDENT
KANPUR

Dated 18-08-95

The Secretary,
Shri Hajari Mull Banthia Samman Samaroh Samiti,
27-A, Saket Colony,
ALIGARH-202 001

Dear Sir,

I am extremely happy to learn that you are going to felicitate a rare personality & philanthropist, 71 year old Shri Hazari Mull Banthia, whose contribution to trade, social organisations, educational institutions is unquestionable. I personally wish him a LONG INNING so that for many many more years to come, the society is able to gain maximum from such a memorable personality.

With best regards,

Yours Sincerely
Sd.
(S.M. SEN GUPTA)
KANPUR
(Senior Journalist)

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

(राजस्थान सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

सौभाग्यसिंह शेखावत
अध्यक्ष
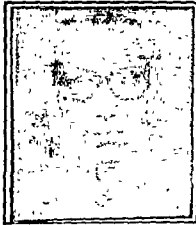
मडावा हाऊस, संसारचन्द्र रोड
जयपुर (राज०) फोन- ३६५३६८

क्रमांक : ४३६/९५

दिनाक १९-८-९५

प्रिय श्री गिर्राज किशोर जी अग्रवाल

आ जाणर घणो हरख हुवो क राजस्थान, राजस्थानी भासा, साहित अर संस्कृति रा लूंठा हेतालु, दानदाता, मोटा समाज सेवी मानेता श्री हजारीमल जी बांठिया रै सम्मान मे अभिनंदन ग्रंथ त्यार करण री योजना चाल रैयी है। बांठिया जी रो सम्मान उणारी जन-सेवा रै ताई पोहप समरपण है।

आदरजोग बांठियाजी जसधणी राजस्थानी साहित महारथी परलोकवासी अगरचंदजी नाहटा रा भाणजा है।

"मामा जिणरा मारका, निबला किम भाणेज" सो बांठियाजी भी जोगा मामा रा जोगा भाणेज है।

जूना राजस्थानी साहित री खोज, सोध, प्रकासण अर उजासण री परम्परा रा आगीवाण, राजस्थान री धरती, जन-मन अर संस्कृति रा पुजारी ईटली देस रा तैस्सीतौरीजी री समाध अर प्रतमा थरपण अर उणा रै जस नै लोक थापी करण रो गरबीलो काम कर्यो है। इण खातर हजारीमलजी नै घणा घणा रंग है।

सम्मान समारोह अर अभिनंदन ग्रंथ री सफलता अर सुफलता री मोकळी मोकळी कामना साथै।

आपरो,
ह०
(सौभाग्यसिंह शेखावत)

श्री गिर्राज किशोर अग्रवाल,
महामंत्री,
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
२३-ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ़- २०२ ००१ (उत्तर प्रदेश)

शुभ कामना संदेश

यह जानकर विशेष प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि सेवा,साधना और संयम की प्रतिमूर्ति महान साधक एवं मनस्वी चिंतक श्री हजारीमल जी बाँठिया का सम्मान आगामी २५ सितम्बर को किया जा रहा है और राष्ट्र और समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता की सेवा में उनके द्वारा जो कार्य किये गये हैं, उनके सम्मान में एक अभिनन्दन ग्रंथ का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री बाँठिया जी एक व्यक्ति ही नहीं अपितु वह एक संस्था हैं। वह एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें उनका सक्रिय योगदान न रहा हो। साहित्य, प्रकाशन, उद्योग, संस्कृति और पुरातत्व में उनकी सेवाएँ चिरस्मरणीय ही नहीं रहेंगी अपितु भावी पीढ़ी के लिए उनकी सेवाएँ और कृतियाँ प्रेरणा की स्रोत रहेगी।

मैं माननीय श्री हजारीमल जी बाँठिया के दीर्घ जीवन की मंगल-कामना करते हुए वीर भगवान से यह विनती करता हूँ कि उनका जीवन सुख, सौरभ और समृद्धि से परिपूर्ण रहे।

जे० एस० झवेरी
अध्यक्ष— श्री जैन श्वेताम्बर महासभा
उत्तर प्रदेश

CROWN-T.V. HOUSE
19-A, Ansari Road
Daryaganj
NewDelhi-11002
11 August, 1995

श्रीमान् गिर्राज किशोर अग्रवाल,

सादर जय जिनेन्द्र। आपका पत्र मिला। कंवरसा हजारीमल जी बाँठिया सम्मान समारोह के लिए मेरी हार्दिक शुभकामना। बाँठिया जी के सम्मान पर पूरा-पूरा जैन समाज गौरवान्वित है। बाँठिया जी की तरह पूर्ण समर्पित व्यक्तित्व विरले ही होते हैं। उन्होंने जो जैन समाज के लिए तन, मन, धन से सेवा की है वह भविष्य की आने वाली पीढ़ी के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण होगा। मैं और मेरा परिवार तहे दिल से इस आयोजन के लिए अपनी हार्दिक शुभेच्छा व्यक्त कर रहा हूँ।

धन्यवाद

आपका
(शिखर चन्द मिन्नी)

१३-७-९५
१, नूरमल लोहिया लेन,
कलकत्ता - ७

रहे बाँठिया कुल के भ्राता
मन लो स्नेह अपार
गढ़े रत्न भू के प्रिय खोजे
किया बड़ा उपकार
उस प्रसिद्ध पांचाल प्रान्त में
कर ऐतिह्य उदार
मेरे मन मन्दिर में छाये
लें मेरा आभार।।

आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी
त्रिवेदीनगर हाथरस–२०४१०१
फोन– २०५३६
४–६–१९९२

शुभकामना

सौम्य हैं सुधी है ये सेवक समाज के हैं
पूर्व कृत सुकृतो का पा रहे हैं पुण्यफल।
दीन दुखियों को घन दानी दान देते सदा
अन्तर में इनके है कपट न कोई छल।
मन से सशक्त और तन से मनोहर ये,
रहते बनाये सदा उच्च ये मन बल।
होवे चिरजीवी यश वैभव बढ़ाते हुए,
अग्रज हमारे ये बाँठिया हजारीमल।

कुमुदेश वाजपेयी
१२५/एच–१, किदवई नगर
कानपुर
फोन – २७७८३३

ब्रज के तिलक भाल

(१)

ऐहो गोपाल रवि, जो है जगदीश कवि,
सोहै ब्रजचन्द छवि–छाँहि सुखदाई है।
तुलसी के दास, सूर– केशव की आस रास,
ब्रज की ब्रजवाणी की रास रसिकाई है।।
"नीरव" जू बासन्ती पौन– गौन –भौन बहै,
मौरन की भीर द्वार दौरि–दौरि आई है।
लाडली के लाल–लाल बाँठिया हजारीलाल,
गौर–स्याम, दीप दृग द्वारिका सजाई है।।

(२)

मंजुल प्रभात, नव अंकित कनक कान्ति
गन्ध–वन्ध–छन्द राग–रंग बरसात है।
कामिनी सरद की, रस रागिनी सरद की
चांदनी सरद की मन मन्द मुसकात है।।
"नीरव" जू अचल सो चंचल सी चाल चलै,
माटी रजपूती सो सपूती सरसात है।
ब्रज के तिलक भाल, बाँठिया हजारीलाल
उस हो हजारी हो हजारी दिन रात है।।

गिरिराज किशोर "नीरव"
हाथरस

अनुहारी तिहारी कों हों बलिहारी

कवि एवं लेखक डॉ० जगदीश सवानिया
महामंत्री ब्रजकला केन्द्र, हाथरस

(१)

बहु बोध अबोधनु बोध दये,
'पचाल शोध' सुधि की सुधिया में।
यश कीर्ति 'हजारीमलजू' की,
ब्रजवासी उचारी [illegible] लौं बखाने।
जग जाने हू [illegible] दिखाने भये,
[illegible]
देश [illegible] मान [illegible],
[illegible]।।

आशीर्वाद

पुरा बीकानेरे जिनमत सुधा–सिक्त सरले,
प्रफुल्लस्यागारे "मगन जननी मोद– सदने"।
प्रसूतोऽसौ बालः जगति प्रथिते 'ओसवलिते',
हजारीमल्लोऽयं भवतु चिरजीवी जनप्रियः॥१॥

महादानी धीरो रसिक प्रिय वीरः प्रमुदित,
समाजस्याह्लादं वहति विपुलं लोक विदित।
पुरातत्वान्वेषी भरत भुवि सेवारत मति,
हजारीमल्लोऽय भवतु चिरजीवी जनप्रियः॥२॥

बुधोऽय धर्मात्मा वर–वचन कार्येषु निपुणो,
यशस्वी साहित्ये प्रणत जन–पीडा प्रशमने।
कृती विश्रब्धोऽय ह्यनुसरति पाचाल–प्रतिभा,
हजारीमल्लोऽय भवतु चिरजीवी जन प्रिय॥३॥

जगल्लीलालोलं नवल युग पीडा विरहित,
महोत्साह धीर विबुध–बुध सेवासुनिरत।
शुभाशीर्भिन्ये 'प्रबल पुरुषार्थी फलति वै'
हजारीमल्लोऽयं भवतु चिरजीवी जनप्रियः॥४॥

सदा शैलन्नादौ वर विपणिकार्येषु निपुण,
सुवाठीना रूप भजति सरल लोक विदित।
द्विजेन्द्रोऽय नूंन वदति नलिनीशोऽपि मुदित,
हजारीमल्लोऽय भवतु चिरजीवी जनप्रियः॥५॥

(डॉ० आचार्य नलिनीश त्रिगुणायत, फर्रुखाबाद)

मंगल कामना

श्री हजारीमल जी बाँठिया का हम वन्दन करते है।
है आनन्द अपार हृदय मे भाव–भावना भरते है॥
सत्य शिव सुन्दरतम् पावन उन्नति रहे आपकी चेरी।
और विजय का तूर्य बजाती मलयानिल दे आगे फेरी॥
निशागन्धा नित यशगन्धा बन गली–गली मे सौरभ बाँटे।
जिओ हजारों साल यही है परम प्रभू से विनती मेरी॥

डॉ० वीरेन्द्र तरुण   हाथरस–२०४१०१

गुदड़ी रो लाल

गुदड़ी रो लाल!
कुळ रो दिवलो बाँठियो
नाँव हजारी मल्ल,
कथनी करणी एक सी
करै न थोथी गल्ल।

मायड भासा रो भगत
तू लाडेसर पूत,
कठै पारखी कर सकै
इण हीरे री कूत?

ठौड़ ठौड़ ओ थरपिया
सुरसत रा अस्थान,
इसड़ो नर गौरव करै
रूड़ो राजस्थान।

टैसीटोरी रो करयो
मोटो विन्द बखाण,
आदरियो भारत विना
इटली में वन मान।

आशीस् पूरा करै
जीवण रा सौ साल,
धन बीकाणो जलमियो
ओ गुदड़ी रो लाल।

राजस्थानी भासा रा राष्ट्रकवि
कन्हैया लाल सेठिया,
[illegible]
21-8-94

ज्ञान क्रियाभ्याम् मोक्षः

।। वीरपुत्र श्रीमद् जिन आनन्दसागरसूरिः सदगुरुभ्यो नमः ।।
।। सकल पदारथ है जग मांही पुण्यवान को दुर्लभ नांही ।।

आचार्य जिन उदयसागर सूरिः

सैलाना, ७-७-९५
अ०सु०-९ शुक्र

श्री हजारीमल बॉठिया सम्मान समारोह समिति द्वारा एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। ग्रथ मे कई विद्वानो के लेख होंगे। उनको पढकर मुमुक्षुओ को मार्ग-दर्शन प्राप्त होगा और प्रकाशक का परिश्रम सफल होगा। इससे हमें प्रसन्नता है। यही आशीर्वाद।

हितेच्छु – जिन उदय सागर सूरि
सैलाना ४५७५५० (म०प्र०)
(रतलाम)

ॲड्रेश–
२७-ए. साकेत कालोनी, सुरेन्द्र नगर
अलीगढ– २०२००१
(उ०प्र०)

(२)

हजारी विजारी 'हजारी' रहें,
जिन कीन हजारनु दीन हजारी।
स्वारथ में चित नांहि रमै,
परमारथ में नित रहत अगारी।।
पारथ सौ रथ जीवन के पथ,
भाजत में रत 'शोध' विहारी।
'बाँठिया वश' 'हजारी' सुनौ,
अनुहारी तिहारी को हों बलिहारी।।

शशि के समान केधों सूर के समान हैं

दीनन हितैषी वे सहारा के सहारे बनें,
जात देश धर्म हित समर्पित प्रान हैं।
शर्मा कवि शांति अहिंसा व्रतधारी भारी,
सत के पुजारी भव्य गुणी हू महान हैं।
साहित्य व्योपार की प्रगति करी रैन दिन,
समता की उर बीच भावना प्रधान है।।
सकल समाज को हजारीमल बाँठिया जी
शशि के समान कैधो सूर के समान है।

हरि शर्मा 'उस्ताद'
चूना कंडा, हाथरस

रंग हजारी बाँठियो

डॉ० मनोहर शर्मा

बीकानेर सुहावणो, नर रतनां री खाण।
मल्ल हजारी बाँठियो, कीरत रो कमठाण।। १ ।।
लछमी-सुत, सारद-तनय, सदा धरम में ध्यान।
दान मान- सम्मान हित, ऊंचो कीरत-मान।। २ ।।
विमळ हियो, वाणी विमळ, विमळ सकल व्यवहार।
धन्य हजारी बाँठियो, पाळै पर-उपकार।। ३ ।।
मायाजी रै मारगां, चालै सदा सुजान।
गुरु मानै भालेल नित, एक-रूप मतिमान।। ४ ।।
भारत-धारा री अटळ, सुणै सार सदेस।
रात दिवस धारै हियै सतां रो उपदेस।। ५ ।।
राम-कथा भागीरथी, पुन्न-रूप साकार।
"तैस्सीतोरी" ग्रन्थ लिखी लोक-परम आभार।। ६ ।।
परदेसी विद्वान रो, गुण जाण्यो मतिमान।
कीरत री ऊंची ध्वजा, फहरी राजस्थान।। ७ ।।
राजस्थानी रो भगत, निरमळ ग्यान-निधान।
रंग हजारी बाँठियो, आरज- कुळ अभिमान।। ८ ।।

श्रद्धा-सुमन

किया लोक उपकार घनेरा
जहाँ रात थी किया सवेरा
व्यक्तित्व आपका विश्व विदित हो
आप सुगंधित हो ज्यों चंदन
सतत् सक्रिय रहें हो शतायु जीवन
तुलसी-सा यश मिले सर्वत्र हो अभिनन्दन

अरुण सागर
महाकवि काली मार्ग, उरई

देदीप्यमान सितारा

छेड़ा राग प्रकृति ने अनुपम जीवन सरगम में,
रंग-बिरंगे पुष्प खिले हैं जीवन-उपवन में।
एक पुष्प ने किया महक से सुरभित बगिया को,
शब्द समर्पित आज हजारीमल्ल बाँठिया को।
सागर-सी गहराई जैसा धीर आपका मन,
कुसुमों की कोमलता से आप्लावित है हर क्षण।
धर्म भाव से किये आपने कितने ही सत्कर्म,
तैस्सीतोरी का सम्मान इटली को भी गर्व।
लय गम्भीर भावना की अरु सदाचार व गीत,
जुड़ा धरा से सदा आपके जीवन का संगीत।
आनन में है तेज सूर्य सा शशि जैसी निर्मलता,
कपिल का उद्धार आपकी भक्ति भाव प्रांजलता।
हृदय भाव से भरा हुआ है जीवन में निश्छलता,
ज्ञान भाव में बहती है जिज्ञासा की शुचि सरिता।
जीवन की औदात्य महक फैली समस्त उपवन में,
बने प्रेरणा स्रोत आप निज सामाजिक जीवन में।
दीप्तिमान हैं आप कि जैसे नभ का एक सितारा,
नत मस्तक है आज सम्पूर्ण परिवार हमारा।

[illegible]
[illegible]

डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल,
महामंत्री,
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
२७–ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ़– २०२ ००१ (उ० प्र०)

प्रिय डॉ० अग्रवाल,

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि राजस्थानी समाज के वरिष्ठ समाजसेवी एवं बहुप्रतिभा के धनी आदरणीय श्री हजारीमल जी बाँठिया का अभिनन्दन दिनांक २५ सितम्बर १९९५ को समारोह–पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। आदरणीय बाँठिया जी ने अनेकानेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है तथा मार्ग–दर्शन भी किया है।

आदरणीय बाँठिया जी का अभिनन्दन उनके द्वारा किये गये कार्यों को मान्यता तथा सम्मान देना है और उनका अभिनन्दन कर हमे भी गौरवान्वित होने का अवसर मिलेगा।

इस अवसर पर मैं आदरणीय बाँठिया जी को नमन् करता हूँ और उनके प्रति सम्मान व्यक्त करता हूँ।

सधन्यवाद

दिनांक ३०–०८–९५

आपका,

(हनुमान सरावगी)
कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष (पूर्व)
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

स्वस्तिक हाउस, अपर बाजार,
राँची– ८३४००१

□□□

"पिताश्री के जन्मदिन पर"

श्रीमती विजय नाहर, मौमे

अरज है "जीसा"
यह है बिटिया की पाती
इस जीवन दिये की,
तुम्हीं तो हो बाती ।
इस बगिया के माली
इस नैया के माँझी
हर दर्द व खुशी में
रहे तुम हो साँझी ॥

सौम्य शान्त पावन
जैसे चन्दन व रोली
मिला तुमसे सब कुछ
भरी मन की झोली ।
शतायु हो तुम
यही कामना है
उस परमपिता से
यही प्रार्थना है ॥

जब भी मैके मैं आऊँ
मिले आशीर्वचन तुम्हारा
रहे अटूट अनमोल
यह प्रेम-बन्धन हमारा ।
हर जन्म में मिले
यही घर सदा
तुम हो मेरे पिता
मैं तुम्हारी सुता ॥

❀ ❀ ❀

PRAKASH GROUP OF COMPANIES

PRAKESH STEEL
PRAKASH ENTERPRISES
PRAKASH STEELAGE PVT. LTD.
CHANDAN & KANUGO LAND DEVELOPERS

SALES OFFICE
89 C. P. TANK ROAD,
BOMBAY - 400 004

ADMN OFFICE
Unit No 11, 13th Khetwadi lane,
Bombay - 400 004
Tel 3859431, 3829432 Fax. 3872825

मान्यवर महोदय,

आपका निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ।
इस कृपा के लिए कोटिशः धन्यवाद।
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान-समारोह के अवसर पर
हमारी
हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकृत हों।

शुभाकांक्षी
प्रकाश सी. कानूगो

तिरुपति टैक्सनिट लिमिटेड

Tel. :7779027, 7534671, 736317
734641, 7523291 to 94
Fax :0091-011-7532283
Telex :031-61393 TITI IN
Gram :TECIND

TIRUPATHI TEXKNIT LTD.

Registerd Office
880, EAST PARK ROAD
OPP. AJMAL KHAN PARK
POST BOX NO. 2706
KAROL BAGH, NEW DELHI-110 005
(INDIA)

August 29, 1995

Shree Hazarimal Banthia Samman Samaroh Samitee
27-A, Saket Colony
ALIGARH - 202 001

Dear Sir

It is heartening to note that Shree Hazarimal Ji Banthia will be completing 71 years of his age on 24th September, 1995 and Shree Hazarimal Banthia Samman Samaroh Samitee is celebratng this in a befitting manner.

The services rendered by Shree Hazarimal Ji Banthia to the Society and Rajasthani Sahitya are well known to one and all. I send my heartiest congratulations and wish the function every success.

Thanking you,

Cordially yours,
For TIRUPATHI TEXKNIT LTD.

Rikhab C. Jain

श्रीमती रतनप्रभा राखवाल

परम पूज्य श्रद्धास्पद
गरिमामय व्यक्तित्त्व के धनी-
श्रीमान् हजारीमल जी साहिब बाँठिया
के
श्री-चरणों में समर्पित
सम्मान-पुष्प

श्री हेमचन्द राखवाल

परिवार बाँठिया कुल चमका,
श्री हजारीमल के शुभ कर्मों से।
सेवा व्रत दृढ संकल्प किया,
तन–मन–धन अर्पण करते हुये।

श्रीमती मगन् बाई जननी,
कृत–कार्य हुई कर्मण्य बना।
वह दूध नहीं था अमृत था,
वरदान दिया सत् बुद्धि का।

भारतमाता के नौनिहाल,
सम्मान मिला कर्मठता से।
उन्नति के ऊँचे शिखर चढे,
दीर्घायु कामना करते हैं।

वदन–अभिनन्दन करते हैं,
आनन्द आप्लावित अंतर से।
जिस बाग का तुम जैसा माली,
उस चमन में सदा बहार रहे।

रतन प्रभा राखवाल
पत्नी–श्री हेमचन्द राखवाल,
१४२१, चांदनी चौक,
दिल्ली

डालचन्द्र जैन (पूर्व सासद)
पूर्व कोषाध्यक्ष
(म0 प्र0 कांग्रेस कमेटी [ई] भोपाल)
चमेली चौक, सागर

फोन :कार्यालय– 22349, 22037
निवास– 23701, 22789

डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल,
महामंत्री,
श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
अलीगढ

आपका पत्र दिनांक ६.६.६४ का प्राप्त हुआ, धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री बाँठिया जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्मान में जो अभिनन्दन–ग्रंथ प्रकाशित कराने की योजना का निर्णय लिया है, वह समसामयिक है।

गोष्ठी में उपस्थित सभी महानुभावों को हमारा साधुवाद।

श्री हजारीमल जी बाँठिया सरल व्यक्तित्व, सात्विक प्रवृत्ति के धनी, रसिक–साहित्यकार एवं समाज सेवी हैं। जो उनसे एक बार मिलता है उसके ऊपर बाँठिया जी अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं।

शुभकामनाओं सहित।

दिनांक १४–६–६४

भवदीय
ह०
(डालचन्द जैन)

* * *

म्हारो लक्ष्य नारी जागृति

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन उ० प्र०

उत्तर प्रदेश ईकाई (वाराणसी)

शुभकामनाएँ

श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
२७-ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ़-२०२ ००१

माननीय श्री अग्रवाल जी,

अत्यन्त हर्ष व गौरव का विषय है कि सुप्रसिद्ध समाज सेवी, संस्कृति प्रिय, साहित्य प्रेमी श्री हजारीमल बाँठिया जी को उनकी विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में दो अभिनन्दन ग्रंथों द्वारा सम्मानित किया जा रहा है।

श्री बाँठिया जी एक समर्पित उद्योगपति, एक स्मरणीय साहित्यिक कार्यकर्ता व लेखक एवं सामाजिक कार्यों के सफल संचालक के अतिरिक्त धार्मिक तथा आध्यात्मिक संस्थाओं के संस्थापक भी रहे हैं।

सम्मान समारोह समिति के सदस्यों को मेरी हार्दिक बधाई।

कार्यक्रम सफल होगा इसी शुभकामना के साथ,

दिनांक ३१ अगस्त ९५

श्रद्धेया,

श्रीमती ललिता मोदी
(प्रांतीय अध्यक्षा)

❀ ❀ ❀

Hajarimaljisahab Banthia for his benevolent career and sincere efforts in the cause of the community and religion. I send my very best wishes for his happy, healthy and purposeful life, so that he completes the century.

Kindly convey my apologies to the members of the Executive Committee of Veerayatan.

Yours sincerely,

(N.K.FIRODIA)

Shri T.R. Daga
2. Ashutosh Mukherjee Road,
Calcutta - 700 020

HARAKH CHAND NAHATA
PRESIDENT
AKHIL BHARTIYA SHRI JAIN SHWETAMBER
KHARTARGACHHA MAHASANGH

537, KATRA NEEL
CHANDNI CHOWK
DELHI - 110006
PH.: 251-0191,252-7983
FAX : 338-1735

दिनांक २४ सितम्बर १९९५

श्रीमान संयोजक,
श्री हजारीमल जी बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

मान्यवर,
मेरे लिए यह गर्व मिश्रित प्रसन्नता का विषय है कि मेरे फुफेरे भाई एवं वरिष्ठ समाजसेवी, उदारमना, शोधदर्शी एवं साहित्य-प्रेमी श्री हजारीमल जी बाँठिया का अभिनन्दन समारोह कानपुर में भव्य स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। मैं स्वयं इस आह्लादकारी प्रसंग पर उपस्थित होने के स्वप्न संजोये हुए था एवं तद्विषयक आरक्षण भी करा चुका था। परन्तु कई वर्षों के प्रयासों की परिणति के रूप में भारत सरकार ने हमारी सांस्कृतिक धरोहर तथा ज्ञान भण्डार के संरक्षण व संवर्द्धन हेतु "प्राकृत अकादमी" की स्थापना के संदर्भ में विचार-विमर्श के लिए २८ सितम्बर को एक आवश्यक बैठक आहूत की है जिसमें मेरी उपस्थिति आवश्यक है। इसी तरह खरतरगच्छ के उत्थान हेतु नयी दिल्ली में प्रथम बार आयोजित नव-दिवसीय माता अम्बिका के महापूजन विधान के प्रथम दिन महासंघ के अध्यक्ष की हैसियत से मेरी उपस्थिति अनिवार्य-सी है। इस प्रकार दायित्वों की सम्पूर्ति हेतु दिल्ली में मेरी उपस्थिति अनिवार्य होने के कारण मैं सशरीर इस सम्मान समारोह में उपस्थित नहीं रह पाऊँगा, जिसका मुझे अन्तर्मन से खेद है। यह अभिनन्दन समारोह उनकी अनगिनत उपलब्धियों की सामाजिक स्वीकारोक्ति का पर्याय बने तथा नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बने। मैं महासंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बाँठिया जी का स्वयं, परिवार के सदस्यों तथा महासंघ की ओर से हार्दिक अभिवादन करता हूँ, तथा ईश्वर

से प्रार्थना करता हूँ कि उनको शतायु करे ताकि वे समाज तथा जिनशासन को अपनी अमूल्य सेवाये प्रदान करते सके।

इस भव्य आयोजन के पूर्ण साफल्य की कामनाओ एव शुभाशसाओ के साथ,

जिन शासन भक्त,

(हरख चन्द नाहटा)

❖ ❖ ❖

Rajendrakumar Shrimal

Phone 49832

62, GANGWAL PARK
MOTIDUNGARI ROAD.
JAIPUR-302004 (INDIA)
Date : 23-09-95

परम आदरणीय बाठिया सा,

सादर प्रणाम। पत्र मिला, हार्दिक प्रसन्नता हुई। यह सम्मान पहले होता तो ज्यादा अच्छा रहत मै भी इस समारोह मे सम्मिलित होकर मेरे भाई का सम्मान समारोह देखता। दु ख के साथ लिखना पडता है कि अस्वस्थ के कारण मै इस पुनीत कार्य मे सम्मिलित न हो सकूँगा।

आपने जिन्दगी भर जो गच्छ समाज की निरन्तर सेवाएँ की है वह वास्तव मे सराहनीय व प्रशसनी है, मै हृदय से इसका अनुमोदन करता हूँ।

मै श्री गुरुदेव जी महाराज से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको शतायु बनावे और आप मे इतनी श प्रदान करे कि भविष्य मे भी आप इसी तरह समाज-सेवा मे सलग्न रहे।

इन्ही भावनाओ से प्रेरित होकर

राजेन्द्र कुम

समारोह के समाचार भिजवाने की कृपा करेगे।

G. C. Jai

४/६/९५

श्रीमान बी० आर० कुम्भट जी

सादर नमस्कार,

आपका दिनाक ३१/७/९५ का पत्र यथा समय प्राप्त हुआ। पत्रोत्तर देने मे विलम्ब हुआ अत क्षमा-प्रार्थी हूँ

आदरणीय श्रीमान हजारीमल जी सा बांठिया का सम्मान समारोह दिनाक २४/६/९५ को कानपुर मे आयोजि

से प्रार्थना करता हूँ कि उनको शतायु करे ताकि वे समाज तथा जिनशासन को अपनी अमूल्य सेवाये प्रदान करते रह सके।
इस भव्य आयोजन के पूर्ण साफल्य की कामनाओं एव शुभाशंसाओ के साथ,

जिन शासन भक्त,

(हरख चन्द नाहटा)

※ ※ ※

Rajendrakumar Shrimal

Phone · 49832

62, GANGWAL PARK
MOTIDUNGARI ROAD,
JAIPUR-302004 (INDIA)
Date . 23-09-95

परम आदरणीय बांठिया सा

सादर प्रणाम। पत्र मिला हार्दिक प्रसन्नता हुई। यह सम्मान पहले होता तो ज्यादा अच्छा रहता। मैं भी इस समारोह में सम्मिलित होकर मेरे भाई का सम्मान समारोह देखता। दु:ख के साथ लिखना पड़ता है कि अस्वस्थता के कारण मैं इस पुनीत कार्य मे सम्मिलित न हो सकूँगा।

आपने जिन्दगी भर जो गच्छ समाज की निरन्तर सेवाएँ की है वह वास्तव मे सराहनीय व प्रशंसनीय है, मैं हृदय से इसका अनुमोदन करता हूँ।

मैं श्री गुरुदेव जी महाराज से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको शतायु बनावे और आप में इतनी शक्ति प्रदान करे कि भविष्य में भी आप इसी तरह समाज-सेवा में संलग्न रहे।

इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर

राजेन्द्र कुमार

समारोह के समाचार भिजवाने की कृपा करेंगे।

G. C. Jain

४/९/९५

श्रीमान बी० आर० कुम्भट जी
सादर नमस्कार,
आपका दिनांक ३१/७/९५ का पत्र यथा समय प्राप्त हुआ। पत्रोत्तर देने में विलम्ब हुआ अतः क्षमा-प्रार्थी हूँ।
आदरणीय श्रीमान हजारीमल जी सा बांठिया का सम्मान समारोह दिनांक २५/९/९५ को कानपुर में आयोजित

Hajarimaljisahab Banthia for his benevolent career and sincere efforts in the cause of the community and religion. I send my very best wishes for his happy, healthy and purposeful life, so that he completes the century.

Kindly convey my apologies to the members of the Executive Committee of Veerayatan.

Yours sincerely,

(N.K.FIRODIA)

Shri T.R. Daga
2, Ashutosh Mukherjee Road,
Calcutta - 700 020

HARAKH CHAND NAHATA
PRESIDENT
AKHIL BHARTIYA SHRI JAIN SHWETAMBER
KHARTARGACHHA MAHASANGH

537, KATRA NEEL
CHANDNI CHOWK
DELHI - 110006
PH.: 251-0191,252-7803
FAX : 338-1735

दिनांक २४ सितम्बर, १९९५

श्रीमान संयोजक
श्री हजारीमल जी बाँठिया सम्मान समारोह समिति,
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

मान्यवर,
मेरे लिए यह गर्व मिश्रित प्रसन्नता का विषय है कि मेरे फुफेरे भाई एवं वरिष्ठ समाजसेवी, उदारमना, शिक्षा एवं साहित्य-प्रेमी श्री हजारीमल जी बाँठिया का अभिनन्दन समारोह कानपुर में भव्य स्तर पर आयोजित किया जा रहा है; मैं स्वयं इस आह्लादकारी प्रसंग पर उपस्थित होने के स्वप्न संजोये हुए था एवं तद्विषयक व्यवस्थायें भी कर चुका था। परन्तु कई वर्षों के प्रयासों की परिणति के रूप में भारत सरकार ने हमारी सांस्कृतिक धरोहर तथा प्राकृत भाषा के संरक्षण व संवर्द्धन हेतु "प्राकृत अकादमी" की स्थापना के संदर्भ में विचार-विमर्श के लिए २५ सितम्बर को एक उच्चस्तरीय बैठक आहूत की है जिसमें मेरी उपस्थिति आवश्यक है। इसी तरह खरतरगच्छ के उत्थान हेतु यहीं दिल्ली में प्रथम बार आयोजित नव-दिवसीय माता अम्बिका के महापूजन विधान के प्रथम दिन महासंघ के अध्यक्ष की हैसियत से मेरी उपस्थिति अनिवार्य-सी है। इन गुरुतर दायित्वों की सम्पूर्ति हेतु दिल्ली में मेरी उपस्थिति अपरिहार्य होने के कारण मैं कानपुर इस सम्मान समारोह में उपस्थित नहीं रह पाऊँगा, जिसका मुझे अन्तर्हृदय से खेद है। यह अभिनन्दन समारोह उनकी सभी उपलब्धियों की सामाजिक स्वीकारोक्ति का प्रतीक बने तथा नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बने। मैं महासंघ की ओर से उदारमना श्री बाँठिया जी का स्वयं, परिवार के सदस्यों तथा महासंघ की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ, तथा ईश्वर

डॉ0 राकेश तिवारी
निदेशक

फोन : कार्यालय – २४३०४५
आवास – २३८८३०
अर्द्ध शा पत्र सं० . १५६३/।।४८/६५
उ० प्र० राज्य पुरातत्व सगठन
रोशन–उद्–दौला कोठी कैसरबाग,
लखनऊ – २२६०१८

दिनांक २१ सितम्बर १९९५

प्रिय महोदय !

श्री हजारीमल बाँठिया के ७२ वे जन्म दिवस–समारोह के अवसर पर आयोजित अभिनन्दन एव सम्मान समारोह से सम्बधित निमत्रण प्राप्त हुआ। कृपया इस मगल अवसर पर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ स्वीकार करे।

सादर

भवदीय
(राकेश तिवारी)

* * *

सबके प्रिय सबके हितकारी
: श्री हजारी मल बाँठिया जी :

प्रो० रमेश तिवारी "विराम"

संसार–सागर मे
जन्मते हैं असख्य व्यक्ति
जो इतिहास को
केवल पढते हैं,
किन्तु गिने–चुने मोती
इस संसार–सागर मे
ऐसे भी होते हैं–
जो नया इतिहास गढते हैं ।

लक्ष्मीपुत्र होगे अनगिन
किन्तु लक्ष्मीपुत्र होकर
सरस्वती की सेवा में
विनम्रता के साथ
तन–धन और समय
अर्पित करने वाले
होते हैं विरले ही....

किया है। जानकर अति प्रसन्नता हुई।
सम्मान समारोह की सफलता की हार्दिक मंगल कामना करता हूँ।
इस मगलमय अवसर पर मैं वीर प्रभु से उनके दीर्घायु, यशस्वी होने की प्रार्थना करता हूँ।
रायपुर में परम पूज्य वाणी भूषण संस्कार भारती प्रीति सुधा जी म० सा० आदि ठाणा १४ का चातुर्मास चल रहा है। चातुर्मास समिति का अध्यक्ष होने के नाते मेरा रायपुर से बाहर जाना सम्भव नहीं लगता है [illegible] चाहता हूँ।
समारोह की सफलता की शुभकामनाओ के साथ।

आपका
घेवरचन्द जैन

❋ ❋ ❋

G. C. Jain
B. Com., F.C.A.

८/६/९५

आदरणीय श्री हजारीमल जी सा. बाँठिया
कानपुर

सादर प्रणाम

दिनाक २५/६/९५ को कानपुर मे आपका जन्मदिन अभिनन्दन के साथ मनाया जा रहा है। [illegible] हुई।

आपने अपने कर्तव्यमय जीवन मे समाज की एव साहित्य की बहुमुखी सेवा की है, उनकी दृष्टि से [illegible] यह सम्मान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आपने अपनी कर्तव्यनिष्ठा, सच्चरित्रता एव विनयशीलता के कारण भारत के जैन एव अजैन समाज मे [illegible] लोकप्रियता प्राप्त की है यह सौभाग्य की बात है।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन ग्रंथ से नई पीढ़ी को अनुकरण एव [illegible] हो सकेगी।

मै इस मगलमय जन्म महोत्सव पर आदराञ्जली भेंट करते हुए [illegible] होने की शुभकामना [illegible] हूँ।

विनीत
घेवरचन्द जैन

☆ ☆ ☆

साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था
स्थापित – १९५९ ई०

सम्पर्क : अनुरंजिका आश्रम
हटिया वान बाजार, कानपुर – १

दिनांक २४/६/९५

प्रशस्ति - छंद

भाग्य से लक्ष्मी–सरस्वती दोनों से पाये हुये हक बाँठिया जी हैं।
भारती के पद भक्तो के सुष्ठु सुकर्म के नायक बाँठिया जी हैं।
उज्ज्वल अतरा – प्रज्ञा के हैं गुण – स्नेह के दर्शक बाँठिया जी हैं।
पाचाल शोध संस्थान द्वारा हिन्दी के समुत्कर्षक बाँठिया जी हैं।

वीरेश कात्यायन

ООО

शुभकामनाएँ - बधाई

आपने जीवन मे बहुत ही श्रेष्ठ सामाजिक एव सांस्कृतिक कार्य किया है। आपका यह अभिनन्दन वास्तव में प्रशंसनीय है। ईश्वर आपको शतायु प्रदान कर समाज का उपकार साधित करे।

६५ ब्रह्मानन्द नगर कालोनी, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

डॉ० जयन्ती भट्टाचार्य

श्री हजारीमल बाँठिया ने
अपनी कर्मठता–सेवा
और सामाजिक संचेतना से
गढ़ा है नया इतिहास___

कपिल में
उनकी कीर्ति–पताका
फहराती है___
टेस्सीटोरी की समाधि
उनकी उदारता है ।
पचाल शोध संस्थान
उनके पुरातत्व–प्रेम
का परिचायक है.

उनका सहज–स्नेही व्यक्तित्व
अनेक समारोहों का नायक है.
उसी तरह हिमालय से जैसे
अलकनंदा उतरती है.
विनम्र आतिथ्य भावना
उनके व्यक्तित्व से बहती है.

नाम से "हजारीमल"
और काम से "करोड़ीमल"
मेरे बड़े भइया बाँठिया जी की
जीवन–गाथा है सबसे न्यारी..
शतायु हो–सदा करें समाजसेवा
प्रभु उन्हें बनाये रखे
सबके प्रिय सबके हितकारी ।

अरुण नागर

मन्त्री
उ०प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन (लखनऊ)

५३, महाकवि भारती मार्ग
उरई – २८५००१
दिनांक – ११-६-९५

हर पल काम अविराम औ आराम – राम,
जागृत – सुरुचि राम रमते महेश है।।
रीति – प्रीति पोषक, उद्घोषक अधिकारी,
मन के विकार दूर करते गणेश है।।
लगन के भगीरथ, सुकर्म के कुबेर बन,
बाँकी गति मति तन – मन से सुरेश है।।
ठिठकी आस्थायें भाव – भूमि भारती में मन,
याज्ञवल्क्य ऋषि से समर्पित स्वदेश है।।

● ● ●

संस्मरण

आपमे कार्य करने के लिए 'हजार पहलवानों' का बल है, इसीलिए आपको सभी सुहृद 'हजारीमल' कहते हैं। आप दूसरों को उदार हस्त से बाँटते हुए नहीं अघाते, इसी लिए आप 'बाँठिया' हैं। समाज सम्मानीय का सम्मान करके अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन करता है। भगवान विश्वनाथ आपको स्वस्थ एवं लम्बा आयुष्य, सब प्रकार की समृद्धि, यश, सौख्य एवं 'पञ्चाल' को समुन्नत करने के लिए वरदान सदैव वितरित करते रहे।

पुन अभिनन्दन एवं बधाई।

सी. के. ९/१३, भौंसला मन्दिर,
वाराणसी

– श्री पु. प्रेमी

आपको इस सम्मान पर हार्दिक बधाई।

विनोद कुमार जैन, महोबा
अशोक गौड़, हाथरस
कमलसिंह रामपुरिया, कलकत्ता
जगन्नाथ मदनलाल, इलाहाबाद
बसन्ती लाल जैन, नीमच

Wishing the Function every sucsess

– Kanhaiyalal Sethia, Calcutta

Congratulations on the Distinction Conferred on you

– Deepchand Nahta, Calcutta
– Mahendra Kumar

"Many Happy returns of the Day"

-- Sanwal Ram, Lala, Jai chand, Punam, Bikaner

श्री हजारीमल बाँठिया : चहुँमुखी व्यक्तित्व

□ महोपाध्याय विनयसागर
निदेशक
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर।

मुझे यह जानकर आन्तरिक प्रसन्नता हुई कि श्री हजारीमल जी बांठिया के सम्मान व अभिनन्दन की योजना ही नहीं बनी है अपितु उसे क्रियान्वित भी किया जा रहा है।

सच तो यह है कि विद्वानो के प्रति समाज का यह दायित्व है कि उनकी सेवाओ का समुचित सम्मान करे तथा आदर सहित प्रतिदान करे। कौन–सा समाज अपने गुरुजनो को कितना आदर और विद्वानो को कितना प्रोत्साहन देता है–यह समाज के आध्यात्मिक और बौद्धिक स्तर का परिचायक है।

श्री बांठिया जी अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। अत स्वगच्छ की गतिविधियों मे सक्रिय रहे है,यह कोई अद्भुत बात नहीं। उनकी लगन और कर्मठता मे एक व्यापक क्षेत्र के प्रति आकर्षण रहा है,यह उनकी कतिपय योजनाओ में परिलक्षित होता है।

श्री हजारीमल जी बांठिया ने काम्पिल्य तीर्थ को पुनर्जीवित करने की ओर जो कठिन परिश्रम पूर्ण लगन के साथ किया है वह वास्तव में अभिनन्दनीय है। आज के दूषित परिवेश मे जो व्यक्ति या समूह जीवन्त तथा स्थापित तीर्थों की समृद्धि पर अधिकार करने के लिए क्षुद्र सघर्षों मे जुट कर शक्ति और सामर्थ्य का अपव्यय करते हैं उन्हे इससे प्रेरणा लेनी चाहिये। बांठिया जी के समान वे लोग भी भूले–बिसरे, समस्त भारत में इतस्तत बिखरे, खडहर हो रहे तीर्थ–स्थलो को पुनर्जीवित करने मे जुटे तो धर्म का ही नहीं स्वय उनका भी कल्याण होगा।

श्री बांठिया जी की चहुँमुखी गतिविधियो का ज्वलन्त प्रमाण है पचाल शोध संस्थान। जैन वाङ्मय इतना समृद्ध है कि कोई एक सगठन उसके सभी पहलुओ के साथ न्याय करने मे समर्थ नहीं हो सकता। ऐसे मे क्षेत्र विशेष, विषय विशेष आयाम विशेष को समर्पित शोध सगठनों की कमी सदा ही खलती रही है। बांठिया जी का परिश्रम इस ओर एक प्रेरणीय कदम है।

हाल मे लब्ध-प्रतिष्ठ विदेशी विद्वान् टेसीटोरी के जीवन और कृतित्व पर बांठिया जी ने जो सराहनीय योजना बनाई और उसे कार्य रूप देने मे जुट गये यह उनकी उस सूझ–बूझ का परिचायक है जो उस क्षेत्र विशेष को पहचान पाती है जहा कहीं कुछ अवहेलित–सा रह गया है। श्री टेसीटोरी का स्मारक बना उसमें उस विदेशी विद्वान् की मूर्ति स्थापित करना एक अद्वितीय कार्य रहा।

श्री बांठिया जी से मेरा प्रथम परिचय विक्रम सवत् २००० में हुआ था। तभी से उनके व्यक्तित्व के विकास का परिचय समय–समय पर मिलता रहा है। जैन धर्म व संस्कृति के प्रति उनकी गहरी लगन और पकड के विकसित होने मे उनके मामा नाहटा बधुओ (श्री अगरचन्द जी भवरलाल जी) का यथेष्ठ प्रभाव व योगदान रहा है। नाहटा बंधुओं से मेरी अधिक घनिष्ठता होने के कारण बांठिया जी के इस चहुँमुखी व्यक्तित्व के विकास को मैंने निकट से देखा है। विघटन की आशकाओ से पीडित जैन समाज को ऐसे कर्मठ व्यक्तियो की बहुत आवश्यकता है।

वे अपनी कर्मठता के साथ शतायु हो, इसी शुभाशसा के साथ।

दि० ८–५–१९९५

☆ ☆ ☆

साहित्य प्रेमी श्री बाँठिया जी

□डा० मनोहर शर्मा
सम्पादक 'वरदा' त्रैमासिक
बीकानेर

सुप्रसिद्ध साहित्य–संशोधक श्री अगरचन्द नाहटा के भतीजे श्री भवरलाल नाहटा तो लब्ध–प्रतिष्ठ साहित्य–साधक है ही,परन्तु उनके भानजे श्री हजारीमल बाठिया भी राजस्थानी साहित्य जगत में एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप मे सम्मानित हैं। हर्ष का विषय है कि आप लक्ष्मी के साथ ही सरस्वती के भी अनन्य उपासक हैं।

मैं अपने गाँव बिसाऊ (झुझुनू–राजस्थान) से बराबर श्रीमान नाहटा जी के विशाल साहित्य–भण्डार श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर मे साहित्यिक अनुसन्धान हेतु जाता रहा हूँ और मेरी इन्हीं यात्राओ के अवसर पर श्री बाँठिया जी से भेंट होती रही है। आपकी सहृदयता से मैं बडा प्रभावित हुआ हूँ।

श्री बांठिया जी उच्चकोटि के समाजसेवी के रूप में भी प्रख्यात हैं। श्री अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन, कलकत्ता के आप प्रमुख कार्यकर्त्ताओं मे हैं और इस भारतीय–स्तर की राजस्थानी सस्था के माध्यम से अनवरत समाज-सेवा के विविध कार्यो मे सलग्न रहते हैं।

श्री बाठिया जी साहित्य–सेवा मे सलग्न विद्वानो का बडा सम्मान करते हैं और उन्हे यथाशक्य सहयोग देकर परम प्रसन्न होते हैं। प्रसिद्ध इतालवी विद्वान् स्वर्गीय डा एल पी तेस्सीतोरी की साहित्य–साधना से आप सर्वाधिक प्रभावित रहे है।

आप ने ही सर्वप्रथम उनके पत्रों का प्रकाशन करके साहित्य जगत मे उनका वास्तविक व्यक्तित्व देदीप्यमान किया। इतना ही नहीं, इस विदेशी विद्वान की बीकानेर मे अवस्थित समाधि का भी सर्वप्रथम अत्यन्त परिश्रम तथा व्यय से आपने निर्माण कराया। आप इस बात का सदैव पूरा ध्यान रखते हैं कि बीकानेर मे स्व० श्री तेस्सीतोरी की जयन्ती निश्चित रूप से विशेष आयोजन के साथ मनायी जाये।

श्री बाँठिया जी का बीकानेर के प्रति हार्दिक आत्मीय–भाव है। यहाँ के विशिष्ट साहित्यिक आयोजनों मे आप बिना चूके उपस्थित होते हैं और एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप मे समादृत रहते हैं। इस दृष्टि से राजस्थानके महाजनो मे आप एक निराले ही व्यक्तित्व के धनी हैं जो तन मन और धन तीनों से अपना हार्दिक सहयोग साहित्य तथा समाज को समर्पित करके प्रफुल्लित होते हैं।

(बाल साहित्य समीक्षा, जुलाई, १९९०)

□ कृष्णदत्त वाजपेयी
एम-५१ पद्माकर नगर
सागर

राजस्थान का क्षेत्र केवल शौर्य और उदारता के लिए ही नहीं, राष्ट्र-निष्ठा के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। यहां शासक और व्यवसायी वर्ग ने जनसाधारण की स्वतन्त्रता प्रेमी भावनाओं का समादर कर अपने क्षेत्र को सुखद और समृद्ध बनाने में विशेष भूमिका का निर्वाह किया। इतना ही नहीं, भारत के अन्य क्षेत्रों में तथा देश के बाहर भी भारतीय संस्कृति का संदेश फैलाया।

मारवाड़ के अनेक स्वनामधन्य परिवारों ने ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में ख्याति अर्जित की। धर्म और अर्थ के महत्व को पहचान कर उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा बढ़ायी। इन परिवारों में बीकानेर का बांठिया परिवार उल्लेखनीय है। उस नगर के उद्भट विद्वान श्री अगर चन्द नाहटा के द्वारा साहित्य-जगत में असाधारण यश अर्जित किया गया। नाहटा जी ज्ञान के विचरण-शील ऋषि थे। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर उनके भानजे श्री हजारीमल बाँठिया ने साहित्य तथा संस्कृति की सेवा का व्रत ग्रहण किया।

पिछले अनेक वर्षों से मैं श्री बाँठिया के साथ सक्रिय रूप से संबद्ध रहा हूँ। मुझे आरम्भ में उनकी [illegible] को जानकर यह आशा बंधी कि उत्तर भारत के मुख्य व्यावसायिक नगर कानपुर की बौद्धिक क्षेत्र में [illegible] हो सकेगी। मैंने उनके सहयोग से इस नगर में पंचाल शोध संस्थान की स्थापना करायी। इस नगर से दूर सागर में रहने के कारण, संस्थान के कार्यों का प्रमुख उत्तरदायित्व बाँठिया जी के कन्धों पर पड़ा। उसका उन्होंने बड़ी सफलता और कुशलता से निर्वाह किया है। इस प्रकार की संस्थायें बिना [illegible] कर्ताओं तथा उचित आर्थिक व्यवस्था के चल नहीं सकतीं। पिछले वर्षों में पंचाल शोध संस्थान की गतिविधियों में [illegible] बाँठिया जी ने ही वहन किया है। यह संस्था अब [illegible] संस्थाओं में गिनी जाने लगी है। इसके वार्षिक अधिवेशनों समय-समय पर आयोजित व्याख्यानों तथा प्रकाशनों ने संस्था को महत्व प्रदान किया है।

श्री बाँठिया को कुछ समय पूर्व इटली में आमंत्रित किया गया, जहाँ उन्होंने भारतीय संस्कृति के [illegible] में पंचाल के योगदान का स्वरूप प्रस्तुत किया। इटली के विद्वान् हमारे संस्थान की [illegible] से प्रभावित हुए।

पंचाल शोध संस्थान के तत्वावधान में अनेक शोध छात्र कार्य कर रहे हैं। [illegible] उनका शोध विषय प्राचीन पंचाल क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास से संबंधित है। इसी तरह अन्य अनेक शोध छात्रों को प्रेरणा तथा आर्थिक सहायता प्रदान करने का कार्य बाँठिया जी द्वारा किया जा रहा है।

कानपुर और भारत के अन्य अनेक स्थानों पर समारोहों का आयोजन [illegible] वर्षों में हो चुका है। इनमें [illegible], कन्नौज, रामपुर आदि नगरों में आयोजित समारोह उल्लेखनीय हैं। इन स्थानों के सांस्कृतिक [illegible] वहां आयोजित गोष्ठियों में पढ़े गये शोध लेखों को प्रकाशित किया गया है। संस्थान के मुख-पत्र पंचाल के [illegible] प्रकाशित हो चुके हैं। हमारी सर्वशक्तिमान से प्रार्थना है कि उदारमना श्री हजारीमल बाँठिया शतायु हों।

कानपुर ३०-१२-१९९१

✡✡✡

अधिवेशन उद्‌घाटन भाषण में २–३ विशिष्ट व्यक्ति भी अतिथियो के स्वागत मे बोले, फिर १० मिनट का चाय कार्यक्रम हुआ और २ घंटे तक लगातार शोध-वाचन कार्यक्रम चलता रहा। दोपहर भोजनोपरांत स्व प्रो कृष्ण दत्त जी वाजपेई स्मृति समारोह हुआ। श्रद्धाजलि, समर्पण प्रो श्री कृष्ण दत्त स्मृति विशेषांक विमोचन, मुख्य अतिथि का उद्‌बोधन, अन्य वक्ताओं द्वारा श्रद्धांजलियां कार्यक्रम सध्या काल तक चला। रात्रि सास्कृतिक कार्यक्रम था परन्तु मैं सो गया।

दूसरे दिन सुबह ६ बजे से ही शोध-वाचन कार्यक्रम १ बजे तक चला। भोजनोपरात भी पुन शोध-वाचन चला जो ५ बजे समाप्त होकर समारोह सम्पन्न हुआ।

मुझे यह शोध पत्र वाचन कार्यक्रम बहुत ही रूचिकर लगा, प्राय वाचनकर्ताओ ने अपने विषय पर अच्छा श्रम करके शोध पत्र तैयार किये प्रतीत हुए। मैं यह एक वास्तविक रचनात्मक कार्यक्रम मानता हूं। सभी कार्यक्रम बडी शालीनता से सम्पन्न हुए। मुझे लगा कि मेरा यहा आना सार्थक रहा।

मेरी बलवती उत्सुकता तो श्री हजारीमल बांठिया से मिलने की थी। रात्रि मे पडे–पडे सोचता रहा कि यह भी कैसा अलौकिक व्यक्ति है, वेशभूषा अत्यन्त सादी,धोती कुर्ता राजस्थानी पहनावे का, व्यवहार मिलनसार, बोली में मिठास, और आत्मीयता; मैंने देखा कि बडे से बडा व्यक्ति भी बांठिया जी से आदर देते हुए बात करता।

समारोह समापन मे धन्यवाद देने बांठिया जी माइक पर आये और उन्होने पंचाल शोध संस्थान के गठन, उसके इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उसके प्रति निष्ठा और आस्था व्यक्त की तथा इस संस्थान की गरिमा बनाये रखने और उसके विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया ताकि समाज की प्रतिभाओ को अपने विकास के लिए यह एक सशक्त माध्यम बने। उनके इस धन्यवाद की संक्षिप्त वार्ता मे उनकी वास्तविक प्रतिभा के दर्शन किये। कुछ पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि एक व्यवसायी व्यक्ति होते हुए और कम पढे-लिखे होते हुए भी सार्वजनिक कार्यों मे आगे आकर हाथ बंटाते हैं और सार्वजनिक आयोजनो के सम्पन्न करने मे इन्हे इतना अनुभव हो गया है कि बडे से बडे आयोजनों मे इनको ही आगे किया जाता है।

सुबह प्राय सभी बाहर से आये लोग विदा हो चुके थे पर मुझे तो बांठिया जी से मिलना था,अतः प्रात निवृत्त होकर श्री बांठिया जी के प्रतिष्ठान मे जाकर उनसे मिला। बडी आत्मीयता से चर्चा हुई। मुझे एक पुस्तक दी जिसमें "अमर शहीद अमरचंद बांठिया" की संक्षिप्त जीवनी है, मुख्य पृष्ठ पर उनका चित्र है। मैंने अमरचद बांठिया की शहादत की दास्तान पढी थी परन्तु यथार्थ इतिहास तो इस पुस्तक मे था। ग्वालियर के सराफा बाजार मे सडक के किनारे पुराना नीम का वृक्ष आज भी अपने बीते दिनो की याद दिला रहा है। "अमरचद बांठिया" को उसकी वफादारी की सजा उसी पेड से लटका कर फांसी दी गयी थी। मैं उस पेड के नीचे से कई बार गुजरा और हर बार रोमांचित हुआ हूं।

श्री बांठिया जी ने बताया कि वे उन्हीं अमर शहीद अमरचद जैन बांठिया के वशज हैं।

इन दो दिनो में मैंने श्री हजारीमल जी बांठिया को जैसा समझा उसके अनुसार वे मुझे अत्यन्त रचनात्मक वास्तविक–समाजसेवी, आडम्बर विहीन, व्यवहार कुशल, प्रशंसा दिखावा, प्रदर्शन से तो जिन्हे दूर का भी वास्ता नहीं। अपने पूर्वज अमर शहीद अमरचद बांठिया के जीवन की कुछ विशेष बातों का उल्लेख करते हुए भाव विभोर हो उठे थे।

वर्तमान देश की अवस्था पर उन्होने पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा, अब तो अपना शेष जीवन विवाद–रहित, रचनात्मक कार्यों मे व्यस्त रखने का प्रयत्न करता रहता हू। इसी मे मुझे आत्म-सन्तोष मिलता है। आज अनगिनत संस्थायें श्री बांठिया जी की निस्पृह सेवाओ के कीर्ति–स्तम्भ रूप में खडे है।

मैंने उन्हे ऊपर से रस्म अदाई तौर पर नमस्कार किया और अन्तर मे उन्हे सादर नमन करते हुए चलता हुआ।

* * *

आपने युवक कवियो, लेखको को प्रोत्साहित ही नहीं किया उनकी प्रतिभा को उजागर करने मे भी सहयोग दिया।

उपेक्षित जैन तीर्थ स्थान 'कंपिल' को जैन तीर्थों के नक्शे मे लाने का सारा श्रेय आप ही को है। वहां पर 'आई कैम्प' आदि अनेक मानव-सेवा के कार्य प्रारम्भ किये।

इटली के प्रसिद्ध शोधकर्त्ता डॉ. एल पी तैस्सीतोरी जो अध्ययन व अनुसंधान के लिए भारत आये थे, राजस्थान में वर्षों तक रहकर शोध कार्य किया। जिनकी मृत्यु बीकानेर में हो गयी। पब्लिक पार्क के बाहर उनकी समाधि गुमनामी मे खो–सी गयी थी। आपने उस महान शोधकर्त्ता के अविस्मरणीय कार्यों का मूल्यांकन ही नहीं किया, उनकी समाधि को प्रकाश में लाये। इटली मे तैस्सीतोरी जन्म-शताब्दी पर वहा के निमंत्रण पर सपत्नी इटली भी गये। वहां पर आपने एक महत्वपूर्ण पेपर पढ़ा, जिससे वहा के लोग अत्यन्त प्रभावित हुए। आपके निमंत्रण पर डॉ तैस्सीतोरी के पारिवारिकजन भारत भी आये।

श्री बाठिया जी चिन्तनशील व लग्नशील व्यक्ति हैं। हर समय किसी-न-किसी सद् कार्य में जुटे रहते हैं। इस उम्र में भी हर स्थान पर समय-समय पर पहुच जाते हैं। जहा भी जाते हैं एक न एक जन–कल्याण का कार्य करने की प्रेरणा देते रहते हैं। नेतृत्व की अद्भुत शक्ति आपमें है। अनेक संघ-संस्थाओं से जुडे हुए हैं। अपने में एक चलती –फिरती संस्था हैं।

मेरा उनका अति निकट का सबध रहा है। प्रोत्साहित भी करते रहते हैं। ११२६१ के अपने पत्र मे लिखते हैं – "जीवन की सध्या वेला आ रही है। जब तक गाडी चले, चलाना है। पत्र द्वारा याद किया करें – बचपन में आप सरीखे २,४ व्यक्तियों से ही विशेष प्रेम भाव रहा। जीवन कथा–आत्मकथा लिखनी शुरू करें कुछ संस्मरण लिखे–लिखने पढ़ने का काम करते रहें। सक्रिय बनाये रखें तभी अपने लिए ठीक रहेगा।" इसी तरह हमेशा प्रेरणा देते रहते हैं। वे जानते हैं कि इन दिनों व्यापार में अधिक व्यस्त रहने लगा हूँ।

आपका व्यवसायी क्षेत्र हाथरस व कानपुर है। आपने वहां अपनी कार्यकुशलता, अनुभव व श्रम से केवल अपने व्यापार को ही नहीं बढाया, एक सामाजिक, धार्मिक नेता के रूप में उभरे। अनेक जनहित के कार्यों को अजाम दिया। उनकी निस्वार्थ सेवा से लोग प्रभावित ही नहीं हुए उनके कार्यों में सहयोगी भी बने। अपने सहयोगियों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त विनम्र, सौहार्दपूर्ण व आत्मीय रहता है।

आप जैन एकता के सबल पक्षधर हैं। आपका बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व एक–सा है। चद शब्दो में उनके कार्यों का मूल्याकंन करना सभव नहीं। हमारा उनका प्रेम-भाईचारा दिनों दिन बढता रहे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

श्री बाठिया जी के ७१ वीं जन्म वर्षगाठ पर उनको सम्मानित, अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन व थेली भेट करने का आयोजन समयोचित है। आपका सम्मान समाज का गौरव है। मैं आशा करता हूं, मंगल कामना करता हूं, जिनेश्वर देव से, कि आपको आपकी धर्मपत्नी को लबी उम्र दे ताकि देश, धर्म, समाज और साहित्य की अधिकाधिक सेवा करते रहे।

अत में भाई राष्ट्र कवि श्री कन्हैया लाल जी सेठिया की इन पक्तियो के साथ –

> आशीसूं पूरा करै
> जीवणरा सौ साल,
> धन बीकाणो जलमियो
> ओ गुदडी रो लाल।।

१६–१–१९९५

❀ ❀ ❀

भाई श्री हजारीमल बांठिया जी ने भी पुरातत्व के कार्य में जो महत्वपूर्ण सेवा की है वह राष्ट्र व समाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता रहेगा। ऐसे निष्ठावान् व्यक्ति का सम्मान अपने-आपमें गौरव का विषय है।

मेरी परम् पूज्य पिता परमेश्वर श्री पार्श्वनाथ से प्रार्थना है कि भाई श्री हजारीमल बांठिया को दीर्घायु प्रदान करें ताकि वे अधिक उत्साह व उमंग से राष्ट्र, धर्म व संस्कृति की सेवा कर सकें।

दि० १–५–१९९५

संस्मरण

☐ आर. एन. त्रिवेदी
आई ए एस
प्रबन्ध निदेशक
उ० प्र० सहकारी कताई मिल संघ लि०
बी–२, सर्वोदय नगर, कानपुर

यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि वयोवृद्ध समाजसेवी श्री हजारीमल बाँठिया का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है। श्री बाँठिया से मेरा परिचय वर्ष १९७८ में कन्नौज में सर्वप्रथम हुआ था, जब मैंने फर्रुखाबाद के जिलाधिकारी के रूप में कन्नौज महोत्सव का आयोजन किया था। श्री बाँठिया ने उस समय मुझसे यह अनुरोध किया था कि प्राचीन नगरी कम्पिल में, जो फर्रुखाबाद जनपद में ही है, ऐसे महोत्सव का आयोजन किया जाय और मैंने इस पर हामी भर ली थी।

श्री बाँठिया उसके बाद मुझसे बराबर मिलते रहे और उनके अथक प्रयासों से काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद के तत्वावधान में २ अक्टूबर १९७८ को कम्पिल महोत्सव का आयोजन कराया जाना संभव हो सका। मैं श्री बाँठिया के अदम्य उत्साह, कम्पिल के प्रति उनके लगाव और समाजसेवा की भावना से अत्यन्त प्रभावित हुआ था। कम्पिल महोत्सव अत्यन्त सफल रहा और इसका बहुत बड़ा श्रेय श्री बाँठिया जी के प्रयासों को जाता है।

श्री हजारीमल बाँठिया इसके उपरान्त भी जहां कहीं भी मैं नियुक्त रहा मुझसे मिलते रहे और उनमें प्राचीन भारतीय संस्कृति को उजागर करने की मैंने अदम्य लालसा देखी। उन्होंने पंचाल शोध परिषद का भी गठन किया और उसके तत्वावधान में कानपुर, कम्पिल और रामनगर में कई आयोजन करवाये। श्री बाँठिया जी संस्कृति के क्षेत्र में सतत संलग्न रहे हैं। ईश्वर उन्हें इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सबल और सक्षम बनाये रखे और वह दीर्घायु हों ऐसी मेरी कामना है।
दि० २२ अप्रैल १९९५

❖ ❖ ❖

भाई श्री हजारीमल बांठिया जी ने भी पुरातत्व के कार्य मे जो महत्वपूर्ण सेवा की है वह राष्ट्र व समाज के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो में लिखा जाता रहेगा। ऐसे निष्ठावान् व्यक्ति का सम्मान अपने-आपमें गौरव का विषय है।

मेरी परम् पूज्य पिता परमेश्वर श्री पार्श्वनाथ से प्रार्थना है कि भाई श्री हजारीमल बांठिया को दीर्घायु प्रदान करें ताकि वे अधिक उत्साह व उमग से राष्ट्र, धर्म व सस्कृति की सेवा कर सके।

दि० १-५-१९९५

संस्मरण

□ आर. एन. त्रिवेदी
आई ए एस
प्रबन्ध निदेशक
उ० प्र० सहकारी कताई मिल सघ लि०
बी-२, सर्वोदय नगर, कानपुर

यह जानकार अपार हर्ष हुआ कि वयोवृद्ध समाजसेवी श्री हजारीमल बाँठिया का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है। श्री बाँठिया से मेरा परिचय वर्ष १९७८ में कन्नौज मे सर्वप्रथम हुआ था, जब मैने फर्रुखाबाद के जिलाधिकारी के रूप मे कन्नौज महोत्सव का आयोजन किया था। श्री बाँठिया ने उस समय मुझसे यह अनुरोध किया था कि प्राचीन नगरी कम्पिल मे,जो फर्रुखाबाद जनपद में ही है ऐसे महोत्सव का आयोजन किया जाय और मैने इस पर हामी भर ली थी।

श्री बाँठिया उसके बाद मुझसे बराबर मिलते रहे और उनके अथक प्रयासों से काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद के तत्वावधान मे २ अक्टूबर १९७८ को कम्पिल महोत्सव का आयोजन कराया जाना सम्भव हो सका। मै श्री बाँठिया के अदम्य उत्साह कम्पिल के प्रति उनके लगाव और समाजसेवा की भावना से अत्यन्त प्रभावित हुआ था। कम्पिल महोत्सव अत्यन्त सफल रहा और इसका बहुत बड़ा श्रेय श्री बाँठिया जी के प्रयासों को जाता है।

श्री हजारीमल बाँठिया इसके उपरान्त भी जहा कहीं भी मै नियुक्त रहा मुझसे मिलते रहे और उनमे प्राचीन भारतीय सस्कृति को उजागर करने की मैने अदम्य लालसा देखी। उन्होंने पंचाल शोध परिषद का भी गठन किया और उसके तत्वावधान मे कानपुर कम्पिल और रामनगर मे कई आयोजन करवाये। श्री बाँठिया की सांस्कृतिक क्षेत्र मे सेवा सराहनीय रही है। ईश्वर उन्हे इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सबल और सक्षम बनाये रखे और वह दीर्घायु हो ऐसी मेरी कामना है।

दि० २२ अप्रैल १९९५

☆ ☆ ☆

संस्मरण

□ संपतराज बांठिया
संयोजक जीर्णोद्धार कमेटी,
राजस्थान जैन संघ संस्थान,
अजमेर।

श्री सोहनलाल जी द्विवेदी ने हिन्दी के भीष्म पितामह प्रो. वासुदेव सिंह जी के कर कमलों द्वारा जिन्हें नगर- श्रेष्ठ की उपाधि से सम्मानित कराया वे भाई श्री हजारीमल बांठिया बीकानेर-वासी ही है। उन्होने राष्ट्र, धर्म व देश की जो सेवाये की हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे महान् विद्वान् का अभिनंदन जितना भी किया जावे वह बहुत कम है। उन्होने साहित्य संस्कृति तथा पुरातत्व के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण काम किया है वह सदा-सदा राष्ट्र व धर्म के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो में लिखा जायेगा। ऐसे निष्ठावान् व्यक्ति का सम्मान अपने आप मे गौरव का विषय है।

बाठिया गोत्र मे कई पुन्यवान् ऐसे हो गये है जिन्हें याद करने मे हमें गौरव होता है।

श्री बाठिया माणकचन्दजी धार निवासी जो आज भी श्वेताम्बर मन्दिरों-उपासरों में अधिष्ठायक मणिभद्र के रूप मे हमेशा पूजे जाते हैं।

बीकानेर निवासी अमरचन्द जी बांठिया जो कि ग्वालियर व्यापार हेतु अपने दादाजी के साथ चले गये थे, ग्वालियर के मुख्य खजाची थे। जब झासी की रानी व अन्य क्रान्तिकारियो ने ग्वालियर पर आक्रमण किया तो ग्वालियर के महाराजा जयाजी राव सिंधिया व वहा का प्रधानमंत्री दिनकर राव अंग्रेजों की शरण मे आगरा भाग गये। खजाने से सिर्फ ३० लाख रूपये निकालकर ग्वालियर की फौज को उनकी बकाया तनख्वाह बँटवा दी। झासी की रानी ने खजाने से रूपये मागे तो अरबों की सम्पत्ति होते हुए भी अमानत मे खयानत नहीं किया, अपनी तीन पुश्त की कमाई हुई सम्पत्ति झासी की रानी को देश को आजाद कराने केलिए 'भामाशाह' की तरह अर्पित कर दिया, साथ ही ग्वालियर की फौज को भी झासी की रानी को सौंप दिया। दुर्भाग्यवश १८ जून १८५८ को झांसी की रानी की मृत्यु हो गयी। लड़ाई के मैदान से उनकी लाश को सुरक्षित स्थान पर ले जाकर अग्नि समर्पित करा दिया गया। २० जून १८५८ को ग्वालियर नरेश व उनका प्रधानमंत्री दिनकर राव ग्वालियर आ गये। महाराजा का फिर से राजतिलक किया गया। ता. २२ जून १८५८ को महाराजा के मना करने पर भी अंग्रेजो ने अमरचन्द जी बांठिया पर गैर मौजूदगी मे २ मिनट का मुकद्मा कर फांसी की सजा सुना दी। ज्योंही वे मंदिर से पूजा कर निकले उन्हे पकड कर नीम के पेड पर लटका दिया। मा पद्मावती की कृपा से फांसी का फंदा टूट गया व वे सकुशल जमीन पर खड़े हो गये। दुष्ट फिरंगियों ने २ दफे और अलग-अलग वृक्षो पर फांसी का फंदा उनके गले में डाला किन्तु पूर्व की तरह फांसी का फंदा टूट गया। तब अंग्रेजों ने उन्हे पर्दे की ओट मे और किसी तरह मार कर नीम के पेड़ पर लटका दिया। इस प्रकार आजादी के प्रथम युद्ध में उन्होने हसते-हसते प्राण न्यौछावर कर दिये। अमर शहीद अमरचन्द बाठिया दूसरे भामाशाह बने।

बाँठिया गोत्रिय श्री कस्तूरमलजी बाँठिया अजमेर निवासी ओसवाल समाज में प्रथम पुरुष थे जिन्होंने बी०काम० परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर विदेश व्यापारियों की नौकरी में लगे तथा लंदन में बिजनेस बाद में का ईस्ट इंडिया के नाम से आफिस खोला। उन्होंने कई पुस्तकें लिखी जो कई युनिवर्सिटियों में बी.काम, एम.काम में पढ़ाई जाती, जैसे ... और मुनीमी हिन्दी बहीखाता आदि। उन्होने धार्मिक क्षेत्र मे कई पुस्तकें लिखी जो आज भी धार्मिक ... व शिक्षा ... जाती है।

।। ॐ ।।

नररत्न श्री हजारीमल जी बाँठिया

☐देवेन्द्र कुमार कोचर

इस भारत भूमि पर समय–समय पर ऐसी विभूतियों का अवतरण होता रहा है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे अपना विशिष्ट योगदान देकर जनसाधारण के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। राजस्थान की मरुभूमि भी इसमे पीछे नहीं रही है। यह धरा सदैव से रण-बाकुरों की जन्म भूमि रही है। इसके अलावा इस भूमि ने अनेक दानवीरों धर्मिष्ठ पुरुषों सन्नारियो, साहित्यकारों एव समाज-सेवियो का भी समय–समय पर जन्म दिया है। ऐसी ही एक विभूति है श्री हजारीमल जी बाठिया।

श्री बाठिया जी का जन्म, पूर्व बीकानेर स्टेटकी राजधानी, बीकानेर मे दिनाक २४ सितम्बर १६२४ को हुआ। माता–पिता अत्यत धार्मिक प्रकृति थे। ननिहाल पक्ष मे अटूट धार्मिक श्रद्धा के अलावा साहित्यिक प्रवृत्ति रही। बाठिया जी के जीवन मे इन दोनो प्रवृत्तियो के सम्मिश्रण के दर्शन होते हैं।

श्री बाठिया जी का जीवन प्रारम्भ से ही सघर्षपूर्ण रहा है। बाल्यकाल से विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुये अपना मार्ग स्वय ही प्रशस्त किया है। हाथरस व कानपुर मे व्यापार करते हुये, उच्च आदर्शों को स्थापित किया है।

साहित्यिक क्षेत्र मे उनका योगदान स्मरणीय है। स्वय साहित्य सेवी रहे हैं एव साहित्यिक गतिविधियो के सचालन एव सवर्द्धन मे बढ–चढकर भाग लिया है। हाथरस मे ब्रजकला केन्द्र की स्थापना उनके सद्प्रयत्नों से ही हुई। प्रख्यात हास्य-व्यग्य के कवि काका हाथरसी की हीरक जयन्ती का आयोजन आपके सद्–प्रयत्नों से हुआ। प्रख्यात साहित्यकार श्री अगरचदजी नाहटा के सम्मान मे प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन आपके सयोजन मे ही हुआ।

अनेक जैन ग्रन्थो का प्रकाशन आपके द्वारा किया गया। इटली के विद्वान एल०पी० टेसीटोरी, जिन्होंने राजस्थानी साहित्य एव भाषा पर शोध कार्य किया, उनका समाधिस्थल बीकानेर मे ढूंढकर निकाला एवं उस स्थल मे समारोह का आयोजन किया।

समय–समय पर समाज एव जैन धर्म के भूले-बिसरे व्यक्तियों के जीवन-सबधी परिचयात्मक निबन्ध लिखते रहते है जिससे उनसे अनभिज्ञ लोगो को जानकारी मिलती रहती है।

तीर्थों के उद्धार एव प्रकाश मे लाने के लिये भी वे सतत् प्रयत्नशील रहे हैं। कम्पिल तीर्थ उनके सद्प्रयत्नों से प्रकाश मे आया। आज इस तीर्थ का स्थान जैन तीर्थों मे विशिष्ट हो गया है। इस तीर्थ पर धार्मिक प्रवृत्तियों के अलावा अनेक जनोपयोगी गतिविधिया चल रही है।

स्पष्ट है,वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उनका कार्यक्षेत्र विस्तृत रहा है। आशा है कि विभिन्न क्षेत्रों मे उनका योगदान समाज एव राष्ट्र को दीर्घ काल तक निर्बाध रूप से मिलता रहेगा।

३५/३ ग्रेसिम स्टाफ कालोनी
बिरला ग्राम नागदा

एक समर्पित समाज सेवी
श्री हजारीमल बाँठिया

□ पं० रमेश मोतीलिया
अध्यक्ष
संस्कार भारती
अपराजिता उत्तर प्रदेश

श्री हजारीमल बाँठिया से सम्पर्क विगत ग्यारह वर्षों से हुआ। इनकी लगन एवम् प्रतिभा ने मारवाड़ी समाज को तथा अन्य सभी प्रमुख संस्थाओं को येन-केन-प्रकारेण प्रभावित किया और सभी ने इन्हे अपना लिया। कानपुर मे व्यापार प्रकरण से हाथरस से पधारे श्री बांठिया इतने अल्प समय मे ऐसे परिचित हो गये, मानो पीढियो से कानपुर के वासी हो।

तन-मन-धन और उत्साह से संस्थाओ में बिना पद-लिप्सा के लगे रहना श्री बाँठिया जी का स्वभाव बन गया है। समाज सेवा के साथ-साथ स्वधर्म सेवा भी इनका लक्ष्य है। धर्मगुरूओ और साधको का समर्पित भाव से सदा ही सम्मान करते हैं।

यह गुण-ग्राही हृदय में आनन्दित रहते हुए सभी विधाओं के गुणी जनो का सर्व प्रकार से संरक्षण एवम् उत्साहवर्द्धन करते रहते हैं। यही कारण है कि इनका विवादरहित व्यक्तित्व सभी के लिये अनुकरणीय और आदरणीय बन गया है।

सहजशील सर्वांश-समर्पित जीवन पाया।
दानशील जगसेवा मे सर्वस्व लुटाया।।
जय जिनेन्द्र, जय जगत और गुरुवर की जय हो।
श्री बांठिया हजारीमल कीरति अक्षय हो।।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री हजारीमल जी दीर्घ जीवी हो,यशस्वी हो तथा सदा-सर्वदा जन-जन के मनभावन बने रहें।

मंगलकामनायें।

५८/४ बिरहाना रोड, कानपुर।

∴ ∴ ∴

एक ओर विशुद्ध रूप से पेशे से व्यापारी किन्तु दूसरी ओर साहित्य के प्रति समर्पण भावना। श्री बांठिया जी अपनी साहित्यिक अभिरूचि का सारा श्रेय भी अपने समय के महान् मनीषी श्री अगरचन्द जी नाहटा को ही देते हैं जो बांठिया जी के मामाश्री थे।

ब्रज के गौरव सेठ हजारीमलजी बांठिया

□ राम नारायण अग्रवाल
कार्यकारी अध्यक्ष, ब्रजकला केन्द्र,
गली रावलिया मथुरा(उ०प्र०)

मुझे अपने जीवन में अनेक सेठों और धनपतियों से मिलने और उनके जीवन को निकट से देखने का सुयोग प्राप्त हुआ है और यह अनुभव किया है कि उनके व्यक्तित्व में अवश्य ही कुछ न कुछ विशिष्टता होती है। साथ ही उनके व्यवहार से हमारे उन शास्त्रकारों के इस कथन की भी सहज ही पुष्टि हो जाती है जिन्होंने लक्ष्मी को उलूक वाहिनी कहा है। हमने यह प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि हमारे धनपतियों पर लक्ष्मी माता के साथ-साथ उनकी विचार शक्ति पर उनके वाहन की कृपा का प्रभाव भी किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही रहता है, जिसकी विवेचना में जाना यहां उचित नहीं होगा। लेकिन अपने जीवन में हमें ऐसे दो सेठों के दर्शन का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ जो लक्ष्मी की गोद में तो बैठे परन्तु माता सरस्वती का वरदहस्त उनके मस्तक पर ऐसे अभय छत्र के रूप में तना रहा कि लक्ष्मीमाता के वाहन की परछाई सदा उनसे कोसों दूर रही। ऐसे दो व्यक्तियों में मैं स्व० सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार और सेठ हजारीमल बांठिया की गणना करता हूं। यह दोनों ही महानुभाव हमारे ब्रजक्षेत्र के गौरव हैं। सेठ कन्हैयालाल जी पोद्दार द्विवेदी युग की भारत विख्यात दिव्य विभूति थे और श्री हजारीमलजी बांठिया वर्तमान में हमारी लोककला के मठ हाथरस के एक ऐसे रत्न हैं जिनके साहित्यानुराग और पुरातात्विक अनुसंधान वृत्ति ने उन्हें अन्तरराष्ट्रीय महत्व और गौरव प्रदान किया है।

सेठ कन्हैयालाल जी पोद्दार के दर्शन मैंने प्रथम बार सन १९४० में किये थे और जब तक वे इस धराधाम पर रहे उनकी कृपा और आशीर्वाद हमें सदा ही प्राप्त रहे। उन्होंने किसी स्कूल या कालेज में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। स्वाध्याय और सत्संग से ही वे अपने युग के संस्कृत साहित्य के प्रकांड पंडित [illegible] आचार्य और [illegible] जाते थे। उन्होंने अनेक ग्रन्थ रचे। उनका काव्य कला-कल्पद्रुम तो उस युग का अद्वितीय ग्रन्थ था जो एम.ए. तक के [illegible] के पाठ्यक्रम में था। पोद्दारजी जन्मजात सेठ थे। हम जब उनके सम्पर्क में आये तब [illegible] हमने उन्हें कभी [illegible] करते नहीं देखा। हां उनकी गद्दी के पास बहियों का एक बस्ता जरूर रहता था जिसमें समय समय पर [illegible] लिखा करते थे और जायदादों के किराये लेन-देन का हिसाब सेठजी [illegible] करते थे परन्तु पोद्दारजी सदा [illegible] भजन में ही मस्त रहते थे। वे वैष्णव भक्त हृदय थे [illegible] करने में उन्हें [illegible] सुख मिलता था। [illegible] के शीर्षस्थ साहित्यकार उनसे मिलने आते थे। उन्हीं के [illegible]

जब झंकृत हो उठा

□ बद्रीनारायण तिवारी
अध्यक्ष, मानस-संगम
शिवालय रोड कानपुर २०८००१

जीवन मे कुछ क्षण ऐसे होते है जिनको विस्मृत करना संभव नही। हृदय मे ये क्षण अमिट छाप छोड देते है। कविता का कितना विशिष्ट स्थान होता है, इसी आधार पर एक प्रयोग के रूप में कानपुर के ऐतिहासिक नानाराव पार्क (अब 'शहीद-उपवन') में मानस संगम की ओर से "पेड की छांव तले कविता" नामक चित्रात्मक साहित्यिक प्रदर्शनी आयोजित की थी। उस बहुचर्चित एक पखवारे की प्रदर्शनी मे कलाकारो के सहयोग से नये-पुराने रचनाकारो की लगभग २५० रचनाये कलात्मक तैलचित्रों के माध्यम से प्रदर्शित हुई थीं। उन चित्रों की मुख्य विशेषता रचनाओ के भावो पर आधारित पृष्ठभूमि मे चित्रांकित थे, उसी के ऊपर कविता लिखी थी।

उसी प्रदर्शनी में एक व्यक्ति अवलोकन करके एक चित्र देखकर प्रदर्शनी के आयोजक से सम्पर्क की धुन मे साहित्य निकेतन संस्थान के स्वामी श्री श्यामनारायण कपूर के यहां गये। उनसे नाम पता जानकर वह भेंट हेतु चल दिये।

मै अपने निवास से निकल ही रहा था कि सीढियो के मध्य चढते हुये ऊंची धोती कुर्ता पहने स्थूलकाय व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि तिवाडी साहब से मिलना है। मैने उनकी बोलचाल की भाषा शैली से समझ लिया कि राजस्थानी महानुभाव है- 'कहिये क्या काम है, मै ही हूँ'। इतना सुनते ही बोले, 'दो मिनट बात करनी है'।

मै पुनः वापस लौटा, कमरा खोलकर उनको बैठाया। उन्होंने बैठते ही प्रश्न किया कि नानाराव पार्क में आयोजित आपकी साहित्यिक प्रदर्शनी ' पेड की छांव तले कविता' में इटली के युवा हिन्दी विद्वान् डा० एल०पी० टैसीटरी का तैलचित्र कहां से प्राप्त किया। मैने पूछा क्यो? उन्होंने कहा कि हिन्दी के सर्वप्रथम शोधकर्ता टैसीटरी का मै ही अपने को एकमेव जानकर मानता था। इस कानपुर महानगर मे दूसरा कौन व्यक्ति है? इतालवी मनीषी टैसीटरी जिन्होंने अपनी मातृभूमि त्यागकर भारतीय संस्कृति-पुरातत्वज्ञाता के रूप मे राजस्थान के बीकानेर को केन्द्र बिन्दु बनाकर जीवन के अंतिम समय तक यहीं मुख्यतः प्रवास किया। उसी बीकानेर मे उनकी समाधि(कब्र) स्थल का पता कर जीर्णोद्धार व कराकर पुनः निर्माण कराया। उस समारोह मे तत्कालीन भारत स्थित इटली के राजदूत तथा बहुभाषाविद् डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने अध्यक्षता कर उस कार्यक्रम की गरिमा बढाई थी।

इसी क्रम को तोडते हुये मैने उनसे कहा कि अभी मैने अपनी बेटी अर्चना का विवाह किया है इसलिए अभी मै राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रथम शोधकर्ता टैसीटरी की प्रतिमा नहीं स्थापित कर पा रहा हूँ वरना मेरा मन तो है कि अपने माता पिता परिवार का मोह छोडकर भारत की साहित्य-संस्कृति के उस महान साधक की मूर्ति भोतीझील स्थित 'तुलसी उपवन' में प्रतिष्ठापित करूँगा। तभी हम भारतवासी उसके ऋण से उद्धार हो सकेंगे।

उस व्यक्ति जिसने दो मिनट की बात करने को कही किन्तु उसने इतनी विस्तृत चर्चा विदेशी पुरुष व उनके कार्य विषयक करने मे लगा दिया कि समय का पता ही नही चला। इस घटनाक्रम को बताते समय उनकी आंखे प्रेमाश्रु से डबडबा रही थी। इन सभी बातों का पटाक्षेप एक क्षण में ही अपने वाले थे- श्री हजारीमल बांठिया। श्री बांठिया जी ने मेरी भावना को भांपते हुये कहा कि तिवाड़ी साहब, टैसीटरी की मूर्ति मै आपको भेंट करूंगा।

आज राजनेताओ की मूर्तियां लगाने की होड मे बिना किसी पूर्व परिचय या अनुरोध के जिस आत्मीयता पूर्ण ढंग से प्रथम भेंट में ही श्री बांठिया जी ने प्रतिमा प्रदान करने की बात कही- मन झंकृत हो उठता है कि समाज मे अभी ऐसे निस्पृह साहित्य संस्कृति प्रेमी हैं।

में अपनी भूमिका निभाकर इस सांस्कृतिक अनुष्ठान को सम्पन्न कराने मे अपनी भागीदारी निबाहे। बांठिया जी ब्रजकला केन्द्र के एक सुदृढ स्तम्भ हैं। हमे उन पर गर्व है। इस वर्ष योरूप की अपनी दूसरी सास्कृतिक यात्रा सम्पन्न करके लौटने पर हाथरस मे ब्रज कला केन्द्र द्वारा उनका भव्य स्वागत–समारोह आयोजित किया गया था।

बांठिया जी ने ब्रज के साथ–साथ कानपुर मे बस जाने पर पचाल जनपद की महत्त्वपूर्ण सेवा की है जो इतिहास मे स्वर्णाक्षरो में अंकित रहेगी। महाराज द्रुपद की राजधानी और सती द्रोपदी की जन्मभूमि के प्राचीन गौरव को पुन स्थापित करके वहाँ सग्रहालय और अस्पताल की स्थापना उनके पुरातत्व प्रेम और समाज सेवा के सजीव प्रमाण हैं। प्राचीन मूर्तियों को खोज–खोजकर उन्हे सग्रहालय मे स्थापित करना अपने आप मे कितना कठिन कार्य है यह भुक्त भोगी ही जानते हैं। हमें स्व० पंडित कृष्ण दत्त वाजपेयी ने जो इस कार्य मे उनके प्रमुख सहयोगी व मार्ग दर्शक थे बतलाया था कि बाठिया जी ही नहीं उनकी धर्मपत्नी भी मूर्तियो की पहचान करने मे दक्ष हो गई हैं। इसका सीधा–सा अर्थ यही है कि उन्होने अपनी धर्मपत्नी जी को भी अपने रग मे रग लिया है। दोनो की रूचि व ध्येय एक ही हो ऐसे पति–पत्नी का जीवन और उनका गृहस्थ धन्य ही कहा जायेगा। ऐसे परिवार पर लक्ष्मी और सरस्वती की समान कृपा होनी ही चाहिये।

बाठिया जी की उन उपेक्षित महानुभावो की कीर्ति-रक्षा मे सहज रूचि है जो आत्म–विज्ञापन से दूर रह कर स्वान्त सुखाय भाव से देश या यहा की साहित्य व सस्कृति की सेवा कर गये हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर आपने प्रसिद्ध विद्वान् श्री अगरचन्द नाहटा जी का अभिनन्दन ग्रन्थ दो भागो मे प्रकाशित किया था तथा सन् १८५७ के स्वतत्रता सेनानी श्री अमरचन्द बाठिया की जीवनी भी प्रकाशित की है जिन्होंने ग्वालियर का खजाना स्वतत्रता सेनानियों को सौंपकर फांसी के फंदे को गले लगाया था। इटली के प्रसिद्ध विद्वान् श्री डा० एल०पी० टेसीटोरी ने विदेशी होते हुये भी अपना पूरा जीवन भारत की गौरववृद्धि मे लगाया था और अत मे बीकानेर की वीरभूमि में अपना शरीर त्याग दिया था। परन्तु हम कृतघ्न भारतवासी बीकानेर मे उनकी समाधि को भी भूल गये थे। यह बाठिया जी की ही सजगता और शोधवृत्ति का ही करिश्मा था कि लगातार खोजकर के बडी दौडधूप के बाद किसी तरह पुराने रिकार्ड से नम्बर के आधार पर उनकी समाधि को खोजा ही नहीं अपने पैसे से उसका नव-निर्माण भी कराया। एक अन्तरराष्ट्रीय विद्वान् की समाधि के इस जीर्णोद्धार ने श्री बाठियाजी को भी अंतर-राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया और इटली की सरकार ने उन्हे सहर्ष अपने यहा आमंत्रित करके सम्मानित किया और उन्हे इटली के इस प्रसिद्ध साहित्यकार की जन्मभूमि और उसके बचपन से सबद्ध स्थलो के दर्शन भी कराये। इस वर्ष फिर बाठिया जी को दूसरी बार योरूप बुलाया गया और उनके भाषण व स्वागत समारोहो का आयोजन किया गया। बाठियाजी ने इस प्रकार अपनी शोधवृत्ति से स्वयं तो अन्तर्राष्ट्रीय महत्व प्राप्त किया ही है साथ ही उन्होने अपनी इस उदारवृत्ति से देश और ब्रजभूमि का सम्मान भी बढाया है। वे ब्रज के गौरव होने के साथ–साथ मारवाडी समाज के भी गौरव हैं। राजस्थान इनकी पितृभूमि है और ब्रज इनकी कर्मभूमि है। इस प्रकार वे वर्तमान युग मे उस परम्परा की एक कड़ी हैं जो ब्रज और राजस्थान को एक सूत्र मे पिरोने का कार्य करती रही है। इस दृष्टि से वे सचमुच ही अभिनदनीय हैं। उनका अभिनन्दन वास्तव मे उदारता, लगन शीलता, कर्मठता सास्कृतिक शोधवृत्ति और सरल निरभिमानता का अभिनन्दन है। भगवान बाठिया जी को शतायु करे और वह सदा नवीन उत्साह से सस्कृति, साहित्य, कला और पुरातत्व की सेवा करते रहें यही हमारी प्रार्थना है।

२२१९५ ई०

कृष्णदासजी के दर्शन किये थे। ब्रज साहित्य मंडल से उनका गहरा लगाव था और जो मूर्धन्य साहित्यकार मथुरा पधारते थे उन्हीं के यहा ठहरते या उनके दर्शनों को अवश्य जाते थे। वे स्वयं साहित्य के एक तीर्थ थे।

जब हम पोद्दारजी के व्यक्तित्व की बाँठियाजी से तुलना करते हैं तो पाते हैं कि बाँठियाजी ने भी कला, साहित्य और संस्कृति का अनुराग किसी विद्यालय या महाविद्यालय में अध्ययन करके नहीं वरन् स्वयं स्वाध्याय से ही अर्जित किया है। बाँठिया जी के मामा श्री अगरचद नाहटा स्वयं चलते-फिरते प्राचीन ग्रन्थों के विश्वकोष थे। उन्होंने जीवन भर न जाने कितने पुस्तकालयों की खाक छानकर अनेक रत्न खोजे थे और उनकी चमक-दमक आजन्म हिन्दी जगत को दिखाते रहे। शायद बाँठिया जी पर अपने मातृकुल के इसी वैशिष्ट्य का प्रभाव है जिसने उनकी व्यावसायिक वृत्ति में कला और संस्कृति के प्रति यह अमित अनुराग उत्पन्न किया है। सेठ पोद्दारजी ने तो व्यापार से उपराम लेकर अपने को माँ शारदा के चरणों में समर्पित किया था परन्तु बाठिया जी व्यापार के साथ-साथ समान गति से कला और संस्कृति के उद्धार में भी सक्रिय हैं। यह अपने आप में उनकी एक अदभुत् विशेषता है जिसके प्रति सभी को सहजभाव से नत होना पड़ता है।

बाँठिया जी के दर्शन तथा सम्पर्क का सौभाग्य मुझे सन् १९६४ के आसपास प्राप्त हुआ था जब सेठ गोविन्ददासजी के परामर्श से सेठ रामबाबूलाल को ब्रजकला केन्द्र का अध्यक्ष बनाया गया था और दिल्ली से ब्रज कला केन्द्र का कार्यालय भी आकर हाथरस के सुरुचि उद्यान में स्थापित हो गया था। तब संस्था का मंत्री होने के नाते मेरे हर मास १ या २ चक्कर हाथरस लगते थे। ऐसे ही एक अवसर पर भाई सुरेश चतुर्वेदी मुझे श्री बांठिया जी की गद्दी पर उनसे मिलाने के लिये ले गये थे। प्रथम भेंट मे ही बाठिया जी के मृदुल स्वभाव, उनकी सक्रियता, कर्मठता और साहित्य-संस्कृति के प्रति उनके लगाव की गहरी छाप मुझपर पड़ी। मैंने बांठिया जी से सभी ब्रज कला केन्द्र मे सक्रिय भागीदारी लेने की प्रार्थना की जो उन्होंने तत्काल स्वीकार कर ली और वे हाथरस ब्रज कला केन्द्र के अभिन्न अंग बन गये।

लाला रामबाबूलाल जी के स्वर्गवास के बाद हाथरस से ब्रजकला केन्द्र का मुख्य कार्यालय मथुरा स्थानान्तरित करना पडा। उधर बांठिया जी ने नया उद्योग प्रारम्भ कर दिया और हाथरस के बजाय वे कानपुर ही अधिक रहने लगे। तब कुछ समय के लिये ब्रज कला केन्द्र से बांठिया जी के संबंध शिथिल पड गये, परन्तु एक बार हाथरस में भेंट होने पर आपने पुन पूर्ण सक्रियता से संस्था की गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। विगत ६ वर्षों से आप संस्था के उपाध्यक्ष हैं। उत्सव समारोहों मे पधार कर तो आप संस्था का मार्ग दर्शन करते ही हैं, जब भी आपका हाथरस पधारना होता है तो अवसर मिलने पर आप मथुरा पधारना भी नहीं भूलते और संस्था की सभी गतिविधियों में हमें सदा ही आपका मार्ग-दर्शन व सक्रिय सहयोग प्राप्त होता है। विगत वर्ष (अप्रैल १९९४) में संस्था ने प्रतिपक्ष के नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी के स्वागत में हाथरस में एक भव्य समारोह किया था जिसमें बाँठिया जी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। पं० नथाराम गौड की शताब्दी में भी आपने श्री कृष्णदत्त जी बाजपेयी को आग्रहपूर्वक बुलवाया था और अपने यहां मानव संसाधन विकास मंत्री के भोज का भव्य आयोजन किया था जो उस समारोह के मुख्य अतिथि थे। मार्च सन् १९९४ में हाथरस में संस्था का जो विशेष अधिवेशन तथा लोकार्पण समारोह डा० रमेशचन्द्र शर्मा जी की अध्यक्षता में हुआ उसके स्वागताध्यक्ष का पद बाँठिया जी ने ही सुशोभित किया था और अध्यक्ष महोदय को शाल उढाकर तथा आपकी धर्मपत्नी जी ने अध्यक्ष महोदया की धर्मपत्नी जी को साड़ी भेंट करके उनका हार्दिक स्वागत किया। मथुरा मे श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर आयोजित ब्रजकला केन्द्र के विविध समारोहों की भी बाँठिया जी अध्यक्षता करते रहे हैं। मथुरा में 'गांधी जी की हत्या हजारवीं बार' नाटक जो ब्रजभाषा में श्री राजेन्द्र नागर के निर्देशन में मंचित हुआ था, आपने ही दीप प्रज्वलित करके उसका शुभारम्भ किया था। संस्था की सभी गतिविधियों में आप पूरी निष्ठा से जुडे हुये हैं।

ब्रजकला केन्द्र ने ब्रजधाम निर्माण की एक महत्वपूर्ण योजना आरम्भ की है उसमें प्रथम निर्माण 'सूर-सरोवर' नाम से नन्दकूप के लिये एक कमरा बनवाकर बांठिया जी ने ही दिया है। ब्रजधाम जल्दी-से-जल्दी बने इसके लिए आप बडी उतावली से प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु कुछ अवांछनीय तत्वों द्वारा बाधा डाल देने से निरन्तर प्रगति स्थगित उलझन में गया है जिससे बांठिया जी को आन्तरिक कष्ट है। वह चाहते हैं कि यह निर्माण-कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ हो तो वह तन-मन

अपने ज्येष्ठ विद्वद्रत्न श्री अगरचन्दजी नाहटा के पद–चिन्हों पर चलते हुए बाँठिया जी ने भारतीय संस्कृति के अनेक पहलुओं को उजागर किया है और कर रहे हैं। अपने मानापमान को भूलकर उपयोगी व्यक्तियो का संग्रह करना श्री बाँठिया जी की विशेष कला है, और कदाचित् यही उनके सफल जीवन का रहस्य भी है। आलस्य के स्पर्श से वे कोसों दूर हैं। निस्सन्देह श्री हजारीमल बाँठिया जी के कुशल निर्देशन मे 'पंचाल शोध संस्थान' दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करेगा और अपनी सभी योजनाओ को कार्यरूप भी दे सकेगा।

पंचाल शोध संस्थान के प्राणवन्त प्रहरी :

श्री हजारीमल बाँठिया

☐डा. ए.एल.श्रीवास्तव
सचिव
पंचाल शोध संस्थान
कानपुर

पंचाल शोध संस्थान की स्थापना का सपना देखने, उस सपने को साकार स्वरूप प्रदान करने तथा उस रूपको जीवन्त बनाकर देश–विदेश मे लोकप्रिय बनाने का श्रेय यदि समानरूप से किसी एक व्यक्ति को दिया जा सकता है तो वह व्यक्ति केवल श्री हजारीमल बाँठिया ही हो सकते हैं। श्री बाँठिया ने मध्य प्रदेश के सागर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व टैगोर प्रोफेसर एव प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष स्वर्गीय प्रो कृष्णदत्त बाजपेयी के दिशा–निर्देश में कानपुर, कन्नौज तथा कम्पिल के कतिपय गणमान्य व्यक्तियों के सहयोग से १९८४ ई० मे 'पंचाल शोध संस्थान' की स्थापना की। इन सहयोगियों मे राजस्थान भवन कानपुर के अध्यक्ष श्री बी आर कुम्भट, कानपुर के ही एक आई ए एस अधिकारी श्री आर एन. त्रिवेदी, कन्नौज के डा प्रताप नारायण टण्डन एव डा० गोपालकृष्ण अग्निहोत्री और कायमगंज के समाजसेवी सर्राफ श्री चन्द्रप्रकाश अग्रवाल के नाम उल्लेखनीय हैं।

पंचाल शोध संस्थान की स्थापना का सपना श्री हजारीमल बाँठिया ने देखा था, क्योंकि यद्यपि उनका जन्म राजस्थान की वीर–प्रसविनी धरती पर बीकानेर मे हुआ था तथापि उनका कार्यक्षेत्र युवावस्था से लेकर आज तक कानपुर से लेकर हाथरस तथा उत्तर प्रदेश के प्राचीन पंचाल जनपद में रहा है। कानपुर, कन्नौज, कम्पिल, संकिसा, बिलसड़, [illegible] आदि अनेक पुरास्थल पंचाल की इस धरती पर आज भी अपनी पुरातात्विक महत्ता बनाए हुए हैं। भारतीय संस्कृति के संरक्षक वाले श्री बाँठिया जी इन पुरास्थलों की कला और पुरातात्विक सम्पदा से प्रभावित हुए बिना न रह सके। तभी से उनके मन में पंचाल के प्राचीन वैभव को उजागर करने का सपना धीरे–धीरे संकल्प का रूप लेता गया और एक दिन 'पंचाल शोध संस्थान' के रूप मे साकार हो गया।

पंचाल शोध संस्थान के मेरुदण्ड श्री बाँठिया जी

☐ नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी
अध्यक्ष
पंचाल शोध संस्थान, कानपुर

कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री हजारीमल बाँठिया केवल सफल व्यवसायी नहीं अपितु और भी कुछ हैं। इसी 'कुछ' के कारण उनके व्यक्तित्व में निखार आया है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। जैनमत के एकनिष्ठ उपासक होने के कारण जैन धर्म, जैन कला, जैन साहित्य, जैन शास्त्रों का अध्ययन आदि की ओर उनकी प्रगाढ़ रुचि स्वाभाविक है, किन्तु उस रुचि के साथ किसी भी प्रकार की संकीर्णता उनमें नहीं है। उनकी उदार विचार-प्रणाली का सबसे बड़ा प्रमाण है 'पंचाल शोध संस्थान'। कहने को तो वे इस संस्थानके कार्यकारी अध्यक्ष भर हैं, पर वस्तुत. वे इसके मुख्य प्राण हैं। स्वतः सब कुछ करते हुए भी सफलता का श्रेय दूसरे को देते रहना श्री बाँठियाजी का स्थायी भाव है।

सुप्रसिद्ध भारतीय मनीषि आचार्य कृष्णदत्त वाजपेयी जी की प्रेरणा से 3 जून १९८४ को इस संस्थान की स्थापना हुई। उद्देश्य था 'पंचाल' जनपद के इतिहास, कला, लोक संस्कृति, पुरातत्व, जनपदीय साहित्य आदि का वैज्ञानिक ढंग से विस्तृत अध्ययन। प्राचीन पंचाल जनपद में स्थूल रूप से कानपुर, फर्रुखाबाद, बरेली, बदायूँ, रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, पीलीभीत, हरदोई, उन्नाव, शाहजहाँपुर आदि वर्तमान जिलों के भूभाग का समावेश होता है। भारतीय संस्कृति का सर्वांगीण एवं पूर्ण अध्ययन तभी सम्भव है जब विविध जनपदीय संस्कृतियों का इतिहास के साथ स्वतंत्र एवं विस्तृत अध्ययन किया जाय। भारत के इतिहास में आरम्भ से ही पंचाल जनपदका विशिष्ट स्थान रहा है। श्री वाजपेयी जी पंचाल के ही थे और श्री बाँठिया जी भी पंचाल वसुन्धरा के रत्न हैं। सरस्वती और लक्ष्मी के उदार सहयोग से 'पंचाल' का रथ चल पड़ा और अब तो और भी अधिक गतिमान है।

श्री हजारी मल बाँठिया को यथार्थ में 'हजार मल्लों' का बल प्राप्त है। शोध कार्य, पुरातत्त्व संग्रहालय आदि की योजनायें तो श्री बाँठिया जी विद्वानों के सहयोग से चला ही रहे हैं, पर आज की बढ़ती महँगाई के दिनों में संस्थान की ओर से प्रतिवर्ष एक भव्य अधिवेशन एवं संगोष्ठी का सफल आयोजन करना किसी के लिए भी सहज सम्भव नहीं है। प्रत्येक संगोष्ठी में अनेक देशी और विदेशी विद्वान, विश्वविद्यालयों के आचार्य एवं कुलपति, शोध के संग्रहालयों के अध्यक्ष, महाविद्यालयों के प्राचार्यगण तथा अनेक शोध छात्र एवं छात्रायें भाग लेते हैं। शोध पत्र पढ़े जाते हैं, चर्चायें होती हैं और अधिवेशन-स्थल के आसपास के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण भी होता है। सभी समागत प्रतिनिधियों के निवास, जलपान और भोजन की व्यवस्था 'संस्थान' की ओर से होती है। आवश्यक धन कब, कैसे और कहाँ से आता है कोई नहीं जानता। जानते इतना ही हैं कि कल्प वृक्ष की भाँति श्री बाँठिया जी तत्पर खड़े हैं और सारे कार्य निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो रहे हैं। अब तक पंचाल शोध संस्थान की ओर से इस प्रकार के नौ अधिवेशन सम्पन्न हो चुके हैं।

किसी अधिवेशन एवं संगोष्ठी को तब तक स्थायी रूप से सफल नहीं कहा जा सकता जब तक वहाँ पढ़े गये शोध पत्रों का, चर्चाओं का एवं विचारों का प्रकाशन न हो। श्री बाँठिया जी ने इस ओर भी ध्यान दिया जिसका फल है संस्थान की शोध पत्रिका 'पंचाल'। ख्याति प्राप्त विद्वान एवं कलाविद् डा० [illegible] इसके [illegible] सम्पादक हैं। इस शोध पत्रिका के अब तक सात अंक निकल चुके हैं तथा सभी अंकों का विद्वानों द्वारा भी स्वागत [illegible] किया गया है और इस प्रकार महाकवि कालिदास के शब्दों में इस "प्रयोग विज्ञान" को "साधुवाद" प्राप्त हो चुका है। [illegible] भी शोध पत्रिका को न बिगड़ते हुए निर्धारित स्तर पर बनाये रखना सम्पादन की दृष्टि के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से भी अत्यन्त असाधारण वस्तु है। शोध पत्रिका के अर्थभार को श्री बाँठियाजी ने अपने [illegible] है। [illegible] करने की योजनाएँ बनाना और उन्हें कार्यरूप में परिणत करना श्री बाँठिया जी के ही वश की बात है।

सप्तम	प्रो कृष्णदत्त बाजपेयी स्मृति समारोह	मार्च १९९३ ई	कानपुर
अष्टम	कानपुर महोत्सव	मार्च १९९४ ई	कानपुर
नवम	कम्पिल महोत्सव	दिसम्बर १९९४ ई	कायमगंज

पंचाल शोध संस्थान के द्वारा अब तक किए गए प्रकाशनो के विवरण निम्नवत् हैं–

1. South Panchala (पी–एच डी शोध प्रबन्ध) by Dr. R K.Paul, Kanpur, 1985.
2. Ahichchhatra Through the Ages Ed,. by Prof. K.D. Bajpai, 1987
3 श्रावस्ती लेखक – श्री भँवर लाल नाहटा, 1987
4. महातीर्थ अहिच्छत्रा लेखक – श्री भँवर लाल नाहटा, 1988
5. Panchala Through the Ages Ed by Prof. K.D. Bajpai, 1989.
6. Prof. K.D. Bajpai Commemoration Volume Ed. by Dr. A.L. Srivastava, 1993.
7. सम्राट अकबर और जैन धर्म लेखक – श्री बी आर कुम्भट, 1993
8. मेरी इटली यात्रा की कहानी लेखक – श्री हजारीमल बाँठिया, 1993
9. 'पंचाल' (शोध पत्रिका), अंक १–७

इन कार्यों के बावजूद श्री हजारीमल बाँठिया संस्थान के विकास और स्थायित्व के लिए उसका अपना एक ऐसा परिसर बनाना चाहते हैं जिसमे संस्थान का संग्रहालय, पुस्तकालय, कार्यालय तथा अतिथि–गृह हो, और बाँठियाजी यह सब कर सकेंगे, ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

श्री हजारीमल बाँठिया से मेरा पहला व्यक्तिगत सपर्क जून १९९२ में तब हुआ जब १० जून १९९२ को पंचाल शोध संस्थान के अध्यक्ष और सम्पादक प्रो कृष्णदत्त बाजपेयी का निधन हो गया। अपने पत्र मे इस दु खद समाचार के साथ मैंने संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री बाँठिया को सुझाव दिया था कि 'पंचाल' शोध पत्रिका का जो पाँचवाँ अंक प्रेस मे है उसे प्रो बाजपेयी को समर्पित कर दिया जाये। तुरन्त बाँठियाजी का उत्तर मिला कि आप (यानि मैं) प्रो बाजपेयी की गरिमा के अनुरूप उनका स्मृति ग्रंथ निकाले आप ही उसके मुख्य सम्पादक रहे और आप ही विद्वानों से लेख आमंत्रित करें, आप ही अपनी देख–रेख में तत्काल छपाये ताकि प्रो बाजपेयी के आगामी जन्मदिन समारोह मे उसका विधिवत् लोकार्पण किया जा सके। 'प्रो कृष्णदत्त बाजपेयी स्मृति ग्रन्थ' के प्रकाशन के साथ मैं श्री बाँठिया के निकट सपर्क मे आया। तब मैं श्री बाँठिया की कार्यशैली उनकी स्पष्टवादिता, उनका निश्छल व्यवहार, उनकी कथनी और करनी मे समदृष्टि उनकी अपार कार्यक्षमता उनके विविध [illegible] के [illegible] से सम्बन्ध और उनकी कार्य करवाने की दक्षता से परिचित हुआ।

प्रो बाजपेयी स्मृति समारोह के रूप मे मार्च१९९३ में राजस्थान भवन कानपुर मे जब मैं पंचाल शोध संस्थान के सचिव के रूप में सम्मिलित हुआ और श्री हजारीमल बाँठिया के आयोजकत्व में कार्य किया तब मै पूरी तरह उनकी अपार क्षमताओं से दो–चार हुआ। उसके बाद उनके साथ अभी तक कार्य कर रहा हूँ। सारी आर्थिक [illegible] का भार ढोकर भी श्री बाँठिया हर विषय मे विचार–विमर्श करते हैं और हर सही सुझाव को तत्काल मान लेते हैं। उनका यह गुण उनके हृदय की विशालता का परिचायक है। विद्वानो के लिए उनके मन मे अपार श्रद्धा और सम्मान की भावना है।

श्री बाँठिया की जैन धर्म मे विशेष अभिरुचि है तथा देश के कई जैन [illegible] और मन्दिरो से प्रत्यक्ष रो वे सक्रियता से जुड़े हुए हैं। कम्पिल के जैन प्रतिष्ठान जैन मन्दिर और उसके पुरातत्व संग्रहालय के वे संरक्षक हैं, संरक्षक हैं। परन्तु श्री बाँठिया की धार्मिकता में सकीर्णता नहीं है। वे क्षुद्र साम्प्रदायिकता से ऊपर हैं। उनकी धार्मिकता मे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली भावना है। वे सभी धर्मों और सम्प्रदायो के प्रति सहिष्णु हैं। [illegible]।

श्री हजारीमल बाँठिया केवल गुणी ही नहीं, गुण ग्राहक भी हैं। उन्होंने प्रो. बाजपेयी की विद्वता और उनकी निस्पृह, उदार एवं कर्मठ कार्य-शैली को ध्यान में रखकर उनसे पंचाल शोध संस्थान का नेतृत्व करने का निवेदन किया। अतः प्रो. बाजपेयी इस संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष तथा इसकी शोध पत्रिका 'पंचाल' के मुख्य सम्पादक बने।

स्व. बाजपेयी से श्री हजारीमल बाँठिया का सम्पर्क बहुत पहले से था जब प्रो. बाजपेयी राजस्थानी भाषा, साहित्य, कला एवं पुरातत्त्व के सम्मेलनों में बीकानेर आते–जाते थे और श्री बाँठिया के मामाश्री श्री अगरचन्द नाहटा से उनके साहित्यानुराग के नाते मिला करते थे। आगे चलकर जब श्री बाँठिया ने काम्पिल महोत्सव का आयोजन १९७८ ई. में किया, उस अवसर पर उन्होंने न केवल प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी के मार्गदर्शन में कम्पिल में पंचाल पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की अपितु 'काम्पिल्य कल्प' नामक एक विशेष ग्रन्थ का सम्पादन भी प्रो. बाजपेयी से करवाया। अब तक प्रो. बाजपेयी और श्री बाँठिया एक–दूसरे के अन्तरग मित्र बन चुके थे और दोनों एक–दूसरे के लिए अपार स्नेह और सम्मान रखते थे। यह मित्रता और अन्तरंगता मणिकांचन संयोग बन गयी। फलतः प्रो. बाजपेयी ने जो भी योजना बनायी, श्री बाँठिया ने उसे साकार बनाने में कोई कसर नहीं उठा रखी और प्रो. बाजपेयी ने भी श्री बाँठिया के सभी साहित्यिक और सांस्कृतिक सपनों को साकार करने का जी–तोड़ प्रयास किया।

प्रो. बाजपेयी से मेरा सम्पर्क १९७१ ई. से था। फलतः पंचाल शोध संस्थान की स्थापना के बाद इसके वार्षिक अधिवेशनों में प्रो. बाजपेयी मुझे भी बुलाया करते थे। उनकी अध्यक्षता में मैंने कन्नौज महोत्सव (मार्च १९८६), अहिच्छत्रा महोत्सव (अक्टूबर १९८६) और संकिसा महोत्सव (अक्टूबर १९८७) में भाग लिया था और वहीं श्री हजारीमल बाँठिया के सौम्य-सरल स्वरूप के दर्शन किये थे। मैं देखा करता था कि प्रो. बाजपेयी और श्री बाँठिया सदैव पारस्परिक विचार–विमर्श के बाद ही किसी बात पर निर्णय लेते थे। दोनों के कार्यक्षेत्र बँटे हुए थे। विद्वानों को आमंत्रित करके एकत्र करना, उनके शोध पत्र प्रस्तुत करवाना और बाद में उनको संशोधित करके 'पंचाल' शोध पत्रिका में प्रकाशित करवाना प्रो. बाजपेयी के मुख्य कार्यक्षेत्र थे। परन्तु समागत विद्वानों की आवभगत करना, उनकी सुख–सुविधाओं, उनके सुस्वादु भोजन और सुखद आवास की व्यवस्था करना, मंच की साज–सज्जा और यातायात जैसी जटिल और असाध्य व्यवस्थाएँ श्री हजारीमल बाँठिया की जिम्मेदारियाँ थीं जिन्हें वे हँसते-मुस्कराते निपटाते रहते थे।

विद्वानों के आने–जाने तथा शोध कार्यों की सुविधा को ध्यान में रखकर श्री बाँठिया ने पंचाल शोध संस्थान का केन्द्र कानपुर में रखा और संस्थान के सुचारु संचालन के लिए प्रो. बाजपेयी ने श्री बाँठिया को संस्थान का कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत किया। तब से लेकर आज तक श्री हजारीमल बाँठिया की देखरेख में पंचाल शोध संस्थान ने पंचाल जनपद के गौरवशाली अतीत को उजागर करने की दिशा में कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं जैसे पंचाल जनपद में विशेषकर कानपुर और फर्रुखाबाद जिलों के क्षेत्र में अनेक पुरास्थलों का पुरातात्विक सर्वेक्षण, पुरा सामग्री का संग्रह, 'पंचाल' शोध पत्रिका का नियमित प्रकाशन, पंचाल–संस्कृति पर तैयार किये गये शोध प्रबन्धों पर पी–एच.डी. की उपाधि तथा नौ वार्षिक अधिवेशनों का सफल आयोजन आदि।

अब तक पंचाल शोध संस्थान के आयोजित वार्षिक अधिवेशनों के विवरण निम्नलिखित हैं–

प्रथम	स्थापना महोत्सव	जून १९८४ ई.	कानपुर
द्वितीय	कन्नौज महोत्सव	मार्च १९८६ ई.	कन्नौज
तृतीय	अहिच्छत्रा महोत्सव	अक्टूबर १९८६ ई.	रामपुर
चतुर्थ	संकिसा महोत्सव	अक्टूबर १९८७ ई.	फर्रुखाबाद
पंचम	पंचाल गौरव महोत्सव	अप्रैल १९८९ ई.	फर्रुखाबाद
षष्ठम	ज्योतिर्दर्शन चतुर्दश शताब्दि समारोह	दिसम्बर १९९० ई.	कन्नौज

शत-शत अभिनन्दन

☐ श्यामनारायण कपूर

उदारता, त्याग, नि:स्वार्थ लोक-सेवा के, मानवता के श्रेष्ठ एवं उदात्त गुणों से विभूषित समाज-सेवा में अग्रणी, विनीत और नि:स्पृह,७० वर्ष की आयु मे सेवा कार्य के लिए उत्साह और उमग में नवयुवको को भी मात देने मे समर्थ, श्री हजारीमल बाँठिया का शत–शत अभिनन्दन।

बांठियाजी का सेवा-कार्य केवल एक सस्था अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वह बहुआयामी और व्यापक है। स्वयं सेवा करने के साथ ही वे विद्वज्जनो से भी सेवा-कार्य मे सक्रिय सहयोग लेने में कुशल हैं। अपने व्यवसाय और व्यापार की सुचारु व्यवस्था करते हुए वे विभिन्न सस्थाओं के सगठन और सफलता-पूर्वक संचालन के लिए किस प्रकार समय दे पाते हैं यह जानकर चकित हो जाना पडता है। इन सस्थाओ के कुशल सचालन तथा अनेकों मे सक्रिय योगदान से वे स्वयं एक संस्था-स्वरूप हो गये हैं।

उनके द्वारा स्थापित एव सचालित केवल 'पचाल शोध सस्थान' द्वारा ही दस वर्ष की अवधि में जितना महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो चुका है, उस पर किसी भी विश्वविद्यालय का पुरातत्त्व विभाग गर्व कर सकता है। यह संस्था केवल गोष्ठियों और वार्षिक समारोह आयोजित करने के लिए सगठित नहीं की गयी, इसका उद्देश्य पचाल–क्षेत्र के पुरातात्विक स्थलों का सर्वेक्षण, उनके गौरवशाली अतीत से जन-सामान्य विशेष रूप से उस स्थान–विशेष के निवासियों को परिचित कराना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संस्थान द्वारा पुरातत्वविदों एव इतिहास मे रुचि लेने वाले विद्वज्जनो की टोलियो को गठित कर दक्षिण पंचाल क्षेत्र का सर्वेक्षण कर कन्नौज, कम्पिल, सकिसा प्रभृति की प्राचीन गौरव गाथा उजागर की जा चुकी है, और भी अनेक स्थानो का सर्वेक्षण कर उन क्षेत्रो मे बिखरी पुरातात्विक सामग्री के सग्रह और संरक्षण की व्यवस्था की जा रही है। इस उद्देश्य से कन्नौज नगर में एक पुरातात्विक सग्रहालय भी स्थापित किया गया है। सम्राट् हर्षवर्धन की चतुर्दश शताब्दी के अवसर पर उनकी राजधानी कन्नौज मे एक विशेष महोत्सव का आयोजन किया गया था, जिसमें अनेक प्रतिष्ठित इतिहासविदों और विद्वज्जनो ने भाग लिया था। इस प्रकार के उत्सव और भी स्थलों पर उनकी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार आयोजित किये जा चुके हैं। इन सर्वेक्षणों के विवरण लेखो और शोध-पत्रो द्वारा सस्थान की "पचाल" पत्रिका मे प्रकाशित होते रहते हैं।

दक्षिण पचाल के साथ ही अब उत्तरी पचाल क्षेत्र का भी इसी प्रकार सर्वेक्षण कार्य का सूत्रपात हो चुका है। उत्तरी पंचाल की प्राचीन नगरी अहिच्छत्रा जो बरेली की आवला तहसील मे अब रामनगर के नाम से जानी जाती है, इस कार्य का श्रीगणेश हो चुका है।

यह कहना असगत न होगा कि इस प्रकार के सभी आयोजनो मे बांठिया जी की प्रमुख भूमिका होती है और वे तन–मन–धन सभी से सक्रिय रूप से आगे रहते है। उनकी पत्नी भी इस कार्य मे उनका साथ देती हैं और पुरातात्विक सामग्री के सकलन में हाथ बंटाती हैं।

शोध संस्थान के अन्य कार्यक्रमो मे 'अगरचन्द नाहटा स्मृति पुरातत्व पुस्तकालय' का सचालन है। यह पुस्तकालय अभी स्थानीय मारवाडी पुस्तकालय के एक कक्ष में कार्यरत है। इसमे पुरातत्व सम्बन्धी ग्रन्थ एव प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह किया जा रहा है। कहना न होगा कि यह पुस्तकालय कानपुर मे शोधकर्ताओं तथा इतिहास प्रेमियो के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा। इससे कानपुर के शिक्षा-जगत् की दीर्घकाल से अनुभव की जाने वाली कमी की पूर्ति होगी।

कानपुर को गौरवान्वित करने वाले इस असाधारण महत्व के शोध संस्थान की स्थापना एव सचालन के साथ उन्होने यहाँ के मोती झील स्थित 'मानस सगम' के तुलसी उपवन मे गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस पर प्रकाश

श्री बाँठिया इसीलिए भारतीय कला के अध्ययन और शोध के लिए सदैव समर्पित रहते हैं ताकि कला के माध्यम से भारतीय धर्म और संस्कृति का वह स्वरूप सामने आए जिसके लिए हमारा देश विश्व-विख्यात रहा है। और इसीलिए श्री बाँठिया प्राचीन पचाल जनपद की कला और पुरातत्व के माध्यम से इस जनपद की गौरवशाली संस्कृति का पुनर्जागरण करना चाहते हैं।

आजकल देश में अनेक ऐसे प्रतिष्ठान और शोध संस्थान हैं जो केवल राजकीय अनुदान लेते हैं, आडम्बर करते हैं और बडे-बडे साइन बोर्ड लगाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। परन्तु श्री हजारीमल बाँठिया उन लोगों से नितान्त भिन्न हैं। वे जो कुछ भी करना चाहते हैं उसमें निष्ठा, सच्चाई और दृढ संकल्प की आधारशिला होती है और अन्त में उसका मीठा प्रतिफल भी। पंचाल शोध संस्थान इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है।

श्री बाँठिया एक सफल समाजसेवी और संगठनकर्ता रहे हैं जिसकी चर्चा यहाँ भले ही प्रासंगिक न हो, परन्तु उनकी साहित्यिक अभिरुचि की चर्चा अप्रासंगिक नहीं है। उन्होंने अनेक लेख लिखे हैं। वे राजस्थानी भाषा के प्रति बड़ा प्रेम रखते हैं। उन्होंने इतालवी विद्वान डा. एल पी. तैस्सीतोरी के कृतित्व को प्रकाशित करवाया, उसकी नई समाधि बनवायी और बीकानेर तथा कानपुर में उस विद्वान की मूर्ति स्थापित करवायी। श्री बाँठिया के इन कार्यों से प्रभावित होकर तैस्सीतोरी की जन्मभूमि उदीने (इटली) में डा तैस्सीतोरी के जन्मदिन समारोहों में दो बार श्री बाँठिया को आमंत्रित किया गया जहाँ उन्होंने 'पचाल' पत्रिका के अकों के माध्यम से पंचाल शोध संस्थान का प्रचार-प्रसार किया। अपनी पहली इटली यात्रा के रोचक संस्मरण उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरी इटली यात्रा की कहानी' मे प्रकाशित भी किए हैं। प्रो वाजपेयी स्मृति ग्रन्थ के पहले भी बाँठिया अपने मामाश्री और हिन्दी के उद्‌भट विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा का अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित करवा चुके हैं।

राजस्थान की धरती को सूखी, नीरस और अनुर्वरा कहा जाता है, किन्तु उसी की कोख से अनेक ऐसे संस्कृति- पुत्र जन्मे हैं जिनसे न केवल राजस्थान का अपितु समूचे देश का मस्तक ऊँचा हुआ है। इन्हीं विभूतियों में एक नाम श्री हजारीमल बाँठिया का है जो हिन्दी के ख्यातिनामा साहित्यकार श्री अगर चन्द नाहटा के भानजे हैं। उनके पिता श्री फूलचन्द बाँठिया राजस्थान के एक लब्ध-प्रतिष्ठ व्यवसायी, महान देशभक्त तथा क्रान्तिकारी थे। श्री हजारीमल बाँठिया एक प्रतिष्ठित व्यवसायी रहे हैं। बीकानेर, हाथरस और कानपुर में उनके व्यावसायिक प्रतिष्ठान हैं। कहते हैं कि साहित्य और संस्कृति से प्रेम करने वाले व्यवसायी विरल होते हैं। श्री हजारीमल बाँठिया एक ऐसे विरल व्यवसायी हैं जिन्हें भारत और भारतीय संस्कृति से अनन्य प्रेम है। अपने पिताश्री की क्रान्तिकारी ओजस्विता तथा मामाश्री की साहित्य-साधना के गुण श्री हजारीमल बाँठिया को भी विरासत मे मिले हैं। यही कारण है कि उनका अधिक-से-अधिक समय भारतीय साहित्य और संस्कृति के अन्वेषण में तथा समाजसेवा में व्यतीत होता है।

पचाल शोध संस्थान के प्राणवन्त प्रहरी के रूप में श्री हजारीमल बाँठिया का मै हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और उनके शतायु होने की कामना करता हूँ।

☆ ☆ ☆

और उसके द्वारा राजस्थान भवन के निमार्ण का भी श्रेय है। राजस्थान भवन कानपुर की सांस्कृतिक,सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के लिये वरदान--स्वरूप सिद्ध हुआ है। यह भवन अतिथिशाला भी है और विवाह शादी के लिये 'बारात घर', सभा-सम्मेलनों के लिये विशाल सभा कक्ष और प्रदर्शिनी स्थल है। इस भवन की उपयोगिता और लोकप्रियता से प्रेरित होकर एसोसियेशन द्वारा एक दूसरे भवन का शिलान्यास हो चुका है।

वास्तव में इन सभी अति महत्वपूर्ण कार्यों से उन्हें कानपुर की अतिविशिष्ट विभूति ही कहा जायेगा। सत्तर वर्ष की आयु में भी उनकी कर्मठता और नि स्वार्थ सेवा भावना प्रशंसनीय ही नहीं सर्वथा अनुकरणीय है और समाजसेवियों तथा विद्वज्जनों के लिये प्रेरणा स्रोत। इतना होते हुये भी उन्हे सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति ही कहा जायेगा। ऐसे सरल और उदारमना मनीषी को पाकर कानपुर धन्य है। परमपिता से प्रार्थना है कि वे भारतीय परम्परा के अनुसार शुभ कार्य करते हुये सौ वर्ष तक स्वस्थ और सक्रिय रहें और केवल सौ वर्ष ही नहीं शरद शतात्'।
'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा'

साहित्य निकेतन
शिवाला रोड,गिलिस बाजार,
कानपुर २०८००१

प्राच्य विद्या के अनन्य उपासकः श्री हजारीमल जी बाँठिया

□सागरमल जैन
निदेशक,
पार्श्वनाथ विद्यापीठ,
वाराणसी-५

सामान्यतया लक्ष्मी के उपासक सरस्वती के वरदान से वंचित रह जाते हैं, तो दूसरी ओर सरस्वती के उपासक को लक्ष्मी का अनुग्रह प्राप्त नहीं हो पाता है। किन्तु कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जिन पर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की ही कृपा होती है और श्री हजारीमलजी बाँठिया एक ऐसे ही व्यक्तित्व हैं। आपको एक ओर व्यावसायिक परिवार में जन्म लेने का सुयोग मिला तो दूसरी ओर उन्हें अपने निकटस्थ परिजनों में अनेक सरस्वती के उपासकों का सान्निध्य भी मिला। श्री अगरचंदजी नाहटा और श्री भंवरलालजी नाहटा जैसे जैन विद्या के वरिष्ठ विद्वानों से उनका निकटतम पारिवारिक संबंध रहा है। सम्भवतः यही कारण है कि उन्होंने अपने व्यस्त व्यावसायिक जीवन में भी सरस्वती की उपासना को निरन्तर जारी रखा। व्यावहारिक दृष्टि से आपने चाहे उच्च शिक्षा प्राप्त न की हो, किन्तु सरस्वती की जो [illegible]

शोधकर्ता इटली के विद्वान स्व. टैसीटोरी की मूर्ति की स्थापना कर कानपुर नगर ही नहीं समस्त हिन्दी जगत की [illegible] श्रीवृद्धि की है। उनके इस कार्य की सराहना इटली-वासियों द्वारा भी की गयी। उनके प्रति अपना आभार प्रकट करने के लिए बांठिया जी को सपत्नीक इटली आमंत्रित कर आपका सम्मान किया। इस अवसर पर बांठिया जी ने हिन्दी में भाषण देकर मातृभाषा की कीर्ति-पताका फहराई।

टैसीटोरी की मूर्ति-स्थापना के लिए बांठिया जी को, जो अथक परिश्रम करना पड़ा उसकी एक अलग कहानी है, और यह कार्य उनके जैसे ही खोजी प्रवृत्ति के विद्वज्जनों के सम्मान के लिये सचेष्ट समाजसेवी द्वारा ही सम्पन्न हो सकता था।

यहाँ यह शंका की जा सकती है कि जैन मत में अगाध श्रद्धा रखने वाले बांठिया जी ने राम का गुणगान करने वाले गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस के असाधारण महत्व का आकलन करने वाले विदेशी विद्वान टैसीटोरी के सम्मान के लिए उनकी मूर्ति स्थापना का कार्य किस भावना से किया होगा। वास्तव में बांठिया जी तो 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं' परम्परा के आदर्श को स्वीकार कर उसका क्रियान्वयन भी करते हैं। उनका धर्म इसमें सहायक ही होता है, आड़े नहीं आता।

विद्वानों के आदर-सम्मान और सत्कार में वे व्यक्तिगत रूप से आनन्दित होते हैं। इस शुभ कार्य के लिए आवश्यक नहीं है कि आगत सज्जन उनके अथवा उनके संस्थाओं द्वारा आमंत्रित किये गये हों। आयोजन किसी अन्य संस्था का होगा और अतिथि होंगे बांठिया जी के। एक बार स्थानीय किसी संस्था ने दिल्ली से स्व० श्री क्षेमचन्द्र सुमन को सादर आमंत्रित किया। उनके कानपुर पहुंचने के समय की जानकारी प्राप्त कर संस्था की ओर से उनके स्वागत हेतु स्टेशन पर पहुंचने की भी उन्हें सूचना दी। परन्तु जब गाड़ी समय से कानपुर आ गई, प्रतीक्षा करने के बाद भी सुमन जी के स्वागतार्थ आयोजक महोदय अथवा उनके प्रतिनिधि नहीं पहुंचे। बांठिया जी की गद्दी स्टेशन के पास ही शक्कर-पट्टी में है। सुमन जी इसके पूर्व भी उनके अतिथि हो चुके थे, अतः वे बिना बुलाये और बिना किसी पूर्व- सूचना के, उनकी गद्दी पर पहुंचे। यहां उनका हार्दिक स्वागत किया गया।

अपनी प्राचीन संस्कृति और पुरातन सांस्कृतिक धरोहरों की रक्षा के प्रति अंतर निष्ठा की भावना ने उन्हें पचाल शोध संस्थान की स्थापना के लिये सक्रिय होने के लिये प्रेरित किया। इस कार्य में उन्हें इतिहास और पुरातत्व के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान डा० कृष्णदत्त बाजपेयी का पूर्ण सहयोग मिला। बाजपेयी जी, बांठिया जी के अभिन्न मित्रों में थे और संयोग से दोनों ही पुरातत्व प्रेमी और अपनी संस्कृति के पुनरुत्थान के लिये सचेष्ट। पचाल शोध संस्थान की स्थापना से पूर्व [illegible] की सुरक्षा के लिये कानपुर में पुरातत्व संग्रहालय [illegible] कानपुर सरकार डी०एन०एस०डी० कालेज में शिक्षा प्राप्त करना था। उन्होंने संग्रहालय स्थापना के लिये प्रान्तीय सरकार से अनेक बार अनुरोध किया। प्रयास भी हुए परन्तु इसमें सफलता न मिली। बांठिया जी के सहयोग से संग्रहालय तो नहीं परन्तु पचाल शोध संस्थान की स्थापना से श्री गणेश हुआ। दोनों एक-दूसरे के पूरक सिद्ध हुये। जो योजनायें बाजपेयी जी ने बनाईं उन्हें बांठिया जी ने कार्यरूप में परिणत किया और इस प्रकार पचाल क्षेत्र के पुरातन वैभव को उजागर करने में समर्थ हुये। और यह भी उल्लेखनीय है कि बांठिया जी मान-सम्मान से दूर रहकर अपना पुनीत कर्तव्य मानकर बड़ी लगन और उत्साह के साथ निरन्तर कार्यरत हैं। स्वयं [illegible] करने के साथ ही वे अपने सम्पर्क में आने वाले विद्वज्जनों को भी प्रेरित करने में कुशल हैं। [illegible] इतिहास अनुरागी स्व० श्री अगरचन्द नाहटा पर कार्य करने के लिये उन्होंने उरई के डा० [illegible] द्विवेदी को प्रेरित किया और वे उनके पत्रों का संकलन करने में संलग्न हैं। बांठिया जी ने इस कार्य के लिये प्रेरित करके ही अपने कर्तव्य की इति श्री नहीं की, इसके लिये बराबर उचित परामर्श और साधन भी उपलब्ध कराते रहे हैं।

कानपुर और पचाल क्षेत्र को गौरवान्वित करने के लिए पचाल शोध संस्थान और इटालियन विद्वान डा० टैसीटोरी की मूर्ति स्थापित करने के साथ ही उन्हें श्री [illegible] जी के आशीर्वाद से [illegible] राजस्थान [illegible] की स्थापना

श्री बांठिया जी का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना निःसंदेह श्लाघनीय है। और इसका प्रकाशन उच्चस्तरीय होगा इसमे भी किसी को कोई संदेह नहीं है।

27.7.1994

✻✻✻

मेरे आत्मीय श्री हजारीमल बाँठिया

□ लालचन्द कोठारी

अध्यक्ष,बीकानेर रोटरी क्लब(१९५७-५८)
ओसवाल कोठारी मौहल्ला, बीकानेर।।

श्री हजारीमल बांठिया बीकानेर के ही निवासी हैं यद्यपि इनका सामाजिक एवं साहित्यिक सेवा का कार्यक्षेत्र आजकल अधिकतर उत्तर प्रदेश हाथरस एवं कानपुर आदि हो रहे हैं। भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध जैन विद्वान स्व० अगरचन्दजी नाहटा के आप भाजे हैं एवं विद्वद्वर श्री भंवरलाल जी साहब नाहटा के भाई लगते हैं। इतिहास एवं राजस्थानी भाषा के प्रति अनुराग आपका उन्हीं के कारण प्रारम्भ हुआ। वैसे मेरा इनसे परिचय भी ५० सालों से अधिक का है जब वे विद्यार्थी थे एवं बीकानेर में ही अधिकतर रहते थे तब भी 'भारतीय मित्र परिषद' नाम की संस्था स्थापित करके अपने मित्रों और साथियों के साथ काफी साहित्यिक गतिविधियां आयोजित करते रहते थे। इटैलियन विद्वान डा० एल०पी० टैसीटोरी के राजस्थानी के प्रति अनन्यभाव से समर्पित होकर काम करने से प्रभावित होकर तबसे ही उनके बारे में अधिकाधिक खोज कार्य प्रारम्भ कर दिया था एवं उनकी भूली बिसरी कब्र को खोजकर पता लगाकर उसके भव्य निर्माण करवाने का श्रेय भी आपको ही है तथा इसमें मेरे जैसे सुस्त व्यक्ति का सहयोग प्राप्त कर लेने में सफल हो गये। बाद में तो इस बारे में पूरी खोजबीन भी की। उनके देश मे जाकर भी उनके बारे में तथ्य संग्रहीत किये। कानपुर और बीकानेर मे तो उनकी मूर्ति लगवाकर और कार्य को बढ़ाया। साथ ही श्री अमरचन्द जी बांठिया की देशभक्ति की पूरी खोज करके इतिहास मे उनको उचित गौरव दिला रहे। इसके अतिरिक्त धार्मिक एवं सामाजिक सेवा में भी आपका काफी योगदान रहता है। चूंकि मेरे से तो इनके घरेलू जैसे ही आत्मीय सम्बन्ध हैं अतः मेरा कुछ अधिक कहना उचित नहीं लगेगा। इतना ही काफी है—'आबे गौहर [illegible]'। अन्य दूसरे विद्वान इनके बारे में विस्तार पूर्वक वर्णन करेंगे,ऐसी आशा है।

द्वारा आप आज जैन विद्या के विद्वानों में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं। बाँठिया जी न केवल जैन विद्या के विद्वान हैं अपितु वे जैन विद्या के विकास में और भारतीय संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व के गंभीर अध्ययन में विशेष रुचि लेते रहे हैं। पंचाल शोध संस्थान जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के तो वे जन्मदाता और सम्पोषक रहे हैं। जैन विद्या के पुरातात्विक और सांस्कृतिक इतिहास के सन्दर्भ में आपका अपना विशिष्ट अवदान रहा है। आपने स्वयं तो इस दिशा में कलम चलाई ही है, इसके साथ ही साथ अनेक लोगों को अध्ययन के इस क्षेत्र में प्रेरित कर जैन विद्या की अनुपम सेवा की है। बाँठियाजी के व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता यह है कि विद्या के क्षेत्र में जो भी इनसे सहयोग की अपेक्षा करता है, उसे आप हर दृष्टि से सहयोग करते हैं, यहाँ तक उसके लिये आर्थिक व्यवस्था भी करवा देते हैं।

आपने न केवल इस देश में अपितु विदेश, विशेष रूप से इटली जाकर भारतीय विद्या का और भारतीय विद्या के उपासकों का गौरव बढ़ाया है। पंचाल शोध संस्थान के माध्यम से आपने अनेक पुरातात्विक महत्व के स्थलों पर संगोष्ठियों का आयोजन करके और उनमें पठित आलेखों को अपनी शोध पत्रिका'पंचाल'में प्रकाशित करके अपनी सांस्कृतिक चेतना और निष्ठा का परिचय दिया है।

ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी और विद्या प्रेमी श्री हजारीमलजी बाँठिया के अभिनन्दन का यह जो उपक्रम है, वह स्तुत्य है। हम पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार की ओर से इस निर्भीक एवं स्पष्टवक्ता विद्याप्रेमी का अभिनन्दन करते हैं और यह कामना करते हैं कि वे शतायु होकर जैन विद्या की सेवा करते रहें।

* * *

श्री हजारीमल बाँठिया और मैं

□ डा० सिद्धेश्वरनाथ श्रीवास्तव
महामंत्री–सूर स्मारक मंडल
ई ५१३ कमला नगर आगरा।

श्री बाँठिया जी से मेरा प्रथम परिचय स्व० डा० कृष्णदत्त बाजपेयी ने लगभग १२–१४ वर्ष पूर्व कराया था। डा० बाजपेयी का कार्यक्रम कानपुर में था उसमें उन्होंने मुझे आमंत्रित किया था। बाँठिया जी से मैं उनके निवास पर मिलने गया था। साहित्य और संस्कृति के प्रति उनकी विशेष लगन मैंने प्रथम भेंट के अवसर पर ही अनुभव की। वह सूर स्मारक मंडल के उपाध्यक्ष रहे और विशिष्ट सदस्य भी हैं। डा० बाजपेयी जी के स्वर्गवास पर उनसे और भी घनिष्ठता बढ़ गई।

श्री बाँठिया मेरे निवास पर आये थे और उनसे परामर्श के पश्चात् मैंने सूर स्मारक मंडल द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्र सूर सौरभ का डा० कृष्णदत्त बाजपेयी विशेषांक प्रकाशित किया। एक अन्य ग्रन्थ भी उनकी स्मृति में प्रकाशित करने की योजना थी जिसके अर्थ संग्रह हेतु श्री बाँठिया जी ने कुछ सुझाव दिये थे। किन्तु मैं इस कार्य[illegible] नहीं कर सका।

अभी भी ५ जुलाई का उनका एक पत्र मुझे प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने लिखा [illegible] हुआ है। पन्द्रह दिन पहले आप यदि सूचित कर दें तो मैं आने का अवश्य प्रोग्राम बनाऊँगा।

समाज– सेवी, साहित्य– रसिक, संस्कृति प्रिय

□ महेन्द्र कुमार मानव
पूर्व शिक्षा, वित्त एवं समाज सेवा मंत्री,
(वि०प्र०)

श्री हजारीमल बांठिया के नाम के साथ समिति ने जो उपर्युक्त विशेषण जोड़े हैं, वे बहुत ही समीचीन हैं। इन विशेषणों से बांठिया जी की सारी विशेषतायें प्रकट हो जाती हैं। इन विशेषणों से उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है।

सन् १९९२ में मैं पंचाल शोध संस्थान के वार्षिकोत्सव में गया था। यह उत्सव प्रोफेसर कृष्ण दत्त बाजपेयी की स्मृति को समर्पित था। इस उत्सव में प्रोफेसर कृष्ण दत्त बाजपेयी के परिवार–जन और मित्रजन पधारे थे। इस अवसर पर प्रोफेसर कृष्णदत्त बाजपेयी का स्मृति विशेषांक पंचाल शोध संस्थान ने प्रकाशित किया था।

श्री हजारीमल बांठिया ने प्रोफेसर के०डी० बाजपेयी की प्रेरणा से पंचाल शोध संस्थान का गठन किया था, बाजपेयी जी जब तक जीवित रहे, वे पंचाल शोध संस्थान के अध्यक्ष रहे, और बांठिया जी उनके मार्ग निर्देशन मे संस्थान का काम करते रहे।

उस अवसर पर श्री हजारीमल बांठिया जी से मेरा परिचय हुआ था। अधिवेशन कानपुर के राजस्थान भवन मे हुआ था। उस समय मैंने श्री बांठिया जी की सक्रियता देखी थी। इस उम्र में भी उनकी सक्रियता को देखकर मैं दंग रह गया था। उनमे अद्‌भुत संगठन क्षमता है। लगभग २०० विद्वानों के निवास, भोजन, यातायात, की व्यवस्था करना आसान काम नहीं था। फिर वार्षिकोत्सव का आयोजन, प्रोफेसर श्री के०डी० बाजपेयी स्मृति समारोह का आयोजन, विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन और सब एक साथ बाहर से आये प्रतिनिधियों को अलग–अलग समय देना, उनको अपना वैयक्तिक स्नेह देना, स्वागत करना, विदा देना यह सब श्री बांठिया जी जैसे व्यक्तित्व के लिये ही संभव था।

लक्ष्मी को प्रसन्न करने की उनमें कला थी, धनोपार्जन के लिये उन्होंने घोर परिश्रम किया, उनमें व्यापारिक बुद्धि थी, लक्ष्मी उन पर कृपावान हुई। अपने मामा जी के यहा नौकरी प्रारम्भ करके वे एक मिल मालिक बने। आज उत्तर भारत के गल्ले व तेल के प्रमुख व्यापारियो मे उनकी गिनती है। साहित्यानुराग उन्हें अपने मामा जी श्री अगरचन्द नाहटा से मिला। वे मातृ भक्त हैं। वे मानते हैं कि उन्हे जो कुछ प्राप्त हुआ है वह सब धर्मभीरु सन्निष्ठ तथा शुभाशय वाली मा की आशीषों का ही फल है। वे अपनी पत्नी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये कहते हैं, कि इन ५० वर्षों मे मैने जो कुछ कार्य किया है उसका सारा श्रेय मेरी धर्मपत्नी शक्ति स्वरूपा श्रीमती रतनकुमारी को जाता है।

दुनिया में धन तो बहुत लोग कमाते हैं, सेठ बन जाते हैं लेकिन वे अपने धन पर अजगर की तरह कुंडली मार कर बैठ जाते हैं, या धन को शराब और औरत की नाली में बहा देते हैं।

श्री बांठिया जी ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने धन का सदुपयोग किया–समाज सेवा में, साहित्य सेवा मे, तीर्थ सेवा में, जाति सेवा में, और इसलिये आज उनके यश की सुगंध देश–विदेश मे फैल रही है।

यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि उनका अभिनन्दन किया जा रहा है, और उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करके सम्मानित किया जायेगा ।

मेरी हार्दिक शुभकामनायें। ईश्वर उन्हे चिरायु करें।।

संस्मरण

रामवल्लभ सोमानी
एस ३-ए शास्त्रीनगर, ...
जयपुर।
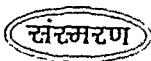
श्रीमान हजारीमल जी सा० बांठिया से मेरा व्यक्तिगत परिचय पिछले २५ वर्षों से है। मैंने इन्हें अति लगनशील, उत्साही एवं विद्वान व्यक्ति पाया है। इन्होंने प्रारम्भ में कई अच्छे ऐतिहासिक लेख शोध लिखे हैं जो जैन सत्य प्रकाश आदि पत्रिकाओं में छपे हैं। इनमें 'मुहणोत नैणसी और उनके वंशज' जो जैन सत्य प्रकाश भाग ५ अंक सं० ४२ पृ ४५७ में छपा है बहुत ही उत्कृष्ट है। शोध विषयक आपका ज्ञान अद्वितीय रहा है। चाहे कैसा ही कठोर व कठिन हो आप जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे पूरी चेष्टा से पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। मैं इनकी लगनशीलता एवं कार्यक्षमता से बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ। मेरा नाहटा अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादन के समय से इनका निकट सम्पर्क रहा है। मुझे इस ग्रन्थ से कोई अर्थ लाभ नहीं लेना था। मुझे तो महज श्री नाहटा बंधुओं द्वारा की गई सेवाओं को चिरस्थायी करने के उद्देश्य से यह कार्य करना था। इसमें श्री बांठिया जी का सहयोग होने से ही यह कार्य पूर्ण हो सका था, अन्यथा यह कार्य संभव ही नहीं हो सकता था। मेरे पूर्व भी २ विद्वानों ने इस कार्य के लिये कोशिश की थी। उन्हें किसी भी प्रकार की सफलता नहीं मिली थी। मुझे श्री बांठिया जी का सहयोग बहुत ही काम आया। एक बार इन्होंने अपना कर्मचारी भेजकर मुझे हाथरस भी बुलाया। मैं वहां भी गया और ग्रन्थ के शीघ्र प्रकाशन करने की योजना को कार्यान्वित करने को कहा। इस ग्रन्थ का दूसरा भाग दिल्ली में श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने विमोचन किया था। यह भी इनका ही श्रेय था। इस समय का दृश्य भी देखने लायक था। इंदिरा जी शासन से हटने के बाद पहली बार हमारे इस उत्सव में आयी थीं। सैकड़ों पत्रकार बिना आमंत्रण दिये ही आ पहुंचे थे। बैठने के लिये बड़ी दिक्कत हो गई। खैर ईश्वर के आशीर्वाद के फलस्वरूप श्री बांठिया जी की प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हो गया। पहले भाग का विमोचन बीकानेर में कराया गया। उस समय भी बड़ी कठिनाई आई। सादुल शोध प्रतिष्ठान की ओर से भी भयंकर आपत्ति की गई। खैर जिलाधीश महोदय के कारण सारे व्यवधान समाप्त हो गये। वह उत्सव भी बहुत ही सफल रहा।

श्री बांठिया जी मूलरूप से बीकानेर के निवासी हैं। वहां इनकी जायदाद है। एक बड़ा मकान भी है। अब ये स्थायी रूप से कानपुर में रहने लगे हैं। वहां इन्होंने जनसेवा करने में बड़ा नाम कमाया है। इनका अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होना इनके लिये गौरव की बात नहीं होकर जनता के लिये है। इन्होंने ही सबसे पहले इटली के विद्वान टैस्सीटोरी के लिये कार्य किया। उनकी स्मृति में कई मेले, व्याख्यान आदि अब भी आप आयोजित करते रहते हैं। आप इस कारण इटली में जाकर भी आये हैं। वहां आपका बहुत ही सम्मान किया गया है।

आपकी सेवाओं को दृष्टिगत रखकर मैं बहुत ही मंगल कामना करता हूँ कि श्री बांठिया जी और अधिक जनसेवा करें।

१८-१०-१९९४

जन-जन के हितैषीः श्री हजारीमल बाँठिया

डा० श्रीमन्त कुमार व्यास
दापीवि भवन
जालोर (राजस्थान)

श्रीयुत् हजारीमल जी बाठिया से पहली बार मेरा साक्षात्कार सेठ फूलचन्द हजारीमल बाठिया पुरस्कार वितरण के अवसर पर आयोजित एक सार्वजनिक समारोह मे हुआ जो ३ फरवरी १९९३ को बीकानेर के आनन्द-निकेतन मे हिन्दी विश्वभारती द्वारा संयोजित था। यह पुरस्कार कृतित्व के आधार पर राजस्थानी के एक साहित्यकार को प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है। उस वर्ष मेरा चयन होने से मैं बीकानेर गया था। समारोह मे बीकानेर के अधिकाश राजस्थानी हिन्दी के विद्वान, कवि, साहित्यकार, समीक्षक, पत्रकार, साहित्यप्रेमी, राजनेता एव समाज सेवियो ने भाग लिया। उन सब मे श्री बाठिया जी का सौम्य व्यक्तित्व महत्वपूर्ण था। समारोह मे वे सपत्नीक पधारे थे, जो उनके सुसस्कृत पारिवारिक व्यवस्था की एक झलक थी। कार्यक्रम की समाप्ति पर उनकी तरफ से सबके लिये अल्पाहार की व्यवस्था थी।

मैं उनके सादगीपूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित था। खास कर तब जब कि मुझे बताया गया कि वे स्व० श्री अगरचन्द जी नाहटा के भान्जे है। मैं लगभग चालीस वर्ष पूर्व याने वर्ष १९५० से १९५२ के बीच अपने बीकानेर प्रवास के कारण निरन्तर उनके सम्पर्क में रहा था और राजस्थानी साहित्य सृजन की उनसे भारी प्रेरणा मिली थी। असल मे स्व० नाहटा जी भारतीय संस्कृति की धरोहर थे। एकदम सादगी पसद। बाह्याडम्बर से दूर। न अखबार पढ़ना, न रेडियो से समाचार सुनना और न पुस्तको मे सिर खपाना। प्राचीन सिक्को, भोजपत्रो शिलालेखो ताम्रपत्रो बहियो एव अति प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियो में ही वे खोये रहते। उनसे संस्कृति के चमकते कण ढूढ-ढूढकर निकालते रहते। उनसे खुराक लेकर भारत भर के पत्रो के माध्यम से वे जिज्ञासु पाठकों को तृप्त करते रहे।

किन्तु श्री बाठिया जी उनके नाम से नहीं जाने जाते। उन्होंने अपनी जन्मभूमि से दूर उत्तर प्रदेश मे जाकर उसे अपना कार्यक्षेत्र बनाया। जहा न केवल व्यापारिक ही अपितु शैक्षिक सामाजिक साहित्यिक, सास्कृतिक एव राजनैतिक गतिविधियो द्वारा अपने व्यक्तित्व को स्वतत्र रूप से उभारा-निखारा। उन्होंने न केवल भारत अपितु इटली तक अपनी कीर्ति-पताका फहराई। राजस्थान, यू०पी० आदि सभी भारतवासियो को उन पर गर्व है। भारत भर के लोगो द्वारा गठित श्री हजारीमल बांठिया सम्मान समारोह समिति, द्वारा इनकी ७१वीं जन्म जयती पर इनका अभिनन्दन करना एक गौरव की बात है।

श्री बांठिया जी कितने भावुक, सहृदय और प्रेरक हैं इसका एक उदाहरण देखिये 'मेरी नई काव्य कृति 'गाडवी' के बारे मे इन्होंने दिनाक १८ अप्रैल १९९५ को मुझे पत्र में जो लिखा वह इस प्रकार है 'गाडवी' का रोज गीता की तरह पाठ कर रहा हूँ। मेरी टेबल के सामने सदा रखी रहती है। आपने एक नये पक्ष को उजागर कर एक नारी को गौरव सम्मान दिया है।'

मेरी ही तरह ये जन-जन के हितैषी हैं। ऐसी निष्काम विशुद्ध और कल्याण की भावना विरले ही लोगो मे परिलक्षित होती है, जो श्री बांठियाजी मे है। उनके जन्म-जयन्ती अवसर के लिये हार्दिक शुभकामनाए और दीर्घायु होने की मगल कामनाये।

बांठिया नाँव हजारी मल्ल
कथनी करणी एक-सी, करै न थोथी गल्ल।

☐ रामप्रकाश चिदाकाश
भगवत स्ट्रीट
फर्रूखाबाद (उ प्र)

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है, जो प्रथम दृष्ट्या ही मन को स्पर्श तो कर लेते हैं, परन्तु समझ मे नही आता कि उनका विविध आयामी व्यक्तित्व अपनी किस विशिष्ट विधा से आपके अन्तर्मन से अतरग हो रहा है, परन्तु ज्यो–ज्यो निकटता बढती है, उस व्यक्तित्व का कोई-न-कोई नवीन पहलू अपनी गरिमा से अभिभूत करता जाता है।

ऐसे ही विविध आयामी किन्तु गरिमा-पूर्ण व्यक्तित्व के धनी है श्री हजारीमल बांठिया।

लगभग २० वर्षो से पूर्व की बात होगी। स्थानीय (फर्रूखाबाद, रेलवे रोड स्थित) प्राचीन श्वेताम्बर जैन मदिर के पुनरुद्धार एव नवीनीकरण के सिलसिले मे पधारे श्री हजारीमल बांठिया से मेरा परिचय कराया गया। तब तक कपिल मे उनके प्रयत्नो से निर्मित सार्वजनिक चिकित्सालय का उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल चेन्नारेड्डी के द्वारा होने के कारण उनके नाम से परिचित हो चुका था।

प्रथम बार की भेट मे वह मुझे वास्तव मे एक सामान्य पूजीपति सेठिया के रूप मे ही साधारणत प्रतीत हुये। परन्तु उनके गम्भीर मुख व दृष्टि मुझसे मन ही मन कह रहे थे कि यह व्यक्ति, ऊपर से चाहे जैसा दिखे चाहे जैसे बोले, केवल ऊपर से ही दिखने वाला नहीं है, अपितु इसके भीतर परोक्ष मे कुछ ऐसा भी है जो सामान्य की सीमा में नही बांधा जा सकता।

कालान्तर में मेरे अन्तर्मन की वाणी समय–समय पर सत्य सिद्ध हुई और क्रमश उस व्यक्तित्व के विभिन्न गम्भीर रूप प्रकट होते चले गये।

श्री बांठिया जी से दूसरी भेट अत्यत सक्षिप्त थी। वह कपिल महोत्सव की रूप–रेखाओ के रग भरने मे परिश्रम–रत थे। कपिल जाते समय अपनी कार मे बैठे–बैठे ही मुझे निमत्रण देते हुये कपिल महोत्सव के सक्षिप्त परिचय में कहा–"महोत्सव मे जरूर आना है आपको। कपिल जी मे भगवान विमलनाथ जी के दर्शन के साथ ही बड़े–बड़े विद्वानो से भेट करने व सुनने का अच्छा अवसर मिलेगा।

कपिल महोत्सव २ अक्टूबर १९७८ ई० को हुआ। यहा पर श्री बांठिया जी एक नवीन रूप मे प्रकट हुये। यद्यपि उनके ऊपर काम्पिल्य महोत्सव का सम्पूर्ण दारोमदार था, आशातीत व्यस्तता थी परन्तु उनकी अनुभवगम्य [illegible] ही बनती थी। वह व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक अतिथि, प्रतिनिधि एव हर एक सामान्य व विशिष्ट व्यक्ति से पृथक–पृथक रूप मे अपनत्व व प्रेम से सम्बोधित व सम्पर्कित हो रहे थे। मुझसे अपनी सहज मुस्कराहट से बोले– अच्छा स्वागत है रामप्रकाश जी। यह आपका उत्सव आपके द्वारा आपके लिये ही है। कमियो पर ध्यान न दे। अपने सौजन्य से [illegible]। फिर सहसा स्मरण दिलाते हुये बोले–यहा पर पधारे हुये विद्वानो से सम्पर्क–लाभ अवश्य ले।

वास्तव मे श्री बांठिया जी, 'काम्पिल्य महोत्सव' के माध्यम से मेरे लिए [illegible] ही सिद्ध हुए। इस अवसर पर श्री बांठिया जी ने मुझ जैसे सामान्य–जन का परिचय भी [illegible] विद्वानो, इतिहासज्ञो, पुरातत्ववेत्ताओ व अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियो से कराया। विद्वानो मे मूर्धन्य श्री अगरचन्द नाहटा [illegible]

श्री हजारीमल बाँठियाजी,

जैसा मैंने उनको देखा

[illegible]
[illegible]

भारत की यह रत्नगर्भा पृथ्वी समय-समय पर महान विभूतियां अवतरित करती रही है। वे महापुरुष अवतरित होकर समाज को दिशा देते हैं और अपना समस्त जीवन समाज के विकास में लगा देते हैं। श्री हजारीमल बाँठिया उन्हीं रत्नों में से एक हैं। श्री बाँठियाजी जब पहली बार कम्पिल आये थे उस समय कम्पिल नगरी बहुत छोटा गांव थी एवं उसके मंदिर भी जीर्णशीर्ण अवस्था में थे। बाँठिया जी के संस्कार जाग उठे और उन्होंने इस उपेक्षित नगरी में एक अस्पताल की नींव रखी एवं राज्यपाल को बुलाकर भव्य नुमाइश लगवाई। बाँठिया जी के प्रयत्नों से कानपुर के जैन-समाज ने इस अस्पताल को बहुत सहायता दी तथा हाल एवं कमरे निर्माण किये। इस अस्पताल से कम्पिल से लगने वाले [illegible], एटा, हरदोई, शाहजहाँपुर, एवं मैनपुरी के लोग सबसे अधिक लाभान्वित हुये हैं। बाँठिया जी ने [illegible] कई पुलों के निर्माण की घोषणा कराई जिसके कारण कायमगंज-दहली मार्ग सुलभ हो गया।

श्री बाँठिया जी ने कम्पिल के जैन श्वेताम्बर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया तथा उसके पुनः निर्माण में [illegible] बाँठिया जी के आवाहन पर मद्रास, अहमदाबाद, दिल्ली, बम्बई आदि स्थानों से जैन-समाज ने बहुत [illegible] अभी श्री पद्मसागरजी सूरी कम्पिल पधारे थे, उन्होंने भी कम्पिल के मन्दिरों के पुनः निर्माण के लिए [illegible] दी।

पंचाल प्रदेश के पुनरुत्थान में बाँठिया जी का ही सबसे बड़ा सहयोग रहा [illegible] लगन से बड़े-बड़े उच्चकोटि के विद्वान इटली तक से आते रहे।

श्री बाँठियाजी ने ऐसे क्षेत्र को चुना [illegible] कम्पिल में कोई जैन परिवार नहीं रहता है। [illegible] नर सेवा नारायण सेवा जी रहा है। आपने समाज का चहुमुंखी विकास किया है।

ऐसे महापुरुष हमारे प्रकाश स्तम्भ हैं जो युगों-युगों तक समाज को दिशा देते रहेंगे। मेरा [illegible] है बाँठिया जी भविष्य में इसी उत्साह और लगन से मानव सेवा करते रहें। बाँठिया जी का जीवन धन्य है। मैं उनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ।

दिनांक २६-५-९५

❋❋❋

बृहत् उपन्यास जैन एवं सनातन हिन्दू परम्पराओं, मतो तथा अवधारणाओं को समादृत तथा रेखांकित करते हुए पूर्ण करने की ओर अग्रसर होने को चेष्टारत हूँ।

बांठिया जी मे साहित्य-प्रेम व इतिहास-बोध लगभग एकाकार हो गया है। वे साहित्य के गंभीर अध्येता एवं खोजी लेखक होने के साथ इतिहास व पुरातत्व के कतिपय बिन्दुओं और प्रसंगों पर गहरी सूझबूझ के साथ चर्चा कर सकते हैं, किन्तु वे अपनी विद्वता को कदाचित् छिपाये रखने मे ही विश्वास रखते हैं, वे विनम्रता से कहते मिलेगे-"मैं तो बस इतना ही जानता हूँ बाकी तो आप विद्वान लोगो के अधिकार क्षेत्र की बात है।' उनकी तथ्य परक, परिश्रम युक्त और विवेचनात्मक सम्पादन की कला का परिचय 'प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीद अमर चन्द बांठिया' जैसी पुस्तक मे परिलक्षित है, तो हिन्दी सेवी इतालवी विद्वान डा एल पी तैस्सीतोरी का समाधि की खोज व उनके कृतित्व को देश-विदेश मे मान्यता दिलाना उनका श्रेष्ठ कृतित्व है। ब्रज कला केन्द्र (हाथरस) के संस्थापन, प्रसिद्ध हास्य कवि काका हाथरसी की हीरक जयन्ती, प्रसिद्ध विद्वान व मूर्धन्य इतिहास शोधक स्वनामधन्य अगरचन्द नाहटा अभिनन्दन ग्रंथ के संयोजन व प्रकाशन जैसे अनेक कार्य उनके कीर्तिमान हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का स्वर्ण जयन्ती सम्मेलन (कानपुर) मे बांठियाजी के ही अथक प्रयासों का फल था। घनघोर परिश्रम एव अपूर्व लगन के प्रत्यक्ष-दर्शन वहा पर बांठिया जी मे एक साथ हुए। यह बात अलग है कि कतिपय साहित्यकारों के स्वकल्पित-गौरव या दम्भ एव पारस्परिक मनोद्वेषो, पूर्वाग्रहो तथा गुटबाजी-युक्त असत्य-योग ही नहीं, वरन् ईर्ष्यावश सम्पूर्ण आयोजन ही असफल कराने की कुचेष्टा मे, 'बिनकाज दाये-बायें' होने पर, बांठिया जी को बार-बार कितने बडे धर्म-संकटो मे डाला गया, किन्तु उन्होने विनम्र-दृढता व दुर्लभ चातुर्य और कौशल से हर स्थिति को न केवल संभाला ही वरन् उस सम्मेलन को 'स्मरणीयता' के स्तर तक पहुचाया। ऐसा है उनकी सास्कृतिक चेतना के लिए संकल्पित सिद्धता-युक्त सहिष्णुता धर्म और प्रशासनीय दु साहसिक वृत्ति।

सफल व्यावसायिक गुणो से भरपूर, उनमे नेतृत्व का सिद्ध समावेश है। सक्रिय राजनीति मे रहकर, अनेक राजनीतिको के घनिष्ठ सम्पर्क मे रह चुके किन्तु अब उसकी आदर्श-हीनता देखकर उपराम हो चुके हैं बांठिया जी। इसके विरुद्ध वे सम्पूर्ण समाज के लिए अनेक रचनात्मक कार्यो मे, आठवें दशक की देहरी पर पहुंच कर भी जीवट के साथ जुटे हुए देखे जाते हैं। कार्य-सिद्धि के लिए वे समाज व सत्ता के मध्य एक निस्पृह सेतु का कार्य अपनी नेतृत्व प्रतिभा से करते हैं। देश के अनेक साहित्यिक सास्कृतिक, सामाजिक संस्थानो की न केवल स्थापना की, वरन् उनको अद्यतन सक्रिय एव संगठित बनाये रखने की निरन्तर समायोजना उनके मस्तिष्क मे बनी रहती है, जो सम्बद्ध व्यक्ति और अवसर की उचित सान्निध्य-समक्षता पाते ही अपने मायावी व्यक्तित्व से साध्य-सिद्ध करवा लेते हैं। मैने कई बार उन्हें अपने अद्भुत समन्वय-गुण से सम्बद्ध संस्थाओ को लाभान्वित कराते देखा है। चाहे मुख्यमंत्री हों, सचिव हो, उच्च राजनयिक हो, राज्यपाल हो, मंत्री हों, नेता हो, विश्वविद्यालय के कुलपति हों या श्रेष्ठी हों, बडे-बडे विद्वान हों, सभी को उनसे सम्प्रभावित होते पाया गया है। वे सभी को एक ही मंच पर समाविष्ट कर लेते हैं।

गुण-ग्राहकता बांठिया जी का गरिमान्वित गुण है सभी तो देश-विदेश के इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता, साहित्यकार उनसे अनुग्रहीत होते रहे हैं। बांठिया जी अपने इस अनुकरणीय गुण से उन्हें सम्मानित करते हैं और उनसे सम्मानित भी होते रहते हैं। चाहे काम्पिल्य-महोत्सव पर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव हों, चाहे पुरातत्व प्रेमी [illegible] (अब आयुक्त लखनऊ) श्री रमेश नरायन त्रिवेदी हो, चाहे रायगंज के पंचम शोध संस्थान के अधिवेशन पर तत्कालीन केन्द्रीय उपमंत्री (सम्प्रति राज्यपाल कर्नाटक) श्री खुर्शीद आलम खा हों, चाहे [illegible] की चतुर्दश [illegible] के अवसर पर कानपुर विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति श्रीमती [illegible] हो, चाहे कानपुर मे पंचम शोध संस्थान के [illegible] अधिवेशन पर पाण्डिचेरी के पूर्व राज्यपाल त्रिभुवनप्रसाद तिवारी हों, चाहे अष्टम अधिवेशन पर कानपुर [illegible] श्री विशम्भर नाथ उपाध्याय हो और चाहे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोरा हो, सभी [illegible] बांठिया जी की बहुमुखी सेवाओं और महती सद्गुणो का निर्व्याज संस्तुति-परक गुणानुवाद करते पाए हैं।

शोध के शलाका-पुरुष श्री कृष्ण दत्त वाजपेयी प्रमुख थे। प्रथम बार उन महान् हस्तियों का सम्पर्क मेरे लिए [illegible] सिद्ध कराने वाले श्री बांठिया जी ही थे। श्री अगरचन्द नाहटा व श्री कृष्ण दत्त वाजपेयी (क्रमश:) की [illegible] स्थिति में सम्पन्न पचाल इतिहास व पुरातत्व की उस शोध संगोष्ठी में मेरी टिप्पणियों पर अपनी पुष्टि कर, मेरे [illegible] सार्थकता को आशीर्वाद व बधाई प्रदान की। परम आदरणीय, स्मृति शेष श्री अगरचन्द नाहटा जी का यह [illegible] अपनत्व मेरे हृदय में एक मूल्यवान निधि है, एवं अनेक शंकाओं का समाधान एवं लेखन का दिशादान मेरी [illegible] 'मार्फत' सम्माननीय बांठिया जी के नाम पर ही दर्ज है।

फिर तो पचाल शोध संस्थान की स्थापना के उपरान्त उसके प्रत्येक अधिवेशन में श्री हजारीमल बाँठिया के साथ सम्पर्क में आने के साथ-साथ उत्तरोत्तर घनिष्ठता एवं अपनत्व पाता चला आ रहा हूँ, प्राप्त करता हूँ तथा आगे भी करता रहूँगा। अधिवेशन कंपिल का हो, रामनगर का हो, कन्नौज का हो, [illegible] का हो, कानपुर का हो [illegible] स्नेह पाया है। या कहीं और का होने वाला हो – अधिकाधिक स्नेह पाता रहूँगा। यह स्नेह भी नवीन [illegible] है और होता रहेगा – नित्त नवीनता से पूर्ण। अस्तु।

श्री बाँठिया जी में सफल व्यवसायी की संगठन शक्ति है, समाज के विभिन्न अंगों को किसी [illegible] के लिए जोड लेना उनके लिए सहज संभव है। उनका मस्तिष्क योजना बनाने एवं अपनी विशिष्ट [illegible] शैली के द्वारा उसका कार्यान्वित कराने तथा सहृदयता पूर्वक सम्पन्न कराने की अद्भुत क्षमता युक्त है। इसके साथ ही [illegible] उसकी उन्नति हेतु अपार लगनशीलता है। यही नहीं विभिन्न सांस्कृतिक विचार धाराओं के समन्वय के [illegible] दृष्टिकोण की सम्पन्नता भी उनमें सन्निहित है।

वास्तव मे एक धार्मिक आस्थावान ही सास्कृतिक श्रेष्ठता एवं समन्वय के प्रति आदर [illegible] है। बाँठिया जी अपनी धार्मिक मान्यताओं मे एक ओर सुदृढ गिरि जैसे है, तो उस गिरि में पर-धर्म-सहिष्णुता एवं [illegible] की उदात्त सलिला भी प्रवाहित होती रहती है। वे जहां निष्ठावान हो श्वेताम्बर (जैन) मूर्तियों के प्रति नमन करते है [illegible] उतनी ही श्रद्धा भावना से दिगम्बर (जैन) मूर्तियों के समक्ष भी नमन करते देखना सहज है। [illegible] मंदिरों मे श्रद्धा-सुमन अर्पित करते देखा है, तो उनको सनातनी (हिन्दू) देवालयों और कन्नौज के ऐतिहासिक [illegible] के अर्चना विग्रहों के समक्ष सादर श्रद्धावनत होते हुए मैने देखा है। ऐसे ही सज्जनों के लिए [illegible] संसार बीज अंकुरों को जो क्षीण कर लेता है वह मेरा नमस्कार्य है क्योंकि ज्ञानी मे नाम के प्रति विशेष आग्रह नहीं [illegible] उसका नमस्कार अर्हता और वीतरागता में है –

भव बीजांकुर जनना रागाद्या क्षयमुपागता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥*

उनकी इस श्रेष्ठ-वृत्ति की अवधारणा को एक प्रसंग में देखा [illegible] मेरे मित्र श्री कमलेश (राजाराम मिश्र) ने पचाल क्षेत्र के संकाश्य, कम्पिला एवं [illegible] 'पचालदर्शन' में जैन समाज के प्रति कतिपय अनुदार [illegible] किया है। ऐसा मानकर, अपनी असहमति रखते हुए भी बाँठिया जी ने अपने उदारचेता स्वभाव से उसे ग्रहण किया। एक बार [illegible] की चर्चा चलने पर बाँठिया जी ने मुझसे कहा – [illegible] तो लेखक अपनी धारणाओं के लिये स्वतन्त्र है, किन्तु अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर [illegible] को ठेस पहुँचाना श्रेष्ठ लेखक धर्म नहीं है। लेखक का दायित्व तो समाज को जोड़ने का है [illegible] यही नहीं, मुझसे उन्होंने अनेक बार, प्रसंगवशात् अनुरोध किया – [illegible] [illegible] [illegible] अनुरोध तो पूर्ण है [illegible] [illegible] अगरचन्द नाहटा जी से [illegible] पूर्ण कर चुका हूँ। और, एक

---

* [illegible] देवांक वर्ष १४, १९५० पृ [illegible] आचार्य की मुक्तिद्वि [illegible] से देवांक की [illegible]

विषय में कुछ लिखने को कहा तथा यह भी निर्देश दिया कि कम्पिल महोत्सव के अवसर पर आपको आना है। मैंने दृढ़ता के साथ सम्मिलित होने का आश्वासन दिया। तब बाँठिया जी काफी सन्तुष्ट हुए। उसी समय उन्होंने अनेक सज्जनों को कानपुर में भी लेख लिखने तथा सम्मिलित होने के लिए फोन किये। मैं उनकी सब बातों को धैर्य से सुनता रहा। उसके बाद चाय पिलायी। मैंने जब भी जाने को कहा, बैठने का आग्रह किया। इतने अल्प समय मे मैं समझ गया कि बाँठिया जी की वाणी में सरलता और मिठास भरी हुई थी, मैं काफी प्रभावित हुआ। इससे उसी समय मैंने निष्कर्ष निकाला कि बांठिया जी निश्चित रूप से सरल, उदार, प्रतिभावान एवं सहृदय व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं। उनमे भारतीय संस्कृति कूट-कूट कर भरी हुई है। उनके खान-पान, रहन-सहन तथा वेशभूषा से सच्ची भारतीयता परिलक्षित होती है। उनपर बाल्यावस्था से लेकर अब तक न मालूम कितने संकट आये परन्तु उनका प्यार स्नेह तथा सेवा की भावना सबके प्रति समान ही रही है और उनके प्रत्येक जीवन का संकट उनको किसी भी प्रकार से विचलित नहीं कर सका है और समय-समय पर उभर कर निखरे ही हैं। 'पंचाल शोध संस्थान' इन्हीं के सद्प्रयासो से गत १५ वर्षों से निरन्तर कार्यरत है तथा पंचाल के राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कम्पिलमे जब प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव जी के द्वारा उद्‌घाटन *किया जा रहा था, मुझसे कहा कि मेरी हार्दिक इच्छा है कि 'कम्पिल नगरी' की भारत तथा विश्व के महत्वपूर्ण पर्यटन केन्द्रों* में गणना हो। इसी उद्‌देश्य से उन्होने 'काम्पिल्य कल्प' का प्रकाशन करवाकर कम्पिल का महत्व प्रदर्शित करके बुद्धिजीवियो का ध्यान आकृष्ट किया। उस समय मैं बांठिया जी से काफी प्रभावित हुआ और सोचने लगा कि बांठिया जी जहाँ कहीं भी किसी क्षेत्र मे कार्यरत रहे, वह कभी-भी अपने निर्दिष्ट लक्ष्य से भटकते नहीं हैं और किसी मिथ्या सम्मान की झलक उनके चेहरे पर नहीं मिलती। जब वह इटली जा रहे थे मैंने भी उनसे भेंट की और इटली से वापस आने पर भी भेंट की। उस समय उनकी बातचीत तथा कर्तव्य-परायणता से यही पता चलता था कि वह यूरोप की यात्रा करने के बाद भी एक सामान्य राजस्थानी व्यक्ति के रूप मे ही बातचीत करते हैं।

श्री बाँठिया जी जैन धार्मिक ग्रन्थो के साथ ही साथ वैष्णव ग्रन्थों का भी नित्य-प्रति पाठ करते हैं और साथ ही इनके बताये हुए आदर्शों एव सिद्धान्तो को भौतिक एव सामाजिक जीवन मे उतारते भी है। वे सदैव अपना कार्य उत्साह एवं लगन से करते हैं। उन पर सुख-दुःख, लाभ-हानि और जय-पराजय का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता है।

बाँठिया जी जहाँ-जहाँ पर भी रहे हैं, वहा-वहा पर उनका जनाधार व्यापक और विस्तृत रहा है। हाथरस में रहकर वह मामाजी के यहाँ जीविकोपार्जन के लिए कार्य करते थे उसी समय वह अन्य उपायों की शोध मे थे। धीरे-धीरे परन्तु अत्यन्त कुशलता से एक दशक के अन्तर्गत ही उन्होने अपना जनाधार बना लिया था। इसी का परिणाम था कि १९५१ से निरन्तर हाथरस नगर पालिका के यद्यपि जनप्रतिनिधि ही निर्वाचित हुये थे परन्तु अपने परिश्रम, लगन, योग्यता एव समन्वयवादी दृष्टिकोण के कारण अध्यक्ष के पद तक को सुशोभित किया। इसी समय हाथरस में शिक्षा का उन्नयन भी हुआ और आप ही के सद्-प्रयासों ने बागला कालेज हाथरस को स्नातकोत्तर स्तर पर ला खड़ा किया। वह हाथरस, कानपुर तथा राजस्थान की अनेक शैक्षिक संस्थाओ से जुडे हुये है। इससे प्रमाणित होता है कि उन्होने हाथरस के उत्थान हेतु एक जागरूक सदस्य की भूमिका का ही सफल निर्वाह किया। श्री बांठिया जी जिन अनेक सामाजिक धार्मिक तथा आध्यात्मिक संस्थाओं के संस्थापक, संचालक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, ट्रस्टी, मंत्री अथवा सदस्य रहे हैं व इन सभी संस्थाओ के अधिकांश कार्यकर्ताओं से निरन्तर सम्पर्क बनाये रहते हैं। उनके दुःख-सुख मे सम्मिलित होते ही हैं। उनके स्वभाव मे आ गया है वह कभी किसी अवसर पर किसी को भी शिकायत का अवसर नहीं देते है। उनकी स्मरण-शक्ति इस अवस्था मे भी तीव्र है। वह जो काम भी हाथ मे लेते है, उसे सच्ची लगन तथा तत्परता के साथ सम्पन्न करते हैं। सरलता मृदुलता, योग्यता जो एक भारतीय के गुण होते हैं वह भी बांठिया जी के चेहरे से बिखरते रहते हैं।

श्री बांठिया जी के पूर्वज अपने समय के दानवीर एव शूरवीर श्री [illegible] ने समाज की सुख समृद्धि के लिये धन-दौलत तथा प्रसन्नता [illegible] इसी कारण से [illegible]। श्री [illegible] मे भी प्रारम्भ से ही इस वंश परम्परा के निमित्त सेवा भाव और त्याग पूर्ण जीवन-धर्म का प्रभाव कूट-कूट कर पड़ा। [illegible]

अभी, पंचाल शोध संस्थान के नवम समारोह (१९९४ – रामगंज) के सम्मानित अध्यक्ष, डेनमार्क के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डा. डेविड लिवर्सेज से एक साक्षात्कार किया और विभिन्न महती चर्चाओं के उपरान्त जब उनका आभार व्यक्त किया तो उन्होंने गंभीर मुस्कराहट के साथ बड़ी बेबाकी से कहा – "इसके लिऐ आप अपना आभार श्री हजारीमल बाँठिया को दें जिनके सत्प्रयासों से मैं आप तक पहुंच सका। वह हमारी इस भेंट के ही नहीं, भारत तथा डेनमार्क के मध्य सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक मिलन की महत्वपूर्ण संयोजक कड़ी (ऐन यूनाइटिंग लिंक) हैं।

ऐसे विलक्षण, प्रतिभाशाली, सहिष्णु, उदारचेता, उद्योगशील, कर्मठ, समाज व राष्ट्र सेवी, महान् व्यक्तित्व के अभिनन्दन के सुयोग पर, राजस्थानी के राष्ट्र कवि श्री कन्हैया लाल सेठिया के शब्दों में इस –

गुदड़ी रो लाल,
कुळ रो दिवलो बाँठियो
नाँव हजारी मल्ल
कथनी करणी एक–सी,
करै न थोथी गल्ल

वाले व्यक्तित्व को विनम्र अभिवादन करता हूँ तथा भविष्य में भी उनके द्वारा देश-धर्म, राष्ट्र, समाज, संस्कृति, साहित्य, पुरातत्व की महान् सेवाओं के सुदीर्घ एवं यशस्वी जीवन की हार्दिक कामना करता हूँ।

भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक
श्री हजारीमल बाँठिया जी

□ डा. [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

मे इस संस्था के ६ वार्षिक अधिवेशन सफल ढंग से सम्पन्न हो चुके है। इसकी शोध–पत्रिका 'पचाल' के ७ अंक भी सुन्दर ढग से प्रकाशित हो चुके है। बाठिया जी की यह अत्यत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

बांठिया जी एक उदारमना समाजसेवी भी हैं। काम्पिल्य में सार्वजनिक अस्पताल का निर्माण, जैन श्वेताम्बर मन्दिर एव धर्मशाला का जीर्णोद्धार, हाथरस में 'तिलक शिशु मन्दिर' तथा 'सुरजोबाई उत्तर माध्यमिक बालिका विद्यालय' की स्थापना आदि उनके उल्लेखनीय सामाजिक कार्य है।

बांठिया जी देशाटन प्रेमी भी हैं। वे अब तक यूरोप महाद्वीप मे विभिन्न देशो की यात्राये कर चुके है।

आज देश में नैतिक मूल्यो का तीव्र गति से ह्रास हो रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार व्याप्त है। इस संक्रमण काल मे हमारे समाज को बाठिया जी जैसे सच्चरित्र धर्मनिष्ठ, कर्मठ उदारमना समाज सेवियों की अत्यंत आवश्यकता है। बांठिया जी की ७१ वीं वर्षगाठ पर मैं उनके शतजीवी होने की कामना करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि बांठिया जी के नेतृत्व मे हमारा समाज उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होगा।

१८४, कजियाना, कोतवाली रोड,
फतेहपुर (उ०प्र०) पिनकोड–२१२६०१
जनवरी १५, १९९५

⌘⌘⌘

समर्पित समाजसेवी बांठिया जी

☐ शम्भुनाथ टण्डन
पूर्व उप निदेशक, सूचना व जनसम्पर्क
उत्तर प्रदेश शासन

प्रख्यात एवं निस्पृह समाजसेवी मित्र श्री हजारीमल बांठियाजी अपने कर्मठ जीवन के ७१ वर्ष पूरे कर रहे है, यह जानकर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ। उनके मित्रो एव प्रशसको ने इस अवसर पर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह आयोजित कर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेट करने का भी निश्चय किया है,यह मेरे लिये और भी प्रसन्नता एव सन्तोष की बात है।

श्री हजारीमल जी से मेरा विशेष सम्पर्क मानस संगम कानपुर के संस्थापक प० बद्रीनारायण तिवारी के माध्यम से हुआ जब बांठियाजी ने इटली मे जन्मे तथा बीकानेर में स्वर्गवासी हुये विश्वविख्यात विद्वान डा० एल०पी० टेस्सीटोरी की प्रतिमा मोती झील कानपुर के साहित्यिक तीर्थ तुलसी उपवन मे स्थापित करने की पूरी जिम्मेदारी ले ली थी। मानस मर्मज्ञ आधुनिक तुलसी के रूप मे विख्यात विद्वान प० राम किंकर जी की अध्यक्षता मे हुये उस समारोह मे हिन्दी के अनेक विद्वानों के अलावा इटली के राजदूत भी पधारे थे। हजारीमल जी ने इस भुलाये हुये तपस्वी विदेशी भारत प्रेमी विद्वान की कब्र की खोज के लिये कितनी भाग दौड की तथा बीकानेर के गिरजाघर के पुराने रिकार्डों से ढूँढकर किस प्रकार उनकी [illegible]

पक्ष की दानशीलता, साहित्यनानुराग और पुरातत्व प्रेम विरासत में प्राप्त हुआ। अपने दो दशकों के अनुभव से श्री हजारीमल जी के विषय में इतना ही कह सकता हूँ कि हजारीमल जी जैसे निस्पृह सेवक बिरले ही मिलेगें।

यह भी विरले ही होता है कि पितृ पक्ष तथा मातृ पक्ष के समान ही वैसी रुचि रखने वाला पुत्र हो। इसमें संदेह नहीं कि श्री हजारीमलजी ने अपने पिता के सभी गुणों को ग्रहण किया। श्री बांठिया जी कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ ही कुशल चिन्तक एवं लेखक भी हैं। वे निस्पृह समाज सेवक हैं तथा उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान मे अपनी समाज सेवा तथा सत्यनिष्ठा के लिये प्रसिद्ध हैं। वह समाज के सर्वतोमुखी विकास के लिये सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। आज भी लगन तथा उत्साह से समाज सेवा के विविध कार्यों में स्वय को समर्पित किये हुये हैं। ईश्वर श्री बांठिया जी को शतायु करे।

□□□

श्री हजारीमल बाँठिया: एक संस्मरण

□ कृष्ण कुमार
भूतपूर्व उप अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, साहित्यरसिक, संस्कृतिप्रिय श्री हजारीमल बांठिया से मेरा प्रथम परिचय वर्ष १९८४ मे हुआ। उस समय मैं उत्तर प्रदेश सरकार के अधीन इलाहाबाद मंडल में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति पद पर नियुक्त था। भारत सरकार की पुरावशेष रजिस्ट्रीकरण योजना के कार्यान्वयन हेतु काम्पिल्य (फर्रुखाबाद जनपद) की यात्रा के समय मुझे बांठिया जी द्वारा स्थापित 'पंचाल पुरातत्व संग्रहालय' देखने का सुअवसर मिला। व्यक्तिगत सीमित साधनों से एक बहुमूल्य संग्रहालय स्थापित करना उनका अत्यंत प्रशंसनीय कार्य था। उसी समय मेरे मन में बांठिया जी के दर्शन करने की प्रबल इच्छा हुई। काम्पिल्य से इलाहाबाद लौटते समय मैं बांठिया जी से कानपुर स्थित उनके आवास पर मिला। प्रथम परिचय में ही मैं उनके अद्भुत व्यक्तित्व एवं सौजन्यता से अत्यधिक प्रभावित हुआ।

बांठिया जी बहुमुखी प्रतिभा–सम्पन्न व्यक्ति हैं। यद्यपि वह व्यवसाय से एक सफल उद्योगपति एवं व्यवसायी हैं, किन्तु वे लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों के समान रूप से उपासक हैं। उद्योग एवं व्यापार के साथ ही उन्हें साहित्य, इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व से गहरा लगाव है। उक्त गुण उन्हें सम्भवत: अपने मामा सरस्वती के वरदपुत्र श्री अगर चन्द भंवरलाल नाहटा से विरासत में मिले थे। विविध विषयों पर लगभग ३०० लेख लिखने के अतिरिक्त बांठिया जी ने अनेक पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया। उन्होंने श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा का अभिनन्दन–ग्रन्थ प्रकाशित कराया। साथ ही उन्होंने प्रसिद्ध इतालवी विद्वान डा० एल०पी० तैस्सीतोरी की समाधि बीकानेर में खोजकर उसका पुनर्निर्माण कराया तथा उनकी प्रतिमा भी स्थापित करायी। राजस्थानी एवं ब्रजभाषा के पुनरुत्थान हेतु उन्होंने 'फूलचन्द बांठिया पुरस्कार' स्थापित किया।

काम्पिल्य में पुरावशेषों की खोज तथा 'पंचाल पुरातत्व संग्रहालय' की स्थापना उनका अत्यंत उल्लेखनीय कार्य है। पंचाल क्षेत्र में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक शोध कार्य हेतु उन्होंने कानपुर में 'पंचाल शोध संस्थान' की स्थापना की। अब तक इसके माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों एवं पुरावशेषों की खोज की जा चुकी है। बांठिया जी के मार्ग–दर्शन

भारतीय संस्कृति के जागरूक प्रहरी -
श्री हजारीमल जी बाँठिया

□ द्विवेदी, डा० प्रकाश
डिप्टी सी एम ओ

हाथरस की धरती रत्नगर्भा है। इस धरती ने ज्ञान–विज्ञान, कला–चित्रकला, साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, चिकित्सा एवं राजनीतिक क्षेत्रों में अपनी कोख से ऐसे रत्नों को जन्म दिया अथवा पल्लवित किया है, जिन्होंने अपने प्रकाश से अपने युग को तो प्रकाशित किया ही, आने वाली दशाब्दियों, शताब्दियों तक भावी पीढ़ी के पथ को प्रकाशित करते रहेंगे।

श्री हजारीमल जी बाँठिया, इन्हीं कालजयी पुरुषों की श्रृंखला में, एक आदरणीय नाम है, जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रख उसमें नयी शोध एवं खोज के कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं। इस सिलसिले में हमें उनके साथ कम्पिल एवं राजगिर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

सांस्कृतिक प्रवाह भी जगत्-प्रवाह की तरह प्रखर एवं सतेज होता है। समय प्रवाह की इसी शक्ति में, कभी–कभी अनजाने कितने लोग, अपनी प्रकृति–भूमि से इतने दूर बह जाते हैं, कि हम आज की इस प्रवाह–प्रेषित भूमि पर खड़े होकर उनके पिछले स्थान का केवल अनुमान भर लगा सकते हैं। श्री हजारीमल बाँठिया जी के जीवन के साथ यह घटना अक्षरश: सत्य प्रतीत होती है। जो–

पचाल शोध संस्थान, कानपुर के संस्थापक, भारतीय कला, पुरातत्व, इतिहास एवं संस्कृति के पोषक एवं संरक्षक हैं और पचाल शोध संस्थान, उनकी कीर्ति का स्थायी स्तम्भ बनकर रह गया है।

चौबीस में से १७ जैन तीर्थंकरों की जन्मभूमि, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की कर्मभूमि, लीलाभूमि, उत्तर प्रदेश समय–समय पर अनेकानेक सन्तों, महन्तों एवं श्रीमन्तों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है। उन्हीं मनीषियों में से एक राष्ट्रचेता मनीषी प्रख्यात समाजसेवी, साहित्य, संस्कृति, कला प्रेमी, धर्मवीर, दानवीर, उदारमना, महामना श्री हजारीमल जी बाठिया हैं जिन्हें किसी परिचय की आवश्यकता नहीं। वे स्वयं में एक परिचय हैं। साथ ही, उन्हें राष्ट्रकवि श्री सोहनलाल जी द्विवेदी ने उनके बिन्दकी प्रवास के दौरान "नगर श्रेष्ठ" की उपाधि से विभूषित किया था।

आज का मानव विपुल वैभव उद्दाम लालसा में शांति की दिशा भूलता जा रहा है। सत्य और अहिंसा के सरस प्रचलन से परे हो रहे हैं। पर आपके स्वभाव में लक्ष्मी और सरस्वती का [illegible] निहित है वैभव और [illegible] का सामंजस्य परिलक्षित है।

वे पचाल क्षेत्र ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में अपनी तरह के अकेले [illegible] के रूप में प्रतिष्ठित हैं जो, अपने पचाल शोध संस्थान के तत्वावधान में बड़े–बड़े [illegible] श्रावस्ती, कन्नौज, कम्पिल, संकिसा, [illegible], काशी, कौशाम्बी एवं राजगिर आदि [illegible] पर समय–समय पर [illegible] वार्तायें, विचार गोष्ठियां–संगोष्ठियाँ आयोजित करते आये हैं।

हमारे ज्ञान–विज्ञान के अद्भुत खजाने संस्कृति [illegible] भस्मीभूत होकर नष्ट–भ्रष्ट हो गये या अन्य रूपों, [illegible] प्रकोप ने स्वाहा कर दिया। और दुर्भाग्यवश आजादी पाने के बाद भी [illegible]

साहित्य साधना सदन
केला पाडा, जैसलमेर–३४५००१

श्री हजारीमल बाँठिया : एक महनीय व्यक्तित्व

□ प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव
सम्पादक, विज्ञान
विज्ञान परिषद महर्षि दयानन्द मार्ग,
इलाहाबाद – २११००२

गौरवर्ण ऊँची कद–काठी, चेहरे पर आभिजात्य की स्पष्ट छाप, किन्तु बातचीत में अत्यन्त सहज–सरल मितभाषी, मिष्ठभाषी – कुल मिलाकर एक आकर्षक व्यक्तित्वः कुछ इसी प्रकार का मेरा अनुभव रहा श्री हजारीमल बाँठिया से प्रथम परिचय का।

मुझे श्री बाँठिया से मिलने का सौभाग्य अपने मित्र और कॉलेज में वरिष्ठ सहयोगी और पड़ौसी डॉ अशर्फी लाल श्रीवास्तव के निवास पर मिला। वैसे तो मैंने डॉ श्रीवास्तव से बातचीत के दौरान अनेकानेक बार श्री बाँठिया का नाम सुना था, पर सच्चाई तो यह है कि उस समय मैं बाँठिया जी को शुद्ध उद्योगपति ही समझता रहा। किन्तु उनसे मिलने के बाद मुझे अपनी धारणा बदलनी पडी। प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला एवं इतिहास के श्री बाँठिया जी मर्मज्ञ विद्वान हैं। मुझे उनके द्वारा लिखी एक पुस्तक हाथ लग गयी और उसे पढने के बाद मुझे लगा कि उपर्युक्त विषयो की बाँठिया जी की निःसंदेह गहरी पकड है। इस पुस्तक का नाम है "मेरी इटली–यात्रा की कहानी"

प्रो कृष्ण दत्त बाजपेयी जी के निधन के बाद तो पचाल शोध संस्थान का समूचा कार्य भार उन्होंने उठा लिया। 'प्रो. कृष्ण दत्त बाजपेयी स्मृति ग्रंथ' के सम्पादन का भार जब डॉ ए एल श्रीवास्तव जी ने अपने कंधो पर ले लिया, तब अनेक बार उनके निवास पर बाँठिया जी से बातचीत के अवसर मिले। उनका मानवीय पक्ष भी उजागर हुआ। सहयोगियों और मित्रों के लिए उनके मन मे कितना प्यार है, कितना स्नेह है, यह भी पता लगा।

श्री हजारीमल बाँठिया के व्यक्तित्व में एक सफल उद्योगपति और विद्वान का अनोखा संगम है।

श्री बाँठिया के सिर के बाल झड़ गए हैं, जो बचे हैं, सफेद हो गए हैं फिर भी वे आज भी एक युवा की भाँति कार्यरत हैं।

यह आश्चर्य ही है कि अति व्यस्त व्यापारी होने के बावजूद वे व्याख्यानों, संगोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए काफी समय निकाल लेते हैं। गत वर्ष विदेश–यात्रा पर निकल गए और अनेक व्याख्यान भी दे आये। उनसे कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे श्री बाँठिया जी को लम्बी आयु दें, अच्छा स्वास्थ्य दें ताकि वे पचाल शोध संस्थान से जुडे युवा शोधार्थियो और विद्वानों को दिशा–निर्देश देते रहें, उनका पथ प्रशस्त करते रहें।

○○○

श्री बांठिया की राजस्थानी भाषा के प्रति ही नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी और शोध कार्यो के प्रति भी गहरी रुचि रही है। कानपुर मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजन का श्रेय भी आपको रहा है।

कई वर्षो से आप कानपुर मे स्थापित पचाल शोध सस्थान से जुडे हुए है। यह सस्थान उत्तर प्रदेश मे शोध, साहित्य, संस्कृति एवम् इतिहास के क्षेत्र मे कार्य कर रहा है।

श्री बांठिया से इस आलेखके लेखक का अनेक वर्षो से व्यक्तिगत सबध रहा है। बाठिया जी की इच्छा रही है कि राजस्थान और उत्तर प्रदेश की साहित्यिक-सास्कृतिक सस्थाओ की गतिविधियो का पारस्परिक आदान-प्रदान हो। हम दोनों अनेक वर्षो से इस दिशा में प्रयत्नरत हैं। श्री बाँठिया से नई पीढी को विशेषकर जो शोध-साहित्य से सम्बद्ध हैं,प्रेरणा लेनी चाहिए।

श्री हजारीमल बाँठिया के प्रति आदर प्रकट करते हुए इतना ही कहना चाहूगा।

जस आखर लिखै न झठै, वा धरती भर जाय।
सत सगत अरु शूरमा अै औफला कै जाय।।

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
श्री डूगरगढ (राजस्थान)

सरल एवं सौम्य वाँठिया जी

□ डा. शिवगोपाल मिश्र

बात सन् १९८६ की गर्मियो की है। लखनऊ संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर जहा संग्रहालय के [illegible] है, एक विशिष्ट वेशभूषा वाले – धोती, कुर्ता, चप्पल, धारण किये व्यक्ति के दर्शन हुए। वे भी पुस्तके खरीद रहे थे। जब बात चली तो बोले कि "मै राजस्थान का हूँ"। मै अपनी पुत्री के साथ था। वह संग्रहालय मे अपने शोध कार्य के सिलसिले मे गयी थी। मैने कहा "मै इलाहाबाद से हूँ । मै राजस्थान के एक व्यक्ति श्री अगरचन्द नाहटाजी को जानता हूँ किन्तु अब वे नहीं रहे। वे मेरे पूज्य थे और उनकी विद्वत्ता एव उदारता से मै अत्यधिक प्रभावित था।"

वे बोले, "तब तो बहुत अच्छा हुआ। मै नाहटाजी के ही परिवार से सम्बन्धित हूँ। मुझे [illegible] है। मै प. कृष्ण दत्त बाजपेयी को जानता हूँ मैने उनके सहयोग से पचाल शोध संस्थान की स्थापना की है। इस समय मै कानपुर मे हूँ। आप अपनी पुत्री समेत पचाल शोध संस्थान के उत्सव मे आइये। आपका स्वागत है।"

मै उनकी सरलता से और उनकी विद्वता से अभिभूत हो गया था। [illegible] था कि राजस्थान [illegible] महान विभूतियो की स्थली है। टाड, टैसीटरी, [illegible] और [illegible] के नाम मेरे मन मे [illegible] है।

गिरपत मे आ गया। परिणामतः आज उपभोक्ता संस्कृति के उद्दाम लीला विलास के आतंक से संस्कृति की रोशनी के समक्ष भयावह सकट उत्पन्न हो गया है। कीर्तिस्थल खंडहरों के गांव बनकर रह गये हैं। उनको पुन: प्रकाश में लाने का कुछ काम अग्रेज विद्वानो ने किया था। कुछ सरकार कर रही है। इसी प्रयास में पश्चिम भारत मे, पंचाल शोध संस्थान प्रयासरत है। इतिहास-जगत के प्रतिष्ठित विद्वान श्री भंवरलाल जी नाहटा कलकत्ता के पदचिन्हों पर चलने वाले, श्री हजारीमल बांठिया के नेतृत्व में सनातन धर्म एव श्रमण-संस्कृति के पोषक श्री नवलमल के. फिरोदिया पूना, की अध्यक्षता मे, आगामी सितम्बर १९९५ मे उनके अभिनंदनार्थ गठित सम्मान समारोह समिति एक स्तुत्य प्रयास है। अंत मे हार्दिक शुभ कामनायें, अभिनन्दन एव नमन।

माँ आनदमयी अस्पताल
शिवाला, वाराणसी–२२१००१

साहित्य और शोध के प्रतीक
श्री हजारीमल बाँठिया

☐ श्याम महर्षि

श्री हजारीमल बाँठिया का जन्म रेगिस्तान से घिरे शहर बीकानेर में आज से ७० वर्ष पूर्व हुआ। भौगोलिक रूप से सूखा और अभावों से ग्रस्त यह इलाका साहित्य–संस्कृति और पुरातत्व क्षेत्र में सम्पन्न रहा है। इस वीर–प्रसूता भूमि में पैदा हुए श्री बाँठिया की रुचि बचपन से ही साहित्य और समाज सेवा कार्य में रही है। वे बचपन में ही छोटी-मोटी गोष्ठियों, सभाओं और समाज सेवा कार्यों में सक्रिय रहे।

बीकानेर छोडने के पश्चात् उन्होंने अपना कार्य–क्षेत्र स्थायी रूप से कानपुर (उ.प्र.) में बना लिया, जहां वे साहित्य–संस्कृति और समाज सेवा में अनवरत सक्रिय हैं। यद्यपि श्री बांठिया को बीकानेर छोड़े अनेक वर्ष बीत गये हैं परन्तु भावनात्मक एवं साहित्यिक रूप से आज भी जुडे हुए हैं।

बीकानेर में आपने प्रतिवर्ष एक राजस्थानी साधक को पुरस्कृत करने के लिए बाँठिया साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ कर रखा है। वे प्रतिवर्ष बीकानेर में आयोजित इस पुरस्कार समारोह में स्वयं आते हैं। तब उनकी चिर स्मृतियाँ पुनः ताजा हो उठती हैं। वे यहाँ राजस्थानी भाषा साहित्य के उन्नयन के लिए गोष्ठियां आदि आयोजित करते हैं और उनमें हिस्सा लेते हैं। इनके द्वारा अब तक अनेक राजस्थानी विद्वान पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

राजस्थानी भाषा साहित्य के मर्मज्ञ डॉ. टैसीटोरी के प्रति भी बांठिया जी की अगाध श्रद्धा रही है। इटली में हुए टैसीटोरी जन्मशती समारोह में उन्हें इटली मे आमंत्रित किया गया था जहां उन्होंने इटली के इस महान सपूत पर एक पत्र- वाचन भी किया था।

-पैसेवाला व्यक्ति यदि कवि बन भी गया है तो भी उसमे सहृदयता और भावुकता, विशेषकर मानवीयता का भी कभी-कभी अभाव- सा दिखायी देता है, क्योंकि पैसा हमारी भावनाओं को निष्क्रिय और जड बना देता है। दुनिया में अपवादों का अपना स्वाद है। ता. २४ सितम्बर १९२४ ई. को बीकानेर में जन्मे श्री हजारीमल बाठिया, जिनका कार्यक्षेत्र अब उत्तर- प्रदेश हो गया है - भी जबरदस्त अपवाद हैं। वे लक्ष्मीपति होकर भी मानवता की कोमल भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

वैसे तो श्री बाठिया जी का नाम १९५६ ई. मे हुआ था, जब अग्रज स्व. श्री पुरुषोत्तम केवले (पत्रकार) 'राजस्थान भारती' का विशेषांक ले आये थे और उसमे डा. एल.पी. टैसीटोरी सम्बन्धी प्रभूत सामग्री थी। बाठिया जी ने डा. टैसीटोरी के संबंध में सर्वाधिक रुचि ली थी। इस बात की जानकारी भी उसी समय हुई थी। आपके ही प्रयासों से डा. टैसीटोरी की समाधि का उद्धार भी हुआ था। मैं उस समय डूँगर कालेज में पढ रहा था। उस भव्य आयोजन को देखकर टैसीटोरी पर कुछ लिखने की तमन्ना हुई थी और मैंने हिन्दी मे काव्य पंक्तियां लिखकर स्व. अगरचन्द जी नाहटा को दिखायी थी।

श्री बाठिया से साक्षात्कार तो नवम्बर १९८१ मे हुआ, जब नागरी भण्डार में डा. टैसीटोरी संबंधी कार्यक्रम मे वे स्वयं उपस्थित हुए थे। उन्होंने डा. टैसीटोरी पर शोध कार्य करने के लिए सबको प्रोत्साहित किया। मैंने इनकी प्रेरणा से अपने एक छात्र को 'टेसीटोरी की राजस्थानी भाषा और साहित्य को देन विषय पर पी-एच.डी. करने को कहा। इस प्रकार हम निकट आए। बातचीत से लगा कि बाठिया जी मे तनिक भी आडम्बर और अर्थाभिमान नहीं है। जीवन को वे बडी सहजता से लेते हैं और जीते हैं किसी भी प्रकार का तनाव, आक्रोश या कटुता इनके निकट वास नहीं कर सकती।

उदारमना बाठियाजी ने बीकानेर के कवियो को 'कवि-सम्मेलन' मे कानपुर बुलाया। १८ सितम्बर १९८२ को उस भव्य सम्मेलनके महत्वपूर्ण आयोजकों मे से होते हुए भी वे प्रफुल्लचित्त बैठे कविताओं का रसास्वादन कर रहे थे। सब ओर से बेफिक्र, वीत राग। प्रत्येक घटना को वे बडी सहजता से लेते हैं और तुरन्त निराकरण करने मे प्रयत्नशील रहते हैं।

श्री बाठिया जी की सद्‌वृत्तियाँ और कार्य क्षमतायें अनुकरणीय भी है। वे सदा भ्रमणरत रहते हैं। बीकानेर में आने के बाद वे तनिक भी विश्राम नहीं करते और कभी टैसीटोरी की समाधि के जीर्णोद्धार में चिन्तित दिखायी देते हैं तो कभी पुरातत्व विभाग मे टेसीटोरी के पत्रों की संभाल हेतु व्यग्र। पुरातत्व विभाग के निदेशक श्री जैन से मेरे सामने कई बार आपने अपनी इस चिंता को व्यक्त किया है।

श्री बाठिया जी सहृदय और भावुक हैं, इसलिए परोपकारी भी हैं। मैंने 'श्री अगरचन्द नाहटा व्यक्तित्व एव कृतित्व' पर पी-एच.डी. करते समय ग्रन्थों की अनुपलब्धता संबंधी कठिनाई आपके सम्मुख रखी तो उन्होंने नाहटा जी के सुपुत्रों से बात कर समस्या का तुरन्त समाधान किया। बात-बात मे जो आत्मीयता का प्रदर्शन वे करते हैं, वह अन्तस तक व्यक्ति को छू जाती है।

जैन साहित्य-संस्कृति एव ब्रज भाषा-संस्कृति से भी आपको गहरा अनुराग है। पंचाल-संस्कृति के उद्धार हेतु आपने भारी प्रयास किया है और आपको काफी सफलता भी मिली है।

मैं जीवन मे अनुराग और आत्मीयता को भारी महत्व देता हूँ। बाठिया जी ने इन्हें दोनों हाथों से लुटाया है। साहित्यानुरागी, साहित्यकार और साहित्य के बीच जीने की ललक रखने वाले बाठिया जी अपने सहज-सरल व्यक्तित्व के कारण हजारों मे पहचाने जा सकते हैं।

कानपुर में रहते हुए भी आपकी बीकानेर की साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों मे पूरी रुचि रहती है और यहां आते ही इन सबकी जानकारी लेते हैं। बीच-बीच मे पत्र द्वारा भी हालचाल पूछते रहते हैं। आपकी सादगी, सरलता और सहज-दर्शन सबको मंत्रमुग्ध-सा कर देता है।

बाल साहित्य समीक्षा
जुलाई, १९९०

ooo

कुछ दिन बाद बाजपेयी जी इलाहाबाद आये तो मैने बांठिया जी के विषय मे बताया। बाजपेयी जी बोले, "अरे भाई! ये बहुत बडे विद्वान और गुणी हैं। पंचाल शोध संस्थान के अन्तर्गत मेरे निर्देशन मे एक अधिवेशन रामपुर (बरेली) मे कराना चाहते हैं। तुम भी चलना। विभा को भी लाना। लेख पढना।" मैने कहा, "मैं मृगावती पर निबन्ध लिख सकता हूँ किन्तु शायद जा न पाऊँ।" और हुआ भी यही। मैं जा न पाया। पत्र लिखकर क्षमा-याचना कर ली।

अगली बार बाजपेयी जी बांठिया जी के साथ इलाहाबाद आये। मैंने दोनों से भेट की। बांठिया जी ने अगले उत्सव मे आने के लिए अनुरोध किया। किन्तु पुन मैं नहीं जा पाया।

बांठिया जी इतने कृपालु रहे कि "पंचाल" के अक निरन्तर मेरे पास भिजवाते रहे। मेरी पुत्री ने एक शोध निबन्ध लिखकर दिया भी।

सहसा बाजपेयी जी की मृत्यु हो गयी। बांठिया जी ने शायद बाजपेयी जी के ही संकेत पर डा अशर्फी लाल श्रीवास्तव को पचाल शोध सस्थान का मन्त्री नियुक्त किया। कानपुर में डा बाजपेयी की प्रथम बर्षी पर एक विशेष आयोजन की व्यवस्था की गयी। डा श्रीवास्तव ने मुझे भी आमन्त्रित किया। मैने संस्मरण लिख कर दिया और उस आयोजन मे सम्मिलित होने कानपुर गया।

वहा पर मैंने बांठिया जी की प्रबन्ध कुशलता, अतिथि सत्कार, उनकी विनयशीलता का निकट से परिचय प्राप्त किया। सबो के समक्ष करबद्ध हो जलपान करने भोजन करने, गोष्ठी मे भाग लेने, पुस्तक प्रदर्शिनी मे भाग लेने के लिए अनुरोध करते हुए, नतशिर अतीव गम्भीर एव शान्त मुद्रा मे सतत् उन्हे देखा।

वे मृदुभाषी किन्तु मितभाषी हैं। उनके ऋषितुल्य व्यक्तित्व ने मेरे मन को मोह रखा है।

उनकी इकत्तरवीं वर्षगांठ के अवसर पर होने वाले अभिनन्दन मे मैं भी अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करके अपने को भाग्यशाली मानता हूँ।

वे शतायु हों। वे चिरायु हों। माँ सरस्वती के ऐसे सौम्य पुत्र को जन्म देकर मरुभूमि धन्य है।

२५, अशोक नगर इलाहाबाद–१
२२–४–१९९५

✡✡✡

उदारमना श्री बाँठिया जी

□ डा. मदन केवलिया
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
डूंगर कालेज बीकानेर

लक्ष्मी और सरस्वती का वैर परम्परागत माना जाता रहा है और यह भी स्वयं सिद्ध है कि लक्ष्मी की उपलब्धि करने वाले व्यक्तियों की आंखें आकाश मे टंगी रहती हैं, मानो धरती की ओर देखने को उन्हें फुर्सत ही नहीं है।

के श्री श्री रजन सूरि देव वाजपेयी जी, नाहटा जी के भानजे श्री हजारीमल बांठिया जी, श्री नट नागर शोध- संस्थान के निदेशक महाराज कुमार डा रघुवीर सिंह शास्त्री प उदय शंकर दुबे,पाण्डु लिपि विशेषज्ञ, पत्र संग्रहकर्ता रमण शाण्डिल्य से मुझे महत्वपूर्ण पत्र मिले।

बांठिया जी के कारण व्यावसायिक नगरी कानपुर की एक नयी छवि उभर कर आयी। पुरातत्व संस्कृति और कलाओं की गतिविधियों से सम्बद्ध पंचाल शोध संस्थान एक केन्द्र के रूप मे उभर कर आया।

श्री हजारीमल बांठिया जी के प्रयासो से तुलसी उपवन मे तुलसीदास पर प्रथम शोध करने वाले इटली निवासी डॉ तैस्सितोरी की प्रतिमा लगी। उस प्रतिमा स्थल का शिलान्यास २२ अगस्त १९८५ को कानपुर मे 'तुलसी उपवन' मोतीझील मे राष्ट्रकवि श्री सोहन लाल द्विवेदी जी की अध्यक्षता मे उ प्र सरकार के खाद्य मंत्री प्रो वासुदेव सिंह ने किया था। बांठिया जी के प्रयास से उसी वर्ष २२ दिसम्बर १९८५ को उस समय भारत स्थित इटली के सांस्कृतिक दूत प्रो फरनेन्दो बरतोलनी द्वारा डॉ तैस्सितोरी की प्रतिमा का अनावरण किया गया।

डॉ तैस्सितोरी को राजस्थान से विशेष प्रेम था। उसने राजस्थानी भाषा और साहित्य पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया था । अपने भारत प्रेम और राजस्थान यात्रा मे एक दिन सर्दी लग जाने से उसकी बीकानेर मे ही मृत्यु हो गयी। डॉ तैस्सितोरी की मृत्यु १९१९ ई मे हुई थी और बीकानेर के ही ईसाई कब्रिस्तान में उसकी समाधि बनवा दी गयी थी। बाद मे रख-रखाव के अभाव और जगली झाडियाँ उगने से भारतविद् इस महान भारत प्रेमी की समाधि खो गयी। इस समाधि की खोज बाँठिया जी ने बडी दिक्कतो के बाद की और उन्होने उस टूटी-फूटी समाधि का लाल पत्थर और मारबल से निर्माण कराया। यही नहीं इटली सरकार के आमत्रण पर १२, १३, १४ नवम्बर १९८७ को डॉ तैस्सितोरी के जन्म शताब्दी वर्ष पर श्री बाँठिया जी ने तैस्सितोरी की जन्मभूमि उदीने (इटली) की यात्रा की और वहा एक समारोह मे डॉ तैस्सितोरी द्वारा राजस्थान तथा राजस्थानी भाषा के लिए की गयी साहित्य-सेवाओ पर प्रकाश डालते हुए अपना लिखित भाषण पढा। समारोह में बांठिया जी का विशेष सम्मान इसलिए किया गया क्योकि उन्होंने २२ नवम्बर १९५६ को डॉ तैस्सितोरी के समाधि स्थल की खोज कर अगरचन्द नाहटा जी की प्रेरणा से समारोह करवाया था।

गत वर्ष ९ तथा १० सितम्बर १९९४ को श्री बांठिया जी पुन तैस्सितोरी की जन्मभूमि उदीने गये और वहा एक भव्य समारोह मे डॉ तैस्सितोरी की भारतीय कला, संस्कृति और पुरातत्व के क्षेत्रमें की गयी सेवाओं पर प्रकाश डाला।

बांठिया जी से मेरी घनिष्ठता हुए १० वर्ष से अधिक हो गये हैं, तब से उनसे मेरा अपनापन बढ़ता ही गया है। उनके व्यक्तित्व मे सरलता, पर दुःख कातरता साहित्य और कला प्रेम के अलावा उनकी मनुष्य-प्रीति ने मुझे सर्वाधिक आकर्षित किया । वे जैन धर्म और उसके आचार के मूर्तिमान रूप हैं। उनकी रात दिन यही चिंता रहती है कि पंचाल क्षेत्र का पुरातात्विक सर्वेक्षण कैसे हो। धरती के गर्भ में छिपी पुरातत्व सम्पदा कैसे प्रकाश में आये और इस क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव कैसे उद्घाटित हो। ईश्वर उन्हे शतायु करे जिससे उनका यह सपना पूरा हो सके।

१९४ पाठकपुरा
उरई-२८५००१

✡✡✡

बाँठिया जी एक साहित्यिक व्यक्तित्त्व

☐ डा. रामशंकर द्विवेदी

सन् १९८३, अक्टूबर का महीना। मैं अपने मित्र डॉ. सौनकिया जी के साथ ऐतिहासिक नगरी खरखारी और महोबा की यात्रा से लौट रहा था। रात हो जाने के कारण रात्रि में बुन्देलखण्ड के साहित्यकार डॉ. गणेशी लाल बुधौलिया के यहाँ ठहरना पड़ा। प्रातः साहित्य महोपाध्याय और बुन्देली फाग साहित्य पर शोध करने वाले श्री श्याम सुन्दर बादल से मिलने गया। वे स्वागत सत्कार के बाद पूजा-अह्निक आदि कार्यों में लीन हो गये। मैं उनके पुस्तक-संग्रह को उलटने-पुलटने लगा। उनके संग्रह में मुझे दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ मिले। एक प्रेमी अभिनंदन ग्रन्थ (नाथूराम प्रेमी-हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई के संस्थापक और जैन साहित्य के रचयिता) तथा अगरचन्द नाहटा अभिनंदन ग्रन्थ। मैं नाहटा अभिनंदन ग्रन्थ के पन्नों में खो गया। बाद में उस ग्रन्थ को पढ़ने के लिए उनसे मांगकर लाया। घर पर ही उस ग्रन्थ को पढ़ता रहा। उसमें संकलित इतिहास, कला, पुरातत्व, संस्कृति, जैन धर्म संबंधी सामग्री से तो चमत्कृत हुआ ही, सर्वाधिक श्रद्धानत उस व्यक्ति पुरुष से हुआ जिसने घेर कर यह सामग्री संजोयी गयी थी।

कोई ग्रन्थ पढ़ते समय उसके लेखक, प्रकाशक तक को अपनी डायरी में टाँप लेने की मेरी पुरानी आदत है। नाहटा अभिनंदन ग्रन्थ के प्राप्ति स्थान में लिखा था नाहटा बन्धु, शक्कर पट्टी, कानपुर। बस एक संयोग ऐसा हुआ कि मुझे एक शोध ग्रन्थ को टाइप कराने राम किशोर तिवारी आयल मिलर्स एसोसियेशन शक्कर पट्टी कानपुर जाना पड़ा। उनसे नाहटा बन्धु संस्थान की चर्चा करने पर उन्होंने मुझे वहाँ तक पहुँचा दिया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि एक पलित-केश सरलता की मूर्ति, कुछ लिखने-पढ़ने में मग्न एक प्रौढ़ पुरुष बैठे हैं। मैंने उनसे 'नाहटा बन्धु' यही है कहकर अपने आने का मन्तव्य बताया और कहा कि मैंने नाहटा अभिनंदन ग्रन्थ में आपके संस्थान का पता पढ़ा था और मुझे नाहटा अभिनंदन ग्रन्थ की एक प्रति चाहिए। मेरा नाम जानने के बाद जिन सज्जन ने अपना परिचय दिया वे थे हजारीमल बाँठिया जिनके जीवन और कृतित्व पर आज मैं कुछ लिखने बैठा हूँ।

श्री बाँठिया जी की उदारता से मैं उसी दिन प्रभावित हो गया था। उन्होंने न केवल मुझे नाहटा अभिनंदन ग्रन्थकी बहुमूल्य प्रति दी बल्कि जैन कलाओं, साहित्य और पुरातत्व पर कुछ काम करने का निर्देश दिया। उस दिन बहुत देर तक उनसे साहित्य पर बातचीत होती रही। उसी दिन यह तय हो गया कि मुझे पत्रों द्वारा तथा प्रत्यक्ष भेंट के द्वारा बाँठिया जी से निरन्तर संपर्क बनाये रखना है।

तब से अब तक ११ वर्ष से ऊपर हो गये और बाँठिया जी से सतत प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होता गया। मुझे याद है जब भी कानपुर जाता मनोज भाई (मनोज कपूर साहित्य निकेतन) सूचना देते-बाँठिया जी का फोन आया था, मिल के जाना। उनका अपनापन शब्दों की वस्तु नहीं। वह कुछ मूल्यों से जुड़ा हुआ है। उसकी अभिव्यक्ति कला, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से होती है। मैंने यह देखा कि जैन श्रेष्ठि-जन समृद्धि पाकर और झुकते हैं। वे अपनी आस्था को सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सेवा कार्यों में प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं। अपनी समृद्धि का बहुत-सा अंश वे इन्हीं सेवा-कार्यों में उण्डेलते रहते हैं। तब पंचाल शोध संस्थान की स्थापना तो हो गयी थी किन्तु उसकी गतिविधियों में इतनी हलचल नहीं थी। डॉ. [illegible] उससे जुड़े थे और 'संकिया' में थोड़ा बहुत काम होता रहता था। उसके कार्यों को गति और स्पष्टता पुरातत्वविद् प्रो. कृष्ण दत्त वाजपेयी के जुड़ने के बाद मिली, किन्तु यह दूसरा प्रसंग है।

बाँठिया जी ने मुझे अगरचन्द जी नाहटा के पत्रों के संकलन का काम सौंपा। मुझे नाहटा प[illegible] समिति का संयोजक बनाया। इस काम में स्वयं बाँठिया जी के अलावा प्रो. कृष्ण दत्त वाजपेयी ने भी सहयोग दिया। मैंने कितने जैन बन्धुओं को पत्र लिखे। मेरे पास नाहटा जी के १००-१५० पत्र संकलित हो गये। अधिकतर बन्धुओं ने कहा कि [illegible] जी की लिखावट अस्पष्ट होती थी फिर मैंने उनके पत्रों को महत्व नहीं दिया इसलिए वे नष्ट हो गये। फिर भी सज्जन

करता हूँ।
जुलाई १९९०

◆◆◆

श्री हजारीमल बांठिया

□ डा० वीरेन्द्र तरुण
हाथरस २०४१०१

समाजसेवी, साहित्यानुरागी, राष्ट्र के लिये समर्पित उद्योगपति श्री हजारीमल बांठिया सम्मान समारोह समिति उनकी अमृत जयन्ती पर उनका अभिनन्दन कर स्वयं को गौरवान्वित कर रही है।

श्री बांठिया जी से मेरा परिचय तब हुआ जब मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का बाल स्वयं सेवक था। आपकी स्कूली शिक्षा का मुझे पता नहीं। मेरी दृष्टि में औपचारिक रूप से वह कुछ भी रही हो लेकिन जीवन जगत के आप पी-एच०डी० डी०लिट् हैं। आपका ज्ञानात्मक आधार अत्यंत सपुष्ट है, एक ओर आप ज्ञान के भंडार हैं वहीं दूसरी ओर भावना के सूक्ष्म तन्तुओं से झंकृत हो जाते हैं। आप कवि, कविता और धार्मिक कार्यों एवं साहित्य के लिये समर्पित हैं, आपने समय-समय पर हाथरस के अनेक कवियों को पुरस्कृत किया और उन्हें दूर-दराज अन्य प्रदेशों में कवि सम्मेलन के संयोजकों को आमंत्रण हेतु प्रस्तावित किया, तथा स्वयं के खर्च से महानगरों में काव्य पाठ हेतु भिजवाया। आपने जो भी सामाजिक कार्य किया अदम्य साहस उत्साह और निस्वार्थ भावना से किया, वर्ष १९६६ में हास्य रसावतार काका हाथरसी की हीरक जयंती अपने ही संयोजन में बड़ी धूमधाम से मनवायी, जिसका उद्घाटन तत्कालीन सूचना प्रसारण मंत्री भारत सरकार, माननीय श्री राजबहादुर ने किया। इस अवसर पर एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया जिसमें पदम् श्री गोपाल प्रसाद व्यास, हरिवंशराय बच्चन, स्व० भवानी प्रसाद मिश्र, स्व० आनन्द मिश्र, स्व० इन्द्रजीत तुलसी, गोपालदास नीरज, भारतभूषण, बाल कवि बैरागी, ज्ञानवती सक्सैना, शांति [illegible] रस्तोगी, स्व० देवराज दिनेश, ब्रजेन्द्र अवस्थी, पारस भ्रमर, स्व० बेढब बनारसी, सतीश आनन्द, [illegible] विमलेश, बरसाने लाल चतुर्वेदी, कवि कुल्हड़, ओम प्रकाश आदित्य, राजेश दीक्षित, गोविन्द व्यास, सतीश दीक्षित, ब्रजेश चपल, रामरिख मनहर, स्व० सरस्वती कुमार दीपक, स्व० बलवीर सिंह रंग, सोमठाकुर, शिशुपालसिंह [illegible] काका हाथरसी आदि ने काव्य पाठ किया। इसी समारोह के माध्यम से मैं काका जी के सम्पर्क में आया और [illegible] ऐसा हुआ कि एक दिन हमारी जोड़ी फिल्मी संगीतकारों (जैसे शंकर जयकिशन व कल्याण जी आनन्दजी) की तरह काका-तरुण की जोड़ी अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में प्रसिद्ध हो गयी। इसी के परिणाम-स्वरूप हमारी जोड़ी (काका-तरुण) को सन् १९८४ १९८८ १९८९ में अमरिका, कनाडा थाईलैण्ड लन्दन तथा सिंगापुर में काव्य पाठ हेतु आमंत्रित किया गया। हमने एक-एक बार में तीस-तीस, पैंतीस-पैंतीस काव्य गोष्ठियों में भाग लिया। हम दोनों [illegible] पर बी० बी० सी० लन्दन, वाइस आफ अमेरिका तथा कनाडा दूरदर्शन ने अपने [illegible] पर काव्य पाठ हेतु आमंत्रित किया। इसके लिये परोक्षरूप से मैं श्री बांठिया जी का ऋणी हूँ, क्योंकि आपके ही माध्यम से मेरी [illegible] दी।

श्री हजारीमल जी बांठियाः एक संस्मरण

□ डा० शिवलाल बुन्देला
बीकानेर

आज से लगभग अर्ध शताब्दी पूर्व मैंने भूतपूर्व बीकानेर राज्य की अधिष्ठात्री देवी करणी माता जी के गाव देशनोक की मिडिल स्कूल से छटी कक्षा पासकर राज्य की राजधानी के हाई स्कूल में प्रवेश किया। उसी साल भाई हजारीमल बांठिया भी एक स्थानीय स्कूल से उस हाई स्कूल में उसी कक्षा में आये। इस प्रकार हम सहपाठी बने। एक ग्रामीण स्कूल से शहरी स्कूल के वातावरण में आने से एवं उस समय प्रकृति होने से तब यहां मेरे मित्र गिने-चुने ही थे। भाई हजारीमल जी उनमे से एक थे। सातवीं से दसवीं कक्षा तक हम इस विद्यालय मे साथ रहे। साथ में पढते हुये बांठिया जी की कुछ विशेषताओं ने मुझे आकर्षित किया-सरल सौम्य स्वभाव व उनकी कुछ उस समय की हॉबिया। इनकी पत्र-मित्रता विशेषकर विदेशी मित्रो (आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हालेन्ड आदि देशो के) टिकट संग्रह और पत्र- पत्रिकाओ में लेखन का शौक था। मुझे भी इन दोनो में रूचि हुई और उस समय इनके ही प्रोत्साहन से लिखी गई मेरी एक छोटी कहानी 'झुनझुना' मासिक पत्रिका से पुरस्कृत भी हुई। इस प्रकार छोटी आयु से ही इन्हें साहित्य व रचना में दिलचस्पी एवं लगाव रहा। दसवीं कक्षा तक पहुचते-पहुचते यह आपसी भाईचारा प्रगाढ एवं परिपक्व होता रहा।

१६४२ मे हमने हाईस्कूल परीक्षा राजस्थान शिक्षा बोर्ड से पास की। उसी वर्ष बीकानेर के प्रथम डिग्री कालेज मे पहली बार विज्ञान सकाय मे जीव विज्ञान का नया विषय प्रारम्भ किया गया। हम दोनों ने डाक्टर बनने के लक्ष्य को लेकर प्रथम विज्ञान बायलोजी के लिये आवेदन पत्र भर दिया। कुल २० लडकों को प्रवेश दिया जाना था। हम दोनो को प्रवेश मिल गया। शुरू में थ्यौरी के लेक्चर हुये और कुछ दिनों बाद प्रेक्टिकल शुरू हुये। जीव विज्ञान में वनस्पति शास्त्र और प्राणी शास्त्र दोनों के ही प्रयोगशाला मे प्रेक्टिकल करने होते हैं। जीव विज्ञान का प्रथम प्रेक्टिकल था। अपने-अपने मेंढक को पकडकर बेहोश कर चीरा-फाड़ी के लिये तैयार करना था। सभी ने जैसा बताया गया वैसा किया। पर भाई हजारीमल के जैन संस्कार और धार्मिक मनोवृत्ति बीच में आ गई। इनसे मेंढक को पिथ करना तो दूर रहा, उस गिलगिले, चिकनी चमडी वाले जानवर को अच्छी तरह पकड भी न पाये। वह बार-बार छूट जाता था और अन्तत. यह प्रेक्टिकल पूरा नहीं कर पाये। उन्हें इतनी ग्लानि हुई कि दूसरे ही दिन प्रिंसिपल साहब से मिलकर विज्ञान संकाय छोडकर कला संकाय मे प्रवेश ले लिया। इस प्रकार उनका डाक्टर बनने का विचार केवल स्वप्न ही रह गया।

इण्टर के पश्चात मैं आगे शिक्षा हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और बम्बई मे ग्रान्ट मेडिकल कालेज गया और एम०बी०बी०एस० कर राजस्थान राज्य सेवा में आ गया। भाई हजारीमल जी पहिले हाथरस और बाद में कानपुर व्यापार में संलग्न रहे। इन दिनों हमारा व्यक्तिगत सम्पर्क टूट गया। केवल आने-जाने वाले मित्रो और परिचितों से ही एक-दूसरे के कुशल समाचार मिलते रहे। सन १६७१ में जयपुर में जब मैं ई०एस०आई० चिकित्सालय मे वरिष्ठ चिकित्सक के पद पर था और सेवा-निवृत्ति मे दो साल ही घटते थे, अचानक आपका पत्र प्राप्त हुआ। 'मैं डाक्टर तो नहीं बन पाया पर मैने कमिज में एक अस्पताल खोला है और मेरा स्वप्न है कि यह अस्पताल बम्बई के जसलोक अस्पताल की तरह ही नाम और प्रसिद्धि पाये।' उन्होंने मुझसे सेवा-निवृत्त होने के बाद इस चिकित्सालय मे काम करने हेतु आग्रह किया, खुद आये और मुझे कमिज अपने साथ लेकर गये और चिकित्सालय दिखाया। देखा, वहां के ग्रामीण वातावरण मे क्षेत्रीय गरीब जनता के लिए एक सेवा भावी संस्था का निर्माण हो रहा था और चिकित्सालय चलाया जा रहा था जो अब उत्तरोत्तर हर वर्ष उन्नति एवं प्रगति कर रहा है। कुछ परिस्थितियोवश अभी मैं अपना समय इस चिकित्सालय को नहीं दे पा रहा हूँ। पर हार्दिक इच्छा है कि इसमें काम करूंगा और उत्कृष्ट एवं सुचिकित्सा का प्रबंध कर भाई बांठिया जी के स्वप्नो को साकार करूं। मैं उनकी दीर्घायु की कामना

किशोरावस्था से ही आप साहित्यिक गतिविधियों में रूचि लेते रहे हैं। 'वीर पुत्र' बालोपयोगी मासिक पत्रिका के सम्पादक मंडल में रहकर की गई आपकी सेवायें इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हैं। तत्पश्चात् विविध पत्र–पत्रिकाओं से सम्बद्ध भी रहे तथा अनेक रचनायें प्रकाशित कराईं। आप मुखर पुरुषार्थ के प्रतीक हैं और कभी अपना समय वृथा व्यतीत नहीं करते।

आपके पितृश्री फूलचन्दजी की पुण्य स्मृति में आप प्रति वर्ष साहित्य पुरस्कार प्रदान करते हैं एवं साहित्य सर्वेक्षण, संरक्षण, संवर्द्धन हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। निष्ठा, लगन व पुरूषार्थ के संस्कार आपको अपने पिताजी व सरलता–सेवा के अपनी माता से विरासत में मिले, जिनको आपने अभिवर्द्धित ही किया। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आप जो कार्य कर रहे हैं, स्तुत्य है। लक्ष्मी का आप पर वरद हस्त है परन्तु आपने सरस्वती की उपासना का संकल्प लेकर श्लाघनीय कार्य सम्पादित किये हैं। विद्वानों, साहित्य सेवियों व शोधार्थियों को किसी प्रकार की कठिनाई हो तो आपसे मिलने पर स्वतः दूर हो जाती है। किसी भी कार्य को हाथ में लेने पर उसे बखूबी पूर्ण करना आपका स्वभाव है एतदर्थ आपको अधिक परिश्रम करना पड़े, अर्थ–संग्रह करना पड़े और स्वयं भी व्यय करना पड़े तो कभी पीछे नहीं हटते।

अपने स्वनामधन्य मामाजी स्व० श्री अगरचन्द जी नाहटा के सान्निध्य में आपने प्राचीन लिपियों का ज्ञान एवं शिला–लेख आदि पढ़ने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर आपने बीकानेर परिसर में अल्पज्ञात, अज्ञात शिलालेखों का सर्वेक्षण किया और राजस्थानी भाषा के उन्नायक एल०पी० तैस्सीतोरी की समाधि को न केवल खोज निकाला, वरन् जीर्णोद्धार भी कराया जिससे यह पर्यटक स्थल के रूप में विकसित हो सकी। महान साहित्यकार की स्मृति को उजागर करने हेतु जनचेतना जाग्रत कर आपने तैस्सीतोरी को सार्वजनीन बनाया जिसे बीकानेर कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

प्रमाद, अहं–प्रदर्शन एवं लोकैषणा से कोसों दूर रह कर निष्काम सेवा, समर्पित भावना तथा कर्त्तव्यनिष्ठा के पुजारी बांठिया जी व्यावसायिक, पारिवारिक व्यस्तता के बावजूद साहित्यिक–सांस्कृतिक कार्यों हेतु जितना समय निकालते हैं यह अनुकरणीय है । आप शतायु हों यही शुभेच्छा है।

श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि आप सुस्वस्थ रहें और आपकी यशकीर्ति चतुर्दिक फैले।

मंत्री श्री जवाहर विद्यापीठ
जवाहर मार्ग
भीनासर–३३४४०३
बीकानेर (राजस्थान)

बाँठिया जी ने अनेक सामाजिक संस्थाओं से निस्वार्थ रूप से जुडकर अपना जीवन सार्थक किया है। आप अनेक संस्थाओ की कार्यकारिणी के सम्माननीय सदस्य हैं। जब भी कहीं किसी संस्था में विवाद की स्थिति आती है तो आपको निर्णायक के रूप मे याद किया जाता है और वहां अक्सर आप मेरी यह पंक्ति दुहराकर

अपने जीवन में भ्रम को न पालो कभी,
मन मे विश्वास हो खुश रहोगे तभी,
भ्रम की औषधि नहीं वैद्य लुकमान पर-
धोखा खा जाओगे तुम मददगार से,

विवादो को समाप्त करा देते हैं। ऐसे हैं कुशल, कर्मठ कर्मयोगी श्री हजारीमल जी बाँठिया। मैं आपको शतशत नमन करते हुये प्रभु से दीर्घ आयु की कामना करता हूँ।

सेवा एवं मुखर पुरूषार्थ के प्रतीक

☐ सुमति लाल बाँठिया

कर्मठता एवं उदारता के आदर्श, साहित्य रसिक 'भाई जी' श्री हजारीमल जी बाँठिया सत्तर बसंत के बाद भी युवावत्, साहस, सजगता एवं गतिशीलता के धनी हैं। धार्मिक समन्वय के प्रहरी रूप मे आप सदैव प्रयत्नशील रहे हैं और समाज सेवा, पुरातत्वीय शोध तथा सौहार्दता आपके स्वभाव में रची पची है। सर्वप्रथम मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य तब प्राप्त हुआ जब आप बाँठिया डायरेक्टरी पर शोधकार्य के संदर्भ मे देश भर के बाँठिया परिवारों का विस्तृत विवरण एकत्रित कर रहे थे। इसी संबंध में आप मेरे दिवंगत पितृश्री सेठ श्रीमान चम्पालाल जी बाँठिया से मिलने पधारे थे। प्रथम परिचय में ही मैं उनके मृदुल एवं आत्मीय व्यवहार से प्रभावित हो गया और तदन्तर नैकट्य में अभिवृद्धि होती गई। तदन्तर तो जब भी बीकानेर आते, घर पर आना संभव न होता तो ऑफिस में आकर अवश्य सम्पर्क करते।

आदरणीय एवं वरेण्य 'भाईजी' से मुझे आशातीत स्नेह एव मार्ग दर्शन मिलता रहा है एतदर्थ धन्यवाद व आभार ज्ञापित करना उनकी सहजता को स्वीकार न करने के समान है। पितृश्री के स्वर्गवास होने पर सर्वप्रथम आपने ही प्रेरित किया कि उनके आदर्श व प्रेरणास्पद जीवन पर स्मृति-ग्रंथ प्रकाशित करना चाहिये जिससे अन्य व्यक्ति उनसे प्रेरणा ग्रहण कर सकें। तदनुसार इस परिकल्पना को मूर्त रूप देने पर आपको ग्रंथ के परामर्श-मंडल में शामिल किया गया और प्रसन्नता है कि स्मृति ग्रंथ ही नहीं, जवाहर विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ती स्मारिका हेतु भी आपका मार्ग-दर्शन अनवरत मिलता रहा।

बिछुड़ी जोड़ी

☐ डा० शैलेन्द्र कुमार रस्तोगी

मुझे ठीक स्मरण तो नहीं किन्तु श्रद्धेय हजारीमल बांठिया एव पुरातत्व एव भारतीय संस्कृति के प्राण प्रो० स्व० कृष्णदत्त वाजपेयी जी को कई बार पचाल समारोह सगोष्ठियो के अतिरिक्त लखनऊ संग्रहालय साथ-साथ आते-जाते इन आखों से देखा है। दोनो ही में जन्मजन्मातर के सस्कारवश स्नेह था, ऐसा प्रतीत होता है। पू० बांठिया जी व्यापारी वश में जन्मे किन्तु ननिहाल भंवरलाल नाहटा एवं अगरचन्द नाहटा ऐसे परिवार में है जहा श्री और सरस्वती दोनो ही की कृपा है। ननिहाल से प्राप्त साहित्य का अंकुर श्रद्धेय वाजपेयी जी के सुसंस्कृति स्नेह जल से सिचित पचाल पादप के रूप मे पुष्पित-पल्लवित होकर अधुना सुगन्धि बिखेर रहा है।

बांठिया जी को मैंने कई अवसरों पर अपने व्यापारिक कार्य से मुक्त होकर घटो गोष्ठियो मे रसासिक्त होते देखा है। बहुत कम लोग ऐसे मिले जो दूसरों को प्रोत्साहित करें। उनकी उन्नति को देखकर हर्षित हों। पू० बांठिया जी की प्रेरणा एव प्रोत्साहन से कई छात्र-छात्राओ ने पचाल शोध सस्थान के माध्यम से शोध प्रबध प्रस्तुत किये हैं। श्रद्धेय वाजपेयी जी के अभाव मे अब बांठिया जी यद्यपि अकेले पड जाते हैं लेकिन सामाजिक सेवा, साहित्य की उन्नति एव पचाल शोध सस्थान की अभिवृद्धि के प्रति पूर्ण समर्पित भाव से कार्यरत है। ऐसे निष्ठावान एव लोकप्रिय व्यक्ति का अभिनन्दन समीचीन ही है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि बांठिया जी जो विनम्र, मिलनसार एवं दूसरो के गुणो से प्रफुल्लित होने वाले (गुणिषु प्रमोद) है, चिरकाल तक हम लोगो को मार्ग प्रशस्त करते रहे।

शुभमस्तु।

○○○

श्री हजारीमल बांठिया एक विरल व्यक्तित्व

☐ [illegible]

[illegible]

□ जय प्रकाश शर्मा
हाथरस

हाथरस की धरती के अमृत पुत्र सेठ हजारीमल बांठिया राष्ट्रीय स्तर पर धर्म, संस्कृति, साहित्य, सांस्कृतिकता के समर्पित अग्रदूत हैं जो अपने रचनात्मक जीवन--दर्शन और कर्मयोग से धर्म, संस्कृति, साहित्य, सांस्कृतिकता के प्रति आस्था के आयाम पैदा कर रहे हैं। एक नव सामाजिक चिन्तन के अग्रदूत रूप में धर्म, संस्कृति, साहित्य, सांस्कृतिकता के विविध पक्षों को निरन्तर उद्घाटित करा कर जो समग्र विकास के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। मौन साधक बांठिया जी ने जैन मंदिर निमार्ण के अपने रचनात्मक अभियानो से राष्ट्रीय स्तर पर मंदिर--संस्कृति को प्रोत्साहित कर धर्म--निष्ठा के वातावरण को बनाया है वहीं अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन को नये संकल्प प्रदान कर सामाजिक समरसता की भावना का अलख जगाया है। राजस्थान विकास कार्यक्रमों के तहत राजस्थानी भाषा तथा बृजकला केन्द्र के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रूप में बृजभाषा को मान--मूल्यो की महत्ता प्रदान कराई है जो साहित्य, सांस्कृतिकता के बांठिया जी के रचनात्मक प्रयासों की एक मनोरम झांकी है जिसकी आभा ने *बांठिया जी को जनमानस में आस्था प्रदान कराई है।*

व्यापार उद्योग के धनी सेठ हजारीमल बांठिया ने रामकथा को अन्तर्राष्ट्रीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ा है इटालवी रामकथा विद्वान डा० एल०पी० टेस्सीटोरी से जनमानस को अवगत कराकर, जिसमें बीकानेर मे उनकी समाधि निर्माण, कानपुर मे टेस्सीटोरी के स्मृति कार्यक्रमों की आयोजना, जिससे हाथरस भी गौरवान्वित हुआ है। रामकथा के इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से हाथरस मे पुरातत्व की संगोष्ठी बांठिया जी की एक ऐसी देन है जिसे एक लम्बे समय तक याद रखा जायेगा जिसमे हाथरस को अपने ऐतिहासिक गौरव का अहसास हुआ था जिससे अनेकों इतिहासकार जुड़े थे। मौन साधक सेठ हजारीमल बांठिया जी का शान्ति से प्रगति मे विश्वास रहा है। इसी कार्यक्रम में कम्पिल तीर्थ का विकास इनकी तीर्थ-वंदना का एक रचनात्मक अनुष्ठान है जो आधुनिक संदर्भो मे अपनी धर्म, संस्कृति, साहित्य, सांस्कृतिकता के मूल्यों धर्म दर्शन से जनमानस को अवगत होते रहने का आह्वान करता है। रस की नगरी हाथरस में कर्मनिष्ठ बांठिया जी ने अपने रचनात्मक व्यक्तित्व और कृतित्व से रंग-रंगीले ब्रज में 'रंगीलो राजस्थान' के सांस्कृतिक स्वरूप का समागम कराया है जो राजस्थानी, मारवाडी भाषाओ का संगम स्थापित कर जिनके सशक्त प्रयासों का अनुकरण सद्भावना के आयामों को सम्बल प्रदान करता रहेगा बांठिया जी के माध्यम से,जो हाथरस की धरती के अमृतपुत्र के रूप मे धर्म, संस्कृति, साहित्य, सांस्कृतिकता में आशा की नयी किरणे प्रदान करते रहते है और हाथरस को बांठिया जी से काफी आशायें--अपेक्षाये है। इस मंगल कामना के साथ धर्म, संस्कृति, साहित्य, सांस्कृतिकता के अग्रदूत सेठ हजारीमल बांठिया का भाव भरा अभिनन्दन।

✡✡✡

अपने व्यावसायिक जीवन मे मेरा उनके यहाँ कानपुर, हाथरस आना-जाना रहा, कारण एक तो इन शहरों मे कई फर्मों से मेरा व्यापारिक सम्बन्ध था, दूसरे मैं अपनी शिक्षा व सास्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखना भी चाहता था अत पर्वाधिराज पर्यूषण पर प्रतिवर्ष प्रवचन देने भारत के विभिन्न स्थानों मे जहाँ मुझे आमंत्रित किया जाता था, जाना जारी रखा। विगत बीस वर्षों में मैं भोपाल, इन्दौर, शिवपुरी, बालाघाट अमरावती, भीलवाडा, छोटी सादडी, सिंगोली, नीमच आदि मे और श्री बाँठियाजी के अत्यधिक आग्रह से, स्नेह से कानपुर व हाथरस भी कई बार उनकी उपस्थिति मे गया और प्राय उनके निवास-स्थान पर ही रहा। वहाँ जो अपार पारिवारिक स्नेह अपनापन प्राप्त हुआ उसे मै कभी विस्मृत नहीं कर सकता। वहाँ उनसे, उनके परिवार से उनके उद्भव से अब तक की प्रगति पर चर्चा होती। मैने पाया कि यह एक ऐसा अनबूझ व्यक्तित्व है जिसने व्यापारिक जगत में तो महान् ख्याति प्राप्त की ही है साथ ही धार्मिक, सामाजिक, सास्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक, बौद्धिक, पारमार्थिक व अन्य क्षेत्रों मे इतना काम किया है जो विरले ही कर पाते हैं।

व्यापारी के रूप मे इन्होने व्यापारियो के हितों की सुरक्षा और प्रगति की ओर ध्यान दिया और कानपुर मे चैम्बर आफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज की स्थापना की और इसके सस्थापक अध्यक्ष बने। हाथरस मे भी ऐसे ही मर्चेन्ट्स चैम्बर की नींव डाली और उसके भी अध्यक्ष रहे। और भी अनेक स्थानो पर ऐसे चैम्बर्स की स्थापना की। अखिल भारतीय मारवाडी महा सम्मेलन की महा समिति के सदस्य रह कर मारवाडी समाज की उन्नति के अनेक कार्य किए। जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन व अन्य दर्शनो के ज्ञान हेतु ग्रथों को पढा। जैन साधु साध्वी की वैयावृच मे कभी पीछे नहीं रहे। अखिल भारतीय खरतरगच्छ सघ के पदाधिकारी रह कर जैन समाज की सेवा की। पुरातत्व-कला कौशल की शोध-हेतु पचाल शोध सस्थान कानपुर की 'पचाल' शोध पत्रिका का सम्पादन किया। बृज कला केन्द्र हाथरस की स्थापना की। स्वतत्रता सग्राम सेनानी श्री अमर चन्द बाँठिया का ग्रथ लिखा एव प्रकाशित करवाया। इनका स्मारक ग्वालियर मे स्थापित करने हेतु मध्य प्रदेश सरकार के मत्रियो से भी मिले। श्री अगरचन्द नाहटा अभिनन्दन ग्रथ का सयोजन व प्रकाशन किया। इटली के महान् विद्वान प्रसिद्ध भाषाविद् राजस्थानी के मर्मज्ञ सुधारक डा० एल पी तैस्सितौरी की मूर्ति का दर्शन कराने मुझे बाँठिया जी कानुपर के तुलसीवन मे ले गए। मुझे यह भी पता लगा कि बीकानेर मे उनके समाधि स्थल की खोजकर इन्होने वहाँ भी अपने व्यय से इनकी समाधि बनवाई। इनकी जन्म शताब्दी पर बाँठियाजी को इटली भी आमंत्रित किया गया था जहाँ ये गए व योरोपीय देशों की यात्रा भी की। डॉ तैस्सितौरी की जीवनी पर लेख भी लिखे। इस प्रकार न जाने कितने ग्रथो का प्रकाशन कराया, समितियाँ, स्कूल स्थापित किए, आर्थिक सहयोग दिया, कहाँ-कहाँ किस-किस के ट्रस्टी अध्यक्ष, पदाधिकारी रहे, इसका बहुत बडा लेखा-जोखा है जिसका लिखना कठिन है।

हाथरस में मुझे इन्होने राष्ट्र के प्रसिद्ध हास्य कवि 'काका' हाथरसी से भी मिलाया। काका की विशाल लायब्रेरी एव प्रचुर साहित्य सग्रह को देख कर मै बहुत प्रभावित हुआ। मुझे ये भारत के प्राचीन तीर्थ श्री [illegible] जी भी ले गये। वहा मैने पाया कि जो तीर्थ प्रागैतिहासिक काल मे अपनी गौरव गाथा से मुखरित था बाद मे जीर्ण-शीर्ण हो गया। उसे इन्होने विशाल नया रूप प्रदान करवाकर जन-जन मे आकर्षण-दर्शन-पूजन का केन्द्र बना दिया है। वहां मैने यह भी देखा कि जन-कल्याण के लिए अपनी अर्धांगिनी श्री मती [illegible] के कर-कमलों से एक ऐसा [illegible] सर्व-सुविधा युक्त हॉस्पीटल की स्थापना कराई जहा देश के प्रख्यात चिकित्सकों द्वारा विभिन्न रोगों का इलाज निशुल्क औषधि वितरण भोजन सहित किया जाता है।

इनका पारिवारिक जीवन भी बहुत सुखी है। इनकी अर्धांगिनी जिनको मैं आदर के साथ [illegible] कहा करता हूँ, साक्षात् लक्ष्मी-स्वरूपा हैं। श्री बाँठियाजी कहते है मेरी प्रगति मे इनका बहुत बडा हाथ है। इनके चार पुत्र दो पुत्रियां सभी ग्रेजुएट व कई पौत्र पौत्रियां हैं। सभी व्यापारी, रोजगार मे [illegible], [illegible] मे निपुण हैं तथा इनकी आज्ञा मे सदा पलक-पावडे बिछाये रहते हैं। सक्षेप मे यह कह सकता हूँ कि ये धीर गम्भीर गुणग्राही [illegible] एव [illegible] विनयशील, स्पष्टवादी तथा [illegible] हैं। विद्वानों, ज्ञानियों का आदर करते हैं। जिज्ञासु हैं। विद्वानों को सदा गुरु समझने को उद्यत रहते हैं। इससे इनको आनन्द की अनुभूति होती है।

पचास वर्ष से जानता हूँ। उनके विचार, कार्य, कार्य-प्रणाली, क्षेत्र, समुदाय सभी को मैंने बहुत बारीकी से देखा है, परखा है। मैं दावे से कह सकता हूँ कि उनके सभी गुणों का वर्णन करना बहुत कठिन है। कारण उनका सारा व्यक्तित्व इतना तेजस्वी-स्वरूप और निर्भीकता लिये बहुविध आयामों से मौन कृतित्व के रूप में लहराता हुआ चल रहा है जो प्रदर्शन, प्रसिद्धि, प्रतिस्पर्धा से बहुत दूर है। उनका जीवन अन्तर व बाह्य शुभ्र एवं धवल एक स्वच्छ दर्पण की तरह निर्मल है जिसमें उनके पारदर्शी व्यक्तित्व के साथ उनकी सार्वजनिक, सामाजिक लोकोपकारी सेवायें, साहित्यिक सांस्कृतिक अभिरुचि, निस्पृह निष्काम साधना, कर्मठता, अनासक्त सेवा स्पष्ट प्रतिबिम्बित होती है।

श्री बाँठिया जी और मैं लगभग हम-उम्र से हैं और एक-दूसरे के स्नेही-साथी हैं। यद्यपि इतने लम्बे समय में विविध स्थानों, विपरीत परिस्थितियों, विभिन्न कार्यकलापों में होते हुये भी हमारा परिचय आज तक बना हुआ है। मैं छोटी सादडी (राजस्थान) मे जन्मा, पंजाब में *श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरानवाला,(अभी पाकिस्तान)* में पढा, जहाँ का मैं स्नातक हूँ,जहाँ से मैंने न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, बी.ए. की परीक्षाएं उत्तीर्ण की और संयोग से विवाह उपरान्त मेरी नियुक्ति केवल बाईस वर्ष की अवस्था मे बीकानेर अध्यापन-क्षेत्र मे श्री अगरचन्द जी नाहटा के मार्फत जो अपने समय के महान् पुरातत्ववेत्ता, साहित्य मनीषी, विद्वान लेखक और शोधकर्ता थे, हुई और उनके निवास पर ही *श्री बाँठिया जी से मेरा पहला परिचय हुआ,क्योंकि श्री नाहटा जी बाँठिया जी के मामा थे और वे इनको बहुत आगे बढ़ाना* चाहते थे। प्रथम साक्षात्कार में ही इनकी विनम्रता निरभिमानता, विवेक से मैं बहुत प्रभावित हुआ। श्री बाँठिया जी व उनका परिवार कोचरों के चौक मे रहता था और मैं भी कोचरो के चौक में कई वर्ष तक उनके पड़ौस में रहा अतः पारिवारिक रूप में हम एक-दूसरे को जानते, पहिचानते रहे और यहीं से हमारी घनिष्ठता बढ़ी।

मैं आठ वर्ष लगभग बीकानेर रहा और *श्री बाँठिया जी इस बीच नाहटा बन्धुओं की शाखा में हाथरस चले गये और वहां कार्य करने लगे। एक दशक पश्चात् इन्होंने अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और यहीं से ही उनका* भाग्य चमका। ये कोई डिग्रीधारी नहीं थे,कारण पितृ-छाया बचपन में उठ गई थी पर अपने परिश्रम, लगन, सूझ-बूझ, दूरदर्शिता, व्यवहार, बुद्धिचातुर्य, कार्यकुशलता, दक्षता आदि से उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए हाथरस, कानपुर, दिल्ली, बम्बई व भारत के विभिन्न स्थानों में व्यापार का प्रचार-प्रसार करते चले गए और *अर्थोपार्जन व प्रसिद्धि में ऐसी सफलता प्राप्त की कि पूरे प्रदेश में एक सफल, प्रामाणिक व्यवसायी एवं मिल मालिक के रूप में माने जाने लगे। यद्यपि इस काल* में इनको अनेक विपरीत परिस्थितियों से भी जूझना पडा, कई विघ्न-बाधाएं, विपदाएँ आईं पर एक वीर सैनिक की भाँति उनका डट कर मुकाबला किया और सफलता ने इनके चरण चूमे।

बीकानेर में रहते हुए अध्यापन जीवन मे मुझे जो अनुभूति और ग्लानि हुई थी उसके बारे में मैंने श्री बाँठिया जी को विस्तृत रूप से बताया था। *मुझे याद है,मैंने कहा था,'बीकानेर में जहाँ सैकड़ों हजारों करोड़पति स्वच्छंद* मौज-मजा करते हैं वहाँ उनकी दृष्टि मे अध्यापक एक ऐसा निरीह प्राणी है जो *शिक्षित, सभ्य होते हुए भी और जिस* पर राष्ट्र की भावी पीढी का निर्माण करने का, संस्कारित करने का अतुल भार है उसका जैसे कोई अस्तित्व ही नहीं है, कारण वह अर्थाभाव से पीड़ित है। चमक-दमक से दूर है। यहाँ उसकी *स्थिति ठीक वैसी ही है जैसे किसी बैल की आँख* बन्द कर तेल की घाणी मे जोता जाता है, सवेरे से सायं तक भगाया जाता है और आखिर में जब उसकी पट्टी खोली जाती है तो वह अपने आप को इतना सफर तय करने पर भी वहीं का वहीं पाता है जहाँ से चला था।' बाँठिया जी, मैं हीन भावना से ग्रसित हूँ, उबरने का कोई उपाय बताइये।' उस पर उन्होंने कहा *'मास्टर साहब ! अपने पूर्वजों की कहावत* याद कीजिए–"उत्तम खेती, मध्यम बान, निषिद्ध चाकरी, *भीख निदान"* खेती तो अपने बस की नहीं पर आप वणिक की संतान हो, शिक्षित हो, व्यापार करो जरूर सफलता मिलेगी। *अवश्य भाग्य चमकेगा।'* उनकी यह सलाह मुझे बहुत पसन्द आई और मैं वहाँ से अपने जन्म स्थान छोटी सादड़ी के पास नीमच (M.P.) चला आया और भारतवर्ष की उच्च कोटि की मण्डी और व्यापार में क्रमिक उन्नति करते हुए अच्छी सफलता *अर्जित की, इसका श्रेय बाँठिया जी को भी जाता* है।

पूज्य श्री हजारीमल बांठिया - एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

■ सौभाग्यमल बांठिया,

आत्मीयता का संबंध - एक ऐसी कोमल डोर है जिसमें बंधने के बाद व्यक्ति में गुण ही गुण दिखाई देते हैं और फिर आदरणीय होने के बाद तो वह गुणों की खान ही हो जाते हैं। आदरणीय श्री हजारीमल बांठिया मेरी दृष्टि में एक ऐसा ही व्यक्तित्व है, गुण-दोषों की मीमांसा से परे, ऊँचा उठा हुआ एवं सम्माननीय।

अपने से बड़ो, समवयस्कों या छोटों के साथ यथायोग्य स्नेहिल व्यवहार से सबका मन अपनी ओर आकृष्ट कर लेना आपकी व्यक्तिगत ऐसी विशेषता है जिसमें आप सहज ही में सबके बन जाते हैं और सब आपके।

उन्नत भाल, भरी पूरी ऊंची देहयष्टि, गोल चेहरा, उज्ज्वल वर्ण, मधुरवाणी एवं सहृदय होने के कारण सभी को सहयोग प्रदान करने की इच्छा सभी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। इसे ईश्वर की अनुकम्पा ही माननी चाहिये कि आपके व्यक्तिगत गुणों का विकास क्रमश: होता गया जिनके कारण आपके हाथों केवल जैन समाज ही नहीं वरन् अन्य समाज के लिये उपयोगी कार्य होते गये और वे लाभान्वित हुए। व्यष्टि के साथ-साथ समष्टि-हित भी आपका दृष्टिकोण रहा है और दृष्टि की इस विशालता के परिणाम-स्वरूप आपका ध्यान समाज-हित से आगे देशहित के कार्यों की ओर गया।

राजस्थान इनकी जन्मभूमि रही तथा कर्मभूमि देश का विशाल राज्य उत्तर प्रदेश। व्यवसाय में पूर्णत ध्यान दिया ही है। साथ ही साहित्य क्षेत्र में पदार्पण कर जैन धर्म के जैन पाण्डुलिपियों का गहन अध्ययन किया है। गोरखपुर से प्रकाशित "कल्याण" मासिक पत्रिका में "श्रीरामचन्द्रजी महाराज" के विषय में खोजपूर्ण लेख मैंने पहली बार पढ़ा था। चूंकि मेरे पिताजी का नाम भी श्री हजारीमल जी बांठिया है अत: विस्मय हुआ था। जब कल्याण प्रेस से इस संबंध में जानकारी मांगी तब सही स्थिति एवं पता प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् बांठिया फाउन्डेशन, कानपुर के माध्यम से देश के सभी बांठिया परिवार को एक सूत्र में लाने का अथक प्रयास किया तथा परिचय पुस्तिका के माध्यम से प्रदत्त जानकारी से हम सभी लाभान्वित हुए। मेरे स्व० पिताजी हजारीमल जी बांठिया नागपुर निवासी के साथ आपके मधुर संबंध तो थे ही तथा कार्यवश पत्र-व्यवहार भी होता रहा है।

सामाजिक जीवन:-दूसरों के उपयोगी बनने की सहज एवं स्वाभाविक इच्छा में ही आपकी प्रगति एवं लोकप्रियता का रहस्य छिपा रहा है। किसी आशा- आकांक्षा या अपेक्षा से आपके दरवाजे पर आने वाला कदाचित् ही कोई निराश लौटा हो। अ. भा. खरतरगच्छ जैन संगठन के उपाध्यक्ष पद पर एवं उत्तर क्षेत्र के [illegible] संयोजक होने के नाते जैन समाज की समिति में परामर्शदाता के रूप में सम्मान मिलता रहा है। कानपुर शहर की हर [illegible] में चाहे किसी पार्टी या समाज की क्यों न हो, श्री बांठिया साहब का प्रचुर सहयोग अवश्य रहता है।

जब मैं [illegible] में निवास करता था उस समय मेरे निवास में श्री बांठिया साहब, श्री [illegible] कोठारी बंबई, श्री [illegible] नाहटा बंबई एवं श्री शांतिलालजी पारख बड़ोदा निवासी रुके थे। सम्माननीय अतिथियों की उपस्थिति से मैं प्रसन्न था विशेषकर श्री बांठिया साहब का जन्म दिन उसी दिन था। सम्भवत: वर्ष १९८३ का था। उनकी [illegible] एवं पारिवारिक स्नेह के कारण हम सभी प्रभावित थे। उन दिनों में [illegible] [illegible] मंदिर का निर्माण कार्य शुरू ही गया था। इसी संदर्भ में प्रवास था।

अनेक-[illegible] स्थानीय प्रादेशिक अखिल भारतीय [illegible] [illegible] एवं अन्य [illegible] से [illegible] रहने पर भी निरभिमानता श्री बांठिया साहब का अभिनन्दनीय गुण है। [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] है, फिर भी [illegible] [illegible] सादगी से जीवन-यापन करते हैं। आपका अवकाश सभी प्रकार की सुविधा से युक्त होने पर भी हर [illegible] [illegible]

मेरी हार्दिक कामना है, श्री बाँठियाजी शत–शत वर्ष तक इसी तरह सेवा में संलग्न रहकर यशस्वी जीवन की ओर निरंतर अग्रसर होवें। इकहत्तरवे जन्म दिन पर हार्दिक बधाई।–शुभकामनाएँ।

मेरे प्रेरणा स्त्रोत, आदर्श – आदरणीय हजारीमलजी सा. बाँठिया

□ रतनमल बांठिया
२०, महावीर नगर, इंदौर

अपना सामान्य जीवन सभी जीते हैं– परिवार का पालन करते हैं– थोड़ी सेवा–भक्ति इस आशा से करते हैं कि उन्हें सम्मान मिले– सेवा चाहे न हो पर प्रचार ज्यादा हो। सांसारिक कार्य करते हुये आत्म-कल्याण की कामना सभी करते हैं– पर सफल मानव जीवन कितना है ? ऐसे महामानव बिरले होते हैं जो अपने तथा परिवार के देखभाल के साथ कुल, वंश, धार्मिक व्यवस्था, समाज, संस्कृति, साहित्य, इतिहास, पुरातत्व आदि को अपना जीवन समान रूप से समर्पित करें। *व्यापार व्यवसाय अत्यावश्यक है ताकि हम अपनी जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक पूरा करें।* भाईसाहब ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें अनेक विशेषताएं है। धार्मिक सुव्यवस्था एवं विकास के साथ ही साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व एवं इतिहास में इनकी रुचि एवं अध्ययन यह दर्शाता है कि इनका ज्ञान कितना गहन है। अच्छे वक्ता एवं साहित्यकार होना भी अपने आप में विशेषता है। इन विशिष्ट गुणों के व्यक्ति का राजनैतिक सम्मान भी स्वाभाविक है। उत्तर भारत में इन्हीं कारणो से सर्वत्र भारी सम्मान इन्हे मिला है तथा वे इसके हकदार हैं। समाज इनका सम्मान कर स्वयं गौरवान्वित हो रहा है। भारत में पुरानी गाथाएं गाकर या कहकर हम प्रेरणा लेते हैं। *हमें तो विद्यमान महापुरुषों का सम्मान कर नई पीढ़ी को प्रेरणा देनी चाहिये।* अतः यह प्रयास विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

मेरा सम्बन्ध गत २०–२५ वर्षों से रहा– कई बार मिला–पत्राचार भी चलता रहता है। मैंने सदा ही सजग, संवेदनशील, सहृदय एवं सहयोगी के रूप में देखा। *इसी लिये मेरा सम्मान एवं स्नेह इनके प्रति बना है।* बांठिया वंश में वे विद्यमान नक्षत्र हैं– रिश्तेदारी तो कई बार हो या न हो पर इनका ध्यान सबके लिये रहता है। इतिहास एवं साहित्य में इतनी गहरी रुचि देखने को नहीं मिलती है– *इस प्रतिभा को हमें आदर्श के रूप में लेना चाहिये।*

पू० भाईसाहब के ७१ वी जन्म जयन्ती पर अभिनन्दन ग्रंथ एवं सम्मान राशि देना एक अच्छा प्रयास है। गुणवान, सच्चरित्र एवं सेवाभावी, *समर्पित व्यक्ति का सम्मान वर्तमान में बहुत कम देखने को मिलता है– अतः मैं* सद्भावना व्यक्त करूँ कि इस आयोजन के द्वारा पू० भाईसाहब के शतायु होने की शुभकामना के साथ ही यह सम्मान *के अन्य व्यक्तियों के लिये आदर्श रहे ताकि सद्गुणो का विकास हो, ताकि मानव जीवन सार्थक हो सके एवं अपनी* मंजिल की ओर बढ़ सकें।

❖ ❖ ❖

पूर्ण करके ही विश्राम लेते हैं। अन्यथा कानपुर मे बैठे हुए भी बीकानेर मे होने वाले कार्यकमो के लिए पत्र द्वारा मुझे प्रेरित करते रहते हैं। इसके साथ ही राजस्थानी मे शोध करने वाले शोधार्थियों की भी तन, मन और धन से सहायता करते है।

इसके अतिरिक्त बांठिया जी की पुरातत्व में विशेष रुचि परिलक्षित होती है। सन् १९५६ मे श्री एल पी तैस्सीतोरी की समाधि को खोजने में अपना अमूल्य समय दिया और अपने खर्चे पर ही लाल रंग के पत्थर की समाधि का निर्माण करवाया।

इसके साथ ही अपने स्व० मामाजी श्री अगरचन्दजी नाहटा की प्रेरणा से राजस्थानी साहित्य के पुनरुद्धार मे भी आप निरन्तर लगे रहते हैं। बांठिया जी की इसी रुचि का यह परिणाम है कि आपको श्री एल पी तैस्सीतोरी की शताब्दी समारोह मे भाग लेने के लिए इटली में निमन्त्रित किया गया।

ऐसे व्यक्ति के अभिनन्दन पर बार–बार नमन।

मत्री
हिन्दी विश्व भारती
बीकानेर, ३३४ ००१

* * *

बहुमुखी प्रतिभा के धनी हजारीमल बाँठिया जी

एक संस्मरण

☐उमेश नन्दन सिन्हा

प्रत्येक मानव के मानस पटल पर स्मृतियाँ उभरती और मिटती रहती हैं लेकिन कुछ स्मृतियाँ अमर होती हैं, अवसर मिलते ही वे प्रकट हो जाती हैं ठीक उसी तरह जिस तरह चचल बादलो की ओट मे छिपा चाँद अवसर मिलते ही प्रकट हो जाता है।

मेरे मानस–पटल पर भी कुछ ऐसी ही अमर स्मृतियाँ हैं जिनमे एक है बहुमुखी प्रतिभा के धनी सम्माननीय बांठिया जी के साथ मेरा सम्पर्क, साहचर्य एवं सान्निध्य।

मेरी यही स्मृति उस समय उभर कर सामने आ गई, ताजी हो गई जब मुझे श्री बांठिया सम्मान समारोह समिति के महामत्री डा० गिर्राज किशोर अग्रवाल का पत्र मिला। उक्त पत्र के माध्यम से डा० अग्रवाल ने मुझे यह जानकारी दी थी कि श्री बाँठिया जी की ७१ वीं जयन्ती २५ सितम्बर १९९५ को मनायी जायेगी। उक्त अवसर पर बाँठिया अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन होगा। डा० अग्रवाल ने मुझे भी अपना संस्मरण भेजने को लिखा था। जाहिर है उन्हें मेरे सम्बन्ध मे श्री बाँठिया जी से ही जानकारी मिली होगी। इसी सम्बन्ध मे बाद मे मेरे पास बाँठिया जी का भी पत्र आया।

एवं भारतीयता का प्रतीक है। २४ सितम्बर १९९४ को ७० वर्ष पूर्ण हो गये है। ७१ वें वर्ष मे प्रवेश किया है। आप स्वस्थ हैं। संयमित दिनचर्या है। यही कारण है कि आपके मन में उत्साह युवावत् ही है। अभी भी हर एक के पत्रों का प्रत्युत्तर समय पर देते हैं। शंका समाधान करते हैं। सब पर स्नेह की वर्षा करते हैं। आपके परिवार के सदस्यगण आपकी सेवा में उपयुक्त रूप मे रत हैं।

इस अवसर पर ईश्वर से यह प्रार्थना है कि वह आपके हाथो अभी और भी जनोपयोगी कार्य कराते और आपको शतायु करें। देश की इस आपा-धापी की स्थिति मे ऐसे परिपक्व अनुभवी के मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता है।

—

२६/७ न्यू केमीकल स्टॉफ कॉलोनी,
बिरलाग्राम, नागदा ४५६३३१ (म.प्र)

जैसा देखा वैसा पाया

☐ दिवाकर शर्मा

सुप्रसिद्ध व्यवसायी और राजस्थानी एवं हिन्दी के साहित्यकार श्री हजारीमलजी बांठिया के अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की सूचना मिलने पर बीकानेर के साहित्यकारों में हर्ष की लहर प्रवाहित हो गई। इसके लिए इस ग्रन्थ के प्रेरकों को शत-शत धन्यवाद।

श्री बांठिया जी से मेरा परिचय मेरे स्व० पिताश्री पं० विद्याधर जी शास्त्री के समय से ही है। वे साहब जब भी बीकानेर पधारते थे तब ही हिन्दी विश्व भारती में पिताश्री से मिलने अवश्य आते थे। उस समय उनके हाथों में कोई न कोई साहित्यिक कार्यक्रम की रूपरेखा अवश्य हुआ करती थी और उसी रूपरेखा पर दोनों में घंटों वार्तालाप हुआ करता था। यद्यपि श्री बांठिया जी एक व्यवसायी थे किन्तु पुनरपि आपकी साहित्यिक और सामाजिक कार्यों में रुचि को देखकर अत्यधिक विस्मय होता है। यद्यपि लक्ष्मी एवं सरस्वती का विरोध जग-प्रसिद्ध है किन्तु इन दोनों की मित्रता बांठिया जी में ही दिखाई पड़ती है।

बांठिया जी एक ऐसे विरले व्यवसायी हैं, जिनमें भारती और भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम भी परिलक्षित होता है। इसके साथ ही आपका राजस्थानी साहित्य के प्रति प्रेम तो बीकानेर के साहित्यकारों में सर्वत्र माना जाता है। इसी राजस्थानी प्रेम के कारण आप बीकानेर में प्रतिवर्ष अपने स्व० पिता श्री फूलचन्द जी बांठिया की पुण्य स्मृति में २०००/-रुपये का राजस्थानी पुरस्कार राजस्थानी के साहित्यकारों को गत २० वर्षों से देते रहे हैं। बीकानेर भाग के तो समस्त राजस्थानी साहित्यकारों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

बांठिया जी में निर्णय लेने की क्षमता अपूर्व है। जब भी कोई प्रश्न जटिल होता है, सब उस काम को

पूर्ण करके ही विश्राम लेते हैं। अन्यथा कानपुर मे बैठे हुए भी बीकानेर मे होने वाले कार्यक्रमों के लिए पत्र द्वारा मुझे प्रेरित करते रहते हैं। इसके साथ ही राजस्थानी मे शोध करने वाले शोधार्थियों की भी तन, मन और धन से सहायता करते हैं।

इसके अतिरिक्त बांठिया जी की पुरातत्व में विशेष रुचि परिलक्षित होती है। सन् १९५६ में श्री एल पी तैस्सीतौरी की समाधि को खोजने मे अपना अमूल्य समय दिया और अपने खर्चे पर ही लाल रंग के पत्थर की समाधि का निर्माण करवाया।

इसके साथ ही अपने स्व० मामाजी श्री अगरचन्दजी नाहटा की प्रेरणा से राजस्थानी साहित्य के पुनरुद्धार मे भी आप निरन्तर लगे रहते हैं। बांठिया जी की इसी रुचि का यह परिणाम है कि आपको श्री एल पी तैस्सीतोरी की शताब्दी समारोह मे भाग लेने के लिए इटली मे निमन्त्रित किया गया।

ऐसे व्यक्ति के अभिनन्दन पर बार–बार नमन।

मत्री
हिन्दी विश्व भारती
बीकानेर, ३३४ ००१

***

बहुमुखी प्रतिभा के धनी हजारीमल बाँठिया जी

एक संस्मरण

□उमेश नन्दन सिन्हा

प्रत्येक मानव के मानस पटल पर स्मृतियाँ उभरती और मिटती रहती हैं लेकिन कुछ स्मृतियाँ अगर होती हैं, अवसर मिलते ही वे प्रकट हो जाती हैं ठीक उसी तरह जिस तरह चंचल बादलों की ओट में छिपा चाँद अवसर मिलते ही प्रकट हो जाता है।

मेरे मानस–पटल पर भी कुछ ऐसी ही अमर स्मृतियाँ हैं जिनमे एक है बहुमुखी प्रतिभा के धनी सम्माननीय बांठिया जी के साथ मेरा सम्पर्क, साहचर्य एवं सान्निध्य।

मेरी यही स्मृति उस समय उभर कर सामने आ गई, ताजी हो गई जब मुझे श्री बांठिया सम्मान समारोह समिति के महामत्री डा० गिर्राज किशोर अग्रवाल का पत्र मिला। उक्त पत्र के माध्यम से डा० अग्रवाल ने मुझे यह जानकारी दी थी कि श्री बाँठिया जी की ७१ वीं जयन्ती २५ सितम्बर १९६५ को मनायी जायेगी। उक्त अवसर पर बाँठिया अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन होगा। डा० अग्रवाल ने मुझे भी अपना संस्मरण भेजने को लिखा था। जाहिर है उन्हे मेरे सम्बन्ध मे श्री बाँठिया जी से ही जानकारी मिली होगी। इसी सम्बन्ध मे बाद मे मेरे पास बाँठिया जी का भी पत्र आया।

एवं भारतीयता का प्रतीक है। २४ सितम्बर १९९४ को ७० वर्ष पूर्ण हो गये हैं। ७१ वे वर्ष मे प्रवेश किया है। आप स्वस्थ हैं। सयमित दिनचर्या है। यही कारण है कि आपके मन में उत्साह युवावत् ही है। अभी भी हर एक के पत्रों का उत्तर समय पर देते हैं। शंका समाधान करते हैं। सब पर स्नेह की वर्षा करते हैं। आपके परिवार के सदस्यगण आपकी सेवा मे उपयुक्त रूप में रत हैं।

इस अवसर पर ईश्वर से यह प्रार्थना है कि वह आपके हाथों अभी और भी जनोपयोगी कार्य कराये और आपको शतायु करे। देश की इस आपा-धापी की स्थिति में ऐसे परिपक्व अनुभवी के मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता है।

—

२६/७ न्यू केमीकल स्टॉफ कॉलोनी,
बिरलाग्राम, नागदा ४५६३३१ (म.प्र)

❑❑❑

❑ दिवाकर शर्मा

सुप्रसिद्ध व्यवसायी और राजस्थानी, एवं हिन्दी के साहित्यकार श्री हजारीमलजी बांठिया के अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की सूचना मिलने पर बीकानेर के साहित्यकारों मे हर्ष की लहर प्रवाहित हो गई। इसके लिए इस कार्य के प्रेरकों को शत-शत धन्यवाद।

श्री बांठिया जी से मेरा परिचय मेरे स्व० पिताश्री पं० गिरधर जी शास्त्री के समय से ही है। सेठ साहब जब भी बीकानेर पधारते थे तब ही हिन्दी विश्व भारती में पिताश्री से मिलने अवश्य आते थे। उस समय आपके हाथों मे कोई न कोई साहित्यिक कार्यक्रम की रूपरेखा अवश्य हुआ करती थी और उसी रूपरेखा पर दोनों मे घण्टों वार्तालाप हुआ करता था। यद्यपि श्री बांठिया जी एक व्यवसायी थे किन्तु पुनरपि आपकी साहित्यिक और सामाजिक कार्यों में रुचि को देखकर अत्यधिक विस्मय होता है। यद्यपि लक्ष्मी एवं सरस्वती का विरोध जगत्- प्रसिद्ध है किन्तु इन दोनों की मित्रता बांठिया जी में ही दिखाई पड़ती है।

बांठिया जी एक ऐसे विरल व्यवसायी हैं, जिनमें भारती और भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम भी परिलक्षित होता है। इसके साथ ही आपका राजस्थानी साहित्य के प्रति प्रेम तो बीकानेर के साहित्यकारों में सर्वविदित माना जाता है। इसी राजस्थानी प्रेम के कारण आप बीकानेर में प्रतिवर्ष अपने स्व० पिता श्री [illegible] बांठिया की पुण्य स्मृति में २०००/- रुपये का राजस्थानी पुरस्कार राजस्थानी के साहित्यकार को गत २० वर्षों से देते रहे हैं। बीकानेर नगर के तो समस्त राजस्थानी साहित्यकारों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

बांठिया जी में निर्णय लेने की क्षमता अपूर्व है। जब भी कोई काम सम्पन्न होता है, तब उस काम को

तुलसी उपवन मे पहुंचकर बाठिया जी ने जब इस उपवन की स्थापना तथा इसी उपवन के प्रांगण में इतालवी विद्वान डा० लुईजिपियो तैस्सीतोरी की मूर्ति की स्थापना के सबध मे विस्तृत जानकारी दी तो यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि बांठिया जी के हृदय मे अपने ही देश के विद्वानो, साहित्य–साधको के प्रति ही नहीं बल्कि विदेशी विद्वानो एव साहित्य-साधको के प्रति भी श्रद्धा, सम्मान एव समर्पण की भावना है।

दो–तीन दिनो के सान्निध्य एव साहचर्य ने मुझे यह आभास करा दिया कि बाठिया जी अपने मामा साहित्य-मूर्ति, शोध-मनीषी अगरचन्द नाहटा की तरह ही लक्ष्मी एव सरस्वती के वरद् पुत्र हैं। इन्होने लक्ष्मी की साधना एव सरस्वती की आराधना कर दोनों से वरदान प्राप्त कर धनार्जन के साथ–साथ विशिष्ट साहित्यिक प्रतिभा एवं यश अर्जन किया है। कानपुर जैसे महानगर मे बाठिया जी व्यवसायी उद्योगपति के रूप मे तथा साहित्य-साधक के रूप में समान रूप से सम्मानित होते रहे है।

व्यवसाय की दृष्टि से उद्योगपति एव अभिरूचि की दृष्टि से अध्येता, सेवक समाज-सेवक, परहित-चिन्तक एव कुशल वक्ता हैं। ये साहित्य–रस के आस्वादक हैं। यद्यपि साहित्य की अधुनातन नवीन विधाओ से इनका अनुराग नहीं हैं लेकिन भक्तिकाल, रीतिकाल एवं प्रारम्भिक आधुनिक काल की रचनाओ के अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं अन्वेषण मे लीन रहते हैं। इन्होंने अपनी ज्ञान-पिपासा को शात करने हेतु न केवल हिन्दी साहित्य बल्कि राजस्थानी भाषा एव साहित्य, जैन साहित्य एव सस्कृति तथा पुरातत्व सामग्रियो का गहन अध्ययन किया है, उनके प्रति विशेष अभिरूचि प्रदर्शित की है।

इनसे मेरी दूसरी भेंट लगभग साल भरके बाद १७/१८ जून १९८९ को कानपुर मे ही आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ४५ वे वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर हुई। सम्माननीय बाठिया जी ने इस अधिवेशन के स्वागत-मत्री के रूप मे मार्ग व्यय के साथ मुझे विशेष रूप से आमन्त्रित किया था। मै पुन उनके स्नेहपूर्ण आमन्त्रण के डोर में बधकर कानपुर पहुच गया। उक्त अधिवेशन के अवसर पर इन्होंने राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' के नाम पर एक नगरी ही बसा रखी थी, साथ ही सितारे हिन्द के नाम पर विशेष लिफाफे की बिक्री की भी व्यवस्था की थी। स्वागत मंत्री के रूप मे इस अधिवेशन को सफल एवं स्मरणीय बनाने में बांठिया जी ने प्रशसनीय भूमिका निभाई थी। किसी आयोजन को सफल बनाने की अदभुत क्षमता इनमे है। अपनी इसी क्षमता के कारण ये कई सस्थाओं, अधिवेशनो, पत्र–पत्रिकाओं एवं अभिनन्दन ग्रन्थो के सयोजक, व्यवस्थापक, प्रकाशक एवं प्रबंध-सम्पादक रहते आये हैं। इन्होने अपनी साहित्यिक-साधना के बल पर ही पचाल शोध सस्थान कानपुर की शोध पत्रिका 'पचाल' के प्रबन्ध सम्पादन एव नाहटाबन्धु अभिनन्दन ग्रन्थ के सयोजक, प्रकाशक एव व्यवस्थापक के रूप मे प्रशसनीय कार्य किया है। इन्होने बहुत सारी साहित्यिक सस्थाओं को संबल प्रदान किया है। बाल साहित्यकार एवं सेवी के रूप में भी इन्होंने कानपुर में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। बाल साहित्य के प्रखर एवं चोटी के आलोचक डा० राष्ट्रबन्धु ने 'कानपुर महानगर के बाल साहित्यकार तथ बालसेवी नामक अपने एक आलेख में इन्हें भी कानपुर का एक प्रमुख बाल साहित्यकार बतलाया है।

बांठियाजी से मेरी तीसरी भेंट किशनगंज मे अपने ही निवास स्थान पर हुई। आज से लगभग चार वर्ष पूर्व जब मैं अपने निवास–स्थान पर एक सुबह बाहर बैठा मीठी–मीठी धूप का आनंद ले रहा था, एक रिक्शा मेरे गेट के सामने आकर रूका। उस पर बैठे बांठिया जी को देखकर मैं तो आश्चर्य-चकित हो गया, हर्षातिरेक मे उनके सामने नतमस्तक हुआ। उन्हे घर के भीतर लाया। वे गौहाटी से लौटने के क्रम में किशनगंज रूक गये थे। उनके मन में मेरे प्रति जो स्नेह था, प्रेम था, अपनापन था, उसी डोर मे बंधे मेरे निवास पर हठात् बिना किसी पूर्व–सूचना के पहुंच गये थे। पर्याप्त प्रसन्नता हुई उन्हें अपने घरपर पाकर। परिवार के अन्य लोगों से उनका परिचय हुआ। बच्चो के प्रति उनके मन में जो प्रेम था, वह भी देखने को मिला। कुछ घटे साथ रहकर वे कानपुर लौट गये।

चौथी बार मेरी उनसे भेट इलाहाबाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सितम्बर–अक्टूबर–९३ मे आयोजित हिन्दी मेला के अवसर पर हुई। वे सभागार में वक्ताओं एवं श्रोताओं के चेहरों को अपने कैमरे मे कैद कर

पत्र मिलने के साथ ही मेरे स्मृति-पटल पर फरवरी-मार्च ८८ की स्मृति ताजी हो गई। बाँठिया जी ने मेरे शोध-प्रबन्ध "राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द और आधुनिक हिन्दी गद्य के विकास में उनका योगदान" के सम्बन्ध में जानकारी मांगी थी। १/३/८८ को लिखे अपने पत्र में उन्होंने 'सितारेहिन्द' के सम्बन्ध में विशेष दिलचस्पी दिखलाई थी. नागरी प्रचारिणी पत्रिका (वाराणसी) मे प्रकाशित मेरे शोध निबंध हिन्दी के रक्षक एव उन्नायक राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' की प्रशंसा की थी । श्री बाँठिया जी को मेरे शोध-प्रबंध एव नागरी प्रचारिणी पत्रिका में छपे शोध-निबंध की जानकारी कैसे मिली यह तो मैं नहीं जान सका लेकिन मैं इस निष्कर्ष पर आसानी से पहुँच गया कि बाँठिया जी एक ज्ञान पिपासु एव जिज्ञासु व्यक्ति है। सरस्वती की आराधना एवं साहित्य-साधना उनके जीवन का एक प्रमुख लक्ष्य है।

बाँठिया जी ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में छपे मेरे शोध-निबंध को सार-गर्भित बतलाते हुए प्रशंसा की तथा मार्ग व्यय देने के आश्वासन के साथ मुझे अपने शोध-प्रबंध के साथ कानपुर बुलाया था। मैं उनके स्नेह-पूर्ण आमंत्रण के डोर मे बँधकर कानपुर रेलवे स्टेशन पर निर्धारित तिथि को निर्धारित रेलगाड़ी से पहुँच गया। बाँठिया जी ने मुझे लिख भेजा था कि वे रेलवे स्टेशन पर ए. एच व्हीलर के पास ही मिलेंगे।

मैं गाडी से उतरा, अपने ब्रीफकेस के साथ कानपुर रेलवे स्टेशन के ए एच व्हीलर के पास पहुँचा। वहाँ मैंने एक प्रौढ़ व्यक्ति को धोती, कुर्ता, बन्डी में देखा। सर पर टोपी भी सुशोभित हो रही थी। मेरे कौतूहल को देखकर उनकी पैनी आँखों ने मुझे पहचान लिया। छोटा सा प्रश्न-क्या आप किशनगंज से आये है ? मैने हाँ मे उत्तर दिया तथा उन्हें हृदय से प्रणाम किया।

साधारण वेश-भूषा मे परिभूषित बाँठिया जी का व्यक्तित्व प्रभावशाली एव अनूठा लगा। गेहुँआ वर्ण के मझोले कद के स्वस्थ शरीर वाले बाँठिया जी एक गंभीर व्यक्ति लगे। ढलती उम्र होने के कारण उनके कपोलों पर उफान तो नहीं थी लेकिन सघन बडी-बडी भौंहे और उनके नीचे बड़ी-बड़ी स्नेहपूर्ण आँखें, उन्नत ललाट पर सुशोभित हो रही टोपी, चिन्तनशील भृकुटि-विलास एवं चेहरे की शालीनता ने प्रथम दर्शन मे ही मुझे प्रभावित कर दिया। बाद मे दो-तीन दिनो के सान्निध्य एव साहचर्य ने यह स्पष्ट कर दिया कि "सादा जीवन उच्च विचार, यही है उनके जीवन का आधार"।

बाँठिया जी ने कानपुर के एक पुस्तकालय प्रांगण मे राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' की हिन्दी साहित्य सेवा पर बुद्धिजीवियों की एक बैठक आयोजित की थी, निमंत्रण-पत्र छपवाया था, मुझे मुख्य अतिथि बनाया गया था। कानपुर जैसे विद्वानो एव साहित्य सेवियों की नगरी मे किसी साहित्यिक विचार गोष्ठी मे बिहार के किसी व्यक्ति को मुख्य अतिथि के रूप मे आमंत्रित किया जाये, यह मेरे लिए गौरव की बात थी लेकिन इसके पीछे बाँठिया जी की वैचारिक उदात्तता थी। बुद्धिजीवियों की यह गोष्ठी सफल रही। मैंने सितारेहिन्द की हिन्दी सेवा पर प्रकाश डाला। अन्य बुद्धिजीवियों मे जिसमे कानपुर के ही डा० यतीन्द्र तिवारी, डा० प्रतीक मिश्र आदि शामिल थे, सभी ने उनकी हिन्दी सेवा पर प्रकाश डाला। उक्त अवसर पर बाँठिया जी ने भी सारगर्भित भाषण दिया। उनकी वाक्-पटुता, भाषण-भंगिमा और वैचारिक परिपक्वता से मैं विशेष रूप से प्रभावित हुआ।

कानपुर में उनके निवास-स्थान पर ही मुझे उनके साथ दो-तीन दिनों तक रहने का मौका लगा। सरस्वती के आराधक सात्विक भोजन एव सात्विक विचार वाले ज्ञान-पिपासु बाँठिया जी ने मुझे जो सम्मान दिया, स्नेह दिया, अपनापन दिया, उसे मैं आज तक नहीं भुला सका हूँ।

इस अवधि मे बाँठिया जी ने मुझे अपने साथ रिक्शा पर बिठाकर कानपुर के सभी प्रमुख एव दर्शनीय स्थलो का, जिनमें राधाकृष्ण मंदिर एवं तुलसी उपवन भी शामिल है, दर्शन कराया साथ ही कई विद्वानों एव साहित्यकारों से भी, जिनमें सम्माननीय बद्रीनारायण तिवारी भी है, मेरा परिचय कराया। श्री तिवारी जी ने मुझे कुछ पुस्तकें भी भेंट में दी।

प्राचार्य,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
मारवाड़ी कालेज, किशनगंज
बिहार

MAY JIVAM SHARADAM SHATAM

Dear Dr Agrawal,

I feel overwhelmed while writing to you.

You have been doing a noble job. I haye the honour of knowing my beloved Banthiaji in connection with my research.

While I was working on Raja Sivaprasad Sitar-i-Hind, Professor Ram Chandra Tiwariji of Gorakhpur University advised me to be in touch with him for certain source materials. I wrote to him. He (Banthiaji) was unknown to me. But he immediately responded to my letter. He telephoned me and advised me to wait for a while. Within a week a packet containing the entire file of the autobiography of the Raja reached my desk. It was something unexpected or beyond my expectation. I returned those materials after necessary consultation. Here lies the distinctiveness of our Banthiaji. He respects the honesty of others and never hesitates to extend his help in the pursuit of knowledge.

After that I have time and again met him in Calcuta. He enlighted my understanding about many unknown avenues of Jainism and other areas of comparative religion.

I am indebted to him and I conclude with a prayer:"May Jivam saradam satam"
(May you live one hundred autumns).

With all my best wishes for the happy occasion.

Yours sincerely,

12 September, 1994

Himadri Banerjee.
Department of History,
Rabindra Bharati University,
CALCUTTA.

***

रहे थे, उनके कैमरा में कैद होने वाले चेहरो में मेरा भी एक चेहरा था। मैंने भी उनका ही कैमरा लेकर उसमे उनके चेहरे को कैद कर दिया। बाद में बाठियाजी ने मेरे फोटो की एक प्रति मेरे पास भेज दी। मैंने उस फोटो को संभालकर इसलिये रखा है कि वह फोटो एक सफल साहित्यिक साधक द्वारा खींचा गया है।

बांठिया जी अपनी साहित्यिक साधना, निष्ठा एवं कर्मवताके बल पर ही पंचाल शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित पंचाल शोध पत्रिका के प्रबंध सम्पादक एवं नाहटा बंधु अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशक, व्यवस्थापक एवं संयोजक होने का गौरव प्राप्त कर सके। बांठिया जी ने अपनी कर्मठता एवं उदारता से विभिन्न साहित्यिक संस्थाओ को सबल प्रदान किया है तथा पत्र–पत्रिकाओं के लिये सुन्दर आलेख लिखे हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के कानपुर में आयोजित ४५ वे वार्षिक अधिवेशन के स्वागत–मंत्री के रूप में भी उनकी भूमिका पर्याप्त प्रशंसनीय रही है।

निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी, हजारों गुण वाले हजारीमल बांठिया जी अपने शुभचिन्तकों के लिये विश्वसनीय सखा एवं मार्ग दर्शक हैं, वे एक सफल गृहस्थ, आदर्श अभिभावक, दक्ष व्यापारी, समाज सेवक, उदार व्यक्तित्व वाले साहित्यानुरागी हैं। विषम परिस्थितियों में भी धैर्य रखना, विवेक से काम लेना इनकी अपनी विशेषता है। धनी एवं पर्याप्त यशस्वी होते हुये भी निरभिमानी हैं। विनम्रता, सादगी, व्यवहार कुशलता, कर्मठता, चारित्रिक उदारता, परोपकारिता इनकी विशेषताये है। यह जैन समाज के गौरव हैं। इनकी ज्ञान– पिपासा एव जिज्ञासु प्रवृत्ति ने इन्हे बहुत सारे विद्वानो, समाज सेवियो एवं साहित्य साधकों के निकट लाया है।

इतना ही नहीं मैंने इनके साथ रहकर तथा पत्र से सम्पर्क स्थापित कर इनके विषय में जो कुछ जान सका हूँ, उसका सार यह है कि ये विद्या-व्यसनी हैं, समय के महत्व को समझते हैं, आलस्य, प्रमाद, तन्द्रा एवं परनिंदा में इनका समय नष्ट नहीं होता है। इनकी प्रवृत्ति संग्रहकारी है, ये एक सुधी समीक्षक होने के साथ–साथ प्राचीन, मध्य एवं प्रारम्भिक आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य, जैन साहित्य, राजस्थानी साहित्य के कुशल अध्येता हैं, लेखक है। निर्मल चित्त, विमल मानस तथा तप पूत आचरण के कारण ये कानपुर में ही नहीं देश के दूसरे क्षेत्रो मे भी पूजनीय बने रहे है।

अपने जीवन के सत्तर वसंतों मे इन्होंने जिस तरह लक्ष्मी की साधना एवं सरस्वती की आराधना समान रूप से करके धनार्जन किया है, यश अर्जन किया है तथा साहित्य सृजन किया है जिसके कारण हर क्षेत्र में उन पर अभिनन्दन के फूल बरसते रहे हैं। अपने देश में ही नहीं विदेश (इटली) में भी अपनी विद्वत्ता एवं भाषण-भंगिमा के कारण सम्मानित हुये है। इटली सरकार के निमंत्रण पर इटली निवासी एवं हिन्दी प्रेमी, रामचरितमानस के प्रथम शोधकर्ता एल०पी० तैस्सीतोरी की हिन्दी सेवा एवं साहित्य साधना पर प्रकाश डालने हाल ही मे तैस्सीतोरी जयन्ती समारोह के अवसर पर इटली गये थे।

उम्र के थपेड़ों ने अब तक इस साहित्य–साधक एवं लक्ष्मी के आराधक को अपने पथ से विचलित नहीं किया है। इनकी साहित्य–साधना जारी है। कुशल व्यापारी–उद्योगपति तथा साहित्य-साधक इन दोनों रूपों में कानपुर महानगर में इनकी गिनती अगली पंक्ति मे होती है।

पिछले लगभग सात वर्षों से उनके साथ मेरा सम्पर्क बना हुआ है। पत्रोत्तर देने में इनसे आज तक चूक नहीं हुई है। मेरे शोध प्रबन्ध के प्रकाशन के लिये वे पिछले सात वर्षों से सचेष्ट बने रहे हैं लेकिन अर्थाभाव के कारण मैं ही उदासीन बना रहा हूँ,फलतः उसका प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ है लेकिन इतना निश्चित है, मेरा शोध–प्रबन्ध जब भी प्रकाशित होगा, यह बांठिया जी को ही समर्पित होगा, उनकी इच्छा के अनुसार ही उसका विमोचन होगा।

अंत में मैं इतना ही कहूँगा कि इनका जितना स्वागत किया जाये, अभिनन्दन किया जाये, कम ही होगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कानपुर-अधिवेशन के प्राण:

श्री हजारीमलजी बांठिया

□डा० बालकृष्ण गुप्त

सयोजक,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
कानपुर अधिवेशन

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का ४४ वाँ अधिवेशन कानपुर मे १७–१८–१६ जून १६८६ को सम्पन्न हुआ। अनेक दृष्टियो से यह सम्मेलन ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। सारे देश से लगभग चार सौ हिन्दी–रचनाकारो तथा प्रेमियो के इस सम्मेलन के प्राण कानपुर के साहित्यानुरागी, समाजसेवी तथा सस्कृति– अनुरागी श्री हजारीमल बांठिया थे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रचार मत्री होने के नाते मैंने अपने प्रधानमत्री श्री श्रीधर शास्त्री से सम्मेलन के ४४ वें अधिवेशन को कानपुर मे आयोजित किये जाने का निवेदन किया। मा० शास्त्री जी ने मेरा प्रस्ताव स्थायी समिति के समक्ष प्रस्तुत कर पारित भी करा दिया। अब मेरे समक्ष देश के इतने बडे आयोजन को कानपुर नगर की गरिमा के अनुरूप आयोजित करने के लिए पर्याप्त धन और साधनों की समस्या थी। अस्तु, यह स्वाभाविक ही था कि मैं अपने सम्मानित अग्रज श्री बाँठिया जी से इस समस्या के समाधान हेतु निवेदन करता। बाँठिया जी के साथ मेरी कई दिन वार्ता हुई और अन्तत हम लोगो ने निश्चय किया कि १७–१८–१६ को ३ दिनो तक यह समारोह आयोजित किया जायेगा। जहाँ तक धन की व्यवस्था का प्रश्न था बाँठिया जी का स्वाभाविक और सदा की भाँति उत्तर था कि काम चाहे कितना भी बडा क्यो न हो यदि निष्ठा पूरी है तो कार्य अवश्य सफल होगा।

बाँठियाजी की सहृदयता और सामाजिकता का ही प्रभाव था कि उन्हे तत्काल ही राजस्थान भवन के सचालक तथा अवकाश प्राप्त आयकर आयुक्त श्री कुभट साहब का सक्रिय एवं हार्दिक सहयोग प्राप्त हो गया। उनके साथ ही राजस्थान एसोसियेशन के पदाधिकारियो तथा सदस्यो ने भी भरपूर सहयोग दिया।

बाँठिया जी का नित्य का कार्यक्रम बन गया कि वे नगर के व्यापारियो, उद्योगपतियो तथा सम्पन्न एव साहित्यिक रुचि वाले नागरिकों के घर–घर जाकर मेरे साथ सम्मेलन के आयोजन हेतु धन-संग्रह करते थे और दूसरी ओर लखनऊ शासन से आयोजन की विशेषताओ के निमित्त भी अनेक प्रयास कर रहे थे। उदाहरणार्थ मेरी इच्छा थी कि सम्मेलन के अवसर पर 'प्रथम दिवस आवरण' (First-Day-Cover), अवसर के अनरूप डाक–टिकट निकालने की व्यवस्था डाकखाने का सम्मेलन– स्थल पर स्थानान्तर तथा टिकट लगाकर भेजने की व्यवस्था, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर सम्मेलन के कार्यक्रमो का प्रसारण आदि की उपयुक्त व्यवस्था हो। प्रभु की कृपा और श्री बाँठिया जी क अथक प्रयासो से उपर्युक्त सभी कार्य सम्पन्न हुए। उ० प्र० शासन के सास्कृतिक विभाग में बाँठिया जी के पर्याप्त

A MAN OF RARE VALUES

Dr. R.K. PAUL

Shree Hazarimal Banthia is a well known man not only in business community of Northern India but also among all those who love to know about the personalities which possess more than many qualities in themselves which render services for welfare of the society in more than many ways. As the poet Kanhaiya Lal Sethia puts him he is in true sense of the term a GUDARI KA LAL- a very simple man and a jem of the man in himself philanthropic and may be said that they distributed happiness and bliss among all those who happened to come in their contact they gave financial help to the needy and that is why they came to be known as the Banthias, the distributors. As a great business-man and industrialist of the country Banthiaji became the founder of several social and cultural organizations for welfare of the society. He helped in opening of many branches of the Indian Bank. He edited the first directory of the business community known as the All India Trade Directory. He organised the Diamond Jubilee celebrations of a renowned Hindi Poet Kaka Hathrasi. He was convenor of the Agar Chand Nahta Abhinandan Granth and edited several volumes belonging to the Jain belief. A prolific writer Banthia Ji established the statue of Italian Scholar of Hindi & Sanskrit L.P.Tessitory one each at Bikaner and Kanpur.

All about him cannot be put into a few words. The late national poet of Hindi Pt. Sohan Lal Dwivedi rightly has given him the title of Nagar-Shreshtha.

Shree Hazarimalji Banthia is a man of rare qualities and values. He himself performs noble deeds and not only this he is a great inspirer to one who looks at him and at his performance gets inspired tremendously. He is all help for an active and cooperative person. His sense and polite behaviour and way of putting things in most amicable manner make him dear and respectable to one and all. As the founder secretary of the Panchal Research Institute from 1984 to 1991, I had organised five seminars of national level at Kannauj, Kayamganj, Kampil, Kanpur and Rampur Banthiaji was the acting President of the Institute during the period It was he who inspired me more and more to work for culture, history and lok- jeevan of the Panchal. It was due to his sole inspiration and patronage that the publication of five issues of the Panchal journal could be made possible during my tenure. At present I am acting as the Vice-President of the Institute and Shree Hazarimal Ji keeps me all the time encouraged to work in the direction of the growth of this institute. He also greatly helped me to survey the entire sites and monuments of the Panchal Region. Thus I could be able to enrich my knowledge which is a great help to me in my teaching and Indological pursuits.

I am happy to learn that the Hazarimal Banthia Samman Samaroh Samiti will give him an Abhinandan Granth at the 71st birth anniversary of this great man, eulogise, pay regards and wish a long life for Banthia Ji and all success to the felicitations.

Vice Principal
Christ Church College
Kanpur.
Dt. April 19, 1995

बाल साहित्यकार श्री बाँठिया जी

□डा० राष्ट्रबंधु

बहुत से लोग यह नहीं जानते. श्री हजारीमल बॉठिया जी भी के अच्छे बाल साहित्यकार है। इन लोगो की अभिज्ञता की सीमा मे बाठिया जी पुरातत्ववेत्ता, यात्रावर्णन लेखक, और सकुशल सगठक के रूप से आगे अनेक सस्थाओं के पदाधिकारी तक है। लेकिन श्री हजारीमल जी बाठिया के हृदय में नयी पीढी को स्वस्थ रखने और स्वस्थ मन बनाने की उत्कट अभिलाषा है। इसके क्रियान्वयन मे श्री बांठिया ने जैन विद्यालयो और चिकित्सालयो की स्थापना की है। समय-समय पर वे इन सस्थाओ की कार्यप्रणाली का अवलोकन करते हैं, अभावो की पूर्ति करते है और नये सुझाव देकर आगे की प्रगति लाने में जुट जाते हैं। बालकल्याण की यह उत्कट अभिलाषा उन्हे बाल-साहित्य लेखन के लिए प्रवृत्त करती रहती है।

बालसाहित्य के विशद क्षेत्र में बाठिया जी ने मनमोहक रचनाएँ रचीं। बच्चों को कथाछल से सिखाने के लिए उन्होने रोचक कहानियॉं लिखीं। इनके अतिरिक्त बाठिया जी ने अपनी घुमक्कडी के अनुभव देने के लिए यात्रा-वर्णन लिखे हैं। बच्चो की सबसे पुरानी और लगभग साठ साल पूरी सफलता से चलने वाली पत्रिका बालसखा मे उनकी रचनाएँ छपीं। बालक, कुमार और झुनझुना (आगरा) मे भी उनकी रचनाएँ बहुत लोकप्रिय हुईं। अजमेर से प्रकाशित वीरपुत्र पत्रिका का संपादन भी बाठिया जी ने किया। इस पत्रिका मे स्वय लिखने के साथ- साथ उन्होंने अच्छे बाल-साहित्य को छाप कर प्रोत्साहित किया।

जुलाई सन् १९९० में बाल-साहित्य समीक्षा मासिक पत्रिका का विशेषाक श्री बाठिया जी के बाल-साहित्य पर केन्द्रित था। इसमे उन्होने अपनी प्रेरणा के लिए अपने मातृपक्ष को मान्यता दी है। उन्होनें लिखा है,

'मामा ज्यारा मारका तो भूडा क्यूं भाणेज।
नर नानाणे, धी दादाणे
बडी खाल मोसाल।
मागे पूत पिता ए घोडा
घणा नहीं तो थोडा थोडा।

लोक धारणा के अनुसार पुत्र पर अमूमन मातृपक्ष का प्रभाव अधिक पडता है और कन्या पर पितृपक्ष का।

'यद्यपि मेरे जीवन निर्माण में मातृपक्ष का अधिक प्रभाव पडा है किन्तु पिताश्री से सहृदयता और माताश्री से धार्मिकता जन्म से ही मिली है।'

बाल्यकाल से ही श्री हजारीमल बाठिया का लेखन प्रारभ हो गया था। "हमारे प्रेरणास्त्रोत श्री बाबू जी" लेख की लेखिका श्रीमती गुणसुन्दरी बाठिया ने लिखा है, 'साहित्य के प्रति आपकी रुचि बचपन से ही रही। जब आप कक्षा ६ मे पढते थे तभी सन् १९३८ मे भगवान महावीर पर आपका आलेख 'समाज सेवक' कलकत्ता में छपा। आपने अपनी लेखनी से अनेक लेख उस समय लिखे। यह आपका सौभाग्य ही रहा कि आपको अगरचन्द नाहटा जैसे मामा का सान्निध्य मिला'।

बचपन से ही, बांठिया जी स्वयं तो लिखते ही थे लेकिन उन दुलर्भ व्यक्तियो मे से एक थे जो दूसरे की कीर्ति सुनकर इर्ष्या नहीं करते, प्रसन्न होते हैं और प्रोत्साहन देते हैं। श्रीबांठिया जी के सहपाठी डा० शिवलाल बुन्देला ने लिखा है, 'मुझे भी टिकट सग्रह और पत्र-पत्रिकाओ मे लिखने का शौक था। उस समय इनके ही प्रोत्साहन से लिखी गई मेरी एक छोटी कहानी 'झुनझुना' मासिक पत्रिका से पुरस्कृत भी हुई। इस प्रकार छोटी आयु से ही इन्हें साहित्य

सम्बन्ध थे, जिनके लाभस्वरुप साँस्कृतिक निदेशालय ने कलाकारों की टीम प्रतिनिधियो की साँस्कृतिक संध्या को सुसम्पन्न बनाने के लिए भेज दी, जिसे सफलता दी, उ० प्र० के सुप्रसिद्ध लोकगीत गायक बालेश्वर ने।

तीन दिनो के इस ऐतिहासिक अधिवेशन में नगर की ४ धर्मशालाएँ प्रतिनिधियो के निवास के लिए सुरक्षित थीं। बाँठिया जी तथा उनके पुत्र इन सारी व्यवस्थाओं में दिन रात लगे रहते थे। मेरे लिए यह सर्वथा आश्चर्यजनक तथा प्रेरणाप्रद था कि बाँठिया जी साठ से ऊपर की अवस्था को प्राप्त करने के बाद भी कितनी सक्रियता से सारे दायित्वों का निर्वाह कर रहे थे। यह उन्हीं की क्षमता तथा व्यावहारिकता का फल था कि पधारे अतिथियों की भोजन की व्यवस्था नगर के सुप्रसिद्ध व्यापारी श्री गंगासागर गुप्त स्वयं देख रहे थे। जिस तत्परता और आत्मीयता से वे अपने हाथों अतिथियों को भोजन परोस रहे थे, वह वस्तुत अनुकरणीय था। यही कारण था कि सत्कार–व्यवस्था की दृष्टि से हिन्दी साहित्य सम्मेलन का यह अधिवेशन आज भी अनुकरणीय है।

इस अवसर पर बाँठिया जी की इच्छा थी कि एक सुसम्पन्न समारोह–पत्रिका का भी प्रकाशन किया जाय। ईश्वर की कृपा से वह पत्रिका भी इतनी सम्पन्न और सामग्री से युक्त निकली कि अधिवेशनों की श्रृंखला में उसका भी महत्वपूर्ण स्थान बना। इसके साथ ही पत्रकार संगोष्ठी, श्री कैलाश नाथ त्रिपाठी के संयोजकत्व मे, साहित्य संगोष्ठी डा० श्रीमती सुमनराजे के सयोजकत्व में और आयुर्वेद परिषद (संगोष्ठी) डा० सूर्यप्रसाद शुक्ल के संयोजकत्व में सम्पन्न हुई। कानपुर मे यह भी एक नया प्रयोग किया गया कि तीनों संगोष्ठियाँ एक साथ तीन 'हालो' (भवनों) में आयोजित हुई और तीनो का संचालन विधिवत् हुआ जिनकी वीडियो–फोटोग्राफी भी साथ–साथ हुई। बाल साहित्य संगोष्ठी के संयोजक डा० राष्ट्र बंधु की सेवाएँ इस अवसर पर विशेष अनुकरणीय रहीं जिन्होने गोष्ठी के संयोजक के साथ बाँठिया जी तथा मुझे पग–पग पर कियात्मक तथा प्रेरणाप्रद सहयोग दिया।

देश के समाचार पत्रों ने भी इस अधिवेशन की चर्चा में अभूतपूर्व सहयोग दिया। यद्यपि दो एक स्थानीय पत्रो के प्रतिनिधियो ने अपनी हीनभावना का परिचय देते हुए अधिवेशन की छोटी–मोटी कमियो को अधिक चर्चा में लाने का प्रयास अवश्य किया किन्तु बाद में बाँठिया जी के आपत्ति प्रकट करने तथा मेरे द्वारा विरोध प्रस्तुत करने पर समाचार पत्रो के स्वामियो द्वारा उन प्रतिनिधियों को दंडित भी किया गया। इसी प्रकार साप्ताहिक हिन्दुस्तान के सितम्बर मास के अंक मे सम्मेलन के संबंध में गलत तथ्य देने पर स्वयं श्री बाँठिया जी ने सम्पादक को सचेत करते हुए वास्तविकता की चर्चा करने पर बाध्य किया और साप्ताहिक हिन्दुस्तान को १७ सितम्बर के अंक में उनके सदविचारों को ससम्मान प्रकाशित करना पडा।

इस प्रकार सभी दृष्टियो से जहाँ एक ओर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कानपुर अधिवेशन की सफलता की चर्चा की जाती है, वहीं सम्मेलन के प्राणस्वरूप श्री हजारीमल बाँठिया के बहुआयामी, सर्वप्रिय, उदारमना तथा सस्कृति–साहित्य–समाजसेवी व्यक्तित्व की चर्चा इस सम्मेलन के साथ सारे नगर में प्रारम्भ हो गयी।

श्री बाँठिया जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कानपुर के सम्प्रति कोषाध्यक्ष हैं। इसके साथ ही देश–प्रदेश की विभिन्न सस्थाओ से जुडे होने के अतिरिक्त नगर की सुप्रसिद्ध संस्था पंचाल शोध संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष, चुन्नीलाल फूलचन्द बाँठिया चेरीटेबिल सस्थान के सस्थापक–अध्यक्ष, जैन श्वेताम्बर (खरतरगच्छ) महासंघ कानपुर के अध्यक्ष, मदनमोहन मालवीय विद्यालय कानपुर के उपाध्यक्ष, काम्पिल्य तीर्थ विकास परिषद् कानपुर के मत्री के रूप में आज भी वे निरतर अपनी कर्मठता, निष्ठा, कर्तव्यपरायणता का संदेश युवा पीढी को दे रहे हैं।

❖ ❖ ❖

आओ भैया झूला झूलो।
झूला झूलो झूला झूलो।।
+ + + +
बैठो भाई संभल सभलकर।
मत गिर जाना कहीं फिसलकर।।
आसमान को ऊपर छू लो।
झूला झूलो झूला झूलो।।

जागे को सबोधित करके, शिक्षा देना, बच्चो मे समान व्यवहार है। इसे उपदेश देना न कहकर अपना बडप्पन दिखाना माना जा सकता है। यह मनोविज्ञान बाठिया जी ने इस कविता में सरलता से व्यक्त कर दिया है।

बाठिया जी का कथा साहित्य जैन प्रसंगो से उद्भूत है, लेकिन कहानिया विशेष रोचक हैं। बाल–साहित्य समीक्षा के सदर्भित अक में प्रकाशित उनकी ३ कहानियो मे से दो प्रीतनगर अमृतसर (पंजाब) से प्रकाशित मासिक पत्र 'बाल सदेश' मे पजाबी में अनूदित होकर छापी गई हैं और 'बाल–साहित्य समीक्षा से साभार उद्धृत' लिखा गया है। ये तीनो कहानियां हैं– (१) हाथी को कैसे तोला जा सकता है (२) सुघड बहू और (३) वीर विक्रम।

बाठिया जी ने वीरपुत्र के लिये ग्राहक बनाये। तीन रूपये वार्षिक उस समय बहुत माना जाता था और ग्राहक बनाना कठिन काम था। बखूबी बाठिया जी यह सुकार्य करते थे। बाल साहित्य के लिये उनका प्रदेय बहुमुखी है।

आशा है, बाठिया जी बाल साहित्य की रचनाधर्मिता के लिये भी समय निकालेंगे और नयी पीढ़ी के निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान देगे।

संपादक बाल साहित्य समीक्षा
१०८/३०६ रामकृष्ण नगर
कानपुर २०८०१२

***

रचना में दिलचस्पी और लगाव रहा। दसवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते यह आपसी भाईचारा प्रगाढ़ एवं परिपक्व होता रहा'।

इस तरह बाल्यावस्था से ही श्री बांठिया ने बाल साहित्य मे कविता विधा अपनायी और रोचक रचनायें लिखीं। स्वतन्त्रतापूर्व की इन बालकविताओं का वैशिष्ट्य आज भी हमें सुखद आश्चर्य प्रदान करता है

मेरी नानी

मेरी नानी, बड़ी सयानी।
कहती रहती नयी कहानी।।
एक था राजा एक थी रानी।
राजा सुन्दर रानी कानी।।
राजा मूंजी, रानी दानी।
रानी भोली वह अभिमानी।।

इस कविता मे कथ्य भी ध्यान देने योग्य है। बच्चो को विलोम सीखने का अवसर इससे प्राप्त होता है और रोचकता जाग्रत होती है।

माँ का लाल

माँ बस्ते मे पेड़े भर दे।
मै शाला को जाऊगा।।
भैया से पोथी मँगवा दे।
जल्दी सब पढ जाऊगा।।

\+ + + +

मेहनत करके खूब पढूँगा।
भारत का उत्थान करूँगा।।
मैं उसको आजाद करूँगा।
मां का प्यारा लाल बनूँगा।।

परतंत्र भारत में स्वतंत्रता लाने के लिये शिक्षा का महत्व बतलाने वाला यह बालगीत बहुत महत्वपूर्ण है। इसमे सात्विक स्पर्धा का भाव अभिव्यक्त किया गया है। भारत को आजाद कराने की बात लिखना, साहस का काम उन दिनों था। बांठिया जी बाल्यकाल से ही देशभक्ति का भाव रखते थे और उस अवस्था में कविता छपाकर किसी स्वतन्त्रता संग्राम सैनानी जैसा कार्य करते थे, जिसके करने में अग्रेजो से मोर्चा लेना होता था।

मासिक 'वीरपुत्र' मे उनकी रचनायें सादर छपती थी अत अपनी और साथियो की रचनाये छपी हुई देखने की ललक स्वाभाविक रूप से उनमे भी थी। वीरपुत्र के लिये वे डाकिये के आने की प्रतीक्षा बडी उत्सुकता से करते थे। इस नीचे दी हुई कविता में,इन्हीं भावनाओं की जानकारी देखी जा सकती है,

मोहन देख डाकिया आया।
थैले मे क्या-क्या भर लाया?
आहा वीर पुत्र वह लाया।
हम सबके मन को वह भाया।।

'झूला झूलो' कविता बाल-क्रीडा से सबंधित है। इसमे झूलते समय सावधान रहने की शिक्षा प्रकारान्तर से दी गई है।

और वाल्मीकि 'रामायण' पर तुलनात्मक शोध प्रबन्ध सन् १९११ मे लिखकर पी–एच०डी० की डिग्री प्राप्त की। डा० तैस्सीतोरी पर सन् १९५० मे बाबू जी ने सर्वप्रथम हिन्दी मे परिचय लेख–'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित कर हिन्दी जगत को तैस्सीतोरी से परिचित कराया। उनकी समाधि को बीकानेर मे खोजकर पुनर्निमार्ण कराया– जिसका उद्घाटन २२ नवम्बर १९५६ ई० को प्रख्यात राष्ट्रीय भाषाविद् प्रो० सुनीति कुमार चटर्जी ने किया।इस अवसर पर मुख्य अतिथि इटली के सास्कृतिक दूत डा० टियेरियो उपस्थित थे। बाबू जी ने ही पडित बदरी नारायण जी तिवारी की प्रेरणा से सन् १९८५ ई० मे तैस्सीतोरी मूर्ति का शिलान्यास हिन्दी के प्राण प्रो० वासुदेवसिह से कराया और मूर्ति का अनावरण २२ दिसम्बर १९८५ को इटली के सांस्कृतिक दूत प्रो० फरनन्दो बरतोलिनी से कराया। इस समारोह की अध्यक्षता इस युग के तुलसी पं० रामकिंकर जी उपाध्याय ने की। डा० तैस्सीतोरी की जन्म शताब्दी १९८७–८८ सर्वत्र भारत मे बाबू जी की ही प्रेरणा से मनाई गई और डा० तैस्सीतोरी के जन्म स्थान उदीने (इटली) के मेयर ने बाबू जी व माता जी को प्रमुख अतिथि रूप में १२ नवम्बर १९८७ ई० को बुलाया, जहा बाबू जी ने हिन्दी मे डा० तैस्सीतोरी पर सारगर्भित भाषण दिया।

मामाजी की प्रेरणा व डा० तैस्सीतोरी के कारण बाबूजी को 'राजस्थानी' भाषा और साहित्य से बडा लगाव है। बाबू जी प्रतिवर्ष राजस्थानी भाषा के विद्वान को रू० २०००/– का फूलचन्द बांठिया पुरस्कार बीकानेर में राजस्थानी ज्ञान पीठ के माध्यम से देते हैं। वृजक्षेत्र मे निवास करने के कारण आप ब्रजभाषा और उसके साहित्य के विकास में बडी रूचि रखते है। आप बृज क्षेत्र की सर्वोच्च सस्था बृजकला केद्र के उपाध्यक्ष हैं। आप हाथरस शाखा के सदा सरक्षक रहे। आजकल बाबू जी हाथरस मे प्रतिवर्ष दाऊजी के लक्खी मेले पर बृज भाषा कवि सम्मेलन मे सर्वोच्च बृज भाषा कवि को रू० ४००/– 'फूलचन्द बाठिया बृजभाषा पुरस्कार देते हैं। बृजभाषा के कवियो एव विद्वानो के बाबू जी प्रेरणा–स्रोत हैं। उनको हार्दिक एव आर्थिक सहयोग देते रहते हैं।

साहित्य के अतिरिक्त बाबू जी पारिवारिक जीवन मे भी 'गृहस्थ योगी' से किंचित् मात्र भी कम नहीं है। मेरे द्वारा गृहस्थ योगी की सज्ञा दिये जाने पर शायद आप मुस्कराये कि गृहस्थ और 'योगी'। पर मेरे इस कथन मे लेश मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं। बाबू जी को मैने बहुत नजदीक से देखा है। यह मेरा भी सौभाग्य रहा, विवाह के बाद आपकी छत्र–छाया मे कानपुर रहने का ही निरन्तर अवसर मिला। गृहस्थी मे रहते हुये भी आप एक योगी की तरह रह रहे है, न कोई चाह, न कोई कामना पर अपने कार्यों के प्रति दृढ निष्ठा व लगन है। आपका हर कार्य बडा सतुलित और नियमित रहता है। प्रात काल ५ बजे उठकर अपने नित्यकर्म से निवृत होकर प्रभु भजन और तत्पश्चात् नियमित रूप से बाग-बगीची। फूलबाग नानाराव पार्क मे भ्रमण। व्यापार बाबू जी ने अपनी जवानी में खूब किया। अब निवृत से रहते हैं–किन्तु उनकी पैनी नजर सदा बच्चो के किये व्यापार पर रहती है। उन्हे परामर्श देते हैं। घर में किसी से कभी कुछ नहीं कहते हैं और स्वय के लिये कुछ भी इच्छा नहीं रखते हैं। जैसा भी परिवार ने कुछ कर दिया उसको सहर्ष स्वीकारा है। बाबू जी को ऊँचा बोलते और डाटते बहुत कम पाया। अपार सतोष आप मे है। पर कार्य के प्रति आलस्य देखकर आप कभी–कभी झुझला जाते हैं। आलस्य के प्रति इनका बैर है। स्वयं किसी भी चीज में–कोई काम करने में आलस नहीं करते हैं। आज भी यही सब को कहते हैं–'काल करे सो आज कर', यह मानव जीवन मिला है, तो इसका सही उपयोग करो। आज इस अवस्था मे भी आप एक नौजवान की तरह अनेक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों का बीडा अपने कधों पर उठाये हुए हैं।

"कम्पिल" का बीडा जब से आपने उठाया है आप पूर्ण रूप से समाज के प्रति समर्पित हो गये है। जैन धर्म का यह प्राचीन गुमनाम तीर्थ जो अनेक वर्षो से जनता जनार्दनके मानस-पटल से ओझल हो गया था मानो आपको पुकार–पुकार कह रहा था कि मुझे इस अन्धकार के गर्त से निकाल कर प्रकाश मे लाओ। और वास्तव मे जब से आपने इसका कार्य अपने हाथ मे ले लिया–आप तन–मन–और धन से इसकी सेवा में जुट गये। कहा भी है अच्छा कार्य करते समय बहुत बाधाएँ आती हैं। कपिल के प्रति आपका इतना लगाव देखकर आपको पारिवारिकजनो का कोप–भाजन भी बनना पडा है। किन्तु आप स्वय ने एक शब्द भी किसी को कुछ नहीं कहा है और दृढता–पूर्वक अपने आराध्य देव विमल प्रभु की सेवा मे लगे हुए हैं।

हमारे प्रेरणास्रोत : बाबूजी

□ श्रीमती गुणसुन्दरी बांठिया

अपने जीवन-काल मे अनेक महापुरुषों के विषय में पढा जिन्होंने अपना तन–मन–धन सब समाज–सेवा मे समर्पित कर दिया। मेरा यह अहोभाग्य ही रहा कि शादी के बाद मैने अपने श्वसुर साहब के रूप में एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व के दर्शन किये। अभी कुछ समय पूर्व ही मैंने सुना कि बाबू जी का सार्वजनिक अभिनन्दन कर उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया जावेगा तो मेरा दिल खुशी से झूम उठा। मेरे अव्यक्त भावो को लेखनी के माध्यम से वाणी मिल गई, जो शायद अन्य प्रकार व्यक्त न होते। मेरे ये शब्द-सुमन अवश्य ही आप सबके लिये प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

आपका बचपन और किशोरावस्था प्रारम्भ से ही संघर्षमय रहे। किशोरावस्था के पदार्पण के साथ ही पिताजी का साया आपके सिर पर से सदा के लिये उठ गया। माँ मगन बाई का आशीर्वाद सदा साथ रहा तथा शक्ति–स्वरूपा धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी बांठिया का निरन्तर सहयोग। आपका विवाह ३० नवम्बर १९४० ई० में हुआ जबकि आप कक्षा ६ के विद्यार्थी थे। पारिवारिक सारी जिम्मेदारिया इनके कन्धो पर आ पडी–किन्तु आपने साहस नहीं छोड़ा। पढाई बीच मे ही छोड़नी पडी। स्वय तो स्नातक नही बन पाये किन्तु पुत्रों एवं पुत्रियो सबको, स्नातक एवं स्नाकोत्तर तक पढाया।

साहित्य के प्रति आपकी रूचि बचपन से ही रही। जब आप कक्षा ६ मे पढते थे तभी सन् १९३८ में 'भगवान महावीर' पर आपका लेख 'समाज सेवक' कलकत्ता से छपा। आपने अपनी लेखनी से अनेक लेख उस कठिन परिस्थिति मे भी लिखे। यह आपका सौभाग्य ही रहा कि आपको अगरचन्द नाहटा जैसे मामा का सान्निध्य मिला।

उनकी छत्र–छाया मे आपकी लेखनी और वाणी सदा मुखरित होती रही। आप व्यवसाय के साथ–साथ साहित्य सेवा मे भी निरन्तर लगे रहे। यद्यपि बाबू जी के पास एम०ए०, पी–एच०डी० जैसी कोई बडी उपाधि नहीं है पर आपकी साहित्यिक सेवाओ के कारण बडे-बडे साहित्यकार, इतिहासकार एव उच्च कोटि के विद्वान नित्य ही आपसे मिलते रहते है और साहित्यिक–लाभ प्राप्त करते हैं।

जब आप नवीं कक्षा में पढते थे–सन् १९४० मे आपने 'मुहणोत नैणसी और उनके वशज' एक शोध–पूर्ण निवन्ध लिखा जो इलाहाबाद की हिन्दी ऐकेडेमी की 'हिन्दुस्तानी' त्रैमासिक पत्रिका मे छपा था। मुंहणोत नैणसी पर शोध प्रवन्ध लिखने वाले शोध विद्यार्थियों ने उक्त लेख को साभार स्वीकार कर अपना शोध प्रबन्ध पूरा किया है। इसी से अंदाज लगा सकते हैं कि बाबू जी के लेख कितने ही विद्वानों के लिये प्रेरणा दायक रहे। आपने अब तक लगभग ३०० लेख ही लिखे हैं किन्तु जो लिखा वह सारगर्भित व शोधपूर्ण लिखा है।

बडे-बडे साहित्यकारो का सम्मान करने और कराने में आपकी विशेष रूचि रही है। सरस्वती के वरद पुत्र श्री अगरचन्द नाहटा के 'अभिनन्दन ग्रन्थ' को प्रकाशित करने का सारा श्रेय आपको ही है। आपने राष्ट्रीय स्तर पर उनका अभिनन्दन देश की यशस्वी प्रधान मंत्री स्व० श्रीमती इंन्दिरा गांधी से एवं सुप्रसिद्ध विश्व प्रसिद्ध विज्ञान–वेत्ता डा० दौलत सिह जी कोठारी से कराया। 'काका हाथरसी' की हीरक जयंती मनाकर उनका यशोगान भारत मे कराने का सारा श्रेय बाबू जी को ही है। आप ही उस जयंती के सन् १९६४ ई० में संयोजक थे। बाबू जी को सभी लोग प्रेम व आदरभाव से 'जीसा' कह कर पुकारते हैं।

आपके इन कार्यों के संदर्भ मे इटली निवासी डा० एल०पी० तैस्सीतोरी को भुला देना अवश्य ही आपके साथ बडी बेईंसाफी होगी। डा० एल०पी० तैस्सीतोरी विश्व के प्रथम नागरिक थे जिन्होंने तुलसी कृत रामचरित मानस

पर चूँकि प्रथम बार शोध हो रहा था अत कठिनाइयों का पूर्वाभास तो हो गया लेकिन "जहां चाह वहां राह" की अनुभूति की राह पकडकर कार्य प्रारम्भ किया।

निर्देशक महोदय ने एक दिन मुझे सुझाव दिया कि यदि तुम अपने जीवन में इस कार्य को सफलता पूर्वक सम्पादित करना चाहती हो तो मेरी राय मानो विभीषण बनकर भगवान राम सरीखे डॉ तैस्सितोरी के परम भक्त एव साहित्यानुरागी आद० श्री हजारीमल बाठिया जी की शरणागति में चली जाओ, जहां तुम्हे सर्वाधिक साहित्य का सहारा ही नहीं मिलेगा, बल्कि सुपौत्री बन घर–आगन की रसोई का स्वाद भी चखती–चखती डिग्री अवार्ड होने से पूर्व तुम डिग्री का राजतिलक भी करवा लोगी। मैंने एक राही बनकर नन्हीं बालिका पिताजी की ऊँगली पकडकर राह की तलाश करती–करती आखिर एक दिन कानपुर का पता पूछकर इनसे पत्र व्यवहार किया। शोध की सूचना पाकर उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप पत्रोत्तर दिया और बीकानेर आने पर नाहरगढ सरीखे किले के भीतरी घर प्रागण को खोलकर सारे साहित्य स्वरुपी खजाने की चाबियां मेरे हाथ में दे दीं। शोध का बहुमूल्य साहित्य पाकर मुझे बहुत भारी खुशी हुई, साथ ही बांठिया जी ने इटली स्थित परिवार के साथ अतरग मित्रता का नाता-रिश्ता भी जुडवा दिया जहां से डा तैस्सितोरी जी का पूरा जीवनवृत, परिवार सम्बन्धी जानकारी एव उनके जीवनकाल का समस्त उपलब्ध साहित्य, दैनन्दिनी इत्यादि की फोटोस्टेट कॉपिया भी प्राप्त हो सकीं। इन सब का श्रेय निश्चित ही बाठिया साहब को जाता है।

मेरे शोध-प्रबन्ध के कारण जो बाठिया जी के परिवार की सदस्य बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ, वह निरन्तर चार वर्षों से बना हुआ है। आप जब–जब भी बीकानेर पधारे, समय पर पूर्व सूचना देना कभी नहीं भूले। पुत्री, वीणा, मैं बीकानेर फलां तारीख को आ रहा हूँ। और फिर बीकानेर जितने दिन भी रहना होता, बराबर शोध की प्रगति, विभिन्न कठिनाइयो को दूर करना, सहयोग देना और यदि कहीं पुरातत्व विभाग, शोध प्रतिष्ठान अथवा निजी तौर पर साहित्यकारो के यहा से आग्रह करना है तो स्वय जाकर कार्य करवाना, उनके व्यक्तित्त्व का सदा अंग रहा। उनके महान उपकारो को अपनी लेखनी के माध्यम से लिखना बिल्कुल असम्भव है। मैं एक निर्धन परिवार की पुत्री अपने समस्त बहिन भाइयो मे उच्च शिक्षा के अध्ययन को यदि पूरा कर डॉ कहलाने का सौभाग्य पा सकी तो वह श्री बांठिया जी व निर्देशक महोदय की कृपा का ही प्रतिफल है। शोध प्रबन्ध के पूरा होने पर जितनी खुशी श्री बांठिया जी को हुई थी मैं उसका कैसे ब्यान करूँ ? यह ४०–५० वर्ष के उनके हृदय में इस मिशन को पूरा करने की एक प्रबल उत्कंठा थी, जो पूर्व जन्मों के संस्कारवश मेरे द्वारा पूरा हुआ। अजमेर विश्वविद्यालय द्वारा जुलाई १९९३ को जब डिग्री मिली तो सर्वप्रथम मेरी सूचना की प्रथम तार उन्हीं के नाम थी "दादाजी, मैं डाक्टर बन गई" और फिर बीकानेर आने पर उनके अपने पू० पिताजी के निमित्त वर्षो से दिये जाने वाले १९९३ का "श्री फूलचन्द बांठिया पुरस्कार" बीकानेर के मूर्धन्य साहित्यकारों, विद्वानों, पत्रकारो, परिवार के सुधीजनो के बीच सेशन जज माननीय श्री गणपति सिंह भण्डारी जी के कर कमलो द्वारा प्राप्त कर राजस्थान के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रो राजस्थान पत्रिका में, राष्ट्रीय सहारा, राष्ट्रदूत, युगपक्ष सरीखे पत्रों में अपनी फोटो व २१००) की पुरस्कार की सूचना देखकर खूब देर रात भर रोती–रोती सोई थी। आज मुझे विभीषण के लका–राज्य स्वरूपी डिग्री का अभिषेक मुकुट श्री बाठिया जी ने पहनाया था।

जो इन्सान जननी जन्मभूमि सरीखे उपकारों को कलमबद्ध करने की कोशिश करता है वह कितना कृतघ्न हो सकता है। मैं कुछ शब्द लिखकर बांठिया जी के व्यक्तित्व व कृतित्व को नापने की कोशिश करूँ ? शायद यह ठीक नहीं .....सकोचवश एक पौत्री अपने दादाजी के सम्मानित ग्रन्थ की गिलहरी बन सकी। यही मेरा अहो भाग्य है।

आज अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर पर मेरे शोध के कारण मुझे जो सम्मान, प्यार मिला है सब कुछ श्री बाठिया जी के आशीर्वाद का ही फल है। जिनकी रजकण को पाकर मेरा जीवन धन्य है। श्री बांठिया जी शतायु हों। यही कामना करती हूँ।

✪✪✪

कंपिल–कायमगंज से १० किलोमीटर दूर है। दिगम्बर एव श्वेताम्बर जैन मंदिरों के अलावा–महाभारत कालीन संस्कृति को भी अपने गर्भ में सजोये हुए हैं। इसे प्रकाश में लाकर जन–मानस का ध्यान केन्द्रित करने का श्रेय बाबू जी को है। यही कारण है कि कानपुर जैन समाज मे बाबू जी 'कम्पिल वाले बाँठियाजी' के नाम से प्रसिद्ध हैं। सन् १६७८ ई० के अक्टूबर मे "कपिल–महोत्सव" मनाया गया– जिसका उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव ने किया। यह आठ दिन का महोत्सव बाबू जी के संयोजकत्व मे ही मनाया गया। पूज्य आचार्य श्री विजयप्रकाश सूरिजी की प्रेरणा से "श्री वर्धमान जैन चिकित्सालय, कपिल" का शिलान्यास अपनी धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया से २२ मार्च १६७४ ई० मे कराया। कपिल के आसपास कोई चिकित्सालय नहीं है। यह गरीब–ग्रामीण जनता की सेवा कर रहा है। बाबू जी की प्रेरणा व संयोजकत्व मे गत १२ वर्षों से नेत्र शिविर एवं विकलांग शिविर लग रहे हैं। बाबू जी की ही प्रेरणा से माननीय श्री खुर्शीद आलम खा साहब (वर्तमान मे राज्यपाल कर्नाटक) ने कंपिल मे करोड़ो की लागत का सूत की कताई मिल एव पर्यटन धर्मशाला का निर्माण कराया है। उ० प्र० के तत्कालीन राज्यपाल डा० चेन्ना रेड्डी भी बाबू जी के आमत्रण पर पधारे थे। 'कपिल' मे अब तक सन् १६७५ से जो विकास हुआ है उसका सारा श्रेय बाबू जी को है। कपिलवासी बाबूजी का बड़ा आदर करते हैं।

सन् १८४७ की क्रांति के अमर शहीद अमरचंद बाँठिया को प्रकाश मे लाने का कार्य बाबू जी ने जिस लगन व उत्साह से किया वह सदा क्रांतिकारी इतिहास जगत मे याद रखा जावेगा। शहीद भगतसिंह के साथी श्री शिव वर्मा जी को बाबू जी ने अमर चन्द बांठिया का बडा तेल चित्र व रु० ११००) शहीद शोध संस्थान लखनऊ को भेट किया। आप अनेक संस्थाओ के संस्थापक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, ट्रस्टी एव मत्री हैं।

आज देश मे व्याप्त सामाजिक कुरीतियों पर भी आपका ध्यान गया है। मेरी शादी के समय मे हमारे परिवार मे पर्दा बहुत था, हमारी दादी मा साहब सदैव पर्दे के पक्ष मे रही। पर यह बाबू जी के प्रयत्नो का ही सुफल था कि हमारे घर से "घूँघट प्रथा" सदा के लिये समाप्त हो गई। शिक्षा के क्षेत्र में भी सबको बढावा दिया। बाबू जी की सभी सताने एव बहुये उच्च शिक्षित एव संस्कारी है।

क्या–क्या बखान करूँ ? यदि सागर मन्थन असम्भव है तो बाबू जी के सब गुणों पर प्रकाश डालना भी। जो स्वयं गुणो के आगार हैं उनके प्रति मेरी यह लघु–लेखनी क्या गुण बखान कर सकती है। मेरी तो प्रभु से यही कामना है– बाबू जी चिरायु हो और न केवल हम पारिवारिकजनों के लिये वरन् समस्त मानव-समाज के लिये वे ऐसे कार्य करे–जिनके कारण आने वाली पीढिया उन्हें युगो–युगो तक याद करती रहें। ऐसे हैं–मेरे बाबू जी–श्री हजारीमल जी बांठिया।

❀ ❀ ❀

दादाजी मैं डाक्टर बन गई

□ डा० कु० वीणा गान्धी

आज से चार वर्ष पूर्व जब मैंने एम ए की परीक्षा पास की तो आगे उच्च शिक्षा प्राप्त करने का मानस बनाया। बीकानेर के स्थानीय डूँगर महाविद्यालय के उप–प्राचार्य एवं मूर्धन्य साहित्यकार, विद्वान, मान डॉ० मदन केवलिया जी के शिष्यत्व में मैंने पी–एच.डी करने की प्रार्थना की। जिसे उन्होने सहर्ष स्वीकार किया एवं शताब्दी पूर्व इटली में जन्मे भारतीय आत्मा का स्वरूप धारण किए स्व० डॉ एल पी तैस्सितोरी जिन्होने बीकानेर में रहकर राजस्थानी भाषा एव साहित्य को अनुपम एव अनमोल देन दी थी, उन्हीं पर शोध का कार्य करने का सुझाव दिया। इस विदेशी विद्वान

बहुत नज़दीक से देखा बाँठिया जी को

मदनलाल आज़ाद
आज़ाद स्ट्रीट, हाथरस

मैंने श्री बॉठिया जी को नज़दीक से देखा है–समाज सेवी के रूप में। बचपन मे वे कविता भी करते थे। लेखक भी हैं। धर्मिक तथा सामाजिक कार्यो मे प्रगतिशील विचार–धारा के हैं। अपने व्यापार में भी नगर में नाम पाया है। मेरा उनका वर्षों से साथ चला आ रहा है। ब्रजकला क्रेन्द्र मे आज तक मैं उनके साथ हूँ। हास्य रसावतार कविवर काकाजी की ६० वीं जयन्ती पर उन्होने जो भव्य कार्यक्रम आयोजित किया उसमे केन्द्रीय सूचना प्रसारण मत्री श्री राजबहादुर जी पधारे थे जिन्होने आकाशवाणी के मथुरा केन्द्र की स्थापना की थी। यह समारोह बडी धूमधाम से मनाया गया। इसी प्रकार बॉठियाजी ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का हाथरस मे बहुत बडा अधिवेशन किया जिसकी स्मृति आज तक चिर–स्थायी बनी हुई है। इसका प्रचारमत्री, उपमत्री, एवं अब प्रधानमंत्री, बनाने का श्रेय इन्हीं को है। और इन्हीं के प्रयत्नो से मैं अब प्रान्तीय तथा केन्द्रीय कार्यकारिणी का भी सदस्य हूँ। श्री बाठियाजी अत्यन्त लगनशील हैं और सभी के सहयोग से कार्य करते है। जब वे हाथरस नगर मे कोई भी कार्यक्रम कराते हैं तो मेरे विचारो को भी महत्व देते है। आप नगरपालिका के सम्मानित सदस्य तथा कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे है। आपके कार्यकाल मे हाथरस नगरपालिका ने कई महत्वपूर्ण कार्य किये। नगर मे कई सस्थायें बनी जिनमे बांठियाजी और मैं लगन से साथ-साथ कार्य करते रहे। बॉठियाजी के प्रयत्नो से ही इटली के प्रसिद्ध विद्वान डा० एल० पी० तैस्सितोरी का जन्मदिन और उनके निधन पर उनकी पुन्य तिथि को हम प्रतिवर्ष मनाते आ रहे हैं। शोधकार्य के प्रति लगन के कारण ही आपने हाथरस में शोध संस्थान का भी आरम्भ किया है जिसमे हाथरस नगर के इतिहास, साहित्य, महापुरुषो, कवियो, लेखको तथा पुरातत्व पर शोध कार्य किया जायेगा। आप "श्यामधारा" से भी स्थायी रुप से जुडे हुये हैं जो ब्रजभाषा के कवियों का मंच है। आपने कम्पिल के इतिहास तथा पुरातत्व को उसका उचित एव सम्मानप्रद स्थान दिलाने के लिए पचाल शोध संस्थान की भी कानपुर मे स्थापना की है जिसके अधिवेशनो मे अनेक विद्वानो तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियो ने भाग लिया है। आपने कपिल मे चिकित्सालय की भी स्थापना की है।

मै बॉठिया जी को किस रूप मे समझूँ। आप एक महान तपस्वी, लेखक, समाजसेवी, धर्मपरायण एवं सभी को साथ लेकर चलने वाले हैं। इनके साथ रह कर मैं भी इनके पद–चिन्हो पर चलकर सामाजिक कार्य कर रहा हूँ। मैं आपको बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

पूज्य भाई साहब

श्रीमती मंजू अग्रवाल, एडिनबरा (यू.के.)

पूज्य भाई साहब श्री हजारीमल जी बाँठिया से मेरा सम्बन्ध गत तीस वर्षों से है। सन् १९६२-६३ में मैं प्रथम बार श्री बाँठिया जी की स्थापित मोन्टीसरी पद्धति की संस्था- तिलक-शिशु मंदिर, हाथरस में प्रधानाचार्या के नाते सम्पर्क में आई। अलग से मकान की व्यवस्था न होने के कारण- श्री बाठिया जी ने अपने घर पर ही मुझे-बेटी-बहिन की तरह रख कर जो प्रेम-प्यार दिया वह आज तक मै न भुला सकी हूँ। पूज्य भाभीजी ने भी अपनी बेटी की तरह घर गृहस्थी का काम भी सिखाया। स्कूल के घंटे पूरे करने के बाद जब मैं बांठिया निवास मे पैर रखती तो परिवार के सभी बच्चे "आँटी" कह कर मुझ से लिपट जाते। इसलिये मेरे लिये भाई साहब के बारे मे चार लाइने लिखना व कहना भी सूरज को बाती दिखाना होगा। मैंने जितना उनको समझने और जानने की कोशिश की, उतना ही मै आश्चर्यचकित होती गई। भाई साहब का सरल स्वभाव, धार्मिक रुचि और दूसरो के दुखो को दूर करने मे सदा तत्पर रहते देखा।

मैं लगभग एक वर्ष इनके घर पर रही और मेरी शादी श्री अग्रवाल साहब के साथ तै हो गई तो मुझे लगा एक बेटी अपना घर (मायका) छोड कर जा रही है ससुराल को। मुझे श्री बांठिया जी तथा उनके पूरे परिवार मे एक बहिन, एक बेटी, और एक आंटी का पूरा पूरा प्यार-दुलार मिला।

मैं तीस वर्षों से अपने ससुराल घर-एडिनबरा (यू.के) में रह रही हूँ। जब भी मैं भारत आती हूँ तो सर्व प्रथम पूज्य भाई साहब के घर ही आती हूँ। मेरे सगे भाई जो अलीगढ में रहते हैं, उनके घर पीछे जाती हूँ। रक्षा-बधन व भैया दौज के कुंकुम चावल-राखी भेजती हूँ। हाथरस तथा कानपुर तो मेरी भेजी हुई राखी भाई साहब अपने हाथों पर प्रेम से बांधकर मेरे सुख-सौभाग्य की कामना करते हैं।

गत वर्ष १९९४ के सितम्बर मे श्री बांठिया जी इटली यात्रा पर थे-मैंने भी उनसे इटली फैक्स भेजकर निवेदन किया कि वे भाभी जी के साथ मेरे घर एडिनबरा पधारें। भाभीजी तो उनके साथ नहीं थीं किन्तु भाई साहब मित्र श्री क्रान्तिकुमार जी पारख और उनकी धर्मपत्नी इनके साथ थीं- को लेकर ता० २६ सितम्बर को एडिनबरा पधारे। मुझे तीन दिन तक उनके साथ रहने का सुअवसर पुन: मिला। मेरी सुख-दु:ख की सारी बाते सुनी और उन्होंने मुझे हार्दिक आशीर्वाद दिया कि-मंजू तुम्हारा सुख-सौभाग्य वैभव सदा बढता रहे। पूज्य भाई साहब के स्कूल में सिर्फ १२०/- मात्र मासिक वेतन पर मैंने श्री बांठिया जी के सद्व्यवहार एवं उत्कृष्ट परिवार के नाते ही कार्य करना स्वीकार किया। मैं उस वक्त एम.ए., एम.एस.सी., बी.एड थी। अब तो मैंने एम.बी.ए. पास कर ली है। श्री अग्रवाल साहब भी नेवी के इंजिनीयर हैं। हम दोनों ने मिलकर-एडिनबरा में चार निज के मकान बना लिये हैं-यह सब पूज्य भाई साहब के आशीर्वाद का ही फल है। पहिले मेरा नाम कुमारी महेन्द्र मित्तल था-शादी के बाद अब मैं श्रीमती मंजू अग्रवाल बन गई हूँ। मेरे दो पुत्रियाँ है, उनके विवाह मे भाई साहब के पूरे परिवार ने आकर मुझे प्रसन्नता प्रदान की। दूसरी बिटि की सगाई भी भाई साहब के दामाद श्री बी. आर नाहर, जो बम्बई में रहते हैं- उनके माध्यम से ही हुई। मेरी दोन बेटियां अमेरिका मे रहती है। मैं जीवन में जो कुछ बन सकी हूँ-यह सब प्रभुकृपा और भाई साहब के आशीर्वाद का सुफल है।

ईश्वर से प्रार्थना है पूज्य बांठिया जी व पूरे परिवार को सुख-शान्ति प्रदान करे और उनका ना जगत मे और रोशन हो। सैकड़ों वर्षो तक उनकी प्रेम व प्यार की छत्रछाया मेरे परिवार व मुझपर बनी रहे।

***

पूज्य श्री हजारीमल जी बाँठिया, कानपुर
एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

श्रीमती तारा एस० बाँठिया

हमारा कल न जाने चुपके से आज हो गया है। भिन्न-भिन्न संस्कृति, धर्म, विचारशैली व भावुक मन लिए डरते, सहमते, हँसते-खिलखिलाते हुए जीवन के अपने आराध्य के दर्शन करने आये थे। बुजुर्गों की सीख और हमारे आराध्य ने हमे अपने स्वार्थ, द्वेष और डर से मुक्त होकर मानव जीवन की सेवा करने का वरदान दिया था। कल के भोले-भाले मन आज के परिपक्व, कर्तव्यनिष्ठ, सुहृदय और सेवा भावी बनकर मुस्कराते हुए खडे हैं।

हमारे बाँठिया परिवार के अग्रणी पूज्य श्री हजारीमलजी बाँठिया के विषय मे क्या संस्मरण लिखूँ! जिन्होने भारतीय संस्कृति एव जैन परम्परा की रक्षा मे सारा जीवन समर्पित कर दिया है। सादगीपूर्ण, विद्वतापूर्ण साहित्य, आत्मीयतापूर्ण व्यवहार एवं सेवा मे सदैव तत्पर।

आइये-हरपल, हरक्षण को स्मरण कर निहित कर लें, उनके जीवन के मूल्यो को स्मरण करने में। दु:ख-सुख, लडाई-झगडे, मनमुटाव, प्रेम-समर्पण, दान-प्रतिदान सभी कुछ तो था। उन सब को स्मरण करना है।

जीवन मे असख्य व्यक्ति सम्पर्क में आते हैं, काम करते हैं, तथा आगे बढ जाते हैं। जब हम निःस्वार्थ भाव से सेवा के क्षेत्र में कुछ काम करते हैं- तो निश्चित रूप से धन्यवाद के पात्र बनते हैं। श्री पू० हजारीमल बाँठिया ने विभिन्न क्षेत्रों मे सेवा का कार्य किया है। अत वे हकीकत में धन्यवाद के पात्र हैं। इतनी बडी उम्र तक समाज को सतत् सेवा का लाभ देना, आवश्यक लक्ष्यो को पूर्ण करना, मेरी दृष्टि मे अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आज मैं बाँठिया परिवार की बहू हूँ। उनके आत्मीयपूर्ण स्नेह एव सेवा आदर्श को सदैव स्मरण रखती हूँ। हमारा संकल्प है कि उनके सेवा आदर्श को हम आगे बढावेगे। आज भारत के जैन समाज में पू० श्री हजारीमलजी बाँठिया का सर्व परिचित नाम है। वे लेखनी से जुडे हैं। हमारे सुख-दु:ख मे सहभागी हैं अत प्रभावित करते रहे हैं।

जिनका व्यक्तित्व विशाल है, कल्याणकारी भावना है ऐसे हमारे पूज्यवर श्री बाँठिया साहेब का संस्मरण सदैव पटलपर रहता है। वे दीर्घायु हो, उनका स्नेह एव आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहे, इस मंगल भावना के साथ।

बिरलाग्राम, नागदा ४५६३३१ (म०प्र०)

SHRI HAZARI MULL BANTHIA

☐Dr. Guido Peano
(nephew of dr. Tessitori)

There are some good and generous men, *according to whom the sky seems* always blue, and the world more beautiful and pleasant: without them, life would look dull and sad. They don't make wonders, but all those, who thirst for *spiritual improvement*, find in themthe guide and the right rule to *reach their aim.*

One of these persons is Shri Hazari Mull Banthia, who is a very kind and pius man. He belongs to the Jain religion and he is a very devout man, and does his best to show the beneficial influence of the precepts of Lord Mahavira and of the *Tirthankaras in his life*, as he never pleases out his religious duties. *We, who are dr. Tessitori' relatives, appreciate* [illegible] does to keep up [illegible] d how great was [illegible] That, is why he is not only a great admirer, but the "Sadhaka" of this Italian scholar, who loved India and the Indian culture.

Shri Banthia even managed to find out dr. Tessitori' tomb, of which we, in Italy, were quite unaware. It was a small, forgotten tumulus, covered by weeds, nameless, besides, and he made a magnificent marble monument, with a great dome, like old chattris He wanted this sepulchral monument so great, to offer an everlasting memory of " this man, Indian and not Indian", who so much worked and loved old languages, *deeds of the* Rajasthan, and Indian people. Shri Banthia was fascinated by the figure of this scientist, and made a point of his life to collect in his house all the works of dr. Tessitori he could get hold of. He even came to Italy on two occasions, *for official commemorations of dr.* Tessitori, and did two detailed reports: "The contribution of dr. Tessitori to Rajasthan and its language" and "Tribute to dr. Tessitori for his unique contribution to Indian art, *culture and archaeology*"

Shri Banthia likes to be throughly acquainted with all researchers of groups of students both in India and in Europe, who make dr. Tessitoi the reason of their *studies, and is ready to offer them* his assistence, happy to honour, in this way, the memory, of his "Sadhaka"

On the occasion *of Shri Banthia's celebrations*, we *are happy to join the Indian friends* and to convey our best wishes to our Banthia for a long and healthy life, realizing how much he deserves from all dr. Tessitori's estimators, and from us.

With wishes and kindest regards,

Dr. GUIDO PEANO
V.S. GIOVANNI I
33010, REANA DELROIALE
(UDINE) ITALY

❁ ❁ ❁

१७वीं शताब्दी में मेवाड के लक्षाधिपति एव कलाओ के पोषक दो श्रेष्ठी ताराचंद एवं भामाशाह हुए थे। चित्तौडगढ स्थित भामाशाह की हवेली उनका कलाप्रेमी होना प्रमाणित करती है। उसी कडी मे वयोवृद्ध संस्कृति-प्रेमी श्री हजारीमल बाँठिया जी तन, मन, धन से भारतीय सस्कृति की सेवा मे तत्पर है। राजस्थान मे जन्मे श्री बॉठिया जी ने पचाल क्षेत्र को विशेष रूप से कर्मभूमि के रूप मे अपनाया है।

मेरा उनका प्रथम परिचय जून, १६८४ मे हुआ था। कानपुर स्थित राजस्थान भवन मे एक सगोष्ठी का आयोजन हुआ था और मैं भी उसमे शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित हुआ था। श्रद्धेय श्री के० डी० बाजपेयी जी ने मेरा परिचय कराया था। शान्त स्वभाव के मनीषी श्री बॉठियाजी प्रथम दर्शन मे मुझे भामाशाह ही लगे। सगोष्ठी की व्यवस्थाओ मे उनकी व्यक्तिगत रूचि सराहनीय लगी। उसी सगोष्ठी मे पचाल शोध सस्थान की स्थापना की गयी और श्री हजारीमल बॉठियाजी सस्थान के प्रथम उपाध्यक्ष बनाये गये। उसके उपरान्त लगातार ही उनसे सम्पर्क बना रहता है। उनसे हुई घनिष्ठता से मुझे परिचय मिला कि श्री बॉठियाजी भारतीय सस्कृति के प्रति गहरी रूचि तो रखते ही है, उन्होने उसका गहन अध्ययन भी किया है। वे एक तपस्वी की भॉति सस्कृति के अध्ययन अवगाहन, सरक्षण मे समर्पण भाव से लगे हुए है।

आदि कवि वाल्मीकि की तपस्या-स्थली पचाल मे श्री बॉठिया जी सस्कृति-साधना में रत हैं और वे इस उम्र मे भी इतने सक्रिय है कि भारत के कई स्थानो को अपना कर्म क्षेत्र बना रखा है। यह संस्कृति-प्रेमियो के लिए गौरव की बात है। मुझे जब पता लगा कि श्री बाँठिया जी का अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है तो बहुत प्रसन्नता हुई।

मै उनके दीर्घायु की कामना करता हूँ।

***
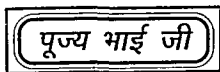
पूज्य भाई जी

☐श्री विजय चन्द नाहटा, बीकानेर

पूज्य भाईजी श्री हजारीमलजी बाँठिया मेरी बुआजी (श्रीमती मगनबाई बाँठिया) के लडके होने के नाते मेरे बडे भाई हैं। हमारे नाहटा परिवार मे भाई जी के नाते सबसे बडे श्री भवरलाल जी नाहटा हैं, दूसरे नम्बर पर हैं श्री हजारी भाई जी। मैं बचपन से देखता आ रहा हूँ,जब भी समय मिलता पूज्य पिताजी श्री अगरचदजी नाहटा के पास सदा बैठा पाया। उनसे साहित्य-सम्बन्धी बाते करते या उनके लेखों की प्रेस कापी तैयार करते। पूज्य पिताजी के हस्ताक्षर सुवाच्य नहीं थे। जब भाई जी व्यापार निमित्त हाथरस आ गये तो मैं प्रेस कापी तैयार करने लगा।

पूज्य पिताजी से मैं स्वय उनके गुण ग्रहण न कर सका,पर भाईजी ने अपने मामाजी से बहुत कुछ सीखा एवं पाया। यही कारण है आज भाईजी ने अपना स्थान हर क्षेत्र मे ऊँचा बना लिया है। पिताजी के स्वर्गवास (१२ जनवरी १६८३) के बाद भी मुझे ग्रथालय के काम को सुव्यवस्थित रखने मे बराबर उत्साहित करते रहे हैं। पूज्य पिताजी

श्री हजारीमल बाँठिया

श्रीमती रेखा वीरेन्द्र दूगड

श्री हजारीमल बाँठिया–ये वो नाम है जो किसी परिचय का मोहताज नहीं, जिस तरह फूल की खुशबू दूर–दूर तक फूल के अस्तित्व का अहसास करवा देती है, उसी तरह श्री बाँठिया जी के सत्कर्मों की दीप्ति उनके मुख-मंडल की आभा उनके व्यक्तित्व का परिचय आप ही देते हैं।

एक नितांत अपरिचित व्यक्ति को भी अगर श्री बाँठियाजी का कुछ पलो का सानिध्य मिले तो उनके व्यक्तित्व की विराटता का अनमोल अनुभव हो जाता है, कुछ इसी तरह का है मेरा और श्री बाँठियाजी का परिचय, लेकिन उनकी सहृदयता, कर्मठता एवं सृजनशीलता ने अमिट छाप छोड दी है मेरे हृदय पर। अभिभूत हूँ मैं श्री बाँठियाजी की सरलता एव स्नेहसिक्त व्यवहार से चकित हूँ मैं श्री बाँठियाजी की साहित्यिक सुरुचि एव औद्योगिक उन्नति पर।

श्री बाँठियाजी के इस सम्मान समारोह के गौरवमयी सुअवसर पर मेरी शत–शत शुभकामनाए एवं शत शत प्रणाम व अभिनन्दन है।

'यूँ ही महकता रहे ये गुलजार हमारा'

आपके सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के प्रति इन्हीं शुभकामनाओ के साथ।

श्री बाँठिया जी के कृतित्व, व्यक्तित्व से अभिभूत।

बी/७७, बख्तावररामनगर, इदौर

❀ ❀ ❀

संस्कृति को समर्पित एक व्यक्तित्व

डा० सुरेन्द्र सिंह चौहान

भारत के राजनैतिक व सास्कृतिक इतिहास में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। जहा राजस्थानी वीरो ने अपने पौरुष व पराक्रम से इतिहास मे विशिष्ट स्थान बनाया, वहीं यहा के भामाशाह–धनाढयो ने भारतीय संस्कृति की रक्षा मे अपूर्व योगदान दिया। यहां के असंख्य कलाकारों ने भारतीय कला की समृद्धि मे अपना योगदान प्रस्तुत कर कला को एक आयाम दिया।

सारिता, अदम्य पुरूषार्थ एवं उदात्त दृष्टिकोण ये ऐसे गुण हैं जो बॉठियाजी के जीवन में विद्यमान है। पूर्व संस्कारों से प्रेरित होकर तथा अतुल पराक्रम के बल पर बॉठियाजी ने जीवन की ऊचाइयो का स्पर्श किया है।

किशोरावस्था मे पिता की छत्रछाया से वचित होने पर कभी निराशा व अवसाद को अपने निकट नहीं आने दिया अपितु अदम्य साहस के बल पर सघर्षो का सामना करके एक दिन आप कुशल व सफल व्यवसायी बने। अर्थोपार्जन के साथ–साथ आपकी सरस्वती-साधना भी निरन्तर चलती रही।

जीवन मे ५०० से भी अधिक विषयो पर आपकी लेखनी ने आपके मौलिक चितन को व्यक्त किया है। साहित्य सस्कृति के प्रति गहरा अनुराग जीवन मे अनेक स्मरणीय साहित्यिक कार्य करने व अनेक जैन ग्रंथों के प्रकाशन कराने से प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। "पचाल पुरातत्व सग्रहालय" की स्थापना तथा इससे सम्बन्धित काम्पिल्य महोत्सव पचाल पुरातत्व सेमिनार तथा पचाल शोध सस्थान के सफल अधिवेशन आपके पुरातत्व प्रेम के द्योतक है।

सफल गृहस्थ जीवन यापन करते हुये भी समाज व देश का दायित्व-बोध आपको सदैव रहा है। इसलिए समाज की आखो मे आप काजल बनकर समाये रहे हैं। मानवीय कर्तव्यो के प्रति सजगता व निस्वार्थ सेवा–सहयोग के परिणाम-स्वरूप आप सामाजिक,धार्मिक तथा आध्यात्मिक सस्थाओ के संरक्षक, सचालक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, ट्रस्टी, मंत्री, तथा माननीय सदस्य रहे है, और हैं। कर्मठ व्यक्तित्व व निष्काम सेवा-भाव के लिए राष्ट्रकवि श्री सोहनलाल द्विवेदी ने सन् १६८६ मे आपको "नगर श्रेष्ठ" की उपाधि से विभूषित किया था।

६ दशको की विशिष्ट कार्य सेवा व साहित्य सस्कृति के प्रति गहन प्रेम व समर्पण भाव के उपलक्ष्य मे जीवन के ७१वे बसत प्रवेश पर अभिनन्दन ग्रथ द्वारा आपको सम्मानित किया जा रहा है, यह हमारे लिये गौरव का विषय है। इस शुभावसर पर आपके कर्मठ व्यक्तित्व व कृतित्व पर हार्दिक साधुवाद देती हुई आपके भावी श्रेयस जीवन हेतु शासनेश प्रभु–महावीर के चरणो मे मगल कामना करती हूँ कि इसी प्रकार आप जीवन मे उन्नति की ओर अग्रसर होकर यश, बल व समृद्धि के साथ–साथ त्याग भावना को उपलब्ध हो।

प्रतिभा-सम्पन्न प्रभावी व्यक्तित्व

☐युवा मनीषी सुभाष मुनि,
बराडा

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपाद प्रणमन
मुखेरात्या वाणी विजयिभुजयो वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छावृति. श्रुतमधि गतैक व्रत फलं,
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृति महता मण्डनमिदम्।।
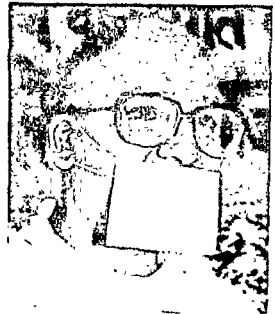
का अभिनन्दन-ग्रंथ संयोजन व प्रकाशन का गुरुतर कार्य सब भाईजी के अथाह परिश्रम व सूझ-बूझ का प्रतिफल है। प्रथम भाग का लोकार्पण बीकानेर मे सन् १९७६ में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० दौलतसिंह जी कोठारी के कर-कमलो से कराया और दूसरे भाग का सन् १९७८ मे प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के कर कमलो से।

भाईजी ने इतना काम किया है। अब उनका "अभिनन्दन ग्रंथ" प्रकाशित हो रहा है और उनका सार्वजनिक समारोह २५ सितम्बर १९९५ को मनाया जा रहा है, उसके लिए मैं अपनी शुभकामना एवं इनके चरणों को स्पर्श कर अपना, अहोभाग्य मानते हुए, अर्पित करता हूँ। मेरे ऊपर सदा वात्सल्य भाव बना रहे।

□□□

पुरुषार्थ की साक्षात् प्रतिमूर्त्ति सुश्रावक बाँठिया जी

□ साध्वी डा० अर्चना

जिन-शासन के अभ्युत्थान मे जहां संत-साध्वियों की महती भूमिका रही है वहां श्रावक-श्राविकाओं का भी कम योगदान नहीं रहा है। इसलिए भगवान महावीर ने चतुर्विध संघ की स्थापना मे जितना महत्व साधु व साध्वी को दिया उतना ही श्रावक और श्राविका को भी दिया है। श्रद्धावान, विवेकी और सम्यक् क्रियावान व्यक्ति ही श्रावक कहलाता है। धर्मरत्न प्रकरण में लिखा है–

> कयवयकम्मो तह सीलवं, गुणवं च उज्जुववहारी।
> गुरुसुस्सूसो पवयण–कुसलो, खलु सावगो भावे।।३३।।

अर्थात् जो शील, स्वाध्याय, तप व विनय से युक्त है तथा सरल व्यवहारी, सदगुरु उपासक तथा प्रवचन-कुशल है,वही भाव श्रावक होता है।

उक्त गाथा के परिप्रेक्ष्य मे जब हम श्री हजारीमल जी बाँठिया के जीवन को देखते हैं तो हम पाते है कि बाँठियाजी सच्चे अर्थों में सुश्रावक कहलाने के अधिकारी हैं। क्योंकि इन्होंने तत्वार्थ चिंतन द्वारा स्व की श्रद्धा को सुदृढ बनाया है। निरन्तर सत्पात्रों में धन रूपी बीज का वपन किया है। सद्‌गुरुओं, स्वधर्मी बन्धुओं व मानव मात्र की सेवा में अहर्निश संलग्न रहकर पाप-धूलि को दूर फेंकने का प्रयत्न कर रहे हैं।

देव, गुरु, धर्म के प्रति अगाध विश्वास, सत्य के प्रति गहरी निष्ठा, साहित्य,संस्कृति व जिनवाणी के प्रति गंभीर अनुराग, मानव मात्र के प्रति वात्सल्य भावना, समाज व देश के प्रति समर्पण भाव, हृदय की विशालता व मिलन

सरस्वती व लक्ष्मी पुत्र

□श्री सुधीर मुनि, बराडा

तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अपनी देशना के अन्तर्गत पुरुषो के चार प्रकारो का वर्णन करते हुये कहा, 'कुछ व्यक्ति जाति सम्पन्न होते है परन्तु कुल सम्पन्न नहीं होते' कुछ व्यक्ति कुलवान होते हैं परन्तु जातिवान नहीं होते, कुछ व्यक्ति जाति, कुल, रूप, बल सम्पन्न होते हैं परन्तु श्रुत सम्पन्न नहीं होते। कुछ व्यक्ति जाति, रूप, कुल, बल, श्रुत सम्पन्न होते हैं परन्तु शील व चारित्र सम्पन्न नहीं होते। इस प्रकार जाति, कुल, बल, रूप, श्रुत, शील, और चारित्र इन सात पदो मे परस्परद्विक सयोग से २१ चतुर्भगिया प्रभु ने अपनी देशना के अन्तर्गत फरमाई हैं।

प्रसिद्ध समाजसेवी साहित्य रसिक व सस्कृति प्रिय श्री हजारीमल जी बाँठिया के जीवन मे उक्त सभी संयोग अर्थात् जाति, कुल, रूप, बल, श्रुत, शील और चारित्र का अनोखा सगम मिलता है। जातिवान व कुलीन होने के पश्चात् असीम बल व परिश्रम के कारण आप जीवन मे सम्पन्न बने। पूर्व पुन्य से रूप भी मिला और अहर्निश श्रुत साधना करके सदाचरण व शील द्वारा जीवन को उच्चता की ओर ले जाकर आगार चारित्र की साधना आप नहीं भूले।

प्राचीन इतिहास सस्कृति और अमूल्य ग्रथो के संरक्षण व संवर्धन के प्रति आप सदैव सजग रहे हैं और इस दिशा मे आपकी सेवाये प्रशंसनीय हैं। सबसे बडी विशेषता आपके जीवन की ये रही है कि आप पर मां सरस्वती, मां दुर्गा, व मां लक्ष्मी की अमिय दृष्टि व अपार कृपा है। बुद्धि, बल और अर्थ से सम्पन्न होने पर आपने जीवन मे अपने कृतित्व व उल्लेखनीय सेवाओ का कभी दभ या अहकार नहीं किया अपितु विनम्र व सलता से अपने लक्ष्य की ओर बढते जा रहे हैं। २५ सितम्बर १६६५ सोमवार को आपकी ७१वीं जन्म जयन्ती के शुभ प्रसंग पर सम्मान समारोह आयोजित होने जा रहा है। इस अवसर पर हमारी अनन्त शुभ कामनाएं प्रेषित हैं। आप स्वस्थ व चिरायु होकर शासन की तथा संघ व समाज की इसी प्रकार सेवा करते रहे– यही मगल भावना है।

✪✪✪

अर्थात् हाथो से सुपात्र दान व सेवा, मस्तक पर गुरूजनो के चरणों का अभिवादन, मुख मे सत्य वचन, विजयी भुजाओ मे अतुल पराक्रम हृदय मे स्पष्टता व सरलता और कानो से शास्त्र श्रवण, जो प्रकृति से महान होते है उनके यह सब गुण बिना ऐश्वर्य के आभूषण हैं।

योग शास्त्र मे कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द ने श्रावक अर्थात् मार्गानुसारी के ३५ गुणो की चर्चा के अन्तर्गत २८वे गुण का निर्देश देते हुये कहा कि श्रावक लोकप्रिय हो अर्थात् अपने सदाचार एवं सेवा कार्य के द्वारा जनमारा का प्रेम सम्पादित करे। जिस प्रकार बीज-वपन से पूर्व क्षेत्र-शुद्धि आवश्यक है उसी प्रकार गृहस्थ जीवन को अंगीकार करने से पूर्व जीवन शुद्ध कर लेना आवश्यक है। मानवीय गुण गृहस्थ जीवन की नीव या आधार भूमि है। इसी भूमि पर गृहस्थ जीवन का भव्य प्रासाद निर्मित होता है वह स्थाई होता है उसे गिरने का कोई भय नहीं रहता। ये गुण ऐसे हैं जो केवल लौकिक जीवन से सम्बन्ध रखते है। उन्हे गृहस्थ जीवन का आधार बतलाने का अर्थ यह है कि वास्तव मे जीवन एक अखण्ड वस्तु है। अत: लोक-व्यवहार में और धर्म के क्षेत्र मे उसका विकास एक साथ होता है। जिसका व्यावहारिक जीवन पतित व निन्दनीय होगा उसका धार्मिक जीवन उच्च श्रेणी का नहीं हो सकता। अत: उच्च व श्रेष्ठ जीवन जीने के लिये व्यावहारिक जीवन को उच्च व श्रेष्ठ बनाना परमावश्यक है। जब व्यवहार में पवित्रता आती है तभी जीवन धर्म-साधना के योग्य बन जाता है।

सुश्रावक आगम व साहित्य प्रेमी श्री हजारी मल जी बॉठिया का व्यावहारिक जीवन उच्च कोटि का है। आप प्रतिभा-सम्पन्न व प्रभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। वंश-परम्परा के निष्काम नि:स्वार्थ सेवा-भाव और त्यागमूर्ति जीवन-चर्या का प्रभाव संस्कार रूप से प्रारम्भ से ही जीवन की नींव रहा है। पिताश्री की उदारता व विशालता मातुश्री की सौम्यता, धार्मिक भावना, नानाश्री की दान-प्रियता व सदाचरण, मातुलश्री का साहित्यानुराग और पुरातत्व-प्रेम तथा अदम्य पुरुषार्थ आदि विरासत के रूप में आपको मिले, जिससे आपका प्रभावी व्यक्तित्व निर्मित हुआ।

गुरुजनो का आशीष सत्य के प्रति समर्पण व उसकी गहरी निष्ठा तथा शास्त्रो के स्वाध्याय ने आपके चितन को मुखरित किया। परिणाम–स्वरूप जीवन में आपने लगभग ५०० से अधिक विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रवुद्ध चितन को व्यक्तकर जनमानस को लाभान्वित किया।

अथाह परिश्रम के बल पर सफल व्यापारी बन कर उपार्जित धनराशि का सत्कार्यों में उपयोग कर पुन्य का उपार्जन किया। दान, शील, तप और भावना की आराधना आपके जीवन मे सतत् प्रवृत्तमान है। धार्मिक आध्यात्मिक व सामाजिक क्षेत्र मे आपकी उल्लेखनीय सेवायें अनुमोदन के योग्य हैं। सम्पन्न व यशस्वी जीवन मे सहजता व सरलता के दर्शन होते हैं।

७१वीं जन्म-जयन्ती के प्रसग पर आपको अभिनन्दन-ग्रंथ द्वारा सम्मानित किया जा रहा है, यह समस्त जैन-समाज के लिये गौरव का विषय है। आप साहित्य, धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में निरंतर विकास व अभ्युदय को उपलब्ध हो, जनमानस का प्रेम इसी प्रकार आपको मिलता रहे, यही मगल मनीषा है।

***

श्री हजारीमल जी बाँठिया-एक कर्मठ व्यक्तित्व

डा० मधूलिका बाजपेयी

श्री बाँठियाजी का उल्लेख मैं अपने श्वसुर स्व० प्रोफेसर कृष्ण दत्त बाजपेयी द्वारा अनेक बार सुन चुकी थी। पिताजी कानपुर पंचाल शोध संस्थान के वार्षिक अधिवेशन से भाग लेकर आते, तो अधिवेशन की सफलता के लिये श्री बाँठियाजी की मेहनत एव समर्पण भाव से किये गये कार्यो का उल्लेख अवश्य करते।

श्री बाँठियाजी से मिलने का सुअवसर मुझे मार्च १९९३ मे प्राप्त हुआ, जब पंचाल शोध संस्थान ने अपना सातवां वार्षिक अधिवेशन मेरे स्व० श्वसुर श्री बाजपेयी जी की स्मृति को समर्पित किया था। इस अवसर पर हम सभी परिवारीजनो को आमंत्रित किया गया था। श्री बाँठियाजी के भव्य एवं सरल व्यक्तित्व से हम सभी अत्यन्त प्रभावित हुये। आयु मे इतने बड़े होते हुये भी वे स्वय हम सभी के पास आ–आकर कुशल–क्षेम पूछ रहे थे एवं सभी की सुख–सुविधा का विशेष ध्यान रख रहे थे। मेरी आदरणीय सास श्रीमती बाजपेयी जी को अधिवेशन का विशेष अतिथि बनाया गया था। वह अपनी बातों एव व्यवहार से माताजी को अत्यन्त सम्मान दे रहे थे।

पचाल शोध संस्थान की स्थापना श्री बाँठिया जी के विशेष प्रयत्नों से ही हो सकी। इस संस्थान के अध्यक्ष मेरे श्वसुरजी थे। आज इस सस्थान की प्रगति श्री बाँठियाजी के कठोर परिश्रम का ही फल है। इस संस्था का उद्देश्य पंचाल क्षेत्र के विलुप्त पुरातन सांस्कृतिक गौरव को सम्मुख लाना है।

अधिवेशन के दौरान श्री बाँठियाजी जिस प्रकार शान्त रह कर विभिन्न कार्यक्रमो के समय बार–बार इधर–उधर जाकर व्यवस्था देख रहे थे एव समारोह के कार्यकर्ताओ को निर्देशित कर रहे थे, वह सब देख कर मैं बहुत प्रभावित हुई। दोपहर एव रात्रि–कालीन भोजन के समय भी वे बराबर सभी की सुविधाओ का ध्यान रख रहे थे। मुझे याद है कि अधिवेशन की समाप्ति पर रात्रि मे वे स्वय सभी कार्यकर्ताओ के पास जाकर व्यक्तिगत रूप से आवश्यक निर्देश देते रहे, फिर आदरणीय माताजी के पास आकर उनसे विनम्रता पूर्वक हाथ जोडकर काफी समय तक बात करते रहे। पिताजी का और उनका साथ बहुत पुराना था और उनके निधन से बाँठियाजी बहुत दुखी थे।

उनकी आत्मीयता एवं स्नेह से हम सभी अभिभूत थे। एक सफल उद्योगपति के साथ–साथ उनका साहित्यानुरागी, संस्कृति प्रेमी एव समाज सेवी रूप एक विलक्षण व्यक्तित्व का निर्माण करता है। उनके व्यक्तित्व मे निश्चल स्नेह, अहकार–हीनता एवं छोटे–बडे सबके प्रति स्नेह और आदर की भावना उन्हें महान बनाती है।

मेरे पति श्री अशोक बाजपेयी पर भी उनका पुत्रवत् स्नेह बना हुआ है। उनके पत्र अभी भी समय–समय पर आते रहते हैं जिनसे पंचाल शोध संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी मिलती रहती है।

हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं कि ऐसी महान विभूति का स्नेह एवं आशीष हम लोगो को प्राप्त है। उनकी ७१वीं जन्म जयन्ती २५ सितम्बर १९९५ को उनके सम्मान समारोह का आयोजन किया जाना, अत्यन्त हर्ष का विषय है। उनके निर्देशन में पचाल शोध संस्थान उन्नति करता रहे एवं उनका वरद हस्त हम सभी पर बना रहे।

बी०–२१, विद्युत्नगर, जबलपुर

श्री हजारीमल जी बाँठिया-एक बहु-आयामी व्यक्तित्व

□ इंजीनियर अशोक बाजपेयी,

श्री हजारीमल जी बाँठिया से मेरा परिचय वर्ष १९८५ या १९८६ के लगभग मेरे स्वर्गीय पिताजी प्रोफेसर कृष्णदत्त जी बाजपेयी द्वारा कराया गया। पिताजी की उनसे घनिष्ठ मित्रता थी तथा पिताजी जब भी जबलपुर आते थे या हम लोग सागर जाकर मिलते थे. वे आत्म विभोर होकरश्री बाँठिया जी की प्रशंसा करते थे। मैंने एक या दो बार, पिताजी के साथ कानपुर जाकर श्री बाँठिया जी से मिलने का सुयोग प्राप्त किया तथा उनके घर का सुस्वादु भोजन करने का अवसर प्राप्त किया। श्री बाँठिया जी से मेरा विशिष्ट परिचय मार्च १९९३ में हुआ जब उन्होंने पंचाल शोध संस्थान का सप्तम वार्षिक अधिवेशन मेरे स्व० पिताजी प्रोफेसर कृष्ण दत्त बाजपेयी-की स्मृति मे आयोजित किया। इस अधिवेशन को उन्होंने अपने स्व० मित्र की स्मृति में कठोर परिश्रम व लगन के साथ सफलता-पूर्वक आयोजित किया। मैं व मेरे परिवार के सदस्य आदरणीय माताजी, मेरे भाई, बहन सभी उनके विशिष्ट गुणों से प्रभावित हुये। ऐसी आत्मीयता व स्नेह के उदाहरण आज के समाज में विरले ही देखने को मिलता है।

मेरा श्री बाँठिया जी से पत्र-व्यवहार विगत सितम्बर १९९२ से निर्बाध रूप से चल रहा है। उनके पत्रों मे माधुर्यता झलकती है, घर के वरिष्ठ सदस्य के समान उन्होंने समय– समय पर मुझे मूल्यवान सुझाव दिये। उनके ही महत्वपूर्ण सुझाव द्वारा हम लोग सागर विश्वविद्यालय के संग्रहालय के प्रांगण में स्व० प्रोफेसर कृष्ण दत्त बाजपेयी की आवक्ष प्रतिमा की स्थापना १० जून १९९४ को कर सके।

पंचाल शोध संस्थान के अष्टम वार्षिक अधिवेशन में हम परिवारीजन ९ व १० मार्च १९९४ को कानपुर पहुँचे थे तथा श्री बाँठिया जी के सानिध्य का सुअवसर प्राप्त कर सके। उनका व्यवहार अत्यन्त मृदु है। उनमे आत्मीयता व स्नेह कूट– कूट कर भरा है, जिसका उदाहरण है कि भोजन करते समय भी वे पूरा–पूरा ध्यान रखते हैं तथा पूछते हैं ताकि किसी प्रकार की कोई कमी महसूस न हो।

श्री बाँठिया जी ने पंचाल शोध संस्थान को वर्तमान स्वरूप तक लाने में कठोर परिश्रम व उत्साह से कार्य किया है। उसी का फल है कि आज इस संस्थान का नाम देश व विदेशों में ख्याति प्राप्त कर सका है। इस संस्थान द्वारा कई शोधार्थी लाभान्वित हो चुके हैं।

श्री बाँठिया जी के विशिष्ट गुणो व उनके किये गये कार्यों से ही प्रभावित होकर उन्हें वर्ष १९८७ तथा १९९४ मे दो बार टैस्सीटोरी समारोह में भाग लेने हेतु इटली आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा लिखित अनेकों लेख उनकी साहित्यिक रूचि व विद्वता का द्योतक हैं। उनकी समाज सेवा, साहित्यिक रसिकता, व संस्कृति मे रूचि उनकी महानता को दर्शाता है।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हजारीमल जी बाँठिया जैसे विलक्षण प्रतिभावान व्यक्ति का सम्मान समारोह २५ सितम्बर १९९५ को आयोजित किया गया है तथा उनकी ७१वीं जन्म जयन्ती पर अभिनन्दन-ग्रंथ द्वारा उन्हें सम्मानित किया जायेगा। उनके स्वस्थ व दीर्घायु होने की कामना करता हूँ। भविष्य मे अनेक नये विशिष्ट व सामाजिक व साहित्यिक कार्य उनके द्वारा सम्पूर्ण हों, ऐसी कामना है।

बी–२१, विद्युतनगर, जबलपुर

* * *

की व्यवस्था करवाई। कम्पिल के इतिहास आदि को प्रकाश मे लाकर लोगों की जानकारी बढाई जोकि तीर्थोन्नति मे अन्तत' काफी सहायक सिद्ध हुई। कम्पिल मे अनेक तरह के कार्यक्रम (धार्मिक एवं समाज सेवा–आई कैम्प आदि) किये जो कि सर्वविदित हैं। कम्पिल में अस्पताल की भी स्थापना करवाई जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री एम० चैनारेड्डी के कर–कमलो से करवाया। पालीताना तीर्थ मे जैन–भवन धर्मशाला मे ट्रस्टी हाने के नाते अपनी ओर से काफी सहयोग व सेवा प्रदान करता रहा है। खरतरगच्छ महासंघ का उत्तरप्रदेशीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष है। इस प्रकार और भी अनेक क्षेत्रीय एव देशीय संस्थाओ से जुडकर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। टैसीटोरी एक ऐसा व्यक्तित्व हुआ जो इटेलियन तो सिर्फ जन्म से बाकी कार्यकलापो से पूरा भारतीय था जिसने राजस्थान के चप्पे–चप्पे का भ्रमण कर अनेक ऐतिहासिक सम्पदाओ को खोज कर लोगों के सामने रखा। ऐसे विदेशी लोग गिने–चुने ही हुए हैं जिन्होंने एक भारतीय–सी जिम्मेदारी निभायी। ऐसे व्यक्ति को लोग तो भूल ही गये पर भाई हजारीमल ने अपने प्रयास से इस व्यक्ति की कब्र को बीकानेर मे खोज निकाला व उसकी मरम्मत आदि करवा कर स्थायीत्वता दी। कानपुर में सार्वजनिक उद्यान मे टेसीटोरी की प्रतिमा सरकार के साथ सम्पर्क कर एव अनुमति से स्थापित करवाई। गत ५ जुलाई को वीरायतन के मत्री व अपने भानजे श्री तनसुख राज डागा को प्रेरित कर बीकानेर राजकीय संग्राहलय परिसर मे टेसीटोरी की प्रतिमा स्थापित की।

मारत के अलावा विदेशो मे भी भाई हजारीमल का नाम विख्यात है। इटली सरकार ने स्व० टेसीटोरी के कार्यों के बारे में सन् १९८७ मे सेमीनार का आयोजन किया जिसमें हजारीलाल को विशेष आमंत्रित किया। हजारी एवं उसकी पत्नी इटली गये व उनकी जो आवभगत वहां हुई वह सदा याद रहेगी। इसके कुछ वर्ष पश्चात् सन् १९९४ में और भी प्रोग्राम हुआ जिसमे निमन्त्रण पा हजारीमल ने पत्नी सहित इटली, लंदन आदि अनेक यूरोपीय देशों का भ्रमण किया।

भाई हजारीमल का पारिवारिक जीवन भी काफी सुखद एवं अनुकरणीय है। हजारी का विवाह वि० सं० १९९७ मे कलकत्ता मे सेठ ज्ञानमल जी मिन्नी की पौत्री व जानकीदास जी की पुत्री से हुआ। इसके चार पुत्र रत्न एवं दो पुत्रियाँ हुई। पुत्रियाँ दोनो ही अच्छे घरानो मे ब्याही गई हैं। पुत्र सब व्यापार संभाल रहे हैं। सबको अच्छी शिक्षा, धार्मिक संस्कार प्रदान किये हैं।

भाई हजारीमल के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं वाक्–पटुता, उदारतापूर्ण व्यवहार, मधुर भाषण, सहिष्णुता, कार्य के प्रति निष्ठा, आत्मीयता, भक्ति प्रवणता, आदि गुणों का ही प्रभाव है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी कोटि का क्यो न हो आकृष्ट हुये बिना नहीं रह सकता। एक बार मिल लेने पर बार–बार मिलने की इच्छा रखना और बिछुड़ने पर अतृप्ति की अनुभूति होना स्वाभाविक है। सादा जीवन उच्च विचार इसके जीवन की विशिष्टता है। हमेशा धोती कुरते में ही सुशोभित रहता है।

सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, धार्मिक हर समारोह में भाग लेना व इनका आयोजन करना हजारी का हमेशा से ही जीवन का अभिन्न अंग रहा है। ऐसे चहुँमुखी प्रतिभाओं के धनी भाई हजारी स्वतः ही अभिनन्दनीय हो जाता है। अभिनन्दन मानव का नहीं उसके अनुकरणीय गुणों का होता है।

४, जगमोहन मल्लिक लेन
कलकत्ता–७

***

भाई हजारीमल

☐ भँवरलाल नाहटा
साहित्य वाचस्पति

विरल व्यक्तित्व के धनी भाई हजारीमल का जन्म वि० सं० १६८१ आश्विन कृष्ण १० फलौदी पार्श्वनाथ के मेले के दिन श्रीमान् फूलचन्द जी बाँठिया के यहाँ भुवाजी मगनबाई की कुक्षी से मेरे जन्म के १३ वर्ष पश्चात् मेरे दादाजी के दौहित्र के रूप मे हुआ। इस १३ वर्ष के अन्तराल मे मेरे दादाजी के परिवार मे अधिकांश बहिनें ही थीं। इसका पुत्र रूप में जन्म लेना सबके लिए सहस्रगुना आनन्दवर्धक था। सबका अतिप्रिय व लाडला होना स्वाभाविक था। इसके दो बहिनें जमना एव मीना थी। अब दोनो का स्वर्गवास हो गया है।

भाई हजारीमल बचपन से ही विलक्षण बुद्धिवाला एवं पढने मे तेज था। विद्यार्थी जीवन में पढने के साथ-साथ स्टाम्प संग्रह, खेलकूद, कविता लेखादि का काफी शौक था एवं बराबर लिखना एक व्यसन-सा बन गया। इसके लेख आदि अजमेर से प्रकाशित जैन दर्शन के सम्पादकीय मे छपे। स्कूल की पढाई के पश्चात् इसे डाक्टर बनने की इच्छा होने से कालेज में डाक्टरी की पढाई अपने सहपाठी श्री रतनचन्द जी चौपडा (पश्चात् जीवन में जो इसके बहनोई बने) के साथ शुरू की। बचपन से ही सुसंस्कृत एव धार्मिक प्रवृति का होने से मेढक आदि की चीरफाड रास नहीं आई व डाक्टरी लाइन को तिलांजलि दे दी। हमारा साहित्य इतिहास विषय होने के कारण व हमारे साथ रहने से इसकी रुचि भी शोध-इतिहास आदि में हो गई व इसमें कार्य करने लगा। कई लेख आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे।

तीक्ष्ण बुद्धि वाले के लिए कोई भी क्षेत्र हो कोई दिक्कत वाली बात नहीं होती। इसने अपना व्यापारिक जीवन हाथरस में हमने भंवरलाल हरखचन्द नाम से संस्थान खोली उससे आरम्भ किया। सर्वप्रथम मेरे साथ हाथरस गया एव कुछ ही महिनों में अकेले कार्य सम्भालने में सक्षमता प्राप्त कर ली। जिसे कार्य की लगन हो वह जिससे भी कुछ ज्ञान मिले, लेने मे नहीं हिचकिचाता। वहां के नेक दलाल श्री लछमनदास बारहसैनी जो कि गल्ला सरसों आदि के व्यापार मे माहिर थे, का पूरा सहयोग प्राप्त किया व उनसे व्यापार की बारीकियों को सीखा। थोडे ही समय में यहां इनका अच्छा नाम व साख हो गई। बचपन से इतिहास-शोध आदि प्रिय विषय होने से मेरे साथ अनेक बार आगरा, मथुरा आदि गया व मथुरा का म्युजियम, आगरा का ज्ञान-भंडार आदि देखे। हाथरस के आसपास के क्षेत्र से पुरातत्वावशेष का भी संग्रह किया। व्यापार मे उन्नति करते हुए वहां दाल-मील आदि की भी स्थापना की। हाथरस के साथ-साथ बाद में कानपुर में भी व्यापार फैलाया व वहा भी अपना अच्छा नाम उपार्जन किया। व्यापार से काफी स्थायी सम्पत्ति भी बनाई।

शुरू से ही धर्म में रूचि होने से नित्य मन्दिर जाना, सेवा-पूजा आदि करना इसके जीवन का एक अभिन्न अग बन गया। संत मुनियो के सत्संग, तीर्थाटन से भी वंचित नहीं रहा। परम पूज्य गुरुदेव दादा साहब में पूर्ण श्रद्धा होने से हाथरस में दादाबाडी की स्थापना की व दादाबाडी नगर बसाया। पूज्य गुरुदेव श्री सहजानन्द जी महाराज के प्रति भी अटूट भक्ति थी। अनेक बार हम्पी (करनाटक) यात्रार्थ गया व गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया। सुशील मुनि जी एवं वीरायतन (राजगृह) के अमरमुनिजी से भी काफी घनिष्ठ सम्पर्क रहा। गुरुदेव सहजानन्द जी ने दादा साहब श्री जिनदत्त सूरिजी की प्रतिमा हजारीमल की इच्छा जानकर उसे भेट कर दी जिसे लाकर उसने हाथरस दादाबाडी मे स्थापित करवा दिया ताकि लोग दर्शन पूजन कर लाभान्वित हों। अन्य कार्यों के साथ भाई हजारी ने तीर्थोद्धार का भी चिरस्मरणीय कार्य किया। उत्तर प्रदेश के कम्पिल तीर्थ की अनेक सेवाए कर लोप होते तीर्थ को लोगों की जानकारी में लाया। मन्दिर जीर्णोद्धार, धर्मशाला आदि का कार्य सम्पन्न करवा कर आने वाले यात्रियों के लिए अनेक सुविधाएँ

पितृ-स्नेह प्रदाता -
मामासा श्री हजारीमलजी बाँठिया
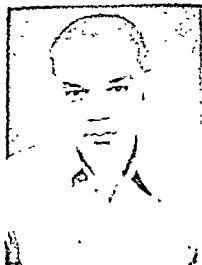
मुझे तेरह वर्ष की आयु से ही आपने अपनी छत्र–छाया में अपने पास रखकर वह सब कुछ दिया है जो एक पिता देता है। आज भी पितृ–स्नेह से कम कुछ नहीं देते। मैंने आपको सदैव नजदीक से देखा व अनुभव किया है कि आप कितने धैर्यवान, साहसी, सरल, उदारवादी हैं। आपसे आलस्य तो कोसों दूर है। असम्भव कार्य आपके शब्दकोश मे नहीं है। आप कुशल व्यवसायी, साहित्यानुरागी, कुशल प्रवन्धक, लेखक, अनन्य दादा गुरुदेव भक्त, सेवानिष्ठ, और इससे अधिक आप समर्पित समाजसेवी हैं। अनेक सघों, सस्थाओ द्वारा आपका सम्मान हुआ है। समाज के अनेक उच्च पदो पर आप आसीन हैं। मानवीय गुणों के धनी है। पंचाल शोध सस्थान के प्रणेता, संस्थापक, संचालक सब कुछ आप ही हैं। कम्पिलतीर्थ विकास के आप सूत्रधार है। कम्पिल महोत्सव आपके जीवन की अमूल्य देन रही है। प्रथम विदेशी शोधार्थी डा० एल० पी० तैस्सितोरी के अन्वेषक व कानपुर– बीकानेर नगरो मे मूर्तिया लगाने का श्रेय आपकी ही लगन–परिश्रम की देन है। आपके चेहरे पर प्रखर तेजस्विता है। ऐसे मानवमणि का सान्निध्य पाकर मैं अपने आप को धन्य समझता हूँ। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आप शतायु हो।

पारसकुमार सेठिया
५४/२६ नयागज, कानपुर

❀ ❀ ❀

रिखबदास भंसाली
१५, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता–७०० ००७

व्यक्ति के स्मरण करने का मुख्य आधार उसके प्रखर व्यक्तित्व एवं निष्काम कृतित्व पर निर्भर करता है। आज के भौतिक युग में व्यक्ति सिकुड़ता जा रहा है एवं उसकी विचार–धारा संकुचित होती जा रही है। विरले ही ऐसे व्यक्ति होते हैं जो जन सेवा एवं जन जागरण का संकल्प पूरा कर पाते हैं। ऐसी परिस्थिति मे किसी अनूठे व्यक्तित्व का अभिनन्दन जन मानस को प्रेरणा प्रदान करता है एवं भावी पीढ़ी को प्रोत्साहित करता है।

परम सौभाग्य की बात है कि श्रद्धेय हजारीमल जी बाँठिया का अभिनन्दन होने जा रहा है। यह हम सभी के लिये गर्व और गौरव की बात है। उनका व्यक्तित्व अद्भुत है, कर्म क्षेत्र मे भी वे सदैव ही गतिशील रहे हैं। वे ज्ञान और कर्म दोनों तत्वों के समान उपासक रहे हैं। यह सम्मान श्री बाँठिया जी का नहीं वरन् उनकी साहित्यिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में उनके द्वारा प्रदत्त अमूल्य सेवाओ का है। वे सच्चे कर्मयोगी हैं एवं बहुमुखी प्रतिभा वाले कर्तव्यनिष्ठ, गतिशील, निर्भीक एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं। उनकी दिलचस्पी के विविध विषय रहे हैं। सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक शोध इत्यादि। इस वजह से आज भी वे कई सार्वजनिक संस्थाओ को अपनी अमूल्य सेवायें अर्पित कर रहे हैं। निस्पृह सार्वजनिक क्षेत्र में आज सक्रिय लोगों का अभाव होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में भी बाँठिया जी जैसे व्यक्ति के बारे मे सहज ही ऐसी भावना जाग्रत होती है कि वे अनेक वर्षों तक सक्रिय रहकर सार्वजनिक जीवन को अनुप्राणित करते रहें।

इस अभिनन्दन की कड़ी मे अपने को जोड़कर सौभाग्यशाली समझूँगा। मेरा विगत ४५ वर्षों से उनसे पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्ध रहा है। उनके प्रखर व्यक्तित्व की अमिट छाप मेरे मन स्थल पर पड़ी जो चिर–स्मरणी रहेगी। उनकी लोकप्रियता उनके कर्मठ लगनशील और समाज-सेवी जीवन का ही मधुर फल है जो स्वयं सौरभ फैला जा रहा है। उन्होंने कई संस्थाओं के साथ जोड़कर सामाजिक क्षेत्रों में सेवा प्रदान की। कम्पिल तीर्थ का जीर्णोद्धार पंचाल शोध संस्थान को जीवन प्रदान कर, हाथरस शहर का औद्योगीकरण एवं राजस्थान ऐसोसियेशन कानपुर से जुड़कर एक विश्व–बन्धुत्व की भावना जाग्रत कर अनूठी क्षमता का परिचय दिया। टेस्सीटोरी को सारे विश्व मे उजागर करने का पूर्ण श्रेय इनकी कर्मठता का सबूत है जिसके लिये इटली की सरकार ने उनको इस महान कार्य के लिये आमंत्रित कर वहां सम्मानित किया। पंचाल को पुनर्जीवित कर इतिहास के पन्नों को नया मोड़ दिया।

कम्पिल आज पूजा अर्चना का सेवा-स्थल ही नहीं वरन वहा एक अस्पताल का निर्माण कर दीन–दुखी जनों के मसीहा बन गये एवं पर्यटन विभाग में कम्पिल को भी दर्शनीय स्थल का रूप दिया।

मैं उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ, उनके प्रखर व्यक्तित्व को नमन करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आप इसी प्रकार अपने सत्-कर्मों से अपने सहयोगियों को मार्ग-दर्शन प्रदान कर प्रोत्साहित करते रहेंगे।

वे शतायु हो यही जिनेश्वर देव से प्रार्थना है।

Bikaner Woollen Mills Private Limited

Manufacturer & Exporter

Fakir Seth Building, Peer Khanpur Road, Bhadohi 221 401 (U.P.)

Date. 26/07/95

"श्री हजारीमल जी बाँठिया"
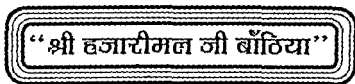
मेरा श्री बाँठिया जी से गत ५० वर्षो से घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध है। उनकी आत्मीयता, स्नेह अनुपम है। उसमे एक निराला मिठास है। हमेशा उसे पाने को आतुर रहता हूँ। उनके जीवन की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जो बरबस जो भी उनके परिचय में आता है उसे आकृष्ट कर लेती हैं।

यह तो हुआ उनका व्यक्तिगत रूप। पर उनके रूप अनेक हैं। कर्मठता, निश्छलता, उदारता, समाज से आंतरिक जुड़ाव, सदैव जीवन में कुछ न कुछ करने की ललक, जीवन के उतार–चढाव में समरूप, साहित्य प्रेम, धर्म एवं तीर्थ अनुरागता, आदि न जाने ऐसे कितने आकर्षक उनके रूप हैं।

मुझे एव मेरे परिवार को अत्यन्त हर्ष है कि उनका सम्मान किया जा रहा है जिसके वे पात्र हैं। पर मेरा ख्याल है कि अभी तो उन जैसे व्यक्ति के विविध रूपो मे बहुत कुछ निखार आना बाकी है और उस निखरे रूप में उनका सम्मान होते देखकर हम सब को असीम हर्ष और आनन्द होता।

इस परम शुभ अवसर पर मेरी एव मेरे परिवार की ओर से हार्दिक बधाइयां तो हैं ही, साथ ही प्रभु से विनम्र प्रार्थना है कि उन्हे पूर्ण स्वस्थ रखते हुये शतायु प्रदान करे और हम चिरकाल तक उनके स्नेह का मिठास लेते रहें।

किशनचंद बोथरा

श्री मान् गिर्राजकिशोर जी अग्रवाल,

सादर नमस्कार।

आपका पत्र दि० ५-४-९५ मिला। यह पढकर अति प्रसन्नता हुई कि आप श्री हजारीमलजी बाँठिया के ७२वें वर्ष प्रवेश पर उनका सार्वजनिक रूप से व्यापक स्तर पर सम्मान-समारोह आयोजित कर रहे हैं। भाई हजारीमल जी से मेरे ३० के दशक के सहपाठी काल से आजतक के सम्पर्क के दौरान मैंने उन्हे कर्मठ, प्रखर बुद्धि, मिलनसार, सेवाभावी, धर्म के प्रति आस्थावान, साहित्य व इतिहास प्रेमी पाया है। श्री बाँठिया जी के परम श्रद्धेय नानाजी स्व० श्री शंकरदान जी नाहटा का मेरी युवा अवस्था मे मेरे पिताजी के साथ मुझे सान्निध्य का सुअवसर मिला है। श्री बाँठियाजी के व्यक्तित्व पर उनकी सरलता की अमिट छाप देखने को मिलती है। राजनीति मे शुद्ध आचरण का व्यक्तित्व बिरला ही मिलता है परन्तु श्री बाँठिया जी उस बिरले व्यक्तित्व के धनी रहे हैं।

६० के दशक में मेरे कलकत्ते प्रवास के दौरान मेरे चिर परिचित सौराष्ट्र के व्यापारी श्री बाबूभाई पटेल के साथ श्री बाठिया जी के परिवार की फर्म से कुछ व्यापारिक उलझन हो गयी। मेरी पहल पर उस विवाद को शालीनता के साथ सलटवाने में श्री बाँठिया जी का योगदान उनका व्यापार में सच्चाई व सूझबूझ का ज्वलन्त उदाहरण है।

श्री हजारीमल जी बाँठिया का सम्मान उनके बहुमुखी व्यक्तित्व के साथ-साथ साहित्य संस्कृति, ऐतिहासिक शोध, व मानवीय आचरण के प्रति समर्पण भावना का सम्मान है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रभू कृपा से समाज श्री बाँठिया जी की सेवाओ से आगे भी लाभान्वित होता रहेगा व उनका जीवन भावी पीढी के लिए एक आदर्श स्थापित करेगा।

विनीत
जेठमल लखानी

सी-१०३, वैशालीनगर,
जयपुर
दि० २७-७-१९९५

○○○

जी ने अति लगन और श्रम पूर्वक बीकानेर के झाड़–झंखार से भरे निविड निर्जन मे डॉ० तैस्सितोरी की न केवल स्थल समाधि को खोज निकाला वरन् वहीं पर उस भाषा विज्ञानी की समाधि का निर्माण भी कराया और वे दो बार इटली मे आयोजित डॉ० तैस्सितोरी समारोह में निमंत्रित होकर गये। जिस हीरे को हमारे देशवासी कम करके ही परख रहे थे, उसकी चमक इटली वालो ने परखी और उसका सम्मान किया। विस्मृत प्राय कम्पिल को नवजीवन, पुनर्गौरव, पुनर्प्रतिष्ठा और ऐतिहासिक महत्व प्रदान कराने वाले भी श्री हजारीमल बाँठिया ही है। पंचाल शोध संस्थान के ६–१० अधिवेशन करना उन्हीं के बूते की बात है। शिक्षा, सस्कृति, साहित्य, पुरातत्व, चिकित्सा सेवा, जन–सेवा आदि सभी क्षेत्रों मे इस परमार्थी परोपकारी पुण्यात्मा के हाथ पहुँचते रहे हैं। सेवा और सब क्षेत्रो मे सृजन का नया कीर्तिमान कायम किया और जीता वही है, उसी का जीवन सार्थक है जो कीर्तिवान है। कहा है "कीर्तिमस्य स जीवति"। मुझे याद पडता है मेरी बाँठिया जी से दूसरी बार भेट विन्दकी में हुई थी जहाँ प्रसिद्ध हिन्दी सेवी प्रो० वासुदेव सिह ले गये थे, वहां राष्ट्रकवि पं० सोहनलाल द्विवेदी की अध्यक्षता मे मुझे "साहित्येन्दु" तथा बाँठिया जी को नगर–श्रेष्ठ की उपाधि प्रदान की गई थी। कानपुर में रोककर बॉठिया जी मुझे अपने घर भी ले गये, उनकी भरी–पूरी गृहस्थी का वातावरण मानव सेवा, समाज प्रेम, और सेवा समर्पण के संकल्प को सक्रियता प्रदान करने मे प्रवृत्त देखकर मुझे प्रेरणा प्राप्त हुई। देश मे उद्योगपति अनेक हैं और बड़े–बडे है, किन्तु उद्योग व्यापार करते हुए, गृहस्थी चलाते हुए समाज सेवा, देशहित, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा के क्षेत्रो को भी नि स्वार्थ कर्म निष्ठा तथा स्वेच्छा से ग्रहीत कर्तव्यशीलता मे सयुक्त करके जो यह लोक यात्रा यशस्वी बना सके उसका जीवन धन्य है। वह निश्चय ही अभिनन्दनीय है। भाई हजारीमल जी पर यह शब्द सटीक बैठते हैं कि "यही बहुत है कि वे मशाले जला के जिये"। मैं भाई बाँठिया जी की ७१वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर २५ सितम्बर को कानपुर मे जो सम्मान समारोह हो रहा है, उसके लिए अपनी सम्पूर्ण–श्रद्धा–समादर भावना और शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए प्रभु से प्रार्थी हूँ कि वह बाँठिया जी को शतजीवी बनाये ताकि वे साहित्य, समाज, सस्कृति, और स्वदेश की और अधिक सेवा कर सके। इति शुभ।

१० अगस्त, १९९५

□□□

श्री हजारीमल बाँठिया की राजस्थान राज्य अभिलेखागार को देन

* सुरेन्द्र कुमार राजपुरोहित

श्री हजारीमल जी बाँठिया पेशे से व्यापारी होने के साथ–साथ साहित्य के क्षेत्र में भी अग्रणी हैं। कानपुर, हाथरस एव कलकत्ता मे स्वय के व्यापार–समृद्धि के उपरान्त अपने विद्वान मामा श्री अगरचन्द जी नाहटा के सम्पर्क के कारण राजस्थानी भाषा व साहित्य के क्षेत्र मे काफी रुचि रखते हैं। अगर उन्हे राजस्थानी भाषा व साहित्य का संरक्षक कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अपने पूज्य पिताजी की पावन स्मृति में राजस्थानी भाषा पर शोध करने वाले शोधार्थियो को दो हजार रुपये का नकद "फूलचन्द बाँठिया पुरस्कार" तथा आदरणीय मामाजी को राजस्थानी साहित्य

डॉ० मधनेश त्रिपाठी

अनेक वर्ष पहले भाई हजारीमल बाँठिया से सहसा ही लखनऊ में भेंट हुई थी। वे मुझे अपने पूज्यपाद पूर्वज शहीद श्री अमरचंद बाँठिया के एक श्रद्धांजलि समारोह के लिए निमंत्रित करने आये थे। ठीक याद नहीं, मुख्य अतिथि या मुख्य वक्ता रूप से मैं कानपुर में आयोजित उस कार्यक्रम में भाग लेने गया था। चन्द्रशेखर आजाद तथा शहीद भगतसिंह के कई पुराने क्रांतिकारी साथी उस समारोह में वहां मौजूद थे। कुछ सम्भवत बाँठिया जी से अपरिचित रहने के कारण नीचे श्रोताओं में ही बैठे थे। मैंने उन्हे देखा तो सूचना देकर स्वयं उन्हें मंच पर आने का आग्रह किया, वे थे आजाद भगतसिंह के साथी श्री सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय तथा चन्द्रशेखर आजाद की मुखबरी करने में कुख्यात दल के ही एक सदस्य वीरभद्र तिवारी को गोली मारने के प्रयास मे १० वर्ष कैद काटने वाले भाई रमेशचन्द्र गुप्त। अन्य कुछ नाम मुझे याद नहीं आ रहे। अध्यक्षता की थी प्रसिद्ध क्रांतिकारी तथा लेखक श्री शिव वर्मा ने। उस रोज सम्भवतः कानपुर के पत्रकारों तथा प्रबुद्ध जनता ने पहली बार यह जानकारी प्राप्त की कि ग्वालियर राज्य के धनागार के खजांची श्री अमरचन्द बाँठिया को अंग्रेजों ने सन् १८५७ की क्रांति मे इसलिए फांसी दी क्योंकि उस महान देशभक्त ने राव साहब तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की क्रांतिकारी सेना को अर्थाभाव के समय वेतन बाँटने के लिए कोषागार की चाबियाँ ही सौंप दी थीं जिससे क्रांतिकारी सेना का जो उस समय अर्थ सकट था, निवारण हो सका था। शहीद बाँठिया जी के लिए यह पुण्य कर्म उनकी गौरवमयी वंश परम्परा के नितांत अनुकूल ही था क्योंकि लोकहित मे धन और अपनी सेवायें बाँटते रहने के ही कारण तो इस कुल का "बाँठिया" नाम प्रचलन मे आया था तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी सार्थकता स्थिर रख सका था। उन्हीं संस्कारों में रचे-बसे श्री अमरचन्द बाँठिया ने भी सिन्धिया राज का खजाना, जिसे गंगाजली कहते थे, कानपुर की क्रान्ति के पुरोधाओं-नेताओं के हवाले कर दिया, यह बड़े साहस की बात थी।

अत्यन्त आनन्द एवं गौरव का प्रसंग है कि महान बलिदानी देशभक्त श्री अमरचन्द बाँठिया की प्रतिमा का निर्माण भाई हजारीमल बाँठिया ने करा लिया है तथा उसकी प्रतिष्ठापना ग्वालियर में ही जहां उस अमर बलिदानी को पेड़ से टाँगकर फाँसी दी थी वहीं होने जा रहा है। एतदर्थ सभी विप्लवी बन्धु तथा भारतवासी हजारीमल जी के प्रति चिर आभारी रहेंगे।

महान कर्मयोगियों की स्मृति का संस्मरण, सम्मान, अक्षुण्ण रखने की दिशा में हजारीमल जी अपने जीवन की सम्पूर्ण शक्ति, धर्म, प्रतिभा और श्रम लगाते रहे हैं। भले महान पुरातत्वविद्, तथा साहित्यकार श्री अगरचन्द नाहटा उनके मामा रहे हों किन्तु उनके व्यक्तित्व-कृतित्व पर अभिनन्दनग्रंथ का प्रकाशन हजारीमल द्वारा इस साहित्य पुरातत्व की ही सेवा का प्रमाण और पर्याय है। राजस्थान ही क्या भारत में ही कितने बुद्धिजीवी थे, जो इटालियन प्राच्य विद्वान डॉ० एल० पी० तैस्सितोरी का नाम जानते थे किन्तु, अनाज और तेल के उद्योग में व्यस्त रहने वाले हजारीमल

फोटोग्राफ- डा० एल० पी० टेसीटोरी के १२ मूल फोटोग्राफ जो संयुक्त राजस्थान के नवम्बर १९५६ मे "डा० एल० पी० टेसीटोरी श्रद्धान्जलि अक" में प्रकाशित हुए थे। अन्य ४६ फोटोग्राफ जो बाद मे बीकानेर म्यूजियम को प्रदर्शत हेतु दे दिये गये हैं। इन श्याम-श्वेत चित्रो मे डा० टेसीटोरी की जीवन क्रम बाल्यावस्था से जवानी तक की जानकारी प्राप्त होती है। कुछ फोटो मे मित्र एवं सहयोगी हैं तो कुछ टेसीटोरी के परिवार के सदस्यों की जानकारी देते हैं। ये फोटोग्राफ आज भी बीकानेर म्यूजियम मे "डा० टेसीटोरी आर्ट गैलरी" मे प्रदर्शित हैं।

पत्राचार- डा० टेसीटोरी द्वारा पत्र गुरु विजयधर्म सूरि जी और उनके शिष्य इन्द्र विजयजी को लिखे है जो अग्रेजी एवं हिन्दी मे हैं। इन पत्रो को पोलीथिन में स्टेच कर रखे गये हैं। इन मूल पत्रों की कुल सख्या बारह है। टेसीटोरी द्वारा लिखे गये एव टेसीटोरी को अन्य व्यक्तियो द्वारा लिखे गये कुल ७० पत्र अच्छे कागज पर फोटो स्टेट किये हुए हैं जो अलग-अलग कार्ड शीट पर चिपकाये हुए हैं।

मूल पत्रो मे टैसीटोरी के हृदय-गत-भाव, कार्य प्रणाली एवं भारत में आकर कार्य करने की इच्छायें आदि व्यक्त हैं। फोटो स्टेट पत्रो मे उनके मित्रो, एशियटिक सोसायटी एव राजपूताना के ऐजेन्टो के एवं स्वय टैसीटोरी द्वारा लिखे गये पत्र हैं। इसके साथ-साथ पासपोर्ट एव ग्रीटिंग कार्ड के भी कुछ फोटो-स्टेट हैं।

प्रकाशित सामग्री- डा० टेसीटोरी द्वारा राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों का सग्रह कर विभिन्न पत्रिकाओ मे उसका प्रकाशन एव सम्पादन का कार्य विशेष महत्वपूर्ण है। ये लेख इटली की जर्नल ओफ दी एशियाटिक सोसायटी इटली की प्राच्य विद्या सस्था, जर्नल ऑफ दी रोयल एशियाटिक सोसाइटी, भारत मे इन्डियन एन्टिक्वेरी, जर्नल ओफ दी एशियाटिक सोसाइटी बगाल आदि से प्रकाशित लेखो का सग्रह फाइलों मे है। कुछ पुस्तक आकार में फोटो स्टेट है। यह समस्त प्रकाशन सन् १९०९ से १९२० के मध्य की अवधि के हैं। यह समस्त कार्य राजस्थानी भाषा एव साहित्य से सम्बन्धित है। डा० टैसीटोरी के भ्रमण वृतान्त का बहुत ही महत्वपूर्ण वर्णन ऐशियाटिक सोसाइटी की रिपोर्ट मे दिया गया है। इनके लेखो को पढने से ज्ञात होता है कि डा० टेसीटोरी राजस्थानी साहित्य के पुन प्रतिष्ठापक हैं। संग्रह के साथ इटालियन डिक्शनरी, डा० टेसीटोरी पर लिखी गई पुस्तक एव सयुक्त राजस्थान नवम्बर १९५६ का डा० टेसीटोरी श्रद्धान्जलि अक एव इटालियन भाषा मे छपी कुछ पुस्तके भी सम्मलित हैं।

श्री हजारीमल जी बाँठिया द्वारा प्रदत्त सग्रह निजी अभिलेख सर्वेक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस सग्रह से एक शोध-छात्रा डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त कर चुकी है एवं इस सग्रह की माग दिन प्रति दिन बढ रही है जिससे अभिलेखागार स्वय एक तीर्थ स्थान बन गया है। विभाग की इस सग्रह का माइक्रो-फिल्म करने की योजना है जिससे कि यह सग्रह और अधिक सुरक्षित और सही उपयोग हो सके।

श्री हजारीमल जी बाँठिया द्वारा प्रदत्त सग्रह के कुछ विशेष लेखो की सूची जो ज्यादातर फोटो स्टेट है एव फाइलो मे है जो शोध जगत मे महत्वपूर्ण हैं

{A} Publication in Italy

(1) Aggiunte, note a correzioni al Bhavavairagyacatakam (*Giornala dell'a societa asiatica Italiana, vol xxiv, 1911, P.P. 405-416*)

में चिर-स्थायी बनाने हेतु "श्री अगरचन्द नाहटा स्मृति भाषण माला" का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाना श्री हजारीमल जी बाँठिया द्वारा राजस्थानी साहित्य का विकास और उसका प्रचार-प्रसार किये जाने का परिचायक नहीं तो और क्या है? आप कानपुर स्थित पंचाल शोध संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष हैं।

राजस्थानी भाषा के ज्ञाता डा० एल० पी० टैसीटोरी का परिचय युवा पीढ़ी को कराने का श्रेय भी बीकानेर के समाज सेवी श्री हजारीमल बाँठिया को ही जाता है जिन्होने कठिन श्रम कर १९५६ में ही टैसीटोरी की टूटी-फूटी व खस्ता हाल समाधि को न सिर्फ ढूंढ निकाला वरन् उसकी मरम्मत भी करवाई और इस तरह सरस्वती के इस उपासक (टैसीटोरी) के प्रति रचनात्मक आकार प्रदान किया। इसी क्रम मे बाँठिया जी ने इटली मे आयोजित टैसीटोरी पर इन्टरनेशनल सेमिनार में दो बार भाग लिया। कानपुर मे टेसीटोरी का स्टेच्यू बनवाया एवं बीकानेर में उद्घाटन होने वाला है।

श्री बाँठिया जी द्वारा अभिलेखागार को प्रदत्त डा० टैसीटोरी से सम्बंधित समस्त अभिलेख सामग्री राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर के 'निजी अभिलेख सर्वेक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत संग्रहीत है।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार की अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं एव गतिविधियो में सर्वेक्षण परियोजना का अपना अलग ही महत्व है। इस योजना द्वारा निजी व्यक्तियों, परिवारो, संस्थाओ और संगठनो से सम्पर्क करके अभिलेख की जानकारी प्राप्त करना, सर्वेक्षण करना, सूची करण एव अधिग्रहण का कार्य किया जाता है। प्रारम्भ में मूल रूप से यह कार्य १९५३ में ही फैक्ट फाइंडिंग कमेटी की स्थापना कर उसे सौंप दिया गया, परन्तु किन्हीं कारणों से १९५५ में इसे समाप्त कर दिया गया। इसके उपरान्त जिला सर्वेक्षण कमेटियों की स्थापना की गई और इस कार्य हेतु विभाग को राजस्थान सरकार द्वारा जून १९५६ से ही अधिकृत कर दिया गया था, ताकि निजी व्यक्तियों, राजघराना, जागीरदारों व ठिकानेदारो के परिवारो, निजी संस्थाओ एव संगठनो से सम्पर्क करके ऐतिहासिक महत्व के अभिलेख, पाण्डुलिपियां, हस्तलिखित ग्रंथ, पेन्टिंग तथा मूल कागजो का सूचीकरण करके उनका अधिग्रहण किया जा सके जिससे इन महत्वपूर्ण अमूल्य अभिलेखो का विभिन्न ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक एव राजनैतिक विषयो पर शोध हेतु शोधार्थी, इतिहासकार एव अन्य विद्वान प्रयोग कर सके। इन सर्वेक्षण कमेटियों ने दिसम्बर १९५६ को केन्द्रीय सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी थी। तब से अभिलेख सर्वेक्षण एवं अधिग्रहण का यह क्रम आज भी जारी है।

सर्वेक्षण की इसी क्रमबद्ध श्रृंखला में श्री हजारीमल जी बाँठिया द्वारा संगृहीत डा० एल० पी० टेसीटोरी से सम्बन्धित अभिलेखों में टेसीटोरी द्वारा इटली से लिखे गये अंग्रेजी एवं हिन्दी के पत्राचार, हस्तलिखित ग्रंथ और भारतीय भाषाओ पर किये गये कार्यों का प्रकाशन एवं फोटोग्राफ आदि हैं जो अधिकतर फोटोस्टेट रूप में है। श्री हजारीमल जी बाँठिया ने ये अभिलेख राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर को सौंपकर अपनी उदारता एवं राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के प्रति प्रेम को उजागर किया है जो वास्तव मे शोध जगत के लिए काफी महत्वपूर्ण है। श्री हजारीमल जी बाँठिया आज भी टेसीटोरी पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थीयों को आर्थिक सहयोग देने के लिए तत्पर हैं।

यहां श्री हजारीमल जी बाँठिया द्वारा प्रदत्त डा० टेसीटोरी से सम्बन्धित अभिलेख सामग्री की प्रकृति एव स्वरूप के सम्बंध में चर्चा कर लेना उचित होगा।

---

* सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर (राजस्थान)

(3) A Progess Report on the work done during the year 1916 in connection with the Bardic and Historical survey of Rajputana (id vol. XIII, 1917, p.p. 195-252)
(4) A Progres Report on the work done during the year 1917 in connection with the Bardic and Historical survey of Rajputana (id vol. XV, 1919. p.p 5-79)
(5) Vacanika Rathora Ratana Singhaji ri Mahesadasota ri, Khiriya Jaga ri Kahi, Dingala Text with Notes and Glossary (Bibl. Indica, 1917 p. 1-139)
(6) Veli Krisana Rukamani ri (Tiped copy English & Italian)
(7) Chanda rau Jeta Si ro Vithu Suje ro Kiyo (Bibl. Indica, 1920 p.p. 1-113)

समाजसेवी श्री हजारीमल बाँठिया

आपका जन्म २४ सितम्बर १९२४ को बीकानेर (राजस्थान) के श्री फूलचन्द जी के यहां हुआ था। यह एक सम्भ्रात ओसवाल परिवार है जिनके पूर्वजों ने जैन धर्म ग्रहण करते समय सारे समाज की सुख समृद्धि, धन दौलत तथा प्रसन्नता एवं शान्ति का सन्देश बाँटने में इतनी सहृदयता दिखाई जिससे इनका उपनाम ही बाँठिया पड गया। श्री हजारीमल को बचपन से ही सहृदयता, धार्मिकता, दानप्रियता तथा कुछ कर गुजरने की लगन घर के सदस्यो से विरासत मे प्राप्त हुई।

श्री हजारीमल , किशोरावस्था मे ही पितृ शोक होने के कारण, युवावस्था से ही संघर्ष-शील व्यक्तित्व के स्वामी बन गये जिन्होने नेपोलियन के सिद्धात के अनुसार अदम्य उत्साह तथा वैचारिक दृढता दिखाते हुए व्यवसाय के क्षेत्र मे बहुत कम समय मे ही अपना विशेष स्थान बना लिया। हाथरस से शुरु किये गये व्यवसाय को उन्होने अपनी कुशाग्र बुद्धि से पूरे उत्तरी भारत मे फैला दिया और आज अन्य व्यवसायो के अतिरिक्त गल्ले एवं तेल के प्रमुख व्यापारी बन गये हैं।

व्यवसाय के अतिरिक्त आप सन् १९५२ से १९७२ तक राजनीति मे सक्रिय रहे और उसके पश्चात् राजनीति से सन्यास लेते हुए वह सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रो में निष्काम सेवा हेतु कूद पडे। मथुरा मे ब्रजधाम, उ० प्र० में कम्पिल क्षेत्र से सम्बन्धित "पंचाल पुरातत्व संग्रहालय" की स्थापना करवाने के अतिरिक्त हाथरस में अनेक शैक्षिक संस्थानो की स्थापना मे सहयोग किया। काम्पिल्य महोत्सव, पंचाल पुरातत्व सेमिनार तथा पचाल शोध संस्थान के कार्यक्रमो मे आपका हमेशा योगदान रहता है। व्यापार जगत मे कानपुर चैम्बर आफ कामर्स के संस्थापक के रूप में इन्होंने, समाज के इस वर्ग का बहुत ही फायदा किया है। इन्होने पहली आल इण्डिया ट्रेड डायरेक्ट्री ग्रंथ का सम्पादन भी किया है।

श्री हजारीमल जी ने अनेक जैन ग्रंथों का प्रकाशन किया है और ५०० से अधिक लेख (विभिन्न विषयों पर) प्रकाशित करवा चुके हैं। आपने सन् १९५६ मे प्रसिद्ध इटालियन विद्वान तथा भाषाविद् डा० एल० पी० टेसीटोरी का

(2) IlRamacaritamanasa e il Ramayana (id. vol - xxiv, 1911, p.p. 99-164)
(3) Nasaketa ri Katha, o di una versione di Maravadi Bhasa del Nasiketopakhyana (Riv. di studi orient. vol. vi, 1913 p.p. 113-130)
(4) Il Mercante Adoracani, o il racconto di Acad Bakt, *dall indo stano di* Mir Amman (Udine 1913 p.p. 1-113)
(5) La sattasai di Hala, spigolature di erotica indiana (Rassegna *Maziovale*, fasc. 1 Febbraio e 1 Giugno 1914, p.p. 1-40)
(6) Tulasi Dasa come opostolo e come poeta (Atti della R. Accademia di Archeologia, lettere e Belle Arti di Napoli, *Nuova Serie, vol.III, 1914, p.p.* 93-121)
(7) La posizione di Tulasi Dasa di fronte ai sistemi di Ramanuja e di cankaracarya (comunicazione fatta oll' Accademia Udines enell'a dunanza del 28 dicembre 1912.)
(8) La Novellina di upakoca (tradotta dal *sanscrito di somadeva Udine* 1913)

{B} Publication in Journal of Royal Asiatic Society, Italy

(1) On the origin of the Dative and genitive postpositions in Gujarati and Marwari (Journal of the Royal Asiatic Society, Juli 1913, p.p. 553-567)

{C} Publication in India

(1) The Ramacaritamanasa and the Ramayana (Indian Antiquary, vol. XLI *XLII, 1912-13, p.p. 1-31)*
(2) Paramajotistotra, an old Braja metrical version of Siddhasenadivakara's Kalyanamandirastotra (id vol XLII, 1913, p.p. 42-46)
(3) Two Jaina versions of the story of Soloman's Judgement, *In Gujarati and* Jaipuri (Id vol XLII, 1913, p.p. 148-152)
(4) Old Gujarati and old Western Rajasthani (Proceedings of the fifth Gujarati Sahitya Parishad, May 1915 p.p. 1-7)
(5) Vijaya Dharma Suri, a Jain Acharya of the Present Day (Calcutta 1917, p.p. 1-21)
(6) The wide sound of E and O in *Marwari* and Gujarati *(Indian antiquary,* Sept. 1918)

Bardic and Historical survey of Rajputana

(1) A scheme for the Bardic and Historical survey of Rajputana (Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol X, 1914, p.p. 373-419)
(2) A Progress Report on the preliminary work done during the year 1915 *in* connection with the proposed Bardic and Historical Survey of Rajputana (Id. vol XII, 1916, p.p. 57-116)

श्री हजारीमल बाँठिया व्यवसाय के सिलसिले में सन् १६४५ मे हाथरस आये थे। अपना व्यापार सुव्यवस्थित करने के उपरान्त भारतीय जनसघ के जन्म काल से ही सक्रिय कार्यकर्ता रहे। सन् १६५२ के चुनाव मे पार्टी प्रत्याशी श्री वासुदेव सहाय वकील के लिए पूर्ण प्रयास किया।

सन् १६५७ मे हाथरस नगर पालिका चुनाव हुआ। जनसंघ के प्रत्याशी के रूप मे शानदार सफलता प्राप्त की। जनसघ के केवल दो ही सदस्य निर्वाचित हुए। दूसरे व्यक्ति श्री किशन लाल खजाची थे। इन दोनो व्यक्तियों का कार्यकाल इतना सजग था कि संख्या में कम होने पर भी वह पूरे पॉच साल बोर्ड पर हावी रहे। इनके प्रयत्नों का ही परिणाम था कि सेठ रामबाबू लाल चेयरमैन चुने गये। इसके कारण पूरे पाँच साल इनका बोलबाला रहा, तथा ये कार्य वाहक अध्यक्ष भी रहे।

इसके पश्चात् १६६२ मे पुन: आम चुनाव हुए। श्री बाँठिया को १६६२ मे प्रथम बार हाथरस नगर जनसंघ का नगर अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस पद पर वह १० वर्ष तक निर्वाचित होते रहे। यह कार्यकाल जहां बाँठिया जी की कर्मठता तथा क्रियाशीलता का जीवत उदाहरण है वहीं हाथरस विधानसभा क्षेत्र का जनसंघ का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

इनके कार्यकाल मे गौ–हत्या निषेध एव सहकारी कृषि का विरोध आदि जनसंघ के कई आंन्दोलन हुए। बॉठिया जी के नेतृत्व में क्षेत्र के सभी कार्यकर्ताओ ने बडे उत्साह से भाग लिया।

सन् १६६७ का आम चुनाव अलीगढ जिले के इतिहास का स्मरणीय चुनाव था। इस बार चार सीटों पर जनसघ प्रत्याशी विजयी हुआ। श्रीमान् कल्याण सिह जी भू० पू० मुख्य मंत्री (उ०प्र०) प्रथम बार विधायक बने। मेरे जिलाध्यक्ष कार्यकाल मे जहा मेरे लिए हर्ष का विषय था, वहीं श्री बाँठिया जी के क्षेत्र से भी रामशरणसिह ने विजय प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया। यह सब इसीलिए सम्भव हो सका क्योकि लगातार पाँच वर्ष तक संगठन को सक्रिय तथा सक्षम बनाने में पूरा परिश्रम किया गया था।

इनके कार्यकाल मे प्रमुख पार्टी नेता हाथरस पधारे। उनका भोजन–शयन प्राय इनके यहां होता था। सन् १६६५ मे अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री बच्छराज जी व्यास, मा० अटल बिहारी बाजपेयी सन् १६६८ मे मा० जगन्नाथराव जी जोशी, अ० भा० मत्री, मा० केदारनाथ जी साहनी, मा० बलराज मधोक, मा० सुन्दरसिह जी भन्डारी, भू० पू० मुख्य मन्त्री श्री कल्याणसिह जी, तथा मा० गगाभक्त सिह जी पू० मन्त्री उ० प्र०, आदि पधारे। यद्यपि अन्य कई महत्वपूर्ण नेताओं का आगमन भी समय–समय पर हुआ, स्थानाभाव के कारण सभी का नाम उल्लेख करना संभव नहीं है।

श्री बॉठिया जी यद्यपि राजनैतिक क्षेत्र मे पूर्ण निष्ठा से काम करते रहे, परन्तु वास्तव में वह सामाजिक तथा साहित्यिक क्षेत्र मे विशेष रुचि रखते हैं। शनै: शनै वह राजनैतिक क्षेत्र से हट कर उन क्षेत्रों मे समर्पित होते गये। उन क्षेत्रो मे एक कीर्तिमान स्थापित किया है, जिसके कारण आज समाज उनका सम्मान करने को प्रेरित हुआ है। फिर भी हाथरस नगर के आम निर्वाचन में समय–समय पर अपने सम्पर्क का लाभ वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी को दिलाने हेतु कानपुर से आते हैं क्योकि अब अधिकांश आपका निवास वहीं है। उनके चिरायु होने की कामना करता हूँ।

□ □ □

समाधि स्थल बीकानेर मे ढूढँकर उनकी समाधि बनवाई जिसका उद्‌घाटन इटली के राजदूत से कराया। इनकी मूर्ति तुलसी उपवन, कानपुर में भी १९८५ में स्थापित की गई है। इसी प्रकार के सामाजिक कार्यक्रमों मे श्री बाँठिया जी अपना प्रत्येक दिन गुजारते है। समाज का कोई भी व्यक्ति उनके यहां से कभी खाली हाथ नही लौटता। आप समाज के सर्वतोमुखी विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं तथा सभी को, बिना किसी भेद भाव के, निःसंकोच उदार हृदय से सहायता प्रदान करने की कोशिश करते हैं।

अत इस सम्मान समारोह के माध्यम से हम ७१ वर्षीय श्री हजारीमल बाँठिया जी को जो सम्मान दे रहे हैं वह वास्तव में एक ऐसे व्यक्ति को दे रहे है जो अपनी समाज-सेवा की निष्काम भावना एवं समर्पण के कारण इस सम्मान का बहुत पहले ही हकदार हो चुका है। इस व्यक्तित्व के माध्यम से ही हम उ० प्र०, मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा पश्चिमी बगाल के व्यापार जगत का भी सम्मान कर रहे हैं क्योंकि श्री हजारीमल जी का इन चारो प्रदेश के व्यापार-जगत के उत्थान मे बहुत योगदान रहा है। इस सम्मेलन के माध्यम से हम उनके शतायु होने की कामना करते हैं जिससे वह आने वाले वर्षों मे भी सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों मे अपने अनुभव से समाज की अविरल सेवा निष्काम भाव से करते रहें।

117/580 पाण्डु नगर
कानपुर - 208 005
दूरभाष . 0512-219841
दिनांक 18-8-95

(कृष्ण कुमार कामानी)
राज्य प्रमुख (उ०प्र०)
अखिल भारतीय प्रबुद्ध नागरिक मंच

श्री हजारीमल बाँठिया का-राजनीतिक जीवन

एक संस्मरण

त्रिलोकी नाथ शर्मा
भू० पू० जिलाध्यक्ष, भारतीय जनता
अलीगढ़

लेखक परिचय-

- हाथरस नगर के प्रसिद्ध सराफा व्यवसायी
- १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे सक्रिय सहयोग तथा रा० स्व० संघ से सम्बन्ध
- भारतीय जनसंघ से जन्म से ही सम्बन्ध
- हाथरस नगर-अध्यक्ष, जिला उपाध्यक्ष (१४-१५ वर्षों तक)
- १९६२, ६७ तथा ६९ के जिला-चुनाव संयोजक
- १९६६-६९ तक जिला-अध्यक्ष
- १९६४ मे भारतीय जनता पार्टी के नगर अध्यक्ष

श्री हजारीमल बाँठिया

पत्रों के प्रकाश में

बाँठिया जी - एक अद्भुत व्यक्तित्त्व

डॉ० प्रकाश चन्द्र जैन,
भूतपूर्व प्राध्यापक, वाणिज्य संकाय
डी० ए० वी० कॉलेज, कानपुर

अब से लगभग २० वर्ष पूर्व भगवान महावीर के २५००वे निर्वाण महोत्सव के अवसर पर अनेक महानुभावों के सम्पर्क मे आया। तभी ऊँची टोपी पहने हुये सफेद धोती कुरते में स्थूलकाय एक सेठ से भेंट हुई। वेशभूषा से मैंने उन्हे एक सामान्य मारवाड़ी सेठ समझा लेकिन कालान्तर में यह ज्ञात हुआ कि इस लक्ष्मी-पुत्र के सामान्य मारवाड़ी सेठ के आवरण के पीछे सरस्वती का एक वरद पुत्र छिपा हुआ है, जिसमें संस्कृति के प्रति अदम्य निष्ठा, साहित्य के प्रति असीम प्रेम और शोध कार्य के प्रति अद्भुत लगन है। यह वह व्यक्ति है जिसने इतालवी हिन्दी विद्वान डॉ० लुई तैस्सितोरी की कब्र को खोज कर इस विदेशी मनीषी द्वारा हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रति की गई विशिष्ट सेवाओं को उद्घाटित किया. पाचाल-शोध के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाई। मस्तक सहज श्रद्धा से झुक गया।

बाँठिया जी मे एक अद्भुत गुण है, किसी व्यक्ति की क्षमता को पहचानना और उसे प्रेरित कर साहित्य और संस्कृति की सेवा में लगाना। मुझ जैसे वाणिज्य के प्राध्यापक में उन्हें हिन्दी के प्रति प्रेम का आभास हुआ और उन्होंने डॉ० तैस्सितोरी से सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध कराया और मुझे उस हिन्दी के अभारतीय सेवक के जीवन पर एक नाटक लिखने के लिए विवश किया। उनकी प्रेरणा से मैंने डॉ० तैस्सितोरी की जीवन-गाथा "मरुथल का मेहमान" नाटक में लिपिबद्ध की जिसे बाँठिया जी ने राजस्थान एसोसियेशन कानपुर के माध्यम से प्रकाशित कराया। यह है संस्कृति और साहित्य के प्रति उनके लगाव का मेरा निजी अनुभव।

सामाजिक कार्यों और मानव सेवा के क्षेत्र मे भी बाँठिया जी कभी पीछे नहीं रहे। जैन धर्म के अनुयायी होते हुए भी अन्य पथों के प्रति वे अत्यन्त उदार हैं। उनकी दृष्टि में समस्त भारतीय धर्म संस्कृति के स्रोत हैं। कानपुर नगर निगम के तुलसी उपवन में भक्त शिरोमणि महाकवि सन्त तुलसीदास जी की प्रतिमा के निकट डॉ० तैस्सितोरी की प्रतिमा स्थापित कराने का पूर्ण श्रेय आदरणीय बाँठिया जी को ही जाता है। मानस संगम के प्राण प० बद्रीनारायण जी तिवारी बाँठिया जी के अद्भुत व्यक्तित्व के प्रबल प्रशंसक हैं।

डॉ० तैस्सितोरी के प्रति उनका लगाव उन्हें इटली तक ले गया जहां उन्होंने भारत के सांस्कृतिक राजदूत की सफल भूमिका का निर्वहन किया।

अभिनन्दन व्यक्ति का नहीं उसके गुणों का होता है। वे अपने यशस्वी जीवन के ७० वर्ष पूर्ण कर ७१वें वर्ष मे प्रवेश कर रहे हैं। उनके प्रति यही शुभकामना है कि वे शतायु हो और स्वस्थ रहकर पुरातत्व प्रेमियों, साहित्यकारों और समाज सेवियों का मार्ग दर्शन करते रहें।

निष्काम कर्मयोगी, रत समाज सेवा में, कामना नहीं जिन्हें किंचित भी फल की
संस्कृति को समर्पित है, रसिक साहित्य के, शोध दृष्टि पाई है जिनने अंतर की
अभिनन्दन में मात्र कामना शुभ, सभी प्रिय जन के उर से है उनकी
परिपूर्ण समस्त सुख और शान्ति से, उम्र हो हजारी बाँठिया हजारीमल की

❀ ❀ ❀

Muni Kantisagar

SEONI

Date 29.10.41

लिखी मुनी कान्तीसागर,

बीकानेर नगरे श्रीयुत् हजारीमलजी बाँठिया योग्य धर्मलाभ मालूम हो। भवत्प्रेषित पत्र मिला। अगरचंद जी का १ पत्र कुछ दिन पूर्व सिलहट से आया था। पंडित दशरथ जी शर्मा ने मेरे पास जेसलमेर राज्य वंशावली की प्रेस कापी न उन्होने भेजी है न मुझे मिली ही। यदि आपको दशरथ जी मिले तो आप कह देना कि भेज दे क्योंकि अब यहाँ से मौन एकादशी बाद हमारा विहार होगा। विदित हो। पूज्य गुरुवर उपाध्यायजी सुखसागर जी महाराज एवं मुनी श्री मंगल सागर जी की ओर से शंकरदानजी नाहटा को बहुत-बहुत धर्मलाभ कहें।

मुनि कान्तिसागर
पुरातत्वाचार्य

o o o o

ॐ नम

बिकानेर मध्ये शुभीक हजारीमल आदि परिवार से योग्य लिखी सूरत बंदर से आर्या रिधि श्री सती श्री आदि ठाणा ७ की धर्मलाभ मालूम करना। धर्म ध्यान करना आत्म साधना करना। जमना की माँ से नानीजी से जमना मीना बीनकी आदि सबसे हमारी धर्मलाभ मालूम करना हम सब यात्रा करवी गंधार मरुधर आदि की यात्रा करते करते सुरत आये हैं सुरत वालो का आग्रह है इसलिये प्राय करके सुरत री चौमासा होगी सुरत आने की जरुर २ भावना रखना।

(आर्या साध्वी चन्द्र श्री जी महाराज साहब
का पत्र सन् १९४२)
श्री बाँठिया जी की सांसारिक माता जिन्होंने
बाँठिया जी को गोद लिया था।

o o o o

ॐ

श्री वीर पुत्र दल,

हैड आफिस-अजमेर

ता० २४ ४ १९४५

श्रीमान् भाई हजारीमल जी बाँठिया
बीकानेर
सप्रेम वन्दे,

वीर पुत्र के इस अंक द्वारा आपको यह तो मालूम ही हो चुका होगा कि वीर पुत्र दल अजमेर ने ता० २८, २९ और ३० मई १९४५ को अजमेर में श्री अ० भा० वीर पुत्र सम्मेलन का प्रथम सम्मेलन करना निश्चित किया है अस्तु।

सभापति के लिये वीर पुत्र के संचालक जी ने आपका नाम सुझाया है दल के समस्त सदस्यो ने भी यही उचित माना अत आपसे निवेदन है कि आप इसके लिये अपनी स्वीकृति यथासम्भव बहुत ही शीघ्र तार द्वारा सूचित करने की कृपा करें इसके लिये हम आपके आभारी होंगे।

समय बहुत कम है अतएव पत्रोतर स्वीकृति सूचक ही प्रदान कीजिएगा।

विशेष निवेदन है कि स्थानीय छात्र-समाज द्वारा ऐसा समारोह करने का यह प्रथम ही अवसर है अत इस कार्य मे आप जैसे परिचित सज्जनो का पूरा सहयोग आवश्यक है।

हम इस अवसर पर एक प्रदर्शनी भी कर रहे हैं जिसमें Stamp, Coins and match collection करने वाले सज्जनों द्वारा अब तक किये गये Collection का प्रदर्शन किया जावेगा तथा पारितोषिक वितरण किया जावेगा। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस संबध मे आप तथा बीकानेर के एक दो सज्जन विशेष दिलचस्पी रखते हैं अतः ऐसे अवसर पर बीकानेर से ऐसे सज्जनों को विशेष रूप से लाने का प्रयत्न अवश्य कीजिएगा।

कार्यक्रम अभिनन्दन पत्र आपको छपने पर शीघ्र ही भेजे जावेगे।

भवदीय
माताप्रसाद श्रीवास्तव
मंत्री

o o o o

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

डा० एल पी टैसीटोरी दिवस का निमत्रण पत्र

बीकानेर दिनाक ८ ११ ५६

श्री हजारीमल जी बांठिया,
ठि रतनचन्द हजारीमल, घटाघर
गली भुर्जियान
हाथरस

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर की ओर से ता० २२ नवम्बर सन् १९५६ को परमादरणीय अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पुरातत्त्वान्वेषक एव राजस्थान व राजस्थानी भाषा के अनन्य भक्त इटली निवासी स्वर्गीय डाक्टर श्री एल पी टैसीटोरी की निधन तिथि हम विशाल साहित्यिक समारोह के साथ मनाने जा रहे हैं। इस अवसर पर महामान्यवर हिज एक्सीलेन्सी इटली के राजदूत के कान्सल डा० टिबेरियो-टिबेरी महोदय डा० टैसीटोरी की नवनिर्मित समाधि का उद्घाटन करेगे तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध भाषा-विज्ञान शास्त्री श्री सुनीति कुमार चटर्जी महोदय उत्सव का अध्यक्षपद सुशोभित करेगे।

अत आपसे सविनय निवेदन है कि आप स्वर्गीय डाक्टर टैसीटोरी महोदय की पुण्य निधन तिथि पर पधारने की अथवा उनके सम्बन्ध के कोई सस्मरण व सदेश अवश्य भेजने की कृपा करेगे।

भवदीय
अक्षयचन्द्र शर्मा
एम ए साहित्यरत्न
प्रधानमंत्री

o o o o

भारतीय लोक-कला मण्डल

उदयपुर (राजस्थान)

दि० २६ ६ ६१

प्रिय श्री बांठिया साहब,

सप्रेम वन्दे। हम सकुशल उदयपुर लौट आये। हाथरस में आपसे प्रथम परिचय के उपरान्त ही अतिशय घनिष्ठता का अनुभव जो हुआ, वह चिरस्मरणीय रहेगा। हाथरस में भारतीय लोक कला मडल के प्रदर्शन को सफल बनाने मे निश्चय ही आपका हाथ रहा है। मैं किन शब्दो में आपके प्रति आभार प्रकट करूं। यद्यपि हमारी हाथरस यात्रा आर्थिक दृष्टि से अधिक सफल नहीं रही, फिर भी आप जैसे कला और साहित्य प्रेमी महानुभावो से जो सबध हुआ है वह हमारी सबसे बडी धरोहर है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आप इस सस्था के जीवन-सदस्य के रूप मे हमारे साथ हमेशा के लिये जुड गये हैं। यह सस्था अब आपकी है और उसके सचालन मे भी अब आप उसके जीवन-सदस्य की हैसियत से कई माने में उत्तरदायी हैं। सस्था के समस्त चुनाव जीवन-सदस्यों में से ही होते हैं। मेरी हार्दिक कामना है कि आप निकट भविष्य मे अवश्य ही उदयपुर आकर सस्था की विविध प्रवृत्तियो का अवलोकन करेगे। यह सस्था लोक कलाओ के क्षेत्र मे जो सेवा कर रही है वह आपसे छिपी नहीं है। हमारी कामना है कि हम निकट भविष्य मे अपने दल के साथ हमारी अतिशय सफल कृति 'मीरा' हाथरस में प्रदर्शित करने के लिये आवे। इस दिशा मे अब आप ही को पहल करनी होगी। इसके लिये कौन-सा उपयुक्त अवसर होगा, इसका निर्णय आप ही को करना है। सस्था ने हाल ही में जो ३ लाख की लागत का भवन बनाया है उससे संस्था पर भारी आर्थिक बोझा आ पडा है। इस बोझे से मुक्त होने मे हमें आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। जो कार्यक्रम विभिन्न नृत्यो का हम हाथरस में दे चुके हैं और जिससे जनता अत्यधिक प्रभावित हुई है, उससे भी अच्छे-अच्छे कार्यक्रम हमारे पास हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने पूर्ण सहयोग और

मुनिराज श्री विद्याविजय जी

अधिष्ठाता
श्री वीरतत्व प्रकाशक मंडल

शिवपुरी(ग्वालियर)
दिन० ५.१०.५०
धर्म स २६

श्रीयुत् भाई हजारीमल जी बांठिया,

धर्मलाभ। आपका पत्र नहीं है किन्तु आपकी तरफ से "डॉ० एल पी टैसीटोरी" लेख की कापी मिली।आपने इस लेख को लिख कर न केवल हमारे मित्र बल्कि मेरे गुरुभाई डॉ० टैसीटोरी की योग्यता को प्रकट किया है। बल्कि जैन समाज के बेकदर कलंक को मिटाने का प्रयत्न किया है। वास्तव मे देखा जाय तो डॉ टेसीटोरी ने जैन समाज की बहुत बडी सेवा की है, बल्कि भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित बनाया है। उस विदेशीचिंतक के प्रति अपनी कृतज्ञता बताने मे हमारी समाज आज तक उदासीन रही है। आपने वाकई मे इस कलंक को दूर किया है।

विशेष साधन नही होते हुए भी आप डॉ टैसीटोरी को उनके वास्तविक स्वरूप मे प्रकट करने मे सफल हुए है। आपका लेख महत्वपूर्ण है। वास्तविक है।

डॉ० टैसीटोरी की इटालीयन भाषा मे छपी हुई एक पुस्तिका मेरे पास है। इसके अतिरिक्त उनकी मृत्यु के बाद लिखा हुआ एक अंग्रेजी लेख भी है, उसमे कुछ कटिंग भी हैं। आप चाहे तो मै रजिस्टरी द्वारा आपके पास भेज दूं। मैं अभी भेज देता, परन्तु आपके पते में मुझे शंका रही है इसलिए आपका ठीक पता मिलने से भेज दूंगा।

डॉ० टैसीटोरी से भी कई गुनी ज्यादा सेवा जर्मन विदुषी डॉ० क्रौझ (सुभद्रा देवी) ने की है और कर रही है। इसकी सेवा का कार्य इतना विशाल है कि जितना लिखा जाय, उतना कम है। इस समय ऐसी विदुषी की विद्वत्ता का लाभ मध्य भारत सरकार काफी ले रही है। एज्युकेशन डिप्टी डायरेक्टर के ओहदे पर वह है। पांच सौ पचीस रुपये मिलते हैं। कोई हिन्दुस्तानी जो काम नहीं करता– नहीं कर सकता वह काम डॉ० क्रौझे कर देती है और यशस्विनी बनती है।

पत्रोत्तर दे। मेरे योग्य लिखे।

आपका शुभेच्छुक
विद्या विजय

o o o o

बदरी प्रसाद साकरिया

श्री हजारीमल जी,

कल देरी से आपका एक पोस्टकार्ड मेरे नाम से पता किया हुआ किसी अन्य का मिला जो लौटा रहा हूं। संभव है मेरे नाम का पोस्टकार्ड बदले मे इन महानुभाव को पहुंच गया होगा। अतः उसमें के लिखे समाचारो को पुनः लिखिये और मेरे पत्रों का सविस्तार उत्तर दीजिये।

आप एक पत्र श्री अक्षयचंद्र जी, प्रधानमंत्री को और एक लालचंद जी कोठारी के नाम एक ही लिफाफे मे मेरे पते से दे जिनमे उन्हे लिखिये कि "कब्र का निर्माण, बदरी प्रसाद को दिये गये पूर्व पत्र के अनुसार शीघ्र करवा दें और इन्स्टीट्यूट के तत्वावधान मे मेरे पिताश्री की स्मृति मे मेरे नाम से उस पर शिलालेख लगवा दे"। इटली के रुपये अभी तक तो नही आये है। आयेगे जरूर। लेख पर पुरस्कार की घोषणा पत्रों से भेज दी है। शेष फिर।

मेरे पत्रो का उत्तर और उपरोक्त दोनो पत्र शीघ्र भेजे। कब्र निर्माण का काम लाल चंद जी को सौंपा गया है और उन्हें आपके लिखे पत्र को पढ़वा दिया है। [illegible] जी को भी संक्षिप्त मे समाचार कह दिये हैं। पर अमुक रकम भेज देने का लिखा है का नही कहा है। लाल चंद जी आदि को भी अभी उन्हे जिकर नही करने का कह दिया है। प्रधानमंत्री के नाम के पत्र मे आप अपने परामर्श भी लिखें। सुनीति बाबू ने २० नवम्बर को आने की स्वीकृति दी है। २२ की शाम को यहा से दिल्ली चले जायेगे। अभी वे पूना है।

बदरी प्रसाद साकरिया
२८.१०.५६ बीकानेर

प्रधानमंत्री के नाम भी दूसरे तीसरे पत्र देते रहें।
(बदरी प्रसाद साकरिया)

o o o o

J. K.
ORGANISATION

KAMLA TOWER KANPUR

2nd March, 1964.

The Secretary
Uttar Pradesh Marwarai Sammelan,
Reception Committee,
HATHRAS

Dear Sir,

I thank you for your letter of the 25th ultimo inviting me to the Third Annual Session of U.P. Marwari Sammelan to be held on the 15th and 16th March, 1964. Since I will be out of Kanpur on these days, I am very sorry that I will not be able to come and meet you all gentlemen. Meanwhile, I send my hearty Greetings and wish all success to the Sammelan.

Yours faithfully

Sd. Padampat Singhania

0000

GOENKA NIVAS,
19, BELVEDERE ROAD,
CALCUTTA-27
२, मार्च, १९६४

स्वागत मन्त्री,
उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन,
तृतीय अधिवेशन,
हाथरस।

मान्यवर महोदय,

उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन के उपलक्ष मे आपके निमन्त्रण-पत्र के लिये धन्यवाद। मुझे खेद है कि स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण इस अवसर पर नहीं आ सकूगा।

सम्मेलन की सफलता के लिये मेरी शुभकामनाऐ स्वीकार करें।

आपका
बद्री दास गोयनका

o o o o

Ram Ratan Gupta 16-Cantonment,
Kanpur

No. 678 March 3rd, 1964.

Shree Hazarimull Banthia,
Secretary
Uttar Pradesh Marwari Sammelan,
H A T H R A S

Dear Sir,

I thank you for your letter and am glad to note about the third annual Sammelan

I wish the Sammelan all success. I, however, regret that I shall not be able to attend it personally due to my Vrat.

Thanking you.

Yours sincerely,
(RAM RATAN GUPTA)
M.P.

0000

you for your kind invitation to attend the Third Annual Session of Uttar Pradesh Marwari Sammelan to be hold on March 15, 1964. Due to previous engagements, I much regret my inability to be present on this occasion. I wish this function all success.

Yours faithfully

(GUJAR MAL MODI)

0 0 0 0

राजपुर २. ३. ६४

सेठ हजारीमल बांठिया,
मारवाडी सम्मेलन
हाथरस
जिला–अलीगढ।

प्रेम। धन्यवाद। फिर याद किया। कृपा की। खेद है यह कि यहा भी उत्सव की तैयारी करनी है, इन तिथियो मे नहीं पहुच सकूगा। सफल हो आपका उत्सव। आशीर्वाद है मेरा।

(म x प्रताप)
राजा महेन्द्र प्रताप

o o o o

ब्रिजलाल बियाणी
अकोला (विदर्भ)

५१/५२. जावरा कम्पाउन्ड
इन्दौर (मध्य प्रदेश)
२-३-६४.

भाई हजारीमलजी
सविनय वन्दे।

आपका ता० २५–२ का कृपा पत्र आज मिला। आभारी हूं। कुछ दिन हुवे मै इन्दौर आ गया। उत्तरप्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन का अधिवेशन हाथरस मे हो रहा है, जानकर हर्ष है। आने के लिए मे आपका निमन्त्रण है और है आग्रह, मै आपका आभारी हूं। यदि मै हाजिर हो सकता तो मुझे प्रसन्नता होती और सम्मेलन मे आप सब बन्धुओं का दर्शन करने का अवसर मिलता। परन्तु इन दिनो मे मैंने अन्य कार्य स्वीकार कर लिये है, हाजिर नही हो सकूगा। क्षमा चाहता हू।

सम्मेलन सफल हो तथा उसके द्वारा किये गए निर्णय समयानुकूल व्यापक व क्रियात्मक हो। निर्णयो का मूल्य और शक्ति क्रिया मे होती है। निर्णय केवल मौखिक स्वीकृति है। बिना कृति के मौखिक स्वीकृति निर्बल और प्रभावहीन रह जाती है। मारवाडी समाज मे सामयिक निर्णयो की आवश्यकता है, पर अधिक आवश्यकता है निर्णयो के अनुसार व्यवहार करने की। आशा है इस ओर पूरा ध्यान दिया जायेगा।

आपका भाई,
ब्रिजलाल बियाणी

श्री हजारीमलजी बांठिया,
स्वागतमंत्री, स्वागत समिति,
उत्तर प्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन

SARDAR HUKAM SINGH
SPEAKER, LOK SABHA

20, AKBAR ROAD,
NEW DELHI 3-3-64

श्री धन्ना लाल जी,

उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन में भाग लेने का निमत्रण मिला। आभार।

लोक सभा का अधिवेशन चालू होने की वजह से मेरा आना सम्भव नहीं होगा। आपके अधिवेशन की सफलता चाहता हूँ।

आपका
हुकम सिंह

o o o o

शान्ति प्रसाद जैन

११, कलाइव रो,
कलकत्ता–१
४–३–६४

प्रिय श्री हजारीमल जी,

उत्तर–प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन का निमन्त्रण पत्र मिला। यह जान कर प्रसन्नता हुई कि श्रीमती सुचेता कृपलानी इसका उद्घाटन करेंगी। मैं सम्मेलन की सफलता चाहता हूं।

आपका
शान्ति प्रसाद जैन

श्री हजारीमल बांठिया,
स्वागतमत्री, यू० पी० मारवाडी सम्मेलन,
हाथरस।

o o o o

DUGAR BROTHERS

BULLION & GUNNY MERCHANTS.

5A, LORD SINHA ROAD,
CALCUTTA

Dated. 5.3.1964

श्री हजारीमल जी बाँठिया,
स्वागत मन्त्री,
उत्तर–प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन,
हाथरस।

निमन्त्रण पत्र आपका मिला धन्यवाद। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन दिनाक १५–१६ मार्च १९६४ को हाथरस मे समाज के कर्मठ नवयुवक एव ससद सदस्य श्री सीताराम जी जैपुरिया के सभापतित्व मे होने जा रहा है। साथ ही श्रीमती सुचेता कृपलानी सम्माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के कर कमलो द्वारा उद्घाटन होने जा रहा है यह और भी प्रसन्नता की बात है।

मैं इस शुभ अवसर पर अवश्य हाजिर होता लेकिन मुझे बम्बई में अणुव्रत भवन का उद्घाटन करने बम्बई इन्हीं दिनो जाना है। वहाँ से महाराष्ट्र में सागली भारत जैन महामडल के निमन्त्रण पर जाऊगा। इस तरह मेरा प्रोग्राम उस ओर पहुँचने का पहले से ही हो गया है। मैं हृदय से सम्मेलन की सफलता चाहता हूँ। आशा है इस सम्मेलन मे समाज के विकास एवं और बातो पर विचार होगा।

सोहन लाल दुगड़

o o o o

नवभारत टाइम्स,
दिल्ली
३ मार्च, ६४

प्रिय महोदय,

आपका २८ फरवरी का पत्र मिला. धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन हाथरस मे होने जा रहा है। आपने इस अवसर पर मुझे याद किया है किन्तु खेद है कि मैं १५ मार्च से एक सप्ताह के लिये पूर्व कार्यक्रम के अनुसार दिल्ली से बाहर रहूंगा। इसलिए आना सम्भव न होगा।

सम्मेलन पूरी तरह सम्पन्न हो, इसकी कामना करता हू।

भवदीय
(अक्षय कुमार जैन)
सम्पादक

श्री हजारीलाल बांठिया,
स्वागतमंत्री,
हाथरस

० ० ० ०

हनुमानबक्स कनोई

स्थान: श्री विष्णु भगवान मन्दिर
मारवाड़ी पो० [illegible], असम।

दिनांक ३-३-६४

श्री हजारीमलजी बांठिया,
स्वागतमंत्री, उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
तृतीय अधिवेशन स्वागत समिति
पो० हाथरस, उत्तर प्रदेश।

प्रिय महोदय

उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन का निमन्त्रण-पत्र प्राप्त हुआ। आमन्त्रण के लिए अनेकशः धन्यवाद।

उक्त समय पर अन्य कार्यक्रमों में आबद्ध होने के कारण उपस्थित होने मे असमर्थ हूं। क्षमा चाहता हूं, अपनी असमर्थता के लिए। आशा है इस अधिवेशन मे, जब कि समाज के विशिष्ट नेतागण पधार रहे हैं, उक्त प्रदेश, समाज तथा देश की जटिल समस्याओं का समाधान होगा और समाज में नयी चेतना व नयी स्फूर्ति आवेगी।

अधिवेशन की अनुपम सफल कामना करता हुआ

आपका
हनुमानबक्स कनोई

० ० ० ०

मन्नीलाल नेवटिया

नेवटिया हाउस
([illegible])
कानपुर।
३ मार्च १९६४

सेवा मे,
स्वागत मंत्री,
उत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन,
हाथरस

महोदय,

आपका निमंत्रण पत्र तो मिला ही था, साथ में व्यक्तिगत पत्र भी मिला. आप जिस लगन से कार्य कर रहे है, उसके लिए धन्यवाद।

हार्दिक इच्छा है कि सम्मेलन में उपस्थित रह सकूं, और आप लोगो के दर्शन लाभ करूं। यदि किसी कारणवश आना न हो सका तो उस परिस्थिति में यहीं से सम्मेलन की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

कृपाकांक्षी
मन्नीलाल नेवटिया

० ० ० ०

RAJPUR,
DEHRADUN, INDIA
Dated. 5th March 64

प्रिय सेठ हजारीमल बाँठिया जी
प्रेम!

आपका दुबारा न्यौता मिला। प्रेम बुलाता है। अब राजा भिखारी है, "भिक्षु" जैसा बुद्ध भगवान ने कहा नाम रखा। माड़वाडी सेठो के सेठ है, यदि इतना कर सके कि कोई आये यहा, करे किराया टैक्सी, ले जाय मुझको १४ को और छोड जाय १६ को तो मैं आ सकता हूँ। या भेजिये कार हाथरस से लेने और वापिस पहुँचाने को। नहीं तो क्षमा करिये। फिर भी मेरा आशीर्वाद भेजता है।

प्रेम म x प्रताप

o o o o

७ मार्च १९६४

श्री हजारीमल बाठिया,
स्वागत मन्त्री, उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन,
तृतीय अधिवेशन,
हाथरस

महोदय,

आपका निमन्त्रण पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन का अधिवेशन प्रसिद्ध समाजसेवी, संसद सदस्य तथा जनप्रिय श्री सीताराम जी जैपुरिया की अध्यक्षता मे दिनाक १५-१६ मार्च को सम्पन्न होने जा रहा है। मेरी शुभकामनायें आपके साथ हैं और मैं विश्वास करता हूं कि अधिवेशन हमारे समाज और हाथरस की ख्याति के अनुरूप ही होगा। यह भी विश्वास है कि अधिवेशन प्रदेश के एवं समस्त देश के मारवाडी समाज के लिए मगल जनक और प्रेरणा मूलक सिद्ध होगा।

मैं अधिवेशन मे उपस्थित होने एव उसमें भाग लेने के लिए उत्सुक हूं किन्तु स्वास्थ्य की अनिश्चित वर्तमान अवस्था को देखते हुए कहा नहीं जा सकता कि अधिवेशन मे उपस्थित होने की मेरी अभिलाषा पूर्ण होगी कि नहीं। यदि स्वास्थ्य ने अनुमति दी तो मैं अवश्य उपस्थित होऊंगा।

अधिवेशन की सफलता के लिए एक बार फिर मैं शुभकामना व्यक्त करता हू।

योग्य सेवा लिखते रहे।

भवदीय
(गिल्लूमल बजाज)
५७/११२, काहू कोठी
कानपुर-१

o o o o

G. D. Somani

58, SUNDER NAGAR
MAHURA ROAD,
NEW DELHI.
7-3-64

प्रिय श्री हजारीमल जी,

सप्रेम वन्दे!

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आगामी ता० १५/१६ मार्च को उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन हाथरस में हो रहा है। श्रीमान गजाधरजी सोमानी ता १५ मार्च को वृन्दावन से कार द्वारा सम्मेलन मे सम्मिलित होने का प्रोग्राम बना रहे हैं तथा उसी दिन वृन्दावन वापिस लौट जावेंगे, कारण अभी भी डाक्टरों की राय है कि उन्हें अधिक नहीं उठाना चाहिये।

अत कृपया लिखें कि अधिवेशन की कार्यवाही ता १५/३ को किस समय शुरू की जायेगी ताकि उसके अनुसार प्रोग्राम बनाया जा सके।

आशा है अधिवेशन की तैयारियां सुचारू रूप से हो रही होगी।

विशेष शुभ।

आपका
(चान्दरतन मोहता)

श्री हजारीमल बांठिया
हाथरस

MINISTER
LAW, LOCAL SELF-GOVERNMENT AND PANCHAYET DEPARTMENTS
WRITERS' BUILDINGS
CALCUTTA-1

THE 5-3-1964

प्रिय बन्धुवर

आपका पत्र ता० १ का प्राप्त हुआ।

वहां के समाचार मालूम हुए। लुणियाजी कलकत्ते वापस आ गये हैं। हम लोग १३ ता० को चलकर दिल्ली मेल से १४ को हाथरस पहुचेंगे। जो लोग जा सकेंगे उन्हें ले जाने का प्रयास किया जायगा। किन्तु अधिक दूर होने के कारण और खर्च तथा समय दोनो ही अधिक लगने के कारण अधिक आदमियों का आना मुश्किल होगा।

आपके वर्तमान अध्यक्ष श्रीप्रकाशजी को तो आप लोगो ने लिखा ही होगा। सम्मेलन का कार्य सुचारु रूप से हो उसकी आप लोग व्यवस्था कर ही रहे होंगे और आगे भी अवश्यमेव करेंगे।

भवदीय
(ईश्वरदास जालान)

श्री हजारीमलजी बांठिया,
स्वागत मंत्री—स्वागत समिति
(तृतीय अधिवेशन) उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
पो०—हाथरस (अलीगढ़) उ०प्र०

o o o o

जगजीवन राम

७ [illegible]
नई दिल्ली-१

दिनांक [illegible]

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन १५-१६ मार्च ६४ को हाथरस में होने जा रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। अधिवेशन का सभापतित्व कर रहे हैं श्री सीताराम जैपुरिया जो एक सफल उद्योगपति होने के साथ ही साथ प्रगतिशील विचार वाले, उत्साही और कर्मठ युवक हैं। देश इस समय एक नाजुक परिस्थिति से गुजर रहा है। तेजी से बढ़ते हुए दाम चिन्ता के विषय बने हैं। इन्हें नहीं रोका गया तो कितने ही क्षेत्रों में महान अनिष्ट की आशंका है। मारवाड़ी सम्मेलन इसके लिए सिर्फ व्यावहारिक सुझाव ही नहीं दे सकता वरन् व्यावहारिक कदम भी उठा सकता है। आशा है सम्मेलन में पधारे विद्वान एवं विचारक सामाजिक समस्याओं, देश की एकता और राष्ट्रीय उत्थान सम्बन्धी विषयों पर विचार विनिमय करेंगे।

सम्मेलन सफल हो।

जगजीवन राम

o o o o

में व्यस्त होने के कारण मैं इस शुभ–अवसर मे अनुपस्थिति के लिये क्षमा चाहता हूँ।

मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ।

सधन्यवाद।

आपका
(पन्नालाल बारूपाल)
एम०पी०

श्री स्वागत मंत्री,
उत्तर प्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन,
हाथरस(उ०प्र०)

0 0 0 0

Rameshwar Tantia,
Member of The House of the People

12.D.Ferozshah. Road,
New Delhi
March 12,1964

The Chairman,
Reception Committee,
Uttar Pradeshiya Marwari Sammelan,
Hathras.

Dear Sir,

I am in receipt of your invitation for the Third Session of the Marwari Sammelan and thank you for the same. I would have very much liked to attend the session but due to pre occupation in an educational tour proceeding to Sikar wherein a good number of Members of Parliament are going, it would not be possible for me to join.

I am sure the Session will look to various aspects of developing the Society. I, however wish all success to the Session.

Yours faithfully
(Rameshwar Tantia)

0 0 0 0

ARJUN AGARWALA
P/2684/63-64

JHARIA
12th March,64

Dear Banthiaji,

Our Union Minister for Coal Mines Sri. Subramaniam is visiting our collieries from 14th to 17th. So it is not possible to attend the conference.

I had a great desire to meet friends and especially to sponsor the cause of higher education of our society. For reasons given above I am unable to attend Kindly excuse.

I hope efforts will be made to raise funds for the needy students of our community.

Wish the function every success.

Yours sincerely,
Arjun Agarwala

Sri Hajarimall Banthia,
U.P.Marwari Sammelan,
Hathras

0 0 0 0

भँवरमल सिंघी

'सुस्मिता'
१६२/२६/१प्रिंस अनवर शाह रोड,
कलकत्ता–४५

१२ ३ ६४

प्रिय भाई हजारीमल,

आपका दिनांक ५.३.६४ का पत्र मिला। आपके स्नेहपूर्ण आग्रह के लिये बहुत–बहुत आभारी हूँ, पर किसी तरह भी अभी कलकत्ता से बाहर निकलना सम्भव नही होगा. इसलिये क्षमा ही चाहूँगा। यही स्थिति सुशीला की भी है, क्योंकि परिवार–नियोजन के शल्य

गोवर्द्धनदास बिनानी

३८, स्ट्राण्ड रोड
कलकत्ता–१
दिनाँक: १०.३.६४

श्रीमान स्वागत मंत्रीजी,
उत्तर–प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन,
हाथरस।

प्रिय महोदय,

मारवाडी सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन का निमंत्रण–पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। इस अधिवेशन में सम्मिलित होने की मेरी हार्दिक इच्छा थी किन्तु कारणवश शामिल नहीं हो सकूंगा–इसके लिये क्षमा चाहता हूं।

यह अधिवेशन पूर्ण रूप से सफल हो एवं देश तथा समाज की सर्वांगीण उन्नति में सहायक हो, यह मेरी अभिलाषा है।

भवदीय
(गोवर्द्धनदास बिनानी)

o o o o

CHIEF MINISTER
UTTAR PRADESH

लखनऊ
दिनांक ११मार्च १९६४

मारवाडी सम्मेलन जाति, वर्ग, सम्प्रदाय भेद से रहित अखिल भारतीय स्तर पर समाज एवं देश की सेवा लगभग तीस वर्षों से करता आ रहा है। इसका उद्देश्य समाज का हर प्रकार से विकास करना है जिससे वह देश की प्रगति में समुचित रूप से सहायक हो सके। कोई भी संस्था सम्मेलन आदि तभी सफलता प्राप्त कर सकते हैं जब

ये अपने पवित्र उद्देश्य पर अटल रहें और उसी के अनुसार कार्य करें। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उत्तर प्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन का तृतीय महाधिवेशन आगामी [illegible] को हाथरस में होने जा रहा है। इसका यह प्रयास स्तुत्य है। मेरी धारणा है सम्मेलन समाज सेवा एवं समाज सुधार के क्षेत्र में बिना किसी भेद भाव के कार्य करता रहेगा और अपना कार्यक्षेत्र निरंतर बढ़ाता रहेगा।

इस सम्मेलन की सफलता की कामना करती हूं।

सुचेता कृपालानी

संयोजक,
उत्तर प्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन,
स्वागत समिति कार्यालय,
हाथरस।

o o o o

पन्नालाल बारूपाल — फोन : [illegible]
संसद सदस्य (लोक सभा) — [illegible] नई दिल्ली
अध्यक्ष — लक्ष्मी निवास [illegible]
जगजीवन सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट — बीकानेर (राजस्थान)

दिनांक [illegible] मार्च १९६४

प्रिय बन्धु,

आपका पत्र दिनांक [illegible] प्राप्त [illegible] यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उत्तर प्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन [illegible] अध्यक्षता में सम्पन्न होने जा रहा है। [illegible]

मे आने के लिये आचार्यश्री का फरवरी माह में नीचे अनुसार कार्यक्रम रखा जा सकता है।

दिनांक १८फरवरी को सुवह अपर इंडिया एक्सप्रेस स पहुचना एव १८ तारीख के सुवह एव शाम तथा १६ तारीख क सुवह एव शाम ४ प्रवचनो का आयोजन आप रख सकते हैं। एवं लौटने के लिये १६ फरवरी की रात्रि को अपर इडिया एक्सप्रेस से लौटना।

अभी १ जनवरी को आचार्यश्री फीरोजाबाद बोल रहे हैं, वहा पर सुवह एव शाम दो प्रवचन होगे। वहा पर आप अन्य जानकारी चाहते हो तो नीचे लिखे पते पर ले ले।

श्री हरभजनलाल शास्त्री सयोजक श्री सात्विक विष्णु महायज्ञ, फीरोजाबाद (आगरा) फोन न० १३०

फीरोजाबाद आपके नजदीक हो और आप सुनने पहुच सकें, इसलिये ऊपर लिखी सूचना आपको दी है। आप आचार्यश्री के कार्यक्रम रखने सवधी सूचना शीघ्र दे, ताकि अन्य स्थानो का वैसा कार्यक्रम हाथ में लिया जा सके।

शुभकामनाओ तथा प्रणाम सहित।

जवलपुर
२३दिसम्बर, ६५

विनम्र
(अरविन्द कुमार)
निजी सचिव

आचार्य श्री के जीवन दृष्टिकोण को समझने के लिये आपके पते पर अलग से दो किताबे प्रेषित की हैं, जो आपको मिलेगी ही।

०००००

सत्याश्रम वर्धा (महाराष्ट्र)

तारीख २६.१२.१९६५

श्री बांठिया जी,

सादर जयसत्य,

पू० स्वामीजी के प्रवचन के विषय मे आपका पत्र आया। इस समय पू० स्वामीजी का दौरा उत्तर प्रदेश की ओर नहीं है। अगर आप उनकी प्रवचन माला के लिये ही हाथरस बुलाना चाहें तो उनके आने के नियम पढकर और उसके अनुरूप आर्थिक व्यवस्था कराये फिर निमंत्रण भेजे। स्थान यहा से काफी दूर है इसलिये खर्च भी अधिक आयेगा।

पू० स्वामीजी अभी एकाध माह नहीं आ सकेंगे। उसके बाद अन्य कार्यक्रमों का विचार करके समय दिया जा सकेगा। इस पत्र के साथ छपी हुई नियमावली और पू० स्वामीजी के विचारो का संक्षिप्त भेजा जा रहा है। अगर आप की सोसाइटी पू० स्वामीजी के विचारो के प्रचार के लिये उत्सुक हो तभी आप निमत्रण भेजें।

आपका
सुधीर कुमार सत्याम
प्रबन्धक सत्याश्रम
वर्धा

००००

Chandmall Sarawgi

Gauhati
15-1-66

श्रीमान् हजारीमल जी साहेब,
द्वारा रतनचन्द हजारीमल एण्ड क०
हाथरस।

सादर जयजिनेन्द्र।

हमारे एस०टी०कं० के मैनेजर के नाम आपका लिखा पत्र पा बडी प्रसन्नता हुई। खुशी तो इस बात की है कि आप हमारे सिर्फ आडतिया ही नहीं, घरेलू मामलो में भी रूचि रखते हैं।

मैं तारीख २०१६६ को यहा से बरौनी होता हुआ २२१६६ को शाम को आसाम मेल से जो आपके यहां हाथरस स्टेशन पर दोपहर को १ बजकर २५ मिनट पर पहुँचती है,

शिविरों के कई कार्यक्रम उसने बहुत दिनों पहले से तय कर रखें हैं, जिनके आयोजन की जिम्मेदारी उस पर है। फिर किसी अवसर पर आप लोगों की सेवा में आयेंगे।

आप लोग जिस प्रकार उत्साह और लगन से कार्य कर रहे हैं उसको देखते कोई सदेह नहीं कि उ०प्र० मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन पूर्णतया सफल होगा और प्रदेश के मारवाड़ी समाज को उचित मार्ग दर्शन मिलेगा।

पुन क्षमा प्रार्थी

आपका
भंवरमल सिंघी

o o o o

Mahaliram Lachmandas
Bankers & Merchants — Khurja 13-3-64

श्री राम जी :

श्री हजारीमल बाठिया,
स्वागत मंत्री,
उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन,
हाथरस।

प्रिय महोदय,

आपका निमंत्रण पत्र उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन तृतीय अधिवेशन,जो हाथरस में होने जा रहा है का प्राप्त कर कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। जिसके लिये मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मैं सम्मेलन में जहां तक होगा अवश्य ही सम्मिलित होने का प्रयास करुंगा।

धन्यवाद सहित,

शुभेच्छु
(रामेश्वरलाल जटिया)

o o o o

सीताराम जैपुरिया
संसद सदस्य
स्वदेशी हाउस कानपुर

मार्च १७, ६४ ई०

प्रिय भाई हजारीमल जी,

उत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन को सफल बनाने हेतु आपने जो सक्रिय सहयोग दिया, उसके लिये अनेकानेक धन्यवाद।

अधिवेशन अत्यंत महत्वपूर्ण और आनंदमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ यह हम सभी के लिये हर्ष और गौरव की बात है।

कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये।

योग्य सेवा लिखे।

आपका
(सीताराम जैपुरिया)

श्री हजारीमल जी बाठिया,
स्वागत मंत्री,
उत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन,
हाथरस।

o o o o

Acharya Rajnish

प्रिय श्री बाठिया जी,

आपका प्रीतिपूर्ण आमंत्रण आचार्यश्री को मिला है। अभी दिसम्बर के आखिरी सप्ताह में आचार्यश्री पूना, फिर बम्बई तथा फीरोजाबाद बोल रहे हैं। [illegible] माह में भी [illegible] [illegible] है और तदनुसार, निर्धारित [illegible] [illegible] स्थानों में आचार्यश्री बोल रहे हैं। [illegible] के कार्यक्रम -

दिया था जिसके साथ हमने श्री नदलालजी कानोडिया को पत्र दिया था उसकी प्रतिलिपि भेजी थी मिली होगी।

इस विषय मे श्री नंदलाल जी कानोडिया से हमारी टेलीफोन से बात हो गई है। श्री मुरलीधरजी पोद्दार की लड़कियों को देखने के लिये उनका आदमी हाथरस आयेगा। लडकी अगर पसद आ जायेगी तो सबध हो जायेगा। लडका बहुत बढिया और प्रतिभावान है। इनके पास कई करोड रूपये हैं, बहुत सी इडस्ट्रीज है। यह लडका सर बद्रीदासजी गोयन की दोहिती, श्री केसरदेव जी जालान फर्म सूरजमल नागरमल की लडकी से ब्याहा था। लडका श्री रामकुमारजी केजरीवाल का दोहिता है। जब इनका आदमी आवे तो श्री मुरलीधर जी पोद्दार के यहा लड़कियों को दिखलाने की समुचित व्यवस्था करवा दीजियेगा।

योग्य सेवा लिखे।

आपका
(मुगतूराम जैपुरिया)

श्री हजारीमल जी बाठिया
मैसर्स रतनचन्द हजारीमल एण्ड कम्पनी
घटाघर,
हाथरस

पुनश्च आपसे अभी–अभी टेलीफोन से भी बात हो गयी है।

प्रतिलिपि श्री मुरलीधर जी पोद्दार – हाथरस
श्री मदनगोपालजी बागला – हाथरस

o o o o

प्रकाश-मानपुर
(यथा) सेवाश्रम, सिगरा,
वाराणसी–१
७ ३ १९६७

मान्यवर नमस्कार

आप कृपाकर मुझे कल अपनी बैठक मे ले गये, इसके लिए मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। मुझे सब भाइयों और बहिनो से मिलकर बडा आनन्द हुआ। आपने मेरा इतना सम्मान किया एतदर्थ मैं हृदय से अनुग्रहीत हू। मेरी शुभकामना है कि सम्मेलन और उसके सदस्यगण सदा सुखी और सफल रहे। सधन्यवाद

आपका
श्री प्रकाश
(भू० पू० राज्यपाल)

श्री हजारीमल जी बाँठिया
उत्तर प्रदेशीय मारवाडी सम्मेलन
हाथरस

o o o o

सेवाश्रम, सिगरा
वाराणसी–१
३० ३ १९६७

प्रियवर श्री बाठिया जी

आपका ६ मार्च का कृपा पत्र मिला था। अनेक धन्यवाद। आपकी बैठक में जाकर और श्री तुलसीदेवी स्मृति भवन को देखकर मुझे वास्तव में बडी प्रसन्नता हुई। आप सब मित्रो ने मेरा इतना सत्कार किया उसके लिए अनुगृहीत हूँ। मेरी शुभकामना है कि आप सब सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहे।

आपका
श्री प्रकाश

श्री हजारी मल जी बाठिया
उत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन
गली भुर्जियान, हाथरस

o o o o

होता हुआ श्री महावीर जी २३.९.६६ को पहुँचूगा। स्टेशन पर दर्शन दे सके तो बडी प्रसन्नता होगी। सगाई बावत गाना से आकर समाचार देगे।

पत्र दें, योग्य सेवा लिखता रहे,

आपका

चांदमल

[गौहाटी (आसाम) के सुप्रसिद्ध उद्योगपति, दानवीर एवं समाजसेवी, सुजानगढ (बीकानेर) निवासी श्री चांदमलजी सरावगी]

o o o o

SWADESHI HOUSE
KANPUR -1

Dated 16-8-66

प्रिय हजारीमल जी

पत्र आपका दिनाक ६.८.६६ का काका हाथरसी हीरक जयती समारोह के सबंध मे प्राप्त हुआ। शुभकामना सदेश साथ भेज रहा हूँ।

ट्रस्ट डीड के लिये श्रीरामबाबूलाल को भी मैंने पत्र दिया है। आशा है ट्रस्ट डीड सही होकर जल्दी ही आ जायेगी।

मै ता० १८ अगस्त से २५ अगस्त ,६६ तक दिल्ली रहूगा। श्री कांतिलाल को आप इस अवधि के मध्य दिल्ली भिजवा सकते है।

आशा है आप आनंद-पूर्वक होंगे। योग्य सेवा लिखें।

आपका

(सीताराम जैपुरिया)

श्री हजारीमल जी बांठिया
हाथरस।

o o o o

फोन [illegible]

डा० हरिवंशलाल
मेडीकल सुपरिन्टेन्डेन्ट

हरी आई हॉस्पिटल
हाथरस [illegible]

प्रिय बांठिया जी

आपका पत्र दिनांक ३०.८.६६ का प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आप काका हाथरसी की हीरक जयती मनाने जा रहे है। मुझे श्री काका से सदा से ही स्नेह रहा है और मैं उनका आदर करता हूँ। वह हमारे नगर के एक प्रतिभावान कवि हैं और हमें उन पर गर्व है। उनका हीरक जयती के रूप मे अभिनंदन उचित ही होगा।

आपने जो मुझे स्वागत समिति का सदस्य मनोनीत किया है एतदर्थ धन्यवाद। मुझे खेद है कि अर्थाभाव के कारण मै सदस्यता शुल्क न दे सकूंगा। अतः आप इस स्थान पर किसी धनवान व्यक्ति को ही मनोनीत कर लें अच्छा रहेगा। यदि मै बिना कुछ दिये- लिये ही आप के इस शुभ कार्य मे कुछ काम आ सकूं तो मेरी सेवायें समर्पित हैं।

शुभ कामनाओं सहित

आपका

(हरिवंशलाल)

श्री हजारीमल बांठिया,
संयोजक, काका हाथरसी हीरक जयती समारोह
हाथरस। उ०प्र०

o o o o

SWADESHI HOUSE
KANPUR

दिसम्बर १८, १९६६

प्रिय हजारीमल जी,

आपके दिनांक ६ दिसम्बर ६६ के पत्र के [illegible]
मे चि० सीताराम ने ता० ११ दिसम्बर ६६ को आपको पत्र

सेवा में,

८ ६ ६७

श्रीमान हजारीमलजी बांठिया हाथरस
सादर जय जिनेन्द्र!

महोदय,

आपको सूचित करते परम प्रसन्नता है हमारी श्री ओसवाल सभा बीदासर का ३८ वा वार्षिक अधिवेशन आगामी ता० ५–६ जुलाइ को होना निश्चित हुआ है। उक्त अधिवेशन मे सभा आपकी उपस्थिति को वदनीय समझती हुई आपको निमत्रित करती है। आप जैसे उत्साही और युवक हृदय को पाकर सभा अगले कार्यक्रम को विशेष उपयोगी बना सकेगी ऐसी आशा है। सभा कस्बे बीदासर की अपने समाज भी एक प्रतिनिधि सस्था होने का दावा कर सकती है। बीदासर मे जो भी सामाजिक तथा सार्वजनिक गतिविधि नजर आ रही है सब इस सभा की देन है। सभा के अधिवेशन मे शामिल होने का कार्यक्रम अवश्य ही बनायेंगे।

सभा के अधिवेशन के दूसरे दिन यानि ६ जुलाई को हम लोग कुछ सास्कृतिक कार्यक्रम रखना चाहते हैं उसमे काका हाथरसी तथा उनकी पार्टी को बुलाना चाहते हैं सो वह कार्यक्रम किस प्रकार तय हो सकता है कृपया सारी जानकारी प्राप्त करके लिखे। काका के आने से कार्यक्रम मे विशेष जिन्दा दिली आ सकती है क्योकि इस क्षेत्र मे भी काका का नाम प्रसिद्ध है। काका बृजकला केन्द्र के माध्यम से अच्छे कार्यक्रम पेश करते आ रहे हैं लिहाजा हमारी भी मशा है कि काका तथा उनकी पार्टी को आह्वान किया जावे।

आपको तकलीफ दी जा रही है लेकिन हमे उम्मीद है कि आप इसको तकलीफ महसूस नहीं करेंगे। सारी बात की जानकारी यथा शीघ्र देवें ताकि हम अपना कार्यक्रम उसी तरह प्रचारित कर सकें।

इस अधिवेशन मे एक सामाजिक सम्मेलन का आहवान किया जावेगा।

विशेष धन्यवाद।

भवनिष्ठ
केसरीचन्द सिंघी
आनरेरी सेक्रेटरी
श्री ओसवाल सभा बीदासर (राजस्थान)

o o o o

बीकानेर
१२/७/६७

चिरं० हजारी

शुभाशीष

एक्सप्रेस डिलेवरी पत्र अभी मिला। आम की बिल्टी भेजी धन्यवाद। डा० हरीश मेरा यहा अभी डूँगर कालेज में आया था। विनय सागरजी से उसकी बातचीत हो गई है। पैड जो तुमने छपाया वह इतना सुन्दर नहीं। इसलिए दूसरा छपाने की आवश्यकता है। हरीश कह रहा था कि अभी वह शायद यहां से राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर में डायरेक्टर के रूप में गया होगा। दाल की मील चल रही होगी। कानपुर का भाडा लगा रहा है। कुछ निर्णय कर लेना अच्छा था। दाल तेल का बाजार किस तरह रहा। सिल्चर करीमगज क्या माल भेजा। बुकिग खुला होगा।

वास्ते अगरचंद नाहटा

o o o o

श्री हजारीमलजी बांठिया,

आपका १८ ६ ६७ का पत्र मिला। यह जानकर खुशी हुई कि नाहटा जी का अभिनन्दन करने के लिए समिति बनी है। आपने इस कार्य में मेरा सहयोग मांगा सो इस कार्य मे मेरा सहयोग रहेगा।

आप इस संबध में जो विज्ञप्ति प्रकाशित करना चाहते हैं वह मेरे पास विगत के साथ भिजवा दे सो मै जैन जगत तथा अन्य पत्रों मे दे दूगा। चूंकि समिति कब स्थापित हुई उसमें कौन–कौन सज्जन हैं तथा उस की क्या योजना

Dear Sir,

Sub Proposal for the construction of BG rail link between Farukhabad and Kasganj via Kampil.

With reference to your letter dated 22.2.1978, addressed to Minister of Railways, on the above noted subject, I am directed to inform you that no investigations for the proposed BG rail link have been carried out in the past. The proposed rail link would be about 110 km. long and would cost about Rs. 15.5 crores at the present-day construction cost. Due to severe constraint of resources and heavy commitments already made it is not possible to undertake the construction of the proposed BG rail link at present. Moreover, the area is well served by existing MG line

Yours faithfully,
(B.S. Agarwal)
Jt. Director (Works)
for Secretary, Railway Board

0000

सत्य प्रकाश मालवीय — विधान भवन,
स्वायत्त शासन मंत्री — लखनऊ

१५ अप्रैल १९७८

प्रिय तिवारी जी,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जनपद फर्रुखाबाद की ग्राम सभा कम्पिल तथा पट्टी मदारी को सम्मिलित करके टाउन एरिया कमेटी का सृजन किया जा चुका है। शीघ्र ही अधिसूचना जारी कर दी जायगी और यथा समय उसकी प्रति आपके पास भेज दूंगा।

यह विषय शासन के समक्ष १४ फरवरी, १९७२ से विचाराधीन था और अब आपके सहयोग से इसका निस्तारण किया जा सका है।

सादर,

आपका,
(सत्य प्रकाश मालवीय)

श्री गिरीशचन्द्र तिवारी,
विधायक,
१९७,ए ब्लाक, दारूलशफा,
लखनऊ

प्रतिलिपि प्रबन्धक, काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद, ५२/१६ शक्कर पट्टी, कानपुर को सूचनार्थ प्रेषित।

o o o o

फतेहगढ़
दि २२.४.७८

आदरणीय बांठिया जी,

सादर नमस्कार ।

आपका कृपा पत्र प्राप्त होकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। कम्पिल के टाउन एरिया घोषित होने पर केवल मैं ही नहीं, कम्पिल की पूरी जनता आपकी तथा जैन समाज की आभारी तथा ऋणी है। वास्तव में कम्पिल के उत्थान का श्रीगणेश उस दिन से आरम्भ हुआ है जिस दिन आपने चिकित्सालय की आधारशिला रखी। आपने जो परिश्रम एवं प्रयत्न इस दिशा में किये हैं उन्हें मैं जानता हूँ। वे अतुलनीय हैं। यदि आपका सहयोग एवं behind the screen प्रयत्न न होता तो कदाचित यह घोषणा अभी न हो पाती। वास्तव में आप उस नींव के पत्थर की भाँति हैं जो अदृश्य रहता है परन्तु पूरी इमारत के खड़े रहने तथा होने का श्रेय उस को होता है। समझ मे नहीं आता कि किन शब्दो मे कृतज्ञता ज्ञापन करूँ। कम्पिल की जनता आपकी चिर ऋणी रहेगी।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैनपुरी –कम्पिल बस सेवा रोडवेज ने प्रारम्भ कर दी है और कम्पिल –दिल्ली बस सेवा भी शीघ्र आरम्भ हो जाने की संभावना है।

है आदि जानकारी मुझे नहीं है वह आप भिजवा दें सो प्रकाशन की व्यवस्था करवा दूंगा।

श्री नाहटाजी से मैं परिचित हूं, उनकी सेवा बहुत है। इस काम को बहुत अच्छी तरह सम्पन्न करना चाहिये।

रिषभदास राका
(सम्पादक 'जैन जगत' बम्बई)

o o o o

KANTI CHAND JAIN

SADABAD GATE,
HATHRAS

18 7.75

आदरणीय श्री हजारीमल जी बांठिया जी

सादर जय जिनेन्द्र

आशा है आप कुशलता से होंगे। आपको यह मेरा पत्र काफी समय के बाद पाकर आश्चर्य अवश्य होगा। परन्तु आपके तथा केसरी चन्द जी के यहाँ से चले जाने के बाद हम लोग जो एक भविष्य की अनुभूति लेकर चले थे वह धूमिल होने लगी थी परन्तु फिर भी मैं प्रयास करता रहा। आपके द्वारा जो बीज १९६७ में अंकुरित मुझे स्थानीय जनता का सदस्य बनाकर किया गया है आज भारतीय जनता पार्टी वाले मुझे आगामी विधान सभा चुनाव में प्रत्याशी बनाने के लिए आग्रह कर रहे हैं। वैसे मैंने कह दिया है कि अगर पार्टी की आज्ञा होगी तो अवश्य लड़ूंगा। परन्तु आपके यहाँ न होने से बड़ी कमी महसूस होती है।

और सब आनन्द है।

आपका
कान्ती चन्द जैन

o o o o

Minister for Railways
India
New Delhi

March 14,1978

Dear Shri Banthia,

I sincerely thank you for your communication and appreciating the Railway Budget for 1978-79 It will be my constant endeavour to bring about further improvements in the Railways' performance

I would like to assure that the various suggestions made by you in your letter will be given due consideration by the Railway Administration. Please continue to give me the benefit of your valued advice and suggestions.

With regards

Yours sincerely,
(Madhu Dandavate)

Shri H.M. Banthia,
Hony. General Secretary,
Kampilyapur Tirth Vikas Parishad
52/16, Shakkarpatti,
KANPUR-208 001

0 0 0 0

GOVERNMENT OF INDIA *(Bharat Sarkar)*
MINISTRY OF RAILWAYS *(Rail Mantralaya)*
(Railway Board)

Shri H.M. Banthia — 7th April 1978
Hony. General Secretary,
Kampilyapur Tirth Vikas Parishad
52/16, Shakkarpatti,
Kanpur-208 001

परिवार के सदस्यो से संपर्क इस संबंध में कर ही सकते हैं। यदि वह यहां रु. ४-५ लाख खर्च कर सकें तो उससे कम्पिल के गौरव की वृद्धि ही न होगी बल्कि पर्यटको और तीर्थयात्रियो के लिए भी कम्पिल को एक आकर्षण केन्द्र बनने मे सहायता मिलेगी।

आपका
आर.एन.त्रिवेदी

o o o o

काका हाथरसी

कमला कैसिल
मसूरी
१४.७.७८

श्री बांठिया जी,

मैं लगभग ४० दिन से यहां मसूरी पहाड पर ठंडक ले रहा हूँ। अभी जुलाई के अंत तक रहने का विचार है। आपका पत्र कम्पिल मेला के सबध मे मिला है। शुभकामना लीजिए–

सम्पादन की कला मे, कृष्ण दत्त जी सिद्ध
कृष्ण –द्रौपदी का रहा नाता सदा प्रसिद्ध
नाता सदा प्रसिद्ध, विद्वजन भाग ले रहे
और बांठियाजी हार्दिक सहयोग दे रहे
कहें काका कवि, सफल होय कम्पिल का मेला
दूर–दूर से आएं दर्शक भर – भर ठेला
काका हाथरसी

o o o o

DR. B.N. SHARMA,
KEEPER, NATIONAL MUSEUM, NEW DELHI.

10-8-78

प्रिय श्री बाठिया जी, नमस्कार

आपका दि ५.८.७८ का पत्र एवं चार फोटो प्राप्त हुए। धन्यवाद। यह जानकार हर्ष हुआ कि आप "कम्पिल महोत्सव" का आयोजन कर रहे हैं। इसकी सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें आपके साथ हैं।

जहाँ तक चित्रों का सबंध है, उनमें से शेषशायी विष्णु की अत्यधिक खण्डित मूर्ति को छोडकर अन्य चित्रों मे मूर्तियाँ इतनी छोटी हैं कि उनकी सही पहचान करना असंभव है। इसके बगैर उनका काल निर्णय करना भी कठिन है। अत: अच्छा हो कि आप कुछ चुनी हुई अच्छी मूर्तियो के चित्र बनवा कर शीघ्र भिजवाये ताकि निश्चित समय तक आपको सचित्र लेख भेज सकूं। आशा है आप भी इससे सहमत होंगे।

मैं १ अक्टूबर को आने का पूर्ण प्रयत्न करूंगा परन्तु वहाँ कैसे पहुंचा जा सकता है और कैसे आना होगा आदि तथा ठहरने की व्यवस्था पर भी कृपया सूचित करें।

आशा है आप प्रसन्न होंगे।

उत्तर की प्रतीक्षा मे

आपका
ब्रजेन्द्र नाथ शर्मा

o o o o

KASTURBHAI LALBHAI

Pankore's Naka
Ahmedabad

11-8-78

श्री हजारीमल बांठिया,

आपका ता. 4-8-78 का पत्र मिला। आपके कम्पिल महोत्सव के आमंत्रण के लिए आभारी हूँ।

पानी की टंकी के लिए हम लोग प्रयत्नशील हैं। यदि सम्भव हो तो टाउन एरिया के लिए आप लखनऊ से जिलाधीश फर्रुखाबाद को एक पत्र भिजवाने का कष्ट करें कि वे प्रारम्भिक कार्य शीघ्र आरम्भ करा दें। मैं भी स्थानीय एम एल ए साहबान के द्वारा इस संबंध में प्रयत्नशील हूँ।

अन्त में टाउन स्थापना के संबंध में एक बार पुन आभार प्रदर्शन करते हुए,

अनुग्रहीत –
राम बहादुर सक्सेना
स्पेशल जुडीशियल मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी
फर्रुखाबाद, फतेहगढ़, उ.प्र.

० ० ० ०

आर. एन. त्रिवेदी
जिलाधिकारी

जिलाधिकारी निवास,
फतेहगढ़

दिनांक जून ७, १९७८

प्रिय महोदय

मुझे आपका पत्र दिनांक २१५१९७८ प्राप्त हुआ। मुझे हर्ष है कि आप दिनांक १ अक्टूबर १९७८ से कम्पिल महोत्सव का आयोजन करना चाहते हैं तथा उक्त महोत्सव की अध्यक्षता हेतु मेरी स्वीकृति चाही है। मैं इस हेतु अपनी स्वीकृति सहर्ष प्रदान करता हूं।

भवदीय

(आर.एन. त्रिवेदी)

श्री हजारीमल बाँठिया
५२/१९, शक्करपट्टी,
कानपुर –२०८००१

० ० ० ०

आर.एन. त्रिवेदी
जिलाधिकारी

जिलाधिकारी निवास
फतेहगढ़

दिनांक जून १६ १९७८

प्रिय महोदय,

कृपया अपने पत्र दिनांक ९ ६७८ का अवलोकन करें। मैं इस संबध में कम्पिल महोत्सव की अध्यक्षता हेतु अपनी स्वीकृति आपको भेज चुका हूं। सम्भवत. यह आपको पत्र लिखते समय तक प्राप्त न हो सकी। यह बड़ी अच्छी बात है कि आप कम्पिल महोत्सव को अच्छे ढंग से करना चाहते हैं। उचित होगा कि इस सम्बन्ध मे फतेहगढ़ में किसी समय एक बैठक का आयोजन कर लिया जाए जिसमें सभी सम्बन्धित लोगो को बुला लिया जाये।

कम्पिल मे संग्रहालय के बारे भी उक्त बैठक में ही विचार विमर्श किया जा सकता है। वैसे आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि शासन ने कम्पिल को टाउन एरिया घोषित कर दिया है और उसके गठन की कार्यवाही की जा रही है। इसके अतिरिक्त, जिला परिषद की ओर से कम्पिल के लिए ग्रामीण जल सम्पूर्ति योजना स्वीकृत करके [illegible] को भेजी जा चुकी है। वहां से स्वीकृति प्राप्त होने पर कम्पिल में जल सम्पूर्ति व्यवस्था भी हो जायेगी।

मेरा एक सुझाव यह भी है कि कम्पिल [illegible] रामायण कालीन व महाभारत कालीन कुछ [illegible] और उनसे जुड़ी हुई कथायें अभी तक अशेष हैं। [illegible] धर्मावलम्बियों का तो यह महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है ही [illegible] कम्पिल नगर के गौरव को बढ़ाने हेतु मेरा सुझाव है कि [illegible] और अयोध्या की भांति ही कोई बड़ा उद्योगपति [illegible] बिड़ला, साहू, जैन आदि यहां पर एक या दो भव्य [illegible] का निर्माण करावें तो यह स्थान अब [illegible] है जैसे द्रौपदी कुण्ड, रामेश्वर मन्दिर आदि [illegible] देवालयों को कुछ अंश तक [illegible] मुझे नहीं मालूम कि इस संबंध में [illegible] आप कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति की [illegible]

BIJOY SINGH NAHAR Phone:38-3427
M P. 28,Gurdwara Rakabganj Road.
New Delhi-110001

August 22,1978

My dear Hajarimal ji Saheb,

I have received your letter of 15th July only a few days back.

As intimated earlier I shall attend your function on the 2nd of October, the Gandhi Jayanti Day

Kindly let me know at which station I should reach or, come to Kanpur early and proceed to Kampil which I understand is not far of Kindly let me know the details of the route

I find there is no chance of the Prime Minister or other dignitaries to come there on that date.

With best regards,

Yours sincerely,

(BIJOY SINGH NAHAR)

0000

CAMP·
15/96,Civil Lines,
KANPUR.
11th September,1978

My dear Banthia,

Yours dated Sept. 6. I am happy to know that a seminar is being held on October 1 and 2 at Kampil to highlight the glory of ancient Panchal Pradesh and also to bring its ancient history and monuments to limelight and, for this purpose, an adhoc committee has been formed with SriR.N.Trivedi, District Magistrate, Fatehgarh.

Since I will be away to some of the foreign countries during the period I convey my best wishes for the success of the seminar.

With best wishes,

Yours sincerely,

VIRENDRA SWARUP

Sri Hazari Mull Banthia,
Hony Gen.Secy ,
52/16,Shakkar Patti,
KANPUR-1

0000

गोपाल प्रसाद व्यास व्यास निवास
बी ५२ गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली—११००४६
ता०२० ६.७८

प्रिय बांठिया जी,

आपके ३१ अगस्त के पत्र के लिये अनुगृहीत हूँ और आपके आयोजन की हृदय से सफलता चाहता हूँ। सूचनार्थ निवेदन है कि मैं पहली मार्च से दैनिक हिन्दुस्तान से सेवा निवृत्त हो चुका हूँ इसलिये तत्–संबंधी सेवा करने में असमर्थ हूँ। आशा है आप सानंद होंगे।

आपका
गोपाल प्रसाद व्यास

0000

आप मुझे 'सरक्षक मनोनीत' करना चाहते हो लेकिन गत बारह साल से मैं कोई समारम में उपस्थित नहीं होता हूं इसलिए मैं आपका आमंत्रण स्वीकार कर नहीं सकता हूं। जिसके लिए मुझे क्षमा कीजिये।

आप लिखते हो ऐसी विज्ञापन आपके स्मारिका में दे सकता नहीं हूँ।

आपके 'कम्पिल--महोत्सव' के लिए मेरी ओर से शुभ कामनाए स्वीकार करे।

लि
करतुरभाई लाल भाई के प्रणाम

श्री हजारीमल बांठिया,
कम्पिल महोत्सव
५२/१६, शक्कर पट्टी
कानपुर--१

o o o o

कानपुर विश्वविद्यालय

नैनान अब्रहाम
कुलपति

कल्यानपुर, कानपुर
१३, अगस्त १९७८

प्रिय डा वाजपेयी,

'कम्पिल--महोत्सव' का पत्रक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

भारत के प्राचीन नगरों में से एक 'कम्पिल' भी भारतीय संस्कृति का प्रतीक रहा है। इसके अतीत गौरव के उत्थान हेतु आप द्वारा एक सेमीनार का आयोजन व लोक--मेला का आयोजन किया जा रहा है, जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत को पुन: स्मरण कराने हेतु जो प्रयास आप द्वारा किया जा रहा है वह वास्तव में अत्यन्त सराहनीय है।

'कम्पिल' का इतिहास प्राचीन भारत की गौरव संस्कृति का इतिहास है।

समारोह की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करें।

संलग्न : १ फोटो

भवदीय
(नैनान अब्रहाम)

डॉ. कृष्ण दत्त वाजपेयी,
द्वारा: श्री हजारीमल बांठिया
५२/१६ शक्कर पट्टी
कानपुर--१

o o o o

RAJ BHAVAN
LUCKNOW

August 17,1978

I am glad to know that "Kampilyapur Tirtha Vikas Parishad" has embarked upon a "KAMPIL MAHOTSAVA" on the occasion of Gandhi Jayanthi from 1st of October

To bring the effulgent chapters of the past to the door of everyone, is a great service to the Nation indeed, Kampil, as it were, inherits many a glorious and inspiring aspects of the history of Indian culture and thoughts and I am sure, the proposed function would go a long way to root the national consciousness in and through them. I wish the venture all success.

(G.D.Tapase)

0000

ipate in the various programmes you are having in this wonderful place. This land of yours has produced Heroes, Leaders, Religious, Monarchs and has been a very blessed land from every angle.

I am very pleased to note that my brother Hajarimal Banthia has taken very active interest and I am very proud that the Banthia family has always lived up to the tradition which is a pleasant thing. I wish the function all success.

Thanking you

Yours faithfully
(H. BHAVARLAL)

0000

स० ३७३/आ०ले०–कम्पिल/ ७८

जिलाधिकारी निवास,
फतेहगढ़
दिनांक अक्तूबर ४, १९७८

प्रिय श्री बांठिया,

कम्पिल महोत्सव को सुचारु रूप से आयोजित करने के लिए आप बधाई के पात्र हैं। मैं चाहूंगा कि आप महोत्सव समिति की ओर से समस्त सरकारी और गैर सरकारी व्यक्तियों को मेरा धन्यवाद पहुंचा दें।

भवदीय

(आर० एन० त्रिवेदी)

श्री हजारी मल बांठिया,
सचिव एवं संयोजक,
कम्पिल महोत्सव,
५२/१६, शक्कर पट्टी, कानपुर–१।

०००००

एच–१५,पदमाकरनगर,
सागर (म०प्र०)
पिन ४७० ००४

दिनांक १३.१०.१९७८

प्रिय श्री बांठिया जी,

नमस्कार

आशा है आप सकुशल कानपुर लौट आये होंगे। यहां पहुंचने के तुरन्त बाद मुझे आवश्यक कार्य से दिल्ली जाना पड़ा।

२. कम्पिल–महोत्सव की सफलता का श्रेय मुख्यतः आपको तथा आपके परिवार–जनों को है। कई मास पूर्व आपने इस महान कार्य का बीड़ा उठाया और वह पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, अन्य अधिकारियों तथा श्री अगरचन्द नाहटा जैसे प्रख्यात विद्वानो ने विभिन्न कार्यक्रमो में सक्रिय सहयोग दिया, यह गौरव की बात है।

३. आशा है 'स्मारिका' प्रकाशित हो गई होगी। उसकी पचीस प्रतियां मेरे पास भिजवा दे, जिससे उसे अधिकारीजनों को दिया जा सके। 'कम्पिल–कल्प' की दस प्रतियों की और आवश्यकता है। कृपया उन्हें भी साथ में भेज दे। विद्वानों से प्राप्त ग्रन्थ–संबंधी समीक्षा विभिन्न पत्रों में प्रकाशित करनी है। जिन समाचार पत्रों को आप दोनों प्रकाशनों की प्रतियां दें, उनके नाम कृपया मुझे सूचित कर दें।

४. महावीर प्रेस से अभी तक विद्वानो के लेखों के आफप्रिंट नहीं आये। कृपया उन्हें शीघ्र भेजने के लिये लिख दें। मैं यहां से संबंधित विद्वानों को उनके प्रिंट भेज दूंगा।

५. 'आज' का विशेषांक प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई।

दशहरा–दीपावली की शुभकामनायें—

भवदीय
कृष्ण दत्त बाजपेयी
अतिथि आचार्य

००००

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
भारती महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
Department of Ancient Indian History,
Culture and Archaeology
COLLEGE OF INDOLOGY,
BANARAS HINDU UNIVERSITY

PROF K.K SINHA — वाराणसी–५
HEAD OF THE DEPARTMENT — 22/9/78
Ref No.A/12-390

Hony Secretary,
Kampil Mahotsawa Samiti,
52/16, Shakkar Patti,
KANPUR-1

Dear sir,

I thank you for your kind invitation to attend the Celebration at Kampil. I propose reaching Kampil on 1st in the morning. I shall intimate the exact time and halt a little later.

As suggested in your earlier letter, two of my assistants will be reaching Kampil on 28th September, 78 for arranging an exhibition of Kampil antiquities. They may please be provided necessary facilities for the purpose. Arrangements may also be the made for the stay of the representatives at Kampil.

Yours Sincerely
(K. K. SINHA)
HEAD OF THE DEPARTMENT

Copy forwarded to Shri Bhagawan Singh Verma, Kampil (Pharukha Bad), for information and necessary arrangements.

(K. K. SINHA)
अध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

o o o o

उप राष्ट्रपति
VICE-PRESIDENT
भारत
INDIA
नई दिल्ली
NEW DELHI
अक्तूबर ३, १९७८

प्रिय महोदय,

आपका पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कम्पिल के तत्वावधान मे उसके सर्वांगीण विकास के लिये सात दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया है। समारोह की सफलता के लिये मैं अपनी शुभकामनायें भेजता हूँ।

आपका
(ब० दा० जत्ती)

श्री हजारीमल बांठिया,
संयोजक, काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद,
कम्पिल (कायमगंज),
फर्रुखाबाद।

o o o o

HIMMATHMAL BHAVARLAL & CO.,
238, THIMMIAH ROAD -- BANGALORE

DATE 3rd October, 78

To:
Shri Hazarimalji Banthia
52/16, Sakkarpatti,
KANPUR-1.

Dear Sir,

Thank you for your invitation to partic-

बी०आर०कुम्भट पोस्ट बाक्स नं० ६
अजमेर, ता०८.१७६

श्री युत् बांठिया साहब,
जय जिनेन्द्र।

कालूराम जी शुक्ला के साथ भेजा हुआ आपका पत्र एवं कानपुर से भेजा हुआ पत्र मिला। अनेकानेक धन्यवाद। कम्पिल तीर्थ का उद्धार करने के लिये जो प्रयत्न आप कर रहे हैं, वे वास्तव में बहुत ही सराहनीय हैं और इसके लिये हम सब आप के बहुत आभारी हैं।

चिकित्सालय में श्री आर० के० टडन की नियुक्ति कर के भी आपने बहुत अच्छा कार्य किया। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इनके सानिध्य मे चिकित्सालय और भी अधिक प्रगति करेगा और जनता जनार्दन के कष्ट निवारण मे अधिक हाथ बटायेगा।

सुरेन्द्र बाबू अभी तक आये नहीं हैं। आज मैं ब्यावर जा रहा हूँ। वहा मिलूगा और फिर अजमेर जाऊंगा।

पत्र दिरावे। कार्य लिखावें।

आपका
बी०आर०कुम्भट

००००

साहित्य संस्थान

अध्यक्ष
डा०प्रभुदयाल मीतल डैम्पियर नगर,
डी०लिट्०,साहित्य वाचस्पति मथुरा २५११६७६

प्रिय बांठिया जी,

विश्व सूर सम्मेलन के अवसर पर आपसे दिल्ली में अकस्मात मिलने से बडी प्रसन्नता हुई। आपने कम्पिल महोत्सव पर प्रकाशित जो दो पुस्तकें मुझे दी थीं, उनके लिये मेरा धन्यवाद स्वीकार करे। इन्हें मैने देख लिया है। इस कार्य में आप जिस लगन के साथ लगे हुये हैं, वह अत्यंत प्रशसनीय है।

कम्पिल का प्राचीन महत्व इतिहास–प्रसिद्ध है, किन्तु वर्तमान युग में उसे उजागर करना आवश्यक है। इसके लिये आप जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसमें सभी प्रवुद्ध व्यक्तियों का सहयोग आपको प्राप्त होगा।

'काम्पिल्य कल्प' ग्रन्थ में जो ऐतिहासिक सामग्री प्रकाशित की गई है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे संकलित करने मे इसके संपादक डा० कृष्णदत्त वाजपेयी के योग दान की प्रशसा सभी समझदार व्यक्ति करेंगें। डा० वाजपेयी जी मेरे बडे घनिष्ट मित्र हैं। उनकी विद्वत्ता सर्व विदित है। और सब आनंन्द है।

प्रभुदयाल मीतल

००००

RAJ BHAVAN
LUCKNOW

January 2,1980

The road to positive spirituality is the steepest and salutations to those great personages who attained the goal through the ordeal of sacrifice and renunciation.

I am glad, the Kampilyapur Trith Vikas Parishad, Kanpur, has organized a Mela on the 20th and 21st of this month to commemorate the Anniversary of Thirteenth Tirthankara,Lord Vimal Nath, and I wish the mission all success.

(G.D.Tapase)

0000

डा० ब्रजेन्द्र नाथ शर्मा,
एम०ए०,पी-एच०डी०,डी०लिट्०,एफ०आर०ए०एस०,
कीपर एवं अध्यक्ष(पुरातत्व)
राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली-११

C/o Indian Engineering Industries,
Kaila Road, GHAZIABAD 201 001

13.10 78

प्रिय श्री बांठिया जी,

सादर प्रणाम।

कृपा-पत्र के लिये धन्यवाद। प्रो० के०डी०बाजपेयी आये थे और उनसे ज्ञात हुआ कि किस प्रकार से कम्पिल महोत्सव का कार्यकम आपके निदेशन में इतना सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका है। आप स्वयं एक महान समाज सेवक हैं अत आपका भी समाज द्वारा आदर होना परमावश्यक है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आपके सम्मान में एक महत्वपूर्ण अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो, जिसमें आपके जीवन से प्रेरणा पाकर आम मानव को भी लाभ हो सके। अगली बार राजस्थान जाकर इसकी विद्वानों से चर्चा करूंगा।

दुर्भाग्यवश अत्यधिक काम के कारण मैं वहां आ न सका। इसका मुझे बड़ा दुख है। परन्तु प्रकाशन देखकर बडा हर्ष हुआ। क्या आपने इसी प्रकार की पुस्तक कन्नौज महोत्सव के समय भी निकाली थी? यदि संभव हो तो उसकी एक प्रति मेरे ऊपर दिये निवास (गाजियाबाद) के पते पर प्रेषित करे। आभारी रहूंगा।

एक पत्र अलग से श्री नाहटा जी, बीकानेर लिख रहा हूँ। इधर आने पर अवश्य दर्शन दें।

उत्तर की प्रतीक्षा में,

आपका
ब्रजेन्द्र नाथ शर्मा

००००

जैन शोध अकादमी

आगरा रोड, अलीगढ़(उ०प्र०)

विद्यावारिधि:
महेन्द्रसागर प्रचंडिया
एम०ए०पी-एच०डी०, डी०लिट्
मानद संचालक

दिनांक ११ नवम्बर ७८

आदरणीय प्रिय भाई,

कम्पिल जी के महोत्सव पर आप का उत्साह देखकर मुझे अतिरिक्त प्रसन्नता हुई थी। आशा है आप आनन्दपूर्वक होंगे। यहां सामान्यत: प्रसन्नता ही है। नगर अवश्य संकट में होकर गुजर रहा है। काल-द्रव्य के परिणमन से समय पर सब ठीक हो जाना है।

यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि अब जैन हिन्दी पूजा काव्य पर पी-एच०डी० उपाधि के लिये नया शोध-प्रबन्ध तैयार हो चुका है। उसका टंकण तथा विश्व-विद्यालय शुल्क आदि के लिये लगभग एक हजार रुपया अपेक्षित होगा। आपसे मेरा अनुरोध है कि आप अपने यहां से इस दिशा में मेरा हाथ बटाने की महती कृपा कीजिये। जिन भाइयों से आप द्रव्य प्राप्त करेंगे उनके पते भी दीजिये ताकि उनके नाम अकादमी से रसीद भिजवा दी जावेगी। यह द्रव्य इसी मासान्त में जमा होना है। आशा है आप इस महनीय कार्य में भी अपना आत्मिक सहयोग हमें प्रदान करेंगे।

धन्यवाद।

आप का ही,
विनीत

प्रचंडिया डी०लिट्

श्रीमान हजारीमल जी बांठिया,
५२/१६, शक्करपट्टी,
कानपुर २०८ ००१

००००

THE BIKANER WOOLLEN MILLS

MAIN OFFICE
No.4 MIR BHOR GHAT STREET
CALCUTTA-7
PHONE:33-5969
Cable: WOOLCARPET
No. BWM/153/80-81

BIKANER-334001
Date.18.5.80

Dear Banthia Ji

Few days back I have received your letter and I was very glad to go through the same I have also noted that you had been to SRAVASTI I am also very much interested to visit it Therefore whenever there will be any some possibility I will avail that to visit this place.

Hope it finds you in your best of spirits and health alongwith all family members.

As regards NAHTA LIBRARY we have now decided to name it as "AGAR CHAND BHANWARLAL NAHTA"

In this regard I had already discussed with Sri Kothari Ji. The problem is that again I had been held up to go ahead due to sad demise of our respected Bhai Sahib I am intending to go on tour and will return back in the Ist week of June With kind regards,

Yours faithfully,
The Bikaner Woollen Mills
K.C Bothra

0000

Shrenik K.Lalbhai

June26,1980

Dear Hajarimalji,

I am in receipt of your letter of 16th June,1980. It was a pleasure to meet you during your visit to Ahmedabad. I am glad that I was able to explain to you why it would not be proper to associate the name of my father with the Operation Theatre.

I am sending herewith a cheque for Rs 1001/- as a donation to Shree VardhmanJain Hospital to be used for whatever purpose the trustees of this Hospital deem fit
With regards,

Yours sincerely.
(Shrenik Kasturbhai)

Encl.Cheque
Shri Hajarimal Banthia,
Shree VardhmanJain Hospital,
52/16, Shakkarpatti,
Kanpur-208001

0000

KHURSHID ALAM KHAN

MINISTER OF STATE
MINISTRY OF COMMERCE
NEW DELHI-110011
January 4,1981

My dear Singh Sahib,

Shri Hazari Mal Banthia, Secretary Kampil Tirth Vikas Parishad, Kanpur, and a philanthropist, associated with quite a few charitable institutions, is going over to you in connection with the inauguration of the new road bridge over Burhi Ganga, providing a direct link between Kampil and Delhi via Kasganj and Aligarh I shall be obliged if you kindly give him a few minutes of your time and meet him

ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE

24,AKBAR ROAD,NEW DELHI-110011

KHURSHEED ALAM KHAN,M.P.
CHAIRMAN
MINORITIES DEPARTMENT

January 15,1980

My dear Banthia Saheb,

Thank you for your letter dated 9th January,1980. I am glad to learn that a fare has been organised by the Kampilyapur Tirth Vikas Parishad and will be held at Kampil on the 20th and 21st January,1980. It would have given me great pleasure indeed to be in your midst on this happy occasion,but, as you would be aware, the Parliament would be in Session on the 21st onwards. I regret I would not be able to come over and participate in the celebration on the birth anniversary of Bhagwan Vimal Nath. I, however, wish the function all the success.

The credit for success of the Congress(I) Party in the recent elections goes to the people who have so overwhelmingly voted it to power.

As regards inviting the Prime Minister to the inaugural ceremony of the bridge between Kampil and Kasganj, I feel that the time is still quite a few months away and that it would be too early to approach her in this regard Besides, the date and other details of the programme have also yet to be finalised.

With best wishes,

Yours sincerely,
(KHURSHEED ALAM KHAN)

Shri Hazari Mull Banthia,
52/16 Shakkarpatti,
KANPUR.208 001

o o o o

जयदयाल डालमिया

श्रीकृष्ण–जन्मस्थान सेवा संस्थान,
४–सिन्धिया हाउस, नई दिल्ली–१

श्री हजारीमल बांठिया
संयोजक, काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद
५२/१६, शक्कर पट्टी.
कानपुर २०८ ००१

दिनांक १०मार्च १९८०

महोदय,

आपका पत्र ३ मार्च का मिला। हमारी इतनी क्षमता नहीं है कि कई काम हाथ में ले सके। अत आपके प्रस्ताव का पालन न कर सकने के लिये क्षमा प्रार्थना है।

जन्म स्थान के प्रकाशन आपके संग्रहालय के लिये दिये जा सकते हैं। या तो मथुरा से इनको लेकर स्वयं ले जाने की व्यवस्था कर लें, या पैकिंग, बुकिंग आदि का व्यय आप वहन करना स्वीकार करें तो हमारे कार्यालय वाले इसकी व्यवस्था कर दे सकते हैं।

भवदीय
जयदयाल डालमिया

o o o o

इसका उद्‌घाटन कर सकें तो बहुत अच्छा रहे सो इसके लिये आप उनके सेकेटरी से लिखा–पढी करके समय माग लीजिये। अभी वे दिल्ली हैं और उनसे मिलकर बात कर लेना ही ठीक रहेगा।

'कम्पिल' के विकास के लिये आपने जो कहा वह भी उनसे रूबरू बात करना उचित रहेगा।

आपका

(रामप्रसाद पोद्‌दार)

श्री हजारीमल बांठिया,
बांठिया हाउस,
५२/१६, शक्कर पटटी,
कानपुर २०८००१

० ० ० ०

मीराँ कला मंदिर

उदयपुर (राज.)

क्रमांक एम/के/एम/यू/१५३/८३–८४ ता०३ १ ८४

श्रीमान हजारीलाल जी बांठिया,
५२/१६, शाखर पट्टी,
कानपुर।

सादर वन्दे।

यह जानकर आपको अत्यंत प्रसन्नता होगी कि आगामी बसंत ऋतु के शुभागमन पर ११ फरवरी,१६८४ के दिन आपकी यह संस्था नियमित सांस्कृतिक संध्या पर शुभारंभ करने जा रही है। इस शुभारंभ को अत्यंत महत्वपूर्ण बनाने के उद्देश्य से उस दिन सिने–संसार के प्रख्यात गायक श्री शंकर–शंभू की संध्या भी आयोजित की गई है। इस अवसर पर 'उदयपुर का रूप दर्शन' नाम से एक सुन्दर स्मारिका का प्रकाशन और विमोचन भी होगा।

मीराँ कला मंदिर हमेशा से आपका उदार स्नेह–सहयोग पाकर आगे बढ़ा है और बढ़ने की उम्मीद रखता है। इस शुभारम्भ के अवसर पर भी हम आपके उसी पूर्ववत सहयोग का विश्वास लेकर चले हैं।

यह पत्र मैं व्यक्तिश: आपको इसलिये प्रेषित कर रहा हूँ कि सांस्कृतिक संध्या का यह नियमित आयोजन कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण तो है और इसीलिये इसे आरंभ करना भी अनिवार्य है, किन्तु इसकी व्यवस्था मे जो व्यय होगा, एक बडे धन संग्रह पर निर्भर करता है।

आशा है, सस्था के विकास को लेकर यह जो नया अवसर उपस्थित हुआ है, उसका आप सहर्ष स्वागत करेगें और मेरे अनुरोध पर विशेष दृष्टि रखते हुये अपनी ओर से संस्था को सहयोग देगें। आप यह सहयोग 'रूप दर्शन' स्मारिका के विज्ञापन अथवा अनुदान के रूप में प्रेषित करने की कृपा करें।

भवदीय
(प्रकाश वर्मा)
संचालक
मीराँ कला मंदिर
उदयपुर

० ० ० ०

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान

पुरुषोत्तमदास स्वामी
पीठाधिपति

बसुधा अमरसिंह पुरा
२४,गजनेर रोड,
बीकानेर ३३४००१

दिनांक २२ ३ ८४

श्री हजारीमल बांठिया
५२/१६ शक्कर पट्टी
कानपुर २०८००१

with kind regards,

Yours sincerely,

(Khurshid Alam Khan)

Shri Vishwanath Pratap Singh,
Chief Minister of U.P.
LUCKNOW.

0000

श्री नटनागर शोध-संस्थान

सीतामऊ (मालवा)

कमाक ५८५ /१६ १०.८१. १६ १०.८१
डा० रघुवीर सिंह,डी०लिट०,एल-एल०बी०,

प्रिय श्री हजारीमल बांठिया,

आपका अक्तूबर ३,१६८१ का पत्र मुझे यहां परसो मिला था। तदर्थ कृतज्ञ हूं। सारे समाचार ज्ञात हुये।

श्री जसवतसिंह जी बांठिया १६४५ ई० में सीतामऊ राज्य के दीवान हो गये थे और राज्य के विलय तक इसी पद पर काबिज रहे। राज्यो के विलय के कई वर्षो बाद वे सकुटुम्ब यहां से कलकत्ता चले गये थे। उनके पुत्र श्री शेरसिंह श्री सवाई सिंह, श्री समर्थसिंह तब विभिन्न स्थानों पर सेवारत थे। कई वर्ष बाद उनका सबसे छोटा लडका विमलसिंह भी कहीं सेवा में लग गया था। जहां तक मुझे ज्ञात है श्री शेरसिंह बांठिया भी कई वर्ष पूर्व सेवा निवृत्त हो गये थे। इधर इसी मास में श्री विमलसिंह बांठिया के पुत्र का विवाह इंदौर मे होने वाला है, इस मगलमय अवसर की सूचना का पत्र श्री शेरसिंह बांठिया ने भेजा था। उनका वर्तमान पता इस प्रकार है-

श्री शेरसिंह बांठिया
१, कर्णावती सोसायटी,
आश्रम रोड, उस्मानपुरा,
अहमदाबाद १३

सो आप उन्हें पत्र लिखकर संपर्क साध लेवें। परिवार के सारे सदस्यों के बारे में आपको उनसे जानकारी मिल सकेगी।

जहां तक मुझे मालूम है इस क्षेत्र में तो बांठिया परिवार संबंधी कोई शिलालेख का उल्लेख कहीं देखने में आया नहीं। इस परिवार संबंधी कोई इतिहास अब तक तो लिखा नहीं गया है। मेरा विश्वास है कि श्री सुखराय संपत भंडारी का ओसवाल जाति का इतिहास आपने देखा ही होगा उसमें अवश्य बांठिया परिवार के बारे में जानकारी दी गई है। उसमे संग्रहीत जानकारी से आप अपने कार्य को बढा सकेंगे।

शेष कुशल, आशा है आप सानंद होंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय
रघुवीर सिंह

प्रति – हजारीमल बांठिया
५२/१६ शक्कर पट्टी,
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

0000

ऑ० मेजर **रामप्रसाद पोद्दार**,बी०ए०

सेन्चुरी भवन
डा०एनी बेजण्ट रोड
बम्बई ४०००२५

दिनांक २४मार्च ८२

आदरणीय श्री हजारीमलजी,

सादर नमस्कार।

टाटानगर में आपसे भेट हुई थी और आपने मुझे एक चिट्ठी साथ में दी थी। कुछ किताबे भी दी थी। उसके लिए मै आभारी हूँ।

कानपुर में 'राजस्थान भवन' के उद्घाटन के दिन में आपने मुझे कहा था कि पूज्यबाबू श्री घनश्यामदासजी बिड़ला

उत्तर प्रदेश का दौरा करना है उसके लिये १५ जुलाई का समय श्री रमेश जी ने बताया है। इस समय अत्यधिक गर्मी होने के कारण वे दौरा करवाना नहीं चाहते। यद्यपि गर्मी के कारण कोई बहुत बडी अडचन नहीं होती तथापि आप सब मित्रो की राय के अनुसार अब दौरा जुलाई मे ही किया जायेगा। तारीख सुनिश्चित कर आप सबो को समाचार दे दूगा।

वैसे भी पचाल इतिहास समारोह मे मेरी कोई विशेष उपयोगिता नहीं लगती। अत निवेदन है कि समारोह मे सम्मिलित न होने की असुविधा लिये क्षमा करेगे।

आपका

(नद किशोर जालान)

श्री हजारीमल बाठिया
५२/१६ शक्कर पट्टी
कानपुर

o o o o

JAWAHAR LALL RAKYAN

73, Jolly Maker Apts No 3
119 G D Somani Road,
Bombay 400005

June 23, 1984

My dear Shri Hazarimull ji Saheb,

There is no contact with you for sometime and I hope you are doing well

This is now to remind you that the meetings of Mahasangh will now be held at Ajmer on the 8th and 9th of July 84 in the premises of Dadabari Ajmer. The regular notices of the meetings are being sent from Delhi and hope you have received the same.

Unfortunately you were not able to attend the meetings at Madras and so we did not have the benefit of your participation. Now I request you to please make yourself free and attend the meetings at Ajmer without fail as certain important decesions are to be taken in the interest of Mahasangh

I am reaching there directly from here I am sure you will reach there in time

Thanking you and with kind regards

Sincerely yours,
Jawaharlall Rakyan

Shri Hazarimull Ji Banthia,
Kanpur

o o o o

प्रो० भूपतिराम साकरिया
.एम०ए०,बी०एड०,पी–एच०डी०(निदेशक)
हिन्दी विभागाध्यक्ष
एन ए एण्ड टी० वी० पटेल आर्टस कॉलेज
पूर्व चेयरमैन, बोर्ड ऑफ स्टडीज हिन्दी
पूर्व सेनेटर, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी वल्लभविद्यानगर

नम्बर ८२ सा
८६६ साकरिया सदन
वल्लभविद्यानगर
(गुजरात)

सोमवार २४ २ ८६

श्रीमान हजारीमलजी बाठिया

सादर नमस्ते

एक पत्र कुछ दिनों पूर्व व एक परसों शनिवार को मिला। परीक्षा–कार्य में व्यस्त हो जाने के कारण,शीघ्रता से उत्तर न दे सका। पू० पिताजी का स्वास्थ्य अब सुधार पर है, फिर भी अकेले बाहर (घूमने भी) नहीं जा सकते हैं, क्योंकि चक्कर आने की आशंका सदैव बनी रहती है। वे आपको सप्रेम नमस्कार लिखवा रहे हैं।

प्रिय हजारीमल,

सस्नेह नमस्कार।

तुम्हारा भेजा हुआ बारात के अवसर पढा हुआ स्वागत गीत प्राप्त हुआ। बडी प्रसन्नता हुई।

तुम यहां से जाते वक्त जनवरी ३ को ज्ञानपीठ की एक रसीद बुक ले गये थे। अब तक कितनी राशि एकत्र की है. सम्भव हो तो वह राशि तो भेज दो।

मैं चाहता हूँ कि ज्ञानपीठ की तिमाही पत्रिका राजस्थानी गगा का पहला अंक जितना शीघ्र हो सके प्रकाशित हो जाये। इसकी प्रेस कापी तैयार की जा रही है। इसके पहले चार अंको का प्रकाशन व्यय मेरी हार्दिक इच्छा है तुम अपने ट्रस्ट से दिलवादो तो बहुत उत्तम रहे। इसका प्रकाशन इस लिये ही कर रहे है कि तुमने यह कहा था कि अच्छे कामो के लिये धन की कमी नहीं रहेगी।

इसके अतिरिक्त फूलचन्द बाठिया चैरिटेबिल ट्रस्ट का एक पूरे पृष्ठ का विज्ञापन तो इस पत्रिका के पहले वर्ष के चारो अको में रहेगा ही।

आशा है, तुम सपरिवार सादर तथा स्वस्थ होगे। मैं अब काफी ठीक हूँ। तुम्हारे पत्र के इंतजार मे—

तुम्हारा ही
पुरुषोत्तम दास स्वामी

o o o o

श्री सावत्थी (श्रावस्ती) जैन श्वे० तीर्थ कमेटी

२०२, चिकपेट, बैंगलोर ५६००५३

क्रमांक ४३/८४ दि०२६ ३ ८४

धर्मप्रेमी धर्मानुरागी
श्रेष्ठीवर्य श्रीयुत् हजारीमलजी बांठिया,
कानपुर

बैंगलोर से सावत्थी जैन श्वे० तीर्थ कमेटी के सादर जय जिनेन्द्र स्वीकारें।

आप कुशल होंगे। यहा पर कुशलता है।

हमें ज्ञात हुआ है कि आप सावत्थी महातीर्थ के पुनरुद्धार में अच्छी दिलचस्पी ले रहे हैं एवं शासन के अनेक कार्यो में अच्छा सहयोग दे रहे हैं।

यहां से तीर्थ कमेटी के सब ट्रस्टी महोदय दि०२८ ३ ८४ को निकलकर ता० ३१ ३ ८४ को सावत्थी पहुँचेगे। अत आपसे साग्रह विनती है कि आप भी उक्त समय पर वहां अवश्य पधारें।

आपके पधारने से हमे तीर्थ विकास के लिये विचार—विमर्श का मौका एवं आपका कुछ सहयोग मार्ग दर्शन भी प्राप्त होगा।

आशा है कि आप अवश्य पधारेंगे। ट्रस्टी महोदय वह पर चार—पांच दिन ठहरेगें, आपके पधारने की पूर्व सूचना आप सावत्थी भेजावें।

कार्य सेवा लिखे।

धन्यवाद।

आपका
लक्ष्मीचन्द एच० कोठारी
उप प्रमुख—ट्रस्टी

0000

NANDKISHORE JALAN
President

All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road,
CALCUTTA-700007
321/84 दि०२२ ५ ८४

प्रिय हजारीमल जी,

आपका पत्र मिला। आपने पंचाल इतिहास समारोह के लिये मुझे आमंत्रित किया इसके लिये मै हृदय से आपका आभारी हूँ। लेकिन कल श्री रमेश जी मोरोलिया से टेलीफोन से बातचीत हुई थी। आपकी लाइन मांगी थी पर मिली नहीं।

है तो काफी व्यस्त हैं। अब देखिये कब आना होता हैं। पाइ (सुबोध)आहियो (U.S.A) में है अपनी पत्नी सुजाता के साथ फोन पर बाते होती रहती हैं। अब इन छुट्टियो मे वह बहुत बुला रहा है तो जाने की साच रहे हैं—वहाँ और भी अपने भाई भतीजे हैं फिर सबसे ही मिल कर आयेगे।

भाभी जी के क्या हाल चाल है ? अब उनका B. P. कैसा रहता है। इधर हमारे छोटे भाई कमल जो डाक्टर है उसकी तबियत ठीक नहीं चल रही हर सप्ताह फोन पर बाते हो जाती हैं।

राजू कैसे है ? उस तो सन् १९६४ से देखा ही नहीं है। विजया को भी नही देखा।

आपका बिजनस कैसे चल रहा है ? हम करीब दो माह बाद मकान बदल लेगे तब मैं आपको पता लिख दूँगी, वह मकान भी है तो अपना ही पर इससे बडा है, अब तक वह हमने ७ स्टूडेन्ट को किराये पर दे रखा है, पर अब उनसे छाडने को बोल दिया है।

सीमा मीना की पढाई ठीक चल रही है अब उनके लिये इजीनियर व डाक्टर लडको की तलाश है।

अलीगढ मे सब ठीक हैं। पत्र आते रहते है। बाकी ठीक है सबको यथायोग्य। मोसा कैसी है ?

आपकी बहन
मजू

0000

52/16, Shakkarpatti,
Kanpur- 208 001 (U. P)

Dear Shri Banthia Ji,

Many thanks for your kind letter dated 22 4 1988 I am quite enthusiatic about your idea of India-Italy Association and wish you all sucess in this You can always count on my active parti cipation in this

I was in Venice in connection with an International Workshop I had the pleasure of spending some time in the most pleasant company of Prof Filippi I look forward to his visit to India in October this year and the launching of the India-Italy Association on the occasion

With kind regards,

Yours Sincerely
(Satya Vrata Shastri)

P S.- If you like, I may furnish you with the names and addresses of some of the persons who may be interested, having association with Italy already, in promoting the proposed Associataion.

(Satya Vrat Shastri)

0000

DR SATYA VRAT SHASTRI
Professsor of Sanskrit,
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor,
SHRI JAGANNATH SANSKRIT UNIVERSITY
PURI, ORISSA

Res. 3/54, Roop Nagar,
DELHI-110007 (India)
Dated 1. 5. 1988

Shri Hazari Mull Banthia,

TIMES HOUSE
7.B S ZAFAR MARG,
NEW DELHI-110002

Ashok Jain

September 30, 1988,

Dear Srhi Banthia,

I am glad to know that you have brought out a book on 'AHICCHATRA' giving the hostorical perspective on the importance of

फरवरी १९८६ के राष्ट्रधर्म मे जो लखनऊ से प्रकाशित होता है, किसी डा० श्री रामशकर द्विवेदी का डा० तैस्सितोरी पर लेख छपा है। उसमें डा० तैस्सितोरी को माला पहिनाते हुये आपका एक सुदर चित्र भी छपा है। आपने यह लेख व चित्र तो अवश्य देखे होगे। वैसे लेख मे कुछ नवीन सामग्री नहीं है पर पृष्ठ ४६ मे दूसरे गद्यांश मे लेखक की असावधानी से एक भूल हो गई है। यहा बम्बई के स्थान पर *कलकत्ता होना चाहिये था। यह तो ठीक पर आप द्वारा डा०* तैस्सितोरी को अमर बनाने का जो स्तुत्य प्रयास किया जा रहा है, वह निश्चय ही सराहनीय है। कौन करेगा इतना? और इसीलिये कभी कभी मेरे मन मे आता है कि गत जीवन के आप उनके छोटे भाई तो नहीं हैं?

मैं डा० राधिकाप्रसाद त्रिपाठी की पुस्तक की राह देख रहा हूँ। पर यदि बीच आपका आगरा जाने का कार्य पडे तो वहा के विजयधर्म लक्ष्मी ज्ञान भडार (मदिर) के वाचनालय मे *श्री विजयधर्म सूरि महाराज की एक धातु की मूर्ति है, जिसे डा०* तैस्सितोरी ने अपने मामा द्वारा इटली में निर्मित करवाया था। आप वहा पधारें तो उसका फोटो लेकर अवश्य भेजें। यह सूचना गुजरात के श्री अभयचन्द जैन ने दी थी।

जिस बहिन ने मुझे इटली से सामग्री प्रेषित की थी, उसका नाम पता इस प्रकार है:–

मिस अन्ना ब्रोसोला
यायां रामनडोलो एम–२०,
उदीने(इटली) ३३१००

इस बहिन द्वारा प्रेषित कुछ अन्य सामग्री इस पत्र के साथ प्रेषित है।

आपका
भूपतिराम साकरिया

० ० ० ०

प्रधान मंत्री

नई दिल्ली
16 जुलाई, 1986

प्रिय श्री बांठिया,

आपके पत्र और " अमर चन्द बांठिया " पुस्तिका के लिए धन्यवाद।

आपका,
(राजीव गांधी)

श्री हजारी मल बांठिया,
संयोजक,
देश-भक्त अमरचन्द बांठिया,
स्मृति समिति,
52/16, शक्करपट्टी,
कानपुर।

Edinburgh
26-2-87

पूज्य भाईसाहब व भाभी जी,

सादर नमस्ते।

पत्र आपका मिला समाचार जाने, हम सब यहाँ खुश ठीक हैं आशा है आप सब भी ठीक होंगे।

रेनू बाई को दूसरे लडके की पढकर बेहद ही खुशी हुई, भगवान उन्हे सदैव सुखी रखे।

अब आपके पत्र हमेशा कानपुर से ही आते हैं। क्या अब आप वहीं रहते हैं? मेरा आप सबसे मिलने को बहुत मन करता है, अभी मैं फरवरी में आने को सोच रही थी पर ऑफिस से केवल २ सप्ताह की छुट्टी थी–क्योंकि अभी ग्रान्ट खत्म

हैं परन्तु वह अभी तक नहीं पहुचा है।

इस सामग्री के अलावा अन्य जो भी महत्वपूर्ण सामग्री हो उसकी भी जीरोक्स करवा देने का कष्ट करावे। वैसे एशियाटिक सोसायटी से तैसीतोरी के जो ग्रन्थ छपे है वे तो सब हमारे पास हैं परन्तु तैसीतोरी के कोई अन्य लेख जो अंग्रेजी मे दूसरे अखबारों में छपे हों और आपके पास हों तो उनकी भी जीरोक्स प्रतियां जरूर भिजवायें। इटली से कोई पुस्तक निकली हो तो आप उनसे लिखा-पढी अवश्य करावें। जीरोक्स करवाने का जो खर्चा लगा है उसका बिल भी महाराजा मानसिह पुस्तक प्रकाश जोधपुर के नाम का भिजवा देना ताकि आपको चैक/ड्राफ्ट भेजा जा सके। आप इस कार्य के लिये इतना कष्ट उठा रहे हैं इससे हमको बडा प्रोत्साहन मिला है, भगवान चाहेगा तो यह एक अच्छा काम हो जावेगा। पत्र दिरावे और मेरे योग्य सेवा लिखें।

आपका शुभेच्छु
(डा० नारायण सिह भाटी)

श्री हजारीमल जी बाठिया साहिब,
५२/१६ शक्कर पट्टी कानपुर-२०८००१

o o o o

Dr. M Channa Reddy
CHIEF MINISTER

HYDERABAD,
DATED 23-12-89

Dear Sri Hazarimull Banthia,

It is a widely known fact that I have inherited an administration which is in a shambles needing urgent, painstaking and understanding attention to set it work smoothly and usefully. I am thankful that you have chosen to wish me well at this stage when I need goodwill most from persons like you to accomplish this task. You must have noticed by now how our new Government has started functioning with a hearty resolve to check the drift of the past and improve it to make the people of the state the beneficiaries To achieve this I need your good wishes and goodwill in ample measure always.

I once again thank you for the confidence you have reposed in me and I humbly request you to continue the same goodwill to enable me to serve the state effectively and for the good of all.

With best regards,

Yours sincerely
(M. CHANNA REDDY)

Sri Hazari Mull Banthia,
Treasurer,
Shree Vardhman Jain Hospital,
KAMPIL-207 505
Administrative Office
52/16, Shakkarpatti,
KANPUR-208 001.

o o o o

काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट

संगीत कार्यालय, हाथरस-२०४१०१

श्री हजारीमल जिएं
प्रगति करे हर वर्ष
चले हजारो वर्ष तक
पाये नित उत्कर्ष

काका हाथरसी
१०.२.६०

श्री बाठिया जी,

बहुत दिनों से आपका सहयोग नहीं मिला है— इस बार कृपा करें।

१०.२.६०

o o o o

GOVERNOR OF GOA NO.GS/F/32/90/2934

Ahichhatra. I am however surprised to note that you have included in the book and *article by Shri* Bhawarlal Nahata on page 161 which has no relevance to the main historical theme of the book. *It will* unnecessary arouse controversy between the Digambers and Swatambers and we may forget the main issue. Firstly I do not see how this controversy has found place in the overall historical narration Secondly if at all you find it necessary to include it, you should have also given an opportunity to an author of repute to come forward with the other point also. In any case the efforts made by you need to be congratulated.

Yours Sincerely
(A. K. Jain)

Shri Hazari Mull Banthia,
Panchal Sodh Samsthan,
52/16, Shakkarpatti,
Kanpur-208 001

0000

B.D Kalla,
Minister,
P.W.D., I.G N.P., C.A.D. &
Colonisation.

JAIPUR
RAJASTHAN

D.O No. 3241/PWM/89 dated 27.7.89

Dear Sri Banthiyaji,

I am in receipt of letter dated 22nd June, 1989 addressed to Hon'ble Chief Minister Rajasthan and a copy thereof endorsed to me

It is really encouraging to note that you have collected some valuable photographs, written documents related to the works of Italian Historian Tessitory who devoted a considerable period of his life working for the revival of Rajasthani Folk Art and Literature.

The proposoed place for the display of these valuable collection in the Bikaner Museum is being referred to the Department of Art and Culture for their consideration and timely action.

With regards:

Yours sincerely,
(B D Kalla)

Shri Hazari Mull Banthia,
Dr. L.P. Tessitory Birth Centenary
Celebrations National Committee,
52/16 Shakkarpatti,
Kanpur-208001.

0000

MAHARAJA MAN SINGH PUSTAK PRAKASH
Research Centre
Fort, JODHPUR
MEHRANGARH MUSEUM

महाराज श्री प्रहलादसिंह
उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर

दिनांक २०.८.८९

माननीय सेठ साहिब बांठिया जी,

उम्मेद भवन के पते पर आप द्वारा डा० तेसीतोरी के संबंध में भेजी गई सामग्री प्राप्त हो गई है। उस सामग्री में तैसीतोरी की सालाना प्रगति रिपोर्टें जो एशियाटिक सोसायटी के जरनल में छपी थी वे हैं और कई अखबारों की कतरने भी हैं। यह सामग्री वास्तव में बड़ी उपयोगी है।

आपने अपने पहले पत्र में लिखा था कि वेलि कृष्ण रुकमणी का अंग्रेजी व इटालिनी अनुवाद भी आप भेजने वाले

N.K FIRODIA
B.Sc.,LL B.

"Sanmitra",
132/B(2A),Ganesh Khind Road,
Poona 411007

Dated 7th Nov 1990

My dear Hazari Mullji sahab,

Thank you very much for your kind letter on the occasion of the celebrations on my completion of 80 years and the kind sentiments expressed in the same.

With regards,

Yours sincerely,
(N K FIRODIA)

Shri Hazari Mull Banthia,
Shree Vardhaman Jain Hospital,
52/16 Shakkarpatti,
KANPUR.208001

0000

Air Marshal PK JAIN PVSM VSM(Retd)
J-140, Sector 25
NOIDA 201301.

13-12-1991

My dear Shri Banthia,

I am grateful to you for your letter dated 9th Dec.91.The stay at Kanpur was memorable professionally but I was unable to keep in touch with social organisations.,

Thanks for rememberence and look forward to meet you sometime With best wishes for year 1992.

Yours sincerely
P.K.JAIN

0000

हिन्दी प्रचारक संस्थान

श्री हजारीमल बांठिया
५२/१६ शक्कर पट्टी,
कानपुर–१

कलकत्ता
१६.१२.९१

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक १०.१२.९१ प्राप्त हुआ। राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद तथा अगरचंद जी नाहटा के प्रकाशन पर हम आगामी वर्ष विचार करेंगे। आपके सहयोग को नोट कर रहे हैं।

वृन्दावनलाल वर्मा समग्र और कृष्ण की आत्मकथा–२ इस माह के अंत मे जायेगे। लम्बे कर्फ्यू के कारण विलम्ब हुआ है।

शरत समग्र २००/–की वी०पी० से भिजवा रहे हैं।

सधन्यवाद,

भवदीय
(कृष्ण चन्द बेरी)
प्रबन्धक

0000

Basant Kumar Birla
9/1 R. N. MUKHERJEE ROAD- CALCUTTA

24th May,1992

Dear Mr.Banthia

I really appreciate your good wishes and compliments on the occasion of the Award given to me by the Netherland's government. This has been possible with the grace of God and blessings of Father.

Once again with my thanks.

Yours
Basant Kumar Birla

AND
ADMINISTRATOR
DADRA & NAGAR HAVELI
AND DAMAN & DIU

RAJ BHAVAN
DONA PAULA
GOA-403004

27/28 SEPTEMBER 1990

Dear Shri Banthia,

Thank you very much for your letter dated 17 September 1990 inviting me to be the *Chief Guest* at the 6th annual function of the Shodh Sansthan and 1400th Janma Shatabdi celebrations of the great king Harsha Vardhana being held at Kannauj on 27th and 28th October, 1990.

It is a matter of great honour for me to accept the invitation. I would request you to please send the details of the programme as well as the background material for both the occasions, immediately.

With regards,

Yours Sincerely,
(KHURSHED ALAM KHAN)

SHRI HAZARI MULL BANTHIA,
Officiating President,
Panchal Sodh Sansthan,
52/16 Shakkarpatti,
KANPUR-208001.

0000

विचक्षण श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म०सा०
साधारण भवन
३४५ मिन्ट स्ट्रीट
मद्रास ६०००७९

दिनांक १५ १० ९०

धर्मनिष्ठ, श्रावकवर्य, श्री हजारीमल जी सा०,

सादर धर्मलाभ,

हम सभी सकुशल हैं। आप भी सानंद होंगे। स्वास्थ्य स्वस्थ होगा।

विशेष: अध्यक्ष महोदय श्री हरखचंद जी सा० नाहटा के पत्र से हमें विदित हुआ कि आप खरतरगच्छ महासंघ के उत्तरी क्षेत्र के उपाध्यक्ष मनोनीत किये गये, जानकर हार्दिक प्रसन्नता। आप अपने पद के उत्तर-दायित्व को पूर्ण कुशलता, विलक्षणता एवं निष्पक्षता से संभालते हुये सुदृढ़ कार्यों के द्वारा गच्छ के गौरव को बढ़ावें, व त्रिकरण योग द्वारा जिन शासन के प्रांगण में सदा सर्वदा चार चंद लगाते रहें, इसी शुभ कामना के साथ –

हितैषिणी
चन्द्रप्रभाश्री

0000

ADITYA V. BIRLA S B (M.I.T)

INDUSTRY HOUSE
159, CHURCHGATE RECLAMATION
BOMBAY 400020.

October 20, 1990

My dear Shri Banthia,

Thank you for your letter of congratulations on my receiving the "Business Leadership Award 1990".

I am thankful to you for your kind words of encouragement.

Kind regards,

Sincerely,
ADITYA V BIRLA

Shri Hazari Mull Banthia,
Kanpur.

0000

Dr.Karan Singh

3Nyaya Marg,Chanakyapuri,
New Delhi 110021 India

स्मृति विशेषांक विशिष्ट व्यक्ति की स्मृति को चिरस्थायी बनाते तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के अनेकानेक पक्षो को उजागर करते हैं। ये विशेषाक भावी पीढियो के लिये पथ–प्रदर्शन का भी काम करते हैं। पचाल शोध सस्थान का लक्ष्य पचाल क्षेत्र की सस्कृति के स्वरूप का अध्ययन प्रस्तुत करना है जो स्तुत्य प्रयास है। ऐसे अध्ययन मे क्षेत्र विशेष का व्यापक तथा विशिष्ट स्वरूप निखरकर आता है जो अतीत को वर्तमान से जोडने का काम करता है।

विशेषाक दो भागो मे विभक्त है। सस्मरण तथा शोध निबंध। सस्मरणो मे प्रो० कृष्ण दत्त बाजपेयी के अनेक रूप चर्चित हैं जो उनके व्यक्तित्व को गरिमामय बनाते हैं। इतिहास पुरुष, पुरातत्ववेत्ता, अजातशत्रु गुरू, मनीषी, ब्रह्मर्षि कर्मयोगी, विनयमूर्ति आदि रूपो के साथ सादा जीवन, उच्च विचार की उनकी जीवन शैली से हर व्यक्ति प्रभावित तथा लाभान्वित होगा।

शोध निबधो मे मूर्तिशिल्प, प्रतिमाओ, मृण्मूर्तियो, प्राचीन मंदिरो, सिक्को आदि पर गहन विश्लेषण है। इस भाग मे वर्णित विषयो का सबध डा० बाजपेयी के जीवन–क्षेत्र से भी है वह और भी अच्छा है। अत में लेखो से जुडे विविध चित्रों ने इस स्मृति विशेषाक को अति विशिष्ट बना दिया है। शोध संस्थान के कर्णधार श्री हजारीमल बाठिया तथा सपादक डा० ए०एल० श्रीवास्तव बधाई के पात्र हैं।

(डा० कर्णसिह)

१ मई १९९३
नई दिल्ली–११० ०२१

० ० ० ०

डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
एम०ए०(हिन्दी सस्कृत),पी–एच०डी०ए डी०लिट
कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय
कानपुर(उ०प्र०)

ता०७ २ ९४

श्री हजारीमल बाठिया
पंचाल शोध सस्थान,
५२/१६ शक्कर पट्टी,
कानपुर–२०८००१

श्री बाठिया जी

आपका कृपा पत्र मिला, धन्यवाद। राज्यपाल भवन से यह स्वीकृति आ गई है कि महामहिम ७ मार्च, १९९४ को आपके कार्यक्रम मे पधारेगे। आप चाहे तो किसी को भेजकर औपचारिक स्वीकृति का पत्र प्राप्त कर ले। शेष कुशल है। ७ मार्च को सीनेट हाल आपको तैयार मिलेगा और एक चौथाई पृष्ठ का विज्ञापन भी आपकी स्मारिका के लिये दिया जायेगा। शेष प्रबन्ध आप स्वय कर ही रहे हैं। कृपा भाव बनाये रहे।

आपका
(विश्वम्भरनाथ उपाध्याय)

० ० ० ०

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान
कला इतिहास संरक्षण एव संग्रहालय विज्ञान
(विश्वविद्यालयवत्)

२० ६ ९४

श्रीयुत् बाठिया जी,
सप्रेम नम।

आपका १३ ६ ९४ का पत्र तथा सलग्न सामग्री मिली।

Mr Hazari Mull Banthia,
Kanpur

0000

ADITYA V BIRLA S B (MIT)

INDUSTRY HOUSE,
159,CHURCHGATE RECLAMATION
BOMBAY,400020.

September 3,1992

My dear Shri Banthiaji,

Thank you so much for your letter of congratulations I greatly appreciate and value your good wishes.

With kind regards,

Sincerely,
Aditya V.Birla

Shri Hazari Mull Banthia
President
Uttar Pradesh Marwari Sammelan
52/16 Shakkarpatti,
Kanpur

0000

वसन्त कुमार बिरला सरला बिरला

29-1-93

Shri Hazari Mullji,

I really appreciate your affectionate message of good wishes and compliments on the occasion of Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, conferring upon me the degree of D.Lit.

This has been possible with the grace of God, blessing of father and good wishes of friends-associates like you.

Thanking you,

Yours
SaralaBirla

0000

RAJIV GANDHI FOUNDATION
Jawahar Bhawan,
Dr. Rajendra Prasad Road,
New Delhi 110001

No RGF/4 4-2-93

Dear Shri Banthia,

Smt Sonia Gandhi has received your letter of 22nd January,1993 and has asked me to thank you for the copy of the book of speech delivered in celebration of the Birthday Centenary of Dr.L.P.Tessitory

Yours sincerely,
Sd-
Wajahat Habibullah
Secretary

Shri Hazari Mull Banthia
Convenor
Dr.L.P.Tessitory Birth Centenary,
Celebrations National Committee
52/16 Shakkarpatti,
Kanpur

0000

week of this month. From the Swiss Airline which is organising our travel, you and Mrs Banthia are scheduled to travel to Italy on the 2nd September, 1994 along with me and my wife We have received the tickets for us from the Swiss Airlines two days ago. I hope you might have also got your tickets accordingly ,

.My wife Dr.K.Nagamma Reddy is a reader in the Dept of Linguistics, Osmania University and she will also be giving a talk at the Meeting on Tessitori We both look forward to meeting you in Delhi before boarding our plane to leave for Udine. Looking forward to meeting you and with best regards,

Yours sincerely,

(B.RAMAKRISHNA REDDY)

0000

The Ambassador of Italy to India

No.5085

October 25,1985

Dear Mr.Banthia,

Thank you for your letter of September 19, 1985, by which you have so kindly invited me to be the Chief Guest on the occasion of the unveiling of the statue of Dr.L.P.Tessitori, on November 22nd.

I regret very much that, due to the exigencies of work, I will be unable to leave Delhi at that time, but Prof. Fernando Bertolini, Cultural Attache of the Embassy and Director of the Italian Cultural Centre, would be most pleased to represent the Embassy at this important function.

A line in confirmation of the schedule for the function will be appreciated to enable Prof. Bertolini to make the necessary arrangements to travel to Kanpur.

With best wishes,

Yours sincerely,
(Rinieri Paulucci di Calboli)

Mr. Hazari Mull Banthia
ConvenorDr.L.P Tessitori Shradha
Samiti Samaroh
52/16 Shakkarpatti
Kanpur

0000

Italian Embassy F/1/B/2(9)-10481
Cultural Centre

24 Dec.,1985

Shri Hazarimal Banthia,
Convener,
Homage to Dr.L P.Tessitori Ceremony,
52/16, Shakkarpatti,
KANPUR.

Dear Sir

This is to express my heartfelt thanks to the organisers of the Ceremony in honour of Dr L P.Tessitori, for the welcome accorded to,my wife and myself and for giving me the honour of unveiling the memento dedicated to the great indologist. I shall be very grateful to you if you could convey this to all those who took upon themselves the task of revealing to the Indian public the work done by Dr.L P.Tessitori in India

I am enclosing herewith the message of the Ambassador of Italy in India, His Excellency R.Pauluccidi Calboli Barone, which bears testimony to the fact that how much he himself would have liked to be present at the function

आजकल कुछ विदेशी प्रदर्शनियों के आयोजन मे बहुत व्यस्तता चल रही है। किन्तु मैं आपकी पुस्तिका 'मेरी इटली यात्रा की कहानी' के पठन का लोभ सवरण नहीं कर सका। पुस्तक बड़ी रोचक और सारगर्भित है। अपेक्षाकृत अल्पज्ञात डा० एल०पी० तैस्सितोरी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालकर आपने सराहनीय योगदान किया है। ३२ वर्ष की अल्पायु में इस प्रतिभाशाली व्यक्ति ने राजस्थानी और हिन्दी साहित्य व सस्कृति के क्षेत्र मे कितना महान कार्य कर डाला। यह शरीर से विदेशी और आत्मा से भारतीय रहे। इनकी तुलना सर विलियम जोन्स से हो सकती है जिन्होंने एशियाटिक सोसायटी की स्थापना कर शोध का मार्ग प्रशस्त किया। आपने डा० तैस्सितोरी को भारत और उनके देश इटली मे जाकर भी श्राद्ध अर्पित किया इसके लिये हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति के विद्वान आपके चिर ऋणी रहेंगें।

आप अवश्य ही उनके सम्मान व्याख्यान देने में इटली जाये और पुरातत्व पक्ष को आलोकित करें। जो सहयोग बन पड़ेगा मैं करूंगा।

शेष कुशल। आशा है सपरिवार स्वस्थ व सानद हैं।
साभिवादन।

(रमेश चन्द्र शर्मा)

पुनश्च –
आपका पूर्व पत्र दिनांक ५.५.६४ भी मिला था–आशा है अभिनन्दन ग्रन्थ का कार्य ठीक प्रकार चल रहा होगा।
शतश: बधाई।

o o o o

C.K.BIRLA

Prakash Deep 10th Floor
7,Tolstoy Marg,
New Delhi-110001

June 28, 1994

Shri Hazari Mull Banthia
Panchala Sodha Samsthana
52/16 Shakkarpatti -
Kanpur.U.P.

My dear Shri Banthia ji,

I am arranging for a book published on my grandfather for your library.

With regards,
Yours sincerely,

C.K.BIRLA

0000

TELUGU UNIVERSITY

Prof.B.Ramakrishna Reddy
Dean
School of Language Development,
Telugu Bhavanam Complex,
Hyderabad-500007.

Dt.16 8 94

Dr.Hazari Mull Banthia
Panchala Sodha Samsthana
52/16 Shakkarpatti,
Kanpur.

DearDr.Banthia

Thank you for your kind letter of 26th July 1994 enquiring about the International Conference on "Tessitori and India" to be held at the University of Udine in September ,1994 I am very happy to know that you are going to participate in the International event and I will have the opportunity to meet you there

Dr Fausto Freschi might have contacted you during his recent trip to India during the first

UNIVERSITA DEGLI STUDI DI TRIESTEI
Istituto Di Scienze Politiche
34100 Trieste Piazzale Europa

Prof. Enrico Fasana Milano 14/10/87
V.Zanella 44/7
20133Milano (Italy)

Dear Sir,

I received your address from dr.Bartolini(Delhi) and Dr Peano (Udine) You"ll represent Bikaner in the panel because you hail from there and I know that you have done a lot for the memory of Dr Tessitori. As I teach in Trieste, which is not very far from Udine at the end of the celebrations you could come to Trieste to deliver a talk on the following Jainism and the impact on the History of Rajasthan, Monday the 16th of November Please let me know as early as possible, if you like the idea

Yours sincerely,

EnricoFasana

0000

Prop Gian Giuseppe Filippi

Universita Degli Studi
S Polo 2035
30100Venezia (Italy)

Via Dardanelli 27
30126 Lido Venezia(Italy)

27-10-87

to Shree Hazarimull Banthia ji,
52/16 Shakkapatti,Kanpur.(India)

My dear Shree Banthia Sahab,

I bag your pardon if I answer you so late, but I had to organize a very big conference. For this aim I forgot every different human contact. That "Workshop" is finished and now I am recovering my freedom. I met Prof. Bertolini in Rome, but before than receiving your letter In this way I could not give him the Pieces of Tea set with golden work After all these months I donot rimember the kind of cops that do you need. Can you send me a Photo as exemple?In this case I can carry it personally to you in India in the next October, when I shall come there with my wife. I Spent the last holiday of Christmas with all my family in Indonesia, i e Bali, where I studied the Hindu community of these countries.

I am very happy of your Project to establish a India-Italy Association in India In the future we could cooperate together I think that you can find some help in two of my friends in India Mr. Asaf Ali, director of the Indian Institute of Islamic Studies,Tughraqabad, 110 062, New Delhi, and dr Satya Vrat Shastri, Head of the Sanskrit Department in the Delhi University, 3/54 Roop Nagar , Delhi 7 and of course, the friend Prof Bertolilni

I am very honoured that I became lifelong member of your Panchal Research Institute, and I will visit it in my next journey in India

There is some new initiative concerning dr Tessitori If affermative,I Pray you to remember to invite in India the counsillor of the Udine Municipality Prof Barbina, who organized our Conference of November. Give the greetings of my family and of mine to your wife, Mrs, Banthia, and accept all the feelings of my frendship

Yours faithfully,

Sd-
Gian Giuseppe Filippi

0000

Thanking you once again, I remain

Yours truly,

(Prof Fernando Bertolini)
Director & Cultural Attache

0000

PRESIDE PROF.
ENZO TURBIANI
VICO PESCATORI 1/11,
18039 VENTIMIGLIA
(ITALY)

ॐ श्री परमात्मने नम   ६ सितम्बर ८७

आदरणीय तथा प्रिय सुहृद,
सस्नेह नमस्कार।

आप निश्चय ही से मेरे नाम से परिचित न होंगे। उत्तरी इटली के एक छोटे नगर मे रहने वाला प्राध्यापक हूँ। मेरे हृदय में भारत तथा उसकी आध्यात्मिक संस्कृति के लिये अनन्त प्रेम विद्यमान है। इसी कारण से राष्ट्र भाषा हिन्दी, गुजराती, बंगला का अध्ययन किया। आशा करता हूँ कि आप मेरी हिन्दी समझे, त्रुटियां तो अवश्य होंगी, कृपया क्षमा कीजियेगा।

डा० ल० प० तेस्सितोरी की जन्म शताब्दी मनाई जायेगी। मैंने कैप्टेन आनंद सिंह, बीकानेर के महाराजा जी के सचिव को लिख दिया था। उन्होने मुझे आपका पता बतलाया। यहां इतालिया में डा० तेस्सितोरी के बारे में अल्प–अल्प जानते हैं। यदि आप मुझे उनके जीवन वृतान्त और उनकी रचनाओं के संबंध में कुछ जानकारी दे देगें, तो आपका कृतज्ञ हो रहूँगा।

क्या भारत मे इन महाविद्वान की कृतियां छप गई हैं? इन कृतियों के शीर्षक कौन से हैं? कदाचित् उनका अधिकांश अब अप्राप्य है? हो सकता है कि इस देश का कोई विश्वविद्यालय डा० तेस्सितोरी पर अनुसंधान कार्य आरम्भ करेगा, किन्तु इस पर संदेह ही होता है क्योकि यह आवश्यक है कि कोई विद्वान भारत में भेजा जाये।

उत्तर की प्रतीक्षा में, आपका आभार मानता हूँ।

भवदीय
एन्जो तर्बियानी

0000

श्री परमात्मने नम
अक्टूबर ८ [illegible]

आदरणीय महोदय,

सस्नेह नमस्कार। जो पत्रिका आप ने दया पूर्वक [illegible] भेज दी थी, वह मिल गई है। इसीलिये आपका कृतज्ञ हूँ। [illegible] के लिये क्षमा करें जी।

संभवतः १२,१३,१४ नवम्बर को उदीने मे तेस्सितोरी [illegible] समारोह में भाग ले लूगा। प्रो० फिलीप्पी ने बतलाया कि [illegible] भी पधारेगे। यह सुनकर बडा बडा आनन्द हुआ। निश्चय है [illegible] से हमारी भेट होगी।

जो आप तेस्सितोरी जी की पवित्र स्मृति में कर रहे हैं वह महत्वपूर्ण है और हृदय को प्रफुल्लित करता ही है। [illegible] पुण्य कार्य के माध्यम से इटली और भारत के बीच मे सांस्कृतिक संबंध घनिष्ट बन जायेगे। वसुधैव कुटुम्बकम्।

आशा है कि सम्मेलन के पश्चात् तेस्सितोरी [illegible] के हेतु कुछ किया जायेगा। जान पडता है कि वेनिस के विश्वविद्यालय में कोई विद्यार्थी राजस्थानी के क्षेत्र में अनुसंधान कर रहे हैं। भविष्य में कोई फल मिल जायेगा।

शेष भगवत्कृपा

भवदीय
(ENZO TURBIANI)

0000

UNIVERSITA DEGLI STUDI DI TRIESTEI
Istituto Di Scienze Politiche
34100 Trieste Piazzale Europa

Prof. Enrico Fasana Milano 14/10/87
V.Zanella 44/7
20133Milano (Italy)

Dear Sir,

I received your address from dr Bartolini(Delhi) and Dr Peano (Udine) You"ll represent Bikaner in the panel because you hail from there and I know that you have done a lot for the memory of Dr Tessitori As I teach in Trieste, which is not very far from Udine at the end of the celebrations you could come to Trieste to deliver a talk on the following Jainism and the impact on the History of Rajasthan, Monday the 16th of November Please let me know as early as possible, if you like the idea

Yours sincerely,

EnricoFasana

0000

Prop Gian Giuseppe Filippi

Universita Degli Studi
S Polo 2035
30100Venezia (Italy)

Via Dardanelli 27
30126 Lido Venezia(Italy)

27-10-87

to Shree Hazarimull Banthia ji,
52/16 Shakkapatti, Kanpur.(India)

My dear Shree Banthia Sahab,

I bag your pardon if I answer you so late, but I had to organize a very big conference For this aim I forgot every different human contact. That "Workshop" is finished and now I am recovering my freedom. I met Prof Bertolini in Rome, but before than receiving your letter In this way I could not give him the Pieces of Tea set with golden work After all these months I donot rimember the kind of cops that do you need Can you send me a Photo as exemple?In this case I can carry it personally to you in India in the next October, when I shall come there with my wife. I Spent the last holiday of Christmas with all my family in Indonesia, i e. Bali, where I studied the Hindu community of these countries.

I am very happy of your Project to establish a India-Italy Association in India In the future we could cooperate together I think that you can find some help in two of my friends in India. Mr. Asaf Ali, director of the Indian Institute of Islamic Studies,Tughraqabad, 110 062, New Delhi, and dr Satya Vrat Shastri, Head of the Sanskrit Department in the Delhi University, 3/54 Roop Nagar , Delhi 7 and of course, the friend Prof. Bertolilni

I am very honoured that I became life-long member of your Panchal Research Institute, and I will visit it in my next journey in India

There is some new initiative concerning dr.Tessitori' If affermative,I Pray you to remember to *invite in India the counsillor of the Udine Municipality* Prof Barbina, who organized our Conference of November Give the greetings of my family and of mine to your wife, Mrs. Banthia, and accept all the feelings of my frendship

Yours faithfully,

Sd-
Gian Giuseppe Filippi

0000

Thanking you once again, I remain

Yours truly,

(Prof. Fernando Bertolini)
Director & Cultural Attache

0000

PRESIDE PROF
ENZO TURBIANI
VICO PESCATORI 1/11,
18039 VENTIMIGLIA
(ITALY)

ॐ श्री परमात्मने नम 	६.सितम्बर ८७

आदरणीय तथा प्रिय सुहृद,
सस्नेह नमस्कार।

आप निश्चय ही से मेरे नाम से परिचित न होगे। उत्तरी इटली के एक छोटे नगर मे रहने वाला प्राध्यापक हूँ। मेरे हृदय मे भारत तथा उसकी आध्यात्मिक सस्कृति के लिये अनन्त प्रेम विद्यमान है। इसी कारण से राष्ट्र भाषा हिन्दी, गुजराती, बगला का अध्ययन किया। आशा करता हूँ कि आप मेरी हिन्दी समझे, त्रुटियां तो अवश्य होगी, कृपया क्षमा कीजियेगा।

डा० ल० प० तेस्सितोरी की जन्म शताब्दी मनाई जायेगी। मैंने कैप्टेन आनद सिह, बीकानेर के महाराजा जी के सचिव को लिख दिया था। उन्होने मुझे आपका पता बतलाया। यहां इतालिया मे डा० तैस्सितोरी के बारे में अल्प–अल्प जानते हैं। यदि आप मुझे उनके जीवन वृतान्त और उनकी रचनाओं के संबंध में कुछ जानकारी दे देगें, तो आपका कृतज्ञ हो रहूँगा।

क्या भारत में इन महाविद्वान की कृतियां छप गई हैं? इन कृतियों के शीर्षक कौन से हैं? कदाचित् उनका अधिकाश अब अप्राप्य है? हो सकता है कि इस देश का कोई विश्वविद्यालय डा० तेस्सितोरी पर अनुसधान कार्य आरम्भ करेगा, किन्तु इस पर संदेह ही होता है क्योंकि यह आवश्यक है कि कोई विद्वान भारत मे भेजा जाये।

उत्तर की प्रतीक्षा मे, आपका आभार मान्‌गा हूँ।

भवदीय
एन्जो तर्बियानी

0000

श्री परमात्मने नम

अक्तूबर ८. [illegible]

आदरणीय महोदय,

सस्नेह नमस्कार। जो पत्रिका आप ने दया पूर्वक मुझे भेज दी थी, वह मिल गई है। इसीलिये आपका कृतज्ञ हूँ। देर के लिये क्षमा करे जी।

संभवत १२ १३ १४ नवम्बर को उदीने में तैस्सितोरी समारोह मे भाग ले लूंगा। प्रो० फिलीप्पी ने जतलाया कि आप भी पधारेगे। यह सुनकर बडा बडा आनन्द हुआ। निश्चय ही से हमारी भेट होगी।

जो आप तेस्सितोरी जी की पवित्र स्मृति में कर रहे हैं यह महत्वपूर्ण है और हृदय को प्रफुल्लित करता ही है। उनके पुण्य कार्य के माध्यम से इटली और भारत के बीच में सांस्कृतिक संबंध घनिष्ट बन जायेगे। वसुधैव कुटुम्बकम्।

आशा है कि सम्मेलन के पश्चात् तेस्सितोरी [illegible] के हेतु कुछ किया जायेगा। जान पड़ता है कि वेनिस के विश्वविद्यालय में कोई विद्यार्थी राजस्थानी के क्षेत्र मे अनुसन्धान कर रहे है। भविष्य मे कोई फल मिल जायेगा।

शेष भगवत्कृपा,

भवदीय
(ENZO TURBIANI)

0000

University of Cambridge
Faculty of Oriental Studies
Sidgwick Avenue, Cambridge CB3 9DA

16-12-1987

Shri H M.Banthia,
52/16 Shakkarpatti,
Kanpur

Dear Banthia Sahib,

It was with great pleasure that I received yesterday the photograph from Udine that you kindly sent me. It will be a pleasant reminder of a very enjoyable three days.

As far as the Veli Krishna Rukamani ri is concerned, It seems very likely that the Italians will approach me with a request to edit Dr. Tessitori's translation of it and of the Vacanika Rathora Ratanasinghaji ri for publication Obviously this will take a considerable period of time, But I shall make sure you are informed of progress.

I enclose a list of my publications as you requested.

With best wishes,

Yours sincerely,
(JOHN SMITH)

0000

VICTORIA
& ALBERT
MUSEUM

South Kensington, London SW7 2RL. Telephone 01-589 6371. Telegrams Vicaleum
London SW7 2RL

Shri H M.Banthia,
Madhur Oil Pvt.Ltd.,
52/16 Shakkar Patti,
Kanpur (India) 18-4-88

Dear Shri Banthia,

Thank you very much for sending us a copy of your very useful journal Panchala.

We are very glad to see that attention is being paid to this area that was so important in the early history of India and I wish your journal every success.

There have been many new developments here- one of which is that I shall retire in September. After that I hope to be less busy and may have more chance to look into the possibility of there being any records relating to Amar Chand Banthia.

I hope that you have been keeping well since we met in Udine

With kind regards,
Sd-

Yours sincerely,
Robert Skelton.
Keeper, Indian Department

0000

Indian Department
Victoria & Albert Museum
London
SW7 2RL

12 July-1988

Dear Sir,

We have a copy of the second volume of your journal Panchala in our library and I am writing to enquire whether you would be willing to send us a copy of volume 1 in exchange for one

Universita Degli Studi Di Trieste

34100 Trieste...
12-11-1987

Dipartimento
Di Scienze Politiche Piazzale Europa.

In occasione delle celebrazioni per il centenario della nascita di Luigi Pio Tessitori (1887-1919), si terra a Trieste, Il giorno 16 November p.v alle ore 15, presso L"Aula Q dell"edificio centrale dell" Universita degli studi(Piazzale Europa 1, II piano), un *Seminario* di cultura del Rajasthan (India)

Presentati dal prof. Enrico Fasana, *docente di storiaed istituzioni dell"Asia presso* L"Ateneo triestino, terranno una relazione (con diapositive) su " Storia dei Bardi e dei Jaina" il prof SHAKTIDAN KAVIYA dell" Universita di Jodhpur (India) ed il prof. HAZARIMULL BHANTIA di Kanpur(India).

La S.V. e invitata a partecipare

Il Direttore del Dipartimento

(Prof. M.Paola Pagnini)

0000

Universita Degli Studi Di Trieste

34100 Trieste
16-11-87

Dipartmento
Di Scienze Politiche
Piazzale Europa.

Prot No. 490/A/87

Mr Hazarimull Bhantia Chairman del Panchal Research Institute Kanpur Uttar Pradeste, (India) has delivered a very interesting and rare talk on : " Dr. Tessitori and the impact of Jainism on Indian culture (mainly Rajasthan)".

We were very pleased to have him w us on 16th Nember 1987 in the Departmen Political Science of the University of Tri (Italy).

with regards,

the Head of the Departm
prof. Paola Pagn

0000

ASSOCIAZIONE ITALIA INDIA
ITALY INDIA ASSOCIATION

Venice, November 17th 1987

Mr.HajariMullBanthia,chairm
[illegible]

a lecture on the following subject Dr. Tessitori contribution to Rajasthan and Rajasthani la guage in the presence of H.E. the Ambassado Shri Akbar Mirza Khaleeli and the Majors o Udine and Moggio We learned that thanks t Mr. Banthia a tomb was erected in the graveya of Bikaner, and a statue of Tessitori was posed in Kanpur.

We had the pleasure to enjoy Mr Banthia's company during his stay in italy.

The General Secretary
of Italy-India Association
Prof. Gian Giuseppe Filippi
(Indologist, University of Venice, Italy)

54

0000

4th November, 89

Dear Banthia,

Your letter of 26 September has reached me in due course. I was pleased on reading your great interest for rao Bhikaji's exploits, So, in a registered parcel, I sent you other historical works, concerning your Rajasthan

Last week I received a review, kindly posted by you on 7th June 89, with the writing on Dr. Tessitori, and your own article, which gave me much delight. yet I say that the discovery of the Indo's seals happened in the first months of 1919, and in a locality along the Ghagghar's banks, so I think. Otherwise, for what reason dr,Tessitori never alluded before 1919, to his bone objects, the more so he immediately realized the highest importance of the three seal Is ?

I am waiting for the Acts of the meeting of Udine in November 1987, they are to be published within short time (while they had to be published in last September) when they are available, I shall send them to you

With my best greetings to you, and to your familiars (how many sons have you?)

Yours faithfully
(Dr.) GUIDO PEANO

To.
Dr. Hazari Mull Banthia
52/16, Shakkarpatti,
Kanpur-208 001

0000

SOCIETA' INDOLOGICA "LUIGI PIO TESSITORI"

Udine, 8th February 1994

Dear Hazari Mull Banthia,

On the 29th November 1993 in Udine the "Luigi Pio Tessitori" Indian Society was founded Dedicated to oneof this century's most illustrious indologists, this society shall have the following institutional aims:

-to spread knowledge of Indian culture in its philosophical , linguistic, historical and artistic aspects;

-to promote scientific investigation into indlogy;

- to collaborate with Italian and non-Italian institutions;

- to collect bibliographical material and documentation relating to the various aspects of Indian culture;

- to organize meetings, seminars, concerts, exhibitions, etc., in collaboration with other institutions.

Financial support has already been guaranteed by local authorities and the private companies. The heads of various departaments of the Faculty of Arts of Udine University, the Director of the International Centre for Plurilingualism and the Director of Udine City Library have been informed of the foundation of this new society, and all have expresed great interest and offered their fullest support.

The Society has also established links with the Faculty of international Diplomatic Sciences at Trieste University, with the Italian Philosophical Society and the Indo-Italian Association in Rome.

University lecturers and researchers from Italy and abroad are welcome to join the "Lugi Pio Tessitori" Indian Society as honorary members

I am pleased to inform you that Prof. Giovanna Fuggetta, a friend of Prof Filippi, is now travelling in India and will contact you in the next few days to realive in Rajasthan a reportage on Tessitori.

I thank you for the kind welcome you will give her.

The President
(Dr Fausto Freschi)

0000

of our own publications
Yours faithfully
Sd-

Mr G F Parlett
Indian Department

0000

AMBASSADOR EMBASSY OF INDIA
VIA VENTI SETTEMBRE 5,
ROME
ITALY

No Rom/151/301/5/87 April 6, 1988

Dear Shri Banthia,

This is to acknowledge receipt of your letter dated 15th March and the nice photograph of your meeting in connection with the Tessitory Birth Centenary.

Yours sincerely,
Sd-
(A.M.Khaleeli)

Shri Hazari Mull Banthia,
Dr.L.P.Tessitory Birth Centenary
Celebrations National Committee,
52/16 Shakkarpatti.
Kanpur.

0000

23 rd 7 88

Dear Hazari Mull Banthia,

Yesterday, with great pleasure, I received your letter of 21st June: many thanks for your research in the Bikaner Archieves, and for the photo of Hisor Dan, that you sent me: unfortunately it is a copy of another faded photo which I sent to prof. Fasana some time ago: I hoped you have collected another clearer photo of this personage; and with regard to the others, have you nothing?

Last week I sent you a registred parcel with the Italian translation from Hindosthani of Mir Amman "Il Mercante Agoracani", a work published by my uncle in Udine, in 1913: the same work was publihed, by instalment, also on "Il Giornale di Udine" in 1913.

In the parcel I enclosed the "Alba", the Moggio Parish Bullettin, reporting Tessitori's Centenary Commemoration of 14th November 1987; from some chosen pieces of "The Indian Diary" of Tessitory, you can get a full knowledge of my uncle's belief in Jesus and in the Christian Religion.

In the parcel I have inclosed also some historical researches on Viko, which I copied from Tessitori's notes; I ask you about the importance of these notes, and if this work, and so many other notes, which I own, had already been published, or till-now, are to be published.

In your letter you asked me a photo with both dr. Tessitori and Mah. Ganga Singh I haven't one; I can only send you a photo of Mh Ganga Singh: in this photo he is in a standing posture, and all-alone: if you need this photo, I shall send you shortly.

Many thanks for "the *Weekly* Hindustan".

With the best regards to your wife and to you.

Yours faithfully
Dr. GUIDO PEANO

0000

Dott. Freschi is on the point of starting for India, to make a research stay of three months, he will be certainly present at the ceremony of 13 december, in Bikaner.

Last month I sent Tessitori's Photoes and documents to acharya Shree Padma Sagar Suri, of Delhi: until to-day I not received any writing of reply: my parcel was lost, perhaps?

With reference to Tessitori's Council of September, the book of the Acts will be iussed only within a year; I send you a bill of the Indiologic Society, and a list of the conferences in course.

With many regards.

Yours faithfully
GUIDO PEANO

0000

Udine 15 Dec 1994

Dear Mr. Banthia,

I'm sorry for the delay I write you but I was very busy, I hope you are well.

I send you some photos I took during the meeting in Udine so you can have a souvenir about time you spent in Udine-Probably in January my husband and me will come in India but we will visit the south. I will write you

In Italy now is Christmas time so I send you my best wishes

Your sincerely
Laura

Lois of greetings from Umberto.

0000

PADOVA (ITALY)

Dear Mr. Banthia, 17.12.94

Thank you for your latter dated 6.12.94 and for the book-thesis that we return to you after reading and after getting some photo-copies-

During Archaeogical International Congress we met Mr. A.Misra and Dr Bruno Marcolongo(You know him from Udine)- we spent some time together speaking about Kampil Porject. Mr. A Misra will inform you about that.

We contacted also frof. Purushottam Singh, head of department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology of Banares Hindu University. He knows very well prof.K K.Sinha and prof T.N Roy who worked with him in Kampil- Prof Singh is interested on this project and we hope he will help us for the official permit when we will arrive in Italy, we will inform prof Filippi on our survey and on your cooperation"s purpose, and we hope that he will decide to proceed on the project

Now we are travelling with our daughter and friends We will be in Delhi on the 1 January (evening) and we have our fly during the night- we are sorry, but we think that it will be difficult to meet you, however we hope to see you soon next year, may be to start really the Kampil project.

We know from Fausto Freschi that you are now in Bikaner and we hope that your activities there are satisfactory- we will cantact you again from Italy Thank you for all-

Yours faithfully,
Annamarile elucio Marcolo.

0000

SOCIETA INDOLOGICA "LUIGI PIO TESSITORI"

Udine, 20.05.1994

Dear Hazari Mull Banthia,

Thank you very much for your letter dated May 7th 1994 concerning your participation at the meeting "Tessitori and India". It will be a great pleasure for me to see you again and to present you to Italian public.

I confirm the dates of the meeting: that is on *September 9th and 10th, 1994 Would you* please inform me, as soon as possible, about the date of your arrival in Udine, so that I may study all datails for visa and flight ticket (only from India to Italy and return).

I regret to inform you that the organization is not able to provide the flight ticket for your *wife All the expenses for the hotel accomodation,* for you and your wife will be taken care of by our Society.

Hoping to hear from you soon, I send you my best regards

Yours sincerely,

Fausto Freschi

Fausto Freschi
Via S. Bernardo 39
33010 Cavalicco (Udine)
ITALY

0000

DIPARTIMENTO DI STUDI INDOLOGICI ED ESTREMO-ORIENTALI

Venice 27 Oct. 1994

Dear elder brother,

I reqest that I could'nt to see you in Udine, last September-But, with my best wishes, I send you my disciple- This lady will be the first contact of the cooperation between Kanpur and Venice-She will explain you our project. Please introduce her to the colleagues of Kanpur and to the ambiences of Kampil and Faruqabad- I will send soon some notes and photographs to the Panchala Research Institute and Prof. Mishra -

All the best wishes to your Family and you,

Yours faithfully
Gian Giuseppe Filippi

0000

Dott. GUIDO PEANO
REANA DEL ROIALE (Udine)

Dated 29.11.1994

My Dear Banthia,

My wife and I were much delighted in giving hospitality to you in our house, in account of your personality, and of the great things have you done and are doing for our uncle All well, only I was disappointed, because my little understanding of the English speech held us isolated a little each other (My English knowledge is such, as this language was taught once at school, with a great consideration for the rules of grammar, and a little account of the effective usefulness)

Udine, 9-5-1995

Dear Sri Banthia,

I beg your pardon for my delay in answering your letter, but in this period I am not well, and so, I am able to write now, and I am writing to you from my new home Here I am going on finishing the catalogue on Tessitori's bequest I am very glad to hear that in September, a volume will be published about you Good wishes to you. When will be the marriage of Tinu? Please write me the date

Awaiting your kind reply, please send my Greetings to Prof Sakariya

Yours Sincerely
Anna Brosolo

0000

Consiglio Nazionale delle Ricerche

to Prof. H.M. Banthia
Acting President of the
Panchala Sodha Samsthan
52/16, Shakkar Patti,
Kanpur 208001, U.P. INDIA

to Prof. V.N. Misra
Director of the
Post-Graduate and Research Institute
Deccan College
Pune 411006, Maharashtra, INDIA

to Prof. P. Singh
Head of the Dept. of Archaeology
Banaras Hindu University
Varanasi 221005, U.P., INDIA

Padova, April 10th 1995

Distinguished Sirs,

Back from the third International Archaeological Congress held in New Delhi the last December, during which I had the honour and the pleasure to meet You and discuss with You some basic concepts on ancient cultures/ environment relationships, I examined closely with Prof Gian Giuseppe Filippi the possibility to build together a joined geo-archaeological project on this matter

The original idea is starting from a thesis work in progress at the University of Venice, Dept of Indological and Oriental Studies, followed by Pfof Filippi as tutor and by me as external co-tutor from C N.R. (National Researches Council of Italy) about the ancient Kampilya in its natural setting. Being data and observations acquired so far of particular stimulus (both ground survey and satellite images IRS 1B), I established a scientific co-operation agreement with the University of Venice-Dept. of Indological and Oriental Studies. From my viewpoint this project is concerning the global relatronships between natural resources, environmental changes and archaeological evidences in the Kampil area; Your participation would be of fundamental significance, being well known Your cultural interest and Your studies on this specific field..

So I am supporting the prof. Filippi's proposal for an integrated geo-archaeological project with an Indo-Italian equipe, which has to be defined by mutual consent from conceptual and operative points of view, to be able to find financial support and funds

Looking forward for receiving Your suggestions and comments as soon as possible.

Yours faithfully,

Dr. Bruno Marcolongo

please, reply by Fax
my Fax is : ITALY code/49/8295827

0000

Udine 19-1-95

Dear Sri Banthia,

Just Yesterday, I received your kind letter in date 19-12-94. I thank you very much for your greetings for Christmas and New Year 1995. In your letter you wrote me dr. Freschi came to India: certainly I know of his stay in India and in Rajasthan particularly. I also know that in Kampil there are some important Budhist monuments, and I hope that dr. Anna Marcheto with her husband will work well in Kampil on this research.

As soon as the letter from Dr. Rajmal Jain arrives at Udine, he will be able to receive his microfilm from Tessitori"s bequest.

I hope that you and your family are well

Please, send my fond greetings to Professor Sakariya from Vallabhvidyanagar and to dear Tinu.

Awaiting your kind reply,

Yours faithfully
Anna Brosolo

0 000

David Liversage, Morlenesvej 26, 2840 Holte, Denmark

Dr. Hazari Mull Banthia,
Panchala Soda Sansathana,
52/16 Shakkarpatti,
Kanpur 208001

January 27th, 1995

Dear Dr Banthia,

I only want to thank you for the invitation to the meeting at Kaimgunj, which was unconditionally the high point of my last visit to India I would like very much to have stayed until the end, but if you have an apex air ticket, as I had you have not much flexibility. If the whole meeting was the high spot of my whole journey in India, the concert was the high spot of the meeting for me. I find I can listen to records of Indian folk music in the library here, and am spending a little time learning of the richness of this heritage, which had gone past me almost unnoticed before on my various visits. Most of the music was recorded in the 50's and 60's and I hope it is not dying out. I once met a Danish woman who had been several times to India recording on tape the Vedas, while there still are people who know to sing them as they learned from a long line of ancestors. Perhaps you could have helped her

I am afraid the last afternoon I was a bit nervous because of not being able to get clear information about when and how I would be leaving and what time I would arrive in Delhi My worst fears came to fruition (except that I did have a seat in the buses), and when we arrived in Delhi to a dark bus station at 3 a m I was glad I was in good hands.

I also want to thank you for the appointments diary and the publications, and wish the society the best success

I hope Dr. Vishvanath Misra received my letter.

Yours sincerely
sd-
David Liversage

0000

कल्याण सिंह,
एम. एल ए., अतरौली (अलीगढ़)
प्रदेश अध्यक्ष, भा ज पा. उ०प्र०

७ – विधान सभा मार्ग
लखनऊ
दिनांक १३ ३ १९८५

बन्धुवर,

सादर नमस्ते।

चुनाव में सफलता के लिए अपनी स्नेहपूर्ण बधाइयों के लिए कृपया मेरा सादर आभार और विनम्र धन्यवाद स्वीकारे। मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि यह जीत प्रभू की अनुकम्पा, जनता–जनार्दन के शुभाशिष, कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम और आप जैसे आत्मीय मित्रों की सद्भावनाओ का ही परिणाम है। मैं तो प्रत्याशी के नाते निमित्त मात्र रहा हूँ। आपके अनुभव–सिद्ध सुझाव और सुयोग्य मार्ग–दर्शन मेरा सम्बल सिद्ध होंगे। परमात्मा मुझे शक्ति दे कि आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप जनसेवा के अपने उत्तर–दायित्वो का निर्वहन करने में प्राण–पण से जुटा रहूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मेरे प्रति इसी प्रकार स्नेह बनाये रखेगे।

परिवार में सभी को मेरा यथायोग्य सादर अभिवादन और बच्चों को स्नेह।

शेष शुभ।

आपका अपना भाई–

(कल्याणसिंह)

सेवा में,

श्री हजारीमल बाँठिया
५२/१६, सखर पट्टी
कानपुर (उ० प्र०)

० ० ० ०

Paras Jain

Phone : 79526

Bunglow No. 13,
Burton Road
BOLARUM-500 010

Date 7-6-89

आदरणीय श्री हजारीमल जी बाँठिया,

सादर जय जिनेन्द्र।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। विश्व में सारी मानव जाति भयाक्रांत है। विनाश से बचने के लिए बड़े राष्ट्र चिंतित हैं। उनके द्वारा शांति के लिए परस्पर मिलकर जो प्रयास चल रहे हैं, वह भविष्य के लिए शुभ संकेत है, रूस और अमेरिका के अध्यक्षों ने भी यह मान्य किया है कि अहिंसा व सह–अस्तित्व ही विश्व शान्ति के लिए एक मात्र उपाय है।

समग्र जैन समाज को इस बात का गर्व है कि आज से हजारो वर्ष पूर्व हमारे आदि तीर्थंकरों ने सुख और शान्ति के लिए अहिंसा को आधार माना है। अनेकांत, स्यादवाद जैसे अद्वितीय दर्शन विश्व को भगवान महावीर की बहुत बडी देन है। जैन समाज बुद्धि कौशल, उद्योग व्यवसाय, शिक्षण, कला, साहस, उदारता, सामाजिक एवं पारमार्थिक सेवाओं में अग्रणी रहे हैं। इतनी विशेषतायें होते हुए भी संगठन की कमी एवं बिखराव के कारण हमारी, राष्ट्रीय स्तर पर पहचान नगण्य है।

समाज मे पनप रही विकृतियों से व्याकुल होकर श्री हस्तीमल मुणोत एवं श्री पारस भाई जैन ने भारत वर्ष में बसने

UNIVERSITA DEGLI STUDI DI VENEZIA
Depertimento Di Studi Indologici
Ed Estremo - Orientali
VENEZIA - ITALIA

to Prof. H.M. Banthia
Acting President of the
Panchala Sodha Samsthan
52/16, Shakkar Patti,
Kanpur 208001, U P., INDIA

to Prof. V.N. Misra
Director of the
Post-Graduate and Research Institute
Deccan College
Pune 411006, Maharashtra, INDIA

to Prof. P. Singh
Head of the Dept. of Archaeology
Banaras Hindu University
Varanasi 221005, U.P., INDIA

VENICE, April 10th, 1995

Eminent Colleagues,

After visiting the site of Kampil, presiding over a thesis which collects sources of scriptural material and compares the data found in loco, and after studying the satellite maps of the area thought to be the ancient Kampilya, I have established a project of co-opration with the C N.R. Office (the Italian National Centre for Research) of Padua having the following aims:

- study of the hydrographic configuration of the Ganges river in the course of the past millennia;

- study of the variations in the human settlements following the changes of the course of the Ganges river;

- study of the environment and of the anthrop situation of the Kampil area;

- prospections and excavations of the archaeo-logical remnants.

I thought of addressing myself to Your institutes, knowing of Your various researches on these subjects in the past, I' d like to propose to you the creation of an equipe of Indo-Italian scholars. This could be made up of researchers belonging to the C.N.R. (under the supervision of Dr. Bruno Marcolongo) and other scholars of this Department, besides of course people of Your choice belonging to Your Institutes. Obviously, the project requires thoughtful prepara-tion and we would have to arrange a meeting among us in the near future.

Nevertheless, we need to know about Your interest in the project as soon as possible, so that my colleagues and I might explore the possibility of finding financial aid for such joint adventure.

Please give us a reply utilizing the fax

With warmest regards

Yours,
Sd
Prof. Gian Giuseppe Filippi

0000

की जिम्मेदारी कुछ कम हो सकेगी।

श्री हेमचन्द्राचार्य के बारे मे आपका लेख मिला। प्रसन्नता हुई।

आप कुशल होगे।

आपका

(श्रेणिक कस्तुरभाई)

प्रति
श्री हजारीमल बाठियाँ
कानपुर

o o o o

PREMCHAND GOLIYA

MANAGING DIRECTOR

MECO INSTRUMENTS PVT. LTD.

OFFICE.
BHARAT INDUSTRIAL ESTATE.
T.J ROAD, SEWREE,
BOMBAY-400 015 (INDIA)

TEL:4137423/4132435
FAX.91-22-4130747
TLX:11-71001 MECO IN
CABLE: 'STANCOR', BOMBAY-15

Date : 9th July 1992

Respected, SHRI HAZARIMALJI BANTHIA

I hope this letter finds you in the best of health & spirits. We are all enjoying good health hear.

I have pleasure in informing you that a COMPUTER CENTRE, to impart computer courses to the commerce students, is being inaugurated at Jain Pathshala (P.G.) College, Gangashahar Road, BIKANER on 8th August 1992. in the memory of our bloved father Late Shri. PARASMALJI GOLIYA.

I take this oppurtunity to extend to you a personal invitation to grace the occasion by your presence which shall be a great honour not only to me but to the Jain Pathshala (P.G.) College also. Your presence will also be an inspiration to all of us to go miles ahead in this noble cause.

With best regards,

PREMCHAND P. GOLIYA.

SHRI HAZARIMALJI BANTHIA
NAHATA BANDU
52 / 16 SHAKKAR PATTY
KANPUR - 1

0 0 0 0

श्रद्धेय श्री बाँठीया साहब,
कानपुर।

सादर जय जिनेन्द्र।

यह पत्र आप एवं परिवार के सभी सदस्य गण को प्रसन्न चित्त पायगा। आपके द्वारा प्रेषित पत्र आज दिन प्राप्त हुआ, और साथ ही २५ सितम्बर को आयोजित आप श्री के सम्मान समारोह का आमन्त्रण एवं विस्तृत विवरण भी प्राप्त हुआ ...।

सर्व प्रथम तो आप जैसे पुनीत एवं प्रमुख समाज सेवी के व्यक्तित्व का समाज के द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के लिए अग्रिम ढेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएं स्वीकारें ... अभी तो प्रयास भर ही लिख पा रहा हूँ कि सम्भव और अनुकूलता हुई तो प्रत्यक्षतः भी सहभागिता का लाभ प्राप्त कर सकने का पूरा–पूरा प्रयास करूगा ही फिर भी आज तो अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति इस पत्र के माध्यम से बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाओं के रूप में प्रेषित कर रहा हूँ___।

आम व्यक्ति से हटकर जो अपने जीवन के पद्धती

वाले जैन समाज के लोगों से व्यक्तिगत मिलकर समाज में व्याप्त समस्याओं को जानने का प्रयास किया है। इस प्रयत्न में वे अब तक लगभग ७००० किलोमीटर की यात्रायें कर चुके हैं। और यह क्रम आगे भी चालू रहेगा। इन यात्राओं से जैन समाज के सक्रिय तथा सर्वसाधारण लोगों के विविध विचार हमारे सामने आये। उनका विश्लेषण करने पर हमने अनुभव किया कि समग्र जैन समाज का एक मंच गठित कर तद्द्वारा समाज मे संपूर्ण क्रांति लाने का प्रयास किया जाए। इस दृष्टि से दिनांक ६-७-८६, गुरुवार को हैदराबाद नगर में सक्रिय एवं उत्साही कार्यकर्ताओं का एक समावेश (गोष्टि) करने का निश्चय किया है। जिसमें भावी कार्यक्रम निर्धारित किया जायेगा।

हमारी यह भावना है कि यह कार्यक्रम आपके सान्निध्य में सम्पन्न हो। हमारा विश्वास है कि आपका जीवन तथा आपकी जो सेवायें राष्ट्र को उपलब्ध हुई हैं, उससे जैन समाज को भी मार्गदर्शन व प्रेरणा मिलेगी।

हमारी प्रार्थना है कि आप स्वीकृति प्रदान कर हमें अनुग्रहीत करेंगे।

धन्यवाद।

विनीत
(पारस जैन)

श्री हजारीमल जी बाँठिया,
५२/१६ शक्कर पट्टी,
कानपुर – २०८ ००१
(यू० पी०)

o o o o

Shrenik K Lalbhai

६ जून ८६

आदरणीय हजारीमलजी,

आपका २६ मई का पत्र मिला। अयोध्या के [illegible]

है कि यदि अयोध्या का कोई भी कार्य यहा से हाथ [illegible] तो आपको ठीक समय पहले सूचित करें। अयोध्या का [illegible] मुहूर्त अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ यह समाचार [illegible] बालकृष्णभाई से भी मिला था। मशीन लाने वाले [illegible] फार्म की जरूरत है और यह मिल जायेगा इसकी नोंद ली है।

अयोध्या के बारे में जो लिखा उसकी नोंद ली है। ५/६ लाख जैसी राशि इकट्ठी करने में देरी होगी ऐसा [illegible] है। इसके बजाय १/१।। लाख एकत्रित करके [illegible] और जो कमरों की जरूरी मरम्मत करवा के सुविधापूर्ण [illegible] तो यह काम जलद नीपटेगा। बाद में जैसे-जैसे [illegible] आते जायें उनसे बात करके राशि एकत्र की जा सके तो [illegible] मे धर्मशाला एवम् भोजनालय के बारे में सोच सकें। फिर [illegible] इसके बारे में मोटीजी के ट्रस्टीया के साथ बात करके [illegible] हो सकता है आपको लिखुंगा।

आपने जैन मैनेजर रखने के लिए लिखा। [illegible] समझ है कि २००० रु० प्रतिमाह बहुत ही ज्यादा है। [illegible] कल्याणजी के ६/७ अलग-अलग मैनेजरों को भी [illegible] १३०० से १५०० के बीच वेतन दे रहे हैं। यह आपकी [illegible] के लिए लिखा है।

आप वकील के साथ-साथ अयोध्या का [illegible] देखेंगे जानकर प्रसन्नता हुई। इसके बारे में [illegible] ट्रस्टीयों के साथ बात करने वाला हूँ। [illegible] के दौरान आपने सूचित किया था कि अयोध्या में [illegible] की बड़ी फैक्टरी है और वहा के लोग अयोध्या का [illegible] देखें ऐसा बन्दोबस्त आप कर देंगे। ऐसा हो सकें तो [illegible]

श्री हजारीमल बाँठिया

व्यक्ति एक : संस्थाएँ अनेक

को आत्मसात करते हैं वे निश्चित रूप से समाज के द्वारा यथोचित मान और सम्मान के हकदार भी होते हैं और यह कृत्य ही उनके जीवन मूल्यो और आदर्शों का उपहार समाज के द्वारा दिया जा सकता है.....पुनः एक बार ढेर सारी बधाई....।

सहृदय भाई साहब ने जब अपनी बिटीया के बारे मे जिक्र किया था मैं तभी वय के बारे में अहसास का चुका था, फिर भी आपने अन्य जो प्रस्ताव किया है उसके लिए मैं अभी केवल धन्यवाद ही लिख सकता हूँ। यूं सम्बन्धों का होना न होना सब कुछ योग संयोग एवं प्रकृति के अधीन मानता हूँ फिर भी इस निमित्त आने जाने से जो परिचय के सूत्र बनते है कभी–कभी वे भी प्रगाढ़ता एवं अपनेपन का बोध कराते रहते हैं, इसी तारतम्य में आप श्री से जो पहचान हुई है वह भी अमूल्य है ।

उस अन्चल में आने पर आप परिवार के सदस्यों से मिलने मे जहां खुशी का अहसास है, वहीं पर एक आग्रह कि आप परिवार भी जब कभी इस ओर एवं तीर्थाटन के रूप में भी पधारें तो अवश्य ही आतिथ्य जो ईश्वरोपासना का स्वरूप है से वंचित ना करावे.....।

शेष सब शुभ है, माननीय भाईसाहब से नमस्कार अर्ज करायें, परिवार के बडो को सादर मुजरा, एवं अनुजों को स्नेहिल स्मरण अर्ज कराये।

सधन्यवाद।
शुभेच्छु

बाबूलाल नाहर
चौपाटी रोड, जावरा (म०प्र०)

व्यक्ति एक – संस्थाएँ अनेक

श्री हजारीमल बाँठिया का व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। वे किशोरावस्था से ही अनेक संस्थाओ के कार्यक्रमो मे सक्रिय एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे थे। उनका आरम्भिक जीवन बीकानेर मे व्यतीत हुआ। तत्पश्चात् वे हाथरस आये और फिर कानपुर मे रहने लगे। इन तीन प्रमुख स्थानो की अनेक सस्थाओं से वे जुड गये। इनके अतिरिक्त देश के अन्य प्रमुख नगरो की भी अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं सास्कृतिक सस्थाओ से उनका निकट सम्बन्ध रहा है। इन समस्त संस्थाओ का विस्तृत विवरण देना सम्भव नही है, अत इनका सक्षिप्त परिचय ही यहां दिया जा रहा है। इन सभी संस्थाओ को श्री बाँठिया जी का तन, मन, धन से सहयोग सदैव प्राप्त होता रहा है।

१. श्री जैन प्रधान वाचनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर (राजस्थान)

श्री हजारीमल बाँठिया ने सामाजिक कार्यों का आरम्भ १६३५ ई० में यहीं से किया। यहीं से उन्होंने वाद-विवाद प्रतियोगिताओं मे पुरस्कार जीते और हस्तलिखित पत्रिका का सपादन किया। श्री बाँठिया इस वाचनालय के सदस्य तथा मन्त्री रहे। यहां उन्हें श्री रामरतन जी कोचर से विशेष प्रोत्साहन मिला जो इनके प्रथम सामाजिक क्षेत्र के दिशा-निर्देशक और गुरु थे।

२. श्री महावीर जैन मण्डल, बीकानेर (राजस्थान)

श्री हजारीमल बाँठिया ने सन् १६४० ई० से जैन-समाज की गतिविधियो मे भाग लेना आरम्भ किया। श्री महावीर जैन मण्डल द्वारा आयोजित जयन्तियों तथा समाज सुधार के कार्यक्रमो में बाँठिया जी ने बढ-चढ कर भाग लेना आरम्भ किया। वे इस संस्था के सदस्य तथा उपमंत्री रहे।

३. श्री अभय जैन ग्रंथालय, नाहटों की गुवाड़, बीकानेर (राजस्थान)

स्व० श्री अगरचंद नाहटा द्वारा सन् १६२० में स्थापित इस ग्रथालय मे सन् १६३७ के लगभग से बाँठिया जी ने पुस्तकों का अध्ययन आरम्भ किया। इसके पश्चात् वे इसके ट्रस्टी बन गये और अपना टिकटों, सिक्कों तथा चित्रों का संग्रह इस ग्रंथालय को भेंट कर दिया। इसके अतिरिक्त ग्रंथालय को समृद्ध करने मे जो भी बन सका, सहयोग दिया और आज भी इसके प्रमुख व्यवस्थापक श्री विजयचन्द नाहटा को परामर्श तथा सहयोग देते रहते हैं। इस ग्रंथालय मे लगभग डेढ लाख पुस्तकें तथा तीन हजार शिलालेख संग्रहीत हैं।

४. श्री सुन्दर स्टाम्प क्लब, कोचरों का चौक, बीकानेर (राजस्थान)

श्री बाँठिया को बचपन से ही टिकट-संग्रह का शौक था अत पत्राचार के माध्यम से टिकट-संग्रह करने

७. सेठ फूलचन्द बाँठिया राजस्थानी भाषा पुरस्कार समिति, बीकानेर (राजस्थान)

इस समिति की स्थापना श्री हजारीमल जी बाँठिया ने अपने स्व० पू० पिताजी की समृति मे १६५६ में की थी। इसके द्वारा प्रथम पुरस्कार श्री नरेन्द्र भानावत को १०१) का दिया गया जो उस समय विद्यार्थी थे। तब से राजस्थानी भाषा के विद्वानों को प्रति वर्ष पुरस्कृत किया जाता रहा है। अब इस पुरस्कार की राशि २०००) हो गई है जो प्रतिवर्ष बीकानेर में भारतीय भाषा अनुसन्धान परिषद् के मन्त्री डॉ० दिवाकर शर्मा के संयोजकत्व मे श्री फूलचन्द जी बाँठिया की पुण्यतिथि पौष शुक्ला १२ अथवा जन्म तिथि माघ कृ० १३ को दिया जाता है। श्री बाँठिया इस समिति के संस्थापक अध्यक्ष हैं। निर्णायक मण्डल मे प्रो० भूपतिराम साकरिया (वल्लभविद्यानगर) हैं। पुरस्कार प्राप्त करने वालो मे प्रमुख डॉ० मनोहर शर्मा, डॉ० नरसिंहराज पुरोहित, डॉ वीणा गांधी, ठा० मदनसिंह, श्री मूलचन्द प्राणेश, श्री दीनदयाल ओझा आदि हैं।

८. श्री सुगनजी का उपासरा, रांगडी चौक, बीकानेर (राजस्थान)

यह खरतरगच्छीय जैन परम्परा का धर्म–ध्यान केन्द्र है। साधु, मुनि आदि यहा ठहरते और प्रवचन देते हैं। बांठिया जी का इस उपासरे से बचपन से ही सम्बन्ध है। उनकी गोद–माता सुन्दरबाई बांठिया धर्म–पत्नी स्व० सेठ बुलाकीचन्द जी बाठिया ने सन् १६२७ मे बीदासर गेट के बाहर बीकानेर मे एक मकान इस उपासरे को दान कर दिया था जो इस समय लाखो रुपये का है। बांठिया जी के बीकानेर परिवार के सदस्य यहीं धर्म–ध्यान करते है। श्रीमती सुन्दरबाई ने दीक्षा लेने के पश्चात् (चन्द्रश्री महाराज के नाम से) कई वर्ष इसी उपासरे मे ध्यान किया था। इस उपासरे का अभी जीर्णोद्धार हुआ है जिसमे बांठिया जी तथा उनके भानजे श्री तनसुखराज डागा ने अर्थ सहयोग दिया है। वर्तमान मे इसके अध्यक्ष श्री हीराचन्द खजांची और मंत्री श्री टी० आर० नाहटा हैं। यह उपासरा श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ के अधीन है। श्रीमती सुन्दरबाई बांठिया ने जब यह भवन दान मे दिया था तब अपने पति की स्मृति–स्वरूप श्री केशरीचद बुलाकीदास बाठिया बीकानेर के नाम का शिलापट्ट लगवाया था।

६. श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, अजमेर (राजस्थान)

खरतरगच्छीय बडे दादा श्री जिनदत्त जी सूरि म० के समाधि–स्थल के निकट ही समाज सेवी संस्था श्री जिनदत्तसूरि मण्डल स्थित है। इसकी स्थापना ४२ वर्ष पूर्व श्री मागीलाल जी पारख द्वारा की गई थी। मण्डल द्वारा दादाजी की स्मृति में प्रतिवर्ष मेले का आयोजन किया जाता है। संस्था द्वारा वृद्धाश्रम, छात्रावास, छात्रवृत्ति, प्रकाशन संस्था, स्वरोजगार योजना तथा भोजनशाला का संचालन किया जाता है। प्रतिवर्ष धार्मिक गोष्ठियो का भी आयोजन किया जाता है। श्री बांठिया जी इस संस्था के स्थायी सदस्य हैं। वे इसके वार्षिक मेले का मुख्य अतिथि के रूप मे भी उद्घाटन कर चुके हैं। श्री बांठिया जी इसके प्रत्येक कार्य मे तन, मन तथा धन से सहयोग देते हैं।

१०. लोक कला मण्डल, उदयपुर (राजस्थान)

राजस्थानी नृत्य, नाट्य तथा लोक रंगमचीय कलाओ के संरक्षण एवं विकास के लिए इस संस्था की स्थापना की गई थी। इस संस्था ने सम्पूर्ण देश मे राजस्थानी कलाओं के प्रचार–प्रसार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री देवीलाल

के लिए वि० संवत् १९९८ (सन् १९४१–४२ ई०) में "सुन्दर स्टाम्प क्लब" का आरम्भ किया। इसके लिए समस्त भारत में [illegible] बनाने का अभियान चलाया गया और इसी के माध्यम से बीकानेर के सेठिया परिवार से सम्पर्क हुआ। इस [illegible] पत्र–मित्र श्री खेमचन्द जी सेठिया (बीकानेर) और श्री जयचन्दलाल गोठी (सरदारशहर) थे। दो वर्ष पश्चात् इसे [illegible] सेठिया बन्धुओं के सहयोग से "भारतीय मित्र परिषद्" में परिवर्तित कर दिया गया जिसके अध्यक्ष श्री [illegible] और प्रधानमंत्री श्री हजारीमल जी बाँठिया थे। इसमें साहित्यिक कार्यक्रम, खेलकूद, सभाएँ तथा गोष्ठियां आदि भी [illegible] इसका प्रथम अधिवेशन संवत् २००० वि० में हुआ था जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध चिन्तक श्री जैनेन्द्र कुमार ने की [illegible] अधिवेशन में कवि सम्मेलन भी हुआ जिसमें प्रसिद्ध काव्य "सेनानी" के रचयिता श्री मेघराज मुकुल भी पधारे थे। [illegible] परिषद् ने ही श्री चंपालाल जी बाँठिया के सहयोग से एक छोटी–सी पुस्तिका "बालकों के प्रश्न" उपन्यासकार श्री [illegible] सक्सेना से लिखवाकर प्रकाशित की थी जो परिषद् के परामर्श–दाता थे। श्रीमान भैंरुदान जी सेठिया, श्री अगरचंद [illegible] श्री ज्ञानपाल जी सेठिया, श्री मानक चंद जी सेठिया, श्री रतनचन्द जी चौपड़ा एवं श्री नेमीचंद जी सरावगी आदि इसके [illegible] पदाधिकारी थे।

❁

५. श्री जैन पाठशाला सभा, बीकानेर (राजस्थान)

यह लगभग ८५ वर्ष पुरानी संस्था है। इसके अन्तर्गत श्री जैन पाठशाला प्राइमरी, महाविद्यालय तथा [illegible] महाविद्यालय बीकानेर में सुचारू रूप से चल रहे हैं। श्री बाँठिया जी ने कक्षा ६ तक की अपनी प्रारम्भिक शिक्षा [illegible] की थी। उस समय यहा केवल इतनी ही कक्षाएँ थीं। अब यह वट वृक्ष की भाँति एक बडी संस्था बन गई है। वाणिज्य महाविद्यालय (स्नातकोत्तर) जैन कालेज नाम से चल रहा है। बालिकाओं के लिए अलग से महाविद्यालय का भवन श्री [illegible] (जापान वालों) के अर्थ–सहयोग से बना है। श्री हजारीमल जी बाँठिया इस संस्था के स्थायी–समिति के सदस्य हैं। इस [illegible] के पुरातन छात्र होने के नाते श्री हजारीमल जी बाँठिया ने इसके स्थायी कोष में ग्यारह हजार रुपये स्वयं दिये तथा [illegible] मित्रों से भी पर्याप्त धनराशि दिलवाई। पाठशाला संस्था के विकास के लिए श्री हजारीमल जी बाँठिया निरन्तर प्रयत्नशील एवं चिन्तनशील रहते हैं।

श्री हजारीमल जी बाँठिया के बड़े मामाजी स्व० श्री भैंरुदान जी नाहटा वर्षों पाठशाला–सभा के अध्यक्ष रहे। उन्होंने इसमें तन, मन, धन से योगदान दिया। वर्तमान में श्री हनुमानदास जी सीपाणी इसके अध्यक्ष हैं और श्री [illegible] पुगलिया मंत्री हैं। ट्रस्ट बोर्ड में श्री हरखचंजी नाहटा (दिल्ली), श्री रिखब चंद जी जैन (दिल्ली), श्री [illegible] (कलकत्ता) प्रमुख हैं। ये सभी श्री हजारीमल बाँठिया सम्मान समिति के पदाधिकारी भी हैं। श्री [illegible] अपनी ओर से तथा अपने मित्र और समधी श्री प्रेमचंद जी गोलिया के सहयोग से कम्प्यूटर कक्षाएँ सुलभ की हैं और [illegible] विकास में बहुत अधिक सहयोग दे रहे हैं।

❁

६. श्री अगरचंद जी नाहटा अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन समिति, बीकानेर (राजस्थान)

श्री हजारीमल जी बाँठिया ने अपने मामा श्री सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता एवं विद्वान श्री अगरचंद जी नाहटा के सम्मान में समारोह आयोजित करने की दृष्टि से इस समिति की १९८० में स्थापना की थी। इस समिति [illegible] अभिनन्दन–ग्रंथ प्रकाशित किये गये। प्रथम भाग का लोकार्पण डॉ० दौलतसिंह जी कोठारी ने बीकानेर में [illegible] को तथा द्वितीय भाग का प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने [illegible] को दिल्ली में किया। इस [illegible] संपादक–मण्डल में उच्चकोटि के विद्वान् तथा प्रधान संपादक श्री दशरथलाल सोमाणी थे।

में इण्टर तक शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है। बालिका विद्यालयो मे इसका अच्छा स्थान है और सांस्कृतिक कार्यक्रमों, अनुशासन तथा परीक्षाफल की दृष्टि से इसकी उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं।

१५. श्री छोटेलाल रामनरायन सेकसरिया माध्यमिक विद्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

इस माध्यमिक विद्यालय की स्थापना सन् १९५२ मे स्व० श्री गोपालप्रसाद सेकसरिया जी ने की थी। आरम्भ में यह जूनियर हाईस्कूल था पर शीघ्र ही इसे हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हो गई। इसकी स्थापना के आरम्भिक दस वर्षो तक श्री गिर्राजकिशोर अग्रवाल (जो कि इस अभिनन्दन ग्रथ के सम्पादक हैं) ने भी इसके विकास हेतु पर्याप्त परिश्रम किया था जो उस समय इस विद्यालय मे शिक्षक थे। इसके संस्थापक एव प्रबन्धक श्री गोपाल प्रसाद जी सेकसरिया से श्री हजारीमल बांठिया जी की मित्रता थी इसके कारण श्री बांठिया जी ने भी कार्यकारिणी के सदस्य के रूप मे इस विद्यालय के प्रबन्धन एवं विकास में भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया। श्री बांठिया पिछले बीस वर्ष से इसकी कार्यकारिणी के सदस्य हैं। उनके परिवार के बच्चो ने अपनी आरम्भिक शिक्षा भी यहीं ली है।

१६. श्री तिलक शिशु मन्दिर हाथरस (उ० प्र०)

माण्टेसरी पद्धति से शिक्षा हेतु हाथरस में यह सर्वप्रथम विद्यालय खोला गया था। श्री बांठिया जी इसके संस्थापक–सदस्य हैं। इसमें श्री किशनलाल खजाची और बौहरे त्रिलोकीनाथ जी सर्राफ का सहयोग रहा है। श्री हजारीमल बांठिया ने व्यवस्थापक के रूप मे इसे सात वर्ष चलाया। श्रीमती मंजू अग्रवाल इसी मे प्रधानाचार्या थीं जो अब एडिनबरा मे हैं।

१७. ब्रज कला केन्द्र हाथरस (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बांठिया का जिन संस्थाओं से सम्बन्ध है उनमें ब्रज कला केन्द्र अग्रगण्य है जो राष्ट्रीय स्तर पर ब्रज की कला, संस्कृति व साहित्य का प्रतिनिधि संगठन है। यह संस्था सन् १९६२ मे दिल्ली में स्थापित हुई थी जिसके प्रथम सभापति सेठ गोविन्द दास जी व मन्त्री श्री रामनारायण जी अग्रवाल बनाये गये थे। ब्रज क्षेत्र मे सभी प्रमुख स्थानों पर इसकी शाखायें हैं। जब हाथरस के सेठ रामबाबूलाल इसके अध्यक्ष थे तब वे इसका कार्यालय दिल्ली से हाथरस ले आये थे और तभी से श्री हजारीमल बांठिया इस संस्था से जुड गये तथा बडी कर्मठता से इसमे सहयोग कर रहे हैं। श्री रामबाबू लाल जी के स्वर्गवास के पश्चात् संस्था का मुख्यालय मथुरा स्थानान्तरित कर दिया गया जहा 'ब्रज धाम' नाम से एक सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना हो रही है। बांठिया जी ने एक कमरा बनाकर इस निर्माण का शुभारम्भ कर दिया है। वर्तमान में सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा इसके अध्यक्ष, श्री रामनारायण अग्रवाल कार्यकारी अध्यक्ष तथा श्री हजारीमल बांठिया उपाध्यक्ष हैं। इस संस्था ने ब्रज की कला और संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए पूरे देश में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये हैं।

वर्ष १९९३–९४ मे हाथरस शाखा की नवीन प्रबन्ध–समिति बनायी गई है जिसके अध्यक्ष गोपाल शर्मा रवि एडवोकेट तथा महामन्त्री डा० जगदीश लवानिया हैं। ब्रज की कला को प्रोत्साहन देने के लिए संस्था ने कई पुरस्कार स्थापित किये हैं जो प्रतिवर्ष संस्था के वार्षिक अधिवेशन में प्रदान किय जाते हैं।

सामर इसके संस्थापक– संचालक हैं। श्री बाँठिया जी इसके आजीवन सदस्य हैं तथा इसके कार्य में निरन्तर सहयोग प्रदान करते हैं।

११. श्री जैन भवन, तलहटी रोड, पालिताना (गुजरात)

इसकी स्थापना लगभग ३५ वर्ष पूर्व श्री बांठिया जी के मामाजी श्री शुभैराज जी नाहटा ने अपने दौहित्र के सहयोग से की थी। पालिताना प्रसिद्ध तीर्थ है जहां जैन यात्रियों की सुविधा के लिए यह बनवाया गया है। यहां दादाबाड़ी तथा मन्दिर भी हैं। श्री शुभैराज जी नाहटा ने मरते समय इसका कार्यभार श्री बांठिया जी को सौंप दिया था। वर्तमान ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष श्री हरखचन्द जी नाहटा तथा कोषाध्यक्ष श्री बांठिया जी हैं। श्री तनसुखराज डागा तथा सूरजमल जी पुगलिया इसके सदस्य है।

१२. नगर पालिका हाथरस, (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बांठिया ने सन् १९५७ ई० में हाथरस नगर पालिका के वार्ड संख्या २ से सदस्यता का चुनाव जीता था। तब से ये हाथरस नगर की उन्नति में निरन्तर सहयोग देते रहे। सदस्य के अतिरिक्त ये नगर-पालिका के उपाध्यक्ष तथा कार्यवाहक अध्यक्ष भी रहे। श्री रामबाबूलाल जब नगर पालिका के अध्यक्ष थे तब हाथरस नगर तथा विशेष रूप से अपने वार्ड के विकास कार्यों में श्री बांठिया जी ने भरपूर योग दिया। श्री बांठिया जी ने हाथरस की पत्थरवारी (श्मशान भूमि) तक का मार्ग बनवाया, वहां हैन्डपम्प लगवाया तथा आवश्यक सुधार किये।

१३. श्रीमद राजचन्द्र मिशन (आध्यात्मिक संघ) हाथरस (उ० प्र०)

पूज्य गुरुदेव श्री सहजानन्दघन जी महाराज के विचारो से प्रभावित होकर हाथरस में चैत्र कृष्णा ५ विक्रम सं० २०१५ दिनांक २९ मार्च १९५९ को श्रीमद राजचन्द्र निर्वाण महोत्सव का आयोजन किया गया और उसी में श्रीमद राजचन्द्र मिशन (आध्यात्मिक संघ) की स्थापना की घोषणा की गई। इसकी स्थापना तथा संचालन में श्री हजारीमल बांठिया ही प्रमुख प्रेरणा–स्रोत रहे। श्री मिश्रीलाल जी सोगानी, श्री भगवानदास शर्मा, श्री छोटेलाल वकील, श्री मोहन प्रदीप, श्री मुरलीधर जी पोद्दार, श्री बैजनाथ शर्मा ज्योतिषी, श्री गिर्राज किशोर अग्रवाल, डॉ० रामभूर्ति शर्मा, वैद्य सुरेशचन्द शर्मा, तथा श्री [illegible] जैन आदि प्रबुद्ध जन इसकी मासिक गोष्ठियों में सम्मिलित होते और अध्यात्म–चर्चा करते थे।

१४. श्रीमती सुरजोबाई बालिका विद्यालय इण्टर कालेज, किलागेट, हाथरस (उ० प्र०)

इसका शिलान्यास तत्कालीन शिक्षा मन्त्री माननीय आचार्य श्री जुगलकिशोर जी के कर-कमलों द्वारा ५ अक्टूबर १९६२ ई० को हुआ। इसकी संस्थापिका हाथरस की सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती सुरजोबाई शाह ने अपने पति स्व० लाला चन्दसेन शाह (मारहरा, जिला एटा) की स्मृति में इसका निर्माण कराया था। आरम्भ में १० वर्ष तक श्री हजारीमल बांठिया इसके संस्थापक–अध्यक्ष रहे। वर्तमान में श्री ओमप्रकाश शाह इसके अध्यक्ष तथा सुरेन्द्र कुमार बांठिया प्रबन्धक हैं। इसकी वर्तमान प्रधानाचार्या श्रीमती विजय [illegible] हैं। सन् १९६६ में इसे हाईस्कूल तथा सन् १९६९ में इण्टर कक्षाओं की मान्यता प्राप्त हुई वर्तमान में इस विद्यालय में कक्षा ६ से ७० तक साहित्यिक, संगीत, सिलाई, विज्ञान विषयों की तथा [illegible]

बृजकला केन्द्र, हाथरस द्वारा आयोजित माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नागरिक अभिनन्दन समारोह में श्री हजारीमल बाँठिया दि २ अप्रेल १९९४।
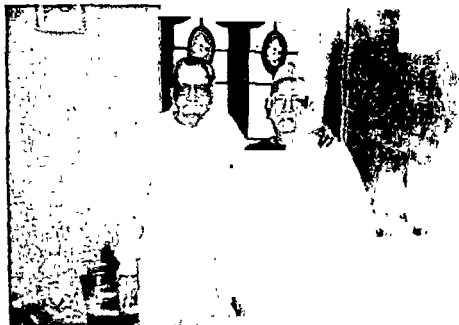
राजस्थानी भाषा के राष्ट्रकवि श्री कन्हैया लालजी सेठिया के साथ श्री हजारीमल बाँठिया दिनांक [illegible] जून १९९४।

श्री हजारीमल जी बाठिया के सान्निध्य में सम्पन्न हुए हाथरस में ब्रज कला केन्द्र के दो कार्यक्रम विशेष उल्लेखनीय हैं: एक सन् १९६६ में 'काका' हाथरसी की हीरक–जयन्ती का आयोजन और दूसरा लोकसभा में विरोधी दल के नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी का दो अप्रैल १९६४ को नागरिक अभिनन्दन। दोनों ही कार्यक्रमों में अभूतपूर्व सफलता मिली।

१८. श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, होली वाली गली, हाथरस (उ० प्र०)

यहां १५० वर्ष प्राचीन जैन मन्दिर है। संघ ने मन्दिर का जीर्णोद्धार पन्यास मुनि श्री पद्मविजय जी के उपदेश से कराया तथा उपासरे का भी निर्माण कराया। मन्दिर में ५ दिसम्बर १९६४ को प्रतिष्ठा हुई। श्री हजारीमल जी बांठिया इस संघ के अध्यक्ष है. श्री विनय ओसवाल मन्त्री हैं और श्री सुरेन्द्र सिंह जैन कोषाध्यक्ष है।

१९. श्री महावीर जैन पुस्तकालय, बाँके भवन, हाथरस (उ० प्र०)

श्री बाठिया जी ने इस पुस्तकालय की स्थापना में सभी प्रकार का सहयोग दिया था और एक सदस्य के रूप में वे निरन्तर इसमें सक्रिय सहयोग दे रहे हैं।

२०. लायन्स क्लब हाथरस (उ० प्र०)

इस क्लब की स्थापना में श्री बाठिया जी का प्रमुख सहयोग रहा। यह सन् १९६५ में स्थापित हुआ था। श्री हजारीमल बांठिया इसके चार्टर्ड सदस्य रहे और डायरेक्टर भी। लायन्स क्लब की संगोष्ठियों में श्री बाठिया जी की उपस्थिति शत– प्रतिशत रहती थी। इसका अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सन् १९६७ में अशोक होटल नई दिल्ली में हुआ था जिसमें श्री बाठिया जी ने भी भाग लिया था।

२१. समाज कल्याण समिति, मुरसान गेट, हाथरस (उ० प्र०)

मुरसान–गेट मोहल्ला निवासियो के लाभ के लिए इस समिति की स्थापना की गई है। श्री बाठिया जी इसके संस्थापक सदस्य है। इस समिति की ओर से एक वाचनालय आरम्भ किया गया जो अभी भी चल रहा है। स्थानीय नागरिक इससे पर्याप्त लाभ उठाते हैं।

२२. हाथरस मर्चेन्टस् चेम्बर, घंटाघर, हाथरस (उ० प्र०)

श्री गोपाल प्रसाद सेकसरिया तथा श्री [illegible] जी [illegible] के सहयोग से श्री हजारीमल बांठिया ने सन् १९५० में इसकी स्थापना की। नगर के व्यापारियों के हितों से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण संस्था है। श्री बाठिया जी आज भी इसके संस्थापक सदस्य है।

२३. पी० सी० बागला कालेज, हाथरस (उ० प्र०)

कोई पद न लेते हुए भी बाठिया जी ने इसके विकास मे सहयोग दिया। उन्होने स्वय भी आर्थिक सहयोग दिया तथा दूसरो से भी दिलवाया। कालेज मे स्नातकोत्तर कक्षाएँ खुलवाने हेतु कालेज के प्राचार्य श्री के० सी० सिघल को प्रोत्साहित किया।

२४. भारतीय जनसंघ, हाथरस (उ० प्र०)

सन् १६५५ मे श्री दीनदयाल उपाध्याय के हाथरस आगमन के अवसर पर श्री बाठिया जी भारतीय जनसंघ के सदस्य बने और जनसंघ के प्रत्याशी के रूप मे सन् १६५७ मे हाथरस नगरपालिका के सदस्य निर्वाचित हुए। इसके अतिरिक्त बाठिया जी भारतीय जनसघ के हाथरस मण्डल के दस वर्ष तक अध्यक्ष रहे। इसी अवधि में १६६७ में श्री रामशरण सिंह को जनसघ के प्रत्याशी के रूप मे विजय दिलवायी। बाठिया जी ने श्री कल्याण सिंह जी को भी अलीगढ जनपद के विकास में पूरा सहयोग दिया। बांठिया जी के समय भारतीय जनसघ के शीर्षस्थ नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी, श्री बच्छराज व्यास, श्री सुन्दर सिंह भण्डारी, श्री केदार नाथ साहनी, श्री बलराज मधोक तथा श्री राजवालकर हाथरस पधारे। बाठिया जी १६५२ से १६७२ तक सक्रिय राजनीति मे रहे, इसके पश्चात् राजनीति से सन्यास ले लिया।

२५. उत्तर रेलवे सलाहकार समिति, हाथरस किला (उ० प्र०)

श्री बांठिया जी इस समिति के सदस्य हैं और इसकी बैठकों मे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। श्री बांठिया जी ने अलीगढ के क्षेत्रीय अधिकारियो को प्रभावित करके श्री बसन्त लाल जी गर्ग के सहयोग से हाथरस–अलीगढ–दिल्ली (एच० ए० डी०) गाडी आरम्भ करायी। इसके अतिरिक्त हाथरस जंकशन रेलवे स्टेशन के विकास के लिए सासद मे प्रश्न उठवाकर टिन शेड लगवाया और हाथरस किला तथा अलीगढ के मध्य जो शटल ट्रेन बद हो गई थी उसे पुन चालू करवाया।

२६. हाथरस शोध - संस्थान, हाथरस (उ० प्र०)

हाथरस के पुरातत्व, इतिहास तथा कला–सामग्री की सुरक्षा के लिए वर्ष १६६४ मे इस सस्था का गठन किया गया है। श्री बांठिया जी इसके कार्यकारी अध्यक्ष तथा डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल महामन्त्री है।

२७. राजस्थान एसोसियेशन, कानपुर (उ० प्र०)

इसका पजीकरण २३ मार्च १६७२ को कराया गया था। श्री हजारीमल बाँठिया इसके स्थापना काल से ही संरक्षक के रूप मे इससे जुडे हुए हैं तथा आजन्म सदस्य हैं। श्री वल्लभ राज जी कुम्भट इसके अध्यक्ष हैं जिनके कुशल मार्ग निर्देशन मे यह निरन्तर प्रगति कर रहा है। इस ऐसोसियेशन के सभी सदस्यो के उत्साह के परिणाम–स्वरूप नाटक, कवि–सम्मेलन, स्मारिका प्रकाशन, व्याख्यान, तथा अन्य सामाजिक धार्मिक एव सांस्कृतिक कार्य अत्यन्त लोकप्रिय हुए है। इस संस्था की ओर से कपिल मे एक डिस्पेन्सरी आरम्भ करके नि शुल्क चिकित्सा सेवा भी आरम्भ की गई, बाद मे इसे अस्पताल का रूप दे दिया गया जिसका शिलान्यास श्री गौर हरि सिघानिया द्वारा तथा उद्घाटन १६७८ में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डॉ० चेन्ना रेड्डी के द्वारा हुआ। इस सस्था की एक अन्य उल्लेखनीय उपलब्धि कमलानगर कानपुर में राजस्थान–भव

३२. बुद्धिजीवी परिषद् कानपुर (उ० प्र०)

कानपुर के बुद्धिजीवियों को परस्पर सम्पर्क में लाने, एक दूसरे से परिचित कराने एवं विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने की दृष्टि से यह संस्था गठित की गई है जो बुद्धिजीवियों का एक मंच भी है। साहित्य निकेतन कानपुर के श्री मनोज कपूर इसके अध्यक्ष तथा श्री बांठिया जी इसके सक्रिय सदस्य हैं।

३३. श्री मानस संगम, शिवाला, कानपुर (उ० प्र०)

पं० बदरी नारायण जी तिवारी द्वारा स्थापित एवं संचालित इस संस्था के श्री बांठिया जी विगत दस वर्षों से सदस्य हैं और इसके विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। मानस संगम के सहयोग से ही सन् १९८५ में "तुलसी उपवन" कानपुर मे डॉ० तैस्सितोरी की प्रतिमा की स्थापना एवं अनावरण सम्पन्न हुआ था। प्रतिमा के अनावरण हेतु भारत मे इटली के सांस्कृतिक दूत प्रो० फरनेन्दो बरतोलिनी पधारे थे। डॉ० तैस्सितोरी की प्रतिमा के शिलान्यास के अवसर पर कलकत्ता-स्थित इटली के काउन्सिल जनरल का निम्न संदेश प्राप्त हुआ था–

MESSAGE ON THE OCCASION OF THE LAYING OF THE FOUNDATION STONE OF THE STATUE OF DR. LUIGI PIO TESSITORI, ON 22ND DEC. 1985.

With great joy the Italian diplomatic authorities in India have learnt that a special committee has been set up in Kanpur to honour the memory of Dr. Lugi Pio Tessitori, born in Udine, Italy, in 1887, who died in Bikaner in 1919.

Dr. Tessitori was a scholar of outstanding merit who greatly contributed to the study of Indian languages and particularly of Rajasthani. His research in the field of Indian philology and semantics has been widely appreciated. His works, despite the many years since his death, are still considered of basic importance for the understanding of the problems he dealt with. In certain fields of study, his research has been the starting point for that of other scholars of subsequent generations

Apart from his cultural and educational merits, Dr. Tessitori was a great friend of India which he considered his second motherland and for which he advocated independence, unity and prosperity.His personality and his work reprsent a milestone in the excellent relations which have always existed between our two nations, geographically so distant but so near in common ideals, moral objectives and cultural interests.

We wish to congratulate the committee responsible for this initiative and to convey our heartiest wishes for its success.

Calcutta, 18 December 1985.

Gerardo Zampaglione
Consul General of Italy
Calcutta

के पाँच मंजिला भवन का १९७८ में निर्माण है जिसमे तीन हाल एवं तीस कमरे हैं। सभी प्रकार के कार्यक्रमों के लिए यह भवन बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

इसके अतिरिक्त प्राकृतिक विपत्तियों से त्रस्त एवं अभावग्रस्त लोगों की आर्थिक सहायता के कार्यक्रम प्रायः प्रतिवर्ष चलाये जाते हैं। इस संस्था के द्वारा निर्माणाधीन एक अन्य भवन का शिलान्यास महामहिम श्री मोतीलाल जी वोरा राज्यपाल उत्तर प्रदेश के कर कमलों द्वारा २८ अक्टूबर १९९४ को किया गया। वर्तमान में श्री गिरंजी लाल जी सुरेका इसके अध्यक्ष श्री मदनलाल जी जैन एडवोकेट मन्त्री, श्री रिखब बिरानी सह-मन्त्री तथा श्री जुगलकिशोर जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष हैं।

२८. श्री धर्मनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर समिति, कानपुर (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बांठिया पिछले २५ वर्षों से इसके सक्रिय सदस्य हैं और वर्तमान में इसके अन्तर्गत दादाबाड़ी की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं। इसके हेतु एक कोष की भी स्थापना की गई है जिसकी देख-रेख श्री विजय चन्द जी भंडारी कर रहे हैं। यह मंदिर उन्हीं के पूर्वजों द्वारा स्थापित है।

२९. कानपुर चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, कानपुर (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बांठिया इसके संस्थापक अध्यक्ष तथा श्री पारस कुमार जैन मन्त्री हैं। यह संस्था उत्तर प्रदेश मर्चेन्ट्स चेम्बर से सम्बद्ध है। औद्योगिक तथा व्यापारिक संस्थानों का यह कानपुर में एक महत्वपूर्ण संगठन है।

३०. श्री मारवाड़ी पुस्तकालय एवं वाचनालय, बिरहाना रोड, कानपुर (उ० प्र०)

यह संस्था साहित्यकारों के क्रिया-कलापों से विशेष रूप से सम्बन्धित है तथा नगर के पुस्तकालय एवं वाचनालय की आवश्यकताओं को एक बड़ी सीमा तक पूर्ण करती है। श्री हजारीमल जी बाँठिया इससे लगभग २० वर्षों से सम्बन्धित हैं और वर्तमान मे इसके संयुक्त मन्त्री हैं। वे इसके सभी कार्यक्रमों मे सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं। इस संस्था ने १२ अक्टूबर १९९१ को डा० रामकुमार वर्मा की प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धाजलि एवं संस्मरण द्वय लोकार्पण समारोह श्री परिपूर्णानन्द वर्मा की अध्यक्षता मे मनाया था। मारवाड़ी पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री रमेश मोरोलिया हैं।

३१. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग - कानपुर शाखा (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बाँठिया कानपुर शाखा के प्रमुख सहायक, संरक्षक सदस्य हैं। हि० सा० स० के [illegible] अधिवेशन जो १९८६ मे कानपुर में हुआ था, के स्वागत मन्त्री रहे। श्री बी० आर० कुमार इसके स्वागताध्यक्ष तथा [illegible] मुख्य संयोजक थे। इस अद्वितीय समारोह में डा० रामकुमार वर्मा भी पधारे थे। हि० सा० स० प्रयाग की ओर से श्री [illegible] महिला विद्यापीठ इलाहाबाद में १९९१ में हिन्दी दिवस के अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्री [illegible] को [illegible] भेंट किया गया था तथा प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी को "साहित्य वाचस्पति" की उपाधि दी गई थी। शाखा की ओर से [illegible] जी का स्वागत श्री बांठिया ने किया था।

इसके संस्थापक अध्यक्ष हैं। ट्रस्ट की ओर से अनेक सार्वजनिक संस्थाओं को जनहितकारी कार्यो के लिए आर्थिक सहयोग दिया जा रहा है। इसके मन्त्री श्री प्रकाशचन्द बाँठिया हैं। ट्रस्ट बोर्ड में श्री कांतीलाल बांठिया, श्री राजकुमार बाँठिया, श्री बी० आर० कुम्भट, श्री तनसुखराज डागा तथा श्री बी० आर० नाहर हैं।

३६. श्री चन्द्रश्री प्रकाशन मन्दिर, कानपुर (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बाँठिया ने पूज्य साध्वी श्री चन्द्रश्री जी म० की स्मृति मे (जो कि बालक हजारीमल को गोद लेने वाली माता थीं) उनके जीवन काल मे ही स्थापित किया था। इस संस्था ने धार्मिक ग्रंथो के प्रकाशन का लक्ष्य बनाया था और अब तक इसने बारह धार्मिक ग्रंथ प्रकाशित किये हैं।

४०. भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर (उ० प्र०)

यह संस्था सन् १६७८ मे स्थापित की गई थी। इस संस्थान की ओर से बाल गोष्ठियो, बाल साहित्य, तथा बालको को सम्मानित करने के कार्यक्रम आयोजित किये गये। श्री बांठिया जी इस संस्थान से भी सक्रिय रूप से जुडे रहे हैं और इसे अर्थ– सहयोग भी प्रदान करते रहे हैं।

४१. भारत - इटली मैत्री संघ, कानपुर (उ० प्र०)

भारत तथा इटली के सास्कृतिक सम्बन्धों को सुदृढ एवं विकसित करने की दृष्टि से इस संस्था की स्थापना की गई है। इसकी ओर से इटली के भारतीय विद्या के मनीषियो को सम्मानित करने तथा पारस्परिक आदान–प्रदान को बढाने का कार्य किया जा रहा है। इस सस्था की ओर से २ फरवरी १६८६ को वेनिस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर फिलिप्पी तथा उनकी धर्मपत्नी को कानपुर में सम्मानित किया गया था। संस्था के संरक्षक श्री बी० आर० कुम्भट, एवं प० बदरीनारायण तिवारी, मंत्री श्री मदनाल जैन, तथा श्री रिखब बिरानी, संयोजक डा० प्रतीक मिश्रा तथा श्री प्रकाश बांठिया, अध्यक्ष श्री हजारीमल बाँठिया तथा उपाध्यक्ष श्री राजकुमार सर्राफ हैं।

४२. श्री बाँठिया फाउन्डेशन, कानपुर (उ० प्र०)

समस्त भारत में बांठिया गोत्र के परिवारों का खोजपूर्ण ऐतिहासिक विवरण तैयार करने के लिए इस संस्था की स्थापना की गई है। इसके लिए समस्त भारत के बाँठिया परिवारो से सम्पर्क स्थापित किया जा रहा है तथा एक डायरेक्टरी तैयार की जा रही है। कुछ जीवन–परिचय प्रकाशित भी किये जा चुके हैं। इसका कार्य चल रहा है आशा है। कि इससे एक बहुत बडी डायरेक्टरी तैयार होगी।

४३. श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, बिरहाना रोड, कानपुर (उ० प्र०)

कानपुर मे दूसरा जैन श्वेताम्बर मन्दिर बिरहाना रोड पर है जिसकी स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व हुई

३४. श्री मालवीय विद्यालय हाईस्कूल, किदवई नगर, कानपुर (उ० प्र०)

प० मदनमोहन मालवीय जी के आदर्शों से प्रेरित इस शिक्षा संस्थान के श्री हजारीमल बाँठिया ट्रस्ट [illegible] के सदस्य तथा कोषाध्यक्ष हैं तथा व्यवस्थापक श्री बालकृष्ण गुप्त हैं। डॉ० सरोजिनी गुप्ता इसकी प्रधानाचार्या हैं जिनकी [illegible] और प्रशंसा है। कानपुर के शिशु विद्यालयों में इसका स्थान वन्दनीय शिक्षा संस्था के रूप में है। श्री हजारीमल बाँठिया इस[illegible] विभिन्न योजनाओं को साकार रूप देने में प्रयासरत हैं।

३५. पंचाल शोध-संस्थान, कानपुर (उ० प्र०)

इस संस्था की स्थापना स्व० प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी के दिशा-निर्देशन में पंचाल क्षेत्र के प्राचीन [illegible] का उजागर करने के उद्देश्य से १६८४ ई० में कानपुर, कन्नौज, तथा कंपिल के कतिपय गण्यमान्य व्यक्तियों के सहयोग [illegible] की गई थी। श्री बाँठिया जी इसके संस्थापक सदस्य तथा प्रारम्भ से ही कार्यवाहक अध्यक्ष हैं। इस संस्थान ने पंचाल [illegible] के अनेक पुरातात्त्विक स्थलों का सर्वेक्षण, पुरा-सामग्री का संग्रह, शोध पत्रिका का नियमित प्रकाशन तथा अब तक [illegible] अधिवेशनों का सफल आयोजन किया है। इसके अतिरिक्त इसके अन्तर्गत कन्नौज महोत्सव १६८५, अहिच्छत्र महोत्सव [illegible] तथा हर्षवर्द्धन चतुर्दश श[illegible] इसके अध्यक्ष तथा डॉ० [illegible] से [illegible] संस्थान निरन्तर विकास की नवीन दिशाओं की ओर अग्रसर है।

३६. अमर शहीद श्री अमरचन्द बाँठिया बलिदान स्मृति समारोह समिति, कानपुर (उ० प्र०)

इस समिति की स्थापना दस वर्ष पूर्व की गई थी। समिति की ओर से श्री अमरचन्द बाँठिया की परिचय पुस्तक प्रकाशित की गई और हाथरस, कानपुर, भोपाल, तथा बीकानेर आदि में प्रतिवर्ष २२ जून को बलिदान दिवस मनाया जाता है। समिति की ओर से शहीद अमर चन्द बाँठिया की प्रतिमा ग्वालियर में माननीय श्री नरेन्द्र [illegible] म० प्र० शासन के ओर से स्थापित होने जा रही है। श्री हजारीमल बाँठिया इस समिति के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

३७. डॉ० एल० पी० तैस्सितोरी जन्म शताब्दी समारोह समिति, कानपुर (उ० प्र०)

वर्ष १६८७ में डॉ० तैस्सितोरी के जन्म शताब्दी समारोह समस्त भारत में आयोजित करने के लिए स्थापित की गई थी। समिति के अध्यक्ष श्री हरखचन्द नाहटा तथा महामन्त्री श्री हजारीमल बाँठिया थे। इस समिति के [illegible] हाथरस, जोधपुर, बीकानेर, कलकत्ता तथा उदीने (इटली) में तैस्सितोरी जन्म शताब्दी समारोह हुए। [illegible] राज्य शिक्षा मन्त्री प्रो० बी० डी० कल्ला, राजस्थानी अकादमी के अध्यक्ष [illegible] इटली दूतावास के सांस्कृतिक निदेशक श्री [illegible], डॉ० मनोहर शर्मा, [illegible] पारीक ने भाग लिया। इटली के समारोह में श्री हजारीमल बाँठिया तथा डॉ० [illegible] ने भाग लिया।

३८. श्री गुलाबचन्द फूलचन्द बाँठिया चेरिटेबिल ट्रस्ट, कानपुर (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बाँठिया ने अपने पिता-श्री की स्मृति में इस ट्रस्ट की कानपुर में स्थापना [illegible]

एवं विज्ञापन आदि का सहारा लेती है।

४८. श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, हस्तिनापुर (उ० प्र०)

श्री बांठिया जी लगभग बीस वर्ष से इसके ट्रस्ट बोर्ड के सक्रिय सदस्य हैं। इसी के अन्तर्गत श्री भगवान विमलनाथ स्वामी तीर्थ कम्पिल के समस्त विकास कार्यों की देख–रेख के संयोजक एव ट्रस्टी भी श्री बांठिया जी ही हैं। १ अप्रैल सन् १९९५ को राष्ट्र सत आचार्य पद्म सागर सूरि के पधारने पर उनके आशीर्वाद एव सहयोग से एक करोड रुपये की लागत से जीर्णोद्धार होने जा रहा है। वर्तमान मे इसके अध्यक्ष श्री जे० एस जवेरी (दिल्ली) और मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र जैन (मेरठ) हैं। कम्पिल तीर्थ के मैनेजर श्री विजय कुमार डागा हैं।

४९. जैनाचार्य प्रकाशचन्द्र सूरीश्वर सार्वजनिक चिकित्सालय समिति, हस्तिनापुर (उ० प्र०)

इस समिति की स्थापना १५वर्ष पूर्व श्री जैन श्वेताम्बर महासभा उत्तर प्रदेश, हस्तिनापुर के संस्थापक आचार्य, श्री विजय प्रकाश चन्द्रसूरि की स्मृति में श्री ज्ञानचन्द जी मोगा (गाजियाबाद) और श्री राजकुमार जी जैन के विशेष प्रयत्नो से हुई थी। इस संस्था मे प्रतिदिन दवाएँ वितरित होती हैं और नेत्र शिविर लगते है। श्री बांठिया जी इसके प्रारम्भ से ही इसकी कार्य–समिति के सदस्य रहे है।

५०. श्री महावीर आराधना केन्द्र, कोबा, गान्धीनगर (गुजरात)

यह केन्द्र राष्ट्र सत जैनाचार्य पद्मसागर सूरीश्वर जी द्वारा बारह वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। यह शिक्षा, साधना तथा सेवा का केन्द्र है। इसका पुस्तकालय, ग्रथालय एवं संग्रहालय भारत भर में अनुपम है। श्री बांठिया जी ने आचार्य श्री के परम भक्त श्रावक होने के नाते इसके शिलान्यास से लेकर उद्घाटन तक समस्त कार्यक्रमो मे भाग लिया और अपनी ओर से भी प्राचीन सिक्के तथा मूर्तिया सग्रहालय को भेट कीं। वे इस आराधना–केन्द्र की प्रत्येक गतिविधि से निरन्तर जुड़े हुए हैं।

५१. श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक केन्द्र, कोबा (गुजरात)

इस केन्द्र की स्थापना १५वर्ष पूर्व हुई है। श्री बांठिया जी की श्रीमद् राजचन्द्र के प्रति वर्षों से श्रद्धा एव भक्ति है। इस संस्था के भी बांठिया जी आजीवन सदस्य हैं। कई बार इस केन्द्र में जाकर श्री बांठिया जी ने साधना और सेवा की है। डॉ० आत्मानन्द जी इस साधना केन्द्र के अधिष्ठाता हैं। यहा प्रतिदिन सत्संग होता है।

५२. श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, रत्नकूट, हम्पी (कर्नाटक)

इस आश्रम की स्थापना योगीश्वर श्री सहजानन्द जी महाराज ने की थी। उनके स्वर्गवासोपरान्त माताजी धनदेवी आश्रम की अधिष्ठाता बनीं। बांठिया जी महाराज के परम भक्त एवं आश्रम के सदस्य है और इनके निराश मे [illegible]

थी। मन्दिर के साथ धर्मशाला तथा प्रवचन हाल भी है जहां पर जैन साधु, साध्वी महात्माओं के चातुर्मास होते रहते हैं। इसके सदस्य अधिकांश स्वदेशी जाति समाज से हैं और कुछ मारवाड़ी समाज से हैं। कम्पिल तीर्थ में भगवान विमलनाथ की जन्म तिथि माघ सुदी ३ को "कम्पिल बसंत मेला" लगता है। उसको सफल बनाने में इस संघ का विशेष सहयोग रहता है। श्री बाँठिया जी इस संघ के सक्रिय एवं सहयोगी सदस्य हैं। वर्तमान में श्री गोपाल भाई अध्यक्ष एवं श्री हसमुख भाई शाह मन्त्री हैं।

✿

४४. पंचाल पुरातत्व संग्रहालय, कम्पिल (उ० प्र०)

यह संग्रहालय तत्कालीन जिलाधिकारी श्री आर० एन० त्रिवेदी के सहयोग से कम्पिल महोत्सव (सन् १९८८ ई०) के अवसर पर स्थापित किया गया था। इसमें आठवीं शती तक प्राचीन मूर्तियां संग्रहीत हैं। इसका उद्घाटन श्री कृष्ण दत्त जी वाजपेयी ने किया था। श्री बाँठिया जी इसके संस्थापक हैं।

✿

४५. काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद्, कम्पिल (उ० प्र०)

विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित प्राचीन तीर्थ कम्पिल के विकास हेतु इस परिषद् की स्थापना की गई थी। श्री वी० आर० कुम्मट इसके अध्यक्ष तथा श्री बाँठिया जी इसके मन्त्री हैं। इसी के अन्तर्गत कम्पिल महोत्सव श्री आर० एन० त्रिवेदी के सहयोग से सात दिन तक मनाया गया था। कम्पिल महोत्सव से ही कम्पिल का विकास आरम्भ हुआ। ग्राम से कस्बा, विद्युत के कार्य, जल प्रदाय योजना, टाउन एरिया की घोषणा, सड़कों का निर्माण, यातायात के साधनों का कम्पिल से सम्पर्क तथा सहकारी सूत मिल की स्थापना जिसमें राज्यपाल श्री खुर्शीद आलम खाँ का विशेष सहयोग रहा। इन समस्त विकास कार्यों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बाँठिया जी ने सबसे अधिक सहयोग दिया।

✿

४६. श्री वर्धमान जैन चिकित्सालय, कम्पिल (उ० प्र०)

दि० २२ मार्च १९७५ को उत्तर प्रदेश के तीर्थोद्धारक जैनाचार्य श्री विजयसमुद्र सूरि जी के सानिध्य में इस क्षेत्र के सिद्ध-पुरुष "कारव वाले बाबा" जी की उपस्थिति में श्री हजारीमल बाँठिया की धर्मपत्नी श्रीमती प्रसन्नकुमारी बाँठिया ने इसका शिलान्यास किया। तभी से कम्पिल के दिन बहुरने लगे। ४ अप्रैल १९८३ को राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने सहकारिता क्षेत्र में सूती धागे मील का शिलान्यास किया। इस चिकित्सालय की स्थापना से समूचे क्षेत्र के तीन सौ गाँव लाभान्वित हो रहे हैं। अनेक धनी लोगों के सहयोग से यह चिकित्सालय निरन्तर उन्नति कर रहा है। यहां प्रतिवर्ष नेत्रशिविर भी लगने लगे हैं तथा विकलांग शिविर भी लगे हैं। २३ सितम्बर १९८६ को इसके बाल-विभाग का विधिवत् उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी के कर-कमलों द्वारा किया गया था। जनसाधारण के रोगियों के लिए तो यह एक तीर्थ बन हो गया है।

✿

४७. नेशनल सोसाइटी फार द प्रीवेन्शन आफ ब्लाइन्डनेस, इण्डिया (फर्रुखाबाद जनपद शाखा)

यह संस्था अन्धेपन की रोकथाम के हेतु चिकित्सा तथा नेत्रदान के शिविर आयोजित करती है। श्री हजारीमल बाँठिया इसकी फर्रुखाबाद जनपद शाखा के सचिव हैं। अन्धेपन की रोकथाम के हेतु यह संस्था सेमिनार, भाषण, ज्ञान प्रसार

५७. सूर-स्मारक मण्डल आगरा (उ० प्र०)

यह संस्थान बीस वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था जो सूर जयन्ती का आयोजन करता है तथा सूर का स्मारक निर्मित करने हेतु प्रयत्नशील है। श्री बांठिया जी इसके संरक्षक सदस्य हैं और इसमें सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं। डॉ० सिद्धेश्वरनाथ श्रीवास्तव इसके महामंत्री हैं।

५८. उ० प्र० जैन विद्या शोध-संस्थान, जवाहर भवन, लखनऊ (उ० प्र०)

श्री हजारीमल बांठिया तथा श्री कृष्णदत्त वाजपेयी के प्रयत्नो से प्रदेश सरकार ने २६ फरवरी १९९२ को लखनऊ मे जैन विद्या शोध संस्थान की स्थापना की है जिसकी कार्यसमिति में १२ सरकारी तथा ६ जनप्रतिनिधि रखे गये हैं। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य तीर्थो के विकास, यत्र–तत्र बिखरे हुए साहित्य एवं कलाकृतियों को संग्रह कर एक विशाल जैन शोध संग्रहालय बनाना है तथा अमूल्य एवं अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित कर उसके महत्व को उजागर करना है, साथ ही एक उच्चकोटि की शोध–पत्रिका का प्रकाशन कर शोध कार्यो में संलग्न संस्थाओं से समन्वय स्थापित करना है। श्री बांठिया जी इसकी कार्यसमिति के सक्रिय सदस्य हैं। इसके पुस्तकालय के विकास के लिए बांठिया जी ने अपनी ओर से तथा सहयोगियों की ओर से हजारों पुस्तकें दिलवायी हैं। वर्तमान में इसकी सांस्कृतिक सचिव श्रीमती रीता सिन्हा आई ए. एस., उपाध्यक्ष श्री ओ० पी० अग्रवाल, श्री प्रभात कुमार निर्देशक और श्री सागरमल जैन (वाराणसी) सदस्य हैं। संस्था का निजी भवन सरकार बनाने जा रही है।

५९. शहीद संस्थान, पुराना किला, लखनऊ (उ० प्र०)

शहीद भगतसिंह के साथी श्री शिव वर्मा द्वारा यह संस्थान स्थापित किया गया है जिसमें स्वतंत्रता और शहीदो के बारे में विशेष पुस्तकें संग्रहीत हैं। बांठिया जी इसके संरक्षक सदस्य हैं। वर्ष १९८६ में अमर शहीद अमरचन्द बाँठिया बलिदान–दिवस श्री शिव वर्मा जी की अध्यक्षता में कानपुर में विशाल पैमाने पर मनाया गया और शहीद अमरचन्द बाँठिया का विशाल तैलचित्र संस्थान को भेंट किया गया।

६०. श्री दादावाड़ी जीर्णोद्धार कमेटी, पटना (बिहार)

यहा चार सौ वर्ष पुरानी दादावाड़ी बेगमपुर, पटना सिटी मे है जिसके जीर्णोद्धार के हेतु १९९० में श्री बांठिया जी ने पटना–वासियो को प्रेरित किया। स्वय भी अर्थ सहयोग दिया और अपने निकट स्वजनो से भी दिलाया। १३ दिसम्बर १९९१ को यहा नवनिर्माण एव जीर्णोद्धार हेतु श्री हरखचन्द नाहटा, अध्यक्ष, अ० भा० खरतरगच्छ महासंघ के कर–कमलो द्वारा आरम्भ हुआ। आज यहां मन्दिर के अतिरिक्त अतिथिशाला तथा दातव्य औषधालय का निर्माण हो चुका है और सम्पूर्ण दादावाड़ी क्षेत्र का नक्शा ही बदल गया है। दादावाड़ी जीर्णोद्धार कमेटी ने श्री बांठिया जी को अपना संरक्षक मनोनीत किया है और वे दातव्य चिकित्सालय के भी आजीवन सदस्य हैं।

६१. श्री जैन म्यूज़ियम, सम्मेत शिखर जी (बिहार)

सम्मेतशिखर भारत के समस्त जैन तीर्थो में प्रमुख है। यहां बीस तीर्थकरों ने निर्वाण प्राप्त किया था। यहां

तन, मन, धन से सहयोग कर रहे हैं। यहां ध्यानकेन्द्र, गुफाएँ तथा मन्दिर, दादावाड़ी तुंगभद्रा नदी के किनारे पहाड़ पर स्थित हैं। यह स्थान "वर्ल्ड हेरिटेज" में सम्मिलित कर लिया गया है। यहां पुरातत्व की प्रचुर सामग्री बिखरी पड़ी है।

५३. श्री जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स, पायधूनी, बम्बई (महाराष्ट्र)

लगभग ६०वर्ष पूर्व श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के प्रतिनिधि के रूप में यह कान्फ्रेन्स बम्बई में स्थापित की गई थी। स्वनाम धन्य सेठ श्री गुलाबचन्द जी ढढ्ढा (सुप्रसिद्ध सर्वोदयी नेता श्री सिद्धराज जी ढढ्ढा जयपुर के पिता जी) इसके प्रथम अध्यक्ष थे। इस संस्था ने कई बहुमूल्य ग्रंथ भी प्रकाशित किये हैं और ये जैन समाज को संगठित करने का बहुत प्रयास कर रही है। श्री बांठिया जी गत १५ वर्षों से इसकी सक्रिय कार्यकर्ता समिति (Standing Committee) के सदस्य हैं। वर्तमान में इसके अध्यक्ष श्री दीपचन्द जी गार्डी बम्बई हैं।

५४. श्री वर्धमान जैन सार्वजनिक चिकित्सालय कमेटी, दिल्ली

इस कमेटी के तत्वावधान में कम्पिल में सार्वजनिक चिकित्सालय का शिलान्यास २२ मार्च सन् १९९५ को श्रीमती जतनकुमारी बांठिया ने किया है। इसके कोषाध्यक्ष श्री हजारीमल बांठिया हैं जो इसके विकास में तन, मन, धन से सहयोग दे रहे हैं। वर्तमान में इसके अध्यक्ष श्री अजित कुमार नाहटा तथा मंत्री श्री ललित नाहटा हैं। सैकड़ों रोगी इससे लाभ उठाते हैं। प्रतिवर्ष नेत्र शिविर तथा विकलांग शिविर लगते हैं। इनमें आपरेशन होते हैं तथा कृत्रिम अंग प्रदान किये जाते हैं।

५५. अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ, दिल्ली

श्री बांठिया जी की सभी धर्मों में श्रद्धा है, फिर भी परम्परा से वे खरतरगच्छ से जुड़े हुए हैं। लगभग बीस वर्ष पूर्व दिल्ली में खरतरगच्छ महासंघ की स्थापना हुई थी। श्री बांठिया जी दस वर्ष तक इसके उत्तर भारत के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रहे। वर्तमान में वे इसके राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। श्री हरखचन्द जी नाहटा इसके अध्यक्ष हैं। खरतरगच्छ जैन समाज का प्रमुख गच्छ है जिसमें अनेक प्रसिद्ध विद्वान हुए हैं। चारों दादा इसी गच्छ में हुए हैं जिनकी मान्यता सम्पूर्ण जैन समाज में है। बांठिया जी इसके परम भक्त हैं और तन, मन, धन से सहयोग करते हैं। इसके मंत्री श्री सुनील कुमार श्रीमाल हैं और श्रीमती मंजु दोषी कोषाध्यक्ष हैं। इसकी स्थापना में हैदराबाद के श्री चम्पालाल श्रीमाल, दिल्ली के श्री [illegible] सरकार सेठ मणीलाल दोषी, श्री दौलतसिंह जी जैन तथा मद्रास के श्री मोहनचन्द जी ढढ्ढा का प्रमुख सहयोग रहा है।

५६. ब्रज संगीत विद्यापीठ, मथुरा (उ० प्र०)

यह संस्था ब्रज कला केन्द्र द्वारा स्थापित ब्रज की पुरातन, मंदिर, [illegible] - [illegible], रास और लोक संगीत पर शोध, संरक्षण, अध्ययन व उत्तर भारतीय संगीत के प्रशिक्षण एवं प्रचार-प्रसार का एक मात्र [illegible] केन्द्र है। श्री बांठिया जी इसकी कार्य समिति के सदस्य तथा संरक्षक हैं।

६६. डॉ० एल० पी० तैस्सितोरी इटली-इण्डिया सोसाइटी, उदीने (इटली)

यह संस्था तीन वर्ष पूर्व डॉ० तैस्सितोरी के कार्यो की विशेष शोध हेतु स्थापित हुई है। डॉ० फेस्टो फेरची इसके अध्यक्ष हैं। श्री बांठिया जी को उन्होंने इस संस्था का सदस्य मनोनीत किया है। इस संस्था ने ही बांठिया जी को १६६४ मे इटली मे भाषण देने के लिए आमंत्रित किया था।

६७. इटली-इण्डिया फ्रैण्डशिप सोसाइटी, वेनिस (इटली)

वेनिस मे यह संस्था भारतीय साहित्य सम्बन्धी शोध एवं अध्ययन हेतु स्थापित की गई है। इसके अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो० ज्यान ज्यूसिपी फिलिप्पी हैं जो वेनिस विश्वविद्यालय में भारतीय विद्या (इण्डोलोजी) के प्रोफेसर हैं। इस संस्था की ओर से १६८७ मे डॉ० एल० पी० तैस्सितोरी जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर बांठिया जी को इटली बुलाया और सम्मानित किया गया था। भारत मे इसी के अन्तर्गत इण्डिया – इटली मैत्री संघ का अखिल भारतीय सचिव भी श्री बांठिया जी को नियुक्त किया गया। इसकी ओर से इटली से आने वाले विद्वानों का स्वागत एवं सहयोग किया जाता है। प्रो० फिलिप्पी की ओर से गत वर्ष दो छात्र कम्पिल भेजे गये थे। प्रो० फिलिप्पी स्वयं भी प्रतिवर्ष भारत आते रहते हैं।

❁

पूज्य आ० महिमाप्रभसागर जी की प्रेरणा से जैन-म्यूजियम बनाया गया है जिसका उद्घाटन १ मार्च १९९१ को पूर्व राष्ट्रपति स्व० ज्ञानीजैलसिंह द्वारा किया गया था। १३००० वर्ग फुट विस्तृत भूमि पर ३० लाख की लागत से निर्मित इस म्यूजियम का दो मंजिला भवन अत्यन्त भव्य है। इसमें ६५०० पुस्तकें, ७० पत्रिकाएँ, पोस्टेज स्टाम्प, भारत के प्रमुख जैन तीर्थों की आकर्षक झाँकियाँ, हाथी दाँत एवं चन्दन की कलाकृतियाँ, संग्रहीत हैं। इसके अतिरिक्त यहां दो उच्च शक्ति की दूरबीनें लगी हैं जिनसे पारसनाथ हिल का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। अब तक इस संस्था ने २०० पुस्तकों का प्रकाशन किया है। श्री हजारीमल बांठिया इसकी सलाहकार समिति के सदस्य हैं तथा इसके विकास में तन, मन, धन से सहयोग देते रहते हैं।

६२. 'वीरायतन', राजगृह (बिहार)

भगवान महावीर के निर्वाण वर्ष में प० पू० उपाध्याय श्री अमरमुनि जी के उपदेश से यह संस्थान [illegible] में स्थापित किया गया। आचार्य श्री चंदना जी के अथक प्रयासों से यहां बहुत विकास हुआ है। यह सेवा, शिक्षा तथा साधना का केन्द्र है। नेत्र-ज्योति केन्द्र में नेत्र रोगों के उपचार से हजारों रोगी लाभान्वित हुए हैं। [illegible] किये जाते हैं। श्री बांठिया जी गत १२ वर्षों से इसकी कार्यसमिति के सदस्य हैं और प्रत्येक [illegible] में सहयोग देते रहे हैं। [illegible] श्री चन्दना जी इसकी अधिष्ठाता हैं, श्री एन० के० फिरोदिया अध्यक्ष हैं और श्री [illegible] हैं।

६३. श्री जैन दर्शन समिति, कलकत्ता (प० बंगाल)

स्वनामधन्य श्री मोहनलाल जी बांठिया द्वारा स्थापित उन्हीं के [illegible] ग्रंथों के प्रकाशन हेतु यह समिति गठित की गई थी। इस समिति ने उनके लेश्या कोष आदि ग्रंथों का प्रकाशन किया है। श्री [illegible] इसके अध्यक्ष, श्री पदमचन्द नाहटा मंत्री तथा श्री हजारीमल बांठिया सदस्य हैं।

६४. श्री जितयशा फाउन्डेशन, कलकत्ता (प० बंगाल)

यह संस्था मुनिराज श्री महिमाप्रभसागर जी, श्री [illegible] द्वारा [illegible] है। यहां से सैकड़ों धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक विषयों के ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। [illegible] कुशल प्रबन्धक हैं। श्री बांठिया जी इसकी सलाहकार परिषद् के सदस्य हैं और इसके [illegible] में [illegible] सहयोग देते हैं।

६५. अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता (प० बंगाल)

मारवाड़ी सम्मेलन से श्री बांठिया जी लगभग ५० वर्षों से जुड़े हैं। [illegible] सम्मेलन के उपाध्यक्ष हैं। इसके संस्थापक श्री [illegible] जी [illegible] थे। [illegible] श्री बांठिया जी को [illegible] कार्यसमिति का सदस्य बनाया और वे आज भी इसके सदस्य हैं। मारवाड़ी सम्मेलन [illegible] में ५-६ मार्च १९६४ में श्री [illegible] की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ [illegible] श्री बांठिया जी थे। सम्मेलन का [illegible] मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री [illegible] हैं।

अ भा मारवाडी सम्मेलन के १४ वें राष्ट्रीय अधिवेशन में समाज सेवी उद्योगपति श्री हरिशंकर सिंहानिया (मनोनीत अध्यक्ष) का कानपुर सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन पर स्वागत करते श्री हजारीमल बाँठिया

। दिनांक १५ मार्च १९८६ ।

श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा आयोजित विशिष्ट समारोह (१)

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

(दि० १५-१६ मार्च १९६४)

उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन १५-१६ मार्च, १९६४ को हाथरस मे उत्साह-पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे श्री सीताराम जैपुरिया, एम० पी०। उद्घाटन सम्पन्न किया अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री गजाधर सोमानी ने। कानपुर, आगरा, मथुरा, झांसी, अलीगढ, गोरखपुर, इलाहाबाद, मेरठ, फैजाबाद, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, बुलन्दश[illegible] की कार्यवाही सेठ बेनीराम पोद्दार के बाग में बने [illegible] चूणावत एम० पी० राजस्थान, श्री अचलसिंह एम० पी०, अ० भा० मा० सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री रघुनाथ प्रसाद खेतान एवं संगठन मंत्री श्री रामकृष्ण सरावगी, अगरचन्द नाहटा बीकानेर, रामप्रसाद लोहिया वृन्दावन, रामेश्वर दास जटिया खुर्जा, रोशनलाल माहेश्वरी अलीगढ, नवलकिशोर अग्रवाल आगरा, वृन्दावन दास मथुरा, गिल्लूमल बजाज, मदनगोपाल कानोडिया कानपुर, रामबाबू लाल अग्रवाल, दुर्गाप्रसाद लोहिया, यमुनाप्रसाद पोद्दार हाथरस, प्रकाश चन्द जैन सासनी रामगोपाल आजाद, केशरी चन्द सिंघी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वागत करते हुए स्वागताध्यक्ष श्री धन्नालाल लोहिया ने हाथरस नगर के इतिहास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि नगर के सर्वांगीण विकास मे मारवाडी समाज ने सदैव अनुकरणीय सहयोग दिया है जिसके फलस्वरूप यहां डिग्री-कालेज, अस्पताल, विद्यालय, सार्वजनिक उद्यान, गर्ल्स कालेज, यात्री - निवास आदि संस्थाये विद्यमान हैं। उन्होंने कहा कि हमारा समाज भारतीय पहले है और मारवाडी बाद में।

मारवाड़ी समाज को सभी की उन्नति के लिए प्रयास करना है।

स्वागत मन्त्री श्री हजारीमल बाँठिया का भाषण

अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, मारवाडी सम्मेलन के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओ तथा अन्य सभी उपस्थित भाइयों और बहिनों का स्वागत करते हुए स्वागत मन्त्री श्री हजारीमल बाँठिया ने कहा कि-

उत्तर प्रदेश की परम पावन नगरी हाथरस में आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए आज मुझे परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आपने हमारे अनुरोध की रक्षा करते हुए यहां पधार कर हमारे ऊपर जो कृपा-भाव दिखाया है, उसके लिए हम आपके अत्यन्त कृतज्ञ हैं और अपना अहोभाग्य मानते हैं।

अखिल भारतीय स्तर पर मारवाडी समाज का प्रथम महाअधिवेशन विभूति भूषण भगवान विश्वनाथ की विश्राम-स्थली वाराणसी में सन् १९४४ में आदरणीय सेठ कैलाशपति जी सिंघानिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था। उस सम्मेलन की विशालता, भव्यता एव उसमें व्यक्त किये गये विचारों की सारगर्भिता से प्रेरित होकर मारवाडी समाज ने अपना द्वितीय महाअधिवेशन पुण्य सलिला गंगा के पावन तट पर कानपुर में १९६० मे श्री श्रीप्रकाश राज्यपाल महाराष्ट्र के सभापतित्व में सम्पन्न किया था। उस महाअधिवेशन में सम्मिलित होने वाले हम हाथरस-निवासियो के हृदय मे भावों का कुछ ऐसा स्फुरण

हुआ कि उत्साहित होकर हम लोगो ने उसी अधिवेशन मे मारवाड़ी समाज के उच्च पदाधिकारियो के समक्ष भावी महाधिवेशन हाथरस नगर में करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिस पर बडी उदारता से उन्होंने विचार किया और आगामी अधिवेशन हाथरस में करने की स्वीकृति प्रदान कर दी। उसी के फल–स्वरूप आज हम यहां सम्मिलित हुए हैं।

यद्यपि इस अधिवेशन को करने का विचार गत वर्ष ही किया गया था किन्तु देश में चीन की कपटपूर्ण नीतियों एवं आक्रमण गतिविधियो से राष्ट्रीय सकट उत्पन्न हो जाने के कारण ऐसा नहीं हो सका और अधिवेशन करने का विचार स्थगित कर देना पडा। हर्ष का विषय है कि इस वर्ष हम अपने स्थगित विचार को पुन: कार्य रूप मे परिणत करने में समर्थ हो सके हैं। वैसे इस महाधिवेशन का हाथरस में होना कोई नई बात नहीं है, क्योकि इससे पूर्व भी स्व० रायबहादुर सेठ चिरन्जीलाल बागला की अध्यक्षता में यहां इसी प्रकार का एक अधिवेशन हो चुका है।

इससे पूर्व इस अधिवेशन की आवश्यकता पर प्रकाश डालूँ, मैं आप सभी से विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि मारवाड़ी शब्द को व्यापक अर्थ मे ही ग्रहण करें। इसके अन्तर्गत समस्त अग्रवाल, ओसवाल, माहेश्वरी, खन्डेलवाल, सरावगी (जैन), कांस्यकार, गौड ब्राह्मण, पुरोहित, राजपूत, जाट, यादव आदि अनेक जातियां हैं। अत यह समाज किसी जाति विशेष अथवा वर्ग विशेष का संगठन मात्र नहीं हैं।

कुछ समय पूर्व तक हमारे अग्रवाल बन्धु अपने को मारवाडी समाज से पृथक समझते थे, किन्तु प्रसन्नता की बात है कि वे अब इस तथ्य को समझने लगे हैं कि उनके पूर्वज अग्रोहा के मूल निवासी थे, जो राजस्थान में है और अग्रोहा के पतन के पश्चात् वे भारत के विभिन्न भागों में जाकर बस गये। अत सभी अग्रवाल चाहें वे कहीं भी रहते हो, मूलत मारवाडी ही हैं।

हमारा देश अनेक जातियो, उपजातियो, वर्गों एव सम्प्रदायो का देश है। सभी जातियां, वर्ग अथवा सम्प्रदाय किसी एक ही अंग से सामूहिक रूप में सुधार एवं कल्याण–कारक योजनाओं की बात इसलिए नहीं सोच सकते कि प्रत्येक जाति, उपजाति, वर्ग अथवा सम्प्रदाय विशेष की अपनी कुछ निजी मान्यताऐं, रीति–रिवाज एव धार्मिक विचार–धारायें हैं। उनमें जो कमियां अथवा कुरीतिया हो सकती हैं, उनका वे अपनी आवश्यकताओं एव एकताओं के अनुसार ही उपचार एव सुधार कर सकते हैं। किसी दूसरे समाज के द्वारा निर्मित अथवा निर्णीत नियम एवं व्यवस्थाओं को अन्य समाज न तो स्वेच्छा–पूर्वक अपना ही सकता है और न उस पर किसी बल प्रयोग द्वारा लादा ही जा सकता है। अतएव यदि कोई समाज अन्य समाजो अथवा वर्गों से किसी प्रकार का विरोध न रखकर देशहित को सर्वोपरि मानते हुए अपने उत्थान एवं जागरण के लिए प्रयत्नशील होता है, तो उसके वे सभी प्रयत्न श्लाघ्य एव प्रशन्सनीय ही समझे जाने चाहिए। इसके विषय मे मेरी धारणा है कि आप सभी मेरे इस विचार से सहमत होगे।

मारवाडी समाज की स्थापना भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई है। हमारे समाज में अब भी कुछ इस प्रकार की रूढ़ियां घर किये हुए हैं, जो बडी हानिकारक हैं, अतएव त्याज्य भी हैं, किन्तु फिर भी हम उन्हें परम्परागत मोह एवं प्राचीनतावादी दृष्टिकोण के कारण अपनाये हुए हैं और निरन्तर हानियो को सहन करते हुए भी उनको त्यागना उचित नहीं समझते, उदाहरणार्थ दहेज प्रथा, बालविवाह, परदा प्रथा, स्त्रियो मे शिक्षा का अभाव आदि ऐसी कुप्रथायें हैं, जिनका त्यागना अथवा सुधार करना नितात आवश्यक है। सौभाग्य का विषय है कि इस दिशा मे हमारे समाज ने बहुत बडा कार्य किया है और इन कुरीतियों के सुधारने मे आशातीत सफलता प्राप्त की है।

हमारा समाज विशेषत व्यापार–प्रधान समाज है और इसी कारण देश के प्रत्येक भाग में हमारी पहुँच है।

सोहनलाल दुग्गड़, रामकुमार भुवालका एम० पी०, बजरंग लाल लाठ, राधादेवी गोयनका अकोला, चीफ कमिश्नर दिल्ली आदि।

अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए श्री गजाधर सोमाणी ने कहा कि सम्मेलन से हमारा कोई राजनैतिक उद्देश्य नहीं है। राष्ट्र के विभिन्न समाजों का सबल होना राष्ट्र के लिए हितकर है इसलिए आवश्यक है कि सभी समाजों के लोग अपनी उन्नति का प्रयास करें। उत्तर प्रदेश में समरसता है अत यहां के लोगों के ऊपर विशेष जिम्मेदारियां हैं कि वे इस समरसता को अन्य स्थानो में फैले मारवाडी बन्धुओं तक पहुँचावें।

देश में व्याप्त दरिद्रता एवं बेकारी का विश्लेषण करते हुए श्री सोमानी ने कहा कि भारतीयों का जीवन-स्तर विश्व मे निम्नतम है और लोग काफी परेशान हैं। प्रमुख व्यापारी समाज हाने के नाते मारवाड़ी समाज को प्रयास करना हैं कि वेसभी के लिए उन्नति का प्रयास करें। आज देश मे आर्थिक क्रांतिं हो रही है। लेकिन दूसरी तरफ जीवनोपयोगी वस्तुओं के दाम बढ रहे हैं। इसका समाधान राष्ट्रीयकरण नहीं है वल्कि उत्पादन को बढाने एवं उचित मुनाफा लेने की मनोवृत्ति का विस्तार करना है।

उत्तर प्रदेश मारवाडी सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री मदनगोपाल कानोडिया ने गत वर्षो का कार्य उपस्थित किया। सम्मेलन को उद्‌बोधन करते हुए श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूणावत ने कहा कि मारवाड़ी, समाज की कुरीतियों को झटका देकर तोड़ दे। अब टालमटोल की दृष्टि ठीक नहीं है। उन्होंने राजस्थान के औद्योगीकरण में अविकाधिक योग देने की समाज के बन्धुओं से अपील की।

श्री अचलसिंह एम० पी० ने कहा कि देश सकटकालीन स्थिति से गुजर रहा है। भ्रष्टाचार फैला है और देशद्रोह तक होने लगा है। उन्होने व्यापारी-वर्ग से इस सम्बन्ध मे सतर्क रहने की आवश्यकता बताई।

श्री रामकृष्ण सरावगी ने कहा कि समाज के युवक और युवतियां पर्याप्त मात्रा मे उच्च शिक्षा के प्रति आकर्षित हों इसके लिए अर्थ की कमी नहीं रहने पाये अत मारवाडी सम्मेलन द्वारा विभिन्न प्रदेशो में कोष स्थापित हैं। शिक्षा-कोष के लिए उपस्थित व्यक्तियों मे छोटी-बडी राशियों की घोषणा होने लगी। श्री गजाधर सोमानी ने २५००/- प्रदान कर शिक्षा कोष का प्रारम्भ किया और इतनी ही रकम सर्वश्री रामबाबू लाल अग्रवाल, रामेश्वर दास जटिया, माधव प्रसाद जटिया ने भी घोषणा की। अध्यक्ष श्री सीताराम जैपुरिया ने २५०१/- इस शिक्षा कोष में प्रदान किया और घोषणा की इसके अतिरिक्त २५०००/- का अलग ट्रस्ट बनवायेंगे जिसमे दो ट्रस्टी उत्तर प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के होंगे और जिनकी राय से छात्रवृतियां दी जायेंगी।

अ० भा० मारवाडी सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री रघुनाथप्रसाद खेतान ने घोषणा की कि अगर शिक्षा कोष में एक लाख की राशि एकत्र होती है तो श्री अर्जुन दास अग्रवाल झरिया ने अपनी ओर से २५००१/- इस शिक्षा कोष में दान देने की घोषणा की है। सभास्थल पर उपयुक्त बड़ी राशियों के अतिरिक्त लगभग २०,०००/- की घोषणाएँ हुई एवं शिक्षा-कोष स्थापित हुआ।

सभापति पद से बोलते हुए श्री सीताराम जैपुरिया एम० पी० ने कहा कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण विकास का पथ प्रशस्त करना है और यदि प्रत्येक व्यक्ति और समाज स्वयं का सुधार करने की दिशा में उपयोगी कदम बढाये तो समूचे राष्ट्र मे फैले दुर्गुणों का अपने आप सुधार हो जायेगा। यद्यपि बदले हुए युग के साथ हमने

ऐसे–ऐसे दुर्गम स्थानों पर जहां मानव–जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों का नितांत अभाव है, हमारे समाज के व्यक्तियों ने ही वहां जीवनोपयोगी सामग्री उपलब्ध कराई है। इसके अलावा देश में सर्वत्र अनेक विद्यालय, चिकित्सालय, पुस्तकालय, धर्मशालाएँ, टैक्नीकल संस्थाएँ, क्लब आदि जिनका लाभ सभी वर्गों के व्यक्ति प्राप्त करते हैं, हमारे समाज के व्यक्तियों द्वारा स्थापित किए गये हैं। समय–समय पर देश के विकास कार्यों के लिए आर्थिक सहायता देने में भी हमारा समाज कभी पीछे नहीं रहा।

अपने नगर हाथरस में भी स्कूल, कालेज, अस्पताल, धर्मशालाएँ, टैक्नीकल इन्स्टीट्यूट आदि अनेक संस्थाएँ हमारे समाज द्वारा संचालित हो रही हैं। इस प्रकार हमारा समाज देश–सेवा के पवित्र कार्य के साथ–साथ अपने उद्धार और सुधार के लिए प्रयत्नशील है।

अन्त में, मैं उत्तर प्रदेश के उन सभी उत्साही महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग एवं परामर्श के फल–स्वरूप हम अधिवेशन को हाथरस में कर सकने में समर्थ हुए हैं। यहां मैं नगर के पत्रकार बन्धुओं के लिए भी हार्दिक धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ और आशा करता हूँ कि सदैव इसी भाँति अपने सहयोग से हमे कृतार्थ करते रहेंगे।

मैं स्वागत–समिति के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं विशेषकर सेठ रामबाबूलाल जी अग्रवाल (बिजली मिल), सेठ दुर्गा प्रसाद जी लोहिया, सेठ गोपाल प्रसाद जी सेकसरिया, श्री उमराव सिंह जी गर्ग, श्री केसरी चन्द सिंघी, श्री बाबूलाल जी चौधरी, श्री रतन चन्द जी चौपड़ा, एवं श्री मदनलाल जी आजाद का आभारी हूँ जिन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया। मैं रामरत्न शर्मा, प्रचारक मारवाड़ी सम्मेलन कलकत्ता, का भी आभारी हूँ जिनके अथक प्रयास से समस्त उत्तर–प्रदेश का संगठन हो पाया है।

श्रीमान् जिलाधीश, सुपरिंटेन्डेन्ट पुलिस, तहसीलदार महोदय, नगर पालिका के अधिकारी–गण एवं कोतवाल महोदय तथा जिले व शहर के अधिकारियों ने जो सहयोग प्रदान किया है उसके हम आभारी हैं।

मैं अपने मान्य अतिथियों के प्रति पुनः क्षमा प्रार्थी हूँ कि इस छोटे से नगर में उनका यथोचित स्वागत व सत्कार हमसे नहीं हो सका। फिर भी उनकी विशाल हृदयता एवं उदारता को देखकर मैं आशा करता हूँ कि वे हमारी कमियों एवम् त्रुटियों पर विशेष ध्यान न देकर हमारे ऊपर सदैव कृपा भाव बनाये रखेंगे।

जयहिन्द

हाथरस अधिवेशन में श्री सोमानी

उप–स्वागताध्यक्ष श्री गोपाल प्रसाद सेकसरिया ने बाहर से आये संदेश पढ़कर सुनाये जिनमें प्रमुख श्री श्रीप्रकाश, उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्री जगजीवन राम, पंजाब के मुख्य मंत्री श्री प्रतापसिंह कैरों, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री बलवन्तराय मेहता, राजा महेन्द्र प्रताप, लोकसभा के अध्यक्ष सरदार हुकुमसिंह, केन्द्रीय कृषि मंत्री डा० रामसुभग सिंह, सेठ गोविन्द दास एम० पी०, श्री ईश्वर दास जालान विधिमंत्री पश्चिम बंगाल, महारानी गायत्री देवी जयपुर, महाराजा करणीसिंह बीकानेर, राजा जौनपुर, सर बद्रीदास गोयनका

श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा आयोजित विशिष्ट समारोह (२)

"काका" हाथरसी, हीरक जयन्ती

(दि १५-१६ अक्टूबर, १९६६)

ब्रज कला केन्द्र हाथरस के तत्वावधान तथा श्री हजारीमल बाँठिया के संयोजकत्व में श्री प्रभूलाल गर्ग "काका" हाथरसी की ६० वर्ष पूरे कर ६१वें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर हीरक जयन्ती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तीन कार्यक्रम सम्पन्न हुए– प्रथम श्री "काका" हाथरसी का अभिनन्दन, द्वितीय कवि सम्मेलन तथा तृतीय ब्रज लोक नाट्य प्रदर्शन।

काका हाथरसी हीरक जयन्ती समारोह के लिए निम्न लिखित समिति का गठन किया गया–

प्रधान-संरक्षक– सेठ रामबाबूलाल अग्रवाल

संरक्षक- श्री नवाबसिंह चौहान (अध्यक्ष जिला परिषद्)
श्री नन्द कुमार देव वशिष्ठ (एम० एल० ए०)
श्री प्रेमचन्द शर्मा (भू० पू० एम० एल० सी०)
श्री नरदेव स्नातक (संसद सदस्य)
श्री नरेन्द्र सिह सिरोही (जिलाधीश)
श्री गिरीशचन्द्र अग्रवाल (ए० डी० एम०)
श्री वृन्दावन दास (परगनाधीश)
श्री जगदीश शरण श्रीवास्तव (जे० ओ०)
श्री ए० एन० कौल (पुलिस अधीक्षक)
श्री दर्शनलाल सोनी (मुंसिफ, हाथरस)
श्री आर० के गोयल (सेल्स टेक्स आफीसर)
श्री श्रीराम (तहसीलदार)
श्री बसन्तवल्लभ झल्डियाल (प्रशासक अधिकारी)
श्री के० एल० राघदेवा (मैनेजर स्टेट बैंक)
श्री गौरीशकर मेहरा (मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक)
श्री दीनानाथ चतुर्वेदी (एजेण्ट, इलाहाबाद बैंक)
श्री मौहम्मद अहमद (पुलिस इन्सपैक्टर)
डॉ० के० सी० शुक्ला
श्री माधव प्रसाद एडवोकेट

समारोह स्वागत समिति का इस प्रकार चयन किया गया-

श्री दुर्गा प्रसाद लोहिया (स्वागताध्यक्ष)
श्री हजारीमल बाँठिया (स्वागत मंत्री एवं संयोजक)
श्री राधेश्याम प्रगल्भ (समारोह–सचिव)

स्वयं को काफी बदला है किन्तु हमारी प्रगति में वह तेजी नहीं आई है जिसकी हमें अपेक्षा थी। आवश्यकता इस बात की है कि हम आज की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को ढालें और रूढ़ियों और कुरीतियो से यथाशक्ति मुक्ति पायें। सामाजिक उत्थान हमारे सर्वांगीण विकास की पहली शर्त है। श्री अगरचन्द नाहटा, दुर्गाप्रसाद लोहिया, हजारीमल बाँठिया, बाबू वृन्दावन-दास, रामप्रसाद लोहिया के सामयिक भाषण हुए।

उसी दिन, रात्रि को बिजली काटन मिल के विशाल मंच पर ब्रजभाषा कला मण्डल द्वारा अनुपम एवं स्मरणीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसका संचालन किया सुप्रसिद्ध हास्य कवि काका हाथरसी ने।

करने के लिए एडहाक कमेटी की स्थापना और राजस्थान का अकाल, राजस्थानी भाषा का प्रचार आदि। इन प्रस्तावों पर सर्व श्री रामगोपाल जी आजाद अलीगढ़, क्रान्तिस्वरूप सिंह, कृष्णलाल गर्ग झांसी, मुरलीधर पोद्दार हाथरस, उमरावसिंह गर्ग, केशरीचन्द सिंघी, दीनदयाल ओझा, राजनारायण अग्रवाल, रमाशंकर चाण्डक, हरिशंकर पोद्दार, रोशनलाल माहेश्वरी अलीगढ़, हजारीमल बाँठिया, डा० टी० एन० विमल, अगरचन्द नाहटा, सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री रघुनाथ प्रसाद एवं सम्मेलन के संगठन मंत्री श्री रामकृष्ण सरावगी आदि ने अपने विचारों को व्यक्त किया।

आगामी वर्ष के लिए श्री रामबाबू लाल अग्रवाल एवं श्री रामेश्वर जटिया, खुर्जा उपसभापति, श्री भँवरलाल सेठिया कानपुर, प्रधानमंत्री, श्री हजारीमल बाठिया, श्री युगलकिशोर परशुरामपुरिया -- सहायक मंत्री एवं श्री गिल्लूमल बजाज कोषाध्यक्ष चुने गये।

इस दिन एक महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था जिसकी अध्यक्षा श्रीमती उमालाल एम० ए० थीं, एवं उद्‌घाटन रानी लक्ष्मी कुमारी चूणावत ने किया। लगभग चार हजार महिलाओं ने इस अधिवेशन मे सोत्साह भाग लिया।

सर्वश्री धन्नालाल लोहिया, रामबाबू लाल अग्रवाल, हजारीमल बाठिया, गोपाल प्रसाद सेकसरिया, उमरावसिह गर्ग, दुर्गा प्रसाद लोहिया, मुरलीधर पोद्दार, आदि के नेतृत्व में स्वागत समिति द्वारा अधिवेशन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी और इस प्रकार उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का यह अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

❁❁❁

धनी हैं। संगीत कार्यालय में लगे सभी तैल-चित्र चित्रकार काकाजी की प्रतिभा के परिचायक हैं।

ब्रजकला केन्द्र से काकाजी का अत्यधिक निकट का सम्बन्ध रहा है। हाथरस शाखा के प्रथम अध्यक्ष होने के साथ-साथ केन्द्र की गति विधियों और क्रिया कलापों में काकाजी सदैव ही एक सक्रिय कार्यकर्ता और परामर्शक के रूप में भाग लेते रहे हैं। इन्होने केन्द्र के लिए रास लीलाएँ,प्रहसन आदि लिखे और निर्देशित भी किये।

काका बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं, जिनपर लक्ष्मी और सरस्वती दोंनों की ही कृपा है।

जो लोग काकाजी के अद्यतन जीवन से परिचित हैं, वे इस सत्य को स्वीकार करेगे कि काकाजी का अभिनन्दन एक कर्मठ, परिश्रमी, अध्यवसायी, संघर्षशील और संयमी व्यक्ति का अभिनन्दन है, ब्रज कला केन्द्र के एक निस्पृह कार्य-कर्ता का अभिनन्दन है, अभिनन्दन है हिन्दी मे हास्यरस का, और समग्र रूप से अभिनन्दन है हाथरस की पावन नगरी का।

ऐसे मंगलमय अवसर पर मेरी काका हाथरसी को तथा उनकी मातृभूमि हाथरस की पुण्य-स्थली को शत-शत बधाइयां।

स्वागत मंत्री श्री हजारीमल बाँठिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा-

माननीय राजबहादुर जी, मान्य अध्यक्ष महोदय, बहिनो एवं भाइयो

काकाजी ब्रजक्षेत्र के एक मात्र ऐसे साहित्यिक है जिन्होंने हिन्दी, खडी बोली और ब्रजभाषा में कविता के तथा ब्रज के मच के लिए रूपक लिखे हैं और उन्हें सफलता-पूर्वक अपने निर्देशन में प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से काका का यह प्रयास अपने आप मे अकेला और अनूठा है और इस दृष्टि से वे केवल ब्रजकला के ही नहीं वरन् पूरे ब्रजक्षेत्र के लिए अभिनन्दनीय बन गये हैं। मिलनसार व्यवहार और उनके साहित्यकार और कलाकार रूप मे मणि-काचन संयोग जैसा है। इसलिए हाथरस ब्रजकला केन्द्र ने यह निश्चय किया कि आज जब काकाजी अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे कर ६१वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, तब इस शुभ अवसर पर उनकी हीरक जयन्ती का आयोजन किया जाय। इस प्रकार आज हाथरस नगर ही नहीं वरन् ब्रजक्षेत्र और हिन्दी क्षेत्र से पधारे मान्य महानुभाव अपने इस साहित्यकार और कलाकार का अभिनंदन करने के लिए यहाँ उपस्थित हैं ! जहाँ इस उत्सव में ब्रजक्षेत्र के विभिन्न स्थानों के प्रतिनिधि विद्यमान हैं, वहाँ प्रतिष्ठित साहित्यकारों और माननीय श्री राजबहादुरजी जैसे राजनेता के पधारने से हम कृतकृत्य हैं। यह सब क्षेत्रो, सब वर्गों का सहयोग ही काकाजी की लोकप्रियता तथा आज के इस समारोह में इस तथ्य का प्रमाण है कि काकाजी हम सभी के अभिनन्दनीय एवं अभिवंदनीय है। मैं ब्रजकला केन्द्र की ओर से आप सब महानुभावो का हार्दिक स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ, ब्रजकला केन्द्र को आप सबका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

आपका
हजारीमल बाँठिया
संयोजक
काका हीरक जयन्ती समारोह
हाथरस

श्री सुरेश चतुर्वेदी (उप–सचिव)

सदस्य स्वागत समिति– सर्व श्री गोपाल प्रसाद सेकसरिया, ताराचन्द अग्रवाल, चीनू भाई पटेल, प्रथमावतार मित्तल, राधावल्लभ गौड, हरी किशोर बर्मन, गोपाल प्रसाद गर्ग 'रवि', जगदीश प्रसाद अग्रवाल, गिरधारी लाल सराफ, गोविन्दराम सराफ, रतनचन्द चौपडा, रामकृष्ण अग्रवाल, रजनीश चन्द्र शर्मा, कान्तीचन्द्र जैन, मेघराज जैन, केसरीचन्द सिंघी, कैलाशनाथ खंडेलवाल।

प्रथम दिवस दि० १५ अक्टूबर १९६६ को सायं ४ बजे अभिनन्दन–समारोह आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ० बच्चन ने की। स्वागताध्यक्ष श्री दुर्गाप्रसाद लोहिया ने सभी अतिथियों का भाव–भीना स्वागत किया। प्रधान संरक्षक एवं ब्रजकला केन्द्र के अध्यक्ष सेठ रामबाबूलाल ने काका के अभिनन्दन में निम्नलिखित उद्‌गार व्यक्त किये।

अब से लगभग सात–आठ वर्ष पूर्व काकाजी मुझ से प्रायः अभिनन्दनीय काका यह शिकायत किया करते थे कि आप तो हाथरस में रहते ही नहीं। जब फोन करें तभी पता चलता है कि बाहर गये हुए हैं।

यह सत्य है।

मैं महीने में प्रायः पन्द्रह–बीस दिन नगर से बाहर ही रहता हूँ।

इतना होते हुए भी अब वस्तुस्थिति कुछ भिन्न हो गयी है।

मुझे स्मरण है कि अभी पिछले दिनों जब मैंने काकाजी से यह कहा था कि अब तो उल्टी गंगा बह निकली है। अब तो जब कभी हम फोन करते हैं, पता चलता है काकाजी बाहर हैं– तो काका ने विनम्र हंसी के साथ कहा– "नहीं ऐसी बात नहीं है।" यह उनकी शालीनता थी। पर यह सत्य है कि शायद ही कोई कवि सम्मेलन ऐसा होता हो, जिसमें काका को आमंत्रित न किया जाता हो।

मैं देश के प्रायः प्रत्येक भाग में भ्रमण कर चुका हूँ। हिन्दी भाषी जिस नगर में भी गया, मुझे वहीं काका के परिचित, प्रेमी, और काका–काव्य के प्रशंसक मिले। विदेश में भी जाने का सुयोग मुझे प्राप्त हुआ और मेरे आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा, जब वहां भी काका के द्वारा प्रसारित मासिक पत्र "संगीत" के जिज्ञासुओं से मेरी भेंट हुई।

अब काकाजी की हीरक जयन्ती मनाई जा रही है, तो मैं ये सोचता हूँ कि काका वास्तव में अभिनन्दनीय हैं। इसलिए नहीं कि ये अपने हैं, इसलिए नहीं कि उन्होंने जीवन के ६० वर्ष हँसते–हँसाते पूर्ण किये हैं और अभी भी युवक समान हैं, इसलिए भी नहीं कि उन्होंने लाख– लाख लोगों का मनोरंजन किया है, अपितु इसलिए कि हिन्दी काव्य और संगीत के क्षेत्र में इनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

यो अधिकारिक ढंग से तो इस सम्बन्ध में काव्य के मर्मज्ञ ही कुछ कहने का दावा कर सकते हैं पर जहा तक मैं समझता हूँ, हिन्दी की हास्यरस की कविता में विषय विस्तार की दृष्टि से काका का अपना स्थान है, जो सदैव रहेगा। सामयिक विषयों पर तीखे किन्तु मधुर और संयत व्यंग्य काका की लेखनी से समय–समय पर प्रस्तुत हुए हैं। यह इनकी अपनी विशेषता है।

इस तथ्य से शायद बहुत कम लोग परिचित हों कि काकाजी लेखनी के ही नहीं, तूलिका के भी

श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा आयोजित विशिष्ट समारोह (३)

श्री अगरचंद नाहटा अभिनंदनोत्सव - समारोह

शोध–मनीषी, पुरातत्त्ववेत्ता, तत्त्वचिंतक, समत्वयोगी, *श्री अगरचंद नाहटा के अभिनंदनोत्सव का प्रथम* समारोह चैत्र शुक्ला १० तथा ११ सं० २०३३, तदनुसार दिनांक १० और ११ अप्रैल सन् १९७६, को उनकी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि बीकानेर में आयोजित किया गया। समारोह के लिए एक व्यापक समारोह–समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष राष्ट्र के महान शिक्षा शास्त्री विश्वविद्यालय–आयोग के अवकाश–प्राप्त प्रधान डॉ० दौलतसिंह जी कोठारी थे। अन्य पदाधिकारीगण इस प्रकार थे–

उपाध्यक्ष-	*विद्यावाचस्पति पं० विद्याधर शास्त्री,* आचार्य नरोत्तमदास स्वामी, डा० छगन मेहता।
मंत्री-	श्री भँवरलाल कोठारी।
सहमंत्री-	श्री मूलचद पारीक, श्री जसकरण सुखाणी, श्री प्रकाशचद सेठिया।
कोषाध्यक्ष-	श्री लालचद कोठारी।
संयोजक-	श्री हजारीमल बाँठिया।
संरक्षक-	डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या राष्ट्रीय प्रोफेसर, सुप्रसिद्ध भाषाविद्, अध्यक्ष, भारतीय साहित्य अकादमी, दिल्ली श्री हरिदेव जोशी, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान *श्री राजबहादुर, भूतपूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री,* श्री रामनिवास मिर्धा, भूतपूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री चदनलाल बैद, भूतपूर्व वित्तमंत्री, राजस्थान डॉ० करणीसिह, भूतपूर्व बीकानेर महाराजा व संसद सदस्य सेठ कस्तूर भाई लालभाई, अहमदाबाद साहू श्री शातिप्रसाद जैन, दिल्ली श्री शादीलाल जैन, बम्बई सेठ अचलसिह, भूतपूर्व ससद सदस्य आगरा श्री मोहनलाल चौरडिया, मद्रास श्री विजयसिह नाहर, भूतपूर्व उप मुख्यमंत्री, पश्चिम बगाल, कलकत्ता, श्री अक्षयकुमार जैन, दिल्ली श्री प्रभुदयाल डाबरीवाल, कलकत्ता श्री सीताराम सेकसरिया, कलकत्ता श्री भगीरथ कानोडिया, कलकत्ता श्री गणपतराज बोहरा, बड़ौदा

भँवरलाल जी नाहटा को भी ग्रंथ की एक प्रति के साथ उत्तरीय तथा श्रीफल भेट किये गये, तदनंतर श्री नाहटा जी ने मार्मिक एवं प्रेरक उद्बोधन भाषण किया। अंत में समारोह-मंत्री श्री कोठारी ने मनीषी नाहटा जी के प्रेरक जीवन पर प्रकाश डालते हुए आयोजन को सफल बनाने मे सहयोगी सभी सज्जनो और कार्यकर्त्ताओ के प्रति आभार प्रकट किया, इस धन्यवाद भाषण के साथ समारोह सपूर्ण हुआ।

नाहटा अभिनंदनोत्सव का दूसरा समारोह राजधानी दिल्ली में २१ अप्रैल १९७८ को संपन्न किया गया जिसमें नाहटा जी को अभिनन्दन ग्रंथ का दूसरा खंड भेट किया गया। इसका लोकार्पण प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया।

संयोजक का आत्म-निवेदन

राजस्थान प्राचीनकाल से ही विविधताओ का क्रीडा-स्थल रहा है। कहीं आकाश को छूती-सी पर्वत-श्रृखलाएँ हैं, तो कहीं पठार और मैदान। विशाल मरुस्थल भी इस प्रदेश का मुख्य आकर्षण है। राजस्थान वीर-प्रसूता भूमि के नाम से जगविख्यात है। जहा इसने अपने गर्भ से अनेक वीरो और चूडामणियो को जन्म दिया वहा अनेक साहित्यकारो, लेखको और कवियो की भी प्रसूता रही है। मेरे मामा परमपूज्य श्रद्धेय श्री अगरचंद जी नाहटा और भ्राता श्री भँवरलाल जी नाहटा भी इस मरुभूमि की अनमोल देन हैं। आप मेरी माता श्रीमती मगनबाई के अनुज हैं। मेरा जन्म ननिहाल में ही नाहटा जी के घर वि० स० १९८१ असौज वदी १० को बीकानेर मे हुआ। मेरे पिता श्री फूलचंद जी बाँठिया व्यापार निमित्त कलकत्ता मे ही निवास करते थे। अत ननिहाल में ही मैं अपने बाल्यकाल की अठखेलियां करता हुआ युवा हुआ। अपने मामा और नाहटा परिवार के सरक्षण से ही मैं जीवन के वास्तविक मूल्य को समझ सका। मेरा यह कथन किंचित-मात्र भी अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि आज मैं जीवन मे जो कुछ भी कर सका यह सब नाहटा-परिवार के आशीर्वाद का ही परिणाम है। मेरे पिताजी से जहां मुझे उदारता, जीवन की व्यावहारिकता और प्रामाणिकता मिली वहां जीवन के अन्य सब पहलुओ पर नाहटा परिवार की गहरी छाप मुझपर पडी। परमपूज्य मामा भैंरुदान जी से सामाजिक संस्था मे काम करना सीखा तो दूसरी तरफ नानाजी स्व० शकरदान जी नाहटा व मामा सुभैराज जी से व्यापारिक दिलेरी व साहस, और श्री मेघराज जी से सहृदयता। मामा अगरचदजी ने बाल्यकाल से ही साहित्य और लेखन की तरफ मेरे मानस को मोडा, जो शनै-शनै मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अग बन गया। भाईजी श्री भँवरलाल जी से विनम्रता और माताजी से परोपकारिता का गुण मैंने भी ग्रहण किया। स्व० अभयराज जी का देहावसान मेरे जन्म से पूर्व ही हो चुका था। उनकी स्मृति में स्थापित ग्रथालय आज भी उनकी स्मृति दिला रहा है।

आज से ३७-३८ वर्ष पूर्व ही मामाजी अगरचंद जी मेरे प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनका जीवन-चरित्र मैंने 'समाजविकास' साप्ताहिक कलकत्ता, 'जैनध्वज' अजमेर व 'अनेकांत' मासिक सहारनपुर में लिखा था। सन् १९४० में पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री मुनिजिनविजय जी बीकानेर पधारे तो उन्होंने मामाजी की अध्यक्षता में आयोजित सभा में प्राचीन साहित्य के सरक्षण पर बडा महत्वपूर्ण भाषण दिया जिससे प्रभावित होकर मैंने अनेक लेख लिखे जिन्हें मामाजी ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशित कराकर मेरे उत्साह को दुगना किया। आपकी छत्रछाया मे मेरी साहित्यिक रुचि निरन्तर बढती गई। मैंने मुनि श्री जिनविजयजी का भाषण लिपिबद्ध करके 'अनेकान्त' मे प्रकाशित कराया। उसी तरह एक लेख मैंने 'जैनध्वज' साप्ताहिक अजमेर में लिखा- 'विद्वानो की कद्र करना सीखो'। उसमे मैंने जैन समाज से आग्रह किया था कि जैन साहित्य और समाज की अनवरत सेवा मे लीन मुनि श्री जिनविजय जी, श्री अगरचंद जी नाहटा, श्री भँवरलाल जी नाहटा और श्री मोहनलाल जी दलीचंद देसाई का उनकी अमूल्य सेवाओं के लिए अभिनन्दन करना चाहिए। किन्तु

श्री राजरूप टांक, जयपुर
श्री भँवरलाल सिंघी, कलकत्ता
श्री आनंदराज सुराणा, दिल्ली
श्री गुमानमल चोरड़िया, जयपुर

इनके अतिरिक्त कार्यसंचालन हेतु कार्यकारी मण्डल एवं परामर्श मण्डल का भी गठन किया।

समारोह का शुभारंभ दिनांक १०-४-१९७६ को दोपहर के एक बजे हुआ। प्रथम दिन "राजस्थान के साहित्य" पर विचार गोष्ठी हुई। इसकी अध्यक्षता भारतीय विद्यामंदिर के निदेशक श्री सत्यनारायण पारीख ने की तथा सयोजन श्री महावीर राज गेलड़ा, प्राध्यापक, डूंगर कालेज, बीकानेर, ने किया। गोष्ठी मे प्रमुख वक्ता अपने विषय के अधिकारी विद्वान थे, जिन्होने राजस्थान की विभिन्न भाषाओं के साहित्यों के विस्तृत विवरण प्रस्तुत किये — डॉ० नरेन्द्र भानावत ने हिन्दी साहित्य का, डॉ० हीरालाल चतुर्वेदी ने राजस्थानी साहित्य का, महोपाध्याय श्री विनय सागर ने संस्कृत साहित्य का और श्री भँवरलाल नाहटा ने प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य का विवेचन किया। उसी दिन रात्रि के साढ़े आठ बजे वृहत् कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय कविवरों के अतिरिक्त वनस्थली विद्यापीठ की डा० लक्ष्मी शर्मा ने भी अपने गीत एवं कविता पाठ प्रस्तुत किये। डॉ० नरेन्द्र भानावत ने सम्मेलन का संचालन किया।

समारोह के दूसरे दिन, ११ अप्रैल, १९७६ को "राजस्थान का जैन पुरातत्व" विषय पर एक वृहद् गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता राजस्थान राज्य के अभिलेखागार विभाग के निदेशक श्री जे० के० जैन ने तथा इसकी सयोजना श्री दीनदयाल ओझा ने की। इस गोष्ठी में जैन पुरातत्त्व के विविध पक्षों पर विशेषज्ञ विद्वानो ने निबंध वाचन किया, श्री विजय शंकर श्रीवास्तव ने जैन मंदिर एव मूर्ति कला पर, श्री मोतीचंद खजान्ची और श्री भँवरलाल नाहटा ने जैन चित्रकला एवं लेखन कला पर तथा श्री रामवल्लभ सोमाणी ने जैन अभिलेखों पर शोधपूर्ण एवं नवीन जानकारी-युक्त लेख पढे। उसी दिन तीसरे पहर १.३० बजे माननीय दौलतसिंह जी कोठारी की अध्यक्षता में मुख्य समारोह सम्पन्न हुआ। प्रारम्भ में छात्राओं ने सरस्वती वंदना की, तदनंतर समारोह के मंत्री श्री भँवरलाल कोठारी ने स्वागत-भाषण दिया, उसके बाद भू० पू० नगर विधायक श्री गोपाल जोशी ने माल्यार्पण किया, तत्पश्चात् मंत्री ने विभिन्न स्थानो से आये संदेशों को पढकर सुनाया।

इसके बाद सर्वश्री नरेन्द्र भानावत, डा० हीरालाल माहेश्वरी, श्री महावीर राज गेलड़ा, श्री विनय सागर, श्री विजय शंकर श्रीवास्तव डा० छगन मेहता, श्री सत्यनारायन पारीख, श्री उस्मान आरिफ सासद, श्री गोपाल जोशी विधायक, श्री मुन्नालाल गोयल (जिलाधीश), श्री श्रीलाल नथमल जोशी, डा० मनोहर शर्मा, श्री प्रकाशचंद सेठिया, जुगलसिंह खीची, पडित श्री हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री (ब्यावर), श्री दीनदयाल ओझा, प्रो० कन्हैयालाल शर्मा, श्री गुमानमल चोरड़िया जयपुर, श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', श्री हरीश भदानी श्री जानकी नारायण श्रीमाल, डा० लक्ष्मी शर्मा वनस्थली, श्री तख्तचन्द्र जैन एडवोकेट (गंगानगर) तथा आचार्य नरोत्तमदास स्वामी (समारोह के उपाध्यक्ष) आदि ने नाहटा जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला, श्री जसराज सोनार ने अपनी भावांजलि पद्य रूप मे प्रस्तुत की।

अभिनन्दन ग्रंथ समिति के संयोजक श्री हजारीमल बाँठिया तथा प्रधान सपादक श्री रामवल्लभ सोमाणी ने अभिनन्दन ग्रंथ विषयक विवरण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष डा० कोठारी और संपादन-मण्डल के प्रतिनिधि तथा उपाध्यक्ष प्रो० नरोत्तम स्वामी ने श्री नाहटा जी को अभिनन्दन ग्रंथ की प्रति भेंट की, ग्रंथ के साथ ही अभिनन्दन पत्र शाल एव श्रीफल भी भेंट किये गये, शोध कार्यों मे नाहटा जी के निरन्तर सहयोगी और सह-कार्यकर्ताओं उनके भतीजे श्री

श्री हजारीमल बांठिया कम्पिल उद्यान में फरवरी १९९५।

हजारीमल बाँठिया द्वारा आयोजित विशिष्ट समारोह (४)

कम्पिल – महोत्सव

(दिनांक १ अक्टूबर से ७ अक्टूबर, १९७८)

कम्पिल प्राचीन पंचाल जनपद की राजधानी था जो वर्तमान में खण्डहरों का छोटा-सा गांव बन गया है। जैन तीर्थंकर भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि होने के कारण जैनों के लिए यह पवित्र तीर्थ स्थल है और यहां दिगम्बर तथा श्वेताम्बर दोनों ही संप्रदायों के मन्दिर हैं। श्री हजारीमल बाँठिया ने जब कम्पिल तीर्थ की देखभाल का कार्य अपने हाथों में लिया तो उनका विचार हुआ कि तीर्थ के साथ-साथ इस गांव का भी विकास होना चाहिए। फर्रुखाबाद के तत्कालीन लोकप्रिय जिलाधिकारी श्री आर० एन० त्रिवेदी के परामर्श से श्री बाँठिया जी ने कम्पिल-महोत्सव का सात दिन का आयोजन किया और श्री त्रिवेदी ने इसकी अध्यक्षता स्वीकार कर ली। बाँठिया जी ने संयोजक और सचिव का कार्यभार सम्भाला।

यह समारोह दिनांक १ अक्टूबर से ७ अक्टूबर १९७८ तक चला और काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद् के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इस हेतु गठित समिति के स्वागताध्यक्ष कायमगंज के विधायक श्री गिरीशचन्द जी तिवारी बनाये गये और जिलाधिकारी की सहमति एवं आदेश से परगनाधिकारी श्री वीरेन्द्र कुमार त्यागी की देखरेख में यह कार्य-क्रम आयोजित किया गया।

इस समारोह को सफल बनाने में कानपुर के श्री बी० आर० कुम्मट, कानपुर जैन समाज, कायमगंज के श्री चन्द्रप्रकाश जी अग्रवाल, प्राचार्य श्री भगवान सिंह वर्मा, जैन श्वेताम्बर मन्दिर के मैनेजर श्री विजयकुमार झाल, दिगम्बर जैन तीर्थ कमेटी के मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार जैन, और श्वेताम्बर जैन महासभा के पदाधिकारियों का अपूर्व सहयोग मिला। इस अवसर पर दो दिन का पुरातत्व सम्मेलन भी हुआ जिसके संयोजक प्रो० कृष्णदत्त जी वाजपेयी थे। सातों दिन कम्पिल के विकास के नये-नये कार्य प्रारम्भ किये गये। इस अवसर पर समस्त भारत के राजनेताओं और धार्मिक सामाजिक महापुरुषों के शुभ कामना सदेश प्राप्त हुए। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव उद्‌घाटन करने हेतु पधारे। सम्पूर्ण कार्यक्रम को समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया।

उक्त अवसर की स्मृति-स्वरूप श्री बाँठिया जी ने श्वेत संगमरमर का २१ फीट ऊँचा स्तम्भ कम्पिल में बाजार के चौराहे पर स्थापित किया तथा "काम्पिल्य कल्प" पुस्तक का भी विमोचन किया जिसमें सचिव एवं संयोजक के नाते निम्न निवेदन किया–

नम्र निवेदन

ता० ७ मई १९७८ को "कन्नौज-महोत्सव" को देखकर–"कम्पिल-महोत्सव" की कल्पना मेरे मन में उठी, उसी दिन आदरणीय श्री गिरीशचंद जी तिवारी एम० एल० ए० (कायमगंज) भी पधारे थे– उन्होंने ही मेरा सर्व प्रथम परिचय फर्रुखाबाद के लोकप्रिय कर्मठ, जिलाधिकारी श्री रमेशनारायण त्रिवेदी से कराया. मैंने उनसे अनुरोध किया कि

यदि आप इस महोत्सव कमेटी की अध्यक्षता स्वीकार कर लें तो मेरी "कल्पना" साकार हो जावेगी। उन्होने उसी वक्त सहर्ष स्वीकृति दे दी और सहयोग का पूरा आश्वासन दिया।

संयोग से ता० २० मई १६७८ को आदरणीय प्रो० कृष्णदत्त जी बाजपेयी का सागर से एक बरात मे कानपुर पधारना हुआ और उनसे भी "कम्पिल कल्प" के सपादन की स्वीकृति मिल जाने से मेरा मन उमग से भर गया। मैं उनका आभारी हूँ।

७०० वर्ष पूर्व जैनाचार्य श्री जिनप्रभसूरि जी ने "विविध तीर्थ कल्प" की रचना कर महान उपकार किया है। वे स्वय कम्पिल पधारे थे और "कपिल कल्प" को मूर्त-रूप दिया, प्रथम उन्हीं के चरणो में मेरा श्रद्धा से शत-शत नमस्कार है।

"कंपिल महोत्सव" की कल्पना को साकार रूप देने का सारा श्रेय श्री रमेशनारायण जी त्रिवेदी, आई० ए० एस० जिलाधिकारी फतेहगढ को है, उन्हीं की अहर्निश लगन, सूझ-बूझ से ही इस महोत्सव को इतना विशाल भव्य रूप मिल सका है। श्री त्रिवेदी जी के इस महान कार्य को पचाल जनपद के इतिहास मे सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा।

"कन्नौज महोत्सव" के संयोजक डॉ० गोपालकृष्ण जी अग्निहोत्री भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस महोत्सव की रूप रेखा बनाकर दी। ईश्वर की अनुकम्पा से इतना गुरुतर कार्य भी अपने आप शनैः शनैः सरल होता गया और यह श्री गिरीशचंद जी तिवारी एम० एल० ए० व श्री वीरेन्द्र कुमार जी त्यागी पी० सी० एस० परगना-मजिस्ट्रेट, कायमगंज के दृढ संकल्प और अथक परिश्रम का सुफल है। और भी अनेक बन्धुओ के सहयोग से ही यह "गोवर्धन पर्वत" उठाया जा सका है, सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ और उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। अत में श्री बाबूलाल जी जैन, महावीर प्रेस वाराणसी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होने अल्प समय मे ही "कपिल कल्प" को आपके कर कमलों में समर्पित करने का सुअवसर दिया है और हमारे देश के महान स्वतत्रता सेनानी माननीय श्री विजयसिंह जी नाहर एम० पी० (भू० पू० उप मुख्यमत्री, प० बगाल, कलकत्ता) महामत्री-जनता पार्टी-नई दिल्ली के कर-कमलो से "कपिल कल्प" का विमोचन आज गाधी जयन्ती के दिन "कपिल महोत्सव" की पावन वेला पर हो रहा है और पुरातत्व सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अगरचंद नाहटा, (बीकानेर) जैसे प्रख्यात श्रद्धेय शोध-मनीषी भी आज उपस्थित हैं- और आज तक जीवन मे जो भी सामाजिक-साहित्यिक सेवा कर सका हूँ वह भी नाहटा जी का ही आशीर्वाद है।

हजारीमल बाँठिया
सचिव एवं संयोजक
कंपिल-महोत्सव

सम्पादकीय

कपिल में दो दिवसीय पुरातत्व सम्मेलन १ तथा २ अक्टूबर १६७८ को आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता भारतीय संस्कृति तथा जैन विद्या के प्रकांड विद्वान श्री अगरचद नाहटा ने की। सम्मेलन में अनेक विद्वानो ने कपिल तथा पंचाल जनपद के पुरातत्व इतिहास, धर्म, दर्शन तथा ललित कलाओ पर विद्वतापूर्ण भाषण दिये तथा निबन्ध पाठ किये।

प्रथम दिवस के समारोह मे मुख्य सम्मान्य-अतिथि उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री श्री रामनरेश यादव थे। मुख्यमत्री के समक्ष कपिल के महत्व तथा महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित "कपिल कल्प" का परिचय दिया गया तथा

कम्पिल – प्रशस्ति

पाञ्चालाख्य प्रदेशेऽस्ति कम्पिला नाम सत्पुरी।
सितपट– दिग्पटानां च धर्मस्थान सुशोभिता।। १ ।।

हरिषेण– ब्रह्मदत्तौ भरतस्य च चक्रिणौ।
द्रौपदी प्रमुखाश्चात्र संजाता पुण्य शालिन.।। २ ।।

श्री विमलजिनेन्द्रस्य तुर्य कल्याणके पदे।
सगमर्मर सयुक्ते जीर्णोद्धत जिनालये ।। ३ ।।

हेलीकोप्टरमारूढो राज्यपाल महोदय ।
सपत्नीक· समायात· चिन्नारेडीति नामकः ।। ४ ।।

रसाश्चनन्द भू खिस्ते त्रयोविंशे सितम्बरे।
वर्द्धमान जिनेन्द्रस्य नामार्केन सुसंयुत· ।। ५ ।।

उद्घटित शिलान्यास चिकित्सालय विस्तृत ।
स्वागतार्थ समायाता सपौरा· ह्यधिकारिण ।। ६ ।।

वाद्य संगीत गानैश्च भाषणै· स्वाभिनन्दिता ।
न्यायमूर्ति र्ज्ञानचन्द्र कुम्भट् बी आर संज्ञक ।। ७।।

नाहटा पूनमचन्द्रो दौलतसिह स्तथाऽपर·।
बाँठिया हजारीमल्ल· सत्कार्येषु च कर्मठ·।। ८ ।।

प्रकाशचन्द्र सूरिणा प्रेरितस्तु ब्रह्मण्यम·।
युगन्धर कोषेशो डागा विजय कर्मठ ।। ६ ।।

नाहटा भँवरलाले – नेतिवृत्त प्रकाशित ।
आगतानेक लोकाश्च धर्म भक्ति परायणा ।। १० ।।

कानपुरात्मेरठाच्च दिल्ली – हाथरसादित ।
जैन संघ· समायात ग्रामीणाश्च सहस्रश.।। ११ ।।

सहयोगी राजकीय प्राप्तोन्नतिश्च सर्वत ।
जनता जनार्दनस्य सेवाया हिश्रियोऽस्तुव ।। १२ ।।

रचयिता-भँवरलाल नाहटा

***

उनसे अनुरोध किया गया कि वे इस उपेक्षित क्षेत्र के प्राचीन सांस्कृतिक गौरव की रक्षा पर समुचित ध्यान दें। मुख्यमंत्री जी ने अपने भाषण में कंपिल के प्राचीन माहात्म्य का प्रतिपादन किया तथा आश्वासन दिया कि यहां एक संग्रहालय तथा आयुर्विज्ञान-केन्द्र की स्थापना की ओर समुचित ध्यान दिया जायेगा। उन्होंने यह भी कहा कि कपिल जैसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र के समुचित विकास की दिशा में शासन की ओर से उचित कार्यवाही की जायेगी।

जिन विद्वानों ने समारोह में अपने निबंध पढ़े अथवा व्याख्यान प्रस्तुत किये उनके नाम इस प्रकार हैं, डा० शिवबहादुर सिंह (प्रवक्ता पुरातत्व विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) डा० धर्मचन्द जैन (प्रवक्ता संस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय), शहीर मुस्तफा नकवी (राज्य पुरातत्व विभाग), श्री श्रीधर मिश्र (प्रवाचक, पुरातत्व विभाग सागर विश्वविद्यालय), डा० अवधबिहारीलाल अवस्थी (प्राध्यापक तथा अध्यक्ष सागर विश्वविद्यालय), श्री कैलाश मड़वैया (छतरपुर), डा० कैलाशनाथ द्विवेदी (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जनता महाविद्यालय अजीतमल (इटावा), डा० भगवानसिंह सूर्यवंशी (प्रवाचक पुरातत्व विभाग बड़ौदा विश्वविद्यालय)। अध्यक्ष श्री नाहटा जी द्वारा महाभारत में वर्णित द्रौपदी उपाख्यान के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जैन स्रोतों का उल्लेख करते हुए कंपिल क्षेत्र के सर्वांगीण शोध कार्य पर जोर दिया गया। स्थानीय विधायक श्री गिरीशचन्द्र तिवारी ने कंपिल में उपस्थित विद्वानों के प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा परगनाधीश श्री वीरेन्द्र कुमार ने इस बात पर विशेष हर्ष व्यक्त किया कि बहुत कम समय होते हुए भी "कंपिल कल्प" जैसे महत्वपूर्ण संदर्भ-ग्रंथ का प्रकाशन संभव हो सका। उन्होंने प्रशासन की ओर से इस क्षेत्र के सांस्कृतिक उन्नयन हेतु सभी आवश्यक प्रयास करने का आश्वासन दिया।

कंपिल समारोह की एक स्थायी उपलब्धि यह भी रही कि यहां पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना गांधी जयन्ती के पुण्य दिवस पर कर दी गई है जिसका उद्घाटन संसद सदस्य श्री विजयसिंह नाहर ने किया। कंपिल से प्राप्त प्राचीन कलाकृतियों के अतिरिक्त संग्रहालय में वे वस्तुएं भी प्रदर्शित हैं, जो कुछ समय पूर्व यहां हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा कराये गये उत्खननों में प्राप्त हुई थीं। संग्रहालय की व्यवस्था में राज्य पुरातत्व विभाग के श्री नकवी का प्रयास सराहनीय है। राज्य संग्रहालय के निदेशक के भी हम आभारी हैं जिन्होंने कंपिल में प्राप्त दुर्लभ गणेश मूर्ति की प्लास्टर प्रतिकृति निर्मित करा दी।

सीमित समय और साधनों के होते हुए यह स्मारिका वर्तमान रूप में तैयार हो सकी। कानपुर में चित्रित्तक प्रेस के अधिकारी श्री ओमप्रकाश शर्मा का मैं आभारी हूँ कि जिन्होंने समय पर स्मारिका को मुद्रित कर दिया।

फर्रुखाबाद जनपद के जिलाधीश सर्वश्री रमेशनारायण द्विवेदी, पुलिस अधीक्षक श्री रणबहादुर सिंह, डिप्टी कलेक्टर श्री वीरेन्द्र कुमार त्यागी तथा कंपिल महोत्सव के संयोजक श्री हजारीमल बाँठिया के प्रति विशेष अनुगृहीत हैं जिन्होंने अपने सक्रिय सहयोग से सभी कार्यक्रमों को सफल बनाया।

इस महान ज्ञान-यज्ञ में तन, मन, धन से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

कृष्णदत्त वाजपेयी

१५ एच०, पदमाकरनगर,
सागर (म० प्र०)
२ अक्टूबर, १९७८

पुल का शिलान्यास

इससे पूर्व ग्राम कमरुद्दीन नगर में बूढी गंगा नदी पर लगभग १६ लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले पुल का शिलान्यास करते हुए मुख्यमंत्री श्री यादव ने कहा कि सरकार जनता की समस्त इच्छाएँ पूरी करने एवं उसके दुख-दर्द को दूर करने की जिम्मेदारी पूरी निष्ठा के साथ महसूस कर रही है। उक्त अवसर पर बैंक आफ इंडिया द्वारा चार प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर बाढ पीडितों को ऋण देने की योजना का शुभारम्भ भी किया गया। उन्होंने कहा कि यातायात के साधनो से ही देश की उन्नति सभव है और प्रदेश-सरकार प्रदेश के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दे रही है।

कम्पिल के निकट खुदाई की मांग

कार्यक्रम के पश्चात् धन्यवाद देते हुए ससद सदस्य श्री रामप्रकाश त्रिपाठी ने माग की कि कम्पिल के निकटवर्ती ग्रामीण अंचलों में पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई कराई जाय क्योंकि आज भी इस ऐतिहासिक नगरी में ऐतिहासिक महत्व की अनेक वस्तुएँ छिपी हुई हैं जिनके महत्व से हम लोग अनभिज्ञ हैं।

मुख्यमंत्री श्री यादव के आगमन पर जनता विधायकों, संसद सदस्य श्री रामप्रकाश त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश प्रजापति महासभा के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण आर्य एव कम्पिल महोत्सव आयोजन समिति के अनेक पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री की अगवानी की।

कम्पिल में पुरावशेषों के लिए खनन कराने की माँग

("दैनिक आज" ४ अक्टूबर १६७८)

कंपिल ३ अक्टूबर। कल कंपिल महोत्सव के दूसरे दिन गांधी जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न करने के बाद क्षेत्र में मिले पुरावशेषों को एकत्र कर उन्हे सग्रहीत करके सुरक्षित करने के लिए संग्रहालय का उद्घाटन संसद सदस्य श्री विजयसिंह नाहर एम० पी० ने किया।

इस अवसर पर पुरातत्वशास्त्री डा० कृष्णदत्त बाजपेयी ने कम्पिल क्षेत्र के पुरावशेषो की खोज के लिए उत्खनन कार्य कराये जाने की आवश्यकता पर बल दिया जिसका समर्थन सांसद श्री रामप्रकाश त्रिपाठी ने करते हुए आश्वासन दिया कि वे इस दिशा में केन्द्रीय तथा राज्य सरकार के विभागीय अधिकारियों को प्रेरित करने मे अपना पूर्ण सहयोग देगे।

महोत्सव समिति के सयोजक श्री हजारीमल बाँठिया ने बताया कि जन-सहयोग तथा प्रशासन के सक्रिय योगदान से कम्पिल मे सग्रहालय बनाने की योजना है जिसे शीघ्र ही क्रियान्वित किया जावेगा।

सायंकाल पुरातत्व सम्मेलन मे श्रीधर मिश्र पुरातत्व रजिस्ट्रीकरण अधिकारी आदि ने भाग लिया। मुख्य अतिथि सांसद श्री विजयसिह नाहर ने महोत्सव के तत्वावधान में प्रकाशित शोधग्रंथ, "कम्पिल कल्प" का विमोचन किया जिसमें आचार्य जिनप्रभ, भँवरलाल नाहटा, डा० जगदीशचंद जैन, डा० शिवबहादुर सिह, डा० सतीशचद काला, आदि २७ उद्भट इतिहास शास्त्रियों, पुरातत्ववेत्ताओ तथा शोध मनीषियों के कम्पिल महत्व पर प्रामाणिक लेखों के सग्रह का प्रकाशन किया गया है।

समाचार पत्रों की दृष्टि में—

मुख्यमंत्री कम्पिल महोत्सव का उद्घाटन करेंगे।

(दैनिक आज' २ अक्टूबर १६७८)

फर्रुखाबाद २७ सितम्बर। यहां से ४० किलोमीटर दूर स्थित महाभारत कालीन कम्पिल नगरी में आगामी १ से ७ अक्टूबर तक आयोजित किये जा रहे कम्पिल महोत्सव का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव करेंगे।

उक्त सूचना देते हुए विधायक श्री गिरीशचंद तिवारी ने गत शनिवार को यहां बताया कि इस महोत्सव मे प्रदेश के शीर्षस्थ नेता भी भाग लेंगे।

मुख्यमंत्री द्वारा कम्पिल के विकास हेतु आश्वासन

("दैनिक जागरण" ता० २ अक्टूबर)

फर्रुखाबाद १ अक्टूबर, यहां से लगभग ४० किलोमीटर दूर स्थित जैन तीर्थंकर श्री विमलनाथ एवं महारानी द्रौपदी की जन्मभूमि कम्पिल में आयोजित कम्पिल महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए मुख्य मंत्री श्री रामनरेश यादव ने आश्वासन दिया कि प्रदेश के प्रमुख किन्तु उपेक्षित तीर्थस्थल कम्पिल की ऐतिहासिकता अक्षुण्ण बनाए रखने एव कम्पिल के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ धर्म प्रेमियों के लिए आकर्षक पर्यटन–स्थल बनाने हेतु उत्तर प्रदेश सरकार हर सभव प्रयास करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के इतिहास में उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों का प्रमुख स्थान रहा है। जिस देश के इतिहास एवं संस्कृति में समन्वय नहीं होता वह देश कभी प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का समन्वय हमारे जीवन को एक नई दिशा देने में सक्षम है।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश की निर्धनता का उल्लेख करते हुए कहा कि आज भी बहुत से नागरिक दिन भर कड़ी मेहनत करने के बावजूद पेट भर भोजन नहीं कर पाते, उनकी झोपड़ियों मे उजाला नहीं होता, किन्तु धार्मिक सम्पन्न होने के कारण हम प्रदेश को स्वच्छ प्रशासन देने में समर्थ होंगे।

आयुर्वेद चिकित्सा

मुख्यमंत्री ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का उल्लेख करते हुए कहा कि चूंकि आयुर्वेद के महान ग्रंथ चरक संहिता की रचना कम्पिल में ही हुई थी, और आयुर्वेद प्रणाली ही विश्व की सर्वश्रेष्ठ विकसित चिकित्सा-प्रणाली है अतः कम्पिल में इस चिकित्सा प्रणाली को विकसित करने पर विशेष बल दिया जायगा।

मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए जनता पार्टी के विधायक श्री गिरीशचन्द तिवारी ने कहा कि कम्पिल मे कभी भगवान राम अपने छोटे भाई शत्रुघ्न के साथ आये थे और किसी समय द्रौपदी स्वयम्वर में विश्व के अनेक नरेश यहां पधारे थे।

सदैव सहयोग देने का आश्वासन दिया। अनेक वक्ताओ ने ग्रामीण जनता की तरक्की के कार्यक्रमों की सराहना की।

गैर - सरकारी संग्रहालयों के विकास पर बल

("हिन्दुस्तान" ता० ११ अक्टूबर, १६७८)

कन्नौज (वि०) काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद्, कम्पिल के तत्वावधान मे प्राचीन ऐतिहासिक नगरी कम्पिल मे "कम्पिल महोत्सव" का आयोजन गत सप्ताह किया गया जिसमें देश के अनेक पुरातत्वविद् डा० कृष्णदत्त वाजपेयी, डा० अवधविहारील अवस्थी (सागर विश्वविद्यालय), डा० भगवानसिह सूर्यवंशी (बडौदा विश्वविद्यालय), डा० शिवबहादुर सिह (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) आदि सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर आयोजित एक पुरातात्विक सगोष्ठी मे स्थानीय सग्रहालय की ओर से डा० गोपाल-कृष्ण अग्निहोत्री ने क्षेत्रीय ऐतिहासिक कलाकृतियाँ, प्राचीन सिक्के एवं मूर्तियाँ आदि के संरक्षण के लिए कम्पिल, सकिसा एव कन्नौज के गेर सरकारी सग्रहालयो के विकास की ओर राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि इन स्थानों पर राज्य सग्रहालयो की आलमारियो मे बद पडी पुरातात्विक सामग्री को नवस्थापित संग्रहालयो के अपने पूर्ण परिवेश मे प्रदर्शित करने का सरकार को अवसर प्रदान करना चाहिए। सभी उपस्थित विद्वानों ने इस सुझाव की सराहना की तथा पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश, श्री चन्द्रपाल ने आश्वासन दिया कि वह पुरातत्व विभाग के निदेशक एव सचिव से इसकी आवश्यकता पर जोर देते हुए सग्रहालय के विकास के लिए प्रयत्न करेंगे।

इस महोत्सव मे पुरातत्व सग्रहालय कन्नौज की ओर से एक भव्य प्रदर्शनी आयोजित हुई जिसमे विभिन्न पुरातात्विक अवशेष, प्रागैतिहासिक काल के उपकरण, मृणमूर्तियाँ, सील, सिक्के एव प्रस्तर मूर्तिकला के नमूने प्रदर्शित किये गये। इस प्रदर्शिनी का उद्घाटन प्रदेश के मुख्यमत्री श्री रामनरेश यादव ने किया।

कम्पिल में पुरातत्व सम्मेलन सम्पन्न

("दैनिक जागरण' ५ अक्टूबर १६७८)

(कायमगज ४ अक्टूबर) आज यहा कम्पिल महत्सव मेले के पण्डाल में पुरातत्व सम्मेलन का आयोजन श्री अगरचंद नाहटा (बीकानेर) की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे प्रदेश से आये हुए पुरातत्व विभाग एव प्राचीन इतिहास के विद्वानों ने भाग लिया। कम्पिल से प्राप्त अष्टभुजी प्रतिमा जो पेरिस प्रदर्शनी मे भेजी गई थी तथा इसके बाद यह प्रतिमा लखनऊ सग्रहालय मे रख दी गई उसी का छाया चित्र कम्पिल मे लाया गया।

कम्पिल मे हुई खुदाई से प्राप्त मिट्टी के बरतन तथा टुकडो से बनारस विश्वविद्यालय के पुरातत्व विद्वानो ने अनुसन्धान करके बतलाया कि कम्पिल की प्राचीनता पुरातत्व सामग्री के अनुसार साढे तीन हजार वर्ष पुरानी है। इसी प्रकार प्राचीन इतिहास के विद्वानो ने बतलाया कि यह नगरी साहित्य, सस्कृति इतिहास से प्राप्त आकडो के अनुसार त्रेताकालीन है।

कम्पिल के प्राचीन गौरव साहित्य मूर्ति कला व कला पर प्रकाश डालते हुए डा० के० डी० बाजपेयी सागर विश्वविद्यालय ने कहा कि इस वातावरण मे हमारे विद्वानो ने ज्ञान ही नही सर्वांगीण विकास की दृष्टि मे रखते हुए सदा विकास के लिए कार्य किये थे। प्राचीन राजधानियो मे सबसे अधिक महत्व कम्पिल को है। जब अन्य राजधानि

महोत्सव की सबसे बड़ी स्थायी उपलब्धि यह रही कि यहां पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की गई जिसमें अब तक उपलब्ध पुरावशेषों के संग्रह को प्रदर्शित किया जा सका जो कुछ समय पूर्व हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा कराये गये उत्खनन से प्राप्त हुए थे।

पुरातत्व सम्मेलन के संयोजक श्री श्रीधर मिश्र ने कानपुर और फर्रुखाबाद जनपदों की प्राचीन मूर्ति कला पर प्रकाश डालते हुए इस क्षेत्र की प्रमुख प्राचीन देव प्रतिमाओं का परिचय दिया और कम्पिल क्षेत्र के पुरातात्विक सर्वेक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

अवधविहारीलाल अवस्थी ने कम्पिल क्षेत्र की ब्राह्मण संस्कृति पर प्रकाश डाला।

डा० भगवान सिंह सूर्यवंशी ने पांचाल जनपद के राजनीतिक इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उसे भारतीय राजनीति का उद्गम स्थल बताया।

मुख्य अतिथि डा० कृष्णदत्त बाजपेयी ने स्पष्ट किया कि अन्य प्राचीन राजधानियों और पांचाल प्रदेश की राजधानी में यह अन्तर था कि यहां सांस्कृतिक विकास की ओर असाधारण रूप से ध्यान दिया गया।

उत्तर प्रदेश के पुरावशेषों के रजिस्ट्रीकरण अधिकारी श्री शहीर मुस्तफा नकवी ने अपने सर्वेक्षण के आधार पर कम्पिल और उसके सीमावर्ती क्षेत्रों के विभिन्न पुरास्थलों मे प्राप्त कंकड़ प्रतिमाओं का विवरण देते हुए कहा कि इस शैली को दक्षिण पंचाली शैली जो नवीं–तेरहवीं शती के बीच कम्पिल कला केन्द्र मे पल्लवित होती रही है, का नाम दिया जा सकता है। उन्होंने विभिन्न प्रतिमाओं की पहचान से संबन्धित प्रतिमाओ के विज्ञान पर आधारित तथ्यों पर भी प्रकाश डाला।

कम्पिल महोत्सव के समीक्षकों का दृढ़ मत था कि कम्पिल महोत्सव का आयोजन अपेक्षाकृत अत्यधिक सफल और उपलब्धिपूर्ण रहा जिसका विशेष श्रेय यहां के धर्मावलम्बियों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने कानपुर के आयुक्त श्री वी० आर० कुम्भट के नेतृत्व में महोत्सव को हर दृष्टि से रोचक और आकर्षक बनाने मे अपना योगदान दिया।

कम्पिल महोत्सव का जिलाधीश श्री त्रिवेदी द्वारा समापन

ग्रामोदय का साकार रूप, तीर्थ-उत्थान का सराहनीय कार्य

(गुरुदेव दिनांक ९–१०–७८)

कम्पिल, ७ अक्टूबर, आज सायंकाल फर्रुखाबाद के जिलाधीश श्री रमेशनारायण त्रिवेदी ने कम्पिल महोत्सव का समापन किया। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि उ० प्र० सरकार के ग्रामोदय लक्ष्य की पूर्ति इस समारोह से हुई है क्योंकि लाखों ग्रामीण लोगों ने अनेक योजनाओं में भाग लिया तथा पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र कम्पिल मे अनेक विकास कार्य इस अवसर पर हुए हैं। सड़कों की मरम्मतें, जल योजना का श्रीगणेश, सरकारी बैंक की स्थापना तथा पर्यटन क्षेत्र घोषित होना तथा संग्रहालय की स्थापना को साकार रूप देना आदि प्राचीन तीर्थ क्षेत्र की उन्नति का मार्ग प्रस्तुत होना तथा तीन जिलों को इस क्षेत्र से मिलाने वाले गंगा पुल का शिलान्यास मुख्यमंत्री द्वारा होना एक बहुत ही शानदार जनता सरकार के ग्रामोदय लक्ष्य की पूर्ति है। तथा परगनाधीश श्री वीरेन्द्र कुमार त्यागी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यहां के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपार भीड़ ग्रामीण जनता के उत्साह का प्रमाण है। इस क्षेत्र की तरक्की हेतु हमेशा अधिकारी वर्ग रहेगा। सेठ हजारीमल बाँठिया संयोजक ने इस कार्यक्रम को पूरा करने में सहयोग देने वालों को बधाई दी। क्षेत्र के विधायक श्री गिरीशचंद तिवारी ने इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की तरक्की हेतु इसी प्रकार का कम्पिल महोत्सव हमेशा मनाने के लिए जनता को आवाहन किया। तथा पूरे क्षेत्र की उन्नति के लिए
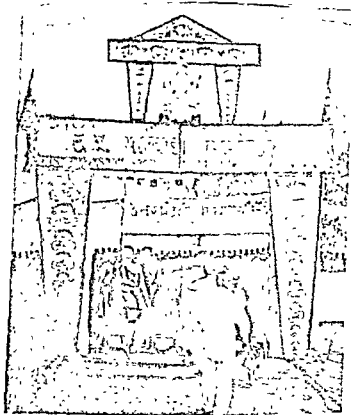
उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन तृतीय अधिवेशन हाथरस का प्रवेश द्वार

उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन हाथरस के मनोनीत अध्यक्ष श्री सीताराम जैपुरिया (एम० पी०) के साथ श्री हजारीमल बाँठिया (1964)
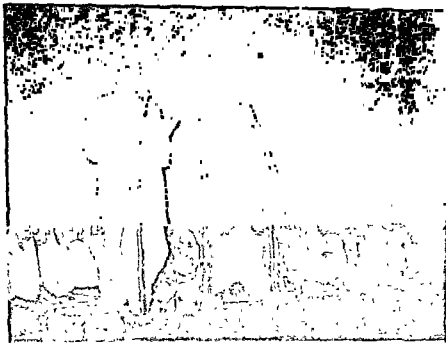
काका हीरक जयन्ती मे बोलते हुए सयोजक श्री हजारीमल बॉठिया
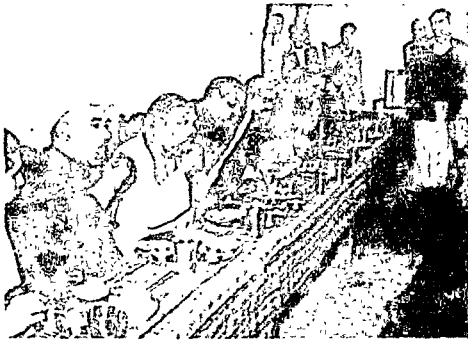
• बॉठिया हाउस हाथरस मे माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी के साथ सहभोज मे सर्वश्री बॉठिया जी, आनन्द जी, बाजपेयी जी के सचिव, डॉ० जगबहादुर भटियानी एव श्री रमेशचन्द्र वार्ष्णेय, सन् 1967
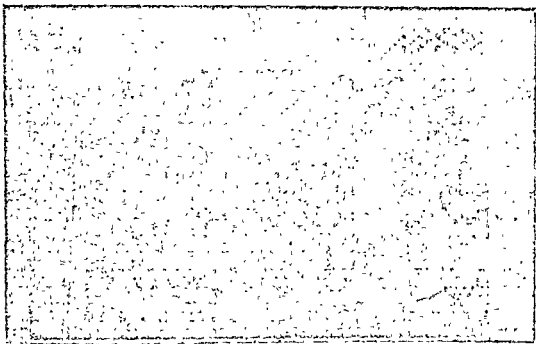
श्री अगरचन्द नाहटा अभिनन्दन समारोह के संयोजक श्री हजारीमल बाँठिया के साथ श्री नाहटा
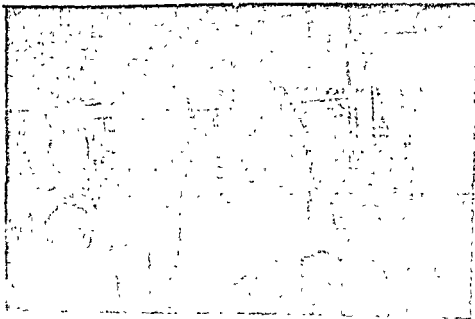
षष्टि पूर्ति अभिनन्दन समारोह मे महाराजकुमार नरेन्द्रसिंह बीकानेर नाहटा जी को सम्मानित कर रहे हैं। पीछे श्री हजारीमल बाँठिया खड़े हैं।
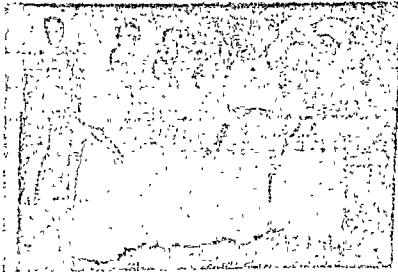
कम्पिल महोत्सव म पुरातत्व सम्मेलन 2-10-78 श्री हजारीमल बांठिया प्रा० कं० डा० वाजपेयी श्री अगरचंद नाहटा

कम्पिल महोत्सव मे श्री गुलाबसिंह यादव के साथ श्री हजारीमल बांठिया एवं श्री आर० एन० त्रिवेदी (जिलाधीश) 5-10-78
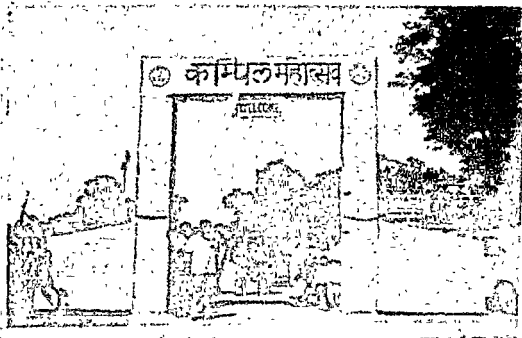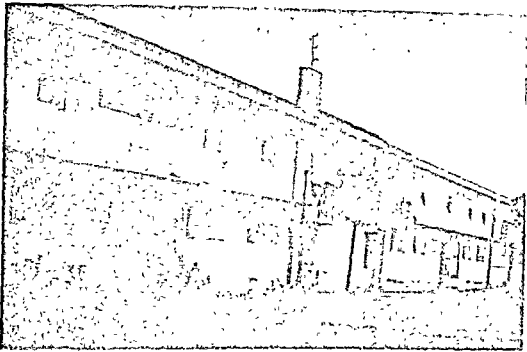
श्री वर्धमान जैन चिकित्सालय कम्पिल का भवन

राज्यपाल डॉ० एम० चेन्नोड्डी के साथ कम्पिल में श्री हजारीमल बाँठिया (1976)
चिकित्सालय के विस्तार शिलान्यास के समय

जैन चिकित्सालय के नवीन भवन का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल डॉ० एम० चेन्नारेड्डी (1976) के साथ श्री हजारीमल बांठिया एवं श्री कुमार जी

कपिल महोत्सव में मुख्य [illegible] श्री हजारीमल बांठिया (1978)

पचाल शोध संस्थान के 1993 अधिवेशन मे उ० प्र० के राज्यपाल म०म० श्री मोतीलाल वोरा का धन्यवाद ज्ञापन करते श्री हजारीमल बाँठिया, निकट बैठे हैं डॉ० आर० सी० शर्मा तथा डा० एन० पी० जोशी।

डा० गुइदो पिआनो के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

आचार्य श्री प्रकाश चन्द्रजी सूरि,
कवित्व शर्मा के प्रेरणा स्रोत

कवित्व के सिद्ध पुरुष कारव वाले बाबा के साथ श्री हस्तीमल चौड़िया
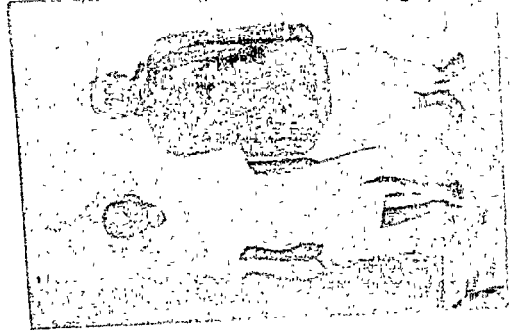
प० पू० आचार्य विजयधर्म सूरि जी महाराज के साथ डो० तैस्सितोरी

डॉ० तैस्सितोरी के भानजे डॉ० गुइदो मिआनो एवं उनकी पत्नी तैस्सितोरी जन्मशताब्दी समारोह उदीने (इटली) में। दि० १२ नवम्बर १९८७ ई०

कानपुर में तैस्सितोरी प्रतिमा अनावरण के अवसर पर इटली के सांस्कृतिक अटैची श्री फरनेन्दो को तिलक लगाती हुई श्रीमती गुणसुन्दरी बाँठिया (दि० 22 दिसम्बर 1985)

कानपुर में तैस्सितोरी प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर इटली के सांस्कृतिक अटैची श्री फरनेन्दो एवं [illegible] तथा अन्य [illegible] के साथ [illegible]
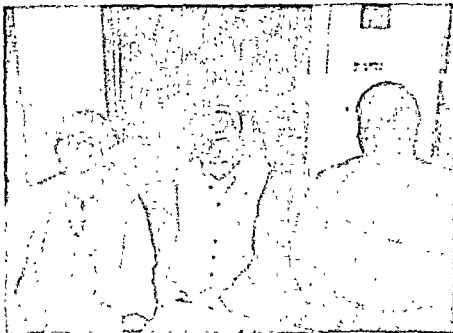
श्री के० डी० वाजपेयी के साथ श्री हजारीमल बाँठिया एवं श्री कान्ति लाल जैन

श्री भँवरलाल नाहटा, प्रो० एम० ए० ढाकी प० दलसुख मालवणिया तथा श्री हजारीमल बाँठिया
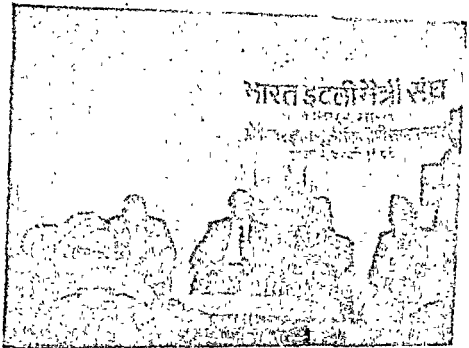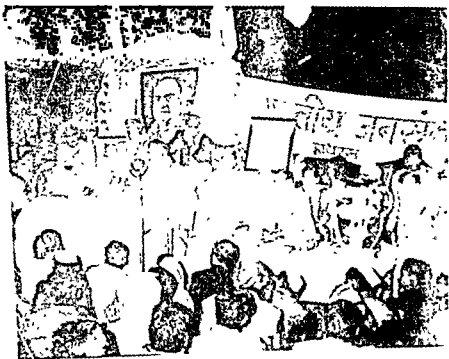
भारतीय जनसंघ की चुनाव सभा (1967) अध्यक्षता करते हुए श्री हजारीमल बाँठिया, मंच पर श्री केदारनाथ साहनी बैठे हैं

भारतीय जनसंघ की चुनाव सभा (1967) में भाषण करते श्री बलराज मधोक। निकट ही बैठे हैं श्री हजारीमल बाँठिया (सभा के अध्यक्ष
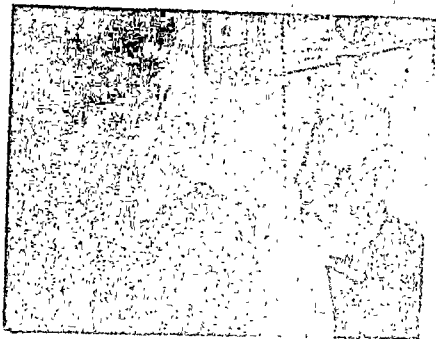
श्री जगदीश श॰ ग अग्रवाल (उ॰ प्र॰ विधान सभा ...यक्ष) का अपने निवास स्थल पर स्वागत करते हुए श्री हजारीमल बाँठिया
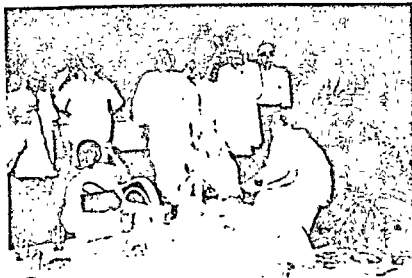
उ॰ प्र॰ की मुख्य मंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी के साथ श्री हजारीमल बाँठिया (1965)

नगरपालिका हाथरस के चुनाव में विजयोपरान्त समर्थकों के मध्य श्री हजारीलाल चौतिला
(अक्टूबर 1957)

नगरपालिका हाथरस के चुनाव में विजयोपरान्त समर्थकों के मध्य श्री हजारीलाल चौतिला
(अक्टूबर 1957)
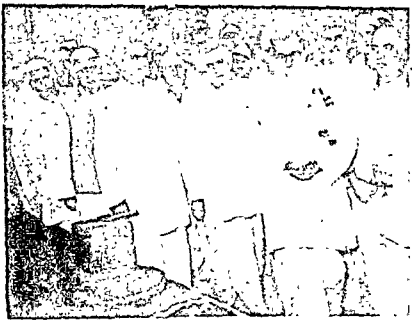
श्री सेकसरिया वि० हाथरस के विज्ञान कक्ष के शिलान्यास के अवसर पर उ० प्र० के शिक्षा मंत्री श्री कैलाश प्रकाश के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

दाऊजी मेले के अवसर पर उ० प्र० के खाद्य मंत्री श्री गेदासिंह के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

खरतरगच्छ महासघ की मीटिग मे मानव ससाधन मत्री श्री अर्जुनसिंह का स्वागत करते हुए श्री हजारीमल बाँठिया (17नवम्बर 1991 ई०)।
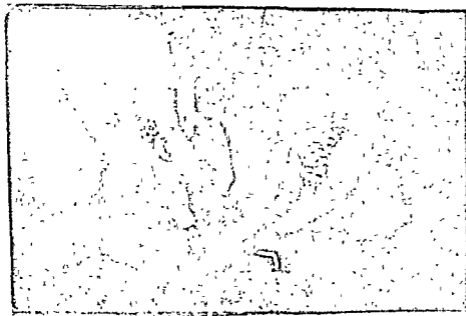
वृन्दावन–मथुरा के बीच धौरेरा ग्राम के चेतना वन मे वृक्षारोपण करते श्री हजारीमल बाँठिया। सहयोग कर रहे हैं राष्ट्रीय सग्रहालय नई दिल्ली के महानिदेशक डा० रमेशचन्द शर्मा (18 मार्च 1994 ई०)
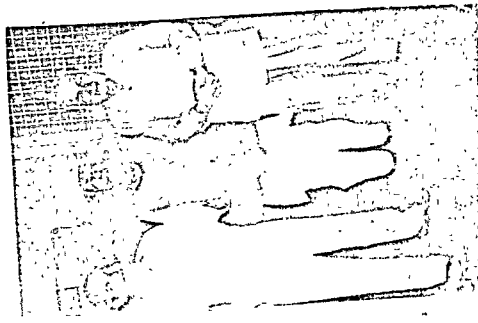
हि० सा० सम्मेलन कन्नौज 1986 के अवसर पर पद्मश्री प० श्री नारायण चतुर्वेदी के साथ श्री हजारीमल बाँठिया
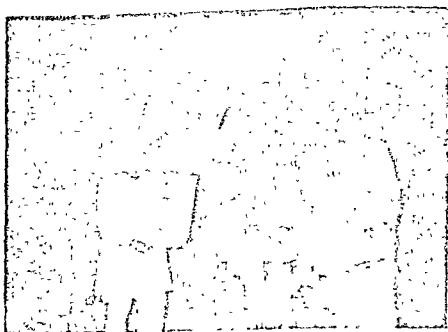
कन्नौज मे हि० सा० सम्मेलन के स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन 1936 के अवसर पर तैस्सितोरी केलैण्डर का उद्घाटन करते हुए मुख्य मंत्री श्री वीरबहादुर सिंह के साथ श्री हजारीमल बाँठिया
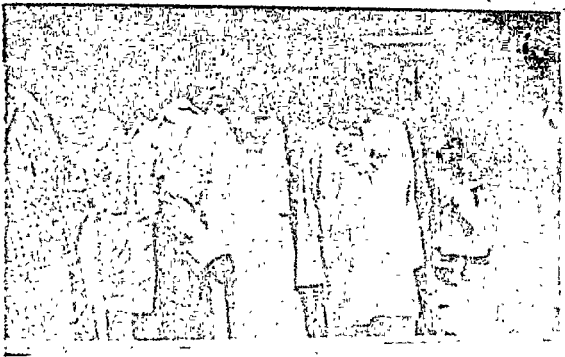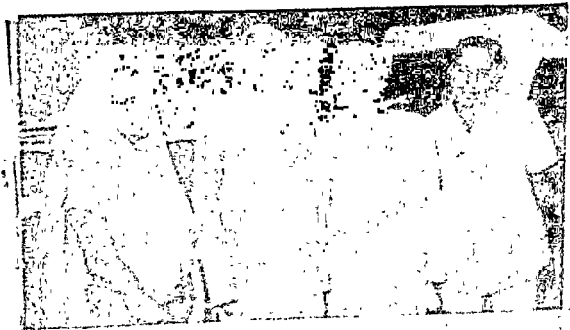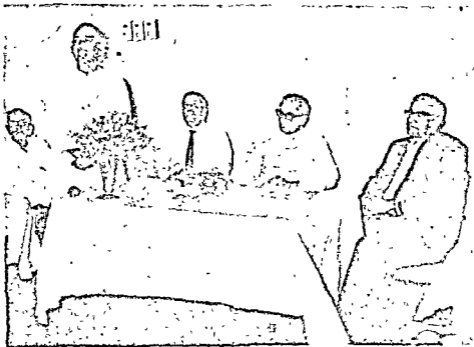
इण्डियन बैंक हाथरस शाखा के उदघाटन के अवसर दि० 12 दिसम्बर 1976 के अवसर पर प्रेरक एव सयोजक श्री हजारीमल बांठिया
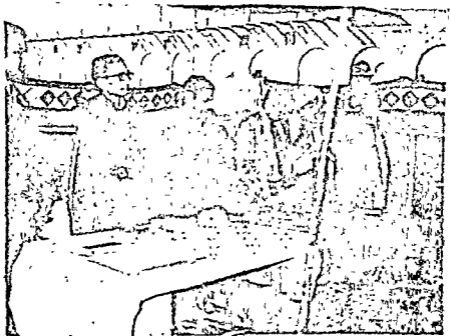
कनारा बैंक हाथरस शाखा के शुभारम्भ 25 अगस्त 1972 के अवसर पर हाथरस मर्चेन्ट्स चेम्बर के प्रतिनिधि के रूप मे बोलते हुए श्री हजारीमल बांठिया , प्रमुख अतिथि श्री प्रेमचन्द शर्मा (स्वास्थ्य राज्य मत्री)

श्री राजकुमार बड़जात्या (जगश्री प्रोडक्शन्स) के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन तथा श्री भँवरलाल नाहटा के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

श्री जी० लक्ष्मीनारायण चेयरमेन इण्डियन बैंक के कानपुर आगमन पर स्वागत समारोह मे आयोजक श्री हजारीमल बाँठिया

इण्डियन बैंक कानपुर शाखा के उद्घाटन 31 अक्टूबर 1975 के अवसर पर क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री शंकर नारायण के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

श्री हजारीमल बांठिया भारतीय जनसंघ हाथरस के कार्यकर्ताओं के साथ (1957) साथ में श्री कल्याणसिंह जी।

बुनकर सम्मेलन में भाषण देते हुए श्री हजारीमल बांठिया

श्री जी० लक्ष्मीनारायण चेयरमेन इण्डियन बैंक के कानपुर आगमन पर स्वागत समारोह मे आयोजक श्री हजारीमल बाँठिया

इण्डियन बैंक कानपुर शाखा के उद्घाटन 31 अक्टूबर 1975 के अवसर पर क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री शकर नारायण के साथ श्री हजारीमल बाँठिया

श्री हजारीमल बांठिया भारतीय जनसंघ हाथरस के कार्यकर्ताओं के साथ (1967) मध्य में श्री कल्याणसिंह जी।

बुनकर सम्मेलन में भाषण देते हुए श्री हजारीमल बांठिया

बांठिया भवन कोचरों का चौक बीकानेर

श्रीमती लक्ष्मीबाई बांठिया
धर्मपत्नी सेठ कस्तूरचन्द जी बांठिया (दादीजी)

पं० राधेश्याम चूलेहट ज्योतिषी
(पारिवारिक पंडित)

विद्यार्थी हजारीमल (१९३८)

हजारीमल विवाह के पांच दिन बाद (सन् १९४०)

श्री हजारीमल बाँठिया के विद्यार्थी जीवन के अभिन्न मित्र
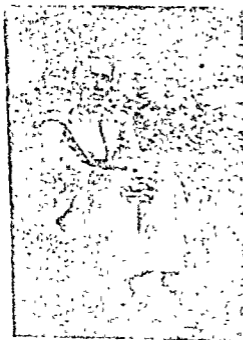
श्री खेमचन्द सेठिया

श्री केसरी चन्द सेठिया
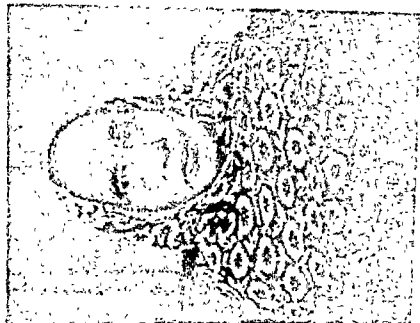
श्री हजारीमल बाँठिया, आयु के बढते चरण

श्री हजारीमल बांठिया 1850 में
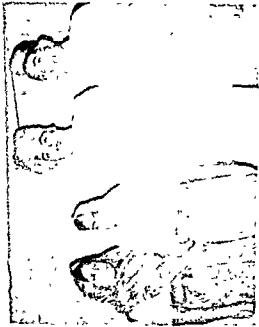
पति-पत्नी सन् 1955

चि० सुरेन्द्र चाँठिया (पुत्र) एव पुत्रवधू

चि० कान्तिलाल चाँठिया (पुत्र) एव पुत्र वधू

चि० [illegible] चन्द (पुत्र) एव पुत्रवधू

चि० राजकुमार (पुत्र) एवं पुत्रवधू
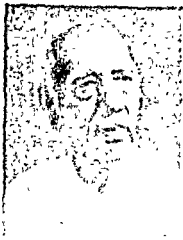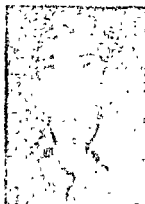
श्री तनसुखराज डागा (भानजा)

श्रीमती शान्ति देवी डागा (पत्नी श्री टी० आर० डागा)

मनोज कुमार डागा (पुत्र श्री टी० आर० डागा)

कु० वैशाली डागा (पुत्री श्री टी० आर० डागा)

कु० वर्षा डागा (पुत्री श्री टी० आर० डागा)

वीरायतन (राजगृह) के पूज्य उपाध्याय कविवर श्री अमर मुनि जी म० सा० के साथ भक्त मण्डली एवं श्री हजारीमल बाँठिया

श्री बाँठिया जी की छोटी पुत्री श्रीमती रेणु रैदानी, चि० सिद्धार्थ कुमार रैदानी, चि० ऋषभ कुमार रैदानी एवं दामाद श्री सुरेश कुमार रैदानी

श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा प० पू० साध्वी श्री चन्द्रश्री जी महाराज साहब के अंतिम दर्शन (दि० १५ अप्रैल १९८४)

पू० माता श्रीमती [illegible]बाई बाँठिया के साथ श्री हजारीमल बाँठिया सन् [illegible]

श्री हजारीमल बाँठिया–रचित साहित्य

महावीर के प्रति

परम अहिंसा के ओ साधक,
मौन हुए हो क्यों तुम आज?
पुनः गुँजादो उस वाणी को,
जिससे हो सुखमय सब राज।।

त्राहि- त्राहि की मची धूम है,
नहीं शान्ति का है लवलेश।
अनेकान्त का पाठ पढ़ा दो,
मिट जावे जिससे सब क्लेश।।

माना तुम हो तीर्थंकर प्रभु,
आ न सकोगे क्या इस जग में?
आज बता दो करुण तपस्वी,
रहने दोगे कंटक मग में?

रग- रग में नूतन बल भर दो,
होवे अहिंसा का प्रचार।
जिएँ चैन से जग के प्राणी,
मचे न फिर से हाहाकार।।

मन्दिर मस्जिद ढह जावेंगे,
रहेगा तेरा अमर संदेश।
हिटलर चर्चिल मिल जायेंगे,
सुनकर तेरा दिव्य आदेश।।

यद्यपि हम जैनी कहलाते,
जीत न पाये अपने मन को।
आज हम उदासीन सभी,
खोकर अपने जीवन- धन को।।

तुम्हारी वाणी को दुहराने,
बापू ने है जन्म लिया।
पर, तुम बापू के बापू हो,
जिसने निज को कुर्बान किया।।

पन्थवाद का नाम मिटा दो,
हो जायें सब मिलकर एक।
शांति सुधा की वर्षा कर दो,
फिर से जन्में वीर अनेक।।

"आरापत" साप्ताहिक, आगरा
वर्ष १० अंक १८
१ अप्रैल १९४४

यह कहना पड़ा कि मैं आपको नहीं पढ़ा सकता। आप तो जन्म से ही पढे हुए हैं। आप बाल्य काल से ही अद्भुत बुद्धिशाली, अपूर्व प्रतिभाशाली और तेजस्वी पुरुष हैं।

वर्द्धमान ७.५ने माता–पिता के बड़े भक्त थे। जब ये जवान हो गये तो इनके माता–पिता ने इनका विवाह यशोदा नामक सुशीला राजकुमारी के साथ कर दिया। पर शादी करने के वास्ते इनकी इच्छा नहीं थी।

दिगम्बर ग्रन्थकारों का मत है कि महावीर ने विवाह नहीं किया, ये तो बाल–ब्रह्मचारी थे। पर, श्वेताम्बर लोंगों का मत है, इन्होंने विवाह किया था। थोडे अर्से के बाद इनके प्रिय दशर्ना नामक एक लड़की हुई थी।

जब ये २८ साल के हुए तो इनके माता–पिता स्वर्ग–वासी हो गये। राजसिहांसन खाली हो गया। बडे भाई साहब ने वर्द्धमान से कहा कि भाई तुम हीं राजगद्दी पर बैठो क्योंकि तुम ही इसके योग्य हो। वर्द्धमान ने कहा, आप ही राजसिंहासन की शोभा बढाइये।

मैं आपको यह कहना पहले भूल ही गया था कि वर्द्धमान ने गर्भ में ही यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि माता–पिता जी के देहान्त के बाद में दीक्षा ले लूँगा। वर्द्धमान ने सोचा अब मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गयी है। वर्द्धमान ने नदीवर्द्धन से कहा कि मैं तो दीक्षा लूँगा। नदीवर्द्धन ने कहा कि प्यारे भाई अभी तो माता–पिता का दु ख है और अभी तुम दीक्षा ले रहे हो। मेरे कहने से तुम २ वर्ष और ठहर जाओ। भाई का ज्यादा आग्रह देख भगवान दो वर्ष तक ठहर गये। जब दूसरा वर्ष शुरू हुआ तो वर्द्धमान ने दान देना शुरू किया। जब दो साल खत्म हो गये तो इन्होंने दीक्षा लेली। दीक्षा लेने के बाद लगभग १२ वर्ष तक उन्हे भ्रमण करना पडा। इन बारह वर्षो में उन्हें बहुत भयानक उपसर्ग सहने पडे। इन उपसर्गो को पढने से कठोर आदमी का हृदय भी पिघले बिना नहीं रह सकता। यहां पर हम दो–तीन उपसर्गों का ज़िक करेंगे। सब करने से लेख बहुत बढ जायेगा।

एक बार भगवान जंगल में से होकर जा रहे थे। रास्ते में उन्हे ग्वाले मिले । उन्होंने कहा– "महाराज आगे न जाइए, आगे चण्डकौशिक नामक एक महा–मणिधर काला सांप रहता है।" पर भगवान को क्या डर ! वे तो चलते ही गये । जब सांप ने भगवान को देखा तो वह जोर से फुफकार मारने लगा, पर भगवान को कुछ भी असर नहीं हुआ। अन्त मे उसने पैर के अँगूठे मे काट लिया, पर फिर भी कुछ न हुआ। भगवान ने कहा चण्डकौशिक ! सोच, समझ, अपनी आत्मा का भी ध्यान रख। वह भगवान की ऐसी वाणी सुनकर आत्म–कल्याण पर लग गया।

इसी प्रकार एक बार वर्द्धमान काउसग्ग ध्यान में खड़े हुए थे। उसी समय एक ग्वाला आया और कहा कि "महाराज मेरे बैल आपके सामने चर रहे हैं। मैं अभी गांव जाकर आता हूँ। आप इनकी निगरानी रखना "भगवान तो ध्यान मे थे।

बैल चरते–चरते बहुत दूर चले गये। जब ग्वाला आया तो देखा कि मेरे बैल नहीं हैं, तो वर्द्धमान से कहा "मेरे बैल कहा हैं।"? भगवान कुछ न बोले। ग्वाले को क्रोध आ गया । उसने घास की सलाइया लाकर भगवान के कानों के अन्दर ठोंक दीं पर भगवान ने चूँ तक न किया। अहा ! कैसी सहनशीलता और क्षमा ! जब ध्यान समाप्त हुआ तो, ये गांव में भिक्षा मांगने के लिए गये। वहाँ दो चतुर आदमी रहते थे। उन्होंने उनकी ऐसी हालत देखी तो चतुराई से सलाइयां निकाली और दवाई लगा दी। अहा ! कैसी वीरता ! ऐसी वीरता न कभी देखी और न सुनी। ऐसी वीरता के कारण ही भगवान महावीर कहलाये।

एक समय महावीर शालि वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे कि उन्हे केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। उनके हृदय मे एक प्रकार की ज्योति चमकने लगी और उन्हें सच्चे सुख का मार्ग मिल गया। जब भगवान को केवल ज्ञान प्राप्त हो गया तो इन्होंने उपदेश देना शुरू किया। इन्होंने अपने लिए उपदेश नहीं दिया बल्कि जगत् के कल्याण के लिए। कवि मिल्टन का कथन है कि '– "It is death to hide ones talent which God has given him "

इन्होंने अपने उपदेश से, जो निरपराध पशुओं पर अपराध होता था, उसे नष्ट कर दिया। लोगों को सच्चे मार्ग पर ला दिया। इनका कहना है कि धर्म का ठेका किसी मनुष्य को नहीं। हर कोई मोक्ष जा सकता है। भारत

इस नगरी में भद्रा सार्थवाहिनी नामक महिला रहती थी। यह महिला बड़ी भाग्यशालिनी एवं ऋद्धि–सम्पन्ना थी। भद्रा किसी से पराजित होने वाली स्त्री नहीं थी। भला, ऐसी सुयोग्य माता के फिर "धन्य" जैसा पुत्र क्यों न उत्पन्न होता? हिन्दू गौरव महाराज शिवाजी इसके एक ज्वलन्त उदाहरण हैं। थोड़े अर्से के बाद भद्रा गर्भवती हुई। समय पूर्ण होने पर एक कुमार उत्पन्न हुआ जिसका नाम धन्य कुमार रखा गया। जैसा आपका नाम था, वैसे ही आप निकले।

बचपन :-

आप बचपन से ही साहसी एवं उदार प्रवृति वाले मनुष्य थे। आपका लालन–पालन ५ धाय माताओं ने किया था। वे ये हैं –

१. स्तन पान कराने वाली
२ स्नान कराने वाली
३ वस्त्राभूषण पहनाने वाली
४. गोद में लेकर फिराने वाली
५ खिलाने वाली।

आप बचपन से ही कुशाग्र–बुद्धि पुरुष थे अतः थोड़े ही अर्से मे बहत्तर विशारद हो गये।

युवावस्था :-

धीरे–धीरे आप युवावस्था प्राप्त करने लगे। जब आप पूरे नौजवान हो गये तो एक ही दिन में भद्रा सार्थवाहिनी ने ३२ श्रीमन्तो की ३२ श्रेष्ठ कन्याओ के साथ आपका पाणिग्रहण करवाया और उसने ३२ सुन्दर प्रासाद कुमार के लिये बनवाये एव ३२ दास और दासियां, नाच, गान व मनोरंजनार्थ रख दीं। अब धन्यकुमार अपनी ३२ ललनाओं के साथ अहर्निश सांसारिक सुखों में मग्न रहने लगे। आपको यह भी पता नहीं रहता था कि अभी रात है या दिन।

दीक्षा :-

उस समय बाहर उद्यान में श्री भगवान महावीर स्वामी पधारे। यह वार्ता सुनकर काकंदी की सारी जनता भगवान के दर्शनार्थ सहस्त्रामुवन की तरफ उमड पडी। राजा जितशत्रु भी राज–धज के साथ प्रभु के दर्शन के लिये गये। मगर, इस समय भी हमारे चरित्र नायक प्रासादों में आनन्द लूट रहे थे। सारी नगरी में प्रभु के समवसरने की वार्ता फैली हुई थी। जब यह बात हमारे चरित्र नायक को मालूम हुई तो ये भी उसी वक्त जमाली (जो प्रभु का दामाद था) की तरह प्रभु के दर्शनार्थ रवाना हुए। धन्यकुमार मे यह विशेषता थी कि वे पैदल वंदनार्थ गये थे। आप वीतराग देव की अमृतवाणी सुनकर मुग्ध हो गये और आपने भगवान से प्रार्थना की– हे वीर प्रभो, मैं मेरी माता भद्रा सार्थवाहिनी से आज्ञा लेकर आपके कर कमलों द्वारा शिक्षा लेना चाहता हूँ। जो धन्यकुमार थोडी देर पहले सांसारिक सुखों में तल्लीन

नो नक्शो" पृष्ठ ३४ पर इस प्रकार लिखते हैं :– "काकदी, लखीसराय स्टेशन– धर्मशाला थी १४ माइल आग्नेय (मननपुर स्टेशन थी ६ माइल) जुमई थी ७ माइल वायजंगा लखीसराय जमुइना मोटर रोड माइल १० ना आंक थी पश्चिममां कची रास्तो २ माइल दूर काकंदीमा सुविधि नाथ ना ४ कल्याणकण्ड तीर्थ छे। तीर्थ नायकनी मूर्ति छे, मूल गभारो खाली छे, प्रतिष्ठानी जरूर छे.। यहीं थी लघुवाड माइल १४ (२०) थाय छे, दरेक रस्तानी मोटर सर्विस चालु छे। बलद गाड़ी पण मले छे। धन्नो कांकंदी अहीं थएल छे। स्थापना तीर्थ हशे याने गंगाजी उत्तरे बख्तियार थी पश्चिममां कानपुर सुधी जती बी. एन डब्लू (बगाल एण्ड नोर्थ वेस्टर्न) रेलवे छे। भागलपुर, पटना के मोकामा थी गंगा पारथइ जाय छे, पटना थी हाजीपुर छपरा थइ पश्चिममां १०२ माइल भटनी जं० छे। त्यांथी ४ मे पइनों नरवार स्टे० नी नरवार थी गोरखपुर जं० मा० ४३ थइ अयोध्या कानपुर ज्वाय छे। मोटर रोड नथी। नी नरवार स्टेशन १४½ माइल दूर बुखंदा गाम छे जो साची काकंदी हशे।

में ज्ञान और सच्चे मार्ग का प्रकाश हो गया।

महावीर ने एक संघ स्थापित किया जिसे चतुर्विध संघ कहते हैं। इस संघ को तीर्थ कहते हैं। इसी कारण से महावीर जैनियों के तीर्थंकर कहलाये। ये हमारे २४ वें तीर्थंकर हैं।

महावीर स्वामी के ग्यारह गणधर थे। उन गणधरों के नाम ये हैं :-

१. इन्द्रभूति, २. अग्निभूति ३. वायुभूति ४. आर्यव्यक्त, ५. सुधर्माचार्य, ६. मण्डीपुत्र, ७. मौर्यपुत्र, ८. अकम्पित, ९ अचलभ्राता, १०. मैतार्य और ११. प्रभासाचार्य।

भगवान महावीर ३० साल तक उपदेश देते हुए अपने शिष्य सुधर्माचार्य के साथ पावापुरी में आए, उन्होंने सब को अमृतवाणी सुनाकर ७२ वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण प्राप्त किया। ज्ञान का सूर्य अस्त हो गया। भक्तों ने उनकी कमी की पूर्ति करने के लिए लाखों दीप जलाये, जिससे दीवाली शुरू हुई।

* * * * * * * * * * * * *

"ओसवाल" मासिक, वर्ष ५ अंक १६ – २० फरवरी १९३६, कलकत्ता

धन्यकुमार का संक्षिप्त जीवन-चरित्र

जैन तपस्वियों में धन्ना (धन्य) अणगार बहुत प्रसिद्ध एवं [illegible] हो गये हैं। उन्होंने [illegible] स्वर्गीय सुखों का परित्याग कर महाकठिन संयम धारण किया था एवं तप द्वारा अपनी आत्मा को [illegible] बनाई थी। उनके विशिष्ट जीवन को पढ़कर पत्थर दिल [illegible] हो जाता है और [illegible] सकते हैं। हृदय भक्ति से गद्गद् हो जाता है। थोड़े समय के लिये [illegible] होती है। मन में तरह-तरह की भावनाएं जागृत हो उठती हैं कि ऐसे तपस्वियों के दर्शन [illegible] को प्राप्त हुआ वे धन्य थे। इनका जीवन जगत के सामने एक महान आदर्श उपस्थित करता है [illegible] कठिन मार्ग प्रदर्शित करता है।

जन्म :-

चतुर्थ (चौथे) आरे में काकन्दी * नामक एक नगरी थी। [illegible]

[illegible]

---

* [illegible]

कालकाचार्य और विक्रम

कालकाचार्य अथवा आर्य कालक जैन समाज में एक सुप्रसिद्ध आचार्य हो गये हैं। श्वे० जैन-समाज में हमे चार "कालक" नाम के आचार्यों का पता लगता है। – (१) श्यामार्य नाम से प्रसिद्ध पहले कालकाचार्य जिनका युगप्रधान- स्थविरावली की गणना के अनुसार वीर- निर्वाण संवत् २८० में जन्म, ३०० मे दीक्षा, ३३५ में युगप्रधान पद (सूरि-पद) और ३७६ (ई. पू. १५१) मे स्वर्गवास हुआ था. (२) गर्दभिल्लराजा से सरस्वती साध्वी को छुडाने वाले दूसरे कालक, जिनका अस्तित्वकाल नि. सं ४५३ (ई पू ७४) के आसपास है, (३) इन्द्र से प्रशंसित निगोदव्याख्याता तीसरे कालकाचार्य, जिनका अस्तित्व नि सं ७२० के आसपास है और (४) पुर्यषण- पर्वको पंचमी से हटाकर चतुर्थी में करने वाले चौथे कालक[1], जिनका समय वीर-निर्वाण – संवत् ६६३ है।[2]

द्वितीय कालक ही, विक्रम संवत्सर के प्रवर्तक विक्रम से सम्बन्ध रखते हैं, अतः हम उन्हीं के बारे मे इस लेख में विचार-विमर्श करेंगे। विक्रम सवत् के प्रवर्तक के सम्बन्ध में पहले विद्वानों की राय थी कि वह ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं है, किन्तु आजकल उसे सभी विद्वान एक मत से स्वीकार करने लगे हैं कि ई. पू ५७ मे विक्रमादित्य विरुद धारण करने वाला एक राजा हुआ था, जिसने शकों का उन्मूलन किया और अपनी विजय की खुशी मे विक्रम संवत चलाया। यही बात कालकाचार्य कथा एव प्रचलित जैन कालगणना के अनुसार सिद्ध होती है। इससे यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि ई पू ५७ मे भारत में विक्रमादित्य नाम का एक हिन्दू राजा अवश्य हुआ है।

कालकाचार्य की यशोगाथा विभिन्न लेखकों ने प्राकृत, संस्कृत आदि मे "कालकाचार्य कथा" नाम से की है। इसी कथा द्वारा कालक के घटनाक्रम का ज्ञान कर सकते हैं। मुनि कल्याण विजय जी ने अपने "आर्यकालक" लेख मे कालकाचार्य कथा की प्रमुख घटनाओं को सात घटनाओ में इस प्रकार विभक्त किया है, (१) गर्दभिल्ल राजा को पदभ्रष्ट करके सरस्वती साध्वी को छुडाना, नि सं ४५३ (ई. पू ७०-६२) के बीच में, (२) चतुर्थी के दिन पर्युषणा-पर्व करना, नि सं ४५७ और ४६५ (ई पू ७०-६२) के बीच में, (३) अविनीत शिष्यों को छोड़कर सुवर्णभूमि में प्रशिष्य के पास जाना, नि स ४५७ के बाद और ४६५ के पहले, (४) इन्द्र के सामने निगोद के जीवों का व्याख्यान करना, नि सं ३३६ से ३७६ तक (ई पू १६१-१५१), (५) आजीवको के पास निमित्त पठन और कालक-संहिता की रचना, नि सं. ४५३ (ई पू ७४) के पहले, (६) प्रथमानुयोग और गण्डिकानुयोग का निर्माण, नि सं. ४५३ (ई पू ७४) के पहले और (७) दत्त राजा के सामने यज्ञफल का निरूपण, नि. सं ३०० से ३३५ (ई. पू २२७-१८०) तक में ।

मुनि कल्याणविजय जी ने चौथी और सातवीं घटना का सम्बन्ध प्रथम कालकाचार्य से बताया है और अवशेष घटनाओ का सम्बन्ध द्वितीय कालकाचार्य से बताया है। "वालभीयुगप्रधान पट्टावली" के अनुसार दूसरी घटना – चतुर्थी के दिन पर्युषण पर्व करने का सम्बन्ध चतुर्थ कालक से होना चाहिये- किन्तु मुनि जी इसे असंगत बताते हुए, इस घटना का सम्बन्ध द्वितीय कालक से होना मानते हैं। इसे सिद्ध करने के लिये बलमित्र – भानुमित्र का समय जो प्रचलित जैन काल-गणना के अनुसार नि. सं ३५३-४१३ (ई पू १७४-११४) का है उसे वे नि सं ४५४ से ५१३ (ई पू

---

१ कल्पसूत्र का संघ समक्ष वाचन करने का प्रारंभ इन चौथे कालकाचार्य ने किया, ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

२ मुनि कल्याणविजय जी के आर्यकालक लेख से (द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ ९५)

अगर हम दो बलमित्र–भानुमित्र हुये मान लें, पहले– प्रथम कालक के जमाने में और दूसरे – द्वितीय कालक के जमाने में, और वे उस वक्त भरोंच के ही राजा थे तो यह अच्छी तरह माना जा सकता है कि शकों का उन्नमूलन करने वाला बलमित्र ही था जो आगे जाकर विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ और मुनि जी की उक्त एकार्थक वार्ता भी सिद्ध हो सकती है।

हमने निबन्ध के पूर्व में बलमित्र–भानुमित्र का सत्ताकाल वीर नि. सं. ३५४ से ४१३ माना है और प्रचलित जैन काल–गणना पद्धति के अनुसार यही सिद्ध होता है; और बलमित्र–भानुमित्र का सम्बन्ध प्रथम कालक से बताया था। "कथावली" एवं अन्य कालक कथाओ में गर्दभिल्लोच्छेदक घटना के समय बलमित्र–भानुमित्र के होने की बात है। अगर बलमित्र–भानुमित्र को द्वितीय कालक के समय में होना मानते तो प्रचलित काल–गणनानुसार उनका समय ठीक नहीं बैठता। किन्तु प्रचलित जैन काल–गणना को गलत मानने का हमें कोई कारण नहीं दिखता। इससे सम्भव है कि बलमित्र–भानुमित्र द्वितीय कालक के जमाने में विद्यमान न थे। अतः "कथावली" आदि का उक्त कथन गलत है। या यह सम्भव हो सकता है कि बलमित्र–भानुमित्र नामक दो राजा विभिन्न प्रथम और द्वितीय कालक के जमाने में हुये हों। मुनि कल्याण विजय जी लिखते हैं "बलमित्र–भानुमित्र" आर्यकालक के भांजे थे यह बात सुप्रसिद्ध है, अतएव कालक के समय में इनका अस्तित्व मानना भी अनिवार्य है।" किन्तु हम इस तरह से मानने को तैयार नहीं है। यह भी संभव हो सकता है कि बलमित्र–भानुमित्र प्रथम कालक के भांजे हों। प्र का गणनानुसार बलमित्र–भानुमित्र का समय प्रथम काल के ही साथ मेल खाता है।

मुनि कल्याण विजय जी काल गणना में मौर्य के १०८ वर्ष के बजाय १६० वर्ष का राज्य उज्जैन में होना मानते हैं और इसके आधार पर वे बलमित्र–भानुमित्र का समय नि. सं. ४१४ से ४७३ तक का मानते हैं, और यही समय मान कर वे द्वितीय कालक और बलमित्र–भानुमित्र के साथ संबन्ध होना बताते हैं। अगर हम मुनि जी के अनुसार बलमित्र–भानुमित्र का समय ठीक भी मान लें और द्वितीय कालक के समय उनकी विद्यमानता मान लें, तो हम देखते है कि बलमित्र–भानुमित्र के बाद के राजाओं का इतिहास बदल जाता है। मुनि के अनुसार बलमित्र–भानुमित्र के बाद नहपान का राज्यकाल नि. सं. ४७३ से ५१३ तक (ई० पू० ५४ से १४) आता है जो असंगत प्रतीत होता है, क्योंकि नहपान का सत्ताकाल ई० पूर्व ८२ से ७७ तक भारतीय इतिहास की रूपरेखा (पृ० ७६४) में माना है। और इससे न गर्दभिल्ल का राज्यकाल ही ई० पूर्व ५७ साबित होता है और न शकों का चार वर्ष का राज्यकाल ही।

अत यह मानना पड़ेगा कि बलमित्र–भानुमित्र द्वितीय कालक के समय विद्यमान नहीं थे और उनका सत्ताकाल प्रचलित काल–गणनानुसार ही ठीक प्रतीत होता है, और चतुर्थी को पर्युषण करने वाले आचार्य प्रथम कालक ही थे, जबकि उज्जैन मे बलमित्र–भानुमित्र का राज्य था और प्रतिष्ठान में सातवाहन के वंशजों का। क्योंकि इस वंश की नींव श्री जायसवाल जी के मत के अनुसार ई० पूर्व २१३–१०० में ही पड चुकी थी।

इस तरह से हमने बलमित्र–भानुमित्र का सामंजस्य प्रथम कालक से बताया है और चतुर्थी पर्युषणा करने वाले आचार्य भी प्रथम कालक थे क्यों कि यह घटना बलमित्र–भानुमित्र के राज्य में घटी थी। हमारे इस पूर्वोक्त कथन में चतुर्थ कालक के संबन्ध की एक प्राकरणिक गाथा विरोध डालती है– उसमें लिखा है कि वीर संवत के ९९३ वर्ष में कालक सूरि ने चतुर्थी को पर्युषणा की। अब यह देखना चाहिये कि यह गाथा कहाँ तक ठीक है। निर्वाण का ९९३ वाँ संवत विक्रम का ५२३ वाँ और ई० का ४४६ वाँ वर्ष होगा। इस चतुर्थी वाली घटना के समय प्रतिष्ठान में सातवाहन वंश का राज्य था। यह बात इतिहास से सिद्ध हो चुकी है कि ईसा की तीसरी शताब्दी में ही आन्ध्र राज्य (सातवाहन वंश) का अंत हो चुका था। अतः ई० सन् ४६६ में सातवाहन वंश का कोई राजा नहीं था, और चतुर्थी पर्युषणा की घटना घटी सातवाहन वंश के राज्य में। इससे सिद्ध होता है कि गाथोक्त समय गलत है। इससे यह भी सिद्ध हो जाता है कि चतुर्थ कालक ने चतुर्थी को पर्युषणा नहीं की – किसी अन्य कालक ने ही की है। यही बात मुनि कल्याण विजय जी ने कही है।

सेवा के पथ पर

मामा! अब मे तुम्हारे यहां अधिक नहीं रह सकता।" कुछ डरते और कुछ क्रोधित होते हुए नंदीषेण ने कहा।

"नहीं, नहीं, नहीं यह क्या कहते हो बेटा ! मैंने तो तुम्हें आज तक होठ का फटकारा भी न दिया। तुम खाओ, पियो और मौज करो। सुभद्रा, गौतमी आदि तुम्हारे साथ शादी नहीं करतीं तो इसका यह मतलब थोडे ही है कि तुम आजन्म क्वारे ही रहोगे। और भी बहुत सी कन्यायें हैं।

"मामा ! तुम।समझदार होकर यह सब हवाई किले क्यों बनाते हो। भला मेरे साथ कोई शादी क्यों करे! मैं तो बेडौल पत्थर ठहरा। मैं तो कुरूप हूँ। कोई गुण को थोडे देखता है। सब रूप के लोभी हैं मामा।

"नंदी ! सर्वत्र गुण की पूजा होती है। कस्तूरी काली होती है पर उसमें गुण कितने होते हैं। आज तुम इतने क्रुद्ध क्यों हो ! क्या मामी ने कुछ कह दिया।" हँसते हुए मामा ने कहा।

"मामी की तो काया ही निराली है मामा ! उसकी भृकुटि तो मेरे ऊपर ऐसे तनी रहती है मानों वह मुझे जिन्दा ही भस्म कर देगी। सुभद्रा तो उल्लू और ऊँट कहकर मेरा सम्मान करती है। सारे दिन तेली के बैल की तरह काम करता हूँ तो भी मामी की टन-टन की टोकरी कभी बन्द होती ही नही। नंदिया यह कर, नंदिया वह कर की झडी लगातार लगी रहती है। क्या मैं उनका दास हूँ ! नही-नहीं मामा, अब अधिक नहीं सहन कर सकता। इतना तिरस्कार मनुष्य होकर कराता रहूँ। नहीं-नहीं और हरगिज नहीं मामा – अब मैं..........।" यह कहकर कुमार नंदी रोने लग गया।

मामा मौन था। वह बोलता भी क्यों ! वह भी तो मामी का दास था। " आइन्दा " ऐसा नहीं होगा नदी।" कह कर अपने काम पर चला गया।

दिन बीत गये और वर्ष गुजर गये। पर मामी की टोकरी पूर्ववत् जैसी ही थी। आषाढ़ी अमावस्या की रात्रि थी। मेह मूसलाधार पड़ रहा था। चारो ओर घनघोर घटाएं आच्छादित थीं। सर्व दिशि तम-देव का साम्राज्य व्याप्त था। विद्युत् वेग वीरों को भी डराने वाला था। आंधी और तूफान का सन्नाटा कुछ कम न था। विद्युत् प्रकाश में अर्द्ध रात्रि को युवक नदी जाग उठा। उसे अपना जीवन भार स्वरूप प्रतीत हुआ। वह स्वाभिमानी था। वह दर-दर की ठोकरें नहीं खाना चाहता था। वह मामी का दास अब नहीं रह सकता था। उसने सूर्योदय से पहले-पहले अपना गला घोंटना चाहा।

विद्युत् के छलकते प्रकाश में उसने अपने सामान की गठरी बांधी । सिर पर पगड़ी रखी। हाथ में लकड़ी ली। गठरी को कंधे पर लटकाई। चल दिया निर्जन वन की ओर – अपना गला घोटने। चलते वक्त उसने मामा के घर को प्रणाम किया और कहा – "मामा तुमने तो मुझको होट का फटकारा न दिया था। यह मामी की बदौलत है कि उसके कारण मे यहाँ से जा रहा हूँ। शायद सदा के लिए । सूर्योदय से पहले प्यारी मां (आह भरते हुए) अपने प्यारे बापू के पास पहुँच जाऊँगा। वहाँ मुझे सुख मिलेगा। घर के अहाते से निकलते वक्त एक बार उसने और जोर से पुकारा – "मामा ! मुझे क्षमा करना। इतना कह आंधी-तूफान मेह मे भीगता डरता कांपता हुआ चल पड़ा निर्जन वन की ओर – अपनी प्यारी मां, अपने प्यारे बापू की गोद में सोने के लिए – जहाँ उसे अधिक सुख मिलने की आशा थी।

मामा नंदी की "मामा, क्षमा करना" की आवाज सुनकर चौंक उठा। बाहर वाली शाला में आकर देखा

"नहीं आचार्यवर ! न्यौते की कौन सी बात थी। मुझे पता चल पड़ता तो कल ही आ जाता। नम्रता से नंदीषेण ने कहा।"

"हाँ तुम्हें कैसे पता चल पाता नंदीषेण ! मेरे तो अतिसार व्याधि के कारण टट्टी पेशाब साथ में ही निकल रहे हैं। रोम-रोम में वेदना भरी है। शरीर में भंयकर दुर्गन्ध आ रही है।"

"नहीं गुरूदेव, अब आपकी सारी वेदनायें दूर हो जावेंगी। आपका शिष्य नंदी चौवीसौं घन्टे खडा रहेगा। आप घबराइयेगा नहीं। आप उपाश्रय में चले चलें। मैं वहाँ आपकी अच्छी सेवा कर सकूँगा।" .

"ओ अन्धे तुझे दिखता है- मेरे से तो एक कदम भी चला नहीं जाता - फिर भी तू कहता है कि उपाश्रय में चले चलो, कराहते हुए आचार्य ने कहा।"

"नहीं आचार्य ! मैं अपने कन्धों पर आपको बिठाकर ले चलूँगा।"

"तो चल"

नंदीषेण ने आचार्य को कन्धे पर बिठाया, आचार्य के शरीर से भयंकर दुर्गन्ध निकल रही थी। पर वयस्क नन्दी ने नाक भी नहीं सिकोड़ा। वह धीरे-धीरे चला जा रहा था - उपाश्रय की ओर। अरे ! इतना धीरे चल रहा है ? रास्ते में मेरी जान ही निकाल देना चाहता है।'

नहीं गुरूदेव आपको तकलीफ न हो इसलिए धीरे-धीरे चल रहा हूँ। अच्छा अब जल्दी-जल्दी चलता हूँ । यह कह मुनि नंदीषेण जल्दी-जल्दी चलने लगे।

" अरे दुष्ट ! अब इतनी तेज चल रहा है। मेरे प्राण पखेरू मार्ग में ही उड़ा देना चाहता है।"

विचारे नंदी दुविधा में थे। धीरे-धीरे चलें तो मौत और जल्दी चलें तो भी। येन-केन प्रकारेण नंदी बिचारे नंदी ग्राम के चौराहे से गुजरे। सारा वायु मण्डल आचार्य की दुर्गन्ध से दूषित हो रहा था। बाजार के सब लोग नाकों पर पटट्टी बाँध रहे थे। इतने ही में आचार्य ने फिर महा-दुर्गन्ध-युक्त टट्टी की गंगा, नंदीषेण के सिर पर बहा दी । पर सेवा-भावी नदीषेण ने कुछ ख्याल नहीं किया। उनका तो सिर्फ यही ख्याल रहा "भोगावली कर्म भोगने पड़ते हैं, चाहे रक हो या राजा। शीघ्र से शीघ्र आचार्य देव की वेदना दूर हो- यही उनकी इच्छा थी।"

नंदी ने उपाश्रय में पहुँच कर आचार्य देव को तख्ते पर लिटा दिया और स्वंय पानी लाने के लिए अन्दर गये। वापिस आकर देखे तो आचार्य का पता नहीं। कहाँ गायब हो गये, नंदी को कुछ ख्याल नहीं।

"हाय मैं उनकी सेवा भी न कर सका, वह पहले ही सदेह स्वर्ग सिधार गये।" इस तरह का नंदीषेण पश्चाताप करने लगे। इतने में ही धमाका हुआ। मुनि नंदीषेण ने अपने समक्ष एक सुन्दर देव मूर्ति को देखा। वह उनसे कह रही थी- नंदीषेण ! तुम वास्तव मे सेवापथ के अग्रगामी दूत हो। मैंने तुम्हारी सेवा वृत्ति की कसौटी कसने के लिए सब माया-जाल रचे थे। मुझे मन, वचन और काया से क्षमा करना मुनिराज।" इतना कहकर वह मूर्ति कहां अन्तर्ध्दान हो गई, इसकी भी मुनिराज को खबर नहीं। पर मुनिराज तो अपने सेवा-पथ पर अन्त तक हिमालय की तरह अटल रहे।

"जिनवाणी" मासिक जोधपुर
वर्ष ३ - अंक ११ अक्टूबर - ४५

□□□

तो वहाँ नंदी नहीं था। मामा नंदी नंदी चिल्ला उठा। दीपक जलाया – नंदीषेण को ढूढने के लिए मगर, हवा के झौंके से वह भी बुझ गया। बार–बार जलाया पर वह तो बुझता ही रहा। "नंदी बेटा कहाँ हो ! कहाँ हो नंदी बेटा ! मामा खूब चिल्लाया, खूब रोया और किया खूब पश्चाताप। मगर वहां नंदीषेण कहां था।

उषाकाल हो रहा था। चिड़िया चहचहाने लगीं। नंदी ने स्थान को निर्जन समझा। एक पेड़ के नीचे आकर अपनी पगडी उतारी, अपनी गठरी रखी। अपनी गठरी का फदा बना उसे पेड की डाली से बांधा। फन्दे में फँसने से पहले उसने एक बार फिर पुकारा – "ऐ मां, ओ बापू , मुझे तुम्हारी गोद में जल्दी सुला लो।" नंदीषेण की आवाज सुनकर समीपस्थ एक तपस्वी मुनि का ध्यान टूट गया। वह भी नंदीषेण को फाँसी में फँसता देख चिल्ला उठे। "ठहरो मानवी ! यह क्या कुकृत्य कर रहे हो ?"

नदीषेण ने पीछे झाँक कर देखा तो उनके निकट शाँति की सौम्य मुद्रा खड़ी थी। नंदीषेण रोता–रोता उनके चरणों में गिर पड़ा। मुनि ने नंदीषेण को उठाते हुए कहा, "तुम मानवी होकर जीवन से उकता गये।"

नंदीषेण ने सिसकियां भरते हुए कहा –"हाँ मुनिराज उकता गया "मैं इस रूप–लोभी संसार मे जिन्दा नहीं रहना चाहता। मेरा जीवन भार है मुनिराज ! मुझे अपनी मां–बापू की अमर गोद में बैठ जाने दो। मुनि – "नहीं वत्स ! भोगावली कर्म बन्धन भोगे बिना नहीं छूटेंगे। तुम्हारी हमारी क्या हस्ती है। खुद चक्रवर्ती तीर्थंकर को भी भोगने पडे थे। तुम मानवी होकर आत्म–घात की बात सोच रहे हो – धिक्कार है। इससे तुम और अधिक कर्मों के जटिल पाश में बंध जाओगे। वत्स ! साहस रखो, धैर्य रखो। सम्यक्त्व धारण कर कर्म बन्धनों को तोडो। तपश्चर्या करो। जिन मार्ग के पथिक बन जाओ। ऊँचा उठने का प्रयत्न करो – मोक्ष की ओर, जहाँ अनन्त सुख ही सुख है। जहाँ से आत्मायें जाकर नहीं लौटतीं। आत्मघात करने से क्या होगा वत्स ? तुम्हारी आत्मा चौरासी भवों में भटकती रहेगी– जहाँ दुःख ही दुःख है।"

तपस्वी मुनिराज के उपदेश से दुःखी नंदीषेण का कलेजा पसीज उठा। उसने आत्मघात के विचार को त्याग दिया। वैराग्य पथ पर वैरागी बना। मुनि बना, तपश्चर्या से प्रभाव से कुरूप देह सुरूप हो गयी। नंदीषेण मुनि बड़ा सेवाभावी मुनि बना। मानवियो ने उसकी प्रशंसा की, देवों ने उसके सेवा भाव को सराहा और भूरि–भूरि प्रशंसा की।

आज उनके दो दिन के उपवास के बाद पारणे का दिन था। गोचरी (मधुकरी) ले आये थे। पात्रे में भोजन का पहला प्राप्त हाथ में ले मुहँ में लेने के लिए रख ही रहे थे कि इतने मे एक मुनि आ धमका। उसने मुनि नदीषेण पर लाल–पीली आँखे करके कहा – ओ सेवाव्रत के ढोंगी साधू ! तुम्हें शर्म नहीं आती कि खुद तो ठंडी छाया में बैठ कर स्वादिष्ट भोजन कर रहे हो दूसरे चाहे तुम्हारे लिए खाक में जायें। लोग तुम्हारी तारीफ में बड़ी–बड़ी डींगे हाँक रहे हैं। नदीषेण बहुत बड़ा सेवा–भावी मुनि है। असहाय साधुओं की अच्छी वैयावच्च करता है; पर मुझे तो यहाँ ढोंग ही मालूम दे रहा है। अगर सच्चा सेवाभावी होता तो मजे से यहीं बैठा–बैठा भोजन नहीं करता।

क्यों मुनिराज ? क्या बात है ? मेरे से कौन सा अपराध बन पड़ा है ? मुझे तो साधुओं की अहर्निश सेवा में ही आनद आता है। नम्रता से मुनि नंदीषेण ने कहा।

"हां, हां तेरी सूरत भी यही कह रही है। ग्राम के बाहर विचारे आचार्य कल से अतिसार रोग से पीड़ित हैं? उनकी तो तूने अब तक खबर भी नहीं ली।"

"भाई ! क्षमा करना मुझे खबर नहीं थी।"

"अब तो खबर हो गई। सच्चा सेवा–भावी है तो अभी चल।" मुनि नंदीषेण का हाथ का ग्रास हाथ ही में रह गया। वह भी मुँह में न जा सका, मुनि पारण न कर सके। वे उसी वक्त हाथ धो आचार्य की सेवा में ग्राम के बाहर की ओर चल पड़े। नंदीषेण को अपनी ओर आते देख आचार्य ने क्रोधित होते हुए कहा। अब आया है बेटा ! विचारे को बुलाने के लिए न्यौता भी भेजो।"

" मौन सम्मति लक्षण" समझ कुमार के मुखमडंल पर मुस्कान की रेखाएं खिंच आईं। वे आज खुश थे किन्तु मां के नेत्रों में आसुओं की अविरल धारा प्रवाहित होने लगी।

कुमार गजसुकमाल भगवान श्री कृष्ण के छोटे भाई थे। ये जन्म से ही विरक्त और क्षमाशील थे। क्रोध तो इन्हें छू तक नहीं गया था। भगवान नेमिनाथ के धर्म प्रवचन इनके दिल में घर कर गये और मां से आज्ञा ले दीक्षा ली और वैराग्य पथ के पथिक बने। उसी दिन इन्होंने नेमिनाथ से पूछा "भगवान ! भव सागर से तर जाने का कौन–सा सुगम मार्ग है ?

" क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों पर विजय प्राप्त करो। इन्द्रियों का दमन करो। सत्य अहिंसा, संयम और तप को धारण करो। मन, वचन और काया से सब पापाचार से दूर रहो, आत्म चिंतन करो। सभी उपसर्गों को क्षमाशील हो सहन करो। यही भवसागर तरने का सुगम मार्ग है।" भगवान ने उत्तर में कहा। उसी दिन मुनि गजसुकमाल गांव के बाहर श्मशान भूमि में जाकर, बैठ गये।

ग्रीष्म ऋतु का महीना था। गर्म लू और हवा सायं–सायं कर प्रचण्ड़ गति से चल रही थी। भगवान भास्कर भी दुनियां को जलाने में संलग्न थे। किन्तु इन सब बातों का मुनि गजसुकमाल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे तो ध्यानस्थ मुद्रा मे आसीन थे। देवयोग से इनका श्वसुर सोमिल ब्राह्मण उधर होकर कहीं जा रहा था। उसने इन्हें जब साधू वेश में देखा तो आग बबूला हो गया और सन्निकट आ लगा खरी खोटी सुनाने और बोला –

" पाखण्डी ! तुझे साधू ही बनना था तो मेरी लडकी को क्यों विवाह कर लाया ? उसके जीवन की आशा तूने धूल में मिला दी। अब भी कहता हूँ या तो चुपचाप घर चल नहीं तो अभी तेरी हड्डी–पसली तोड़ कर चूर–चूर कर दूँगा। मुनि गजसुकमाल तो ध्यान मग्न थे। इन्हे तो एक ही अरिहन्त का ध्यान था। उनपर सोमिल की बातों का लेशमात्र भी असर नहीं पड़ा और ध्यानस्थ ही रहे।

गजसुकमाल को निरंन्तर ध्यानस्थ ही देख सोमिल का क्रोध सावन– भादों के बादलों की तरह उमड आया। उसने गजसुकमाल के सिर पर एक मिट्टी की पाल बनाई और उसमें दहकते हुए अंगारे लाकर रख दिए। स्वयं कुछ देर तो वहीं खडा रहा और लगा गालियों की बौछार करने। पीछे बकता– बकता थक गया तो घर को चल दिया।

किन्तु क्षमाशील मुनिराज तो ध्यानस्थ ही शान्ति पूर्वक बैठे रहे। इन्होंने सोमिल की दुष्टता पर कोई ध्यान नहीं दिया। इनका सिर अग्नि के ताप से जल रहा था, किन्तु इनके मुख से उफ तक नहीं निकला और न सोमिल के प्रति मन मे द्वेष भाव ही उत्पन्न किया। इन्हे तो एक ही अरिहन्त का ध्यान था। आखिर अग्नि– अग्नि ही होती है जिसकी छोटी–सी चिंगारी सारे संसार का प्रलय कर सकती है। ताप बढता गया। अन्त में प्रचण्ड ताप से मुनि गजसुकमाल का सिर फूट गया और वे मुक्ति पथ के राही चलते बने। क्षमा पथ के अग्रिम दूतों में अपना "नामो निशां इस जहान मे " सदा के लिए छोड गये। शास्त्रों में ठीक कहा है–" क्षमा वीरस्य भूषणम् "

"जिनवाणी" मासिक, जोधपुर
वर्ष ८ अंक १
सितम्बर-१९५०

क्षमा के पथ पर

कुमार गजसुकमाल भगवान नेमिनाथ के धर्म प्रवचन सुनकर महल में आये और आते ही उत्सुक भाव से माँ से बोले–" मां मेरा मन इस संसार से विरक्त हो गया है। मैं प्रव्रज्या व्रत धारण करना चाहता हूँ। दीक्षा का नाम सुनते ही मां हतप्रभ–सी हो गई और बोली " प्रव्रज्या ! हैं प्रव्रज्या ! प्रव्रज्या लेना तुम्हारा काम नहीं। तुम आज ऐसी पागलपन की बातें कैसे कर रहे हो मेरे लाल ? तुम्हें कौन–सी चीज का अभाव खटक रहा है जिसके कारण तुम दीक्षा ले रहे हो ! तुम्हारी शादी कर दी, धन, वैभव की कमी नहीं,–आनन्द से रहो।"

" तुम्हारा कथन ठीक है माँ ! किन्तु मेरा मन भोग विलास– धन वैभव के मोह से कोसों दूर हो गया है। जी चाहता है दीक्षा लेकर अरिहंत प्रभु का निशदिन ही ध्यान करूं, तपश्चर्या करूं, जिससे मेरा इहलोक और परलोक सुधर जाय। मानवी जीवन बड़ा दुर्लभ है। इसे पाने को तो देव भी तरसते हैं। इस जीवन का जितना धार्मिक कार्य में उपयोग किया जाय उतना ही ठीक है", कुमार ने कहा।

" नहीं, नहीं, वत्स ! तुम्हारे संयमाराधन का निश्चय सुनकर मेरा कलेजा टूक–टूक हो रहा है। भविष्य में ऐसा कभी मत बोलना। फिर "चरित्र" पालना भी तो बच्चों का खेल नहीं है। "माँ ने गजसुकमाल को समझाते हुए कहा :–

" मां मैंने अच्छी तरह समझ लिया है कि इसका पालन करना बच्चों का खेल नहीं है। इस के लिए तप, त्याग और क्षमा की जरूरत है। किन्तु मैं इसके सब परिषहों को सहने का दृढ़ निश्चय कर ही तुम्हारी आज्ञा मांग रहा हूँ।"

" नहीं बेटा, तुम अभी दीक्षा लेने के योग्य नहीं हो। तुम तो पुष्प की तरह कोमल हो, वैराग्य तो काटों का ताज है। इसे धारण करने वाला भी तो लौह दिल वाला होना चाहिए।"

मा तुम यह कैसे कह रही हो कि मैं इस ताज को न पहन सकूँगा। भगवान नेमिनाथ भी तो मेरे ही जैसे राजकुमार हैं, कोमल हैं, मेरे ही भाई हैं। जब वे सब कष्ट सहन कर सकते हैं और कर रहे हैं तो फिर मैं क्यों सहन नहीं कर सकता ! मुझ मे भी तो उन्हीं पूर्वज का रक्त संचारित हो रहा है।"

" नहीं बेटा कुछ भी हो। मैं तुमको दीक्षा नहीं लेने दूंगी। तुम्हारी और नेमिनाथ की जोड़ी थोड़े ही है। वे तो पत्थर दिल हैं। उन्होंने तो "तेलचढ़ी" राजुल को ठुकरा दिया और अपने रथ का मुँह मोड़ लिया। दूसरे वे तो अव्वल दर्जे के हठी ठहरे, किसी की बात मानने वाले थोड़े ही थे।"

" नहीं मां तुम भूल कर रही हो। जो कुछ उन्होंने किया, ठीक ही किया। उन्होंने विवाह न कर लाखों अमूक प्राणियों को अभय दान दिया। उन्होंने आत्म कल्याण के लिए ही नहीं अपितु जनता जनार्दन के कल्याण के लिये वैराग्य व्रत धारा है। उनके उपदेश को सुनकर मनन करने वाले लाखों प्राणी इस भवसागर से तर जायेंगे। मेरी भी उत्कट अभिलाषा है कि ऐसे महान प्रभु के कर कमलों से दीक्षित होकर, उनके उपदेश को ग्रहण कर इस मोहमाया रूपी दुनिया से तर जायें, तभी मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी। मेरा क्षण– क्षण वर्ष सा बीत रहा है। मेरी मां जल्दी बोलो- मुझे आज्ञा दो।" कुमार ने बड़ी कातरता से कहा।

कुमार गजसुकमाल की इन अकाट्य दलीलों का मा क्या उत्तर दे। वह स्वयं असमंजस में पड़ गयी वह मौन हो गई।

" मौन क्यों हो मा? मुझे जल्दी आज्ञा दो। अब मैं तुम्हारी एक भी दलील सुनना पसंद नहीं करूंगा" कुमार ने आवेश में आकर कहा।

मा अपने पुत्र मातृ ममता वश मौन थी"

को लेकर यहाँ आये हैं तो आप यहाँ से चले जाइये, इसी में आपका कल्याण है। आप इस समय भारतीय नारी के सतीत्व प्रभाव को भूले हुए हैं। किसी भी प्रकार का प्रलोभन, भय और बलात्कार भारत की नारी को भ्रष्ट करने में सदैव निष्फल रहा है। यदि आप अपने हृदय के इन भावों में कोई परिवर्तन लाने का प्रयत्न नहीं करते हैं तो इसका परिणाम भुगतने के लिए तैयार हो जाइये।"

यशोभद्रा के तेजोमय सतीत्व के प्रभाव से राजा हतप्रभ हो गया और वह वहाँ से उस समय काँपता हुआ लौट पडा किन्तु श्वान समान नीच हृदय में ग्लानि और लज्जा कब तक ? यशोभद्रा की सौन्दर्य– प्रभा के आगे सतीत्व प्रभाव को भूल गया। यशोभद्रा को प्राप्त करने के लिए जितनी बाधाएँ थीं उनमें सबसे अधिक खटकने वाली बाधा उसको अपना भाई कुंडरीक प्रतीत हुआ। अत एक अनाचार को सिद्ध करने के लिए उसने एक दूसरा और अनाचार भ्रातृ– हत्या करके अपना मुहँ कलंक कालिमा से पोत लिया। हत्या का रहस्य छिपा नहीं रह सका। नगर में हाहाकार मच गया। छोटे बडे सभी राजा को धिक्कारने लगे किन्तु राजा के अनाचार के भय से प्रजा विवश थी। दैव को यही करना था– ऐसी निराशा पूर्ण स्थिति में अपने को पाकर कुंडरीक जैसे दैवी– सम्पत्तियुक्त गुणज्ञ व्यक्ति के बारे में दो आँसू बहा कर रह गए। यशोभद्रा अनाथ हो गयी, कोई सहारा नहीं देख वह अपनी धर्म रक्षा के लिए भाग निकली। दुष्ट पुंडरीक ने उसकी बहुत खोज कराई किन्तु वह नहीं मिल सकी।

राजमहलों के अमित सुखों को भोगने वाली और निरन्तर पुष्प शैया पर शयन करने वाली यशोभद्रा– कर्कंड, काँटो की परवाह न कर वन में एक वृक्ष के नीचे जा बैठी। थकान के कारण उसे नींद आ गई। जगने पर एक निर्ग्रन्थ–साध्वी संघ को निकट के मार्ग से विहार करते हुए देखा। वह झट उठी और निर्ग्रन्थ प्रवर्तिनी के चरणो में जा पडी। प्रवर्तिनी आर्या की ओर से 'धर्मलाभ' प्राप्त कर उसने अपनी व्यथा उन्हें सुनाई । प्रवर्तिनी धर्म कर्म की सुज्ञाता थी। उसने यशोभद्रा को ढाढस बँधाते हुए कहा– "लालने ! तू धन्य है। संकटों को झेलकर तूने अपने धर्म की रक्षा की। शील–सतीत्व ही आर्य नारी का भूषण है। संसार क्षण भंगुर है। कोई किसी का नहीं । अपनी आत्मा के कल्याण के लिए निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र के बताए हुए मार्ग का अनुसरण करो ।" प्रवर्तिनी के बोध से यशोभद्रा के पूर्व संस्कार जाग्रत हो गए और वह साध्वी समुदाय के साथ हो चली।

रानी यशोभद्रा– साध्वी यशोभद्रा बन गई। साध्वी संघ की वैयावच्च क्रिया एव धर्म पठन–पाठन ही अब उसका नित्य कर्म था। यशोभद्रा के बढते हुए उदर से प्रवर्तिनी के मन मे उसके गर्भ का अहसास हुआ। प्रवर्तिनी ने उसे एकांत मे बुलाकर पूछा कि यह गर्भ उसके पति का है या दूसरे का। यशोभद्रा ने विनय पूर्वक अपने पति का ही स्वीकार किया। लोक लाज की खातिर प्रवर्तिनी ने यशोभद्रा को आदेश दिया कि तुम स्थानक के बाहर मत जाना। गुरु और गुरुणी, माता पिता के समान होते हैं और वे उसी प्रकार अपने शिष्य व शिष्याओं की प्रतिपालना करते हैं। समय पूर्ण होने पर साध्वी यशोभद्रा ने एक पुत्र–रत्न को जन्म दिया। नवजात शिशु को तत्काल ही शय्यातरी श्राविका के यहां पालन पोषणार्थ भिजवा दिया गया और यह सब बातें नितान्त गोपनीय रखीं गई।

शय्यातरी श्राविका, श्रावस्ती नगरी की परम धर्मनिष्ठ प्रमुख श्राविका थी। यशोभद्रा का दीक्षा संस्कारोत्सव भी प्रवर्तिनी जी के उपदेश से उसने ही कराया था। दीक्षा लेते वक्त यशोभद्रा ने अपना रत्नकंबल और अगूठी भी उसी को सौंप दी थी।

"पूत के पैर पालने में दिख जाते हैं" यही उक्ति इस नवजात शिशु के साथ चरितार्थ हुई। उसका सुन्दर गौरवदन, चौडा भाल स्थल, सुडौल शरीर राजवंशीय होने के अतिरिक्त एक 'महान' व्यक्ति बनने के सूचक थे। ज्योतिषियों ने एक राय होकर इस बालक का नाम 'क्षुल्लक कुमार' रखा।

बालक क्षुल्लक माता शय्यातरी की सुखद गोद में पलकर द्वितीया के चन्द्र की तरह अग्रसर हो रहा था। इसे विद्याभ्यास भी कराया गया। ज्यों ज्यों वह वयस्क हो रहा था त्यों त्यों संसार के प्रति अनासक्त होता जा रहा था। अनासक्ति के विषय मे गुरुओ से घंटों वाद विवाद करता रहता था।

वैराग्य के पथ पर

अयोध्या के राजा महाराज पुंडरीक के भाई कुंडरीक की परम लावण्यमयी ललना यशोभद्रा अपने राजमहल के गवाक्ष में बैठी एक दिन केश–शृंगार कर रही थी। सावन के मदमस्त पवन के झकोरों से घुँघराली अलकें इधर उधर अनधिकार प्रयास कर रही थीं। एक सखी उन्हें सवार कर वेणी गूँथ रही थी, तो दूसरी रत्न–जड़ित हार पहना रही थी और तीसरी भांति–भांति के सुवासित पुष्पों के निर्मित हार और गजरे पहना रही थी। इस प्रकार कुछ सखियों ने मिलकर यशोभद्रा को शृंगार विभूषित किया। जब नख से शिख तक का शृंगार पूर्ण हो गया तो यशोभद्रा गवाक्ष से उठीं और अपने उस छलकते यौवन की अंगड़ाई युक्त मुद्रा को आईने में देखा।

इतने में ही सुनंदा ने आखेट से लौटते हुए अयोध्या नरेश महाराज पुंडरीक और उनके छोटे भाई कुंडरीक के घोड़ों की टाप सुनी और रानी से उमंग में आकर कहा, " रानी जी ! महाराज पधार रहे हैं" यशोभद्रा के गुलाबी कपोलों पर मुस्कान की रेखायें खिंच आईं और हर्षोन्मादित हो गवाक्ष से झाँक कर देखा, सचमुच उसके प्राणनाथ प्रासाद की ओर आ रहे हैं। उसी समय अयोध्या नरेश महाराज पुंडरीक की दृष्टि भी रति के समान कमनीय यशोभद्रा पर जा पड़ी। इस प्रकार के मनोहर रूप लावण्य का देखना पुंडरीक के जीवन में पहला अवसर था। उनका कामातुर चित्त पुत्री के समान अपने छोटे भाई की स्त्री को अपनी काम–वासना की तृप्ति का साधन बनाने के लिए बिना किसी प्रकार की ग्लानि के आकर्षित हुआ। यशोभद्रा तो महल के अन्दर चली गई किन्तु महाराज पुंडरीक के अतृप्त नयन उसकी ओर निहारते ही रहे।

जिस दिन से महाराज पुंडरीक के नेत्रों ने रानी यशोभद्रा को लक्ष्य बनाया उस दिन से ही महाराज के मन में उसे प्राप्त करने की अभिलाषा उत्तरोत्तर बढ़ती गई। एक ओर मन- मुराद को शान्त करना था और दूसरी ओर था उनका धर्म एवं कर्तव्य पालन। कुचेष्टा और कर्तव्य में द्वन्द्व हुआ। दिग्विजयी काम के आगे कर्तव्य को पराजित होना पड़ा। मन काम अश्व पर आरूढ़ हुआ और लगा सोचने यशोभद्रा को फुसलाने के शत–शत उपाय। दूतियों के हाथ बेश- कीमती वस्त्र, आभूषण और भांति–भांति के शृंगार प्रसाधन एवं नानाविध स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ यशोभद्रा को उपहार स्वरूप भेजे गये। यशोभद्रा पहले तो इन्हें जेठ की ओर का उपहार समझ कर ग्रहण करती गयी, बाद में उसे इस परदे की ओट में पापलीला का आभास हुआ तो उसने भेजे जाने वाले उपहारों को लेने से इनकार कर दिया।

यह देख अयोध्या नरेश की आशाओं पर कुछ तुषारपात सा हुआ। काम अन्धा होता है (कामान्ध महाराज चुपचाप कहाँ बैठने वाले थे। एक दिन कामी मन ने उनके दिल की हिम्मत को बढ़ाया और वे जा पहुँचे यशोभद्रा के रणवास में। महाराज को अपनी ओर आते देख यशोभद्रा उठ खड़ी हुई और प्रणाम करते हुए बोली–" महाराज का आज मेरे रणवास में अकेले और वह भी बिना सूचना दिए कैसे पधारना हुआ ?" महाराज पुंडरीक यशोभद्रा की सौन्दर्य आभा और सतीत्व के प्रभा के संमुख हतप्रभ हो गए और कोई उत्तर देते नहीं बना। तब दृढ़ता धारण करके बोले " मेरी हृदय रानी ! तुम्हारे अनुपम रूप सौन्दर्य के दर्शन करने और अधरामृत का पान करने आया हूँ।" अपने पूज्यवर पुंडरीक के मुख से इस प्रकार की कुचेष्टा का उसे कभी स्वप्न में ध्यान नहीं था। किन्तु आज उसके मुँह से ऐसी अधर्म युक्त की बात सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

रानी यशोभद्रा का सतीत्व जाग उठा। उनकी भौंहें तन गईं। मन में आया अभी कटार से इसका काम तमाम कर दूँ– किन्तु मानव हत्या एक महान पाप है। ऐसा विचार कर शान्त भाव से पुंडरीक को समझाते हुए कहने लगी, " पिताजी आज आप यह क्या कह रहे हैं। मैं तो अनुज-वधू होने के कारण आपकी पुत्री के समान हूँ। पुत्री पर कुदृष्टिपात करना आप जैसे धर्मनिष्ठ अयोध्या नरेश को शोभा नहीं देता। अपने हृदय में ऐसे नीच विचार को स्थान देते समय आपको अपने परलोक के बिगड़ने का किंचित् भी विचार नहीं हुआ ? यदि इस समय आप [illegible]

कहा। उपाध्यायश्री ने अपनी वाक्‌चातुरी से दाक्षिण्यगुण निधि मुनि क्षुल्लक को १२ वर्ष और साधू अवस्था में रहने के लिए राजी कर वहाँ से विदा किया।

घड़ी टकटक करती जाती है और समय बीतता जाता है। इस प्रकार मुनि क्षुल्लक अपने प्रव्रज्या के ४८ वर्ष बिता चुका था। अब उससे रहा नहीं गया, अपने पूर्व भव के कर्मोदय वश– स्थानक को छोड वहाँ से बिना कहे सुने चल पडा साध्वी यशोभद्रा के पास। यशोभद्रा का पूर्व मातृस्नेह उमड आया और मातृ सुलभ कमजोरी वश इस बार वह अधिक कुछ न कह सकी केवल इतना ही कहा–

दुनिया पैसे वालों की है। बिना पैसे के दुनियांदारी में रहना बडा कठिन काम है। तेरे पास धन न होने से तुझे अनेक आफतों का सामना करना पड़ेगा। अत तू अगर जाना ही चाहता है तो शययातरी के पास चला जा। उससे रत्न कंबल और अंगूठी लेकर अयोध्या चले जाना। अंगूठी को दिखाकर अपने पैतृक अधिकारों की मांग करना।" क्षुल्लक साध्वी यशोभद्रा को नमस्कार कर चल पडा– ऋषि क्षुल्लक से राजकुमार क्षुल्लक बनने।

अयोध्या नगरी के सामने वाले मैदान में नट–नटी का नाटक हो रहा था। ८५ वर्षीय वृद्ध महाराज पुंड़रीक मणि मानिक जडित सिंहासन पर आसीन थे। आसपास सामन्त, सरदार, युवराज और मंत्रीश्वर आदि सब स्वस्थानों की शोभा बढा रहे थे। नगर की आधी जनता इस नाटक को देखने में तल्लीन थी। मैदान नर नारियों से ठसाठस भरा दृष्टिगोचर हो रहा था। मैदान के मध्य में नट ने अपना डेरा डंडा डाल रखा था। नट ढोल, मृदंग, वीणा बजा रहा था। नटी के पैर घुँघरू की ध्वनि से झम झम करते हुए ताल के साथ उठ रहे थे। अपने सुरीले कंठों एवं नृत्य के सुन्दर अभिनय से वह सबका चित्त चुरा रही थी। नटी का रूप-सौन्दर्य भी चर्चा का विषय था। राजकुमार बनने का सुन्दर स्वप्न देखता देखता क्षुल्लक भी वहाँ आ पहुँचा और लगा देखने नट नटी का नाच।

नृत्य करते करते बहुत रात बीत गई। नटी के कंठ सूखने लगे। वह प्यासे चातक की तरह– स्वाति बूँद की आशा में नाच रही थी। कब महाराज अयोध्या नरेश प्रसन्न हों और कब दें उसे उसकी कला का पुरस्कार। वृद्ध महाराज पुंडरीक के कामी नेत्र तो नटी के सौन्दर्य पर आसक्त हो रहे थे। वे तो चाहते थे– नटी नाचती रहे ताकि उसका रूप झरना निरंतर बहता रहे।

नटी की आशा निराशा में परिवर्तित हो रही थी। उसका कंठ बैठ रहा था, आखों में नींद की ऊँघ थी और हो रही थी धीमी घुँघरू की झनकार, किन्तु नट ढोल पर जोर जोर से हाथ मार रहा था। उसने नटी की यह अवस्था देख जोर से कहा–

सुद्दु गाइयं, सुद्दु वाइयं, सुद्दु नच्चिय सामि सुन्दरि।
अणुपालिय दीह राइयं, सुमिणं ते मा पमायए।।

उषा काल होने जा रहा था। अयोध्या नरेश नृत्य तो देख रहे थे किन्तु थे बिलकुल मौन। भीड़ नाच गान से प्रसन्न हो तालियाँ बजा रही थी। नटी ने होश संभाला और आखिर" संसार की असारता" का अभिनय कर नाटक को समाप्त कर देना चाहा। उसके पैर उठे, घुँघरू बजे और गले ने गाया–

बहुत गई थोडी रही, थोडी भी छिन छिन जाय।
कह नटवी सुन नायके, टुक इक धीमी बजाय।।

गाना बन्द हुआ। दूर खडा क्षुल्लक नजदीक आया। इस अभिनय ने उसके 'कामी हृदय' में हलचल मचा दी थी। इसके दिल ने पुनः संसार की असारता के मर्म को समझा। मन फिर आसक्त से अनासक्त होता देख गया। दिल पर गहरी छाप पडी– प्रसन्न हो देने लगा नटी को उसकी अभिनय कला का पुरस्कार। राजकुमार बनने के अपने सुन्दर सपने के महल को अपने हाथों से ही नष्ट करना चाहा। क्षुल्लक मैदान के मध्य में आगे आया और उसने रत्न कंबल और अंगूठी नटी को पुरस्कार स्वरूप दे डाली। युवराज यशोभद्र के दिल पर भी मार्मिक चोट लगी और उसने अपने कान के कुंडल नटी को इनाम मे दे डाले। महामंत्री जरासंधि ने कर–कंगन दिये। फीलवान (महावत) ने स्वर्ण रत्न जडित अंकुश दे डाला और सार्थवाही पत्नी श्रीकांता ने मोतियों की माला गले से निकाल कर नटी को पहना दी। दौंफो

करने नगरी की सारी जनता सावन की घटाओं की तरह उमड़ पड़ी। नव वर्षीय कुमार क्षुल्लक भी गया। आचार्य श्री के संसार की अनित्यता और त्यागमय जीवन से मोक्ष साधन के उपदेश– कुमार क्षुल्लक के दिल में घर कर गये। कुमार क्षुल्लक अब ऋषि क्षुल्लक बनने के सुनहरे सपने देखने लगा। माँ से दीक्षा के लिए आग्रह किया किन्तु [illegible] ने आज्ञा का भार साध्वी यशोभद्रा के कंधें डाल दिया क्योंकि वह कुमार को बीती कहानी बता चुकी थी। यशोभद्रा ने कुमार के सम्मुख वैराग्य की कठिनताओं और यातनाओं का चित्रण किया। किन्तु उसके निश्चयात्मक आग्रह के सामने यशोभद्रा की कुछ न चली और अंत में कुमार क्षुल्लक– ऋषि क्षुल्लक बन के ही रहा।

सूत्र सिद्धान्त का ज्ञाता युवक पंडित मुनि क्षुल्लक साधू जीवन के १२ वर्ष बिता चुका था और वह जीवन के इक्कीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा था। यह समय युवको की अग्नि परीक्षा का समय होता है। बड़े बड़े कंचन–कामिनी के त्यागी, वैरागी ऋषि मुनि भी कामवेग के आगे नतमस्तक हो जाते हैं। यौवन का छिपा अंकुर युवक क्षुल्लक के मन में प्रस्फुटित हो रहा था। संसार की गजब की मनमोहक उधेड़ बुन देखकर उसका चंचल चित्त चलायमान हो गया। एक ओर संसार का स्वर्ग समान सुख था तो दूसरी ओर वैराग्य का कठिन मार्ग। उसका मन डोल गया और साध्वी यशोभद्रा के पास जाकर बोला" मैं अब वैराग्य पथ का पथिक नहीं रह सकता, यह अति कठिन मार्ग है। केश लुंचन, पैदल विहार और संयम से रहना तो बहुत ही दुष्कर है। मेरी तो गृहस्थ बनकर सांसारिक सुखो के भोगने की तीव्र अभिलाषा है।"

अनासक्त मुनि क्षुल्लक को आसक्त देखकर यशोभद्रा किंकर्तव्य–विमूढ हो गई। यशोभद्रा ने क्षुल्लक को समझाते हुए कहा, "तुम साधू होकर ऐसी पागलपन की बातें क्यों कर रहे हो ? तुम इस काम– चक्कर में मत फँसो। इसी कामान्धता के कारण तुम्हारे चाचा ने तुम्हारे बाप की हत्या की। अब भी तुमको होश नहीं आया। लोक– लाज, इस लोक और परलोक की खातिर इन बुरे विचारों का सर्वथा परित्याग करो। आओ, गुरु एवं प्रभु भक्ति में अपना शेष जीवन समर्पित कर दो।"

यशोभद्रा के इन उपदेश का चिकने घडे की तरह मुनि क्षुल्लक पर कोई असर नहीं पड़ा और उसने आवेश में आकर कहा," महामने ! परलोक किसने देखा है? लोक लाज की मुझे चिन्ता नहीं। इसी लोक का तो प्रेम मधुर है। " मुनि क्षुल्लक को ज्यादा जिद्द करते देख यशोभद्रा ने विनम्र भाव से कहा, "वत्स मुनि ! मेरे कहने से एक युग– १२ वर्ष और ठहरो, चारित्र व्रत का पालन करो, पीछे तुम्हारी मर्जी।"

साध्वी की आज्ञा शिरोधार्य कर कामवेग से घायल मुनि वापिस स्थानक आ गया। इसके पैर पीछे पड़ रहे थे किन्तु माँ की आज्ञा के कारण मजबूर था। क्षण बीते, पहरबीते, दिन बीते, मास बीते और १२ वर्ष भी बीत गये। समय को जाते देर नहीं लगती। मनुष्य माया के चक्कर में फंस कर उसकी कदर नहीं करता और अंत में यह होता है कि मनुष्य भी इस दुनिया से कूच कर जाता है, और यहां छोड़ जाता है सिर्फ अपने कृत्यो की करुण कहानी, चाहे वह रुचिकर हो या अरुचिपूर्ण । मुनि क्षुल्लक का चंचल चित्त फिर चलायमान हो उठा और वह दौड़ा–दौड़ा पुनः गया साध्वी यशोभद्रा के पास। यशोभद्रा क्षुल्लक को अपनी ओर आते देख असमंजस में पड़ गई। वह परेशान थी कि कैसे समझावे सुकुमार मुनि क्षुल्लक को । कैसे उसे गर्त में गिरने से रोके? अपने को निरुत्तर समझ उसने क्षुल्लक को प्रवर्तिनी साध्वी कीर्तिमति के पास जाने को कहा । प्रवर्तिनी स्वयं हैरान थी कि समझ वाले को कैसे समझाए? उसने इतना ही कहा " तू यशोभद्रा के कहने से एक युग ठहरा है तो मेरे कहने से भी इतना समय और ठहर जा। "

संसार की चक्रगति है। एक युग और १२ वर्ष का बीत गया। मुनि क्षुल्लक की सुप्त वासनाएं फिर जाग्रत हो उठी। वह साधुवाद छोड़ने की आज्ञा मांगने के लिए प्रवर्तिनी जी के पास गया। इस बार प्रवर्तिनी जी मौन थी और उसने क्षुल्लक को गच्छनायक आचार्य के पास जाने को कहा। भरसा वश न चलता। क्षुल्लक ने आचार्य श्री के पास जाकर अपनी प्रव्रज्या धर्म पालन करने में असमर्थता प्रकट की और साथ चीवने उनसे ओघे मुँहपत्ती भी पूछी।

पहले तो आचार्यश्री ने तर्क, सूत्र व सिद्धान्त से, पीछे परलोक की अदम्य यातनाओं की चर्चा से क्षुल्लक को प्रतिबोधित करने की चेष्टा की, किन्तु अन्त में अपने निश्चय पर अडिग देखकर उन्होंने उपाध्याय के पास जाने को

जगतसेठ की माता-

आदर्श श्राविका ! माणिक देवी

विश्व के विस्तृत इतिहास के पन्नो को अगर उलट कर देखें तो हमे ज्ञात होगा कि सदा से ही जीवन के सामाजिक, सैनिक, राजनैतिक, और धार्मिक सभी क्षेत्रों मे वही कार्य किया जो सच पूछा जाय तो नारी जाति ने ही पुरुष को प्रतिष्ठा के पद पर बिठाया है और उसको अग्रसर होने का है।

भारत का इतिहास तो इन नारी-रत्नों के चमत्कृत कारनामों से सदा गौरवान्वित रहा है, पर नारी रत्नो ने इसके गौरवाकाश में चार चाँद लगाये हैं, धार्मिक क्षेत्र में भी हम राम के साथ सीता, में द्रोपदी, भगवान नेमिनाथ के साथ राजीमति और भगवान महावीर के वक्त चंदनबालादि के हुए पाते हैं। सोलह-सतियाँ तो पुरुष संतो की तरह ही प्रात. स्मरणीय हैं, और श्वेताम्बर आगमानुसार तीर्थकर रुप मे ही हमारी पूजनीया बन कर सन्मुख आती हैं, ऐतिहासिक काल मे हम सम्राट हर्षवर्धन के बहिन राजश्री की कुशल राजनीतिज्ञता से अवगत होते हैं कालिदास और तुलसीदास को 'मूरख' श्रेय भी नारी जाति को है क्या उस नारी को भुला सकते हैं जिसने बिल्वमंगल को कामी से वैरागी बना नूरजहाँ का नाम मुगलकाल से हटाया जा सकता है ? क्या वह नारी-जाति पूजनीय नहीं, जिसने आजादी प्रताप और शिवाजी जैसे नर-नाहरों को जन्म दिया ? क्या उस नारी की रत्नगर्भा कोख धन्य नहीं सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य और समन्तभद्र जैसे बहुमुखी प्रतिभा के विद्वान, कुमारपाल सरीखे धर्म एवं प्रजा-प्रिय भारमल्ल और मत्री भामाशाह जैसे दानवीर, वस्तुपाल- तेजपाल जैसे कला-स्थापत्य प्रेमी, पेथड़शाह जैसे और जगतसेठ जैसे धन कुबेरों को जन्म दिया ! आज के युग मे भी महात्मा गांधी जैसे अलौकिक पुरुष वाली एक नारी ही थी। वस्तुत नारी जाति शक्ति की खान है, पुरुष को पौरुष देने वाली है, कवियों की अंधेरे मे उजाले की किरण है

धर्म भी नारी जाति की श्रद्धा और भक्ति के कारण ही आज तक जीवित है. नारी का धार्मिक प्रवृतियो की ओर खिंचा रहता है आज भी हम देखते हैं कि अधिकांश पुरुष जो भी धार्मिक स्त्रियो की प्रेरणा का ही सुफल है

जैन धर्म मे नर नारी को साधु-साध्वी, श्रावक- श्राविका रूप चतुर्विध संघ के, है समय-समय पर अनेक श्रावक और श्राविकाओं ने इस भरत-क्षेत्र पर अवतीर्ण होकर देश तथा धर्म को कीर्ति गगन मे फहराया है शास्त्रो में सोलह सतियो के अतिरिक्त कई एक श्राविकाओं का नाम कीर्ति कलापों का हृदयस्पर्शी वर्णन अनेक कवियों ने अपने काव्यो में ढाल, चौपदी, रास आदि के रूप किसी इतिहास प्रसिद्ध श्राविका का यशोगान किसी कवि ने भी किया हो, यह कम ही जानने में चरित्र नायिका 'आदर्श श्राविका' (जगत् सेठाणी) इसका अपवाद मात्र है.

प्रसगवश हम एक बात और बतला देना चाहते हैं कि जैन इतिहास के प्रेमियों होगा कि देलवाड़ा आबू के जग- प्रसिद्ध जैन मन्दिरों के , जो कि कला के विश्व भर मे उत्कृष्ट प्रेरक व सहायक वस्तुपाल- तेजपाल की पत्नी अनुपमा देवी ही थी यह उस शिल्प स्थापत्य की के दिमाग की ही गजब की सूझ थी कि जिससे इन चैत्यालयों का सुन्दर ढंग से निर्माण हो

प्रसन्न थे। जनता भी नटी पर प्रसन्न थी। उसने भी चंद मिनटों में हेम–रजत मुद्रा की वर्षा कर नटी को मालों माल बना दिया। आज उसकी वर्षों की दरिद्रता दूर भागी और उसने अपनी कला का पूरा मूल्य पाया।

नाटक को देख सभी प्रसन्न हुए, केवल अप्रसन्न हुए अयोध्या नरेश। उनकी भृकुटि तन गई। झट सिंहासन से उठे और सीधे गये राजमहल। सेनापति को हुक्म दिया, पाँचों को सूर्योदय से पहले दरबार में हाजिर करो।

दरबार– सरदार, सामन्तों एवं नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों से खचाखच भरा था। महाराज के सम्मुख पाँचों हाजिर हुए। महाराज ने उन्हें हुक्म दिया कि वे उन्हें नटी को प्रथम इनाम देने का ठीक–ठीक कारण बतलाए। अन्यथा उनकी हडड्डी पसली तोड कर उनके शरीर से खाल खींच ली जायेगी। पाँचों[1] ने एक स्वर में अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा–" महाराज ! "संसार की असारता " के अभिनय से हमारे दिलों में एक अमिट छाप पड़ी है। दुनियां में सब माया जाल है। मनुष्य की मृत्यु अवश्यम्भावी है। हम जो अपना और हमारा करते हैं, वह भी हमारा नहीं हैं' आप अकेला अवतरे और मरे अकेला होय।" हम लोगों की अधिकांश उम्र बीत चुकी है और जो थोड़ी है वह भी क्षण भर में चली जायेगी। इसलिए हम अपना शेष जीवन सांसारिक झंझटों में न बिताकर वैरागी होकर बिताना चाहते हैं। प्रव्रज्या व्रत धारण कर प्रभु भक्ति में अपने आपको समर्पित करना चाहते हैं। अगर ऐसा विचार करने मे भी आपको अपराध मालूम होता हो तो हम दंड के पात्र हैं।

वृद्ध और निष्ठुर महाराज पुंडरीक का पाँचों के मुँह से यह संभाषण सुनकर दिल दहल गया और उसने भी असारता को समझा। पाँचों को अपनी इच्छित वस्तु प्रदान करने का आदेश प्रदान किया। किन्तु पाँचों तो हृदय से वैराग्य पथ के पथिक बन चुके थे। उन्होंने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने प्रव्रज्या व्रत धारण किया। राजकुमार क्षुल्लक पुन: ऋषि क्षुल्लक बना। त्याग संयम से आत्मार्थी बना। क्षुल्लक के बारे में लोगों को आश्चर्य हुआ। एक क्षण का शुभ परिणाम भी मनुष्य को भवसागर से तार सकता है। आज सभी प्रसन्न थे और यह समाचार सुनकर अति प्रसन्न थी साध्वी यशोभद्रा।

'श्रमण' बनारस
अक्टूबर, १९५०

१–क्षुल्लक का विचार पहले राजकुमार बनने का था क्योंकि वह दीक्षा के परिषहों से तंग आ चुका था। युवराज यशोभद्र का विचार पहले राजा को मारकर स्वयं राजगद्दी पर बैठने का था। कारण कि राजा बहुत वृद्ध हो गया तो भी राज राज्य देना नहीं चाहता था। महामंत्री [illegible] को राज सेवा में इतने वर्ष हो गये पर वृद्ध राजा ने उसकी सेवा का कोई कदर न की– न कभी उसे इनाम दिया। इसलिए उसने सोचा कि किसी दूसरे राजा को लाकर पुंडरीक को मरवा दे। हाथी को राजा पूरा ग्रास नहीं देता था इसलिए महावत ने विचार किया कि हाथी को भगा कर कहीं अन्यत्र लग जाऊँ; सार्थवाही की पत्नी श्रीकान्ता का पति १२ वर्ष हो गया विदेश धनार्थ गया था किन्तु वह अभी तक वापस नहीं आया इसके लिए उसके मन में विचार आया शील भंग कर दूँ। इस प्रकार पहले पाँचों के कुविचार थे। किन्तु नटी के गायन देखने से पाँचों के कुविचार स्वतः सुविचारों में परिवर्तित हो गये।

विश्व के विस्तृत इतिहास के पन्नो को अगर उलट कर देखें तो हमे ज्ञात होगा कि नारी जगत ने सदा से ही जीवन के सामाजिक, सैनिक, राजनैतिक, और धार्मिक सभी क्षेत्रों में वही कार्य किया जो पुरुष जाति ने। सच पूछा जाय तो नारी जाति ने ही पुरुष को प्रतिष्ठा के पद पर बिठाया है और उसको अग्रसर होने का अवसर दिया है।

भारत का इतिहास तो इन नारी–रत्नों के चमत्कृत कारनामो से सदां गौरवान्वित रहा है, समय समय पर नारी रत्नो ने इसके गौरवाकाश में चार चाँद लगाये हैं, धार्मिक क्षेत्र में भी हम राम के साथ सीता, श्रीकृष्ण के काल में द्रोपदी, भगवान नेमिनाथ के साथ राजीमति और भगवान महावीर के वक्त चंदनबालादि के उज्ज्वल चरित्रादि को चमकते हुए पाते हैं। सोलह–सतियाँ तो पुरुष संतो की तरह ही प्रात स्मरणीय हैं, और श्वेताम्बर आगमानुसार मल्ली कुमारी तो तीर्थकर रुप मे ही हमारी पूजनीया बन कर सन्मुख आती हैं, ऐतिहासिक काल में हम सम्राट हर्षवर्धन के समय उनकी बहिन राजश्री की कुशल राजनीतिज्ञता से अवगत होते हैं कालिदास और तुलसीदास को 'मूरख' से महाकवि बनाने का श्रेय भी नारी जाति को है क्या उस नारी को भुला सकते हैं जिसने बिल्वमंगल को कामी से वैरागी बना दिया ? क्या नूरजहाँ का नाम मुगलकाल से हटाया जा सकता है ? क्या वह नारी–जाति पूजनीय नहीं, जिसने आजादी के दो परवानों प्रताप और शिवाजी जैसे नर–नाहरों को जन्म दिया ? क्या उस नारी की रत्नगर्भा कोख धन्य नहीं जिसने कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य और समन्तभद्र जैसे बहुमुखी प्रतिभा के विद्वान, कुमारपाल सरीखे धर्म एवं प्रजा–प्रिय नरेश, राजा भारमल्ल और मंत्री भामाशाह जैसे दानवीर, वस्तुपाल– तेजपाल जैसे कला–स्थापत्य प्रेमी, पेथडशाह जैसे धर्म प्रभावक और जगतसेठ जैसे धन कुबेरो को जन्म दिया। आज के युग में भी महात्मा गांधी जैसे अलौकिक पुरुष को पैदा करने वाली एक नारी ही थी। वस्तुत नारी जाति शक्ति की खान है, पुरुष को पौरुष देने वाली है, कवियो की कल्पना है और अंधेरे मे उजाले की किरण है

धर्म भी नारी जाति की श्रद्धा और भक्ति के कारण ही आज तक जीवित है, नारी का हृदय स्वभावत धार्मिक प्रवृतियो की ओर खिंचा रहता है आज भी हम देखते हैं कि अधिकाश पुरुष जो भी धार्मिक कार्य करते हैं, वह स्त्रियो की प्रेरणा का ही सुफल है

जैन धर्म मे नर नारी को साधू–साध्वी, श्रावक– श्राविका रूप चतुर्विध संघ के नाम से पुकारा गया है समय–समय पर अनेक श्रावक और श्राविकाओं ने इस भरत–क्षेत्र पर अवतीर्ण होकर देश तथा धर्म की यश पताका को कीर्ति गगन मे फहराया है शास्त्रों में सोलह सतियों के अतिरिक्त कई एक श्राविकाओं का नाम आता है और उनके कीर्ति कलापो का हृदयस्पर्शी वर्णन अनेक कवियों ने अपने काव्यों मे ढाल, चौपदी, रास आदि के रूप में किया है किन्तु किसी इतिहास प्रसिद्ध श्राविका का यशोगान किसी कवि ने भी किया हो, यह कम ही जानने मे आया है जब कि हमारी चरित्र नायिका 'आदर्श श्राविका' (जगत् सेठाणी) इसका अपवाद मात्र है.

प्रसंगवश हम एक बात और बतला देना चाहते हैं कि जैन इतिहास के प्रेमियों को यह कम मालूम होगा कि देलवाडा आबू के जग– प्रसिद्ध जैन मन्दिरों के , जो कि कला के विश्व भर मे उत्कृष्ट नमूने हैं, निर्माण में प्रेरक व सहायक वस्तुपाल– तेजपाल की पत्नी अनुपमा देवी ही थी यह उस शिल्प स्थापत्य की प्रेमिका अनुपमा देवी के दिमाग की ही गजब की सूझ थी कि जिससे इन चैत्यालयो का सुन्दर ढग से निर्माण हो सका।

प्रसन्न थे। जनता भी नटी पर प्रसन्न थी। उसने भी चंद मिनटों में हेम–रजत मुद्रा की वर्षा कर नटी को मालामाल बना दिया। आज उसकी वर्षों की दरिद्रता दूर भागी और उसने अपनी कला का पूरा मूल्य पाया।

नाटक को देख सभी प्रसन्न हुए, केवल अप्रसन्न हुए अयोध्या नरेश। उनकी भृकुटि तन गई। झट सिंहासन से उठे और सीधे गये राजमहल। सेनापति को हुक्म दिया, पाँचों को सूर्योदय से पहले दरबार में हाजिर करो।

दरबार– सरदार, सामन्तों एवं नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों से खचाखच भरा था। महाराज के सम्मुख पाँचों हाजिर हुए। महाराज ने उन्हे हुक्म दिया कि वे उन्हें नटी को प्रथम इनाम देने का ठीक–ठीक कारण बतलाएं। अन्यथा उनकी हड्डी पसली तोड़ कर उनके शरीर से खाल खींच ली जायेगी। पाँचों ने एक स्वर में अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा–" महाराज ! "संसार की असारता " के अभिनय से हमारे दिलों में एक अमिट छाप पड़ी है। दुनिया में सब माया जाल है। मनुष्य की मृत्यु अवश्यम्भावी है। हम जो अपना और हमारा कहते हैं, वह भी हमारा नहीं हैं' आप अकेला अवतरे और मरे अकेला होय।" हम लोगों की अधिकांश उम्र बीत चुकी है और जो थोड़ी है वह भी क्षण भर मे चली जायेगी। इसलिए हम अपना शेष जीवन सांसारिक झंझटों मे न बिताकर वैरागी होकर बिताना चाहते हैं। प्रव्रज्या व्रत धारण कर प्रभु भक्ति मे अपने आपको समर्पित करना चाहते हैं। अगर ऐसा विचार करने में भी आपको अपराध मालूम होता हो तो हम दंड के पात्र हैं।

वृद्ध और निष्ठुर महाराज पुंडरीक का पाँचों के मुँह से यह संभाषण सुनकर दिल दहल गया और उसने भी असारता को समझा। पाँचों को अपनी इच्छित वस्तु प्रदान करने का आदेश प्रदान किया। किन्तु पाँचों तो हृदय से वैराग्य पथ के पथिक बन चुके थे। उन्होंने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने प्रव्रज्या व्रत धारण किया। राजकुमार क्षुल्लक पुन ऋषि क्षुल्लक बना। त्याग संयम से आत्मार्थी बना। क्षुल्लक के बारे में लोगों को आश्चर्य हुआ। एक क्षण का शुभ परिणाम भी मनुष्य को भवसागर से तार सकता है। आज सभी प्रसन्न थे और यह समाचार सुनकर अति प्रसन्न थी साध्वी यशोभद्रा।

'श्रमण' बनारस
अक्टूबर, १९५०

१–क्षुल्लक का विचार पहले राजकुमार बनने का था क्योंकि वह दीक्षा के परिषहों से तंग आ चुका था। युवराज यशोभद्र का विचार पहले राजा को मारकर स्वयं राजगद्दी पर बैठने का था। कारण कि राजा बहुत वृद्ध हो गया तो भी वह राज्य देना नहीं चाहता था। महामंत्री जयसंधि को राज सेवा में इतने वर्ष हो गये पर वृद्ध राजा ने उसकी सेवा कार की कदर न की– न कभी उसे इनाम दिया। इसलिए उसने सोचा कि किसी दूसरे राजा को लाकर पुंडरीक को मरवा दें। हाथी को राजा पूरा घास नहीं देता था इसलिए महावत ने विचार किया कि हाथी को भगा कर कहीं अन्यत्र चला जाऊं। सार्थवाही की पत्नी श्रीकांता का पति १२ वर्ष हो गया विदेश व्यापारार्थ गया था किन्तु वह अभी तक वापस नहीं आया इसके लिए उसके मन में विचार आया शील भंग कर दूँ। इस प्रकार पहले पाँचों के कुविचार थे। किन्तु नटी के नाटक देखने से पाँचों के कुविचार सत् सुविचारों में परिवर्तित हो गये।

जाति को बंगाल का अधीश्वर बना दिया था, उसके इतिहास से मुर्शिदाबाद के जगत् सेठ का नाम विशेष रुप से सम्बद्ध है मुर्शिदाबाद से दिल्ली तक जगत्सेठ परिवार की ऐसी धाक जमने का कारण था, उनका सारे तख्त का एक जबरदस्त पाया होना. प्रथम जगत्सेठ फतेहचंद ने जो मान महत्व पाया था, वह साधन– सम्पन्नता के साथ अपनी राज सेवाओं के बल पर इन सेवाओं मे एक यह थी कि मुगल साम्राज्य पर विपत्ति वर्षा होने के समय वह दिल्ली के लाल किले में करोड सवा करोड का भुगतान हुण्डी के जरिये ही करा सकते थे जगत्सेठ सरकार का एक अभिन्न अंग बन गया था और सयुक्त होकर दोनों एक दूसरे के हानि–लाभ में अपना हानि–लाभ समझने लगे थे."

हमे इस बात का अभिमान हो सकता है कि क्लाइव के कथनानुसार मुर्शिदाबाद हर बात मे लंदन से टक्कर ले सकता था– साथ ही उसमे यह विशेषता थी कि लंदन में एक भी परिवार धन की दृष्टि से जगत्सेठ की बराबरी का न था

" फतेहचद को अपने मामा (पिता) माणिकचंद से जो विरासत मिली थी, उसकी उन्होंने पूरी हिफाजत ही नहीं की थी, उसका विस्तार और गहराई बढाई, गाढे दिन मे राजा और प्रजा की उन्होंने ऐसी सेवा की थी जिसका महत्व सूचित करने के लिए उन्हें मुहम्दशाह से जगत्सेठ की उपाधि मिली सही बात यह है कि कम से कम अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे उनकी बराबरी करने वाला व्यापारी या सेठ– साहूकार संसार भर में कोई न था. इसलिए वह बिना किसी प्रकार की अतिशयोक्ति के 'जगत्सेठ' कहे जा सकते हैं बर्क ने कहा था कि जगत् सेठों का कारोबार उतना ही फैला हुआ था और उसी पैमाने पर था जिस पर बैंक आफ इंग्लैण्ड का. इस विस्तार या उन्नति मे विशेष भाग था तो प्रथम जगत् सेठ फतेहचद का. उनका मुर्शिदाबाद की मसनद से घनिष्ट सम्बन्ध का रहस्य यह था कि उनके सहयोग से ही प्रत्येक शासक की मार्मिक स्थिति सतोषजनक रह सकती थी, वह मसनद पर कायम रह सकता था. दिल्ली दरबार मे बगाल की साख बराबर अच्छी बनी रही, बल्कि जब से फतेहचंद ने हुण्डी के जरिये राजस्व का भुगतान करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेली थी. तब से वह साख और भी ऊँची हो चली थी."

इसी प्रकार सेर मुतखरीन के अंग्रेजी अनुवाद में लिखा है कि "जगत्सेठ के पास इतनी दौलत थी कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान मे उसके मुकाबले का उत्तर या दक्षिण मे कोई साहूकार नहीं था. जगत्सेठ के लिए दो करोड लुट जाने पर भी सरकार को पचास लाख से एक करोड तक दर्शनी हुण्डी सीकार देना मामूली बात थी

उपर्युक्त उद्धरणो से हमें इस प्रकार विदित हो जाता है कि इतिहास–प्रसिद्ध जगत्सेठ परिवार कितना महत्वशाली एव वैभवशाली रहा होगा ? ऐसे परिवार की सदस्या माणिकदेवी का महत्वशाली होना स्वाभाविक ही है.

इलाहाबाद जिले मे, गगा के किनारे साहजादपुर नामक एक शहर है. प्राचीन काल में यह नगर बहुत ही समृद्धिशाली था इस नगर का नाम कविवर बनारसीदास जैन के "अर्द्ध कथानक" मे भी तीन–चार जगह आता है[2] तथा तपगच्छीय सौभाग्यविजय कृत तीर्थमाला में भी उल्लेख मिलता है[3] इस महानगरी में ओसवाल चौराणी गोत्रीय पूरणमल नामक एक धर्मनिष्ठ एव साधन–सम्पन्न श्रीमत रहते थे इनकी पत्नी का नाम गुलाबदेवी था, जिसने वि स १७३० श्रावण वदी ११ को एक बालिका को जन्म दिया यह बालिका अति रूपवान एवं कोमलांगी थी, अत इसका नाम किशोर कुमारी रखा गया. 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की उक्ति के अनुसार बचपन से ही कुछ विलक्षण लक्षण माता–पिता ने उसमें देखे द्वितीया के चन्द्र की तरह इस बालिका का विकास होता गया पूर्णिमा के चन्द्र की तरह पूरणाकार होकर किशोरी ने कौमार्यावस्था से युवावस्था मे पदार्पण किया.

विवाह

किशोर कुमारी के षोडशी होने पर, पूरणमल को उसके विवाह की चिन्ता हुई सुयोग्य वर की खोज

---

२ भाडा किया फिरोजाबाद, साहिजादपुर लौं मरजाद, चले साहिजादपुर गये, रथसौं उतरि पयादे भए ४१०

3. दासनगर साहिजादपुर आगा, देखी श्रावक गुरु मन भाया गंगाजी तट नगरी विशाल___

हमारी 'आदर्श श्राविका' के गुण वर्णन में वि० सं० १७९८ मिती पोष वदी १३ के दिन श्री खरतर गच्छीय वाचक हर्षचन्द्र के अनुज निहालचंद नामक एक जैन मुनि ने 'जगत् सेठाणी श्री माणिक देवी रास' की रचना १२५ पद्यों मे की थी कवि स्वयं सेठानी जी का धर्म गुरु था और वह उनके निकट संपर्क में खूब रहा था वह सेठानी जी के उच्च आचार विचार व व्यक्तित्व से गहरा प्रभावित हुआ मालूम होता है उनका जीवन अन्य श्राविकाओं के लिये अनुकरणीय समझकर ही उसने इस रास की रचना सेठाणी जी के स्वर्गवास के बाद १२ दिनों में की वह सेठाणी जी को सती के समान पूज्यनीय मानता है कवि की यह विचार धारा, कवि के शब्दों में ही पढ़िये–

सतजुग में सोल सती हुई, साधवी साधु अनेको रे।
कलिजुग में मोटी सती, माणिक है सुविवेकी रे।४।
शास्त्रमांहि सुणता हता रे लाल, साधु-साध्वीनी वात रे।
परतक्ष देखी आंख सुं रे लाल, माणिक देवी मात रे।१२१।

यह घटना १८ वीं शताब्दी की है, अतएव हमें अपना ध्यान तत्कालीन समय चक्र के प्रवाह की ओर ले जाना चाहिए उन दिनो दिल्ली तख्त पर धर्मान्ध सम्राट औरंगजेब के वंशज आरुढ थे मुगल साम्राज्य पतन की ओर जा रहा था उन दिनों एक भाग्यशाली परिवार ने डूबते को तिनके का सहारा देकर उसे कई वर्ष और पदारूढ़ रहने दिया और इस परिवार की सेवा और सहायता से ही वह फलता–फूलता रहा. जब इस परिवार ने कुछ राजनैतिक कारणवश मुगल शासन की सेवा और सहायता से हाथ खींच लिया तो मुगल साम्राज्य का अधःपतन अनिवार्य हो गया कई इतिहास–कार इस भाग्यशाली परिवार को भारत में अंग्रेजों की नींव जमाने के कारण इसे दोषी समझते हैं किन्तु दरअसल में यह बात नहीं है इसके विषय मे "जगतसेठ" इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान श्री पारसनाथ सिंह अपनी पुस्तक " जगतसेठ"[1] में लिखते हैं "इसमे संदेह नहीं कि बंगाल में अंग्रेजी राज्य की स्थापना में जगत सेठ से बहुमूल्य सहायता मिली पर अठारहवीं शताब्दी में यह निश्चित् था कि उस सहायता के बिना भी वह राज्य स्थापित होकर रहता इतिहास की रील को व्यापक दृष्टि से देखने वाले यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते कि मुगलों की अधोगति और विनाश मे अंग्रेजों का अभ्युदय और राज्यारोहण सन्निहित था"

हमारी चरित्र नायिका श्री माणिक देवी इसी महत्त्वाकांक्षी परिवार की एक नारी– रत्न थी और यह सौभाग्य माणिक देवी को ही प्राप्त हुआ कि वह इस परिवार मे सर्वप्रथम सम्राट से 'सेठ' पद प्राप्त करने वाले माणिकचंद की धर्मपत्नी और जगत् सेठ संज्ञक महान् विरुद को पाने वाले फतेहचंद की माता हुई

इस परिवार का इतिहास हीरानन्दशाह से प्रारम्भ होता है जो नागौर निवासी थे, वे जाति के ओसवाल जैन श्वेताम्बर, धर्मावलम्बी, श्री पार्श्वचंद्रसूरि गच्छ के आम्नाय के गेलड़ा गोत्रीय थे वे वि० सं० १७०९ में नागौर से चलकर पटना गये और वहीं जाकर अपने व्यापार की नींव डाली इनके सात पुत्र व एक पुत्री थी जिनका नाम धनाबाई था इन सबमें पाँचवे पुत्र माणिकचंद ही प्रतापशाली हुए इन्होंने अपने अध्यवसाय व बुद्धि से व्यापार में भारी सफलता प्राप्त कर एवं राजसेवा में भी हाथ बँटाकर दिल्लीश्वर फर्रुखसियर से 'सेठ' की उपाधि प्राप्त की इनकी दो पत्नियाँ थी पहली पत्नी यही माणिक देवी थी और दूसरी सुहाग देवी इनके कोई संतान न हुई इसी से माणिकचंद जी ने अपने भागिनेय फतेहचंद को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी बनाया फतेहचंद अपने पिता से भी अधिक प्रभावशाली निकले इन्होंने अकाल मे दिल्ली व भारतीय जनता की अमूल्य सेवा कर सम्राट मुहम्मदशाह से 'जगत्सेठ' की उपाधि प्राप्त की इनके पुत्र आनन्दचंद एवं पौत्र महताबचंद भी बड़े प्रभावशाली पुरुष हुए

इस परिवार के बारे मे श्री पारसनाथसिंह के निम्न उल्लेखों को यहां उद्धृत करना आवश्यक समझता हूं जो कि उनकी पुस्तक जगत्सेठ मे पाये जाते हैं वे लिखते हैं " अठारहवीं शताब्दी मे जिन साहस-पुरुषों ने अं...

---

१ यह पुस्तक भारती भंडार प्रयाग से प्रकाशित हुई है

दैनिक दिनचर्या

सेठानी माणिक देवी की दिनचर्या मे केवल प्रभु जाप ही रह गया था,सुबह– शाम सामायिक–प्रतिक्रमणादि करती प्रात काल प्रभु पूजा कर धर्मगुरु का धर्म–प्रवचन श्रवण करती. तिथ के दिन उपवास रखती अष्ठमी और चतुर्दशी को पौषध करती इसी प्रकार सारा दिन नेम धरम में व्यतीत करने लगी

श्री सम्मेद शिखर यात्रा

श्री सम्मेदशिखर जैनियों का एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध तीर्थस्थान है यह बगाल में पारसनाथ की पहाडियो पर अवस्थित है यहा पर बीस जिनेश्वर मोक्ष पधारे हैं, इसलिए इसका अन्य तीर्थों से अधिक महत्त्व है. आजकल भी प्रतिवर्ष हजारों जैनी इस तीर्थराज की यात्रा करने जाते हैं और इसके अधिष्ठाता भोमियाजी के प्रत्यक्ष चमत्कार से प्रभावित होते हैं.इस तीर्थ की महानता के बारे मे शास्त्रो में भी काफी वर्णन मिलता है

ऐसे महान तीर्थ की महानता के प्रति आकर्पित होकर धमानुरागिणी माणिक देवी के मन मे भी इस तीर्थराज की यात्रा करने की उत्कट अभिलाषा जाग्रत हुई,उन्होने अपनी यह पुनीत अभिलाषा मातृ भक्त जगत सेठ फतेहचंद पर व्यक्त की तथा सम्मेदशिखर का एक बृहद्संघ निकालने के लिए प्रबध करने को कहा. बस,फिर क्या था? माता की यह इच्छा देखकर जगत्सेठ ने सघ निकालने का समुचित प्रबंध किया जगह जगह आमंत्रण पत्रिकाएं भेजी गयीं दूर दूर से यात्री आकर इस सघ में सम्मिलित हुए जगत्सेठ स्वयं तो कुछ कार्यवश इस सघ मे सम्मिलित न हो सके, अतः उन्होंने अपने पुत्र आनन्दचद और दयाचद को सघंवी बनाकर भेजा इस प्रकार उन्होने माता माणिकदेवी के निरीक्षण में संघ को दल–बल सहित बिदा किया सघ वर्धवान, चंपापुरी, और विंदापुरी की यात्रा करता हुआ सम्मेदशिखर पहुँचा वह पहाड पर तीन दिन तक ठहरा वहा पर प्रभु– पूजादि अनेक धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किये गये यात्रियों और माता माणिक देवी ने बीस जिनेन्द्र को प्रणाम कर अपने को कृत–कृत्य समझा इस प्रकार लाखों रुपये व्यय कर माता माणिक देवी संघ के साथ वापिस मुर्शिदाबाद लौट आई. इस तरह अपनी वर्षो की साध पूरी की

घर में देरासर का निर्माण

सम्मेदशिखर की यात्रा कर आने के बाद माणिक देवी की अपनी कोठी में ही एक जिन मंदिर बनाने की इच्छा हुई उन्होंने एक मदिर बनवाया और उसमे रजत–हेम की प्रभु–मूर्ति स्थापित की जिसका लेख इस प्रकार है. **"सं० १७७६ वैशाख शुक्ल तिथौ ओस-वंशीय श्रेष्ठ श्री माणिकचंदजी स्वधर्म पत्नी माणिकदेवी प्रतिष्ठित् श्रीमत् चतुर्विंशति जिन बिंब चिर जयतात् श्रेयारतु भद्रं भवतु."+**

माणिक देवी की पौत्री अजबोबाई भी अपनी दादी की तरह अति धर्मनिष्ठ एव परोपकारिणी थी. उसने भी कई जिन बिम्बो का निर्माण कराया था.

दान-शीलता, धर्म प्रेम

माता माणिक देवी बहुत दातार थीं. उन्होंने गरीबों के लिए 'सदाव्रत' खोल रखे थे वे प्रतिदिन अपने हाथो से भूखों को भोजन और नंगो को वस्त्र देकर ही स्वयं भोजन करती थी उनका दिल दुखी दरिद्रों के प्रति बहुत ही दयावान था

जैन धर्म मे स्वधर्मी भाइयों की सेवा करना एक अत्यन्त श्रेष्ठ धार्मिक कार्य कहा गया है कोई भी असहाय स्वधर्मी बधु कहीं भी चला जाता, तो उसकी वहा के रहने वाले तन मन धन से सेवा करते जहां जैनियों के

+ श्री पूर्णचंद नाहर का प्राचीन जैन संग्रह— लेखांक ७६

में देश देशान्तरों में दूत भेजे गये अंत में पटने के प्रमुख व्यापारी हीरानन्द शाह के सुपुत्र मानिकचंद से किशोर कुमारी का वाग्दान् निश्चित हुआ, जो आगे जाकर 'सेठ' पद से विभूषित एवं जगतसेठ के पिता हुए ज्योतिषियों ने विवाह का शुभ मुहूर्त निकाला, हीरानन्द शाह बारात लेकर शाहजादपुर गये. बारातियों की मिष्ठान्न भोजन तथा आतिथ्य से अपूर्व आवभगत की गई पूरणमल ने दहेज में बहुत-सा धन देकर किशोर कुमारी को मानिकचंद के साथ विदा किया

गृह-प्रवेश

घर की लक्ष्मी बहू मानी जाती है. हीरानन्द शाह के घर में किशोर कुमारी के बहू-रानी-रूप में पदार्पण करते ही धन, वैभव, वंश, यश और राजसत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती देखी गई कवि कहता है :

पुन्यवंत ने पग परवेस, कीरत वाधी देसो देस।
वाधे पुत्र पौत्र परिवार, वाधी लछमी बहुत भंडार।।३३।।
नरदेही घर आई बहु, पर लक्ष्मी भाखे सहु।
माणिक देवी दीनो नाम, अद्भुत रूपवंत अभिराम।।३४।।

प्राचीन ग्रंथों के शिलालेखों से पता चलता है कि स्त्री के ससुराल गृह-प्रवेश करने पर उसका नाम पति के पीछे 'दे' 'ही' या 'श्री' जोड़कर परिवर्तित कर दिया जाता था

माणिकदेवी के गृह-प्रवेश से हीरानन्द शाह के घर की तो वृद्धि हुई ही, साथ ही उस नगर की भी बहुत वृद्धि हुई. यह एक माणिकदेवी के पुण्यशाली जीव होने का सूचक था. कवि लिखता है —

चरणधर्या जब मातजी, जब सों इह पुर आई।
तब सौं यह पुर की दशा, दिवस दिवस अधिकाई।।८८।।

बादशाह से सम्मान

हीरानंद शाह के सात पुत्रों में मानिकचंद ही सबसे अधिक अग्रगामी और व्यापार-कुशल थे इन्होंने अपनी अद्भुत बुद्धि. वैभव की धाक तत्कालीन बंगाल के नाजिम और दीवान पर जमा दी थी इससे वे उनके बहुत ही विश्वासपात्र मित्र व सहायक बन गए मानिकचंद पहले ढाका में रहते थे, बाद में वे जाफरखां (बाद में मुर्शिदकुलीखां) के साथ मकसूदाबाद (मुर्शिदाबाद) आकर बस गए दीवान ने इनको राजस्व की उगाही और टकसाल (Mint) का काम सौंपा इन्होंने अपनी कोठी भागीरथी (गंगा) के तटवर्ती महिमापुर नामक स्थान पर खोली और वहीं पर सब लेन-देन करते रहे जब दिल्ली के तख्त पर फर्रुखसियर बैठा तो उसने भी इनसे सहायता मांगी और इन्होंने उसकी खूब मदद की. इसी से प्रसन्न होकर बादशाह फर्रुखसियर ने इन्हें 'सेठ' की पदवी से विभूषित किया और पैर में सोना पहनने का अधिकार दिया सम्राट फर्रुखसियर-माणिकदेवी के उच्च आदर्शमय जीवन की कहानी सुन चुका था इसी से प्रसन्न हो उसने इन्हें बहुमूल्य आभूषण प्रदान कर 'सेठानी' के पद से विभूषित किया

सेठ मानिकचंद का स्वर्गवास

वि. सं. १७७१ माघ वदी ५ गुरुवार को सेठानी माणिकदेवी का सुहाग लुट गया और वह विधवा हो गई. किन्तु होनहार को कौन टाल सकता है. यह नर देह नश्वर है—यही समझ धर्म-परायण सेठानी माणिकदेवी ने अपने दिल को सान्त्वना दी और उन्होंने अपना शेष जीवन धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत करने का निश्चय किया इसके सम्बन्ध में श्री पारसनाथसिंह लिखते हैं, "माणिकचंद की पहली स्त्री (माणिक देवी) पति मरने के बाद बहुत दिनों तक जीवित रही. बड़ी परोपकारिणी थी और उसका अधिकांश समय धर्म ध्यान में ही व्यतीत होता था."

तब ही न छंडया मात जीरे लाल,
अपना व्रत पच्चक्खाण रे।।१०१।।

जैन दर्शन में दान, शील, तप और भावना इन चार को धर्म का प्रधान अंग माना गया है इन चारो को धारण करने वाला निस्देह मोक्षगामी जीव होता है. कवि निहाल ने ये चारों ही धर्म माणिक देवी के जीवन में पिरोये हुए देखे, इस लिए वह लिखता है

दान शील तप भावना रे लाल, धर्म ना चार प्रकार रे।
माताजी नी देह मेरे लाल, पूरा देख्या धार रे।।१०४।।
इन्द्राणी सम सुखिया रे लाल, सो राजा सम राज रे।
तेह तणी ममता तजी रे लाल, जपिया श्री जिनराज रे ।।१०५।।

साहित्य प्रेम

धर्म, भक्ति, सेवा के अतिरिक्त माणिक देवी की साहित्य में भी रुचि थी इनकी प्रेरणा से एक कवि ने "भूपाल चतुर्विंशतिका" नामक ग्रथ का निर्माण किया था इस ग्रंथ की सचित्र प्रति में तथा अन्य एक ग्रंथ मे अपने परिवार की वंशावली सम्बन्धी ज्ञातव्य बातों को माणिक देवी ने लिखवाया जो वि० सं० १७७७ मिती फागुन वदी २ को पूरा हुआ था

परिवार

एक अंग्रेज लेखक ने लिखा है-
"HAPPY IS HE, WHO HAS CHILD IN HIS HOME."

अर्थात सुखी वही है, जिसके घर में बच्चा है. इस प्रकार माता माणिक देवी का पारवारिक जीवन भी बहुत सुखी था इनके पुत्र, पौत्र और पौत्रियो से घर भरा- पूरा था इनके पुत्र जगत्सेठ फतेहचंद बड़े मातृ- भक्त थे इन्होने माता के सभी अभिग्रहो को पूराण किया था जगत्सेठ की मातृ -भक्ति के बारे में कवि कहता है--

हुकम कयहुँ मेटे नहीं, मात तणो जग सेठ।
तीन वार दिन प्रति करे, चरण कमल की भेंट।।१०७।।
रात मांगे सहस्र दीये, सहस्र कहे दे लक्ष।
माता ने माने सदा, परमेसर परतक्ष।।१०८।।

स्वर्गवास

माता माणिक देवी का स्थूल शरीर घोर तपश्चर्या के कारण सूखकर कांटा हो गया था. उन्होंने अपनी शेष आयु दान पुण्य के कार्य मे विशेष उदारता बरती एक वर्ष तक निरन्तर सोने की मोहरे दान की तथा अपनी 'लाहण' भी सोने की ही मोहरो से की इसके विषय मे कवि लिखता है--

मुहर मुहर लालण करी, जगत बडो जस लीन।
ऐसी करणी आज लग, दूजो किणही न कीन।।१११।।

अंत समय अनशन धारण कर माता माणिक देवी सं० १७६८ मिति पोह वदी १ रविवार पुष्य नक्षत्र में अपना भौतिक देह त्याग कर स्वर्ग सिधारी

हजारों घर होते वहां प्रति घर एक या दो रुपया इकट्ठा कर हजारों रुपये इकट्ठे हो जाते, और वह असहाय- असमर्थ स्वधर्मी को देकर उसे अपने बराबर श्रेष्ठिवान बना लेते.

स्वधर्मी बंधु की सेवा शास्त्रोक्त समझ कर जगत्सेठ परिवार भी उन दिनों माता माणिक देवी की प्रेरणा से तन,मन और धन से मदद करता था. फलतः मुर्शिदाबाद में जहां केवल दो चार घर ही जैनों के थे, वहां माता माणिक देवी की प्रेरणा और मदद से हजारों जैन ग्रहस्थ वहां आकर बस गये. इन्होंने लाखों रुपये स्वधर्मी बंधुओं की सेवा में व्यय किये. जिसका हृदयग्राही वर्णन कवि इस प्रकार करता है –

देस बंगाले नहु हुता, देसरा अस पोसाल।
पुन्य प्रसाद मातातणें, घर घर थया विसाल।।८४।।
जैनी होते नग्रमें, आगे घर दो व चार।
सो प्रसाद मातातणें, श्रावक भये हजार।।८५।।
जो नर आए देश के, अन धन वस्त्र विहीन।
तिणकु मावाजी तुरत, सहस्त्रपती कर दीन।।८६।।
रजत कनक नी मुद्रिका, पहिरी नहीं जिण नार।
सो प्रसाद मातातणें, लड़ी कनक के भार।।८७।।

माता माणिक देवी की दान मुग्धता पर प्रसन्न होकर आगे कवि लिखता है–

कर्ण भोज विक्रम भए, सतजुग में दातार।
कलियुग में माणिक दे जिसी, देखी नहीं संसार।।८८।।

तप साधना

सती साध्वी माणिक देवी जिन धर्म में अटूट श्रद्धा रखने वाली थी. वह परोपकारिणी के अतिरिक्त एक महा तपस्विनी भी थी. जैन धर्म में तपश्चर्या का अधिक महात्म्य है. जैन धर्म तप से कर्म- निर्जरा और कर्म- निर्जरा से ही मोक्ष मानता है. वह अध्यात्ममार्ग का साधन ज्ञान, दर्शन, चारित्र, और तप के द्वारा ही मानता है. इसी से शास्त्रों में कहा है–

नाणं च दंसणं चेव, चरितं च तवो तहा। एयमग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सुग्गई।।

अर्थात्– ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप इस साधना चतुष्टय रूप अध्यात्म मार्ग को प्राप्त होकर मुमुक्षु जीव मोक्ष रूप सद्गति को पाते हैं.

सतयुग में धन्ना अणगार और कलियुग में पूंजा ऋषि की तपस्या के उदाहरण माणिक देवी के दिल में घर कर गये. उन्होंने जैन धर्म के बीस स्थानक तप, रोहिणी तप, बीस विहरमान तप, चौबीस पंच कल्याणक तप, ग्यारह अंग तप, वार्षिक तप और मासिक तप आदि अनेक तपों की आराधना कर उन्हें उद्यापन (उजमन) के साथ पूरा किया. माता माणिक देवी ने सैकड़ों उपवास, बेले (छट्ठ), तेले, चोले तथा अठाइयां आदि तपों की घोर तपश्चर्या निरन्तर की. अपने वैधव्य के २७ वर्ष उन्होंने तपश्चर्या में ही व्यतीत किये. एक असाधारण वैभवशाली जगत्सेठ की माता होकर जिसके यहाँ किसी वस्तु की कमी नहीं थी– उसकी तपश्चर्या का लेखा जोखा देखने से दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ती है. आजकल भी हम देखते हैं कि स्त्रियों में पुरुषों की बनिस्बत अधिक तपश्चर्या करने की भावना एवं शक्ति होती है. इसी घोर तपश्चर्या से माता माणिक देवी का शरीर अस्थिपंजर हो गया. कवि ने माणिक देवी की तपश्चर्या का वर्णन बड़ी ही हृदयग्राही मार्मिक शैली में किया है:

दुष्कर व्रत करतां थकां रे मात,
तन रह्यो अस्थि समान रे।

हो रहा है। किन्तु यह गुरु विजय वल्लभ सूरि के आशीर्वाद का चमत्कार ही था कि धडाबन्दी खत्म हुई और पूज्य गुरुदेव की नगर आगमन की शोभा यात्रा व भगवान की सवारी सत्ताईस गुवाडों में से गुजरी। सबने जय-जयकार किया। इस सवारी-यात्रा के साथ ही वर्षों की धडाबन्दी खत्म हुई। इस कार्य को सम्पादन कराने में स्वर्गीय सेठ भंवरलालजी रामपुरिया को भुलाया नहीं जा सकता। गुरु विजय वल्लभ के आशीर्वाद से वे सफल हुए। आज भी प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन सत्ताइस गवाड वाले मिलकर प्रभु की जय बोलते हैं और भगवान की सवारी साथ में कंधे से कधा मिलाकर निकालते हैं। ऐसे थे हमारे युगवीर आचार्य विजय वल्लभ सूरि।

आचार्य श्री हृदय से जैन एकता के हामी थे। राग-द्वेष उन्हे छुआ भी नहीं था। सब को समभाव से देखते थे।

मुझे यह दृश्य आज भी याद है। बीकानेर की ही घटना है कोचरो के चौक में एक महती सभा में खरतरगच्छ साध्वी विदुषी श्री विचक्षण श्री जी की विद्वता- पूर्ण व्याख्यान शैली से आप इतने प्रभावित हुए और पिता तुल्य वात्सल्य भाव से आचार्य श्री ने कहा – "वास्तव मे साध्वी विचक्षण श्री जी हमारे समस्त जैन समाज की 'जैन-कोकिला' हैं, और भारत मे जो स्थान 'भारत कोकिला' श्रीमती सरोजनी नायडू को है वही स्थान समस्त जैन समाज में साध्वी विचक्षण श्री का होना चाहिए। गुरुदेव की भविष्यवाणी सही निकली। आज भी जैन सांध्वीयों मे श्री विचक्षण श्री जी के समकक्ष विद्वान् व व्याख्याता नहीं है।

"साढे चौबीसवे अवतार महावीर हो गये" पंजाबी भाइयों के यह शब्द आज भी मेरे कानो को गुजायमान कर रहे हैं।

"वल्लभ सुमनांजली" वि.स. २०२७ पृ. ४६

दा दा जी

कतिपय चमत्कारिक अनुभव

'दादा' नाम बड़ा आदर सूचक शब्द है। परिवार में दादा ही परिवार-प्रमुख होता है। कहा तो यहाँ तक गया है कि पोतों के बाप अलग-अलग हो सकते हैं किन्तु 'दादा' सबका एक ही होता है। राजस्थान में बाप के बाप को दादा कहते हैं और बंगाल में बड़े भाई को 'दादा' कहते हैं। और कहीं दादा को 'दा' भी कहते हैं।

जैनधर्म में अनेकों प्रभावशाली आचार्य, उपाध्याय, एवं मुनिगण हो गये हैं। कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य, श्रीहरिभद्रसूरि, नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरि, अकबर प्रतिबोधक श्री विजयहरिसूरि, महाकवि समयसुन्दर आदि अनेकों युगप्रधान पुरुष हुए हैं किन्तु 'दादा' नाम का विशेषण सिर्फ चार ही जैनाचार्यों को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

व्यक्तित्व एवं उपसंहार

इस प्रकार माता माणिक देवी के जीवन का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वे अत्यन्त धार्मिक वृत्तिवाली सदगृहस्थ थीं. जैन धर्म व जिन पूजा पर उन्हें अटूट श्रद्धा तथा भक्ति थी. दातार होने के अतिरिक्त वे एक महान तपस्विनी भी थीं. माणिक देवी ने श्राविका के सब व्रतो को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप देकर अन्य श्राविकाओं के वास्ते एक आदर्श उपस्थित किया है. इसी कारण वे" आदर्श श्राविका " हैं. लक्ष्मी पुत्री होने पर भी गर्व तो उन्हें छू तक नहीं गया था. उन्होंने सदां दीनों की सेवा सुश्रूषा की. स्वधर्मी बंधुओं के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इसकी शिक्षा हमें माणिक देवी के जीवन से मिलती है. इन सब बातों पर विचार करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सती साध्वी माणिक देवी का अनुकरणीय जीवन एक अखण्ड़ चिराग की जलती हुई ज्योति हैं, जिसका प्रकाश सदां अंधेरे में भटकने वाली हमारी माताओं तथा बहिनों को पथ- प्रदर्शन करता रहेगा.

"जैन जगत" मासिक, पूना
वर्ष ८ अंक ६-७

नवम्बर, १९५४

साढे चौबीसवें अवतार

आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि जी के बीकानेर प्रवास की ये घटनाएं आज भी स्मृति पटल पर बार- बार उभर आती हैं। जिस दिन आचार्य जी ने बीकानेर नगर में पदार्पण किया उसी दिन से बीकानेर की गली- गली में यह गीत गुंजायमान हो गया:

"संवत् बीसा, आये सूरिशा घर घर मंगलाचार"

बीकानेर का जैन समाज आपस की धड़े बन्दियों व रूढ़िवादियों का शिकार हो रहा था। ओसवालों के २७ मोहल्लों में दो धड़े थे। १३ गवाड़ १४ गवाड़। १३ गवाड़ वाले जो भगवान् की सवारी निकालते थे वह १४ में नहीं आ सकती थी, और १४ वालों की सवारी १३ गवाड़ में। दोनों धड़े भगवान महावीर के अनुयायी, सामाजिक दृष्टि में सब एक, आपस में रोटी-बेटी का व्यवहार, पर भगवान की सवारी जल-यात्रा निकलने में पाबन्दी; पुराने पट्टे परवानों के आधार पर यह कैसी बिडम्बना थी। आचार्य श्री ने जब यह आपस का कलह देखा तो उनके कोमल हृदय पर गहरी चोट लगी। उन्होंने समझा आज जैन एकता की कितनी जरूरत है और बीकानेर का जैन समाज वही पुराण-पन्थियों का शिकार

के चुनाव के बाद अध्यक्ष के चुनाव में गुरुकृपा से उत्तर प्रदेश के प्रमुख उद्योगपति श्री रामबाबू लाल जी (बिजली मील) सफल हुए और उन्होंने हाथरस दादाबाडी में श्रद्धा भाव में पूजा प्रभावना की।। ऐसा ही एक अवसर सन् १६६७ के साधारण चुनाव में आया और बिल्कुल नवीन चेहरा चौधरी नेता कुवर श्री रामशरण सिंह विधान सभा के चुनाव मे ११ उम्मीदवारों को हराकर सफल हुए और उन्होंने भी भक्ति भाव से दादाजी की पूजा,कराई एव गुरुभक्त बने। ऐसे एक नहीं, अनेको प्रसग आये – गुरुकृपा से "दादा" ने मेरी लाज रखी। हाथरस मे सन् १६६६ मे "काका हाथरसी" का स्वर्ण–जयन्ती कार्यक्रम था– १५–२० हजार की भीड कवि सम्मेलन मे होने की उम्मीद होने लगी। उस दिन छात्रों का आंदोलन चल रहा था। काकाजी (श्री प्रभूलाल जी गर्ग) मुझसे बोले – "बाँठियाजी, इतना बडा काम निर्विघ्नता से कैसे सम्पन्न होगा–संयोजक आप हैं, कहीं हो– हल्ला न हो जाय सब मजा किरकिरा हो जावे और बदनामी आपके सिर आवे।" मैंने आत्मविश्वास के साथ दृढता से काकाजी को कहा– आप दादाबाड़ी का दर्शन, श्रद्धापूर्वक कर आवे, सब काम गुरुदेव कृपा से ठीक होगा। सो हुआ भी वैसा ही। उस कविसम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे सुप्रसिद्ध कवि श्री हरिवशराय 'बच्चन'।

दादा गुरुदेव तो महान् आध्यात्मिक योगी– युग–प्रधान सन्त पुरुष थे। पग–पग पर दादाजी की अलौकिक प्रतिभा का आभास मिलता है। वि सं २०१३ मे प्रथम दादा श्री जिनदत्तसूरिजी के निर्वाण का अष्टम शताब्दी महोत्सव अजमेर में मनाया गया था और २०२७ में द्वितीय दादा मणिधारी जी का अष्टम निर्वाण शताब्दी महोत्सव महरोली (दिल्ली) मे मनाया गया। इनके विषय मे अनेको जन सम्वाद प्रसिद्ध हैं। अल्पकालीन जीवन में भी आपने जो जैन धर्म की अनूठी सेवा की, वह भुलाई नहीं जा सकती। यह मणिधारी जी की कृपा है– दिल्ली इतना सुख– समृद्धि का नगर बन गया है।

परम योगिराज सिद्ध–पुरुष श्री सहजानन्दघनजी महाराज (संस्थापक–श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, हम्पी) वि स २०१६ मे महरोली मणिधारीजी दादावाडी में पधारे थे– तीन दिन उनकी सेवा मे रहने का मुझे भी सुअवसर मिला था। इस स्थान की अलौकिकता को देखकर कहा – "काश, सिद्धक्षेत्र की जो रचना की गयी है उसके नीचे अगर गुफा होती तो मै अपना आसन यहाँ ही लेकर बैठ जाता।" महरोली दादाजी का पुजारी बडा सेवाभावी व सरल है। उसने गुरुदेव से प्रार्थना की – मुझे इतने वर्ष सेवा पूजा करते हो गये – मणिधारी जी के दर्शन नहीं हुए। उस वक्त हम ८–१० व्यक्ति थे – सबको कहा गया आँख बद कर गुरुदेव का ध्यान लगाओ। १० मिनट बाद पुजारी बोल उठा–"गुरुदेव मणिधारीजी के दर्शन हो गए। श्वेत वस्त्रधारी आभासहित ध्यानस्थ विराजमान थे।" दो वर्ष पहले मैं हम्पी गया था, जहाँ पूज्य सहजानन्दजी महाराज ने हम्पी दादावाडी के लिए जिनदत्तसूरि दादाजी की ध्यानस्थ प्रतिमा बनवायी थी। मुझे यह पसन्द आई, मन मे विचार आया–इसे हाथरस ले चलू। इतने में ही स्वत पूज्य गुरुदेव ने फरमाया–"हजारीमल, इसको तुम हाथरस दादावाडी मे विराजमान कर देना–प्रतिष्ठा जब कभी आवेगे तो हो जावेगी–फिलहाल ३ नवकार मत्र जप कर मदिर मे सोमवार को विराजमान कर देना।" उस मूर्ति को लाने के लिए पूज्य गुरुदेव ने स्वय पैक कर पेटी मे बद कर दी। सकुशल मैं हाथरस ले आया। किन्तु आज उसकी प्रतिष्ठा कराने योग्य युगप्रधान योगीन्द्र गुरुदेव सहजानन्दघनजी महाराज विद्यमान नहीं रहे। यदि वे होते तो कितना आनन्द उल्लास होता व प्रेरणा मिलती–मार्गिक आत्मार्थियो को अपना आत्म–ज्ञान प्राप्त करने की।

जिनदत्तसूरि स्मारिका,
कलकत्ता, वि.सं. २०२६

ये दादा हैं – (१) युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि (२) मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि (३) दादा जिनकुशलसूरि एवं (४) दादा अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि हुए। और इसकी भी एक विशेष परम्परा रही कि चारों 'दादा' एक ही पीढ़ी में श्वेताम्बर जैन समाज के खरतरगच्छ समुदाय में हुए।

खरतरगच्छ का प्राचीन इतिहास बड़ा गौरवशाली रहा है। इस गच्छ मे अनेक बड़े–बड़े प्रभावशाली आचार्य, बडे–बडे विद्यानिधि उपाध्याय और बडे–बडे मांत्रिक–तांत्रिक, ज्योतिर्विद्, वैद्यक– विशारद आदि कर्मठ यतिजन हुए जिन्होंने अपने समाज की उन्नति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने में बड़ा भारी योग दिया। खरतर विद्वानों की हुई यह साहित्योपासना न केवल जैनधर्म की ही दृष्टि से महत्वशाली है, अपितु समुच्चय भारतीय संस्कृति के गौरव की दृष्टि से भी उतनी ही महत्ता रखती है। खरतरगच्छ की इस महान् देन की भूरि–भूरि प्रशंसा पुरातत्वाचार्य पद्मश्री मुनि जिनविजयजी ने 'कथाकोष' प्रकरण की प्रस्तावना में मुक्त कंठ से की है।

लाखों अजैनों को दया– धर्म का पाठ पढ़ाकर नूतन जैन बनाकर जैन धर्म में प्रतिष्ठित करने व अधिकाश श्रेय इन्हीं चार 'दादा' संज्ञक आचार्यो को है। ओसवाल जाति मे विभिन्न गोत्रों की स्थापना इन्हीं दादाजी ने की। युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि ने ५७ गोत्रों की स्थापना कर उन्हें जैन– धर्मी बनाया। आज चाहे उन गोत्र वालों में से कुछ स्थानकवासी, तेरापन्थी, या तपागच्छीय बन गये हो किन्तु उनको जैन बनाने का श्रेय इन चारों 'दादा' गुरुओं को ही है।

आज सैकड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी "दादा" के नाम व जप में चमत्कार है। जो ध्याता है, वह पाता है। 'चमत्कार को नमस्कार' के कारण ही भारत मे कोने–कोने में जैन दादाबाड़ियों का निर्माण हुआ। आज कोई भी ऐसा जैन बस्ती का गांव या शहर नहीं है जहाँ दादावाडी न हो और इन चार 'दादा' संज्ञक आचार्यो की चरणपादुका न हों। शहर में तो घनी आबादी से दूर एकान्त में ध्यान, मनन, भ्रमण करने के लिए बड़ी विशाल दादाबाड़ियाँ बनायी गयीं। कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, आगरा एवं दिल्ली की विशाल दादावाडियाँ इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। जब दादाबाड़ियों का निर्माण हुआ तो बिना किसी भेद–भाव के सभी जैनों के ये श्रद्धा के केन्द्र थे। किन्तु आज कुछ सम्प्रदायवादी अपने समुदाय के व्यर्थ मोहान्धकार में फंस कर इनका तिरस्कार कर दादावाड़ियों के तोड़ मरोड में लगे हुए हैं। किन्तु ऐसा करना उचित नहीं है और ऐसे लोगों को स्मरण रखना चाहिये–उनके बाप के बाप से 'दादा' ही थे।

और तो और, आपको यह जानकर महान आश्चर्य होगा कि हाथरस जैसे छोटे शहर में जहाँ ओसवालों के सिर्फ ३ घर ही थे – तो भी 'दादा' के चमत्कार व भावभक्ति से प्रेरित होकर उन्होने आज से ४० वर्ष पहले ही दादावाड़ी का निर्माण करा दिया था। हाथरस दादावाड़ी को बोहरे मोहकमचंदजी ने बनाया और स्व. आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरि ने इसकी वि.सं. १६८८ माघ सुदी ११ को प्रतिष्ठा कराई।

मेरे जीवन पर तो 'दादाजी' के नाम का बहुत ही प्रभाव पडा है। जब से मैंने दादाजी की शरण ली, मेरे तो नवनिधि और आठ सिद्धि हो गयी। हाथरस में रहते मेरा व मेरी पत्नी का सुप्रभात दैनिक कार्यक्रम 'दादाजी' के दर्शन से ही शुरू होता है। जीवन मे कभी कल्पना ही नहीं थी कि मैं भी हाथरस में दादावाड़ी नगर व दादावाडी रोड की स्थापना कर सकूंगा। मैंने जो चाहा व चाहता हूँ भौतिक या आध्यात्मिक सब गुरु कृपा से काम सफल होते हैं। हाथरस में मेरा छोटे से लेकर बडों, सभी से स्नेह व प्रेम है, सभी आदमी अपनी आकांक्षा लेकर मेरे पास आते हैं तो उनको मेरा एक ही सुझाव रहता है – 'दादावाड़ी' दर्शन गुरु भक्ति करो, सभी कार्य सिद्ध होंगे। और वह देर– अबेर सभी सफल हो जाते हैं। जीवन में अनुभव किया–जिसने भी दादाजी की शरण ली, उसका बेड़ा पार येन– केन प्रकारेण लग ही गया।

सं. २०१४ में प्रथम बार हाथरस के नगर– पालिका चुनाव में मैं खड़ा हुआ था। नया–नया आदमी था। सभी आदमी यहाँ तक मेरे घर वाले भी कहते थे – बाँठियाजी चुनाव में हार जावेंगे। मेरा हाथरस के प्रख्यात वकील से सीधा मुकाबिला था। किन्तु मुझे 'दादा गुरु' ने प्रेरणा दी तूं अवश्य खड़ा हो, इस सार्वजनिक सेवा के माध्यम से जनता की सेवा कर, अवश्य सफल होगा। सफलता मिली – यह मेरे राजनैतिक जीवन का प्रथम प्रभात था। नगर– पालिका

दिखाने में बहुत सहयोग दिया था। इसी के आधार से गुजराती अनुवाद मोतीलाल गिरधरलाल कापडिया ने सन् १९३४ में बम्बई से प्रकाशित किया और उसके बाद स्वनाम धन्य मुनि जिनविजयजी ने डा० बूल्हर की जर्मन भाषा की पुस्तक को अनेक नवीन अन्वेषणों के साथ सिंघी जैन ग्रंथ माला से प्रकाशित किया।

आचार्य हेमचन्द्र का जन्म गुजरात के अहमदाबाद जिले मे धंधूका नगर में वि० सं० ११४५ में श्रीमाल जाति के मोढ बनिये बाचिग के यहां मिती कार्तिक शुक्ला १५ को (सन् १०८८ या ८९ के अक्टूबर या नवम्बर में) हुआ। माता पाहिणी अत्यन्त श्रद्धावान श्राविका थी। एक दिन उसने स्वप्न देखा, कि वह अपने धर्म गुरू देवचन्द्र को चिंतामणि रत्न भेट कर रही है। यह बात गुरू से कही तो उन्होंने कहा– तुम्हारे कौस्तुभ मणि के समान पुत्र–रत्न होगा। माता ने हेमचन्द्र का नाम चांगदेव रखा। जब वह पाँच वर्ष का था तो वह मां के साथ मंदिर गया। मदिर मे ध्यानस्थ बैठे गुरू श्री देवचन्द्रजी की पीठ पर चढ कर चांगदेव बैठ गया। यह देखकर मुनि श्री देव चन्द्र जी ने पाहिणी को सपने की बात याद दिलाई तो उसने चांगदेव को गुरू महाराज को भेंट कर दिया। वे बालक चांगदेव को लेकर खंभात गये। वहां पार्श्वनाथ मंदिर मे वि० स० ११५० माघ शुक्ला १४ को दीक्षित कर उसका नाम सोमचन्द्र रखा। दीक्षा का सारा प्रबंध मंत्रीश्वर उदयन ने किया। सोमचन्द्र की बडी दीक्षा वि० सं० ११५४ में हुई। बालमुनि सोमचन्द्र असाधारण बुद्धि के थे। उन्होंने देवी सरस्वती की आराधना की। देवी ने प्रसन्न होकर उनको सब ज्ञान दे दिया और वे कलिकाल सर्वज्ञ बन गये। गुरू के दिवंगत हो जाने के पश्चात् मुनि सोमचन्द्र आचार्य हेमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे साक्षात् सरस्वती पुत्र थे। आचार्य हेमचन्द्र ने जयसिह सिद्धराज एवं महाराजा श्री कुमारपाल के कहने से अनेक महत्वपूर्ण ग्रथों की रचना की। कहा जाता है हेमचन्द्राचार्य ने साढे तीन करोड श्लोक प्रमाण ग्रथों की रचना की। न्याय, दर्शन, योग, व्याकरण, आगमो पर संस्कृत टीका, छन्द, काव्य–शास्त्र आदि सभी विषयो पर अनेक ग्रंथ लिखे। आचार्यश्री वि० सं० १२२९ में दिवगत हो गए।

डा० जी० बूल्हर के ग्रथ का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हो गया परन्तु हिन्दी भाषा में हेमचन्द्रचार्य पर कोई प्रामाणिक जीवन चरित्र नहीं था। उसकी पूर्ति स्व० कस्तूर मल जी बाठिया, अजमेर वालो ने सन्० १९६४ ई० में कर दी, जो चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी से सन् १९६७ मे छपा है। विद्वान अनुवादक ने महत्वपूर्ण प्रस्तावना लिखी है साथ मे डा० ज्यार्ज बूल्हर का संक्षिप्त परिचय भी दिया है। इसका संशोधित मूल्य पन्द्रह रूपया मात्र है।

डा० ज्यार्ज बूल्हर का जन्म जर्मनी के हैनोवर राज्य के नीअनवर्ग नगर के निकट बोरस्ट गांव में एक पादरी के घर दिनाक १८ जुलाई १८३७ को हुआ था। बचपन से ही इनको संस्कृत के प्रति प्रेम था। सन् १८५८ में गाटिंगन विश्वविद्यालय से वेदो के अध्ययन पर थीसिस लिखकर पी–एच डी की डिग्री प्राप्त की। लंदन मे इनकी भेंट संस्कृत के विशिष्ट विद्वान प्रो० मैक्समूलर से हो गई। उनकी सद् प्रेरणा से वे भारत में बम्बई आए और ऐलफिंस्टन कालेज मे प्राध्यापक हो गए। डा० हरमन जेकोबी जब जर्मनी से भारत आए, तो उनके साथ गुजरात एवं राजस्थान के जैन ज्ञान भडारो का निरीक्षण किया। जैन धर्म एवं आचार्य हेमचन्द्र के साहित्य का गम्भीर अध्ययन करके वे जैन धर्म एवं आचार्य हेमचन्द्र से बहुत प्रभावित हुए। इसीलिए उन्होने हेमचन्द्राचार्य का जर्मनी भाषा में जीवन चरित्र लिखा। भारतीय जलवायु, कठिन परिश्रम और अविकसित मार्गो पर निरंन्तर दौरा करते रहने से वह अस्वस्थ हो गए और अवकाश प्राप्त कर सन् १८८० में अपने देश लौटने को मजबूर हो गये। वहा जाकर वियना विश्वविद्यालय में संस्कृत और भारतीय विद्या के प्रोफेसर के रूप मे कार्य सभाला। वे भारत के संस्कृत के विद्वान पंडितों का बहुत मान करते थे। उन्होने विदेशी विद्वानो को जैन धर्म का अध्ययन करने की प्रेरणा दी और सन् १८८७ में अपने निजी अध्ययन का परिणाम "इडियन टेक्स्ट ऑफ जैनाज" शीर्षक से प्रकाशित किया। गहन अध्ययन के परिणाम स्वरूप वह बौद्ध धर्म से जैन धर्म की प्राचीनता के निर्णय पर पहुँचे। यह कहना जरा भी अतिशयोक्ति युक्त नहीं है कि जैन समाज इस विषय में उनका अत्यन्त ऋणी है। उनका निधन ६१ वर्ष की आयु में नाव दुर्घटना में ८ अप्रेल १८९८ को लिंडला (स्विट्जरलैण्ड) मे हो गया।

"श्री अमर भारती" राजगृह
मई, १९८९

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र और डा0 ज्हवान ज्यार्ज बूल्हर

भगवान महावीर के निर्वाण के बाद जैनाचार्यों में हेमचन्द्र ऐसे ज्योतिर्धर आचार्य हुए हैं जो "कलिकाल–सर्वज्ञ" नाम से सुप्रसिद्ध हुए। गुजरात गौरव चालुक्य सम्राट जयसिंह सिद्धराज तथा सम्राट कुमारपाल को जैन धर्म की शिक्षा–दीक्षा देकर श्रद्धावान बनाना, यह हेमचन्द्राचार्य जैसे आचार्य की ही प्रज्ञा एवं विचक्षण बुद्धि का चमत्कार था।

महावीर चरित्र में हेमचन्द्र तीर्थंकर महावीर द्वारा कुमारपाल के राज्य के सम्बन्ध में मगध सम्राट श्रेणिक के पुत्र महामंत्री अभय कुमार के समक्ष भविष्य कथन कहते हैं, जिसमें उनका नाम भी आता है और सम्राट से किस प्रकार उनका प्रथम साक्षात्कार हुआ था, वह भी वर्णन है। अनहिलवाढ के वर्णन के बाद भगवान महावीर कहते हैं–

हे अभय, जब मेरे निर्वाण को १६६६ वर्ष व्यतीत हो जायेंगे, तब उस नगर अनहिलवाढ में चौलुक्य वंश का चन्द्रमा, विशाल भुजा वाला राजा कुमारपाल, तेजस्वी शासक होगा।– ४५,४६.

वह भद्रात्मा धर्मनिष्ठ दानवीर, युद्धवीर, प्रजा की पिता के समान रक्षा करता हुआ उन्हें सम्पन्नता के शिखर पर पहुँचाएगा। ४७

एक समय यह राजा वज्रशाखा के मुनिचंद की परम्परा में होने वाले मुनि हेमचन्द्र का दर्शन करेगा। ५३

उनके दर्शन कर ऐसा प्रसन्न होगा, जैसे मेघ को देखकर मयूर प्रसन्न होता है। और, यह भद्रआत्मा इस गुरू को प्रतिदिन वंदन करने को आतुर रहेगा। ५४

उनके मुख से विशुद्ध धर्म–देशना सुनकर प्रसन्न होगा और सम्यकत्व पूर्वक अणुव्रतों को स्वीकार करेगा। ५७

यह बोधि प्राप्त श्रावकाचार में पारंगत होकर, श्रद्धानिष्ठ रहकर धर्म–गोष्ठि से अपने को सदा प्रसन्नचित्त रखेगा। ५८

आचार्य हेमचन्द्र के जीवन– चरित्र के मुख्य आधार चार प्रचीन ग्रंथ हैं। हेमचन्द्र के स्वर्गवास के ८० वर्ष बाद में श्री प्रभाचन्द्र और प्रद्युम्नसूरि द्वारा लिखा गया "प्रभावक चरित्र" जो १२५० ई० में लिखा गया। दूसरा ग्रंथ मेरुतुंगाचार्य द्वारा लिखित ग्रन्थ "प्रबन्ध चिंतामणि" जो सन् १३०५ ई० में लिखा गया। तीसरा ग्रंथ है– श्री राजेश्वर द्वारा रचित "प्रबंध कोष" जो सन् १३४६ ई० में लिखा गया और चौथा ग्रंथ –श्री जिन मंडल उपाध्याय द्वारा रचित "कुमार पाल चरित" सन् १४३५ ई० में लिखा गया। इसके बाद अनेक कवियों एवं विद्वान् मुनियों ने कुमारपाल के रास एवं चरित्र संस्कृत में लिखे हैं जिनमे हेमचंद्राचार्य के जीवन के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी गयी है।

किन्तु इधर १०० वर्षों में हम प्रायः हेमचन्द्राचार्य को भूल से गए थे। सबसे पहले ध्यान जर्मनी के डा० जी० बूल्हर का गया। सुप्रसिद्ध जर्मनी के विद्वान हर्मन जेकोबी के साथ राजस्थान और गुजरात के ज्ञान भंडारो में हेमचन्द्राचार्य रचित ग्रन्थों का डा० बूल्हर ने सर्वेक्षण व अनुसन्धान किया, तो वे हेमचन्द्राचार्य के जीवन से बहुत प्रभावित हुए और पाँच सौ से अधिक प्राकृत एवं जैन ग्रन्थों को खरीद कर बर्लिन विश्वविद्यालय भेज दिए और बर्लिन में जैन भाषा–विज्ञान केन्द्र खोल दिया। और उन्होंने जर्मनी भाषा मे हेमचन्द्राचार्य का जीवन चरित्र लिखकर सन् १८८६ ई० में बर्लिन से प्रकाशित किया और उसकी एक नकल प्रवर्तक मुनि कान्ति विजय जी को भेजी क्योंकि उन्होंने ज्ञान भंडार

आचार्य हरिभद्र वैदिक दर्शन के पारगामी विद्वान तो थे ही फिर भी उन्होने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि यदि किसी दूसरे धर्मदर्शन को मैं समझ न सका तो मैं उसी का शिष्य बन जाऊँगा। एक बार रात्रि को राजसभा से लौटते समय राज पुरोहित हरिभद्र जैन उपाश्रय के निकट से गुजरे। उपाश्रय में साध्वी संघ की प्रमुखा'महत्तरा याकिनी' निम्न श्लोक को स्वर लहरी में जाप कर रहीं थी–

'चक्कि दुगं हरिपणगं,
पणगं चक्कीण केसवो चक्की।
केसव चक्की केसव,
दुचक्की केसीय चक्किथा।

राजपुरोहित हरिभद्र ने यह श्लोक सुना तो उनको कुछ भी समझ मे नहीं आया तो अर्थ–बोध पाने की लालसा में उपाश्रय में प्रवेश कर याकिनी महत्तरा से इसका अर्थ पूछा तो उन्होंने कहा, इसका अर्थ तो मेरे गुरू श्री जिनदत्तसूरि ही बता सकते हैं।

जब गुरू के पास प्रात काल हरिभद्र गये तो जिनदत्तसूरि ने कहा– जैन मुनि बनने पर ही इसका अर्थ समझ में आयेगा। तब तत्काल राजपुरोहित हरिभद्र ने जैन मुनि बनना स्वीकार कर राजपुरोहित से धर्म पुरोहित बन गए। जब इसका अर्थ गुरु से समझ लिया तो जैन शास्त्र ज्ञान की तरफ उनका झुकाव हो गया और अल्प समय मे ही आगम, योग, ज्योतिष, न्याय, व्याकरण, प्रमाण शास्त्र आदि विषयो के महान ज्ञाता और आगमवेत्ता बन गये और कई ग्रथों की टीकाए लिखीं।

हस और परमहंस हरिभद्रसूरि के भांनजे थे। वे भी जैन साधू बन गये। आचार्य श्री के मना करने पर भी वे बौद्ध दर्शन अध्ययन करने बौद्ध मठ मे गये।

जैन छात्र हैं, यह सदेह होने पर बौद्ध प्राध्यापकों ने हस को वहीं मार दिया और परमहंस किसी तरह भाग निकले किन्तु वह भी चितौड़ आकर मारे गये।

अपने दोनो प्रिय शिष्यों के मर जाने से हरिभद्रसूरि को बहुत दुःख हुआ और बौद्धों से बदला लेने के लिए उन्होने १४४४ बौद्ध साधुओ को विद्या के बल से मारने का संकल्प लिया, किन्तु गुरु का प्रतिबोध पाकर हिंसा का मार्ग छोड कर १४४४ ग्रन्थों की रचना का संकल्प लिया और माँ भारती का भण्डार भरने लगे। दुर्भाग्य से इस वक्त ६० करीब ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं। जिनमें से आधे अब तक ही प्रकाशित हुए हैं।

आचार्य हरिभद्रसूरि ने उच्चकोटि का, विपुल परिमाण में विविध विषयों पर साहित्य की रचना की है। उनके ग्रन्थ जैन शासन की अनुपम सम्पदा हैं। आगमिक क्षेत्र में सर्वप्रथम टीकाकार थे। योग विषयों पर भी उन्होंने नई दिशा व जानकारी दी। आचार्य हरिभद्रसूरि ने आवश्यक, दशवैकालिक, जीवाभिगम, प्रज्ञापना, नन्दी, अनुयोगद्वार– इन आगमो पर टीका रचना का कार्य किया।

"समराइच्चकहा" आचार्य हरिभद्रसूरि की अत्यन्त प्रसिद्ध प्राकृत रचना है। शब्दो का लालित्य, शैली का सौष्ठव, सिद्धान्त सुधापान कराने वाली कांत– कोमल पदावली एवं भावाभिव्यक्ति का अजस्र बहता ज्ञान निर्झर, कथा वस्तु की रोचकता एव सौन्दर्य प्रसाद तथा माधुर्य इसका समवेत रूप, इन सभी गुणों का एक साथ दर्शन इस कृति से होता है। इस ग्रन्थ का सम्पादन जर्मन के डा० हरमन जैकोबी ने सन् १९२६ मे किया था जो रायल एशियाटिक सोसायटी कलकत्ते से छपा है। लिखने का सारांश यह है कि लाखों श्लोक परिमाण साहित्य की रचना आचार्य हरिभद्रसूरि ने की है।

आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने भी इतना ही विपुल साहित्य संस्कृत मे रचा है, उनका भी परिमाण लाखों श्लोकों का है। आचार्य हेमचन्द्र का भी पूरा साहित्य उपलब्ध नहीं है। इनकी भी प्रतिभा हेम– सी निर्मल थी।

वे ज्ञान के विपुल भण्डार थे। पाश्चात्य विद्वानों ने तो आचार्य हेमचन्द्र को "ज्ञान– सागर" कह कर सम्बोधित किया है। हेम–शब्दानुशासन व्याकरण और त्रिषष्ठि–शलाका–पुरुष–चरित–आचार्य श्री की अद्भुत रचनायें हैं।

जैनाचार्य
श्री हरिभद्रसूरि और श्री हेमचन्द्र सूरि

जैन साहित्यकाश मे कलियुग–केवली आचार्य श्री हरिभद्रसूरि एवं कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरि दोनों ही ऐसे महान दिग्गज विद्वान आचार्य हुए हैं– किसको 'सूर' कहा जाय किसको 'शशि'– यह निर्णय करना दुष्कर कार्य है। वीर प्रसूता भूमि चितौड़गढ़ में उच्च ब्राह्मण कुल मे जन्मे श्री हरिभद्र चतुर्दश ब्राह्मण विद्याओ में पारगत उद्भट विद्वान थे। इनके पिता का नाम शंकर भट्ट और माता का नाम गंगण या गंगा था। हरिभद्र पंडितों में अपने को अजेय मानते थे। इसलिए चित्रकूट नरेश जितारि ने उनको अपना राजगुरु मानकर राजपुरोहित जैसे सम्मानित पद पर नियुक्त कर दिया था। कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य भी चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज एवं सम्राट कुमारपाल के राजगुरू थे। श्री हरिभद्र सूरि प्राकृत भाषा के पंड़ित थे तो हेमचन्द्राचार्य संस्कृत भाषा के। पुरातत्वाचार्य मुनि जनविजयजी ने श्री हरिभद्रसूरि का समय वि० सं० ७५७ से ८२७ तक निर्णीत किया है और सभी आधुनिक शोध विद्वानों ने भी इस समय को ही निर्विवाद रूप से मान्य किया है। इस तरह श्री हरिभद्रसूरि विक्रम की आठवीं शताब्दी के ज्योतिर्धर आचार्य थे तो हेमचन्द्राचार्य विक्रम की बारहवीं शताब्दी के। इनका जन्म वणिक कुल में धंधूका मे हुआ। इनका समय वि० सं० ११४५ से १२२६ तक माना गया है। इनकी माता का नाम पाहिनी एवं पिता का नाम चाच था। हरिभद्र राजस्थान के सूर्य थे तो हेमचन्द्र गुजरात के। इन्हीं दोनो आचार्यो के प्रभाव के कारण ही आज तक गुजरात और राजस्थान जैन धर्म के केन्द्र बने हुए हैं। हरिभद्र के गुरू का नाम जिनदत्तसूरि था, और हेमचन्द्र के गुरू का नाम देवचन्द्रसूरि था।

दोनों ही आचार्य उदारमना थे। उनके दिल मे हठाग्रं रचित मात्र नहीं था। हजारो वर्षो के बीत जाने पर भी हरिभद्रसूरि का जीवन प्रकाशमान सूर्य की तरह आभा–किरणें बिखेर रहा है। उनमें जैसे उदार मानस का विकास हुआ वैसा विरले पुरूषों में दृष्टिगोचर होता है। उनका उदात्तघोष आज भी सुविश्रुत है –

"पक्षपातो न मे वीरे न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्ति मद् वचनं यस्य तस्य कार्य परिग्रहः। ३८।

अर्थात्– वीर वचन में मेरा पक्षपात नहीं। कपिल मुनियों से मेरा द्वेष नहीं, जिनका वचन तर्क युक्त है वही ग्राह्य है।

इसी प्रकार जब हेमचन्द्राचार्य ने सोमनाथ मंदिर में सम्राट कुमारपाल के साथ शिव मंदिर मे प्रवेश किया तो संस्कृत के श्लोको द्वारा शिव की स्तुति की –

'भवबीजांकुरजनना रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै।'

अर्थात्– भव बीज को अंकुरित करने वाले राग द्वेष पर जिन्होने विजय प्राप्त कर ली है, भले वे ब्रह्मा, विष्णु, हरि और जिन किसी भी नाम से सम्बोधित होते हों, उन्हे मेरा नमस्कार है।

"महारागो महाद्वेषो, महामोहस्तथैव च।
कषायश्च हतो येन, महादेवः स उच्यते।।

अर्थात्– जिसने महाराग, महाद्वेष, महामोह और कषाय को नष्ट किया है वही महादेव है।

इस प्रकार हेमचन्द्राचार्य द्वारा शिव की उदारमना स्तुति करने पर सम्राट कुमारपाल तो प्रभावित हुआ ही किन्तु उनसे द्वेष भाव रखने वाले शैव पंडित भी दांतों तले अंगुली दबा गये।

जलाकर इनकी आरती उतारता था। योगीराज के दर्शनों की मेरे मन में तीव्र उत्कंठा थी पर कोई संयोग नहीं बैठ रहा था। वि.सं. १९९६ बैसाख के महीने में काकाजी फतेहचन्द जी बांठिया ने बताया कि सेठ मगनमल जी पारख की धर्मपत्नी योगीराज श्री विजयशान्ति जी के दर्शन करने जा रही है, साथ मे सगीजी (मेरी बडी बहन श्रीमती जमना बाई की सासू जी) व मवरी डागी भी चल रही हैं। तुम्हारा मन हो तो तुम भी चलो। मैंने भी मन बना लिया और इस यात्री–दल में शामिल हो गया। नौकर–ठाकुर सहित लगभग १५ व्यक्ति हम हो गये। उस वक्त आचार्य महाराज आबू पहाड पर अचलगढ–क्षेत्र में ध्यान लगा रहे थे।

हम भी अचलगढ पहुँच गये। गर्मी के दिन थे – पहाड पर ठंडक का मौसम चल रहा था। आचार्य महाराज के दर्शन करने वालो की वहाँ पहले से ही काफी भीड लग रही थी। एक–एक घंटा प्रतीक्षा करने के बाद कमरे का फाटक खुलता– भीतर वाले बाहर आ जाते और बाहर वाले अंदर चले जाते और फिर कमरा बंद हो जाता। सभी भक्तों को "ॐ शांति" का सदेश ही उनका आर्शीवाद था। जब उनके श्रीमुख से "ॐ शान्ति" निकल जाता तो भक्तगण वंदना कर स्वयं बाहर निकल जाते। उनकी आकर्षक योग मुद्रा देखकर मन स्वत: ही प्रफुल्लित हो जाता। हम लोग सात दिन उनकी सेवा में रहे– घर जाने की इजाजत मांगी तो कुछ बोले नहीं। दूसरे दिन भी छुट्टी मांगी पर कुछ नहीं बोले। हम लोगो को आवश्यक कार्य– वश घर लौटना जरूरी था। तीसरे दिन भी जाने की इजाजत नहीं मिली तो हमने उनकी मर्जी के बिना बीकानेर के लिए प्रस्थान कर दिया। वापिस लौटने में हम लोगों को अनेक कष्टों को सहन करना पडा– मेरा तो रूपयों का 'पर्स' भी खो गया। खैर, जब बीकानेर लौटे तो हमने अपने दर्शन और कष्टों की कहानी, लोगों को बताई तो सभी भक्तो ने कहा – आप उनकी मंजूरी लिए बिना आ गये तो कष्ट तो भोगना ही था। फिर भी हमारा सौभाग्य था – उनके दर्शन आनन्द से हो गये।

बीकानेर महाराजा के अलावा सभी देशी रियासतों के शासक, अंग्रेज रेजीडेन्ट आदि योगीराज के परम भक्तो मे से थे। जब कोई राजा–महाराजा आने वाला होता तो आचार्यश्री एक घंटे पहले ही बिना किसी सूचना के घोषणा कर देते फलां स्टेट के महाराजा आने वाले हैं – तो, जनसाधारण को उठकर चले जाने को कह देते। उनको योग के बल से स्वत: आभास हो जाता, कौन–कौन कब कोई आने वाला है। वि.सं. १९९६ के आसौज बदी १० के दिन आचार्यश्री ने अचलगढ पर ही निर्वाण प्राप्त किया – तो बीकानेर मे समाचार आते ही राज्य की ओर से सार्वजनिक छुट्टी घोषित कर दी गयी और एक गुणानुवाद सभा बीकानेर के वित्तमंत्री महाराज श्री नारायण सिंह जी की अध्यक्षता में हुई जिसमे मैं भी शामिल हुआ था। अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की थी।

मेरे बचपन के प्रथम मित्र श्री खेमचंद जी सेठिया (बीकानेर ऊन प्रेस वाले) और उनकी माताजी श्रीमती मगनबाई सेठिया भी आचार्य श्री की परमभक्त थीं। श्रीमती मगनबाई (धर्मपत्नी श्री लहरचंद जी सेठिया)–अपने भाई सेठ चपालाल जी बाँठिया भीनासर वालों के सत्संग में रहने से योगीराज की भक्त बन गयीं। योगीराज गुरुदेव की कृपा से सेठ चपालाल जी के कोई पुत्र नहीं था – पुत्र बड़ी उमर में हो गया और उसका नाम शांतिलाल रखा गया।

श्रीमती मगनबाई सेठिया की आचार्यश्री के गुणगान भजनों की एक पुस्तक प्रकाशित करने की इच्छा हुई तो श्री खेमचद जी सेठिया "करुणेश" ने मुझसे कहा – श्री बांठिया जी आप भी शांतिगुरु के भक्त हैं– दो भजन आप भी बना कर दे दो तो पुस्तक में प्रकाशित करवा दिये जायें। संयोग की बात है मेरी माताजी का नाम भी श्रीमती मगनबाई है और श्री खेमचंदजी सेठिया की धर्मपत्नी का नाम श्रीमती जतनबाई है और मेरी धर्मपत्नी का नाम भी जतनबाई है। श्री खेमचंद जी की शादी चुरु के कोठारी परिवार में हुई और बराती के रूप में मैं भी शादी में चुरु गया था।

मैंने भी भक्तिवश दो भजनों की रचना की और वे "शान्ति सन्देश" पुस्तक में छपे जो श्रीमती मगनबाई सेठिया ने स्वयं प्रकाशित करायी और उस वक्त के सर्वश्रेष्ठ प्रेस इलाहाबाद के "इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस" मे मुद्रित कराकर नि:शुल्क वितरण की। यह पुस्तक वि.सं. २००० में छपी थी। पाठकों की जानकारी के लिए दोनों भजन यहाँ प्रकाशित कर रहा हूँ–

जर्मनी के डा० जार्ज वूल्हर ने हेमचन्द्राचार्य के ग्रन्थों से प्रभावित होकर जर्मनी भाषा में आचार्य हेमचन्द्रसूरि का सर्वप्रथम जीवन चरित्र लिखा जिसका अनुवाद हिन्दी मे स्व० श्री कस्तूरमल जी बाँठियां ने किया है। हेमचन्द्र की पारगामी प्रज्ञा पर दिग्गज विद्वानों के मस्तिष्क झुक गये। उन्होंने कहा–

किं स्तुमः शब्द पयोधे हेमचन्द्र ते र्मतिम्।
एकेनासीह येनेदृक् कृतं शब्दानुशासनम्।

अर्थात्– शब्द समुद्र हेमचन्द्राचार्य की प्रतिभा की क्या स्तुति करें जिन्होंने इतने विशाल शब्दानुशासन की रचना की है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दोनों आचार्यो के रचित ग्रन्थ जैन ही नहीं अपितु विश्व साहित्याकाश के बेजोड नक्षत्र हैं। सुधी पाठक स्वय ही निर्णय करें– कलिकाल केवली आचार्य श्री हरिभद्रसूरि या कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरि, कौन 'सूर' है या कौन 'शशि' है।

पुरातत्वाचार्य स्व० मुनि जिनविजयजी आचार्य श्री हरिभद्रसूरि से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने हरिभद्रसूरि की मूर्ति स्वयं अपने अर्थ से निर्मित कराई और हरिभद्रसूरि के चरणों मे अपनी मूर्ति भी खुदवा दी और चितौड़गढ़ के प्रवेश मार्ग पर ही श्री हरिभद्रसूरि ज्ञान मन्दिर बनवा दिया जिसका संचालन आजकल श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ कलकत्ता कर रहा है।

मुनि जी को इस बात का गहरा दुःख था कि वर्तमान मे जैन समाज ने हरिभद्रसूरि को भुला दिया है, उनको यथोचित सम्मान नहीं मिला।

जैनियो को हरिभद्रसूरि के नाम से विश्वविद्यालय खोलना चाहिए था– गुजरात में हेमचन्द्राचार्य को तो बहुत आदर से याद किया जाता है, जगह– जगह उनकी प्रतिमायें व चरण हैं। भारत सरकार का कर्तव्य है ऐसे दो महान ज्ञान–पुंज भारतीय जैन आचार्यों का यथोचित सम्मान कर उनकी स्मृति में ज्ञान मन्दिर– विद्या मन्दिर बनवायें।

साध्वीरत्न कुसुमवती अभिनन्दन ग्रंथ
पंचम खण्ड, जैन साहित्य और इतिहास

जगत गुरु - श्री विजय शांति सूरिजी के चरणों में

आबू के महान योगीराज जगत गुरु आचार्य सम्राट श्री विजय शांति सूरीश्वर जी महाराज के चमत्कारों की यशोगाथा मैं बचपन से ही सुन रहा था। बीकानेर में बिना किसी भेदभाव के सभी समुदाय के लोगों के मन में उनके प्रति अपार श्रद्धा थी। मेरी भी आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा हो गयी– प्रतिदिन इनके नाम की माला – "ॐ शान्ति" जपता था– सोने के कमरे में जिसे राजस्थानी भाषा में 'मालिया' कहते है, एक तस्वीर लगा रखी थी, सोने से पहले अगरबती –
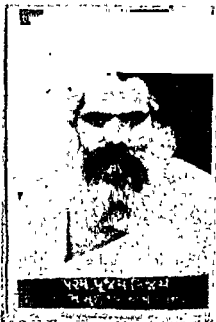
के जवान लाहौर मे नदी पार कर 'चाय' का प्याला पीकर विजयोत्सव मनायेगे।" स्वामी मदनानंद की यह भविष्यवाणी अक्षरश सत्य प्रमाणित हुई।

सन् १९७१ मे लोकसभा के चुनावो में दिल्ली लोकसभा की ७ सीटो मे से कांग्रेस ने ६ सीटें जीतीं। लोगो को विश्वास हो गया कि भारतीय जनसंघ डूब गया दिल्ली में। कुछ महीनों बाद दिल्ली में महानगर– पालिका व मेट्रोपोलीटन कोसिल के चुनाव हुए। उस वक्त स्वामी मदनानंद ने भविष्यवाणी की "इस बार जनसंघ जीतेगा।" लोगो को आश्चर्य हुआ। उस समय सबको लग रहा था कि दिल्ली की जनता का झुकाव कांग्रेस की ओर है। जब चुनाव सम्पन्न हुए तो जनसघ का महापौर बना।

इन सब बातों से मेरा स्वामी मदनानंद के प्रति आकर्षण पैदा हुआ और वे सन् १९७२ में जब कानपुर पधारे तो समाचार पत्रो में विज्ञापन प्रकाशित हुआ था कि विश्व के तांत्रिक सम्राट स्वामी मदनानंद कानपुर में सात दिन के वास्ते आये हैं। जिनको अपना भविष्य पूछना हो, वे उनसे मिलें। उनको तीन प्रश्न पूछने की फीस २५० रूपया है, किन्तु कानपुर मे वे सिर्फ ५५ रूपया लेगे।" सन् १९७२ में मेरा भविष्य भी अधर मे लटक गया। कहावत है– "या ठगावे रोगी या ठगावे भोगी।" मैं व चि प्रकाश स्वामीजी के पास गये। मैंने उनसे तीन प्रश्न किये –

(१) मेरे साझीदार ने मुझे धोखा दिया है। अब मैं क्या करूं?
(२) व्यापार करूं तो किस चीज का करूं, क्योंकि मेरे पास अधिक पैसा नहीं है?
(३) मेरी सतान की मेरे प्रति कैसी निष्ठा रहेगी?

स्वामीजी का प्रत्युत्तर था -

(१) साझीदार आपका बाल बाका नहीं कर सकेगा। वह स्वय तबाह हो जायेगा।
(२) आप जो व्यापार तेल व अनाज का करते हैं, वही करें। प्रकाश करोडपति बनेगा यदि इसे अभी से लोहा के व्यापार में आप लगा दे।
(३) आपकी समस्त सताने आपके प्रति निष्ठावान रहेंगी।

स्वामी जी से मैं विदा लेने लगा तो उनसे अनुरोध किया कि वे मेरे यहा भोजन पर पधारें। स्वामी ने उत्तर दिया, फिर कभी आऊंगा, किन्तु आप जब भी दिल्ली आयें, मुझे अपने बंगले पर अवश्य मिलें। समयान्तर से स्वामी जी की तीनो बाते सत्य प्रमाणित हुई और मेरा भविष्य उज्जवल हो गया, जो वर्तमान है। यह सब स्वामी जी की कृपा है।

जब भी मैं दिल्ली जाता, स्वामी जी के दर्शन जरूर करता। वहां मैं देखता कि मन्त्रियों व संतरियों का सदा दरबार लगा रहता है। स्वामीजी कश्मीरी ब्राह्मण थे। कामाख्या देवी के भक्त थे। उसी का उन्हें इष्ट था। सिगरेट निरन्तर एक के बाद एक पीते रहते थे। स्वामीजी से मेरी घनिष्ठता दिन–प्रतिदिन बढती गई।

एक दिन स्वामी जी ने बताया – अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन दुबारा चुनाव मे खडे हुए तो अमेरिका के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि वह हार जायेंगे, किन्तु मैंने राष्ट्रपति निक्सन को आशीर्वाद लिखकर भेजा है कि वे अवश्य विजयी होंगे। निक्सन पुन राष्ट्रपति चुने गये। स्वामी के पास उनका पत्र आया। उनको अमेरिका मिलने के वास्ते आमंत्रित किया। स्वामीजी ने मुझसे कहा – बांठियाजी, आप या प्रकाश मेरे साथ अमेरिका चलें। व्हाइट–हाउस में राष्ट्रपति निक्सन से आपका हाथ मिलवाऊंगा और अमेरिका के भविष्यवक्ताओ एवं तांत्रिकों को मैं चुनौती दूंगा, वे पराजित होंगे। अमेरिका मे मेरी ख्याति बढेगी। करोडो रूपये कमाने का अवसर आयेगा। हम दोनों ने अमेरिका जाने का निश्चय भी किया, प्रकाश का पासपोर्ट भी बनाया, किन्तु भाग्यवश उस समय हमें वह सुयोग न मिल सका।

स्वामी जी से एक दिन मैंने पूछा कि आप अपनी विद्या अपने पुत्रों या शिष्यों को क्यो नहीं सिखाते ताकि आपके नाम के साथ–साथ वह विद्या भी अमर रहे। उनका सहज्भाव में उत्तर था–इसके लिए कोई पात्र नहीं है।

(६३) पृष्ठ १०५
आओ शान्ति प्यारे नैया डूब रही है।
तुम हो गुरुवर हम हैं पुजारी,
हम अज्ञानी तुम पंचव्रत धारी,
तैरावो नाव हमारी नैया डूब रही है।
योगीराज हो योग के दाता,
भव मंडल के तुम हो त्राता,
"करूणेश" जाय बलिहारी नैया डूब रही है।
आबू शैल मे वास तुम्हारा,
गुण गावे भूमण्डल सारा,
तैरावो नाव हमारी नैया डूब रही है।
जग बीच भँवर, भँवर मे नैया,
खेवट हो तुम्हीं खेवैया।
"हजारी" जाय बलिहारी नैया डूब रही है।

(६४) पृष्ठ १०६
सकल विश्व में नाम तुम्हारा,
सकल जग तेरा यश गाता है।
"शान्ति" नाम से पाप कर्म,
सब रोग दूर हट जाता है।
"शान्ति" "शान्ति" रट ले प्यारे,
जो रटता है सो पाता है।
कुछ नहीं लेना, कुछ नहीं देना,
जो आता है सो जाता है।
तो मूर्ख क्यो नहीं भजता,
क्यों भजने से शर्माता है ?
हृदय बसाले बस "शान्ति" को,
क्यों जीवन व्यर्थ गमाता है।
"मगनकुंवरी" दासी चरणों की
"करुणेश" तेरा गुण गाता है।

•••••••••••••••••

तांत्रिक सम्राट स्वामी मदनानंद

भारत भूमि तंत्र–मंत्र योग साधना की भूमि रही है। मानव का स्वभाव है, वह सदा 'चमत्कार को नमस्कार' कह कर उनको अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। पाठकों को स्मरण होगा स्व श्री वी वी गिरिजी ने उप–राष्ट्रपति पद से इस्तीफा देकर राष्ट्रपति का चुनाव लडा था। तब सब ने कहा – श्री गिरिजी ने यह क्या किया? कांग्रेस समर्थित राष्ट्रपति के उम्मीदवार डा नीलम संजीव रेड्डी को कैसे पराजित किया जा सकता है। सभी लोग ऊहापोह में थे।

आखिर श्रीमती इंदिरा गांधी में "आत्मा की आवाज" उत्पन्न करने वाला यह कौन व्यक्ति था? क्या कारण हुआ श्रीमती गांधी का मन बदलने का? यह आत्मा की आवाज पैदा करने वाला व्यक्ति था–भारत का सिद्ध भविष्य– द्रष्टा स्वामी मदनानंद। स्वामी मदनानंद ही थे, जिन्होंने श्री वी वी गिरि को अपनी तंत्र शक्ति के आधार पर आशीर्वाद दिया कि आप उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे और राष्ट्रपति का चुनाव लड़े।

सन् १९७१ में साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' के सितम्बर के किसी अंक में स्वामी मदनानद की भविष्यवाणी प्रकाशित हुई, जिसमें लिखा था – "३ दिसम्बर को भारत–पाक युद्ध प्रारम्भ होगा, भारत की विजय होगी और भारत

बंध गया। मैंने भी अपनी मूक श्रद्धांजलि पूज्यश्री के चरणों में दी। बैकुंठी में बैठे आचार्यश्री का केमरे से फोटू खिंचवाया जाय कि नहीं, यह चर्चा जोरों से वाद-विवाद का विषय बनती जा रही थी। फिर भी किसी ने फोटू खींच ही लिया और उसने फोटू से बडे चित्र बनाये और घर-घर में बेचकर लाभ उठाया और उस वक्त के फोटू आज भी लोगों के घरों में दर्शनीय हैं। धूमधाम से बैकुंठी उठी-'जय जवाहरलालजी महाराज साहब' के जय-घोष से आसमान गूंज उठा। जैन समाज के सभी वर्ग के प्रबुद्ध नागरिक और प्रमुख पुरुषों ने पूज्यश्री को अश्रु मिश्रित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित की। आचार्यश्री स्वर्गारोहरण के कार्यक्रम की सारी बागडोर स्व सेठ चम्पालालजी बांठिया के हाथों में थी। आचार्य श्री के देवलोक से भीनासर 'तीर्थधाम' बन गया। आज भी जवाहर किरणें वहाँ से अपनी आभा सर्वत्र बिखेर रही हैं।

श्रीमद् जवाहराचार्यजी अपने समकालीन जैन आचार्यो में एक प्रभावक आचार्य थे। मंदिर-मार्गी आचार्यो में युग-प्रभावक आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरिजी महाराज साहब का सर्वोच्च स्थान था तो साधु-मार्गी समुदाय में आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज साहब का। वे आदर्श साधु-परिचर्या के पक्षधर थे। शिथिलता उन्हें स्वीकार नहीं थी। व्यर्थ आडम्बर से कोसों दूर थे। जैन संस्कृति के सजग प्रहरी और जैन सिद्धान्तों के व्यावहारिक व्याख्याकार थे। इसलिए उस वक्त यह उक्ति प्रसिद्ध हो गई थी-'ढूंढ़िया धर्म पक्को, पैसो लागे ना टक्को'। कठोर संयमी जीवन के पक्षपाती थे, समाज को भी सयमित जीवनयापन करने का उनका दिशा-निर्देश था। इसीलिए स्थानकवासी समुदाय में आचार्यश्री के समुदाय का अपना अलग ही विशिष्ट स्थान है। वे सचमुच जैन जगत के 'जवाहर' (GEM) थे। आचार्य श्री ने अपनी पैनी दृष्टि से अपना उत्तराधिकारी भी प्रज्ञा-पुरुष, समता रस भंडार युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज को अपने जीवनकाल में ही आसीन कर दिया था।

श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर की स्वर्ण जयंती स्मारिका - सन् १९९४

●

योगीन्द्र युग प्रधान गुरुदेव
श्री सहजानन्दघनजी महाराज

परम योगनिष्ठ योगीन्द्र युगप्रधान गुरुदेव श्री सहजानन्दघनजी महाराज इस युग में महान विभूति थे। गत सहस्त्राब्दी में भारत में जो आत्मदृष्टा संत हुए हैं उनमें आपका नाम भी प्रथम पंक्ति में लिया जा सकता है। आपके नाम की यशोगाथा गत चालीस वर्षो से पूज्य मामाजी के मुख से सुनता आ रहा था। आपके प्रथम दर्शन का सौभाग्य बीकानेर में वि सं २०१५ के प्रारम्भ में मिला जब वे यात्रार्थ जैसलमेर जाने के लिए पधारे थे। उसके बाद इसी

वे कुछ गंभीर होकर फिर बोले कि मेरा नाम तो दुनिया में सदा अमर रहेगा। सन् १९४७ में मैंने वायसराय माउण्टबेटन को पत्र दिया था। उसमें लिखा था कि १४ अगस्त १९४७ की रात्रि को 'भारत' की स्वतंत्रता का कार्यक्रम स्थगित रखें। यह मुहुर्त पल घड़ी शुभ नहीं है – दोनों देश भारत व पाकिस्तान के लिए। इस समय स्वतंत्रता दे दी गयी तो दोनों देश लड़ेगें, हिंसा लूटमार अग्निमार से सदा ग्रसित रहेंगे। मेरी यह भविष्यवाणी "फ्रीडम एट मिड नाइट" पुस्तक में ज्यों की त्यों एक पूरे पृष्ठ में छपी है, जिसका २५ भाषाओं में अनुवाद हुआ है। जो भी विश्व का प्रबुद्ध नागरिक वह पुस्तक पढ़ेगा, मुझे सदा याद रखेगा।" हम वर्तमान में यह बराबर देख रहे हैं कि स्वामीजी की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य प्रमाणित हो रही है।

स्वामीजी ने तंत्र–विद्या सीखने हेतु सारे भारत का भ्रमण किया, अनेक साधु–महात्माओं, योगियों, सिद्धों के सम्पर्क में आये और आसाम की कामाख्या देवी को अपना इष्ट बनाया। उनके घर के बाहर छोटा– सा देवी का मंदिर भी है। श्री वी.वी.गिरि स्वयं वहां राष्ट्रपति चुने जाने पर स्वामीजी से मिलने उनके घर आये और देवी के दर्शन किये।

वाराणसी के कविराज गोपीनाथजी को वे अपना गुरु मानते थे। "श्री यंत्र" बनाने की सही विद्या इन्होंने उनसे ही प्राप्त की थी। स्वामीजी कहा करते थे – शुद्ध एवं सही "श्री यंत्र" साधना मैं जानता हूं या कविराज जी। स्वामीजी ने जिनको भी अपने हाथ से तांत्रिक सिद्ध किये हुए "श्री मंत्र" दिये, वे सभी लाभान्वित हुए। उनसे प्रसाद पाने वालों में मैं भी एक हूं।

"कथालोक" मासिक, दिल्ली वर्ष २५ अंक ८, मार्च १९९३

युग- पुरुष श्रीमद् जवाहराचार्य जी

युग–प्रवर्तक, ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलालजी अपने समय के युगद्रष्टा, गांधीवादी, क्रान्तिकारी जैन आचार्य हुए हैं। समस्त भारत में गांधी–लहर चल रही थी। स्वदेशी अपनाओ का नारा बुलन्दी पर था। गांधीजी ने सत्य और अंहिसा का संदेश श्रीमद् राजचन्द से हृदयंगम किया था वे इसी को आधार मानकर भारत को आजादी दिलाना चाहते थे और इसी पथ पर चलकर देश ने आजादी पाई। आचार्य श्री जवाहरलालजी भी सत्य और अंहिसा के मार्ग से समाज में नई चेतना दे रहे थे। वे भी गांधीजी से प्रभावित हुए और वे पहले जैनाचार्य थे जिन्होंने स्वदेशी वस्तुएं अपनाने की समाज को प्रेरणा दी और स्वयं ने खद्दर का वस्त्र अपनाया।

मुझे आज से पचास वर्ष पूर्व की दुःखद घटना अच्छी तरह याद है जब किसी ने सुना पूज्यश्री जवाहरलाल जी महाराज साहब का वि.सं. २००० आसाढ़ शुक्ला अष्टमी को देवलोक हो गया, हजारों नर–नारियों के पैर भीनासर की ओर चल पड़े और मैं भी गया। पूज्य आचार्य महाराज को बैकुंठी बनाकर बिठाया गया था। दर्शनार्थियों का तांता

की यात्रा करते हुए मेरी विनती को स्वीकार कर कानपुर भी पधारे किन्तु मैं उस वक्त कलकत्ते में था। गुरूदेव ने हंपी से दिनाक २३६६८ (पत्रांक ३६७) को मामाजी को एक पत्र में लिखा–"मेघराज जी सोन कलकत्ता आव्या हशे। तेमने तथा बांठिया जी ने एवं कलकत्ता मां वैद्यराजजी, पारसान मडली, बदलिया, बडेरजी, धूपियाजी, कान्तिभाई एवं आप सौने मारा तथा माताजी ना अगणित आशीर्वाद।"

"हाथरस मा रतनचंदजी सौं 'बे भक्ति भाव मा जराये कम न राखी। उत्तर तरफ जतां दिल्ली अने दक्षिण तरफ ग्वालियर सपरिवार साथे आव्या हता"।

गुरूदेव का दीक्षानाम श्रीभद्रमुनि जी था। इनका जन्म वि सं १९७० माद्र शुक्ला १०, कच्छ डूमरा में हुआ और दीक्षा वि सं. १९९१ वैसाख सुदी ६ और महाप्रयाण हम्पी तीर्थ पर वि सं २०२७ कातीक सुदी २ को मध्य रात्रि में हुआ। हम्पी तीर्थ पर श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम की स्थापना की और गुरूदेव के निर्वाण बाद पूज्यनीय माताजी श्रीमती धनबाई जी अधिष्ठात्री बनी जिनका महाप्रयाण ४ अप्रैल १९९२ को हम्पी में हुआ।

गुरूदेव के साथ मेरा काफी पत्राचार हुआ किन्तु कुछ उपलब्ध पत्र–पाठकों की जानकारी के लिए प्रकाशित कर रहा हूँ।

(पत्रांक-१११)
ॐ नमः

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम
स्टे. अगास वाया आनंद
२०.४.५६

सत्संग-प्रिय प्रभावनोत्सुक मुमुक्षु श्री याँठिया जी

आपका पत्र मिला। साहित्य भेंट रूपेण आज भेजा रहा है। २६ की बैठक मे जो देश–काल परिस्थिति के अनुकूल कानून बनाने हो, आप सभी विचारक वृन्द बना लीजिए।

आपने जो जो मिशन की मदद के लिए विचार उपस्थित किए हैं, वे सभी यहाँ ता० २४ को होने वाली स्थानीय सस्था के ट्रस्टी मण्डल की मीटिंग मे पेश किये जायेंगे। तदनतर आपको सूचित किया जाएगा।

इस शरीर की जन्मभूमि कच्छ डुमरा में जिनालय का हीरक महोत्सव, एक देवकुलिका का जीर्णोद्धार होने से पुनः प्रतिष्ठा, हाईस्कूल की स्थापना, ३०० विद्यार्थी के लिए बोर्डिंग हाऊस का शिलान्यास, श्रीमद् राजचन्द्र सर्वोदय मण्डल की स्थापना एव वर्षीतपादि का उजमणा वगैरा अनेक धार्मिक कार्य प्रसंग वश वहा के अगुए बहुत जन आकर इस शरीर को वहा ले जाने के लिए मजबूर किया। अत वै कृ सप्तमी को यहां से क्रमशः राजकोट, ववाणिया होकर वहा जाना होगा। वहाँ वै कृ ११ से शुक्ला षष्ठी पर्यन्त महोत्सव चलेगा। कई हजार जनसंख्या एकत्रित होगी। २१ साल बाद वहाँ जाना हो रहा है। कच्छ भर की जनता का अतीव उत्साह है। मात्र सप्ताह के लिए ही जाना मंजूर करना पडा है। तदनन्तर आगे का कार्यक्रम विचारा जाएगा।

हाथरस में क्या कोई सिद्धहस्त साक्षर मिलेंगे? वहा एकान्त में लेखन क्रिया के उपयुक्त स्थान मिल सकेगा।

भँवरलालजी नाहटा यहाँ हैं। यहा से खंभात–अहमदाबाद जायेंगे।

मैं वै कृ ६ पर्यन्त यहां हूँ। सप्तमी को प्रयाण होगा बाद वै शुक्ल १'८ आठ दिन शायद डुमरा स्थिरता होगी। यदि पत्र देना हो तो "सहजानंदजी Dumra Kutch इस पते से मिल जाएगा।

यहाँ साधरवर्य मुमुक्षु बपु श्री रावजी भाई से आपका पत्र व्यवहार चालू करवा देता हूं। इन्हीं से गुजराती में लिखे समाचार का आप हिन्दी में उत्तर देते रहिये।

कल महावीर जयन्ती के हेतु बोरसद जाने का निश्चय हुआ है। परसों वापस आउंगा।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सहजानन्द सादर आत्म-स्मरण

वर्ष नवम्बर १९५८ ई. में कलकत्ते से मैं और भाई केशरीचन्द नाहटा उसकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचनकुमारी के साथ-गुरुदेव के दर्शनार्थ ऊन (खंडवा के पास प्राचीन तीर्थ) गये और वहां दस दिन सेवा-सत्संग और प्रवचन सुनने का अवसर मिला। गुरुदेव उस वक्त मौन रहकर चातुर्मास कर रहे थे। सिर्फ प्रवचन-काल में ही मौन तोडते थे। इसी प्रवास-काल में श्रीमद् राजचन्द्र की एकमात्र पुत्री श्रीमती 'जब्बल बहिन' पधारी थी और गोकाक की रुपा बहिन महेश्वरी भी। मैं गुरु देव के हृदय-स्पर्शी वचनो से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने मन में संकल्प लिया कि गुरुदेव का एक चार्तुमास हाथरस में क्यों न कराया जाय? मेरी श्रद्धा भक्ति का आकर्षण चुम्बक की तरह उनकी ओर खिंचता ही गया। और ऊन में गुरुदेव ने मुझे "नित्यकर्म" पुस्तक इस शर्त के साथ दी कि मैं सात व्यसनों का आजीवन त्याग करूं और श्रीमद् राजचन्द्र की भक्ति का कार्यक्रम प्रतिदिन करू।

श्रीमद् राजचन्द्र की वाणी और विचारो का प्रचार-प्रसार हो इसलिए मैंने हाथरस में आदरणीय पं. बैजनाथ जी शर्मा, डा. गिर्राज किशोर जी अग्रवाल और श्री जालमचंद जी कवाड़ के सहयोग से "श्रीमद् राजचन्द्र मिशन" की स्थापना की और महीने में दो बार सत्संग – श्री लोहिया जैन धर्मशाला मे होने लगे। आत्मार्थी सत्संगियों की अच्छी उपस्थिति होने लगी। गुरुदेव के साथ पत्र- व्यवहार भी प्रारम्भ हो गया। गुरुदेव ने दिनांक २ अप्रैल १९५६ में श्री भंवरलाल जी नाहटा को लिखा – "हाथरस मां बांठियाजीए "राजचन्द्र मिशन" स्थाप्यु अने महोत्सव पण उजव्यो। एग रोमनो पत्र आजे मूक भावे कहे छे।" गुरुदेव ने श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास (गुजरात) से दिनांक २० अप्रैल १९५६ को मुझे भी एक पत्र लिखा जो पत्रांक सं. (१११) में श्री भंवरलाल जी नाहटा द्वारा संपादित "श्री सहजानंद पत्रावली" में प्रकाशित है।

मैं गुरुदेव को हाथरस पधारने का बराबर आग्रह करता आ रहा था – उन्होंने विनती को स्वीकार किया और सन् १९५६ के जून मास के अन्तिम सप्ताह में हाथरस पधारे – आपने सेकसरिया-उद्यान में मंगल-प्रवेश किया। प्रतिदिन सायंकाल प्रवचन होने लगे और दिनो- दिन भक्तों की संख्या बढने लगी। गुरुदेव को जगह की सावकड़ता पसंद नहीं आयी और उन्होंने चातुर्मास करने की आज्ञा प्रदान नहीं की। करीब २० दिन गुरुदेव हाथरस विराजे और फिर यहाँ से बीकानेर पधार गये। इसी दरम्यान मे गुरुदेव के साथ सौरीपुर और कंपिल की प्रथम बार यात्राये की। इसका विवरण गुरुदेव ने हाथरस से लिखे दो पत्रो दिनांक ३०.६.५६ (पत्रांक ११३) दिनांक ६.७.५६ (पत्रांक ११४) में पूज्य मामाजी को दिया।

मेरी पूज्यनीय माता श्रीमती गवनबाई बांठिया गुरुदेव की अनन्य भक्त थी-पूज्य मामाजी सुमेराज जी नाहटा के साथ-बीकानेर हम्पी, आदि कई जगह वर्षो सत्संग किया और मैंने भी गुरुदेव के दर्शन व सत्संग का लाभ कई बार उठाया। हम्पी तीर्थ भी पांच-सात बार सपत्नीक गया। हमारा पूरा परिवार गुरुदेव का भक्त बन गया। मेरी दोनों बहिनें श्रीमती जमनाबाई डागा और श्रीमती मीनाबाई चौपडा का परिवार भी गुरुदेव के प्रति पूरा आस्थावान हो गया। गुरुदेव सन् १९६८ में भी पुनः हाथरस दर्शन देने यात्रा करते हुए पधारे थे। गुरुदेव ने मामाजी को जितने भी पत्र लिखे उनमें मां को मामीजी के साथ "ननद-भौजाई" लिखकर आर्शीवाद दिया है।

मेरी भक्ति श्रीमद् राजचन्द्र और गुरुदेव के प्रति इतनी हो गई कि मैंने श्रीमद् राजचन्द्र का जीवन परिचय लिखकर सन् १९५६ में "कल्याण" मासिक गोरखपुर (३३/४) तथा "जैन जगत" मासिक, पूना ( ) में प्रकाशित किया जिसमें भक्तिवश मैंने गुरुदेव को द्वितीय राजचन्द्र की उपमा दे दी जिससे अगास आश्रम वाले कुपित हो गये और गुरुदेव को भी रुचिकर न लगा। गुरुदेव ने १३.६.५६ को (पत्रांक १२१) श्री भंवरलाल जी नाहटा को लिखा – "जैन जगत में द्वितीय-राजचन्द्र की उपमा बांठिया जी द्वारा दी गई, जिससे पढकर अगास आश्रम वाले कुपित हुए एवं "तत्व-विज्ञान" को बिना देखे ही नामंजूर कर दिया। हमें खुशी हुई – "भलु थयुं भांगी जंजाल, सुखे भजशुं गोपाल" भक्ति कर्तव्य सात फर्मा मर छपा कर बंद कर दिया। मन चाहा काम न हो सका अतः स्थगित रखा।"

हंपी से दिनांक ६.७.६५ को गुरुदेव ने एक पत्र (पत्रांक ३२२) में मामाजी को लिखा-"बांठिया जी सत्संग की कामना रखते हुए भी अवकाश ले नहीं पाते। सन् १९६८ में गुरुदेव कलकत्ता पधारे, वहाँ से उत्तर भारत

(पत्रांक ११४)
ॐ नमः

हाथरस
६.७.५६

भक्तवर श्री शुभैराजजी एवं भँवरलालजी आदि सपरिवार जोग

हमे पत्र मिला। कंपिलाजी यात्रार्थ गये थे, वहाँ से जिन बिम्ब– शीर्ष एव सौरीपुर से प्राचीन ईंट लाए हैं। बीकानेरी–चोर आदि सामग्री बीकानेर न पहुँची हो, तो आप साथ में लाइएगा।

कम्पिल का इतिहास प्रसिद्ध है, वहाँ सुनाया जाएगा, यहां स्थान पसन्द नहीं है। अत आज मध्यान्ह को प्रयाण करके शाम तक देहली–दादावाड़ी पहुँचने की संभावना है, कोटा वाली सेठाणीजी भी आज वहाँ पहुँच रही है। वहाँ दो चार दिन ठहरने की भावना है। बाद में हम स्वत बीकानेर पहुँच जावेंगे। आप अपना काम आराम से निपटा कर यथावकाश आइये, उतावल न करिएगा।

'भक्ति–कर्तव्य' छप गई, साथ मे लेता जा रहा हूँ। चौमासा की अब कहीं अन्यत्र कल्पना नहीं है, फिर भी यदि भाग्यवशात् कहीं रुकावट नहीं हुई तो बीकानेर की तो है ही।

स्वास्थ्य ठीक है। वहाँ सभी को धर्मस्नेह पूर्वक जिन स्मरण।

सहजानन्द आत्म-स्मरण

(पत्रांक ५८)
ॐ नमः

हंपि १७.११.६४

हजारीमल जी बांठिया–हाथरस,
भक्तवर!

पत्र मिला। दादाजी ने ५ प्रकार के चैत्य बताये है:– निश्रागत, अनिश्रागत, भक्ति, मगल और शाश्वत। हाट हवेली के मुख्य द्वारोपरि "जिनबिम्ब" स्थापना मंगल चैत्य कहलाता है। जिसे नमस्कार पूर्वक उनकी आज्ञाएं शिरोधार्य करते हुए प्रवेश और निर्गमन किया जाता है। एक सार्धर्मिक तथा त्यागीजनों को मालूम हो जाता है कि यह जैन की हाट हवेली है। यह प्रथा लुप्तसी हो गयी। सिर्फ जिन मंदिरों के मुख्य द्वार के ऊपर कहीं–कहीं जिन बिम्ब पाये जाते हैं। बाकी अजैन कारीगरो ने अपना माना हुआ गणेशजी को स्थान दे दिया जो मूढता है। आप सत्यान्वेषी हैं। ऐतिहासिक खोज से जाच कर सकते हैं। प्राण प्रतिष्ठा के बिना जिन बिंब की आशातना नहीं होती अत. अपने राशि मेल के अनुरूप जिन बिम्ब किंवा श्रीमद् राजचन्द्रजी की कलाकृति स्थापन कराइए। तीर्थकरो के गणधर को मरोड़ कर गणेश की कल्पना की गई है जो जैनों को उपादेय नहीं है।

राज जयन्ती की भावना अनुमोदनीय है। यहां भी प्रतिवर्ष चालू है। अवकाश निकाल करके जरूर यहाँ आइए आश्रम प्रगति पथ पर है। सत्संग–भक्ति नियमित होते हैं। शुभैराजजी साब का कल ही पत्र था, बीकानेर भक्त मण्डल आमंत्रण दे रहा है पर यहाँ साधना विकास के आनंद को छोड़कर जाने का दिल नहीं। काकी माँ ने आशीर्वाद कहा है। ॐ

सहजानंदघन
हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक - ११२)

ॐनमः

Dumra Kutch
१४.५.५१

भव्यात्मन्!

कार्ड मल्युं. आजे श्रीमद् राजचन्द्र सर्वोदय संघ नी स्थापना एक नियत स्थान मां श्रीमद् ना चित्रपट्टनी स्थापना तथा बोर्डिंग मां पण तेमना चि नी स्था. तेमज मूलमंदिर नी सामे ना द्वार उपर श्री ...... केवली भगवंत नी स्थापना निर्विघ्नतया अति उल्लास थी दश हजार थी अधिक मानव मेदनी नी बच्चे थई गई. आम अगिआर दिवसो नो महोत्सव आजे पूर्ण थाय-छे. भोजनादि नी व्यवस्था मां स्थानीय संघे लाखेक रू० नौ द्रव्य करी सुकृत उपार्जन कर्युं छे.

नित्य त्रण वखत ५/७ प्रात:, बपोरे ३/४ अने रात्रिए ८।।-१०।। एम पांच कलाक सत्संग थतुं रह्युं हाइस्कूल माटे पण अर्धालाख नी भरपाई आ अवसरे थई गई.

हवे परम दिवसे प्रभाते प्रयाण करी समीप नी पंचतीर्थी करता हालापुरमां भोजन लइ बच्चे अनेक ग्राम लायजा, गोधरा, मांडवी, आदि थता, कच्छ कोडाय. सांजे जवाशे, त्यां रवीवारे श्रीमद् राजचन्द्र सर्वोदय मण्डल नी स्थापना थशे, पछी भुजपुर आदि थता भद्रेश्वर नी यात्रा करता भूज नगर जवाशे-त्यां श्री उपाध्यायजी भगवान ना दर्शन-मिलन थशे त्यांथी ता. २० लगभग आबू जवाशे, त्याँ अमुक समय लेखन क्रिया मांटे रोकाई चौमासा माटे नुं प्रोग्राम आगल ऊपर विचाराशे, बीकानेर थी पण पत्र छे. हजारीजी नो पण पत्र हतो.

आवती वखते भूज महाराजजी न्होता, हवे मलशे. बुद्धिमुनिजी म अंजार थी विहार करी पालीताणा भणी आगल वध्या ना समाचार छे तेथी मने मली शकाय नहीं. स्वास्थ्य तेमनुं सारुं नथी ॐ

सहजानंद आत्म-स्मरण

श्री मिठुभाई श्री सुख अने हीराभाई आदि साथे छे वधाय मजामां छे.

(पत्रांक - ११३)

ॐनमः

हाथरस ३०.६.५१
सेकसरिया उद्यान

सदगुणानुरागी सत्संग योग भक्तवर श्री शुभेराजजी,
श्री भैंवरलालजी आदि सपरिवार जोग-कलकत्ता,

अमो सौरीपुर, वटेश्वर अने आगरा नी यात्रा करी आव्या आजे कम्पिलाजी जइए। त्यांथी श्री कामताप्रसाद जी ना आमंत्रण थी अलीगंज तेमने मली पाछा अहिं आवीशुं

लेखन क्रिया मां मात्र भक्ति-कर्तव्य प्रदीपजी M.A.L.T. द्वारा लखावायुं. बाद यात्रा गया अहिं पाछा फरतां प्रदीपजी वगेरे अन्यत्र कार्य मां गयेला हता. अहिं आ बाग मां नी कालेज मालिक अने प्रोफेसर एवा सुयोग्य साक्षरो ने क्रमवद्ध गोठवी आपवा कहे छे. हजु छुट्टी पूरी थई नथी छतां थे दिवस मां बीजा साक्षरो-शिक्षको आवी जशे.

अहिं स्थंडिलभूमि नी पूरी प्रतिकूलता छे. पासे मील अने स्टेशन नी गडबड़ तथा बंदरो ने अगे बाग मां हा हूं कूवा पर पाणी भरनाराओ नी पण गड़बड ए आदि प्रतिकूलता छे ते सिवाय तो बधुं ठीक छे. चौमासा माटे आ लोको आग्रह तो करे छे. पण साक्षरो आव्ये थी जोयुं जशे. अलीगंज थी पाछा फर्ये साक्षरो नी योग्यता अने व्यवस्था बने जयी तो अहिं- अन्यथा बीकानेर आदि मां ठाणेणं होगा। स्वास्थ्य ठीक छे आप सौनुं पण तेम हो! विचक्षणश्री जी म जयपुर चौमासा नक्की हो गया। शेष कुशलम्- ॐशांति: शांति: शांति

सहजानन्द आत्म-स्मरण

सद्गुणानुरागी श्री हजारीमल जी एवं रतनचंदजी सपरिवार,

बहुत समय से आप दोनो का मिलन नहीं हुआ, अतः अवकाश ले कर आत्म– साक्षात्कार के क्रम को समझने के लिए जरूर आना चाहिए। श्री शुभराजजी तो अभी अस्वस्थ हैं आराम ले रहे हैं, ठीक होने पर यहाँ आवेंगे, उस समय आप भी आइए।

यहाँ माताजी आदि हम सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। चंचलबाई बी.ए. पास हो गयी अब एम.ए. का कोर्स लेने की भावना है। १–५ को इसके अपेन्डीक्ष का सफल आपरेशन हुआ, १–७ को यहाँ से वापस लौटेगी।

आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे ही। वहाँ सारे पारिवारिकों को एवं मित्रवर्ग को हमारा आशीर्वाद कहिएगा। धर्मस्नेह मे अभिवृद्धि हो। ॐ शान्तिः

सहजानन्दघन
हार्दिक धर्मलाभ

संतों की सुगन्धी

हमे "हम्पी" तीर्थ के संत श्री सहजानन्द घनजी महाराज के सत्संग में कई बार जाने का सुअवसर मिला। इस सदी के ये महान आध्यात्मिक संत थे। उन्होंने १२ वर्ष तक राजस्थान की गोकलसर गुफाओ में गुप्त मौन साधना और यौगिक क्रियायें कीं। वि सं २०१६ मे वे हाथरस भी १५ दिन के लिए पधारे। शहर के बाहर सेकसरिया उद्यान में विराजे। जून का भयकर गर्मी का मौसम था। शाम को वे प्रवचन देते थे। हम सभी लोगों ने अनुभव किया कि भयंकर गर्मी के मौसम में भी आस–पास के क्षेत्र में परम शीतलता रहती थी। हम प्रवचन सुनकर जब उद्यान से बाहर आते तो वहा गर्मी होती थी।

सन्तो के सान्निध्य में मानसिक शीतला प्राप्त होती है, यह तो बहुत बार पढा, परन्तु उनके सान्निध्य में बाहरी शीतलता भी मिलती थी। यह मेरा निजी अनुभव बहुतों ने स्वयं स्वीकार किया तथा दुहराया था।

"हम्पी" तीर्थ मे शाम को गुफा के बाहर उनके प्रवचन में लोग एकत्रित होते थे। वहां दिव्य–सुगंधि का वातावरण घंटों स्वत: बन जाता था। एक बार मैं हम्पी गया तो प्रात: के प्रवचन में उन्होंने मेरे पहुंचने से पहले ही श्रोताओ को कह दिया कि हमारा एक अनुशासित भक्त आज आने वाला है। उसके थोडी देर बाद मैं प्रवचन मे पहुंच गया तो महाराज श्री बोले, देखो–बांठियाजी आ गये हैं।

गुफा में दादाश्री जिन दत्त सूरिजी की एक छोटी काले पाषण की प्रतिमा दादावाडी के वास्ते बनाई हुई रखी थी। दोपहर के सत्संग में मैं गया तो मेरी निगाहें उस मूर्ति पर थीं। मेरे मन में इच्छा हुई–यह मूर्ति मुझे मिल जावे तो इसे हाथरस दादावाडी में स्थापित कर दूं। केवल मेरे मन में यह बात आई, मैंने किसी से कोई चर्चा नही की,

(पत्रांक - ३६१) हंपी ३०.११.६७

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री बाँठियाजी आदि सपरिवार (हाथरस)

यहाँ महोत्सव बडे उल्लास और विस्तार से सम्पन्न हुआ। १।। लक्ष का व्यय और २ की आय हुई। श्री मेघराज जी सा'ब श्री अगरचंद जी सा'ब तथा श्री भँवरलाल जी सा'ब सपरिवार वापस लौट गए। आपने भी वहाँ महोत्सव मनाया--पढकर प्रसन्नता हुई।

अब खमात के पास बडवा आश्रम में मिगसर पूर्णिमा को दो दिन महोत्सव मनाया जायगा। जिसमें हमे वे खींच कर ले जाना चाहते हैं। अतः ११.१२.६७ को प्रयाण तय हुआ है। माताजी और २५--३० भक्त मण्डली साथ में चलेंगे।

वहाँ आस पास वालो का भी काफी आग्रह है। कब तक वापस लौटना होगा पता नहीं।

रतनचदजी सा'ब आदि प्रसन्न होंगे। सभी घर भर वालों, मित्रो और साधर्मी जनों को हार्दिक आशीर्वाद माताजी का भी आशीर्वाद। धर्मस्नेह मे अभिवृद्धि हो। ॐ शान्ति.

सहजानन्दघन
हार्दिक आशीर्वाद

(पत्रांक - ४११) हंपी ८.१०.६८

ॐ नमः

भव्यात्मा श्री चोपडाजी अेव बांठियाजी सपरिवार (हाथरस)

पत्र मिला। कलकत्ता से भी शुभराजजी सा'ब का पत्र कल ही मिला। यहाँ प्रभु कृपा से आनंद ही आनन्द है।

माताजी की तबियत वैसी नहीं जो विस्तर में रहना पड़ा हो, प्रत्युत सामान्य गडबड बनी रहती है, वर्षों बीत गए। रोज प्रात घूमने जाती हैं, चौका भी संभालती हैं। अतः चिन्ता न करें, आपकी यहा आने की भावना सफल हो।

दीपावली के दिन तीन रोज १३.१४.३० अहोरात्र यहां अखण्डधून का प्रोग्राम प्रतिवर्ष रहता है। यदि इसमें सम्मिलित होना हो तो उसके अनुरूप वहां से प्रयाण करियेगा। अन्यथा बाद मे ही सही।

शुभराजजी साहब तो का.ब ७--८ को पावापुरी जाने की भावना करते हैं। घर भर वालों को, साधर्मियो को और मित्रों को मेरा एवं माताजी का हार्दिक आशीर्वाद कहियेगा। और आप भी स्वीकारियेगा। ॐ शान्ति

सहजानन्दघन
हार्दिक आशीर्वाद

P.T.O. Kamlapuram
Distt. BELLARY(MYSORE STATE)
Station HOSPET, S. Rly.

SHRIMAD RAJCHANDRA ASHRAM
HAMPI RATNAKOOT
Date 24 6 67

अनन्य आत्म शरणप्रदा। सद्गुरु राज विदेह
पराभक्तिवश चरण में। धरुँ आत्मबलि एह.

वाणी हुई, अभी समय नहीं आया है – भारत–चीन संघर्ष की संभावना की इस युद्ध के पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी।

ऐसे अलौकिक सन्त के संपर्क में जो भी आया वह भाग्यशाली धन्य बन गया। माताजी धनदेवीजी भी अध्यात्म की साक्षात् देवी थीं। उनकी आत्मा की शक्ति का दिनों दिन विकास होता गया जब से वे गुरुदेव के सान्निध्य एवं शरण में आ गई। यह एक मणि काचन संयोग बना। माताजी का स्वास्थ्य प्रारम्भ से ही गडबड़ रहा। हार्ट की तकलीफ और पेट में अलसर का फोडा कितनी बड़ी बीमारी, फिर भी प्रभु–भक्ति की दवा का ज्यादा सहारा लिया – डॉक्टर–वैद्यों की दवा तो भक्तों का मन बहलाने वास्ते लेती थीं।

गुरुदेव के महानिर्वाण के बाद माताजी ने आश्रम को खूब संभाला–भक्तों को हँसते–हँसाते वह अन्त मे इस नश्वर शरीर को ता० ४ अप्रैल १९६२ को त्याग कर एकावतारी बनी। उनको सदा मोक्ष की इच्छा रही–शरीर की नहीं। उन्होने अपने पत्र दिनांक २६.१२.६६ को अपने भक्त को एक पत्र दिया, वह इस प्रकार है–

"हूं तो आपरेशन नु नाम साभली ने गभराई गई छुं पण प्रभुनी कृपा छे के आत्मा नी पूरी पकड़ छे। अने जड तथा चेतन ने चौवीस कलाक भिन्न पणे देख्या करूं छूं अेटले बांधो आवे एम नथी पण मारो हृदय बहुज नरम होवा थी आपरेशननूं सांभली मारी छाती दुखावी थई आव्यो छे। ते हजी सूधी चालू छे बाकी सांसारिक कामो नो मने चिन्ता के फिकर कांई पण नथी। फिकर छे मारे मोक्षनी अने ते मोक्ष तो जरूर हुं लईश ज अने ते पण आ देह पछी एक ज देह धारण करीने एमां जरा पण फरक पडे एम नथी ए चौकस पणे मानजो।"

भाईजी प्रभू भजन मा खूब मक्कम रहेजो। अेना थी मन माँ अपूर्व शांति थशे।

लि० माताजी ना आशीष वांचजो

२६.१२.६६

गुरुदेव ने अपने भक्तों को समय–समय पर जो पत्र लिखे हैं वे "सहजानन्द पत्रावली" में प्रकाशित हुये हैं। उन्हीं में से कुछ पत्रो का सारांश–

माताजी के दिव्य शक्ति की कहानी-

परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी की जबानी–के रूप में यहाँ दे रहा हूँ। पाठक इन अंशों को स्वयं पढ़कर समझ जावेंगे–माताजी मे कितनी आत्मबल की शक्ति थी, वे सदा आत्मा की ही मस्ती में रहती थीं। संकट की घड़ी में गुरुदेव के प्राण प्रभु भक्ति के करट से माताजी ने बचाये और माताजी के प्राण गुरुदेव ने। दोनों की सेवा में देव–देवेन्द्र सदा हाजिर रहते थे। कुमकुम की और दिव्य सुगन्धी वाला वासक्षेप की वर्षा होना क्या कम आश्चर्य की बात है?

३.१०.६०

काकी मा को 'घोरा' बहुत याद आता है। वैसी मजा इन्हे और कहीं नहीं आई। काकी माँ का स्वास्थ्य पहले से ठीक चल रहा है। कभी–कभी हार्ट की शिकायत रहती है। पर किसी को बतलाती नहीं चेहरे से मालूम हो जाता है। पर फिर ठीक हो जाता है। दवाई तो आपके सान्निध्य में ली, बाद यहाँ तो बन्द ही है।

१६.२.६१

तथैव काकी माँ को तो डूब गयी दुनिया–सी दशा में पत्र लिखने का अवकाश ही कहाँ ? स्मृति दिलाने पर वह–ये भूल गयी, मैं आज लिखूंगी। मेघराज भाईजी को पत्र लिखना है, पत्र लिखना है रट लगाती हैं पर सुबह ८।। से ९ बजे तक रसवती बनाने जिमाने हँसाने और स्वयं जिमने हँसाने में निजाकर ज्यों ही गुफा में पैर धरा कि दशम द्वार मे सुरता लापता हो जाती है। जिसे बाहर रखने मे वह समर्थ नहीं रहती। चाहे हाथ में लिखने की सामग्री रखे किया माला, किन्तु वे ज्यों की त्यों जहाँ की तहाँ धरी रह जाए। यह नशा अमली चासत ही भरे–गुल्त है, न संयत की याद न खुद के शरीर की याद, तब मेघराज भाईजी को रटते हुए भी कैसे याद रखा जाय ? यह है परमहंसों का जीवन।

लेकिन उन्होंने मन की बात भी जान ली। थोड़ी देर बाद पू. सहजानंद जी महाराज–जिन्हें हम श्रद्धा से प्रभुश्री कहते थे, स्वयं बोले–हजारीमल यह मूर्ति तुम हाथरस ले जाओ और इसे तीन नवकार गुणकर दादावाड़ी में विराजमान कर देना। हम्पी में विशाल दादावाड़ी बनेगी, उसके लिए दूसरी बड़ी मूर्ति बनवायेंगे।

वि.सं. २०१७ की मिती जेठ सुदी पूर्णिमासी को प्रभुश्री बोरडी (गुजरात) में विराज रहे थे। उन्होंने प्रातःकालीन प्रवचन में कहा–आज नवीन घटना होने वाली है। काकी मां (पूज्य माताजी) आज शाम को बंद कमरे में ध्यान करेगी, चार प्रमुख श्रावक उस कमरे की व माताजी की तलाशी ले लें–जो वस्तुएं उपलब्ध हों नोट कर लें। कमरा बंद करके ताला लगाकर चाबी आप अपने पास रखें और दसूरे दिन ६ बजे कमरे को खोलें।

रात्रि भर माताजी ध्यान–मग्न रही, प्रात चार बजे कमरे में घंटों का अर्हद्नाद होने लगा। प्रातः कमरा सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में खोला गया। माताजी की सफेद साड़ी पर केसर के छींटे ही छींटे हो गये। सामने कुमकुम का ढेर लगा हुआ था। दिव्य सुगन्धि का वासक्षेप चारों तरफ बिखरा हुआ था। एक श्रीफल व एक चांदी की पट्टिका रखी हुई थी, जिस पर संस्कृत में एक दोहा लिखा हुआ था, जिसका अर्थ था–इस वक्त भारत में युगप्रधान पुरुष संत श्री सहजानदजी महाराज हैं।

एक चमत्कारी योगी के रूप मे सहजानन्द जी महाराज की प्रतिष्ठा थी, परन्तु आपका अन्तरात्मा भाव,वैराग्य भाव तथा समता भाव बहुत मूल्यवान था। आज भी लाखों श्रद्धालु वैराग्य को आत्मसात् करने का निरन्तर प्रयत्न करते रहते हैं।

यह चमत्कार सुप्रसिद्ध विद्वान स्व. मामाजी श्री अगरचंदजी नाहटा ने मुझे बताया और मेरी मां भी इसकी प्रत्यक्षदर्शिनी थी। बोरडी के भक्त– जन आज भी प्रतिवर्ष जेठ की पूर्णिमासी को इस दिन की जयन्ती मनाते हैं। "हम्पी" को तीर्थधाम बनाने का सारा श्रेय पूज्य सहजानंदजी महाराज को है। आपका निर्वाण वि.सं. २०२७ कार्तिक सुदी २ को हम्पी में हुआ।

"कथालोक" मासिक, दिल्ली
अगस्त, १९९४
आध्यात्मिक अनुभव विशेषांक

माताजी के दिव्य शक्ति की कहानी परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी की जबानी

परम योगनिष्ठ युगप्रधान श्री सहजानन्दघनजी इस वर्तमान कलिकाल में भारत में एक अलौकिक संत थे जिन्होंने अपनी साधना की शक्ति से आत्म– बल प्राप्त किया और अपने भक्तों को मार्ग निर्देशन दिया। उनकी 'अष्टापद' तीर्थ को पुन प्रकट कर तीर्थ स्थापित करने की हार्दिक अभिलाषा थी, इसके लिए 'कैलाश' पर्वत पर साधना भी – देव

१७.५.६३

काकी माँ के कंधों पर काफी दर्द है। दवा से चमड़ी पक गई, रस्सी निकलने लगी। सोना कठिन हो गया है फिर भी बड़ी अलख मस्ती।

८.१०.६३

मुक्तापिष्टी विषयक जहा सुक्खं, इसके बनाने में जंजाल भी बहुत है और महंगी भी। अत उसकी जगह और कोई उपाय सोचा जायगा। उतनी लेने से भी काकी माँ के हार्ट पर काफी सुधारा हुआ।

१३.१.६४

माताजी तो अपनी अलख मस्ती में है। दूजी कांई याद आवे ही कठां ऊँ ? २८.३.६५

काकी माँ नी तबीयत हवे बिना औषध सुधरती जाय छे, चिन्ता करशो नहीं।

माताजी ने हार्ट मा व्याधि देव नो अधिक उदय थता डॉक्टर ना अभिप्राय थी बाकीनूं प्रोग्राम केनसिल करी ता० १६ नी सांजे अहिं आवी होता। लोहानी आदि औषधि चालू कर्यो, हवे राहत छे। लोही आठ आना घटी गयुं होवा थी ते वधे तेना प्रयोग चालू कर्या छे। चिता करशो नहीं।

२५.११.६८

माताजी का स्वास्थ्य कभी ठीक तो कभी अठीक रूप मे दर्शन हो रहा है। फिर भी व्याधि के उदय मे भी आत्म-समाधि का वेदन हो रहा है और यही कर्त्तव्य है।

१८.१२.६८

माताजी नी तबियत नरम गरम चालतीज रहे छे अने तेने सममावे वेदवानी तेमनी वर्षोनी आदत छे। आत्मभाव अने जडभाव जुदा अनुभव्यां होवा थी देहना गमे तेवा सम-विषम उदयो मां आत्म भाव ने टकावी राखवानी एमने स्वभाविक शक्ति स्फुरायेली रहेती होवा थी एमने मृत्यु भयनो अभाव वर्ते छे। आ एमनी दशा मुमुक्षुओं ने अभ्यास योग्य छे। एम नी सेवा नो ल्हावो सौ कोई इच्छे तेम आप सौ इच्छो ए स्वाभाविक छे।

१५.१२.६८

माताजी नी तबीयत तो पहले थीज नाजुक हती। तेमा जराक धक्को लागे के पचर थई जाय। हाफर मा एमज थयु। हार्ट मा घणी वीकनेश छे। उपचारो चालू छे. देशी गोलियो ले छे। तेथी सुधारो देखाय छे। बाकी आत्ममस्ती मा खामी नथी। आ देह भाड़ा तणो गेह छे, तो पछी तेनी शी फिकर ? तेमणे आप आप सौ ने आशीर्वाद जणाव्या छे।

१५.१२.६८

गया गुरुवारे अहिं खरतरगच्छीय विचक्षण श्रीजी नी ४ शिष्याओ आवी छे। रात्रे माताजी नो समय तेओ ले छे। अने तेओ तेमने रमुजी स्वभावे केटलाक प्रश्नों ना समाधान आपता होय छे. तेथी साध्वियों ने आश्चर्य लागे छे के एमने शास्त्रज्ञान नहीं छता आवा अपूर्व उत्तरो कई रीते आपी शके छे।

२४.३.६९

माताजी नी तबीयत सारी होवा थी साध्वी मण्डलनी सेवा मां दिन-रात लाग्या रहे छे। सारो दिवस भर साध्वी मण्डल नी जिज्ञासा ने सन्तोषवा सत्संग मां वीते छे।

२६.३.६९

माताजी ना देहे पन हार्ट प्रेशर विनी कृपा हती, उचित उपायोथी राहत छे। कर्म शीघ्र खपवा सामटा आवे छे। अने तेना उदय मा आत्मानन्द रहे छे। एेज हितावह छे। केम के व्याधि समाधि रूप निवडे छे।

२४.४.७०

ता० १७४७० गुरुवार आहार करते कोई अशुभ कर्मना उदय थी एक अजब घटना बनी गई। आहार लेता-लेता ज देहातीत दशा थई गई। मोढा मां थी पानी बाहर आव्यु अने नाडी बंध थई गई। हाथ ने वल आवी गया अने आंखोपण फेरी गई। आ बधुं जोई प पू माताजी घबराइ गया। प्रभु स्मरण तो प पू माताजी नुं चालूज रहे छे। ईम।

२५.५.६१

काकी माँ नी तबियत अस्वस्थ प्राय रहे छे। औषध-प्रयोग भणी उदासीनता छे। कर्म ऋण थी।

१०.१०.६१

काकी माँ को होस्पेट एवं बेल्लारी के भक्तों ने बेल्लारी ले जाकर एक अच्छे प्रसिद्ध डॉक्टर को उन्हें दिखाया, फोटो भी निकलवाया। तो एक्सरे में यह सिद्ध हुआ कि काकी माँ के कलेजे में अल्सर है। अर्थात् फोड़े एवं चांदे हैं। और वे भी काफी मात्रा में। अतः डॉक्टर को निराशा हो गई कि .. अतः सब कुछ खाने-पीने की इजाजत दे दी। शायद सान्त्वना के हेतु गोलियाँ दीं और बताया कि एक माह गोलियाँ लेते रहेंगे तो अच्छा हो जावेगा।

यह शिकायत बीकानेर-घोरों से ही हुई थी। वह प्रयोग चला। जब तक उस ओर ध्यान नहीं था, अलसर हो गई बाद में ज्ञात होने पर प्रयोगकर्त्ता ही खतरा खा गया।

डॉ. आसोपा को आपने बार-बार बताया पर, गुपत के मरीज पर उन्होंने जैसा चाहिए, ध्यान नहीं दिया। उसी का परिणाम यह आया कि 'अब कैसे बचाया जाय ?' यह हम-आपके कम भाग्य की बात है। कर्मोदय महा बलवान है-किसी को नहीं छोड़ता। दिव्य शक्ति वाले भी चिन्तित-वे भी अपनी ओर से यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे हैं, परिणाम भविष्य के गर्भ मे है।

कल सुबह काकी माँ के मुख से यह निम्न पंक्ति बेर-बेर सुनी-

'अमे थोडा दिवस ना मेहमान, जीवन थोडूं रह्यूं...

और भी जो आखिरी भलामण देने की है, कभी-कभी हंसी में कह देती है। यह हालत आपको विदित की। हृदय में रखियेगा।

इन्द्रादि भी जिनकी चिन्ता कर रहे हैं, उनके विषय में मृत्युलोक के हम मानवी क्या कर सकते हैं ? फिर भी उम्मीद है कि शायद यह घात टल जाय। बीमा है। अपनी फरज मैंने यथाशक्ति बजाई और बजा रहा हूँ। ऐसी स्थिति होने पर भी इनके आत्मानन्द में कमी नहीं है। मुँह हँसता ही रहता है। आहार में कई दिनों से अन्न नहीं लिया जाता, फक्त दो वख्त कप-कप दूध एवं क्वचित् स्वल्प पपीता भी, फिर भी चौके मे इस देहधारी की सेवा में जरा भी कसर नहीं। यह है अलौकिक भक्ति। भगवान महावीर के ऊपर जो-जो उपसर्ग हुए, उन्हें इन्द्र टाल नहीं सका, क्योंकि कर्म तंत्र अफर है, तब भला हम, आप किस गिनती में ? फिर भी अपनी ओर की शक्य सेवा ये कर ही रहे हैं, इसीलिये ये चल-फिर सकती हैं। अधिक क्या ? आप चिन्ता न करियेगा और अपनी स्वस्थता के प्रति ध्यान दीजियेगा।

२०.८.६२

राखी वधू जोर थी करवा लाग्या, डॉक्टर ने बोलावी लाया। नाड जोई पण जग्याए शरीर मां प्राणनुं स्पन्दन जणाव्यू नहीं। डाक्टर हाथ झटकी नांख्या–प्राण वायुनी उर्द्ध गति थई ब्रह्मरंध्रमा स्थित थई जवा थी शरीर खोलिया रुप थई गयुं आ स्थिति २०–२५ मिनीट सूधी रही हशे। ते दरम्यान प.पू. माताजी ए पोता ना आत्म बले दिव्य शक्ति द्वारा प्राण ने फरी संचार कर्यो अने सहजे हाथ ऊँचो कर्यो। पछी प.पू. गुरुदेव स्वस्थ थई पोता ने पाट ऊपर सुवडाववा कह् युं–ते मुजब वे जणाए पकड़ी ने पाट पर सुवडाव्या।

२४.४.७०

माताजी नी तबीयत पण हवे लेवल ऊपर छे। तेओ दिन–रात आ देहधारी ने सेवा मां लाग्या रहे छे। बीजू काइ एमने याद पण नथी आवतुं।

"कुशल निर्देश" मासिक, कलकत्ता जुलाई - अगस्त १९९२, वर्ष २० अंक ७ - ८

बीसवीं शताब्दी के महान् तत्त्वज्ञ पुरुष श्रीमद् राजचन्द्र

भारत–भूमि सदा से संतो की उर्वरा भूमि रहती आयी है। यहाँ अनेक महापुरुष अवतीर्ण हुए हैं, जिनका स्थान विश्व के इतिहास मे बेजोड है। इसी श्रृंखला से बीसवीं शताब्दी में भी एक ऐसे ही अलौकिक, आध्यात्मिक महापुरुष श्रीमद् राजचन्द्र का आविर्भाव हुआ है, जिनकी जीवनचर्या की अमिट छाप विश्ववन्द्य महात्मा गाधी जी –जैसे पुरुष पर पडी। गाधी जी ने अहमदाबाद में आयोजित 'श्रीमद् राजचन्द्र–जयन्ती' पर सभापति–पद से कहा था–

'मेरे जीवन पर श्रीमद् राजचन्द्र भाई का ऐसा स्थायी प्रभाव पड़ा है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। उनके विषय में मेरे अपने विचार हैं। मैं कितने ही वर्षो से भारत में धार्मिक पुरुष की शोध में हूँ; परन्तु मैंने ऐसा धार्मिक पुरुष भारत में अब तक नहीं देखा, जो श्रीमद् राजचन्द्र भाई के साथ प्रतिस्पर्धा में खड़ा हो सके। उनमे ज्ञान वैराग्य और भक्ति थी। ढोंग, पक्षपात या राग–द्वेष न थे। उनमें एक ऐसी महती शक्ति थी, जिसके द्वारा वे प्राप्त हुए प्रसंग का पूर्ण लाभ उठा सकते थे। उनके लेख अंग्रेज तत्त्वज्ञानियो की अपेक्षा भी विचक्षण भावनामय और आत्मदर्शी हैं। योरप के तत्त्वज्ञानियों में मैं टालस्टाय को पहली श्रेणी का और रस्किन को दूसरी श्रेणी का विद्वान् समझता हूँ, परन्तु श्रीमद् राजचन्द्र भाई का अनुभव इन दोनों से भी चढ़ा–बढ़ा था।

'इन महापुरुष के जीवन के लेखो को आप अवकाश के समय पढ़ेंगे तो आप पर उनका बहुत अच्छा प्रभाव पडेगा। वे प्राय कहा करते थे कि मैं किसी बाडे का नहीं हूँ और न किसी बाडे मे रहना ही चाहता हूँ। ये सब उपधर्म मर्यादित हैं, और धर्म तो असीम है कि जिसकी व्याख्या भी नहीं हो सकती। वे अपने जवाहरात के धंधे से विरत होते कि तुरन्त पुस्तक हाथ में लेते। यदि उनकी इच्छा होती तो उनमे ऐसी शक्ति थी कि वे एक अच्छे प्रभावशाली बैरिस्टर, जज या वायसराय हो सकते थे। यह अतिशयोक्ति नहीं, किन्तु मेरे मन पर उनकी छाप है। उनकी विचक्षणता दूसरे पर अपनी छाप लगा देती थी।'

योगीन्द्र युगप्रधान गुरुदेव
श्री सहजानन्द घनजी महाराज

श्रीमद् राजचन्द्र
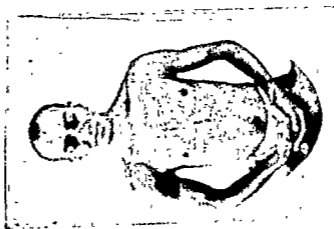
लघु वय थी, अद्भुत थयो तत्त्वज्ञान नो बोध।
अज सूचवै एमे कैं, गति अगाति का शोध।।
जे संस्कार थवा घटे, अति अभ्यासे क्यौंय।
विना परिश्रम ते थयो, भव शंका शी त्यौंय।।

अर्थात् – मुझे जो छोटी–सी अवस्था से तत्त्वज्ञानका बोध हुआ है, वही पुनर्जन्म की सिद्धि करता है, फिर गति–अगाति (पुनर्जन्म) की शोध की क्या आवश्यकता है? तथा जो संस्कार अत्यन्त अभ्यास करने के बाद उत्पन्न होते हैं, वे मुझे बिना किसी परिश्रम के ही हो गये हैं, फिर अब पुनर्जन्म की क्या शंका है ?

बालक राजचन्द्र पर ईश्वर–भक्ति की छाप उनके पितामह द्वारा पडी। वे श्रीकृष्ण के उपासक एवं भक्त थे। बालक राजचन्द्र उनके साथ श्रीकृष्ण–कीर्तन करता। अवतारों के चमत्कारिक जीवन से बालक राजचन्द्र बहुत प्रभावित हुआ। किन्तु धीरे–धीरे बालक राजचन्द्र का झुकाव जैन धर्म की ओर हुआ। इसके विषय मे वे स्वयं लिखते हैं– 'धीरे–धीरे मुझे उनके (जैन) प्रतिक्रमणसूत्र इत्यादि ग्रन्थ पढने को मिले। उनमें अति विनयपूर्वक सर्व जगत्–जीवो से मित्रता की कामना की है। इससे मेरी प्रीति उनमे भी हुई और पहली मान्यता मे भी रही। धीरे–धीरे यह प्रसंग आगे बढा। इतना होने पर भी स्वच्छता तथा दूसरे आचार–विचार अब भी मुझे वैष्णवों के प्रिय थे और जगत–कर्ता होने में विश्वास था। यह मेरी १३ वर्ष की अवस्था तक की चर्चा है। पीछे मैंने अपने पिता की दुकान पर बैठना शुरु किया। मेरे अक्षरों की छटा के कारण जब मैं लिखने के कार्य के लिए कच्छ दरबार के यहाँ बुलाया जाता, तब वहाँ जाया करता।'

बालक राजचन्द्र ने गुजराती भाषा के सिवा अन्य किसी भाषा का नियमित अभ्यास नहीं किया था। फिर भी सस्कृत, प्राकृत और मागधी पर आपका अबाध अधिकार था। आपकी क्षयोपशम शक्ति इतनी तीव्र थी कि जिस अर्थ को अच्छे–अच्छे मुनि और विद्वान् लोग नहीं समझ सकते थे, उन्हें आप पूर्ण रूपसे समझ लेते थे। कहते हैं कि श्रीमद् राजचन्द्र ने सवा वर्ष के भीतर ही सब आगमों को हृदयंगम कर लिया था। स्मरण–शक्ति इतनी तीव्र थी कि जो पाठ पढ लेते, उसे कभी भी भूलते नहीं थे। अंग्रेजी का अभ्यास करने के लिए आप एक बार राजकोट भी गये, पर वहाँ पढने की व्यवस्था न बैठने से वापिस बवाणियाँ लौट आये। आपकी अद्भुत पठन–पाठन एवं लेखन–शक्ति से प्रभावित होकर कुछ श्रीमन्त आपको विद्याभ्यास के लिए काशी भेजना चाहते थे, किन्तु श्रीमद् ने दूसरों से आर्थिक सहायता लेकर जाना स्वीकार नहीं किया।

गृहस्थाश्रम में प्रवेश

श्रीमद् ज्यों–ज्यों वयस्क होते जा रहे थे, त्यों–त्यों उनका अध्ययन, मनन एव चिन्तन परिपक्व होता जा रहा था। उनकी उदासीनता एव वैराग्य भावना बढती जा रही थी, किन्तु पूर्वकर्मो के भोग से, कन्या–पक्षवालों के 'आग्रह' और उनके प्रति 'ममत्वभाव' होने के कारण श्रीमद् ने विवाह–प्रस्ताव स्वीकार किया था। आपका विवाह विक्रम–संवत् १९४४, माघ सुदी १२ को १९ वर्ष की अवस्था में गांधी जी के परम मित्र डा प्राणजीवन मेहता के बडे भाई पोपटलाल की पुत्री झबकबाई के साथ हुआ था। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के बाद भी स्त्री एवं ससार के अन्य सुख उनको किंचिन्मात्र भी आकर्षित न कर सके। उनकी उस समय भी यही धारणा रही कि 'कुटुम्बरूपी काजल की कोठरी में निवास करने से ससार बढता है। उसका कितना भी सुधार करो, तो भी एकान्त– वास से जितना संसार का क्षय हो सकता है, उसका सौवा भाग भी उस काजल के घर में रहने से नहीं हो सकता, क्योंकि यह कषाय का निमित्त है और अनादिकाल से मोह के रहने का पर्वत है।'

शतावधान का प्रयोग

तो श्रीमद् १४–१५ वर्ष की आयु से ही अवधान–प्रयोग करने लगे थे और क्रमश: शतावधान तक पहुँच गये। उन्नीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने बम्बई में डा पिटर्सन के सभापतित्व में एक सार्वजनिक सभा में एक सौ अवधानों का एक साथ प्रयोग करके बडे–बडे लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। श्रीमद् की इस अलौकिक शक्ति की

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट झलकता है कि श्रीमद् राजचन्द्र निस्संदेह एक महान् तत्वज्ञानी, दार्शनिक और युगपुरुष थे। महात्मा गांधी को हम महान् मानते हैं और गांधी जी जिसको स्वयं महान समझते थे, वह महापुरुष निश्चय ही महान था, इसमे कोई भी अतिशयोक्ति नहीं है। महात्मा गांधी जब डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में थे, तब उनके मन में हिन्दू-धर्म के प्रति शंका हो गयी और उनका झुकाव ईसाई पादरियों के उपदेश से ईसाई-धर्म की ओर हो गया था। उस समय उन्होंने २७ प्रश्नों के उत्तर श्रीमद् से माँगे थे, जिनका उत्तर श्रीमद् ने मिती आसोज वदी ६ शनिवार विक्रम संवत् १९५० को दिया। इससे गांधी जी की सब शंकाओं का समाधान हो गया और उनकी हिन्दू-धर्म में पूर्ण आस्था हो गयी। सत्य, अहिंसा और दया-धर्म का मंत्र गांधी जी को श्रीमद् राजचन्द्र से ही मिला था, जिसके बल पर उन्होंने हमारे देश को आजाद कराया। श्रीमद् राजचन्द्र से गांधीजी की प्रथम भेंट जुलाई सन् १८७१ में जब वे विलायत से बंबई आये थे, हुई थी; उसके बाद तो निरन्तर संपर्क बढता ही गया। अब हम इस लेख में श्रीमद् के जीवन के बारे में कुछ संक्षेप में बताना चाहते हैं। आशा है वह पाठकों को हृदयगम्य होगा और उनकी जीवन-दिशा को एक नई मोड़ देगा।

जन्म

श्रीमद् राजचन्द्र का जन्म विक्रम संवत् १९२४ (सन् १८६७), मिति कार्तिक सुदी पूर्णिमा रविवार के दिन काठियावाड़-मोरबी राज्य के अंतर्गत ववाणिया गाँव में दशा- श्रीमाली वैश्य जाति में हुआ था। इनके पिता का नाम रवजीभाई पचाण और माता का नाम देवबाई था। श्रीमद् के एक भाई, चार बहिनें, दो पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। इनकी एक पुत्री श्रीमती जबलबेन अब भी मौजूद हैं, जिनके दर्शन मैंने हाल में ही किये हैं, उनकी उम्र इस समय ८५ वर्ष के लगभग है।

बाल्यावस्था

बालक राजचन्द्र की सात वर्ष की बाल्यावस्था नितान्त खेल कूद में बीती थी। इस दशा का उन्होंने अपनी आत्मचर्या में लिखा है-'सात वर्ष तक एकान्त बालसुलभ खेल-कूदों का सेवन किया। इतना मुझे उस वक्त के संबध में याद है कि उस समय मेरी आत्मा में विचित्र कल्पनाएँ हुआ करती थीं। खेल-कूद तक में विजय प्राप्त करने और राजराजेश्वर-जैसी उच्च पदवी प्राप्त करने की परम जिज्ञासा होती। वस्त्र पहिनने, साफ रखने, खाने-पीने और सोने-बैठने के संबंध में विदेही दशा थी।

'फिर भी मेरा हृदय कोमल था। वह दशा अब भी याद आती है। अबका विवेकी ज्ञान उस समय मे होता तो मुझे मोक्ष के लिए इतनी अधिक जिज्ञासा नहीं रहती। उस समय की ऐसी निर्दोष दशा होने से वह पुन-पुन स्मरण हो उठती है।'

उनकी सात वर्ष से तेरह वर्ष तक की आयु शिक्षा-अभ्यास में बीती। वे बचपन से ही मेधावी छात्र थे। उनकी स्मृति बड़ी तीव्र थी। जो पाठ शिक्षक पढ़ाता, उसका भावार्थ तत्क्षण ही वे समझ लेते और वह उन्हें कण्ठस्थ हो जाता। अपने शिक्षाकाल के बारे में श्रीमद् स्वयं लिखते हैं-'अभ्यास मे बहुत प्रमादी था, वाक्-पटु, खिलाड़ी और मौजी था। पाठमात्र शिक्षक पढाते, उतना ही मैं पढ़कर उसका भावार्थ कह जाता। इसलिए पढने की ओर से निश्चिन्तता थी। उस समय कल्पित बातें करने की मुझमें बहुत टेव थी। आठवें वर्ष में मैंने कविता की थी, वह पीछे जाँच करने पर समात निकली। उस समय मैंने कितनेक काव्यग्रन्थ पढ़े थे। उसी प्रकार अनेक प्रकार के उपदेश-ग्रन्थ थोड़े उल्टे-सीधे मैंने देखे थे, जो प्राय अब भी स्मृति में हैं।'

श्रीमद् राजचन्द्र को सात वर्ष की अल्पायु में ही जातिस्मरण रूप ज्ञान हो गया था। उन्हें अपने पूर्व-जन्म के भावों का आभास हो गया था। पुनर्जन्म की सिद्धि उन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रमाणों से की है। लघुवय मे ही उन्हें तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो गयी थी। इस संबंध में एक जगह श्रीमद् राजचन्द्र ने स्वयं लिखा है-

स्त्री–समाज को बोध देने के लिए आपने १६ वर्ष की आयु में 'स्त्री–नीतिबोध' नामक एक पद्यग्रन्थ भी बनाया था। इस ग्रन्थ में स्त्रियों को सुधर बनने के लिए हर प्रकार का उपदेश दिया है। अनमेल एवं बाल–विवाह के आप विरोधी थे। स्त्रियो को शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए आपने एक पद्य में बताया है–

थवा देश आबाद सौ हौंस धारो, भणावी गणावी वनिता सुधारो।
थति आर्य भूमि विषे जेह हानी, करो दूर तेने तमे हित मानी।।

कवि, लेखक और साहित्यकार

श्रीमद् राजचन्द्र जन्मजात कवि एवं सिद्धहस्त लेखक थे। वे संस्कारी ज्ञानी तथा साहित्यकार थे। उनकी काव्य–प्रतिभा अनूठी थी, उनकी कविता जितनी सरल है, उतनी ही मौलिक एव सरस है। प्रत्येक कविता में शब्द–योजना और भाव अनूठे हैं। जैसे सरिता का नीर सहज गति से प्रवाहित होता है, वैसे ही आपकी काव्यधारा हृदय–मन्थन का नीर है। श्रीमद् को कविता के लिए श्रम नहीं करना पडता था। उपशम, भक्ति, चरित्र, तत्त्वज्ञान आदि सभी विषयों पर श्रीमद् ने गद्य एव पद्य मे लिखा है। गाधी जी के शब्दों में 'उन (श्रीमद्) के लेखों की एक असाधारणता यह है कि उन्होने स्वय जो अनुभव किया, वही लिखा है। उसमे कहीं भी कृत्रिमता नहीं, दूसरे के ऊपर छाप डालने के लिए उन्होंने एक लाइन भी लिखी हो यह मैंने नहीं देखा। उनके पास हमेशा कोई–न–कोई धर्म पुस्तक और एक कोरी कापी पड़ी ही रहती है। इस कापी में वे अपने मन में जो विचार आते, वे लिख लेते थे। ये विचार कभी गद्य में और कभी पद्य में होते थे।

श्रीमद् ने ८ वर्ष की उम्र से कविता करना शुरू कर दिया था। ६ वें वर्ष में रामायण और महाभारत को सक्षिप्त मे पद्यो में लिख दिया था। १० वर्ष की उम्र मे आपके विचार काफी परिपक्व हो गये थे। ११ वर्ष की उम्र में आपने कई निबन्ध लिखे, जिन पर उन्हें पारितोषिक मिला। १२ वर्ष की उम्र में 'घडियाल' पर तीन सौ पंक्तियों की एक कविता लिखी। 'स्त्री–नीतिबोध', 'काव्यमाला', 'वचन–सप्तसती' और चौथी रचना 'पुष्पमाला–ये सब श्रीमद् की १६ वर्ष के पूर्व की रचनाये हैं। जिस तरहं जापमाला के १०८ दाने होते हैं, उसी तरह श्रीमद् राजचन्द्र ने सुबह–शाम, निवृति के समय पाठ करने के लिए १०८ राजा, वकील, श्रीमंत, बालक, युवा, वृद्ध, धर्माचार्य, कृपण, दुराचारी, कसाई आदि सभी तरह के लोगों के लिए हितकारी वचन लिखे हैं। श्रीमद् की पाँचवीं रचना 'मोक्षमाला' है। यह सोलह वर्ष, पाँच महीने की आयु में लिखी गयी थी। मोक्षमाला मे जैनधर्म के सिद्धान्तो का सरल और आधुनिक शैली से १०८ पाठों मे रोचक वर्णन किया गया है। सब दुःखो की जननी 'तृष्णा' है। तृष्णा की विचित्रता का किस सुन्दर ढंग से मोक्षमाला में श्रीमद् ने वर्णन किया है, यथा–

करोचली पडी दाढ़ी डांचातणो दाट वल्यो,
काली केशपटी विषे, श्वेतता छवाई गई।
सुंघवुं, सॉभलवुँ ने, देखवुं ते मांडी वल्यूं,
तेम दांत आवली ते, खरी के खवाई गई।
वली केड वांकी, हाड गया, अंग रंग भयो,
उठवानी आयु जता, लाकडी लेवाई गई।
अरे राजचन्द्र एम, युवानी हराई पण,
मन थी न रौंढ ममता मराई गई।।

अर्थात् मुँह पर झुरियाँ पड़ गयी, गाल पिचक गये, काली केशकी पट्टियाँ सफेद पड गयी, सूँघने, सुनने और देखने की शक्तियाँ जाती रही और दाँत सब पड गये, कमर टेढी हो गयी, हाड–मांस सूख गये और शरीर कौटा हो गया, उसमे बैठने की शक्ति जाती रही और चलने के लिए हाथ में लाठी लेनी पड गयी। अरे राजचन्द्र! इस तरह युवावस्था से हाथ धो बैठे, परन्तु फिर भी मन से यह रौंढ ममता नहीं मरी।

उस समय के सभी पत्रों पायनियर, टाइम्स आफ इंडिया आदि ने भूरि–भूरि प्रशंसा की और उन्हें 'साक्षात् सरस्वती' की उपाधि प्रदान की। वे चाहते तो इस शक्ति द्वारा विपुल मात्रा में धनअर्जित कर सकते थे, परन्तु उन्होंने थोड़े ही दिनों बाद यह प्रदर्शन बंद कर दिया।

कुशल व्यापारी

श्रीमद् राजचन्द्र परम तत्त्वज्ञानी होने के साथ–साथ एक परम कुशल व्यापारी भी थे। उन्होंने २१ वर्ष की आयु–विक्रम संवत् १९४६ में श्रीयुत रेवाशंकर जगजीवन के साझे में बंबई में जवाहरात, कपड़े तथा किराने के आयात–निर्यात का काम शुरू किया। जवाहरात के धंधे में बहुत कुशाग्र बुद्धि की जरूरत होती है। वे इस धंधे में पूरे पारखी एवं निपुण थे। श्रीमद् राजचन्द्र के व्यापारिक जीवन के बारे में पूज्य बापू लिखते हैं – 'धार्मिक मनुष्य का धर्म उसके प्रत्येक कार्य में झलकना चाहिये। यह रायचन्द्र भाई ने अपने जीवन में बताया था। उनका व्यापार हीरे–जवाहरात का था। वे रेवाशंकर जगजीवन झवेरी के साझी थे। अपने व्यवहार मे सम्पूर्ण प्रकार से वे प्रामाणिकता बरतते थे। ऐसी उन्होंने मेरे ऊपर छाप डाली थी। वे जब सौदा करते तो मैं कभी अनायास ही उपस्थित रहता। उनकी बात स्पष्ट और एक ही होती थी। 'चालाकी'–सरीखी कोई वस्तु उनमें मैं न देखता था। दूसरे की चालाकी वे तुरन्त ताड़ जाते थे, वह उन्हें असह्य मालूम होती थी ? ऐसे समय उनकी भ्रकुटि भी चढ़ जाती और आँखों मे लाली आ जाती, यह मैं देखता था।

'धर्मकुशल लोग व्यवहार–कुशल नहीं होते, इस वहम को रायचन्द्र भाई ने मिथ्या सिद्ध करके बताया था; अपने व्यापार मे वे पूरी सावधानी और होशियारी बरतते थे। उनके जो तर्क होते थे, वे अधिकांश सच्चे ही निकलते थे। इतनी सावधानी और होशियारी होने पर भी वे व्यापार की उद्विग्नता अथवा चिन्ता न करते थे। दूकान में बैठे हुए भी जब अपना काम समाप्त हो जाता, तब उनके पास पड़ी हुई धार्मिक पुस्तक अथवा कॉपी, जिसमें वे अपने उद्गार लिखते थे, खुल जाती थी। मेरे–जैसे जिज्ञासु उनके पास रोज आते ही रहते थे और उनके साथ धर्म–चर्चा करने में हिचकते न थे। इस तरह के अपवाद होते हुए भी व्यवहार–कुशलता और धर्मपरायणता का सुन्दर मेल जितना मैंने कवि (रायचद्र भाई) में देखा है, उतना किसी दूसरे मे देखने में नहीं आया।'

रहन-सहन

श्रीमद् राजचन्द्र का रहन–सहन अत्यन्त सादा एवं सयमित था। 'सादा जीवन, उच्च विचार' के वे ज्वलत प्रतीक थे। गांधी जी के शब्दों में श्रीमद् का 'रहन–सहन, सादा और पहनाव अँगरखा, खेस, गर्म सूत का फेंटा और धोती होते। भोजन के लिए जो मिलता, उसमें संतुष्ट रहते। उनकी चाल धीमी थी और देखने वाला समझ सकता कि वे चलते–चलते भी अपने विचारों मे मग्न हैं। आँखों मे चमत्कार था, अत्यन्त तेजस्वी विह्वलता जरा भी न थी। आँखों में एकाग्रता खींची थी। चेहरा गोलाकार, होठ पतले, नाक अणिदार भी नहीं, चपटी भी नहीं, शरीर एकहरा, कद मध्यम, वर्ण श्याम और देखने में गंभीर– मुद्रा थे। उनके कण्ठों में ऐसा माधुर्य था कि जिसको सुनते–सुनते मनुष्य थकते नहीं, चेहरा हँसमुख और प्रफुल्लित था। उसके ऊपर अन्तरानन्द की छाप थी। उनकी भाषा परिपूर्ण थी। ऐसा वर्णन संयमी के सम्बन्ध में ही संभव हो सकता है'।

महिला-उद्धारक

श्रीमद् राजचन्द्र के हृदय में स्त्री–जाति के प्रति बड़ा सम्मान था। उन्होंने नारी को नरक की खान नहीं समझा था। स्त्री–सम्बन्धी विवेचन पर श्रीमद् राजचन्द्र अपने एक पत्र मे लिखते हैं – 'स्त्री में कोई दोष नहीं, परन्तु दोष तो अपनी आत्मा में है। स्त्री को सदाचारी ज्ञान देना चाहिये और उसे एक सत्संगी समझना चाहिये। उसके साथ धर्म–बहिनका संबंध रखना चाहिये। अन्तःकरण से किसी भी तरह माँ–बहिन में और उसमें अन्तर न रखना चाहिये। उसके शारीरिक भाग का किसी भी तरह मोहनीय कर्म के वश से उपभोग किया जाता है। उसमें योग की ही स्मृति रखनी चाहिये। उससे कोई संतानोत्पत्ति हो तो वह एक साधारण वस्तु है– यह समझकर ममता नहीं रखना चाहिये।

तथा बौद्धादि दर्शनों में भी आपका पाण्डित्य उतना ही विशाल एवं गहरा था। वे सभी धर्मों का समान रूप से आदर करते थे। 'क्षीर–नीर' के विवेकवत् सबसे साररूप ग्रहण करते थे। कुरान, जिंदअवेस्ता आदि पुस्तकें भी आप अनुवाद के जरिये पढ गये थे।

श्रीमद् राजचन्द्र ने 'आत्मा' को ही धर्म का स्वरूप समझा था। धर्म का अर्थ मत–मतान्तर नहीं। धर्म आत्मा का गुण है और वह मनुष्य जाति में दृश्य अथवा अदृश्य रूप से विद्यमान है। धर्म वह साधन है, जिसके जरिये हम अपने आपके 'निज स्वरूप' को स्वयं जान सकते हैं।, मतों, साम्प्रदायिकता एवं बाडाबंदी के आप सख्त विरोधी थे। जैन–धर्म और समाज की वर्तमान दशा से आप बहुत ही क्षुब्ध थे। आप दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनो सम्प्रदायों की एकता के प्रबल पक्षपाती थे। आपका स्पष्ट कहना था कि दिगम्बर, श्वेताम्बर आदि मत–दृष्टि से कल्पना मात्र हैं। राग–द्वेष और अज्ञान का नष्ट होना ही जैन–मार्ग है। वे सब धर्मों का मूल 'आत्मधर्म' मानते थे। श्रीमद् स्पष्ट शब्दो में कहते थे–

भिन्न-भिन्न मत देखिये, भेद दृष्टि नो येह।
एक तत्वनां मूल मां, व्याप्या मानो तेह।।
तेह तत्वरुप वृक्षनु 'आत्मधर्म' छै मूल।
स्वभावनी सिद्धी करे, धर्म तेज अनुकूल।।

अर्थात् जगत में जो भिन्न–भिन्न मत दिखायी देते हैं, वह केवल दृष्टि का भेदमात्र हैं इन सबके मूल में एक तत्त्व रहता है और वह तत्त्व आत्मधर्म है। अतएव जो निजभाव की सिद्धि करता है, वही धर्म उपादेय है।

जैन मत और वेद–मत की तुलना करते हुए श्रीमद् राजचन्द्र ने एक बार कहा था– 'जैन स्वमत है और वेद परमत है, यह हमारी दृष्टि में नहीं है। जैन को संक्षिप्त करें तो वह वेदमत है, और वेदमत को विस्तृत करें तो वह जैनमत है। हमें तो दोनो में कोई बडा भेद नहीं प्रतीत होता।

ईश्वर–प्राप्ति के लिए सद्गुरु और सत्– शास्त्र का साधन नितान्त आवश्यक है। श्रीमद् ने जगह–जगह इन दोनों को स्मरण किया है। श्रीमद् के रचित 'श्रीसद्गुरु–भक्ति–रहस्य' के २० दोहे प्रातः और सायं पठनीय एवं कण्ठाग्र करने योग्य हैं। एक दोहे में आप कहते हैं–

प्रभु, प्रभु लय लागी नहीं, पड्यो न सद्गुरु पाय।
दीठा नहीं निज दोष तो, तरिये कौन उपाय।

और भी श्रीमद् कहते हैं–

बिना नयन पावे नहीं, बिना नयन की बात।
सेवे सद्गुरु के चरन, सो पावे साक्षात।।

श्रीमद् राजचन्द्र दार्शनिक के सिवा उग्र सुधारक भी थे। रूढिवादियों को आपने खूब आडे हाथ लिया है। वे 'देशहित' कार्य करने के लिए लोगों को उपदेश देते थे। स्त्री–शिक्षा के लिए आपने बहुत कुछ कहा था। वर्तमान काल मे क्षय रोग (T.B.) जिस त्वरित गति से देश में फैल रहा है, उसके इलाज के लिए आप अपने विक्रम सं १९५६ वैशाख सुदी ६ के पत्र मे मोरबी से लिखते थे– 'वर्तमान काल मे क्षय रोग विशेष बढा है और बढता जा रहा है। इसका मुख्य कारण ब्रह्मचर्य की कमी, आलस्य और विषयादिकी आसक्ति है। क्षय रोग–नाशका मुख्य उपाय ब्रह्मचर्य सेवन, शुद्ध सात्विक आहार–पान और नियमित वर्तन है।' इसी तरह Enoculation (महामारी का टीका) आदि क्रूर प्रथाओं का भी श्रीमद् ने घोर विरोध करके अपनी समाज सुधारक लोकोपकारक वृत्ति का परिचय दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं–श्रीमद् राजचन्द्र 'आत्म–विचार' की उच्चदशा को पहुँचे हुए थे और इसी दशा का आपने 'शुद्ध समकित' के नाम से उल्लेख किया है। वे अपने स्ववृत्तान्त में लिखते हैं–

विक्रम-संवत १९४२-अठारह वर्ष की आयु में आपने 'भावनाबोध' नामक ग्रन्थ लिखा। भावनाबोध में अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि संसार, आश्रव, संवर, निर्जरा, और लोक-स्वरूप- इन १० भावनाओं का वर्णन किया गया है। तत्त्व वेत्ताओं के उपदेश का सार बताते हुए श्रीमद् कहते हैं - 'इन तत्त्ववेत्ताओं ने संसार सुख की प्रत्येक सामग्री को शोकरूप बतलाया है। यह उनके अगाध विवेक का परिणाम है। व्यास, वाल्मीकि, शंकर, गौतम, पतञ्जलि, कपिल और युवराज शुद्धोधन ने अपने प्रवचनों में मार्मिक रीति से और सामान्य रीति से जो उपदेश किया है, उसका रहस्य नीचे के शब्दों में आ जाता है- 'अहो प्राणियों! संसाररूपी समुद्र अनन्त और अपार है, इसको पार करने के लिए पुरुषार्थ का उपयोग करो, उपयोग करो।'

महात्मा गांधी का प्रिय भजन -

अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे, क्या रे थईशुं बाह्यान्तर निर्ग्रन्थ जो।
सर्व सम्बन्ध नुं बंधन तीक्षण छेदीने, विचरीशुंकवे महत्पुरुषने पंथ जो?
सर्व भावथी औदासीन्य वृत्ति करी, मात्र देह से संयमहेतु होय जो।।
अन्य कारणे अन्य कशुं कल्पे नहिं, देहे पण किंचित् मूर्च्छानव जोय जो।।

इस भजन के बारे में गांधी जी लिखते हैं - 'रायचन्द्र भाई की १८ वर्ष की उम्र के निकले हुए अपूर्व उद्‌गारों की ये पहली दो कड़ियाँ हैं; जो वैराग्य इन कडियों में छलक रहा है, वह मैंने उनके दो वर्ष के गाढ़ परिचय से प्रत्येक क्षण में उनमे देखा है।'

१६ वर्ष की अवस्था मे श्रीमद् राजचन्द्र ने १२० वचनों का 'वचनामृत' लिखा है। वचनामृत के वचनों की मार्मिकता हृदयस्पर्शिनी है। जीवन को नयी मोड देने की रामबाण औषधि है।

बीसवें वर्ष मे श्रीमद् राजचन्द्र ने प्रतिमा की (मूर्तिपूजा-की) सिद्धि के ऊपर एक वृहद् निबन्ध लिखा था। इसमें आगम, इतिहास, पुरातत्त्व, परम्परा और अनुभव के प्रमाण से प्रतिमा-पूजन का मण्डन किया है।

इसके बाद अन्य कई काव्य लिखे, जो तात्कालीन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे थे। कुन्द-कुन्द पचास्तिकाय और दशवैकालिक सूत्र की कुछ गाथाओं का सुन्दर अनुवाद भी श्रीमद् ने किया था। बनारसीदास, आनन्दघन चिदानन्द और यशोविजय प्रभृति मस्त योगी-संतो के पद्य श्रीमद् को बहुत प्रिय थे। इन पदों का सुन्दर विवेचन भी श्रीमद् ने लिखा था।

श्रीमद् राजचन्द्र की प्रौढावस्था यानी २९ वर्ष की अवस्था मे लिखा गया ग्रन्थ 'आत्म-सिद्धि-शास्त्र' है। यह आत्मज्ञान का अमोघ शास्त्र है। इसमें १४२ पद्य हैं। यह ग्रन्थ श्रीमद् ने श्रीसौभाग्यभाई, श्री अचलभाई आदि मुमुक्षु तथा भव्य जीवों के हित के लिए नडियाद में रहकर बनाया था। इन ग्रन्थ में (१) आत्मा है, (२) वह नित्य है, (३) वह निज कर्म का कर्ता है, (४) वह भोक्ता है, (५) मोक्ष है, (६) मोक्ष का उपाय है- इन छः पदो की विस्तृत व्याख्या करके उसे सिद्ध किया है। इसमें कविता बडी ही उच्च कोटिकी है। षड्‌दर्शन का स्वरूप इस छोटी पुस्तक में बहुत ही बारीकी के साथ आ गया है। इस ग्रन्थ के हिन्दी, अंग्रेज़ी एवं मराठी में अनुवाद हो चुके हैं। इसका अंग्रेजी अनुवाद तो स्वयं गांधीजी ने किया था।

श्रीमद् राजचन्द्र ने कुछ काव्य हिंदी में भी लिखे थे। श्रीमद् की गांधी की तरह नित्य डायरी लिखने में भी विशेष रुचि थी। श्रीमद् का समस्त साहित्य 'श्रीमद्‌राजचन्द्र' नामक विशिष्ट ग्रन्थ मे 'परमश्रुत प्रभावक मण्डल', बम्बई की ओर से प्रकाशित हुआ है। जिज्ञासा उस ग्रन्थ के पठन एवं मनन से तृप्त हो सकती है। यहाँ तो अति ही संक्षेप में सब कुछ लिखा जा रहा है।

महान् तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक, धर्मोपदेशक और सुधारक

श्रीमद् राजचन्द्र महान् तत्त्वज्ञानी, असाधारण दार्शनिक और संत थे। भारत के समस्त मुख्य दर्शनों का आपने गहरा अध्ययन एवं अभ्यास किया था। जैन-तत्त्वज्ञान के आप उच्च कोटि के विद्वान थे, वेदान्त, सांख्य

श्रीमद् राजचन्द्र-अनुभव-वाणी

१. व्यवहार में बालक बनो, सत्य में युवक बनो और ज्ञान में वृद्ध बनो।
२. राग करना नहीं, करना तो सत्पुरुष पर, द्वेष करना नहीं, करना तो कुशील पर।
३. शूरवीर कौन ? जो स्त्री के नयन–कटाक्ष से घायल न हो।
४. सत्पुरुषों का क्षण भर का समागम संसार रूपी समुद्र को पार करने में नौका रूप होता है – यह वाक्य महात्मा शंकराचार्य जी का है और वह यथार्थ ही मालूम होता है।
५. तू किसी भी धर्म को मानता हो, इसका मुझे पक्षपात नहीं। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि जिस राह से संसार–मल का नाश हो, उस भक्ति, उस धर्म और उस सदाचार का तू सेवन करना।
६. प्रजा के दुःख, अन्याय और कर, इनकी जाँच करके आज कम कर। तू भी हे राजन्! काल के घर आया हुआ पाहुना है।
७. श्रीमंत हो तो पैसे के उपयोग को विचारना। उपार्जन करने का कारण आज ढूँढकर कहना।
८. तू चाहे जो धंधा करता हो, परन्तु आजीविका के लिए अन्याय सम्पन्न द्रव्य का उपार्जन नहीं करना।
६. 'सहजात्मस्वरूप परमगुरु' का नित्य जाप करो।

-'कल्याण' गोरखपुर, वर्ष ३३ अंक ४, अप्रैल १६५६

* * * * * * * * *

श्रीमद् राजचन्द्र एवं गांधी जी

श्रीमद् राजचन्द्र और महात्मा गांधी के अटूट, आत्मिय संबंध थे। जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में थे, मुल्ला–मौलवियों एवं ईसाई पादरियों ने– उनको हिन्दु धर्म के प्रति सशंकित कर दिया था। गांधीजी रायचन्दभाई को कविजी कहते थे। उन्होंने २७ प्रश्न कविजी से किये, उनका संतोषजनक उत्तर पाकर– गांधीजी हिन्दु धर्म प्रति आस्थावान बने रहे। गांधीजी ने बार बार अपने विभिन्न अवसरो पर दिये गये भाषणों में तथा अपनी "आत्म–कथा" में स्पष्ट उल्लेख किया है – मेरे जीवन पर तीन व्यक्तियों का गहरा असर पड़ा– रस्किन, टॉल्स्टॉय एवं श्री रायचंदभाई। सबसे अधिक रायचंदभाई का पड़ा–सत्य एवं अहिंसा उनसे प्राप्त हुई।

सन् १६२४ में गांधीजी यरवदा जेल मे गये तो उन्होंने जैन धर्म के उत्तराध्ययन सूत्र, भगवती सूत्र, कुमारपाल चरित आदि अनेक ग्रन्थों का स्वाध्याय किया और सम्पूर्ण श्रीमद् के प्रकाशित साहित्य का गहन अध्ययन किया। अपनी दैनिक प्रार्थना में भी श्रीमद् का भजन 'अपूर्व अवसर ऐवो क्यारे आवशे ? "को गाया करते थे। गांधीजी के कारण उनके आश्रम में सहयोगियों पर भी श्रीमद् के साहित्य का प्रभाव पड़ा। लगभग बीस वर्ष पूर्व गांधीजी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी पू. विनोबा भावे – भूदान यात्रा के दरम्यान हाथरस पधारे थे, तो मैंने उनको श्रीमद् का साहित्य भेंट करना चाहा। उत्तर मे विनोबा जी ने कहा – श्रीमद् का साहित्य मैं अपने पास सदा रखता हूँ और उन्होंने तुरन्त मुझे श्रीमद् के भक्तिरस के बीस दोहे सुना दिये।

धन रे दिवस आ अहो, जागि रे शान्ति अपूर्वरे।
दश वर्ष से, धारा उलसी, मटयो उदयकर्म नो गर्व रे।।
ओगणीससे ने एकत्रीसे, आव्यो अपूर्व अनुसार रे।
ओगणीससे ने बेताली से, अद्भुत वैराग्य धार रे।।
ओगणीससे ने सुडताली से, समकित सुद्ध प्रकाश्युंरे।
श्रुत अनुभव वधती दशा, निज स्वरूप अवभास्युंरे।।

एकान्तवासी

श्रीमद् राजचन्द्र में ज्यों–ज्यों आत्म विकास हो रहा था, त्यों–त्यो उन्हें एकान्त प्रिय लगने लगा। उन्होंने ईडर की गुफाओं में महीनों एकान्तवास किया था और निर्भय होकर गुजरात के अन्य पहाड़ों और वनों में भी उनो प्रवास किया था। वे गुप्त रहते थे, तो भी दर्शनाभिलाषी उनका पीछा करते रहते थे। ईडर में रहते वक्त उन्होंने ईडर के राजा को भी प्रबोध दिया था। –

अन्त मे श्रीमद् राजचन्द्र संसार के नाना मत–मतान्तरों से बहुत दुःखी हो गये थे। श्रीमद् बहुत बार कहा करते थे कि 'मेरे शरीर में चारों ओर से कोई बरछी भोंक दे तो मैं उसे सह सकता हूँ, पर जगत् में जो झूठ, पाखण्ड, अत्याचार चल रहा है, धर्म के नाम पर जो अधर्म हो रहा है, उसकी बरछी मुझसे सही नहीं जाती। गांधीजी ने राजचन्द्र–जयन्ती पर कहा था–'अत्याचारो से उन्हें अकुलाते मैंने बहुत बार देखा है। वे (श्रीमद्) सारे जगत् को अपने कुटुम्ब के जैसा समझते थे। अपने भाई या बहिन की मौत से जितना दुःख हमें होता है, उतना ही दुःख उन्हें संसार में दुःख और मृत्यु देखकर होता था।'

इस तरह श्रीमद् राजचन्द्र संसार–ताप से संतप्त थे। अत्यधिक शारीरिक और मानसिक श्रम के कारण आपका स्वास्थ्य दिनों–दिन गिरता गया। स्वास्थ्य सुधारने के लिए आपको धर्मपुर, अहमदाबाद, बढवाण कैंप और राजकोट रखा गया और नाना प्रकार के इलाज कराये गये। पर सब निष्फल हुए। काल को श्रीमद् राजचन्द्र जैसे अमूल्य रत्न का जीव प्रिय नहीं हुआ और उन्हें इस नश्वर देह को छोड़ना पड़ा। कहते हैं कि विक्रम संवत् १९५६ मे श्रीमद् राजचन्द्र ने व्यवहारोपाधि से निवृति लेकर स्त्री और लक्ष्मी का परित्याग करके, अपनी मातुश्री से आज्ञा मिलने पर सन्यास ग्रहण करने की भी तैयारी कर ली थी। मृत्यु–समय श्रीमद् का वजन १३२ पौंड से घटकर कुल ४३ या ४४ पौंड ही रह गया था। इस तरह श्रीमद् राजचन्द्र की आत्मा इस विनश्वर देह को विक्रम संवत् १९५७ मिती चैत वदी ५ मंगलवार को दोपहर के २ बजे राजकोट में छोड़कर प्रयाण कर गयी। देह–त्याग के ५–६ घंटा पूर्व श्रीमद् के अन्तिम उद्गार ये थे–तुम निश्चिन्त रहना, यह आत्मा शाश्वत है। अवश्य विशेष उत्तम गति को प्राप्त होने वाली है। तुम शान्त और समाधि–भाव वर्तन करना। जो रत्नमय ज्ञानवाणी इस देहद्वारा कही जा सकती, उसके कहने का समय नहीं। तुम पुरुषार्थ करना. मनसुख; दुःखी न होना, माँ को ठीक से रखना। मैं अपने आत्म स्वरुप में लीन होता हूँ, इस तरह वह पवित्र देह और आत्मा समाधिस्थ हो छूट गयी। लेशमात्र भी आत्मा के छूट जाने के चिन्ह प्रकट प्रतीत नहीं हुए। लघुशंका, दीर्घशंका, मुँह में पानी, आँखों में पानी अथवा पसीना कुछ भी नहीं था। उस समय श्रीमद् का समस्त परिवार तथा गुजरात–[illegible] के बहुत–से मुमुक्षु उपस्थित थे।

श्रीमद् के जीवन से शिक्षा

श्रीमद् राजचन्द्र के सम्पूर्ण जीवन और ज्ञान से गांधी जी के प्रवचनानुसार हमें चार बातों की शिक्षा मिलती है – (१) शाश्वत वस्तु (आत्मा) में तन्मयता, (२) जीवन की सरलता, (३) समस्त संसार के साथ मैत्रीभाव, (४) सत्य–अहिंसामय जीवन।

श्री हजारीमल बाँठिया-रचित साहित्य

पूर्वज एवं महापुरुष

इसी तरह अनेक लोग श्रीमद् के आंतरिक भक्त थे। स्वनामधन्य श्री घनश्यामदासजी बिड़ला से भी गांधीजी का अति निकट का रिश्ता था। बापू की हर प्रकार की आज्ञा उनको शिरोधार्य थी। सन् १९२५ में श्री बिड़लाजी ने श्रीमद् के बारे में जानकारी चाही तो सन् १९२५ की ३० मार्च को गांधी जी ने एक पत्र बिड़लाजी को लिखा – उसकी अवकिल नकल पाठको के लाभार्थ यहाँ दे रहा हूँ। यह पत्र – "सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय" खण्ड छब्बीस के पृष्ठ ४३१ मे छपा है।

गांधीजी का पत्र : घनश्यामदास बिड़ला को

चैत्रसुदी ६ (३० मार्च १९२५)

भाई श्री घनश्यामदासजी,

आपका खत मिला है।

आपका सूत अच्छा है। जिस पवित्र कार्य का आपने आरंभ किया है उसको आप हरगिज न छोड़ें। आपकी धर्मपत्नी के बारे में आप प्रतिज्ञा ले सकते हैं कि यदि उनका स्वर्गवास होगा तो आप शुद्ध एक पत्नीव्रत का सर्वथा पालन करेंगे। यदि ऐसी प्रतिज्ञा लेने की इच्छा और शक्ति हो तो मेरी सलाह है कि आप आपकी धर्मपत्नी के समक्ष उस प्रतिज्ञा लें।

२० हजार रुपिये के लिए मैं जमनालालजी को दुकान से पूछुंगा।

श्री रायचंदजी से मेरा खूब सहवास था। मैं नहीं मानता हूँ कि सत्य और अहिंसा के पालन में वे मेरे से बढ़ते थे। परन्तु मेरा विश्वास है कि शास्त्र ज्ञान और स्मरण शक्ति मे मेरे से बहुत बढ़ते थे। बाल्यावस्था में उनको आत्मज्ञान और आत्म विश्वास था। मैं जानता हूं कि वे जीवनमुक्त नहीं थे और वे खुद जानते थे कि नहीं थे। परन्तु उनकी गति उसी दिशा मे बड़े जोर से चल रही थी। बुद्ध देव इ. के बारें में उनके ख्यालों से मैं परिचित था। जब हम मिलेंगे तब उस बारे में बातें करेंगे। मेरा बंगाल प्रवास मई मासमां शुरू होता है।

अलीगढ के बारे में मैंने आप से रू० २५००० की मांगनी की है। *हकीमजी का तार भी आपको भेजा है।*

आपका,

मोहनदास गांधी

मूल पत्र (सी डब्लू ६१०६) से
(सौजन्य घनश्यामदास बिड़ला)
"दिव्यध्वनि" मासिक, कोबा
वर्ष १८ अक ३
मार्च, १९९२

विद्यार्थियों का जीवन–निर्वाह हो रहा है। वे बड़े समाज-सेवी हैं, खासकर ओसवाल समाज को उन पर बहुत गौरव है।

श्रीमान् बापना साहब एक महान प्रतिष्ठित कुल मे जन्मे हैं। जैसा उनका घराना है वैसी ही उनके हृदय की विशालता है। वे महान राजनीतिज्ञ हैं किन्तु उनकी राजनीति शुद्ध और सात्विक है। कूटनीति से आप हर घडी दूर रहते हैं।

हम कह सकते हैं कि भारतीय रियासतो के प्राइम–मिनिस्टरो मे सर सिरेमल जी बापना सी.आई.ई. महोदय का आसन बहुत ऊंचा है। यही कारण है कि बापना साहब की सभी भारतीय उच्च पदाधिकारियो ने मुक्त कठ से प्रशंसा की है।

श्रीमान् बापना साहब और बीकानेर

इन्हीं सभी विशेषताओं का प्रताप है कि आज भी वे हिन्दुस्तान के एक बडे देशी राज्य बीकानेर मे प्रधान मत्री के पद पर आसीन हैं। सन् १९३६ के अगस्त मास में उन्हे महाराजाधिराज महाराजा सर गगा सिंह जी बहादुर ने इन्दौर से बुलाकर अपना प्राइम मिनिस्टर नियुक्त किया। जब वे बीकानेर राज्य के प्रधान मत्री नियुक्त हुए तब उस उपलक्ष में बीकानेर नरेश ने जो उनको भोज किया था उसमें महाराजा साहब ने एक भाषण दिया था, उस भाषण के बारे मे "राजस्थान ससार" साप्ताहिक कलकत्ता ने लिखा है –

"उस भोज में महाराजा साहब ने जो भाषण दिया था, वह आज भी हमारे सामने है। बीकानेर नरेश ने उस भोज मे बापना महोदय की १३ वर्षो की लगातार प्राइम मिनिस्ट्री का उल्लेख कर कहा कि आपने इन्दौर राज्य को उन्नत बनाया, राउण्ड टेबुल कान्फ्रेंस में ख्याति प्राप्त की और लीग आफ नेशन्स मे कौशल पूर्ण कार्य किया। महाराजा साहब ने कहा सर सिरेमल बापना अब हमारे प्राइम मिनिस्टर हैं, जिनकी बुद्धिमता, योग्यता और दूरदर्शिता पर हम निर्भर रह सकते हैं। महाराजा ने यह भी कहा कि उनकी अवस्था इस समय ५६ वर्ष की हो चुकी है, इसलिए वे झझटो से मुक्त होना चाहते हैं। इसलिये वे सिरेमल बापना की ओर देखते हैं कि वे अब तक की शासन-सबंधी अनेक झझटो से उन्हें मुक्त कर देगे।

"महाराज ने कहा कि ऐसे समय मे जब कि भारतवर्ष में राजनीतिक स्थिति के कारण सकट काल उपस्थित हुआ है, तब सर सिरेमल बापना की सेवाये बडी मूल्यवान होंगी। महाराज ने फिर आशा की है कि, बापना महोदय के शासन में राजा और प्रजा का मधुर घनिष्ट सबध होगा और राज्य के अधिकारी और प्रजाजन उनके प्रतक्ष नेतृत्व मे आगे बढेगे।

'जिस प्रकार महाराज को आशाए हैं, उसी प्रकार बीकानेर राज्य की प्रजा को अपने प्राइम मिनिस्टर से बडी आशाए है कि नवीन बीकानेर में अपना नाम अमर कर देंगे।"

· समाज सेवक
३० जून १९४०

की न्यायवृत्ति, लोकप्रियता और प्रकाण्ड बुद्धि उनका आसन अधिकाधिक दृढ़ करती गयी। नये महाराज सर यशवंतराव होल्कर भी उनसे बड़े प्रसन्न रहे और उन्हें अपना प्राइम मिनिस्टर बनाया।

सन् १९१४ में श्रीमान् बापनाजी को भारत सरकार ने "रायबहादुर" की पदवी से विभूषित किया। सन् १९२० में सर तुकोजीराव होल्कर ने उन्हें एतमाद-वजीर-उद्दौला के पद का सम्मान दिया। सन् १९३० में महाराज सर यशवंत राव होल्कर ने उनको वज़ीर उद्दौला का पद दिया। वर्तमान इन्दौर नरेश की शैशवावस्था में सर सिरेमल ने रीजेंसी कौन्सिल के प्रधान रहकर अत्यन्त सफलता-पूर्वक शासन किया था, इससे प्रसन्न होकर गवर्नमेंट ने सन् १९३१ की जनवरी मास मे उन्हे सी.आई.ई. की सम्माननीय पदवी प्रदान की। इसी के बाद सरकार ने उन्हे 'नाइट', 'सर' की पदवी से विभूषित किया।

इन्दौर में शासक बापना साहब की लोक सेवा -

इन्दौर राज्य में सर सिरेमल ने जो शासन-सुधार के कार्य किये हैं और जितनी उत्तमता से शासन कार्य चलाया है वह प्रजा एवं राजा दोनो के लिए चिरस्मरणीय है। उनके शासन काल में इन्दौर में शिक्षा की अच्छी उन्नति हुई है। जहां शिक्षा विभाग में पहले ५ लाख रुपये खर्च होते थे वहां अब ८ लाख खर्च होते हैं। उन्हीं के समय मे एम.ए. और एल-एल.बी. की नवीन क्लासें खोली गयीं और इन्दौर मध्य भारत एवं राजपूताना का प्रधान शिक्षा-केन्द्र बनाया गया। इन्दौर में ड्रेनेज सिस्टम वाटर सप्लाई वर्क्स की जो आयोजना है, वह ऐसा कार्य है कि जिसने इन्दौर के इतिहास मे बापना साहब का नाम अमर कर दिया है। उन्होंने प्रजा की भलाई के लिए कई काम किये है, जो उस राज्य के इतिहास मे स्वर्णाक्षरों से लिखे जाने योग्य हैं। बड़े-बड़े ब्रिटिश अधिकारी भी उनकी योग्यता के कायल हैं। इसी से वे राउन्डटेबिल कान्फ्रेंस के लिए महाराजा की जगह चुने गये थे। वहां उनने बड़ी योग्यता के साथ कार्य किया।

श्री बापना साहब के शासन की तारीफ करते हुए ता० १३ मार्च सन् १९२६ के दिन मध्य भारत के भूतपूर्व ए.जी.जी. सर रेजिनां लुग्लेन्सी महोदय ने मानिक बाग पैलेस मे एक व्याख्यान में निम्नलिखित उद्गार प्रकट किये थे -

'But I can say,you have in Indore an efficient administrative machine, second to none amongst the states, I have seen. You have a Prime Minister and a cabinet genuinely devoted to the good of the state and you have also a number of conscientious officers I rank the Holkar administration very high amongst the states of India.'

कृषि, वाणिज्य, पब्लिक वर्क्स, शिक्षा, न्याय और जनता के स्वास्थ्य सम्बन्धी कामों की जो उन्नति इन्दौर राज्य में नजर आती है उसका श्रेय सर सिरेमल को ही है। यही कारण है कि सन् १९३९ के अगस्त मास में भारत के धुरन्धर राजनीतिज्ञ महाराजा सर गंगा सिंह बहादुर बीकानेर ने सम्मान-पूर्वक आमंत्रित कर उनको अपना प्र.मि. बनाया है।

श्रीमान् बापना साहब का व्यावहारिक जीवन

सर सिरेमल बापना का विवाह सम्वत् १९५३ में उदयपुर के सुप्रसिद्ध मेहता श्री भूपाल सिंह की कन्या से हुआ। मेहता भूपाल सिंह जी भी महाराणा फतेह सिंह जी के समय में उदयपुर में दीवान थे। आपके बड़े पुत्र का नाम कल्याणमल जी है, जो बी.ए.,एल-एल.बी. है, और छोटे पुत्र का नाम प्रताप सिंह जी है, जो एम.ए., एल-एल.बी. हैं। इनका सांसारिक जीवन अत्यन्त सुखमय है, ये पुत्र-पौत्र, धन-दौलत सभी वांछित वस्तुओं से अत्यन्त सुखी हैं।

श्रीमान् बापना साहब का व्यक्तित्व

बापना साहब का व्यक्तित्व अत्यन्त उच्च सरल और सात्विक है। वे सौजन्य की साक्षात् मूर्ति हैं। दया, सहानुभूति और उदारता के गुण उनमें कूट-कूट कर भरे हैं। उनके गुप्त दान से पचासों विधवा बहिनों और

बरातियो को खूब मद्य पिलाया। उनके गाफिल हो जाने पर सकेत अनुसार राजा ने सेना सहित आ कर उनमे से अधिकाश को मार डाला और बचे हुओ को कैद कर उस प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। डुगरिया की दो स्त्रिया धनी और काली उसके साथ सती हुईं। उनके स्मारक एक पहाडी पर बने हैं।"

शालाशाह तपागच्छीय जैन अनुयायी थे। धार्मिक कार्यो मे दिल खोल द्रव्य व्यय करते थे। आपने कई मंदिर एवं मूर्तियां बनवाई थीं। उनमें से कुछ आज भी दृष्टिगोचर होती हैं।

आतरीगाव (डूँगरपुर) मे भगवान शांतिनाथ का जिनालय था, जो आपकी कीर्ति को सर्वत्र फैला रहा है। यह देवालय आपकी कीर्तियो में से एक कीर्ति स्तम्भ है। इसमे स १५२५ का लेख खुदा है। इस मदिर की प्रशस्ति मे आपके वंश का विशद वर्णन है। हालांकि यह प्रशस्ति जगह जगह से घिसी हुई है, फिर भी वह आपके वश एव आपके वंश के इतिहास जानने के लिए काफी है। आशा है, ओसवाल विद्वत् समाज इस प्रशस्ति का ऐतिहासिक सार लिख कर शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित करेगी और शाह की कीर्ति कौमुदी को बढायेगी[3]।

इसके अतिरिक्त आपने कई मूर्तियें बनवायी थीं, उनमे से कुछ आबू के अचलगढ के जैन मन्दिर मे विद्यमान हैं। इस अचलगढ के मदिर मे आदिनाथ भगवान का १२० मण पीतल का विशाल बिंब है, जिस पर उक्त आशय का शिलालेख खुदा है।

श्रद्धेय ओझाजी अपने डूँगरपुर राज्य के इतिहास पृ० ७० में इस शिलालेख का इस प्रकार आशय लिखते है

वि स १५१८ वैशाख वदि ४ (ई०स० १४६२ ता १७ अप्रैल) कुभलमेर महादुर्ग के स्वामी महाराणा कुभकर्ण के राज्यसमय अर्बुदाचल के लिए रावल श्री सोमदास के राज्य मे ओसवाल जाति के शा साभा (शोभा) भार्या कर्मादे और पुत्र भाला तथा साल्हा ने डूँगरपुर मे सूत्रधार लूबा और लापा आदि से आदिनाथ की यह मूर्ति बनवायी, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छ के लक्ष्मीसागरसूरि ने की।"

इसी प्रकार सेठ शालाशाह एव उसके वशवालो की धातु-प्रतिमाये वि स १५१८, १५२५, १५२६ आदि सवतों की बनाई हुई ४-५ प्रतिमाये उपर्युक्त मदिर मे विद्यमान हैं और लक्ष्मीसागरसूरि के प्रतिष्ठा की हुई हैं[4]।

चूडावाला की पाल व डूगरपुर के बीच थाणा गाव है, जिसे शालाशाह का निवास स्थान बताया जाता है। वहा शालाशाह ने एक विशाल मंदिर बनवाना शुरू किया था, जो अधूरा पडा है। ज्ञात होता है कि मदिर के आरम्भ करने के कुछ दिन बाद शालाशाह स्वर्गवासी हो गये, जिससे वह पूर्ण नहीं हो सका।

यहा पर जो कुछ ज्ञात हुआ उसी के आधार पर शालाशाह का निबन्ध लिखा गया है। भविष्य मे आशा है विद्वत् समाज शालाशाह के वंश, गोत्र, बनवायी हुई प्रतिमाये, मंदिरों, वंशावलियों और शिलालेखो सहित परिशोध कर मन्त्रीश्वर के जीवनपट पर विशेष झाकी डालने की चेष्टा करेगी और इसी प्रकार अन्य ओसवाल मुत्सद्दियों के जीवन चरित्र लिखकर प्रकाश मे लावेगी।

श्री जैन सत्य प्रकाश
वर्ष ५ अंक १०
जून, १९४०

---

३ यह लेख राजपुताना म्युजियम की रिपोर्ट सन् १९३० के पृ० ३-४ में प्रकाशित हुआ है।

४ इन सब प्रतिमाओं के शिलालेख अर्बुद-प्रा जै लेख संदोह भा २ मुनि जयन्तविजयजी संपादित में एव मुनि जिनविजयजी संपादित प्राचीन लेख संग्रह मे प्रकाशित हैं।

मंत्रीश्वर शालाशाह

राजपूताने के समस्त राज्यों के पुनीत इतिहास में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सैनिक आदि अनेक क्षेत्रों में ओसवाल नररत्नो की गरिमा गौरवान्वित है। डूँगरपुर राज्य के १६वीं शताब्दी के इतिहास मे जिन-जिन ओसवाल वीर-रत्नों ने राज्य की महान सेवायें की उनमे मंत्रीश्वर शालाशाह का स्थान ऊंचा है। आपकी यश पताका आज भी श्री आंतरी गांव डूंगरपुर और आबू स्थित अचलगढ मे फहराती है और चिरकाल तक फहराती रहेगी। राजनैतिक क्षेत्र के साथ धार्मिक क्षेत्र मे भी शालाशाह एव उनके परिवार वालो की सेवा उल्लेखनीय है।

इसका अभी ठीक पता नहीं चला है कि आप किस गोत्र के थे, मूर्ति लेख मे चक्रेश्वरी गोत्र लिखा मिलता है। पर यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि आप ओसवाल जाति के महाजन थे। आपके पिता का नाम सांगा और पितामह का नाम भम्भर था। आपका नाम कहीं साल्हा और कहीं साल्हराज आदि लिखा मिलता है।

आप रावल गोपीनाथ और सोमदास के मंत्री रहे। रावल गोपीनाथ के समय में बागड़ देश मे भीलों की संख्या अधिक थी और वे बहुत उद्दंड थे, और उपद्रव मचा रहे थे। उपद्रव को मिटाने के लिए रावल गोपीनाथ ने अपने अमात्य सालराज (शालाशाह) को उनकी पालों का विजय करने के लिए भेजा। आपने जाकर भीलो की पालों को विजय कर बागड़ से भीलो का उपद्रव मिटा दिया[1]। संक्षिप्त में आप के लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि डूँगरपुर राज्य की सीमा-वृद्धि और रक्षा करने में आपका ही बहुत कुछ हाथ था।

भाटों ने शालाशाह की कथा को डूंगरपुर के रावल वीर सिंह देव के साथ जोड़ दी है परन्तु यह शालाशाह रावल वीर सिंह देव के समय मे नहीं परन्तु उसके १५० वर्ष बाद गोपीनाथ और सोमदास के समय मे हुआ था। इसलिए शालाशाह की कथा का वीर सिंह देव के साथ मेल नहीं, किन्तु गोपीनाथ या सोमदास के साथ है। आंतरीगांव के जैन मंदिर मे वि.स. १५२५ का शिलालेख लगा है जिसमे चूडावाड़ा के भीलो पर आपके द्वारा विजय होने का उल्लेख है। इस शिलालेख से यह पाया जाता है कि शालाशाह गोपीनाथ और सोमदास का मंत्री था और शालाशाह की कथा वीर सिंह देव के साथ न होकर गोपीनाथ या सोमदास के साथ घटित होनी चाहिये[2]। यह कथा रोचक होने की वजह से यहां दी जाती है।

श्रीमान् श्रद्धेय ओझाजी इस कथा को इस प्रकार डूंगरपुर के इतिहास पृ ५८-५६ में लिखते हैं –

"उसके (वीर सिंह देव) विषय में ख्यातों में लिखा है कि जहां इस समय डूंगरपुर का कस्बा है उसके आसपास के प्रदेश पर डुंगरिया नामक बड़े उदण्ड भील का अधिकार था। वहां से करीब पांच मील पर थाणा नामक ग्राम में शालाशाह नाम का एक धनाढ्य महाजन रहता था। उसकी रूपवती कन्या को देखकर उस (भील) ने उसके साथ विवाह करना चाहा और उसके पिता को अपने पास बुलाकर उससे अपनी इच्छा प्रकट की। जब सेठ ने स्वीकृति नहीं दी तब उसको धमका कर कहा कि यदि तू मेरा कहना न मानेगा तो मैं बलात् उसके साथ विवाह कर लूंगा। सेठ ने भी उस समय 'शठ प्रति शाठ्य' की नीति के अनुसार उसका कथन स्वीकार कर उसके लिए दो मास की अवधि मांग कर कार्तिक शुक्ला १० को विवाह का दिन स्थिर किया, जिससे डुंगरिया प्रसन्न हो गया। शालाशाह ने बड़े दुःख प्रकार अपने दुःख का सारा वृतान्त वीर सिंह देव को कह सुनाया तो उसने सलाह दी कि भील लोगों को मद्यपान बहुत प्रिय होता है, इसलिए बरात के आने पर उन्हें इतना अधिक मद्य पिलाना कि वे सब गाफिल हो जावें। इतने में हमारे सैनिक वहां पहुंच कर उन सब का काम तमाम कर देंगे। इस सलाह के अनुसार भीलों की बरात आते ही सेठ ने स्वागत कर

1 देखें, ओझाजी लिखित डूँगरपुर राज्य का इतिहास पृ ६६
2 देखें, ओझाजी लिखित डूँगरपुर राज्य का इतिहास पृ ५८

था। वर्द्धमान शाह की स्त्री वन्नादेवी थी, जिसके वीर और विजयपाल नामक दो पुत्र थे। पद्मसिंह की स्त्री का नाम सुजाणदे था, जिसके श्रीपाल, कुँवरपाल और रणमल्ल नामक तीन पुत्र हुए।

इन तीनो भाईयो ने संवत् १६७५ (शाके १५४१) वैशाख सुदि ३ बुधवार को शान्तिनाथ आदि तीर्थकरो की २०४ प्रतिमाएं स्थापित कीं और उनकी प्रतिष्ठा करवाई।"

"अपने निवास स्थान नवानगर (जामनगर) में भी उन्होंने बहुत विपुल द्रव्य खर्च करके कैलाश पर्वत के समान ऊँचा भव्य प्रासाद निर्माण करवाया और उसके आसपास ७२ देवकुलिका और ८ चतुर्मुख मन्दिर बनवाये। शाह पद्मसिह ने शत्रुंजय तीर्थ पर भी ऊँचे तोरण और शिखरो वाला एक बडा मंदिर बनवाया और उसमे श्रेयांस आदि तीर्थकरों की प्रतिमाये स्थापित कीं।"

"इसी प्रकार संवत् १६७६ के फाल्गुन मास की शुक्ला द्वितीया को शाह पद्मसिह ने नवानगर से बडा सघ निकाला और अचलगच्छ के तत्कालीन आचार्य कल्याणसागर जी के साथ शत्रुंजय की यात्रा की और अपने बनाए हुए मन्दिर में उक्त तीर्थकरों की प्रतिमाये खूब ठाठ के साथ प्रतिष्ठित करवाई।"

"उपर्युक्त प्रशस्ति को वाचक विनयचंद्र गणि के शिष्य पं देवसागर ने बनवाया"

इन्हीं वर्द्धमान शाह और पद्मसिंह के द्वारा बनाया जामनगर वाला श्री शान्तिनाथ प्रभु का मंदिर भी आज वहाँ पर उनके पूर्व वैभव की सूचना देता हुआ विद्यमान है। इस मंदिर में एक वर्द्धमानशाह का प्रशस्ति लेख है, जिसमें शाह के वशजो के परिवार वालो के नाम हैं। यह प्रशस्ति लेख १८ पद्यों में सम्पूर्ण हुआ है, इसके नीचे का अश गद्य मे है, 'यह पाठको' की जानकारी के लिए यहा दिया जाता है।

"सपरिकरयुताभ्याममात्यशिरोरत्नाभ्या साहिश्रीवर्द्धमान–पद्मसिंहाभ्यां हाल्लारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रुशल्यात्मज श्रीजसवतजी विजयराज्ये श्रीअचलगच्छेश श्रीकल्याणसागरसूरीश्वराणामुपदेशेनात्र श्रीशातिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्य कृत। श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकाधिक पचशत प्रतिमा प्रतिष्ठायुगंकारापितम्। चाद्या संवत १६७६ वैशाखशुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सवत् १६७८ वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे। एवं मन्त्रीश्वर वर्द्धमानपद्मसिंहाभ्यां सप्तलक्षरूप्यमुद्रिका व्ययीकृता नवक्षेत्रेषु सवत् १६६७ मार्गशीर्षशुक्ल २ गुरुवासरे उपाध्यायश्रीविजयसागरगणे शिष्य सौभाग्यसागरैरलेखीय प्रशस्तिर्मनमोहन सागरप्रसादात्।।"[२]

वर्द्धमान शाह के बारे मे जो कुछ ज्ञात हुआ उसी आधार पर यह लेख लिखा गया है। भविष्य में विद्वत् समाज से आशा है कि वर्द्धमान शाह की बनवाई हुई मूर्तियो के लेख, व अन्य शाह सम्बन्धी वस्तुओं की परिशोध कर प्रकाश में लाएगी और इसी प्रकार अन्य ओसवाल वीरों के जीवनपट पर झांकी डालेगी और उनका यश सर्वत्र फैलायेगी।

श्री जैनसत्यप्रकाश
वर्ष ५ अंक ११
जुलाई १९४०

---

२ पूरा लेख देखिये – जिन विजय जी सम्पादित प्राचीन जैन लेख संग्रह, लेखांक ४५५

मंत्रीश्वर वर्द्धमानशाह

राजपूताने की तरह गुजरात–काठीयावाड प्रान्त का इतिहास भी ओसवाल नररत्नों के आत्मत्याग, बलिदान और अन्य वीरोचित कार्यों से सुशोभित है। गुजरात–काठीयावाड के प्राचीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सैनिक, व्यापारिक और आर्थिक आदि अनेक क्षेत्रों में ओसवाल वीरों का ही प्रथम हाथ रहा है और वहां के पुनीत इतिहास में ओसवाल वीरों की गरिमा गौरवान्वित है।

आज उन्हीं ओसवाल नररत्नों में से एक वर्द्धमानशाह के जीवनपट पर कुछ झांकी दी जा रही है। गुजरात–काठियावाड के धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों में ओसवाल मुत्सद्दियों मे आपका आसन ऊँचा है। आपकी तथा आपके लघु भ्राता शाह पद्म सिंह की यश पताका आज भी शत्रुंजय और जामनगर में फहराती है और चिरकाल तक फैराती रहेगी।

वर्द्धमानशाह ओसवाल जाति के लालण गोत्र के पुरुष थे। आप अमर सिंह के ज्येष्ठ पुत्र, बच्छ के पौत्र और पर्वत के प्रपौत्र थे। आपका जन्म अमर सिंह की धर्मपत्नी लिंगदेवी की रत्नगर्भ कुक्षि से हुआ था।

वर्द्धमान शाह का मूल स्थान कच्छ प्रांत का अलसाणा नामक ग्राम था। संयोगवश अलसाणे के ठाकुर की कन्या का विवाह जामनगर के जाम साहब से हुआ। विदा के वक्त जामसाहब ने ठाकुर से (कन्या के दहेज मे वर्द्धमानशाह और उनके सबधी रायसीशाह को जामनगर में बसाने के लिए मांगा। इस पर वर्द्धमान ठाकुर-आज्ञा से १० हजार ओसवाल मनुष्यों को साथ लेकर जामनगर आ बसे।

वर्द्धमान बड़े धनाढ्य कुशल व्यापारी थे। आपका अनेक देशों के साथ व्यापार होता था। आपने अपने बाहुबल से लाखो रुपयों की सम्पत्ति अर्जन की। अगर आपको तत्कालीन 'कुबेरपति' की पदवी दी जाय तो भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

वर्द्धमानशाह का राजा और प्रजा में बहुत सम्मान था। आप तथा आपके भाई पद्मसिंह तत्कालीन जामनगर के जामसाहब के प्रधानमंत्री थे। जामसाहब आपका बहुत मान करते थे, प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य मे आपकी राय लेते थे। आप असंख्य द्रव्य के मालिक थे।

जामनगर में दोनों कुबेरपति भाई वर्द्धमानशाह और पद्मसिंह रहकर अनेक देशों के साथ व्यापार करने लगे और वहां की जनता में बड़े लोकप्रिय हो गये। और दोनों भाईयो ने वि सं १६७६ में शत्रुंजय और जामनगर मे बड़े–बड़े विशाल जैन मंदिर बनवाए और शत्रुंजय तीर्थ आदि तीर्थों की यात्राए की।

इन वर्द्धमान शाह का एक लेख[1] शत्रुंजय पहाड पर विमलवसई टोक पर हाथी पोल के नजदीक वाले मंदिर की उत्तर दिशा वाली दिवाल पर लगा हुआ है।

यह लेख २६ पद का पद्य में है और इसके नीचे थोडा सा अंश गद्य में है। इस लेख के पहले पांच पद्यो मे नवीनपुर (जामनगर) के राजा जसवंत और शत्रुंजय का उल्लेख है। और पद्य ६ से लेकर २३ पद्य में आचार्य कल्याणसागरसूरि आदि आचार्यों के नाम है। २४ पद्य से वर्द्धमान शाह और पद्मसिंह के प्रतिष्ठा करने वाले कुटुम्ब के वर्णन का भाग इस प्रकार है–

"ओसवाल जाति में लालण गोत्रान्तर्गत हरपाल नामक एक बड़ा सेठ था। उसके हरीआ नामक पुत्र हुआ। हरीआ के सिंह, सिंह के उदेसी, उदेसी के पर्वत, और पर्वत के बच्छ नामक पुत्र हुआ। बच्छ की भार्या वाछलदे की कुक्षि से अमर नामक पुत्र हुआ। अमर की लिंगदेवी नामक स्त्री से वर्द्धमान, चांपसी और पद्मसिंह नामक तीन पुत्र हुए। इनमें वर्द्धमान और पद्मसिंह बहुत प्रसिद्ध थे। ये दोनों भाई जामसाहब के मंत्री थे। जनता में आपका बहुत सत्कार

---

१ पूरा लेख पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयजी संपादित प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग २ के लेखांक २१ में प्रकाशित है।

दानशीलता

वि.स. १६८७ (ई.स. १६३०) मे मारवाड और गुजरात मे भयंकर अकाल पडा था। उस समय में ऐसे समय पर जयमल जी ने अपनी दानशीलता का अच्छा परिचय दिया[२]। आपने मारवाड के भूखे महाजन, सेवक आदि अन्य भूखे, वस्त्रहीन दु:खी लोगो को १ वर्ष तक मुफ्त अन्न, पानी और वस्त्रदान देकर अपनी उच्च श्रेणी की सहृदयता और परोपकार वृत्ति का परिचय दिया था। आपकी दानवीरता दूर–दूर तक प्रसिद्ध थी।

धार्मिक क्षेत्र

जयमलजी एक महान उदार धार्मिक प्रवृत्ति वाले पुरुष थे। आप तपा–गच्छीय जैन अनुयायी थे। धार्मिक कार्यो मे दिल खोल द्रव्य व्यय करते थे। आपकी धार्मिक कीर्तिकौमुदी की पताका आज भी जालौर, सांचौर, नाडोल, शत्रुंजय और जोधपुर आदि नगरो में फहराती है। आपने कई जैन मंदिर बनवा कर जिनदेवो की मूर्तिया बनवाकर प्रतिष्ठाए करवायी थीं, उनमे से कुछ आज भी दृष्टिगोचर होती हैं। यहां पर आपकी बनवायी कुछ मूर्तियो का वर्णन किया जा रहा है।

जालौर

जालौर जोधपुर से ८० मिल की दूरी पर सूकडी नदी के किनारे बसा हुआ है। यहा पर जयमलजी ने वहा के शासक रहते समय कई जैन मदिर और उपाश्रय बनाये थे, जो आज भी विद्यमान हैं।

जालौर के किले मे तीन जैन मदिर हैं, जो जयमलजी की धार्मिक यश–पताका को सर्वत्र फैला रहे हैं।

राजा कुवार पाल के समय का बना हुआ जैन मदिर गिर गया था। उसकी नींव मात्र शेष रह गयी थी। उसी स्थान पर जयमल जी ने मदिर बनवा कर वि.स. १६८१ प्रथम चैत्र वदि ५ (ई.स. १६२५ ता. १७ फरवरी) को महावीर स्वामी की मूर्ति बनवाकर प्रतिष्ठित करवाई। यह मदिर महावीर स्वामी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इसी मदिर के निज मदिर मे दो कमरे हैं, जिनमे से एक मे धर्मनाथ की मूर्ति है, जिसकी भी वि.स. १६८३ अषाढवदि ४ (ई.स. १६२७ ता. २४ मई) गुरुवार को जयमलजी ने प्रतिष्ठा करवाई थी, और दूसरे कमरे की मूर्ति पर उसी संवत् का लेख है, जो उद्धरण तत्पुत्र तोडरा ईसर टाहा दुहा हारा ने प्रतिष्ठा करवाई थी, जिसकी प्रतिष्ठा भ. श्री विजयदेवसूरि ने की थी।

महावीर स्वामी की मूर्ति पर इस तरह का लेख खुदा हुआ है

।र्द ।। सवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वदि ५ गुरौ अधेह श्रीराठोडवशे श्रीसूरसिघपटटे श्रीमटाराज गजसिहजी विजयिराज्ये वृद्ध उसवाल ज्ञातीय सा०जेसा भार्या मनोरथदे पुत्र सा०सादा सुभा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थ श्री स्वर्णगिरिगह(ढ) दुर्गोपरिस्थित श्रीमत् कुमरविहारे श्रीमति महावीरचैत्ये सा०जेसा भार्या जयवतदे पुत्र सा० जयमलजी वृद्धभार्या सरूपदे पुत्र सा० नहणसी सुंदरदास आसकरण लघुभार्या सोहागदे पुत्र सा० जगमालादि पुत्रपौत्रादि श्रेयसे सा० जयमलजीनाम्ना श्रीमहावीरबिंबं प्रतिष्ठामहोत्सवपूर्वक कारित प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छपक्षे सुविहिताचार–कारक शिथिलाचारग(निवा) रक साधुक्रियोद्धारकारक श्री आणंदविमलसूरिपट्ट प्रभाकरश्रीविजयदानसूरिपट्टशृंगारहार महाम्लेच्छाधिपतिपातशाहि श्रीअकबर प्रतिबोधक तद्दत्तजगतद्गुरुबिरुदधारक श्रीशत्रुजयादितीर्थजीजीयादिकरमोचक तद्दपण्मास अमारिप्रवर्तक भट्टारक ५ श्रीहीरविजयसूरिपट्टमुकुटायमान भ० श्री ५ विजयसेनसूरिपट्टे सप्रतिविजयमानराज्यसुविहितशिर: शेखरायमाणि भट्टारक श्री ५ विजयदेवसूरीश्वराणामादेशेन

---

२ इस दुर्भिक्ष का रोमाचकारी वर्णन कवि समयसुन्दर ने जो उन्होने आँखो देखा था एक प्रति मे किया है। यह प्रति बाबू अगरचंदजी नाहटा के सग्रह मे है और उनकी ओर से हाल ही मे " भारतीय विद्या" नामक त्रैमासिक पत्रिका, अक २ मे प्रकाशित हुई है।

मंत्रीश्वर जयमलजी

राजपूताने की रत्नगर्भा भूमि पर अनेक नरों का जन्म और मरण हुआ है, और होता रहेगा। पर जीवन उन्हीं नर-रत्नों का सार्थक हो सकता है, जिन्होंने अपने देश, जाति और धर्म के लिए कुछ कार्य किये हैं। इसी रत्नगर्भा भूमि पर राजपूताने मे जोधपुर मारवाड नामक एक प्रसिद्ध रियासत है। यहां पर अन्य नर-रत्नो के साथ-साथ ओसवाल नर-रत्नों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं जिन्होंने देश और धर्म के लिए अपने आपको कुरबान कर दिया।

ऐसे ही नर-रत्नो में हमारे चरित्रनायक जयमलजी हैं।

जोधपुर के महाराजा गज सिंह के वक्त के ओसवाल मुत्सद्दियों मे जयमलजी का आसन ऊंचा है। आपकी मारवाड़ राज्य की सेवाये वहा के पुनीत इतिहास मे चिरकाल तक अमर रहेंगी। यहां पर आपके जीवनपट पर कुछ झांकी की जा रही है।

मंत्रीश्वर जयमलजी जेसा के द्वितीय पुत्र, अचला के पौत्र और सूजा के प्रपौत्र थे। आपका जन्म जेसा की धर्मपत्नी जयवंतदे (जसमादे) की कुक्षि से वि.स. १६३८ माघ सुदि ६ बुधवार को हुआ था।

जयमल जी ओसवाल जाति के मुहणोत गोत्र के पुरुष थे। आपकी वंश-परम्परा जोधपुर के राव राठोड सीहा से मिलती है। सीहा का पुत्र आसथान, उसका पुत्र धूहड, उसका पुत्र रायपाल हुआ। रायपाल के तेरह पुत्र हुए. द्वितीय पुत्र मोहन सिंह से मुहणोत गोत्र की उत्पत्ति हुई। +

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र

वि.स. १६७२ (ई.सं. १६१५) में फलौदी पर महाराजा सूरसिंह जी का अधिकार हुआ तब मुहणोत जयमलजी वहा के शासक बनाकर भेजे गए।

वि.स. १६७७ वैशाख मास (ई.स. १६२०) मे जब महाराजा गजसिंह जी के मनसब मे बादशाह जहांगीर ने एक हजार जात और एक हजार सवारों की तरक्की दी, तो उसकी तनख्वाह में जालौर का परगना उनको मिला। उस समय महाराजा ने जयमलजी को यहां का शासक नियुक्त किया। महाराजा गज सिंह ने आपको हवेली, बाग, नौहरा और दो खेत इनायत किये।

वि.स. १६८३ (ई.सं. १६२६) में महाराजा गज सिंह जी के बडे कुंवर अमर सिंह जी को नागौर मिलने पर जयमल जी नागौर के हाकिम बनाये गये।

वि.सं. १६८४ (ई.स. १६२७) में जयमल जी ने बाडमेर कायम कर सूराचंद पोकरण सातलमेर और मेवासा के बागी सरदारों से पेशकशी कर उन्हें दण्डित किया।

वि.सं. १६८६ (ई.स. १६२६) मे महाराजा गजसिंह जी ने जयमल जी को दीवान के पद पर सुशोभित किया क्योंकि वे महाराजा के कृपापात्र और विश्वासपात्र सेवक थे।

विवाह और संतति

जयमलजी का पहला विवाह वैद मेहता लालचंद जी की पुत्री सरूपदे से हुआ था जिससे आपके नैणसी, सुन्दरसी, आसकरण और नरसिंहदास नामक चार पुत्र हुए। दूसरा विवाह सिंघवी बिरद सिंह जी की पुत्री सुहागदे से हुआ था, जिससे जगमाल नामक एक पुत्र हुआ।

+ मुंहणोत गोत्र की उत्पत्ति के लिए महाजन वंश मुक्तावलि व ओसवाल समाज का इतिहास देखना चाहिए।

१ आपका जीवन चरित्र इस ग्रंथ के अगले किसी अंक में प्रकाशित करने की भावना है।

दीवान राव शाह अमरचंदजी सुराणा

राजपूताने के राजनैतिक क्षेत्र मे ओसवाल वीरो का महत्वपूर्ण स्थान है। धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक और सैनिक प्रगति मे इस प्रान्त का कोई ऐसा भाग नहीं है, जहा वे पीछे रहे हो। प्रत्येक राज्य का इतिहास ओसवाल वीरो के त्याग, आत्मबलिदान और बुद्धिचातुर्य से सुशोभित है। बीकानेर के ओसवालो मे बच्छावतो और वैदो के पश्चात् सूराणों का सितारा चमकता था।

बीकानेर नरेश महाराजा सूरतसिहजी के राज्यकाल से लेकर महाराजा सरदारसिह जी के राज्यकाल तक जिन –जिन ओसवाल मुत्सद्दियो ने अपने महान कार्यो से बीकानेर राज्य की जो सेवाये कीं वे इस राज्य के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से लिखे जाने योग्य हैं और राजस्थान के वीरता एव गौरवपूर्ण इतिहास मे जो ख्याति पाते हैं उनमे वीरशिरोमणि दीवान राव शाह अमरचदजी का आसन ऊंचा है।

शाह अमरचद जी सेठ मलूकचद जी सुराणा के पौत्र और शाह कस्तूरचंदजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। यह अभी तक निश्चय नहीं हो पाया है कि आपका जन्म कब हुआ था। आप बचपन से ही वीर और उदार प्रकृति के पुरुष थे। जब आप १०–११ वर्ष के थे तभी आपने तलवार कटार चलाना आदि अच्छी तरह से सीख लिए थे। आपके बचपन की तलवार अब भी आप के वशधर शाह सेसकरणजी जतनलालजी सुराणा के पास विद्यमान है।

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र

वि स १८६० (ई स १८०३) मे बीकानेर से एक सेना चुरु भेजी गई जिसमें शाह मुलतानमल खजाची व जालिम सिह पडिहार आदि भी थे। आपने वहा पहुच कर चुरु के स्वामी से २१ हजार रूपये वसूल किये।

वि स १८६१ (ई स १८०४) मे जब भटनेर के किलेदार खान जाब्तार खा भट्टी ने सिर उठाया तो महाराजा सूरि सिंह जी ने शाह अमरचंदजी की मातहती में चार हजार राठौडी सेना भटनेर भेजी। आपने जाते ही किले के पास वाले कुए अनूपसागर पर मिगसर कृष्णा २ को अधिकार कर लिया और किले के चारो और मोरचा बाध कर डट गये। पाच मास तक किले की रक्षा करने के बाद रसद् की कमी के कारण भट्टी लोग भूखों मरने लगे तो जाब्ताखा स्वयं किले को शाह अमरचदजी के कर–कमलो मे सुपुर्द कर अपने साथियों सहित पजाब की ओर चला गया। यह बात वैसाख वदि ४ वार मंगलवार वि० स० १८६२ की है। मंगलवार के दिन भटनेर का किला विजय होने के कारण भटनेर के किले का नाम हनुमानगढ रखा गया। इस वीरता के कार्य के उपलक्ष मे महाराजा ने उपहार में शाह अमरचंदजी को पालकी की इज्जत दे कर और दीवान के उच्च पद पर सुशोभित किया।

वि सं १८६५ (ई स १८०८) में जोधपुर नरेश महाराजा मान सिंह जी ने अपने दीवान इन्द्रराज सिघवी के मातहती मे ८० हजार सेना लेकर बीकानेर पर चढाई की। तत्कलीन बीकानेर नरेश महाराजा सूरसिहजी ने भी विशाल सेना एकत्रित कर शाह अमरचदजी की मातहती में जोधपुर के विरुद्ध भेजी। उन्होने शत्रु सेना का असाधारण वीरता एवं होशियारी से मुकाबला किया और जोधपुरी सेना के माल असबाब आदि के साथ बीकानेर वापिस लौट आये। जोधपुर सैना दो मास तक छोटी–छोटी लडाइयां करती हुए गजनेर में पडी रही। दो मास समाप्त होने पर महाराजा मान सिंह की आज्ञा से कल्याण मल लोढा ने ४ हजार जोधपुरी सेना लेकर बीकानेर पर चढाई की। इस पर सुराणा अमरचदजी उसका सामना करने के लिए गजनेर भेजे गए। सुराणाजी का ससैन्य आना सुन कर वह (लोढा) ससैन्य भाग निकला। अमरचदजी ने उसका पीछा कर, एक कोस की दूरी पर पकड लिया और उसे लडाई करने के लिए बा-ध्य किया और थोडी देर में अमरचंद जी ने लोढा कल्याणमल को बदी बनाकर महाराजा साहब की सेवा मे बीकानेर भिजवा दिया।

दीवान राव शाह अमरचन्द जी सुराणा

किया तो उस समय महाराजा को आप की याद आई। अब क्या हो सकता था ? अगर हो सकता था तो सिर्फ पश्चात्ताप। अमर चदजी की याद महाराजा साहेब को जन्मभर रही।

राव अमरचंदजी का व्यक्तित्व और संतति

आपका व्यक्तित्व बहुत चढा-बढा था। आपका सारा जीवन राज्य की सेवा में और युद्धस्थल मे बीता। आप एक महान वीर योद्धा थे। राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र में आपका प्रभुत्व चढा-बढा था। जहां स्वामी का पसीना बहता, वहां आप के रुधिर की नदियें बहती थी। आप सफल न्यायी और महान दूरदर्शक थे। आप के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश शाह माणिकचदजी, शाह + लालचदजी और शाह केसरीचदजी हैं। आप तीनों भ्राताओं का जीवन राज्य की सेवा और समरस्थल में बीता। आप भी पिता की तरह सफल पराक्रमी योद्धा थे।

अमरचंदजी के चित्र

इस समय अमरचदजी के तीन चित्र उपलब्ध हैं। २ चित्र आपके वंशधर शाह श्री सेसकरणजी सुराणा के पास हैं और तीसरा चित्र जैन साहित्य के अभ्यासी और संग्रहकर्ता मेरे श्रद्धेय मामाजी व भाईजी श्री अमरचंदजी भवरलाल जी नाहटा के सग्रह मे है। नाहटा बन्धुओ वाला चित्र इस भाव का है:- यह चित्र सुन्दर रंगीन और मझोलिया साइझ का है। अमरचदजी हाथ में एक खास रुक्का लिये हुए गद्दी पर बैठे हुए हैं, रुक्के पर कुछ लिखा हुआ मालूम पडता है, मगर वह स्पष्ट नहीं पढा जा सकता। एक दास पीछे खडा-खड़ा पखा झाल रहा है। आपने राठौडी पौशाक और पगडी पहनी हुई है।

अमरचदजी का धार्मिक प्रेम

अमरचदजी खरतरगच्छीय जैन अनुयायी थे। आप दादाजी श्री जिन कुशलसूरि के भक्त थे। धार्मिक कार्यों में बहुत रुपया दान करते थे। आपने रतनगढ (बीकानेर) में कुंए के पास दादाजी के X चरणपादुकाओं की प्रतिष्ठा कोठारी उत्तमचदजी से करायी थी। यह छतरी अभी तक विद्यमान है, जिसका कुछ वर्ष पूर्व जीर्णोद्वार बीकानेर निवासी श्री भवरलालजी रामपुरीया ने कराया था। आपने रतनगढ में एक कुआ अपने भाई फूलचदजी सुराणा की याद मे फूलसागर नामक बनवाया जो अभी तक विद्यमान है। और भी आप दीनहीन जनो की सेवा करने में बहुत द्रव्य व्यय करते थे।

तत्कालीन आचार्य श्री जिनहर्षसूरि ने आपको एक पत्र दिया था, उसमें आपको बहुत धर्मप्रेमी, दीन दीन जनोद्धारक, धर्मधुरन्धर श्रावक गुरुदेवरागी, सघनायक आदि लिखा है।आपको स्थानीय भांडासरजी एवं नेमीनाथजी के मदिर का जीर्णोद्धार कराने वास्ते आचार्य जिनहर्षसूरि ने लिखा है। यह पत्र वि सं १८६६ का है। आपका शीघ्र ही देहावसान हो जाने से एव रणक्षेत्र में व्यस्त रहने के कारण आप जीर्णोद्धार नहीं करा सके। यह पत्र बहुत महत्व का होने की वजह से उसकी अविकल नकल यहा दी जाती है। यह पत्र बाबू श्री अमरचद जी तथा श्री भवरलाल जी नाहटा के सग्रह में है।

"।। स्वस्ति श्री पार्श्वजिन प्रणम्य श्री बीकानेर नगरात् भट्टारक। श्री जिनहर्षसूरिश्वरा सपरिका श्रीरतनगढनगरे सुश्रावक। पुण्यप्रभावक श्री देवगुरुभक्तिकारक श्री जिनाज्ञाप्रतिपालक। श्री पंचपरमेष्ठी महामंत्रस्मारक अनेक दीन जनोद्धारक। सर्व शुभ बोलेलायक। सघनायक सघमुख्य।सुराणा। सा।। अमरचदजी योग्य सदा धर्मलाभ वाचज्यो। इहा श्री जिनधर्मने प्रसादे सुख साता छै थांरा सुख साताराा समाचार लिखवा। तथा अठरी श्रीसघ दिन दिन सेवाभक्ति विशेष साचवै छैं व्याख्याननें श्री पन्नवणाजी सवृति वचै छै सु जांणज्यो तथा थारी कागद आयो समाचार

+ आप तीनों भ्राताओं का अलग-अलग जीवन चरित्र इसी पत्र के किसी अगले अंको में प्रकाशित की भावना है।

X चरण पादुकाओं का लेख बाबू श्री अगरचदजी भंवरलालजी नाहटा की ओर से शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले "बीकानेर जैन लेख संग्रह" में देखिये।

महाराजा सूरतसिंहजी के राज्यकाल में ठाकुर लोग बहुत बागी हो रहे थे, उनका दमन करने के लिए महाराजा साहब ने दीवान अमरचदजी को नियुक्त किया। वि सं. १८६६ से १८७० तक आपने बागी ठाकुरों को बहुत कठोर सजाए दीं।

वि स १८६६ (ई सं १८०९) में विद्रोही सांडवे का ठाकुर जैतसिंह बीकानेर में पकड़ लिया गया। उसको मुक्त करने के लिए दीवान अमरचंदजी ने सांडवे जाकर अस्सी हजार रुपये जुर्माने के लगाये।

वि स १८६७ (ई स १८१०) में महाराजा सूरतसिंहजी ने अमरचंदजी को भूकर के थाने पर थानेदार नियुक्त किया।

वि सं १८६८(ई स १८११) मे अमरचन्दजी ने सूरजगढ जो शेखावाटी में था लूटा और वहा से बहुत-सा माल असबाब बीकानेर लाये।

वि स १८६९ (ई.सं १८१२) में अमरचंदजी ने फौज सहित मैणासर के बीदावतों पर आक्रमण किया और वहा के विद्रोही ठाकुर रत्न सिंह को रतनगढ में कैद कर महाराजा साहेब की आज्ञा से उसे फासी लटका दिया गया। धीरदान मे ३०० बागी भाटीयों को कत्लेआम कर दिया गया। सिर्फ एक आदमी भाग्य से बच गया।

वि स १८७० (ई सं. १८१२) में अमरचदजी सीधमुख गये। सीधमुख के ठाकुर नाहर सिंह और पूरन सिह, पहाडसिह, राम सिंह, लक्ष्मणसिह आदि विद्रोही ठाकुरों को पकड़कर बीकानेर लाये। इसमें लछमणसिंह को छोडकर शेष को कत्ल कर दिया गया। इस तरह से एक बार अमर चदजी ने अनेक विद्रोही ठाकुरों को सजा देना कत्ल करना आदि से विद्रोह की धधकती हुई अग्नि ज्वाला को शांति किया।

अमरचंदजी की इस खिदमत की महाराजा सूरत सिंह जी ने बड़ी कदर की। दावत मे साठ (६०) किस्म की शीरिनी तैयार हुई।

वि स १८७१ (ई स १८१४) में चुरुका ठाकुर शिव सिंह बागी हो गया। इस पर महाराजा साहब ने अमरचदजी को सेनापति बनाकर प्रथम भाद्रपद मास मे ससैन्य चुरू भेजा। आपने जाकर शहर को घेर लिया और शत्रु के आवागमन को रोक दिया। और दैवयोग से ठाकुर की रसद भी आपके हाथ लग गयी। किले में रसद की कमी होने की वजह से ठा० शिव सिंह बहुत दिनों तक आपके मुकाबले नहीं रह सका। ठाकुर शिव सिंह ने अपमान की अपेक्षा मृत्यु को उचित समझकर हीरे की कणी खाकर अपने आपका आत्मघात कर लिया।

अमरचंदजी की इस कामयाबी से महाराजा सूरत सिंह जी बड़े खुश हुए और आपको 'राव' के खिताब से विभूषित किया और एक खिलअत और सवारी के लिए महाराजा ने आपको हाथी प्रदान किया।

अमरचदजी का भाग्य का सितारा अब पूर्ण रुप से प्रकाशमान हो चुका था। उनकी प्रतिभा को देखकर उनके विरोधी अब ज्यादा देर नहीं ठहर सके। अकस्मात् आप पर महाराजा सूरतसिंहजी की अकृपा हो गयी। उनके शत्रु चैनपडिहार, रामकर्ण, आसकर्ण, आदि ने एक जाली चिट्ठी नवाब मीर खाँ के मुंशी की तरफ से आपको लिखी हुई बनाकर महाराजा सूरतसिंह के समक्ष पेश की और कहा– अमरचंद नवाब मीर खाँ के साथ १० हजार फौज के साथ बीकानेर में उपद्रव करेगा। इससे महाराजा साहब ने अमरचदजी को गिरफ्तार कर लिया। आपने अपनी निर्दोषता साबित करने के लिए बहुत कोशिश की और खेतड़ी महाराज आपके लिए तीन लाख रुपयों का जुर्माना भरने के लिए उद्यत हो गया। पर सब व्यर्थ हुआ, एक भी नहीं सुनी गयी।

अंत में वीरवर दीवान राव शाह अमरचंदजी सिर्फ झूठी शिकायतों के कारण कत्ल कर दिये गये। यह घटना वि स १८७२ (ई स १८१५) की है। इससे एक चमकता हुआ सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया।

राजा लोग कान के कच्चे हुआ करते है, यह कहावत पूर्णरूप से चरितार्थ हो गयी। महाराजा सूरतसिंह ने विरोधियों के झूठे बहकावे में आकर अमरचंदजी जैसे रत्न का नाश कर दिया। जब महाराजा को वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो उन्हें इस बात का पश्चाताप आजीवन रहा। जब चुरु के ठाकुर पृथ्वी सिंह ने उनका

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र-

वि.सं. १८९४ (ई.सं १८३७) के दिनों में चरला का बीदावत कान्हसिंह जोधपुर एवं जयपुर से मदद लेकर बीकानेर इलाके में लूटमार कर प्रजा को अत्यधिक कष्ट देने लगा। उसे पकडने के लिए बीकानेर की ओर से शाह केसरीचदजी सुराणा भेजे गये। आपने इस बागी सरदार को सुजाणगढ मे गिरफ्तार कर बीकानेर भिजवा दिया।

इन्हीं दिनो में ठाकुर खुमाण सिंह, करणी सिंह, अहड बाघा आदि ने जो इस समय जोधपुर इलाके मे रहते थे, बीकानेर के गाव साधासर और जसरासर लूट लिये और कितने गांवो के ऊँट पकड ले गये। ये सब लुटेरे गांव झरडिया मे रहते थे। नागौर के हाकिम के लिखने पर सुराणा केसरीचंदजी ने एवं ठा हरनाथ सिंह ने उन लुटेरों पर चढाई की। इन लुटेरो ने कई दिन तो भागते सुराणाजी का सामना किया और अंत मे वे सीवा भाग गये।

जब अग्रेज सरकार की ओर से मि कप्तान विलियम फार्स्टर साहेब बहादुर ज्वारजी डूंगजी आदि लुटेरों को गिरफ्तार करने के लिए बीकानेर आये तो महाराजा रत्न सिंह जी ने उनकी मदद के वास्ते शाह केसरी चदजी को उनकी (फार्स्टर की) सेवा मे भेजा। डूगर सिंह ज्वार सिंह आदि लुटेरे भागकर अपने साथियों के साथ बीकानेर आये। इसकी सूचना मिलते ही केसरीचंदजी ने उनका पीछा किया और उनमें से कईयों को गिरफ्तार कर लिया।

वि स १९०२ (ई सं १८४५) में तत्कालीन बीकानेर नरेश ने आपकी खिदमात पर प्रसन्न होकर शाह केसरीचदजी को रतनगढ के हाकिम के पद पर सुशोभित किया। इस बाबत आपको स्टेट की ओर से मोतियो के चौकडों के रुपये मिले। यह बात एक रुक्के पर इस प्रकार है :—

"रु ३०० शाह केसरीचंद को रतनगढ की हाकमी इनायत की मोतियो की चौकडा का दिया खजानची लालचन्द्र से दरवाया स १९०२ कार्ती वदि ५।"

महाराजा रतन सिह जी ने आपकी सेवाओं से खुश होकर आपको कई गांव प्रदान किये थे। उनका नाम, संवत, मितिवार इस प्रकार सिक्कों में लिखा है—

।। गांव खोथडी शाह केसरी चद का पटे था सो बहाल रखा सं १८९८ आसाड वदि १

।। गाव दाकर साह केसरी चंद को पटे दिया सं १९०० फागण वदि ६

।। गाव धाकर साह केसरी चद को पटे दिया स १९०७ माघ वदि ६

आपके घर जो धान, मूंग, गेंहू, घी आदि आता था उस पर जकात नहीं लगती थी। यह बात एक रुक्के मे है। इन सब बातो से पता चलता है कि महाराजा रत्नसिंह जी की आप पर असीम कृपा थी।

कप्तान विलियम फार्स्टर बहादुर आपका बहुत सम्मान करते थे।

वि सं १९०४ मे मि फार्स्टर ने आपको एक पत्र दिया था, जो विशेष महत्व का होने की वजह से उसकी अविकल नकल यहा दी जाती है। यह पत्र शाह श्री सँसकरणजी जतनलालजी सुराणा के पास सुरक्षित है।

श्री रामजी.....

सिध श्री सर्वोपमान साहब श्री केसरीचन्दजी जोग लिखतु कप्तान विलियम फारस्तर साहब बहादुर केन मुजरा बंचजो। अठैका समाचार भला छै तुम्हारा सदा भला चहीजै। अपंच कागद तो पहली वासते आगे तुमारे को गाव बरजू में जोधसर का डेरा लिखा था सो थे बरजू आया हो होगा और हम भी धाडया के खोज की लार बागरसर पहुँचे है

और खबर आइ कि कुछ घोडे असवार आदमी धाडयां का हमारे असवारा ने राणासर की तरफ पकडे और धाडवी आगाने रोरसूसर की तरफ गए सो हम कल गुदे गांव जावेगे और उठे जाकर तजवीज करका मे आवेगी। थे बाँचतां कागद गुदा गांव में कल हमारे पास पहुँचा जरूर रहिजो और जो आदमी घोडा उठ धाडया का थे पकड्या छै सो हमारे पास लेता आयो जहन जाबता सु वासु अहवाल धाडयां का आछी तरै सू पाया

लिख्यो सु दुरुस्त छै। थांरी कागद ३ बख्तमल सिवाया पछे आयौ सु थांरी अरज मंजूर करने उणाने देरासोके सुं थे माया छै विशेष समाचार पं। ज्ञानचंद आयो कहिसी तथा नमिनाथजी री देहरों रो जीर्णोद्धार करावण ज्युं छै। सा। कपूरचंद जी विशेष हगमीर छै पिण थां सरिखा पुण्यवत ग्रहस्थरै साहाय सुं ओ काम प्रमाण चडै फेर आगले ठौड सु भांडसारजी कने करावण री सला छै सु विचार तो अठै आयां थांसुं हुसी समाचार पाछो देज्यो। थे लायक योग्य धर्मधुरंधर श्रावक छो धर्मरागी गुरुदेव धर्मरागी छौ। धर्मराग धर्मस्नेह राखो तिणथी विशेष राखज्यो थांने धर्म ध्यान में सदा याद करा छां। थांरी सदा उदय चाहां छां। सा। सौभाग्यसुंदर गणिरा। महिमाकल्याण गणिरा। सुमतिसोभाग्य गणि प्रमुख ठाणै १२५ नौ धर्मलाभ बांचज्यो सं १८६६।"

दीवान अमरचंदजी सुराणा ने रतनगढ में कुंआ बनाया उसका विवरण श्री पूज्य धरणेन्द्र सूरी जी के ज्ञान भंडार के गुटके में इस प्रकार मिला है–

सं १८६६ मिती फागण सुदि २ दिने श्रीसंघ कृत प्रवेशोत्सवेन म। श्री जिनहर्ष सूरि जी ठाणे ४० सु श्री रतनगढ पधार्या तत्र खंजाची धर्मचंद ५० असवारो सुं सामै आयो। फागुन सुदी ३ दिने कच्छूवासर फौज सुं सुराणा अमरचंदजी रतनगढ आया। खमासणा सीरे री दीनी–नवांगी दुसालो दीनो। संघाडे दीठ ।।) दीनो। पाठक अमृत सुन्दरजी ने रू० २) वा. माव विजैजी ने १) री भक्तिकीनी दिन २ रह्या। कूपर फूसांसार री फागुन सुदी ३ दिने प्रतिष्ठा करी। सुराणे अमरचंदजी कूप करायौ दादेजी री छत्रीपास। धर्मचंद मुलतान मल जी रै खमासण दीनी। कोचर उत्तमचंद जी खमासण दीनी।

श्री जैन सत्य प्रकाश
वर्ष ६ अंक १
सितम्बर १९४०

शाह केसरीचंदजी सुराणा

शाह केसरीचंदजी सुराणा, स्वनामधन्य वीरशिरोमणि दीवान राव शाह अमरचंदजी सुराणा के कनिष्ठ पुत्र थे। आप भी अपने दो ज्येष्ठ भ्राताओं और पिता की तरह रणकुशल सेनापति थे। आपने बीकानेर नरेश महाराजा रतन सिंह जी के राज्यकाल में बीकानेर की अच्छी सेवायें कीं, जो इस राज्य के पुनीत इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगी। शेरों के शेर ही पैदा होते हैं, यह कहावत आपके जीवन-चरित्र से स्पष्ट मालूम होती है।

आपके जन्म और स्वर्गवास की तिथि अभी तक निश्चित नहीं हो पायी है। आप [illegible]

[illegible] हो गये थे।

शाह माणिकचंदजी सुराणा

शाह माणिकचंदजी सुराणा, वीरशिरोमणि दीवान राव शाह अमरचंदजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। आप सुयोग्य माता–पिता की सुयोग्य सतान थे। आप वीर, धीर और गंभीर होने के साथ–साथ धर्मप्रेमी भी थे। कहते हैं कि आपने सरदारशहर मे एक जैन मदिर बनवाया था। आपका सारा जीवन रणस्थल और स्टेटकी सेवा में व्यतीत हुआ।

आपके जन्म और स्वर्गवास की तिथि अभी तक निश्चिय नहीं हो पायी है। आपके एक पुत्र हुआ, जिसका नाम दीवान शाह फतेहचंदजी सुराणा था, आप भी वीर योद्धा और कुशल राजनीतिज्ञ थे, जिसकी प्रशसा अंग्रेज अधिकारियों ने भी की है।

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र

वि स १८७३ (ई सं १८१६) में चुरु के ठाकुर पृथ्वी सिंह ने रतनगढ पर कब्जा कर लिया तो महाराजा सूरत सिंह जी ने शाह हुकुम चंद जी के साथ शाह माणिकचंदजी को भी रतनगढ भेजा। आपने वहां जाकर अपने बाहुबल का अच्छा परिचय दिया। इससे तत्कालीन बीकानेर नरेश ने आपकी खिदमात पर प्रसन्न होकर आपको गांव कार्णेणु पटे दिया।

वि० स० १८७४ (ई० स० १८१७) में शाह माणिकचंदजी फौज मुसाहिब नियत किये गये और वि०स०१८८७ तक फौज मुसाहिब रहे। इसी बीच बीकानेर नरेश ने शाह माणिकचंद को कई खास रूक्के प्रदान किये। जिनमें से तीन अभी तक आपके वशधर शाह सैंसाकरणजी सुराणा के पास सुरक्षित हैं। जिनकी अविकल नकल आगे दी जायेगी ।

विं०स० १८६४ चैत्र सुदि ४ (ई० स० १८३७ ता० ६ अप्रैल) को सेखावत जुहारसिहं आदि सीकर को तहस नहस कर बीकानेर के इलाके से आ धमके। इस पर शाह माणिकचदजी की अध्यक्षता मे सेना भेजी गई । आपके साथ ठा० हरनाथसिह भी थे । शाहजी ने वहा जाकर उसको घेर लिया, फिर भी वह सीकर की सेना की साजिश से भाग गया।

वि०स० १८६७मे शाह माणिकचदने महाराज कुंवर सरदारसिहजी के नाम री सरदारशहर आबाद किया। इस खिदमति मे शाहजी को गाव कांगड प्रदान किया गया और इन्हीं वर्षोंमें तत्कालीन बीकानेर नरेशने महरबानी फरमाकर निम्न लिखित गाव शाहजी को बख्शे, जिनकी तालिका यह है–

।। श्रीराम।। श्री दीवान वचनात गा गोठां री चोधरियां रैयत समस्ता जोग तिथा थाहरौ गाव शाह माणिकचंदनै पटै दियो छै सो हासल अमल देनो जागीर खालसै थो सो । द० फौजदार हुकमसिघं स० १६१४ मिति आसो सुद१३

।। गांव सुरसरा शाह माणकचंद को स० १८६१ आसाड वदी १४

।। गाव बैजासर शाह माणकचंद को पटे दिया सं० १८६२ वैशाख वदी ७

।। गाव मलसीसर शाह माणकचद केसरीचद को सं० १६०० फागण वदि६

।। गाव कीतासर माणकचंद केसरीचद को सं० १८६३ सावण सुदी ६

।। गाव घरकडो शाह माणकचंद केसरीचद को सं० १८६२ श्रावण वदि १

वि० सं० १६०६ में श्री जी साहेब बहादुर ने महरबानी फरमा कर आपको दीवान के पद पर सुशोभित किया। शाह माणिकचदजी को दीवानगिरी खिजमत इनायतके लिये तत्कालीन बीकानेर नरेशने आपको एक हाथी बख्शा। आपने हाथी न लेकर उसकी कीमत रू० १०००) ली। यह बात एक रूक्के में है।

आपको भी स्टेट की ओर से मोतीयों की चौकडों के रुपये मिले थे, जो रूक्को में लिखे हुए हैं। जिनमे से कुछका वर्णन नीचे दिया जाता है–

ना करीजो जरूर आजो। चैत्र सुदी १५ सं १९०४x

विलियम फार्टर बहादुर के
अंग्रेजी में हस्ताक्षर
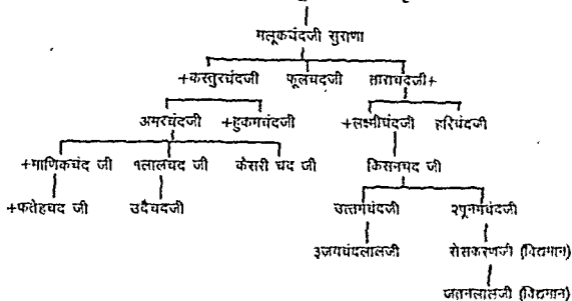
x अगले अंकों में शा माणिकचंदजी लालचंदजी का जीवन चित्रण प्रकाशित करने की भावना है।
जतनलाल जी(विद्यमान)

१ लालचंद जी, हुकुमचंदजी के दत्तक गये।
२ पूनम चंदजी, फतेहचंदजी के दत्तक गये।
३ जयचंदलालजी, उत्तमचंदजी के दत्तक गये।
\+ आपका जीवन चरित्र इसी पत्र के अगले अंकों में प्रकाशित करने की भावना है।
+. यह वंश वृक्ष मुझे शाहजी के वंशधर शाह सेसकरणजी की कृपा से प्राप्त हुआ है।

श्री जैन सत्य प्रकाश
वर्ष ६ अंक २
अक्टूबर, १९४०

के अंग्रेजी में हस्ताक्षर २५ मई १८४७ ई०

(२) और हमें दोस्त जाणकर जो काम मुतालब होवे सो हमेसा लीखतें रहोगे और समाचार खुमाणसिंघ का लिखा सो जाणजों मीती जेठ सुदी ११ संवत १९०४

(३) और हमें दोस्त जाण खुशी मीजाज का समाचार लीखते रहोला मोती माह सुदी ४ सवत १८९७

(४) यहां मतलब कामकाज लिखते रहोगे मीती जेठ सुदी ७ संवत १९०४

इस लेख की प्रस्तुत सामग्री हमे शाहजी के वंशधरों से प्राप्त हुई है अत, हम उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। इनके अलावा मैं अपने आत्म बंधु भाई जयचंदलाल गौठी और नाहटा बंधुओं को भी धन्यवाद देता हूँ।

श्री जैन सत्यप्रकाश
वर्ष ६,अंक ४
दिसम्बर, १९४०

दीवान शाह फतेहचंदजी सुराणा

शाह फतेहचंदजी सुराणा स्वनामधन्य शाह माणिकचंदजी सुराणा के ज्येष्ठ पुत्र और दीवान अमरचदजी के पौत्र थे। आप भी अपने पिताकी तरह रणकुशल सेनापति और सुज्ञ राजनीतिज्ञ थे। आपकी वीरता की प्रशसा राजाओ ने ही नहीं परन्तु उच्च अंग्रेज पदाधिकारीयो ने की है।

शाह माणिकचद जी सुराणा ने सरदार शहर में पार्श्वनाथ भगवान का जिनालय बनवाया था जो अब भी आपकी यश पताका को समस्त थली प्रदेश में फैला रहा है। पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा पर खुदा हुआ प्रतिमालेख (जो मुझे श्री कान्तिसागर जी महाराज के संग्रह से भाई श्री भैंवरलाल जी नाहटा के द्वारा प्राप्त हुआ) इस प्रकार है–

श्री राठोडवशान्वये नरेन्द्र श्री सूरत सिंह जी तत्पट्टे महाराजधिराज महता श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये। सवत १८९७ मिते फागुन सुदि ५ तिथौ शुके श्री बृहत्खरतर गणाधीश्वर भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरि तत्पट्टालंकार ज। यु। प्र। श्री जिनसौभाग्यसूरिविजयिराजे श्री सिरदार नगरे सुराणा शाह माणकचद प्रमुख सकल श्री संघेन सानंद श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारित प्रतिष्ठापितश्च सदैव कल्याण वृद्धयर्थं।

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र

वि० स० १९०५ मे शाह फतेहचदजी को श्री जीसाहिब बहादुर ने महरबानी फरमाकर फौजमुसाहिब के पद पर नियुक्त किया।

वि० स० १९१४ (ई० स० १८५७) मे अंग्रेजो के विरुद्ध बलवा हुआ। कानपुर और देहली की फौज के बिगडने पर हासी और हिसार की फौज भी अंग्रेजो से बिगड़ खड़ी हुई। महाराजा सरदारसिंह ने ऐसे समय पर मसीज शाह श्री फतेहचदजी आदि प्रधानों की सिपाहा की तरफ से ससैन्य हासी-हिसार की ओर भेजकर अंग्रेजी सरकार की

।। दीवानगिरी खिजमत इनायत मोतीयों के चौकडेरां रू० ५००) सं० १६०६ श्रावण सुदी १ शाह माणकचंद को।
।। रू० २००) मोतीरां चौकडाका माणकचंद को स० १८६४ श्रावण वदी २
।। रू० ६०) दुसालेरा माणकचंद को सं० १६०० मा० सु० ७ खजान्ची लालचंद से दराया।

खास रुक्कों की नकल

(१) ।। श्रीरामजी।। दसकत खास शाह माणक दिसी सुप्रसाद बचे अप्रंच थारो बडी [illegible] सही तु शाह अमरू रो बेटो छै सु चाकरी बखत सु चाकरी ठीक पडै सु हमी म्हारे नीचे आइ सुं परगनामरमी चाकर छो सु थे तो लिख देवाछ। पछै था चाकरां रै तौलमें आवै सु करासो कर सु बात व्वे छे सो दावलिया वणोरीत भगुतीहने [illegible] में घात लिया दुधवेरो सेलोरो अजितसिंह नै जीवमें राख बात सारी सल उतारा जे न व्हती दीरी तो धाय परदेसी सात जोर दे बात व्हवी परदेशी रारो हुकम छै सीकररो ठाकुर माल पाछें परै सारोठोरी व्हरी सुधो परै उबरी हदरी वरै दौड नहीं जारा तो बात दावलिया कानो बात मे आवै तो बतकर अठै ले आया दुजा समाचार शाह हीरै (हीरचंद जी सुराणा) कैसरै(शाह केसरीचंद जी सुराणा) रै कागदसु जाणी सवतं १८८७ मीती भादवा सुद १२-१३ भेली.

दसकत खास........ माणकचंद

(२)।। श्रीरामजी ।। शाह माणकदिसी सुप्रसाद बंचै अप्रंच अगडौ कियो तेरा वा दुजा समाचार मालम हुवा सु दुरस छै चाकरी कर छै जीसो ही फल मीलसी तुं सारी बातरी जमा खातर रारो रा० बुधसिंघजी भादल सिंघ बगैरै व प्रदेसीसामधरमी पणै सु चाकरी करै छै वा दुजा ही थारै सामल हर बल छै ज्यां सारा नै घणा हमगीर रारो सवत १८८७ मीती भादवा सुद १०

(३)।। श्रीरामजी।। दसकत खास शाह माणकचंद दिसी सुप्रसाद बंचै अप्रंच कागदा सु वा सीठुणी अजीतैरे मुख जबानी समाचार मालुम हुवा सु थारी चाकरी री काइ फुरमाया परगनामधरमी चाकर छै ते राजा वणुदत पवीहार सालुनै फुरमाया छै सु कहसी तै माणक जाणसी। वा थारै तोल में आवै सु पूछी अरज करावे जातो पहलाते करणो फेर सिरदाराने सला पुछ लेयी सारांरै सुलै सु सलाकर जाबजाब करजो सालु मुख जबानी कहसी सवत १८८५ मीती पोह बदी १२ बार शुकबार।

१ रूको खास दसकत माहराजा दीठे

विलयम फार्स्टर बहादुर के पत्र

कप्तान विलयम फार्स्टर बहादुर भी आपका बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने भी शाह माणकचंदजी को कई पत्र दिये थे। जिनमें से चार अभी आपके वंशधर शाह सेरकरणजी सुराणाजी के पास सुरक्षित हैं।

उनमें से यहाँ पर एक पत्र,जो कि विशेष महत्व का है,उसकी अविकल नकल दी जाती है। बाकी तीन पत्रों के अंतिम वाक्य और संवत लिखी दिये जाते हैं । लेख बढ़ा होने के भय से उन तीन पत्रों की नकल नहीं दी गई है। विशेष अवकाश मिलने पर उन पत्रों की भी अविकल नकल इस पत्र के अगले अंको मे प्रकाशित करने की चेष्टा करेंगे

(१)।। श्रीरामजी।। लिख श्री सरबओपमा शाहजी श्री माणकचंदजी जोग लिखा[illegible] बलयम फारतर साहेब बहादुर केन मुजरा बायजो अठाका समाचार भला छै तुमारा सदा भला चाहिजे अपरंच [illegible] जी कु तुमारी तरफ से जिस काम वासते यहा सारा [illegible] जवाब अब [illegible] साहेब बहादुरजी [illegible] नही और [illegible]सिंहजी दुसाला मागने की बोहत [illegible] करी जी वासते [illegible] मनजूर [illegible] दुसाला दी गई है। सो या तुमारे पास [illegible] साहेब बहादरजी पास से [illegible] और जरूरत [illegible] तुमारी तरफ से [illegible] आदमी [illegible] मुनासिब [illegible] और [illegible] तुमारी [illegible] अमरचंदजी के [illegible] और [illegible] दोसतीइरादे [illegible] मीती जेठ सुदी ११ सं० १८७८ [illegible] विलियम फास्टर

१ रुक्को खास शाह फतेहचंद दिसी

श्री राम जी

रुक्को खास फतेहचद दिसी तथा कणवाई वाचीसी बदडै सुं धाड धीरावता तरण जीता वगैरह आवता था ज्यांने तु वा ठाकरा रणजीतसिहजी हरनाथसिहजी सामय हय मारा बाकी रहा ज्याने पकड लीजा सु आ थारी मोटी चाकरी सझीं हमै इवै काम में हुवे जिाका ने हद् सुधी खातरी देजे समत १९०५ मागसर सुदी १०

१ रुक्को खास शाह फतेहचद दिसी,

श्री रामजी ।

रूवको खास शाह फतेहचद दिसी सुप्रसाद बचै अपरच अलवर साहबारो खरीतो आयो तैमें लिखो सरसैरे बदोबस्त वास्ते फौज ले जावण रै वा दरबार री फोज बुलाई तेसु म्हे तेराव गुमानसिघ ने साहब मोसुफ पासी आज चढायो छै तणे पण बुलावै तारा तोप व असवार वा पाल ले सताबसु जाय हाजार हुय जाईये मै ढील न कररो सवत १९१४ मीती अषाड बदी ३

१रुक्को खास शाह फतेहचद दिसी,

श्रीराम जी।

श्री दीवान वचनात भादरा रो साहूकारा वा परगनैरा चौधरिया यह समस्ता जोग तिथा भादरारी हाकमी फतैहचन्द रै आगे थी सु इयारे हीज राखी छे सु थे जमाखातर राख विगज वैपार आछी तरहसु करजो थारी मात भात सु पीठ रहसी बदेह सायी खेचल मा करनो दी मुहत्ता गुमानसिघ हुकम रा १९०६ मीती मागसर वदी ५

रजू दफतर श्री हजूररे खास दफतर राही।

गाव नौरगदेसर फतैचन्दजी को स १९०७ पो व १२

रू ३०० मोती का चौकडाकी शाह फतैहचन्द को खजानची लालचन्द से दराया रा १९०१ मिगसर वदी ६।

इस लेख की प्रस्तुत सामग्री हमें शाहजी के वशधरो से प्राप्त हुई है । अत हम उनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं। इनके अलावा मैं अपने पूज्य पिताजी श्री फूलचन्दजी बांठिया श्री सगैराजजी नाहटा तथा भवरलाल जी नाहटा को धन्यवाद देता हूँ जिन्होने मुझे यह लेख लिखने का प्रोत्साहन दिया है।

श्री जैन सत्यप्रकाश
वर्ष ६ अंक ६
फरवरी, १९४१

खूब सहायता की। शाह फतेहचंदजी के साथ में शाह लक्ष्मीचंदजी व लालचंदजी उदयचंदजी सुराना भी थे। शाहजी ने वहां पहुंचकर किले छीनने आदि अनेक कार्यों में अंग्रेजी सरकार को भरपेट सहायता पहुंचाई। अंग्रेजी सरकार शाह फतेहचंदजी की खिदमत से बहुत प्रसन्न हुई और उनको दो पत्र प्रदान किये। ये पत्र ऐजन्ट साहिब व जनरल साहिब ने शाहजी को भेट किये थे उनकी नकल यहां दी जाती है-

I have much pleasure in satating that during the time Sah Fatehchand was with my camp as Mootmid or confidential agent of H- H- the Maharaja of Bikaner, he did every thing in his power to aid me and to carry out my instructions as far as he was able with the Bikaner troops under his command.

Camp Rohtuch, (Sd)Commanding
29th. September, 1857 Harianah Field Force

Sahji Fatehchand Surana has served with me in command of Bikaner troops with Harianah field force for some months. There never was the slightest difficulty with me He has much influence over the thakars and their men and invariably exereid that influence aright. Great credit is due to him for his uniform, good conduct and exertions and I trust his service may be recognised by Government.

Jodhpur (Sd) AGENT
19.10.1857 *Rajputana*

इन पत्रों से आपके धवलचरित्र पर काफी झाकी पड़ती है। जब बलवा शांत हो गया तो शाह फतेहचंदजी उदयचंदजी सुराणाजी के साथ बीकानेर आये। श्री जी साहिब बहादुर ने आपकी खिदमत आगे सगड़सर विकमसर गोदां और मानगढ नामक तीन गांव आपको बक्शे और दोनों को पैर में सोने का कड़ा बक्शा।

वि०सं० १९२३ (ई० स० १८६७)में महाराजा सरदार सिंह जी आपकी वीरता बुद्धिमत्ता और राजनीतिज्ञता को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और आपको दीवान के उच्च पद पर सुशोभित किया।

महाराजा सरदार सिंह जी के समय में स्टेट पर बहुत कर्जा चढ़ा हुआ था। इसके दो कारण थे, एक तो फौज ज्यादा रखना ,जो सरकार का हुक्म था। दूसरा गैरसाली होने की वजह से स्टेट को पैसे की काफी आमदनी नहीं होती थी । यो तो महाराजा सूरतसिंह जी के समय से ही स्टेट पर कर्जा चढ़ा आ रहा था। महाराजा साहिब की नीति के आगे कोई भी दीवान स्थायी रूप से नहीं टिक सकता था। रामलाल द्वारकानी जैसे योग्य दीवान भी ८ वर्ष से ज्यादा नहीं टिक सके । आपके राज्यकाल में करीब १८ दीवान बदले। जो दीवान राज्य के कर्ज को उतारने में नाकामयाब होता उसको उसी काल दीवान पद से पदच्युत कर दिया जाता था उसी हाल शाह फतेहचंदजी का भी हुआ । वे भी महाराजा साहब की इस विचित्र नीति के आगे न टिक सके और पदच्युत कर दिये गये। सोहनलाल मुंशी अपने इतिहास में लिखते हैं कि फतेहचंद सुराणा १५ योम तक दीवान रहे।

खैर जो कुछ हो आपकी यश: पताका आज भी इस भूखण्ड पर फहराती है और चिरकाल तक फहराती रहेगी।

महाराजा सरदार सिंह जी ने कुछ रुक्के अमरचंदजी सुराणा के खानदान को दिये थे, उनमें से कुछ रुक्के शाह फतेहचंदजी के भी हैं, उनकी नकल यहां नीचे दी जाती है-

श्री रामजी

।। रुक्को शाह फतेहचंदजी दिसी सुप्रसाद बंचे अठारा समाचार [illegible] [illegible] करनो आगला था सु थुं या ठाकरो हरनाथसिंहजी बार चढ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] लिया या ठाकुरो रणजीत सिंघ जी या हरनाथसिंहजी या दूजा ही [illegible] [illegible] [illegible] समाचार सारा मालुम हुआ सु थे घणा खुश हुआ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पूरी खातरी कर दीजे संवत १९०५ मिती [illegible] सुद ६।

इन्ही दिनो मे आप गाव कली सरैन्य भेजे गये। जिस समय महाराजा रत्नसिहजो ने पूगल की ओर प्रस्थान किया तब आप भी महाराजा के साथ थे।[x]

महाराजा रत्नसिंह के राज्यकाल मे सरदारो डाकुओ ने बहुत उपद्रव मचा रखा था। वे प्रजा को बहुत कष्ट देते थे। मानसिह हमीरसिह, विसनजी पृथ्वीसिह प्रतापसिह, आदि ने राज्य मे खूब धूम मचा रखी थी। इन्होने बीकानेर राज्य के करणपुरा लाखणवास, अजीतपुरा, सीधमुख आदि करीब सौ से ऊपर गावो को बरबाद कर डाला था। इसपर बीकानेर से शाहजी हुकुमचदजी इनका दमन करने के लिए भेजे गये। आपने जाकर सबको भली भाति सजा देकर उपद्रव शात किया।

वि स १८६५ वैशाख सुदी १२ (ई स १८३८ ता ६ मई) को कर्नल एल्विस ने बीकानेर मे एक खरीता भेजा जिसमे लिखा था कि मारवाड की सरहद के लुटेरो के प्रबन्ध के लिए सेना भेजो। इस पर हुकुमचदजी सुराणा मारवाड की सरहद के लुटेरो के प्रबन्ध करने के लिए कर्नल एल्विस के पास भेजे गये।

इसी बीच ठा हरिसिह डुगरजी, जुहारजी आदि फिर उत्पात मचाने लगे। उन्होने लक्ष्मीसर आदि कई गावो को लूटा और भले घरो की बहू- बेटियो को पकड कर ले जाने लगे। तब शाहजी हुकुमचदजी ने उनपर हमला किया और उनकीसारी गढिये नष्ट कर डालीं और उन्हें भगा दिये।

श्रीजी साहिब बहादुर ने आपकी खिदमतो पर प्रसन्न होकर गाव सागळसर स १८६५ जेठ बदि ४ को शाह हुकुमचदजी को पटे दिया।

सवत १६०१ मे आप रियासत बीकानेर के दीवान हुए।

रु ३००/- शाह हुकुमचदजी ने सुजानगढ जावता मोतीयारो चोकडी बगसिया तेरी कीमत। स १६०५मा व १३।

रु ३००/- मोतियो का चोकडा, १६०१ मीति मिगसर वदि ६।

श्री जैन सत्यप्रकाश
वर्ष ६, अक ११
जुलाई १६४१

○

x श्रद्धेय रायबहादुर ओझाजी के हाल ही में प्रकाशित ' बीकानेर का इतिहास द्वितीय खड मे कुछ मतभेद नहीं है।

शाह हुकुमचंदजी सुराणा

शाह हुकुमचंदजी सुराणा, राव अमरचंद के लघु भ्राता थे। आप भी बडे वीर पराक्रमी योद्धा थे। आपका सारा जीवन बीकानेर राज्य की सेवा और रणस्थल में बीता था। आपके जन्म और स्वर्गवास की तिथि अभी निश्चित नहीं हो पाई है। आप निःसतान ही स्वर्गवासी हो गये थे।

वि० स० १८७१ (ई स १८१४) मे बीकानेर राज्य का चुरु पर अधिकार करने के पश्चात् वहां के थाने पर शाहजी हुकुमचदजी सुराणा को थानेदार के पद पर नियुक्त किया।

वि स १८७३ (ई स १८१६) में पृथ्वीसिंह चुरु वाले ने रतनगढ पर अधिकार कर लिया। जब यह समाचार महाराजा सूरजसिंहजी को मालूम हुआ तो उन्होने हुकुमचंदजी को फौज मुहासिब बनाकर रतनगढ भेजा। शाहजी ने वहा पहुँच कर पृथ्वीसिंह से लडाई कर रतनगढ खाली करा लिया। हुकुमचंदजी की इस सफलता से महाराजा सूरजसिंहजी बडे प्रसन्न हुये और उन्हें दीवानगी प्रदान की।

वि सं १८८६ (ई स१८२६) मे जैसलमेर इलाके के गाव राजगढ के भाटी राजसी आदि बीकानेर के सरकारी सांढों का टोला पकड ले गये। जब सांढो का टोला भाटीयो ने वापिस नहीं दिया तो बीकानेर से सुराणा शाह जी हुकुमचदजी की अध्यक्षता में ३ हजार सेना जैसलमेर पर भेजी गयी। दोनो सेनाओ का वासणपी गांव के पास घमासान युद्ध हुआ। बीकानेरी फौज कम होने से जैसलमेर वालों का विजय हुआ। सुराणाजी के साथ महाजन ठाकुर बैरिसाल व मेहता अभयसिंह भी प्रधान सैना संचालक थे।

बीकानेर, जयपुर और जोधपुर के कुछ सरदार इधर--उधर राज्यो में लूटमार कर अपना जीवन निर्वाह करने लगे, जिससे साधारण प्रजा के जीवन का पल पल खतरों से भरा रहता था। इसलिए सं १८८६ के श्रावण मास में मि जॉज क्लार्क उपर्युक्त तीनों राज्यो से मिल, ऐसे सरदारों का नाश करने के विचार से सेखावाटी गये। इस समय महाराजा रतनसिंहजी ने शाहजी हुकुमचंदजी एवं मेहता x हिन्दुमलजी को मि. जॉर्ज की सेवा में ऐसे लुटेरे सरदारों के रोकने के प्रवन्ध के लिए सेखावाटी भेजे गये।

इसी प्रकार जयपुर और जोधपुर से बख्शी मुन्नालालजी व भंडारी लक्ष्मीचदजी आए और निश्चय किया गया कि ऐसे लुटेरो की जहां जहा गढ़ियें हैं उन्हे नष्ट कर दी जाय। और राज्य की ओर से थाने स्थापित किये जायें।

इसके बाद बीकानेर की तरफ से तत्कालीन महाराजा साहब ने शाहजी हुकुमचंदजी को इन डाकुओं का ठीक प्रवन्ध करने के लिए नियुक्त किया। आपने चंद दिनों में ही गांव लोढासर के मालिक बीदावत की गढी को गिरा दिया एवं उसे गिरफतार करा लिया। तदुपरान्त आपने अनेक डाकुओं की गढ़ीयें नष्ट कर उन्हे गिरफ्तार कर लिये। आपने लोढासर, मीगणां, चारीसेला आदि अनेक गढियें गिरा कर वहां राज्य के थाने स्थापित किये।

इसी वर्ष महाजन के ठाकुर वैरिशाल ने अपने यहां करीब २०० लुटेरे डाकुओं को रख छोड़ा था। महाराज रतनसिंह जी ने उसे प्रथम, डाकुओं को निकालने के लिये कहा पर उसने ध्यान नहीं दिया, तो तत्कालीन बीकानेरपति ने वि.स १८८६ कार्तिक वदि १ (ई.स १८२६ ता १३ अक्टोबर) को सुराणाजी हुकुमचंदजी को सेनापति बनाकर, उनकी अध्यक्षता में ठाकुर वैरिशाल पर सेना भेजी। शाहजी हुकुमचदजी के आने के समाचार सुनकर वह (वैरिशाल) भागकर अंग्रेजों के इलाके गाठटीबी में जा रहा। ठाकुर के पुत्र तीन दिन तक तो शाहजी के डके की चोट सहते रहे, अत में इस फिजूल के खूनखराबी से कोई फायदा न दे[illegible] को शाहजी [illegible] के कर कमलों मे सुपुर्द कर उनकी सेवा में हाजिर हो गये। थोड़े दिनों बाद ठाकु[illegible] । आपकी [illegible] हो गया।

---

x आपका जीवन चरित्र भी प्रकट करने का [illegible]

वि०स० १६११ (ई०स० १८५४) में चुरुवाले इसरीसिंह ने चुरुपर कब्जा करलिया जब शाहजी लक्ष्मीचदजी बीदासर से चुरु पहुचे और उनसे झगडाकरके चुरु खाली करायी। नारायण दारोगा काम आया। इस खिदमात मे शाहजी को श्रीजी साहिबने खिल्लत व पैर मे सोने का खानदानी कडा बख्शा।

वि०स० १६१४ (ई०स० १८५७) गदरके वक्त बीकानेर से जो फौज हासि–हिसार अग्रेजो को सहायता देने के लिए भेजी गयी थी उसमे लक्ष्मी चदजी सुराणा भी प्रधान थे। हासी मे अचानक ज्वर फैल जाने से बहुत से बीकानेरी सैनिक अकाल ही काल के ग्रास हो गये, जिनमे प्रधान मोतमिद लक्ष्मीचंदजी भी थे।

*श्री जैन सत्यप्रकाश
वर्ष ६ अंक १२
अगस्त १६४१

-0-0-0-0-0-0-

श्री हरविलास शारदा

श्रीयुत शारदाजी का जन्म जून सन् १८६७ में अजमेर में एक प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार में हुआ। इनके पिताजी का नाम श्रीहरनारायणजी शारदा था, जो अपने काल के नामांकित पुरुष थे। वे संस्कृत और अंग्रेजी भाषाके अच्छे विद्वान थे। इन्हीं की श्री शारदाजी सुयोग्य संतान हैं। ये माता–पिता की इकलौता सतान है, जिससे इनका बाल्यजीवन अत्यन्त लाड़–प्यार के साथ व्यतीत हुआ।

शारदाजी बचपन से ही बडे गंभीर विचारक और तीक्ष्ण बुद्धि वाले पुरुष हैं। १६ वर्ष की आयु में सन् १८८३ में उन्होने गर्वनमेंट कालेज से मेट्रिक परीक्षा पास की। उस समय यह एक आश्चर्यजनक बात थी, जबकि पाश्चात्य विद्या का उन दिनो भारतमे इतना अधिक प्रचार नहीं था। सन् १८८५ में उसी कालेज से योग्यतापूर्ण एफ.ए. की परीक्षा पास की। तदन्तर ये आगरा कालेज में भर्ती हुए जहां से सन् १८८८ में २१ वर्ष की आयु में कलकत्ता विश्वविद्यालयकी बी.ए. की परीक्षा, अंग्रेजी में औनर्स लेकर पास की। ये अजमेर में शायद पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने सर्वप्रथम ग्रेजूएट पास किया है।

शिक्षा समाप्त कर ये सन् १८८८ में गर्वनमेंट कालेज मे सीनियर अध्यापक नियुक्त हुए। यहीं से इनकी प्रतिभा के लिए क्षेत्र मिलता है। इनकी बढती हुई योग्यता से प्रभावित हो, सन् १८६२ में जैसलमेर नरेश ने इनको गार्डियन व अध्यापक नियुक्त किया। १६०२ से आप गवर्नमेण्ट जुडीशियल डिपार्टमेंट की ओर चले गये, जहा जज आदि पदों पर सन् १६२३ तक कार्य करते रहे। सन् १६२४ मे ब्रिटिश सर्विस से रिटायर हुए।

सन् १६२४ में नौकरी से रिटायर होकर सार्वजनिक कार्यों में जुट गये, जिससे अभी तक वृद्धावस्था

दीवान राव शाह
लक्ष्मीचन्दजी सुराणा

शाह लक्ष्मीचन्दजी, शाह ताराचंदजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। आपका राव अमरचंदजी की तरह सैनिक क्षेत्र विशाल है, जो सर्वथा प्रशंसनीय है।

वि० सं० १८७३ (ई.स० १८१६) में शाहजी हुकुमचंदजी के साथ आप भी रतनगढ सर करने के लिए भेजे गये थे। इस खिदमात मे महाराजा सूरतसिंहजी ने लक्ष्मीचंदजी को राव का खिताब प्रदान किया।

वि० स० १८८१ (ई० सं० १८२४) मे देवा के ठाकुर सूरजमल बीकाने अंग्रेजी इलाके मे गांव धाणा आदि लूटे और उत्पात किया। अंग्रेजी सेना ने उसपर चढाई की तो वह भाग कर बीदावतों के गांव सेला की गढी मे चला गया। इस पर बीकानेर से रावजी लक्ष्मीचंदजी सुराणा की अध्यक्षता मे उस पर सेना भेजी गई। आपके साथ मेहता सालमसिंहजी भी थे। १० दिन तो वह रावजी का सामना करता रहा, अंत में वह गढ छोडकर गांव लावडिया की गढी मे चला गया। इस प्रकार वह आठ गढियो में भागता रहा पर रावजी ने ससैन्य उसका पीछा नहीं छोडा और सूरजमल का निवास स्थान नष्ट कर दिया।

वि० स० १८८७ (ई०स० १८३०) मे महाजन के ठाकुर वैरिशाल ने भावलपुर से निकल कर जैसलमेर जाकर वहाँ के रावल से मिलकर एवं सहायता लेकर ज्येष्ठ मास मे पूगल से लड़ाई करने की तैयारी की। इधर महाराजा रत्नसिंहजी ने अपने दीवान राव लक्ष्मीचंदजी सुराणा को महाजन भेजा।

वि० सं० १८८७ (ई० सं० १८३०) के लगभग फाल्गुन मास मे चुरु के सरदारों का उपद्रव बढने पर महाराजा रत्नसिहजी ने उस उपद्रव को शांत करके सुप्रबन्ध करने के लिए लक्ष्मीचंदजी सुराणा को चुरु भेजा। आपके साथ खवास गुलाब सिह भी था। उन्हीं दिनों में दिल्ली से एक खरीता आया,उसमें यह लिखा था कि कर्नल लॉकेट शेखावटी के लुटेरों का प्रबन्ध करने जा रहे हैं। इस खरीते को पाकर महाराजा रत्नसिहजी ने रावजी लक्ष्मीचंदजी को उसकी सेवा में भेजा।

बागी बख्तावरसिंह अभी तक बीकानेर के इलाके मे लूटमार किया करता था। उसे पकड़ने के लिए एक खरीता कर्नल सदरलैंड के पास से वि० सं०१८९३ फल्गुन सुदि ४(इ० स० १८४३ ता. ५ मार्च) का बीकानेर आया। महाराजा रत्नसिंहजी ने उस बागी लुटेरे बख्तावरसिंह को गिरफ्तार करने के लिए रावजी लक्ष्मीचंदजी को भेजा, आपने जोधपुर जाकर कुछ लुटेरों को गिरफ्तार किया।

चंद दिनो बाद एक खरीता जिसमें हरीसिंह बीदावत आदि जो अल्वर के इलाके में उत्पात मचा रहे थे उन्हें गिरफ्तार करने के लिए फिर आया। इस कार्य के लिए महाराजा साहब ने लक्ष्मीचंदजी को नियुक्त किया पर राव जी कई मास होने पर भी उस लुटेरे को गिरफ्तार करने में असमर्थ रहे।

वि० संवत १९०१ से १९०५ तक शाह हुकुमचंदजी तथा लक्ष्मीचंदजी दीवान रहे।

वि०संवत १९०६ में शाहजी लक्ष्मीचंदजी तथा माणेकचंदजी दीवान रहे। इस खिदमात में आपको महाराज साहब की ओर से एक हाथी व मोतियों के चौकडे के रूपये प्रदान किये गये। वह बात रुक्को में इस प्रकार है--

।। रू० १०००) अखरे रु० हजार शाह लखमीचंद माणकचंद नै दिवानगिरी खिजमत इनायत कीना सारां हाथी बगसीयो तेरी कीमतरा दिराया छै तैरा खजानची भोमपाल देजो। आकरा रारा पावै तै चौक रा जमांदारस कर लेजो। द. अचारज ठाकरसी सं १९०६ फागण सुदी १

श्री हजुर दफतार सही   रजु दफतार

।। इसी प्रकार सं० १९०६ मिती फागण सुदी १ दिवानगीरी खिजमत इनायत मोतीयां के चौकडेरा रू ५००) साह लिखमिचंद को दिराया।

कुबेरपति शेठ शालिभद्र

आज से लगभग अढाई हजार वर्ष पूर्व इस भव्य पुण्य पुनीत भरत क्षेत्र मे मगध प्रान्त मे राजगृही नामक सुन्दर नगरी थी। महाराजा श्रेणिक इस स्वर्ग तुल्य नगरी के शासक थे और महाराणी चेलणा पटराणी थी। युगल दम्पती धर्म कर्म में शूर और दिल के उदार थे। अभय कुमार इस अमरावती नगरी का मत्री था। सारी प्रजा चैन की बंसी बजा रही थी। दु ख का लेशमात्र नाम न था और चारों और सुख के बादल छाये हुये थे।

इसी राजगृही नगरी मे एक गोभद्र नामक कुबेरपति शेठ रहता था। उसकी धर्मपत्नी भद्रा की रत्नगर्भा कुक्षि से शुभ महूर्त में रात को जब तारो की जुटपुटी रोशनी फैलने लगी थी, वायु हल्के झोकों मे चलकर वृक्षो के पत्तों के साथ अठखेलिया कर रहे थे, ससार सोया पडा था, ऐसे समय मे हमारे चरित्र नायक शालिभद्र का जन्म हुवा।

प्रात काल यह खुशखबरी बिजली की नाई सारे नगर मे फैल गई। जब यह गोभद्र शेठ को विदित हुई तो उसने बहुत आनन्द उत्सव किया और करोडो सोने की मोहरे लोगो को वितरण कीं। नगरी की सुन्दर नारिये प्रमुदित हो मगल गान गाने लगीं और नगरनिवासियो ने बहुत–सा दृव्य इस खुशी मे व्यय किया। सारी नगरी आनन्द के सागर मे डूबकर गोते लगाने लगी और उनकी सारी चिंताए छू– मन्तर हो गईं।

जब हमारे चरित्रनायक माता भद्रा की कुक्षि में थे उस समय भद्रा ने स्वप्न में शालि का हरा भरा खेत देखा था। इस सुकोमल बालक का नामकरण करने के लिए नगरी के विद्वान पडितों को बुलवाया और अपने सगे सम्बन्धियो को भी निमत्रित किया तब पडितो ने कहा कि माता भद्रा ने स्वप्न मे शालि का हरा भरा खेत देखा था, शालि कल्याणी होती है और भद्रा भी कल्याणी होती है इसलिए इस बालक का नाम शालिभद्र रखना चाहिए। उसी दिन से आपका नाम शालिभद्र रखा गया। आप शुक्ल पक्ष के चन्द्र की तरह अहर्निश बढते हुए स्वजनों के चित्त को आह्लादित करने लगे।

जब आप आठ वर्ष के हुए तब विद्याभ्यास करने के लिए सुदक्ष शिक्षक के पास विद्यालय भेजे गये। आप की बुद्धि इतनी तेज थी कि थोडे ही अर्से मे बहत्तर कला मे प्रवीण हो गये।

आपका शरीर सुडौल और सुन्दर था। आपका वक्षस्थल चौडा और मजबूत था। आपका ललाट सूरज की तरह जगमगाता था। चहरे से काति टपकती थी। मोती–सा बतीस दात थे। रग रुप मे आप से कोई सानी नहीं रखता था। आप कातिमान, धैर्यवान, वीर, कोमल और साहसी थे। 'उगता सूरज ने कोण न पूजे? " वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी। जो आपको देख पाता वही आप पर भुला जाता था। सब आपको चाहते थे। शुक्ल पक्ष के दोज के चन्द्र की नाई बढते हुवे युवावस्था को प्राप्त होने लगे।

आप के एक सुभद्रा नामक बहिन थी। वह बहुत सुन्दर रुपवती और शिक्षित थी जो धन्नाजी को ब्याही गई थी।

जब आप धीरे धीरे युवावस्था को प्राप्त होने लगे तो गोभद्र को आपके विवाह की चिंता होने लगी। गोभद्र शेठ ने अपनी जाति के ही एक श्रीमत के परिवार की बतीस कन्याओं को जो गुणवाली, सौभाग्याली व रूपवती थी इसके साथ एक दिन मे आप को पाणिग्रहण करवाया। अब आप सात मजिल वाले महल में अपनी बतीस सुन्दर ललनाओ के साथ सुख के दिन व्यतीत करने लगे और अहर्निश भोग– विलास करते हुवे सांसारिक स्वर्गीय सुख को लूटने लगे। दिन – रात का ध्यान न था। कब रविनारायण उदित हुवे और कब अस्ताचल की ओर उल्टे मुह कर चले गये। शालिभद्र कुमार और बतीस कुमारीये महल को स्वर्ग बनाकर रहते थे। कुबेरपति के लडके थे, लेशमात्र भी चिंता नहीं थी। उनका जीवन सुखमय था। आपकी ललनाऐ कामदेव की स्त्री रति से भी ज्यादा सुन्दर थीं।

इतना करते हुवे भी वे अपने प्यारे जैनधर्म को नहीं भूल गये थे–जैसा कि हम आज कल सांसारिक झझटो मे फसकर भूल जा रहे है, धर्म के मार्ग की ओर अग्रसर होते जा रहे है। धार्मिक क्रियाऐ और प्रभुभक्ति तो वे

होते हुए भी पूर्ण तौर से निभा रहे हैं। सन् १९२५ में इन्होंने एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य किया जिसकी वजह से भारत के कोने-कोने मे मशहूर हो गये। वह कार्य है इनका 'शारदा एक्ट'। समाज की दुरावस्था का गंभीर ज्ञान कर तथा बाल विवाह को तरुणो केलिए अत्यन्त हानिप्रद समझ कर सन् १९२५ में उन्होनें असेम्बली के सामने 'शारदाबिल' रखा जो चार वर्ष बाद कानून बनकर अमल मे आने लगा। इसी बिल के कारण सारे भारत मे प्रख्यात हो गये हैं, यही कारण है कि भारत का गरीब-अमीर सभी शारदा नाम से परिचित है।

ये तीन बार अजमेर-मेरवाडा की ओर से Legislative Assembly के मेम्बर चुने जा चुके हैं। सन् १९२४ में ये अखिल भा० वैश्य सम्मेलन के मनोनीत सभापति चुने गये थे। इनके अलावा ये कई संस्थाओं के जन्मदाता, कई सम्मेलनो के सभापति व मत्री और कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक सोसाइटियो के मेम्बर व रायल एशियाटिक सोसाइटी ग्रेट ब्रिटेन के मेम्बर रह चुके हैं और इस वक्त भी हैं। सन् १९३४ मे अजमेर म्युजियम ने इन्हे अपना सीनियर वाइस चासलर चुना।

सन् १९३७ मे इनकी ७० वीं वर्षगांठ की समाप्ति पर गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल श्रीयुत् पी. शेषाद्रि ने इनके सम्मानार्थ एक अभिनन्दन ग्रन्थ निकाला था जिसमे पूज्य महात्मा गांधी, मंत्री सर अकबर हैदरी, श्रीमती सरोजनी देवी नायडू आदि राजा महाराजाओं, अंग्रेज अधिकारियो व देश नेताओ ने 'शारदा-एक्ट' व इनके अन्य सराहनीय कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा की है। भारतीयो के अतिरिक्त अंग्रेज उच्च पदाधिकारी भी इनके कार्यों से प्रभावित हैं।

श्रीयुत शारदाजी ने जितनी सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है, उतनी साहित्य-क्षेत्र मे भी अद्भुत सफलता प्राप्त की है। आप एक अच्छे ऐतिहासिक लेखक हैं। अंग्रेजी के अच्छे विद्वान हैं। इन्होने महाराणा कुम्भा महाराणा सागा, महाराणा हमीर, हिन्दू सुपीरियोरिटी, अजमेर इत्यादि कई पुस्तके लिखी हैं। ये सब ग्रंथ अंग्रेजी मे हैं। वे अग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी के भी उत्कृष्ट लेखक हैं। समय-समय पर इनके लेख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते नजर आते हैं। इनका खास विषय राजनीति व इतिहास है। ये निष्पक्ष इतिहासकार हैं। इनके विषय विवेचन मे गभीर चितन का प्राधान्य रहता है और विषय के अनुरुप शैली भी प्रौढ होती हैं। ये बहुत सरल और सजीव भाषा लिखते हैं। कलकत्ता से प्रकाशित 'राजस्थानी' त्रैमासिक के आप परामर्शदाता हैं।

श्रीयुत् शारदाजी का व्यक्तित्व बहुत चढा बढा है। ये दया, सहानुभूति और सौजन्य की साक्षात मूर्ति है। इनके विषय मे पं० मोतीलाल मोनारिया एम.ए अपने 'राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा' में लिखते हैं कि – "हरविलासजी एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, गंभीर विचारक, सच्चे समाज सुधारक तथा भारतीय जनता दोनो के हित चिन्तक और प्रीतिपात्र रहे हैं। इनके राजनैतिक विचार नम्र हैं, इसीलिये राजनीति के मामलों में इनकी कार्य-पद्धति और विचार-वृति से कोई सहमत हो या न हो, यह एक दूसरी बात है। पर इनकी स्वदेश हितैषिता, बुद्धिमता और नेकनीयती के संबध में दो मत नहीं हो सकते। शारदा जी हिन्दू-धर्म, हिन्दू-जाति एवं संस्कृति के बडे प्रशंसक और हिन्दू सगठन के जबरदस्त पक्षपाती है। राजस्थानी गौरव और वर्तमान् वातावरण को इन्होंने खूब समझा है। महाराजा पृथ्वीराज चौहान की लीलाभूमि अजमेर से इन्हे ऐसा प्रेम है कि उसे छोडकर ये नंदन वन में भी रहना पसन्द नहीं करते। दीवान बहादुर, भारत के बाहर की कई प्रसिद्ध साहित्यिक, सामाजिक एवं प्राचीन इतिहास की खोज करने वाली संस्थाओं के मेम्बर हैं, और रहे हैं"

शारदाजी का सांसारिक जीवन अत्यन्त सुखमय है, ये पुत्र-पौत्र, धन-दौलत सभी वांछित वस्तुओं से अत्यन्त सुखी हैं। इनके पुत्र का नाम सहसकरणजी शारदा है, जो बी.ए. पास हैं।

श्री सहसकरणजी के दो पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमश तेजकरण और सुन्दरकरण हैं।

समाजसेवक
२ मार्च १९४१

अभय कुमार ने यह बात श्रेणिक से कही। श्रेणिक यह बात सुनकर बहुत मुग्ध हुआ और राजधज कर शालिभद्र के घर आया।

माता भद्रा ने राजा श्रेणिक का बहुत स्वागत किया और शालिभद्र को बुलाने के लिए उसके महल की ओर दौड पडी और जाकर कहा – बेटा श्रेणिक आया है। यह सुकनर शालिभद्र बहुत आश्चर्य करने लगे और कहा श्रेणिक को खरीद लो। माता ने कहा श्रेणिक कोई खरीदने की चीज नहीं है मगर वे अपने स्वामी हैं।

स्वामी का नाम सुनते ही आप मूर्छित हो गये और कहा "मैं समझता था कि मेरे ऊपर कोई स्वामी नहीं है, मै स्वतत्र हू। अब मुझे मालूम हुआ कि मेरे ऊपर भी स्वामी है, मैं गुलाम हूं। मैं ऐसे गुलामी के राज्य मे रहना नहीं चाहता। मैं सोचता था कि मेरे यहा स्वतत्र देवी अराधना कर रही है मगर ऐसा नहीं है। खैर, मैं इस वक्त तो राजा श्रेणिक से मिलता हू। शालिभद्र सेठ श्रेणिक से मिले और श्रेणिक ने आप को आशीर्वाद दिया।

उस दिन से आप के ह्रदय के अदर वैराग्य की ज्योति जाग्रत हो गयी और सासारिक कामो मे जी नहीं लगने लगा। उसी दिन से एक एक स्त्री को त्यागने लगे। अत मे माता की आज्ञा लेकर भगवान महावीर से जैन दीक्षा अगीकार की। आपके बहनोई धन्ना जी ने भी दीक्षा ले ली।

अब आप पचम महाव्रत के धवल चरित्र को पालने लगे, अत मे वैभारगिरी पर्वत पर जाकर अनशन करके देवलोक को सिधारे। धन्य है ऐसे जीवन को कोटि कोटि धन्य है। सत्य है–सफल जीवन ही एक महान जीवन है।

'जैन,' भावनगर,
२५ मई १९४१

* * * * * * * * *

मुहणोत नैणसी और उनके वंशज

मुहणोत गोत्र की उत्पत्ति राठोडों से हुई है। इस वश की परम्परा जोधपुर के राव सीहा से मिलती है। सीहा का पुत्र आसथान और उस का पुत्र धूहड़ था, जिसके ज्येष्ठ पुत्र का नाम रायपाल था। राव रायपाल के तेरह पुत्र हुए। बडे का नाम कन्हपाल था जो राज्याधिकारी हुआ और दूसरे पुत्र का मोहन जी (मोहन सिंह), जिससे मुहणोत गोत्र की स्थापना हुई।

'महाजनवंश-मुक्तावली' में इस गोत्र की उत्पत्ति के विषय में इस प्रकार लिखा है कि मोहन सिंह और पांधी सिंह भाइयो की अनबन के कारण जैसलमेर चले गये। वहां रावल जी ने उन का बड़ा आदर-सत्कार किया। वहा श्री जिनमाणिक्यसूरि महाराज के पट्टधर श्री जिनचंद्रसूरि महाराज का त्याग, वैराग्य, उत्कृष्ट ज्ञान, तप की प्रशंसा सुनकर मोहन जी और पांधी सिंह जी गुरु महाराज का व्याख्यान सुनने के लिए प्रतिदिन आने लगे। अत मे मिथ्यात्व त्याग कर गुरु महाराज के पास से सम्यक्त्व उच्चार कर ब्रह्मचारी श्रावक हुए। रावल जी ने दोनों भाइयों की बड़ी प्रशंसा

नित्य कर रहे थे। जहां धर्म है वहा लक्ष्मी निवास करती है इस बात को हम आंखो देख रहे है मगर करते नहीं। हमारे हाथ होते हुए भी हम बेहाथ हैं, आंखे होते हुए भी हमे सूझता नहीं है, और हमारे विचारों का दिवाला निकल गया है, अधर्म और अन्याय हमारे पैर तोडे बैठा है। इस तरह अधर्म का अग्रसर होना हमारे देश, समाज, धर्म के लिए दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहा जा सकता है ? पाठक स्वयं विचार सकते हैं। हे भगवन् ! फिर शालिभद्र जैसे सत्यवादी धन्ना अणगार जैसे तपस्वी इसी पुनीत क्षेत्र में जन्में और देश, समाज और धर्म का उद्धार करें। शालिभद्र जैसे स्वतंत्रताभिलाषी पैदा हों, पराधीनता की बेडियों को काट कर स्वतत्र देवी नाचे और मुक्ति का मार्ग खुले।

गोभद्र सेठ भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर धवल चरित्र पालकर देवलोक गये और देव हुए। आप पर गोभद्र की बहुत ममता थी इस लिए वह स्वर्ग से ३३ वस्त्राभूषण की पेटियें और ३३ ही अच्छे २ मिष्टान्न की पेटीये भरकर प्रतिदिन शालिभद्र को भेजता था।

अब घर का सारा कारोबार आय पडा मगर भद्रा ने सारा भार अपने पर ले लिया और घर व्यवस्था की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

यह बात सभी मानते हैं कि प्राचीन काल मे भारतवर्ष एक सोने की चिडिया थी। सोने, चांदी, दूध, दही और घी की नदियां बह रही थीं। आपके मुकाबले का कुबेरपति आज तक ससार में नहीं हुआ है। आप के पास असख्य वैभव और संपत्ति थी। आजकल के कुबेरपति मि. फोर्ड आदि तो उनके पैर की अंगुली के बराबर ही संपति वाले हैं। उनका भंडार अशेष रत्न, हीरे, पन्ने और ज्वाहिरो से परिपूर्ण था। लाखों की लागत के वस्त्र एक दिन पहन कर पैर पोछ कर फेंक दिये जाते थे। अब आप के असंख्य वैभव का अंदाजा लगा सकते हैं। आप कहेंगे यह कैसे ? यह निम्न लिखित हकीकत से प्रमाणित होता है--

एक बार नेपाल देश से कुछ व्यापारी १६ रत्न कंबल बेचनार्थ लेकर, राजगृही नगरी की प्रशसा सुनकर वहां आए। किसी ने भी उन १६ रत्न कबलें खरीदी नहीं। अंत मे वे श्रेणिक राजा के पास गये और उनसे लेने के लिए प्रार्थना की। दाम पूछने पर उन्होंने बतलाया १६ कंबलो का दाम २० लाख रुपये है अर्थात् एक कंबल का दाम १। सवा लाख रुपये है। इतने अधिक दाम सुनकर श्रेणिक ने स्पष्ट उत्तर दे दिया हमे ऐसे कंबलो की जरूरत नहीं। व्यापारीगण इस प्रकार निराशाजनक उत्तर सुनकर हताश हो गये और वहां से चल दिये और आपस में वार्तालाप और पश्चाताप करने लगे। हाय हमने ये कंबल क्यों बनाये? किसी ने भी नहीं खरीदे हैं। यहां तक कि राजा श्रेणिक ने भी इन्हे लेने से इंकार कर दिये। हाय क्या करें और क्या न करे? हम गरीब बेमौत,कुत्ते की मौत,मर गये!

वे इस प्रकार विलाप करते २ शेठ शालिभद्र के महल के नीचे से निकले। माता भद्रा ने जब इन को इस प्रकार विलाप करते जाते हुए देखा तो उसका कोमल हृदय मोम की नाई पसीज उठा और दासी को भेज कर उन्हे घर मे बुलवाया। यथायोग्य सत्कार कर उन कबलो का दाम पूछा। दाम पूछ कर २० लाख रुपये उन्हे दे दिये और कहा हमारे बतीस बहुए हैं, ये तो सोलह कंबल है सो कृपया सोलह कंबल फिर लाना। व्यापारीगण इस प्रकार भद्रा से संतुष्ट हो अपने देश की ओर चल पडे। ये कंबल बहुत सुन्दर थे। गर्मियों मे ठंडे रहते थे, सर्दियों में गर्म रहते थे और बरसात में water proof overcoat का काम करते थे।

जिन कबलो को श्रेणिक जैसा प्रतापशील राजा नहीं खरीद सका उनको शालिभद्र ने खरीद की। ३२ कुमारियों ने १६ कम्बलो के ३२ टुकडे कर आपस में बाट लिए और एक दिन पहन कर पैर पोछ कर स्नानागार में फेंक दिये।

श्रेणिक राजा ने जब इस प्रकार शालिभद्र शेठ की प्रशंसा सुनी तो उनकी भी मिलने की इच्छा हुई और अपने मत्री अभय कुमार को शालिभद्र को लाने के लिए भद्रा के पास भेजा। भद्रा ने मंत्री को कहा राजा साहब ने जो निमत्रण किया है, उस को मैं मंजूर करती हूँ, मगर मेरापुत्र अतीव सुकोमल होने के कारण आने मे असमर्थ है सो कृपा कर राजा साहब को हमारे इस कुटिरो को पवित्र करने के लिए यहां ले आवे।

मंत्रीश्वर जयमलजी - यह जेसो जी के द्वितीय पुत्र थे। इनकी माता का नाम जैवतदे या जसमादे था। इनका जन्म वि स १६३८ की माघ सुदि ६, बुधवार, को हुआ।

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र - वि स १६७२ (ई सं १६१५) में फलोदी पर महाराजा सूर सिंह जी का अधिकार हुआ, तब जयमल जी वहा के शासक बना कर भेजे गये।

वि स १६७७ (ई स १६२०) वैसाख मास मे जब महाराजा गज सिह जी के मन्सब में बादशाह जहाँगीर ने एक हजार जात और एक हजार सवार की तरक्की दी, तो उसकी तनख्वाह मे उनको जाळोर का परगना मिला। उस समय महाराजा ने जयमल जी को वहां का शासक नियुक्त किया और हवेली, बाग, नोहरा और दो खेत इनायत किए।

वि स १६८३ (ई स १६२६) मे महाराजा के बडे कुँवर अमर सिह जी को नागोर मिलने पर जयमल जी वहा के हाकिम नियत हुए।

वि सं १६८४ (ई स १६२७) मे जयमल जी ने बाडमेर कायम कर सूरा चद्र, पोकरण, राऊदडा और मेवासा के विद्रोही सरदारो से पेशकशी लेकर उन्हे दंडित किया।

वि सं १६८६ (ई स १६२६) मे महाराजा गज सिह जी ने जयमल जी को दीवान के पद पर सुशोभित किया। इस प्रकार वे *महाराजा गज सिह जी के सदैव कृपापात्र और विश्वासपात्र सेवक* रहे।

विवाह और संतति - जयमलजी का पहला विवाह वैदमेहता लाल चद जी की पुत्री सरूपदे से हुआ जिससे नैणसी, सुदरसी, आसकरण और नरसिहदास नाम के चार पुत्र हुए। दूसरा विवाह सिंघवी बिडदसिंह की पुत्री सुहागदे से हुआ, जिससे जगमाल नाम का एक पुत्र हुआ।

दानशीलता - जयमल जी ने अपने समय में दानवीरता की अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की। वि सं १६८७ (ई स १६३०) में मारवाड और गुजरात में भयकर दुर्भिक्ष पडा था। उस समय जयमल जी ने अपनी दानशीलता का अच्छा परिचय दिया। उनने मारवाड के भूखे महाजन, तथा अन्य जातियो के भूखे, प्यासे, वस्त्रहीन दीन–दु:खी लोगो को एक वर्ष तक अन्न–पानी और दान देकर उनकी सहायता की[1]।

धार्मिक क्षेत्र - जयमल जी एक महान उदार धार्मिक प्रवृत्ति वाले पुरुष थे। वे जैनों के तपागच्छीय संप्रदाय के अनुयायी थे। धार्मिक कार्यो मे दिल खोल द्रव्य व्यय करते थे, उनकी धार्मिक कीर्ति–कौमुदी की पताका आज भी जाळोर, साचोर, नाडोळ, शत्रुजय और जोधपुर आदि नगरो मे फहरा रही है। उन्होने कई जैन–मदिर बनवा कर जिन देवो की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करवाई थीं, उनमें से कुछ आज भी विद्यमान हैं। संवत् १६८३ में जयमल जी ने सपरिवार शत्रुजय, गिरनार, आबू आदि तीर्थो की यात्रा की और सघ निकाले। नीचे उनकी प्रतिष्ठा करवायी हुई मूर्तियो का संक्षिप्त वर्णन दिया जाता है।

जाळोर - यह नगर जोधपुर से ८० मील की दूरी पर सूकडी नदी के किनारे बसा हुआ है और बहुत प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। यहा पर जयमल जी ने यहां के शासक रहते समय कई जैन–मंदिर और उपाश्रय बनवाए थे, जो आज भी विद्यमान हैं।

जाळोर के किले में तीन जैन–मदिर हैं। राजा कुँवरपाल के समय का बना हुआ जैन–मंदिर गिर गया था। उसकी नीव मात्र शेष रह गयी थी। उसी स्थान पर जयमल जी ने मदिर बनवा कर वि सं १६८१ प्रथम चैत्र वदि ५ (ई स १६२५, ता. १७ फरवरी) को महावीर स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करवाई। यह मंदिर महावीर स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। इस मदिर के निज मंदिर मे दो कमरे हैं, जिनमे से एक मे धर्मनाथ की मूर्ति है, जिसकी प्रतिष्ठा वि सं १६८३, आषाढ वदि ४ (ई स १६२७, ता २४ मई), गुरुवार, को जयमल जी ने करवाई थी। दूसरे कमरे में भी एक मूर्ति है, जिस पर

---

१. 'इस दुर्भिक्ष का आँखों देखा रोमाचकारी वर्णन कवि समयसुदर ने किया है। इस संबंध मे त्रैमासिक 'भारतीय विद्या' (भाग १, अक २) में प्रकाशित श्री अगरचद नाहटा का 'कवि समय सुंदर उपाध्याय कृत सत्यासी या दुष्काळ वर्णन छत्तीसी' नामक निबंध देखिए।

की और जैसलमेर में बसे मोहन जी (मुणेजी) के मुहणोत और पांची सिंह जी के पींचा वि०सं० १५६५ (१३६५ या १३५१) में प्रकट हुए। वि सं १६०० के लगभग तपागच्छ के श्री विद्यासागर यति ने मुहणोत गोत्री खरतरों को अपने गच्छ में कर लिया। और पीछे खरतर ही रहे।

भाटो की ख्यातो में मुहणोत गौत्र की उत्पत्ति के विषय मे लिखा है कि एक बार मोहन जी शिकार करने गए। उनके हाथ से एक गर्भवती हिरणी का शिकार हुआ, उसे मरते देख मोहन जी का चित्त व्याकुल हो गया और वे खेड नामक ग्राम की बावडी के पास आ कर खडे हुए। इतने मे ही उसी रास्ते से जैनयतिवर्य शिवसेन जी आ पहुँचे। उन्होंने मोहन जी को जल छान पानी पिलाने को कहा। मोहन जी ने पानी पिलाया और हिरणी को जीवनदान देने के लिए यतिमहाराज से प्रार्थना की। यति जी ने जीवनदान दिया। मोहन जी ने उनको अपना गुरु माना और वि स १३५१ कार्तिक सुदि १३ को खेड ग्राम में उन के द्वारा जैनधर्म अंगीकार किया। इससे मोहनजी के परिवार वाले मुहणोत कहलाए।

महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा जी मोहन जी के बारे में लिखते हैं कि मुहणोत गोत्र के महत्ता अपनी वशपरम्परा राठोड राव सीहा से मिलाते हैं। सीहा का पुत्र आसथान और उसका पुत्र धूहड़ था, जिसके रायपाल हुआ। रायपाल का दूसरा पुत्र मोहन था, जिसके ज्येष्ठ पुत्र भीम के वंशजों से राठोडों की एक शाखा 'मोहनिया राठोड' प्रसिद्ध हुई। मोहन ने अपनी वृद्धावस्था मे जैनधर्म ग्रहण कर लिया था इसलिए उसके वंशज जैन रहे और ओसवालो में मिल गए।

सापटसेन जी - वह मोहन जी के पुत्र थे। उनका दूसरा नाम सुभटसेन भी था। उन्होने राव कन्हपाल के समय मे प्रधान के पद पर काम किया था। वे वि सं १३७१ में विद्यमान थे। उनके पीछे उनकी पत्नी जीवादेवी सती हुई। उनके दो पुत्र हुए, जिनके नाम महेश और भोजराज थे। महेस के देवीचंद और लालचंद नाम के दो पुत्र हुए। देवी चंद के पुत्र सादूळ सिह और उनके पुत्र देवीदास हुए।

खेतसिंह जी - इसके बाद की चार पीढ़ियों में केवल खेतसिंह का नाम ज्ञात है। वह वि सं १४५४ मे राव चूडा जी के राज्यकाल में मारवाड की पुरानी राजधानी मंडोवर में आए। ख्यातों में लिखा है कि उन्होंने मारवाड राज्य की स्थापना तथा विस्तार मे राव चूडा जी का बहुत साथ दिया।

मेहराज जी- यह जोधा जी के समय मे मडोवर से आकर जोधपुर में बसे। ख्यातों मे लिखा है कि उन्होने जोधाजी के राज्यकाल मे प्रधान के पद पर काम किया था। उन्होंने वि०सं १५२६ में किले के पास अपनी हवेली बनायी थी जो अभी तक विद्यमान है। इनकी वशपरपरा में अनुक्रम से श्रीचंद्र, भोजराज, काळूजी, बस्तो, मोहन (द्वितीय) सामंत, नगा और सूजाजी आदि हुए जिनके विषय में विशेष वृतांत नहीं मिलता।

अचळो जी - ये सूजाजी के पुत्र थे और सुभटसेन जी के १७ वे वशधर थे। जब राव चंद्रसेन ने विपत्तिग्रस्त होकर जोधपुर छोड दिया, और वि सं १६२७ मे मारवाड़ के सीवाणे के जंगल मं रहते थे तब वीर अचळो जी भी उनके साथ थे। वि सं १६३१ मे जब चंद्रसेन मेवाड परगने मे मुराड गाँव मे जाकर रहे, और फिर वहा से सिरोही इलाके के कोरंटे ग्राम मे चले गए, उस समय भी अचळो जी उनकी सेवा में रहे। इसके बाद राव चंद्रसेन डूंगरपुर के राजा के पास गए । उन्होंने राव जी को गलियाकोट नामक ग्राम इनायत किया। यहा भी राजभक्त अचळो जी ने उन्हीं के साथ दु ख के दिन व्यतीत किए। इसके पश्चात् रावजी के पास सरदारों का सदेश आया कि मारवाड राज्य खाली है, आप तुरन्त पधारिए। तब राव जी मारवाड के सोजत नगर की ओर गए। कहना न होगा कि अचळो जी भी उनके साथ थे। इसी समय फिर बादशाह अकबर ने राव चंद्रसेन पर फौज भेजी। वि सं १६३५ की श्रावण वदि ११ को सोजत परगने के सवराड गांव में उक्त सेना से राव जी का युद्ध हुआ जिसमें अचळो जी ने वीरगति प्राप्त की। उनके स्मारक में उक्त ग्राम में एक छतरी बनवायी गयी जो अभी तक विद्यमान है।

जेसो जी- ये अचळो जी के पुत्र थे। विशेष वृतांत ज्ञात नहीं।

मंत्रीश्वर जयमलजी - यह जेसो जी के द्वितीय पुत्र थे। इनकी माता का नाम जैवंतदे या जसमादे था। इनका जन्म वि स १६३८ की माघ सुदि ६, बुधवार, को हुआ।

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र - वि स १६७२ (ई सं १६१५) मे फलोदी पर महाराजा सूर सिंह जी का अधिकार हुआ, तब जयमल जी वहा के शासक बना कर भेजे गये।

वि सं १६७७ (ई स १६२०) बैसाख मास में जब महाराजा गज सिंह जी के मन्सब मे बादशाह जहाँगीर ने एक हजार जात और एक हजार सवार की तरक्की दी, तो उसकी तनख्वाह मे उनको जालोर का परगना मिला। उस समय महाराजा ने जयमल जी को वहा का शासक नियुक्त किया और हवेली, बाग, नोहरा और दो खेत इनायत किए।

वि स १६८३ (ई सं १६२६) मे महाराजा के बडे कुँवर अमर सिंह जी को नागोर मिलने पर जयमल जी वहा के हाकिम नियत हुए।

वि स १६८४ (ई स १६२७) मे जयमल जी ने बाडमेर कायम कर सूरा चद्र, पोकरण, राऊदडा और मेवासा के विद्रोही सरदारो से पेशकशी लेकर उन्हें दडित किया।

वि स १६८६ (ई स १६२६) मे महाराजा गज सिंह जी ने जयमल जी को दीवान के पद पर सुशोभित किया। इस प्रकार वे महाराजा गज सिंह जी के सदैव कृपापात्र और विश्वासपात्र सेवक रहे।

विवाह और संतति - जयमलजी का पहला विवाह वैदमेहता लाल चद जी की पुत्री सरूपदे से हुआ जिससे नैणसी, सुदरसी, आसकरण और नरसिहदास नाम के चार पुत्र हुए। दूसरा विवाह सिंघवी बिडदसिंह की पुत्री सुहागदे से हुआ, जिससे जगमाल नाम का एक पुत्र हुआ।

दानशीलता - जयमल जी ने अपने समय में दानवीरता की अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की। वि.सं १६८७ (ई स १६३०) में मारवाड और गुजरात में भयकर दुर्भिक्ष पडा था। उस समय जयमल जी ने अपनी दानशीलता का अच्छा परिचय दिया। उनने मारवाड के भूखे महाजन, तथा अन्य जातियो के भूखे, प्यासे, वस्त्रहीन दीन–दु खी लोगों को एक वर्ष तक अन्न–पानी और दान देकर उनकी सहायता की[1]।

धार्मिक क्षेत्र - जयमल जी एक महान उदार धार्मिक प्रवृत्ति वाले पुरुष थे। वे जैनों के तपागच्छीय संप्रदाय के अनुयायी थे। धार्मिक कार्यो मे दिल खोल द्रव्य व्यय करते थे, उनकी धार्मिक कीर्ति–कौमुदी की पताका आज भी जालोर, सांचोर, नाडोल, शत्रुजय और जोधपुर आदि नगरो मे फहरा रही है। उन्होंने कई जैन–मदिर बनवा कर जिन देवो की प्रतिमाए प्रतिष्ठित करवाई थीं, उनमे से कुछ आज भी विद्यमान हैं। सवत् १६८३ में जयमल जी ने सपरिवार शत्रुजय, गिरनार, आबू आदि तीर्थो की यात्रा की और सघ निकाले। नीचे उनकी प्रतिष्ठा करवायी हुई मूर्तियों का संक्षिप्त वर्णन दिया जाता है।

जालोर - यह नगर जोधपुर से ८० मील की दूरी पर सूकडी नदी के किनारे बसा हुआ है और बहुत प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। यहा पर जयमल जी ने यहां के शासक रहते समय कई जैन–मंदिर और उपाश्रय बनवाए थे, जो आज भी विद्यमान हैं।

जालोर के किले मे तीन जैन–मंदिर हैं। राजा कुँवरपाल के समय का बना हुआ जैन–मंदिर गिर गया था। उसकी नीवं मात्र शेष रह गयी थी। उसी स्थान पर जयमल जी ने मंदिर बनवा कर वि.सं. १६८१ प्रथम चैत्र वदि ५ (ई स १६२५, ता १७ फरवरी) को महावीर स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करवाई। यह मदिर महावीर स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। इस मदिर के निज मंदिर मे दो कमरे हैं, जिनमे से एक में धर्मनाथ की मूर्ति है, जिसकी प्रतिष्ठा वि सं १६८३, आषाढ वदि ४ (ई स. १६२७, ता २४ मई), गुरुवार, को जयमल जी ने करवाई थी। दूसरे कमरे में भी एक मूर्ति है, जिस पर

---

१. 'इस दुर्भिक्ष का आँखो देखा रोमाचकारी वर्णन कवि समयसुदर ने किया है। इस संबंध में त्रैमासिक 'भारतीय विद्या' (भाग १, अंक २) मे प्रकाशित श्री अगरचंद नाहटा का 'कवि समय सुंदर उपाध्याय कृत सत्यासी या दुष्काळ वर्णन छत्तीसी' नामक निबंध देखिए।

की और जैसलमेर में बसे मोहन जी (मुणेजी) के मुहणोत और पांची रिह जी के पींचा वि०सं० १५६५ (१३६५ या १३५१) मे प्रकट हुए। वि स १६०० के लगभग तपागच्छ के श्री विद्यासागर यति ने मुहणोत गोत्री खरतरों को अपने गच्छ में कर लिया। और पीछे खरतर ही रहे।

भाटो की ख्यातो में मुहणोत गोत्र की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि एक बार मोहन जी शिकार करने गए। उनके हाथ से एक गर्भवती हिरणी का शिकार हुआ, उसे मरते देख मोहन जी का चित्त व्याकुल हो गया और वे खेड नामक ग्राम की बावडी के पास आ कर खडे हुए। इतने मे ही उसी रास्ते से जैनयतिवर्य शिवसेन जी आ पहुँचे। उन्होंने मोहन जी को जल छान पानी पिलाने को कहा। मोहन जी ने पानी पिलाया और हिरणी को जीवनदान देने के लिए यतिमहाराज से प्रार्थना की। यति जी ने जीवनदान दिया। मोहन जी ने उनको अपना गुरु माना और वि स १३५१ कार्तिक सुदि १३ को खेड ग्राम में उन के द्वारा जैनधर्म अंगीकार किया। इससे मोहनजी के परिवार वाले मुहणोत कहलाए।

महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा जी मोहन जी के बारे में लिखते हैं कि मुहणोत गोत्र के महत्ता अपनी वंशपरम्परा राठोड राव सीहा से मिलाते हैं। सीहा का पुत्र आसथान और उसका पुत्र धूहड़ था, जिसके रायपाल हुआ। रायपाल का दूसरा पुत्र मोहन था, जिसके ज्येष्ठ पुत्र भीम के वंशजो से राठोड़ों की एक शाखा 'भोहनिया राठोड' प्रसिद्ध हुई। मोहन ने अपनी वृद्धावस्था में जैनधर्म ग्रहण कर लिया था इसलिए उसके वंशज जैन रहे और ओसवालों मे मिल गए।

सापटसेन जी - वह मोहन जी के पुत्र थे। उनका दूसरा नाम सुभटसेन भी था। उन्होने राव कन्हपाल के समय मे प्रधान के पद पर काम किया था। वे वि स १३७१ में विद्यमान थे। उनके पीछे उनकी पत्नी जीवादेवी सती हुई। उनके दो पुत्र हुए, जिनके नाम महेश और भोजराज थे। महेस के देवीचंद और लालचंद नाम के दो पुत्र हुए। देवी चद के पुत्र सादूळ सिह और उनके पुत्र देवीदास हुए।

खेतसिंह जी - इसके बाद की चार पीढियों मे केवल खेतसिंह का नाम ज्ञात है। वह वि सं १४५४ मे राव चूडा जी के राज्यकाल में मारवाड की पुरानी राजधानी मंडोवर में आए। ख्यातों मे लिखा है कि उन्होने मारवाड राज्य की स्थापना तथा विस्तार में राव चूडा जी का बहुत साथ दिया।

मेहराज जी- यह जोधा जी के समय मे मंडोवर से आकर जोधपुर में बसे। ख्यातों मे लिखा है कि उन्होने जोधाजी के राज्यकाल मे प्रधान के पद पर काम किया था। उन्होने वि०सं १५२८ मे किले के पास अपनी हवेली बनायी थी जो अभी तक विद्यमान है। इनकी वंशपरपरा में अनुक्रम से श्रीचंद्र, भोजराज, फालूजी, बरसो, मोहन (द्वितीय) सामत, नगा और सूजाजी आदि हुए जिनके विषय में विशेष वृतांत नहीं मिलता।

अचळो जी - ये सूजाजी के पुत्र थे और सुभटसेन जी के १७ वें वंशधर थे। जब राव चंद्रसेन ने विपत्तिग्रस्त होकर जोधपुर छोड दिया, और वि.सं १६२७ मे मारवाड़ के सीवाणे के जंगल में रहते थे तब वीर अचळो जी भी उनके साथ थे। वि.सं १६३१ में जब चंद्रसेन मेवाड परगने मे मुराड गाँव मे जाकर रहे, और फिर वहा से सिरोही इलाके के कोरटे ग्राम मे चले गए, उस समय भी अचळो जी उनकी सेवा मे रहे। इसके बाद राव चंद्रसेन डूंगरपुर के राजा के पास गए । उन्होने राव जी को गलियाकोट नामक ग्राम इनायत किया। वहा भी राजभक्त अचळो जी ने उन्ही के साथ दु ख के दिन व्यतीत किए। इसके पश्चात् रावजी के पास सरदारों का संदेश आया कि मारवाड राज्य खाली है, आप तुरन्त पधारिए। तब राव जी मारवाड़ के सोजत नगर की ओर गए। कहना न होगा कि अचळो जी भी उनके साथ थे। इसी समय फिर बादशाह अकबर ने राव चंद्रसेन पर फौज भेजी। वि स १६३५ की श्रावण सुदि ११ को सोजत परगने के सायराड़ गांव मे उक्त सेना से राव जी का युद्ध हुआ जिसमे अचळो जी ने वीरगति प्राप्त की। उनके स्मारक मे उक्त ग्राम मे एक छतरी बनवायी गयी जो अभी तक विद्यमान है।

जेसो जी- ये अचळो जी के पुत्र थे। विशेष वृतांत ज्ञात नहीं।

श्री पद्मप्रभविंबं ।।ओं।। सं. १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व. ५ शुक्ले राजाधिराज श्रीगजसिंहप्रदत्तसकलराज्यव्यापाराधिकारेण मं. जेसा सुत मं. जयमल्लजी नाम्ना श्री चंद्रप्रभाविंबं कारितं प्रतिष्ठिापितं स्वप्रतिष्ठायां श्रीजाळोरनगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छाधिराज भ. श्रीहीरविजयसूरिपटटालंकार भ. श्रीविजयसेनसूरिपटटालंकार पातशाहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातपाविरुदधारक भ. श्री ५ श्रीविजयसिंहसूरिप्रमुखपरिवारपरिकारितैः। राणा श्रीजगतसिंहराज्ये नाडुलनगररायविहारे श्रीपद्मप्रभबिंबं स्थापितं।

पद्मप्रभ की प्रतिमा के पास शातिनाथ की प्रतिमा है, वह भी जयमल जी ने बनवायी थी और वि स १६८६ प्रथम आषाढ वदि ५ (ई सं १६३०, ता० २१ मई) शुक्रवार को उसकी प्रतिष्ठा हुई। शांतिनाथ भगवान का प्रतिमालेख इस प्रकार है-

।।ओं।। सं. १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व.५ शुक्ले राजाधिराज गजसिंहजीराज्ये योधपुरनगर वास्तव्य मंणोत्र जैसा सुतेन जयमलजी केन श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छाधिराज भटटारक (श्री) ५ श्री विजयदेवसूरिभिः स्वपटटालंकार आचार्य श्री श्री विजयसिंहसूरि प्रमुख परिवार (सहितैः)

दीवान नैणसी -नैणसी का जन्म मन्त्रीश्वर जयमल जी की प्रथम धर्मपत्नी सरूपदे की कुक्षि से वि सं १६६७ मार्गशीर्ष सुदि ४ (ई सं १६१०, ता ६ नवम्बर) शुक्रवार को हुआ। वह तलवार और कलम दोनो के धनी हुए। उनकी लिखी हुई 'ख्यात' जो 'मुहणोत नैणसी की ख्यात' के नाम से प्रसिद्ध है इतिहास साहित्यका एक अनुपम रत्न है जिसको लिख कर नैणसी अमर हो गए हैं। राजस्थानी भाषा का वह सबसे बडा और सबसे प्रौढ गद्यग्रंथ है।

राजनैतिक और सैनिक क्षेत्र वि स १६८९ (ई सं १६३२) मे मगरा के मेरो ने उपद्रव मचाया तो इस अवसर पर महाराजा गज सिह जी ने नैणसी को भेजा। उन्होने वहा जाकर मेरों का पूर्ण दमन किया और शांति स्थापित की।

वि स. १६६४ (ई सं १६३७) में नैणसी फळोदी के हांकिम बनाए गये, जहां उनको बिल्लोचो से लडना पडा।

वि स १७०० (ई स १६४३) मे महेचा महेशदास बागी होकर राडधडे के गांवो मे उत्पात करने लगा। इस पर महाराजा जसवत सिंह ने नैणसी को मुखिया (सेनापति) बनाकर राडधडे भेजा। उन्होने वहां जाकर राडधडे को लूटा और वहां के शहरपनाह को नष्ट कर दिया और महेचा महेश दास को वहां से निकाल कर वहां का अधिकार अपनी सेना के मुखिया रावल जगमाल को दे दिया।

वि सं १७०२ (ई स १६४५) में रावल नराण (नारायण) सोजत के पहाडो मे से चढकर सोजत के आसपास गाँवों की भूमि को लूटने लगा। इस अवसर पर जोधपुर-महाराजा ने नैणसी तथा उनके छोटे भाई सुदरसी (सुदरदास) को रावल के विरुद्ध भेजा। उन्होने उस तरफ जाकर कूकडा, कराणा, कोट और मांकड आदि गावों को नष्ट कर दिया।

वि स १७०६ (ई स १६४८) मे पोकरण का परगना बादशाह शाहजहां ने महाराजा जसवत सिह जी को प्रदान किया, किन्तु उक्त परगने पर जैसलमेर के भाटियों का अधिकार था, इसलिए महाराजा के कर्मचारियों के पहुँचने पर रावळ रामचंद्र-ने अपना अधिकार उठाना स्वीकार न किया। इस पर महाराजा ने उसे दबाने के लिए सेना भेजी, जिसमें नैणसी भी थे। अनंतर भाटियों से लडाई कर राठोंड ने पोकरण पर अधिकार कर लिया। जेसलमेर के रावळ मनोहर दास के पश्चात् सबळसिंह वहा का स्वामी होना चाहता था। उसने जेसलमेर पर अधिकार करने का यह उपयुक्त अवसर समझा। तब महाराजा जसवंतसिंहजी ने उसकी सहायतार्थ नैणसी को भेजा। नैणसी के आने का पता सुनकर रावळ रामचंद्र वहां से भाग गया और सबलसिंह जेसलमेर का स्वामी बन गया।

वि० सं० १७१४ (ई० सं० १६५७) में महाराजा जसवन्त सिंहजी ने मियां फरासत की जगह नैणसी को अपना दीवान नियुक्त किया, तदनुसार वे वि० सं० १७२३ तक इस पद पर काम करते रहे।

वि० सं० १७१५ (ई० सं० १६५८) मे जेसलमेर के रावळ सबळसिंह ने फळोदी और पोकरण जिले के १० गांव लूटे। इस पर महाराजा की आज्ञा से नैणसी सेना के साथ जेसलमेर पर चढ़ाई करने के लिए भेजे गये।

उसी सवत् का लेख है। इसकी प्रतिष्ठा उद्धरण तत्पुत्र तोडरा ईसर टाहा दूहा हांरा ने करवाई और श्री विजयदेव सूरि ने की थी।

महावीर स्वामी की मूर्ति पर यह लेख खुदा हुआ है –

।।ओं।। संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वदि ५ गुरौ अद्येह श्रीराठोडवंशे श्रीसूरसिंघपट्टे श्री महाराज गजसिंहजी विजयीराज्ये वृद्ध उसवाल ज्ञातीय सा० जेसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा. जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा. सादा सुभा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थ श्री स्वर्णगिरिगढ (ढ) दुर्गोपरिस्थित श्रीमत्कुमरविहारे श्रीमति महावीरचैत्ये सा. जेसा भार्या जयवंतदे पुत्र सां. नहणसी सुंदरदास आसकरण लघुभार्या सोहागदे पुत्र सां. जगमालादि पुत्र पौत्रादि श्रेयसे सा. जयमलजी नाम्ना श्री महावीर बिंबं प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपागच्छपक्षे सुविहिचारकारक शिथिलाचारग (निवा)रक साधुक्रियोद्धारकारक श्री आणंदविमलसूरि पटटप्रभाकर श्रीविजयदानसूरि पट शृंगारहारमहाम्लेच्छाधिपति पातशाहि श्री अकबर प्रतिबोधकतददत्त जगद्गुरुविरुदधारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थजीजीयादिकर मोचक तद्दषण्मास अमारि प्रवर्तक भट्टारक श्री ६ हीरविजयसूरि पटटमुकुटायमान भट्टारक श्री ६ विजयसेनसूरि पट्टे सांप्रतिविजयमानराज्यसुविहितशिरः शेखरायमाण भट्टारक श्री ६ विजयदेवसूरिश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्रीविद्यसागरगणि शिष्य पडित श्री राहजसागर गणि शिष्य पंडित जयसागर गणिना श्रेयसे कारकरय।।

श्री धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख इस प्रकार है–

।।संवत् १६८३ वर्षे आषाढ वदि ४ गुरौ श्रवणनक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्णगिरिदुर्गे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजयराज्ये महुणोत्र दीपक मं. अचला पुत्र मं. जेसा भार्य्या जैवंतदे पु.मं. श्री जयमल्ल नाम्ना भा. सरूपदे द्वितीया सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे।। श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक भट्टारक श्रीहीर विजयसूरिपट्टालंकार भट्टारक श्री विजयसेन ......।।

महावीर स्वामी के मंदिर की तरह यहां जालोर में एक दूसरा चौमुख जी का जैन मंदिर है। यह किले के ऊपर की अंतिम पोळ के पास और किलेदार की बैठक के स्थान से थोड़ी दूर पर नक्कार खाने के मार्ग पर बना हुआ है। जयमल जी ने इस मंदिर मे वि.स. १६८१ प्रथम चैत्र वदि ५ (ई सं १६२५, ता० १७ फरवरी) को श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को प्रस्थापित किया, जिस का प्रतिमा–लेख इस प्रकार है–

।।ओं।। संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वदि ५ गुरौ श्री मुहणोत्रगोत्रे सा. जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा. जयमल भार्या सोहागदेवी श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठामहोत्सवपूर्वकमं प्रतिष्ठितमं च श्री तपागच्छे श्री ६ विजयदेवसूरिणामादेशेन जयसागरगणेन (णिना)।।

इसी किले में एक तीसरा जैन–मंदिर और भी है, उसके संबंध मे कहा जाता है कि इस का जीर्णोद्वार जयमल जी ने करवाया था। जालोर नगर के तपापाडा मुहल्ले मे जो एक जैन–मंदिर तथा तपागच्छ का उपाश्रय विद्यमान है, कहा जाता है कि इन्हें भी जयमल जी ने ही बनवाया था।

सांचोर - यह भी जालोर की ही भाँति मारवाड का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है। यहा पर भी जयमल जी ने वि सं १६८१ प्रथम चैत्र वदि ५ (ई सं १६२५, ता० १७ फरवरी) को एक जैन–मंदिर बनवा कर भगवान् की प्रतिष्ठा करवायी।

जोधपुर- वि सं १६८६ (ई सं १६२९) में जोधपुर में जयमल जी ने एक चौमुख जी का जैन–मंदिर बनवाया।

शत्रुंजय (पालीताणा) वि सं १६८३ (ई सं. १६२६) मे शत्रुंजय में जयमल जी ने एक जैन–मंदिर बनवाया।

नाडोळ -नाडोळ भी मारवाड का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। यहां पद्मप्रभ का प्रसिद्ध जैन मंदिर है। मंदिर के मूल नायक भगवान् पद्मप्रभ की प्रतिमा जयमल जी ने बनवायी थी जिसका प्रतिष्ठा कार्य जालोर नगर मे हुआ था। प्रतिमा वहा से लाकर नाडोळ नगर के राय विहार नामक मंदिर में स्थापित की गयी। इस पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख इस प्रकार है–

सिधश्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री जसवंतसिंहजी वचनातु मु० नेनसी दिसे सुप्रसाद वाचिंजो। अठा रा समाचार भला छै। थांहरै देजो। लोक महाजन रेत री दिलासा किजो। कोई किण ही सो जोर ज्यादती करण न पावे। काठोकोरारो जापता (तो) कीजो। कँवररे डीलरा पान पाणी रा जतन करावजो।

नैणसी बडे प्रजा हितैपी दीवान थे। प्रजा की सुख–दु ख की बातो को बडे ध्यान से सुनते थे। महाराजा से निवेदन कर प्रजा पर के कई टैक्स भी उन्हों ने माफ करवाये थे।

जाळोर के कुमारविहार मदिर मे नैणसी ने मदिर के सामने मण्डप बना कर उसमे अपने पिता की, सगमरमर की गजारूढ मूर्ति स्थापित की। यह मूर्ति मूलनायक भगवान महावीर की प्रतिमा के सन्मुख हाथ जोडे विराजमान है।

नैणसी के ग्रथ - नैणसी जैसे वीर थे, वैसे ही विद्यानुरागी, इतिहास प्रेमी, और वीर कथाओं पर अनुराग रखने वाले नीति निपुण पुरुष थे। वे अच्छे कवि और सुयोग्य लेखक थे। उनके दो ग्रन्थ मिलते है जिनमे पहला तो ' मुहणोत नैणसी की ख्यात'' नाम से प्रसिद्ध है और दूसरा ग्रन्थ जोधपुर राज्य का 'सर्वसग्रह' (गजेटियर) है। यदि नैणसी थोड़े वर्ष और जीवित रह पाते तो सभव था कि और भी उपयोगी ग्रन्थ उनकी लेखनी द्वारा लिखे जाते।

ख्यात के विषय मे राजस्थानी इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री गौरीशकर हीराचद जी ओझा इस प्रकार लिखते हैं–

''राजपूताने का पिछला इतिहास लिखने के लिए मुहणोत नैणसी की ख्यात एक महत्वपूर्ण वस्तु है। इस मे राजपूताना, काठियावाड, कच्छ मालवा, बघेलखड, आदि के राजवंशो का वृतात मिलता है। इस ऐतिहासिक ग्रथ का निर्माण मारवाडी भाषा मे आज से लगभग २७५ वर्ष पूर्व हुआ था। आज जितने भी साधन प्राप्त है उतने उस समय न होने पर भी नैणसी ने जनश्रुति या भाटो आदि की पुस्तकों से जितना भी वृतात मिल सका सग्रह किया, जो उपयोगी है। इसमे इतिहास के अतिरिक्त भौगोलिक वृतात भी दिया है, जिससे तत्कालीन परिस्थिति का अच्छा ज्ञान हो सकता है।

'' मुगल बादशाह अकबर के समय उस के मत्री अबुलफजल द्वारा ' आईन अकबरी' का निर्माण हुआ। उस के पश्चात् देशी राज्यो में भी ख्यातो का लिखा जाना आरम्भ हुआ। उसी समय नैणसी ने भी अपनी ख्यात को लिखना आरभ किया। उसने इतिहास प्रेम के कारण दूर–दूर के इतिहास के जानकारो द्वारा अपने सग्रह को बढाना आरंभ किया। उसने इस अमूल्य सग्रह में सभी आवश्यक बातो का उल्लेख कर राजपूताने के पिछले इतिहास–लेखको के लिए बहुत कुछ सामग्री तैयार कर दी और जिन बातो मे मतभेद जान पडा उन्हे ज्यो का त्यो दे दिया। राजा–महाराजाओं के इतिहास तो कई प्रकार से मिलते हैं पर उनकी छोटी–छोटी शाखाओं, सरदारों आदि के युद्ध मे काम आने का वृतात मिलने के साधन कम हैं तो भी किसी अंश मे उस की पूर्ति नैणसी के सग्रह से होती है। मेवाड राज्य का वृहद् इतिहास ''वीर विनोद'' लिखते समय महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने कितने ही वृत्त नैणसी की ख्यात के आधार पर दिए हैं और स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसाद तो नैणसी की ख्यात पर इतने मुग्ध थे कि उन्होंने उस को राजपूताने का 'अबुलफजल' मान लिया। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार मुगल–कालीन इतिहास के लिए आईन–अकबरी उपयोगी वस्तु है, उसी तरह राजपूत जाति का पिछला इतिहास लिखने के लिए नैणसी का संग्रह उपयोगी है। यद्यपि पहले का जितना वृतात है, वह अधिकांश मे जनश्रुतियो की भित्ति पर खड़ा किया गया है, तथापि सोलहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक के वृतात मे शकांओं की अधिक गुंजाइश नहीं है।''[१]

---

१ '' मुहंणोत नैणसी की ख्यात', खंड२, भूमिका।

सर्वप्रथम उन्होने पोकरण जाकर अपना डेरा डाला। जेसलमेर के रावळ का पुत्र अमरसिंह जो उस वक्त पोकरण में था नैणसी के ससैन्य आने का समाचार सुनकर जेसलमेर चला गया। इस पर नैणसी ने उसका पीछा किया, और जेसलमेर के २५ गांव जलाये और वहां से तीन कोस की दूरी पर बासणपी नामक गावं में अपना डेरा किया। जब कई रोज तक रावळ नैणसी का सामना करने के लिए गढ से बाहर नहीं आया तो वे आसणी नामक दुर्ग को लूट कर वापिस जोधपुर लौट आये।

वि० स० १७२४ (ई० स० १६६७) मे महाराजा जसवतसिंह जी के साथ नैणसी तथा सुंदरसी भी औरंगाबाद मे रहते थे। किसी कारण से महाराजा इन दोनो बंधुओ पर अप्रसन्न हो गये। महाराजा के अप्रसन्न होने का कारण ठीक रुप से ज्ञात नहीं। फिर भी जनश्रुति से पाया गया है कि नैणसी ने अपने रिश्तेदारों को बडे-बडे पदो पर नियत कर दिया था, और वे लोग अपने स्वार्थ के लिए प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। और इसी कारण से महाराजा ने नैणसी तथा सुंदरसी दोनों बंधुओं को माघ वदी ६ (ता० २६ दिसंबर) को कैद कर दिया।

वि० स० १७२५ (ई० स० १६६८) मे महाराजा ने इन मुहणोत बंधुओ पर एक लाख रुपये का दंड लगाकर इन्हे कैद से मुक्त कर दिया। पर उन्होने एक पैसा भी देना स्वीकार नहीं किया। इस संबंध मे निम्नलिखित दोहे राजपूताने मे अब तक प्रसिद्ध है-

लाख लखांरा नीपजै, बड पीपळ री साख।
नटियो मूंतो नैणसी, तांबो देण तलाक।।१।।
लेसो पीपळ लाख, लाख लखांरा लावसो।
तांबो देण तलाक, नटिया सुंदर- नैणसी।।२।।

नैणसी और सुंदरसी के दंड के रुपये देना अस्वीकार करने पर वि० सं० १७२६ माघ वदी १ (ई० सं०१६६६, ता० २८ दिसंबर) को वे फिर कैद में डाल दिए गए और उनपर रुपयों के लिए सख्तियां होने लगी।

स्वर्गवास - वि० स० १७२७ (ई० स० १६७०) में नैणसी तथा सुंदरसी दोनों भाई कैद की हालत में ही औरंगाबाद से मारवाड को भेजे गए। मार्ग में महाराजा के छोटे आदमियो के कठोर व्यवहार से , उनको जीवन से ग्लानि हो गई। वीर प्रकृति होने के कारण उन सख्तियों को सहने की अपेक्षा वीरता से मरना उचित समझ भाद्रपद वदि १३ को फूलमरी नामक ग्राम मे दोनों भाइयों ने कटार मार कर अपनी जीवन लीला-समाप्त की। इससे महाराजा को बहुत अपयश का भागी होना पडा।

नैणसी और सुंदरसी दोनों भाई कवि भी थे। बंदी अवस्था के कष्टों से दुःखी होकर उन्होने आपस मे एक-एक दोहा कह अपनी वेदना प्रकट की । दोहे नीचे लिखे अनुसार हैं-

नैणसी- दहाडो जितरै देव, दहाडे बिन नहीं देव है।
सुर-नर करता सेव, नैड़ा न आवै नैणसी।।
सुंदरसी- नर पे नर आवत नहीं, आवत है धन-पास।
सो दिन क्रेम विसारिये, करते सुंदरदास।।

विवाह और संतति - नैणसी का पहला विवाह भंडारी नारायणदास की पुत्री से हुआ और दूसरा मेहता भीमराज की पुत्री से जिससे करमसी, वैरिसी और समरसी नामक तीन पुत्र हुए।

अन्य बातें - महाराज जसंवतसिंह जी को अक्सर जोधपुर से बाहर रहना पडता था। जब वे बाहर जाते तो राज्य का सारा कार्य नैणसी के सुपुर्द कर जाते थे। यहां तक कि उनको जागीर तक देने का अधिकार दे जाते थे। समय-समय पर नैणसी के नाम पर सूचनाएं भी भेजते रहते थे जैसे कि महाराजा के एक पत्र से प्रकट होता है जो इस प्रकार है-

वि० स० १७२७ भाद्रपद वदि १३ (ई०स० १६७०, ता० ३ अगस्त) को सुदरसी अपने ज्येष्ठ भ्राता नैणसी के साथ फूलमरी ग्राम मे पेट मे कटार मार कर वीरगति को प्राप्त हुए।

सुदरसी के दो पुत्र हुए जिन के नाम मोहनदास और तेजमाल थे। मोहनदास के बडे पुत्र का नाम गोकुळदास था। तेजमाल के पुत्र का नाम टोडरमल था।

वि० स० १७३२ (ई०स० १६७५) मे नागौर मे मोहनदास तथा उनका पुत्र गोकुळदास जो उस वक्त २४ वर्ष का था, और तेजमाल तीनो कर्मसी के पुत्र प्रतापसिह के साथ मारे गये।

कर्मसी - कर्मसी दीवान नैणसी के ज्येष्ठ पुत्र और मत्री जयमलजी के प्रौत्र थे। इनका जन्म नैणसी की धर्म पत्नी मेहता भीमराज की पुत्री की कुक्षि से वि० स० १६६० वैशाख सुदि २ को हुआ था। वे बडे वीर और कुशल सेनानायक थे।

वि० स० १७१४ माघ वदी ४ को महाराज जसवतसिहजी बादशाह शाहजहा की ओर से औरगजेब से लडने के लिए उज्जैन गये। इसमे महाराजा के साथ कर्मसी भी थे। उज्जैन से ५ कोस की दूरी पर चोरनराणा (फतियाबाद) ग्राम मे महाराजा ने औरगजेब का सामना किया। इसमे महाराजा के कुछ सद्रदार औरंगजेब से मिल गये। विजयलक्ष्मी ने ओरगजेब का साथ दिया। महाराजा जोधपुर लौट गये। इस युद्ध मे कर्मसी बडी वीरता के साथ लड़े और घायल हो गये।

वि० स० १७१८ (ई० स० १६६१) मे कर्मसी महाराजा जसवतसिहजी के साथ गुजरात मे थे। इसी वर्ष जब बादशाह ओरगजेब ने गुजरात का सूबा महाराजा जसवतसिह जी से लेकर उसकी एवज में हासी–हिसार के परगने दिए तब महाराजा ने कर्मसी को अहमदाबाद से वि० स० १७१८ मार्गशीर्ष वदि ८ को हासी–हिसार का शासक बना कर वहा भेजा। ये वि० स० १७२३ तक हासी–हिसार मे रहे।

वि० रा० १७२७ मे नैणसी और सुंदरसी के स्वर्गवासी होने की खबर जब महाराजा को मालुम हुई तो उन्होने कर्मसी तथा नैणसी के अन्यान्य वशवालो को, जो कैद में थे छोड दिया। इस पर महाराज जसवंत सिह जी ने मुहणोतो को जोधपुर राज्य की सेवा मे नियत न करने की शपथ खाई। परन्तु उनकी प्रतिज्ञा का पीछे से पालन न हुआ, क्यो कि पीछे भी महाराज बखत सिह जी, मानसिह जी आदि के समय मे मुहणोत सवाईराम, सुरतराम, ज्ञानमल आदि जोधपुर राज्य की सेवा मे रहे थे।

इस पर कर्मसी सपरिवार नागौर के महाराजा रायसिंह (अमरसिह के पुत्र और गजसिह के पौत्र) की सेवा मे नागौर चले गये। वि० स० १७२७ में नागौर महाराज ने कर्मसी को दीवानगी और जागीरें इनायत कीं।

वि० स० १७३२ आषाढ वदि १२ को महाराजा रायसिह जी दक्षिण के गाँव शोलापुर में दो चार घडी बीमार रहकर अचानक स्वर्गवासी हो गए। तब उनके सरदारो ने महाराजा की अकस्मात् मृत्यु का कारण गुजराती वैद्य से पूछा तो वैद्य ने अपनी साधारण भाषा गुजराती मे उत्तर दिया –"करमा नो दोष छै" (कर्मों का –भाग्य का–दोष है) जिसका अर्थ महाराजा के सरदारों ने समझा कि कर्मा (कर्मसी) का दोष है अर्थात् कर्मसी ने उनको मारा है। और कर्मसी पर विष देने का झूठा सदेह कर वहीं शोलापुर में इनको जिन्दा दीवार में चुनवा दिया गया, और नागौर लिखा गया कि जो कर्मसी के कुटुम्बी है उन्हे वहीं कोल्हू में कुचल दिया जाए। इसपर कर्मसी के ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसी अपने आठ रिश्तेदारों सहित वही (नागौर) मे मारे गए। कर्मसी के छोटे पुत्र सग्राम सिह और समरसी के पुत्र सामंतसिह को दो स्त्रियो ने छिपाकर बचा लिया। वे उनके साथ भाग कर कृष्णगढ (किशनगढ) और बीकानेर चली गई।

कर्मसी का विवाह जगन्नाथ सिह की पुत्री से हुआ था, उनके दो पुत्र हुए, जिनके नाम प्रतापसी (प्रतापसिह) और सग्रामसिह थे।

संग्रामसिंह– सग्रामसिह कर्मसी के पुत्र और नैणसी के पौत्र थे। इनका बचपन किशनगढ में ही व्यतीत हुआ था। किशनगढ महाराज की इन पर बडी कृपा थी और इन्हे कुए खेत आदि महाराज की ओर से इनायत हुए।

"नैणसी की ख्यात मुख्यतः राजपूताने और सामान्य रुप से .... इतिहास का एक बड़ा संग्रह है; वंशावलियों का तो ख्यात में इतना संग्रह है जो अन्यत्र मिल ही नहीं सकता। उस में अनेक लड़ाइयों के वर्णन, उनके निश्चित संवत् तथा सैकड़ों वीर पुरुषों के जागीर पाने या लड़कर मर जाने का संवत् सहित उल्लेख देखकर यह कहना अनुचित न होगा कि नैणसी जैसे वीरप्रकृति के पुरुष ने अनेक वीर पुरुषों के स्मारक अपनी पुस्तक में सुरक्षित किये हैं। वि० सं० १३०० के बाद से नैणसी के समय तक राजपूतों के इतिहास के लिये तो मुसलमानों की लिखी हुई फारसी तवारीखों से भी नैणसी की ख्यात कहीं-कहीं विशेष महत्व की है। राजपूताने के इतिहास में कई जगह जहाँ प्राचीन शोध से प्राप्त सामग्री इतिहास की पूर्ति नहीं कर सकती, वहां नैणसी की ख्यात ही कुछ-कुछ सहारा देती है; यह इतिहास का अपूर्व संग्रह है। स्वर्गीय मुंशी देवी प्रसाद जी तो नैणसी को 'राजपूताने का अबुलफजल' कहा करते थे, जो अयुक्त नहीं है। ख्यात की भाषा लगभग २७५ वर्ष पूर्व की मारवाडी है।............नैणसी ने जगह-जगह राजाओं के इतिहास के साथ कितने ही लोगों के वर्णन के गीत, दोहे छप्पय आदि भी उद्धृत किये हैं, जो डिंगल भाषा में हैं। उनमें से कुछ तो ३०० वर्ष से भी अधिक पुराने हैं।"[२]

नैणसी का दूसरा ग्रंथ जोधपुर राज्य का 'सर्वसंग्रह' एक प्रकार का गजेटियर है। उस में जोधपुर राज्य के तत्कालीन परगनों का प्राचीन और वर्तमान इतिहास, और उन के गाँवों आदि का विवरण विस्तार-पूर्वक और पूरे ब्यौरे के साथ दिया गया है। गांव की फसल, तालाब, वृक्ष, आमदनी, आदि का उल्लेख किया गया है। यह लगभग आठ सौ पृष्ठों का ग्रंथ है।

सुंदरसी... मुहणोत सुंदरसी जयमल जी के दूसरे पुत्र और वीरवर नैणसी के लघुभ्राता थे। उन का जन्म वि० सं० १६६८ चैत्र सुदि ८ शनिवार को हुआ। अपने भाई की तरह इन्होंने भी जोधपुर राज्य की सेवा में काम किया।

वि० सं० १७११ (ई० सं० १६५४) में महाराजा जसवंतसिंहजी ने सुंदरसी को 'तन दीवानगी' (प्राइवेट सेक्रेटरी) के उच्च पद पर पचोली बलभद्र राघोदासोत की जगह नियुक्त किया।

वि० सं० १७१३ वैशाख वदि २(ई० सं० १६५७, ता० २१ मार्च) को महाराजा जसवंतसिंह जी की आज्ञा से सुंदरसी ससैन्य सिंधलों पर भेजे गये। उन्होंने वहा जाकर सिंधलो को बुरी तरह से हराया ।

वि० सं० १७१४ (ई० सं० १६५७) में पौंघोटा और कंबला के सरदारों ने महाराज जसवंतसिंहजी के विरुद्ध विद्रोह किया, जिसे सुंदरसी ने दबाया।

वि०सं० १७१६ (ई० सं० १६५९) में महाराजा जसवंतसिंहजी गुजरात के सूबे पर थे। वहां से उन्होंने महाराज कुमार पृथ्वीसिंहजी को बादशाह के हुजूर में भेजा। उन के साथ सुंदरसी और राठोड भीमसिंह गोपालदासोत भेजे गये।

महाराज जसवंतसिंहजी की कई पासवानें औरंगाबाद में थी। उन्हें लेने के लिए महाराज ने पूने से वि० सं० १७२० आषाढ वदी५ को सुंदरसी को २१०० सवारों के साथ औरंगाबाद भेजा। रास्ते में छत्रपति शिवाजी के ५०० सवार इनके साथ वाली बैलों की जोड़ियां पकड़ ले गये। सुंदरसी ने उनका पीछा किया। घमासान लड़ाई हुई जिसमें सुंदरसी की विजय हुई और वे बैलों की जोड़िया छुड़ा लाए।

वि० सं० १७२० कार्तिक वदि १ (ई० सं० १६६३, ता० १६ अक्टूबर) को महाराजा जसवंतसिंहजी ने बादशाह औरंगजेब की ओर से छत्रपति शिवाजी पर पूना में चढ़ाई की। उस समय महाराजा के साथ सुंदरसी भी थे जो आगे रह कर बहुत बहादुरी से लड़े थे।

वि० सं० १७२३ पौष सुदि ६ को महाराजा जसवंतसिंहजी ने किसी कारण वश अप्रसन्न होकर सुंदरसी को 'तन दीवानगी' से हटा दिया था।

---

२ 'मुहणोत नैणसी की ख्यात' भाग १, प्रस्तावना।

दीवान ज्ञानमल– ज्ञानमल अपने पिता सुरतराम और ज्येष्ठ भ्राता सवाईराम की तरह वीर और साथ ही राजनीतिज्ञ भी थे। इन्होने महाराज विजयसिह जी, भीमसिंह,जी और मानसिंह जी के समय में राज्य के उच्च पदो पर कार्य किया था। महाराजा मानसिंह जी के यह विश्वास पात्र सेवक थे। उन्होंने गददी पर बैठते ही इनको अपना दीवान बनाया और जागीर देकर सम्मानित किया। यद्यपि महाराजा मानसिंहजी अस्थिर चित्त के थे और उनके समय में मारवाड मे मंत्री--वर्ग की बडी दुर्दशा हुई, परन्तु इनकी प्रतिष्ठा मे कोई अंतर नहीं आया। इसका कारण यही था कि ये अपने कार्य के अतिरिक्त राजकीय प्रपचो से सदा दूर रहते थे। इनका जन्म वि० स० १८१६ चैत्र वदि १२ शुक्रवार को हुआ था।

जोधपुर नरेश महाराजा विजयसिहजी ने केकडी–नरेश राजा अमर सिंह को किशनगढ के पास का रूपनगर नामक गाव प्रदान किया। इस नगर पर अधिकार करने के लिए जोधपुर– महाराजा ने ज्ञानमल आदि प्रधानो की मातहती मे किशनगढ़ महाराजा प्रतापसिह के विरुद्ध सेना भेजी। सात मास तक युद्ध होता रहा। अंत में जोधपुरी सेना की विजय हुई।

वि० स० १८४७ (ई०सं० १७६०) में माधवजी सिंधिया मारवाड पर चढ आया। उस के मुकावले के लिए ज्ञानमल, गगाराम भडारी, सूर्यमल कोचर आदि भेजे गये। यह लडाई मेडते के मुकाम पर वि० सं० १८४७ भाद्रपद वदि १ को हुई। जोधपुरी सेना बडी बहादुरी से लडी , पर सिंधिया की विजय हुई। जोधपुर– नरेश ने क्षतिपूर्ति के लिए साठ लाख रुपया देने का वायदा कर अपना पिंड छुडाया। इन रुपयो में कुछ तो नकद, कुछ परगने, कुछ मनुष्यो के औल में दिए गए। ओल मे दिए जाने वालो मे ज्ञानमल भी थे।

वि० स० १८६० (ई०स० १८०३) में जब महाराजा भीमसिंहजी स्वर्गवासी हो गये तब महाराजा मानसिंहजी के जोधपुर आने तक ज्ञानमल ने किले का बडी चतुराई से प्रबंध किया। मानसिहजी को राजगददी दिलाने में इनका प्रथम हाथ था। इस के लिए महाराजा ने इनको कई खास रुक्के प्रदान किए।

जब महाराजा मानसिहजी गददी पर बैठे तो उन्होने गददी पाते ही वि० स० १८६० जेठ वदी ४ को ज्ञानमल को अपना दीवान बनाया और जागीर भी दी।

वि० स० १८६१ (ई०स० १८०४) में जयपुर राज्य के शेखावतों ने डीडवाणा लूटा और उस पर अपना अधिकार कर लिया। इसपर महाराजा ने ज्ञानमल को सेना देकर भेजा। इन्होने जाकर डीडवाणा और साहपुरा पर अपना अधिकार कर लिया।

वि० स० १८६२ (ई० स० १८०५) मे मारवाड पर चढाई करने के लिए किशनगढ के तिहोद नामक गाव में मुकाम किया(?)। इस चढाई को रोकने के लिए ज्ञानमल ने बडी बुद्धिमानी से काम लिया।

वि० सं० १८६३ (ई० स० १८०६) में जब जयपुर की फौजों ने जोधपुर पर घेरा डाला तो ज्ञानमल ने अन्य सरदारो के साथ राज्य– रक्षा के लिए बडा प्रयत्न किया जिसकी प्रशंसा महाराजा ने अपने दिए हुए खास रुक्कों मे की है।

ज्ञानमल का स्वर्गवास वि० सं० १८७७ (ई० सं० १८२०) में हुआ। इन के एक पुत्र था, जिसका नाम नवलमल था।

नवलमल - नवलमल ज्ञानमल के इकलोते पुत्र थे। इन का जन्म वि० सं० १८३६ (ई० सं० १७७६) मे हुआ था।

वि० स० १८६१ (ई० सं० १८०४) मे महाराजा मानसिंहजी ने सिरोही के राव बैरिशाल पर सेना भेजी, उस के साथ नवलमल भी थे। इनको तत्कालीन जोधपुर नरेश ने कई खास रुक्के प्रदान किए थे, जिनमें इनकी सेवाओं की बडी प्रशंसा की गयी है।

नवलमल का स्वर्गवास अपने पिता की जीवित अवस्था में ही वि० सं० १८७६ (ई० सं० १८१६) में हो गया था। इनके दो पुत्र हुए, जिनके नाम रामदास और प्रतापमल थे।

कुछ वर्ष व्यतीत होने पर जोधपुर महाराज अजितसिंह जी ने जब मारवाड राज्य पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तो संग्रामसिह को पुन जोधुपर बुलाकर धैर्य दिया और जोधपुर राज्य की सेवा मे नियुक्त किया। इन्हो ने उक्त महाराज के समय में बडे-बडे सैनिक पदो पर कार्य किया।

वि० स० १७८२ (ई० स० १७२५) मे महाराज अभयसिंह जी ने संग्रामसिह को मेडता मे बाग बनाने के लिये १६० बीघा जमीन इनायत की जो अभी तक मुहणोतों के बाग के नाम से मशहूर है। महाराजा ने और भी जागीरें आदि जो इनकी जब्त हो गई थीं पुन दे दीं।

संग्रामसिह का विवाह मेहता कालूराम की पुत्री से हुआ, जिस से इन के भगवतसिह और सीहो नामक दो पुत्र हुए।

राव सुरतराम - सुरतराम भगवतसिह के पुत्र थे। इन्होने जोधपुर नरेश बख्तसिह जी व विजयसिंह जी के समय मे फौजबख्शी, दीवान आदि अनेक उच्च पदो पर कार्य किया। इन पर महाराज की बडी कृपा रही।

वि० स० १८०८ (ई० स० १७५१) मे महाराज बख्तसिह जी के समय मे सुरतराम फौजबख्शी के उच्च सैनिक पद पर नियुक्त हुए। यह कार्य इन्होने बडी निपुणता के साथ किया। महाराज ने इन को इनकी खिदमतों पर प्रसन्न होकर लूणावास और पारलू नामक दो गाँव जागीर में दिए।

वि० स० १८२० जेठ सुदि ५ को महाराजा विजयसिंह जी ने इन्हें अपना मुख्य मंत्री (दीवान) बनाकर इनकी प्रतिष्ठा बढाने के अतिरिक्त यथेष्ठ आय की जागीर प्रदान की। तदनुसार यह वि० सं० १८२३, आसोज सुदि १ तक इस पद पर कार्य करते रहे।

वि० स० १८२२ में दक्षिणी खानू मारवाड पर चढ आया। इस पर महाराज की आज्ञा से यह उसके विरूद्ध भेजे गये। इसमे इनकी विजय हुई।

वि० स० १८३० फाल्गुन सुदि ३ को महाराजा विजयसिंह जी ने इन को मुसाहिबी व 'राव' की उपाधि से विभूषित किया और लगभग ३०,००० रूपये की लागत का बहुमूल्य सिरोपाव प्रदान किया।

वि० स० १८३१ द्वितीय वैशाख सुदि ८ को राव जी को कर्णमूल नामक रोग हुआ और उसी व्यथा के कारण दो दिन बाद स्वर्गवास हुआ। इनका अग्नि संस्कार मैणसी के बाग मे हुआ। इन के साथ दो सतियां हुईं। इनकी बैकुण्ठी तेरह खंडी बनी थी।

वि० स० १८३१ ज्येष्ठ वदि १४ को इनकी हवेली पर स्वयं महाराज विजयसिंह जी पधारे और इनकी मृत्यु पर सहानुभूति और शोक प्रकट किया।

इनका सम्मान केवल जोधपुर मे ही नहीं था किंतु बूँदी, कोटा, बीकानेर, जैसलमेर, किशनगढ, इंदौर और ग्वालियर के नरेश भी इनका बडा सम्मान करते थे। तत्कालीन बूँदी नरेश ने तो इनको उठकर ताजीम देने का तथा बाँह पसार कर मिलने का 'कुर्ब' प्रदान किया था। कोटा नरेश ने भी इस प्रकार इनको उच्च सम्मान से विभूषित कर रखा था। बीकानेर दरबार खडे होकर इनकी ताजीम देते थे। जैसलमेर, किशनगढ, इंदौर, और ग्वालियर के नरेश इन को "ठाकुरा दीवान श्री सूरतराम जी" लिखा करते थे।

इनके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सवाईराम, ज्ञानमल, सवाईकरण सुभकरण और फतहकरण थे।

सवाईराम - सवाईराम राव सुरतराम के ज्येष्ठ पुत्र थे।

वि० स० १८३१ (ई० स० १७७४) मे सवाईराम जोधपुर के दीवान बनाये गए।

वि० स० १८४६ (ई० स० १७८९) मे जब बीकानेर नरेश गजसिंह जी और उन के कुँवर के बीच झगडा हो गया तब जोधपुर महाराज ने एक विशाल सेना सवाईराम की मातहती मे बीकानेर भेजी। इन्होने वहाँ पहुँच कर पिता-पुत्र मे मेल करवा दिया।

इनके पुत्र का नाम सरदारमल था, जो वि० सं० १८५५ से १८५६ (?) तक जोधपुर के दीवान रहे।
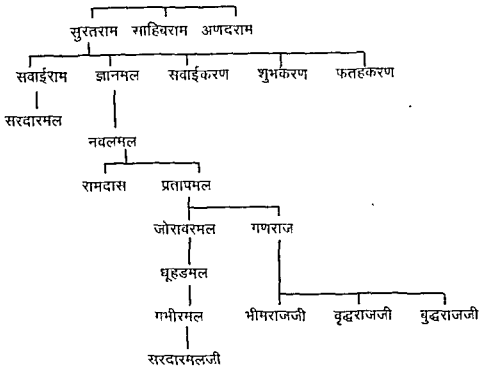
'हिन्दुस्तानी' इलाहाबाद
अक्टूबर, १९४१

महाराव हिन्दूमलजी वैद

आप मेहता मूलचदजी के द्वितीय पुत्र थे। आप अपने काल के सर्वोच्च ओसवाल मुत्सुद्दी थे। अपने पूर्वजो की तरह आप भी बुद्धिमान, कुशल, दूरदर्शी, सुदक्ष राजनीतिज्ञ और प्रतिभाशाली पुरुष थे। आपकी प्रतिभा सर्वत्र समस्त राज्यो मे व्यापी हुई थी। अग्रेजी सरकार की आप पर विशेष कृपा थी। आप अपने विनम्र स्वभाव व कार्यतत्परता के कारण महाराजा साहब एव देशवासियो के साथ-साथ अग्रेज पदाधिकारियो के बडे प्रिय बन गए थे। इस निबन्ध मे आपके किये हुये खास-खास कार्यो का सक्षेप मे दिग्दर्शन कराया जाता है।

सवत १८८४ मे आप बीकानेर की ओर से वकील बन कर दिल्ली गये। वहां आपने अपनी बुद्धिमता और राजनीतिज्ञता का अच्छा परिचय दिया। इसपर महाराज रत्नसिहजी ने आप पर प्रसन्न होकर आपको दीवान के पद पर सुशोभित किया। और सिक्केदारी की मुहर प्रदान की।

प्रतापमल - मुहणोत प्रतापमल नवलमल के पुत्र थे। वि० सं० १६०८ (ई० स० १८५१) में मारवाड़ के जागीरदारों के आपसी झगड़ों को इन्होंने कुशलता-पूर्वक निपटाया। इस के उपलक्ष में इनको पाली परगने में उदोत गांव जागीर में मिला।

वि० सं० १६२० (ई० स० १८३३) में प्रतापमल ने महाराजा तख्तसिंह जी की आज्ञा से सतापुरा गांव आबाद किया। ब्रिटिश सरकार के साथ जोधपुर राज्य की संधि करवाने में इनका प्रधान हाथ था।

इन के दो पुत्र हुए, जिनका नाम जोरावरमल और गणराज थे। जोरावरमल के मुकुन्दमल और इनके गंभीरमल हुए। इनके पुत्र सरदारमलजी वर्तमान हैं, और बड़े मिलनसार और इतिहास प्रेमी हैं। गणराज के भीमराज, वृद्धराज, और बुधराज नामक तीन पुत्र हुए। वृद्धराज जी आजकल जोधपुर में वकालत करते हैं।

किशनगढ़ एवं मुलथाण (मालवा) में भी नैणसी के वशज बताए जाते हैं।

श्री बाँठिया-रचित साहित्य : पूर्वज एवं महापुरुष ४३

नैणसी का वंशवृक्ष
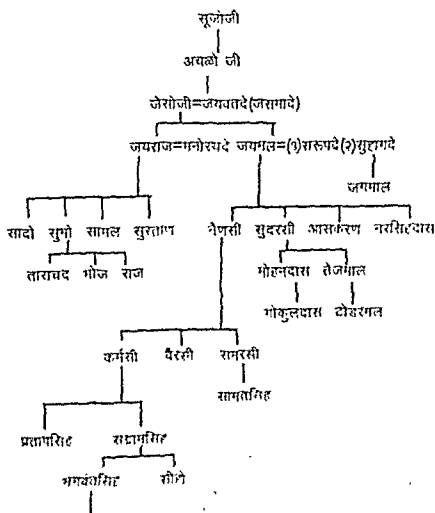
माणकचन्दजी व घमण्डीसीजी हुए।

लुंकागच्छ की पटटावली मे मेहता ठाकुरसीजी का उल्लेख इसप्रकार आता है– "संवत १६४० तांई सर्व जती मन में आवै जिण जागा सख बजावो कोई किणने बरजतो नहीं। तठा गच्छे बच्छावत कर्मचन्द आपरी पोसाल सु लगाय चिन्तामणिजी र दैहरे ताई और गछ रा जत्या ने झालर सख बजावणो बरज्यो महाराजा श्री रायसिहजी राज्ये तठा पछे महाराज श्री सूरसिंहजी रा राज मे वैद ठाकुरसी बछावता री देखा देख आपरे जत्या रै कह्यै आपरी पोसाल सुं लगाय महावीरजीरै दैहरे ताई और गच्छ रा जत्या ने झालर सख बजावणो बरज्यो।"

यह श्री नाहटा के सग्रह मे है।

ठाकुरसी मेहता - इला तेगवरियाडनिति वैद्यवसि आमरण। हुवे रिण तालधुर लग वठिलो।। को जहा जमरी उपरे फोरवे, नाखियो ठाकुरे तुरी नीलो।।१।। लीयो आभमसु ओझडे लोहडा, खाग मोटा सीरे खाग खाले। खेग अमराहरो भेलियो खेरने, किलम घड से बिची बडो काले।।२।। बड दान दीये मिलिया बड पात्रा, अरी हाथल रहचणो अबीह। ठाकुरसीह कहावे ठाकुर, सीह कहावे ठाकुरो ठाकुर सीह।।३।। जिणदासोत सुदिन दे जाणी, खग तलपे सिर दीये खल। बोलावे राजिदा तण वुद बोलावे जगि सरस बल।।४।। सामाहरो सुदिन सुरातन मौहतौ ददू विधि निरभ मण। जगि भूपाल लकाल कह्यो जिणि बडासु जोसी ब्राह्मण ।।५।। बकसी जिण राण वभीषण लका बीसवीयो न्याय घणो। ग्रह चढे तिण देत तणे गढ, ताइ वकसो जिणदास तणे।।६।। राखे रह्या दुरगसहु राखस हेस उतरे नहीं हीये। ठाकुरसी जितासहु ठेले दिन हे कै पखाह दीये।।७।।

जेलसमेर पयंपे जानी काले जिसे न आयो कोय। गढा गाहटण गिरद मेवासण धर गिणे खडग जड बाजती अचल खेले। सीघरे हुकमी जिणदासरो सीघ लो ठाकुरो आठवे अनड ठेले।।१।। कटटर कांठेतणा वेरह २ कांपियॉ, जुडण जमजाल सोह घात जाणे, आभिथामा दीये वैद्य वसी आभरण, आठ कुल वाथ गहि हाथ आणे।।२।। भीछभीम रामरे लंगदर्ल माजियाँ, भीछ हुमधजरो थाठ भजे। पिसण पा धोरि बातणो कोई पाँतरो गिर सिखर हाथलॉ मारिगजे। पाडि भडि देवडा, मेछ परता लीया पिसणतो सरस कुण थाइ पुजे।। त्रिजड हय सीह अणबीह माहरा, धकरो मारीयो मेह धुजे।। कलव भीर सहन भारी भुजसम, भरथीमल भारथ जोधन कीधु रसी। रमठस करन कठिन गढ कोट गाढे, ढुकि ढोहि दत तनक मे पुरसी।। जिनदासनद जरजरी जरवकसत बल्ह कवि विरह कुरसी दर कुरसी। साहिनी मालम सिकबंधनिके सिरताज, साकरे सनाह सुय्यो ठाकुरसी।।

मेहता मूलचंदजी - मेहता घमडीसीजी के दो पुत्र हुए, ज्येष्ठ मूलचन्दजी व कनिष्ठ वीरचन्दजी। वि०स० १८७० में जब महाराजा सूरजसिह जी ने चुरु के गढ पर डेरा डाला, उस समय बीकानेर सेनाके साथ महाराज के साथ आप भी थे। वहाँ आपने अपने बाहुबल का अच्छा पराक्रम दिखाकर बडी साहस और वीरता से लडे। आपकी उत्तम सेवाओ के उपलक्ष मे महाराजा सूरतसिहजी ने आपको गाव नोरगदसेर जागीर में प्रदान किया। जब महाराजा रतनसिह जी पूगल की ओर सुराणा शाह हुकुमचन्दजी, ठाकुर हरनाथ सिंह जी आदि के साथ गये उस समय आप भी उन्हीं के साथ थे। वि०स० १६०५ मे महाराजा रतन सिह जी आपके स्वर्गवासी होने पर आपकी हवेली पधारे और मातमपुरसी की। आपके चार पुत्र थे, जिनके नाम क्रमश' अमोलकचन्दजी, महाराव हिन्दूमलजी, मेहता छोगमल जी व अनारसिंह जी थे।

मेहता अनारसिहजी का ध्यान व्यापार की ओर रहा। वि०सं० १६०२ जवहारात वेचनार्थ जयपुर गये। वहीं आपका देहान्त हुआ। आपके मेहता केसरसिहजी दत्तक आये।

मेहता अबीरचंदजी - आप मेहता मूलचन्दजी के अनुज थे। आपके विषय मे श्रद्धेय ओझा लिखते हैं – "अबीरचन्द था, जो महाराज की तरफ से चोरी ओर डाकों के रोकने के कार्य पर था। उसने कई बार डाकुओ का मुकाबिला किया, जिससे उसके कितने ही घाव लगे। फिर वह दिल्ली के मुगल दरबार में बीकानेर राज्य की ओर से वकील बनाकर भेजा गया और वहाँ (सं० १८८४) ही उसकी मृत्यु हुई।" --------(क्रमश)

"ओसवाल" अजमेर

१६ फरवरी, १६४४

मन्दिरो के निर्माता वस्तुपाल तेजपाल, दानवीर भामाशाह, मंत्रीश्वर शालाशाह, रतनचन्द भंडारी, सिंघवी इन्द्रराजजी, दीवान अमरचन्द सुराणा, मंत्रीश्वर कर्मचन्द बच्छावत, महाराव हिन्दूमल वैद, सेठ जोरावरमल बाफना, धर्मवीर [illegible] इसी वीर प्रसविनी माता के सपूत थे।

राजस्थान प्रान्त के अन्तर्गत बीकानेर एक विख्यात धन-सम्पन्न रियासत है। यहाँ पर जैन वीरों का सदा से ही प्रभाव रहा है। और उनकी सभी नरेशो व उच्च अंग्रेज अफसरो ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। जब बीका वि०सं० १४२२ मे बीकानेर बसाने हेतु जाँगल देश मे आये थे तभी उनके साथ ओसवाल [illegible] वीर मेहता लाला और लाखणसी और मेहता बच्छराज आदि आये थे। उन्होने बीकानेर बसाने मे भिन्न-भिन्न कठिनाइयो का सामना कर राव बीकाजी को नगर बसाने मे सहायता दी वह किसी इतिहासकार विद्वान से छिपी नहीं है।

राजा रायसिंहजी के वक्त मे मंत्रीश्वर कर्मचंद बच्छावत ने बीकानेर गढ निर्माण करवा कर, श्री चिन्तामणिजी के मंदिर के भूमिगृह मे यवनों से रक्षाकर १५८५ प्रभु मूर्तियें रखवाकर जो राज्य व जैनधर्म की महान सेवा की उसे सभी जानते हैं।

इनके अलावा दीवान अमरचंद जी सुराना, मनसुख नाहटा, माणकचंदजी सुराणा, शाह फतेहचन्दजी सुराणा, लक्ष्मीलालजी सुराणा, मानमलजी राखेचा और शाहमलजी कोचर आदि के भी नाम इस राज्य के इतिहास मे विशेष उल्लेखनीय है।

श्रद्धेय ओझाजी 'राजपूताने के जैन वीर' की भूमिका में लिखते हैं -"शताब्दियों से राजस्थान मे मंत्री आदि उच्च पदों पर बहुधा जैनी रहे है। उन्होंने देश की आपत्ति के समय महान सेवायें की है, जिनका वर्णन इतिहास मे मिलता है।"

महाराव हिन्दूमल जी के पूर्वजों का इतिहास

वैद मेहता अपना मूल निवास भीनमाल बताते है। सं० १४५० के लगभग जब मण्डोवर मे चूंडाजी राज्य करते थे तब वैद मेहताओ ने उनकी अधीनता स्वीकार की। इसी परिवार के वैद मेहता सीवसीजी चूंडाजी के दीवान थे। राव चूंडाजी व महाराजा कुम्भाजी की लडाई मे मेहता सीवसीजी बडी बहादुरी से लडे। वि०सं० १५१५ मे जब जोधाजी ने जोधपुर बसाया तब भी इसी परिवार के श्रीमन्तो ने दीवानगी जैसे उच्च ओहदो पर कार्य किया। वि०सं० १५२२ मे जब राव बीकाजी नवीन राज्य स्थापन हेतु जांगलदेश की ओर आये तो उस समय मेहता सीवसीजी की पाचवी पुश्त के वैद मेहता लाला और लाखणसीजी उन्हीं के साथ थे। लाखणसी के साथ उनके दो भाई सोनपालजी और जैतसीजी भी आये थे जिनका परिवार फलौदी आदि स्थानो मे निवास कर रहा है।

वैद मेहता लाला और लाखणसी ने बीकानेर बसाने मे राव बीकाजी को बहुत मदद दी जिससे बीकाजी ने उन्हे उच्च पदो पर नियत किया। बीकानेर के वर्तमान २७ ओसवाल मोहल्लो मे से १४ मोहल्ले आपके द्वारा बसाये गये। बाकी १३ मोहल्ले मेहता बच्छराजी द्वारा बसाये गये। इसी हेतु आपके वंशधर अब भी १४ मोहल्लों (गवाड) के चौधरी (पंच) है। मेहता लाखणसी के श्रीवंतजी, श्रीवंतजी के अमराजी एवं सूरजमल नामक दो पुत्र हुए। अमराजी के पुत्र जीवनदासजी हुए, जिन्होंने जीवनदेसर नामक ग्राम बसाया। मेहता जीवनदासजी के पुत्र का नाम ठाकुरसीजी था।

मेहता ठाकुरसीजी - आप मेहता लाखणसी के पांच[illegible] थे। आपको राजा राय सिंह जी ने अपना अमात्य बनाया। आप बडे वीर और पराक्रमी [illegible] । जब राजा [illegible] सम्राट अकबर की आज्ञानुसार दक्षिण विजय करने को भेजे गये तब आप भी [illegible] थे। विजय [illegible] से पुर परगने का पट्टा मिला और भी राजा साहब ने महरबानी करमा [illegible] और [illegible] न मे प्रदान किया। आपकी वीरता के विषय मे एक छन्द है-, जो [illegible] [illegible] दी जा रही है जिसमे [illegible] [illegible] दो पुत्र हुए। जिन्होंने [illegible] [illegible] की। [illegible]

अध बीच मे मती आवजो, मेनत कियोडी गुमाये ना थारी तो मोटी बन्दगी चाकरी छे पीढी तांई की चाकरी छे थारो म्हां ऊपर हाथ छे अतर हाथ माथेराख चाकरी तै बनायो ने इसी ही चाकरी कर देखाई, पीढी रा सामधर्मी चाकर छो इसी थे चाकरी करी छे तेसु म्हें उसरावण कदे न हुसी, इसी थे चाकरी करी छे अठे तो थारा वखानहुए छे पण सुरग मे देवता वखाण करसी, इसी बन्दगी धणी री होई छे जेरी कठातॉई लिखां, सं० १८६६ मिती आसोज सुद १२।

"ओसवाल" अजमेर
१ मार्च, १६४४

साहित्यप्रेमी

श्री अगरचन्दजी नाहटा

श्री अगरचन्द नाहटा–हिन्दी साहित्य संसार मे सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। बीकानेर के प्रमुख साहित्यकारो मे स्वामी नरोत्तमदासजी और दशरथ जी शर्मा के बाद आप ही का नाम लिया जाता है। आपने हिन्दी साहित्य के इतिहास मे जो सेवा की है, वह अभिनदनीय है। हिन्दी साहित्य के प्राय सभी साहित्यकारो का यह मन्तव्य रहा है कि जैनों ने हिन्दी में कोई महत्वपूर्ण रचना नहीं की है, जो की भी है वह साम्प्रदायिक है। पर आपने अपने लेखो द्वारा हिन्दी साहित्यकारों को यह भ्रमात्मक सिद्ध करके प्रमाणित कर दिया है कि प्राचीन काल में भारतीय सस्कृति और हिन्दी साहित्य के निर्माण मे जैन विद्वानों का पूरापूरा हाथ रहा है अत वे हिन्दी–साहित्य के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान पाने के अधिकारी हैं[१] अत आपके इसकार्य के लिए हिन्दी–साहित्य हमेशा ऋणी रहेगा। आपने उच्च शिक्षा प्राप्त न करके भी साहित्य क्षेत्र मे अपने अध्यवसाय लगन कर्मठता द्वारा जो उन्नति की है वह अनुकरणीय है। आप अभी नवयुवक हैं, फिर भी आपकी प्रतिभा की प्रशंसा वृयोवृद्ध श्रद्धेय ओझाजी, मुनि जिनविजयजी आदि ने मुक्तकंठ से की है।

इन पंक्तियो का लेखक आपके आन्तरिक एवं बाह्य से सुचारु परिचित है। यह आप ही की कृपा एवं सत्सग का फल है कि इस लेख के लेखक को भी सरस्वती की उपासना करने का सुअवसर प्राप्त हुआ और उसने अपनी कुछ तुच्छ रचनाएं 'हिन्दुस्तानी', 'अनेकान्त', 'समाज–सेवक', 'बाल–सखा', 'झुनझुना', 'जैनसत्यप्रकाश', 'जैनध्वज', 'वीरपुत्र' और 'जैन' आदि कई पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशित करवाई। अत अधिक जानकारी रखने के कारण संक्षिप्त परिचय प्रकाशित कर रहा हूँ।

---

१ हिन्दी साहित्य का प्रारभिक वीरगाथाकाल के संबध में आपने गहरी छानबीन कर नवीन प्रकाश डाला है। इस सबध मे आपके नाम प्रवर राजस्थानी मे प्रकाशित हैं।

महाराव हिन्दूमल जी

हिन्दूमलजी मेहता मूलचन्दजी के द्वितीय पुत्र थे। श्रद्धेय राय बहादुर डा० गौरीशंकरजी ओझा महोदय के शब्दों मे "हिन्दूमल की कार्य प्रणाली से महाराजा रतन सिंह तथा अंग्रेज सरकार दोनों संतुष्ट रहे। उसके मंत्रीत्वकाल मे बीकानेर राज्य मे कई नवीन गाव आबाद हुए। पथिको के आराम के लिए रास्ते ठीक किये गये और सराय कुंए आदि बनाये गये। उसके प्रयत्न से चोरी ओर डाकों में कमी हुई। जुहार सिंह (जुहारजी) आदि प्रसिद्ध लुटेरों की गिरफ्तारी मे हिन्दूमल ने बडा उद्योग किया। जिससे अंग्रेज सरकार का उस पर और भी विश्वास बढ गया। उसने बीकानेर राज्य के कई सीमा सबंधी झगडो का निपटारा करवाया, जिससे राज्यमें शांति की स्थापना हुई। जयपुर जोधपुर आदि राज्यों के गभीर मुकद्मों मे अंग्रेज सरकार ने उसकी सलाह लेकर अंतिम फैसले किये।

वि०स० १९०२ (ई०सं० १८४५) में सिक्ख युद्ध के समय बीकानेरी सेना लाहौर की तरफ रवाना हुई। उस समय हिन्दूमलजी उक्त सेना के साथ गये। इस अवसर पर की हुई उनकी सेवा से प्रसन्न होकर भारत के तत्कालीन गवंनर जनरल सर हनरी हार्डिन्ज ने उसको शिमला में बुलाकर एक कीमती खिलअत प्रदान कर उसकी अपूर्व कार्यदक्षता आर राजभक्ति की सराहना की। हिन्दू मल की कार्य शैली और स्वामि-भक्ति का उदयपुर के महाराणा सरदारसिंहजी पर भी अच्छा प्रभाव पडा। फलतः जब वि०सं० १८६६ (ई०स० १८३९) मे महाराजा रतन सिंह जी नाथद्वारे की यात्रा के लिये गये और वहा से उदयपुर जाकर महाराणा सरदारसिंहजी की राजकुंवरी से अपने महाराज कुमार सरदार सिंह जी का विवाह किया, उस समय महाराणा ने हिन्दूमल को ताजीम का सम्मान दिया एवं मेवाड राज्य के संबध मे पोलिटिकल अफसरो के पास जो मुकदमे चल रहे थे उनको तय कराने का भार उसको ही सौंपा, फिर महाराणाजी वि०सं० १८९७ (ई०स० १८४०) मे गंगा-यात्रा से लौटते हुए बीकानेर गये और वहां उसका विवाह रत्नसिंह जी की राजकुंवरी से हुआ। उस समय महाराणा और महाराजा रत्नसिंह ने हिन्दुमल की हवेली पर जाकर उसका आतिथ्य ग्रहण किया।"

इस समय दोनों नरेशो ने एक एक कण्ठा हिन्दुमलजी को, मेहता मूलचन्दजी को व मेहता जोरावर जी को पहना कर उनका सम्मान बढाया। इस मौके पर महाराणा ने महाराजा से कहा कि हमारी उदयपुर रियासत की भी देख -रेख हिन्दुमलजी को संभला दी जावे। यह सुन कर महाराजा साहब ने कहा – हिन्दुमल सुणे है" यहे सुनकर महारावजी ने जवाब दिया कि "तावेदार जैसो बीकानेर की गद्दी को चाकर है वैसोही उदयपुर की गद्दी का भी चाकर है। खावन्द आ बात काई फुरमाइजे है"।

वि०सं० १९०४ के माघ मास मे ४२ वर्ष की अवस्था मे हिन्दुमलजी का स्वर्गवास हुआ। आपके स्वर्गवास पर महाराजा रत्नसिंह जी, महाराज कुंवर सरदार सिंह जी ने अपने रुक्के व खरीते मे आपकी असामयिक तथा दुखद मृत्यु पर अफसोस प्रकट किया और सहानुभूति प्रदर्शित की। कप्तान जैक्सन ने भी आप की दुखद मृत्यु पर अपने वि०सं० १९०४ माघ सुदी ७ के खरीते मे जाहिर किया और भी बडे बडे अंग्रेज सरकार के उच्च अफसरों ने आपके घराने से पूर्ण सहानुभूति प्रकट की। वर्तमान महाराजा साहब ने भी इन स्वामी-भक्त अमात्य की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए बीकानेर मे 'हिन्दुमल कोट' स्थान बनवा दिया है। आपके तीन पुत्र हुए– महाराव हरीसिंहजी, मुकनसिंहजी और राव जसवन्तसिंहजी। महाराजा रतन सिंह जी ने हिन्दूमल जी की सारी मान-मर्यादा हरीसिंहजी को बहाल कर दी।

महाराजा रतन सिंह जी ने हिन्दूमल जी को भी कई खास रुक्के प्रदान किये थे।

महाराजा रतनसिंहजी आप पर इतना विश्वास रखते थे कि राजगुप्त ... भी हुआ था, आपकी वीरता और राजनीतिज्ञता के विषय मे कई किवदन्तियां भी प्रचलित है।

दस्तखत खास महाराव हिन्दूमल दीसी सरा महतो कुछ सुणी तावीदी माही करजो उठेतो सारी कामो बनोबस्त कर थारो हाल बसु काम कर आवजो तावीदी अर राम मिलाले आगे ना जी उठावे तो सुभाले सिर ... री दीतो तेने म्हारी आणो दूजा समाचार मोहतो मूलचन्द का कागदासु जाणसी। श्री पुष्करजी व अजमेर ...

सदस्य निर्वाचित हुए हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आप बीकानेर के साहित्यिक और जैनसामाजिक कार्यो में निरन्तर भाग लेते ही रहते हैं। बीकानेर राज्य के साहित्य-सम्मेलन के अन्तर्गत राजस्थानी साहित्य परिषद के आप सभापित भी रह चुके हैं।

साहित्य क्षेत्र में आपने विशेष रूप से प्रगति की है। आप हिन्दी एव राजस्थानी भाषाओ के उत्कृष्ट लेखक संकलन-कर्ता एव संपादक है। आपकी भाषा सरल, सारगर्भित व नवीन विचारो से ओतप्रोत रहती है। जो कुछ भी आप लिखते है, उसे प्रमाणो की तराजू मे तौलकर लिखते है। आप गभीर विचारक एव अन्वेषक है। राजस्थानी साहित्य और जैन साहित्यके संबध मे आपने अनेक वहुत महत्वपूर्ण खोजे की है। जैन साहित्यमें तो आप विशेष पारंगत हैं।

आप कई वर्ष पूर्व कविता भी करते थे। आपकी कविताओ की संख्या करीव १०० है, जिनमे से वहुत-सी अप्रकाशित है। बाद मे आपने कविता करना इस विचार से छोड दिया कि हमारी आजकल की कविताए दुनियाँ का इतना कल्याण नहीं कर सकती, जितना कि प्राचीन कवियो की उत्कृष्ट रचनाऐ। वे नष्ट होती रहे और हम नवीन रचनामें लगे रहे उनकी कदर न करें यह अनुचित है, इसी हेतु आप प्राचीन कवियो की कविताओं का संकलन कर उन्हे प्रकाशित कर रहे हैं जिनका एक संग्रह 'ऐ० जैनकाव्य सग्रह' के नाम से प्रकट हो चुका है।

आप निरन्तर कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं। आप दिनके किसी क्षण को आलस्य मे न गवाकर साहित्य सेवा मे लगाते हैं। आप कुशल व्यापारी है फिर भी व्यापार करते हुए जो समय बच रहता है वह साहित्य सेवा मे ही व्यतीत करते हैं। मैंने इन्हे कभी व्यर्थ की गप्पे हाकते नहीं देखा। जब देखता हूँ तभी इनकी लेखनी अविश्रान्त गति से चलती ही रहती है। आप जब बीकानेर में निवास करते हैं तब आप दिन रात मे १२ घटे साहित्य के पठन, संग्रह एव लेखन मे व्यय करते हैं। सच है परिश्रम का फल मीठा है। आप "Simple living and high thinking" के ज्वलन्त उदाहरण है।

आपके लेख जैन तथा जेनेतर सामयिक पत्र- पत्रिकाओ, यथा हिन्दुस्तानी, राजस्थानी, भारतीय विद्या, जैन सिद्धात, नागरी पत्रिका, जैन सत्य प्रकाश, अनेकान्त, आदि में निरंतर प्रकाशित होते रहते हैं।

आपके प्रत्येक लेख मे आपकी सूक्ष्मगवेषराशक्ति नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा एवं सर्वतोमुखी मेधा का विलक्षण सम्मिश्रण होता है। अब तक आपके २०० से ऊपर लेख सामयिक पत्र- पत्रिकाओं मे प्रकाशित हो चुके हैं। आपको कई वर्ष पूर्व ' जिनदत्त सूरि' नामक लेख के लिये फलौधी जैन सघ की ओर से एक रजत पदक भी मिला था

आप लेखक संग्राहक के अतिरिक्त उच्चकोटि के समालोचक एवं सम्पादक भी हैं। आप कलकत्ते से प्रकाशित 'राजस्थानी' के सह-सम्पादक भी रह चुके हैं और अभी 'राजस्थान भारती" के संपादको मे भी आपका शुभ नाम है।

आपने अपने यहां ' अभय जैन पुस्तकालय' अभय जैन ग्रंथ माला' तथा नाहटा कला भवन की स्थापना की है। आपके संग्रह मे १०००० के लगभग हस्त लिखित प्रतियें ५००० के लगभग मुद्रित ग्रंथ हैं तथा अन्य प्राचीन सामिग्री यथा चित्रो, सिक्को आदि[1] का भी अच्छा संग्रह है। ये आपकी अप्रतिम सग्राहक वृति के साक्षात् उदाहरण हैं।श्री मान् रायबहादुर डा० गौरीशंकरजी ओझा अपने बीकानेर राज्य के इतिहास खण्ड २ पृ०७१५ में लिखते हैं कि --

---

१ प्राचीन पंचांग, राजामहाराजाओं के खास रुक्के, ओसवाल वंशावलियें, आदि महत्वपूर्ण सामग्री।

जन्म - श्रीमान नाहटाजी का जन्म वि०सं० १९६७ चैत्रवदी ४ को बीकानेर के लब्ध प्रतिष्ठित ओसवाल कुल में श्री शंकरदान जी नाहटा के घर मे हुआ। आप अपनी माता-पिता की कनिष्ठ संतान हैं। आपके ज्येष्ठ भ्राता श्री भैरोदानजी, सभयराजजी और मेघराजजी बीकानेर के कर्मठ समाजसेवी एवं मिलनसार व्यक्ति है।

बाल्यजीवन और शिक्षा - जैसाकि ऊपर लिखा जा चुका है, आपने साधारण शिक्षा ही प्राप्त की है। इसका कारण यह है कि आपके ज्येष्ठ भ्राता स्व० श्री अभयराजजी नाहटा का, जो अच्छे विद्वान एवं एफ०ए० प्रीवियस थे, २२ वर्ष की अवस्था में अकाल देहान्त हो जाने के कारण आपके पिता ने आपको ज्यादा शिक्षा नहीं दिलवाई। आपकी शिक्षा केवल ६ कक्षा तक स्थानीय श्री जैनपाठशाला में हुई। आपकी साहित्यसाधना के विषय को लेकर 'तरुण-जैन' के संपादक श्री भंवरमल जी सिंघी, बी०ए० 'साहित्यरत्न' ने लिखा है--

"यह आश्चर्य और उल्लास की बात है कि एक कुशल और व्यस्त व्यवसायी होने के साथ-साथ श्री नाहटा जी को साहित्य के अध्ययन और खोज का इतना शौक है कि कालेज और यूनिवर्सिटी की शिक्षा न प्राप्त होने पर भी आपने अपने अध्यवसाय द्वारा भाषा और साहित्यमें अच्छी प्रगति की है।"

नवजीवन का अभ्युदय - पाठशाला से विदा लेकर श्री नाहटाजी व्यापारिक क्षेत्र की ओर अग्रसर हुए। इसके लिए आपने सर्वप्रथम १४ वर्ष की अल्पायु में वि०सं० १९८१ मिति आषाढ सुदी ६ को सिलहट कलकत्ता आदि की यात्रा व्यापारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए की। डेढ वर्ष की लंबी यात्रा कर आप वापिस बीकानेर वि०सं० १९८३ में आये। सौभाग्यवश वि०सं० १९८४ माघ सुदि ५ को प्रात स्मरणीय स्व० श्री कृपाचन्द्र सूरिजी व उनके शिष्य उपा० सुखसागरजी महाराज बीकानेर पधारे और आप ही के बाबा — श्रीदानमलजी नाहटेकी कोटडी मे विराजे।

पूज्य महाराजश्री के सत्संग से आपके हृदय मे जैन साहित्य के मनन एवं पुनरुद्धार की उत्कृष्ट अभिलाषा उत्पन्न हुई और उन्हीं की सत्संगति से आपका हृदय साहित्य, धर्म तथा अध्यात्म जैसे गूढ विषयों की ओर आकृष्ट हुआ। यहीं से आपकी प्रतिभा के प्रस्फुटन के लिए क्षेत्र मिलता है और वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बद्ध-परिकर हो जाते हैं।

आपका धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन भी विशेष महत्वपूर्ण है। आप वर्ष भर मे कभी रात्रि मे भोजन करना तो दूर रहा पानी भी नहीं पीते। आप प्रतिदिन सामायिक एव स्वाध्याय करते हैं। जैन ग्रन्थों का आपने गहन अध्ययन एवं अनुशीलन किया है। जिसके परिणामस्वरूप आपने 'सम्यक्त्व' नामक एक पुस्तक लिखी है जो अभी अप्रकाशित है। आध्यात्मिक विचारणा आपका अत्यन्त प्रिय विषय रही। आपने भारत के प्राय सभी जैन तीर्थों और ऐतिहासिक स्थानों का पर्यटन किया है।

व्यापारिक क्षेत्र- आपने व्यापारिक क्षेत्र मे भी आश्चर्य-जनक उन्नति की है। आपका व्यापार कलकत्ता, बोलपुर, चापड, सिलहट, ग्वालपाडा और बाबूरहाट आदि आसाम-बंगाल प्रान्तो में पाट, चावल, गल्ला, कपड़ा और आढत का होता है। सिलहट व बाबूरहाट की दुकानो का काम आप ही देखते हैं। बाबूरहाट मे तो जनता 'अगरचंद नाहटा' फर्म को 'राजा बाबू' का फर्म कह कर पुकारती है। आपने अभी सिलहट में 'नाहटा होजियरी' नामक एक फैक्टरी स्थापित की थी।

व्यक्तित्व - आप सरलता और सादगी की साक्षात् मूर्ति है। आपके जीवन की यह एक विशेष महत्व की बात है कि इतने प्रतिष्ठित एवं धनी होकर भी आप पाश्चात्य फैशन के गुलाम नहीं हैं, जो कि आजकल के नवयुवकों में अधिकाश रूप में दृष्टिगोचर होती है। अभिमान तो आपको छू तक नहीं गया है। जो भी आपसे एक बार मिल लेता है वह आपके व्यक्तित्व से अवश्य प्रभावित हो जाता है। आप होनहार उत्साही एव नवीन विचारों के युवक हैं। इस समय आपके धर्मचंद नामक एक पुत्र व दो पुत्रियां हैं।

साहित्यिक और सार्वजनिक क्षेत्र- आपका सार्वजनिक क्षेत्र अभी इतना विशाल नहीं है। फिर भी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सिलहटशाखा ने आपके कार्यों से प्रभावित होकर आपको अपना मंत्री चुना था। और साथ ही साथ आप की कलकत्ता वर्किंग कमेटी तथा नागरी प्रचारिणी सभा की प्रबन्धकारिणी कमेटी (सं० [illegible]) के लिए आप

ओसवाल और पोरवाल जाति के नर–रत्नों के कीर्तिकलापो का इतिवृत्त तो काफी प्रकाश में आ चुका है। अत उसके दुहराने के लिए यहा स्थान नहीं, किन्तु श्रीमाल जाति के नर–रत्नों का इतिवृत्त बहुत ही कम प्रकाश मे आया है। शायद इसका कारण इस जाति के लोगो का कम सख्या मे मौजूद होना है। इसीलिए हम यहां श्रीमाल जाति के एक नर–रत्न का सक्षिप्त परिचय लिखने जा रहे हैं।

जैन जातियो में सबसे प्राचीन जाति श्रीमाल है। इस जाति का उद्गम मारवाड के श्रीमाल नगर (भिन्नमाल) मे ७ वीं और ८ वीं शताब्दी के बीच हुआ होगा। एक समय श्रीमाल नगर अपनी उन्नति के चरम शिखर पर आसीन था। फिर दैवयोग से वह नगर उजड–सा गया और वहां के निवासी गुजरात–पाटन की तरफ चले गये। जो जैन– धर्म के अनुयायी थे वे श्रीमाल जैनी कहलाये और जो ब्राह्मण थे, वे श्रीमाली ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसका वर्णन श्रीमाल पुराण मे भी आता है।

श्रीमाल जाति मे अनेक मेधावी पुरुष हो गये है, जिन्होने मंत्री, सेनापति आदि अनेक उत्तरदायित्व के पदो पर कार्य किया, जिनका उज्ज्वल इतिहास हम ग्रन्थों की प्रशस्तियों एव तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों एव अभिलेखो मे पाते है। इस जाति के विषय मे साहित्यरसिक श्री अगरचंदजी नाहटा लिखते हैं, "श्रीमाल जाति का प्राचीन इतिवृत्त वडा ही गौरवपूर्ण है। इस जाति मे महान् दानवीर जगडूशाह हुआ, जिसने वि० सं० १३१२ से १५ तक दुष्काल के समय 'जग नो जीवाडणहार' का विरूद प्राप्त किया था। जिस कार्य को राजा–बादशाह भी नहीं कर सके, उस असांधारण कार्य को इस दानवीर ने किया था। इस नरपुगवने देशाधिपतियो को भी लाखो मन धान्यादि देकर आभारी बनाया था। इसी जाति मे मत्रीश्वर मण्डन जैसे विद्वान् ग्रन्थकार हुए जिनके बनाये हुए, विविध विषय के १० संस्कृत ग्रन्थ आज भी जैन साहित्य की शोभा बढा रहे हैं। इनके भ्राता धनद भी अच्छे विद्वान् थे। महान् गुजरात के महामंत्री उदयन, दण्डाधिप सज्जन और अम्बड आदि के महान् कार्य–कलापो को जैन इतिहास का कौन विद्यार्थी नहीं जानता ?" हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध आत्म–चरित 'अर्द्धकथानक के रचियता पं० बनारसीदास जी भी इस जाति के कविवर थे। इनके अलावा इस जाति में अनेक प्रतिभाशाली पुरूष हुए हैं। अगर उन सबका यहां विवरण दिया जाय, तो इस लेख में विषयान्तर हो जायगा।

इसी इतिहास–प्रसिद्ध श्रीमाल जाति में १७ वीं शताब्दी मे हमारे चरितनायक राजा भारमल का प्रादुर्भाव हुआ, जो महान् सम्राट् अकबर के दरबार के एक मान्य अधिकारी एवं कृपापात्र नागरिक थे। उस वक्त इनके मुकाबले मे सभवत भारत मे कोई दूसरा व्यापारी नहीं था।

जैन–दर्शन की विशेषताओ ने सम्राट् अकबर को आकर्षित किया। जैन महापुरुषो के सपर्क मे आकर वह जैनधर्म के प्रति श्रद्धावान् हो गया था। उसके दिल पर अहिंसा की अमिट छाप पडी थी। उसने जैन–सतो के उपदेश से भारत की हिन्दू जनता का जजिया कर माफ कर दिया तथा वर्ष मे १०६ दिन तक पशु–वध करने की सारे साम्राज्य में मनाही कर दी, जिसमे जैनियों के पर्यूषण पर्व के पवित्र आठ दिन भी शामिल थे। जैनो के सत जगद्गुरू श्री विजयहीरसूरि एव युगप्रधान श्री जिनचद्रसूरि के उपदेशो का अकबर के दिल पर गहरा प्रभाव पडा। डा० स्मिथ के मतानुसार तो अकबर जैनधर्म का अनुयायी हो गया था। इन दो आचार्यो के अतिरिक्त उपाध्याय भानुचन्द, शान्तिचन्द, पद्मसुन्दर और जयसोम उपाध्याय आदि जैन प्रभृति विद्वान भी कई दिन तक सम्राट् अकबर के दरबार मे रहे और उसे जैनधर्म का उपदेश सुनाते रहे।

जैन–साधुओं के अतिरिक्त कई जैन–धर्मावलम्बी सेठ–साहूकार भी अकबर के दरबार मे विद्यमान थे। अकबर उनको बहुत मान देता था। सेठ–साहूकारों मे मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र बच्छावत, देहली के थानसिंह और हमारे चरितनायक राजा भारमल एवं उनके पुत्र संघवी इन्द्रराज के नाम उल्लेखनीय हैं। उन दिनो जैन–जाति बहुत ही समृद्ध एव सुखी थी। कर्मचन्द जी बच्छावत के लिए ६ हाथी, ६ गांव और सवा करोड रूपयो तक का एक मुश्त दान कर देना साधारण–सी बात थी। इसी से पता चल सकता है कि उन दिनो जैन श्रावको की आर्थिक स्थिति कितनी सुदृढ रही होगी। वे कितने महान् दानवीर पुरुष थे। यह अकबर कालीन श्रावकों का ही प्रभाव था, जिसके कारण उसमें जैनधर्म के प्रति रुचि उत्पन्न हुई और उन्होने जैनाचार्यो को बादशाह के सम्पर्क में लाने के लिए धर्मदूत का कार्य किया।

"यह प्रसन्नता का विषय है कि बीकानेर के उत्साही जैन युवकों –अगरचंद भँवरलाल नाहटा (ओसवाल) ने इस प्राचीन जैन साहित्य के उद्धार का भार अपने हाथ मे लेकर वहाँ से प्राप्त सामग्री के आधार पर आलोचनात्मक ढंग से कुछ सुन्दर ग्रन्थों की रचना की है, जो इतिहास के लिये महत्वपूर्ण है। नाहटा बन्धुओं ने होने वाले जैन साहित्य के ग्रन्थों को परिश्रम पूर्वक निजी व्यय से खरीद कर अपने संग्रह मे सुरक्षित कर लिया है। बीकानेर यात्रा के समय मुझे कई बार उनके संग्रह को देखने का अवसर मिला था।"

आपके साथ आपके भ्रातुष्पुत्र श्री भंवरलाल जी नाहटा भी साहित्यिक क्षेत्र मे संलग्न है। आपने अभी तक ७ ग्रंथों का प्रणयन किया है जिनमें से " युग प्र० श्री जिनचंद्रसूरि', 'दादा कुशलसूरि', 'मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरि' तथा ऐतिहासिक जैन काव्य – संग्रह मुख्य हैं। ये ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्व के हैं । ये सब ग्रन्थ आपके अनेक वर्षों के गहन अन्वेषण और परिश्रम के फल हैं । भारत के प्रायः सभी हिन्दी साहित्यिकों, ऐतिहासिकों व पुरातत्वाचार्यों ने आप के ग्रन्थो की भूरि–भूरि प्रशसा की है ।

अनेकान्त
वर्ष ८, किरण १
जनवरी १६४६

****

राजा आरमल

जैन जाति पर सदियो से सदैव श्री और सरस्वती की अनुपम कृपा रही है । समय–समय पर इस जाति मे अनेक मेधावी पुरुषों ने अवतीर्ण होकर अपनी जाति तथा धर्म के अतिरिक्त सर्वसाधारण जनता की अमूल्य सेवा की है, जैन जाति के एक नर–पुंगवने 'जगतसेठ' का विरुद प्राप्त कर यह साबित कर दिया कि लक्ष्मी सदा इस जाति के चरण चूमती रही है और जैनाचार्य हेमचन्द्र ने 'कलिकालसर्वज्ञ' नाम से विख्यात होकर यह प्रमाणित कर दिया कि सरस्वती भी इस जाति की दासी है । इसी कारण जैन जाति का देश में प्रतिष्ठित स्थान रहा है और आज भी है।

यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि जैन जाति का उद्गम रण मे प्राण होमने और प्रण पर मर मिटने वाली वीर क्षत्रिय जाति से हुआ है। जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों ने जहां जै जरूरत क्षत्रिय नरेशों और उनकी प्रजा को अपने समय मे, जैन धर्म की प्रभावना हेतु, मदद कर उन्हे जैनधर्म मे दीक्षित किया। जिन स्थानों पर उन्हें प्रतिबोध दिया उन्हीं स्थानों के स्मृति–स्वरूप एक जाति की स्थापना होती गयी और उस जाति के प्रभावशाली पुरुषों और स्थानों के नाम से भी गोत्रों का निर्माण होता गया। इसी प्रकार जैन जातियों में–ओसवाल, श्रीमाल, पोरवाल, धरकड़वाल, मन्त्रिदल, खण्डेलवाल , अग्रवाल आदि जातियों का आविर्भाव हुआ।

ओसवाल, श्रीमाल और पोरवाल जाति के आज भी हजारों एवं लाखों की संख्या में गृहस्थ अपने पूर्वजों की चिरस्मृति लिये मौजूद हैं। ये तीनों जातियां श्वे० जैनधर्म की प्रमुख अनुयायिनी रही हैं।

है। मुझे तो यही बात ज्यादा सम्भव प्रतीत होती है।

छन्दोविद्या ग्रन्थ लिखने का कारण -

इस ग्रन्थ के लिखने के लिए राजा भारमल के अद्भुत व्यक्तित्व, दान–सम्मान और सौजन्यमय व्यवहार ने कवि को प्रेरित किया। एक दिन कवि राजमल्ल राजा भारमल के दरबार मे बैठ कुछ कौतुक पूर्ण छन्द सुना रहे थे। इनको सुनकर राजा भारमल मुस्काये औ उनकी मुस्कुराहट से उनके मनोभिलाष को जान कर कवि ने इस छन्दोविद्या या पिंगल नाम के एक गगा–जमुनी छन्द–शास्त्र का निर्माण किया। इस ग्रन्थ के निर्माण पर स्वयं कवि हैरान है और आश्चर्य प्रकट कर रहा है। इसीलिए कवि कहता है, 'हे भारमल्ल! मान–धनका धारक कवि राजमल्ल यदि तुम्हारे यश को छन्दोबद्व करता है तो यह एक बडे ही आश्चर्य की बात है अथवा आप तेजोमय शरीर के धारक है, आपके पुण्य प्रताप से पर्वत भी अपना सार बहा देते हैं।

इस ग्रन्थ में राजा भारमल का जो यशोगान किया है, हालांकि वह अतिशयोक्तिपूर्ण है किन्तु प्रामाणिक है। इसे भाट–चारणो का निरा यशोगान नहीं समझना चाहिये। कवि राजमल्ल उस वक्त स्वयं एक प्रतिष्ठित विद्वान थे और दिगम्बर समाज मे उनका अच्छा मान था। उन्होंने धन व दान प्राप्त करने के संवरण से इस ग्रन्थ का निर्माण नहीं किया है। वे तो राजा भारमल्ल के अतुल प्रभाव से प्रभावित हुए हैं और इसी कारण इस ग्रन्थराज की रचना हुई है। राजा भारमल श्वेताम्बर समाज के थे और कवि राजमल्ल दिगम्बर समाज के। यह भी ग्रन्थ रचना की एक महत्व की बात है।

राजा भारमल के पूर्व-पुरुष -

राजा भारमल श्रीमाल जाति के थे और इनका गोत्र राक्याणि था। इस गोत्र के सस्थापक 'रंकाराऊ' थे जो जाति के राजपूत थे और श्रीमाल नगर में निवास करते थे। वहा से चलकर वे गुजरात के श्रीपुरपटटण (पाटन) चले गये और फिर वे गुरु के उपदेश से आबू देश मे श्रावक धर्म (जैन–धर्म) में दीक्षित हुए। रकाराऊ बडे धर्मप्रेमी, वैभवशाली सघ के सिरमौर और सुरेन्द्र के समान थे।

इनकी वंश परम्परा मे क्रमगत सघयति नाल्हा हुए। उनके एक पुत्र हुआ, उनकी स्त्री का नाम देल्ही था। देल्ही का पुत्र स० इसर – उनकी स्त्री झनकू, उनका पुत्र सं० रतनपाल – उनकी स्त्री मेदाई, उनका पुत्र सघपति देवदत्त हुए और उनकी स्त्री का नाम धम्मू था। देवदत्त भी बडे भाग्यशाली पुरुष हुए। इन्हीं के घर हमारे चरितनायक राजा भारमल का जन्म हुआ।

राजा भारमल का निवास-स्थान -

राजा भारमल मारवाड राज्यान्तर्गत नागौर शहर के निवासी थे। नागौर एक बहुत ही प्राचीन शहर रहा है। प्राचीन ग्रन्थों में इसका उल्लेख नागपुर भी आता है। नागपुरीय तपागच्छ की स्थापना भी इसी शहर मे हुई थी। इतिहास प्रसिद्ध जगत सेठ के पूर्वज हीरनन्द शाह भी इसी नगर के रहने वाले थे। वि०सं० १६३५ के आसपास राजा भारमल अपनी व्यापारिक सुविधा की दृष्टि से नागौर से उठकर महाभारत प्रसिद्ध वैराट नगरमे जाकर बस गये थे। इसी नगर में पाण्डवों ने अपनी गुप्तावस्था बितायी थी। प्राचीनकाल के मत्स्य देश की यह राजधानी था। वर्तमान मे यह नगर जयपुर से ४० मील दूर है।

व्यापार -

निस्सन्देह राजा भारमल अपने वक्त के धन कुबेर थे। इनका व्यापार देश–देशान्तरो मे लाखो का चलता था। सांभर, डीडवाना, मुक्तासर आदि भू–पर्वतो की खानो के स्वामी थे। वैराट नगरमें तांबे आदि की खाने थीं उन सब पर आपका एक छत्र एकाधिकरण था। डा० भांडारकर की रिपोर्ट के अनुसार वैराट नगर की मिट्टी अब भी धातु मिश्रित है। अबुलफजल की आईने अकबरी में भी वर्णन मिलता है कि वैराट मे तांबे और गेरू की खानें थी। सम्राट् अकबर की ओर से आपको इनका एकाधिकरण (Monopoly) का हक प्राप्त था। आपके हाथ में कई टकसालों (Mint) का स्वामित्व भी था। आपके कोषमे हर वक्त पचास करोड अकबरशाही सोने की मुहरें मौजूद रहती थीं। आपकी प्रतिदिन की आमदनी

राजा भारमल का भी अकबर के दरबार में काफी सम्मान था। इनके अद्वितीय व्यक्तित्व एवं प्रताप की झांकी इतने दिनों तक अज्ञात-सी थी। सन् १६४१ में 'अनेकान्त' के सम्पादक प० जुगलकिशोर जी मुख्तार ने दिगम्बर जैन कवि राजमल्ल के एक नवीन ग्रन्थ 'छन्दो विद्या' का पता लगाया और उस पर से उन्होंने राजा भारमल का कुछ परिचय दिया। सन् १६४४ में उन्होंने फिर 'अध्यात्म कमल मार्तण्ड' की प्रस्तावना मे राजा भारमल का पुन परिचय प्रकाशित किया और प्रेरणा की कि राजा भारमल जैसे प्रतापी पुरूष के इतिहास के सम्बन्ध में और खोज की जाय। अभी मैं बीकानेर प्रवास में आया तो इतिहास के सूक्ष्म अन्वेषक श्री अगरचन्द नाहटा ने भारमल का इतिवृत्त पढ़ने को दिया और प्रेरणा की कि राजा भारमल के इतिहास के बारे मे अभी और खोज कर एक शोधपूर्ण निबन्ध अवश्य लिखा जाना चाहिये। राजा भारमल के अद्वितीय प्रतिभायुक्त परिचय को पढकर मैं स्वयं मन्त्रमुग्ध-सा हो गया।

'छन्दो विद्या', जिसमे राजा भारमल के जीवन-वृत्त का वृत्तान्त मिलता है, ग्रन्थ के बारे मे प० जुगलकिशोर जी मुख्तार लिखते हैं, "छन्दो विद्या का दिग्दर्शक यह पिंगल ग्रन्थ राजा भारमल के लिए लिखा गया है जिन्हे 'भारहमल्ल' तथा कहीं-कहीं छन्दवश 'भारू'-नाम से भी उल्लिखित किया गया है और जो लोक मे उस समय बहुत बडे व्यक्तित्व को लिये हुए थे। छन्दों के लक्षण प्राय भारमल जी को सम्बोधन करके कहे गये हैं, उदाहरणों मे उनके यश का खुला गान किया गया है और इससे राजा भारमल के जीवन पर भी अच्छा प्रकाश पडता है-उनकी प्रकृति परिणति, विभूति, सम्पत्ति , कौटुम्बिक स्थिति और लोक सेवा आदि की कितनी ही ऐतिहासिक बातें सामने आती हैं और इस तरह राजा भारमल्ल का कुछ खण्ड इतिहास मिल जाता है, जो कविवर राजमल्ल जैसे विद्वान् की लेखनी से लिखा होने के कारण कोरा कवित्व न होकर कुछ महत्व रखता है।"

छन्दोविद्या ग्रन्थ का रचनाकाल -

कवि राजमल्ल ने अपनी अन्य कृतियों मे तो उनके रचनाकाल का समय निर्देश किया है, किन्तु छन्दोविद्या ग्रन्थ मे उन्होने इसके रचनाकाल के समय को सूचित नहीं किया है। प० जुगलकिशोरजी के मतानुसार "कवि की यह कृति (छन्दोविद्या) लाटी संहिता के (जिसका निर्माण काल आश्विन शुक्ला दशमी वि० सं० १६४१ है) कुछ पूर्व की होनी चाहिये, बशर्ते कि लाटी संहिता के निर्माण से पूर्व नागपुरीय-तपागच्छ के भट्टारक हर्षकीर्ति पदारूढ हो चुके हों।" किन्तु श्री नाहटाजी के मतानुसार वि० सं० १६४४ तक भट्टारक हर्षकीर्ति आचार्य के पद पर आरूढ नहीं हुए थे। इससे तो यह प्रमाणित होता है कि छन्दोविद्या ग्रन्थ का निर्माण वि० सं० १६४४ के लगभग का हुआ होगा। किन्तु इस ग्रन्थ मे वैराट नगर और वैराट जिनालय प्रतिष्ठा जिसकी प्रतिष्ठा वि० सं० १६४४ मे हो चुकी थी, कहीं भी जिक्र नहीं आया है। इसलिए यह तो निश्चित है कि इसका निर्माण वि० स० १६४४ के पहले ही हो चुका था। कवि राजमल्ल ने यह ग्रन्थ नागौर में ही रचा था और उस वक्त राजा भारमल भी वहीं निवास कर रहे थे। उत्तराध्ययन की दान प्रशस्ति से विदित होता है कि वि० स० १६३६ मे राजा भारमल वैराट नगर के निवासी बन चुके थे। इससे इस कथन की पुष्टि होती है कि यह ग्रन्थ वि० स० १६३६ के पूर्व ही रचा गया होगा। मेरे नम्र मतानुसार इस ग्रन्थ का निर्माण स० १६३३ मे या उसके आसपास हुआ होगा। वि० सं० १६३३ में कवि राजमल्ल आगरे में जम्बूस्वामी चरित की रचना कर वहां से नागौर चले आये थे। यहीं आकर कवि का भारमल से प्रथम परिचय हुआ और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके सदेच्छा मे इस ग्रन्थ की रचना की। मेरे इस कथन की पुष्टि मे सिर्फ एक बात का संशय रह जाता है कि इस ग्रन्थ के तीसरे पद्य मे निर्देश किया है कि आजकल हर्षकीर्ति नाम के साधु सम्राट की तरह राजते है, जो कि मानसूरि के पट्टशिष्य और श्री चन्द्रकीर्ति के प्रमट्ट शिष्य है जो कि नागपुरीय गच्छ के साक्षात् धनागच्छी साधु थे। इससे यह प्रतिध्वनित होता है कि जिस समय यह ग्रन्थ लिखा गया था उस वक्त हर्षकीर्ति सूरि पद पर आरूढ थे। किन्तु मिश्र-नोट्स से यह बात प्रमाणित हो चुका है कि हर्षकीर्ति वि० सं० १६४४ के लगभग सूरि पद पर आरूढ हुए। इसी कारण मेरे इस कथन का कि छन्दोविद्या ग्रन्थ का निर्माण वि० सं० १६३३ मे या उसके आसपास हुआ होगा, की प्रामाणिकता मे कुछ सन्देह रह जाता है। सम्भव है कि हर्षकीर्ति का तेज व प्रताप उन दिनों एक आचार्य की तरह रहा हो, चूंकि यह ग्रन्थ अतिशयोक्तियाँ उपमा और विभिन्न अलंकार से अलंकृत है इसलिए हर्षकीर्ति सूरि का सम्राट की तरह राजते हो कवि ने लिख दिया

चुनी हुई चतुरंग सेना भी रखते थे जिसमें अनेक हाथी–घोडे–पैदल सैनिक आदि थे।

आपका दरबार दिन–रात खान, सुलतान, राजा और ठाकुर आदि से भरा रहता था। तुरक लोग आकर आपको नमस्कार करते थे। यहा तक कि बादशाह अकबर का शाहजादा सलीम (जहांगीर) भी आपके दरबार में मिलने आता था और सूचना भेज कर इस बात की प्रतीक्षा में रहता था कि आप आकर उसकी सलाम (जुहार) स्वीकार करे। यह बात भी आपके प्रताप के गौरवाकाश मे चार चाद लगाने वाली है । इसी बात को कवि सोरठा मे किस सुन्दर ढंग से व्यक्त करता है मानो कि उसने यह घटना अपनी आखो से ही देखी हो। वह कहता है –

ठाडे तो दरबार, राजकुवर वसुधाधिपति।
लीजे न इकु जुहार, भारमल्ल सिरिमालकुल।।

आम्नाय -

राजा भारमल श्वेताम्बर नागौरी तपागच्छीय आम्नाय के थे। मानसूरि के शिष्य हर्षकीर्ति आपके गुरु थे। किन्तु अकबर प्रतिबोधक जगद्गुरु हीरविजय सूरिजी के भी आप परम भक्त थे। सूरिजी की सम्राट् अकबर पर पराकाष्ठा की गहरी छाप पडने मे आपका प्रमुख हाथ रहा था। कवि राजमल्ल ने भी हीरविजयसूरि को गुरु रूप में सुन्दरी छन्द में उल्लेख किया है यथा –

सिरिमाल सुबसो पुहमि पससो संघनरेसुर धम्मधुरो,
करुणामय चित्त परम पवित्त हीर विजे गुरु जासु वरो।

खभात के प्रसिद्ध श्रावक कवि ऋषभदास ने भी अपने हीरसूरि रास काव्यमे आपका व इन्द्रराज का नाम सूरिजी के प्रधान श्रावको की श्रेणी मे स्मरण किया है यथा –

कलिकाले नर तो पणि जोयरे, हीर ना श्रावक सरीखा होयरे।
संघवी भारमल ने इन्द्रराजेरे, विराट नगर मां सबली भाजेरे।

तपागच्छाचार्य श्री विजयहीरसूरि के समय तपागच्छ आम्नाय उन्नति के चरम शिखर पर था। राजा भारमल्ल ने भी इसकी वृद्धि मे पूरा सहयोग दिया, यह बात कवि के निम्न मालिनी छन्द से प्रतिध्वनित होती है –

जलणिहि–उवमाणि श्री तपानामगच्छि
हिमकर जिम भूया भूपति भारमल्ल।।

परिवार -

राजा भारमल की स्त्री का नाम छजू था। प० जुगल किशोर जी मुख्तार ने इनके दो स्त्री होने की सभावना प्रकट की है। हमारे ख्याल से श्री माला – छजू का ही नामान्तर है। आप श्रीमाल जाति के थे अत कवि ने छन्द मे छजू को श्रीमाला की उपमा देकर बहुत ही सुन्दर कल्पना के साथ निम्न प्रकार से उल्लेख किया है –

स्वाति बुन्द सुरवर्ष निरन्तर, सपुट सीपि धमो उदरंतर।
जम्मो मुकताहल भारहमल, कण्ठाभरण सिरीअवलीवल।।

अर्थात् सुर (देवदत्त) वर्षा की स्वाति बूद को पाकर धर्मो के उदर रूपी सीपसंपुट में भारमल्ल रूपी मुक्ताफल (मोती) उत्पन्न हुआ और वह श्रीमाला का कण्ठाभरण बना।

अगर भारमलजी के एक से अधिक स्त्री होती तो कवि अवश्य ही उसका जिक्र करता। क्योकि कवि ने छन्दो –विद्या ग्रन्थ मे बहुत ही उदार एवं विस्तार के साथ आपका वंश परिचय, पुत्रादि का नाम व खुला यशोगान किया है। मुख्तार साहब के मतानुसार अगर हम श्रीमाला को छजू का नामान्तर न मानकर एक अलग नाम मान भी लें तो फिर कवि ने छजू जो इतनी धर्मरुचि वाली श्राविका थी, उसका फिर उल्लेख ग्रन्थ में क्यों नहीं किया ? इन्द्रराज जो भारमल जी के ज्येष्ठ एव प्रतिभाशाली पुत्र थे उसकी माता छजू का नाम ग्रन्थ में अवश्य आना चाहिये। किन्तु इस ग्रन्थ में उसका कहीं भी नाम नहीं है अत हमारे ख्याल से तो श्रीमाला छजू का ही नामान्तर है।

''एफ. ''माने फिरोदिया: एक पुरूषार्थी जीवन

उत्तर भारत मे क्या समस्त भारत मे टैम्पो मेटाडोर दिन रात हजारो यात्रियो को इधर से उधर ढो रही है। इजन की जाली के आगे अग्रेजी का ' एफ (F) लिखा रहता है–जिसका अर्थ आम जनता शायद ही समझ रही होगी। बजाज टैम्पो, बजाज स्कूटर का खूब नाम है। एक जमाना था इस पर हजारो का प्रीमियम था। नम्बर पजीयन होने के बाद महीनो व वर्षो मे नम्बर आता था। बजाज को सभी जानते है कि यह स्वनाम-धन्य सेठ जमनालाल बजाज के पुत्रो का उद्योग– समूह है। सेठ जमनालाल बजाज,जिन्हे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी अपना पाचवा पुत्र मानते थे और जमनालाल जी ने भी अपना तन–मन– धन , सभी,राष्ट्रहित मे बापू के चरणो में समर्पित कर दिया था। काग्रेस ने जो देश के लिये आजादी की लडाई लडी उसके आर्थिक मेरू–दड बजाज व बिडला ही थे।

भारत की सडको पर बजाज स्कूटर लाने वाले का नाम भी आम जनता को मालूम नहीं है। इसका श्रेय राम–लक्ष्मण जोडी रूप मे प्रसिद्ध पूना के दो उद्यमी सगे बन्धु श्री नवलमल फिरोदिया एव हस्तीमल फिरोदिया को जाता है। दोनो बन्धुओं यानि बजाज घराना और फिरोदिया घराना ने मिलकर बजाज ओटो लि० व बजाज टैम्पो लि० की सन् १६५८ व १६६० मे पूना मे स्थापना की।

इसके लिए सर्वप्रथम श्री नवलमल फिरोदिया इटली गये और इटली की "पियाजो" कपनी से टैक्नीकल " नो–हाऊ " का सहयोग प्राप्त कर उनको अपनी कंपनी मे सहयोगी रूप मे लिया। जर्मनी जाकर "मरसीडीज बैन्ज" कंपनी से टैम्पो व मेटाडोर डीजल इजन के लिये " नो हाऊ " प्राप्त किया। जर्मन कपनी ने श्री फिरोदिया जी के सद–व्यवहार व एक उद्यमी की सच्ची क्षमता पहचानकर उनको डीजल इजन बनाने की अपनी पुरानी मशीने भारत पहुँचा कर मुफ्त में ही भेंट कर दीं।

आगे जाकर किसी कारण से बजाज व फिरोदिया दोनो उद्योग समूह अलग–अलग हो गये। बजाज के हिस्से मे बजाज ओटो लि० आया और फिरोदिया जी के बजाज टैम्पो लि० पूना। इन्होंने अपनी पहचान बनाने के लिये मेटाडोर व टैम्पो पर (F) का निशान लगाना शुरू कर दिया। बजाज व फिरोदिया दोनो ही मारवाडी उद्योगपति हैं किन्तु देश मे श्री फिरोदिया जी महाराष्ट्रीयन उद्योगपति के नाम से किर्लोस्कर की तरह प्रसिद्ध हैं और महाराष्ट्र के मुकट–मणि के रूप में फिरोदिया घराना प्रसिद्ध है।

गत वर्ष २३ अक्टूबर १६६० को पूना मे एक अभिनदन समारोह श्री नवलमल जी फिरोदिया के ८० वर्ष की जन्म–जयन्ती पर आयोजित हुआ था जिसकी अध्यक्षता माननीय श्री अच्युत पटवर्धन जी ने की और मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र के मुख्यमत्री श्री शरत पवार उपस्थित थे। इस अवसर पर महाराष्ट्र के सभी अग्रज समाज सेवी, राजनेता एवं जैन समाज के अग्रणी एवं वीरायतन की आचार्या साध्वी श्री चंदना जी भी उपस्थित थीं।

श्री नवलमल जी फिरोदिया युवा काल से ही क्रान्तिकारी रहे–बापू व लोकमान्य तिलक के सम्पर्क में आये, जेल-यात्राये कीं, सफल वकील बने। पचपन वर्ष की उम्र मे अच्छी खासी चलती वकालत को ठोकर मारकर उद्योगपति बनने की ललक में बजाज–उद्योग समूह के सम्पर्क में आये। स्कूटर एवं टैम्पो के कारखाने पूना मे स्थापित किये। निरन्तर इस क्षेत्र मे आगे बढते हुए–लूना मोपेड व कायनेटिक होंडा स्कूटर कंपनी जापान की होंडा कपनी के साथ पीथमपुर (इंदौर) में स्थापित की। आज भारत की सडकों पर लूना मोपेड व कायनेटिक होंडा स्कूटर श्रेष्ठतम दो पहिया वाली जन–प्रिय सवारी हैं।

छजू धर्म पर बहुत श्रद्धा एवं रुचि रखने वाली श्राविका थी। जैन धर्म के सूत्रों पर उसकी पूरी आस्था थी। जैन सूत्रों में उत्तराध्ययन सूत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण सूत्र है। इसी कारण छजू ने वि०सं० १६३६ में उत्तराध्ययन की वृत्ति लिखवा कर चरित्रोदय गणिको समर्पित की। इसकी दान प्रशस्ति में लिखा है–

"श्रीमत् नृप विक्रमगत संवत् १६३६ वर्षे पातिसाह श्री अकबर राज्ये श्री बइराटनगरे श्रीमाल ज्ञातीय राजा भारहमल तत् भार्या संघवनि छजू तत् पुत्र रत्न संघवी इन्द्राराजने स्वपुण्यार्थ वृत्तिरियं विहरापिता गणिचरित्रोदयानां चिरं नन्दतु।"

राजा भारमल जी के तीन पुत्र थे किन्तु मुख्तार साहब ने दो पुत्रों का ही नाम दिया है और भी लघु पुत्र होने का उल्लेख संभव समझ कर उसका नाम छोड़ दिया है। यद्यपि रोडक छन्द के उदाहरण स्वरूप छन्द संख्या १३१ में इन्द्रराज, अजयराज के साथ स्वामिदास का नाम स्पष्ट लिखा हुआ है। इनमें इन्द्रराज तो अपने पिता के समान ही प्रतापशाली और धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष हुए।

स्वर्गवास -

राजा भारमलजी का स्वर्गवास वि०सं० १६४४ के पूर्व ही हो गया था क्योंकि जिस वक्त वैराट जिनालय की प्रतिष्ठा हुई थी उस वक्त इन्द्रराज अकेला ही – हीर विजयसूरि को प्रतिष्ठा कराने के लिए प्रार्थना करता है। मंदिर का नाम भी अपने नाम के पीछे इन्द्र विहार रखा और अपने पिता की स्मृति में श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया है। इससे पता चलता है कि आप वि०सं० १६४४ के पूर्व ही स्वर्गवासी हो चुके थे।

जैन-भारती
मार्च, १९५१

कर्मयोगी-श्री राजरूपजी टांक

परम श्रद्धेय श्री राजरूप जी टांक कर्मयोगी थे। काम करने में उनका विश्वास था। सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पित भाव से कार्य कर उसे हिमालय की ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया। चाहे शिक्षा-जगत हो, व्यवसाय हो, राजनीतिक हो धार्मिक हो, हिन्दी प्रचार हो, गौवंश का संरक्षण हो चिकित्सा सेवा हो मन्दिरों एवं दादाबाड़ियों का निर्माण हो, आदि। जिस संस्था के सदस्य एवं पदाधिकारी बने अपने कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाह किया [illegible] फल की इच्छा नहीं की।

समाजरत्न श्री राजरूप टांक श्रद्धांजली-स्मारिका, जयपुर
सन् १९८७

'बच्चन' के अनुज 'रज्जन'

हिन्दी कवि जगत के सितारे श्री हरवंशराय बच्चन के अनुज श्री शालिग्राम श्रीवास्तव "रज्जन" भी कवि थे, जिन्हें हिन्दी-संसार भूल चुका है। आज से लगभग तीस वर्ष पहले श्री रज्जन हाथरस (अलीगंढ) मे इलाहाबाद बैंक में ऐजेन्ट थे। मेरा भी खाता इलाहाबाद बैंक में था-एक दिन बातों में उन्होंने बताया- श्री बच्चन मेरे अग्रज हैं। मैंने कहा, श्री बच्चन जी ने तो मधुशाला लिखी हे आपने कौन-सी शाला का निर्माण किया है ? हंसते-हंसते श्री रज्जन ने कहा मैने लिखी है -'टीशाला' मैने झट 'टीशाला' की एक प्रति देने को कहा, तो श्री रज्जन ने कहा कि टीशाला इतनी लोकप्रिय हुई कि-सब प्रतिया मैंने वितरित कर दीं या बिक गई। अब उनके स्वयं के पास भी एक प्रति भी नहीं बची है। १०० पेरोडी मधुशाला के प्रत्युत्तर में लिखी थीं। क्या लिखा था मुझे स्मरण नहीं। जब से बैंक का मैनेजर बन गया, तो रही-सही कविता करने का शौक भी जाता रहा।

श्री रज्जन जी से मेरी मित्रता दिनो-दिन बढ़ती गई। संयोग-वश कुछ दिन बाद उनकी बदली कलकत्ता हो गई। फिर वे इलाहाबाद बैंक के ऐजेन्ट बनकर झाँसी आ गये। उनकी धर्म पत्नी का स्वर्गवास झाँसी में प्रसव काल में हो गया। उनकी पत्नी ने एक बालक को जन्म दिया था। श्री रज्जन जी विधुर हो गये। वे पुन: विवाह करना नहीं चाहते थे, किन्तु भाभी श्री तेजी बच्चन के आग्रह से विवाह के लिये राजी हो गये, और वे हाथरस में ही दुल्हा बनकर हाथरस के नार्मल स्कूल के प्रधान अध्यापक श्रीवास्तव जी की लडकी को विवाहने आये। मै भी उस बारात मे शामिल हुआ था । श्री बच्चन जी पधारे थे, उनके मुंख से पहली वार -"मधुशाला"-हास्य-व्यंग-मौज मस्ती के वातावरण में सुनीं, बडा आनन्द आया।

दुर्भाग्य ने श्री रज्जन का पीछा नहीं छोडा-वे झांसी में बीमार हो गये- उनका आप्रेशन लखनऊ में ही हुआ। अन्त मे वे लखनऊ में चल बसे।

मैं वर्षो से 'टीशाला' की खोज मे था - पिछले दिनों दिल्ली गया तो एक फटी पुरानी-'टीशाला' की एक प्रति प्राप्त हो गई। मैंने उसे पढा- जी भरकर पढा-मन की मुराद पूरी हो गयी। 'टीशाला' की भूमिका मे श्री बच्चन लिखते हैं-

"आप मेरे छोटे भाई हैं

"आप भी कुछ लिखते हैं?

रज्जन के विषय मे इस प्रकार के प्रश्न प्राय किये गये हैं। चूंकि वे मेरे भाई हैं इस कारण लोग इस बात की प्रत्याशा करते हैं कि वे भी अवश्य लिखते होगे। हाँ, रज्जन भी कविता करते हैं - आप हिन्दी में लिखते हैं, उर्दू मे लिखते हैं, और कभी-कभी अंग्रेजी में भी लिखते हैं। शिक्षा-दीक्षा मे मुझसे कुछ ही कम हैं। संस्कार भी एक से ही हैं। लोगो को अचरज होता यदि वे कुछ न लिखते होते। पर मुझ में और उनमें थोडा अन्तर है। और यह अन्तर है हमारे भाग्य का। रज्जन ने जिस दिन से अपनी पढाई खत्म की उस दिन से उन्हे काम मिल गया। मेरा अधिकतर जीवन बेकारी में गुजरा है।

'टीशाला' की प्रथम पेरोडी मे श्री रज्जन कहते हैं -

कैसी गरम बना लाया हूं,
आज चाय देखो आला।
मधुशाला के प्रेमी को मैं,
मुफ्त पिलाऊगा प्याला।
मत समझो "टी" शाला मे,
मधुशाला का प्याला है।

श्री नवलमल जी फिरोदिया—उद्योगपति के साथ एक सफल क्रान्तिकारी विचारों के समाजसेवी एवं प्रेमी एवं उदारमना हृदय के व्यक्ति हैं। "वीरायतन" राजगृह जैसी राष्ट्रव्यापी सेवा-संस्था के अध्यक्ष हैं। स्कूल, कॉलेज अस्पताल, कुष्ठरोगियों के लिये चिकित्सालय, गूंगे बहरों के लिये पाठशाला स्थापित कर लाखों रुपये दान में दिये हैं। जैन बालिकाओं के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिये एक करोड़ की लागत से अपने धर्मार्थ न्यासों के जरिये गुरुकुल (आवासीय विद्यालय) बना रहे हैं और प्राकृत-भाषा के विकास के लिये शब्द कोष (डिक्शनरी) बनाने वास्ते भंडारकर इन्स्टीट्यूट पूना को पूरा आर्थिक योगदान दे रहे हैं।

आप सफल पिता की सफल संतान हैं। आपके पिता श्री कुंदनमल जी फिरोदिया अपने समय के क्रान्तिकारी स्वतंत्रता सेनानी रहे—बम्बई असेम्बली के स्पीकर भी रहे। इन्हीं के घर माता यमुनाबाई की कुक्षी से (सितम्बर १६१० ई० को अहमद नगर के पास 'कोल गांव' में आपका जन्म हुआ। आपके दो अनुज श्री हस्तीमल जी एवं श्री मोती लाल जी भी सभी तरह से योग्य एवं श्री नवलमल जी के कार्य को अग्रसर करने में सहयोगी रहे हैं। सन् १९८० ई० में श्री फिरोदिया जी उद्योग-धन्धो के दायित्व से निवृत हो गये। सभी कार्य भाइयों व अपने पुत्र व भाइयों के पुत्रों को सौंप दिया। सिर्फ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि लेते हैं। *इक्यासी वर्ष की उम्र में भी युवकों की तरह सक्रिय* हैं। जो संकल्प लेते है उसे शीघ्रतम पूरा करने की चेष्टा तुरन्त करते हैं। इसका जीता-जागता उदाहरण है "वीरायतन" *राजगृह का चहुँमुखी विकास।*

आपके पूर्वज राजस्थान के नागौर शहर के पास गांव फिरोद से उठकर महाराष्ट्र में अहमदनगर में आकर बसे, इसलिये इन्होंने अपनी पहचान ओसवाल जाति में "फिरोदिया" के नाम से गोत्र बना लिया। जैन धर्मावलम्बी हैं और राष्ट्रसंत कवि उपाध्याय श्री अमर मुनि जी के परम भक्त श्रावक हैं और साम्प्रदायिक संकीर्णता से कोसों दूर हैं। कसौटी पर कसकर जो इनको रुचिकर लगता है—उसी पर चलते हैं।

आपके अभिनंदन समारोह पर मराठी भाषा में चार सौ पृष्ठों की एक पुस्तक "नवलकथा" एक पुस्तक —राजा मंगलवेढेकर जैसे उच्च कोटि के मराठी साहित्य के विद्वान ने लिखी है। इसको पढ़ने से फिरोदिया जी के यशस्वी कर्मठ जीवन से बाल-युवा-वृद्ध सभी को प्रेरणा मिलेगी। *इसका प्रकाशन श्री नवलमल फिरोदिया सत्कार-समिति* के अध्यक्ष श्री बालासाहेब भारदे ने "सन्मित्र" गणेश खिण्ड रोड, पूना-७ से प्रकाशित किया है। पुस्तक की छपाई-लिखाई सभी कलात्मक सुन्दर है। आर्ट कागज पर छपा आकर्षक कवर पृष्ठ तो श्री फिरोदियाजी के विचारों की अभिव्यक्ति करता है।

इस पुस्तक का हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा का अनुवाद होना चाहिये जिससे समस्त देश-विदेश के जिज्ञासु लाभ उठा सकें, वीरायतन के सदस्य के नाते श्री फिरोदिया जी से मेरी भी भेंट-मुलाकात वर्ष में दो-तीन बार होती रहती है और उनसे प्रेरणा प्राप्त करता रहता हूँ।

श्री फिरोदिया जी भारत के सफलतम उद्योगपतियों में है और मारवाड़ी समाज एवं महाराष्ट्र के मुकुट-मणि है। फिरोदिया घराना महाराष्ट्र में दूध-शक्कर की तरह घुल मिल गया है। घर में मराठी भाषा बच्चों-बच्चों ने अपना ली है। किन्तु मारवाड़ी व जैन समाज में श्री फिरोदिया जी जाते हैं तो राजस्थानी या हिन्दी में ही बात करते हैं। घर में पहनावा राजस्थानी एवं महाराष्ट्रीयन मिला-जुला है। स्वयं खद्दर की सफेद धोती कुर्ता पाजामा और टोपी पहिनते हैं। उम्र के लिहाज से हाथ में छड़ी अवश्य रखते हैं। सादगी एवं सौम्यता इतनी है कि जो भी इनके सम्पर्क में आता है वह इनका ही बन जाता है। ऐसे अजातशत्रु गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति का सदा देश व समाज को नेतृत्व मिलता रहे यही ईश्वर से विनय है।

o o o o o o

मेरे पिताजी से उनकी मैत्री संभवतः दोनो ब्राह्म मुहूर्त में गंगास्नान से हुई, हालाकि पडितजी (पं० विश्राम तिवारी) मेरे पिता (प्रताप नरायन जी) से १५–१६ वर्ष छोटे थे। मेरे छोटे भाई शालिग्राम का तो नया–नया दाखिला होना था, मेरे पिताजी को कह–सुनकर उन्हे मना लिया कि वे उसको उन्हीं के स्कूल मे भेजेंगे। फिर उन्होंने मेरे पिताजी को समझाया कि दो बच्चे हैं, दोनो का एक ही स्कूल में पढना ठीक रहेगा, साथ–साथ जायेगे। उनकी बात मे कुछ तर्क था। मेरे पिताजी ने मौहल्ला शियागज से मेरा नाम कटाकर मुझे उच्चामडी मे भरती करा दिया। शालिग्राम का नाम दर्जा एक मे लिखा गया मेरा दर्जा तीन में, जिसे पडित जी खुद पढाते थे।

हिन्दू समाज ने जन–जन के बीच ऊंच–नीच का कटु बोध कराने के लिए कैसे–कैसे अजीब तरीके निकाले हैं। मुझे याद नहीं कब मैंने ठोकर मारकर अन्नदान करने से इकार कर दिया और वर्ष–गाँठो पर मेरा तुलादान किये जाने लगा। लकडी की टाल से बडी सी तराजू आती, उसे तीन बल्लियों के सहारे लटकाया जाता, आम के पल्लवो और गेदो के फूलो से सजाया जाता और मुझे किसी वर्ष अन्न से किसी वर्ष मिठाई से तोला जाता। मुझसे तीन साल छोटे मेरे भाई शालिग्राम भी साथ पलडे पर बैठने को मचलते – जैसे दूल्हे के साथ शहवाला, और तराजू पर चढी सामग्री परजा–पवन, भिखारियो को बाट दी जाती।

अपने विवाह के सबंध मे जो शर्त मैंने लगायी थी वह थी मेरी शादी बहुत सादे तरीके से की जाय, चढावे के लिए जरूरी, जरूरी कपडे गहने बनवाये जायें, वारात में फुलवारी आतिशबाजी पर रू० न फूंके जायें और न बहुत से गाजे–बाजो पर, दहेज मागा न जाये, जैसे उन दिनों आम रिवाज थी, पर जो भी नकद रुपये मिलें उनमे से अधिक से अधिक बचाने की कोशिश की जाय और ये रुपये मेरी और शालिग्राम की पढाई पर खर्च किये जाने के लिए अलग–अलग करा दिये जायें। पिताजी को मेरी सलाह पसंद आयी थी, और उन्होंने तदनुसार किया था। मेरे एक साल फेल हो जाने से शालिग्राम अब मुझसे सिर्फ एक साल पीछे थे। उनके भी आगे पढने की शर्त रखी गयी। कभी हमें ट्यूशन न मिलती, कभी छूट जाती फिर मिलने मे कई–कई महीने लग जाते। परीक्षाओ के समय हम खुद ट्यूशन छोड देते, सारा समय हम चाहते अपने पाठ्यक्रम की तैयारी में लगायें। कभी हमे किताब खरीदने के लिए रुपये की जरूरत होती। दहेज में बचाये रुपये ऐसी वक्तों पर हमारे काम आये और इससे हमारी पढाई विधिवत् गति से चलती गयी। शालिग्राम एक बार में ही हाईस्कूल पार कर गये – शायद द्वितीय श्रेणी में और किताबों पर खर्च बचाने के ख्याल से इंटर में उन्हें भी वही विषय दिला दिये गये जो मेरे थे।

पिताजी दफ्तर से रिटायर हो चुके थे। उन्हे शायद ७५ रु० प्रतिमाह पेशन मिलती थी, पच्चीस–तीस ट्यूशन से कमाता, इतना ही छोटा भाई शालिग्राम कमा लेता था। सस्ती का समय था किसी तरह घर चलता जाता।

मेरे छोटे भाई शालिग्राम ने बी०ए० का इम्तहान दिया था। रिजल्ट आने से पहले ही उन्हें इलाहाबाद बैंक मे नौकरी मिल गयी, और घर की स्थिति देखते हुए उन्होंने आगे पढने की बात न सोची। कायस्थों के यहाँ लडका बे भुनाई हुन्डी कहा जाता है। बादा के वकील बाबू गया प्रसाद की ओर से शालिग्राम के रिश्ते का प्रस्ताव आया। लडकी सुन्दर, पढी लिखी, सुशील थी, साथ ही अच्छा दहेज मिलने की आशा थी। पिताजी ने शादी मंजूर कर ली। शालिग्राम के तिलक मे जो रुपये नकद मिले उसमे से दो हजार देकर मकान छुड़ा लिया गया, पर उनकी शादी पर कुछ रुपये खर्च होना था, खासकर चढने के लिए गहनो पर। श्यामा ने अपनी उदारता, त्याग और बड़प्पन का परिचय दिया। उसने अपने सब जेवर शालिग्राम की वधू के लिये दे दिये। परिवार की लाज बचाने का दूसरा तरीका न था।

सन् १६३० से मेरे घर की आर्थिक स्थिति और नाजुक हो गयी थी। शालिग्राम की ३५ रु० महीने की नौकरी लगी तो पिताजी की ७५ रु० प्रतिमाह की पेशन बद हो गयी। १६३२ मे ही शालिग्राम की बदली प्रयाग से बनारस हो गयी। ये अपनी छोटी–सी तनख्वाह में क्या अपने ऊपर खर्च करते, क्या घर भेजते। उनकी पत्नी उनके साथ थी। मैं ट्यूशन और नौकरी से ६० रु० से अधिक घर नहीं ला सकता था।

मेरी छोटी बहिन का विवाह अब (म०प्र०) के अनूपपुर के जमींदार बाबू सुन्दर लाल से हुआ। शादी के अवसर पर शालिग्राम सपत्नी आये तो पता चला कि उनकी पत्नी का पैर भारी है, पर उन्हें एनीमिया की बीमारी है।

बच्चन' मालिक मधुशाला है,
"रज्जन"मालिक टीशाला।

और अंत में देश की एकता के लिए १०० वीं पैरोडी में श्री रज्जन कहते हैं –

मंदिर में पंडित जी जाकर,
रोज जपे अपनी माला।
और नमाजी मस्जिद में जा,
याद करें अल्ला ताला।
किन्तु देश के मसले में,
पी चाय अगर सब एक बने।
जन्म सफल समझेगी अपना
जग मे मेरी "टी शाला"।

श्री रज्जन जी के सर्वांगीण व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर मैं एक स्वतंत्र पुस्तक लिखने की सोच रहा हूं। जब तक वह पुस्तक प्रकाशित हो, श्री "रज्जन" की कहानी बच्चन की जबानी उनकी पुस्तक – "क्या भूलूं क्या याद करूं" से कुछ अश पाठकों की जानकारी के लिए दे रहा हूँ :–

मेरे जन्म के लगभग तीन वर्ष बाद (सन् १९१०) में मेरे छोटे भाई का जन्म हुआ। मेरी माता उसका नाम मेरे नाम हरिवंशराय के जोड पर रघुवंश राय रखना चाहती थी, पर तभी मुहल्ले में किसी के रघुवंश नाम के लड़के की मृत्यु हो गयी। माँ को लगा कि रघुवंश नाम रखने से पडोसी को बराबर अपने लड़के की याद आती रहेगी, शायद इस नाम को अशुभ भी समझा हो, इसलिए उन्होने अपने छोटे लड़के का नाम शालिग्राम रख दिया, पुकारने का नाम रज्जन, बच्चन के वजन पर –

मुझे याद है, मेरा बाल भी, शायद पांच–छ वर्ष की अवस्था में विन्ध्याचल उतरवाया गया था। तब तक बलि नारियल की दी जाने लगी थी, पर मैंने बकरे की बलि पहली बार वहीं देखी और मेरा बच्चा–सा मन दिल उससे बहुत घबराया। हमारे परिवार मे अंतिम बार यह रस्म मेरे छोटे भाई शालिग्राम के एकमात्र पुत्र प्रभात के लिए अदा की गयी।

मौलवी साहब की शक्ल अपरिचित न थी, उनसे हमारे घर का सम्बन्ध पुराना था। मेरे पहले वे चचेरे भाई बडे भाई शिवप्रसाद को पढा चुके थे। मौलवी साहब आते, आवाज देते और जूती उतारकर तख्ती पर बैठ जाते, मैं उनके सामने पालथी मार कर बैठ जाता था। दो–डेढ़ वर्ष बाद की बात है, मेरे छोटे भाई शालिग्राम ने मेरे पास बैठकर कुछ शैतानी की, मौलवी साहब ने डाँट दिया, उन्होंने फिर शैतानी की, मौलवी साहब उनको पकड़ने को उठे तो वे भागे और मौलवी साहब ने उनको दौड़ाना शुरु किया, पर शालिग्राम कहाँ आनेवाले थे। आखिरकार मौलवी साहब ही हारते हुए लौट आये। आगे–आगे शालिग्राम, पीछे–पीछे हाँफ भागते मौलवी साहब – जैसे हिरन के पीछे हाथी, यह दृश्य याद करके मैं भी अपनी हँसी नहीं रोक पाता। उस दिन भला क्या हँसी थी और मौलवी साहब ने शालिग्राम का गुस्सा मेरे ऊपर उतारा।

सादगी की प्रतिमूर्ति

टांटियाजी

रामेश्वर जी टाटिया से मेरा प्रथम परिचय पूना मे मारवाडी सम्मेलन के अधिवेशन मे हुआ जब वे वहा अध्यक्ष के रूप मे पधारे थे। साथ मे मेरे मामाजी श्री मेघराज जी नाहटा थे, उनका परिचय पुराना था, श्री टांटिया जी की धुबडी (आसाम) दुकान से मामाजी की चापड (आसाम) से आपस मे लेन–देन और आना– जाना खूब था।

जब श्री टाटिया जी कानपुर पधार गये तब श्री मदन गोपाल जी कनोडिया (महामत्री उ प्र मारवाडी सम्मेलन) ने और भी निकटतम् परिचय करा दिया और अक्सर उनके पार्वती देवी बागला स्थित बगले मे सामाजिक कार्यो मे विचार –विमर्श एव दिशा-निर्देश प्राप्त करने के लिए जाता रहता था। जब भी गया उन्होने बडे पितृवत् भाव से दुलार और प्यार दिया। उनकी जो–जो पुस्तक प्रकाशित होकर आती उसकी प्रति मुझे अवश्य देते। एक बार चिरंजीवी काति को साथ ले गया तो उसको कहा, 'क्यो तुम लूण–तेल के व्यापार में पडे हो, तुम एक बार विदेश जाओ, आयात–निर्यात का व्यापार करो। कानपुर में तुम्हें कोई परेशानी हो तो मुझे तुरन्त फोन कर देना, किसी बात की तकलीफ न देखना।' उसको पढने के लिए 'विश्व–भ्रमण यात्रा' की पुस्तक दे दी और कहा,'तुम इसे शुरू से अत तक पढना।'

जब श्री टांटिया जी कानपुर के महापौर बन गये, हम लोगो का उत्साह दूना हो गया। हमारे जैनियो के भाद्र –पद मास मे एव पर्युषण अत्यन्त पवित्र धार्मिक दिन आते हैं;उस वक्त एक जैन साधु जी का चातुर्मास कानपुर था, उन्होने व्याख्यान मे कहा, पर्यूषणो मे सवत्सरी के दिन कतलखाना बद रहना चाहिये, पशु हिंसा नहीं होनी चाहिये। क्या यह कार्य कानपुर मे हो सकता है। मैंने उसी वक्त खडे होकर निवेदन किया, इस वर्ष तो हो ही जावेगा क्योकि हमारे समाज के सरक्षक श्री टाटिया जी इस वक्त कानपुर नगर महापालिका के महापौर हैं। मैं शाम को ५ बजे श्री टांटिया जी के बंगले पर गया। श्री टाटिया जी रानी सती के मेले झुझनू जाने की तैयारी कर रहे थे – मोटर तैयार खडी थी और मोटर मे श्री टांटिया जी की धर्मपत्नी और एक लडका बैठा था। मुझे देखते ही बोले – इस बार तो बांठिया जी बहुत दिनों बाद आये हैं। चलिये भीतर चाय पीजिए फिर बात करेगे। मैंने कहा,'आपको प्रस्थान अभी करना है, इस बार मैं आपका समय अधिक नहीं लूँगा। निवेदन है कि हमारे संवत्सरी (भादवा सूदी ४) के दिन कानपुर में कट्टीखाना बंद रहना चाहिय यदि आप करा सके तो।' यह सुनते ही श्री टाटिया जी ने कहा,'अवश्य बद होगा। अकबर बादशाह के जमाने मे भी बद रहता था।' उन्होंने उसी वक्त नगर महापालिका के एक सचिव को फोन किया, जैनियों का एक प्रतिनिधि मण्डल आपसे मिलेगा, संवत्सरी के दिन कट्टी-खाना कानपुर मे बद रहे इसका आदेश करा देना।

जब फोन हो गया तो मैं उनसे 'जयगोपाल' कर जाने लगा तो बोले-'कहां जाना है। चलिये बैठिये मेरे साथ फूलबाग के पास आपको छोड दूगा।' मैंने बहुत मना किया पर टाटिया जी माने नहीं, बोले आप तो ४–५ किलोमीटर चलकर आये हैं। सायंकाल का वक्त है रिक्शा मिलना भी मुश्किल है। श्री टांटिया जी ने अपनी धर्मपत्नी से कहा कि तुम उतर कर आगे सीट पर बैठो, बांठिया जी मेरे पास बैठे जावेंगे – रास्ते मे दो मिनट बात और कर लेगे। रास्ते मे फूलबाग के पास उनको उतार देंगे। मुझे टाटिया जी के आग्रह भरी आज्ञा को संकोचवश पालन करना पडा। ऐसे थे उदारमना स्वभाव के श्री टांटिया जी।

समय से एक बच्ची हुई, पर थोड़े ही काल के अन्तराल से बच्ची और बच्ची की माँ का देहावसान हो गया। शादी-मौत जैसे हाथ बाँधे घर में आयी थीं। एक दिन घर से अर्थी निकल गयी। डोली और अर्थी जीवन में साथ-साथ हैं।

'जगा करेगा अविचल मरघट
जगा करेगी मधुशाला

... घर बहुत सूना था। छोटी बहिन ससुराल चली गयी थी। विधुर छोटे भाई शालिग्राम बनारस और गये थे। श्यामा, शादी मौत दोनों के थकान से बीमार होकर अपने पिता के घर चली गयी जहाँ उसका कम से कम विधिवत इलाज भी होना था। मैं प्राय हर शाम उसे देखने जाता और "खैयाम" की अपनी 'मधुशाला से उसका मन बहलाता।

विवाह मध्यवित परिवारो में भावात्मक से अधिक व्यावहारिक समस्या है, कोई दो रोटी पोकर खिलाए। प्रस्तावों की कमी नहीं थी। छोटे भाई ने दूसरी शादी कर ली- बांदा से ही जहाँ उनकी पहली शादी हुई थी। उनकी बदली इलाहाबाद हो गयी। बैंक का काम करते थे, हिसाब-किताब मे वे माहिर थे। सुषमा निकुंज का भी हिसाब रखने लगे। पिताजी का हाथ बंटा। मेरा मन कुछ परिवर्तन के लिए भी व्यग्र था। मैंने इन्दौर जाने का कार्यक्रम बना लिया। श्यामा के साथ के लिए नई देवरानी मिल गयी थी।

झाँसी गले की फासी
दतिया गले का हार
ललितपुर कभी न छोडिये,
जब तक मिले उधार।

मेरा हमेशा से विश्वास रहा है कि कहावते अटकलपच्चू नहीं चल पड़ती, उनके पीछे कोई लम्बा सामूहिक अनुभव रहता है जो जाति-जीवन मे न जाने कितने अवसरो की कसौटी पर चढ़ता और अपना सत्यपन सिद्ध करता है।

मेरे साथ तो इसे झांसी का मजाक कह लीजिये, पर मेरे छोटे भाई शालिग्राम के लिए झांसी सचमुच गले की फांसी सिद्ध हुई।

कलकत्ते से वे झांसी स्थित इलाहाबाद बैंक के एजेंट होकर झांसी क्या गये उन पर मुसीबतों का तांता लग गया। यहीं उनकी पत्नी का देहावसान हुआ, यहीं उनकी पुत्री गयी, यहीं उन्होंने फिर से विवाह किया जो उनके लिए घोर अपमान, आत्म प्रतारणा बना, यहीं वे भीषण रूप से बीमार पड़े और यहां से जब इलाज के लिए कलकत्ता गये तो फिर लौटकर न आये। वहीं उनकी मृत्यु हो गयी।

भारत-सावित्री
वर्ष १९६०

o-o-o-o-o-o-o

सेठ श्री कस्तूरभाई लालभाई के साथ एक दिन

भारत के सुप्रसिद्ध रूई व्यवसायी श्री प्रेमराज जी कांकरिया के प्रेम भरे आमंत्रण पर अकस्मात् ही मुझे चि० कान्ति के साथ ता० २८ जनवरी १९७७ को ब्यावर जाना पड़ा। वहा पहुंचने पर श्री कांकरियाजी ने बताया कि आज दिल्ली-अहमदाबाद मेल से सेठ कस्तूरभाई लालभाई पधार रहे हैं। कल विजयनगर में सेठ चंपा लाल चौध-री जैन छात्रावास का शिलान्यास उन्हीं के कर-कमलो से होगा। क्या आप उनके स्वागतार्थ स्टेशन पर चलना चाहेगे? 'मैंने कहा-क्यों नहीं। यह मेरा परम सौभाग्य होगा' जीवन मे प्रथम बार जैन समाज के एक महान राष्ट्रीय पुरुष के दर्शनों का सुअवसर मिलेगा। स्टेशन पर पहुँचने पर देखा, व्यापार जगत के सभी गणमान्य व्यक्ति पलकें बिछाये हाथ मे पुष्प-माला लिए अंपने प्रिय नेता, पथप्रदर्शक के स्वागतार्थ उमंग भाव से खडे थे। शीत की पराकाष्ठा भी थी। पर कोई चिंता नहीं, सब के दिल मे सेठ कस्तूरभाई के प्रति अगाध प्रेम जो था। ठीक समय पर गाडी प्लेटफार्म पर पहुची, जैसे ही सेठ जी डिब्बे से निकले उनकी जय-जयकार से आकाश गूजने लगा। उनका गला पुष्पहारो से भर गया। सेठजी के साथ उनके चिरंजीव श्रेणिक भाई, सिद्धार्थ भाई एव बहिन भी थीं। हम लोग गर्म कपडे पहने भी सर्दी से ठिठुर रहे थे। किन्तु सेठजी शुद्ध सफेद सूती कोट पहने थे। ऐसी भयंकर सर्दी मे भी अटूट सहन शक्ति, चेहरे पर वही सेवा भाव था। सेठजी ने प्लेटफार्म पर पैर रखा और रखते ही पूछा, क्यो भाई राम सिंह कैसे हैं? पहले उसे देखने अस्पताल ही चलूगा। सब मोटरें अस्पताल की ओर मुड गयीं।

श्री राम सिंह चौधरी भी ब्यावर निवासी थे और अहमदाबाद मे रूई का बडा व्यापार करते थे। बडे अध्यवसायी और निष्ठावान थे। कुछ वर्ष पहले वे पन्ना लाल कांकरिया एण्ड संस मे मुनीम थे। सेठ कस्तूरभाई उनको खूब चाहते थे। उनको अपना दीवान मानते थे। श्री राम सिह चौधरी ही विजय नगर मे अपने पिता चंपालाल जी चौध-री की स्मृति में सात लाख की लागत से छात्रावास बनवाने जा रहे थे। चौधरी साहब के प्रेम व प्रार्थना पर ही सेठ कस्तूरभाई शिलान्यास हेतु इस ८३ वर्ष की वृद्धावस्था में भी युवकों का-सा उत्साह लिये पधारे थे। पर भाग्य की विडम्बना देखिये श्री राम सिंह जी सपरिवार अहमदाबाद से मोटरकार द्वारा व्यावर आ रहे थे। ब्यावर कुछ ही दूर रह गया था। ड्राइवर को दिन मे भी नींद की झपकी आ गयी। दुर्घटना हो गयी, अस्पताल मे भरती होना पडा। कहावत है मनुष्य जो सोचता है वह नहीं होता, होनहार होता है वही होता है।

सेठ जी अस्पताल से राम सिंह जी के घर भी गये, वहां राम सिंह जी के परिवार वालों ने आरती उतारी। वहां से सेठजी कांकरिया निवास पधारे। काकरिया त्रय बन्धु श्री पूनमचंद जी, श्री प्रेमराज जी, श्री नेमीचंद जी उनका सारा परिवार व बन्धु-बान्धव ने सेठजी का भाव-भीना स्वागत किया। भोजनोपरात सेठजी ने कहा सुबह ठीक ७ बजे मोटर द्वारा विजयनगर प्रस्थान करना है।

जिन्हे मेरे साथ चलना हो तैयार रहे, एक मिनट भी मैं किसी का इतजार नहीं करूंगा। समय कीमती है, समय की पाबंदी आवश्यक है। मैंने प्रातःकाल देखा, सेठजी सपरिवार पौने सात बजे मोटर से जाने के लिये तैयार थे। सेठजी की गाडी में पूनमचंद जी कांकरिया, अशोक भाई दलाल, सेठ जी के पीछे की सीट पर थे। आगे की सीट पर मैं व श्री लक्ष्मीनारायन गुप्ता थे। मैं अपने भाग्य की सराहना कर रहा था कि सेठजी के साथ कुछ घंटे साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रास्ते में श्री कांकरिया से पूछा विजयनगर कितना दूर है? उन्होंने कहा विजयनगर तो सिर्फ २८ माईल है किन्तु सडक खराब होने से हम दूसरी सडक से जा रहे हैं। ६० मील का चक्कर पड जायेगा। सेठजी तत्काल बोल उठे, इतना समय खराब क्यों किया? हमे समय बचाकर खराब सड़क से जाना उचित था। मैं मन मे सोच रहा था सेठजी समय के कितने पाबन्द है। बातचीत के दौरान श्री पूनमचंद जी कांकरिया ने सेठजी से पूछा, अगले साल अधिक मास है, दो सावन हैं सम्वत्सरी कब होगी? सेठजी ने कहा मैं तो चाहता हूँ सब जैनियो की सम्वत्सरी एक ही दिन हो किन्तु हमारे आचार्य लोग ऐसा नहीं होने दे रहे हैं। मैं मन ही मन सोच रहा था सेठजी के दिल में जैनियों

जब श्री टांटियाजी ने कानपुर छोड़ दिया फिर भी एक-दो बार उनसे कानपुर स्टेशन पर ही अचानक भेंट हो गयी। मैंने प्रणाम कर पांव छूना चाहा तो गले से लगा लिये। बोले, क्यों व्यापार तो ठीक चल रहा है, सभी घर बच्चे मजे में हैं, अपने व्यापारी हैं, तराजू का पल्ला हर वक्त चलता रहना चाहिये, हमारा व्यापार अमर है तो हम भी निश्चय ही अमर हैं। व्यापार में हर वक्त चौकस सावधान रहना।

जब श्री टांटिया जी के बीमारी और पीछे स्वर्गवास का समाचार मिला तो मुझे अपार मानसिक दुःख हुआ। रह-रह कर उनकी रहनुमाई मुझे याद आने लगी। श्री टांटिया जी को मैंने सदा पिता की तरह आदर भाव दिया था। मैंने सुना -उनकी कोई पुस्तक निकली है उसके लिए भाई श्री नंदलाल जी टांटिया को कई बार फोन किया एवं पत्र भी लिखा -वह पुस्तक मुझे आप जरूर भेजो। पर संयोगवश वे न भेज सके। अभी युग दृष्टा कवि और [illegible] कन्हैया लाल जी सेठिया से अनुरोध किया तो उन्होंने अपनी पुस्तक 'श्री रामेश्वर टांटिया समग्र' भेंट करदी। इस पुस्तक की अधिकांश सामग्री तो मेरे पहले से पढ़ी हुई थी, डायरी के पन्ने पढ़े तो उसमें श्री टांटिया जी ने लिखा है कि मैं [illegible] बार लोकसभा के चुनाव में ८००० वोट से सुजानगढ़ क्षेत्र से हार गया जहां हारने की तनिक भी उम्मीद न थी।

आज मुझे स्मरण आता है कि टांटिया जी की इस हार का पचास प्रतिशत कारण मैं ही हूं। श्री टांटिया जी सीकर से लोकसभा के चुनाव में खड़े थे। उनके प्रतिस्पर्धी थे श्री गोपाल जी साबू। श्री साबू जी हमारे हाथरस के हैं उनकी दुकान भी वशीधर नंदलाल के नाम से है। श्री साबूजी के अनुज श्री दुर्गा प्रसाद जी मेरे मित्र हैं।

चुनाव के दिनों मे श्री साबू जी मेरी हाथरस दुकान पर पधारे, बोले बांठिया जी सुजानगढ़ में मेरा कतई सम्पर्क नहीं है, आपके ओसवालों की अधिक बस्ती है, इस तरफ के आपके कई प्रतिष्ठित व्यापारी भी आपके सम्पर्क में हैं। मैंने जवाब में कहा श्री टांटिया जी आपके मुकाबले में हैं, उनके विरोध में जाना मेरे लिए संभव नहीं है। फिर भी यदि आप जनसंघ के चुनाव चिन्ह 'दीपक' पर चुनाव लड़ते हैं तो मैं भरसक सहयोग करूंगा। चुनाव चिन्ह का अधिकृत पत्र मुझे दिखा दिया। मैंने सुजानगढ़ क्षेत्र के पचास के लगभग मेरे मित्रों, रिश्तेदारों व व्यापारियों के नाम से पत्र लिखकर उनको थमा दिये, जिसमें मैंने लिखा था तन-मन-धन से श्री साबू जी को चुनाव मे सहयोग दें। इनको वोट दिलवायें, हमारी पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी हैं। चुनाव के बाद पता चला कि श्री साबू जी विजयी हो गये हैं और श्री टांटिया जी हार गये हैं। यह बात सन् १९६६ ई. के लगभग की है। कुछ महीनों बाद श्री साबू जी मुझे बधाई देने अथवा आभार प्रकट करने मेरे पास हाथरस पधारे।

श्री टांटिया जी सेवा और सादगी की सरल प्रतिमूर्ति थे। मोटा खद्दर पहनते थे। गांधी जी के सत्य-अहिंसा के सिद्धान्तों पर उनका अटूट विश्वास था। विश्व भ्रमण उन्होंने अकेले में ही किया किन्तु सुरा-सुन्दरी का लोभ उनको आकर्षित न कर सका। जहां भी काम किया अपना विश्वास जमाया। सभी के विश्वास-पात्र रहे। [illegible] के चार-पांच बार कोषाध्यक्ष बने।

श्री जी.डी. बाबू के अंतरंग प्रेमियों में से थे। अपने अथक परिश्रम, व दादा जी के आशीर्वाद एवं भाग्य ने उनका साथ दिया। एक से राजा बन गये पर अभिमान उनको छू तक नहीं गया। उन्होंने अपने दादाजी की कई इच्छायें पूर्ण की, स्कूल, अस्पताल एव धर्मशालाये बनादी। वे पक्के मानवतावादी थे। जब टांटिया जी बम्बई [illegible] अस्पताल मे डाइलिसिस पर थे उन्होंने एक बहिन का करुण क्रन्दन सुना तो उसे भी [illegible] देकर उसके पति के किडनी का आपरेशन करा दिया। मारवाड़ी-समाज में [illegible] की बहुत बड़ी बस्ती है [illegible] में आने से उनके दैनिक जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। [illegible] थी। पक्के अहिंसावादी थे। इसी पथ पर अंत समय तक चलते रहे।

"आज" गणतन्त्र दिवस विशेषांक
२६ जनवरी, [illegible]

ब्रजभाषा की एक अज्ञात कवयित्री

रत्नकुँवरि बीबी

****

रत्न कुँवरिबीबी एक ऐसी विदुषी ब्रजभाषा की कवयित्री है जो जैन परिवार में जन्म लेकर भी कृष्ण–भक्ति मे इतनी लवलीन हो गयीं कि उन्होने "प्रेमरत्न" नामक कृष्णलीला का वर्णनात्मक काव्य ग्रन्थ वि.सं. १८४४ माघ सुदी? पंचमी मंगलवार को रचकर उसे कृष्णार्पण कर दिया। वे संस्कृत एवं फारसी की भी विदुषी थीं। संगीत इनका प्रिय विषय था। संयोग से वह हिन्दी गद्य के उन्नायक राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की दादी थीं। सितारे हिन्द ने उनसे बहुत कुछ सीखा। सितारे हिन्द में इतनी बहुमुखी योग्यता हो गयी थी कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इनको सदा अपना गुरु माना और सम्मान किया।

जगत सेठ घराना और सितारे हिंद घराना आपस मे दूध शक्कर की तरह घुले मिले एक थे। सितारेहिंद घराने के ही सेठ फतेहचंद अपने मामा सेठ माणकचंद के गोद गये थे जो आगे जाकर 'जगतसेठ' पदवी के धारक बने। रत्नकुँवरि बीबी राजा डालचन्द गोखरू (ओसवाल) की पुत्री और राजा उत्तमचन्द की बहिन थीं। रत्नकुँवरि बीबी का विवाह बनारस के राजा बच्छनराज नाहटा के साथ हुआ था। राजा उत्तमचंद के कोई सतान न थी अत: उन्होंने अपनी बहिन रत्नकुँवरि के पुत्र गोपीचद (बाबू चद) को गोद लिया। राजा गोपीचंद के पुत्र राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद और पुत्री गौतमी बीबी हुई।

हिन्दी जगत में रत्नकुँवरि बीबी का सर्वप्रथम उल्लेख जोधपुर के मुशी देवी प्रसाद जी ने 'महिला मृदुवाणी' पुस्तक में जिसमें ३५ कवयित्रियो का परिचय छपा है –– किया। यह पुस्तक ईसवी सन् १६०५ में नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्रकाशित हुई थी। पुस्तक की १६ वीं कथा में पृ० ७२–७४ में रत्न कुँवरि बीबी का परिचय इस प्रकार दिया है––

–रत्न कुँवरि बीबी जाति की ओसवाल और काशी की रहने वाली थीं। ये कवियत्री कुलागंना जगत सेठ मुर्शिदाबाद के घराने में हुई हैं। इनकी कविता अति रुचिकर और रसमयी हैं, इन्होंने 'प्रेमरत्न' नामक एक ग्रंथ(वि सं १८४४)बनाया था जिसका भगवत भक्तो मे बहुत प्रचार है, क्योंकि उसमें श्रीकृष्ण ब्रजचन्द्र आनन्द कन्द की लीलाओं का उल्लेख परम प्रिय और प्रचुर प्रीति से किया गया है।

भारत गवर्नमेण्ट के विभाग के सुविख्यात ग्रंथकार राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद जो अभी कई वर्ष पहले तक विद्यमान थे, इन्हीं रत्नकुँवरि जी के पोते थे।

'प्रेमरत्न' ग्रंथ को राजा शिवप्रसाद जी ने ही प्रकाशित किया था। इस पुस्तक की भूमिका में वे लिखते हैं। ___

'वे संस्कृत में बड़ी पडित थीं। छहों शास्त्रों का वेत्ता थीं। फारसी भी इतनी जानती थीं कि मौलाना रूम की 'मसनवी' और 'दीवान शम्सत वरेज' जब कभी हमारे पिता पढकर सुनाते थे तो वह उसका सम्पूर्ण आशय समझ लेतीं गाने बजाने मे अत्यन्त निपुण थीं और चिकित्सा यूनानी और हिन्दुस्तानी दोनो प्रकार की जानती थीं। योगाभ्यास में परिपक्व और यम–नियम और वृत्ति ऋषि मुनियों की सी, सत्तर वर्ष की अवस्था मे भी बाल काले और आँखों की ज्योति बालकों की सी, वह हमारी दादी थीं। इससे हमको अब उनकी अधिक प्रसंशा लिखने में लाज आती है। परन्तु जो साधु संत और पंडित लोग उस समय के उनके जानने वाले काशी में वर्तमान मे हैं। उनके गुणों को अद्यावधि स्मरण करते हैं।'

'प्रेमरत्न' ग्रंथ की पुस्तक कलकत्ता की नेशनल लाइब्रेरी में हिन्दी विभाग मे सुरक्षित है। इसके मंगलाचरण और अन्त के कुछ सोरठों के नमूने यहाँ दिये जाते हैं।___

की एकता के लिये कितनी गहरी टीस है, वेदना है। सब जैनी कम से कम श्वेताम्बर समाज एक ही दिन संवत्सरी मनाये तो क्या ही अच्छा हो। सेठजी अभी आशावादी हैं। समय आयेगा, जैनी एक ही दिन सम्वत्सरी मनायेंगे।

हमारी मोटर कार कोलतार की काली सड़क पर सरपट चली जा रही थी। रास्ते में रूपाना गांव से २ फर्लांग भीतर था, वहां के निवासी ढोल बाजे के साथ पताका लिये हुए सेठजी के स्वागत में खड़े थे। रूपाना गांव में आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी की मदद से प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ है। हम सभी गांव में गये। मन्दिर का दर्शन किया। सभी गांव-वासियों ने सेठजी को जैन समाज व गांव की ओर से अभिनंदन पत्र भेंट किया। गांव वालों ने मिडिल स्कूल के भवन के लिए सहायता मांगी। सेठ जी ने उचित सहायता का आश्वासन दिया।

विजयनगर अजमेर जिले में सुन्दर औद्योगिक बस्ती है जिसकी स्थापना ५० वर्ष पूर्व मसूदा के राव विजय सिंह जी ने की थी। यहा जैन मन्दिर है। सुन्दर स्थानक है। सुन्दर तेरहपंथी भवन भी है। स्थानकवासी मुनि श्री पन्नालाल जी, जिनका उपनाम "प्राज्ञ" था, की इस नगर पर पूरी कृपा रही।

यहां के जन-जीवन को अपने प्रवचन स्वाध्याय से खूब प्रभावित किया। यही कारण है कि उनके स्वर्गवास के बाद विजयनगर की जनता ने उनके स्मृति स्वरूप श्री प्राज्ञ जैन महाविद्यालय की स्थापना की। इसी महाविद्यालय के छात्रावास का शिलान्यास सेठ कस्तूर भाई लाल भाई के कर कमलों से होने जा रहा था।

विजयनगर आज नवीन दुल्हन की तरह सेठ जी के स्वागत में सजा हुआ था। सौ से अधिक तोरण द्वार नगर की सभी संस्थाओं व समाज की ओर से लगाये गये थे। सारा विजयनगर महान उद्योगपति, सेवाभावी, दानवीर पद्मभूषण सेठ कस्तूर भाई लाल भाई के स्वागत मे आतुर था। सेठजी ने सर्वप्रथम स्थानक में पहुंचकर स्थानकवासी मुनियों के दर्शन किये।

फिर जैन श्रावक रत्न सेठ गुमानमल जी चोरड़िया के साथ रथारूढ होकर गाजे-बाजे के साथ चल पड़े। महाविद्यालय का मंडप और जहां छात्रावास का शिलान्यास होना था सेठ जी ने सारगर्भित संक्षिप्त भाषण दिया। श्री गुमानमल जी चोरड़िया ने मुनि पन्ना लाल जी 'प्राज्ञ' की स्मृतियों मे प्रकाशित पुस्तक [illegible] का विमोचन किया। अध्यक्षता की स्थानीय विधायक राव नारायण सिंह जी मसूदा ने, अन्त में धन्यवाद का प्रस्ताव रखा महाविद्यालय के अध्यक्ष श्री भीमसिंह संचेती ने। छाजेड़ भवन मे हमने सेठ जी के साथ भोजन किया। प्रस्थान के समय मैं ब्यावर में श्री कांकरिया बन्धुओं के साथ दादावाड़ी पर ठहर गया और सेठजी सपरिवार श्री राणकपुर तीर्थ की ओर पधार गये। वहां से करेड़ा पार्श्वनाथ पधारे जहां माघ सुदी १३ को प्रतिष्ठा होनी थी। सेठजी के साथ बिताया यह समय मुझे सदैव याद रहेगा।

'वल्लभ सन्देश' जयपुर
वर्ष ५ अंक ४ तथा "कुशल- निर्देश" जून १९९१

रत्नकुँवरि के ससुराल एवं पीहर के दोनो घर अभी भी वाराणसी मे बारहद्वारी के आसपास निवास करते है। यदि शोध प्रेमी विद्वान खोजे करे तो इस कवयित्री की और रचनाओं का भी पता चल सकता है।

"बृजलोक"
रामनारायण अग्रवाल अभिनंदन ग्रन्थ
मार्च१६६२

□□□□□□□□

श्रद्धेय बाबू जी

डा० रामकुमार जी वर्मा जिन्हे हम प्यार एवं श्रद्धा से 'बाबू जी" कहते थे–अपने जीवन काल मे साहित्याकाश में नक्षत्र की तरह चमकते रहे। इनका नाम तो बचपन से ही सुना करता था। बचपन से ही पूज्य मामा जी अगरचन्द जी नाहटा के साथ प्रतिदिन सत्संग मे रहने से मुझे साहित्य व इतिहास के प्रति रूचि जागृत हुई। मामाजी का हिन्दी जगत के सभी विद्वानों, कवियों एवं साहित्यकारों से सम्पर्क था। वे बाबू जी की विलक्षण प्रतिभा के बारे में यदाकदा बताते रहते थे, और इसीलिए बाबू जी के प्रति मन में श्रद्धा बैठ गई।

वर्षो बीत गये–कभी बाबू जी के सम्पर्क में आने का अवसर नहीं मिला। आपका प्रथम दर्शन करने का सौभाग्य मारवाडी पुस्तकालय के 'तुलसी समापन समारोह" में सन् १६७२ मे प्राप्त हुआ था। उनका सरल स्वभाव तथा मधुर कठ से काव्य पाठ सुनकर मन गद्‌गद् हो गया और डाक्टर साहब के बारे में जो बचपन मे सुन रखा था–उसको आज प्रत्यक्ष अपने नेत्रो से साक्षात देखकर मन–मयूर नाच उठा।

संयोग से हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का ४५ वां अधिवेशन जब कानपुर में हुआ और मुझे स्वागत–मन्त्री का दायित्व सौंपा गया तो १७ जून १६८६ का वह सौभाग्यशाली दिन था–डाक्टर साहब के स्वागत का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता बाबू जी ने ही की थी। रूग्ण अवस्था मे ही कानपुर पधारे–सहारा लेकर मंच पर पधारे–उनमे कितनी जीवट शक्ति थी–कितना मां हिन्दी भारती के प्रति असीम प्रेम–इसी कारण सब कष्ट सहन करते हुये भी इस ऐतिहासिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में पधारे। धारावाही जो प्रवचन दिया–बीच बीच मे जो काव्य–पाठ का संपुट दिया–श्रोतागण मुग्ध हो गये। डा.साहब के सान्निध्य में दो दिन बातचीत एव सत्संग का अवर्णनीय आनन्द प्राप्त किया।

१४ सितम्बर १६६० का दिन भी स्मरणीय रहेगा। अब तक बाबू जी शरीर से काफी शिथिल हो गये थे–फिर भी सहारा लेकर 'हिन्दी दिवस' पर जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से इलाहाबाद में महिला–विद्यापीठ के भवन में हुआ था–बाबू जी पधारे थे। सम्मेलन के प्रधान मन्त्री श्रीधर जी शास्त्री के विशेष आग्रह पर मैं व डा. बालकृष्ण गुप्ता भी इलाहाबाद इस समारोह में गये थे। मुख्य अतिथि थे वयोवृद्ध साहित्यकार श्री भंवरलाल जी नाहटा। इसी समारोह में सुप्रसिद्ध हास्य कवि काका हाथरसी का सम्मान किया गया और उन्हें 'साहित्य महोपाध्याय' की पदवी से अलंकृत किया

मंगलाचरण

अविगत आनन्द कन्द, परम पुरुष परमात्मा।
सुमिरि सुपरमानन्द, गावत कछु हरि यश विमल।।
पुनि गुरुपद शिर नाय, उर धरि, तिनके वचन वर।
कृपा तिनहिं की पाय 'प्रेमरत्न' भाषत रतन।।
अगम उदधि मधि जाहि, पंगु तरहि बिनु जिमि तरणि।
तैसिय रुचि मन आहि, अमित कान्ह यश गान की।।

प्रशस्ति

ठारह सै चालीस, अंत चतुर वर्ष जन वितत भय।
विक्रम नृप अवनीश, भए भयो यह ग्रंथ तब।।
माह माह के मांह अति शुभ दिन सित पंचमी।
गायो परम उछाह, मंगल मंगल बार वर।।
कहयो ग्रंथ अनुमान, त्रय शत अरसठ चौपई।
तहि अर्थ रू अठजान, दोरा सौरह सौरठा।।
काशीनाम सुगम, धाम सदा शिव को सुखद।
तीरथ धाम ललाम, सुभग मुक्ति वरदान छम।।
ता पावन पुर माँहि, भयो जन्म या ग्रंथ को।
महिमा वरणि न जाहि, सगुण रूप यश रस भयो।।
कृष्ण नाम सुख मूल, कलिमल दुख भंजन भजत।
पावहि भवनिधि कूल, जाके मन यह रस रमहि।।
कुरुक्षेत्र शुभ थान, ब्रजवासी हरि को मिलन।
लीला रस की खान, 'प्रेमरत्न' गायो रतन।।

भारतीय भाषाविद सुप्रसिद्ध विद्वान सर जी. ए. ग्रियर्सन ने भी 'मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' नामक ग्रंथ के पृष्ठ ६६ में रत्न कुँवरि जी के विषय में क्रमांक नं. ३०६ में वर्णन किया है। सर ग्रियर्सन राजा शिवप्रसाद के मित्र थे और उनके विषय में राजा साहब ने ग्रियर्सन साहब को सन् १८८७ में जो पत्र लिखा था उसका सारांश यह था कि बीबी रत्न कुँवरि जी का लगभग ४५ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हुआ था। उस समय राजा साहब की अवस्था १९ वर्ष की थी और उनकी पितामही की ६० या ७० वर्ष के बीच की थी। रत्नकुँवरि के हस्ताक्षर बड़े सुन्दर थे। इन्होंने इस ग्रंथ के अतिरिक्त बहुत से फुटकर पद्य भी लिखे थे जो यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं और अभी अप्रकाशित हैं।

हेरीटेज आफ इण्डिया सीरीज में के.ई. साहब ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है। उस पुस्तक के पृष्ठ ८६ में बीबी रत्नकुँवरि और उनके 'प्रेमरत्न' ग्रन्थ की रचना का उल्लेख है।

रत्नकुँवरि जी की तरह इनकी पोती और राजा शिवप्रसाद की बहिन [illegible] बीबी भी जैन धर्म की अच्छी विदुषी थी। इन्होंने 'श्रीमद् रत्नशेखर सूरि कृत गुणस्थान क्रमारोह' का अनुवाद वि. सं. १८५४ फागुन सुदी ५ को प्रकाशित किया। इस ग्रंथ में आपने मूलग्रंथ की व्याख्या सरलता पूर्वक की है, जिससे इनके संस्कृत भाषा का ज्ञान परिलक्षित होता है।

वि. सं. १९८६ में कलकत्ता के स्वनामधन्य पुरातत्व प्रेमी बाबू पूर्णचन्द जी नाहर (बंगाल के भू. पू. उप मुख्यमंत्री बाबू विजय सिंह जी नाहर के पिताश्री) ने 'ओसवाल नवयुवक' मासिक पत्र के वर्ष ५ अंक ५ में बीबी रत्नकुँवरि जी का संक्षिप्त परिचय प्रकाशित कराया था।

सन् १६७८ में कंपिल महोत्सव सात दिन मनाने का निश्चय महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री आर० एन० त्रिवेदी जिलाधिकारी फर्रुखाबाद ने किया। कंपिल,जो प्राचीन काल मे दक्षिण पंचाल की राजधानी थी, के विषय में भी एक ऐतिहासिक संगोष्ठी कराने की इच्छा प्रकट की। कपिल के लोगो ने बताया कि इस क्षेत्र व यहाँ के इतिहास की जानकारी प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी को विशेष है, क्योकि जब वे मथुरा में क्यूरेटर थे, कई बार कंपिल आये थे। ८ वीं सदी की नृत्यगणेश की खंडित मूर्ति भी सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने ही यहाँ से लखनऊ भिजवाई थी। भारत सरकार की ओर से यह मूर्ति विदेशों में कई बार भारत महोत्सव मे भेजी गई, इससे कंपिल का नाम उजागर हुआ।

मैंने श्री बाजपेयी को कंपिल महोत्सव १–२ अक्टूबर १६७८ को "कंपिल" के इतिहास, साहित्य, पुरातत्व पर सगोष्ठी कराने हेतु अनुरोध किया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने सहर्ष यह आमंत्रण स्वीकार कर लिया (स्वयं संयोजक बने), अध्यक्षता के लिए श्री अगरचंद जी नाहटा को बीकानेर से बुलाया। इस सगोष्ठी का उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव ने किया। इसमे भाग लेने हेतु बाजपेयी जी के कई विद्वान मित्र डॉ० एन० पी० जोशी, डॉ० भगवानसिह सूर्यवंशी आदि पधारे। इस अवसर पर "कंपिल–कल्प" पुस्तक का भी प्रकाशन किया गया, जो अपने आप में अद्वितीय प्रकाशन है। इसका संपादन प्रो० बाजपेयी ने किया था। उसी समय से उनसे मेरा विशेष सम्पर्क हुआ।

श्री आर० एन० त्रिवेदी जब लखनऊ मे जिलाधिकारी बनकर सन् १६८४ मे आये तब उन्होने मुझसे कहा, पंचाल जनपद के इतिहास व पुरातत्व पर कुछ भी काम नहीं हुआ, शोध सस्थान की स्थापना की जाये। श्री बाजपेयी से मैंने अनुरोध किया। उन्होने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इसके लिए १ व २ जून १६८४ को राजस्थान एसोसियेशन के सहयोग से राजस्थान भवन मे "पचाल इतिहास पुरातत्व एवं सस्कृति" पर एक सेमिनार का आयोजन श्री बाजपेयी के सहयोग से हुआ । इसमे अनेक विद्वान बाहर से पधारे। राजकीय सग्रहालय लखनऊ ने इस अवसर पर एक " –पचाल–प्रदर्शनी" का भी प्रबन्ध किया। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री आर० एन० त्रिवेदी ने की। सभी विद्वानों की राय से पंचाल शोध सस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव पास हुआ। पचाल शोध संस्थान का उद्घाटन गृह राज्यमंत्री श्री गोपीनाथ दीक्षित ने १४ अगस्त १६८५ को मारवाडी पुस्तकालय मे किया । शोध संस्थान की ओर से एक शोध संदर्भ लाइब्रेरी श्री अगरचंद्र जी नाहटा की स्मृति मे स्थापित की गई। प्रो० के० डी० बाजपेयी प्रथम पाँच वर्ष के लिये अध्यक्ष बने और श्री आर० के० पाल महामत्री।

अब तक पॉच अधिवेशन पचाल शोध सस्थान के प्रो० के० डी० बाजपेयी जी के निर्देशन सफल हुये जिसमें रामपुर मे आयोजित "अहिच्छत्रा–महोत्सव" तो गज़ब का हुआ। इस महोत्सव मे उद्घाटन करने उड़ीसा के विद्वान राज्यपाल डा० विशम्भरनाथ पाण्डे पधारे। सबको अहिच्छत्रा के खडहरो के दर्शन हेतु रामनगर (आँवला तहसील) ले जाया गया।

श्री बाजपेयी का इधर अतिम वर्षो मे सम्राट हर्षवर्द्धन की १४०० वर्षो की जन्म शताब्दी महोत्सव मनाने का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। उन्होने इसके लिये केन्द्रीय सरकार से बहुत पत्राचार किया कि सरकार स्वय यह कार्य करे। जब वे सब तरफ से निराश हो गये तो मुझसे कहा, पचाल सस्थान की ओर से पहल की जावे। अंत मे कन्नौज के डॉ० प्रतापनरायन टण्डन व उनके मित्रो के सहयोग से एक समिति का गठन किया गया। कई झंझावातो के बाद सम्राट हर्षवर्द्धन का चतुर्दश शताब्दी समारोह कन्नौज मे १–२ दिसम्बर, १६८० को आयोजित किया गया। गौरी शंकर मंदिर कन्नौज के प्रागंण में सम्राट हर्षवर्द्धन की मूर्ति प्रतिस्थापित हुई। सम्राट हर्षवर्द्धन की भारत वर्ष मे यही अकेली मूर्ति अभी तक बनी है। इस समारोह में विद्वानों के अतिरिक्त कानपुर के दो पूर्व कुलपति एव वर्तमान कुलपति डॉ० विशम्भर नाथ उपाध्याय प्रमुख अतिथि थे। विधान परिषद लखनऊ के सभापति श्री शिवप्रसाद गुप्त समापन समारोह के प्रमुख अतिथि थे।

श्री बाजपेयी का मेरे ऊपर सदा अपार स्नेह पितातुल्य रहा। मेरे मामाजी के श्री बाजपेयी परम मित्रों में से थे। मैंने भी श्री बाजपेयी को उसी तरह सम्मान दिया उनकी हर राय को राम वाक्य माना। उनके आदेशो को पूरा करने का भरसक प्रयास किया। सन् १६८४ से अब तक जब भी बाजपेयी जी कानपुर पधारते, मेरे आवास को ही सुविधा-असुविधा का रंच-मात्र भी ख्याल न कर उसे अपने चरणो से पवित्र किया।

श्री वाजपेयी जी का अंतिम पत्र मेरे पास २२५९२ को हाथरस आया, उसका विवरण इस प्रकार है-

ता० २२५१९९२

प्रियवर बॉठिया जी,

आपका १५/५ का पत्र मिला। मैने आपको लखनऊ में स्थापित होने वाले जैन प्रतिष्ठान के बारे मे अपना बडा प्रोजेक्ट कानपुर के पते पर भेजा है। उसे देख लेना।

मेरे तथा डॉ० अरोरा के प्रयास से बरेली मे जैन चेयर की स्थापना के लिए वहाँ के विश्वविद्यालय को प्रोफेसर के वेतन के लिए पॉच हजार रुपये मासिक देना स्वीकार किया है। आशा है विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अच्छा विद्वान मिल जायेगा।

"पंचाल" जर्नल के बारे में क्या निश्चित किया।

भवदीय

कृष्ण दत्त वाजपेयी

"सूर सौरभ" त्रैमासिक आगरा, प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी स्मृति अंक,
वर्ष ८ अंक १/२ अक्टूबर से मार्च १९९३

प्रो० वाजपेयी का कानपुर प्रेम

प्रोफेसर कृष्णदत्त वाजपेयी का विद्यार्थी जीवन से ही कानपुर से अटूट सम्बन्ध रहा है। उन्होंने यहीं के कालेज से ही इन्टरमीडियेट की शिक्षा प्राप्त की। कानपुर के आस-पास के ऐतिहासिक स्थानों का उन्होंने स्वयं गांव-गावं जाकर निरीक्षण किया। कानपुर विश्वविद्यालय स्थापित हो जाने के बाद इनका अक्सर कानपुर जाना आना प्रारम्भ हो गया। सन् १९७८ में "कम्पिल महोत्सव" सपत्र हो जाने के बाद उनकी यह धारणा बन गई कि प्राचीन पंचाल जनपद का यह क्षेत्र पुरा– सपदाओ से भरा पडा है, और कानपुर में एक पुरातत्व महत्व का सग्रहालय यहा स्थापित होना चाहिए। इसके लिए वाजपेयीजी ने, जो सन् १९५१ से १९५३ तक जब लखनऊ मे राज्य सरकार के पुरातत्व अधिकारी थे, बडा प्रयास किया। तत्कालीन मुख्यमंत्री डा० सम्पूर्णानन्दजी ने श्री वाजपेयी जी के इस प्रस्ताव की काफी सराहना की और उसके लिये अपनी सहमति भी प्रकट करदी, किन्तु फिर वाजपेयी जी के लखनऊ छोड देने पर यह कल्पना साकार न हो सकी।

सन् १९७८ मे श्री वाजपेयी ने माननीय मंत्री श्री गणेश दत्त वाजपेयी को २३ अगस्त, १९७८ को कानपुर में संग्रहालय खोलने के लिये पत्र लिखा तथा १६ अगस्त १९८६ को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी को पत्र लिखा तथा १७ अगस्त १९८६ को मुझे एक पत्र दिया कि मैं लखनऊ जाकर मुख्यमंत्री से मिलने का कार्यक्रम बनॊऊ। मैने प्रयास भी किया,परिस्थितियां बदलती गई और सफलता नहीं मिली।

अब वर्तमान भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री कल्याणसिंह से निवेदन है कि कानपुर का ऐतिहासिक महत्व समझ कर यहां शीघ्र 'राजकीय पुरातत्व संग्रहालय' स्थापित करने वास्ते घोषणा करे। श्री वाजपेयी जी के तीन पत्र ऐतिहासिक महत्व के हैं, इसलिए उनको अविकल यहां प्रकाशित कियाजा रहा है।

श्री बाजपेयी से जब भी मैंने कहीं पधारने का अनुरोध किया सहर्ष उसे स्वीकार कर सब जगह पधारे, सन् १९८६ में मामाजी की तृतीय पुण्य तिथि पर बीकानेर पधारे। सन् १९८७ में भगवान विमलनाथ के [illegible] मेले पर कंपिल पधारे। १९८७ में वीरायतन उपाध्याय कवि श्री अमर मुनिजी के दर्शनार्थ राजगृह पधारे। मेरे पूज्य पिता सेठ फूलचंद बांठिया के शताब्दी वर्ष सन् १९८९ में हाथरस पधारे। प्रत्येक वर्ष में २०-२५ दिन मुझे श्री बाजपेयी के साथ रहने का, घूमने, फिरने व सत्संग का लाभ मिला। यह मेरा परम सौभाग्य रहा। श्री बाजपेयी जब भी कानपुर [illegible] मुझे सागर आने का निमंत्रण दे जाते। श्री बाजपेयी अंतिम बार २६ दिसम्बर १९९१ को कानपुर पधारे, तीन दिन रहे। उन्होंने कई काम पूरे किये। सुश्री मीना गुप्ता जो पंचाल के इतिहास पर पी-एच.डी. श्री बाजपेयी के निर्देशन में कर रही हैं, उसकी थीसिस का अवलोकन किया।

३० दिसम्बर को कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० विशम्भरनाथ उपाध्याय के आमन्त्रण पर मैं, श्री प्रकाश, श्री बालकृष्ण गुप्ता श्री बाजपेयी के साथ कुलपति आवास पर गये। एक घंटा सौहार्दपूर्ण वार्ता हुई। डॉ० उपाध्याय ने कहा हम आपका ४ अप्रैल को अभिनंदन करना चाहते हैं, मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी को [illegible] डी०लिट् की उपाधि से सम्मानित करना चाहते हैं। मंत्री जी की कोई सूचना नहीं मिली है। पंचाल शोध संस्थान का अपना भवन व कार्यालय स्वतंत्र रूप से हो जावे तो इसको मैं विश्वविद्यालय की मान्यता भी दे दूँगा।

पंचाल शोध संस्थान के भवन के लिए कानपुर विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री आर.एन. त्रिवेदी से फोन पर बात की। उन्होंने दूसरे दिन प्रातः ८ बजे घर पर आने का निमंत्रण दिया। ३१ दिसम्बर को प्रातः ८ बजे मैं श्री बाजपेयी, श्री बालकृष्ण गुप्ता व श्री प्रकाश बाँठिया के साथ श्री त्रिवेदी जी के मोती झील आवास पर गये। श्री बाजपेयी ने भूमि के लिए शोध संस्थान की ओर से एक आवेदन पत्र श्री त्रिवेदी जी को दिया। श्री त्रिवेदी जी ने तुरन्त नगर योजना सचिव श्री वर्मा को लिख दिया—पंचाल शोध संस्थान के लिए शहर में उपयुक्त भूमि की तलाश करें। [illegible] से वापिस आकर दोपहर की गाड़ी से वह सागर चले गये।

श्री बाजपेयी जी से मेरी अंतिम भेंट १ फरवरी १९९२ को दिल्ली हाउस में भगवान ऋषभदेव पर आयोजित सेमीनार में हुई। शाम को हम लोग श्री हरखचंद नाहटा के साथ मानव संसाधन मंत्री के आवास पर गये। मंत्रीजी ने कहा, ३ फरवरी को शाम को आयें, आपसे खुलकर काफी बातचीत करेंगे। मैं तो १ फरवरी की रात की गाड़ी से बीकानेर चला गया क्योंकि मेरे पिताजी सेठ फूलचंद जी बाँठिया की स्मृति में आयोजित – पुरस्कार समारोह में मुझे शामिल होना था।

श्री बाजपेयी जी का सा० ८ फरवरी १९९२ का लिखा पोस्टकार्ड बीकानेर में मिला जिसका विवरण इस प्रकार है—

प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी
एल-९१ पद्माकर नगर
सागर-४७०००४
पत्रांक ०३/९२ — दिनांक ८.२.९२
प्रिय श्री बाँठिया जी,

आशा है बीकानेर में आपके कार्यक्रम सफल हुए होंगे। नाहटा जी के साथ मैं ३ फरवरी को मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह से मिला। उन्हें पुस्तकें भेंट कर दीं। कानपुर विश्वविद्यालय तथा पंचाल [illegible] में भी उनसे निवेदन किया। [illegible]

भवदीय
कृष्णदत्त बाजपेयी

श्री वाजपेयी जी का अंतिम पत्र मेरे पास २२५६२ को हाथरस आया, उसका विवरण इस प्रकार है-

ता० २२५१९६२

प्रियवर बाँठिया जी,

आपका १५/५ का पत्र मिला। मैने आपको लखनऊ मे स्थापित होने वाले जैन प्रतिष्ठान के बारे मे अपना बडा प्रोजेक्ट कानपुर के पते पर भेजा है। उसे देख लेना।

मेरे तथा डॉ० अरोरा के प्रयास से बरेली मे जैन चेयर की स्थापना के लिए वहाँ के विश्वविद्यालय को प्रोफेसर के वेतन के लिए पाँच हजार रुपये मासिक देना स्वीकार किया है। आशा है विजिटिंग प्रोफेसर के रूप मे अच्छा विद्वान मिल जायेगा।

"पचाल" जर्नल के बारे मे क्या निश्चित किया।

भवदीय

कृष्ण दत्त बाजपेयी

"सूर सौरभ" त्रैमासिक आगरा, प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी स्मृति अंक,
वर्ष ८ अंक १/२ अक्टबूर से मार्च १९९३

प्रो० बाजपेयी का कानपुर प्रेम

प्रोफेसर कृष्णदत्त वाजपेयी का विद्यार्थी जीवन से ही कानपुर से अटूट सम्बन्ध रहा है। उन्होंने यहीं के कालेज से ही इन्टरमीडियेट की शिक्षा प्राप्त की। कानपुर के आस-पास के ऐतिहासिक स्थानो का उन्होने स्वयं गांव-गावं जाकर निरीक्षण किया। कानपुर विश्वविद्यालय स्थापित हो जाने के बाद इनका अक्सर कानपुर जाना आना प्रारम्भ हो गया। सन् १९७८ मे "कम्पिल महोत्सव" संपन्न हो जाने के बाद उनकी यह धारणा बन गई कि प्राचीन पचाल जनपद का यह क्षेत्र पुरा– संपदाओ से भरा पडा है, और कानपुर मे एक पुरातत्व महत्व का संग्रहालय यहा स्थापित होना चाहिए। इसके लिए वाजपेयीजी ने, जो सन् १९५१ से १९५३ तक जब लखनऊ में राज्य सरकार के पुरातत्व अधिकारी थे, बडा प्रयास किया। तत्कालीन मुख्यमत्री डा० सम्पूर्णानन्दजी ने श्री वाजपेयी जी के इस प्रस्ताव की काफी सराहना की और उसके लिये अपनी सहमति भी प्रकट करदी, किन्तु फिर वाजपेयी जी के लखनऊ छोड देने पर यह कल्पना साकार न हो सकी।

सन् १९७८ में श्री बाजपेयी ने माननीय मंत्री श्री गणेश दत्त वाजपेयी को २३ अगस्त, १९७८ को कानपुर में संग्रहालय खोलने के लिये पत्र लिखा तथा १६ अगस्त १९८६ को तत्कालीन मुख्यमत्री श्री नारायणदत्त तिवारी को पत्र लिखा तथा १७ अगस्त १९८६ को मुझे एक पत्र दिया कि मैं लखनऊ जाकर मुख्यमंत्री से मिलने का कार्यक्रम बनाऊं। मैने प्रयास भी किया, परिस्थितियां बदलती गई और सफलता नहीं मिली।

अब वर्तमान भाजपा सरकार के मुख्यमत्री कल्याणसिंह से निवेदन है कि कानपुर का ऐतिहासिक महत्व समझ कर यहां शीघ्र 'राजकीय पुरातत्व संग्रहालय' स्थापित करने वास्ते घोषणा करें। श्री बाजपेयी जी के तीन पत्र ऐतिहासिक महत्व के हैं, इसलिए उनको अविकल यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री बाजपेयी से जब भी मैंने कहीं पधारने का अनुरोध किया सहर्ष उसे स्वीकार कर सब जगह पधारे,सन् १९८६ में मामाजी की तृतीय पुण्य तिथि पर बीकानेर पधारे। सन् १९८७ मे भगवान विमलनाथ के जन्मोत्सव मेले पर कपिल पधारे। १९८७ मे वीरायतन उपाध्यार कवि श्री अमर मुनिजी के दर्शनार्थ राजगृह पधारे। मेरे पूज्य पिता सेठ फूलचंद बाठिया के शताब्दी वर्ष सन् १९८६ में हाथरस पधारे। प्रत्येक वर्ष मे २०-२५ दिन मुझे श्री बाजपेयीजी के साथ रहने का, घूमने, फिरने व सत्संग का लाभ मिला। यह मेरा परम सौभाग्य रहा। श्री बाजपेयी जब भी कानपुर आते, मुझे सागर आने का निमंत्रण दे जाते। श्री बाजपेयी अंतिम बार २६ दिसम्बर १९९१ को कानपुर पधारे, तीन दिन ठहरे। उन्होने कई काम पूरे किये। सुश्री मीना गुप्ता जो पचाल के इतिहास पर पी-एच.डी श्री बाजपेयी के निर्देशन में कर रही हैं, उसकी थीसिस का अवलोकन किया।

३० दिसम्बर को कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० विशम्भरनाथ उपाध्याय के आमंत्रण पर मैं, श्री प्रकाश, श्री बालकृष्ण गुप्त श्री बाजपेयी के साथ कुलपति आवास पर गये। एक घंटा सौहार्दपूर्ण वार्ता हुई। डॉ० उपाध्याय ने कहा, हम आपका ४ अप्रैल को अभिनंदन करना चाहते हैं, मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी को मानद डी०लिट् की उपाधि से सम्मानित करना चाहते हैं। मंत्री जी की कोई सूचना नहीं मिली है। पंचाल शोध संस्थान का अपना भवन व कार्यालय स्वतंत्र रूप से हो जावे तो इसको मैं विश्वविद्यालय की मान्यता भी दे दूँगा।

पंचाल शोध संस्थान के भवन के लिए कानपुर विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री आर.एन.त्रिवेदी से फोन पर बात की। उन्होने दूसरे दिन प्रात ८ बजे घर पर आने का निमंत्रण दिया। ३१ दिसम्बर को प्रात ८ बजे मैं श्री बाजपेयी, श्री बालकृष्ण गुप्ता व श्री प्रकाश बाँठिया के साथ श्री त्रिवेदी जी के मोती झील आवास पर गये। श्री बाजपेयी ने भूमि के लिए शोध संस्थान की ओर से एक आवेदन पत्र श्री त्रिवेदी जी को दिया। श्री त्रिवेदी जी ने तुरन्त नगर योजना सचिव श्री वर्मा को लिखा दिया-पंचाल शोध संस्थान के लिए शहर में उपयुक्त भूमि की तलाश करें। फिर वहाँ से वापिस आकर दोपहर की गाडी से वह सागर चले गये।

श्री बाजपेयी जी से मेरी अंतिम भेट १ फरवरी १९९२ को दिल्ली हाउस मे भगवान ऋषभदेव पर आयोजित सेमीनार मे हुई। शाम को हम लोग श्री हरखचंद नाहटा के साथ मानव संसाधन मंत्री के आवास पर गये। मंत्रीजी ने कहा, ३ फरवरी को शाम को आये, आपसे खुलकर काफी बातचीत करेगे। मैं तो १ फरवरी की रात की गाडी से बीकानेर चला गया क्योकि मेरे पिताजी सेठ फूलचंद जी बाँठिया की स्मृति में आयोजित – पुरस्कार समारोह में मुझे शामिल होना था।

श्री बाजपेयी जी का ता० ८ फरवरी १९९२ का लिखा पोस्टकार्ड बीकानेर मे मिला जिसका विवरण इस प्रकार है-

प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी
एच-१५, पद्मा नगर
सागर-४७०००४
पत्रांक ७३/९२

दिनांक ८.२.१९९२

प्रिय श्री बाँठिया जी

आशा है बीकानेर में आपके कार्यक्रम सफल हुए होंगे। नाहटा जी के साथ मैं ३ फरवरी को मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह से मिला। उन्हे पुस्तकें भेंट कर दीं। कानपुर विश्वविद्यालय तथा पंचाल शोध संस्थान के सबंध में भी उनसे निवेदन किया। उन्होने अनिवार्य रूप से विश्वविद्यालय की कोई डिग्री स्वीकार करने मे असमर्थता व्यक्त की। परन्तु उन्होंने कहा कि वे कानपुर आयेगे और हमारे समारोहो मे भाग लेंगे। मैंने नाहटा जी को कह दिया कि वे पुनः मंत्री महोदय से मिलकर निश्चित तिथि ले लेंगे और कुलपति महोदय तथा आपको सूचित कर देंगे।

भवदीय
कृ०द० बाजपेयी

(4) The Government of Madhya Pradesh has recently announced that the State museum at Bhopal will be named after Barkatulla Khan, a distinguished freedom fighter. At Kanpur the public museum to be set-up may be named after Syt. Ganesh Shankar Vidyarthi or any other such personality.

I hope this suggestion will receive due attention of Government.

With best regards,

TO,
Syt. N.D.Tewari
Chif Minister,
U.P., Lucknow

Yours Sincerely,

(K.D.BAJPAI)

प्रिय बाँठिया जी तथा बच्चो को आशीष।

मेरा कार्ड मिला होगा। मुख्यमत्री जी को आज पत्र Under postel certification भेज दिया है। उसकी प्रतियां भेज रहा हूँ। आप अपने तथा कानपुर के खास लोगो के हस्ताक्षर इस पर करा ले और लखनऊ में मुख्यमंत्री जी से समय लेकर मिलें । यह काग्रेस शताब्दी वर्ष है। सभी राज्य (विषेशकर कांग्रेस राज्य) नये कार्य अपने यहा कर रहे हैं। संग्रहालय किसके नाम पर हो यह आप लोग तय कर ले। मध्य प्रदेश शासन ने भोपाल के राज्य संग्रहालय का नाम बदल कर बरकतुल्ला संग्रहालय कर दिया है।

झिंझोटा वाले लेख का मूल पाठ आपके पास या डा० पाल के पास होगा उसे भेज दें, जिसे अंग्रेजी और हिन्दी में छपवा दूँगा।

कन्नौज से डा० रमेश तिवारी का पत्र मिला कि डा० अग्निहोत्री का ट्रान्सफर लखनऊ हुआ है। तिवारी जी से पता पूछ कर लखनऊ मे उनसे मिल ले।

आपका
कृष्णदत्त बाजपेयी

o o o o o o o

(1)

Dear Sri Bajpai ji,

Kindly excuse me for writing this letter in English. One of my students, Dr. R. K. Paul, has obtained Ph. D. under my supervision on "*The Historical Geography of* Kanpur and Farrukhabad Districts. His work has been praised by eminent scholars. Dr. Paul *surveyed* almost the whole area of Kanpur and Farrukhabad districts. I visited some of the ancient sites with him. During our exploration work, it was found that these two districts are *profusely rich in archaeological* wealth.

When I was Archaeological officer of U.P. during the years 1951-53, I had requested Dr. Sampurnanand ji for *establishing an Archaeological Museum at Kanpur*. He had appreciated that idea and was very much in favour of establishing a good Archaeological Museum at Kanpur. Soon thereafter I left Lucknow and due to some other reasons the idea could not be meterialised.Now that you are in the U.P. government, I do hope that under your able guidance, the scheme will fructify. I have recently written to Sri N.Abarham, vice Chancellor of Kanpur University. for starting a Department of Ancient Indian History & Archaeology in the Christ Church College Kanpur. I have also written about opening an *Archaeology museum*.

On the 1st and 2nd October we are organising a function at Kampilya (distt. Farukhabad). This place is very ancient and was a center of Vedic, Buddhist and Jain religions for a long priod. We are bringing out a book on this occasion. My I request you kindly to spare some of your valuable time to attend the function on the 1st or 2nd October? *The detailed programme will be sent to you shortly.*
With kind regards.

To,

Sri Ganesh Dutt Bajpai
Minister of Local Self Govt.
Uttar Pradesh, Lucknow.

Your Sincerely
(K.D.BAJPAI)
Visiting Professor

(2)

Respected Sri Tewari ji,

The coutribution of Kanpur to our country's freedom struggle and to post *independence* economic development is considerable indeed. In the history and culture of the country the role of Kanpur and the region around has been remarkable .The ancient sites like Bhitargaon, Lala Bhagat and Mansadevi have yielded much valuable archaeological material.

(2) Unfortunately there is no public museum in Kanpur, which may preserve and exhibit the ancient *sculptures,coins, paintings, firmans and other historical records.* It is a great desideratum, which is felt by the people of Kanpur and other areas of the state.

(3) Now you are the Chief Minister of the biggest State in the country. It is fervently hoped that you will kindly take necessary steps for providing a public *museum for* this city. This will undoubtedly be in the National interest.

श्री हजारीमल बाँठिया-रचित साहित्य

विविध रचनाएँ

पूज्य भाईजी

यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पूज्य भाईजी श्री भँवरलाल जी नाहटा की ७५वीं वर्षगांठ 'अमृत-महोत्सव' के रूप में कलकत्ता के प्रबुद्ध नागरिकों की ओर से मनायी जा रही है। वैसे सन् १९७६ ई० में स्वनाम धन्य स्व० अगरचन्दजी नाहटा को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था-संयुक्त रूप से आपका भी अभिनन्दन "नाहटा बन्धु अभिनन्दन ग्रन्थ" के रूप मे किया गया था।

हमारे नाहटा परिवार मे दूसरी पीढ़ी में भँवरलालजी ही उम्र में सबसे बड़े हैं इसलिए सभी भाईजी के नाम से इन्हे पुकारते हैं। जिस वर्ष मेरा जन्म हुआ उसी वर्ष भाईजी का विवाह छोटा देवी से हुआ था। इनकी गोद में पला हूँ- और बचपन से ही न जाने क्यों मेरे मन मे इनके प्रति श्रद्धा, प्रेम एवं अटूट विश्वास रहा है।

भाईजी गृहस्थ मे होते हुये भी संत पुरुष हैं। इनके चेहरे पर कभी क्रोध की लालिमा नहीं देखी। जो कुछ भी साहित्य, पुरातत्व का काम किया अपने चाचा अगरचन्दजी नाहटा के साथ संयुक्त रुप से किया किन्तु स्वयं निर्लिप्त भाव से रहे, सभी चाचाजी के चरणों में समर्पित कर रखा था। इनकी कभी भी यह आकांक्षा नहीं रही कि इनका नाम हो, इन्हे यश मिले। यह एक ऐसा मानवीय गुण भाईजी मे है, जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं।

भाईजी का सारा जीवन सत्य निष्ठा से ओत-प्रोत है,.कभी झूठ या गलत बात का सहारा नहीं लिया। या तो मौन रहे या स्पष्ट रूप से खुल्लम-खुल्ला कहा। आपने मुझे एक दिन एंकात मे बताया-मैंने जीवन में कोई गलत काम नहीं किया। एक दो बातें अनजाने मे हो गयीं, उसका अभी भी मैं पश्चात्ताप कर रहा हूँ।

भाईजी का अनेक संस्थाओं से सम्बन्ध है। जो पद भार ग्रहण करते हैं उसको कर्तव्यनिष्ठा से निभाते हैं। कलकत्ता जैन समाज के ही नहीं, भारतीय जैन समाज के साहित्य सेवी, समाजसेवी, धर्मनिष्ठ श्रावक हैं। अपने निकटतम लोगों के विषय में कलम से लिखना बड़ा दुष्कर कार्य है, इसलिए कलम को यहीं विश्राम देता हूँ। प्रभु से प्रार्थना है- आपका सान्निध्य, वरद हस्त युगों-युगो तक हम सब पर छत्र-छाया बनाये रखें।

श्री भँवरलाल नाहटा अभिनन्दन ग्रन्थ कलकत्ता
दिसम्बर १९८६

+ + + +

बीकानेर के कुछ प्रतिमालेख

बीकानेर में कोचरों के मुहल्ले में श्री आसकरणजी कोचर का वि० स० १६६४ मे बनवाया हुआ श्री विमलनाथ भगवान का एक मन्दिर है। गत पर्यूषणपर्व के समय हमने उस मदिर की मूर्तियो के लेख उतारे थे जिनमें के ११ प्रतिमालेख यहां प्रकाशित करते हैं, शेष फिर कभी प्रकाशित करने की भावना है।

धातुप्रतिमास्थ लेख

(१)। स० १६०३ मा. वदि ५ तिथौ भृगु। श्रीराजनगरे श्रीमाली वीसा भाईचद खेमचद श्री अजितनाथबिंब कारापितं प्रतिष्ठा सूरिभिः। श्रीसागरगच्छे भ शांतिसागर।

(२)। सं० १६०३ माघ वद ५ भृगौ अमदावादे उश (वशे)। वृद्धा भार्या वीरकोर श्रीशांतिरायबिंब कारापितं। भ श्रीशांतिसागरसूरिभि· प्रतिष्ठितं सागरगच्छे।

(३)। स० १५३० वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्री श्रीमाल श्रे करमा भा टबकू पुत्र जाइवा भा नाकू पुत्र जीवा सोमा माला महराज श्रीराज सहितेन आत्मपुण्यार्थ श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का प्र श्री आगमगच्छे भ श्रीअमररत्नसूरीणामुपदेशेन विधिना। छ। लहुलिवास्तव्य।

(४)। सं० १५८२ वर्षे श्री अहम्मदनगर श्रीमालज्ञातीय व्य० कान्हा भा करमादे सु आणदकेन श्रेयसे श्रीपार्श्वबिंबं का।

(५)। सं० १६०३ मा वदि ५ सुक्रे श्री . ..लघुशाखीय सा अमीचन्द श्री शातिनाथबिंब कारापितं तपागच्छ पं० रूपविजियगणि।

(६)। संवत १५०३ वर्ष माघ वदि २ रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय व्य० हेमा भार्या शाणी सुत सुरा भा. रजाई-सुत श्री रंगसहितेन स्वपितृश्रेयसे भ्रातृवीरा नामेतं श्री श्रीकुथुनाथ वि (बि) बं कारितं श्रीनागेन्द्रगच्छे भ श्रीहेमविमलसूरिभि·। प्रतिष्ठितं गुरूकाकेर . ..।

मूलनायक श्री विमलनाथजी की प्रतिमाका लेख

(७)।। ६०।। सवंत् १६२१ वरषे शाके १७८३ प्रवृत्तमाने शुभकारी माघमासे शुक्लपक्षे ४ दिने गुरूवारे श्री राजनगरवास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखाया। शेठ श्री खुशालचंद। तत्पुत्र सा बखतचंद। तत्पुत्र सा हिमाभाई। तत्पुत्र सा खेमाभाई श्रेयोर्थं। श्रीविमलनाथजी जिनबिंब करापित। श्री तपागच्छे भ श्री शांतिसागरसूरि प्रतिष्ठितं। श्रीरस्तु। ।। श्री· ।।

पासकी निज बंगली में

(८)।। स। १६१२ वर्षे मिगस (र) वदि ५ बुधवार यंत्रमिद बाई जडाव कवर.......गेवरचन्दाग्यां कारापित उकेशगच्छे न (त) भ. देवगुप्त सूरीणा प्रतिष्ठितं च तच्चिर तिष्ठतु श्री श्रेयांसनाथस्य।

बंगली के मूल नायक का लेख

(९)।। संवत् १६०५ वर्षे शाके १७७० प्रवृत्तमाने माघमासे स्युक्र पचवासरे श्री. म उपकेशगच्छे वृद्धशाखायां श्रेष्ठ गोत्रे वैघ (द) समस्त श्री सिंघेण श्रीश्रेयांसनाथस्य प्रतिष्ठा करापितं श्रीकवलागच्छे भ श्री देवगुप्तसूरिभि। श्री।

देखिये बहन के प्रति भाई का कितना प्रेम, कितना अनुराग, कितनी रसीली भाषा, कितना स्नेह से प्लावित करने वाला भाव बस कहते ही नहीं बनता है।

भाई के प्रति बहनका प्रेम-

ऊँचे मगरे जावूँ ए माय,
कुलिया काचर लाऊँ ए माय,
छोलनै छमकाऊँ, ए माय
वीरनै जीमाऊँ, ए माय
वीरो म्हारो भाई, ए माय,
हूँ वीरेरी बाई, ए माय,
वीरै मने लाल चूडो पहरायो, ए माय,
कोड करै भौजाई, ए माय।
भौजाई रे मूँडेमे सीरो, ए माय,

इसमें नन्हीं-सी बहिनका अपने भाई के प्रति स्नेह दिखाया गया है। वह भाई को वही वस्तु खिलाना चाहती है जो उसको पसन्द हो, जिससे उसको आनन्द मिले और उससे सुखी होने वाली भौजाई का मुख मीठा करना चाहती है।

भाई-बहनके प्रेम और हास्य-विनोद का एक सर्वांगपूर्ण मधुर चित्र निम्नांकित गीत मे फिर दर्शन करिये-

मोरीयाँ वागाँ-वागाँ जायनै
काची कुलियाँ लायी, रे धन मोरिया
काचीनै कुलियाँरा गजरा गुँथायीरे, धन मोरिया
गजरा गुँथायनै गवरो बाई-सा रे मेली, रे धन०
बाई-सा बड़ा है म्हाँरा गजरा पाछा मेलै, रे धन०
गजरा गुँथायनै सोदरा बाई-सा रे मेली, रे धन०
बाई-सा बडा है म्हारा गजरा पाछा मेलै, रे धन०

देखिये कितना विनोद और प्रेम इस गीत में छिपा हुआ है। इसी प्रकार भाई-बहिन के विनोद, प्रेम आदि के कई गीत राजस्थानी साहित्य में प्राप्त होते हैं।

(विशेष जानकारी के लिये ठा० रामसिंहजी, पारीकजी और स्वामीजी संपादित "राजस्थान के लोक-गीत" उत्तरार्द्ध और पूर्वार्द्ध भागो में देखिये।)

इसी प्रकार राजस्थानी लोक गीतो मे ऐतिहासिक, देवी-देवताओ के, उत्सवों के, त्यौहारो के, विवाहिक मागलीक कार्यो के अनेक गीत उपलब्ध है, जिन सबका एक-एक आदर्श उदाहरण इस निबन्ध मे दिग्दर्शन कराया जायेगा।

दाम्पत्य-प्रेम-

अच्छा अब दाम्पत्य-प्रेम के करूण गीत सुनिये। पति विदेश गया हुआ है, बहुत समय बीत गया है, वापिस नहीं आया है, उसे अपने प्यारे की याद आ जाती है, और उसे एक पत्र लिखती है, उस पत्रमें उसे घर आने को लिखती है-इसी प्रकार यही सब इस करूणामय गीत में पढ़िये-

(१०)।। ६०।। सं. १५७६ वर्षे बोथिरागोत्रे सां जाणा पुत्र सा केल्हणेन भार्या कवरदे पुत्र सा पता सा नैना सा जयवन सा जगमाल सा धडसीकादि यु श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं श्री जिनहंससूरिभि: माह वदि ११।

(११)।। सं १५०२ वर्षे फाल्गुन वदि २ दिने उकेशवंशे फसलागोत्रे सा. आजडसंताने सा. पूजा भार्या पूनादे पुत्र सा लालाकेन भार्या लाखणदे पुत्र सा छाजू तोलादि सहितेन स्वपुण्यार्थ श्री शांतिनाथबिंबं कारितं प्र. श्री खरतरगच्छे श्रीमन् श्रीजिनसागरसूरिभि: ।। शुभ ।।

श्री जैन सत्यप्रकाश
वर्ष ६ अक ७ मार्च,१९४१

❑❑❑

"राजस्थानी लोक-गीतों" की एक झांकी

राजस्थानी लोकगीत राजस्थानी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये प्रचुरतासे राजस्थान में मिलते हैं। इनमें सभी श्रृंगारो का समावेश है। इनका सौन्दर्य मौलिक तथा, अन्य भाषाओं के लोक-गीतों से निराला है। इनकी छटा, वीरत्व कुछ और ही है। ये हैं देश की आत्मा के परिचायक। ये बडे मधुर, रसीले गीत हैं। जो इनको श्रवण कर पाता है, वही इन पर लट्टू हो जाता है। ये गीत राजस्थानी साहित्य के प्राण और जगमगाते हीरे हैं। इन गीतों में भाई का बहन के प्रति प्रेम, बहन का भाई के प्रति प्रेम, माता-पुत्र का अनुराग, दाम्पत्य प्रेम, पुत्री के प्रति घरवालों का प्रेम, देशका चरित्र, लोगों के मनोभाव, मातृ-जाति की प्रतिभा आदि कूट-कूट कर भरी हुई हैं। इन्हीं सब बातों की एक झांकी दी जा रही है। आइये इस ओर अपनी दृष्टि निहारिये और इन सब हीरों का हार गूंथ कर गले मे पहन राजस्थानी साहित्य की अनुपम प्रभा को सर्वत्र फैलाइये। अच्छा, दत्त-चित्त हो इनका श्रवण करिये।

बहन के प्रति भाई का अनुराग-

चाँद चढ्यो गिगनार।
किरत्यां ढल रहियाँजी, ढलरहियाँ
अब, बाई, घरे पधार।
गाऊजी मारैलाजी मारैला।
कोई बाबोजी दैला गाल,
वडोड़ो वीरो वरजैला जी बरजैला।
मत दो म्हांरी बाईनै गाल,
म्हांरी बाई चिड़ोकली जी चिड़ोकलरा
आ आज उडै परभात,
तड़कलै उड़जासी जी उडजासी।
सावणियै रा दिनडा च्यार,
जँवाईडो ले ज्यासी जी ले ज्यासी।

(बालाजी बजरंगजी का गीत)
कूण चिणायो, ओ बालाजी, थारो देवरोजी,
कूण दिरायी गज नीम ?
बाबा बजरंग जीरो बंगलो हद वण्यो,
राजाजी चिणायो म्हारो देवरो।
सेवगां दिरायी गजनीम,
बाबा बैजरगजीरो बगलो हद वण्यो।

यह गीत काफी बडा है, इसलिये इसके दो पद्य ही दिये गये हैं।

(भैंरूजी का गीत)
भैंरूजी, ऊँचेसे धोरे थारो देवरो,
भैंरूजी, धजा ये फरूकै असमान।
सेवगांकी, ओ बाबा, भली करो,
भैंरूजी, चरच्याजी लाल सिंदूरसूं
धूप रही गरणाय, सेवगांकी ओ बाबा भलो करो,

इसी प्रकार अन्य देवी–देवताओ के गीत हैं। राजस्थानी वासियो की देवी–देवताओं पर असीम श्रद्धा एवं भक्ति होती है। उनके विषय मे कई भाषा–प्रवाही गीत रचे हैं। इसी प्रकार रामदेवजी, पाबूजी, गोगोजी, केसरियाजी के सुन्दर गीत बने हुए है।

त्यौहारों के गीत

राजस्थान में अनेक त्यौहार प्रतिवर्ष मनाये जाते हैं। त्यौहार के दिन लोग बहुत अच्छी–अच्छी स्वादिष्ट मिठाई जैसे लापसी, सीरा आदि बनाते हैं, और हँसी–खुशी के साथ खाते हैं। नाना प्रकार के आमोद–प्रमोद एवं हँसी दिल्लगी करते हैं। ये त्यौहार बहुत मांगलिक माने जाते हैं। राजस्थान मे होली, दिवाली, विजयदशमी और राखी बंधन के त्यौहारों के सिवाय गवर, तीज, घुडला, तुलसी आदि के त्यौहार भी विशेष खुशी के साथ मनाये जाते हैं। उस दिन औरते उस दिन के त्यौहार के मागलिक गीत गाती है। वे गीत बहुत मधुर, रसीले और आनन्ददायक होते हैं।

गवर का त्यौहार

इस त्यौहार के विषय में माननीय ठा० रामसिहजी, पारीकजी, और स्वामीजी अपने 'राजस्थान के लोक–गीत' मे इस प्रकार लिखते हैं·

"गवर या गणगौर राजस्थान का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। गौरी को कन्या जीवनका आदर्श माना गया है। उपयुक्त पति की प्राप्ति के लिये गौरी ने कठिन तप किया था। कन्याएँ उपयुक्त पति की प्राप्ति के लिये गौरी की पूजा करती हैं। यह गौरी–पूजन होली जलने के दूसरे दिन से आरम्भ होकर चैत्र शुक्ला चतुर्थी तक चलता है। प्रातःकाल कन्याएँ होली बनाकर तालाब या कुए आदि किसी जलाशय पर सिर पर कलसे तथा लोटे रखे हुए जाती हैं। वहां एक किनारे गौरी का कुंकुम आदि से पूजन करती हैं और लौटते समय स्वच्छ जल भरकर और उसमें दूब आदि रखकर घर लौटती हैं। घर पर गौरी की मृत्तिका या काष्ठ से निर्मित प्रतिमा की पूजा करती है। शीतला अष्टमी से सन्ध्या को घुडला घुमाती हैं। चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी को घर मे ढोगले बनाती हैं। पहले जल और जँवारी से पूजनकर दोकली के चूरमे का भोग लगाती हैं। प्रतिवर्ष इसी प्रकार पूजा करती हैं। विवाह के बाद भी गौरी पूजन–चलता

ढोलने कागद लिखूँ, लाल, बैठ महलकेजी मांय
आगंलियां रो मूँदडोजी–ढोला ढलआवै म्हारी बाँय
सनेही ढोला मारूजी, घर आव
नणदल रावीरा ढोलाजी, घर आव
तूँ छै ए कुरजाँ भायेली, तूं छै धरमरी बैन
ज्याँ देसाँ ढोलो बसै, ये कुरजा, वा देसाँ उड़जाय
सनेही ढोला मारूजी, घर आव,
नणदल रावीरा ढोलाजी, घर आव।

इसी प्रकार यह गीत बहुत बड़ा है।
इसी दामपत्य का प्रेम का दूसरा मधुर चित्र फिर देखिये–

मेरो मन मारूजी मिलवाने,
जेठ–आसाड आसाहूँ काढ्या, तो सावण आयो
झुरनाने।। मेरो मन०
पहलो पख सावणको लाग्यो, तो लाग्यो भदा
बुडो उडबाने।। मेरो मन मारूजी मिलवाने।
पूरब दिसाहूँ उठी बादली, तो आयी म्हांरे यरां
बरसवा ने।। मेरो मन मारूजी मिलवाने।
नान्ही–नान्ही बूँदाँ मेवडो बरसै, तो लागी
बादली गरजवाने।। मेरो मन मारूजी मिलवाने।
लिख परवाणूं म्हाँरे मारूजीने देस्यां तो एकवार
आवो पिया मिलवाने।
मेरो मन मारूजी मिलबा नै।

ऊपरसे सीधे–सादे भाव हैं, परन्तु हृदयकी सतह में तूफान उमड रहा है। आवेग की बिजली चमक रही है, अद्भुत टीस हृदय को तड़का रही है। उधर सावन भादों की मेघ–घटा उमड रही है, इधर हृदयमें भावों की भावनै धुआंधार घटा उठी है– वह बरसी कि यह बरसी।

देखे आपने दाम्पत्य प्रेम के गीत, कितने मधुर, करूण ! इनको पढकर कठोर से कठोर हृदय वाले पति अपनी पत्नी की ओर प्रेम की आशायें उपस्थित हो जाती हैं, उसका बज्र हृदय पसीज उठता है और अपनी अर्द्धांगिनी से मिलने के लिये दूरस्थ अगम्य देश से भी आकर मिलता है। क्या ऐसे मनोहर गीत राजस्थानी भाषा के सिवाय और किसी भाषा में मिल सकते हैं ?

देवी-देवियों के राजस्थानी लोक गीत

राजस्थान में देवी–देवता बहुत पूजे जाते हैं। भैरूजी, बजरंगजी, सिताला–माता आदि के अनेक गीत हैं। जिन्हें समय–समय पर उनकी पूजा–अर्चना, जान देते औरतें गाती हैं। उन्हीं गीतों की कुछ परछाई यहां है–

जापे रो लाडू लाव,
घुडलो घूमै छैजी घूमै छै।।

यह गीत समाप्त भी न होने पाया उसी दम उन्होने फिर एक गीत गाना शुरू कर दिया। अच्छा अब उसको भी सुन लीजिये।

जालोंडी जल निपजै, रे वीरा,
पाटण झुकी रे जॅवार।
डूँगरसिंहजी रा गगासिंहजी,
म्हारे घुडले रे सामा आव।।
म्हे घुडलेxxण्यां, ओ,
वीरा थे घुडले असवार।
घुडलो मांगै रोक रूपयो,
दिवलो मांगै तेल।।
घुडलने देशा रोक रुपयो,
दिवलेने देसा तेल।
घुडलो ये सुपार्‌या छावो,
तारॉं छायी रात।।
भावज ये म्हारी पूतों छायी,
बडोडे वीरे घरनार।
नगरी ये नालेरो छायी,
महाराज गंगासिंह जी रे परताप।।
कामठडी मतवाया, ओ पतलिया,
गवरलरा दिन च्यार।
आगे ये म्हांरी गवर बडेरी,
लारे घुडलो तयार।।

सावण-तीज का गीत

आप तीज के गीत के लिए बहुत पागल हो रहे थे, अच्छा अब उसका एक पद्य सुनकर सन्तुष्ट होइये, कारण समय कम है, जगह थोडी है।

आयी आयी सावणियांरी तीज।
गाया–सा, पहलेने सावण, मत राखे धियाना
सासरै मेल्यो मेल्यो, येमा बडोडी वीर।
बिच में वीरै रो सासरो।

पुत्री के प्रति घर वालों का प्रेम-

जब लडकी अपने पीहर से ससुराल जाती है, उस वक्त ओलूका गीत गाया जाता है। यह गीत इतना करुण मार्मिक शब्दों में गाया जाता है कि जाती हुई स्त्रियो के नेत्र जल से डबडबा आते हैं और पुरुषों की आंखे भी गलगला आती हैं।

रहता है। जब तक वे अजूणा नहीं कर लेतीं तब तक पूजन अनिवार्य है। अजूणा करने वाली अपनी सखी-सहेलियों को दातन भेजकर निमन्त्रित करती हैं और सबको बडा भोज देती हैं।"

चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी को किसी जलाशय या कुएँ पर गवर का मेला लगता है।। वहाँ राज्य से सवारी, फौज, हाथी, घोडे, राज्य कर्मचारी मुसाहिब वगैरह गवर की सवारी के साथ आते है तथा जनता भी काफी संख्या मे एकत्रित होती है। गवर की सवारी बीकानेर में भी निकलती है और मेला लगता है।

इस मांगलिक त्यौहार पर औरतें गीत गाती हैं। अच्छा आप भी अपने को मेले मे उपस्थित पाइयेगा। अब उन औरतों के गीत कान लगा के सुनियेगा.

हे गवरल, रूडो हे नजारो तीखो नैणांरो,
गढा दे कोटासू गवरल ऊतरी।
होजी, बैरे हाथ कँवल केरो फूल,
हे गवरल रूडो हे नजारो तीखो नैणांरो।।
सीस हे नालेरा गवरल सारियो,
होजी, वैरी वेणी छै वासग नाग।
हे गवरल रूडो हे नजारो तीखा नैणारो।।

यह गीत समाप्त भी न होने पाया कि दूसरे गीतो के रसीले तान कानों मे आने लगे। अहा क्या ही रगीलें, आनन्ददायक गीत हैं। शाम हो गई विश्राम कीजिये।

घुडला के गीत

अच्छा अब आप घुड़लों के गीत सुनेगें। शाम हो गई है, रात्रि हो रही है, अजो ८ बज चुके ! देखो वे लडकियों की टोली सिर पर घुडला (एक छोटा सा छिद्रोवाला घडा होता है जिसमें दीपक जलता है) लेकर आपके (पाठकजी) घर आ रही है। लीजिये वे आ गईं. उनके घुडले में कुछ रूपये, पैसे, घी, आखा वगैरह दीजिये। यह सब हो चुका, अब आप उन लडकियो के गीतों को तो जरा ध्यान लगाके सुनिये।

पाठकजी, अब पुस्तक को बन्द कर दो, इतने पुस्तकों के कीट न बनो। उन भोली-भाली लडकियों के मनोहर गीत सुनिये, बाद मे दूसरा काम करना।

घुडलो घूमै छैजी घूमैछै,
घुडले रै बांध्यो सूत।
घुडलो घूमै छै जी घूमै छै,
ईसरजी (पाठकजी) रे जायो पूत।
घुडलो घूमै छै जी घूमै छै,
सुवागण बायर आव।
घुडलो घूमैछै जी घूमै छै,
तेल बलै, घी लाव।
घुडलो घूमै छैजी घूमै छै,
मोत्यारा आखा लाव।।
घुडलो घूमै छै जी घूमै छै,
पीवर रो पीलो लाव।
घुडलो घूमै छैजी घूमै छै,

राजस्थानी फुटकर साहित्य

राजस्थानी भाषा का साहित्य–कोष अत्यन्त विशाल है। इस भाषा का साहित्य बहुत थोडे अश में प्रकाश में आया है, अत इसमे कार्य करने के लिए बहुत–सा क्षेत्र पडा है। पहले इटली–निवासी डा एल पी टैसीटोरी ने इस क्षेत्र मे बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया। पाश्चात्य देशो मे राजस्थानी साहित्य को जो कुछ महत्वपूर्ण स्थान मिला उसका श्रेय डा टैसीटोरी ही को है। इसके उपरान्त राजस्थानी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान मित्र–त्रय ठा राम सिंह जी, स्व पारीकजी और प्रोफेसर स्वामीजी ने 'राजस्थान के लोकगीत', 'राजस्थान के दोहे' और 'ढोलामारू' आदि पुस्तकों का सम्पादन कर राजस्थानी साहित्य की अमर सेवा की है। जब "राजस्थानी" त्रैमासिक का प्रकाशन हुआ तो उससे राजस्थानी साहित्य के प्रकाश में आने की आशा हुई थी मगर वह भी एक वर्ष निकल कर बद हो गयी।

हर्ष के साथ लिखना पडता है कि स्थानीय राजस्थानी–साहित्य–पीठ ने इस साहित्य को प्रकाश मे लाने का बीडा उठाया है जो प्रशसनीय है। राजस्थानी साहित्य को प्रकाश मे लाने के पूर्व उसके शब्दो का एक वृहत् शब्द–कोष बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। राजस्थान का लौकिक साहित्य – कहावते, मुहावरे, पहेलिये, गीत आदि राजस्थानी साहित्य के प्राण है। अत सर्वप्रथम इनके सग्रह की अत्यन्त आवश्यकता है। इसीलिए प्रत्येक राजस्थानी–प्रेमी को यह देखकर कटिबद्ध हो जाना चाहिए कि जब सभी लोग अपनी मातृभाषा की तरक्की में लगे हुए हैं, तो फिर हमें क्यो पीछे रहना चाहिए।

मैं इस लेख मे आप लोगो का फुटकर साहित्य की ओर ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ, जो बहुत मनोरजक एवम् सुन्दर है। निम्नलिखित सग्रह राजस्थानी साहित्य के अनन्य प्रेमी व विद्वान् श्रीयुत अगरचंदजी भँवरलाल जी नाहटा के जेसलमेर यात्रा मे किये हुए सग्रह मे से सगृहित किया गया है।

१. अधूरा - पूरा-

इसमे राजस्थानी कहावतो को दोहों के रूप में पूर्ण किया गया है :–

अेक मौहर पावै थो सारी, ता परि मैं अब वात गुदारी।
अब तो कछु न आवै जाय, वासी रहै न कुत्ता खाय।। १ ।।
लाख सयणप कोडि बुध, कर देखो सहु कोय।
अण होणी होणी नहीं, होणी होय सु होय ।। २।।
साखी घर कर लूंकडी, दीना दाम उधार।
विरियां देख न विणजियौ, सौ वणियो विंवार।। ३ ।।
परनारी सूं प्रीतडी, वैरयां विच में वास।
नदी किनारै रूंखडो, जद तद होय विनास ।। ४ ।।
लाखां लोहां खेतियां, पहली किसा वखाण।
वहू वछेरां डीकरा, नींवडिया निरवाण।। ५ ।।
आयां सूं बोली नहीं, पिउ चाल्यो करि रोस।
आप कमाया कामड़ा, किण नै दीजै दोस।। ६ ।।
आदर बिन पिय उठिगयौ, चली मनावण धाय।
घर आयो नाग न पूजियै, बांबी पूजण जाय।। ७ ।।

म्हे थांने पूछां म्हारी धीवड़ी,
म्हे थांने पूछां म्हारी बालकी।
इतरो बाबैजीरो लाड छोड र बाई सिध, चाल्यां।
म्हेरमती बाबो-सा री पोल,
आयो सगैजी रो सूवटो गायडमल ले चाल्यो।
म्हे थाने पूछा म्हारी बालकी
म्हे थांने पूछां म्हारी धीवड़ी
इतरौ माऊजी रो लाड छोड'र, बाई सिध चाल्या
आयो सगैजी रो सूवटो
ओ लेग्यो टोली मा सुटाल, फूटरमल ले चाल्यो
म्हे थांने पूछों म्हारी बहनडी
म्हे थांने पूछो म्हारी बाई-सा
इतरो वीरैजीरो हेत छोड र बाई सिध चाल्या
हे आयो परदेशी सूवटो
हे बागा मायलो सूवटो
म्हे तो रमती सहेल्यारी साथ, चोरीरो जालम ले चाल्यो।

देखा कितना प्रेम, क्या ही मार्मिक शब्दों में गीत है। ये देखिये नेत्रो मे पानी भर आया, ममता बुरी चीज है।

इस प्रकार अनेक राजस्थानी गीत मिलते हैं। यदि उन सब का संग्रहकर प्रकाशित किया जाय तो एक ग्रन्थ का ग्रन्थ बन सकता है। बस इच्छा काम करने की चाहिए। कहा है (If there is will there is way) ये गीत राजस्थानी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस अमूल्य निधि को राजस्थान सरकार क्यों ,खोये बैठा है? अब भी निद्रा का त्याग कुछ करे तो वह भी साहित्य की दौड मे अव्वल आ सकते हैं। इस प्रकार राजस्थानी अनेक दोहे, भजन मिलते हैं। आशा है राजस्थान के विद्वत्जन उनको प्रकाश में लायेंगे। राजस्थान की इस कमी को राजस्थानी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान स्व सूर्यकरणजी पारीक, ठा रामसिंह जी और प्रो नरोत्तम दास जी स्वामी ने बहुत कुछ अंश में पूरा किया है। आपने "राजस्थान के लोक-गीत" "राजस्थान के दोहे" आदि अन्य राजस्थानी साहित्य की पुस्तकें लिखकर जो राजस्थान साहित्य की सेवा की है, वह अद्वितीय है और आप धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है वे इसी प्रकार अपनी अमूल्य सेवा राजस्थान साहित्य को प्रदान करते रहेंगे।

कई लोगों ने राजस्थान के लोक गीतो को अश्लील रूप देकर प्रकाशित किया है, यह ठीक नहीं। ऐसा करना राजस्थानी साहित्य को बरबाद करना है।

समाज सेवक
१ जून १९४१

●●●

साच कूड रौ अदल किनियाणी न्याय करे मोरी माय।
चरण सरण निम आयो इमनामी ध्यान धरे तोनै ध्याय।।

४ राजस्थानी गणित -

(१) सज सोलह सिणगार, पीव की सेज पधारी।
टूटो नवसेरो हार गोल कीमत रो भारी।
त्यावन कचू भाय, पात सजा मे पाया।
दासी नववे भाग, आठ मे पीव उठाया।।
तिरिया तेरह पायके मन मे भइ खुसाल।
अब तुम मोय बतलाय दो कित मोती रो हार।।

(उत्तर ७२ मोती)

(२) आधो कीचक त्याव जळ, दसवो भाग सुवाग।
बावन गज बाकी रही कहौ कितौ विस्तार।।

(उत्तर ७८० गज)

(३) आधी पूंजी ब्याज में,
आधी पूंजी बजार।
सोना पाती सोळमी,
नगदी साठ हजार।

(उत्तर आप बताये ?)

५ राजस्थानी पहेली -

(१) भूं-भूं करै पण भमरौ नहीं, गलै जनेऊ बामण नहीं।
कान में मुद्रा पण जोगी नहीं, बताओ क्या नहीं तो नहीं।।

(उत्तर – चरखा)

(२) गोळ गोळ सरपोटीयो, आम-रस पीवै।
इयै आडी रो अर्थ बतावै, वैरा मा-बाप जीवै।।

(उत्तर – जलेबी)

(३) लांबी-सारी अेक जिनस, पर जग रही है आग।
फूंक देवै जण निकलै, निकलौ काळो नाग।।

(उत्तर हुक्का)

(४) पान लाजो फूल लाजो और लाजो लाकडी।
अेक पई सो फुरती लाजो और लाजो काकडी।।

(उत्तर – आक)

डूँगर कालेज पत्रिका
बीकानेर
जनवरी, १९४४

बिगर बुलाई आगी आवै, काम करै अण–हूवा।
गिणै न मानै जानिया, हूँ लाडै री भूवा।। ८ ।।
बहुत दिनां घर प्रीतम आयौ, अछै चीर पट्टोली लायो।
नांभी रांडन पूछी खैर, काळो माथो लीला पैर।। ९ ।।
जद ही परणी तद ही परखी, कदेन बोली मन सूं हरखी।
जद बोलै तद कडका मोड़ै, बाळ सोना सो कान तोडै।। १० ।।
कारज किण हिन आवसी, वास–विहूणो गुल्ल।
रूप–रूडौ गुण–बाहरो, रोहीडे रो फूल ।। ११ ।।

इसी प्रकार अन्य कहावतें अधूरी से पूरी मिलती हैं अगर उनका अलग संग्रह किया जाय तो एक ग्रन्थ का ग्रन्थ बन जाता है।

२ गुरु-चेला-संवाद -

मोटो मोती मोल कम, सरवर पिही न थाय।
सूरा भागै राड मे, कौ चेला, किण दाय।।

(गुरुजी, पाणी नहीं)

दूध उफाण्यौ ऊफण्यौ, वच्छै चूंगी गाय।
मिनकी माखण ले गई, कौ चेला, किण दाय।।

(गुरुजी, देख्या नहीं)

धूई धूंओ न संचरै, महलै पवन न जाइ।
झीवर बिलखो क्यू फिरै, कौ चेला, किण दाय।।

(गुरुजी, जाळी नहीं)

घडौ झरंतौ ना रहै, पीछै रोवै बाळ।
सासू बैठी बहू परोसे, कौ चेला, किण दाय।।

(गुरुजी, सारो नहीं)

कपडो पोत न आवियौ, गूंज न मेली खाइ।
चौधरी रूठो क्यों फिरै, कौ चेला, किण दाय।।

(गुरुजी, कूटी नहीं)

सूको पींपल खरहरो, कळियां हुई विनास।
होको मूंधो क्यूँ पड्यौ, कौ चेला, किण दाय।।

(गुरुजी, पान नहीं)

३ राजस्थानी पद *(करणीमातारो)* -

मोसू किरपा करी जो, जी देसाणै री राय।। टेक ।।
कान्हो उथाप थाप रिणमल नै राज दियो महा भाय।
बीका कर्ण जैत किल्याण रायां सिंह सूर कर्ण आइ जिण भाय।।
अनुपति सुजाण जोर महाराजा जिण मोरी तूं करै सहाय।
कपट लोभ मुराल भगत लोका मै सुध क्रत कहै है बणाय।।

साहित्य रसिक श्री अगरचन्दजी नाहटा राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार, जैन साहित्य के धुरन्धर विद्वान एवं अन्वेषक हैं। जैन साहित्य के प्रचार, प्रकाशन एव संग्रह मे जो आपने अद्वितीय प्रयास किया है वह आश्चर्यजनक है। देश के साहित्यिक इतिहास में पुरातन जैन कवि एवं विद्वानो को उपयुक्त स्थान क्यों नहीं दिया जाता, जब कि उनकी रचनायें किसी अन्य जैनेतर कवि एवम् विद्वान से तुलना मे किसी प्रकार कम नहीं हैं, इस बात की पुकार आपके लिखित लेखों के एक-एक शब्द में रहती है। आपने आज तक सैकडो लेख लिखे हैं। आपका एक-एक लेख आपकी अनुपम शोधवृत्ति एवं विद्वत्ता का परिचायक है। हिन्दी साहित्य के इतिहास की वीर गाथा काल की आपने जो नई शोध की है वह आपकी अगाध लगन एवं पांडित्य की द्योतक है। ऐसे युवक विद्वान का सम्मान करना जैन समाज का अपना सम्मान करना है।

श्री मोहन लाल दलीचद देशाई बी ए एल एल बी बम्बई हाईकोर्ट के एडवोकेट है। आप अपने "जैन गुर्जर कवियों' तीन भाग के लिए जैन साहित्य ससार मे अमर है। आपके ये अमूल्य ग्रथ-रत्न आपकी सारी जिन्दगी की साहित्यिक कमाई हैं। आप हाईकोर्ट के एक व्यस्त वकील होते हुए भी साहित्यिक ससार मे कितने बढे हुए हैं, यह बात सभी जानते हैं। आपकी प्रतिभा सर्वोन्मुखी है।

इस प्रकार समाज के अन्य विद्वानो का विराट आयोजन एवं अभिनन्दन समाज की शिष्ट मडली द्वारा किया जाना चाहिए। ऐसा करने से न केवल समाज के विद्वानों की कीर्ति बढेगी बल्कि जैन समाज की भी। किसी भी जैन विद्वान के लिए किये गये आयोजन मे श्वेताम्बर एव दिगम्बर समाज दोनों को बराबर भाग लेना चाहिए। विद्वानो के साथ-साथ हमें अपने दानवीर धनिको एवं मुनि-मडल को नहीं भूलना चाहिए क्योंकि वे ही हमारे समाज एव धर्म के प्रधान अंग हैं। हमारी समाज की जन एवं धर्म जागृति के ये दोनो ही प्रतीक हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान एवं गुजरात की जैन समाज अपने कर्तव्य को पहचानेगी एवं समाज के सपूतो का उपयुक्त सम्मान कर, समाज के जगमगाते हीरों की जौहरी के रूप मे परख करेगी।

मैंने विद्वानो के सम्मान मे विराट आयोजन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने को लिखा है। आयोजन भले ही विराट न हों पर अभिनन्दन-ग्रन्थ अवश्य समर्पित करना चाहिये, क्योकि आयोजन अस्थायी है किन्तु अभिनन्दन ग्रन्थ एक ऐसी चीज तैयार हो जाती है जो सदा के लिये स्थायी रहती है। अभिनन्दन ग्रन्थ से विभिन्न विषयो पर एक अमर इतिहास तैयार हो जाता है क्योंकि इसके लेखक भारत के कौने-कौने के विद्वान होते हैं। हिन्दी मे निम्न अभिनन्दन ग्रंथ निकले हैं – १ ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ, २ द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, ३ गाधी अभिनन्दन ग्रंथ, ४. राम लोचन शरण बिहारी अभिनन्दन ग्रन्थ, ५ मोदी अभिनन्दन ग्रन्थ, ६ हरिऔध अभिनन्दन ग्रन्थ, ७ मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ एवं इसी प्रकार आत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रन्थ है। इन ग्रंथों के देखने से पता चलता है कि ये हिन्दी साहित्य की अनमोल चुने हुए निधि हैं। भारत के तमाम बड़े-बडे विद्वानों के लेख संग्रहीत हैं। उदाहरण के लिए रामलोचन शरण बिहारी अभिनन्दन ग्रन्थ को लीजिये, श्रीयुत बिहारी बिहार प्रान्त के माने हुए साहित्यिक हैं। इस ग्रंथ मे बिहार प्रान्त का राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, अर्वाचीन एवं प्राचीन पूरा इतिहास है।

मैंने अपने जैन विद्वानो के जो चार नाम बताये हैं उनमें से दो राजस्थान के हैं और दो गुजरात के। राजस्थान और गुजरात ही प्राचीन काल से जैन धर्म के प्रमुख केन्द्र रहे हैं और आज तक हैं। राजस्थान और गुजरात के गाँव गाँव मे जहां जैनियों के उपाश्रय एवं मन्दिर हैं हजारों हस्तलिखित ग्रंथ दीमक के शिकार हो रहे हैं। हम लोगों का कर्तव्य है कि हम अपने साहित्य को घूम-घूम कर एक जगह सुरक्षित करें एवं उसके प्रकाशन की सुन्दर व्यवस्था करें। अगर हम उनकी अवहेलना करते रहेंगे तो ध्यान रखना चन्द वर्षों मे हमारे पूर्वजों का अमर साहित्य सदा के लिए नष्ट हो जायेगा। उदाहरणके लिए जैनियों के तीर्थ जैसलमेर को ही लीजिए – यहां पर कितना साहित्य का खजाना भरा पड़ा है किन्तु उनकी व्यवस्था असन्तोष-प्रद है। अगर हमने उनकी मरम्मत नहीं करायी तो वे शीघ्र नष्ट हो जायेंगे।

विद्वानों की कदर करना सीखो

साहित्य और समाज का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज से साहित्य का सृजन होता है और साहित्य से समाज की रूपरेखा। साहित्य के निर्माण करने वाले होते हैं समाज के विद्वान। एक पाश्चात्य विद्वान लिखता है कि अगर तुम किसी देश को नष्ट करना चाहते हो तो उस देश के समाज को नष्ट कर दो, समाज को नष्ट करने के लिये तुम्हें सर्वप्रथम उसके साहित्य को नष्ट करना होगा। वस्तुतः यह बात है भी सच। अगर हमारे पुरातन जैनाचार्य इतने जैनधर्म के साहित्य का निर्माण न करते तो आज आपको जैन धर्म के भग्नावशेष भी नहीं दिखाई पडते। इसलिए हमें अपने समाज की समृद्धि कायम रखने के लिए अपने समाज के साहित्य निर्माता विद्वानो की कदर करना परमावश्यक है।

हमारे समाज के विद्वान एवम् धनवान ही हमारी समाज की शोभा हैं। धनवानो की कदर अपने गाव ही मे होती है किन्तु विद्वानो की कदर सब जगह होती है। इस लिए विद्वान ही समाज के महत्वपूर्ण अंगों मे से एक हैं। विद्वानों की उपयुक्त कदर करने से अन्य समाज वालों को यह भली भांति विदित हो जायेगा कि जैन समाज में भी इतने पहुंचे हुए विद्वान अभी तक विद्यमान हैं। दिगम्बर जैन समाज ने इस ओर जो कदम बढाया है वह प्रशंसनीय है। हाल ही मे सहारनपुर की शिष्ट–मडली ने सरसावा के सत पं जुगलकिशोरजी मुख्तार के सम्मानार्थ जो आयोजन किया वह मुक्तकठ से प्रशसनीय है। प नाथूरामजी प्रेमी के सम्मान की योजना बन चुकी है पर हमारा श्वेताम्बर जैन समाज अभी तक गहरी नींद मे सो रहा है। वह हमारे बाबा आदम के जमाने के स्वप्न देख रहा है। विद्वानों का सम्मान करने से उनको समाज, धर्म एवम् देश की सेवा करने का द्विगुणित प्रोत्साहन मिलता है और भावी विद्वत् सन्तान पर इसका अच्छा असर पडता है।

श्वेताम्बर जैन समाज मे वर्तमान मे मेरे ख्याल से सर्वप्रथम आचार्य मुनि जिनविजयजी, पुण्यमूर्ति पुण्यविजयजी, प सुखलालजी, साहित्य रसिक श्री अगरचदजी नाहटा, श्री मोहन लाल दलीचन्द देशाई, हीरालाल रसिकदास कापडिया, मोतीचन्द कापडिया आदि का सम्मान करना परमावश्यक है। इन लोगो के सम्मान मे हमें इनकी जन्म-वर्ष तिथि पर विराट आयोजन करने चाहिए एव इन्हे अभिनन्दन–ग्रन्थादि समर्पित किये जाने चाहिये। इस अवसर पर समाज एवं देश के प्रतिष्ठित पुरुषो को आमंत्रित करना चाहिए और इसके साथ–साथ हमे उनकी विद्वत–प्रतिभा से भरसक लाभ उठाना चाहिए।

इन उपर्युक्त विद्वानों के विशेष परिचय देने की मुझे आवश्यकता नहीं है क्योंकि इनकी विद्वत–प्रतिभा से सारे देश का विद्वत समाज परिचित है।

आचार्य मुनि जिनविजयजी राज० साहित्य सम्मेलन के सभापति एव बम्बई की सुप्रसिद्ध सस्था भारतीय विद्या भवन के आचार्य हैं। जैन साहित्य की आपने कितनी सेवायें की हैं यह किसी शिक्षित वर्ग से छिपी हुई नहीं है। आपने सिंघी ग्रन्थमाला से प्रकाशित जिन जैनधर्म के उत्तमोत्तम ग्रन्थों का संपादन किया है वह न केवल जैन साहित्य की अपितु भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। आपकी प्रकांड विद्वत्ता का ज्वलन्त उदाहरण यह है कि बम्बई युनिवर्सिटी की ओर से आपके निरीक्षण में बीसों ग्रेजुएट प्रोफेसर साहित्य अध्ययन कर रहे हैं। आप जैसे विद्वान का सम्मान करना न केवल एक जैन विद्वान का सम्मान करना है किन्तु भारत मा के पुरातत्व–विद् आचार्य का सम्मान करना है।

पं सुखलालजी हमारे समाज के दूसरे प्रकांड विद्वान है। आप काशी हिन्दू–विश्वविद्यालय म जैन धर्म के प्रधान आचार्य हैं। प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी वर्तमान जैन साहित्य के निर्माण में आपने जो योग दिया है वह प्रशंसनीय है। आपकी विद्वत–प्रतिभा का मूल्यांकन आपके रचित साहित्य के अध्ययन से ही किया जा सकता है।

स्त्रियाँ सूर्य के दर्शन एवं प्रार्थना किये बिना रोटी तक नहीं खातीं। वर्षा की जब चौमासे के दिनों मे झडी लग जाती है, श्री सूर्य–नारायण के दो–दो दिन दर्शन नहीं होते और तब तक उन्हे भूखा रहना पडता है। हिन्दू लोग सुबह एव शाम, संध्या के रूप मे प्रार्थना करते हैं। मुस्लिम लोग प्रतिदिन सध्याकाल मस्जिद मे जाकर नमाज पढते हैं। ईसाई लोग इतवार को घटो गिरजो मे प्रार्थना करते हैं। सब लोगो के प्रार्थना का तत्व एक है, वह है परमपिता परमात्मा का कृपा प्रसाद ।

हम ही खुद अपराधी है कि हम परमात्मा को नियमित रूप से याद नहीं करते हैं। जब तक हम सुख में होत हे, हमारे लिए 'राम' का नाम हराम हो जाता है। पर जब हमारे ऊपर आपत्तियो के काले बादल मंडराने लगते है तब हम प्रार्थना करने लगते हे परमात्मा से। इस पर कबीर साहब कहते हैं

दुख मे सुमिरन सब करे, सुख मे करे न कोय।
जो सुख मे सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा–उसकी लज्जा का हरण होने लगा तो उसने मुरली मनोहर श्रीकृष्ण से प्रार्थना की, परमात्मा को अपने भक्तिन की प्रार्थना स्वीकार करनी पडी और उन्होने तुरन्त द्रौपदी की लाज रखी। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि प्रार्थना के प्रताप से भक्त तुलसीदास को, सत तुकाराम एव भक्त मीराबाई को खुद परमात्मा ने दर्शन दिये थे। इन्हीं सब बातो के कारण हमारे जीवन में प्रार्थना का अधिक महत्व है। चाहे हम खुदा से प्रार्थना करे, चाहे राम से, चाहे रहीम से, चाहे गुरु से, चाहे परमात्मा से, चाहे जिन से, चाहे God से। सभी नाम एक ही वस्तु के पर्यायवाची शब्द एवं विशेषण है। विभिन्न नाम भिन्न–भिन्न धर्म वाले अपने मत के अनुसार लेते हैं। सब मजहब के लोगों के प्रार्थना करने का मतलब एक है, तत्व एक है किन्तु ढग हैं न्यारे–न्यारे। इसीलिये हमारा कर्तव्य है कि हम अपने इस छोटे जीवन मे अवश्य समय निकाल कर नियमित रूप से परमात्मा से प्रार्थना करे।

"गुरुदेव" मासिक, अमरावती
वर्ष २, अंक १०,
चैत्र, शाके १८६६ (अप्रैल १९४४)

OOO

हम जो अभिनन्दन–ग्रन्थ निकालें उनमें राजस्थान एवं गुजरात की दृष्टि से जैन साहित्य, धर्म, समाज का पूरा सजीव सचित्र वर्णन आना चाहिये। और हमारे ये अभिनंदन–ग्रंथ जैन धर्म की एनसाइक्लोपीडिया (विश्वकोष) बन जाय। जैन धर्म बहुत विशाल है यह संभव नहीं है कि चार ग्रन्थों में ही सारा इतिहास आ जाय पर उसके लिए हमें कई अभिनन्दन–ग्रंथ तैयार करने होंगे। इन ग्रंथो में जैन मंदिर, तीर्थ, साहित्य, प्राचीन कवि एवं विद्वान, आधुनिक कवि और विद्वान, प्रमुख आचार्य, प्रमुख संस्थायें, जैन मंत्री, राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र मे जैनी लोग, राजस्थान एवं गुजरात का जैन धर्म से घनिष्ठ संबंध आदि जैन धर्म का पूरा इतिहास आ जाय। इसके साथ हमारे अभिनन्दनीय विद्वानों का तो इसमें पूरा परिचय, उनकी साहित्यिक प्रवृतियो का परिचय तो रहेगा ही।

श्वेताम्बर जैनियो! अब तुम्हारे सोने का समय नहीं है। दिगम्बर समाज किस रफ्तार से आगे बढ़ रही है। अभी सूरत में 'दिगम्बर जैन' का अर्वाचीन साहित्य अंक निकला है उसमें कोरे दिगम्बर विद्वानों का ही परिचय है एक भी श्वेताम्बर विद्वान का परिचय नहीं है। क्या श्वेताम्बरों में विद्वानो की कमी है ? नहीं किसी बात की कमी नहीं है, दोष है अपने लोगो का, कि हम अपने श्वेताम्बर समाज के विद्वान की कदर नहीं करते। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान एवं गुजरात की श्वेताम्बर जैन समाज जाग उठेगी और दुनियां को बतला देगी कि हमारे समाज में भी ऐसे ऐसे विद्वान मौजूद हैं। इसके लिए हमें शीघ्र से शीघ्र आन्दोलन कर देना चाहिए।

अभिनन्दनीय विद्वानों मे से श्रीयुत मोहनलाल दलीचन्द जी देसाई को १९४५ के अप्रैल में ६० वर्ष पूरे होंगे। उनकी सेवा जैन साहित्य के लिए बहुत महान है अत उनके अभिनन्दन ग्रन्थ का आयोजन तो श्री जैन श्वेताम्बर कांफ्रेन्स आदि को अभी से तैयार करना चाहिए। आशा है श्वेताम्बर समाज इस ओर ध्यान देगी।

जैन ध्वज
१ अप्रैल १९४४

卐卐卐

जीवन में प्रार्थना

संसार मे प्रत्येक मज़हब का आदमी अपने मज़हब की प्रथानुसार अपने जीवन में हमेशा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि – 'हे परमपिता परमात्मा! तू सर्वव्यापक है। हम अनजान प्राणी हैं। हमारे किये हुए पापो को क्षमा कर हमें सद्बुद्धि दें ताकि हम अच्छे अच्छे काम कर सकें। जिसमें हम मोक्ष के अधिकारी बन सकें, जहाँ सुख ही सुख है – दुःख का नाम नहीं है।' हिन्दू मंदिरो मे जाकर प्रार्थना करते हैं, ईसाई गिरजो में, मुस्लिम मस्जिद मे, सिक्ख गुरुद्वारे में। प्रार्थना करने का उद्देश्य सब धर्मों में एक है। प्रत्येक धर्म का पुरुष यही चाहता है कि परमात्मा उसे सुख दे, उसकी श्री-समृद्धि में वृद्धि करे और उसके किये हुए पापों को क्षमा करे। कोई भी व्यक्ति इसलिए प्रार्थना नहीं करता कि उसे दुःख मिले। इसलिये प्रार्थना के विषय में सब मजहबों का उद्देश्य एक है।

प्रार्थना करने से क्या नहीं होता ? असम्भव कार्य सम्भव हो जाते हैं। जैसा कि ईसाई मत का आदर्श नरेश किंग आर्थर कहता है– "Pray for my soul, More things are wrought by prayer than this world dreams of" संसार में जिस कार्य को लोग असंभव समझ जाते हैं, वह कार्य प्रार्थना के द्वारा सम्भव हो जाता है। हमारे भारत में तो प्रार्थना की प्रथा आदि काल से है। द्रविड़ लोग सूर्य और चन्द्रमा से प्रार्थना किया करते थे। आज भी सैकड़ों हिन्द

\+ + + + +

आबू पर्वत पर सैर करने के लिए दूर–दूर से राजे महाराजे, सेठ साहूकार और यूरोपियन लोग बहुत आते हैं। राजपूताने के रेजीडेन्ट साहब भी यहीं रहते हैं। यहा पर मकानो और बगलो का बहुत किराया है। एक–एक बंगले के १०००/– रुपया एक सीजन का किराया लगता है।

आबू पर्वत पर बहुत से पर्वत–फोड कुए भी हैं जिनका पानी इतना ठण्डा रहता है कि बर्फ का भी उसके सामने बस नहीं चलता। कुओं के पास छोटी–छोटी वाटिका है जिनमे अगूर, आडू, अनार आदि कई तरह के शाक–तरकारीयो की लताये एवं पेड़ हैं। जगलो मे रसाल के वृक्षो की भरमार है। आबू की प्राकृतिक शोभा का पूरा वर्णन करना मेरी लेखनी के लिए असंभव है।

आबू एक बहुत पुराना एव पवित्र पर्वत है। योगी–मुनियो की तपस्या की यह तपोभूमि रहा है। वशिष्ठ ने भी यहीं तपस्या की थी। जगह–जगह बडी–बडी गुफाये है जहा अब भी योगी लोग तपस्या साधना करते है। जैना के यहा बडे–बडे मंदिर है इसलिये उनका यह तीर्थ स्थान है और वे हर साल हजारो की तादाद मे यहां आते है।

आबू पर बहुत से दर्शनीय स्थान हैं। नक्की ताल सबडे बडी झील है जो तीन तरफ वन–आच्छादित पहाडों से घिरा हुआ है। जन–श्रुति है कि इसे देवताओ ने नखो से खोद कर बनाया। इस झील मे नौका–विहार भी लोग करते हैं। नक्की ताल के ढलावों पर गुफायें है जिनमे चपा गुफा हाथी गुफा और राम झरोखा प्रसिद्ध है। यहा पर साधु लोग तपस्या करते हैं। इसके दक्षिण मे पहाड की टेकरी पर एक चट्टान है जिसकी शक्ल मेढक की तरह है अत उसे टोडरॉक कहते है, इसी के पास नन रॉक है जिसकी शक्ल घूघटदार स्त्री की तरह है।

जैपुर कोठा के पास रामकुंड है जहा बारहो महीना पानी भरा रहता है। नक्की ताल के पास ही विश्राम–भवन है जहां पर हिन्दुओ के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है। इसी के पास से होकर एक सडक जाती है जो सन सेट–पाइंट तक पहुंचा देती है। इस जगह से डूबते हुए सूर्य की गति–विधी मालूम होती है। सायकाल हजारो लोग यहा पर आते हैं। डूबता हुआ सूर्य बिल्कुल लाल सुनहरा (Golden red) हो जाता है और दूर–दूर के मैदान भी इसी रंग में रंग जाते हैं। यह दृश्य बड़ा भला मालूम देता है।

बस्ती से उत्तर दिशा मे एक ऊँचे पहाड की चोटी पर अर्बुदा देवी का मदिर है। यह बहुत प्राचीन है। इसका प्रवेश द्वार बहुत तंग है। यह स्थान एकान्तवास के लिए बहुत अच्छा है। इसी मदिर की तलेहटी मे दूध बावडी नामक एक स्थान है जिसका पानी दूध की तरह सफेद है कहा जाता है कि प्राचीन काल मे यह दूध से भरी रहती थी।

देलवाडे मे जैन मंदिर हिन्दुस्तान के आश्चर्यो मे से एक है। उनकी कला कारीगरी का प्रशसा प्रत्येक यात्री को करनी पडती है।

"मीरा" अजमेर, वर्ष ७ अंक २,
२८ फरवरी १६४५

राजस्थान का ग्रीष्म-कालीन आबू पहाड़

वर्षों के मनसूबे और इच्छा से हम ता० २३ मई १९४४ को आखिर आबू की ओर चल पड़े। गर्मी के दिनो मे रेलयात्रा करना बड़ा दुष्कर कार्य है और खासकर आजकल की परिस्थितियों मे तो और भी कठिन है, आबू पर जा कर ठंडक मिलेगी इस लोभ ने कठिनता को भी सहन करने के लिए बाध्य किया। हम छोटे मोटे पूरे २० टिकट के खरीदार थे।, बीकानेर और मारवाड के रेगिस्तान को पार कर दूसरे दिन दुपहर में आबू रोड पर जा धमके। हम गर्मी के मारे परेशान हो रहे थे। इसलिए एक दिन जैन धर्मशाला में ठहरना पड़ा, आबूरोड (खेराडी) से माउन्ट आबू तक गणेश–चौथ–लिमिटेड की ओर से नियत समय पर दिन में ३–४ लौरियाँ और मोटर छूटती है, हमने भी एक लौरी रिजर्व करायी।

आबू रोड से माउण्ट आबू १८ माइल दूर है। माउण्ट आबू ५ हजार फीट ऊँचा है। खेराडी से माउण्ट आबू तक पक्की डामर की सड़क बनी हुई है। हम २५ ता० के सुबह बिना कुछ खाये पीये चल दिये। हमारी लौरी दर दर ऊँची चढ़ती गयी। दोनों तरफ वनस्पतियो से लदालद पर्वत और बीच में हम थे, रास्ता इतना घेरदार है कि पूछिये मत, कभी हम ऊँचाई पर थे कि कभी नीचाई पर, सर्पाकार का रास्ता ही समझिये। दूर से काली नागिन सी डामर की सडक दिखती है। खूब जोरदार घुमाव के कारण हमारे राम और नौकर के सिवाय सभी का जी मिचलाने लगा और उल्टीयें होने लगीं। हे शांति बाबा शाँति बाबा की सब रटन लगाने लगे। वह एक इलायची का दाना था जिसने अपने राम की लज्जा रख ली। २ घंटे की दौड धूप के बाद हम माउण्ट आबू पर जा टपके।

\+ \+ \+ \+ \+

हम लोगों को देलवाडे जाना था अत वहाँ से फिर टैक्सी कर देलवाडे पर जा उतरे। माउण्ट आबू से देलवाडा ढाई माइल है। लोरी से नीचे उतरे कि सिरोही राज्य का थानेदार आया और बोला कि एक रुपया ९५ पैसे मूंड के लावो। हमारे राम विस्मय मे पड गये कि यह फिर किस उस्तरे से हमारे को मूंडना चाहता है। उसने पूछा क्या आप जैनी हैं? हमने कहा हां! क्या आप देलवाडे के जैन मंदिरो के दर्शन करेगे ? हमने कहा क्यों नहीं ? तो फिर यह दर्शन करने का टैक्स ही मूँड का है। मुझे बडा दुःख हुआ भगवान के दर्शन करने का भी कहीं टैक्स होता है। हिन्दू राज्य होकर हिन्दुओ के मन्दिरों पर भगवान के दर्शन कराने का टैक्स कितनी अनर्थ की बात है। यह हिन्दुओं की एकमात्र कमजोरी का परिचायक है। पाठक ! सोचे कि यह टैक्स कहाँ तक युक्ति–संगत है! प्रत्येक हिन्दू मात्र को इस टैक्स का विरोध करना चाहिये। जैनों की प्राचीन कला कारीगरी के संसार में प्रसिद्ध मंदिरों पर जो हमारे पूर्वजों ने करोड़ों रुपयों की लागत से बनवाये हैं उन्हीं पर टैक्स जिस पर सिरोही स्टेट का कुछ भी अधिकार नहीं है। यह सब कहां तक ठीक है?

\+ \+ \+ \+ \+

आबू राजस्थान का शिमला है। यह बात बिल्कुल ठीक है। यहां पर काफी ठण्डक रहती है आप आबू पर सारे दिन घूमते रहिये आपको थकावट और गर्मी का भान होगा ही नहीं। पर आपको रात्रि में सीरख या कम्बल अवश्य ओढ़ना होगा। पौ फटने से कुछ पहले उठकर देखिये तो आपको कुहरे के बादल ही बादल नजर आयेंगे। आबू पहाड़ पर कहीं बड़े–बड़े मैदान हैं तो कहीं पहाड़ो के ढलाव हैं। लाल सुन्दर और सुगन्धित वृक्षों और पौधो से लद पड़े हैं। गर्मी का मौसम (Spring season) यहां का कमाल है। गुल चम्पा के पेड़ जगह–जगह हैं जो सर्वत्र अपनी मीठी सौरभ को छिटकाते रहते हैं। ऊँची–ऊँची चट्टानें, घनी वनस्पति का आधिपत्य, घाटियो और मैदानों का मनोरम दृश्य बसन्त काल की ध्वनि से गुंजित पानी के झरने और नाले, यह सब प्रत्येक यात्री के दिल को लुभा देता है। यही मेरा निज का अनुभव है। यहां का जलवायु आरोग्य दायक है। पहाड़ो का ठंडी हवा असाध्य रोगों को नष्ट कर देती है। प्रकृति की कला कारीगरी और सौन्दर्यता के लिए आबू एक अच्छा उदाहरण है।

हो तो लिखें। तेरहपथी आमनाय वाले तो चुप है क्योंकि उनकी आमनाय वाले प पाकिस्तान मे नगण्य हैं। अपने-अपने दृष्टिकोण मे शायद ठीक हों पर मेरे ख्याल से ऐसी विज्ञापन-बाजी सामाजिक पत्रो मे ठीक नहीं है। हम अपने स्थानक मे स्थानकवासी है और मन्दिर में मूर्तिपूजक है। किन्तु समस्त जैन श्वेताम्बर समाज के भाई-बहिनो के जीवन-मरण के प्रश्न पर तुच्छ साम्प्रदायिकता रखने की जरूरत नहीं। इस विषय पर हम सबको एक दिल होकर – कंधे से कंधा मिलाकर हमारे दु:खी भाई-बहिनो को रोजी देकर, रोटी-बेटी का व्यवहार कर मदद देनी चाहिये। इसलिए मेरे ख्याल से समस्त जैन समाज को एक साथ होकर सयुक्त प्रयास करना चाहिए। चाहे वे श्वेताम्बरी – स्थानकवासी – मूर्तिपूजक – तेरहपथी हो या दिगम्बर हों।

–

"ओसवाल"
१५ दिसम्बर, १९४७

जैन मन्दिरों में हरिजन-प्रवेश!

आजकल हम समाचार पत्रो में प्रतिदिन देखने व पढने से अनुभव करने लगे हैं कि जैन-समाज मे एक आन्दोलन की चिनगारी सुलग रही है, जिसको यदि जल्दी न बुझाया गया तो हो सकता है कि एक ज्वालामुखी का विस्फोट-सा हो जाय और उसमे समाज के अग-अग टूट-टूट कर छिन्न-भिन्न हो जाये, ऐसा मेरा ख्याल है।

इस आन्दोलन का श्रीगणेश बम्बई मे हुआ है। बात यह है कि बम्बई सरकार ने एक मन्दिर प्रवेश बिल बनाया है, जिसमे जैनियो को भी हिन्दू धर्म मे शामिल करके हरिजनो का जैन मन्दिरो मे प्रवेश कानूनन ठहरा दिया है।

बम्बई सरकार का कहना है कि "जिस प्रकार ईसाई धर्म अथवा पारसी-धर्म को हिन्दू धर्म से अलग माना गया है, उस प्रकार जैन धर्म को कभी नहीं माना गया। जैनियो पर प्राय: हिन्दू कानून बराबर लागू होता आया है। जब वास्तविकता यह है तो जैन-मन्दिरों को हरिजन-मन्दिर प्रवेश कानून की धाराओं से कैसे मुक्त रखा जा सकता है ? यदि जैन मन्दिर में सवर्ण हिन्दू प्रविष्ट हो सकते हैं तो हरिजनों को कैसे रोका जा सकता है ? वे भी आखिर हिन्दू ही हैं। जैन-मन्दिरों मे हरिजनो का प्रवेश निषिद्ध रहने का अर्थ हिन्दुओं मे छुआछूत की बीमारी की आयु को बढाना" होगा।

इस बिल पर जैन-समाज मे दो विचार धाराये उत्पन्न हो गयी हैं। इन्हीं विचार-धाराओं पर एक विशाल आन्दोलन एवं सत्याग्रह का महल बनाया जारहा है। एक पक्ष रूढिग्रस्त-लकीर के फकीरों का है, दूसरा पक्ष प्रगतिशील विचार के लोगो का है। अब हमको दोनों पक्षो पर निष्पक्ष विचार करके एक संगठित विचार जनता-जनार्दन के सन्मुख पेश करना है।

हमारे धर्म-गुरू तथा समाज के कर्णधार पुकार-पुकार कर कहते है कि जैन धर्म एक विश्व व्यापक मानव तथा कर्म-प्रधान धर्म है। हम कर्म दर्शन को हमारे धर्म का एक प्रमुख अंग मानते हैं। जो कुछ होता है, कर्म स

जैन शरणार्थी भाइयों की समस्या

शरणार्थी भाइयों की समस्या हिन्द सरकार के सामने एक पहेली-सी बन गयी है। और समस्या भी ऐसी जटिल बनी है कि जिससे हल पाना आसान काम नहीं है। फिर भी हमारी हिन्द सरकार जो कुछ उनके लिए कर रही है वह उसकी दिलेरी व बहादुरी का सबूत है। सरकार का काम है उनको रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि यातायात के साधनों से पाकिस्तानी क्षेत्रों से सुरक्षित निकाल लाना -- यह काम जनता का है कि वह अपने इन दुःखी भाई-बहिनों के रहने, खाने-पीने, फिर से बसाने व नौकरी आदि दिलाने का प्रबन्ध करे। बिना जनता के सहयोग के सरकार भी कुछ न कर सकेगी और पाकिस्तानी आततायियों द्वारा सताए हुए हमारे इन भाई-बहिनों की समस्या सुलझने की बजाय उलझती ही जायेगी। और ऐसी उलझ जायेगी कि जैसे भंवर मे नाव पडकर चकराती रहती है वैसे ही इन भाई-बहिनों की हालत हो सकती है।

इसलिए जनता का कर्तव्य है कि वह इन भाई-बहिनो की सहायता करे, "शरणार्थी" समझ कर ही न करे अपितु निजी भाई-बहिन समझकर करे। जब तक वह ऐसा न समझने लगेगी – तब तक सच्ची सहायता नहीं की जा सकती। हमारे इन भाई-बहिनो को मैं तो कहता हूं – "शरणार्थी" कहना ही गुनाह है। ये शरणार्थी नहीं हैं इन्हें प्रवासी भाई कहे तो ठीक रहेगा। ये लोग जानबूझ कर आपकी शरण में नही आये हैं। ये भी आपकी तरह लक्षाधिपति थे, अफसर थे, मजदूर भी थे और इनकी भी लाखो की मालमता व जायदाद थी – जो आज भी पापी पाकिस्तान में खडहरो का ढेर व लुटेरों के कब्जे मे है।

पाकिस्तान से लाखों हिन्दू सिख भाई हिन्दुस्तान मे आए हैं, और उनमे हजारों हमारे जैन भाई भी आए हैं और आ रहे हैं। राष्ट्रीयता की दृष्टि से देखें तो हमारी जैन जनता का कर्तव्य है कि वह सबकी मदद करे फिर भी जैन भाईयों की सहायता करना हमारा प्रमुख और प्रथम कर्तव्य है।

आज जब साम्प्रदायिकता स्वयं नष्ट हो रही है और उसकी संस्थाओ पर सरकार की कड़ी नजर है, उसमें भी हमारी जैन जनता एवं उसके कर्णधार साम्प्रदायिकता के दलदल मे दिनो दिन फसते जा रहे हैं। कर्तव्य तो हमारा यह है कि हम प्रत्येक मत वाले शरणार्थी भाईयों की एक साथ एक दिल होकर मदद करे। हमको यह नहीं देखना है कि वह भाई श्वेताम्बर है या दिगम्बर। इस बारे में मुझे एक प्रवासी सिख भाई ने रेल मे बताया कि जैनी लोगों में जीवन-मरण के प्रश्न पर भी एकता नहीं है। उसने कहा कि -- हमारे शहर में यह खबर आयी कि जैन भाईयों को निकाल लाने के लिए एक हवाई जहाज आया था। जैन भाई-बहिन एरोड्रोम की तरफ लपक पडे। हवाई जहाज लिमिटेड सीटों का था। सिर्फ 1 सीट बच रही थी। इतने मे एक नवयुवती जिसका सुहाग लुटेरों ने लूट लिया था, जिसके मातृ पक्ष के कत्लेआम कर दिये गये थे – सिर्फ तीन साल के एक लडके को लेकर आयी। उसने धीमे स्वर से वायुयान के जैन नेता से कहा मुझ अभागिन को भी ले चलिये – मैंने सुना है कि जैनियों के वास्ते ही हवाई जहाज शहर मे आया है। नेता ने पूछा तुम कौन जैन हो ? उत्तर मिला ...... सुनते ही नेता ने जोर से कहा -- यह हवाई जहाज तो सिर्फ जैनों के वास्ते है। तुम्हारे लिए इसमे कोई जगह नहीं है। नवयुवती ने लाखों मिन्नतें कीं – किराया दुगुना देने को कहा पर सब बेकार। अंत मे वह दुखिया चली गयी – उसका क्या हुआ ईश्वर जाने।

ऐसी तुच्छ सांप्रदायिकता हमारे में न आनी चाहिए – चाहे ___ समाज हो चाहे ... । इस मौके की घड़ी मे भी हमारी ऐसी धारणा रही तो फिर "जैन" शब्द संसार से मिट जावे इसमें आश्चर्य नहीं। हमे "ओसवाल" प्रवासी भाई बोल कर या "जैन" भाई बोल कर मदद करनी चाहिए और उन्हीं नामों से जनता से सहायता की अपील करनी चाहिए। मुझे जैन पत्रों में लम्बे चौड़े विज्ञापन देखने को अक्सर मिलते हैं। कोई लिखता है कि स्थानकवासियों को ... से निकाल लाना है इस वास्ते धन की जरूरत है। कोई लिखता है कि मूर्तिपूजक भाई की आर्थिक मदद की जरूरत

'उनके दिखाये कदमो पर न चलेगे ? हर्ष का विषय है कि आज हमारी राष्ट्रीय सरकार ने भी बापू के चरण-चिन्हों पर ही अपनी सरकारी नीति निर्धारित की है। वह है सत्य तथा अहिसा की पगडडी। भगवान महावीर ने अहिसा वाटिका का निर्माण किया, महात्मा गान्धी ने उसे फलने-फूलने मे एक बागवान कार्य किया। राष्ट्रपिता के शब्दो मे अस्पृश्यता प्रत्येक धर्म और समाज के लिये कलक रूप है और उस कलक को जितना जल्दी मिटाया जायगा, उतना ही अच्छा होगा।

'हिन्दुस्तान' के सम्पादक महोदय के इस वाक्याश का हम सहर्ष स्वागत करते हैं कि "हिन्दू समाज की ही भाँति जैन समाज को भी यह समझ लेने की आवश्यकता है कि स्वतन्त्र भारत मे छुआछूत को कानूनन वर्जित ठहरा दिया गया है। ऐसी दशा मे जैन समाज को हरिजन-मन्दिर प्रवेश कानून का विरोध करने के बजाय स्वागत करना चाहिए क्योंकि वह उन्हे अस्पृश्यता की एक कुप्रथा से अपना पिण्ड छुडाने मे सहायक होगा। खुशी की बात है कि जैन समाज के प्रगतिशील व्यक्तियो ने बम्बई सरकार के कानून का स्वागत किया है। बम्बई सरकार ने उस कानून मे कोई भी परिवर्तन करने से इंकार करके उचित ही किया है।

अन्त मे मेरा जैन समाज के नेताओ से नम्र निवेदन है कि वे इस गहरे मत-मतान्तर पर विचार कर एक सयुक्त रूप से आवाज निकाले और बम्बई सरकार के इस कानून का स्वागत करे। अगर सशोधन की आवश्यकता हो तो इसके लिए आवश्यक कदम उठावे, समय को पहिचानें। अगर हम समय के साथ न चले तो हम पिछड जावेगे। आने वाली सन्ताने हमे कोसेगी और होगा क्या ? इस जन साधारण तथा सरकार की नजरो मे अप्रतिष्ठित हो जावेगे। अब कानून जो बन चुका है, वह बन कर रहेगा और हमे मजबूरन मानना ही पडेगा । इससे तो अच्छा है कि हम समय से पहले चेतें और धर्म की आन-शान को बनाये रखे। जो लोग यह नारा लगाते हैं कि हरिजनो के मन्दिर-प्रवेश से हमारा जैन धर्म खतरे मे है, मैं कहता हू कि ये खुद खतरे मे हैं। धर्म की नौका कभी नहीं डूबती, धर्म अटल है। जय हिन्द।

"ओसवाल" आगरा
वर्ष १६ अंक ७
१५ अक्टूबर १९४९

होता है। वही मंगलमय महावीर भगवान ने अपनी अमर वाणी में कहा है। कर्म से ही शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण होता है – कोई जन्म से नहीं होता है। जैन–धर्म छूआछूत तथा जाति–पांति के भेदभाव की आज्ञा नहीं देता है। जैन-धर्म में विश्वास तथा श्रद्धा रखने वाले किसी भी व्यक्ति की गणना जैन समाज में की जा सकती है फिर चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी जाति से क्यों न हो। "हिन्दुस्तान" दैनिक के सम्पादक महोदय लिखते हैं – "हरिजनों पर प्रतिबन्ध जारी रखने का आग्रह करके जैन–धर्म को संकुचित बनाया जा रहा है और जो लोग ऐसा करते हैं, वे जैन धर्म की कोई सेवा नहीं करते। जैन हिन्दुओं के साथ इतने घुल–मिल गये हैं कि अपने को हिन्दुओं से अलग घोषित करवाने की चेष्टा हास्यास्पद ही समझी जायेगी"।

सम्पादक महोदय के पिछले वाक्यांश तथा बम्बई सरकार के कथन कि जैनियों पर हिन्दू–लॉ प्राय लागू होता है इसलिए हरिजनों का मंदिर प्रवेश कानून जैन–मंदिरों पर भी लागू होता है इस बात से हम सहमत नहीं हैं। हमको इसका संयुक्त रूप से विरोध करना चाहिए।

धर्म और समाज अलग–अलग चीज हैं। जैन–धर्म एक स्वतन्त्र धर्म है। यह हिन्दू धर्म की कोई शाखा नहीं है। जैन धर्म के अपने अलग ही संस्कृति, साहित्य तथा दर्शन हैं और उसके विधि–विधान बिलकुल स्वतन्त्र हैं। हिन्दू धर्म से उसका कोई सामंजस्य नहीं है। एक समय में जैन धर्म प्रधान शासक धर्म भी रहा है। जैन धर्म एक स्वतन्त्र धर्म है, इसका नारा संयुक्त रूप से बुलन्द कर देना चाहिए। सरकार या कोई ताकत इसके विपरीत घोषणा या बयान दे तो उसका प्रतिकार करना चाहिए। एक अंग्रेज या पारसी भी जो जैन–धर्म के विचारों को विधि–पूर्वक मानता है वह अपने आपको "जैन" कहलाने का अधिकारी है। इसका यह मतलब नहीं है कि सरकार हिन्दू–धर्म के सामाजिक तथा धार्मिक कानून उस पर थोप सके। समाज में वह एक पारसी है, जो पारसी समाज से संबंध रखता है। किन्तु धार्मिक लिहाज से वह जैन है, जो कि दुनियां के अन्य धर्मों की भाँति एक स्वतंत्र धर्म है। हिन्दुओं के सामाजिक कानून जैन समाज (ओसवाल, अग्रवाल, सरावगी, गुजराती आदि) पर लागू किये तथा लगाये जा सकते हैं, कारण कि सामाजिक दृष्टि से हम लोग उनके रात–दिन सम्पर्क में रहने से हमारे सामाजिक विधि–विधान उनके जैसे ही हो गये हैं।

सरकार हरिजनों के मन्दिर – प्रवेश पर कानून बनाती है और जनता पर लागू करती है। मैं कहता हूं, जैनियों के लिए इसे कानून बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि जैन–धर्म तो एक व्यापक विश्व धर्म है, कोई भी मानव, जो जैन धर्म को मानता है, जैन मन्दिरों में प्रवेश कर सकता है। इसका विरोध करना युग धर्म का विरोध करना है। हम चाहते हैं कि हरिजन मन्दिरों में आयें, देवदर्शन का लाभ लें। क्यों न लें ? वे भी तो आखिर इंसान हैं, हमारे ही समाज के अंग हैं। हरिजन कोरे मंदिर में प्रवेश करें और बिना जैन–धर्म के विधि–विधान को समझे अनजान ही हमारी धार्मिक भावनाओं को कष्ट पहुँचावें, इसका हमें जोरदार विरोध करना चाहिए। इसके लिए सबसे अच्छी चीज यह है कि हरिजन भाई, जो जैन मन्दिर में प्रवेश करने की आकांक्षा रखते हैं, वे पहले जैन–धर्म अंगीकार करें और जैन विधि–विधान को सोचें तथा समझें इसके उपरान्त अगर शुद्धता से देव दर्शन करें तो हमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

जैन धर्म का मूल सिद्धान्त "अहिंसा परमो धर्म" है। इसी सिद्धान्त के जरिये से हमारे देश को आजादी के दर्शन उपलब्ध हुए हैं। यह हम सब जानते हैं। हम दूसरों के रत्ती भर भी दिल दुखाने में पाप समझते हैं, निर्दोष जीव को भी कष्ट पहुँचाने में हम हिचकिचाते हैं। तो फिर क्या हम हरिजन, जो कि पंचेन्द्रिय मानव हैं हमारे ही समाज में पैदा हुए हैं, उनको अपने मन्दिरों में जाने से रोकेंगे तो क्या उनकी अन्तरात्मा को कष्ट नहीं होगा? क्या वे भगवान् को नहीं कोसेंगे कि हे भगवान्! मोक्ष के द्वार क्या तूने उच्च कुलवालों के लिए ही खुले रखे हैं ? तो फिर जैन समुद्रि नाम कैसे पड़ा ?

हमारे राष्ट्रपिता विश्व वन्द्य बापू इस अहिंसा के सिद्धान्त के लिए जिए तथा मरे। "Live and let live" का सिद्धान्त उन्हें प्रिय था। वे अहिंसक थे। "जैनी शब्द के सच्चे अर्थों में जैनी थे। उनकी विचार–धारायें को सारा संसार मानने को जा रहा है। तो क्या हम जैनी "अहिंसा के पुजारी" अपने राष्ट्रपिता की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे?

"प्रत्येक भारतवासी पहले खुद अपना उद्धार करे, वह भारत–उद्धार की चिन्ता न करे। उसका उद्धार ही भारत का उद्धार है।"

इस विज्ञान के युग में केवल यथार्थवाद को स्थान है। वह कोरी कल्पनाओ या थोथी दलीलो को नहीं मानता। विज्ञान जो कहता है वह करके भी दिखाता है।

इस भाद्र–मास में हमारी आत्म–परीक्षण के लिए 'पर्युषण' आये और परम्परागत की बाते भी हो गयी। क्या हम अब अपने में कुछ नवीनता भी ला सकेंगे? देखना तो यह है कि जो कुछभी हमने आदर्श की बाते मुंह से निकाली हैं उन्हे जीवन मे शत्–प्रतिशत उतारने की चेष्टा भी कर रहे है और उसके द्वारा आत्म–परीक्षण भी हो रहा है या नहीं? श्रावक के १२ व्रत होते हैं, इतने हम न पाल सके – कोई हर्ज नहीं। दो–चार को तो पाले, किन्तु सच्चे दिल से पालें। धर्म का पालन थोडा ही करें कोई चिंता नहीं, केवल इतना ध्यान अवश्य रहना चाहिए कि जो कुछ भी किया जाय वह शुद्ध और सच्चे मन से हो। दिल को यथार्थवाद की ओर ले जाओ, लोक–दिखावे की ओर नहीं। अगर इस बार हम कुछ थोडा–सा भी रचनात्मक कार्य कर सके तो हम समझेगे कि हमने 'पर्युषण–पर्व' सार्थक रूप मे मनाया है अन्यथा लकीर के फकीर'ही रह जावेगे ? एक जमाना था जबकि "जैन" शब्द को लोग आदर की दृष्टि से देखते थे और जैनीयों के जीवन पर सच्चरित्रता, सच्चेपन का आदर्श झलकता था, जो कि दुनियॉ के लिए अनुकरणीय था, किन्तु आजकल हमारी क्या दशा है – यह एकांत में बैठ कर मनन करने का ही विषय है।

क्या मैं आशा करु कि "विश्ववाणी" मे प्रकाशित श्री महादेव साहा की निम्नांकित चुनौती भरी पंक्तियो से कुछ प्रेरणा या शिक्षा ग्रहण कर सकेगे ?

"लिखने पढने में कितनी बातो मे जैन दर्शन महान है, इसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। लेकिन इसके बावजूद व्यवहार के क्षेत्र में जैन राजाओं, सेठो, जमीदारो ने वही किया या कर रहे हैं, जो अन्य धर्म या दर्शन के अनुयायियो ने किया है। इसलिये किसी लोकोक्ति मे मार्मिक व्यग्य किया गया है –

जाणनहारा जाणिया, वाणिया तेरी बाण
बिन छाणे लोई पीवे, पाणी पीवे छाण"

इसी प्रकार साहित्य तथा इतिहास के मनोवैज्ञानिक आचार्य डा० भगवान दास भी "महावीर वाणी" पुस्तक की प्रस्तावना में लिखते हैं – "यह खेद का स्थान है कि जैन सम्प्रदाय मे भी व्यवहारिक रूप मे जिनोपदिष्ट सिद्धान्त का पालन नहीं होता, प्रत्युत उसके विरोधी अप–सिद्धान्त का अनुसरण हो रहा है। मैं आशा करता हूँ कि "महावीर वाणी" के द्वारा जैन–सम्प्रदाय का ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा और सम्प्रदाय के माननीय विद्वान यति–जन इस, महावीर के समाज और गार्हस्थ्य के परमोपयोगी उपदेश, आदेश का जीर्णोद्धार अपने अनुयायियो के व्यवहार मे करावेगे।

चाहिये तो हमें यह, कि पर्युषण–पर्व के उपलक्ष में हमारे द्वारा सार्वजनिक–हित की दृष्टि से एक रचनात्मक आन्दोलन शुरू हो – वह भी बहुत ही सीधे–सादे ढंग पर, जिसे बिना किसी तकलीफ या अडचन के प्रतिदिन व्यवहार मे लाया जा सके। वह है 'अरात्रि–भोजन" का आन्दोलन। रात्रि–भोजन करना न धार्मिक दृष्टि से ही ठीक है और न स्वास्थ्य की दृष्टि से। वर्षा–ऋतु के दिनों मे हम देखते हैं कि अनंत सूक्ष्म व बडे जीव मच्छर आदि की उत्पत्ति विशेष–रूप से हो जाती हैं, जिन्हें हम आंखो से देख भी नहीं सकते। ऐसी अवस्था मे रात्रि–भोजन करने से उनको भी निगल जाते हैं। तब फिर हम अहिंसक कहाँ रहे ?

'सूर्य के उदय होने से पहिले और सूर्य के अस्त हो जाने के बाद सभी प्रकार के भोजन–पान आदि की मन से भी इच्छा नहीं करना चाहिए।"

पर्युषण-पर्व किस प्रकार सार्थक होगा!

एक के बाद दूसरा महायुद्ध हुआ और अब तीसरे महायुद्ध की चिनगारियाँ सुलगती नजर आ रही हैं। संसार का सारा वातावरण क्षुब्ध और अशांत बना हुआ है। यद्यपि सभी राष्ट्र कहने को चाहते तो शांति हैं किन्तु वह होती नहीं। इसका कारण क्या है? यही, कि वे अपने किये हुओं पर प्रायश्चित नहीं करते। भूल या गलती करना इंसान के लिए स्वाभाविक है, किन्तु किये हुए के लिए प्रायश्चित कर लेना हर एक के लिए आसान नहीं।

दीपावली व्यापारी मात्र के लिए एक प्रकार से बड़े महत्त्व का त्यौहार है। जैसे ही यह त्यौहार नजदीक आता है सब अपने-अपने मकानों व दुकानो की सफाई ८ रोज पहले से ही शुरू कर देते हैं और पुराना कूड़ा-कचरा बाहर फेंक देते हैं। पुरानी बहियों के स्थान पर नई बहियाँ रखी जाती हैं और पूजी जाती हैं। इस प्रकार पुराना वर्ष नूतन-वर्ष में परिवर्तित हो जाता है, जिसमें गत वर्ष के नफे नुकसान का आंकड़ा भी कूता जाता है। इसी तरह पर्युषण पर्व (राजस्थानी भाषा में – पजूसणा) या अठाई जैनियो का भी एक धार्मिक उत्सव है। यह हमें अपनी आत्मा व मन की सफाई करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे हम अपने किये हुए कार्यों का आंकड़ा कूतते हैं, और सम्वत्सरी यानि छमछरी के दिन सायकाल साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण कर अपने गत वर्ष के किये गये पापो का मन-वचन और कर्म से प्रायश्चित करते हैं। अपने मिलने वालों से क्षमा मांगते हैं और दूर रहने वालों को डाक के जरिये "क्षमापन पत्रिका" भेजकर उन्हे लिखते हैं, १२ मास २४ पक्ष ३६० दिनों में यदि कोई कटु शब्द कहने या लिखने में आया हो तो मनसा, वाचा, कर्मणा से क्षमा चाहते हैं। हम अपनी "क्षमा-पन पत्रिका" का श्रीगणेश शास्त्र की दुहाई देकर इस तरह करते हैं –

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति मे सव्व भूएसु, वैरं मज्झ न केणइ।।

भावार्थ – मैं सभी जीवो से क्षमा चाहता हूँ। सभी जीव मुझे क्षमा करें। सभी प्राणियो के साथ मेरा मैत्री भाव है। किसी के साथ मेरा वैर भाव नहीं।

इस प्रकार हम एक परम्परागत परिपाटी का आदर्श पूरा कर जीवन का पुराना दोषपूर्ण अध्याय बंद कर देते हैं, और "उत्तरपारणा" (सम्वत्सरी का अगला दिवस) के दिन से फिर नये अध्याय का पृष्ठ खोल देते हैं।

यहाँ अब प्रश्न विचारने का तो यह है कि क्या हम आज कल इस आदर्श को जीवन में व्यावहारिक रूप से उतारते हैं या हमारा यह आदर्श कोरा कागज पर ही रहता है? देखने और सुनने में हमारे और भी कई सिद्धान्त सुन्दर मालूम होते हैं और हम उनकी ढूंढी भी पीटते रहते हैं। क्या हम में से किसी ने भी इनके शतांश को भी जीवन में उतारा है?

जैन-दर्शन महान् है, इसकी सभी ताईद भी करते हैं। 'अहिंसा' जैनियो का एक प्रधान शस्त्र है। इस पर बीसियो पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। हमारे गुरु महाराज भी अपने व्याख्यानों के द्वारा इसकी घोषणा करते रहते हैं। महात्मा गांधी अहिंसा के पुजारी थे, यह भी हमारे लिए एक गौरव की बात है। देश को उन्होंने आजादी भी इसी के द्वारा दिलायी। वैसे तो हम एकेन्द्रिय जीव को मारना पाप समझते हैं, किन्तु स्वार्थवश हो पंचेन्द्रिय के दिल को दुखाने में जरा भी रहम नहीं करते। आश्चर्य है! क्या यही हमारे जैनियों की अहिंसा है? अहिंसा का अर्थ है –

"सदा के लिए सब प्रकार से सभी प्राणियों पर द्वेष भाव का न होना ही 'अहिंसा' है।"

खेद है कि हम दूसरों को अहिंसक बनने के लिए तो आदेश देते हैं, उपदेश करते हैं पर स्वयं क्या कर रहे हैं – कभी विचारा है? आज से ४१ वर्ष पूर्व गांधी जी ने कहा था –

है – उणमे फेर बिगाड री तरक्की कित्ती जादा म्हे कर सका हां – इण ऊपर कमर कसियोडा एक दूजा सूं आगै हमेस तैयार हीज रहवां हां। दायजै (दहेज) री रीत कित्ती खोटी है! घर–रा–घर बरबाद हो गया, समाज बरबाद हो गयो पिण छोड नहीं सकां। सट्टे मे समाज उजड गयो, पिण म्हे उणने नहीं छोडा। किणी भी तरह सूँ पईसा भेळा करणरा जरूलां आगै म्हे म्हारी प्रतिष्ठा नै और मिनखपण नै समूँधा भूल गया। आ कित्ती सरम री बात है। लोग म्हारै नाव सूँ सूग करण लाग गया। कोई म्हांनै लुच्चो, कोई बदमास, कोई धोखेबाज, कोई ठग और कोई हरामखोर कह देवे तथा लिख देवे तोही म्हांनै अणेसो नहीं आवै। म्हांरा लाखां मारवाडी भाई बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र मे पीढिया सूँ रह रया है। उणामें हजारां उठैरी भाषांआ ने जांणे है – बोलै है और लिखै है। उण भाषाआ रा कई विशेषज्ञ नै ऊँचे दरजे रा विद्वान मरवाडी भाई भी उठै मौजूद है। पाछला सौ वर्षा में प्रकाशित हुओड़ा उठैरी भाषा रा कोश–ग्रथां नै उणा कदे ही देखिया ही नहीं हुवे, आ बात मांनण मे नहीं आवै। जरूर देखिया हुवैला। पिण ज्युकै श्री साकरियाजी अपणै एक पत्र मे लिखियो हो कै "उणां इण कोश–ग्रन्थां मे लिखियोडा मारवाडी शब्दरा अपमानजनक अर्था रो कईयानै जिकर कियो तो उणा आहिज कही कै उणारै लिखणै सूं आपै थोडा ही ठग, लुच्चा नै हरामखोर हो जावा ?" किसी फूटरो जवाब है? सरम नै भी सरम आजावै जैडो जवाब है ओ! उणां आगै आ भी लिखी है कै "इत्तां मे सिरफ दो जिणनै आ बात खटकी। जिणां में सूँ अेक तो है श्री हरिगोपालजी आचार्य और दूजा श्री घनश्यामदासजी दम्माणी।" दोनूँ बीकानेर रा रहवासी है। इणा दोनूँ जिणारै जद आ बात कांनां मे पडी, तो वे 'सादूल राजस्थानी रिसर्च–इन्स्टीट्यूट', बीकानेर मे, राजस्थानी भाषा रै कोश रो सम्पादन करणिया श्री बदरी प्रसाद साकरिया सूँ मिलिया और इण वक्तव्य रै अन्त मे दियोडी सूची रा कोश–ग्रन्था मे लिखियोडी सारी बातां विगतवार मालूम कीवी और इणा दोनूँ जिणा कलकत्ते रै मारवाडी–समाज मे इणरी चर्चा की और सामयिक पत्रों में भी इणरी चर्चा हुई। साकरियाजी ही ज पहला व्यक्ति हा जिणा आज सू ३०–३२ वर्षा पहली भी इण सवाल नै उठायो हो और अबै भी कोई दोय बरस पहली सादूल राजस्थानी रिसर्च–इन्स्टीटयूट, बीकानेर मे और अबार फेर अप्रैल में रतनगढ रै राजस्थानी साहित्य सम्मेलन में अेक मार्मिक लिखित–वक्तव्य रै साथै प्रस्ताव रखियो हो। जिको दोनूं जगा सर्व–सम्मति सूं पास हुओ।

पिण आंपै इत्ता लाबै गालै सू चुपचाप कीकर सूता रया आ बात घणीज अचमैरी है। पिण कँई जोर करां? हुई जिका तो हो गयी। अबै ही चेता तो मांटीपणो है। आपै आपणा आचरणा नै सारां रै अनुकूल बणावा नै आपणो तरफ सारां नै आकर्षित करां तथा साम्प्रदायिक और प्रान्तीय भावना सू अळगा रहनै इणा भूडा कहवणिया नै आपणी शिष्टता नै गंभीरता सूं तथा प्रेम सूं इण लोगा नै प्रायश्चित करण मैं विवश करा जद आपणी खूबी है। और इण भात समझाणै सू नहीं समझै नै हठ करै तो छे'लो उपाव कानून रो आसरो लेवणो पडैला। सो म्हारो सारा मारवाड निवासी और प्रवासी भाया सूं निवेदन है कै अबै आंपै नींद उडाय साचा मारवाडी बण मारवाडी नांव नै इणभांत कलंकित हुवण सू बचावण सारू कमर बांध तैयार हो जावां, तो ही ज आंपणो मारवाड़ी नाव सही रूप मे सार्थक हो सकैला।

१.५.५८

ooo

संसार मे बहुत से त्रस और स्थावर प्राणी बड़े ही सूक्ष्म होते हैं, वह तो रात्रि में देखे भी नहीं जा सकते, तो रात्रि में भोजन कैसे किया जा सकता है! कभी-कभी तो अकाल मौतें भी रात्रि भोजन के कारण से ही हुई हैं। शादी-विवाहों मे हम रात के १२ बजे तक बड़े चाव से भोजन करते रहते हैं जब कि जहरीले जन्तु तक भोजन की वस्तुओं में पड़े हुए पाये गये हैं। हमारे शास्त्रों में तो रात्रि को पानी पीना भी दोषप्रद बतलाया है, तो फिर भोजन करना कैसे अच्छा कहा जा सकता है? इस आन्दोलन के लिए हम छोटे-छोटे सुन्दर ट्रैक्ट, निबन्ध या एकांकी नाटक प्रकाशित कर सकते हैं। इन ट्रैक्टो का पूरी तरह से घर-घर में प्रचार हो। इन्हीं के द्वारा रात्रि-भोजन के दोष लोगों को समझाये जावें। बच्चों को भी शुरू से ही दिन मे खाने की आदतें डलवायी जावें। इस प्रकार के आन्दोलन द्वारा हम मानव-मात्र की अधिक से अधिक सेवा का लाभ ले सकते हैं। "अरात्रि-भोजन" की उपादेयता को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। इसी तरह अन्य जैन सिद्धान्तों का भी व्यवहार में हम सुन्दर रूप से प्रचार सकते हैं। ऐसा करके ही हम पर्युषणों को सार्थक बना सकेंगे।

ओसवाल
वर्ष १७ अंक ५
१ अक्टूबर, १६५०

❋❋❋

एक दुख री बात

("मारवाड़ी" शब्द के कुछ लोगो में अपमान-जनक अर्थ प्रचलित हैं। इसके कारण मारवाड़ी समाज स्वय को आहत अनुभव करता है। अत मारवाडी समाज को इसके प्रति जागरूक करने के लिए श्री बद्री प्रसाद साकरिया ने "आ नींद कद उडैला" शीर्षक से जो उद्बोधन लिखा था उसकी भूमिका श्री हजारीमल बाँठिया ने लिखी थी। इस भूमिका को यहाँ ज्यों की त्यो उद्धृत किया जा रहा है। – सम्पादक)

दुख-दरद री आप घणी बातां सुणी हुवैला, पिण इण जैड़ी नहीं सुणी हुवैला। आ इण छोटी सी अपील नै खोजपूर्ण वक्तव्य-पत्र मे आप पढोला। ओ दुख आपरो है नै म्हारो है – सिगलां रो है। आपणी इज्जत-आबरू नै बचावण रो है। इण मोकै भी आप नहीं चेतांला तो आपणी कँई दसा आगै हुवैला, इणरो अनुमान आप इणनै पढनै लगा सकोला।

आप अबै कठातक सूता रहोला? "सूतोड़ां री भैंस पाड जिणै"। सूता-सूतां ओ घाटो तो आप भुगत लियो। दुनिया किण मारग जा रही है, आप उठीनै देखो और गंभीरता सूं विचार करो तथा आपरै कर्तव्य नै सोचो।

"गधे री पूंछ पकड़ लियो सो पकड़ ही लियो।" आ ओखाणो कद चालियो नै क्यूं चालियो, इणरो तो की पतो नहीं, पिण आपणै ऊपर है साव सांचो। चाहे जितो समाज रो नुकसाण हुवो, उलटा-सीधा पैंडा री रीत-रिवाज हुवो, हित रो कांम हुवो चाहे अनहित रो, जमाना रै माफक हुवो चाहे उलटो, लोग भलो कहो चाहे बुरो, दुनिया नीची-ऊँची हो जावो – म्हे म्हारी परंपरा नहीं छोड़ां। वैवार-व्यवहार मे, पढणै-लिखणै में, मरण-परणै में, जगती रिते रा आंपां मारवाड़िया रा संसार-धारा, सात रै बांटै मे पुलिसोंका कामा मै जिसो बिगड़ उण आंक आज अेमणाप सहित

नहीं पा रही। बढते हुए जीवन को पीछे ढकेलने का काम आज शिक्षा का है।

आज का विद्यार्थी उस भूले–भटके ही की तरह है जिसे यह नहीं मालूम कि उसे कहां जाना है और क्या करना है। इसका कारण हमारी दोष युक्त शिक्षा प्रणाली है। देशोन्नति एव धर्मोन्नति की तो बात दूर है आज के छात्र को अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् भरोसा नहीं कि वह अपनी जीविका भी कमा लेगा अथवा नहीं। आज का मजदूर एक मध्यम वर्ग के छात्र से अधिक प्रसन्न नजर आता है। यह शिक्षा प्रणाली हमारे छात्रो को अपग बना रही है। इस शिक्षा से न तो भौतिकत्ता की पूर्णता हो पाती है और न आध्यात्मिकता की ही। यह शिक्षा यही बात सिद्ध करती है कि 'दुविधा मे दोऊ गए माया मिली न राम'।

इसलिए हमें राष्ट्र एव समाज के कल्याण के लिए शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने होगे। इस शिक्षा–प्रणाली को आमूल चूल बदलना होगा। शिक्षा के आध्यात्मिक मूल्यों को समझना होगा। अन्यथा हमारे राष्ट्र का, समाज का एव सस्कृति का भविष्य अंधकार–मय हो जायेगा। पुन मैं आप सबका इस समारोह के अध्यक्ष पद के लिए धन्यवाद प्रगट करता हूं कि जैन शिक्षा समिति द्वारा यह स्थापित विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करे और वह दिन आये जब यहां से निकलने वाले छात्र इस देश के आदर्श नागरिक साबित हो और राष्ट्र–कल्याण एव आत्मोन्नति मे सन्निहित हो।

धन्यवाद

श्री बाबूलाल जैन उ० मा० विद्यालय,
अलीगढ,
दि० २१ अप्रैल, १९६७

卐卐卐

जैन पर्यटन केन्द्रों की आवश्यकता

पर्यटन – उद्योग के विकास के लिए भारत सरकार बहुत सचेष्ट है। गत दिनो दिल्ली मे पाटा सम्मेलन हुआ जिसमे विदेशो के १६०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। प्रधानमत्री श्री मुरारजी देशाई ने उद्घाटन करते हुए कहा – पर्यटन उद्योग सिर्फ विदेशी मुद्रा कमाने के लिए नहीं अपितु आपसी सद्भावना, ज्ञान–वर्धन और मनोरंजन के साथ एक देश को दूसरे देश से नजदीक लाने के लिए होना चाहिये। सन् १९५१ में जहाँ भारत में सिर्फ १७ हजार विदेशी पर्यटक आये थे सन् १९७७ मे करीब ६ लाख विदेशी पर्यटक भारत मे आये और ढाई अरब विदेशी मुद्रा का अर्जन हुआ। सन् १९८० तक १० लाख पर्यटक भारत मे आवें इसके लिए नागरिक उड्डयन और पर्यटन मंत्री श्री पुरुषोत्तम कौशिक स्वय ऐतिहासिक तीर्थों का, महापुरुषों की जन्म स्थलियों का दौरा कर रहे हैं और उनके समुचित विकास के लिए आवश्यक धन का बजट मे प्रावधान कर रहे हैं। प्राचीन काल मे भी विदेशी पर्यटक फाहीयान, मेगास्थनीज आदि का उल्लेख इतिहास में मिलता है।

पर्यटन शब्द तीर्थ यात्री का प्रतीक है। हमारे जैन तीर्थ भी सारे भारत के उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम मे फैले हुए हैं। हजारो यात्री इन तीर्थों की यात्रा श्रद्धा व विश्वास के साथ करते हुए अपने को भाग्यशाली मानते हैं। हजारों रुपया तीर्थों पर दान देते हैं। अनेक स्पेशल ट्रेनो बसों द्वारा इन तीर्थों की यात्रा की जाती है। तीर्थ

उपस्थित सज्जनो

भगवान महावीर स्वामी की पुन्य जयन्ती पर आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता के लिए आपने जो मुझे यह अवसर प्रदान किया है उसके लिए मैं आप सब एवं जैन शिक्षा समिति अलीगढ़ का आभारी हूँ।

जैन समाज ने देश के विकास में विविध कार्यों द्वारा अपना योगदान दिया है। शिक्षा क्षेत्र में इस समाज द्वारा की गयी सेवायें देश के दानशील नागरिकों के सामने उदाहरण ही है। यह जो शिक्षा संस्था जिसके आंगन में यह पर्व सम्पन्न होने जा रहा है एक दानवीर जैन का जीता जागता प्रतीक है। इस संस्था के संस्थापक एवं प्रेरणा स्रोत श्री बाबू लाल जी जैन एवं उनके अन्य सहयोगियों द्वारा स्थापित यह विद्यालय जैन जगत के दानशील एवं शिक्षा प्रेमी सज्जनों के लिए एक उदाहरण है। देश में बढ़ती हुई शिक्षा की मांग को पूरा करने के लिए जैन समाज के लोग अवश्य अनुसरण करेंगे।

आज हमारे देश को आजादी मिले बीस बरस हो गये। आज हमें यह देखना है कि विगत बीस सालों में हमने शिक्षा से कितना पाया और कितना खोया है। हमारे पूर्वजों की शिक्षा-दीक्षा आश्रमों में अथवा गुरुकुलों में होती थी। उस समय शिक्षा का जो महान आदर्श था, शिष्य एवं गुरु का जो संबंध होता था वह हममें से किसी से कुछ छिपा नहीं है। शिष्य अपने गुरु के लिए जान भी न्योछावर कर सकता था, शिक्षा ज्ञान प्राप्ति के लिए होती थी तथा गुरु को सर्वोपरि माना जाता था। एक कवि ने तो गुरु की महिमा यहाँ तक बढ़ा दी, "गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांय, बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दिया बताय।" किन्तु आज के शिष्यों की महिमा और ही कुछ देखने-सुनने एवं पढ़ने को मिलती है। अभी कुछ ही दिन पहिले अखबारों में छपा था कि बुलन्दशहर में एक छात्र ने प्रधानाचार्य को मार डाला, किसी छात्र ने अध्यापक की टाँग तोड़ दी, तथा अध्यापकों को छुरे भोंकने और उन्हें मारने-पीटने की घटनायें तो विशेष रूप से इस परीक्षा-काल में अनेक पढ़ने एवं सुनने को मिल जाती हैं। पिछले दिनों छात्रों के आन्दोलन ने जो सारे राष्ट्र में धूम मचाई वह किसी से छिपी नहीं है। क्या हम इसी लिए स्कूल तथा कालेज बनवाते हैं कि इन स्कूलों और कालेजो के छात्र अपने अध्यापकों के जीवन से खेलें, समाज के लिए कलंक बनें तथा उनके हृदय में राष्ट्र-प्रेम का कोई स्थान ही न रहे। वे हमारे और राष्ट्र के नेताओ के सामने अपनी उचित अथवा अनुचित मांगे रखते और उन्हें मनवाने के लिए शक्ति एवं अनुचित साधनों का प्रयोग करें। हमें यह विचार करना है कि छात्रों की इस अनुशासन-हीनता का कारण क्या है। मैं तो छात्रों के इस असन्तोष एवं अनुशासन-हीनता का कारण राष्ट्र के कर्णधारों को, दोष-युक्त शिक्षा-प्रणाली को एवं शिक्षक और समाज को ही मानता हूँ।

हमारे राष्ट्र के कर्णधार पिछले बीस साल से गांधी जी के सिद्धान्तों की दुहाई देकर जनता को गुमराह करते रहे हैं। उन्होंने गांधी जी द्वारा प्रदत्त नैतिक मूल्यों, धार्मिक मूल्यों एवं जीवन के विकास के मूल्यों की ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया। आज तक वे यह निश्चित नहीं कर सके कि हमारी शिक्षा कैसी होनी चाहिए, शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिए। जब तक हमारे देश में, हमारे दिमाग में अंग्रेजियत बनी रहेगी तब तक हमारी शिक्षा में सुधार होना असम्भव है। आज भारतीय जीवन जिस द्रुत गति से आगे बढ़ने के लिए छटपटा रहा है उस गति से शिक्षा उसकी भूख मिटा

देशी व विदेशी पर्यटक भी जैन धर्म, संस्कृति और कला और साहित्य के बारे मे पूर्ण परिचित होगे। जैन तीर्थों पर सार्वजनिक लाभ के लिए स्कूल, कालेज आश्रम और चिकित्सालय भी जैन समाज को बनाना चाहिये तभी भगवान महावीर का जनसेवा ही "जिन सेवा" का सिद्धान्त प्रतिष्ठित हो सकेगा।

" कुशल–निर्देश "
मार्च, १६७८

⌘⌘⌘

उत्तर प्रदेश में कल्याणक तीर्थ

अयोध्या

अयोध्या जैन मान्यता के अनुसार शाश्वत नगरी है। इसका निर्माण देवो द्वारा हुआ। आदि संस्कृति का आरम्भ भी यहीं से हुआ। यह भारत की प्राचीनतम नगरी है। इतिहास मे इसके कई नाम मिलते हैं: अयुध्या, अयोध्या, साकेत, कौशल, रामपुरी, विनीता, विशाखा आदि।

अयोध्या पूर्वी उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के किनारे फैजाबाद जिले मे है और सडक मार्ग से लखनऊ से १३६ कि.मी., वाराणसी से १६२ कि.मी., इलाहाबाद से १६० कि.मी. और फैजाबाद से ८ किलोमीटर है।

जैन मान्यता अनुसार जहाँ तीर्थकर का एक कल्याणक हो जाय, वह जगह तीर्थ बन जाता है किन्तु अयोध्या में तो पांच तीर्थकरो के १६ कल्याणक हुए हैं – इसी से यह 'तीर्थराज' हो गया है। तीर्थकरो मे ऋषभदेव के गर्भ, जन्म, दीक्षा, अजितनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, अभिनन्दन स्वामी के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, सुमतिनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, और अनन्तनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा तथा केवल ज्ञान यहा हुए हैं।

जैनियो के प्रथम तीर्थकर–ऋषभ देव (आदिनाथ) के जन्म के कारण महत्त्व है। यहा हिन्दुओ की मान्यता है कि अयोध्या सप्त महापुरियों मे प्रथम पुरी है। भगवान श्रीराम की जन्मभूमि होने के कारण विशेष तीर्थ हो गया है। बौद्धों की मान्यता है – भगवान बुद्ध यहा कई बार पधारे थे, उन्होने दातुन गाड दी जो एक पेड के रूप मे उग आयी, जिसे आज कल 'दातुन कुंड' कहते हैं। गुरु गोविन्द सिंह की अयोध्या यात्रा के कारण सिख, खुर्द मक्का' और सिद्धो की सराय के कारण मुसलमान भी अपना तीर्थ मानते हैं। चक्रवती भरत जो भगवान ऋषभ देव के पुत्र थे – वे प्रथम चक्रवर्ती थे। उन्हीं के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पडा। कौशलाधिपति श्रीराम की यही राजधानी थी।

अयोध्या इक्ष्वाकु वंशी (सूर्यवंशी) राजाओ की राजधानी रही और इसे कौशल जनपद कहा जाता था। भगवान महावीर से पहले जिन सोलह जनपदो का नाम आता है उसमें 'कौशल' भी प्रसिद्ध जनपद था। भगवान महावीर के काल में कौशल राज्य दो भागो में बंट गया – उत्तर कौशल की राजधानी अयोध्या रही और दक्षिण कौशल की श्रावस्ती। आगे चलकर गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में अयोध्या साहित्य और कला की केन्द्र बन गयी।

अयोध्या लखनऊ – मुगलसराय मेन लाईन पर उत्तर रेलवे का स्टेशन है। चारो ओर सडक से जुडा है। फैजाबाद स्टेशन से सिर्फ ८ किलो मीटर है। अयोध्या का स्वयं का स्टेशन है। प्रतिदिन हावडा–देहरादून एक्सप्रेस

पर धर्मशालाओं को आधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाया जा रहा है। यात्रियों को सुविधाएं मिलने से हर बार जाते हैं और यथाशक्ति दान पुण्य करते हैं।

जैन समाज मे मंदिरो के निर्माण, जीर्णोद्धार, धर्मशालाओं के निर्माण, उपधान तप आदि मे लाखो रुपए हर साल खर्च कर देते हैं। अपने स्वयं के ऊपर भी, किन्तु जैन धर्म के प्रचार-प्रसार पर एक प्रतिशत भी खर्च नहीं कर पाते हैं। जो कुछ साहित्य भी छपता है वह जैन समाज के पुस्तकालयों तक ही सीमित रहता है। आबू, राणकपुर और शत्रुन्जय तीर्थ के मंदिर तो जग-प्रसिद्ध हैं किन्तु विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के लिए कहीं भी संयुक्त प्रयत्न नहीं किया गया है। जैनियों की उदासीनता से लाभ उठाकर सरकार भी मौन है। वह भी जैन तीर्थों के प्रचार व प्रसार में कोई योगदान नहीं दे रही है। उदाहरण के लिए अभी मैंने उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग से सम्पर्क किया तो उन्होंने हिन्दू, बौद्ध तीर्थों, सिख और मुस्लिम तीर्थ के लिए पर्यटन विभाग के नक्शे में समुचित स्थान दिया है किन्तु जैन तीर्थ का कहीं जिक्र नहीं मिलता है। न नक्शे में दर्शाया है। उत्तर प्रदेश कई जैन तीर्थंकरो की जन्मस्थली है। भगवान ऋषभदेव अयोध्या में, पद्मप्रभु कौशाम्बी में, विमलनाथ कम्पिल में, नेमनाथ शौरीपुर मे, शांतिनाथ कुन्थुनाथ हस्तीनापुर, पार्श्वनाथ वाराणसी आदि में। अयोध्या का परिचय दिया गया है, केवल भगवान राम की जन्मभूमि के नाते, कौशाम्बी का सिर्फ भगवान बुद्ध के नाते। पर्यटन अधिकारियो से बात करने पर बताया कि जैनियों से सहयोग मांगते हैं किन्तु वे सुनते ही नहीं। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश सरकार से लिखा-पढ़ी कर भगवान विमलनाथ और महासती द्रोपदी की जन्मभूमि कम्पिल को मैंने पर्यटन केन्द्र घोषित करवाया। उसके विकास के लिए कम्पिलपुर तीर्थ विकास परिषद् का गठन किया है और सर्वजनहित लाभ के लिए निर्मित श्री वर्धमान जैन चिकित्सालय कम्पिल का प्रचार और तीर्थ की महत्ता बताने के लिए, मा सं उ.प्र. राज्यपाल डा. एम चेन्नारेड्डी को आमन्त्रित कर चिकित्सालय भवन का उद्घाटन कराया तथा जैन मंदिरों का दर्शन कराके उनको जैन साहित्य भेंट किया गया। तभी से कम्पिल का प्रचार और प्रसार काफी हुआ। अभी जनवरी की २४ तारीख को क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी इलाहाबाद, स्वयं कम्पिल आये और उन्होंने दो दिन दौरा करके कम्पिल के हिन्दू और जैन तीर्थ के विकास के लिए डेढ़ करोड़ की योजना बनायी है जो उ.प्र. शासन की छठी योजना में भेजी जा रही है तथा पाटा सम्मेलन ७८ जो दिल्ली में हुआ उ.प्र. शासन की पर्यटन निर्देशिका मे कम्पिल का सविस्तार परिचय प्रकाशित किया है और कम्पिल का नाम विदेशों में भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि के रूप में प्रकाश में आया है। इसी तरह अन्य तीर्थों के विकास के लिए सरकार से सम्पर्क कर प्रचार व विकास की रूपरेखा बनानी चाहिये।

तीर्थों में जैन मंदिर व धर्मशालाओं पर सबका नाम-पट जैन के नाम से रहने चाहिये। दिगम्बर व श्वेताम्बर नहीं। भगवान तो जैन तीर्थंकर थे। मंदिर के पास से गुजरने वाले हर व्यक्ति को यह आभास हो यह जैन मंदिर है। इसके लिए दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों जैन सम्प्रदाय के दिग्गजों को विचार करना चाहिये। हर तीर्थ पर एक जैन सूचना केन्द्र रहना चाहिए जिसमें समस्त भारत के प्रसिद्ध जैन तीर्थों से सम्बन्धी पुस्तकें, फोटो देखने व बिक्री के लिए होना चाहिये। जैनेतर यात्री भी आवें तो उनके आवास के लिए समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

जैनेतर यात्रियों में यह आम धारणा है कि जैन धर्मशाला व तीर्थ मे जैनेतर ठहर नहीं सकते हैं। जैन धर्म के प्रसार के लिए इस मिथ्या धारणा को गलत साबित करना होगा। अभी शत्रुन्जय तीर्थ के चित्रो की पुस्तक आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी ने प्रकाशित की है। इसी तरह की अन्य तीर्थों की भी होनी चाहिए। देश के प्रमुख मार्गों जैसे उदाहरण के लिए दिल्ली से कलकत्ता या बम्बई से दिल्ली तक, राजमार्ग के हर ५०० किलोमीटर पर चार कमरों का पर्यटन केन्द्र बनाना चाहिये, वे दोनों जैन समाज के संयुक्त प्रयास से बने तो अच्छा हो। तीर्थों के फोटो, परिचय, धर्म सम्बन्धी पुस्तकें प्रदर्शित हों। देशी व विदेशी पर्यटक रात में विश्राम के लिए रुकें तो साधारण किराया लेकर उनको वहाँ ठहरने की सुविधा दी जावे। हमारे जैन-साधु साध्वियाँ जो पैदल चलती है वे भी वहाँ चलते आवश्यकता हो तो ठहर सकें। नवीन मंदिरों के निर्माण में जहाँ हम लाखों खर्च करते है वहाँ प्रचार व प्रसार करने के लिए दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन समाज के कर्णधारों के संयुक्त प्रयास से अगर एक करोड़ की योजना बनायी जावे तो जैन धर्म की महती सेवा हो सकेगी।

देशी व विदेशी पर्यटक भी जैन धर्म, संस्कृति और कला और साहित्य के बारे में पूर्ण परिचित होंगे। जैन तीर्थों पर सार्वजनिक लाभ के लिए स्कूल, कालेज आश्रम और चिकित्सालय भी जैन समाज को बनाना चाहिये तभी भगवान महावीर का जनसेवा ही "जिन सेवा" का सिद्धान्त प्रतिष्ठित हो सकेगा।

" कुशल-निर्देश "
मार्च, १९७८

⌘⌘⌘

उत्तर प्रदेश में कल्याणक तीर्थ

अयोध्या

अयोध्या जैन मान्यता के अनुसार शाश्वत नगरी है। इसका निर्माण देवो द्वारा हुआ। आदि संस्कृति का आरम्भ भी यहीं से हुआ। यह भारत की प्राचीनतम नगरी है। इतिहास मे इसके कई नाम मिलते हैं: अयुध्या, अयोध्या, साकेत, कौशल, रामपुरी, विनीता, विशाखा आदि।

अयोध्या पूर्वी उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के किनारे फैजाबाद जिले में है और सडक मार्ग से लखनऊ से १३६ कि.मी., वाराणसी से १६२ कि.मी., इलाहाबाद से १६० कि.मी. और फैजाबाद से ८ किलोमीटर है।

जैन मान्यता अनुसार जहाँ तीर्थंकर का एक कल्याणक हो जाय, वह जगह तीर्थ बन जाता है किन्तु अयोध्या में तो पांच तीर्थंकरों के १६ कल्याणक हुए हैं – इसी से यह 'तीर्थराज' हो गया है। तीर्थंकरों मे ऋषभदेव के गर्भ, जन्म, दीक्षा; अजितनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, अभिनन्दन स्वामी के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, सुमतिनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान; और अनन्तनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा तथा केवल ज्ञान यहां हुए हैं।

जैनियो के प्रथम तीर्थंकर–ऋषभ देव (आदिनाथ) के जन्म के कारण महत्व है। यहां हिन्दुओ की मान्यता है कि अयोध्या सप्त महापुरियों में प्रथम पुरी है। भगवान श्रीराम की जन्मभूमि होने के कारण विशेष तीर्थ हो गया है। बौद्धों की मान्यता है – भगवान बुद्ध यहां कई बार पधारे थे, उन्होंने दांतुन गाड दी जो एक पेड के रूप मे उग आयी, जिसे आज कल 'दातुन कुंड' कहते हैं। गुरु गोविन्द सिंह की अयोध्या यात्रा के कारण सिख, 'खुर्द मक्का' और सिद्धो की सराय के कारण मुसलमान भी अपना तीर्थ मानते हैं। चक्रवती भरत जो भगवान ऋषभ देव के पुत्र थे – वे प्रथम चक्रवर्ती थे। उन्हीं के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पडा। कौशलाधिपति श्रीराम की यही राजधानी थी।

अयोध्या इक्ष्वाकु वंशी (सूर्यवंशी) राजाओं की राजधानी रही और इसे कौशल जनपद कहा जाता था। भगवान महावीर से पहले जिन सोलह जनपदो का नाम आता है उसमे 'कौशल' भी प्रसिद्ध जनपद था। भगवान महावीर के काल में कौशल राज्य दो भागों में बंट गया – उत्तर कौशल की राजधानी अयोध्या रही और दक्षिण कौशल की श्रावस्ती। आगे चलकर गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में अयोध्या साहित्य और कला की केन्द्र बन गयी।

अयोध्या लखनऊ – मुगलसराय मेन लाईन पर उत्तर रेलवे का स्टेशन है। चारों ओर सडक से जुड़ा है। फैजाबाद स्टेशन से सिर्फ ८ किलो मीटर है। अयोध्या का स्वयं का स्टेशन है। प्रतिदिन हावडा–देहरादून एक्सप्रेस

पर धर्मशालाओं को आधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाया जा रहा है। यात्रियो को सुविधाएं मिलने से हर बार जाते हैं और यथाशक्ति दान पुण्य करते हैं।

जैन समाज में मंदिरों के निर्माण, जीर्णोद्धार, धर्मशालाओं के निर्माण, उपधान तप आदि में लाखों रुपया हर साल खर्च कर देते हैं। अपने स्वयं के ऊपर भी, किन्तु जैन धर्म के प्रचार–प्रसार पर एक प्रतिशत भी खर्च नहीं कर पाते हैं। जो कुछ साहित्य भी छपता है वह जैन समाज के पुस्तकालयो तक ही सीमित रहता है। आबू, राणकपुर और शत्रुन्जय तीर्थ के मंदिर तो जग–प्रसिद्ध हैं किन्तु विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के लिए कहीं भी संयुक्त प्रयत्न नहीं किया गया है। जैनियों की उदासीनता से लाभ उठाकर सरकार भी मौन है। वह भी जैन तीर्थों के प्रचार व प्रसार मे कोई योगदान नहीं दे रही है। उदाहरण के लिए अभी मैंने उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग से संपर्क किया तो उन्होंने हिन्दू बौद्ध तीर्थों, सिख और मुस्लिम तीर्थ के लिए पर्यटन विभाग के नक्शे में समुचित स्थान दिया है किन्तु जैन तीर्थ का कहीं जिक्र नहीं मिलता है। न नक्शे में दर्शाया है। उत्तर प्रदेश कई जैन तीर्थकरों की जन्मस्थली है। भगवान ऋषभदेव अयोध्या में, पद्मप्रभु कौशाम्बी में, विमलनाथ कम्पिल में, नेमनाथ शौरीपुर मे, शांतिनाथ कुन्थुनाथ हस्तीनापुर, पार्श्वनाथ वाराणसी आदि में। अयोध्या का परिचय दिया गया है, केवल भगवान राम की जन्मभूमि के नाते, कौशाम्बी का सिर्फ भगवान बुद्ध के नाते। पर्यटन अधिकारियों से बात करने पर बताया कि जैनियों से सहयोग मांगते हैं किन्तु वे सुनते ही नहीं। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश सरकार से लिखा–पढ़ी कर भगवान विमलनाथ और महासती द्रौपदी की जन्मभूमि कम्पिल को मैंने पर्यटन केन्द्र घोषित करवाया। उसके विकास के लिए कम्पिलपुर तीर्थ विकास परिषद् का गठन किया है और सार्वजनिक लाभ के लिए निर्मित श्री वर्धमान जैन चिकित्सालय कम्पिल का प्रचार और तीर्थ की महत्ता बताने के लिए गत वर्ष उ.प्र. राज्यपाल डा. एम चेन्नारेड्डी को आमन्त्रित कर चिकित्सालय भवन का उद्घाटन कराया तथा जैन मंदिरों का दर्शन कराके उनको जैन साहित्य भेंट किया गया। तभी से कम्पिल का प्रचार और प्रसार काफी हुआ। अभी जनवरी की २४ तारीख को क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी इलाहाबाद, स्वयं कम्पिल आये और उन्होने दो दिन दौरा करके कम्पिल के हिन्दू और जैन तीर्थ के विकास के लिए डेढ करोड़ की योजना बनायी है जो उ.प्र. शासन की छठी योजना मे भेजी जा रही है तथा पाटा सम्मेलन ७८ जो दिल्ली में हुआ उ.प्र. शासन की पर्यटन निर्देशिका में कम्पिल का सविस्तार परिचय प्रकाशित किया है और कम्पिल का नाम विदेशों में भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि के रूप में प्रकाश में आया है। इसी तरह अन्य तीर्थों के विकास के लिए सरकार से सम्पर्क कर प्रचार व विकास की रूपरेखा बनानी चाहिये।

तीर्थों में जैन मंदिर व धर्मशालाओं पर उनका नाम–पट जैन के नाम से रहने चाहिये। दिगम्बर व श्वेताम्बर नहीं। भगवान तो जैन तीर्थकर थे। मंदिर के पास से गुजरने वाले हर व्यक्ति को यह आभास हो यह जैन मंदिर है। इसके लिए दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों जैन सम्प्रदाय के दिग्गजों को विचार करना चाहिये। हर तीर्थ पर एक जैन सूचना केन्द्र रहना चाहिए जिसमें समस्त भारत के प्रसिद्ध जैन तीर्थों से सम्बन्धी पुस्तकें, फोटो देखने व बिक्री के लिए होना चाहिये। जैनेतर यात्री भी आवें तो उनके आवास के लिए समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

जैनेतर यात्रियो मे यह आम धारणा है कि जैन धर्मशाला व तीर्थ में जैनेतर ठहर नहीं सकते हैं। जैन धर्म के प्रसार के लिए इस मिथ्या धारणा को गलत साबित करना होगा। अभी शत्रुन्जय तीर्थ के चित्रों की पुस्तक आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी ने प्रकाशित की है। इसी तरह की अन्य तीर्थो की भी होनी चाहिए। देश के प्रमुख मार्ग जी.टी.रोड उदाहरण के लिए दिल्ली से कलकत्ता या बम्बई से दिल्ली तक राजमार्ग के हर १०० किलोमीटर पर चार कमरों का पर्यटन केन्द्र बनाना चाहिये, वे दोनो जैन समाज के संयुक्त प्रयास से बने तो आम हों। तीर्थों के फोटो, परिचय, धर्म सम्बन्धी पुस्तकें प्रदर्शित हों। देशी व विदेशी पर्यटक रात मे विश्राम के लिए रुकें तो साधारण किराया लेकर उनको वहाँ ठहरने की सुविधा दी जावे। हमारे जैन–साधु साध्वियाँ जो पैदल चलती है वे भी राह चलते आवश्यकता हो तो ठहर सकें। नवीन मंदिरों के निर्माण में जहाँ हम लाखों खर्च करते हैं वहाँ प्रचार व प्रसार करने के लिए दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन समाज के कर्णधारों के संयुक्त प्रयास से अगर एक करोड़ की योजना बनायी जावे तो जैन धर्म की महती सेवा हो सकेगी।

उत्तर प्रदेश के कल्याणक तीर्थ (२)

रतनपुरी

रतनपुरी पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले मे सोहावल स्टेशन से २ किलोमीटर है। अयोध्या से बाराबंकी वाली सडक पर २४ किलोमीटर है – जहाँ सडक से करीब २ किलोमीटर कच्चा मार्ग "रोनाही" गांव को जाता है। यह स्थान पन्द्रहवे तीर्थकर भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि होने के कारण तीर्थ बन गया है। भगवान धर्मनाथ के यहा पर चार कल्याणक च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवल ज्ञान हुए ।

'तिलोयपण्णति' मे आचार्य यति वृषम ने लिखा है –

रयणपुरे धम्मजिणा भाणुणरिंदेण सुब्वदाएय।
माघ सिद्ध तेरसीए जादो पुस्सम्मि णक्खत्तते।।

अर्थात् रतनपुर मे धर्मनाथ जिनेश्वर महाराज भानु और महारानी सुव्रता से माघ सुक्ला १३ को पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न हुए।

आचार्य जिनप्रभसूरि ने 'विविध तीर्थ कल्प" नामक ग्रन्थ मे इस नगरी को "रत्नवाहपुर" लिखा है और इसका कल्प भी लिखा है।

आवागमन के साधन -

उत्तर रेलवे के सोहावल स्टेशन से उतर कर रतनपुरी पहुचा जा सकता है। तांगे, इक्के व रिक्शे मिलते हैं। फैजाबाद से सिटी बस, अन्य बसे रोनाही (रतनपुरी) तक बराबर मिलती हैं। रोनाही के चौराहे पर उतरकर पैदल या रिक्शे द्वारा मंदिर तक जा सकते हैं।

आवास -

गाव के बीच में दिगम्बर जैन धर्मशाला और श्वेताम्बर जैन धर्मशाला है और श्वेताम्बर जैन धर्मशाला भी धर्मनाथ श्वेताम्बर मंदिर के उद्यान के अहाते मे बनी है। बिजली–पानी सब सुविधा है। श्वेताम्बर धर्मशाला का प्रबन्ध लखनऊ जैन समाज व श्री गौडी जी ट्रस्ट बम्बई देखता है। पुजारी यहां का सेवाभावी है। गाँव बड़ा रमणीक है।

दर्शनीय जैन मन्दिर

१ दिगम्बर जैन मंदिर यहाँ दो हैं। एक को जन्म कल्याणक मंदिर कहते है। दूसरे को गर्भ कल्याणक।
२ श्वेताम्बर जैन मंदिर भी गाव के बाहर दो एक ही कम्पाउण्ड मे बने हुए हैं। चारो कोनो पर चार कल्याणक टोके हैं तथा दादागुरु के चरण भी हैं।

श्वेताम्बर जैन मंदिर की मूर्तियों के लेख स्वनाम-धन्य स्व पूरण चंदजी नाहर ने ६० वर्ष पहले लिये थे वे जैन लेख-संग्रह भाग २ मे प्रकाशित हैं। इसके बाद और भी कई मूर्तियाँ यहाँ प्रतिष्ठापित हुई है। श्री नाहर जी के लेख इस प्रकार हैं:

आती–जाती है। गंगा–जमुना एक्सप्रेस दिल्ली से आने वाली अयोध्या स्टेशन पर ८४ डाउन मंगलवार, बुधवार और शनिवार, के दिन ठहरती है। वाराणसी ८३ अप गंगा जमुना एक्सप्रेस दिल्ली जाने वाली अयोध्या– रविवार, मगलवार तथा शनिवार और भी कई गाडियां – साबरमती एक्सप्रेस, जम्मूतवी– सियालदा एक्सप्रेस आदि अयोध्या ठहरती हैं। जैन मन्दिरो को पहुँचने के लिए फैजाबाद व अयोध्या स्टेशनों से तांगे, मोटर, स्कूटर आदि मिलते हैं। फैजाबाद और अयोध्या से उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग की बसें चारो ओर सभी जगह दूर–दूर जाती हैं। यात्री किसी भी जगह जा सकता है। हवाई यातायात के लिए निकटतम हवाई अड्डा अमौसी (लखनऊ) और बाबतपुर (वाराणसी) है।

कटरा मुहल्ला मे दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों की जैन धर्मशालायें हैं तथा रायगंज मौहल्ले मे भी दिगम्बर जैन धर्मशाला है।

दर्शनीय जैन मंदिर :

दिगम्बर जैन मन्दिर रायगंज मौहल्ले में ऋषभदेव का है। कटरा मुहल्ले में सुमतिनाथ की, बक्सरिया टोला में ऋषभदेव की, सरयू किनारे अनन्तनाथ की, कटरा स्कूल के पास अभिनन्दन स्वामी की और बेगमपुरा मुहल्ले में अजीतनाथ की टोंके एव मन्दिर हैं।

श्वेताम्बर जैन मन्दिर – कटरा मुहल्ला में विशाल श्वेताम्बर जैन मन्दिर एव दादवाडी भी है। मन्दिर का तीन भाग लाल पत्थर से बना है। आंगन मे समीवसरण बना है। मूल मन्दिर अभी जीर्ण–शीर्ण हालत में है। जीर्णोद्धार की परम आवश्यकता है। पांचो भगवान की अलग–अलग कल्याणक देहरियां है। मन्दिर दुमंजिला है। 'विविध तीर्थ कल्प' में भी इस मन्दिर का परिचय है।

अन्य दर्शनीय स्थल :

हनुमानगढी, राम जन्म स्थान, कनक भवन, तुलसी चौरा एवं मणि पर्वत, सुग्रीव टीला, अंगद टीला, लक्ष्मण किला मन्दिर, लक्ष्मण घाट, नागेश्वरनाथ, अयोध्या नरेश का राजमहल, श्रीराम जानकी मन्दिर, बिडला मन्दिर और तुलसी स्मारक स्थल पर गोस्वामीजी तुलसीदासजी ने रामचरित मानस की रचना की थी। वाल्मीकि रामायण मन्दिर अपने आप मे अद्वितीय है। अनेक मन्दिरों के अतिरिक्त मस्जिदें एवं मकबरे भी हैं।

विशाल उद्यान एवं दिगम्बर मन्दिर मेनरोड पर है, जहां कायोत्सर्ग मुद्रा में तीन प्रतिमाएं हैं। मध्य में ३१ फुट ऊंची भगवान ऋषभ नाथ की प्रतिमा विराजित है।

ऋषभ जयन्ती, रामनवमी, रथ यात्रा, झूला, सरयू स्नान, रामविवाह और परिक्रमा आदि यहां के विशाल और व्यापक स्तर पर प्रभाव छोडने वाले राजकीय मेले हैं।

''वल्लभ सन्देश'
दिसम्बर १९८३

●●●

(१६६६)
सं १८७७ राधराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथाद्य गणधर श्रीमद् अरिष्ठाख्यानां पदा कारिताः ओसवाल वंशे बरढिया वूलचंदज वेणी प्रसादेन वृहत् खरतर गच्छे श्री जिनलाभसूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। प्र। श्री जिनहर्षसूरिणा। वृहत् खरतरगच्छेन।

(११६७)
सं० १६१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल सूरिणा पादन्यासौ प्रतिष्ठितः भ। श्री जिन महेन्द्रसूरिभि का। गा। श्री वेणीप्रसादागज छोटणलालेण आणन्दपुरे।

(१६६८)
सं १६१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमान माघ शुक्ल २ तिथौ। श्री गौतम स्वामीजी पादन्यासौ प्र।भ। श्रीजिनमहेंद्रसूरिभि का गा. श्री अगरमल्ल पुत्र छोटणलालेण आणदपुरे।।श्री।।

पाषाण की मूर्तियों पर

(१६६६)
स १६६७ का अभिनन्दन । ज। यु। प्र। भट्टारक श्री जिनचन्द्रसूरिभि

(१६७०)
स. १६७५ वैशाष सुदी १३ शुक्रे श्री वृहत् खरतर सघेन कारिते श्री अजितनाथ बिंब प्रतिष्ठित श्री जिनराजसूरिभि युगप्रधान श्रीजिन सिंहसूरि शिष्यै।

(१६७१)
सं० १८६३ शाके १७५८ प्र। माघ सुदि १० बुधवासरे श्री पादलिप्त नयरे श्री अभिनदन बिंबं कारित श्री वृहत् खरतर गच्छे भ। जं। यु । श्री महेन्द्रसूरिभि प्रतिष्ठित।।

(१६७२)
सं० १८६३ माघ सुदी १० बुधवासरे श्री सुमतिनाथ बिब कारित वृहत् खरतर गच्छे प्रतिष्ठित ज यु प्र भ श्री जिन महेन्द्रसूरिभि·

(१६७३)
सं० १६१० वर्ष शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठित भ० श्री जिनमहेन्द्रसूरिभि कारितं वमा (१) गोत्रीय श्री हुकुमचद तत्पुत्र अगरमल्ल तद्भार्या सुध ताग श्रेयार्थमाणदपुरे।

धातु की मूर्ति पर

(१६७४)
सं० १६२० मि० फा० कृष्ण २ बुधे दूगड प्रताप सिंह भार्या महताब कवर व। [illegible] अजित [illegible] २ बिंब श्री अमृतचन्द्रसूरि राज्ये वा० भानचन्द्रगणिना।

पंचतीर्थियों पर

(१६५८)

सवत १५१२ वर्षे माह सुदी ५ सोमे वाड़िज वास्तव्य मावसार जयसिंह भा फाली पु पांचा भा. जासी पुं लीवा सरवण लाहू उमालु पीचाकेन। श्री सुविधनाथ बिम्बं कारापितं श्री निवदणीक गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठतं श्री सिद्धसूरिभि ।

(१६५९)

स १५६७ वर्षे वैशाष सु० १० व श्री उपकेश ज्ञातो स. साहिल सु सं हासा भा छाजो नाम्न्या स्वपुण्यार्थ – श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठित श्री उपकेस गच्छे ककुदाचार्य सं भ. श्री सिद्धसूरिभि –

(१६६०)

सवत १६१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ सोमे श्री पत्तने उसवाल ज्ञातीय सा अमरसी सुत आणंद। भा वीरु सुत काहाना सारगधर विंबं श्री पद्मप्रभनाथ। प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री। विजयदानसूरिभि ।।श्री।।

(१६६१)

।।सवत १६६४ वर्षे फागुन शुदि २ दिने उसवाल जातीय वंम गोत्रीय साह कटारू थार्या दुलादे सुत सा० तारू भार्या जीवादे सुत सा० टटना प्री (१) साघनाय चितामणि श्री श्रेयांसनाथ विंबं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजयसूरिभि प्रतिष्ठित।।

पाषाण के चरणों पर

(१६६२)

सवत १८७७ राधराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथाना पादाः कारिता बरढिया यूलचदज वेणीप्रसाद प्र। वृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभसूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। ओसवालेन। काशीस्थेन प्रतिष्ठिता श्री जिनहर्ष सूरिणा।

(१६६३)

सवत १८७७ राधराकाया श्री रत्नपुरे श्री धर्माहता पादा कारिता. वृहत् खरतरगच्छे श्री जिनलाभसूरि शिष्य पाठक हीरपधर्मोपदेशेन बरढिया यूलचंदज वेणीप्रसादेन भ। श्री जिनहर्षसूरिणा वृहत् खरतरगच्छेन।

(१६६४)

स० १८७७ राधराकाया वृहत् खरतरगच्छे श्री जिनलाभसूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन काशीस्थेन बरढिया यूलचदज। वेणीप्रसादेन श्री धर्मपरमेष्ठिनां पादा. कारिता श्री रत्नपुरे प्र। श्री जिनहर्षसूरिणा खरतरगच्छेन।

(१६६५)

सं. १८७७ राधराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्म सर्वज्ञानां पादा. कारिता ओसवंशे बरढिया यूलचदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन वृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाभसूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र। श्री जिनहर्षसूरिणा खरतरगच्छेन।

मिलों के उत्पादनं का देश मे वर्चस्व रहा है। कानपुर मे चिड़ियाघर के अलावा पर्यटक के लिए दो ही वस्तुयें देखने को रह जाती हैं एक जे.के. प्रतिष्ठान का "राधाकृष्ण मदिर" दूसरा श्री धर्मनाथ स्वामी का जैन श्वे "काच मदिर"। दिगम्बर जैनों का पंचायती मंदिर भी बड़ा है किन्तु बाहर से आने वाले यात्री के लिए दो ही दर्शनीय मदिरो का आकर्षण है। प्रतिदिन सैकडो यात्री दर्शनार्थ आते हैं। इस काच मदिर को स्वनामधन्य सेठ रघुनाथ प्रसाद जी भडारी ने सवत् १९२८ में बनाकर प्रतिष्ठापित किया और उनके पुत्र सेठ सतोष चद जी भडारी ने – काच का अनूठा काम जडित कराकर साथ में बगीचा बनाकर इसकी शोभा में चार चांद लगा दिये। आजकल इस मदिर की सुन्दर व्यवस्था का भार श्री विजयचदजी भडारी पर है, वे पूरी लगन से मंदिर की सुन्दर परम्परा को बनाये हुए है, अब इस काच के काम की भी जीर्णोद्धार की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है।

इस मंदिर के विषय में "ओसवाल जाति के इतिहास" (परिवर्द्धित सस्करण सन् १९३७) के पृ० ४८ में लिखा है – "यह मन्दिर भारत के दर्शनीय स्थानो मे प्रसिद्ध तथा भारतीय जडाऊ मदिरो मे बहुत उच्च श्रेणी का गिना जाता है। इस मन्दिर की कारीगरी, सोने व मोती के काम मे प्राचीन काल का बहुत ही उत्तम नमूना मिलता है। यह मंदिर इतना सुन्दर तथा भारतीय कला व कारीगरी का ऐसा नमूना है कि जिसे देखने के लिए बाहर दूर-दूर से बहुत से लोग आया करते हैं"

कानपुर मे श्वेताम्बर जैनियो मे राजस्थानी ओसवाल के १८० घर हैं, गुजराती समाज के १२५ घर हैं तथा ६० घर लोहिया अग्रवाल स्थानकवासी समाज के हैं। आपस मे सभी का भाईचारा प्रेम है। विरहनारोड मे गुजराती मूर्तिपूजक समाज ने भी भगवान मुनिसुव्रत स्वामी का मन्दिर व धर्मशाला बनायी है। दो स्थानक भवन भी हैं। तेरहपथी भवन भी बनने जा रहा है। कांच मंदिर के सामने यात्रियो व साधु-साध्वी के ठहरने के लिए "जैन भवन" धर्मशाला भी है, जिसका निर्माण भी भडारी परिवार ने करवाया है।

काँच मंदिर में प्रतिष्ठापित मूर्तियो के शिलालेख इस प्रकार हैं –

कानपुर के श्री धर्मनाथ स्वामी कांच मदिर मे मूलनायक श्री धर्मनाथ स्वामी की पाषाण प्रतिमा १७" है। पाषाण पुराना व कमजोर होने से जगह-जगह मूर्ति मे कुछ खरोच व छोटे गढ्ढे हो गये हैं। मूर्ति का लेपन आवश्यक है, या नई प्रतिमा को प्रतिष्ठापित करना चाहिये। इस पर कोई लेख पढा नहीं जाता है। मदिरजी मे श्री दादाजी के चरणों की अलग कमरे मे छत्री बनी हुई है।

धातु-प्रतिमाओं के लेख इस प्रकार हैं

(१) स० १५४३ व० जेठ वदि ६ गुर दिने उ०जा० पावेचा गोत्रे सा० जगमाल भा आनूप स० नापा भा० नाइकदे पु० लाषा की ता०आ० श्रेयसे व्य० की प्र० श्री वृहद्गछ त० के गल श्रुत० पर पुन्यप्रभ सूरिभि

(२) ।।सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ११ गुरौ ओस वशे सा० सिघा पो मात धा०सा० सिघा भा० देऊ पु०सा०देपाकेन भा० देल्हदेण पु० पूना निज श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत बिंब कारित प्रतिष्ठित श्री सूरिभि ।।श्री ।।

(३) स० १५७४ वर्षे माघ वदि १३ शनिवारे मूल नक्षत्रे उसिवाल ज्ञातीय फाफरिया गोत्रे सा० पाल्हा पु०सा० टाना भार्या टेमा पु०सा० भोजा चोख हेवादि सपरिवारेण श्री आदिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री उदयप्रभसूरिभि ।।

(४) सवत १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरो उसवाल जातीय पितृ वांपा मातृ वाहिणि दे भ्रातृ उदयराज श्रेयसे का०

पाषाण की कई मूर्तियों के पीछे लेख हैं वह पढ़े नहीं जाते।

नाहर लेख संग्रह के अलावा निम्न शिलालेख और हैं–

(१) सं० १८८८ माघ सुदि ५ सौम श्री धर्म जिन बिंबं कारितं ओस वंशे डागा गोत्रे भानानाथ तत्भार्या धुन्नी च।

चक्रेश्वरी देवी

(२) स १६८७ मि माघ शुक्ला ६ रविइयं चक्रेश्वरी देवी ओसवाल वंशे मालू गोत्रे जयतरूप तत्पुत्र थिरसूमल्लेन कारित प्र । भ । श्री जिनरत्न सूरी।

गोमुख यक्ष

(३) सं १६८७ मि माघ शुक्ला ६ रविइयं गोमुख यक्षी ओसवंशे मालू गोत्रे जयतरुप तत्पुत्र थिरसूमल्लेन कारितं प्रतिष्ठित।

इस तीर्थ की आधी व्यवस्था लखनऊ के श्वेताम्बर जैन समाज के पास है आधी बम्बई के श्री गौडीजी देरासर पेढी के पास। यहाँ भी जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। सुन्दर व्यवस्था की नितान्त कमी है। जैन तीर्थों का विकास जैन–सांस्कृतिक पर्यटक केन्द्र–तीर्थों की तरह होना चाहिये।

"कुशल–निर्देश"
मई. १६८४

■■■

कानपुर का कांच मन्दिर

उत्तर प्रदेश का सौभाग्य है कि यहाँ हिन्दुओं के भगवान राम और श्री कृष्ण तथा जैनियों के १७ तीर्थंकरों के ६७ कल्याणक हुए हैं। संयोगवश इस वक्त श्वेताम्बर जैनियों की बस्ती ८ करोड़ में ८ हजार भी नहीं है, इसी कारण कल्याणक–भूमियों पर स्थित जैन श्वे. मंदिरों की अवस्था और व्यवस्था संतोषजनक नहीं कही जा सकती। और यह कल्याणक भूमि प्रदेश भारत के अन्य प्रदेशों के दानवीरों, प्रभावक आचार्यों के आशीर्वाद और सेठ आनन्दजी कल्याण जी पेढी के सहयोग का ही सदा आकांक्षी रहता है।

उत्तर प्रदेश के ५६ जिलों में से सिर्फ पचास से भी कम नगरों में जैन श्वेताम्बर मंदिर हैं। १४ वीं से १७ वीं शताब्दी तक अनेक जैन मुनियों ने उत्तर प्रदेश के तीर्थों की यात्रा की है, समय के प्रवाह में कल्याणक भूमि तीर्थों के मंदिर जीर्ण हो गये। यह तो लखनऊ व वाराणसी के खरतरगच्छीय श्री पूज्यों का आभार मानना ही चाहिये, उन्होंने श्रावकों को प्रेरणा देकर कल्याण भूमि मंदिरों के पुन: जीर्णोद्धार कराये और प्रतिष्ठायें कीं।

उत्तर प्रदेश में कानपुर उद्योग और व्यापार की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर है, इसकी आबादी पच्चीस लाख आंकी जाती है। यहाँ से चारों तरफ रेलें छोटी व बडी लाईन की जाती हैं। कानपुर की सूती व ऊनी कपड़े की

(१४) पाषाण चरण – स्थूलभद्र जी ।। संवत १९२८ माघ मासे शुक्ले पक्षे तिथौ त्रयोदश्या गुरौ गणि स्थूलभद्र चरण कमल कारापित उश वंशे भडारी गोत्रीय सेठ शिखरूमल्ल जी नथमलजी तत्पुत्र रघुनाथ प्रसाद लक्षगणदासेन स्वश्रेयसे प्रतिष्ठित च वृहत् खरतरगच्छीय श्री जिनकल्याणसूरिभि. ।।=।।

पाषाण चरण – श्री गौतमगणधर

(१५) ।। सवत् १९२८ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ त्रयोदश्या गुरौ श्री वीर जिन प्रथम गणधरस्य चरण कमलमिद कारापित भडारी गोत्रीय सेठ सिखरूमल नथमल तत्पुत्र सेठ रघुनाथ प्रसाद लक्ष्मण दासेन प्रतिष्ठित वृहत् स्व० खरतर गच्छीय ज०/यु०/प्र०/भ०/ श्री जिनजयशेखरसूरिभि ।।श्री शुभ भूयात्।। श्री

पाषाण चरण श्री दादाजी

(१६) ।।सवत् १९२८ माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्या गुरुवार श्री जिनकुशलसूरि चरण कमल नाहर गौत्रीय लाला हीरालालजी तत्पुत्र चुन्नीलाल। जेन कारापित प्रतिष्ठित जगम युगप्रधान वृहत् खरतरगच्छीय श्री जिनजयशेखरसूरिभि तत्पट्टे भट्टारक श्री जिन कल्याणसूरिभि ।।

"कुशल–निर्देश"
नवम्बर १९८४

श्रीमती इन्दिरा गाँधीः एक संस्मरण

श्रीमती इन्दिरा गाँधी, भारत की प्रधानमंत्री तो थीं ही, किन्तु उनमे लौकिक व्यवहार का एक ऐसा विशिष्ट गुण था जो प्रत्येक को आकर्षित कर लेता था। सन् १९७८ ई की १८ अप्रैल को वे लालकिला मैदान मे आयोजित महावीर जयन्ती की विशाल सभा मे रात्रि को ६ बजे पधारी थीं। इसी कार्यक्रम में श्री अगरचन्द्र जी नाहटा अभिनन्दन ग्रन्थ के द्वितीय भाग का विमोचन भी होना था। महावीर जयन्ती के सयोजक श्री आदिश्वर प्रसाद जैन सयोगवश श्रीमती गाँधी से पूर्व अनुमति नहीं ले सके थे अत उन्होंने मुझसे कहा – श्री राधारमणजी जो दिल्ली के मुख्य पार्षद हैं, उन्हीं के द्वारा अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन करा दिया जाये। मुझे यह स्वीकार नहीं था। मैंने उन्हें बताया श्री नाहटाजी जैसे दिग्गज विद्वान के अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देशाई या भू.पू. प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी द्वारा ही कराया जा सकता है। जैसे ही श्रीमती गाधी मच पर पधारीं तो श्री मेहताबचदजी जैन ने उनसे निवेदन किया कि जयन्ती के कार्यक्रम के साथ आपको 'श्री अगरचन्द नाहटा अभिनन्दन ग्रथ' का विमोचन भी करना है। श्रीमती इन्दिरा जी ने तपाक से मुस्कराते हुए जवाब दिया – श्री अगरचदजी नाहटा जैसे विद्वान का सम्मान और उनके अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन करना, तो मेरे लिए सौभाग्य की ही बात है। उनका यह प्रत्युत्तर सुनकर मेरा मन गदगद् हो गया। श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने अमूल्य समय मे से पन्द्रह मिनट और देकर नाहटा अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन किया और श्री नाहटाजी का अभिनन्दन भी किया।

एक ऐसा ही सुखद अवसर आया सन् १९५२ की २५ मई को जब "कपिल तीर्थ" के विकास के लिए हमारा एक डेपुटेशन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से उनके निवास पर मिला। प्रात ठीक ६ बजे जब वे स्वागत कक्ष मे पधारीं तो आते ही स्वयं पूछा–"कपिल" वाले कहाँ हैं? अभिवादन के बाद मैंने अनुरोध किया–आप कपिल पधारें! तो तपाक से जवाब मिला–आप मुझे 'कपिल' कब बुला रहे हैं? यह हमारी ही अकर्मण्यता रही कि हम उनको 'कपिल' के लिए आमत्रित नहीं कर सके। दिल में श्रीमती गाधी की याद सजाये हुए है–काश ! वे कपिल पधार पातीं ?

"अमरभारती" मासिक, राजगृह वर्ष २१ अंक १२
दिसम्बर १९८४

जन्म नाम कीका प्रसिद्ध नाम हाथा, भार्या लीलाई सहितेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमा श्रीमपल्लीय भ० की जयचन्दसूरीणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितं।

(५) ।। सं० १५०६ वर्षे आषाढ सुदि १ शुक्रे धनौध वासूया श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० जैसा भा०गाऊ सुत दो०हीका नाम्ना भा० कूअरि भ्रातृ सुत मूलादि० कुटुंब युतेन निज पितृव्य दो० वरसिंह श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीष्टे तपापक्ष श्री रत्नसिंह सूरिभि ।।

(६) ।। स० १५३० वर्षे चैत्र वदी ५ गुरु दिन श्री कुत्रिस्वर हुंबड ज्ञातीय फडी० साहाद भा० भरमीन गो० सु०फ० माला किन भा० लाडू सु० गुणराज वलराज प्रमुख कुटुंब युतेन वृ०भा० हीरा श्रेयसे श्री शांतिनाथ मुख्य चतुर्विंशति पट्ट कारित श्री हुंबड गछि श्री सिघदत्तसूरि प्रा० उपा श्री सीरज गणिभि ।। श्री दिल्युचिवास्तव्य ।।१।।

(७) ।।ॐ) सवत् १५८६ वर्षे माघ मास ५ गुरुवारे श्री उकेश वंशे गंडोरा गोत्रे सा० पूना भा० कपूरदे पुत्र सा० दशरथ भार्या सूरमदेव्या पुत्र भवानीदास सहितया सु पुण्यार्थ श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहर्षसूरि पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ।।श्री रस्तु।।

(८) स० १५४३ वर्षे जेठ १० दिने प्रा० मेघा भार्या जसमी पुत्र थ० देवाई तेन भार्या देवलदे पुत्र गोरालादि सुतेन श्री विमल बिंब कारित प्रति० तपागच्छे श्री सोमसुन्दरसूरि संताने श्रीसुमतिसाधुसूरिभि ।।श्री शुभं।।

(९) सवत् १६२८ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री उसवाल ज्ञातीय भणसाली ... भा० गृहे .. मूर्ति .. शिष्य . विमलनाथ।

(१०) श्री शातिनाथ स की भा० वा चन्द्रा वी नो के कारवतं श्री उसवाल ज्ञाति।

(११) वि०स० २०३२ वीर स० २५०२ मार्ग शु० ३ शुक्रे अ० सौ० तारावाई शान्तिलाल प्रेमचन्दजी अदाणीवालाअे भराव्या मुनि कुशलचन्द्रविजयेना/भे/ख।।८६।।६।। स्वरित श्री शांतिनाथ बिंबं। का०प्र०च० शासन सम्राट वि० नेमिसूरिश्वर पट्टे विजयो दयसूरि पट्ट वि० नन्दनसूरिभि शा०स० पट्टे विजयविज्ञानसूरि पट्ट वि० कस्तूरसूरि भि तथा तत्पट्टे वि० चन्द्रोदयसूरिभिश्च अमदावाद सावरमती रामनगरे।

(१२) (ताबा की नवपद पट्टिका) सवत् १६५४ वर्षे पुक्ष नक्षत्रे श्री उपकेशजातीय आंगाणी वंशे लोढा गोत्रे सा० वेगा भार्यावेगश्री तत्पुत्र जेठा भार्या जेश्री तत्पुत्र सा० राजपाल भार्या राजश्री तत्पुत्र सा० डूंगरसी लोकप्रसिद्धणाम रिषभदास भार्या रिष श्री तत्पुत्र सा० कुरपाल सोनपाल भार्या कुरश्री अमृतदे तत्पुत्र संघराज दुर्गदास सोनपाल भार्या सोनश्री तत्पुत्र सरूपचन्द तुलसीदास चत्रु संघराज भार्या संघश्री तत्पुत्र सुन्दरदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री पद्मप्रभ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमदंचले गछे भटटारक श्री धम्ममूर्तिसूरीश्वर विजय राज्ये आचार्य कल्याणसागरसूरिभि।

(१३) अ० सौ० तारावाई शान्तिलाल प्रेमचन्द जी आदाणी वाला अे भराव्या का० प्र० च शासन सम्राट तथा श्री विजयनेमिसूरीश्वर प्रशिष्य वि० नन्दनसूरिभि० वि० कस्तूरसूरि भि० तथा तत्पट्टे वि० चन्द्रोदयसूरिभिश्च - अमदाबाद उपनगर सावरमती रामनगरे श्री श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ चैत्ये वि०सं० २०३२ मार्ग शु० ३ शुक्रे श्री अमरचन्द्रविजयेन।

भैंरुदानजी को उनके वंशजो का पता है।

तुम्हारा विचार बीकानेर के सभी राज्य प्रतिष्ठित, सभी ओसवालो के विषय मे लिखने का लिखा सो ठीक है। कोचरों मे कई अच्छे हुए हैं खोजकर लिखना। "सिरेमल बाफणा" के विषय मे एक सुन्दर लेख "ओसवाल नवयुवक" में प्रकाशित हुआ था। ओसवाल नवयुवक की फाइल देख लेना।

"मत्रीश्वर शालाशाह" कौन थे? जैन सत्य प्रकाश मे लेख प्रकट होने पर मालूम होगा।

तुम गर्मी की छुट्टियो मे हमारे पुस्तकालय की सूची तैयार कर देना, यही काम मुख्य है। बहुत वर्षो से समयाभाव वश यह कार्य सम्पन्न नही हो रहा है।

मैं चाहता हूं तुम्हारी प्रतिभा हजारी नाम के अनुसार हजारो लेख लिखने व हजारो विषयो मे चमक उठे–बस यही।

वीर सदेश और समाज सेवक के अक वहा पढकर यहा भेजते रहना ताकि समाचारों से वाकिफ रहूँ। जैन ध्वज बद कर दिया है अत वीर सदेश पढना आवश्यक है।

"राजस्थानी लोक गीतो की एक झाकी" लेख समाज सेवक को भेज देना। सिरेमल बाफणे वाला लेख भी समाज सेवक या ओसवाल को भेज सकते हो।

बाई को मुजरा जमना आदि को आसीस विशेष फिर।

तुम्हारा शुभचितक

(३)

सिलहट

ता० २०–७–१९४०

चि० हजारी

शुभाशीष के साथ विदित हो कि पत्र तुम्हें पूर्व दिया था मिला ही होगा। जैन–सत्य–प्रकाश मे तुम्हारे २ लेख देखे। अन्यत्र अभी शायद प्रकाशित नहीं हुये होगे। लिखते रहना। वर्धमानशाह के विषय मे २ ग्रथ अपने सग्रहालय मे हैं (१) पत्राकार साजिल्द वर्द्धमानशाह सस्कृत गु० नागरी लिपी भाषान्तर सह प्रबन्ध हैं (२) अचलगच्छ पटटावली गु० दोनो इतिहास विभाग मे हैं। विदित हो।

सिरेमल बाफणा विषयक ओसवाल नवयुवक मे प्र० लेख का उपयोग कर लिया होगा।

बाई मगन को मुजरा कह देना। स्वामी (प्रो० नरोत्तमदास स्वामी) से समय–समय पर मिलते रहना।

शिखरचदजी कोचर (सेसन जज) से जयजिनेन्द्र कहना एव सतीशजी के मामले के सम्बन्ध मे दीवान साहब के पास वह रहते हैं (दीवान सर सिरेमल बाफना) सो अपील कराकर सारी परिस्थिति समझाकर ठीक करवाने को कहना

(४)

सिलहट

ता० १८–८–१९४०

चि० हजारीमल बाठिया,

शुभाशीष विदित हो। पत्र आज मिला राखी मिली। कल समय पर न पहुँची। बहिन के स्नेह दान को स्वीकार किया।

तुम्हारा पत्र मिला था। लेकिन यहां बैठे कोई सहाय नही कर सकता। इसलिए उत्तर न दे सका। अभी तो जब यहा आना होगा तभी विशेष कार्य हो सकेगा।

मेरे आने का विचार पजूसण पर था लेकिन देशवालों की अभी आज्ञा नहीं अत जब आज्ञा होगी तभी आना हो सकेगा। मेरी इच्छानुकूल बात नही अत कब आ सकूंगा कुछ लिख नहीं सकता।

मामा के पत्र भान्जे के नाम

पत्र-साहित्य भी साहित्य का एक विशेष अंग है। इनसे पत्र लिखने वाले के अन्तःकरण के उद्‌गारों से सही जानकारी मिल जाती है। हिन्दी साहित्य मे पं० जवाहरलाल नेहरू के पत्र-पुत्री के नाम, स्वनाम-धन्य वासुदेवशरणजी अग्रवाल, महात्मा गाधी, स्व० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी आदि के पत्राचार प्रकाशित हुये हैं। हिन्दी, राजस्थानी व जैन साहित्य के अन्वेषक स्व० अगरचदजी नाहटा भी ऐसे ही विद्वान थे जिन्होने अपने साहित्यिक जीवन के पचास वर्षों मे हजारों पत्र-लिखे और जो भी पत्र आता था उसका तुरन्त उत्तर देते थे। श्री नाहटाजी ने छह हजार से उपर लेख-निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे लिखकर प्रकाशित कराये, यह भी एक विश्व रिकार्ड है।

स्व० अगरचदजी नाहटा मेरे पूज्य मामाजी थे। मेरा भी उनसे खूब पत्राचार हुआ। खेद है कि उनके पत्रों को मैं सम्भाल कर न रख सका- अभी बीकानेर गया था- पुरानी फाइलों में सन् १९४०-४१ के सात पत्र मुझे मिल गये- उनको प्रकाशित कर रहा हूँ। इन्हे पढकर आप स्वयं निर्णय कर सकेंगे ये कितने उपयोगी हैं। जालौन के डा० रमाशकर द्विवेदी श्री नाहटाजी के पत्रों को संग्रह कर रहे थे, मेरा अनुरोध है जिनके पास नाहटाजी के पत्र हों वे डा० द्विवेदी को, २९, नारी भास्कर, पो० जालौन, उत्तर प्रदेश को भेज दें।

(१)

प्रिय हजारी,

सिलहट
ता० ३-४-१९४०

शुभाशीष, के साथ विदित हो कि तुम्हारा पत्र मिला। पढकर प्रसन्नता हुई। परीक्षा के लिये दत्तचित होकर पढाई कर रहे सो ठीक है पास हो जाने की पूरी उम्मीद है। मेरे पत्र के विषय में लिखा सो कार्यवश नहीं दे सका। तुम्हें भूला नहीं हूँ। समय समय पर स्मृति होती रहती है। पत्र-पत्रिकाओ में से वहां किस-किस के अक आते हैं? लिखना यहाँ कई-कई अंक बीकानेर से अव्यवस्थित रुप में मिलते हैं, सो कौन सी कौन सी पत्रिका के कौन सा- कौन सा अंक (नम्बर या महीना) है? लिखना व सम्भाल कर रख देना मेरे लेखो में से २-३ के रीप्रिंट तुम्हें भेजता हूँ सो पढना। तुम्हें हिन्दी पढाने वाले विद्वानो को भी (पं० मीनाराम रंगा) दिखाना। तुम्हारी स्कूल (सादूल हाई स्कूल, बीकानेर) के एक विद्वान पृथ्वीराज रासो, वीसलदे रासो, व खुम्माण रासो इत्यादि के विषय मे कुछ अधिक जानने की इच्छा से पं० दशरथजी शर्मा से मिले थे तो उन्होंने मेरा नाम लेकर कहा था कि इस विषय मे अगरचंदजी ने अच्छी खोज की है, उनके लेख प्रकट होने पर विशेष ज्ञातव्य मिलेगा।

परीक्षा समाप्त होने पर शायद कई दिन की छुटियां रहेगी सो कोई लेख वगैहरा लिखना। पत्रोत्तर देना। सबसे मुजरा जय जिनेन्द्र मां को प्रणाम कहना।

– अगरचद नाहटा

(२)

सिलहट
ता० २-६-१९४०

चि०, हजारीमल से अगरचंद की शुभाशीष पहुँचे। तुम्हारा पत्र आज कलकते होकर मिला। पढकर प्रसन्नता हुई। तुम्हारी साहित्य प्रगति सराहनीय है। सदा इसी तरह दत्तचित्त रहना।

अमरचंद सुराणा वाला लेख "हिन्दुस्तानी" को भेजने का लिखा सो ठीक भेज देना।

स्वामी जी (प्रो० नरोत्तम दास स्वामी) से मेरा जय जिनेन्द्र सूचित कर देना अमरचंदजी की वंशावली उनके वंशजों के पास से मिले तो खोजना। सहसकरणजी सुराणा आदि उनके वंशजो से प्राप्त कर सकते हो। भाईजी

संख्या	लेख का शीर्षक	वर्ष	अंक संख्या	पृ०सं०
१	जैन कवियों के आध्यात्मिक पद	१३	११	१८५८
२	वर्तमान समयके षट्रिपु	१८	१०	११०४
३.	महासती राजीमती	२२	१	७०४
४.	सती मृगावती	२२	१	७१०
५	वर्तमान शिक्षा–पद्धतिमे सुधारकी अत्यावश्यकता	२७	१	१३८
६	सत्य की साधना	२७	४	६५६
७	विश्व शाति के अमोघ उपाय	२७	६	११०५
८	ये बढती हुई चोरियाँ	२७	८	१२३१
९	सुख और दु:ख मे समभाव	२७	१०	१३५२
१०.	हमारा नैतिक पतन	२८	६	१११३
११	स्वामी श्री स्वरूपानन्दजी की अखण्डवाणी	३०	८	११०४
१२	श्वेताम्बर जैन तीर्थ	३१	१	५४२(२)
१३	स्वतन्त्र भारत के दो आवश्यक कर्त्तव्य: शिक्षण क्रान्ति और अपराधी सुधार	३१	५	८४३
१४.	विद्यार्थी बन्धुओं से	३१	६	११७४
१५	समय का सदुपयोग कीजिये	३१	१०	१२५५
१६	*हमारी भक्ति–निष्ठा कैसी हो ?*	*३२*	*१*	*१५२*
१७	गुणानुरागी बनिये	३२	३	८०१
१८	समाज कल्याण का मूलमन्त्र (सहयोग की भावना का विकास)	३२	६	१००३
१९	सुख–शान्ति का महत्वपूर्ण साधन:संतोष	३२	११	१३३१
२०	निन्दा महापाप	३३	९	१२०८
२१	अपने सभी काम नियत समय पर कीजिये	३४	८	१११४
२२	दान–धर्म की आवश्यकता और उसका महत्व	३४	९	१२०९
२३.	भारत मे एक बढता हुआ दुर्व्यसन–धूम्रपान	३५	७	१०५०
२४	हमारा एक महान दुर्गुण–अभिमान	३५	९	११९८
२५	*सबके कल्याण में अपना कल्याण*	३५	१२	१३६१
२६.	शिक्षा प्राप्ति के बाधक और साधक कारण	३६	२	७३३
२७	विश्व–कल्याण का मूलाधार आत्मीयता का विस्तार	३६	७	१०६८
२८	अपने दोषो और भूलो का हम सदा याद रखे	३६	८	११९६
२९	*सम्मान प्राप्त करने का महत्वपूर्ण उपाय*	३६	११	१३२२
३०	प्रत्येक अहिसा प्रेमी का कर्तव्य	३६	१२	१३८१
३१	पारिवारिक जीवन की दृढ भित्तियाँ,प्रेम,सहिष्णुता और सेवा	३७	३	७८६
३२	शक्ति प्रकट का महत्वपूर्ण उपाय अभ्यास	३७	५	६०१
३३	*हमारा महान शत्रु आलस्य*	३७	७	१०४६

"खरतरगच्छ में अनेक बडे–बडे आचार्य, बडे–बडे विद्यानिधि उपाध्याय, बडे–बड़े प्रतिभाशाली पंडित मुनि और बडे–बडे तांत्रिक, मांत्रिक, ज्योतिर्विद्, वैद्यक विशारद आदि कर्मठ यतिजन हुए जिन्होंने अपने समाज की उन्नति, प्रगति और प्रतिष्ठा के बढाने में बडा योग दिया है। सामाजिक और साम्प्रदायिक उत्कर्ष के सिवाय खरतरगच्छ अनुयायियो ने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देश भाषा के साहित्य को भी समृद्ध करने मे असाधारण उद्यम किया और इसके फलस्वरूप आज हमें भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष, वैद्यक आदि विविध विषयों का निरूपण करने वाली छोटी–बडी सैकडो हजारों पुस्तकें और ग्रन्थ आदि कृतियॉ जैन भडारो मे उपलब्ध हो रही हैं। खरतरगच्छीय विद्वानों द्वारा की हुई यह उपासना न केवल जैन धर्म की दृष्टि से ही महत्व वाली हैं, अपितु सम्मुच्चय भारतीय संस्कृति के गौरव की दृष्टि से भी उतनी ही महत्ता रखती हैं।

"साहित्योपासनाकी दृष्टि से खरतरगच्छ के विद्वान यति मुनि बडे उदारचेता मालूम देते हैं। इस विषय में उनकी उपासना का क्षेत्र, केवल अपने धर्म या सम्प्रदाय की वाड से बद्ध नहीं है। वे जैन और जैनेतर वाङ्मय का समान भाव से अध्ययन–अध्यापन करते रहे हैं। व्याकरण, काव्य, कोष, छन्द, अलंकार, नाटक, ज्योतिष, वैद्यक और दर्शनशास्त्र तक के अगणित अजैन ग्रन्थों पर उन्होंने अपनी पाडित्यपूर्ण टीकाए आदि रचकर तत्तद् ग्रन्थो और विषयो के अध्ययन कार्य मे बडा उपयुक्त साहित्य तैयार किया है।"

खरतरगच्छ के गौरव को प्रदर्शित करने वाली ये सब बाते मैं यहाँ पर बहुत ही सक्षेप रूप में, केवल सूत्र रूप से ही उल्लेखित कर रहा हूँ।

खरतरगच्छ मे योग–अध्यात्म की अनूठी परम्परा रही है। योगीराज आनन्दघन, चिदानन्दजी, श्रीमद् देवचन्द जी, मस्तयोगी ज्ञानसागरजी (नारायण बाबा), अध्यात्मयोगी सहजानन्दघन आदि इसी परम्परा मे हुए हैं। वर्तमान मे माता धनबाई भी हम्पी की गुफाओ मे अलख जगा रही हैं। जैन तीर्थो मे शत्रुंजय, गिरनार, राणकपुर, कापरडा, नाकोडा और उत्तर–पूर्व भारत मे दिल्ली से लेकर गौहाटी तक सभी कल्याणक तीर्थ या मन्दिर खरतरगच्छ के आचार्यो व मुनियो की देन है। इनके निर्माण व जीर्णोद्धार मे इसी गच्छ के मुनियो व श्रावको ने योगदान दिया है। सक्षिप्त मे यू कहा जावे – चौबीसो तीर्थकरों की कल्याणक भूमियो को तीर्थरूप देने मे इसी गच्छ के आचार्यो व मुनियो की सूझबूझ थी।

सही मायनों मे "युगप्रधान" शब्द को सार्थक करने वाले चारो दादा इसी गच्छ की परम्परा के हैं जिनके नाम की माला समस्त जैन व अनेको जैनेतर प्रतिदिन जपते हैं। समस्त भारत मे जहाँ भी श्वेताम्बर जैनों के घर है, जैन दादावाडियाँ बनी हुई हैं जो आज करोडो–अरबो की जैन सम्पति है। इसी "युगप्रधान" शब्द व "दादावाडी" का चमत्कार देखकर अन्य जैन समाज भी इन्हीं दोनो का प्रयोग कर अपने को धन्य मान रही है।

नवागी टीकाकार श्री अभयदेवसूरि की आगम टीकाए उपाध्याय जगसोम की "युगप्रधानाचार्य गुर्वावली" आचार्य श्री जिनप्रभसूरि का "विविधतीर्थ कल्प" आचार्य अभयदेवसूरि का "जयन्तविजय" श्री जिनचन्द्रसूरि की "सम्वेग रंगशाला" महाकवि समयसुन्दर की "अष्टलक्षी" आदि ग्रन्थ विश्व साहित्य के अजोड ग्रन्थ हैं। बाबा आनन्दघन के चौबीसी और पद तो अपने आप मे अनूठे हैं ही।

खरतरगच्छ के श्रावक–श्राविकाओ ने अनेक धर्म कार्य किये, मन्दिर–मूर्तियाँ बनायी, तीर्थो के जीर्णोद्धार करवाये, हजारो हस्तलिखित प्रतियां लिखवाई। विविध धर्म प्रभावना के कार्य किये। उनका अपना महत्व है। संघपति सोमजी शाह नर–रतन सेठ, मोतीचन्द नाहटा, मत्रीश्वर कर्मचन्द बच्छावत, दीवान अमरचन्द सुराणा, देशभक्त अमर शहीद अमरचन्द बांठिया सर सिरेमल बाफना, जगत सेठ पारिवार की माणकदेवी, रावयाण परिवार के राजा भारमल आदि अनेक श्रावक –श्राविकाएं हुई है जिन्होन जैन शासन की अनुपम सेवा की है। विद्वान श्रावकों मे इस युग में स्व० अगरचन्द जी नाहटा का अकेला ही ऐसा नाम है जिन्होंने अपनी पचास वर्ष की साहित्य साधना से माँ भारती के ज्ञान भडार को अनुपम ज्ञान–रत्नों से भर दिया और 'विश्व के महान–पुरुषो के सदर्भ कोष' मे उनका नाम आदर से जुड गया जो अमेरिका मे प्रकाशित हुआ है।

"कुशल-निर्देश"
दिसम्बर, १६८७

खरतरगच्छ की गौरवमयी परम्परा

यदि खरतरगच्छ के संस्थापक पूर्वाचार्यों ने चैत्यवास पर चोट नहीं की होती तो, यह निश्चित था कि जैनधर्म भी, बुद्धधर्म की तरह भारत की धरती से लुप्त हो जाता। चैत्यवासी परम्परा ने भगवान महावीर के सिद्धान्तों को तिलांजलि देकर सुविधाधर्म बन लिया था। अपने तन्त्र–मन्त्र–विद्या के सहारे तत्कालीन राजाओं व मन्त्रियों पर अपना अक्षुण्ण प्रभाव जमा लिया था। खरतरगच्छ के आदि संस्थापक आचार्य वर्द्धमान सूरि और उनके शिष्य जिनेश्वर सूरि से लेकर जिनपतिसूरि इतने दिग्गज विद्वान हुए जिन्होंने राज–सभाओं में शास्त्रार्थ कर चैत्यवासियों पर विजय प्राप्त की। स्वनामधन्य विद्वान स्व अगरचन्दजी नाहटा ने ठीक ही लिखा है –

"पाँच सौ–सात सौ वर्षों से जो चैत्यवास ने श्वेताम्बर सम्प्रदाय में अपना इतना प्रभाव विस्तार कर लिया था, वह जिनेश्वरसूरि से लेकर जिनपतिसूरि जी तक के आचार्यों के जबरदस्त प्रभाव से क्षीणप्राय हो गया।" अतः सुविहित मार्ग की परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित और चालू रखने में "खरतरगच्छ की महान देन है। प्राचीन जैन साहित्य–इतिहास–पुरातत्व जो भी वर्तमान में उपलब्ध है उसका पचास प्रतिशत भाग खरतरगच्छ के जैन मुनियों, श्रावकों आदि ने रचित किया है। पुरातत्वाचार्य स्व मुनि जिनविजयजी तो खरतरगच्छ के साहित्य से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने निष्पक्ष भाव और मुक्त हृदय से लिखा है

दक्षिण की काशी :

उत्तर भारत की काशी, बनारस (वाराणसी) है तो दक्षिण की काशी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी 'हम्पी' रही है। यह तुगभद्रा नदी के किनारे बहुत बडा नगर था। इस वक्त कर्नाटक मे यह एक पहाडी स्थल है। रामायण की किष्किधा नगरी भी यहीं थी। पत्थर का चार पहियो का सुप्रसिद्ध विशाल रथ इन्हीं मदिरो मे है। कुछ खभे तो इस तरह खडे हैं कि उन्हे लकडी या बेत की छडी से मारने पर संगीत की सरगम 'सा रे ग म प ध नी सा' सुनाई देती है। यहा बडे-बडे जौहरी हुए है। एक पहाडी का नाम रत्नकूट है, दूसरी का हेमकूट, तीसरी का चक्रकूट- इसी तरह कम उचाई की पहाडिया है। उन पर खडे होकर देखने पर तुंगभद्रा नदी का पानी अविरल गति से बहता दिखता है। 'तुगभद्रा बाँध' भी यहीं बना है।

रत्नकूट पहाडी पर किसी जमाने मे १०८ जैन मदिर रहे होंगे। अब तो मूर्तिया भी गायब हैं। कुछ खडित प्रतिमाये पास के गाव कमलापुर के राजकीय सग्रहालय मे रख दी गयी हैं। इस पहाडी पर कई संतो ने तपस्या की और समाधिस्थ हो गये।

वि० स० २०१७ मे महान योगीराज देव देवेन्द्रों से पूजित श्री सहजानन्दघनजी (भद्रमुनिजी) का पदार्पण इस पहाडी पर हुआ। उस वक्त यहा गुफाओं मे शेर चीते आया करते थे। मणिधारी सांप भी रात को यदा-कदा दर्शन देते थे। इन योगीराज ने रात मे विश्राम कर ध्यान लगाया। आकाशवाणी हुयी यहीं आश्रम की स्थापना करो। तदनुसार महाराज साहब ने ठान ली और भक्तो ने सहयोग दिया श्रीमद् रामचन्द्र आश्रम की स्थापना हो गयी। प्राकृतिक गुफायें आवास धर मे बदल गयीं। जगल मे मगल हो गया। हजारो भक्तो का आवागमन प्रारम्भ हो गया। गुरुदेव की अमृतवाणी अहर्निश गूजने लगी।

इसी आश्रम मे अध्यात्म की दिव्यशक्तिधारिणी माताजी धनदेवी का पदार्पण हो गया। वे भी गुरुदेव के सान्निध्य में आकर अपनी साधना और आत्मबल से अनुपम शक्ति का सचय करने लगीं। रात को भक्ति मे वे इतनी तल्लीन हो जातीं कि देवता सुगन्धित वासक्षेप वर्षाते। वि० स० २०२७ कार्तिक सुदी २ को गुरुदेव का निर्वाण हो गया। माताजी का ४ अप्रेल १९९२ को स्वर्गवास हो गया। दोनो महान आत्माये चली गई, किन्तु यह आश्रम अब भी अपनी कहानी सुना रहा है।

"कथालोक" मासिक दिल्ली
अगस्त १९९२
वर्ष २५ अंक १

⌘⌘⌘

इसी गौरवमयी परम्परा मे खरतरगच्छ के वर्तमान में साधु–साध्वियें यद्यपि संख्या में अत्यन्त अल्प है फिर भी वे अपनी त्याग–तपस्या एव विद्वता से जैन एवं जैनेतर समाज में अपना विशिष्ट प्रभाव जमाये हुए हैं। इसी खरतरगच्छ की गौरवमयी परम्परा की आगमज्ञा विदुषीवर्या, शांत, सरल स्वभाव यथानाम तथागुण को सार्थक करने वाली प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्री जी महाराज साहब का अभिनन्दन कर अपने को कृत–कृत्य मान रहे हैं। उनके चरणों मे शतश नमन–अभिनन्दन।

''श्रमणी' अभिनदन ग्रन्थ में प्रकाशित – २० मई १९८९
जयपुर

मेरी प्रेरणा-स्रोत मेरी धर्मपत्नी

सौ0 शक्तिस्वरूपा श्री जतनकुमारी बाँठिया

मारवाड में कहावत है –
'मामा ज्यांरा मारका तो भूंडा क्यू भाणेज।
नर नानाणै, धी दादाणै।
बडी खाल मोसाल।
मामै पूत पिता ए घोडा।
घणा नहीं तो थोड़ा–थोडा।

वंश परम्परा में मातृपक्ष एवं पितृपक्ष दोनों का ही प्रभाव पडता है। लोकधारणा के मुताबिक पुत्र पर अमूमन मातृपक्ष का प्रभाव अधिक पडता है और कन्या पर पितृपक्ष का ।

यद्यपि मेरे जीवन–निर्माण में मातृपक्ष का अधिक प्रभाव पड़ा है किन्तु पिताश्री से सहृदयता और माताश्री से धार्मिकता जन्म से ही मिली है, उनका उपकार तो मेरे ऊपर है ही किन्तु गृहस्थ जीवन के पचास वर्ष जो ३० नवम्बर सन् १९९० को पूरे हो रहे हैं, इन पचास वर्षों में जो भी मैंने कार्य किया है उसका सारा श्रेय मेरी धर्मपत्नी शक्तिस्वरूपा श्रीमती जतन कुमारी बांठिया को जाता है। उन्होंने तन–मन–धन से मेरा सहयोग किया है। कष्ट के दिनों मे सदा हिम्मत देती रही हैं। उनकी ही डांट–डपट प्रेरणा से ही सारी संताने उच्च शिक्षा पा सकीं। उनको संस्कारी जीवन दिया। यद्यपि उन्होने शिक्षा तीन कक्षा तक ही प्राप्त की, किन्तु व्यावहारिक जीवन में एक आदर्श नारी धर्मपत्नी अर्द्धांगिनी के कार्य का निर्वाह किया है। देश एवं विदेश यात्रा में एक सुसंस्कृत भारतीय नारी का परिचय दिया है। पाक कला मे प्रवीण है। बड़े घर की बेटी हैं, किन्तु हमारे घर में आकर हमारे घर को भी बड़ा बना दिया है, इसीलिए कहा गया है,"बेटी आप भागी होती है बाप भागी नहीं।" अपनी पुत्रियों एव बहुओं को भी अपने गुणों व काम से प्रशिक्षित कर आदर्श गृहस्थ जीवन–यात्रा चलाने की शिक्षा दी है, दया–दान व उदारता की वे प्रतिमूर्ति हैं। विशेष उनके विषय में मैं स्वयं क्या लिखूं वे मेरी जीवन–संगिनी हैं।

प्रारम्भ में जो लोक दोहा मैंने लिखा है उसको मेरे भानजे श्री तनसुखराज डागा, कलकत्ते ने सार्थक किया है। वह भी एक होनहार सामाजिक उच्चकोटि के कार्यकर्ता एवं कवि हैं।

बाल साहित्य समीक्षा
(जुलाई १९९०)

उपाध्याय जिनपाल:- ये जिनपतिसूरीजी के शिष्य थे। ये बडे विद्वान थे। इनकी रचित गुर्वावली एक अत्यन्त महत्व की ऐतिहासिक कृति है जो सिंधी जैन ग्रन्थमाला की ओर से श्री मान् जिनविजयजी, पुरातत्वाचार्य शीघ्र ही प्रकाशित कर प्रकाश मे लाने वाले हैं।

भंडारी नेमिचंद्र:- *आप ओसवाल समाज के प्रथम ग्रथकार है। आप पहले चैत्य वासी थे। फिर स०* १२५३ मे श्री जिनपतिसूरिजी द्वारा खरतरगच्छानुयायी बने। आप विद्वान थे। आपकी रचित दो कृतियां हैं–षष्ठी शतक और दूसरी जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन। षष्ठी शतक बहुत महत्व की कृति है। इस पर तपागच्छीय, व दिगम्बर मत के भागचद्र ने वृत्ति बनाई है और इस कृति को अपनाया है। विशेष देखे ओसवाल नवयुवक महासम्मेलन मे श्री नाहटा का लेख।

जिनेश्वरसूरि:- आप जिनपतिसूरिजी के शिष्य थे। आप मरुकोट निवासी भडारी नेमिचद्र के पुत्र थे। *विद्वान पिता के विद्वान पुत्र क्यों न होता? आपका स्वर्गवास १२४५ मिगसर सुदि ११ को हआ। आपका जन्म नाम* अम्बर था। सं० १२०० में दीक्षित हो वीरप्रभ नाम से प्रसिद्ध हुए फिर १२०८ मे आचार्य पद पर आसीन हुए। आप भी असाधारण विद्वान थे।

卐卐卐

मस्तमौला श्री जयपुरिया जी

मस्तमौला श्री जयपुरियाजी–मेरा आशय भाई श्री सीताराम जी जयपुरिया से है–जिनका सदा पुष्प की तरह खिला हँसमुख चेहरा–गेहुआ वर्ण व मस्तक पर मोटी लाल बिन्दी– सदा आखो के सामने रहता है। वे धनपति थे–इससे मैं प्रभावित नहीं हुआ किन्तु उनकी सहृदयता, मानवीय गुणो एव समाज के लिये उनकी सेवा की उत्कट भावना से प्रभावित हुआ।

श्री सीताराम जी से मेरा परिचय सन् १९६४ ई० मे जब वे हाथरस, उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन के अधिवेशन मे अध्यक्ष के रूप मे पधारे, हुआ। उनके स्वागत, सत्कार व साथ रहने का सुअवसर मिला क्योकि मैं स्वागत मंत्री था। पीछे तो श्री जयपुरिया जी ने उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन का प्रधानमत्री मुझे मनोनीत कर दिया था। सम्मेलन के सभापति कानपुर की नामी गामी हस्ती उद्योगपति श्री रतनलाल जी गुप्त मनोनीत हुए थे। किन्तु उस वक्त सम्मेलन की तिथियाँ अपरिहार्य कारणो से आगे खिसक गई थीं। पुन तिथियाँ १५ – १६ मार्च तय हुयीं तो उस वक्त श्री गुप्ताजी अनुष्ठान में बैठे थे– उन्होंने अध्यक्षता में असमर्थता व्यक्त की तो– हम सभी पशोपेश मे पड गये। सभी कार्यकर्ता निराश हो गये तो भाई श्री सीताराम जी से सहज भाव से अनुरोध किया। यद्यपि वे बहुत व्यस्त थे, फिर भी अपनी स्वीकृति देकर हमारा उत्साह बढाया।

श्वेताम्बर जैनों के गच्छों मे खरतरगच्छ एक अति प्रसिद्ध गच्छ है। सदा से इस गच्छ के विद्वान् साहित्य की सेवा करते आये हैं। इस गच्छ में अनेकों विद्वान्, प्रभावक एवं प्रतिबोधक महापुरुष हुए हैं जिनका ऋण जैन धर्म व समाज पर है। उनकी विद्वत्प्रतिभा, उनके द्वारा रचित ग्रन्थों के पठन-पाठन से मालूम हो सकती है। इस लेख मे खरतरगच्छीय विद्वानो का किंचित् परिचय दिया जा रहा है जो साहित्य-प्रेमियों को उपयोगी सिद्ध होगा।

कपूरमल्लः- ये श्री जिनदत्तसूरिजी के परमभक्त श्रावक थे। इनकी एक मात्र रचना आचार्य परिकरण ४६ गाथा की है जो श्री नाहटा बन्धु लिखित मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि नामक पुस्तक के पृ० ६०-६४ में प्रकाशित है।

श्रीजिनदत्तसूरिः- ये अत्यन्त प्रभावक महापुरुष हो गये हैं। इनकी विद्वत्-प्रतिभा अनोखी थी। ये जिनवल्लभसूरिजी के पाट पर हुए। इनका जन्म ११३२ मे हुंबड गोत्रीय वाहडदेवी की कुक्षि से धवलक नाम नगर में हुआ। जन्म नाम सोमचन्द्र रखा गया। सं० ११४१ में दीक्षा हुई। सं० ११६९ वैशाख वदि ६ शनिवार को आचार्य पदवी हुई और जिनदत्तसूरि नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हुए। ये खरतरगच्छ के प्रथम दादा के नाम से संबोधित किये जाते हैं। इन्होंने ५२ वीर ६४ योगणी को वश मे किया। इन्होंने कई चमत्कार भी दिखाये। कई को प्रतिबोध भी दिया। १ लाख ३० हजार जैन बनाये। जैन जनता इन्हें बड़ी श्रद्धा से पूजती है। इनके रचित स्तोत्रों के जाप करने से महामारी आदि रोग-कष्ट दूर हो जाते हैं। इनका स्वर्गवास सम्वत् १२११ आषाढ शुक्ला ११ को अजमेर में हुआ। इनका जीवन चरित्र श्री नाहटा बन्धुओ की ओर से शीघ्र प्रकाशित होने वाला है।

जिनचंद्रसूरिः- ये जिनदत्तसूरि के पाट पर बैठे। इनका जन्म जैसलमेर के निकटवर्ती विक्रमपुर गाव मे साह रासल की धर्म पत्नी देल्हण देवी की कुक्षि से वि० सं० ११९७ भादवा शुक्ला ८ को ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ। वि० सं० १२०३ फाल्गुण शुक्ला ९ को अजमेर मे श्री जिनदत्तसूरि ने दीक्षित किया। सं० १२०५ के मिती वैशाख शुक्ला ६ को विक्रमपुर के श्री महावीर जिनालय मे श्री जिनदत्तसूरिजी ने स्वहस्तकमल से इन प्रतिभाशाली मुनि को आचार्य पद प्रदान कर श्री जिनचंद्रसूरिजी नाम से प्रसिद्ध किया। आप अति विद्वान थे। आपने म्लेच्छोपद्रव से श्री संघ की रक्षा की। दिल्ली के मदनपाल राजा को प्रतिबोध दिया व देवताओ को भी प्रतिबोध दिया और भी अनेक प्रभाविक कार्य किये। महतियाण जाति की स्थापना की। इनकी विद्वत् प्रतिभा की एक मात्र कृति 'व्यवस्थाकुलक' है। इनका स्वर्गवास सं० १२२३ के द्वितीय भाद्रपद कृष्ण १४ को दिल्ली नगर में हुआ। इनके भालस्तल में मणि थी, इसी से इन्हें मणिधारी भी कहते हैं। ये दूसरे दादा के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपका चरित्र विशेष जानने के लिए श्री अगरचंद नाहटा लिखित 'मणिधारी जिनचंद्रसूरि' पुस्तक देखनी चाहिए।

जिनपतिसूरिः- ये जिनचंद्रसूरिजी के पाट पर हुए। इनका जन्म सं० १२०५ चैत्र वदी ८ के दिन हुआ। दीक्षा १२१८ फागुण वदि ८ को और आचार्य पद सं० १२२३ कार्तिक सुदी १३ के दिन हुआ। आप भी अति विद्वान थे। आपने हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की सभा मे चैत्यवासियो से शास्त्रार्थ कर उन्हे परास्त किया। मणिचन्द्र भण्डारी ने अपना पुत्र इन्हें समर्पण किया जो आगे जाकर जिनेश्वरसूरिजी के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपका स्वर्गवास सं० १२७७ मे पाल्हणपुर में हुआ।

जी पुन पधारे। मुझे व काती को कहा–बैठिये, मोटर मे बातचीत रास्ते में कर लेंगे। हम लोग मोटर मे बैठ गये। श्री जयपुरिया जी के इतजार मे खडी भीड मुझे घूरती रही– यह कौन महाशय आ गये? किसी से भी बात नही की और इनको साथ बैठाकर प्रस्थान कर गये। रास्ते में काति की कहानी बताई तो बोले–इसमें निराश होने की कोई बात नही हैं। कल तुम ठीक ८ बजे स्वदेशी हाउस आ जाओ। मैं भाई राजाराम को फोन कर दूँगा। तुम्हारी टेबुल भी मेरे कार्यालय मे लग जायेगी, जो काम बताऊँगा करते रहना। दूसरे दिन काति को सुबह छ बजे मैंने उठाया, बोला–उठ जाओ, तुम्हे ठीक ८ बजे स्वदेशी हाउस पहुँचना है मगर वहा नौकरी करनी किस को थी? मैंने कहा, नौकरी करना बडी टेडी खीर है–समय पर कार्यालय पहुँचना पडता है, मालिको का अदब व आदर रखना पडता है। काति स्वदेशी हाउस तो नहीं गया, किन्तु व्यौपार मे पुन निराशा छोडकर लग गया और दो–तीन महीनो मे ही क्षति पूर्ति कर ली। दो–तीन महीने बाद जयपुरिया जी मिले तो पूछा कान्ती तो आया नहीं, क्यो? मैंने कहा नौकरी करना आसान नहीं हैं। अपने तो व्यापार मे स्वतत्रता है, किन्तु नौकरी तो नौकरी है– परतत्रता है।

श्री जयपुरिया जी को जब भी कोई सामाजिक कार्य बताया गया तो उसकी उन्होने तुरन्त पूर्ति कर दी। श्री जयपुरिया जी को पता था कि बाँठिया जी निस्वार्थ भाव से सामाजिक कार्य करते रहते हैं अत उनका मेरे प्रति स्नेह एव आदर भाव बढता गया। सन् १९७२ मे मेरा हाथरस का व्यापार भागीदार के असहयोग के कारण अस्त–व्यस्त हो गया। श्री जयपुरिया जी को जब पता चला तो उन्होंने मुझे फोन किया– बाँठिया जी मेरे एक ही लडका है अशोक, आपके चार लडके हैं, एक लडका मुझे दे दो। स्वदेशी पोलीटेक्स मे उसको तुरन्त भेज दो। वहा मेरी अनुपस्थिति में वह सारे कार्य मालिकाना हैसियत से देखेगा। धीरे–धीरे उसको सब समझ में आ जायेगा। फिलहाल एक वर्ष तो उसे ५ हजार रुपिया माहवार हाथ खर्च का दूँगा, किन्तु एक साल बाद जितना वेतन आप चाहेगे–उतना वेतन दूँगा- शर्त एक ही है, वह जयपुरिया व्यापारिक घराने को कभी छोड नहीं सकता। मेरी अपनी कुछ विवशता व श्री जयपुरिया जी के विशेष आग्रह व प्रेम के कारण चि० प्रकाश को स्वदेशी पोलीटैक्स गाजियाबाद ता० १ जनवरी १९७३ को भेज दिया। किन्तु वह सिर्फ १५ दिन ही वहा रहकर वापिस हाथरस आ गया, बोला, दिन भर मालिक की तरह खाली बैठे रहना मुझे पसद नहीं–मेरा मन नहीं लगा। हम व्यापार में मन लगाकर काम करेगे तो उतना तो भाग्य ने साथ दिया तो कमा ही लेगे। श्री जयपुरिया जी को जब पता चला कि प्रकाश तो हाथरस वापिस चला गया है तो मुझे पुन फोन किया-- बाँठिया जी उसको वापिस क्यो बुला लिया। मुझे उनके प्रेम व सहृदयता की सराहना करनी पडी– मुझे यही कहना पडा - नौकरी करना आसान नही है। बुजुर्गो ने ठीक ही कहा है– नौकरी न कीजिये, घास खोद खाइये। अन्य जावे आस पास आप स्वग दूर जाइये।

जयपुरिया परिवार के आपसी झगडों के कारण श्री जयपुरिया जी का कानपुर आना कम होता गया तो मेरा भी उनसे मिलना कम होता गया। जब भी मिला उन्होने अत्यधिक आत्मीयता दर्शाई। श्री जयपुरिया जी के स्वर्गवास के कुछ माह पूर्व मैं दिल्ली गया हुआ था। उस वक्त वे शान्ति निकेतन आर के पुरम मे रहते थे। मैंने फोन से उनसे जयगोपाल की तो बोले– बाठिया जी वर्षो बीत गये आप आकर मिले ही नहीं, आज अवश्य आइये। मैंने कहा आप दूर बहुत रहते हैं, टैक्सी किराया आने–जाने का बहुत लग जाता है, तो हँसकर बोले– आप कहो तो गाडी भेज दूँ। मैने कहा उसकी जरूरत नहीं। मैं उनसे मिला, काफी देर तक बातचीत हुई उनके चेहरे पर चिंताओं की रेखाएँ खिंची हुई थीं। सदा मुस्कान से भरा चेहरा आज कुछ म्लान हो रहा था। मस्तमौला सदाबहार श्री जयपुरिया जी को पूछा, आजकल आपकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है, क्यो? "नहीं–नहीं" ऐसा कुछ नहीं है। पीछे पता चला कि कुछ पारिवारिक एव व्यावसायिक उलझनो से वे पस्त हो गये थे और अन्त में उनके स्वर्गवास का समाचार सुना तो मेरा मन बहुत ही बोझिल हो गया।

OOO

श्री सीताराम जी जब हाथरस सिटी स्टेशन पर दलबल सहित अध्यक्ष के रूप में हँसते हुये प्लेटफार्म पर उतरे तो हमारे सम्मेलन के एक कार्यकर्ता ने प्रश्न कर ही दिया– श्री जयपुरिया जी आप कानपुर की किस चक्की का पिसा हुआ आटा खाते हैं–शरीर से भी आप भरे–पूरे हैं और सदा आपके चहरे पर मुस्कान झलकती रहती है। इससे पूर्व कि श्री जयपुरिया जी इस प्रश्न का उत्तर देते–खिलखिलाकर सभी जोर से हँसने लगे।

श्री जयपुरिया जी ने अधिवेशन के दो दिन पहले भाई श्री जुगलकिशोर परसुरामपुरिया के साथ अपने मुनीम श्री नथमलजी कलत्री को लाल थैली में रुपया बाँधकर इस आशय से भेज दिया था कि हाथरस छोटा शहर है–सम्मेलन के प्रबन्ध मे अर्थ की कमी न रह जावे। श्री कलत्री जी ने मुझे अपने आने का आशय बतलाया तो मैंने कहा थैली आप बंद रखे और यहा के कार्यकर्त्ताओ का काम देखते जावे। सम्मेलन समाप्त हुआ तो समापन समारोह में श्री जयपुरिया जी को हाथरस अधिवेशन की भव्यता व शानदार प्रबध एव सुन्दर भोजन व्यवस्था देखकर कहना पड़ा– इतना शानदार प्रबध तो हम लोग भी सन् १९६० ई० के कानपुर अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता बाबू श्री प्रकाश जी (तत्कालीन राज्यपाल बम्बई) ने की थी– मे न कर सके जबकि जयपुरिया एव सिंघानिया दोनो घरानों का संयुक्त प्रबध था। उसका कारण यह था– हमारे यहा वैतनिक कार्यकर्ता अधिक थे और यहां सभी समाज के निष्ठावान, सत्सेवी, लगनशील कार्यकर्ता हैं।

कांग्रेस सेवादल के श्री मदनलाल आजाद ने श्री जयपुरिया जी को पत्र लिखा– हम भी कांग्रेस की तरह "मारवाडी सेवादल" युवकों का संगठन करना चाहते हैं तो उन्होंने तुरन्त पचास स्वयं–सेवको की पूरी वर्दी, जूतो, मोजो सहित बनवा कर कानपुर से भिजवा दी।

हाथरस के एक सपडिया मारवाडी परिवार के वयोवृद्ध गृहस्वामी को किरायेदार ने झूठा बैनामा अपने नाम करा के वृद्ध आदमी को मार दिया, प्रचार करा दिया कि वह कहीं चला गया है। पुलिस को चांदी के टुकडे देकर चुप करा दिया गया तो श्री जयपुरिया जी से अनुरोध करने पर उन्होंने अपने स्तर से लखनऊ शासन को पत्र लिखकर उस केस को पुन चालू कराया। किरायेदार ने जैसा किया उसको वैसा ही फल मिल गया।

श्री जयपुरिया जी शिक्षा प्रेमी थे। हाथरस अधिवेशन पर उन्होंने उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन शिक्षा कोष स्थापित किया और धन संग्रह भी कराया किन्तु इस शिक्षा कोष के न्यासी एक जगह हस्ताक्षर करने के लिये एकत्रित न होने से यह कार्य अधूरा ही रहा। जो थोडा धन सग्रह हुआ वह आज भी बैंक में जमा है। उसका सदुपयोग न हो सका व ब्याज सहित रकम बढ़ रही है। एक बार स्वदेशी हाउस में भोजन करने का अवसर आया तो भोजन कक्ष मे मेरे पास आकर बैठ गये, बोले– मेरा तो मंगलवार का व्रत है किन्तु अपनी पुत्री को बुलाकर बिठा दिया और भोजन करने को कहा "तुम बाँठिया जी का साथ दो"। मैने बहुत मना किया पर वे न माने यह उनकी सहृदयता एव शिष्टाचार की पराकाष्ठा थी।

सन् १९६७ ई० मे मैने कानपुर में अपने पुत्रों के लिये दुकान आढत की खोल दी थी। मै उस वक्त हाथरस मे रहता था, व्यापारिक अनुभव की कमी व सयोगवश जो पूँजी कानपुर मे व्यापार मे लगाई थी वह सब बराबर हो गयी तो चि० कांती निराश होकर बोला– मुझे तो कहीं नौकरी लगा दो, एम० ए० पास तो हूँ ही। मैने कहा व्यापार मे निराश होने की जरूरत नही, उतार चढाव तो व्यापार मे आते रहते हैं नौकरी ही करनी है तो जयपुरिया घराने मे करो। दूसरे दिन मै कांती को लेकर स्वदेशी हाउस सुबह ६ बजे श्री जयपुरिया जी से मिलने गया तो देखा कि सीताराम जी से मिलने वालो की सौ से अधिक लोगों की भीड थी। मुझे बताया गया कि जयपुरिया जी अभी बाहर गये हैं आते ही वह सीधे एरोड्रोम चले जावेगे क्योंकि उन्हे आज ही हवाई जहाज से दिल्ली प्रस्थान करना है। इतनी बड़ी भीड़ मिलने वालो की खडी है, आपसे मिलना संभव नहीं होगा। मैने वापिस जाने का सोचा ही था कि इतने मे श्री जयपुरिया जी मोटर में बाहर से आये और मुझे देखकर मेरे पास मोटर खडी करके बोले– बाँठिया जी, बहुत दिनों बाद आए हैं– बोलिये क्या सेवा है? मैने कहा कुछ निजी काम है, मै फिर आपसे मिलूंगा। इतने में ही वे तपाक से बोले सहसा मै २–४ मिनट मे अन्दर जाकर आता हूँ, मेरे साथ ऐरोड्रोम चलिये, रास्ते में बात कर लेंगे। दो मिनट बाद ही जयपुरिया

स्व० सूरजराज जी धारीवाल का एक महत्वपूर्ण पत्र

[ग्वालियर के साहित्य–सूरज स्व० श्री सूरजराज जी धारीवाल का नाम साहित्याकाश में सदा प्रकाशमान रहेगा। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी और सैकडों प्रकाशित (मुद्रित) एव हस्तलिखित ग्रथ कई एक ज्ञान भडारो को मुक्त हस्त से दान मे दिये।]

आदरणीय श्री धर्म बन्धु जी [हजारीमल बाँठिया] सादर जयवीर। आपका कार्ड दि० लिखित ४/६/८६ को प्राप्त हुआ। धन्यवाद ! पूर्ण विश्वास है कि आप सपरिवार सानन्द और स्वस्थ होगे। मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अमर शहीद श्री अमरचंद जी बॉठिया का जीवन वृत्त छपना आरम्भ हो गया है और उसके लिए मेरा फोटू और परिचय चाहिये। इस सम्बन्ध मे निवेदन है कि मेरे फोटू की दो प्रति भेज रहा हूँ। जो भी उचित समझे उसका प्रयोग करे। परिचय में इतना ही समझें।

न मैं जानू पढना लिखना, न मैं ज्ञानी ध्यानी। किसी तरह से मन बहलाऊँ इतना ही बस ज्यानी।।

धर्मपत्नी की रुग्नावस्था के कारण हम लोग नागपुर मे स्थायी रूप से बसने के लिये ता० २८–८–८० को ग्वालियर से यहा आ गये और पत्नी का देहावसान ६–१–८६ पोष वदी १० स० २०४२ को प्रात काल ६.३० पर हो गया। अन्त समय मे इन्होने अपनी दोनों आखे दान दे दीं जो ११ वर्ष की लडकी और ५० वर्षीय वृद्धजन को उसी समय लगा दी गई। धन दौलत आदि हर प्रकार का परिग्रह दि० ३०–१२–८५ तक सब का त्याग कर चुके। अब प्रयत्न यही है कि केवल २५ कपडे ही परिग्रह मे रखा जावे।

परिचय के सन्दर्भ मे इतना ही पर्याप्त होगा कि ग्वालियर मे रहकर जो कुछ सेवा बन सकी उसकी अनायास जानकारी सलग्न सामग्री से मिल जावेगी और नागपुर मे रहकर अनेक धार्मिक और सामाजिक सस्थाओ को आर्थिक आदि सहायता से सेवा कार्य करते हुये भण्डारकर रिसर्च इन्सटीच्यूट पूना को हस्तलिखित पोथियो के अतिरिक्त प्रकाशित ग्रथो का एक बडा सग्रह दान दे दिया। पूर्व मे भी इनको कई बार पुस्तको का सग्रह दिया जा चुका है। यहाँ भी सस्थाओ को प्रकाशित ग्रथो का दान दिया है। जो ग्रंथ हस्तलिखित पूना को दान स्वरूप भेंट दिये हैं उनमे तीन ग्रथ तो अप्रकाशित, अछूते, दुर्लभ हैं– (१) हनुमान चरित्र–(पद्य) ११ सर्गो में १६वीं शताब्दी रचित काव्य–रचियता जैनाचार्य श्री ब्रह्मजित। (२) रसराज (पद्य) रचित द्वारा मतिराम। (३) ग्वालियर नामा– रचयिता ब्राह्मण बादी कवि। परम पूज्य श्री पूज्यजी बीकानेर वालो को भी प्रकाशित ग्रंथो का बडा सग्रह दान स्वरूप भेट किया है। स्थानीय सस्थाओ को भी आवश्यकतानुसार पुस्तको का सग्रह दिया है। स्थानीय अनेक संस्थाओं मे भाषण तथा अन्य सेवा कार्य करके इनको सहयोग दिया। जिसकी जानकारी समय–समय पर समाचार पत्रों आदि मे प्रकाशित होती रहती है।

नागपुर मे रहते हुये मुझे एक लाभ अवश्य अधिक मिला है– इस अवधि में मैंने कई रचनाएँ पूर्ण कर दीं जिनमे कुछेक के नाम इस प्रकार हैं। (१) शिष्टाचार मीमासा (२) मानवता की सीढियां (३) गुरु का महत्त्व (४) जैन शब्द का रहस्य (५) चिन्ता शब्द का अर्थ (६) धर्म और रूढियां (७) ७४।। अंक का रहस्य। आदि सब रचनाएँ प्रकाशनार्थ ४० के करीब हो गई हैं और १०–१५ के करीब अधूरी पडी हैं जो गुरुदेव की कृपा होगी तो पूरी हो सकेंगी।

जैपुर मे आपसे भेट होने के पश्चात् मुझे रायपुर यवतमाल, सेट्रम हैदराबाद से १५० कि० मी० बम्बई लाइन पर जाना पडा और अब मद्रास, हम्पी, ग्वालियर आदि जाने की योजना है। कातीवदी में मगध की ओर जाना है। इस पर्यटन में आपके दर्शन करता हुआ और प्रयाग मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन होता हुआ दीपावली पर पावापुरी पहुँच जाऊँगा और यहाँ प० पू० श्री गौतम स्वामी के होने वाले महोत्सव कातीसुदी ५ मे सहयोग दे दूँगा। मैं यह समझता हूँ कि इस महोत्सव के अवसर के पूर्व अमर शहीद का जीवन वृत्त छपकर प्रकाशित हो जावेगा।

पुन जयजिनेन्द्र स्वीकार हो, पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में ।

कुशल निर्देश, सितम्बर १९९२

लाला रामलाल जी जैन

जैन समाज के कर्मवीर, दानवीर एव शूरवीर लाला श्री रामलाल जी जैन दिल्ली के तेल व्यवसाय के बेताज बादशाह थे। संसार की असारता और शरीर की नश्वरता के शाश्वत सत्य को समभाव से स्वीकार करते हुये लाला रामलाल जी जैन ३१ दिसम्बर १९९४ को यह नश्वर शरीर त्याग कर परलोक को चल गये।

जाना तो एक दिन सबको है पर कुछ लोग अपने काम से ऐसी सौरभ छोड़ जाते है, जो सदा याद किये जाते रहेंगे। तीन तीर्थंकरो की कल्याणक भूमि श्री हस्तिनापुर तीर्थ पर व्यवस्था एव विकास कार्य करने वाली संस्था श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति के प्रारम्भ से ही जुड़कर अन्त तक अध्यक्ष पद पर ही रहे। उनके कार्य काल मे समिति ने तीर्थ के विकास कार्यों का जो कीर्तिमान स्थापित किया, वह अपने आप में एक इतिहास बन गया। आज तीर्थ का वर्तमान स्वरूप श्री रामलाल जी जैन एव उनके सहयोगियो के अथक प्रयासो का परिणाम है।

श्री रामलाल जी खरतरगच्छ परम्परा के श्रावक थे। वह दादा गुरुदेव के परम भक्त थे किन्तु हाथरस से दिल्ली आने पर युगवीर आचार्य श्री विजयवल्लभसूरि जी म० के बताये कार्यो को साकार रूप देने के लिये बिना किसी भेदभाव के समर्पित हो गये। महत्तरा साध्वी श्री मृगावती जी के उपदेश से अनेको धार्मिक एव लोकोपकारी कार्यों मे यथा शक्ति योगदान व सहयोग आपने प्रदान किया वह श्री आत्मानद जैन सभा एवं श्री सोहन श्री जी विज्ञान श्री कल्याणकारी संस्था के वर्षो तक अध्यक्ष रहे।

श्री रामलाल जी से मेरा परिचय करीब ५० वर्षो से रहा है। भारत विभाजन के समय वे अपने परिवारीजनों के साथ हाथरस आ कर बस गये थे। मै हाथरस में पहले से ही व्यवसाय में था। उन्होने बेनीगंज मे "रामलाल मनोहरलाल" के नाम से गल्ले का व्यवसाय प्रारम्भ किया। हाथरस मे व्यावसायिक ऊचाइयों को स्पर्श करने के बाद वे दिल्ली आ गये और तेल व्यवसाय मे अपना नाम स्थापित किया।

हाथरस में उनके परिवार से हमारे परिवार के बीच घर जैसा नाता हो गया था। प्रारम्भ में भाई श्री हरख चन्द जी नाहटा के दिल्ली आ बसने से पहले हम लोग श्री रामलाल जी के यहा उनके निवास पर ठहरा करते थे। जनवरी, १९९५ को हस्तिनापुर में ही सुना कि श्री रामलाल जी नहीं रहे, मैं अवाक रह गया। जैन समाज की तो अपार क्षति हुई ही, मेरी व्यक्तिगत क्षति हुई है। मुझे अब आत्मीयता से हजारीमल कौन कहेगा।

"ज्योति संदेश"
वर्ष ४, अक ३
मार्च–अप्रैल, १९९५

❁ ❁ ❁

श्री हजारीमल बाँठिया-रचित

बाल–साहित्य

श्री हजारीमल बाँठिया-रचित

बाल-साहित्य

एक महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित पत्र

■श्री राजकुमार बाँठिया, कानपुर

पत्र साहित्य का अपना एक महत्व है। इससे ज्ञात व अज्ञात कई नये तत्व प्रकाश में आते हैं। अभी-अभी श्री जौहरीमलजी पारख के माध्यम से सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं विचारक तथा लेखक स्व० श्री कस्तूरमलजी बाँठिया, अजमेर वालों का मुनि कांतिसागरजी (स्व० अनुयोगाचार्य श्री जिन कांतिसागर सूरिजी) के नाम ता० २ दिसम्बर १९६१ ई० का पोस्टकार्ड प्राप्त हुआ है, जो सुवाच्य एव सुलेखन ढंग से लिखा गया है, उपयोगी एवं नये तथ्य उजागर करता है इसलिए उसको अविकल यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है-

नेपानगर (म० प्र०)
ता० २-१२-१९६१

पूज्यवर, सविनय वंदना।

आपकी ओर से मुनि दर्शनसागरजी का सारी स्थिति पर प्रकाश डालने वाला पत्र मिला। "जैन जगत" मासिक के नवम्बर के अंक में बाड़मेर संघ के पत्र के साथ मुनिश्री कांतिसागरजी के दिए उस संघ को पत्र की प्रति छपी थी जिससे स्थिति पूर्ण स्पष्ट हो गयी थी। सोहनराज कोठारी का जैन भारती में लम्बा चौड़ा शिकायत भरा लेख पढकर ही मैं भेद समझ गया था क्योंकि मैं स्वयं भुक्तभोगी एक समय था। मेरा विवाह स्थानकवासी सम्प्रदाय के नेता की लडकी से हुआ था। हमारा घर एक दम ही सामान्य था जबकि नेता सेठ था। मैं इंटर मे पढता था। उस समय ओसवालों मे सिर्फ जोधपुर व उदयपुर मे ही पढने लिखने का प्रचार था। जब मैं पढता था तब भी मेरे साथ तीन चार ओसवाल ही इंटर मे पढ रहे थे। उनमें मैं ही क्वारा था। इसलिए मेरे साथ उन स्थानकवासी नेता ने उनसे अत्यन्त नीची आर्थिक स्थिति होते हुए भी अपनी पुत्री का वाग्दान कर दिया और फिर विवाह भी।

यद्यपि जन्म से, विचार से मूर्तिपूजक होते हुए भी मेरे विचार उदार थे। मेरे ननिहाल वाले स्थानकवासी थे। हमारे घर स्थानकवासी साधु-साध्वी बहरने आते तो उन्हें उतने ही सद्भाव से बहराया जाता था। पर विवाह होने पर मेरी भ्रांति टूटी जब मेरी पत्नी ने मंदिर उपाश्रय जाने से इंकार कर दिया। और इस कारण मेरे पिताजी ने उसके हाथ का बना खाना, खाना बन्द कर दिया। मेरी बड़ी भौजाई भी स्थानकवासी घर से आई थी। परन्तु वह नेता की पुत्री नहीं थी। मैने पत्नी से तब यही कहा कि पिताजी के घर में व आश्रित रहते यह कैसे चलेगा? कहो तो पढना छोडकर अपनी घर-गृहस्थी जमाएँ अथवा जब तक मैं पढता हूँ तुम पीहर में रहो। मैं वहीं मिलने आता जाता रहूँगा। बहुत सोच विचार के साथ उसने अपना ढंग बदला था।

मुझे तो बहुत वर्षों बाद पता चला कि इस धर्म संकट का कारण था उसका मंदिर व उपाश्रय नहीं जाने के आर्याजी से सौगन्ध ले लेना। ज्यों ही कोठारी जी का "जैन भारती" मे लेख पढा तो मुझको इसका स्मरण इसलिये हो आया कि स्थानकवासियों से भी अधिक कट्टर तेरापंथी सुने गये थे। और मैंने इसी बात को लेकर एक छोटा लेख "जैन जगत" को भेज दिया सो जनवरी के अंक में प्रकाशित होने की सम्पादक की सूचना है। "जैन जगत" आपके देखने में नहीं आता हो तो मैं वह अंक भिजवा दूँगा। जैन भारती में भी लेख भेजूँगा परन्तु उनके आप विषयक स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा में हूँ। वे नवकार मंत्र को नहीं बल्कि स्वामीजी के नाम की माला जपते हैं इस विषय में मैंने आपसे भी पूछा था क्योंकि आप तेरापंथ साधु जीवन त्यागे हुए हैं ऐसा सोहनराजजी कोठारी ने स्पष्ट लिखा था। परन्तु आपने इसपर प्रकाश नहीं डाला। कृपया प्रकाश डालें।

आपने कब खरतरगच्छ की दीक्षा ली और उससे किस समुदाय में यह भी लिखें। तेरापंथी साधु कितने वर्ष रहे। मूलतः कहाँ के ओसवाल हैं।

विनीत
कस्तूरमल बाँठिया

"कुशल-निर्देश", नवम्बर १९९०

स्वतन्त्रता - पूर्व बालगीत

झूला-झूलो

आओ भइया झूला झूलो।
झूला झूलो, झूला झूलो।।
सोहन मोहन कुन्ती कचन।
कल्लो भल्लो कृष्णा चन्दन।।
आओ आओ बाबू जागे।
तुम मत भागो आओ आगे।।
दांयें जाओ बाये जाओ।
सीधे पैर बढाये जाओ।।
बैठो भाई सम्हल सम्हल कर।
मत्त गिर जाना कहीं फिसलकर।।
आसमान को ऊपर छूलो।
झूला झूलो, झूला झूलो।।

झुनझुना' आगरा
वर्ष ३ अंक ४, जुलाई १६४१

वीर-पुत्र

मोहन देख डाकिया आया,
थैले मे क्या-क्या भर लाया।
अहा! 'वीर पुत्र' वह लाया,
हम सबके मन को है भाया।
कविता और कहानी पाते,
मजेदार ज्यो चाट उडाते।
रसगुल्लो-सी भरी मिठाई,
वीरपुत्र पत्रिका सुहाई।
वीर बनेगे काम करेगे,
वीरपुत्र का विरुद धरेगे।
सब लोगों का कष्ट हरेगे,
भारत को आजाद करेंगे।

'वीरपुत्र' मा० अजमेर
वर्ष ३ अंक १, मार्च १६४४

कागज की कढ़ाई

कुमारों ! तुम्हें यह जानकार आश्चर्य होगा कि कागज की कढाई मे बडे तले जा सकते हैं। यह खेल तुम इस पकार दिखा सकते हो।

एक मोटे क्रेफ्ट पेपर की आलपिनो से छोटी कढ़ाई बनाकर उसे तेल से लबालब भर दो। कढाई को अंगीठी या चूल्हे पर रख दो, नीचे से तेज आच लगा दो। जब तक तेल गरम होने लग तब तक लोगो के सामने मुँह से मन ही मन कुछ गुन–गुनाओ। लोग समझेगे कि जादू की करामात से कागज जल नहीं रहा है। जब तेल उबलने लगे तो बेसन या दाल के बडे बना कर कढाई में तलना शुरू कर दो और उन बडो को दर्शको को खिलाओ। दर्शक यह तुम्हारा अद्‌भुत खेल देखकर दांतों तले अगुली दबाने लगेगे।

कुमारों ! यह कोई जादू नहीं है बल्कि भौतिक विज्ञान के कुछ नियमो से ही कागज नहीं जलता। ध्यान रखना जब तक कढाई मे लबालब तेल है, तभी तक कागज नहीं जलेगा। जहाँ थोडा तेल खत्म हुआ कि कागज जलना शुरू हो जावेगा।

"कुमार" मासिक, मंदसोर
वर्ष १ अंक ६, जनवरी १९४१

संपादक के नाम पत्र

बीकानेर

श्रीमान सम्पादक, महोदय

सादर प्रणाम !

आपका प्यारा और हमारा प्यारा झुनझुना आपके स्थानीय एजेन्ट द्वारा मेरा यहा आता है। मुझे वह बहुत अच्छा लगता है। उसमें हमारे बालकों सबन्धी मजेदार विषय रहते हैं। मै भी बालक हूँ। मैं आपकी सेवा मे अपने तीन Articles भेज रहा हूँ। आशा है आप उन्हे स्वीकार कर झुनझुना मे प्रकाशित करने की कृपा करेगे।

आपका––
हजारीमल बांठिया

"झुनझुना" मासिक आगरा
वर्ष ३ अंक ८ जून १९४१

माँ का लाल

मा वस्ते मे पेडे धर दे,
मैं शाला को जाऊँगा।
भैया से पोथी मँगवा दे,
जल्दी सब पढ़ जाऊँगा।
शाला जाकर खूब पढ़ूँगा,
नहीं किसी से कभी लड़ूँगा।
पढ़ लिखकर विद्वान बनूँगा,
भारत का इतिहास लिखूँगा।
जिसे देखकर दंग रहेगे,
भारत के सारे विद्वान।
डा० गौरी शकर ओझा,
जैसा पाऊँगा सम्मान।।
मेहनत करके पढ़ूँ लिखूँगा,
भारत का उत्थान करूँगा।
मैं उसको आजाद करूँगा,
माँ का प्यारा लाल बनूँगा।।

"वीरपुत्र" मासिक अजमेर
वर्ष ३ अक ४, जून १९४४

मेरी नानी

मेरी नानी बड़ी सयानी।
कहती रहती नयी कहानी।।
एक था राजा, एक थी रानी।
राजा सुन्दर रानी कानी।।
राजा मूँजी रानी दानी।
रानी भोली वह अभिमानी।।
वह अज्ञानी कहीं न सानी।
रानी करती थी मनमानी।।
तुम भी रानी वह भी रानी।
कौन कुएँ से लाये पानी।।
रानी अच्छी ज्ञानी मानी।
राजा ने भी गलती मानी।।
नानी कहती एक कहानी।
ऐसा राजा ऐसी रानी।।

'वीरपुत्र' मा० अजमेर
वर्ष ३ अंक ४ जून १९४४

था और उसने भी विक्रम की तरह बहुत वर्षो तक उज्जैन मे राज्य किया।
''वीरपुत्र'' मासिक अजमेर,
वर्ष ३, अक १, मार्च १९४४

सुघड़ बहू

पुराने जमाने की बात है कि उज्जेन नगरी मे ब्रह्मदत्त नाम का एक सेठ रहता था। सेठ के चार लड़के थे। चारो लड़को की बहुओ का नाम विमला, सरला, कमला और लक्ष्मी था। सेठानी के मर जाने पर सेठ ने घर का सारा कार्य बहुओ के हाथ सुपुर्द करना चाहा। बहुओ की परीक्षा लेने के लिए सेठ ने एक दिन चारो बहुओ को अपने पास बुलाकर उन्हे चार-चार धान दिये और कहा एक साल बाद, ये धान वापस ले लूँगा।

विमला खाने मे तगडी थी पर काम करने को मकडी थी। उसने चारो धानों को मुँह मे चबा लिया और सोचा जब सेठ जी धान मागेगे तो मै उन्हे घर मे से धान निकाल कर दे दूँगी। सरला बडी बेपरवाह स्त्री थी उसने चारो धानो को मजाक समझ कर सडक पर फेक दिया और सोचा कि जब सेठ जी धान मागेगे तो बाजार से खरीद कर दे दूँगी। कमला कुछ समझदार थी, उसने चारो धानो को सभाल कर डब्बी में बांध कर रख दिया। परन्तु लक्ष्मी बडी सुघड बहू थी। वह बडी बुद्धिमान थी। उसने चारो धानों को पीहर भेज दिया, और अपने भाई से कहला भेजा कि इन्हे खेती के मौसम मे उगा देना, जब पककर तैयार हो जाये तो इन्हें साफ करके बोरियो मे भर देना। दैवयोग से उस वर्ष धानो की अच्छी फसल हुई, और चार धानो से चार मन धान पैदा हो गये।

इस तरह करते-करते एक वर्ष बीत गया। सेठ ने चारो बहुओ को बुलाया और उनसे अपने धान मागे। विमला और सरला ने घर से तथा बाजार से चार-चार धान लाकर सेठ को दिये। सेठ उन्हे देखते ही ताड गया कि दाल मे कुछ काला है और उन्हे सच-सच कहने को कहा। दोनो ने सच्ची-सच्ची बात कह दी। उस वक्त तो सेठ कुछ नहीं बोला जिससे वे अपने मन मे बडी लज्जित हुई। जब कमला से धान मागे गये तो उसने धानो की डब्बी लाकर सेठ के सामने रख दी। अन्त मे जब लक्ष्मी की बारी आई तो उसने कहा-चार धान बढ करके चार मन धान हो गये हैं। इतना भारी बोझ मैं उठाने मे असमर्थ हू इसलिए कृपा करके मेरे पीहर गाडी भेज कर मगवा ले।

लक्ष्मी की इस बुद्धिमत्ता से सेठ बडा प्रसन्न हुआ। उसने कहा, तुममे से विमला और सरला मूर्ख हैं जो स्वाद की चटोकड और बेपरवाह हैं इसलिए अगर इन्हें घर सौंपा जायेगा तो ये घर को शीघ्र ही बरबाद कर देंगी। कमला कुछ समझदार है जो घर को सभाल कर रख सकती है परन्तु लक्ष्मी सबसे बुद्धिमान है जो घर मे वृद्धि करके रख सकती है। अत घर का सारा कार्य इसे ही सौंपना चाहिए।

उस दिन से ही सेठ ने घर की मालकिन लक्ष्मी को बना दिया, धन दौलत की सारी चाबियाँ उसे सौंप दीं। कमला को दीवान की तरह उसके नीचे नियुक्त किया और विमला तथा सरला को नौकरानी की तरह नियुक्त किया गया। विमला और सरला को अपनी बेवकूफी पर बडा पश्चाताप हुआ। अब लक्ष्मी घर की रानी बनकर बडे मौज से रहने लगी।
'वीरपुत्र' मासिक अजमेर,
वर्ष ३ अंक ४, जून १९४४

(७) दुनिया में सबसे लम्बा पुल - दुनिया मे सबसे लम्बा पुल इंग्लैण्ड की फोर्थ नदी मे है। उसको ४००० आदमियों ने ७ वर्ष तक नित्य काम करके बनाया था। उसमें ४,५०,००० जुज है।

(८) युगोस्लेविया में एक सात मन वजन का आदमी है।

(९) लन्दन के अजायबघर के पुस्तकालय में ३०,००,००० पुस्तकें हैं। यदि वे एक कतार मे जमीन पर बिछाई जायँ तो उनकी लम्बाई ३५ मील हो जायगी।

(१०) दुनिया में सबसे बडा घण्टा - संसार के सबसे बड़े घण्टे का नाम 'स्टार कोलकोल' है। वह घण्टा मास्को मे है। उसका वजन २०० टन है।

(११) १६२ वर्ष का हृष्ट-पुष्ट एक आदमी है जो मंचूरिया (चीन) मे है।

(१२) दुनिया में सोने की सबसे बडी खान - दुनिया में सोने की सबसे बडी खान टिग्रिस मे है। उसका क्षेत्रफल १०० एकड है। उससे हर साल बीस लाख पौण्ड सोना निकलता है।

(१३) बाइबिल का अनुवाद आज तक ७०० भाषाओं मे हो चुका है।

(१४) पक्षी कितने वर्ष जीते हैं ?- बहुत-से पशु-पक्षी आदमियों से भी अधिक आयु तक जीवित रहते हैं। यह बात सभी पाठक जानते होंगे कि सर्प सरीखे जन्तुओं की आयु १,००० वर्ष तक होती है। परन्तु यहाँ हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए कुछ ऐसे-ऐसे प्रमुख पक्षियों की आयु का हाल बताना चाहते हैं जिन्हें प्राय सभी जानते हैं।

कौआ-१०० वर्ष, हंस-१०० वर्ष, उकाब-१०० वर्ष, बतख-५० वर्ष, तोता-५० वर्ष, गौरैया-४० वर्ष, मोर-२० वर्ष, कबूतर-२० वर्ष, मुर्गी-१० वर्ष।

"बालसखा" प्रयाग
वर्ष २६, अंक १ जनवरी, १९४२

वीर विक्रम

बच्चो तुम जानते होंगे कि आजकल संवत् २०४७ चल रहा है। क्या तुम जानते हो कि इस संवत का चलाने वाला कौन था ? यह संवत् आज से २०४७ वर्ष पहले हमारे भारत के महान् सम्राट विक्रमादित्य ने चलाया था। परन्तु यह विक्रमादित्य कौन था, इसके लिए पहले इतिहासकारों में मतभेद था। किन्तु आजकल सबका मत यह है कि वह गौतमी पुत्र शातकर्णि था जिसने आज से २००० वर्ष पहले उज्जैन जो पुराने जमाने मे अवन्ती नगरी के नाम से प्रसिद्ध था उस पर धावा करके उज्जैन का राजा बना। उन दिनों उज्जैन में शक लोग राज करते थे। गौतमी पुत्र शातकर्णि ने शकों का बिल्कुल नाश कर दिया और अपनी इस महान विजय के उपलक्ष मे उसने विक्रमादित्य की पदवी धारण की और अब विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध है। यह घटना ठीक ईसा से ५७ वर्ष पहले घटी थी।

राजा विक्रम बड़ा पराक्रमी था। उसकी वीरता की कथायें तुमने अवश्य नानी या दादी से सुनी होंगी। इसके चेहरे पर तेज टपकता था। यह बड़ा दानी था। इसकी माँ गौतमी बड़ी दानशील थी। कवि कालिदास का नाम भी तुमने अवश्य सुना होगा, यह भी राजा विक्रम के दरबार के नवरत्नों मे से एक था। इसके राजकाल में भारत ने बड़ी उन्नति की। भारतवर्ष बहुत धनी था। दूध दही की नदियाँ बहती थीं। इसीलिए तो विदेशी लोग भारत को सोने की चिड़िया कहते है और भारत के लिए राजा विक्रम का राज्य रामराज्य के समान था। इसी प्रकार विक्रम का पुत्र भी बहुत प्रतापी

श्री हजारीमल बाँठिया-रचित साहित्य –

पुरातत्वाचार्य, पद्मश्री
स्व0 मुनि श्री जिनविजय जी

हाथी को कैसे तोला जा सकता है

पुराने जमाने की बात है। बसंतपुर के राजा को एक बुद्धिमान दीवान की जरूरत पड़ी। आजकल की तरह पुराने जमाने में बी० ए० या बॅार- एटला पढ़े लिखो को दीवान नहीं बनाया जाता था उस वक्त तो बुद्धिमान पुरुष को ही दीवान बनाया जाता था। चाहे वह पढ़ालिखा कुछ भी न हो। राजा ने अपने प्रजाजनों की परीक्षा लेने के लिये शहर के चौरस्ते पर एक हाथी बाँध दिया और उसपर यह सूचना लिख दी कि जो इस हाथी का वजन कर देगा उसे शहर का दीवान बनाया जायेगा।

इस विचित्र सूचना को पढ़कर शहर के सारे लोग कुछ अचम्भे में पड़ गये। सबने कहा हाथी को कैसे तोला जा सकता है ? क्योंकि इतनी बड़ी तराजू तो होती नहीं जिसमें बिठाकर हाथी को तोल लिया जाये। अन्त मे एक बुद्धिमान पुरुष ने हाथी को तोलना स्वीकार किया।

उसने हाथी को तालाब मे खड़ी हुई नाव पर चढाया, और हाथी के वजन से नाव जहाँ तक पानी मे डूबी थी वहाँ तक एक रेखा खींच दी। फिर हाथी को नाव से निकाल कर उसमे इतने पत्थर रखे कि नाव रेखा तक पानी मे डूब जाये। इसके बाद उन पत्थरों को अलग-अलग तोल लिया गया। उन सबका वजन जोड़कर बुद्धिमान पुरुष ने राजा को हाथी का वजन बता दिया। राजा उसकी इस बुद्धिमानी पर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे अपना प्रधानमंत्री बना लिया।

"वीर-पुत्र" मासिक, अजमेर
वर्ष ३, अंक ४, जून १९४४

****

पहेलियाँ

(१)
एक सींग की गाय।
खिलावे उतना खाय।। (उत्तर - चाकी)

(२)
छोटो सो जगनदास।
कपड़ा पहरे सौ पचास।। (उत्तर - लहसुन)

●●●

पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री
स्व0 मुनि श्री जिनविजय जी

इस गाधी–युग में चक्रवर्ती नाम लेने से चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के नाम का बोध हो जाता है। इसी युग मे एक और चक्रवर्ती हुए हैं – जिनको मुनि जिनविजय कहते हैं। दोनो की आकृति में इतना साम्य था कि अनजाने लोगो को इन दोनों को पहचानना मुश्किल हो जाता था। दोनो के पहनने का ढग भी एक जैसा ही था –धोती, कुर्ता, गले में दुपट्टा और आंखो पर काला चश्मा, हाथ मे छडी – फर्क बस इतना ही था – राजगोपालाचार्य जी कद के ठिगने थे और मुनिजी लम्बे। राजगोपालाचार्य जी राजनीति के चक्रवर्ती थे तो मुनि जी पुरातन–ज्ञान और पुरातत्व के। दोनों ही महात्मा गाधी जी के आत्मीय जन थे। मुनिजी सक्रिय राजनीति मे आना चाहते थे किन्तु बापू ने उनको आज्ञा नहीं दी और उन्हें गुजरात विद्यापीठ की स्थापना एव संचालन मे लगा दिया। भारतीय विद्या भवन, बम्बई जैसी सस्था मे मुनिजी सस्थापक सदस्य एव प्रथम मानद निदेशक थे। *कन्हैया लाल माणिक लाल मुशी मुनिजी के अभिन्न मित्र एव सहयोगी थे। भारतीय विद्या भवन के नवीन भव्य भवन* का उद्घाटन करने चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी (जब वे भारत के गवर्नर जनरल थे), पधारे तब मुनिजी एवं राजगोपालाचार्य जी का वहाँ मिलन हो गया। फोटोग्राफर्स धडाधड फोटो खींच रहे थे – तो एक फोटो पर राजगोपालाचार्यजी ने स्वयं अपने हाथ से लिख दिया who is me and who is Muniji– (कौन सा मैं हूँ और कौन से मुनि जी)।

मुनि जिनविजय जी का जन्म राजस्थान मे मेवाड राज्य के भीलवाडा जिले के रूपाहेली गांव मे परमार राजपूत परिवार में २७ जनवरी सन् १८८८ को हुआ था और अन्तिम दाह संस्कार चित्तौड जिले के चदेरिया नामक स्थान में ४ जून १९७६ को हुआ। इस क्षत्रिय वीर ने साधारण कृषक परिवार मे जन्म लिया था किन्तु अपने कृतित्व से सम्पूर्ण भारत को जगमगा दिया था और समुद्र पार हिटलर के समय के जर्मनी को भी भारत–भारतीयता की पताका से अलंकृत किया।

मुनिजी के पिता का नाम बिरदी सिह और माता कानाम राजकंवर था। इनका बचपन का नाम किशनसिंह था किन्तु मां इनको "रणमल" के नाम से पुकारती थी। ज्ञान पिपासु किशन सिह को मुनि जिनविजय नाम प्राप्त करने में २२ वर्ष लग गये। ११ वर्ष की आयु में पिताश्री का देहान्त हो गया और ये निराश्रित हो गये किन्तु जैन यति देवहंस जी का सहारा लेकर ज्ञान–गंगा में गोता लगाना प्रारम्भ ही किया था कि यति जी का स्वर्गवास हो जाने से वह सहारा भी छूट गया। ज्ञान–पिपासा दिनों–दिन बढती गयी, वे अघोरी साधु बने। स्थानकवासी जैन मुनि १५ वर्ष की अवस्था में बने। यहां भी ज्ञान–तृष्णा संतुष्ट नहीं हुई तो अन्त में २२ वर्ष की उम्र मे मूर्तिपूजक जैन श्वेताम्बर मुनि बने और वि०स० १९६६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ को मुनि जिनविजय के नाम से सम्बोधित होने लगे। यहाँ इनको पढने और ज्ञान अर्जित करने का भरपूर अवसर मिला और हिन्दी की सरस्वती और गुजराती की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में शोधपूर्ण लेख लिखने लगे और कई ग्रन्थो का सम्पादन किया। इन लेखो तथा अपने सम्पादित ग्रंथों के कारण मुनिजी न केवल गुजराती साहित्याकाश में बल्कि हिन्दी जगत में भी चमकने लगे।

अनुक्रम

संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, बंगला, लेटिन, जर्मन, फ्रेंच तथा अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता, भारतीय पुरातत्व के प्रकांड पंडित तथा विशेष रूप से राजस्थान एवं गुजरात के प्राचीन पुरातात्विक साहित्य के सम्पादक, प्रकाशक, लेखक एवं उद्धार-कर्ता स्व० मुनि जिनविजयजी से श्री अगरचन्द नाहटा के माध्यम से श्री हजारीमल बाँठिया का परिचय हुआ था। श्री बाँठियाजी ने मुनिश्री से प्रभावित होकर उनसे सम्बन्धित जिस साहित्य की रचना की थी, उसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है। इसी के साथ मुनिजी के श्री नाहटाजी को लिखे गये कुछ महत्वपूर्ण पत्रों को भी यहां दिया जा रहा है। आशा है, मुनिश्री से सम्बन्धित यह सामग्री पुरातत्व-प्रेमियों तथा प्राचीन साहित्य के उद्धारकों को आदर देने वाले महानुभावों के लिये उपादेय सिद्ध होगी।

जैसलमेर गये। वहाँ काफी समय तक ठहरकर जैन ज्ञान भंडारो का अवलोकन किया और लगभग २५० ग्रन्थो की प्रतिलिपियाँ तैयार करायीं।

इतना होते हुए भी मुनिजी को राजस्थान का बराबर आकर्षण एव प्रेम बना रहा। सन् १९४६ मे राजस्थान सरकार ने संस्कृत मंडल की स्थापना की, उसमे मुनिजी को भी आमन्त्रित किया और मुनिजी की प्रेरणा से ही राजस्थान सरकार ने राजस्थान पुरातत्व मन्दिर की जयपुर मे सन् १९५० मे स्थापना की जिसे आजकल "राजस्थान प्राच्य-विद्या शोध प्रतिष्ठान" कहते है। जोधपुर मे इसका मुख्य कार्यालय है और कई शाखाये है। मुनि जी इसके १७ वर्ष तक संस्थापक-संचालक रहे। इस अवधि में महत्वपूर्ण ग्रन्थो के संकलन, संपादन और प्रकाशन का जितना कार्य इस संस्थान की ओर से हुआ उतना स्वतंत्रता के बाद किसी और संस्था से नहीं हो पाया है। सरदार वल्लभ भाई पटेल "आबू" पर्यटन स्थल को गुजरात मे मिलाना चाहते थे किन्तु मुनि जी एव श्री नाहटाजी (अगरचन्द) के तर्कसंगत इतिहास और पुरातत्व के प्रमाणो ने ऐसा नहीं होने दिया और "आबू" राजस्थान का ही भाग रहा।

सन् १९४१ के अप्रैल मास के अन्तिम सप्ताह मे मुनिजी साहित्य वाचस्पति श्री अगरचन्दजी नाहटा के आग्रह पूर्वक निमंत्रण पर बीकानेर पधारे। पाच दिन का प्रवास रहा। उन दिनो मै हाईस्कूल का विद्यार्थी था। वहा मुनिजी का सान्निध्य और सेवा करने का अवसर मुझे मिला, उनका प्राचीन साहित्य के महत्व पर भाषण भी हुआ। जैन जिज्ञासुओं के उत्तर में उन्होने बताया कि अब मेरा "मुनि जीवन" नहीं हैं – फिर भी नाम के आगे मुनि इसलिए लिखता हूँ कि "मुनि" शब्द मौन से बना है। – मुझे मौन प्रिय है। इसी नाम से साहित्य जगत् मे प्रसिद्ध हो गया इसलिए नाम के आगे मुनि शब्द अभी तक जोडे हुए हूँ।

सन् १९५२ मे मुनि जिनविजय जी को जर्मनी की विश्व-विख्यात ओरियंटल सोसायटी ने अपना सम्मानित सदस्य चुना। अत्यन्त अल्प भारतीयो को यह सम्मान प्राप्त हुआ है। सन् १९६१ मे मुनिजी को भारत सरकार द्वारा "पद्मश्री" की उपाधि से अंलकृत किया गया। मुनिजी ने भारतीय विद्या ओर पुरातत्त्व का सामान्यत और राजस्थान के पुरातत्व तथा जैन विद्या की प्राचीन सामग्री के अध्ययन, शोध और प्रकाशन का जो विशाल, मौलिक और ऐतिहासिक कार्य किया है, वह सर्वदा ही सम्माननीय और अनुकरणीय रहेगा। युग-युगो तक मुनिजी को इसके लिए याद किया जाता रहेगा।

अन्तिम वर्षों में मुनिजी ने अपनी जन्मभूमि मेवाड को अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। चित्तौड में आचार्य हरिभद्रसूरि स्मारक मन्दिर और भामाशाह भारती भवन बनाया। आचार्य हरिभद्रसूरि की विशाल मूर्ति मे ही आचार्य श्री के चरणो में अपनी लघु प्रतिकृति (मूर्ति) बनवायी। चन्देरिया मे सर्वोदय आश्रम की स्थापना कर उसे आचार्य विनोबा भावे को भेट कर दिया। चन्देरिया मे ही सर्वदेवायतन मंदिर बनाया जिसमे सभी धर्मो के देवी-देवताओ की मूर्तियो को प्रतिष्ठापित किया। महात्मा गांधी और नेहरू जी की मूर्तियाँ भी बनवायीं। इसी प्रकार अनवरत साहित्य और समाज की सेवा करते मुनिजी का ३ जून १९७६ को ८८ वर्ष की आयु मे अहमदाबाद मे स्वर्गवास हो गया। अन्त्येष्टि के लिए आपका शव चन्देरिया (भीलवाडा) लाया गया एवं सर्वोदय आश्रम में ही आपका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। यहीं पर आपकी मूर्ति भी भक्तो द्वारा लगा दी गयी है। इस पुरातन विद्या प्रेमी चक्रवर्ती की संक्षिप्त मे यही राम कहानी है। मुनिजी ने स्वयं भी अधूरी आत्मकथा लिखी है। सन् १९७१ मे मुनिजी को "भारतीय पुरातत्व" नाम से अभिनन्दन-ग्रन्थ भी भेट किया गया था जिसके सम्पादक मण्डल मे श्री वासुदेव शरण अग्रवाल श्री अगरचन्द नाहटा, डा० दशरथ शर्मा आदि थे। ग्रन्थ प्रकाशन के संयोजक थे श्री पूर्णचन्द्र जैन, जयपुर। मुनि जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

"श्रमण" मासिक, वाराणसी
वर्ष ३९ अंक १२
अक्टूबर, १९८८

xxxxxx

मुनिजी पद यात्रा व चातुर्मास के स्थिर वास में अनेक विद्वान् और राजनेताओं के सम्पर्क में आये। मध्यप्रदेश में एक मस्जिद से राजा भोज के दो शिलालेख मिले, मुनिजी ने उनको पढ़कर सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता श्रीधर रामकृष्ण भंडारकर की सराहना अर्जित की। पूना के "भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान" की स्थापना के बाद ही सन् १९१६–१७ में मुनि जी पूना आ गये और लोकमान्य तिलक के निवास के पास ही ठहरे। यहीं मुनिजी की १९१९ में महात्मा गांधी से भेंट हुई और यहीं क्रांतिकारी अर्जुन लाल सेठी, हिन्दी प्रेमी श्री नाथूराम प्रेमी से भी साक्षात्कार हुआ। मुनिजी का ज्ञान विस्तार जैसे–जैसे होता गया वे अपने को अधिकाधिक उन्मुक्त अनुभव करने लगे, यद्यपि उनका अध्ययन मुख्यतः जैन मुनियों के निर्देशन में हुआ था। पूना में ही मुनिजी ने जैन इतिहास संशोधक समिति बनायी और "जैन साहित्य संशोधक" (त्रैमासिक) शोध–पत्रिका और ग्रन्थ–माला का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। मुनिजी के पुरातत्व प्रेम और देश भक्ति की लहर ने उनको जैन मुनि जीवन से नाता तोड़ने के लिए मजबूर कर दिया और महात्मा गांधी के आग्रह से मुनिजी ने अहमदाबाद में सन् १९२० में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की और वहीं वे ८ वर्ष तक रहे।

मुनिजी के अहमदाबाद प्रवास में भारतीय विद्या के कुछ जर्मन विद्वानों से सम्पर्क हुआ और वे उन्हें जर्मनी आने का निमंत्रण दे गये। इसे स्वीकार कर मुनिजी गांधीजी की सम्मति से १९२८ में जर्मनी चले गये और वहाँ डेढ़ वर्ष रहे। जर्मनी में मुनिजी ने बोन, हैम्बर्ग और लाइपिज़िग विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या के विद्वानों से गंभीर विचार – विमर्श किया एवं घनिष्ठ परिचय प्राप्त किया। बर्लिन में मुनिजी ने भारत–जर्मन मित्रता बढ़ाने और दृढ़ करने की दृष्टि से एक राष्ट्रीय भावना–युक्त मुस्लिम मित्र की सहायता से "हिन्दुस्तान–हाउस" के नाम से एक संस्थान की स्थापना की जिसका उद्घाटन २४ अगस्त १९२८ को वाराणसी के "आज" के संस्थापक बाबू शिवप्रसाद गुप्त से कराया। यह भारत से जर्मनी जाने वालों के ठहरने और विचार–विनिमय का केन्द्र बन गया और यहाँ शुद्ध शाकाहारी भोजनालय खोल दिया गया। द्वितीय महायुद्ध में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भी कुछ समय यहाँ ठहरे थे।

मुनिजी दिसम्बर १९२९ में भारत लौटे और लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए जिसमें पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव प० जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में स्वीकार हुआ। गांधीजी के डांडी–कूच में शामिल होने के लिए मुनिजी अहमदाबाद जा रहे थे। रास्ते में छोटे से स्टेशन पर ही इनको पकड़ कर वहीं छह मास के कठोर कारावास की सजा सुना दी गयी और नासिक जेल भेज दिया गया। वहां सेठ जमनालाल बजाज, श्री नरीमान, डा० चोकसी, श्री मुकुन्द मालवीय आदि भी साथ थे। यहीं पर मुनिजी का परिचय श्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी से हुआ जो धीरे–धीरे उत्कृष्ट सौहार्द्र में विकसित होता गया। सन् १९३० के अक्टूबर में जेल से छोड़ दिये गये। नासिक जेल में सेठ जमनालाल बजाज और श्री क०मा० मुंशी जी ने मुनि जी को साहित्य–सेवा में लगने की प्रेरणा दी।

इसी प्रेरणावश कलकत्ते के कला–प्रेमी एवं साहित्यानुरागी सेठ श्री बहादुर सिंह जी सिंघी के निमंत्रण पर मुनिजी कलकत्ता चले गये और वहाँ से सन् १९३० के दिसम्बर मास में सिंघी जी से आर्थिक सहयोग का आश्वासन पाकर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास शान्ति निकेतन चले गये और वहीं पर सिंघी जैन ज्ञानपीठ और सिंघी जैन ग्रन्थमाला की स्थापना कर प्रथम ग्रन्थ "प्रबन्धचिन्तामणि" का प्रकाशन किया। मुनिजी तीन वर्ष शांति निकेतन में रहे, फिर जलवायु अनुकूल न होने से अहमदाबाद वापिस आ गये और वहीं से सिंघी जैन ग्रन्थ माला के ग्रन्थ सम्पादित कर प्रकाशित करने लगे। इन ग्रन्थों का शोध जगत् में इतना आदर हुआ कि मुनिजी की विद्वता और सम्पादन कला की देश में धाक जम गयी।

थोड़े समय के बाद ही श्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी का आग्रह पूर्ण निमंत्रण पाकर भारतीय विद्याभवन की स्थापना में सहयोगी बने और वहाँ के प्रथम मानद निदेशक बने। भारतीय विद्या भवन से ही सिंघी जैन ग्रन्थ माला के ग्रन्थ प्रकाशित होने लगे और लगभग पचास से अधिक जैन साहित्य और इतिहास के ग्रन्थों का सम्पादन कर या दूसरों से करवाकर प्रकाशित किया। सन् १९४२ में मुनिजी जैनाचार्य श्री जिन हरिसागर सूरिजी के आग्रह पर

भाषण समाप्ति के पश्चात् आप ११.३० बजे दीवान साहब के यहां भोजनार्थ पधारे और दोपहर में बीकानेर के कतिपय विद्वानो एवं नागरिको से मुलाकात लेते हुए शाम को अहमदाबाद की गाडी मे रवाना हुए। बीकानेर के विद्वानो एवं श्री संघ का २-४ दिन और ठहरने का विशेष आग्रह था परसिंधी ग्रन्थ माला आदि के आवश्यक कार्य वश आप ठहर न सके और कभी आने का आश्वासन देते हुए मुनि श्री जिन विजयजी विदा हुए।

जैन ध्वज, अजमेर
१५ मई, १६४१

प्राचीन साहित्य के महत्त्व और संरक्षण पर :
आचार्य श्री जिनविजय का भाषण

(बीकानेर मे गत ता० २८ अप्रैल सन् १६४१ को आचार्य श्री जिनविजयजी ने, 'प्राचीन साहित्य का महत्व और संरक्षण' विषय परजो जोरदार भाषण दिया है उसका सार श्री हजारीमल जी बांठिया ने 'अनेकान्त' के पाठकों के लिए भेजा है, उसे नीचे दिया जाता है। इससे कई बाते प्रकाश मे आती हैं और कितना ही शिक्षाप्रद पाठ मिला है। आशा है अनेकान्त के पाठक इसे गौर से पढकर जैन साहित्य के उद्धार एव सरक्षण के विषय में अपने कर्तव्य को समझेंगे और उसे शीघ्र ही स्थिर करके दृढता के साथ कार्य मे परिणत करेंगे। दिगम्बर समाज को इस ओर और भी अधिकता के साथ ध्यान देने की जरूरत है, वह इस विषय मे श्वेताम्बर समाज से बहुत ही पीछे हैं।)

—सम्पादक 'अनेकान्त'

भाषण के प्रारम्भ में ही आपने अपने नाम का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि – 'मुझे सब लोग मुनि श्रीजिनविजयजी कहते हैं, पर मैं अब इस नाम का अधिकारी नहीं हूँ। क्योकि न तो मैं साधुओ का क्रिया काण्ड ही पालता हू और न उनके वेष को ही धारण किये हुए हूँ। फिर भी मेरा नाम सुनकर शायद श्रोतागणो को कुछ आश्चर्य सा होगा।' आगे जाकर आपने अपने नाम का और स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि "मैं तो आप सब लोगों जैसा एक सामान्य स्थिति वाला भाई और सेवक हूं। अत मैं अपने नाम के लिए आप सब लोगो का अपराधी हूँ। साधु अवस्था मे मैने कई ग्रथ बनाये थे, जिससे मेरा नाम सर्वत्र भारत और यूरोप में व्यापक रूप से प्रसिद्ध हो गया। साधु वेष अपने गुरु को भेट करने के पश्चात् भी मेरा वही नाम 'मुनि जिनविजय' प्रसिद्ध बना रहा। सो ठीक ही है – जिस प्रकार कोई कोट्याधिपति मनुष्य हो, उसका नाम सर्वत्र सुप्रसिद्ध हो, अगर उसका दिवाला भी निकल जाय तो भी नाम तो पहले का रहता है – नाम नहीं बदलता है। अन्तर इतना हो जाता है कि वह राजा से रंक हो जाता है। इसी प्रकार मेरा भी मुनि–चरित्र पालने में दिवाला निकल गया है।

बीकानेर में मुनि श्री जिनविजयजी का पदार्पण एवं भाषण

श्री अगरचन्द जी नाहटा के बहुत समय की प्रेरणा एव विज्ञप्ति से ता० २५.४.४१ शुक्रवार को सुबह ६.१५ बजे पुरातत्वाचार्य मुनि श्री जिनविजय जी बीकानेर पधारे। सेठ श्री दानमल जी नाहटा की कोटड़ी मे आपको ठहराया गया। आगमन के दिवस श्री नाहटा जी का मुद्रित एवं हस्तलिखित संग्रहालय व अन्य कलात्मक वस्तुओं को देखा और श्री नाहटाजी की संग्रहालय वृति की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री जिनहर्षसूरि के ७४ फुट लम्बे उदयपुर के चित्रमय विज्ञप्ति पत्र को देखकर आपने अत्यन्त हर्ष प्रकट किया एव उसे प्रकाशित करने की अभिलाषा भी प्रकट की।

ता० २३ अप्रैल के सुबह मुनिजी ने श्री भाँडासरजी मंदिरों के दर्शन कर इनके दर्शन से मेरी बीकानेर यात्रा सफल हुई' ऐसे भाव व्यक्त किये। दोपहर में श्री नाहटा जी व प्रो. नरोत्तमदासजी स्वामीजी के साथ अनूप स्टेट लाइब्रेरी, जिसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण ११ हजार से भी अधिक हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह है, म्यूजियम, किंग पार्क जार्ज सिल्वर जुबिली लाइब्रेरी, कचहरी आदि का अवलोकन किया। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी के संग्रह की आपने बहुत प्रशंसा की और उसके पुस्तकाध्यक्ष बीकानेर के सुकवि श्री हारितजी से मिल कर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की।

ता० २७ के सुबह १० बजे सर सिरेमल जी बाफणा प्राइम मिनिस्टर बीकानेर से मुलाकात की। उन्होंने मुनि श्री से मिलकर बहुत ही आनन्द प्रगट किया क्योंकि आपकी कई वर्षों से मुनि श्री से मिलने की अतीव उत्कण्ठा थी। इंदौर मे रहते कई बार आपने पत्र एवं अपने प्रमुख व्यक्ति को भेज निमंत्रित किया था पर मुनि श्री साहित्यिक कार्यों मे व्यस्त रहने के कारण वहाँ नहीं पधार सके। मुनि श्री का सर बाफणा से राजनैतिक, साहित्यिक, सामाजिक सभी विषयों पर पूरे एक घंटा वार्तालाप हुआ। तदुपरान्त प्राइममिनिस्टर साहब ने आपको दूसरे दिन अपने यहाँ भोजन के लिए आमंत्रण दिया। दोपहर के समय बड़े उपाश्रय के खरतरगच्छीय वृहत् ज्ञान भंडार का मुनिजी ने अवलोकन किया और वहाँ १०८ फीट लम्बे सुन्दर चित्रित विज्ञप्ति-पत्र को देख, अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की। इसके बाद आप अपने पूर्व गुरुभाई जैनाचार्य श्री विजयलब्धि सूरिजी से मिले। पूज्य आचार्यश्री को अपने पूर्व गुरु-भाई से मिलकर बहुत खुशी हुई। तदपुरान्त स्थानकवासी पूज्य श्री जवाहरमल जी और युवराज श्री गणेशलाल जी महाराज से मिले और सेठिया जैन ग्रन्थालय का अवलोकन किया।

उसी दिन रात को आपके नेतृत्व में स्थानीय सज्जनालय भवन मे बीकानेर के प्रमुख विद्वानों की सभा हुई और करीब दो घंटे तक विद्वत गोष्ठी चलती रही। विद्वानों में प्रो० विद्याधर जी शास्त्री, एम.ए. और डा० श्रीआसोपा मुख्य थे। स्थानीय कवियो ने अपनी कवितायें भी मुनि श्री को पढ़ सुनाई। यहाँ पर आपने सभी सज्जनो से मिल अपनी खुशी जाहिर की।

ता० २८.४.४१ के सुबह चाय-पान करने के पश्चात् ७.३० बजे स्थानीय श्रीमे पूर्ण स्तन मातृ कल्याण चिकित्सालय का निरीक्षण किया और अपनी शुभ सम्मति उन्हें प्रदान की। इसके बाद सेठ श्री दानमलजी नाहटा की कोटड़ी मे "प्राचीन साहित्यका महत्व और संरक्षण" के विषय मे आपका अत्यन्त प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण भाषण हुआ, जनता की उपस्थिति काफी थी। आपके भाषण से प्रभावित हो बीकानेर जैन श्री संघ ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। आपका भाषण पूरे १.३० घंटे तक धारा-प्रवाही रूप से ओजस्विनी वाणी में हुआ जिसमें अनेक महत्वपूर्ण विषयों की आपने चर्चा की। पर वह भाषण बहुत विस्तृत होने से उसका आवश्यक सार किसी अन्य मासिक पत्र मे प्रकाशित किया जायगा। बीकानेर के जैन संघ का भाषण सुनकर बहुत ही उत्साह बढ़ा और शीघ्र ही ज्ञान-भंडारों की सुव्यवस्था करने के लिए विचार किया जा रहा है।

का कहना है कि उन्होने छह महीने लगातार छह घंटे प्रतिदिन की रफ्तार से कार्य कर वृहद् खरतरगच्छीय ज्ञान भंडार की अकेले ही सूची तैयार की है। अत मैं उनके उद्योग की तारीफ करता हूं। हमारे समाज में इस तरह के अध्यवसायी युवक होने चाहिए, जिससे हमारे नष्ट प्राय होते हुए साहित्य का उद्धार हो सके।

महात्मा गांधी जी का आदर्श ऊँचा है, उन्होने राष्ट्रीय विद्यापीठो द्वारा हमारी शिक्षा को शुद्ध, सात्विक एवं प्रगतिशील बनाने का आन्दोलन किया। महात्मा जी के कार्यों को देखकर मेरे जी मे भी देश प्रेम जागृत हुआ और सोचा इस मुनिवेष में तो ऐसा होना असंभव है। अत मैंने यह साधुवेष अपने गुरुजी को सौंप खद्दर का चोला धारण किया। महात्माजी से मेरी अहमदाबाद में मुलाकात हुई। मैंने भी इस आन्दोलन में महात्माजी को सहयोग दिया। अत मुझे महात्माजी ने गुजरात पुरातत्व मदिर मे आचार्य के रूप में नियुक्त किया।

इसके बाद मुझे जर्मनी जाना पडा। मैं वहा करीब दो वर्ष तक रहा। वहा के सभी पुस्तकालयो मे हस्तलिखित ग्रन्थों की सुव्यवस्था देख मुझे अत्यन्त खुशी हुई। जर्मनी मे बडे–बडे विद्वानो से मेरी मुलाकात हुई। जर्मनी को जैन साहित्य से अत्यन्त प्रेम है। वे भारतीय सस्कृति के अत्यन्त प्रेमी हैं। उन्होने भारतीय संस्कृति के लिए बहुत कार्य किया है। हमारे ऊपर राज्य करने वाली सरकार ने इस देश के साहित्य के लिए उनके मुकाबले तिल मात्र भी कार्य नहीं किया है।

जर्मनी से वापिस आने के बाद मेरी फिर महात्मा जी से मुलाकात हुई। लाहौर कांग्रेस के बाद के सत्याग्रह में मै भी शरीक हुआ और मुझे कृष्ण मन्दिर की हवा खानी पडी। जेल से मुक्ति के बाद विद्या प्रेमी बाबू बहादुर सिह जी सिंघी ने शांति निकेतन में सिंघी जैन ज्ञानपीठ की स्थापनाकी और मुझे अध्यापक नियुक्त किया। वहा जैन विद्यार्थी कम थे, अत मैंने यह कार्य स्थगित करने के लिए श्री सिघीजी से कहा और सिंघी जैन ग्रन्थ माला की स्थापनाके लिए प्रेरणा की। श्री सिंघीजी की यह ग्रन्थमाला अभी जोरो से चल रही है, जिससे अनेको महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थो का प्रकाशन हो चुका है।

हम अपने पूर्वजों की वस्तु के लिए बहुत लापरवाह हो रहे हैं। सो ठीक नहीं। हमारे पूर्वजो की वस्तु हमारे लिए अत्यन्त आदरणीय है। जर्मनो को देखिये, उनको अपने पूर्वजो की वस्तु कितनी प्यारी है। इसका एक उदाहरण देता हूँ। बर्लिन के मुखद्वार पर एक सूर्य की मूर्ति है, उसके वाहन स्वरूप सात घोडे हैं। मैंने उसके अनेक बार दर्शन किये। वह प्राचीन होते हुए भी इतनी सुन्दर है कि नई मालूम देती है। कारीगरी की दृष्टि से भी बडी विचित्र है। उस मूर्ति की नकल करने के लिए बड़े–बडे वैज्ञानिक कारीगरों ने प्रयत्न किया पर उसकी नकल न कर सके। अत आप समझ सकते हैं कि वह कितनी मूल्यवान होगी। जर्मन वाले उसे ससार का एक आश्चर्य समझते हैं। नेपोलियन बोनापार्ट ने जर्मन और फ्रांस के युद्ध में उस मूर्ति को पेरिस लाकर रखा था।

कुछ वर्षों बाद जर्मनों ने मूर्ति को वापिस लाने के लिए युद्ध द्वारा फ्रांस वालों को पराजित कर उसे फिर सन् १७७१ में बर्लिन के मुख द्वार पर लगाया। इस मूर्ति के लिए लडाई मे लाखों मनुष्यों का सहार हुआ। पर उन्होनअपने पूर्वजों की प्राचीन वस्तुओं को प्राप्त करने मे अपने आपको कुरबान कर दिया। महायुद्ध के बाद जर्मनी अमेरिका का कर्जदार हो गया। ऋण इतना था कि अगर जर्मनी करोडो पौंड प्रति वर्ष देता रहे तो भी उसे उऋण होने मे १५० वर्ष के करीब लग जाए। अमेरिका ने जर्मनों से कहा – अगर तुम हमे वह सूर्य की मूर्ति दे दो तो हम तुम्हें इतने बडे कर्ज से मुक्तकर सकते हैं। पर स्वाधीनता प्रेमी जर्मनो ने जोर से उत्तर दिया – जब तक हम आठ करोड़ जर्मनो में से एक भी इस ससार मे जिन्दा है, तब तक उस मूर्ति को कोई नहीं ले सकता। देखिये, उनके हृदयों में अपनी प्राचीन वस्तु के लिए कितने उच्च भाव भरे हैं।

हम लोग अपने साहित्य के लिए जरा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। उसके उद्धार के लिए कौडी भी खर्चने को तैयार नहीं। उन पाश्चात्य विद्या–प्रेमियो को देखिये, जिन्होंने हमारे एक–एक ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिए हजारों

आपने कहा कि "मैंने मुनि–अवस्था में जैन के सभी सूत्रो का यथामति अध्ययन किया। अपने पूर्वजों की अनुपम अमूल्य निधि नष्ट होते देख मेरे मन मे उसे प्रकाशित करने की इच्छा हुई, जिससे उन ग्रन्थों का उद्धार हो जाय और उनकी रचित साहित्य सामग्री विद्वानों के सामने अपना आदर्श रखे तथा उन पूर्वाचार्यों की चिरस्मृति हो जाय। हमारे पूर्वज श्री जिनवल्लभसूरि, श्री जिनदत्तसूरि, श्री आत्मारामजी महाराज आदि कितने असाधारण विद्वान हो गये, उसका हम अनुमान भी नहीं लगा सकते। उनकी विद्वत्प्रतिभा का पता हमें उनकी रचित साहित्य सामग्री से ही हो सकता है। अत हमारा साहित्य हमारे लिए अत्यन्त महत्व की संरक्षणीय एव गौरवशाली वस्तु है।' आपने आगे कहा कि 'अपने पूर्वजो की चिरस्मृति को सादर कायम रखने का अंकुर मेरे मन में उत्पन्न हुआ, तभी से मैं साहित्य सेवा में अग्रसर हुआ। मैंने पाँच वर्ष तक पाटण मे लगातार चार्तुमास कर वहां के ज्ञानभंडारों का वैज्ञानिक रीति से अच्छी तरह से अवलोकन किया, तथा बडे परिश्रम से उसकी सूची तैयार की।

बडौदा नरेश श्रीसयाजीराव गायकवाड वड़े विद्यानुरागी महाराज थे। उन्हे साहित्य–प्रकाशन का अत्यन्त शौक था। श्री त्रिवेणी महोदय ने उनसे महत्वपूर्ण साहित्य–प्रकाशन के लिए विज्ञप्ति की। अत वे ज्ञानभंडारों के अवलोकनार्थ पाटण पधारे। उसी समय मैं भी वहीं था और मेरी उनसे मुलाकात हुई। तत्पश्चात् विद्यानुरागी महाराज जी ने साहित्य प्रकाशन के लिए बडौदा में एक ग्रन्थ माला स्थापित की। उस कार्य के लिए मेरे परम मित्र श्री चिमनलाल भाई दलाल नियुक्त किये गये। उनकी प्रेरणा से महाराज ने मुझे अपने यहा भाषण देने के निमित्त बुलवाया और मैंने वहां कई साहित्य-सम्बन्धी महत्व के भाषण दिये।

इस समय हमारे ऊपर अग्रेजी सरकार राज्य कर रही है। उसने भारत की प्राय सभी अमूल्य निधियो व जवाहरात सोना, चांदी वगैरह को अपने देश मे भिजवा दिया है। जो कुछ साहित्य धन बाकी रहा, उसे भी वहाँ भिजवाने का जब निश्चय किया तब कतिपय भारतीय विद्वानों ने उसका विरोध किया, मैं भी इसकी सूचना मिलने पर बम्बई से पूना आया और सबके प्रयत्न से गवर्नमेंट ने यह अपूर्व संग्रह यहीं रखने की आज्ञा दे दी। डा भंडारकर का इस संग्रह में बहुत कुछ हाथ था, अत उनके नाम से पूना में 'भंडारकर–प्राच्य–विद्या–मंदिर' की स्थापना हुई और उसमें ही साहित्य सामग्री को रहने दिया गया। इस संग्रह मे लगभग २२ हजार हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह है। उसमें लगभग के ५–६ हजार जैन ग्रन्थ भी हैं। मैंने भंडारकार इन्स्टिटयूट को ५००००) रुपये की सहायता दिलवाई। अब सरकार से भी उसे १२०००) रुपये की सहायता मिलती है। वहाँ ग्रन्थों को रखने की बड़ी सुव्यवस्था है। प्रत्येक विद्वान लिखकर Bond भरकर ५ प्रतिए एक साथ घर बैठे मगा सकता है।

बीकानेर के ज्ञान भडारो को देखकर मुझे वडा हर्ष और आश्चर्य हुआ कि आपके यहां ज्ञान सागर भरा पडा है! ऐसा खजाना राजस्थान मे और कहीं नहीं है पर उन ज्ञान भंडारों की दुर्व्यवस्था देख मुझे बडा दुख हुआ। न तो उन पूर्वाचार्यों द्वारा रचित ग्रन्थों को रखने के अच्छे मकान हैं न उनकी कोई सुव्यवस्था ही है। आप जैसे श्रीमानों के रहते ग्रन्थो की इतनी दुर्दशा क्यों है? ये ग्रन्थ ही तो हमारे इतिहास की सामग्री हैं, और इन ग्रन्थों के आधार पर ही आज हमारा जैन धर्म टिका हुआ है। अगर इनका ठीक प्रबन्ध न किया गया तो ये सब नष्ट हो जायेंगे। बीकानेर में किसी को भी इन ग्रन्थो के उद्धार की चिन्ता नहीं है। मदिरों के बनाने और स्वामिधर्म–वात्सल्य आदि में हम लाखों रुपये खर्च कर देते है पर इस ओर हमारा कुछ भी ध्यान नहीं है। हमें साहित्य के उद्धार के लिए उपेक्षा रखना उचित नहीं है। आप को उसके लिए अच्छा मकान बनाना चाहिए, जिसमें फौलाद की फायरप्रूफ अल्मारियाँ हों, जिनमें ग्रन्थ रखे जायें ताकि वे नष्ट न हो सके।

इस बीकानेर के जैन साहित्य के कार्य क्षेत्र में भाई श्री अगरचन्दजी नाहटा ने अवश्य ही प्रशंसनीय कार्य किया है। उन्होंने यहा के अधिकतर साहित्य को अपने निजी खर्च से खरीद कर उसे बचाया है। कई भंडारों के ग्रन्थो की सूचियें बनायी हैं। आखिर अकेला आदमी क्या कर सकता है ? इसमें संगठन की आवश्यकता है। श्री नाहटा

की है। आप अपने ६ लाख के रुपये गऊओं के निमित्त दे दीजिए – गऊ तो हमारी मां है। बस फिर क्या था भाईश्री का यह बात जचीं और उसी दिन ट्रस्ट की लिखा पढी ३–४ घंटे में करा के ६ लाख का दान कर दिया।

दूसरे दिन हिसाब करके देखा गया तो ६ लाख के अनुमान किये जाने वाले शेयरो की कीमत ८ लाख निकलती है। २ लाख बढ जाते हैं। वह उसे भी दान देने के लिए फिर मुंशी जी से सलाह लेते हैं। मुशी जी ने मुझे बुलाया और सब मामला कहा। आखिर भाई श्री को कहा गया कि ६ लाख गोदान मे लग गये अब दो लाख विद्या दान मे लगा दो। उसने वैसा कर दिया। उसी से बम्बई में अन्धेरी मे भारतीय–विद्या–भवन खडा हो गया।

भाई मुंगेलाल वृद्ध हैं। वह हमारे पास कई बार आता है, परमात्मा के भजन सुनने के लिए हमसे प्रार्थना करता है। हम पाटण जाते समय उसको भी साथ ले गये थे। वापिस आते समय रेल में हमने उस से कहा – इश्वर भजन करा, अब फाटका करना छोड दो। उसने स्वीकार भी किया।

बम्बई आया और सोचा अगर और थोडा फाटका करू तो और धन आ जाय तो मैं और ज्यादा दान द सकूं। सिर्फ इन्हीं शुभ विचारो से उसने मदी मे फाटका किया। वह मंदी का खिलाडी था। भाग्य ने उल्टा मारा, सुबह देखता है १२ लाख का घाटा! अब बिचारा क्या करता!

अभी वह सोचता है कि मैंने जो कुछ चादनी के दिनो मे कर दिया सो कर दिया अब कुछ नहीं होने का। उसके लिए ससार अधकारमय है।

सज्जनो, मुगेलाल भाई का आदर्श आपके सामने है जो उसने सपन्नावस्था में कर दिया, तो उसका नाम अमर हो गया है। इसी प्रकार अगर आप भी अभी दान करे तो समाज का, देश का, साहित्य का कितना भी उद्धार हो सकता है।

मुझे आप लोगो से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। जब आप कुछ साहित्य के लिए कार्य करेंगे और मुझे बुलावेगे तो मैं आपकी सेवा मे अवश्य हाजिर होऊँगा और यह आशा रखता हुआ कि अब आप भी साहित्योद्धार के लिए प्रयत्नशील बनेगे – अपना भाषण समाप्त करता हू।

अनेकान्त"
वर्ष ४ अक ४
मई १६४१

✿✿✿✿

रुपये पानी की तरह बहा दिये। जिनको हमारे ग्रन्थो से कोई सम्बन्ध नहीं, न वे हमारे जैन धर्म को या भारतीय धर्म को मानने वाले है, न हमारे कोई देश के ही है और न हमारे रिश्तेदार ही है। तो फिर अपना स्वार्थ न होते हुए भी उन्होंने इतना धन क्यों व्यय किया ?

हम जो थोडा भी खर्च करते है – अपने स्वार्थ के लिए या नाम के लिए। उन्होंने नाम के लिए नहीं खर्चा वरन् सच्ची साहित्य–सेवा करने के लिए खर्चा है। डा० हरमन जैकोबी को देखिये – उनने जैन धर्म के लिए क्या कुछ कर दिखाया ? यही क्यों एक दूसरा उदाहरण लीजिये, अमेरिका के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० नार्मन ब्राउन ने एक कल्पसूत्र की खोज के लिए अमेरिका सरकार से दस हजार डालर खर्च के प्रबन्ध की दरख्वास्त की, सरकार ने उसे मंजूर किया। यह कल्पसूत्र १९३४ ई० मे वाशिंगटन से प्रकाशित हुआ है।

डा० ब्राउन कई वर्ष पूर्व भारत मे आये थे, उन्होंने पाटण आदि अनेक स्थानों के ज्ञान भण्डारों के कल्पसूत्र–ग्रन्थों का निरीक्षण किया। फोटो आदि के लिए मेरे से भी दो–तीन बार मुलाकात की। हमारा समाज भी धन सम्पन्न है। वह चाहे तो सब कुछ कर सकता है। मैं आशा करता हूं कि हमारा सोया हुआ समाज भी अपने प्राचीन साहित्य के उद्धार का बीड़ा अब शीघ्र ही उठाएगा। कहने का आशय यह है कि एक जैनों के कल्पसूत्र के लिए अमेरिका सरकार ने ४० हजार रुपये खर्च किये और डा० ब्राउन ने कितना परिश्रम उठाया। उनकी तुलना में हम क्या कर रहे हैं ? दूसरा उदाहरण भारत का ही लीजिये। अकेले महाभारत के प्रकाशन के लिए भाण्डारकर इंस्टिट्यूट ने १५ लाख व्यय कर दिये हैं और १५ लाख रुपये और व्यय होंगे। अगर हम उनके मुकाबले आधा भी व्यय करने को प्रस्तुत हों, तो हम भी बहुत कार्य कर सकते हैं।

अभी हाल ही मे पाटण में ६० हजार रुपयों की लागत का एक सुरक्षित भवन एक ही व्यक्ति ने बनवाया है। उसमें पाटण के सभी भंडारो के ग्रन्थों को रखने का प्रबन्ध किया गया है। कई भंडारों के ग्रन्थ तो उसमे आ चुके हैं। यह काम अभी चालू है। उन ग्रन्थों के लिए अलमारियों आदि की व्यवस्था करने के लिए ३० हजार रुपये लग जायेंगे। आपको भी उसका अनुकरण करना चाहिए।

लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती है। वह आज है कल नहीं। जो कुछ कार्य सम्पन्न अवस्था मे हो जाता है वही उसकी चिरस्मृति के लिए रह जाता है। गरीब होने पर सारी जिन्दगी पछताना पड़ता है। जीवन मे अनेक उतार चढ़ाव आते ही रहते हैं। समय आने पर हम सभी अंगुर की भांति नष्ट हो जायेंगे। जो कुछ भी जीवन मे सार्थक कार्य हो जाएगा, वही हमारे जीवन की स्मृति रह जायेगी। इस बात का ताजा उदाहरण बम्बई के सुप्रसिद्ध सटोरिये श्री मुंगेलाल भाई का है। जिसकी आर्थिक सहायता से अभी हमारी 'भारतीय–विद्या–भवन' नामक एक संस्था स्थापित हुई है। अभी इस भवन का कार्य मेरे जिम्मे है। यहाँ पर उच्च कक्षाओं के छात्रों को प्राय सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है। यह हमारी बड़ी स्कीम है। इस भवन से "भारतीय–विद्या" नामक एक त्रैमासिक पत्रिका भी निकलती है, जिसका सम्पादन भी मैं ही करता हूं।

भाई मुंगेलाल के दान की कथा बड़ी मनोरंजक एवं अनुकरणीय है। भाई मुंगेलाल बम्बई का सटोरिया है। वह अपने जीवन मे तीन बार करोड़पति और दिवालिया हुआ। अभी वृद्धावस्था में उसने सोचा – मैं ३ बार करोड़पति होकर गरीब हुआ पर मैंने अपने जीवन मे अभी तक एक भी ऐसा कार्य नहीं किया जिससे मेरा नाम अमर हो जाय। इस समय मेरे पास ६ लाख के शेयर व मकान आदि कुल १० लाख की सम्पत्ति है। अगर मैं शेयर के रुपये किसी शुभ कार्य में लगा दूं तो मेरा नाम अमर हो जायेगा। मेरे कोई सन्तान नहीं है, तब फिर यह झंझट क्यों ? ऐसा विचार कर उसने शेयर के ६ लाख रुपये के दान करने का निश्चय किया, पर सोचा किसी शिक्षित आदमी की सलाह लेना ठीक होगी। वह सीधा हमारे परममित्र श्री कन्हैया लाल जी Bar-at-Law के पास सलाह लेने गया और कहा मुझे इस कार्य के लिए राय दीजिये। मुंशी जी ने कहा इस समय सरकार गऊमाता के उद्धार की ओर एक स्कीम बना रही है, पर मेरा [illegible]

हाने मे कोई दोष भी नहीं है।

बम्बई
२७ ११ ४०

आजकल काम की बडी भरमार है और आप जानते ही हैं, देश मे राजकारी विषय की बडी गडबडी मच गयी है। हमारी इस सस्था के संस्थापक मुशी जी भी जेल में जाने की तैयारी मे हैं – सो भवन की पीछे की व्यवस्था कैसे की जाय इस विषय मे दिन-रात परामर्श करने मे लगे रहना पड़ता है। मुझे आपका खजाना देखना है और वहा के विद्वान मित्रो से मिलने की भी बडी उत्कठा है। देखें यह इच्छा कब पूरी होती है।

शायद मेरे जैसे से जो एक दफह चित्त उचट गया और इन पोथी पन्नो को फेंक दिया तो फिर जिन्दगी तक हाथ मे लेने का जी नहीं होगा। आजकल भी मन को मैं बडे जोर से दाबे बैठा हूं – सब साथी और नेतागण जेल मे जा रहे हैं और मेरे से यों कैसा बैठा जाय। पर मुशी जी आदि बडा दबाव डालकर कह रहे हैं कि तुम जेल मे गये तो फिर यह सारा साहित्य का काम बिगड जायगा और लाखो रुपयों का नुकसान होगा। अभी भा०वि०भ० में ८–१० स्कॉलर काम कर रहे हैं, वे सब निकम्मे हो जायेगे इत्यादि, सो मैं मन को मारकर इस काम में मर रहा हू। इधर शरीर भी अब बडी परेशानी कर रहा है। लेकिन सोच रहा हू कि यदि काम बद हो गया तो फिर सदा के लिए हुआ समझिये। और सामग्री जो इतनी इकट्‌ठी हुई पडी है वह सब निरर्थक हो जायेगी। – खैर।

हमारे पुराने यति लोग साहित्य के क्षेत्र मे कितना महान और अनेक विध कार्य कर गये हैं इस दृष्टि से ऐसे साहित्य का बडा उपयोग है और हमे पूर्व पुरुषो की कृतियों को प्रकाश मे रख कर अपना ऋण चुकाने का लाभ उठाना चाहिए।

साबरमती, अहमदाबाद
२० ४ ४१

मैं कुछ बीकानेर आने की इच्छा से यहां पर रूका रहा – पर पिछले ४ दिन से हिन्दू-मुसलमानों का बडा भयानक झगडा शुरू हो गया है जिससे सारा शहर आतक से घिरा हुआ है। सब प्रकार का व्यवहार बद है और लूटमार, आग आदि के भयकर काम चल रहे हैं। जो जहा बैठा वहीं बैठा हुआ है। मकान मे से बाहर निकलने की किसी की हिम्मत नहीं है। सो इस तरह मेरा मनसूबा जहा था वहीं रह रहा है। आप हैं इसलिए आने की उत्कंठा बनी हुई है – पर कौन जाने विधि का क्या सकेत है ? मामला शात हो गया तो मंगल या बुध के दिन निकल आने का इरादा है – नहीं तो फिर आना संभव नहीं। आने के विषय में जो निर्णय होगा वह आपको सूचित कर दूगा।

बम्बई
२० ५ ४१

आपकी सामग्री बडी सुरक्षितता के साथ रखी हुई है। आपने ऐसी अनमोल चीजे जिस विश्वास के साथ मुझे दी हैं उसका स्वप्न में भी कोई दुरुपयोग नहीं होगा।

प० सुखलाल जी यहीं हैं और यशोविजयजी के बारे में कुछ विस्तृत निबन्ध सामग्री इकट्‌ठी कर रहे हैं।

भाई हजारी लाल को सप्रेम शुभाशीर्वाद – उनका मेरा उस व्याख्यान का सार वाला लेख आज ही मैंने "अनेकान्त" मे पढा। बडी जल्दी से लेख तैयार कर डाला और छपवा भी दिया सो जानकर हैरान-सा हो गया कि यह कहा से और कैसे आ गया। सार यो तो बहुत ही ठीक और व्यवस्थित है पर बीच में जहां गड़बड हो गयी और उससे कुछ भ्रम-सा हो जाता है। अच्छा होता यदि यह मुझे जरा दिखला दिया जाता तो जरा सुधार देता, क्योंकि सार्वजनिक

बम्बई
३-१०-३१

पहले के प्रारम्भ के लेख जैन हितैषी, आत्मानंद प्रकाश, बम्बई समाचार, गुजराती कान्फ्रेंस हैराल्ड आदि में निकलते थे, उनकी तो मुझे पूरी स्मृति भी नहीं रही है, मेरे पास उनके कटिंग वगैरह भी नहीं है। सम्पादित ग्रन्थों के नाम प्रायः मिल जायेंगे।

बम्बई यूनिवर्सिटी में दिये व्याख्यान अभी छपे नहीं – मेरी तरफ से ही विलम्ब है, लेकिन क्या किया जाये। आप जानते ही हैं कि अपना काम कितना श्रमदाय और सामग्री की अपेक्षा रखता है। इस वर्ष उनको भी तैयार करने का प्रोग्राम है।

बम्बई
७-१०-३१

हमारी इच्छा तो केवल साहित्य के उद्धार की है और यह सब कृतियां प्रायः आपके ही गच्छ की हैं सो उद्धार करें। यश आपका भी होगा ही। एक और बोझ मेरे ही सिर पर आ पड़ा है वह है यहां नवीन स्थापित भारतीय विद्या भवन की ओर से "भारतीय विद्या" नामक त्रैमासिक का प्रगट करना।

इसमें कोई शक नहीं कि यह (युगप्रधानाचार्य खरतर गुर्वावली) एक अद्वितीय प्रसिद्ध कृति है और इसे अच्छी तरह सम्पादित कर सुन्दर रूप में प्रगट करने से अपने इतिहास की अच्छी महत्ता होगी।

बम्बई
ता० २२-१२-३१

काम बहुत है और सब अकेले हाथ करना पड़ता है। मेरी प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि दूसरों का किया हुआ पसन्द ठीक नहीं आता। सब प्रूफ मुझे ही देखने चाहिए, सब प्रकार का गैटअप मुझे ही ठीक करना चाहिए। इस प्रकार सब बातें मुझे ही करनी पड़ती हैं।

बम्बई
२०-७-४०

कोई ढाई–तीन महीने से मेरा स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ रहा है। खास बीमारी तो कोई नहीं है लेकिन कार्याधिक्य के कारण अशक्ति और मंदता बहुत आ गयी है। मस्तिष्क शून्य–सा हो गया है और कार्य करने का उत्साह बहुत मंद हो गया है। इस सबब से दो–एक महीने से लिखना–पढ़ना प्रायः बंद कर रखा है।

बीकानेर से श्रीमान् स्वामी नरोत्तम दास जी ने मेरे पास कुछ प्रिंटेड भेजे हैं जिनमें उन्होंने मेरी जीवनी छापी है। आप लोगों ने मुझ पर इतना अत्यधिक ममत्व भाव बतलाकर मेरे लिए जो यह "राजस्थानी" में लेख दे दिए हैं – मैं उसके बारे में आप लोगों का किन शब्दों से मेरा हार्दिक भाव प्रगट करूं, सो समझ में नहीं आता मैं तो अब ही मैं से एक हूं ऐसा अपने को समझ रहा हूं, इसलिए मेरे लिए कुछ लिखना अपने मुंह अपना ही बखान करने जैसा है। खैर – यह तो आप सज्जनों का है – मैं उसे कैसे नामंजूर कर सकूं।

बम्बई
४-[illegible]

मेरा कुछ स्वभाव ऐसा ही बन गया है कि अकेले अपना ही काम करने का आदी हो गया हूं जो बिना स्वयं किये किसी काम में संतोष नहीं होता। पर आजकल मैंने अपने शरीर से बहुत अधिक काम लिया है इससे अब इस देह ने जवाब दे दिया।

पो० साबरमती
१५६४२

जैसलमेर जाने की मेरी इच्छा तो बहुत उत्कट है पर देखूँ यह इच्छा कब पूर्ण होती है। अभी तो देश का मामला बडा गडबडी मे पडा है। ऐसे समयमें कुछ काम करने मे दिल नहीं लगता। एक महिने से यहा पर बैठा हू। नित नये उलट-पुलट समाचार और वारदात होते रहते हैं। लोगो के दिल बडे क्षुब्ध हैं। यहां पर सवा महीने से बिल्कुल सब काम- धंधे बद- से हैं। मिले सर्वथा बद हैं। बाजार भी बंद है, स्कूल कालेज भी बद हैं। अभी इस गोलमाल मे कुछ भी करने की सूझ नहीं हो रही है। मामला कुछ शात पडे, बाद ही सब व्यवस्था हो सकेगी।

जैसलमेर
२६१२४२

हमारा यहा का काम खूब अच्छी तरह चल रहा है। साथमें ५ आदमी हैं जो नकले वगैरह का काम कर रहे हैं। आपके अक्षर जरा बहुत गडबडी वाले होते हैं। कल परसो लोद्रवा जाने का विचार है – श्री आचार्य महाराज भी आज जा रहे हैं

बम्बई
५७४३

जैसलमेर के भंडार के ताडपत्रीय पुस्तकों की रक्षा के लिए पेटियां बनानी बहुत ही आवश्यक हैं नहीं तो वे ग्रन्थ बहुत ही शीघ्र नष्ट हो जायेगे। उसके लिए हमारे दिल मे उत्कंठा तो बहुत ही है पर उसमे जरूरत है कुछ उदार दिल के धनिकों की।

जैसलमेर के भाईयो के तथा अन्य ग्रामजन और श्री महारावलजी के साथ हमारा अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है। उस विषय में कोई कहने की बात नहीं है। वे तो सब हम कहे वैसे खडे पैरों करने के लिए तैयार हैं, पर जरूरत है बाहर से रूपयो के आने की।

बम्बई
६११४३

मेरे पास ऐसे तो सैकडो काम पडे हैं। कितना काम का ढेर है यह तो आप कभी आखो से देखें तब कुछ पता लग सके। कितने ग्रन्थ छप रहे हैं – कितनो के प्रूफ आ रहे हैं – कितनों की कापियां आ रही है, कितनी की प्रतिया मगाई और देखी जा रही हैं और उसके उपरान्त वहां भवन का कितना विशाल कार्य चल रहा है। आपकी कल्पनाके बाहर की ये सब बातें हैं। १० प्रोफेसर मेरे नीचे काम कर रहे हैं, १२ एम ए पास स्कॉलर पी-एच डी की तैयारी मेरे गाइडैंस नीचे कर रहे हैं। बम्बई यूनिवर्सिटी ने तीन विषयो का एक साथ पी-एच डी का रिकग्नेशन मुझे दे रखा है जो आज तक किसी प्रोफेसर को नहीं दिया गया।

इसके साथ अहमदाबाद की गु०व० सोसायटी के उच्च अभ्यास विभाग में मैं मुख्य परामर्श-दाता हूं। ऐसी प्रवृति मे मुझे पत्र लिखना भी बडा कठिन हो जाता है। कई बडे-बडे विद्वानों के दूर-दूर से पत्र आते हैं जिनका उत्तर महीनों तक नहीं दे सकता।

सामग्री तो बहुत है, पर काम मे सहायक हों ऐसे विद्वान व्यक्तियों का बडा अभाव है। अकेले हाथ से कितना काम हो सकता है।

भारतीय विद्या भवन ने दो बहुत बडे काम और अपने हाथ मे लिये हैं जिनमें एक तो ८ लाख रूपये के खर्च से आर्ट्स कॉलेज स्थापित किया जायेगा और दूसरा भारतवर्ष का बृहदितिहास जो बडे-बडे १०-१२ भागो मे

संस्थाओं और अन्य व्यक्तियों का उल्लेख करते समय जरा पूर्वापर का विचार रखना पड़ता है। कई छिद्र संशोधी लोग हैं जो अर्थ का अनर्थ करने ही में तत्पर रहते हैं। खासकर भूंगालाल सेठ के विषय में जो एक वचन का प्रयोग [illegible] किया गया है वह ठीक नहीं। दिवालिया आदि वाली भाषा भी जरा ओछी लगती है। सो इस विषय में भविष्य में पूरा ख्याल रखना और ऐसी भाषा और शब्दो का व्यवहार करना चाहिए, जिससे किसी को कुछ खटके नहीं। भाई हजारी लाल [illegible] है और इसे खूब तैयार होना चाहिए यही हमारी शुभकामना है। मूलचन्द अहमदाबाद में है और मजे में है।

विशेष श्रीमान् प्रो० स्वामी नरोत्तमदासजी से मेरा स्नेह प्रणाम कह दीजियेगा। और [illegible] छद की तारीफ करते "रहिये"। श्रीमान ठाकुर राम सिंह जी से भी मेरा सादर प्रणाम कह दीजियेगा और जल्दी होने के कारण मैं उनसे फिर नहीं मिल सका और उनके साथ वार्तालाप आदि का लाभ नहीं उठा सका इसका मुझे खेद ही रहा पर देखू कभी फिर इसका निवारण हो जायेगा। आप उनसे मेरी ओर से बहुत आदर के साथ यह बात कहें कि और राजस्थानी साहित्य का स्रोत जैसा कि स्व० पारीक जी के जाने से बहना बंद हो गया है उसे फिर से चालू करेंगे। उस साहित्य के प्रकट करने का भार मैं अपने सर पर उठा लूंगा।

बम्बई

३०.८.४१

अगर आप मेरे हाथ से कुछ उपयुक्त साहित्य-सेवा के होने की आशा रखते हैं तो आपको तो ज्यों बने त्यों मुझे उत्साह देना दिलाना चाहिए और सहायता करनी चाहिये। आप ही जैसो के उत्साह से तो मैं अपने शरीर का सर्व तरह से क्षय करता हुआ इस व्यसन में डूबा रहता हू - नहीं तो यह पुस्तक प्रकाशन और [illegible] के [illegible] होना एक से प्रिय और आत्मोन्नति साधक होते हैं इसलिये मेरे वास्ते इसका कुछ अधिक महत्व नहीं है। आप तो गृहस्थ हैं, कुटुम्ब वाले हैं, व्यापारी स्वभाव के वणिक हैं इसलिए आपके लिए कोई यह कार्य प्रधान कार्य नहीं है - केवल अवकाश मे करने जैसा शौक का काम है - पर मेरे लिए तो यह जीवनका प्रधान लक्ष्य बन गया है और इसीलिए शरीर की सर्वथा उपेक्षा करके, मृत्यु को निकट निकटतर बुलाता हुआ इसके व्यामोह मे फंसा हुआ हूं। इस परिस्थिति को [illegible] और औदार्य रखना चाहिए। बाकी मेरे पास तो इतना साहित्य पड़ा है और सुलभ है कि इस एक जन्म मे तो क्या २-३ जन्म तक भी पूरा नहीं हो सकता।

अहमदाबाद

[illegible]

आत्मानन्द शताब्दी स्मारक फण्ड की तरफ से [illegible] के प्रकाशन की कोई योजना [illegible] रही है। उसमे मेरी सलाह वगैरह की आवश्यकता है।

यहां पर आनन्दजी कल्याणजी ने मेरी प्रेरणा से जैन [illegible] का [illegible] निश्चय किया है और इसकी व्यवस्था मेरे ही निरीक्षण नीचे रखने का तय किया है।

आप मेरे काम के साहित्य को तो यथावकाश भेजते ही रहियेगा। आप ज्यों-ज्यों लिखते हैं त्यों-त्यों मेरा उत्साह बढ़ता जाता है और मैं थका हुआ, बैठ कर खड़ा हो जाता हूं।

बम्बई

[illegible]

भारतीय विद्या भवन का यह नया मकान जो अंधेरी में [illegible] है [illegible] ने [illegible] के [illegible] के लिए [illegible] लिया है। इसलिए हमको अपना यह [illegible] से आना पड़ा है।

बढकर इस काम के लिये कौन अधिक अधिकारी हो सकता है ? मेरा विचार अप्रैल के अन्त मे उधर आप लोगों से मिलने को आने का है।

बम्बई
५.७.४४

कार्य की व्यस्तता इतनी अधिक बढ गयी है कि जिससे मैं अपना इच्छित काम समय पर नहीं कर सकता। भवन की प्रवृत्ति इतनी विस्तृत और विविध कार्यवाही हो रही है कि जिसके काम से मुझे एक मिनट भी छुटकारा नहीं मिलता और उसमे मुझे मेरी सिघी ग्रथ माला का व्यवहार तो नियमित रखना ही पडता है। रोज कई ग्रथो के प्रूफ तो आते ही रहते हैं। उनको देखते देखते ही दिन खत्म हो जाता है।

युद्ध के कारण बहुत कुछ कठिनाई उपस्थित हो रही है, नहीं तो अभी तक बहुत काम हो जाता।

बम्बई
२३.७.४४

कलकत्ते में श्री सिघीजी का स्वर्गवास हो गया। सब छोडकर चले गये। क्या उनकी उदारता, क्या साहित्य प्रेम, क्या सज्जनता और कैसा उनका खजाना जिसके सामने सब जैन भिखारी मालूम देते हैं– ऐसे पुरुष भी सब छोडकर चले गये। हमे इससे बडा दु ख और खेद हो रहा है। शुभ।

सिंघी पार्क
कलकत्ता
१.२.४५

मैं ता० १८ से रवाना होकर यहाँ २० को आया था फिर ता० २३ को अजीमगज जाता हुआ जो कल वापस लौटा हूँ। अजीमगंज मे ता० २५, २६, २८, के दिन श्री बहादुरसिह बाबू और उनकी माताजी के पुण्य स्मरणार्थ बर्सी और पूजा आदि का समारम्भ था। इसलिये जाना हुआ। प्राय इन लोगों ने एक लाख रूपया खर्च किया। मैं यहाँ पर अब नाहर लाइब्रेरी को लेने के लिये ही आया हूँ।

बम्बई
६.१२.४५

ता० २६ नवम्बर को यहाँ से उदयपुर (मेवाड) जाना पड़ा सो कल वापस आया हूँ। उदयपुर मे महाराणा से मिलना था। आपको मालूम होगा कि कुछ राजपूत स्टेटस् एक राजपूत यूनिवर्सिटी बनाना चाहते हैं। उसी के सिलसिले में मुझे और श्री कन्हैयालाल जी मुशी को वहाँ जाना पडा। वहाँ पर उदयपुर, डूंगरपुर, पन्ना के महाराजा से मिलना हुआ, यूनिवर्सिटी की स्कीम की चर्चा की गई। इसलिए मैं और श्री मुंशी जी दोनों वहाँ पर गये थे कल ही वापस आये हैं। इसी सबब से मेरा बीकानेर जाना, जो मैंने स्वामी जी को ता० १५ दिसम्बर निश्चित लिखा था, बन्द रखना पड़ा।

शरीर भी निकम्मा हो रहा है पर उसकी उपेक्षा करके चल रहा हूँ, यदि प्रताप यूनिवर्सिटी की स्कीम कुछ अमल मे लाने का अवसर आया तो उसके संगठन और संयोजन का बहुत बडा भार मुझे उठाना पडेगा। उसके प्रेसीडेंट पन्ना महाराजा वगैरह मुझे ही उस काम का संयोजक बनाना चाहते है। और ऐसा हुआ तो मुझे कुछ समय मेवाड उदयपुर-चित्तौड जाकर आसन जमाना पडेगा।

मेरे दिल मे ओसवाल महाविद्यालय की कायम करने की कई कारणो से बडी आवश्यकता प्रतीत हो रही है, वे कारण प्रत्यक्ष ही मैं विशेष बताये जा सकते हैं। मैं अभी चित्तौड दो दिन ठहरा था, वहां ऊपर नीचे खूब घूमा।

संकलित होगा, प्रकाशित किया जायेगा। श्री बिड़ला ने उसके लिए डेढ लाख रुपया देने का वचन दिया है। और शीघ्र ही इसका कार्यालय स्थापित होगा। बड़ा भारी कार्य होगा।

बम्बई

२२।११।४३

विक्रम के विषय मे मैं कोई खास विचार स्थिर नहीं कर सका हूं क्योंकि इस विषय का जितना भी साहित्य है उसको मैंने अभी तक संकलित रूप से नहीं देखा। विक्रम के विषय में मुझे भी दो-तीन जगह से खास करके डा० राधाकुमुद मुकर्जी का विशेषाग्रह है कि मैं कुछ न कुछ लिखूं। इस मौके पर विक्रम विषयक जितने महत्व के जैन कथा-ग्रन्थ हैं उन सबको ३-४ भागों में विक्रमोत्सव के उपलक्ष में प्रकट कर दिए जायें। इससे अच्छी विक्रम श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है ? पर इस समय सबसे बड़ी समस्या कागज की हो रही है।

बम्बई

३०।११।४३

मैं यहा से आगामी ता० ७ को कानपुर के लिए जाऊँगा। वहा हिन्दू सभा की ओर से विक्रमोत्सव है जिसमे देश के मुख्य-मुख्य विद्वानो को बुलाया है। मुझे भी जाना जरूरी है। वहीं पर, भारतवर्ष के बृहद्इतिहास की योजना निश्चित की जायेगी। शायद वहा से मुझे कलकत्ता जाना पडे और फिर ता० ३१ को बनारस में ओरिएन्टल कान्फ्रेंस में यहा की यूनिवर्सिटी की ओर से जाना होगा।

बम्बई

७।२।४४

गत ७ दिसम्बर को मैं यहां से विक्रमोत्सव के निमित्त कानपुर गया। वहा से वापस आकर फिर बनारस ओरिएन्टल कान्फ्रेंस में, वहां से डालमिया नगर और फिर वहा से कलकत्ता, वहा से फिर इधर ता० १४ जनवरी को पहुँचा। प्रवास के परिश्रम के कारण शरीर बड़ा शिथिल हो गया। १०-१२ दिन अस्वस्थता में चले गये और साथ में यहां पर भवन का कार्य भार भी बहुत बढ गया। भारतवर्ष के यह इतिहास की जो योजना की जा रही है उसका काम कई दिन तक लगा रहा।

डालमियानगर से श्री शांति प्रसाद जी जो बनारस लेने के लिए आये थे इसलिए उनके आग्रह से एक दिन वहा जाना हुआ। उन्होने भारतीय विद्या भवन में रहकर अध्ययन करने पोस्ट ग्रेज्युएट स्टुडेंटों के - एम० ए० और पी-एच.डी. का अभ्यास करने वालों के लिए माहवार ३००/- रुपया फेलोशिप देने का वचन दिया है। इससे अब भवन में ६-७ विद्यार्थी जैन साहित्य का अध्ययन करने वाले रह सकेंगे।

पं० सुखलालजी बनारस से मेरे साथ ही यहा पर आये हैं। वे वहां से अब मुक्त हो गये हैं। उनकी जगह पं० दलसुख मालवणिया की नियुक्ति हो गयी है। पंडितजी प्राय अब यहीं पर मेरे साथ ही रहेंगे। श्री राहुल सांकृत्यायन भी आजकल यहीं मेरे पास है। वे एक बहुत गंभीर और पुराने बौद्ध ग्रन्थ का सम्पादन कर रहे हैं जो भवन की ओर से प्रकाशित होगा।

बम्बई

११।२।४४

श्रीमान् पं० दशरथ जी शर्मा ने कर्मचन्द्र प्रबंध के विषय में जो लिखा था है [illegible] दीजिये। और इसका इन्ट्रोडक्शन विस्तृत रूप में भी दशरथ जी लिखने का कष्ट करेंगे तो बहुत ही उत्तम होगा। [illegible]

बम्बई

३ ६ ४७

आपने अखबारो में पढा ही होगा उदयपुर मे प्रताप विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। श्री कन्हैयालाल मुंशी और मैंने इसका प्रयत्न किया है और असाधारण सफलता मिली है। मेरा अब रहना प्राय उदयपुर मे अधिक होगा। उदयपुर का आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेन्ट वगैरह बहुत बडे पैमाने पर व्यवस्थित करना है। मैंने उसका डायरेक्टर होना स्वीकार किया है। प्रताप विश्वविद्यालय का प्रधान महामात्य होना भी मैंनें स्वीकार कर लिया है। उदयपुर महाराणा ने बडी भारी उदारता दिखलाई है और आशा है कि भारत भर मे एक नई चीज होगी। महराजा ने कोई ६७ लाख की स्थावर जगल सम्पत्ति विश्वविद्यालय को देना उद्घोषित किया। मेरी स्थिति बहुत ही व्याकुल रहेगी। ग्रन्थमाला के ग्रन्थ भी इसी तरह बीच मे लटक रहे हैं। सम्भव है उदयपुर मे उनका निपटारा होगा। वहां मुझे कुछ नये सहायक भी मिल सकेंगे। मेवाड के इतिहास और ऐतिहासिक सामग्री का उद्धार करना मेरा प्रधान लक्ष्य रहा है। उसे हाथ मे लेने का ईश्वर ने सुयोग उपस्थित किया है। जिनेश्वरसूरि के बारे मे कुछ लिखते हुए चित्तौड का मुझे अत्यन्त आकर्षण हुआ।

अहमदाबाद

२६ ६ ४७

मन मे तो बहुत कुछ करने की उमगे दौडती रहती हैं परन्तु होता वही है जो निर्मित है– इससे होने न होने का हर्ष–शोक करना निरर्थक है–मैंने सोचा था उदयपुर मे रहने का प्रसंग आया तो चित्तौड मे जिनेश्वर सूरि का कोई बडा भारी स्मारक स्थापित करने कराने का प्रयत्न करूगा लेकिन यह स्वरूप अभी तो यो ही सुप्त ही–सा रह गया है–देखे भावि क्या करता है।

बम्बई

४ १०. ४८

मेरे पास जो बहुमूल्य सामग्री थी वह भी मैंने तो इस भवन को दे दी है–जिसका मूल्य एक्सपर्ट विद्वानो ने ५० हजार के ऊपर ही होता है। मेरा कुछ लोभ इस साहित्य को प्रकाशन मे लाने का रहा है इसलिये मैंने आपकी इस सामग्री को संभाल कर रख छोडा। आपको तो ज्ञात ही है कि ऐसी सामग्री जो मेरे लिये इतनी उपलब्ध है कि जिससे मेरे जैसे सौ भूखो का पेट भर सकता है, जो पडी है– जिसका मैंने छपवाने की दृष्टि से सग्रह कर रखा है वह भी अपरिमेय है। तब भी मेरा लोभ जो कि हेय है– जिसने मेरा जीवन एक प्रकार से यों ही नष्ट कर दिया–स्वास्थ्य भी बिगाड दिया–आयुष्य भी अल्प कर दिया–मन में से हटता नहीं है– एकाधा फटा पन्ना देखकर उसमें लिखा भ्रष्ट दूहा भी ज्ञात कर मुझे उसके उद्धार की लालसा हो आती है। और इस लालसा के वश होकर जिसके आज कोई ४० वर्ष पूरे होने आये... । अब तो यह जीवन अपने निर्वाण के समीप पहुँच रहा है। न जाने किस दिन विलीन हो जायगा। इसलिये इस लालसा को भी हटाना है। जो कुछ काम हाथ मे लिया हुआ है उसे समाप्त करना है।

मैं सुबह ७ बजे से काम पर बैठता हू और रात को ६ बजे बन्द करता हूं। इसमें ३–४ दिन में कभी घंटा दो घटा बाहर जाता हूं और कभी नहीं जाता। तब भी काम पूरा नहीं होता। कुछ विचार लिखने हुए तो उसके लिये पचासों ग्रन्थ उथलाने पडते हैं। महिनो के परिश्रम के बाद ५–१० पत्र लिखने की सामग्री दिमाग में जमती है। उसे व्यवस्थित लिखना भी एक काम है। आपके जैसा मनुष्य कोई साथ मे दो–चार महीने रहे तो बहुत–सा काम निपट सकता है। सौरा ज्ञानी ने जो देखा वही होना है और वही होगा। मै तो सिर्फ उदयाधीन कर्म का फल भोगने वाला हूं। इतना तो निश्चित है कि जो कुछ समय इसमें जा रहा है वह लाभदायक न हो तो भी आत्मा को हानिकर तो नहीं है।

यूनिवर्सिटी के लिये उपयुक्त स्थान कौन सा हो सकता है, इस दृष्टि से सब देखा-भाला।

मेरे दिल में तो यह भी आया कि खरतरगच्छ की मूल जन्मभूमि चित्तौड़ का महत्व जैन इतिहास में बड़ा भारी है। यदि खरतरगच्छ में कोई जानदार व्यक्ति हो और गच्छ के गौरव की जिसको किंचित भी श्रद्धा हो तो उसके लिए तो चित्तौड सबसे पवित्र और पूजनीय तीर्थ स्थान है। मै चाहता हूँ कि श्री जिनदत्तसूरि और जिनवल्लभसूरि के नाम का वहा बड़ा भारी स्मारक बनाया जाय और बड़ा भारी कोई साहित्यिक और शिक्षा विषयक केन्द्र स्थापित किया जाये। आप जैसे ५-१० उत्साही भाई जो मेरा जी खोलकर साथ करें तो मै इसे अपनी पूरी शक्ति देना पसंद करूँ। क्या आप लोगो के दिल मे कुछ भावना पैदा हो सकती है?

पूना

२२.८.४५

एक तो इच्छा होती है अब इस प्रपंच को छोड़कर एकान्त निवास करूँ, दूसरी साथ मे कुछ सामाजिक प्रवृत्ति का कार्य करने की ऊर्मि उठती रहती है। देश और समाज की जो वर्तमान दशा है उसमे कुछ करने जैसा मेरे लिए विशिष्ट कार्य पड़ा है। और में यह मानता हूँ कि मुझे यह करना चाहिए, उससे अधिक मै अपनी शक्ति का लोगों को लाभ दे सकता हूँ। यह साहित्यिक कार्य तो और भी करते रहेंगे। आगामी २-४ महीनों में इसी मनोमन्थन मे व्यतीत रहूँगा ऐसा मालूम दे रहा है। सो क्या है यह तो आप कभी मिलेंगे तब समझेंगे।

मेरे मन मे बहुत समय से यह बात घुल रही है कि चित्तौड़ मे जिनदत्तसूरिजी की स्मृति मे कोई छोटा-बड़ा स्मारक स्थापित करना चाहिए। खरतरगच्छ के गौरव की निदर्शक कोई वस्तु एसे करना चाहिए। जैन इतिहास की अमरता के लिए ऐसा कोई प्रयत्न करना बहुत आवश्यक है। वरना सब काल के प्रवाह मे विलुप्त हो जायेगा और अब बहुत ही शीघ्र वैसा विनाश होगा।

अब यह शरीर कहा तक काम करेगा कह नहीं सकता। मन तो वैसे ही दौड़ता रहता है और ज्यों-ज्यो नये ग्रथ हाथ मे आते रहते है त्यों-त्यों उसका उद्धार करने का मनोरथ भी बढ़ता ही रहता है परन्तु आयुष्य तो अपने अंत के करीब पहुँच रहा है। न मालूम वह किस दिन समाप्त हो जायेगा-सो इसतरह विचार आते ही मन को दूसरी तरफ भी सोचना पड़ता है। करीब ५८ वर्ष हो चुके। वार्धक्काल प्राय पूरा होने का समय समझा जा सकता है। जितना भी आयुष्य अब हो वह विशेष ही समझना चाहिए। और इस लेखन, संशोधन के सतत परिश्रम से शरीर को जो हानि पहुँच रही है वह तो विचार के बाहर की बात है। इस कार्य ने मेरे आयुष्य के कम से कम २ वर्ष तो ले ही लिए है। कितने लोग वर्षों से मुझे कह रहे है कि तुम्हे ६-१० वर्ष और जीना हो तो इस परिश्रम को सर्वथा छोड़ दो परन्तु मै इसका ख्याल जो रहा-छोड़ा कैसे जाये सो ही कल्पना मे नहीं आता।

बम्बई

१८.१०.४८

इसी वर्ष ता० २०.२१.२२ को नागपुर मे ऑल इण्डिया ओरियन्टल कान्फ्रेंस है। मुझे प्राकृत विभाग का उन्होंने अध्यक्ष भी नियुक्त कर रखा था- परन्तु मेरा जाना स्थगित हो गया।

कुचामन

३०.३.५१

यहां पर कल भी सुनीति बाबू मिले थे। वे भी नवलपुर होकर आते है और उनके अध्यक्ष है यहां लोगों ने निर्णय किया और मुझे दबाव कर रहे है। मुझे यह सर्वथा पसन्द नहीं है। मै तो काम करना चाहता हूँ। राजस्थान की कुछ उपयुक्त सेवा कर सकूं तो सार्थक हो- नहीं तो खाली आडम्बर का क्या अर्थ है ?

भारतीय विद्याभवन
बम्बई-७
ता० १५ ७ ५३

मैं भोजन के लिये उठने वाला ही था और भवन के ४ मंजिल उतर कर अपने रहने के मकान मे पहुंचने को उठा ही था कि आपका पो का. हाथ मे आया। उसी क्षण वापस टेबिल पर बैठकर आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हू और यह पत्र लिख रहा हू। भोजन और चाय अब तीन बजे एक साथ ही लूगा। कल सायकाल से सिर मे दर्द हो रहा है इसलिये सुबह भी कुछ नहीं लिया था- टैबिल पर प्रूफों का ढेर पडा है इसलिये निपटाने की दृष्टि से सुबह के ७ बजे से सकासन पर बैठा हू-आप लिखते हैं- मैं कुछ रूष्ट हू। सो कैसे जाना? हाँ कभी-कभी रोष आने जैसा आपका तकाजा होता है पर वह तो काम की दृष्टि से आप मुझे चाबक दिखाते रहते हैं ऐसा मानकर रोष को छुटकारा देता हू- पर इतनी बात जरूर मन मे आ जाती है कि आप नितान्त लोभी प्रकृति के और मार्गी है-जो आया उसे उठाया और कोठार मे रखा- वाली कहावत के आप उदाहरण दिखाई देते हैं और जो कुछ थोड़ा-बहुत जैसा वैसा भी काम कर रहा हू उसकी कोई खास कद्र आपको है नहीं और आप सदैव- यह नहीं हुआ- वह नहीं हुआ के चाबक मुझे लगाते रहते हैं जो जरा मेरे जैसे अल्पंश और अल्प प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति के लिये आकर लगना स्वाभाविक है। पर मैं यह जरूर समझता हू कि आपका आशय तो ठीक है- उसमें विवेक की कमी है। मेरे लिये तो आशय ही ग्रहणीय है और उसी को नजर सामने रखकर मैं आपसे मान ममत्व भाव रखता हू और रखता रहूगा।

केवल अपनी मूर्खता भरी धुन के कारण उनके (प्रतियों) पीछे पड गया और न शरीर, न सम्मान, न खानपान, और आरोग्य-आनन्द आदि का ध्यान रैखा और न किसी के प्रोत्साहन या प्रशसा की आकाक्षा की। केवल स्वान्त सतोष की दृष्टि से-ज्ञानोपासना की दृष्टि से यह मजूरी करता रहा हू।

यहाँ पर कई ग्रन्थो का काम एक साथ चल रहा है उन सबके प्रूफादि देखने पडते हैं-रोज ३-३, ४-४, फर्मो के प्रूफ आते हैं उनका मूल से मिलान करना, ठीक करना आदि बडी झझट हैं। आपको इस काम के करने की तो कोई कल्पना है नहीं। यदि मेरे साथ दो महीने बैठकर इस काम का कुछ अनुभव कर ले तो फिर आपको ज्ञान होगा कि किस तरह काम किया जाता है। आप हर दफह लिखते रहते हैं कि यह छप गया होगा यह छप गया होगा परन्तु इस छपने मे किस तरह पिसना पडता है आकर देखिये और फिर कुछ ख्याल करिये- शरीर की इस क्षीण अवस्था में भी मैं १४-१४ घटे यहा पर काम कर रहा हू साथ मे अमृतलाल, लक्ष्मण, रसिकलाल, प्रो० भायाणी वगैरह भी हैं-परन्तु ये सब थक जाते हैं और मैं रात को १२-१२ बजे तक काम करता रहता हूं।

लिखते-लिखते थकसा गया हू और इसी बीच कई जनें आ गये। ३-४ बज रहे हैं मैं अपनी जगह से हिला तक नहीं हू- चाय भी यहीं बैठकर पी ली है- अब उठकर प्रेस मे जाना है- सो अब यहीं खतम करता हू। मैंने सहजभाव से जो मन मे आ गया सो लिख डाला आप उस पर कोई गौर नहीं करें-हम सगसनी जो रहे।

जयपुर
२१ ४. ५५

मेरी आखे अब दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही हैं इसलिये पत्रादि का लिखना कष्ट-सा प्रतीत होता रहता है। जो कुछ थोडा काम हो सकता है वह कुछ व्यवस्थात्मक और संपादनात्मक रहता है।

राजस्थान सरकार ने इस कार्यालय को जोधपुर ले जाना सोचा है- वहां पर इसके लिये नया भवन बनाने की योजना भी बनाई गई है और गत ता० १ अप्रैल को राष्ट्रपति के हाथों से उसका शिलान्यास भी किया गया है। मैंने तो गत फरवरी में सरकार को सूचित कर दिया था कि मैं अब इस कार्यालय के काम में अपना विशिष्ट योग देने में असमर्थ हो रहा हूँ अत मैं निवृत्त होना चाहता हूं पर मुख्यमंत्री जी ने विशेष अनुरोध किया कि अभी इस कार्यालय

के साथ–साथ विविध शास्त्रो, भाषाओ तथा लिपियों का भी अध्ययन किया जिससे पुरातत्व की ओर उनका विशेष झुकाव हुआ और इस सम्बंध मे कई गवेषणापूर्ण लेख भी उन्होंने लिखे। इनके द्वारा पुरातत्व तथा इतिहास के विद्वानो मे वह मुनि जिनविजय के नाम से एक जैन मुनि के रूप में प्रसिद्ध हुए। पुरातत्व की प्रेरणा उनको प्रसिद्ध जैन मुनि कान्तिविजय चतुरविजय तथा पुण्यविजय से मिली। प्रेरणा ही नहीं, इन विद्वानो का उनको सक्रिय सहयोग भी प्राप्त हुआ और सवत् १६७१–७२ में बडौदा निवास के समय उन्होंने अनेक ऐतिहासिक ग्रथों की शोध तथा सम्पादन का कार्य किया।

गवेषणा-कार्य

इन्हीं दिनों साहित्य–प्रेमी बडौदा नरेश श्री सयाजीराव गायकवाड ने गायकवाड ओरियन्टल सीरीज की स्थापना की जिसके प्रमुख कार्यकर्ता श्री चिमणलाल डाह्याभाई दलाल उनके घनिष्ट मित्र थे। इस सीरीज के अन्तर्गत मुनिजी ने कुमारपाल प्रतिबोध नामक वृहत्काय प्राकृत ग्रंथ का सम्पादन कुशलता से किया तथा कई भाषण भी दिए।

इसी समय पूना मे भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इस्टीट्यूट (प्राच्य विद्या शोध सस्थान) की स्थापना हुई। मुनि जिन विजय उसमे सहयोग देने लगे। उन्होने इस संस्थाको पचास सहस्त्र रूपये की सहायता भी दिलवाई। सवत् १६७५ मे भारतीय पुरातत्त्व सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन पूना में हुआ। इस अवसर पर विद्याप्रेमी तथा साहित्योपासक मित्रो को एकत्र कर उन्होने जैन साहित्य सशोधन समिति की स्थापना की और इसी नाम से एक वृहदाकार त्रैमासिक पत्रिका तथा ग्रथमाला का प्रकाशन किया किन्तु पर्याप्त आर्थिक सहायता न मिलने के कारण दो वर्ष पश्चात यह पत्रिका बन्द हो गई।

मुनि-वेश का त्याग

इसी समय उनका परिचय महात्मा गाधी तथा लोकमान्य तिलक से हुआ और उनके जीवन को एक नई प्रेरणा मिली। जिस मुनिवेष को उन्होने बाल्यकाल में मुग्धभाव से ग्रहण किया था, उसको उन्होने छोड दिया। इसके विषय में उन्होने लिखा है "अन्तर मे वास्तविक विराग न होने पर भी बाह्य वेश के विराग के कारण, लोगों द्वारा वन्दन–पूजनादि का सम्मान प्राप्त करने मे हमे एक प्रकार की वचना प्रतीत होती थी। इसलिए गुरूपद के भार से मुक्त होकर किसी सेवक पद का अनुसरण करने का हम मनोरथ कर रहे थे और अपनी मनोवृत्ति के अनुकूल सेवा का उपयुक्त क्षेत्र खोज रहे थे।" अन्त मे इस वेश का त्याग कर वह उससे मुक्त हुए और अध्ययन, अध्यापन और साहित्य सेवा का जीवन व्यतीत करने लगे। उन्होने इस वेश को त्याग दिया किन्तु उनका नाम यथावत् बना रहा। इसका स्पष्टीकरण करते हुए बीकानेर मे २८ अप्रैल सन् १६४१ को भाषण मे उन्होंने कहा था "मुझे सब लोग मुनिजिनविजयजी कहते हैं पर मैं अब इस नाम का अधिकारी नहीं हू क्योकि न तो मैं साधुओं का कर्मकाड ही पालता हू और न उनके वेश को ही धारण किये हुए हू। मैं तो आप सब लोगो जैसा एक सामान्य स्थितिवाला भाई और सेवक हू अत मैं अपने नाम के लिए आप सब लोगो का अपराधी हू। साधुवेश अपने गुरू को भेट करने के पश्चात् भी मेरा वही नाम 'मुनिजिनविजय' प्रसिद्ध बना रहा सो ठीक ही है। जिस प्रकार कोई मनुष्य कोट्याधिपति हो, उसका नाम सर्वत्र सुप्रसिद्ध हो और अगर उसका दिवाला भी निकल जाए तो भी नाम तो पहले का रहता है, नाम नहीं बदलता, अन्तर इतना हो जाता है कि वह राजा से रक हो जाता है। इसी प्रकार मेरा भी मुनि चरित्र पालने में दिवाला निकल गया है।"

जैन दृष्टि से यह व्याख्या भले ही ठीक हो, किन्तु वस्तुत मुनि जिनविजयजी आज भी अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं। वह अल्पभाषी है अत उनकी यह वृत्ति मौनधारण के ही समान है। वह निरन्तर एकाग्र चित्त होकर साहित्य की शोध मे रत हैं, इसके अतिरिक्त उनकी कोई रूचि नहीं, अन्य किसी भी प्रकार का सासारिक राग नहीं, इस दृष्टि से उन्होने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है।

से और उन्हीं को संचालक बनाकर राजस्थान पुरातत्व मन्दिर की स्थापना की इस मन्दिर ने थोडे ही समय मे जो कार्य किया है वह किसी पुरानी संस्था के लिए भी गौरव का विषय है। इस संस्था की ओर से राजस्थान पुरातत्व ग्रथमाला के अन्तर्गत अनेक छोटे–वडे ग्रथ वम्बई, अहमदाबाद, अजमेर, वाराणसी, पटना, तथा जयपुर आदि स्थानों से छपकर प्रकाशित हो रहे हैं। इस माला की दो श्रेणिया हैं– सस्कृत प्राकृत और राजस्थानी हिन्दी। इसके अतिरिक्त राजस्थान पुरातत्व ग्रथावली के प्रकाशन की भी योजना है जिसमे राजस्थान के ऐतिहासिक एव सास्कृतिक विषयो पर प्रकाश डालने वाले, अधिकारी विद्वानो द्वारा लिखे गये स्वतत्र ग्रथो का सकलन, सम्पादन तथा प्रकाशन होगा। मन्दिर की एक त्रैमासिक पत्रिका की भी योजना है।

मन्दिर का जो निजी पुस्तकालय है उसमे अनेक हस्तलिखित ग्रथ हैं जो ४००–५०० वर्ष प्राचीन हैं। इनमे वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, श्रुति, स्मृति, कर्मकाड धर्मशास्त्र, पुराण, काव्य, कोष, अलंकार, साहित्य, छद, ज्योतिष, वैद्यक तत्र, मत्र, स्तुति, स्तोत्र, आदि सस्कृत भाषा के प्राय सभी विषयो का समावेश है और इसके अतिरिक्त प्राचीन राजस्थानी, गुजराती तथा ब्रज भाषा की भी अनेक कृतिया हैं। राजस्थान सरकार के इस नूतन प्रतिष्ठान के कार्य के विषय में देश–विदेश के पुरातत्वविद् बहुत उत्कठित हैं।

किन्तु मुनि जिनविजयजी इस कार्य में अपना पूरा समय नही लगा सके। वह बम्बई की भारतीय विद्याभवन जैसी विश्वविख्यात सस्था के नियामक भी हैं। इसके अतिरिक्त सिंघी जैन ग्रथ माला के अर्तगत प्रकाशित होने वाले ग्रथो के सशोधन–सपादन का भार, बम्बई विश्वविद्यालय की पी–एच० डी० के छात्रो का मार्ग दर्शन, तथा चित्तौड के निकट स्थापित सर्वोदय साधना आश्रम की देखरेख आदि कार्यो के करने पर उनके पास राजस्थान पुरातत्व मन्दिर के हेतु समय ही कितना शेष रह सकता है? फिर भी वह मास कुछ काल तक बम्बई तथा कुछ काल तक जोधपुर रहकर अपनी साधना में लगे रहते हैं। शारीरिक शक्ति सीमित होते हुए भी वह कार्य में निरतर निमग्न रहते हैं।

मुनि जिनविजयजी स्वभाव से ही अत्यन्त सरल, निष्कपट तथा निरभिमानी हैं। वह खादी के वस्त्र पहनते हैं और साक्षात् त्याग मूर्ति प्रतीत होते हैं। शरीर से दुर्बल होते हुए भी वह प्रतिदिन निरतर प्रात ६ बजे से साय ६ बजे तक कार्य करते हैं उनकी व्यस्त दिनचर्या का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रात काल का समाचार पत्र सायकाल पढते है। वह सस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रश, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, बगला , लैटिन, जर्मन, फ्रैंच, तथा अग्रेजी के विद्वान हैं। उनकी इस असाधारण प्रतिभा से प्रभावित होकर ही भारत सरकार ने सविधान के गुजराती सस्करण के सपादन का भार उनको सौंपा था। इतनी भाषाओं के ज्ञाता होते हुए भी उनको हिन्दी से विशेष प्रेम है। वह राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रह चुके हैं।

उनकी साधना, असाधारण बहुमुखी प्रतिभा, विद्वत्ता तथा तपपूत जीवन को देखते हुए यह आशा की जाती है कि देश के अन्य विद्वानों की ही भाँति उन्हें 'पद्मश्री' या 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया जायेगा। देश के विद्वानों का भी यह कर्तव्य है कि उनको एक अभिनन्दन ग्रंथ भेट किया जाये। अभी से तैयारिया होनी आवश्यक हैं तभी उनको ७५ वर्ष की आयु पूर्ण होने पर (संवत२०२०मे) यह ग्रथ समर्पित किया जा सकता है।

दैनिक 'हिन्दुस्तान' नई दिल्ली
१४ जुलाई, १९६० ई०

" (सन् १९६० में इस लेख के प्रकाशित होने के पश्चात् मुनिजी को १९६१ मे भारत सरकार द्वारा "पद्मश्री" की उपाधि से अलंकृत किया गया और १९७१ मे " भारतीय पुरातत्व" नाम से उन्हें अभिनन्दन ग्रथ भेट किया गया।)

XXXX

असहयोग आन्दोलन के दिनो में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार के निमित्त अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की गई। उसी विद्यापीठ में प्राचीन साहित्य तथा इतिहास के अध्ययन के हेतु पुरातत्व मन्दिर का भी निर्माण किया गया। गांधी जी ने इसके आचार्य पद के लिए मुनि जिनविजय को ही सर्वाधिक उपयुक्त समझा और विशेष रूप से निमंत्रण देकर उनको बुलाया। महात्माजी की आज्ञा और अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप कार्यक्षेत्र पाकर वह अहमदाबाद विद्यापीठ में चले गये। वहां भी उन्होंने पुरातत्व विद्या मन्दिर ग्रंथावली का सूत्रपात किया तथा अनेक बहुमूल्य ग्रंथ प्रकाशित किए।

राष्ट्रीय संघर्ष में

लगभग आठ वर्ष तक पुरातत्व मन्दिर की सेवा करने के उपरान्त वह यूरोप की यात्रा पर निकल पड़े। इंग्लैंड तथा जर्मनी आदि देशो मे रह कर उन्होंने वहां की अनेक संस्थाओं का निरीक्षण किया और जर्मनी वालो के भारतीय संस्कृति प्रेम से वह बहुत प्रभावित हुये। अंग्रेजों तथा जर्मनों की तुलना करते हुए सन् १६४१ मे उन्होंने कहा था कि भारतीय संस्कृति पर जितना कार्य जर्मनों ने किया है, भारत पर राज्य करने वाले अंग्रेजो ने उनके मुकाबले कुछ नहीं किया। यूरोप के सामाजिक तथा औद्योगिक वातावरण को देखकर एक सजीव प्रवृति में संलग्न होने की तरंग उनके हृदय मे उठने लगी। कुछ समय बाद वह भारत लौट आए। लाहौर कांग्रेस के पश्चात् जब सत्याग्रह का सूत्रपात हुआ तब अन्य देश भक्तों के साथ साथ वह भी इसमें कूद पडे जिसके फल स्वरुप नासिक के कृष्ण–मन्दिर में उनको छः महीना निवास करना पड़ा। इस जेल प्रवास में उनको अपूर्व शान्ति का अनुभव हुआ। इस जेल यात्रा के पश्चात् श्री जमनालाल बजाज, श्री नरीमान, श्री रणछोड़ भाई तथा श्री मुंशी ने उनको पुनः जेलयात्रा न करने दी और साहित्य सेवा के लिए ही सदैव प्रेरित किया। अतः कारागार से मुक्त होते ही वह पुनः साहित्य–साधना में निरत हुए।

इसके बाद वह शान्ति निकेतन में सिंघी जैन ज्ञानपीठ के आचार्य पद पर नियुक्त हुए। विश्व भारती के ज्ञानमय वातावरण को अपने उपयुक्त समझ कर उन्होंने ज्ञानपीठ के संचालन का भार स्वीकार कर लिया। इसी ज्ञानपीठ से उन्होने सिंघी जैन ग्रंथ माला की भी स्थापना की जिसके अर्न्तगत कई महत्वपूर्ण साहित्यिक, दार्शनिक तथा ऐतिहासिक ग्रंथो का प्रकाशन हुआ। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर बम्बई विश्वविद्यालय ने उनको व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। इन व्याख्यानों को जिन लोगों ने सुना, सभी ने मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की। ये व्याख्यान ऐतिहासिक हैं और चालुक्य–कालीन गुजरात से सम्बंध रखते हैं।

इसी वर्ष गुजरात साहित्य सभा ने एक व्याख्यान मालाका आयोजन किया जिसका श्री गणेश उन्हीं के व्याख्यान से किया गया। "प्राचीन गुजरात के सांस्कृतिक इतिहास की साधन सामग्री" नामक उनका व्याख्यान विशेष उल्लेखनीय है। बड़ौदा नरेश ने उनको गुजराती ग्रंथकार सम्मेलन में " जैन धर्म " विषय पर भाषण देने को आमंत्रित किया। इसके पूर्व गुजराती साहित्य परिषद ने उनको इतिहास विभाग का प्रधान चुनकर सम्मानित किया। देश की प्रमुख शोध संस्था भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीटयूट के भी वह माननीय सदस्य है। उन्होंने "जैन साहित्य संशोधक" "पुरातत्व" तथा " भारतीय विद्या" नामक तीन पत्रिकाओ को जन्म दिया जिनका स्थान प्रथम श्रेणी की भारतीय पुरातत्व सम्बन्धी खोज– पत्रिकाओ में है।

राजस्थान में

बीकानेर में प्राचीन साहित्य का विशाल भंडार है किन्तु इस समय तक उसकी बड़ी दुर्व्यवस्था थी। आज से १५–१६ वर्ष पूर्व यहाँ एक अनुसंधान संस्था की स्थापना हुई, जिसने यहां के राजकीय पुस्तकालय के कुछ बहुमूल्य एवं अप्रकाशित ग्रंथ प्रकाशित करने का कार्य भी किया। किन्तु यह तो केवल दिशा की सूचना ही थी। राजस्थान राज्य की स्थापना के पश्चात् सरकार का भी ध्यान इस ओर गया। उसने मुनि जिनविजयजी को आमंत्रित करके उनके परामर्श

डॉ० एल.पी. तैस्सितोरी

उदीने (इटली) निवासी डॉ० एल.पी.तैस्सितोरी ने जैनधर्म, प्राचीन साहित्य की खोज, पुरातत्व - सम्बन्धी शोध कार्य, डिंगल भाषा के व्याकरण की रचना आदि के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सेवायें की हैं। १६१६ में देहावसान के पश्चात् लोग उन्हें लगभग विस्मृत ही कर बैठे थे जबकि १६५० के दशकों में राजस्थान के कुछ उत्साही तथा कर्मठ बुद्धिजीवियों ने उनको समुचित सम्मान देने का संकल्प लिया। इन्हीं में से एक हैं श्री हजारीमल बाँठिया जिन्होंने बीकानेर में उनकी समाधि को खोज निकालने, उस पर नवीन समाधि बनवाने, उनके बिखरे हुए साहित्य तथा अन्य सामग्री को संकलित एवं सुव्यवस्थित करने तथा संग्रहालय स्थापित कराने में तन,मन एवं धन सभी से सहयोग दिया। यही नहीं, उन्होंने उनकी प्रतिमा भी कानपुर के नानाराव पार्क में स्थापित करायी। श्री बाँठिया के इन समस्त कार्यों से प्रभावित होकर नवम्बर १६८७ में डॉ० तेस्सितोरी जन्म शताब्दी समारोह में तथा दूसरी बार सितम्बर १६६४ में इटली आमंत्रित किया गया। वहाँ इनका इटली के मेयर द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

उक्त तथ्यों से श्री हजारीमल बाँठिया का साहित्य, संस्कृति एवं समाज की सेवा का अदम्य उत्साह और समर्पण भाव प्रकट होता है। अगले पृष्ठों में डॉ. तैस्सितोरी विषयक श्री बाँठिया जी द्वारा रचित साहित्य पुनर्मुद्रित किया जा रहा है। साथ ही प्रस्तुत है कुछ अन्य महत्वपूर्ण विवरण।

- सम्पादक

डॉ० एल.पी. टैसीटोरी

भारतवर्ष के विदेशी भाषा–वैज्ञानिको मे डा० एल पी टैसीटोरी का प्रमुख स्थान है। राजस्थान मे आपका जन्म नहीं हुआ था, फिर भी आप राजस्थान के उज्ज्वल रत्न कहे जा सकते हैं। कर्नल टाड के बाद आप ही दूसरे व्यक्ति हैं जिन्होने राजस्थान को अपनी मातृभूमि के समान अपनाया – वहीं पर अपना प्रतिभाशाली कार्यक्षेत्र का श्रीगणेश किया और अन्त मे उसकी ही पवित्र रज में विलीन हो गये।

आप इटली देश के निवासी और भारतीय विशेषकर जैन और राजस्थान साहित्य एव सस्कृति के अनन्य प्रेमी थे। आपका जन्म ई सं १८८७ (स १९४५) में इटली के प्रसिद्ध नगर उदीने (Udine) मे हुआ। खेद है कि आपके जीवन चरित्र सम्बन्धी साधन हमे उपलब्ध नहीं हैं। यह हमारे लिए एक दुःख की बात है। डॉ टैसीटोरी जैसे महान् आत्मा का नाम राजस्थान के साहित्य के अमर इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। क्योंकि भारतीय वाङ्मय में आज डिंगल साहित्य को जो थोडा– बहुत स्थान प्राप्त है उसका अधिकतर श्रेय डॉ टैसीटोरी ही को है। इस लेख में आपके जीवन सबंधी जो झांकी दिखायी जा रही है वह उनके स्वय के लिखे २५ पत्रो के आधार पर (ता० ११ अप्रैल १९१३ से १६ दिसम्बर १९१६ तक के) जो उन्होने कुछ तो उदीने (इटली) से और कुछ भारत से विभिन्न स्थानो में रहते हुए शास्त्रविशारद जैनाचार्य्य स्व श्री विजयधर्मसूरिजी के नाम से लिखे थे, है।

आपने २१ वर्ष की आयु तक इटली की फ्लॉरेन्स यूनिवर्सिटी में अध्ययन किया। आप अंग्रेजी में एम ए थे। इटली मे रहते हुए ही फ्लोरेन्स यूनिवर्सिटी ने आपको पी–एच डी की डिग्री आपके तुलसीदास कृत रामायण पर लिखे हुए निबन्ध से प्रसन्न होकर प्रदान की थी।

आप साहित्यिक होने के साथ–साथ एक अच्छे सैनिक भी थे। ई सं १९११ में २३ वर्ष की आयु में आप मिलान की फौज मे सैनिक रूप से भर्ती हुए और वहा पर कुछ महीनों तक कार्य किया।

आप एक जबरदस्त भाषा–वैज्ञानिक थे। आपको भारतवर्ष की भाषाओ से बडा प्रेम था, विशेषतया राजस्थानी और गुजराती से। अपने देश में रहते हुए ही आपने अंग्रेजी, लेटिन, ग्रीक, संस्कृत और प्राकृत इन भाषाओ के सिवाय पुरानी गुजराती, नयी गुजराती, अपभ्रंश, राजस्थानी (मारवाडी) हिन्दी, डिंगल, ब्रज और उर्दू आदि कई भाषाओ का अभ्यास कर लिया था। आपने इन भाषाओ का अभ्यास सिर्फ ग्रन्थ पढने मात्र ही के लिए नहीं किया वरन् इन भाषाओ मे ठोस और गभीर कार्य करने के लिए किया था।

आप अपनी भाषा प्रवृत्ति के सबध मे ता० ६ ६ १३ के पत्र में इस प्रकार लिखते हैं – 'प्राकृत भाषा से मुझे बहुत शौक है। अपभ्रंश और वर्तमान मे प्रचलित भाषाओं का परस्पर क्या संबध है – इसका मैं अभ्यास कर रहा हू। यहा की फ्लारेन्स की लाइब्रेरी मे से पुरानी गुजराती की कुछ प्रतियां मिली हैं। इन पर से अपभ्रश द्वारा पुरानी गुजराती की मूल उत्पत्ति खोज निकालने का प्रयास कर रहा हू।" कितनी बडी जिज्ञासा! यह आपकी भारतीय–भाषाओं के प्रति पूर्ण अभिरुचि का ही समर्थक है।

आपने भारतीय भाषाओं का अभ्यास बिना किसी शिक्षक की सहायता से किया था। इसके संबंध में विजयधर्मसूरिजी से एक बार कहा था – "मेरे देश में मुझे किसी भी शिक्षक की सहायता तो मिली ही न थी, परन्तु एक मात्र पुस्तकों की सहायता से ही मैं भारतीय भाषाओं का अभ्यास कर सका हूं।" शिक्षक के साधन बिना सिर्फ पुस्तकों की सहायता से ही भारतीय भाषाओ का इतना गहन अध्ययन करना – यह आपके भारतीय भाषाओ के प्रति प्रेम, उत्साह तथा विलक्षण बुद्धि का परिचायक है। मुनि विद्याविजयजी के शब्दो में "मात्र ३१ वर्ष की आयु में इसने अपने देश में रहकर अभ्यस्त की हुई भाषायें, इसका साहित्य प्रेम तथा प्रवृत्ति देखते हुए यह कहना न होगा कि भारतवर्षीय भाषाओं के अभ्यासी पाश्चात्य विद्वानों मे उनका नम्बर सर्व प्रथम है।" ये शब्द आज से कई वर्ष पूर्व जबकि डॉ० टैसीटोरी भारत

अनुक्रम

आप आजन्म ब्रह्मचारी रहे – इसके संबंध मे आप इसी पत्र में लिखते हैं –

"मैं अभी तक क्वारा हूं। इस वक्त मैं २५ वर्ष का हूं। मैं भारतीय लडकी के सिवाय किसी दूसरी से शादी नहीं करूंगा।"

डॉ टैसीटोरी ने भारतीय भाषाओं (हिन्दी, मारवाडी, गुजराती) पर इतना आधिपत्य कर लिया था कि वे उदीने से प्राय पत्र हिन्दी मे ही लिखा करते थे। आप हिन्दी में पत्र लिखने व बोलने के बडे इच्छुक थे। एक समय आपने आचार्यश्री को सूचना की थी कि "आप मुझे जो पत्र लिखा करें वे गुजराती अथवा देवनागरी लिपि ही मे लिखा करें।"

डॉ० द्वारा लिखित हिन्दी पत्र का नमूना नीचे दिया जाता है –

गुरु महाराज!

जब आपका गुजराती मे लिखा हुआ पत्र मेरे हाथ आया, तब जो आनन्द मुझको हुआ वह किस तरह कहा जाय मैं तो यही कहूंगा कि मैं आपकी सहृदयता और सहायता के बदले ऐसा कृतज्ञ हो रहा हूँ कि कितना ही आग्रह करने पर भी मुझसे कोई यथोचित प्रतिकार कभी न हो सकेगा, ऐसा विचार मुझको करना पडा। मैं आपका बडा शुक्रमंद हूं।

इतना हीं मतलब हिन्दी में लिखकर आगे जो शेष है, सो अंग्रेजी मे लिखता हूँ क्योकि अभ्यास न होने से मुझको हिन्दी या गुजराती मे लिखना कठिन है। लेकिन मेरी यही आशा है कि जब मैं हिन्दुस्तान में हूगा, तब इन दोनो जबानो में जल्दी प्रवीण हूगा।

मासभक्षण के सबंध मे पूछते हुए आचार्य को आपने अपने १६ अक्टूबर १६१३ के पत्र मे लिखा कि हमारा ईसाई धर्म हमे यह सिखलाता है कि ईश्वर ने जो जीव जन्तु पैदा किये हैं वे मनुष्य की उपयोगिता व उसके लिए बनाये हैं, अत उन्हे खाना कोई पाप नहीं है। ४ वर्ष पूर्व मेरी फ्लॉरेन्स मे दो ब्राह्मणों से इसके बारे में चर्चा हुई थी। जिस पर मैंने एक वर्ष तक मासभक्षण करना छोड दिया था। इस दरम्यान मे मेरा स्वास्थ्य बहुत बिगडा तब वैद्यों ने मुझे जबरदस्ती मांस खाने के लिए प्रेरित किया। स्वास्थ्य सुधार के वास्ते मैंने ठीक समझा इसलिए फिर शुरु कर दिया है। मास खाना मेरी इच्छा के विरुद्ध है पर इस वक्त लाचार हूँ। जब मैं भारत मे आ जाऊगा तो आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अवश्य छोड दूंगा। मैं मास के नाम पर सिर्फ अडे ही खाता हूं, वह भी हफ्ते में २ व ३ बार ही।

आचार्यश्री ने डॉ० को अपनी संचालित "यशोविजय जैन पाठशाला", पालीताना" के अध्यापक के लिए आने को निमंत्रित भी किया था। पर कुछ शर्तो के कारण उसके लिए न आ सके।

आखिर सर ज्योंर्ज ग्रियर्सन की सिफारिश से भारतीय दफ्तर लन्दन ने बंगाल की एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता के लिए आपको भारत बुला लिया और आपको बार्डिक एण्ड हिस्टॉरिकल सर्वे ऑफ राजपूताना के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर नियुक्त कर दिया।

आप इटली (नेपल्स) से ता० २४ मार्च १६१४ को भारत के लिए रवाना हुए और ८ अप्रैल १६१४ के प्रात काल १० बजे आप बम्बई के तट पर जहाज से उतरे। आपके बम्बई के मित्र मि. S.R. *Harganhalli* ने आपका अपूर्व स्वागत किया और आपको बम्बई में अपने मित्र डॉ नादगर के घर पर ठहराया। आप अपने १२ अप्रैल के कलकत्ते से दिये गये पत्र में लिखते हैं "मैं इटली से भारत तक की १५ दिनों की यात्रा में बहुत थक गया। मैं जिस दिन बम्बई उतरा उससे पहली रात को मुझे नींद भी न आयी। बम्बई आने पर सारा दिन आराम किया, शाम को कई मित्रों से मुलाकात की।"

दूसरे दिन ता० ६ को सुबह बम्बई के बाजार से कुछ जरूरी चीजे खरीदकर दुपहर की १ बजे की गाडी से कलकत्ते के लिए रवाना होकर ता० ११ अप्रैल को प्रात काल ७ बजे कलकत्ते पहुंचे और आप कलकत्ते की कॉन्टीनेन्टल होटल में ठहरे। भारत में पैर रखते ही आपको आचार्यश्री के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा हुई पर सोसायटी ने आपको आज्ञा नहीं दी।

ही मे थे. 'बीसवीं सदी' के सम्पादक महोदय की सूचना से गुर्जर प्रजा के सम्मुख कहे थे।

डॉ० टैसीटोरी जैनाचार्य श्री विजयधर्मसूरिजी के पक्के भक्त व शिष्य थे। आपकी गुरु व जैन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप एक प्रकार से जैन–धर्म के अनुयायी थे। गुरुदेव की आज्ञा से इन्होंने राजस्थान में आकर मासभक्षण छोड दिया था – बिल्कुल शाकाहारी रह कर सादगी से जीवन बिताने लगे थे।

आप जैन साहित्य के बहुत प्रेमी थे। इस विषय में अगाध प्रेम व भावुकतावश सर्वप्रथम ता० ११ अप्रैल १९१३ को उदीने (इटली) से आचार्य विजयधर्मसूरिजी के नाम से प्रोफेसर जैकोबी के कहने से पत्र लिखा। उसमें आपने धर्मदास की "उपदेश माला" के संपादन करने व उसका इटली भाषा में अनुवाद करने की इच्छा प्रकट की तथा 'श्रेणिक की कथा' और जयवल्लभ के 'वज्जालग' के संपादन करने की भी अभिलाषा प्रकट की। पू आचार्य महाराज से सहायता प्राप्त करने के लिए आपने पत्र में लिखा है कि "मुझे पूरा यकीन है कि आप मेरा भारत के प्रति प्रेम विशेष कर जैन साहित्य से, –– को देखकर अवश्य सहायता करेंगे। कष्ट के लिए क्षमा करना।" और यह भी लिखा कि "मैं इस वक्त राजस्थानी भाषा का व्याकरण तैयार कर रहा हूं।"

इस पत्र के प्रत्युत्तर में आचार्य महाराज ने अपने पत्र ता० १२ मई १९१३ द्वारा डॉ० टैसीटोरी की अभिलाषाओ को पूर्ण किया और इन्हें "उपदेशमाला" व "श्रेणिक की कथा" की हस्तलिखित प्रतियें भेजी।

प्रतियो के लिए व सहायता के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हुए तारीख ६.६.१९१३ के पत्र मे डॉ. टैसीटोरी लिखते हैं – –"मेरी भारत आने की अतीव तीव्र उत्कंठा है। किन्तु भारत में कोई जीवन–निर्वाह का साधन न होने के कारण नहीं आ सकता। इसके लिए मैं "भारतीय दफ्तर" को प्रार्थना–पत्र भेजूंगा। अगर सफल हो गया तो शीघ्र ही आपके चरणारविंदों की पूजा करने के लिए आपके पास अवश्य आऊंगा। मैं हूं आपका आज्ञाकारी सेवक– एल. पी टैसीटोरी।"

उपर्युक्त पत्र के उत्तर के साथ आचार्य महाराज ने ता० ६.७.१९१३ को स्वयं लिखित पुस्तकें "अहिंसा दिग्दर्शन", "जैन दीक्षा", "जैन तत्व" आदि पुस्तकें भेजी।

इस पत्र का प्रत्युत्तर डॉ. टैसीटोरी ने ता० २३ जुलाई १९१३ को दिया जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है – "आपने बहुत सी वस्तुये जो मुझे भेंट की हैं उन सब में आपका फोटू बहुत पसंद आया है जो आपकी पुस्तक "अहिंसा दिग्दर्शन" में लगा हुआ है। निस्सन्देह मैं आपको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूं। आपकी शांत मूर्ति मेरे नेत्रों में स्थापित हो गयी है। जब कभी मैं आपके पत्र और पुस्तकें पढ़ता हूं या उनके बारे मे सोचता हूं तो झट आपकी शांत मूर्ति मेरे नेत्रों के सन्मुख आ उपस्थित होती है। मैं वास्तव में सोचता हूं कि आपके जैसा शांत एवं उदार पुरुष इस पृथ्वी पर कोई नहीं मिलेगा। मैं चाहता हूं कि मैं अपने आपको आपके अर्पण कर दूं।

"आपने कृपा कर भारत मे नौकरी कहां होनी चाहिए इसके संबंध मे पूछा सो ठीक। मैं अपनी नौकरी राजपूताना मे पसंद करूंगा क्योंकि मेरी मारवाड़ी और ढूंढाडी भाषाओं में काम करने की तीव्र उत्कंठा है। कहा जाता है कि इन भाषाओं का साहित्य बहुत विस्तृत क्षेत्र वाला और सभी विषयो का है। मेरा पक्का इरादा है कि मैं भी इन भाषाओं के लिए कुछ कर सकने में समर्थ होऊं तथा पुरानी ढूंढाडी भाषा का व्याकरण लिख सकूं जैसा कि मैंने पुरानी गुजराती के लिए किया है। राजस्थान और गुजरात की भाषाएं बहुत ही उपयोगी एवं सुन्दर हैं। मैं भारत आने के लिए लंदन के भारतीय दफ्तर को भारत में संभवतः राजपूताना के आस–पास किसी कालेज या स्कूल में लेटिन, ग्रीक और इटली भाषा के अध्यापक के लिए प्रार्थना–पत्र भेजूंगा। अगर मैं इसे प्राप्त करने में सफल हो गया तो शीघ्र ही भारत के लिए रवाना हो जाऊंगा।

"अगर ऐसा न हुआ तो मैं जयपुर के महाराज या अन्य किसी भारतीय नरेश को कोई मेरे स्थान के लिए लिखूंगा जिससे मेरी तुच्छ बुद्धि संपादन कर सकती है। मैं येनकेन प्रकारेण भारत मे भारतीय भाषाओं का अध्ययन करने के लिए आना चाहता हूं। मुझे अपनी मातृभाषा से भी अधिक प्यार भारतीय भाषाओं से है। बचपन से ही मुझे भारत के सपर्क में आने की अभिलाषा रही है और भारत को ही मैं अपने जीवन का प्रधान कार्यक्षेत्र समझता हूं।"

सन् १६१४ के सितम्बर की अंतिम तारीखो मे आप जोधपुर से बीकानेर को टूर पर आए। बीकानेर मे आपने वृहत् जैन खरतरगच्छीय आदि कई भंडारो का अवलोकन कर बहुत से नये ग्रन्थो की खोज की। अक्टूबर सन् १६१४ के पहले हफ्ते मे वापिस जोधपुर चले आये। इन्हीं दिनो आपने राजस्थानी गजलो आदि का अध्ययन किया।

८ जून १६१५ शुक्रवार को प्रात काल जोधपुर से रवाना होकर दोपहर २ बजे राणी नामक गाव मे गये और आचार्यश्री के दर्शन किए। इन्हीं दिनो रतलाम, बून्दी और कलकत्ता भी गये थे।

इसके उपरान्त आप बीकानेर की ओर चले आए और बीकानेर ही को अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य–स्थल बनाया और जीवन पर्यन्त तक बीकानेर ही मे रहे। अत मे इसी धूल ही मे अन्तर्ध्यान हो गये।

बीकानेर मे रह कर बीकानेर रियासत के प्रमुख गांवो और नगरो मे ऊँट की सवारी या पैदल ही घूमघूम कर पुराने शिलालेख, सिक्के, मूर्तिये आदि अनेक प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री का सग्रह किया। आपकी सामग्री सग्रह से ही बीकानेर का म्यूजियम बना है। बीकानेर मे पहले म्यूजियम नहीं था, परन्तु आपने इस खटकने वाले अभाव को अपने अथक परिश्रम द्वारा दूर कर दिया। आपने बीकानेर के अधिकतर गावो मे उष्णकाल मे धूल के टीयो पर पैदल या ऊटो की सवारी पर यात्रा की। आपको पैदल यात्रा करने का अत्यन्त शौक था। मुनि 'विद्याविजयजी लिखते हैं कि डॉ. टैसीटोरी जैसा विद्वान है वैसा ही मिलनसार तथा शात प्रकृति का भी है। पैदल मुसाफिरी करना इसे बहुत प्रिय है। आचार्य विजयधर्मसूरिजी महाराज जब मारवाड में विहार करते थे तब टैसीटोरी आचार्यश्री से मिलने के लिए आया था। उस समय सादडी से राणकपुर तक इसने मुसाफिरी आचार्यश्री के साथ पैदल चल कर ही की थी। इस यात्रा का उल्लेख इसने अंग्रेजी मे लिखे हुए आचार्यश्री के जीवनचरित्र मे इन शब्दो द्वारा किया है

"श्वेत वस्त्र धारण किये हुए शिष्य समूह के मध्य भाग मे आपके साथ मे रह कर यात्रा करते अरवली के जगलो मे आपके विहार के समय आपके साथ मैंने यात्रा की है।"

दिसम्बर सन् १६१६ के दिनो मे आप देशनोक, जांगलू (बीकानेर का सबसे पुराना गाव) व सुराणो की कुलदेवी के गाव मोरखाणे की ओर गए थे। ६ दिसम्बर १६१६ के दिन आपने जागलू के एक चारण के घर आतिथ्य स्वीकार किया था। आप राजस्थान की, खासकर बीकानेर जोधपुर के गरीब गावो मे रहने वाली किसान जनता से हिलमिल गये थे। आप जहा भी गाव मे जाते वहा गाव वाले आपका अपूर्व स्वागत छाछ दूध, दही और रबडी से करते थे। आपको इनसे अत्यन्त प्रेम था। आप अपने १० मई १६१४ के पत्र मे लिखते हैं – "जितना बन सकेगा मैं भारतीयो के हृदय मे मिलजुल जाऊगा– । मैं भारत मे इसलिये आया हू क्योकि मुझे भारत के लोगो व उनकी भाषा और साहित्य से प्रेम है। और इसीलिये मैं जितना भी ज्यादा इसके बारे मे जान सकूगा उतनी ही मुझे अधिक खुशी होगी।"

I am not an Englishman to look down upon all that is not English or at least European, I have the highest respect and admiration for the Indian people.

आप गावो के लोगो से मारवाड़ी मे ही बोलते थे और अमीर–गरीब सभी की करुण कहानी सुनते थे।

कितने दु ख की बात है कि बीकानेर के राजकीय इतिहास की सारी सामग्री (सिक्के शिलालेख) डॉ टैसीटोरी की सग्रह की हुई है जिसका सारा उपयोग और उसी के आधार से श्रद्धेय ओझाजी ने बीकानेर का इतिहास लिखा है। इस पर ओझाजी ने इस महान पुरुष का जिसने राजस्थान की अमर सेवा की है उसका बीकानेर के इतिहास मे नाम तक नहीं दिया। कितनी उपेक्षा! इनका नाम तो राजस्थानके इतिहास मे मोटे अक्षरों मे लिखा होना चाहिये था।

डॉ० टैसीटोरी को जैनधर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। भारत में आकर और इटली मे रहते हुए भी जैन धर्म के ग्रन्थो का गहन अध्ययन किया था। डॉ ने उपदेशमाला, भववैराग्यशतक तथा इंद्रिय पराजय शतक का इटालियन भाषा में भाषान्तर कर छपाया। "श्रेणिक की कथा" जिनमाणिक्यसूरि कृत कुम्मापुत्तचरा, नेमिचन्द्रकृत "सट्ठिसयं" सोमसूरि कृत "पज्जता सहणं" "पुण्याश्रावक कथा कोष", कल्याण मंदिर स्तोत्र, परमज्योति स्तोत्र, गौडी पार्श्वस्तोत्र आदि कई जैनधर्म के सूत्रों व जैन विद्वानो के लिखित ग्रन्थो का आलोचनात्मक संपादन भी किया था। एक तरह से आचार्यश्री के सत्संग से जैन श्रावक हो गये थे। श्रावक के ८ अणुव्रत का पालन करते थे। इतना होते हुए भी उन्हें अपने

आपने कलकत्ता में आकर सोसायटी के सेक्रेटरी को राजपूताने की ओर शोध कार्य के लिए जाने की प्रार्थना की। पर गर्मी के दिन होने के कारण उन्होंने आज्ञा नहीं दी। आखिर कई महीनों के बाद ता० २२ जुलाई १९१४ की शाम को अपने प्रियतम राजस्थान की ओर प्रस्थान किया – जिसके वे स्वप्न वर्षों से देख रहे थे आखिर सफल हुआ। रास्ते मे २ दिन जयपुर में सर इलीयट कॉडविन पॉलीटिकल एजन्ट के पास ठहरे और राजपूताना में भ्रमण का आज्ञा पत्र लिया और ता० २६ अप्रैल को जोधपुर मे महाराजा के सोजाती गेट गेस्ट हाउस मे ठहरे।

राजस्थान मे आकर आपने आचार्य की आज्ञा से मांसभक्षण करना बिलकुल छोड़ दिया। पं विश्वेश्वरनाथ जी ने, जो आचार्यश्री के भक्तो मे से एक हैं आपके लिए भारतीय भोजन का प्रबन्ध करा दिया। अब आपने राजस्थान मे भ्रमण करने का प्रोग्राम बनाया।

आपने जोधपुर से ता० २८ जुलाई १९१४ को पत्र लिखा उसमे लिखा कि मै १०–१५ दिन जोधपुर से एक इंच भी नहीं हटूंगा – इसके बाद आपके दर्शनों के वास्ते एरिनपुरा आऊँगा। मुझे जयपुर से भी अधिक सुन्दर नगर जोधपुर पसंद आया है। मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी सारी जिन्दगी यहीं जोधपुर में बिता दूं।"

जोधपुर १५ दिन करीब ठहर कर आप आचार्य श्री के दर्शनों के वास्ते एरिनपुरा गये। यह आपकी सर्वप्रथम मुलाकात थी। जिन आचार्यश्री के दर्शनों के वास्ते आपकी वर्षो से उत्कंठा थी, सफल हुई। आप आचार्यश्री के पास ५–७ दिन तक ठहरे। आपके हृदय पर आचार्यश्री के दर्शनों की बहुत गहरी छाप पड़ी। आप आचार्य श्री के दर्शन व मुलाकात कर ता० १७ अगस्त १९१४ को प्रातःकाल १० बजे वापिस जोधपुर चले आये। ता० १९ अगस्त १९१४ को आपने आचार्यश्री के पास निम्न आशय का पत्र हिन्दी में लिखकर भेजा – उसका कुछ नमूना यह है –

मुनि महाराज!

मै परसो दस बजे कुशलता पूर्वक जोधपुर पहुँच गया हूँ। आपने और आपके पट्टशिष्य श्री इन्द्रविजय उपाध्यायजी ने तथा श्रावक लोगों ने मेरा जो आतिथ्य व सत्कार किया, उसके लिए मैं आपको और आपके संबंधी सब लोगो को अन्तःकरण से कोटिश धन्यवाद अर्पण करता हूँ।

आपके दर्शन से मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ, उसे लिख कर प्रगट नहीं कर सकता उसका हृदय ही अनुभव कर सकता है। मेरी यह अभिलाषा है कि फिर बहुत शीघ्र ही आपका दर्शन कर कृतार्थ होऊंगा।

आपका आज्ञाकारी भक्त,

L.P.Tessitory

जोधपुर मे रहकर आपने जगह–जगह भ्रमण कर सब हस्तलिखित भंडारो को देखा। सब Bardic (जैन व अजैन) ग्रन्थों का अवलोकन कर नोट्स तैयार किये। भंडारो को देखने में आपको बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर आप अध्यवसायी,परिश्रमी व धुन के पक्के थे। जिस काम को करने बैठते उसे सम्पूर्ण कर छोड़ते थे। राजपूताने की गर्म जलवायु जो एक यूरोपियन को असह्य है – चिलचिलाती धूप में जब सारे लोग अपने घरो मे खस के टट्टों को बांधे पड़े रहते है उस वक्त भी आप पैन और कागज लेकर रिसर्च वर्क के लिए निकलते थे। आप १९१४ सितम्बर के शुरु में नागौर मैं भंडार देखने के लिए गये। पर वहां आपको जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा वह आप अपने ता० १३.९.१९१४ के पत्र में लिखते हैं – "मैं परसों ही नागौर गया था। जाने का सबब यह था कि नागौर मे दिगम्बरो का एक बड़ा भंडार है जिसमे अंदाजन १० हजार पुस्तकें हैं – ऐसा सुनने मे आया था और यह भी सुना था कि वह भंडार सदाई बंद रहता है और उसका अधिकारी भट्टारक जो है, सो भंडार खोलने की इन्कार दे रहा है। इस वास्ते जोधपुर दरबार के हुकुम की चिट्ठी लेकर उधर गया था, परन्तु राज्य के हुकुम होने पर भी उस भट्टारक ने कुछ नहीं दिखलाया। अफसोस की बात है कि इतनी पुस्तक कि बेशक प्राचीन और अमूल्य हैं कीड़ों का भोजन होने वाली हैं।"

आपका आज्ञाकारी भक्त

L.P.Tessitory

खेद है कि इस नर रत्न का केवल ३१ वर्ष की आयु में ही राजपूताना की असह्य जलवायु के कारण जुखाम होकर बीकानेर में वि० सं० १६७५ शीतकाल मे स्वर्गवास हो गया।

आपके माता पिता को आपके देहान्त से अत्यन्त दुःख हुआ क्योकि आपके भारत आने के बाद आपका छोटा भाई सन् १६१५ में जो सेना में सैनिक था पर्वत से गिर कर मर गया था।

आपकी याद मे सारा राजस्थान भरपेट रोया। पर आप अमर हैं। अगर आप थोडे वर्ष और जीते रहते तो न मालूम राजस्थान के लिए क्या-क्या अमूल्य सेवाये कर जाते। ईश्वर इच्छा के आगे कुछ नहीं चलता। ये शब्द आपने अपने छोटे भाई की मृत्यु पर आचार्य श्री को लिखे थे।

"राजस्थान भारती" त्रैमासिक, बीकानेर
भाग ३ - अक १
अप्रैल १६५०

⌘ ⌘ ⌘
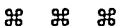
डा0 टैसीटोरी पर जैन - मत का प्रभाव

डॉ० टैसीटोरी जैनाचार्य श्री विजयधर्मसूरिजी के पक्के भक्त व शिष्य थे। उनकी अपने गुरु व जैन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। वे एक प्रकार से जैन-धर्म के अनुयायी थे। गुरुदेव की आज्ञा से इन्होने राजस्थान मे आकर मांस- भक्षण छोड दिया था। बिलकुल शाकाहारी रह कर सादगी से जीवन बिताने लगे थे।

वे जैन साहित्य के बहुत प्रेमी थे। इस विषय में अगाध प्रेम व भावुकतावश उन्होंने सर्व प्रथम ता० ११ अप्रेल. १६१३ को उदीने (इटली) से आचार्य विजयधर्मसूरिजी के नाम से प्राफेसर जैकोबी के कहने से पत्र लिखा। उसमें उन्होने धर्मदास की " उपदेश माला" के सपादन करने व उसका इटली भाषा मे अनुवाद करने की इच्छा प्रकट की तथा 'श्रेणिक की कथा' और जय वल्लभ के 'वज्जालग' के सम्पादन करने की भी अभिलाषा प्रकट की। पू० आचार्य महाराज से सहायता प्राप्त करने के लिये उन्होने पत्र मे लिखा है कि "मुझे पूरा यकीन है कि आप मेरा भारत के प्रति प्रेम. विशेष कर जैन साहित्य से.- को देखकर अवश्य सहायता करेंगे। कष्ट के लिये क्षमा करना।" और यह भी लिखा कि " मैं इस वक्त राजस्थानी भाषा का व्याकरण तैयार कर रहा हूँ।

इस पत्र के प्रत्युत्तर में आचार्य महाराज ने अपने पत्र ता० १२ मई. १६१३ द्वारा डॉ० टैसीटोरी की अभिलाषाओ को पूर्ण किया और इन्हे "उपदेशमाला" व "श्रेणिक की कथा" की हस्त लिखित प्रतिया भेजी।

प्रतियो के लिये व सहायता के लिये हार्दिक धन्यवाद देते हुए तारीख ६-६-१६१३ के पत्र मे डॉ० टैसीटोरी लिखते हैं - " मेरी भारत आने की अतीव तीव्र उत्कंठा है। किन्तु भारत मे कोई जीवन निर्वाह का साधन न

धर्म ईसाईमत से भी काफी प्रेम था। उपदेशमाला व भववैराग्यशतक का भाषान्तर बहुत ही महत्व का किया है।

डॉ० टैसीटोरी की रग-रग मे राजस्थान के प्रति प्रेम व प्यार भरा था। उन्होने डिंगल-साहित्य की अपूर्व साहित्यिक सेवा की है। यह डॉक्टर टैसीटोरी ही का कार्य था जिसके कारण भारत के सिवाय यूरोप के अन्य विद्वानों के हृदय मे भी डिंगल साहित्य को स्थान मिला। आपने डिंगल साहित्य के तीन महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन किया जो बंगाल की एशियाटिक सोसायटी की ओर से प्रकाशित हुए हैं। वे ये है –

१ छंद राउ जइतसी रो।

२ वचनिका राठोड़ रतनसिंह जी महेसदासोत रिडिया जगा री कही।

३ वेली क्रिसन रूकमणी री।

इन ग्रन्थों के सुसंपादन के साथ-साथ महत्वपूर्ण भूमिकाए भी लिखी है जिनसे कवियो के जीवन भाषा, ऐतिहासिकता आदि पर पूरा प्रकाश पडता है। ये ग्रन्थ डिंगल-साहित्य की अमूल्य निधि हैं। ये ग्रन्थ सोसायटी की ओर से बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ राजपूताना के वॉल्यूम्स के अन्तर्गत प्रकाशित हुए है। डिंगल साहित्य मे आपकी गहरी पहुँच थी। आपकी सपादन-शैली अद्वितीय, नपी-तुली और प्रमाणिक है। भारत मे आकर आपने सर्वप्रथम डिंगलकोष का पूरी तरह से मनन किया था।

आपने राजस्थान मे रहकर जो भी खोज-शोध का कार्य किया उस किये कार्य को सन् १९१४, १९१५, १९१६ व १९१७ ई० की चार रिपोर्टों मे सोसायटी ने प्रकाशित किया।

इस तरह राजस्थान की अमर सेवा कर आप ऊपरी अधिकारियो के तथा भारतीयो के बहुत प्रिय तथा कृपाभाजन बन गये थे।

आप यथावकाश प्रसंगोपात साहित्यिक सभाओं मे भी निरन्तर भाग लेते रहते थे। गुजराती साहित्य परिषद सूरत के अधिवेशन मे आपके भेजे हुए लेखो ने साक्षरो के बीच जो चर्चा का कारण उपस्थित किया था, वह किसी से भी अज्ञात नहीं है।

इनके अलावा आपने बीसों राजस्थानी, जैन आदि विषयों पर साहित्यिक लेख भी लिखे थे जो इटली के जर्नलो मे व इण्डियन एन्टीक्वेरी आदि प्रसिद्ध ऐतिहासिक पत्रिकाओं मे छपे थे।

आपके लिखित यथाज्ञात लेखो की सूची हम नीचे देते हैं –

इण्डियन एन्टिक्वेरी मे –

रामचरितमानस और रामायण वा ४१ पृ २७३

" " वॉ ४२ पृ १

परमज्योतिरस्तोत्र वॉ ४२ पृ ४२

टू जैन वर्जन्स आफ धी स्टोरी आफ सोलोमन्स जजमेंट वॉ ४२ पृ १४८

पश्चिमी पुरानी राजस्थानी व्याकरण वॉ ४३, ४४

नासकेतरी कहानी Journal of R.S.O. of Rome.

करकण्डु की कहानी G.S.A.G. फ्लोरेन्स के जर्नल मे

भववैराग्यशतकम् – किसी इटालियन पत्र में आदि आदि।

आप अच्छे सम्पादक, संग्राहक और लेखक के साथ-साथ अच्छे समालोचक भी थे। आपने आ० विजय धर्म सूरिजी की "अहिंसा दिग्दर्शन" आदि कई पुस्तकों की इटालियन भाषा मे समालोचना करके जेर्नल सोसायटिका एशियाटिका इटालियना के पत्रों मे प्रकाशित की। इसके अलावा आपने कई लेख व ग्रन्थ संपादन किये जो हमें अज्ञात हैं।

संक्षिप्त में आप राजस्थान के होनहार साहित्यिक रत्न थे। आप राजस्थानी साहित्य के इतिहास मे अमर रहेगे।

इतना ही मतलब हिन्दी मे लिखकर आगे जो शेष है, सो अंग्रेजी मे लिखता हूँ क्योंकि अभ्यास न होने से मुझको हिन्दी या गुजराती में लिखना कठिन है। लेकिन मेरी यही आशा है कि जब मैं हिन्दुस्तान मे हूँगा, तब इन दोनों जबानो मे जल्द प्रवीण हूँगा।

मास-भक्षण के संबंध में पूछते हुये आचार्यश्री को उन्होने अपने १६ अक्टूबर १६१३, के पत्र में लिखा कि "हमारा ईसाई धर्म हमें यह सिखलाता है कि ईश्वर ने जो जीवजन्तु पैदा किये है वे मनुष्य की उपयोगिता व उसके लिये बनाये हैं, अत उन्हे खाना कोई पाप नहीं है। ४ वर्ष पूर्व मेरी फ्लोरेन्स मे दो ब्राह्मणो से इसके बारे मे चर्चा हुई थी। जिस पर मैंने १ वर्ष तक मांसभक्षण करना छोड दिया था। इस दरम्यान मे मेरा स्वास्थ्य बहुत बिगडा तब वैद्यो ने मुझे जबरदस्ती मास खाने के लिये प्रेरित किया। स्वास्थ्य सुधार के वास्ते मैंने ठीक समझा, इसलिये फिर शुरू कर दिया है। मास खाना मेरी इच्छा के विरूद्ध है पर इस वक्त लाचार हूँ। जब मै भारत मे आजाऊगा तो आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अवश्य छोड दूगा। मैं मांस के नाम पर सिर्फ अडे ही खाता हूँ, वह भी हफ्ते में २ व ३ बार ही।'

आचार्यश्री ने डॉ० को अपनी संचालित "यशोविजय जैन पाठशाला, पालीताना" के अध्यापक के लिए आने को निमन्त्रित भी किया था पर कुछ शर्तो के कारण उसके लिये न आ सके।

आखिर सर ज्यॉर्ज ग्रियर्सन की सिफारिश से भारतीय दफ्तर लन्दन ने बंगाल की एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता के लिये उन्हे भारत बुला लिया और उन्हें बार्डिक एण्ड हिस्टॉरिकल सर्वे ऑफ राजपूताना के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर नियुक्त कर दिया।

वे इटली (नेपल्स) से ता० २४ मार्च, १६१४ को भारत के लिये रवाना हुये और ८ अप्रैल,१६१४ के प्रात काल १० बजे बम्बई के तट पर जहाज से उतरे और उनके बम्बई के मित्र मि० S.R. Harganhalli ने उनका अपूर्व स्वागत किया और उनको बम्बई मे उनके मित्र डॉ० नादगर के घर पर ठहराया। उन्होने अपने १२ अप्रैल के कलकत्ते से दिये गये पत्र मे लिखते हैं "मैं इटली से भारत तक की १५ दिनों की यात्रा मे बहुत थक गया। मैं जिस दिन बम्बई उतरा उससे पहली रात को मुझे नींद भी न आई। बम्बई आने पर सारा दिन आराम किया शाम को कई मित्रों से मुलाकात की।'

दूसरे दिन ता० ६ को सुबह बम्बई के बाजार से कुछ जरूरी चीजे खरीदकर दुपहर की १ बजे की गाडी से कलकत्ते के लिये रवाना होकर ता० ११ अप्रैल को प्रात काल' ७ बजे कलकत्ते पहुंचे और कलकत्ते की कॉन्टीनेन्टल होटल मे ठहरे। भारत मे पैर रखते ही उनको आचार्यश्री के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा हुई पर सोसायटी ने उनको आज्ञा नहीं दी।

उन्होने कलकत्ते मे आकर सोसायटी के सेक्रेटरी को राजपूताने की ओर शोध कार्य के लिए जाने की प्रार्थना की पर गर्मी के दिन होने के कारण आज्ञा नहीं दी गई। आखिर कई महानो के बाद ता० २२ जुलाई, १६१४ की शाम को अपने प्रिय राजस्थान की ओर प्रस्थान किया-जिसके स्वप्न वे वर्षो से देख रहे थे, आखिर सफल हुआ। रास्ते मे दो दिन जयपुर सर इलीयट कॉडविन पॉलीटिकल एजेन्ट के पास ठहरे और राजपूताना में भ्रमण का आज्ञापत्र लिया और ता० २६ अप्रैल को जोधपुर में महाराजा के सोजाती गेट गेस्ट हाउस में ठहरे।

राजस्थान में आकर उन्होंने आचार्यश्री की आज्ञा से मांस-भक्षण करना बिलकुल छोड दिया। पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी ने जो आचार्यश्री के भक्तो मे से एक हैं इनके लिये भारतीय भोजन का प्रबन्ध करा दिया। अब उन्होंने राजस्थान मे भ्रमण करने का प्रोग्राम बनाया।

उन्होंने जोधपुर से ता०२८ जुलाई, १६१४ को पत्र लिखा उसमे लिखा कि "मैं १०-१५ दिन जोधपुर से एक इंच भी नहीं हटूंगा-इसके बाद आपके दर्शनो के वास्ते एरिनपुरा आऊगा। मुझे जयपुर से भी अधिक सुन्दर नगर जोधपुर पसन्द आया है। मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी सारी जिन्दगी यहीं जोधपुर में बितादूं।"

जोधपुर १५ दिन करीब ठहर कर वे आचार्यश्री के दर्शनों के वास्ते एरिनपुरा गये। यह उनकी सर्वप्रथम मुलाकात थी। जिन आचार्यश्री के दर्शनों के वास्ते उनकी वर्षो से उत्कंठा थी, सफल हुई। वे आचार्यश्री के

होने के कारण नहीं आ सकता। इसके लिये मै "भारतीय दफ्तर" को प्रार्थना पत्र भेजूँगा। अगर सफल हो गया तो शीघ्र ही आपके चरणारविंदो की पूजा करने के लिये आपके पास अवश्य आऊँगा। मै हूँ आपका आज्ञाकारी सेवक– एल० पी० टैसीटोरी"।

उपर्युक्त पत्र के उत्तर के साथ आचार्य महाराज ने ता० ६-७-१६१३ को स्वय लिखित पुस्तकें " अहिंसा दिग्दर्शन", "जैन दीक्षा", "जैन तत्व" आदि पुस्तके भेजी।

इस पत्र का प्रत्युत्तर डॉ० टैसीटोरी ने ता० २३ जुलाई, १६१३ को दिया जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है।–"आपने बहुत सी वस्तु जो मुझे भेंट की हैं उन सब मे आपका फोटू बहुत पसन्द आया है जो आपकी पुस्तक "अहिंसा दिग्दर्शन" मे लगा हुआ है। निस्सन्देह मैं उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। आपकी शांत मूर्ति मेरे नेत्रो मे स्थापित हो गई है। जब कभी मैं आपके पत्र और पुस्तके पढता हूँ या उनके बारे मे सोचता हूँ तो झट आपकी शात मूर्ति मेरे नेत्रों के सम्मुख या उपस्थित होती है। मै वास्तव मे सोचता हूँ कि आपके जैसा शांत एवं उदार पुरूष इस पृथ्वी पर कोई नहीं मिलेगा। मैं चाहता हूँ कि मै अपने आपको आपके अर्पण कर दूं।"

"आपने कृपा कर भारत में मेरी नौकरी कहां होनी चाहिये इसके सम्बन्ध में पूछा सो ठीक। मै अपनी नौकरी राजपूताना मे पसंद करूगा क्योंकि मेरी मारवाड़ी और ढूढाडी भाषाओं मे काम करने की तीव्र उत्कण्ठा है। कहा जाता है कि इन भाषाओ का साहित्य बहुत विस्तृत–क्षेत्र वाला और सभी विषयो का है। मेरा पक्का इरादा है कि मैं भी इन भाषाओं के लिये कुछ कर सकने मे समर्थ होऊ तथा पुरानी ढूढाडी भाषा का व्याकरण लिख सकूं जैसा कि मैने पुरानी गुजराती के लिये किया है। राजस्थान और गुजरात की भाषाये बहुत ही उपयोगी एवं सुन्दर हैं। मै भारत मे आने के लिये लदन के भारतीय दफ्तर को भारत मे सम्भवत राजपूताना के आस–पास किसी कालेज या स्कूल मे लेटिन ग्रीक और इटली भाषा के अध्यापक के लिये प्रार्थना पत्र भेजूंगा। अगर मैं इसे प्राप्त करने मे सफल हो गया तो शीघ्र ही भारत के लिये रवाना हो जाऊगा।"

"अगर ऐसा न हुआ तो मैं जयपुर के महाराज या अन्य किसी भारतीय नरेश को कोई, मेरे स्थान के लिये लिखूगा जिसको मेरी तुच्छ बुद्धि सपादन कर सकती है। मै येन–केन प्रकारेण भारत मे भारतीय भाषाओं का अध्ययन करने के लिये आना चाहता हूँ मुझे अपनी मातृभाषा से भी अधिक प्यार भारतीय भाषाओ से है। बचपन से ही मुझे भारत के सम्पर्क मे आने की अभिलाषा रही है और भारत को ही मै अपने जीवन का प्रधान कार्यक्षेत्र समझता हूँ।"

वे आजन्म ब्रह्मचारी रहे–इसके सम्बन्ध मे उन्होने एक पत्र में लिखा है–

"मै अभी तक क्वारा हूँ । इस वक्त मे २५ वर्ष का हूँ। मै भारतीय लड़की के सिवाय किसी दूसरी से शादी नही करूंगा।"

डॉ० टैसीटोरी ने भारतीय भाषाओं (हिन्दी, मारवाडी, गुजराती) पर इतना अधिकार कर लिया था कि वे पसीने से प्राय पत्र हिन्दी में ही लिखा करते थे। वे हिन्दी मे पत्र लिखने व बोलने के बड़े इच्छुक थे। एक समय उन्होंने आचार्यश्री को सूचना दी थी कि "आप मुझे जो पत्र लिखा करें वे गुजराती अथवा देवनागरी लिपि ही मे लिखा करे।

डॉ० द्वारा लिखित हिन्दी पत्र का नमूना नीचे दिया जाता है–

गुरु महाराज !

जब आपका गुजराती में लिखा हुआ पत्र मेरे हाथ आया, तब जो आनन्द मुझको हुआ वह किस तरह कहा जाय ? मैं तो यही कहूँगा कि मै आपकी सहृदयता और सहायता के बदले ऐसा कृतज्ञ हो रहा हूँ कि कितना ही आग्रह करने पर भी मुझसे कोई यथोचित प्रतिकार कभी न हो सकेगा, ऐसा विचार मुझको करना पड़ा। मै आपका बड़ा शुक्रमंद हूँ।

या ऊटो की सवारी पर यात्रा की। उनको पैदल यात्रा करने का अत्यन्त शौक था। मुनि विद्याविजयजी¹ लिखते है कि डा० टैसीटोरी जैसा विद्वान वैसा ही मिलनसार तथा शान्त प्रकृति का भी है। पैदल मुसाफिरी करना इसे बहुत प्रिय है। आचार्य विजयधर्मसूरिजी महाराज जब मारवाड मे विहार करते थे तब टैसीटोरी आचार्यश्री से मिलने के लिए आया था। उस समय सादडी से राणकपुर तक इसने मुसाफिरी आचार्यश्री के साथ पैदल चल कर ही की थी। इस यात्रा का उल्लेख इसने अग्रेजी मे लिखे हुए आचार्यश्री के जीवनचरित्र मे इन शब्दों द्वारा किया है

"श्वेत वस्त्र धारण किए हुए शिष्य समूह के मध्य भाग में आप के साथ मे रह कर यात्रा करते अरवली के जगलो मे आपके विहार के समय आपके साथ मैंने यात्रा की है।"

दिसम्बर सन् १६१६ के दिनों मे वे देशनोक, जागलू (बीकानेर का सबसे पुराना गाव) व सुराणो की कुलदेवीके गाव मोरखाणे की ओर गये थे। ६ दिसम्बर १६१६ के दिन उन्होने जांगलू के एक चारण के घर आतिथ्य स्वीकार किया था। वे राजस्थान की खास कर बीकानेर, जोधपुर के गरीब गावो में रहने वाली किसान जनता से हिलमिल गये थे। वे जहा भी गावो मे जाते वहा गाव वाले उनका अपूर्व स्वागत छाछ, दूध, दही और राबडी से करते थे। आपको इनसे बहुत प्रेम था। आप अपने १० मई ,१६१४ के पत्र में लिखते हैं–"जितना बन सकेगा मे भारतीयो के हृदय मे मिलजुल जाऊगा। मैं भारत मे इसलिये आया हूँ, क्योकि मुझे भारत के लोगो व उनकी भाषा और साहित्य से प्रेम है और इसीलिए मैं *जितना भी ज्यादा इसके बारे मे जान सकूंगा उतनी ही मुझे अधिक खुशी होगी।"*

I am not an Englishman to look down upon all that is not English or at least European' I have the highest respect & admirataion for he Indian people.

वे गावो के लोगो से मारवाडी में ही बोलते थे और अमीर–गरीब सभी की करुण कहानी सुनते थे। बीकानेर के राजकीय इतिहास की सारी सामग्री (सिक्के, शिलालेख)डा० टैसीटोरी की सग्रह की हुई है।

डा० टैसीटोरी को जैनधर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। भारत मे आकर और इटली मे रहते हुए भी जैनधर्म के ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया था। डा० ने उपदेशमाला, भववैराग्यशतक तथा इद्रिय पराजय शतक का इटालियन भाषा मे भाषान्तर कर छपाया। "श्रेणिक की कथा" जिन माणिक्य कृत कुम्भापुत्तकहा, नेमिचदकृत "सट्ठिसय" सोमसूरिकृत "पज्जता रहण" "पुण्याश्रव कथा कोष", कल्याण मदिर स्तोत, गौडीपार्श्वस्तोत्र आदि कई जैनधर्म के सूत्रो व जैन विद्वानो के लिखित ग्रन्थो का आलोचनात्मक सपादन भी किया था। एक तरह से आचार्यश्री के सत्सग से वे जैन *श्रावक हो गये थे। श्रावक के ८ अणुव्रतो का वे पालन करते थे।* उन्होंने उपदेशमाला व भववैराग्यशतक का भाषान्तर बहुत ही महत्व का किया है।

"सयुक्त राजस्थान" जयपुर
वर्ष ६, सख्या ४
नवम्बर, १९५६

●●●

---

१ आप श्री विजयधर्मसूरिजी के शिष्य हैं। आपको भी आचार्यश्री के साथ डा० टैसीटोरी के सम्पर्क मे आने का मौका मिला था।

पास ५–७ दिन तक ठहरे। उनके हृदय पर आचार्यश्री के दर्शनो की बहुत गहरी छाप पड़ी। वे, आचार्यश्री के दर्शन व मुलाकात कर ता० १७ अगस्त, १९१४ को प्रातःकाल १० बजे वापिस जोधपुर चले आये। ता० १९ अगस्त,१९१४ को उन्होंने आचार्यश्री के पास निम्न आशय का पत्र हिन्दी मे लिखकर भेजा, उसका कुछ नमूना यह है –

मुनि महाराज !

मैं परसों दस बजे कुशलतापूर्वक जोधपुर पहुँच गया हूं। आपने और आपके पट्टशिष्य श्री इन्द्रविजय उपाध्यायजी ने तथा श्रावक लोगों ने मेरा जो आतिथ्य व सत्कार किया, उसके लिए मैं आपको और आपके साधवी सब लोगों को अन्तःकरण से कोटिशः धन्यवाद अर्पण करता हू।

आपके दर्शन से मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ, उसे लिखकर प्रकट नहीं कर सकता उसका हृदय ही अनुभव कर सकता है। मेरी यह अभिलाषा है कि फिर बहुत शीघ्र ही आपका दर्शन कर कृतार्थ होऊंगा।

आपका आज्ञाकारी भक्त

L. P. Tessitory

जोधपुर में रहकर उन्होंने जगह–जगह भ्रमण कर सब हस्तलिखित भंडारो को देखा। सब Bardic, (राजस्थानी, जैन व जैनेतर) ग्रन्थो का अवलोकन कर नोट्स तैयार किये। भंडारो को देखने मे उनको बहुत कठिनाइयो का सामना करना पड़ा। पर, वे अध्यवसायी, परिश्रमी व धुन के पक्के थे। जिस काम को करने बैठते उसे मे पूर्ण करके छोडते थे। राजपूताने की गर्म जलवायु जो एक यूरोपियन को असह्य है– चिलचिलाती धूप मे जब सारे लोग अपने घरो मे खस के टट्टो को बांधे पड़े रहते हैं, उस वक्त भी वे पैन और कागज लेकर शोध कार्य के लिए निकलते थे। वे १९१४ सितम्बर के शुरू में नागौर में भंडार देखने के लिए गये। पर वहां उनको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा यह आप अपने तारीख १३–९–१९१४ के पत्र में लिखते हैं–" गये हफ्ते मैं नागौर गया था। जाने का सबब यह था कि नागौर में दिगम्बरो का एक बड़ा भंडार है जिसमें आस पास १० हजार पुस्तके हैं–ऐसे सुनने मे आया था और यह भी सुना था कि यह भंडार सदाई बंद रहता है और उसके अधिकारी भट्टारक जो हैं, सो भंडार खोलने की इन्कार देते रहते हैं इस वास्ते जोधपुर दरबार के हुकुम की चिट्ठी लेकर उधर गया था, परन्तु राजा के हुकुम होने पर भी उस भट्टारक ने कुछ नहीं दिखलाया। अफसोस की बात है कि इतनी पुस्तके कि बेशक प्राचीन और अमूल्य है कीड़ो का भोजन होने वाली हैं।"

आपका आज्ञाकारी भक्त

L. P. Tessitory

सन् १९१४ के सितम्बर की अंतिम तारीखों मे वे जोधपुर से बीकानेर की टूर पर आए। बीकानेर में उन्होंने बृहत् जैन खरतरगच्छीय आदि कई भंडारों का अवलोकन कर बहुत से नये ग्रन्थो की खोज की। अक्टूबर सन् १९१४ के पहले हफ्ते मे वापिस जोधपुर चले आये। इन्हीं दिनों उन्होंने राजस्थानी गजलों आदि का अध्ययन किया।

८ जून १९१५ शुक्रवार को प्रातःकाल जोधपुर से रवाना होकर दुपहर २ बजे [illegible] पहुंचे और आचार्यश्री के दर्शन किए। इन्हीं दिनो रतलाम, बून्दी और कलकत्ता भी गये थे।

इसके उपरान्त वे बीकानेर की ओर चले आए और बीकानेर ही को अपने जीवन का प्रधान [illegible] बनाया और जीवन पर्यन्त तक बीकानेर ही में रहे। अन्त मे इसी धूल ही मे अन्तर्धान हो गये।

बीकानेर में रह कर बीकानेर रियासत के प्रमुख गांवो और नगरो मे ऊंट की सवारी या पैदल ही घूम–घूम कर पुराने शिलालेख, सिक्के, मूर्ति आदि अनेक प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह किया। इन्हीं सामग्री [illegible] से ही बीकानेर का म्यूजियम बना है। बीकानेर में पहले म्यूजियम नहीं था, परन्तु उन्होंने इस [illegible] को अपने अथक परिश्रम द्वारा दूर कर दिया। उन्होंने बीकानेर के अधिकतर गांवो मे [illegible] में धूल की [illegible]

कर रहा था। एक ओर उनके एक दर्जन से अधिक फोटोग्राफ थे जिनमें उनकी दो वर्ष की आयु से लेकर इटली और भारत में उनके विविध कार्यकलापो के चित्र थे। इन चित्रों के पीछे इनसे सम्बन्धित परिचय डा० तैस्सितोरी के हाथ का लिखा हुआ है।

दूसरा भाग उनके भारत और इटली से लिखे गये पत्रों का था जो उन्होने भारत के प्रसिद्ध विद्वानों के नाम लिखे थे। इसी विभाग मे उनके हाथ की लिखी हुई कुछ अन्य सामग्री भी थी, जिसमे "प्राकृतमार्गोपदेशिका, अहिंसा दिग्दर्शन, जैनशासन विशेषाक, आदि की समालोचनाएँ, और उनकी मृत्यु के बाद लिखे गये बडे–बडे विद्वानो के मूल–पत्र, इटालियन समाचार–पत्रों के कटिंग, डा० तैस्सितोरी स्मरणोत्सव पर डा० ऐतीलियो बोनेत्तो का खोजपूर्ण भाषण और उसका अंग्रेजी अनुवाद आदि भी रखे गये थे। तीसरा उपविभाग उनकी प्रकाशित रचनाओ का था और चौथा उपविभाग राजस्थान के शिलालेखो के छापों का था। इन पर बहुत वैज्ञानिक ढग से काम किया गया था।

इसी प्रकार अन्य विभाग भी बडे व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित किये गये थे। मध्यान्ह १ बजे डा० तिवेरी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसके पश्चात् सभी ने बडे मनोयोग से प्रदर्शनी का अवलोकन किया। यह प्रदर्शनी समारोह के तीन दिन के अतिरिक्त दो दिन और चली। इस प्रदर्शनी में श्री अगरचंद नाहटा ने अपने संग्रह के अनेक अलभ्य ग्रन्थ भी प्रदर्शित किये। शिलालेखो आदि को प्रदर्शित करने मे बीकानेर सग्रहालय के क्यूरेटर श्री सगतसिंह ने सहयोग प्रदान किया था। प्रदर्शनी के निरीक्षण के पश्चात् सभी अतिथि और दर्शक सग्रहालय के उस पुरातत्व– कक्ष को देखने गये जो डा० तैस्सितोरी की अद्वितीय देन है और सग्रहालय के प्रादुर्भाव का मुख्य कारण है।

२२ नवम्बर को डा० तैस्सितोरी की निधन तिथि के दिन उनकी नवनिर्मित समाधि के उद्घाटन के अवसर पर समय से पूर्व ही अपार भीड एकत्रित हो गयी थी। समूचे मार्ग तथा ग्रेवयार्ड को पुष्पों एव वन्दनवारो आदि से सजाया गया था। द्वार पर डा० तैस्सितोरी का नाम हिन्दी मे अकित था। ठीक ८ बजे डा० तिबेरिओ– तिवेरी ने समाधि–प्रागण का पुष्पावरण हटा कर नवनिर्मित समाधि का उद्घाटन करके पुष्पमाला अर्पित की और कुछ क्षण गभीर मुद्रा में खडे रह कर भक्ति–पूर्वक अपनी मौन श्रद्धाजलि अर्पित की। तत्पश्चात् डा० सुनीति कुमार चटर्जी, उनकी धर्म पत्नी श्रीमती कमला चट्टोपाध्याय, इन्स्टीट्यूट के डायरेक्टर श्री अगरचन्द नाहटा, मत्री श्री अक्षयचन्द शर्मा, श्री हजारीमल बाठिया, स्थानीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, नगर–पालिका के अध्यक्ष, कालेजो के प्रोफेसरो एवं प्रतिष्ठित नागरिकों तथा इन्स्टीट्यूट के सदस्यो एव अन्य समागत महानुभावो ने पुष्पमालायें तथा पुष्पाजलियाँ अर्पित की। राजस्थान के सार्वजनिक निर्माण–मत्री श्री रामचद चौधरी ने भी समारोह मे भाग लिया और अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

इसके पश्चात् डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने एक छोटी सी सार–गर्भित वक्तृता देकर बताया कि "राजस्थान और राजस्थानी मे शोध करने वाले प्रत्येक विद्वान को अपने कार्य–आरम्भ से पूर्व डा० तैस्सितोरी और उनके इस स्मारक को स्मरण कर प्रेरणा प्राप्त करनी होगी। यह भावना उनकी साधना मे उत्साह, बल और सफलता प्रदान करने वाली होगी। साय ४ बजे सग्रहालय के सास्कृतिक– भवन मे मुख्य अधिवेशन का प्रारम्भ हुआ। सर्व प्रथम सास्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें भारत मा की अनोखी झाकी, राष्ट्र ध्वज और नेताजी सुभाष चन्द बोस की सुन्दर प्रतिकृतिया दिखायी गयीं। तदन्तर पूगी–वादन, नाग नृत्य, बाल विवाह के कुपरिणाम, कृषि निदान, तथा राजस्थानी लोक गीत आदि प्रस्तुत किये गये। तत्पश्चात् डा० तैस्सितोरी के प्रति राजस्थानी और हिन्दी मे श्रद्धाजलियाँ प्रस्तुत की गयीं। फिर श्री हजारीमल बाठिया की ओर से १०१ रु० का श्री फूलचद बाठिया लेख पुरस्कार, श्रीमती कमला चट्टोपाध्याय द्वारा श्री नरेन्द्र कुमार भानावत को, उनके डा० तैस्सितोरी के जीवन पर सर्वश्रेष्ठ लेख लिखने पर प्रदान किया गया।

इन आयोजनो के पश्चात् इन्स्टीट्यूट के प्रधान मत्री श्री अक्षयचद शर्मा ने डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, श्रीमती कमला चट्टोपाध्याय, डॉ० तिबेरिओ–तिवेरी और राजस्थान के सार्वजनिक– निर्माण मत्री श्री रामचद चौधरी एवं अन्य समागत महानुभावों का परिचय कराते हुये [illegible]

तैस्सितोरी–दिवस का संक्षिप्त विवरण

(बीकानेर में श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा निर्मित डा० एल० पी० तैस्सितोरी के "समाधि –उद्घाटन" पर आयोजित समारोह का संक्षिप्त विवरण। यह समारोह सादुल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर के तत्त्वावधान में दि० २२ तथा २३ नवम्बर १९५६ ई० को हुआ।)

बीकानेर में राजस्थान की संस्कृति और राजस्थानी भाषा के अनन्य उपासक इटली देश के उदीन ग्राम के निवासी भाषा –शास्त्री डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी की निधन तिथि मनाने का आयोजन किया गया था। डा०तैस्सितोरी जोधपुर, बीकानेर, आदि लगभग सारे राजस्थान में पाँच वर्ष तक रहे। सन् १९१९ की २२ नवम्बर को मरु भारती के इस अनन्य पुजारी की बीकानेर मे लीला समाप्त हो गयी। समय के साथ-साथ लोग इसे भूल गये। सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के कार्यकर्ताओं ने इस विस्मृत साहित्य–सेवी की छान– बीन का काम अपने हाथ मे लिया।

उन्हे गिरजाघर के इन्चांज मास्टर टीका साहब द्वारा ग्रेवयार्ड के रजिस्टर से तैस्सितोरी की कब्र के स्थान के बारे मे पता चला। कब्र की निश्चित पहचान हो जाने के पश्चात उस पर श्री हजारीमल बाँठिया जी ने ईसाई धर्म के अनुकूल एक सुन्दर स्मारक बनवा दिया और इन्स्टीट्यूट ने उनकी सही मृत्यु तिथि २२ नवम्बर सन् १९१९ का पता लगा कर अन्तर्राष्ट्रीय समारोह के रूप मे निधन तिथि मनाने का निश्चय किया। देश और विदेश के भाषा-शास्त्रियों, साहित्यकारों, और पुरान्वेषियों को इसकी सूचनायें तथा निमन्त्रण भेजे गये। इनके प्रत्युत्तर मे डा० तैस्सितोरी विषयक कुछ नई जानकारी भी प्राप्त हुई। तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के अतिरिक्त मूर्धन्य साहित्यकारो, भाषा–शास्त्रियों और पुरातत्वविदों के संदेश तथा परामर्श ने इस कार्यक्रम को पर्याप्त उत्साहित किया।

समारोह की अध्यक्षता के लिये विश्व–विख्यात भाषा शास्त्री डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने अपनी स्वीकृति तथा अपना अध्यक्षीय भाषण तैयार कर छपवाने के लिये भेज देने की कृपा की। डा० तैस्सितोरी की नव निर्मित समाधि का उद्घाटन करने के लिये भारत मे इटालियन राजदूत से प्रार्थना की गयी। उन्होंने व्यस्त रहने के कारण अपने कौन्सिल डा० तिबेरिओतिबेरी को इस अवसर पर अपने प्रतिनिधि के रूप मे भेज देने की स्वीकृति दी और स्वयं न आ सकने का खेद प्रकट किया।

डा० तैस्सितोरी के परिवार वालो का पता और इस अवसर पर उनकी ओर से संदेश–प्राप्ति के लिये प्रयत्न किया गया। लेकिन दुर्भाग्य से उनके किसी परिवार वाले का पता नहीं लग सका। इटली की रोम-स्थित पूर्वी देशो के अध्ययन सम्बन्धी संस्था के अध्यक्ष प्रसिद्ध भाषा–शास्त्री श्री जुसीपी तूच्ची महोदय ने समाधि के निर्माणार्थ २००.०० रु० का चेक भेजा पर समाधि का निर्माण पहले ही किया जा चुका था, अत उन्होंने इस राशि को समारोह सम्बन्धी प्रकाशन व्यय मे योगदान के रूप में प्रयोग में लाने की अनुमति दे दी। साथ ही इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे इसके कार्यकर्ताओं को धन्यवाद भेजा।

२१ नवम्बर १९५६ को डा० सुनीति कुमार चटर्जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमला चट्टोपाध्याय के साथ बीकानेर पहुँचे । अत्यधिक ठंड होने पर भी रेलवे स्टेशन पर स्वागतकर्ताओं की अपार भीड़ ने पुष्पमालाओं आदि से उनका भव्य स्वागत किया। इसके कुछ ही समय पश्चात् दिल्ली से डा० तिबेरिओ तिबेरी भी पधारे। स्वागतार्थियों ने उन्हे भी पुष्पमालाओं से लाद दिया। उन्होंने भी भावविभोर होकर भारतीय शैली मे हाथ जोड़कर सभी का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर इन्स्टीट्यूट मे एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था जिसमें एक भाग डा० तैस्सितोरी से सम्बन्धित, दूसरा राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थो का तीसरा राजस्थानी मुद्रित ग्रन्थो का और चौथा भाग राजस्थानी चित्रकला का था। सभी विभागो का अलग महत्व था, किन्तु डा० तैस्सितोरी से सम्बन्धित विभाग सभी को आकर्षित

डा0 एल0 पी0 तैस्सितोरि

की समाधि के उद्‌घाटन के अवसर पर ता० २२ नवम्बर १६५६ को

डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

का

अध्यक्षीय भाषण

हम यहाँ एक अपूर्व अवसर पर एकत्रित हुए हैं। सर्वप्रथम मैं स्मारक समिति के सदस्यो के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ, जिन्होंने मुझे बीकानेर आने और इस आयोजन की अध्यक्षता करने के लिए निमंत्रित किया। यहाँ हम एक महान इटालियन विद्वान, जो हमारे देश मे आया और हमारी अति महत्वपूर्ण भाषाओ में से एक का गहन और सफल अध्ययन करके हमें अपने आपको समझने में सहयोग दिया।

देश के मामलो मे कुछ समय पूर्व बीकानेर इतना प्रसिद्ध नहीं था। जोधपुर राठौर घराने के एक सपूत द्वारा पन्द्रहवीं शताब्दी में बसायी गयी बीका की नगरी अपनी रेगिस्तानी निर्जनता मे वीर– प्रसविनी बन गई। यहीं की प्रकृति, बहुत उदार भाव वाली न होने के कारण, एक कठोर माता सिद्ध हुई जिसने अपने पुत्रो को शारीरिक बल और बौद्धिक शक्ति दोनो मे उन्नत बनाया और उन्हे समस्त भारत मे जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे साहसी कार्य करने के लिये भेजा। बीकानेर की वैश्य जाति वीरों के इस दृढ दुर्ग की पताका को भारत के सुदूर कोनो मे ले गयी है और भारत मे मध्य युग से सामान्य व्यापारिक विकास से लेकर देश की वर्तमान ओद्यौगिक प्रगति में सहायता दी है। उसके अन्य पुत्रो ने राजपूत शौर्य को केवल भारत मे ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी महान और सम्मानित बनाया है। आधुनिक समय मे, जनता के सच्चे राजा स्वर्गीय महाराजा श्री गगासिंह द्वारा की गयी राज्य की महान सेवाओं को हमें याद करना पड़ता है। बीकानेर को आधुनिक रूप देने में उनके विचार आपको अच्छी तरह विदित हैं। सर्वप्रथम बीकानेर में उन्हीं की प्रेरणा से हिन्दी को राज्य– भाषा बनाया गया जिसे राष्ट्रभाषा के सभी प्रेमी हर्ष से स्मरण करेंगे। पिछले दो महायुद्धो मे बीकानेर गगा रिसाला (Camel Corps) कई अन्य देशों मे भारत की ओर से प्रशंसनीय कार्य कर चुका है।

पर बीकानेर की श्रेष्ठता युद्ध और शौर्य तथा व्यापार ओर उद्योग तक ही सीमित नहीं रही है। राजस्थान और भारत मे बीकानेर संस्कृति और साहित्य का प्रमुख केन्द्र बन गया है। वीर काव्यो और वीर गीतो, प्रेम गीतों और भजनो, ऐतिहासिक और पुराने लेखों के रूप , राजस्थान का साहित्यिक भंडार, कविता कामिनी और ऐतिहासिक निधि एव कला– सृष्टि के इस प्रदेश मे एक अद्वितीय संग्रह की सामग्री प्रस्तुत करता है जिससे भारतीय सभ्यता आलोकित हो उठती है। सुन्दर कला और शिल्प के अतिरिक्त महान दुर्गों और प्रासादो एवं निवास गृहों की स्थापत्य कला के रूप में बीकानेर की कलात्मक उपलब्धि यहां के लोगो के सूक्ष्म बोध की महान् अभिव्यक्ति है।

आधुनिक चेतना के प्रभाव से बीकानेर अपनी पिछली कई पीढ़ियो की तन्द्रा को दूर कर रहा है और एक बार पुन अपनी महान परम्परा के प्रति जाग्रत हो रहा है। स्थानीय कालेज और संग्रहालय एव सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट जिसके तत्वावधान मे हम यहाँ एकत्र हुये हैं, जैसी शिक्षण संस्थाओं का आरंभ इस बात का काफी प्रमाण है कि यहाँ के लोगो में ज्ञान पिपासा और वैज्ञानिक शोध जो बीकानेर और भारत के अन्य लोगो की परम्परा रहा है, के लिए जाग्रति हो गयी है।

चटर्जी और डॉ॰ तिबरिऑ– तिबेरी के महत्वपूर्ण भाषण हुए।

इस समस्त कार्यक्रम का फिल्मस डिवीजन बम्बई की ओर से एक वृत-चित्र तैयार किया गया जिसे ७ दिसम्बर १९५६ से समस्त भारत के सिनेमाघरो मे प्रदर्शन के लिये भेज दिया गया।

अधिवेशन के अतिरिक्त डॉ॰ चटर्जी और डॉ॰ तिबेरी का तीन दिनो का कार्यक्रम अत्यन्त ही व्यस्त रहा। अनेक संस्थाओ ने इनका स्वागत किया और अभिनन्दन पत्र भेट किये। डॉ॰ चटर्जी ने जैन कालेज छात्र संघ का और श्री सम्पतराय भटनागर भाषणमाला का उद्घाटन किया। डूँगर कालेज छात्र संघ की ओर से दोनों ही विद्वानों के भाषण कराये गये। दोनों ही विद्वानो ने बीकानेर की कई प्रसिद्ध संस्थाओ का निरीक्षण भी किया।

इस समस्त कार्यक्रम को देश के अनेक पत्रों ने नियमित रुप से अपने हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करणों मे छापा और डा० तैस्सितोरी की जीवनी और उनके शोध कार्यो पर अपने शोधपूर्ण सचित्र लेख प्रकाशित किये। प्रो० जसवन्त सिंह, श्री सागजीलाल शर्मा, श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट, श्री अगरचंद नाहटा, श्री अक्षय चंद शर्मा, श्री भवंरलाल नाहटा, श्री हजारीमल बांठिया, इत्यादि विद्वानों ने भी डा० तैस्सितोरी के शोध– सम्बन्धी विविध कार्य कलापों के सम्बन्ध मे खोजपूर्ण सचित्र लेख प्रकाशित किये।

डा० तैस्सितोरी के हाथ की और उनके सम्बन्ध में अन्य विद्वानों द्वारा लिखी गई दुर्लभ सामग्री, शिलालेखो की छापे, पत्र, फोटो ग्राफ, आदि मुद्रित और अमुद्रित सामग्री इन्स्टीट्यूट को उपलब्ध कराने मे स्व० मुनि विद्याविजय जी महाराज, पं॰ अभय चंद गांधी, श्री अगरचंद नाहटा, श्री हजारीमल बांठिया, डॉ० सत्य प्रकाश और श्री संगतसिंह मुख्य थे इनमें से अधिकाश वस्तुएँ स्व० मुनि जी को उदीने (इटली) से डा० तैस्सितोरी की बहिनों के द्वारा प्राप्त हुई जिन्हें मुनिजी ने बांठियाजी और नाहटाजी को भेज दिया था। इस समस्त सामग्री को सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय जयपुर ने " संयुक्त राजस्थान" के नवम्बर १९५६ के डा० तैस्सितोरी अंक मे प्रकाशित किया है।

" राजस्थान-भारती" नवम्बर १९५७
मे प्रकाशित "तैस्सितोरी दिवस का संक्षिप्त विवरण" के आधार पर।

–सम्पादक

से मिल गयी और पिंगल के रूप मे स्थापित हो गई। पिंगल गंगा के ऊपरी भाग में एक साहित्यिक भाषा के रूप मे उत्पन्न हुई। यह डिंगल की वहिन होने के साथ– साथ उसकी प्रतिद्वन्द्विनी भी थी। डिगल मारवाडी से ही उत्पन्न हुई थी। राजस्थान के लोग एक साथ दो घोडो की सवारी करने मे निपुण थे। अत राजस्थानी के साथ– साथ पिछली दो–तीन पीढियों मे हिन्दी को भी, शिक्षा, जनजीवन और गहन साहित्य की भाषा स्वीकार करने मे कोई अड़चन नहीं मालूम हुई। हिन्दी को भी वे अपने घरो मे बोलते थे और यदा–कदा काव्य रचना मे उसका उपयोग करते थे। इस प्रकार राजस्थानी केवल घर की ही भाषा और कुछ अश तक सीमित साहित्य की भाषा के गौण स्थान को पाकर ही सन्तुष्ट हो गयी।

इस प्रकार स्थानीय भाषा का गहन अध्ययन राजस्थान में शिथिल रहा। लोग हिन्दी मे लीन थे और खडी बोली हिन्दी ने भी राजस्थान के आरम्भिक साहित्यिक रचनाओं को अपने उत्तरोत्तर विकसित साम्राज्य मे सम्मिलित कर लिया। यहाँ तक कि इसने अवधी और व्रजभाषा तथा भोजपुरी और पहाडी बोलियो एवं पंजाबी के आरंभिक साहित्य के उत्तराधिकार को भी ले लिया। राजस्थानी और इसके अतीत इतिहास के सम्बन्ध भी हिन्दी की छाया में विलीन हो गये और राजस्थानी केवल 'हिन्दी की बोली' मात्र जानी जाने लगी। इस प्रकार का उल्लेख हिन्दी भाषा मे अब तक लिखे गये वृहत्तम व्याकरण मे अर्थात् पिछली शताब्दी के अन्तिम भाग मे केलॉग (Kellogg) द्वारा लिखे गये व्याकरण मे किया गया।

राजकुमारी सो गई थी और वह नहीं जागी, लेकिन तब पश्चिम से एक जादूगर– एक नवयुवक विद्वान जो पश्चिम की मानवता से प्रेरित था, आया। यूनानी सभ्यता ने मानवता को ,मनुष्य को मनुष्य के रूप मे देखने की एक नवीन दृष्टि प्रदान की थी। इसने सभ्य मनुष्य मे मूल मानवता की भावना अर्थात् मूल मानव चरित्र की भावना स्थापित की जिससे प्रत्येक मनुष्य के लिए समस्त विश्व एक परिवार बन गया। सुकरात ने अपने आपको एक विश्व नागरिक घोषित कर दिया था। यूनानियो ने आन्थ्रोपोट्स शब्द का निर्माण किया, जिसका रोम वालो ने लेटिन में ह्यूमेनिटाज शब्द मे अनुवाद किया, इसका तात्पर्य है "विश्व मानवता", इसमे मनुष्य की मनुष्य के रूप मे गहन रुचि, प्रशसा और अध्ययन सम्मिलित था। यह मनुष्य द्वारा मनुष्य को समझने के तथ्य का एक नया दृष्टि कोण था जो पुनर्जागरण के दिनों मे यूनानी साहित्य के अध्ययन के साथ– साथ, यूरोप मे पुनर्जीवित किया गया। यह आधुनिक सभ्यता मे समस्त ससार मे एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण बन गया है। चीनी लोग भी बिलकुल स्वतन्त्रता से, मानवता के इसी व्यापक दृष्टिकोण तक पहुँच चुके थे, उदाहरण के लिए चीनी लोगो में यह कहावत बहुत प्रचलित है, "दस हजार देश समान भावनायें, स्वर्ग के नीचे एक परिवार!" हमारे समय मे भारत मे इसके सबसे अधिक व्याख्याता स्वामी विवेकानन्दजी जैसे वेदान्त दर्शन के प्रचारक रहे है। इनके अलावा विश्व कल्पना के एक कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और एक दार्शनिक जो मनुष्य की एकता को कवि टैगोर की भांति ही समझता है अर्थात सर्वपल्ली राधाकृष्णन् । लेकिन मानवता की यह भावना अपने पूर्ण रूप में यूरोप से हमें आधुनिक युग में प्राप्त हुई। सर्वप्रथम यह अंग्रेजी साहित्य के द्वारा हमे मिली। यह मनुष्यता को समझने के कार्य में आत्मार्पित विद्वानो के उस निस्वार्थी समूह के द्वारा हमेप्राप्त हुई, जो केवल इगलैंड के ही नहीं थे अपितु फ्रांस, जर्मनी, इटली और स्केन्डेनेवियन (नार्वे और स्वीडन) देशों के भी थे। रूस और अमेरिका एवं छोटे से देश यूनान के विद्वानों ने वर्तमान मानव की इस कसौटी के साथ भारत में मनुष्य को उसके जीवन के सभी क्षेत्रों मे समझने और समझाने का कार्य अपने ऊपर लिया।

यूनान द्वारा प्रदत्त महत्वपूर्ण देन की तरह इटली भी अपनी एक देन के द्वारा आधुनिक सभ्यता का एक निर्माता है। यूनान ने चिंतन और सौंदर्यचेतना एवं समस्त जीवन की समस्याओ का गहन ज्ञान प्रदान किया, और इटली ने रोम के द्वारा पश्चिमी संसार को शासन और व्यवस्था एवं संगठन और एकीकरण दिया। लेकिन इटली का मस्तिष्क यूनान की आत्मा द्वारा विस्तृत बना दिया गया था। १९वीं शताब्दी के आरम्भ मे जब उसने इतिहास को पुन ज्ञात करने के मार्ग पर साहसपूर्ण चलना आरम्भ किया तो यूरोप ने भारत द्वारा उसके महान राष्ट्रीय उत्तराधिकार संस्कृत द्वारा दी गई सहायता को उत्सुकता और युगल हस्तों से स्वीकार किया है। अंग्रेज विद्वान् सर विलियम जोन्स

आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्य के पुनर्जागरण में, जो अब समस्त भारत में हो रहा है, बीकानेर ने भी अपनी स्थानीय बोली और महान राजस्थानी भाषा की मारवाडी बोली की साहित्यिक उपलब्धि और इसके साहित्यिक भण्डार, जो इसके मध्य युग से ही लिखा जाता रहा है, के प्रति रुचि प्रदर्शित की है। भाषा और साहित्य तथा इतिहास के विद्यार्थियों द्वारा डिंगल भाषा के साहित्य का अत्यधिक महत्व अब स्वीकार किया जाने लगा है। डिंगल आधुनिक भारतीय भाषाओं के मध्ययुगीन स्वरुप के साथ अपनी रचनाओं के विस्तार एवं विषयों की भिन्नता के कारण बडी आसानी से रखी जा सकती है। उस समय जब खडी बोली का जन्म ही नहीं हुआ था, डिंगल भाषा ने ही अपने आप मे राजपूत पुरुषों के शौर्य और राजपूत नारियो की सतीत्व रक्षा के लिए बलिदान की अमर कहानी को उच्चासन दिया। डिंगल, आरम्भिक ब्रज और आरम्भिक अवधी, उत्तरी भारत मे पूर्वी पंजाब से पश्चिमी बिहार तक उन्नीसवीं शताब्दी तक साहित्यिक अभिव्यक्ति के तीन सर्वाधिक प्रचलित रूप थे। इस प्रकार की महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि वाली भाषा (परिस्थितियों से बाध्य होकर, जिसके सम्बन्ध मे यहाँ कुछ कहना संभव नहीं है और जो सचमुच विचित्र और व्यंग्यात्मक 'इतिहास की विवशताओं' में से एक है) पिछली चार पीढियो में, जहाँ वह रानी की तरह शासन करती थी, अपने ही घर मे पदच्युत होकर एक प्रान्तीय ग्राम्य भाषा बन गई। किसी समय की महान और अत्यधिक विकसित भाषा का इस प्रकार का भाग्य परिवर्तन भारत या संसार के अन्य भागों में विरल नहीं है, लेकिन इस भाषा का सौन्दर्य और शक्ति अपने वक्ताओं का हृदय स्पर्श करने के लिए कभी नहीं मिटी और लोगो ने इस भाषा के माध्यम से अपने हार्दिक भावो को अभिव्यक्त करना कभी नहीं छोडा। इसमें चाहे महान साहित्य न लिखा गया हो, लेकिन दोहे, और लघु प्रकीरणक काव्यो का समृद्ध साहित्य जो इसमें पहले भी लिखा जाता था और भी बड़े पैमाने पर फलता फूलता रहा। भाषा की उपेक्षा की गई और इसके केवल एक पुराने साहित्यिक रुप ही चारण व भाट कवियो द्वारा जो पुरानी परम्परा के थे– एक ऐसी परम्परा जो आधुनिक युग में बड़ी शीघ्रता से ओझल हो रही थी अर्थात भाटों और चारणों, इतिहासकारों और बन्दीजनो की परम्परा, जो राजाओं और बडे जमीदारो के सामती दरबारो में रहते थे, गहराई से पढा जाता रहा और विकसित होता रहा, लेकिन भाषा चालू रही और लोगो की वाणी में अपने जीवन और विकास को बनाये रखा, यद्यपि बाद में यह राजकीय भाषा नहीं रही पर यह मिट नहीं सकी। वे स्कूल जिनमें इस इलाके के बालको और युवाओ को प्रशासकीय, व्यावसायिक, और वैज्ञानिक सेवाओं के लिए शिक्षा दी जाती, उन्हे उर्दू पढाती और फिर हिन्दी। क्योंकि पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे हिन्दी ने उर्दू का स्थान लेना प्रारम्भ कर दिया था। राजस्थान की भाषा मे रुचि पुरानी पीढियों तक ही सीमित रही और नई पीढी जो दूसरे वातावरण में शिक्षित हुई थी धीरे–धीरे इस भाषा के ज्ञान और समझ के प्रति सहानुभूति नहीं रखती थी, पर उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे जिनमें साहित्य भी है, अपने पूर्वजो की उपलब्धियों के प्रति एक गर्व था, पर वह केवल स्वदेशाभिमानी भावना थी जो केवल भावना ही रही। इससे कोई व्यावहारिक वैज्ञानिक कार्य का जो भाषा का व्यक्तित्व और महत्व स्थापित कर सके, या इसे पुनः साहित्यिक प्रयोग के लिए पुनर्स्थापित करने के प्रयास में सहायता दे सके, कोई परिणाम नहीं निकला।

इसी बीच हिन्दी अपने महान् सम्मान और उत्तरी भारत की एकता के सूत्र रूप मे प्रसिद्ध होकर, विभिन्न भाषाओं और बोलियो के लोगों को संयुक्त कर रही थी और पंजाब से पूर्वी बिहार तथा हिमालय की ढलानों से विंध्य की पहाडियों तक उत्तरी भारत के लिए एक सामान्य सांस्कृतिक धरातल तैयार करने और प्रशासकीय एकता के लिए उर्दू के परिधान को अपने कंधों पर धारण कर रही थी। यह स्वाभाविक ही था कि यह राजस्थानी बोलने वाले लोगो, जिनमे राजनीतिक सम्बन्ध और सांस्कृतिक विचार १२ वीं शताब्दी के बाद पाटण और अहमदाबाद की ओर न झुककर, यद्यपि राजस्थानी गुजराती की सगी बहिन थी, दिल्ली और मथुरा की ओर झुक गये थे, के मस्तिष्क पर अपना गहरा प्रभाव डाल रही थी। पिछली शताब्दियों मे रेगिस्तान के लोगों पर गंगा के आसपास की भाषा का आरम्भिक प्रभाव था– हम जानते हैं कि किस प्रकार ब्रज भाषा का आरम्भिक रूप राजस्थान में आया, यह रूप केवल गंगा के निकट वासी राजपूतों और अन्य हिन्दू सामन्तों के साथ ही नहीं आया, बल्कि वैष्णव धर्म की पुनर्जागृति जो मथुरा और वृन्दावन के आसपास १५वीं – १७वीं शताब्दी मे हुई थी, के साथ आया। राजस्थान में यह ब्रजभाषा साहित्यिक अपभ्रंश की परम्परा

दिया और विश्व के आधुनिक साहित्य का स्थान ग्रहण कर लिया। वे इटालियन भाषा के एक अच्छे जानकार थे और उन्होने दांते (Dante) पेत्रार्च (Petrarca) और महान् देश इटली के सम्मान में चतुर्दशपदी (कविता का एक रूप जिसे उन्होने इटालियन भाषा से बगला में ग्रहण किया और स्वाभाविक बना दिया) अपनी भाषा बगला मे लिखी। उन्होने इन कविताओ मे से एक का स्वयं इटालियन भाषा मे अनुवाद किया और दांते की सातवीं शताब्दी के आयोजन के अवसर पर उसकी स्मृति मे आधुनिक भारत की श्रद्धांजली के रूप मे रोम भेज दिया। इस प्रकार भारतीय इटालियन सस्कृति के एक सूक्ष्म प्रवाह का आदान–प्रदान होता रहा जो भारत में विकसित हुआ और निश्चय ही इटालियन विद्वानो की भारतीय भाषाओं की उपलब्धि से पोषित और दृढ़ हुआ।

इसी बीच इटली मे भारतीय भाषाओ का अध्ययन गोरेसियो (Gorreclo) से आरम्भ होकर अपनी फलदायी परम्परा को चालू रखे रहा और इस समय सस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के जानने वाले इटालियन विद्वानों का ऐसा समूह है जो प्राचीन भारत के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान बढाने में उल्लेखनीय योग दे रहा है। कुछ ही समय पूर्व संस्कृत महाभारत के काफी भाग का प्रसिद्ध इटालियन कवि और सस्कृत के विद्वान करबाकर (Kerbaker) द्वारा अनुवाद किया गया जिसमे पूरी कहानी दी गई थी। यह अब इटालियन साहित्य की विशेष सवृद्धि का रूप धारण कर चुका है। मध्य और दूरपूर्व के लिए इटालियन सस्था (Istituto Italiano per il Medio ed Estremo Oriente) द्वारा डाक्टर टुसी (Dr- Giuseppe Tucci) के महत्वपूर्ण निर्देश में अन्य अध्ययन के साथ भारतीय भाषओ के लिए जो कार्य किया जा रहा है वह वर्तमान प्राच्य ज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

अब हम उस प्रसिद्ध इटालियन विद्वान का उल्लेख करेंगे जिसका राजस्थान (और राजस्थान के द्वारा भारत) आज सम्मान कर रहा है। यह डा० एल० पी० तैस्सितोरि (Dr. L. P. Tessitori) इटली का वह सपूत था जिसमे भारत के प्रति प्यार बढता गया। वह इस देश मे आया, कुछ वर्षो तक यहा रहा और काम किया और तब भारत की मिट्टी में अपने आपको समर्पित कर दिया। यूरोप के अपने भ्रमण के समय मुझे कई प्रसिद्ध यूरोपीयन और प्राच्य विद्वानो से व्यक्तिगत रूप मे परिचित होने का सौभाग्य मिला। उनमे इटली के कुछ प्रसिद्ध प्रोफेसर थे। इनमें पदुआ के प्रोफेसर एम्ब्रोजिओ बैलिनी (Prof- Ambrogio Ballini of Padua) रोम के प्रोफेसर कार्लो फोरमिचि (Prof- Carlo Formichi of Rome) [प्रोफेसर फोरमिचि यह बात याद करके बहुत प्रसन्न होते थे कि मूल लेटिन मे उनका नाम सस्कृत वाल्मीकि के समान था] और वह अद्वितीय विद्वान प्रो० तुस्सी (Prof. Giuseppe Tucci) जो स्वय में तीन अपूर्वता लिये हुए हैं अर्थात् वे भारतीय, चीनी और तिब्बती भाषाओ के गहरे जानकार हैं। इनके अतिरिक्त उनके कई शिष्य भी प्रसिद्ध विद्वान हैं जो इटली मे भारतीय भाषाओ के आलोक को विकीर्ण कर रहे हैं। मैं सर्वप्रथम १६२२ मे पदुआ विश्वविद्यालय के ७वीं शताब्दी के उत्सव मे कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप मे इटली गया। उस समय भारत में तैस्सितोरि का स्वर्गवास हुए कुछ ही वर्ष हुए थे। १६१६ में यूरोप जाने से पूर्व मुझे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं मे डा० तैस्सितोरि की सबसे महत्वपूर्ण देन का सूक्ष्म अध्ययन करना पडा। यह उनकी अमूल्य कृति "पुरानी पश्चिमी राजस्थानी बोली का ऐतिहासिक व्याकरण" (Historical Grammar of the Old Western Rajasthani Speech) थी। यह भाषा जैसा कि वे कहते थे १६ वीं शताब्दी तक समृद्ध रही और जो पश्चिमी राजस्थानी या मारवाडी और गुजराती दोनों की जननी थी। उनकी यह महान देन भारतीय भाषा शास्त्र की शोध पत्रिका इंडियन एन्टीक्वेरी (Indian Antiquary)के सन् १६१४–१६१६, के पृष्ठों मे अब भी बिखरी पडी है। यह बहुत पहले ही पुस्तक के रुप मे प्रकाशित हो जानी चाहिए थी और प्रत्येक स्थान के विद्वान के लिए प्राप्य हो जानी चाहिए थी। डा० तैस्सितोरि की मृत्यु के बाद अपने कुछ इटालियन मित्रों की सहायता से मैं उत्तरी इटली मे उनके जन्म स्थान उदीने में उनके परिवार वालो को लिख कर इंडियन एन्टीक्वेरी के पृष्ठो मे बिखरी हुई इस रचना की एक प्रति प्राप्त करने मे सफल हो सका। इसलिए जब मैं कलकत्ता विश्वविद्यालय में एक जूनियर प्रोफेसर की तरह काम कर रहा था तो मुझे डा० तैस्सितोरि की इस बहुत उपयोगी कृति को गहराई से जानने का अवसर मिला। दुर्भाग्य से कलकत्ता की एशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित उनकी कुछ रचनाओ और अंग्रेजी पत्रो के अतिरिक्त मुझे उस विविधतापूर्ण कार्य का कोई ज्ञान नहीं था जो वे पहले

यूरोपीय विश्व की और १८वीं सदी की विभिन्न भागो से निर्मित संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ जानने और प्रकाश मे लाने वालें मे से एक था। उसने पश्चिमी संसार के समक्ष संस्कृत के अस्तित्व के महान तथ्य को घोषित किया। यूरोपीय विद्वान् इस महान खोज का उपयोग करने और एक नये विज्ञान अर्थात् तुलनात्मक भाषाशास्त्र का निर्माण करने मे सुस्त नहीं थें। इससे उन्हे अपनी भाषाओं और संस्कृतियो की उत्पत्ति समझने मे सहायता मिली। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रसिद्ध व्यक्तियो की सर्वप्रथम टोली जर्मनी ने तैयार की, लेकिन दूसरे देश भी पीछे नहीं थे, और निश्चय ही न सुस्त ही थे। हम भारत मे बॉप और रोजेन, लॉसिन और मैक्समूलर, गोल्डस्टकर और ड्यूसेन, सच्चरादेर और वेबर और तुलनात्मक भारोपीय व्याकरण के प्रसिद्ध विद्वान् सिलचर और ब्रुगमैन के बारे में सुनते हैं। हम संस्कृत और भारतीय भाषाओं के अंग्रेज विद्वानो को भी जानते हैं जैसे कोलब्रुक और विल्सन, कनींघम और फ्लीट, ग्रिफिथ और मोनियर विलियम्स और बीम्स और ग्रियर्सन, प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान बार्थ और सेनार्थ, फाऊचर और लेवी भी भारत मे अपरिचित नहीं हैं। कुछ इटालियन यात्री मध्ययुग से लेकर १८वीं शताब्दी तक भारत में आये। इनका आना महान मार्कोपोलो से (तेरहवीं शताब्दी का अन्तिम चरण) आरंभ होकर निकोलो कोन्ति, लुदोविको-द-वर्थेमा और निकोलस मानुसी (महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति मुगलो की कहानियाँ 'Storia do Mogor' का लेखक) तक चलता रहा और इन्होंने एक जिज्ञासु और श्रद्धालु मध्ययुग और १९वीं शताब्दी के यूरोप को भारत के साहसपूर्ण प्रेम और बर्बर वैभव से परिचय कराया। १८वीं शताब्दी मे कोन्सातेनतिनों बेसची (Constaintino Besci) नामक एक इटालियन पादरी ने ब्राह्मण गुरु की पद्धति स्वीकार की। उसने अपना भारतीय नाम 'वीरम-मुनिवर' रक्खा और तेम्बावेणी (Tembaveni) अथवा "न मुरझाने वाली माला" नामक एक लंबी कविता ललित तमिल भाषा मे लिखी जो ईसाइयों के पुराण कहे जा सकने वाले, या पौराणिक और निजंधरी कहानयों पर आधारित है। यह रचना अब तमिल का एक अति उच्च श्रेणी का ग्रंथ है। बहुत कम भारतीय विद्वानों ने इटली के गोरेसियो (Gorresio) और एस्कोली (Ascoli) नामक दो महान विद्वानों के बारे मे सुना होगा, जिन्होने पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे भारतीय भाषाओ के अध्ययन मे महत्वपूर्ण योग दिया है। अधिकांश भारतीय इस बात से बिलकुल अपरिचत हैं कि वाल्मीकि की संस्कृत रामायण का प्रथम पूर्ण संस्करण इटालियन टीका सहित एक महान इटालियन संस्कृत भाषा के विद्वान गैस्पेरे गोरेसिओ (Gaspare Gorresio) द्वारा १८४३-१८६७ के बीच इटली मे प्रकाशित हुआ था। यह शानदार संस्करण ताइपिन (Typin) से इटली के महान शासको में से एक-कारलो अलबर्टो (Carlo Alberto&Charles Albert) की संरक्षता मे प्रकाशित हुआ था। यह व्यक्ति सारडीनिया (Sardimia) का उस समय राजा था, जब कि इटली ने अपनी पूर्ण राष्ट्रीय-एकता प्राप्त नहीं की थी और उसका कुछ भाग आस्ट्रिया के अधिकार मे था। इसके थोडे समय बाद रामायण के प्रथम पूर्ण भारतीय संस्करण बंबई और कलकत्ता से प्रकाशित हुए (कलकत्ते वाला संस्करण १८६६-१८८५ में प० हेमचन्द्र विद्यारत्न द्वारा रामानुज की व्याख्या सहित प्रकाशित हुआ) गोरेसिओ (Gorresio) के संस्करण और उसके इटालियन अनुवाद (१८४७-१८५८ में पेरिस से प्रकाशित) ने सर्वप्रथम यूरोप के लोगों को रामायण का परिचय कराया। हिपोलाइट फौचे (Hippolyte Fauche) का फ्रांसीसी अनुवाद (१८५४-१८५८) और राल्फ टी एच ग्रिफिथ (Ralph T. H. Griffith) का अंग्रेजी अनुवाद (१८७०-१८७४) बाद मे प्रकाशित हुए। आरंभिक इटालियन विद्वानो के कार्य के संबंध में भारत मे इस अज्ञान एक कारण यह था कि गोरेसिओ (Gorresio) की कृति इटालियन भाषा के माध्यम से प्रकाशित हुई थी यद्यपि यही रामायण नागरी के बड़े २ अक्षरों में बहुत उत्तम रूप में छपी थी। एफ्. एस्. एस्कोली (F- S- Asccoli) भारोपीय भाषा शास्त्र के क्षेत्र मे दूसरा महत्वपूर्ण नाम है जिसने आदिम भारोपीय बोली के स्वभाव और विकास के बारे मे कुछ खोजें कीं और जो काफी महत्वपूर्ण थीं, लेकिन इस इटालियन विद्वान के कार्य का परिचय भारत मे व्यापक रूप से नहीं जाना गया क्योंकि पहले तो उसका विषय ही वैज्ञानिक था और दूसरे उसकी रचना इटालियन भाषा में संसार को प्राप्त हुई जिसका कि भारत में अध्ययन नहीं किया जाता था। फिर भी अंग्रेजी के माध्यम से पुराने लैटिन साहित्य और तब बाद के इटालियन साहित्य ने १९वीं शताब्दी के मध्य से भारत के आधुनिक विद्वानों पर प्रभाव डाला। पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगाल के कवियों में से एक श्री माइकेल मधुसूदनदत्त थे जिनकी रचनाओं मे बंगला साहित्य ने अपना प्रांतीय स्वरूप छोड

दिया और विश्व के आधुनिक साहित्य का स्थान ग्रहण कर लिया। वे इटालियन भाषा के एक अच्छे जानकार थे और उन्होंने दांते (Dante) पेत्रार्च (Petrarca) और महान् देश इटली के सम्मान में चतुर्दशपदी (कविता का एक रूप जिसे उन्होंने इटालियन भाषा से बगला मे ग्रहण किया और स्वाभाविक बना दिया) अपनी भाषा बगला में लिखी। उन्होने इन कविताओ में से एक का स्वय इटालियन भाषा में अनुवाद किया और दांते की सातवीं शताब्दी के आयोजन के अवसर पर उसकी स्मृति में आधुनिक भारत की श्रद्धांजली के रूप में रोम भेज दिया। इस प्रकार भारतीय इटालियन संस्कृति के एक सूक्ष्म प्रवाह का आदान–प्रदान होता रहा जो भारत में विकसित हुआ और निश्चय ही इटालियन विद्वानों की भारतीय भाषाओ की उपलब्धि से पोषित और दृढ हुआ।

इसी बीच इटली मे भारतीय भाषाओ का अध्ययन गोरेसियो (Gorrecio) से आरम्भ होकर अपनी फलदायी परम्परा को चालू रखे रहा और इस समय संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के जानने वाले इटालियन विद्वानो का ऐसा समूह है जो प्राचीन भारत के सम्बन्ध मे हमारा ज्ञान बढाने मे उल्लेखनीय योग दे रहा है। कुछ ही समय पूर्व सस्कृत महाभारत के काफी भाग का प्रसिद्ध इटालियन कवि और संस्कृत के विद्वान करबाकर (Kerbaker) द्वारा अनुवाद किया गया जिसमे पूरी कहानी दी गई थी। यह अब इटालियन साहित्य की विशेष सवृद्धि का रूप धारण कर चुका है। मध्य और दूरपूर्व के लिए इटालियन सस्था (Istituto Italiano per il Medio ed Estremo Oriente) द्वारा डाक्टर टुसी (Dr- Giuseppe Tucci) के महत्वपूर्ण निर्देश में अन्य अध्ययन के साथ भारतीय मापओ के लिए जो कार्य किया जा रहा है वह वर्तमान प्राच्य ज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

अब हम उस प्रसिद्ध इटालियन विद्वान का उल्लेख करेगे जिसका राजस्थान (और राजस्थान के द्वारा भारत) आज सम्मान कर रहा है। यह डा० एल० पी० तैस्सितोरि (Dr. L. P. Tessitori) इटली का वह सपूत था जिसमे भारत के प्रति प्यार बढता गया। वह इस देश में आया, कुछ वर्षो तक यहा रहा और काम किया और तब भारत की मिट्टी मे अपने आपको समर्पित कर दिया। यूरोप के अपने भ्रमण के समय मुझे कई प्रसिद्ध यूरोपीयन और प्राच्य विद्वानों से व्यक्तिगत रूप मे परिचित होने का सौभाग्य मिला। उनमे इटली के कुछ प्रसिद्ध प्रोफेसर थे। इनमें पदुआ के प्रोफेसर एम्ब्रोजिओ बैलिनी (Prof- Ambrogio Ballini of Padua) रोम के प्रोफेसर कार्लो फोरमिचि (Prof- Carlo Formichi of Rome) [प्रोफेसर फोरमिचि यह बात याद करके बहुत प्रसन्न होते थे कि मूल लेटिन में उनका नाम संस्कृत वाल्मीकि के समान था] और वह अद्वितीय विद्वान प्रो० तुस्सी (Prof. Giuseppe Tucci) जो स्वय में तीन अपूर्वता लिये हुए हैं अर्थात् वे भारतीय, चीनी और तिब्बती भाषाओ के गहरे जानकार हैं। इनके अतिरिक्त उनके कई शिष्य भी प्रसिद्ध विद्वान है जो इटली मे भारतीय भाषाओं के आलोक को विकीर्ण कर रहे हैं। मैं सर्वप्रथम १६२२ मे पदुआ विश्वविद्यालय के ७वीं शताब्दी के उत्सव मे कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप मे इटली गया। उस समय भारत में तैस्सितोरि का स्वर्गवास हुए कुछ ही वर्ष हुए थे। १६१६ में यूरोप जाने से पूर्व मुझे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में डा० तैस्सितोरि की सबसे महत्वपूर्ण देन का सूक्ष्म अध्ययन करना पडा। यह उनकी अमूल्य कृति "पुरानी पश्चिमी राजस्थानी बोली का ऐतिहासिक व्याकरण" (Historical Grammar of the Old Western Rajasthani Speech) थी। यह भाषा जैसा कि वे कहते थे १६ वीं शताब्दी तक समृद्ध रही और जो पश्चिमी राजस्थानी या मारवाडी और गुजराती दोनों की जननी थी। उनकी यह महान देन भारतीय भाषा शास्त्र की शोध पत्रिका इडियन एन्टीक्वेरी (Indian Antiquary)के सन् १६१४–१६१६. के पृष्ठो मे अब भी बिखरी पडी है। यह बहुत पहले ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो जानी चाहिए थी और प्रत्येक स्थान के विद्वान के लिए प्राप्य हो जानी चाहिए थी। डा० तैस्सितोरि की मृत्यु के बाद अपने कुछ इटालियन मित्रों की सहायता से मैं उत्तरी इटली मे उनके जन्म स्थान उदीने में उनके परिवार वालो को लिख कर इंडियन एन्टीक्वेरी के पृष्ठों में बिखरी हुई इस रचना की एक प्रति प्राप्त करने में सफल हो सका। इसलिए जब मैं कलकत्ता विश्वविद्यालय में एक जूनियर प्रोफेसर की तरह काम कर रहा था तो मुझे डा० तैस्सितोरि की इस बहुत उपयोगी कृति को गहराई से जानने का अवसर मिला। दुर्भाग्य से कलकत्ता की एशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित उनकी कुछ रचनाओ और अंग्रेजी पत्रो के अतिरिक्त मुझे उस विविधतापूर्ण कार्य का कोई ज्ञान नहीं था जो वे पहले

यूरोपीय विश्व की और १८वीं सदी की विभिन्न भागो से निर्मित संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ जानने और प्रकाश में लाने वाले मे से एक था। उसने पश्चिमी संसार के समक्ष संस्कृत के अस्तित्व के महान तथ्य को घोषित किया। यूरोपीय विद्वान् इस महान खोज का उपयोग करने और एक नये विज्ञान अर्थात् तुलनात्मक भाषाशास्त्र का निर्माण करने में सुस्त नहीं थे। इससे उन्हे अपनी भाषाओ और सस्कृतियों की उत्पत्ति समझने में सहायता मिली। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रसिद्ध व्यक्तियो की सर्वप्रथम टोली जर्मनी ने तैयार की, लेकिन दूसरे देश भी पीछे नहीं थे, और निश्चय ही न सुस्त ही थे। हम भारत मे बॉप और रोजेन, लॉसिन और मैक्समूलर, गोल्डस्टकर और ड्यूसेन, साच्यसदेर और वेबर और तुलनात्मक भारोपीय व्याकरण के प्रसिद्ध विद्वान् सिलचर और ब्रुगमैन के बारे में सुनते हैं। हम संस्कृत और भारतीय भाषाओ के अंग्रेज विद्वानो को भी जानते हैं जैसे कोलब्रुक और विल्सन, कनींघम और फ्लीट, ग्रिफिथ और मोनियर विलियम्स और बीम्स और ग्रियर्सन, प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान बार्थ और सेनार्थ, फाऊचर और लेवी भी भारत में अपरिचित नहीं है। कुछ इटालियन यात्री मध्ययुग से लेकर १८वीं शताब्दी तक भारत में आये। इनका आना महान मार्कोपोलो से (तेरहवीं शताब्दी का अन्तिम चरण) आरभ होकर निकोलो कोन्ति, लुदोविको–द–वर्थेमा ओर निकोलस मानुसी (महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति मुगलो की कहानियाँ 'Storia do Mogor' का लेखक) तक चलता रहा और इन्होंने एक जिज्ञासु और श्रद्धालु मध्ययुग और १६वीं शताब्दी के यूरोप को भारत के साहसपूर्ण प्रेम और बर्बर वैभव से परिचय कराया। १८वीं शताब्दी मे कोन्सातेनतिनों बेसची (Constaintino Besci) नामक एक इटालियन पादरी ने ब्राह्मण गुरु की पद्धति स्वीकार की। उसने अपना भारतीय नाम 'वीरम–मुनिवर' रक्खा और तेम्बावेणी (Tembaveni) अथवा "न मुरझाने वाली माला" नामक एक लंबी कविता ललित तमिल भाषा मे लिखी जो ईसाइयो के पुराण कहे जा सकने वाले, या पौराणिक और निजंधरी कहानयों पर आधारित है। यह रचना अब तमिल का एक अति उच्च श्रेणी का ग्रंथ है। बहुत कम भारतीय विद्वानों ने इटली के गोरेसियो (Gorresio) और एस्कोली (Ascoli) नामक दो महान विद्वानों के बारे में सुना होगा, जिन्होने पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे भारतीय भाषाओं के अध्ययन में महत्वपूर्ण योग दिया है। अधिकांश भारतीय इस बात से बिलकुल अपरिचित हैं कि वाल्मीकि की संस्कृत रामायण का प्रथम पूर्ण संस्करण इटालियन टीका सहित एक महान इटालियन संस्कृत भाषा के विद्वान गैस्पेरे गोरेसिओ (Gaspare Gorresio) द्वारा १८४३–१८६७ के बीच इटली मे प्रकाशित हुआ था। यह शानदार संस्करण ताइपिन (Typin) से इटली के महान शासकों में से एक–कारलो अलवर्टो (Carlo Alberto&Charles Albert) की सरक्षता में प्रकाशित हुआ था। यह व्यक्ति सारडीनिया (Sardimia) का उस समय राजा था, जब कि इटली ने अपनी पूर्ण राष्ट्रीय–एकता प्राप्त नहीं की थी और उसका कुछ भाग आस्ट्रिया के अधिकार मे था। इसके थोड़े समय बाद रामायण के प्रथम पूर्ण भारतीय संस्करण बंबई और कलकत्ता से प्रकाशित हुए (कलकत्ते वाला सस्करण १८६६–१८८५ में पं० हेमचन्द्र विद्यारत्न द्वारा रामानुज की व्याख्या सहित प्रकाशित हुआ) गोरेसिओ (Gorresio) के संस्करण और उसके इटालियन अनुवाद (१८४७–१८५८ में पेरिस से प्रकाशित) ने सर्वप्रथम यूरोप के लोगों को रामायण का परिचय कराया। हिपोलाइट फौचे (Hippolyte Fauche) का फ्रांसीसी अनुवाद (१८५४–१८५८) और राल्फ टी एच ग्रिफिथ (Ralph T. H. Griffith) का अंग्रेजी अनुवाद (१८७०–१८७४) बाद मे प्रकाशित हुए। आरंभिक इटालियन विद्वानो के कार्य के संबंध में भारत में इस अज्ञान एक कारण यह था कि गोरेसिओ (Gorresio) की कृति इटालियन भाषा के माध्यम से प्रकाशित हुई थी यद्यपि यही रामायण नागरी के बडे २ अक्षरो में बहुत उत्तम रूप मे छपी थी। एफ. एस. एस्कोली (F- S- Asccoli) भारोपीय भाषा शास्त्र के क्षेत्र में दूसरा महत्वपूर्ण नाम है जिसने आदिम भारोपीय बोली के स्वभाव और विकास के बारे मे कुछ खोजे कीं और जो काफी महत्वपूर्ण थीं, लेकिन इस इटालियन विद्वान के कार्य का परिचय भारत में व्यापक रूप से नहीं जाना गया क्योंकि पहले तो उसका विषय ही वैज्ञानिक था और दूसरे उसकी रचना इटालियन भाषा में संसार को प्राप्त हुई जिसका कि भारत में अध्ययन नहीं किया जाता था। फिर भी अंग्रेजी के माध्यम से पुराने लैटिन साहित्य और तब बाद के इटालियन साहित्य ने १६वीं शताब्दी के मध्य से भारत के आधुनिक विद्वानों पर प्रभाव डाला। पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगाल के कवियों में से एक श्री माइकेल मधुसूदनदत्त थे जिनकी रचनाओं में बंगला साहित्य ने अपना प्रांतीय स्वरूप छोड़

प्रकाशित कर दी थी। तैस्सितोरि का कार्य यद्यपि व्यापक और एक विस्तृत क्षेत्र को लिये हुआ था लेकिन कुछ समय तक बंगाल मे यह अज्ञात रहा। भारत के दूसरे भागो , उत्तरी भारत और राजस्थान में भी इस पर ध्यान नहीं गया। राजस्थान के स्वर्गीय महामहोपाध्याय डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा जैसे महान विद्वान ने जो ऐतिहासिक अध्ययन मे राजस्थानियो के पथ प्रदर्शक और आलोक स्तम्भ थे, तैस्सितोरि के कार्यो की मुक्त कठ से सराहना की है लेकिन इस सम्बन्ध मे तैस्सितोरि की सेवाओ का पूर्ण परिचय या उनकी पूर्ण प्रशसा करने का समय अभी नहीं आया था।

तैस्सितोरि द्वारा जो बीज बोया गया उसने अकुरित होने मे अधिक समय नहीं लगाया और अंत में फल दिखाई पडने लगा। इस शताब्दी की दूसरी दशाब्दी के अन्त मे कम से कम एक लेखक राजस्थानी को भारत की आधुनिक साहित्यिक भाषा बनाना चाहता था और हिन्दी, बंगाली, गुजराती, मराठी और अन्य भाषाओ के साथ उसकी बराबरी की मांग कर रहा था। वह व्यक्ति शिवचन्द्र भरतिया था जिसने कम से कम दो बहुत सुन्दर नाटक आधुनिक साहित्यिक राजस्थानी मे जिसे वह प्रचलित करना चाहता था, लिखे। निश्चय ही वह तैस्सितोरि से अलग स्वतंत्रता से कार्य कर रहा था, क्योकि तैस्सितोरि का कार्य यूरोपीय भाषाओ और साहित्य के एक वैज्ञानिक विद्वान का था जबकि भरतिया केवल अपनी मातृ भाषा का प्रेमी था और जो उसे उसका अतीत गौरव दिलाना चाहता था लेकिन तैस्सितोरि द्वारा राजस्थानी रचनाओ के प्रकाशन का अनुसरण भारत में विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं ने किया। बनारस की नागरी प्रचारिणी सभा, जो हिन्दी साहित्य के लिए एक राष्ट्रीय सस्था के समान है, ने सर्व प्रथम उत्तर भारत के उस मध्ययुगीन महाकाव्य, जो हिन्दी साहित्य और राजस्थानी में एक महान कृति मानी जाती है, का सम्पादन और प्रकाशन किया। यह रचना पृथ्वी राज चौहान के दरबारी कवि चन्द बरदाई द्वारा लिखित माने जाने वाली ' पृथ्वीराज रासो' है। पृथ्वीराज चौहान दिल्ली का अन्तिम हिन्दू सम्राट था जो ११६८ मे तिरौरी (Tirauri) की दूसरी लडाई मे शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी द्वारा हराया जाकर मारा गया था। इसके बहुत पहले सन् १८७३–७६ मे कलकत्ता की एशियाटिक सोसायटी ने उस महान रचना के सात समयो को अग्रेजी अनुवाद सहित प्रकाशित कराये थे। ये अग्रेज विद्वान जान बीम्स (John Beams) और जर्मन व अग्रेजी के विद्वान डा० ए० एफ० रुडाल्फ हार्नली (Dr. A. F. Rudolf Hoernle) के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुए थे। पर यह प्रकाशन पूरा नहीं हुआ। सन् १६२४ मे एसियाटिक सोसायटी से पडित रामकृष्ण विद्यारत्न ने भी "सूरज प्रकाश" (कविया करणीदान द्वारा लिखित महाराजा श्री अमयसिंहजी से सम्बन्धित राजस्थानी वीर काव्य) प्रकाशित कराया। राजस्थान के वीर रसात्मक ऐतिहासिक महाकाव्यो और अन्य बडी रचनाओं के प्रति जो उत्तरी भारत की विभिन्न भाषाओ मे लिखी गई थीं, के विकास के संवध मे हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र और स्वय राजस्थान में एक रुचि उत्पन्न हुई। हम्मीर रासो जैसी अन्य रचनाओ के अतिरिक्त बनारस की नागरी प्रचारिणी सभा ने 'ढोला मारूरा दूहा" नामक एक मध्युगीन राजस्थानी रचना को प्रकाशित किया। इसने केवल हिन्दी के साहित्यिकों में ही नही, राजस्थानी विद्वानो और राजस्थान के साधारण लोगों में भी राजस्थानी डिंगल साहित्य को पुनर्जीवित करने की भावना मे एक सीमा–चिन्ह का कार्य किया।

इस समय गुजरात और सौराष्ट्र के विद्वान गुजराती राजस्थानी के आरंभिक स्वरूप के अध्ययन के महत्वपूर्ण कार्य मे लगे हुए थे। गुजरात की कई साहित्यिक संस्थाओ ने प्राचीन या आरंभिक बताई जाने वाली भाषा की रचनाओ को व्याख्या सहित प्रकाशित करना आरंभ कर दिया था। इस बात से राजस्थानी विद्वानों को भी प्रेरणा मिली क्योंकि वे भी अपनी भाषा की उत्पत्ति और विकास और अपने साहित्य का आरंभ जानने का बहुत ध्यान रखते थे। राजस्थानी भाषा के आरंभिक स्वरूप पर तैस्सितोरि का कार्य जैसा कि उन्होंने अपनी ' पुरानी पश्चिमी राजस्थानी व्याकरण" मे दिखाया है, अन्य भारतीय भाषाओं के क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों द्वारा बहुत सावधानी से अध्ययन किया जाने लगा। राजस्थानी और गुजराती में कार्य करने वालों ने भी इस रचना से सूचना प्राप्त की और साथ में इससे प्रेरणा भी ली। इस प्रकार तैस्सितोरि का कार्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से नई भारतीय आर्य भाषाओ में भाषा संबधी कार्य के लिए सामान्य रूप से और राजस्थानी रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन और उनके पुनर्स्थापन में विशेष रूप से प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

ही इटली मे कर चुके थे, लेकिन यह मेरे लिए पहले भी थी और अब भी बहुत दुःख की बात है कि मै उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सका। वे मेरे से उम्र मे केवल दो वर्ष बडे थे। डा० तैस्सितोरि इस महान कृति के द्वारा प्रसिद्ध हुए। यह कार्य उन्होंने भारतीय आर्य– भाषाओ और साहित्य के विस्मृत अध्ययन के लिए भारत में आने के बाद किया जो स्वय इटली मे काफी फलदायी हुआ था। मुझे भारत मे उनके जीवन के बारे में और उन परिस्थितियो के बारे मे जिनसे उनकी आकस्मिक मृत्यु हुई कोई पता नहीं था। वे पहले सन् १९१४ मे भारत आये और पाँच वर्ष यहाँ रहे और कार्य किया। १९१९ के आरम्भ में इटली मे कुछ समय रह कर वे वापस उसी वर्ष के नवम्बर में लौट आये। उनका केवल ३२वर्ष की अवस्था में एकाएक निमोनिया से बीकानेर में स्वर्गवास हो गया। जो लोग उन्हें जानते थे उन सब ने सभी स्थानों पर उनकी मृत्यु का शोक मनाया। राजस्थानी और दूसरे विद्वान् जो उनकी रचनाओं से परिचित हैं उनको पहले ही राजस्थानी, प्राकृत और संस्कृत के लिए कार्य करने वाले सबसे अधिक और विशिष्ट विद्वानो मे से एक स्वीकार किया है।

हम इस बात के लिए डा० ऐतिलियो बोनेतो (Dr. Atilio Bonatto) जो उदीने की परिषद के सदस्य थे, के बहुत कृतज्ञ हैं कि उन्होने इटालियन और भारतीय पृष्ठ भूमि पर तैस्सितोरि के जीवन और कृतित्व का वाग्मितापूर्ण और विस्तृत परिचय दिया है। डा० बोनेतो ने २६ फरवरी १९२५ को उदीने की परिषद् के सामने एक शोक सभा मे भाषण के रूप मे यह परिचय दिया और उन्होंने तैस्सितोरि के प्रकाशनों की पूर्ण सूची भी दी है। भारतीय भाषाओं के अध्ययन के इतिहास में इस भाषण का सम्मानपूर्ण स्थान बना रहेगा। सादूल राजस्थानी रिसर्च इस्टीटयूट, बीकानेर की शोध पत्रिका "राजस्थान भारती" के अप्रेल १९५० के अक मे श्री हजारीमल बांठिया ने हिन्दी मे एक लेख लिखा है (पृष्ठ ५७–७६) जिसमे तैस्सितोरि के जीवन और कार्य , विशेषत राजस्थान में , पर प्रकाश डाला गया है। श्री बांठिया के इस लेख में तैस्सितोरी द्वारा लिखित कुछ हिन्दी पत्र भी है जो उन्होने राजस्थान में अपने मित्रों और गुरु को लिखे थे।

कलकत्ता की एशियाटिक सोसायटी के तत्वावधान मे (सन् १९१७ और १९२० के बीच) राजस्थानी भाषा की तीन आरम्भिक रचनाये प्रकाशित हुई जिनका उन्होंने हस्तलिखित प्रतियो से व्याख्या सहित सम्पादन किया था। ये निम्न लिखित थीं–

१. वचनिका राठौर रतनसिंहजी री महेशदासोत खिडिया जगा री कही (१९१७)
२ वेलि क्रिसन रुकमणि री राठौर राजा प्रिथीराज री कही (१९१९)
३ छन्द राव जैतसी रो विठू सूजे रो कियो (१९२०)

एशियाटिक सोसायटी के द्वारा (सन् १९१७–१८ में) उन्होने दो भागो मे "काव्य और ऐतिहासिक हस्तलिखित ग्रन्थों की वर्णनात्मक सूची" प्रकाशित की जिन्हे वे स्वयं जोधपुर और बीकानेर से ढूंढकर लाये थे।

बंगाल में भी कुछ विद्वानों ने राजस्थानी काव्य के प्रति रुचि प्रकट की। लंदन से १८२६ में केप्टिन जेम्स टॉड (Capt James Tod) के दो भागों मे राजस्थान का इतिहास (Annals and Antiquites of Rajasthan) जो राजस्थानी शौर्य और संस्कृति का एक अपूर्व भंडार था, के प्रकाशित होने पर वह बगाल के लोगो के लिए शीघ्र ही एक मान्य साहित्य बन गया और बंगला मे उसके कई अनुवाद निकले। केप्टिन जेम्स टॉड की पुस्तक बंगाल के लोगो के लिये एक प्रकार का नया महाभारत बन गया और उन्हे अपनी राष्ट्रीय और देशभक्ति की भावनाओं को दृढ बनाने मे सहायक हुई। इसी रचना से प्रभावित होकर राजस्थानी इतिहास और साहसिक प्रेम पर उपन्यास और नाटक लिखे गये और राजस्थान के इतिहास का बंगाल के विद्वानो द्वारा गहन अध्ययन किया जाने लगा। यह कार्य स्वर्गीय महामहोपाध्याय डा० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा आरम्भ किया गया। बंगाली इतिहासकारों ने आरम्भिक राजपूत राज्यों के इतिहास के सम्बन्ध में उल्लेखनीय योग दिया है। तैस्सितोरि के इस क्षेत्र मे आने से पूर्व ही महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने कलकत्ता की एशियाटिक सोसाइटी से सन् १९१३ मे अपनी वीर काव्य और ऐतिहासिक हस्तलिखित ग्रन्थों के खोज कार्य की आरम्भिक रिपोर्ट (Preliminary Report on the Operation in Search of Mss. of Bardic Chronicles)

यह उचित ही है कि इस श्रेष्ठ नगर बीकानेर की सादूल राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट द्वारा स्वर्गीय डा० एल० पी० तैस्सितोरि की स्मृति को, उनकी समाधि पर ईसाई ढंग का एक उपयुक्त स्मारक बनाकर अमिट बनाना चाहता है।

हम अपने बीच मे महान देश इटली के एक प्रतिनिधि भारत में इटालियन दूतावास के कौसिल डा० तिबेरियो तिबेरी (Dr. Tibeiro Tiberii) को पाकर प्रसन्न हैं, जो अपने साथ विज्ञान और मानवता के क्षेत्र मे इटली की महान परम्परा को लाये है।

मैं चाहता हूँ कि मानव सभ्यता की वैज्ञानिक खोज के क्षेत्र में यह स्मारक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का प्रतीक बन जाय । यह हमारे दो महान् देशो–इटली, जो यूरोप में भारत का प्रतिरूप है, और भारत जो एशिया मे इटली (साथ में यूनान भी) का प्रतिरूप है, के बीच मे चिन्मय अमर सेतु बन जाय। यह वैज्ञानिक अध्ययन मे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का एक प्रेरणादायक प्रतीक बने। यह भारतीयो के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बने ताकि वे अपनी भाषा और साहित्य के अवशेष द्वारा और अपने पूर्वजो से प्राप्त सास्कृतिक जीवन के अन्य विभिन्न क्षेत्रो द्वारा अपने आप को और अधिक जानने का प्रयास करे । अन्त में मेरी कामना है कि यह स्वर्गीय एल० पी० तैस्सितोरि के महान् नाम का एक अमर स्मारक बना रहे।

विद्वानों की परिषद् से किसी विचार के निकलने और सडकों पर लोगों के झुन्ड को गतिशील करने में अधिक समय नहीं लगता है। इन विद्वानो के कार्य ने, जिसमे तैस्सितोरि की महत्वपूर्ण देन भी है, राजस्थानी में एक आम रुचि उत्पन्न कर दी है। राजस्थानी बोलने वाले लोगों मे अपनी भाषा के कुछ उत्साही प्रेमी अब राजस्थानी को एक स्वतंन्त्र भाषा के रुप में मानने पर गहराई से विचार कर रहे हैं। इस आन्दोलन का एक केन्द्र सूदूर कलकत्ता में है, जहा मारवाडियों की समृद्ध व्यापारिक जाति मे अनेक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी मातृभाषा के गहरे प्रेमी हैं। अन्य केन्द्र उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर मे हैं, पर राजस्थान मे अब जैसी परिस्थितियां हैं उनके कारण इस सम्बन्ध में लोगो में दृष्टिकोण की काफी भिन्नता है। कुछ इस पक्ष मे हैं कि साहित्यिक कार्यो, स्कूलों मे शिक्षा के माध्यम यहां तक कि शासन कार्यो के लिए भी राजस्थानी को पुनर्जीवित किया जाय। दूसरे जो अंग्रेजी और हिन्दी द्वारा पहले से प्राप्त स्थिति से परिचित हैं इसके बारे में गहरी शंका का अनुभव कर रहे हैं। वे हिन्दी ही रखना चाहते हैं क्योंकि हिन्दी ने राजस्थानी लोगों को अभिव्यक्ति का एक तैयार शुदा ऐसा रुप दिया है जिसने उनको पंजाब से बिहार तक उत्तरी भारत की वृहत्तर दुनियां से सम्बन्धित कर दिया है। कुछ वर्ष पूर्व मुझसे उदयपुर आने और इस सम्बन्ध मे अपना मत देने के लिए कहा गया था। यह कार्य बडा कठिन है और कभी-कभी तो इस प्रकार के मामले मे जो निश्चित रुप से स्वीकृत और स्थापित खडी बोली हिन्दी का विकेन्द्रीकरण करेगा, एक अन्य भाषा के क्षेत्र के व्यक्ति का अपना निश्चित मत देना बिलकुल अनुचित होगा। लेकिन मैंने राजस्थानी भाषा , इसके इतिहास और विकास के संम्बन्ध मे जिन्हे मैं तथ्य मानता था राजस्थानी बोलने वालों के सामने प्रस्तुत किया। मैने सुझाव दिया कि इसका हल स्वयं राजस्थान के लोगो के पास ही है और भाषा संम्बन्धी विभिन्न प्रश्नो पर विचार करने के बाद केवल वे ही निर्णय कर सकते हैं कि खडी बोली हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान देने के बाद राजस्थानी को एक भिन्न भाषा के रुप में पुनर्जीवित करना उनके लिए ठीक होगा या राजस्थान में इसे गौंण भाषा के रुप में चालू रखना ठीक होगा। इसी प्रकार दक्षिणी फ्रांस के लोग (Provencals) ही केवल निर्णय कर सकते हैं कि क्या वहां की भाषा (Provencals Language) को एक बार पुन अपनी पुरानी और बहुत प्रौढ साहित्यिक परम्परा के साथ एक स्वतन्त्र भाषा के रुप में पुनर्स्थापित करना सभव होगा। लेकिन वहाँ के लोगों ने उत्तरी फास की फ्रेंच को स्वीकार करने के लिए सहमति दे दी है, विशेषत जब उनकी भाषा , फ्रेडरिक मिस्ट्रल (*Frederic Mistral*) [इन्होंने प्रान्तीय भाषा मे वहा के ग्राम्य जीवन की पृष्ठ भूमि पर लिखे गये अपने प्रसिद्ध रोमांटिक काव्य (Mireio or Mireille) पर साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त किया] और जस्मिन (Jasmin) द्वारा पुनर्जीवित करने के प्रयास के बावजूद स्थानीय ग्राम्य भाषा के अनेक रूपों में विभाजित हो गयी थी।

एक बात स्पष्ट है। अब राजस्थान राज्य एक नाम से और एक सगठित राज्य के रूप में है। राजस्थान के लोग हमेशा अपनी स्थानीय भाषा और इसके साहित्य और हमारी भारतीय जन संस्कृति का गौरव अनुभव करते रहे हैं। हिन्दी का अध्ययन करते और अपने समस्त जीवन के कार्यो के लिए इसका प्रयोग करते हुए, वे स्थानीय बोली और सस्कृति की परम्परा को भी जीवित रखना और उसका अध्ययन करना चाहते हैं। वे अब कृतज्ञता से स्मरण करते हैं कि उनकी भाषा के प्रति इस इटली के सपूत ने कैसा प्रेम दिखाया और राजस्थान की जनता और विज्ञान दोनों की उसने किस उत्साह की भावना से सेवा की। इस भाषा के पुराने साहित्य को पुनर्स्थापित करने के लिए और इसकी वैज्ञानिक खोज के लिए उसने अपनी अल्पायु के सर्वश्रेष्ठ समय को समर्पित कर दिया इसके लिए यहां के लोग कृतज्ञ हैं। अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गर्व होने के साथ यहां के लोगों में उस व्यक्ति के लिए कृतज्ञता का भाव भी है, जिसने न केवल एक नये आन्दोलन की भावना उत्पन्न की , जो हिन्दी द्वारा प्रदर्शित महान ऐक्य के लिए एक भिन्न मत वाला जबर्दस्त बल है, बल्कि शुद्ध वैज्ञानिक उद्देश्य की भावना से इस महान परम्परा का अध्ययन प्रारम्भ किया। वह व्यक्ति इसके बहुत से रहस्यों को, जिन पर न तो पहले ध्यान गया था और जो न सोचे गये थे , प्रकाश में लाने में सफल हुआ। ऐसा व्यक्ति निश्चित ही उन लोगों की शुभेच्छा का अधिकारी होगा जिनकी भाषा की ओर उसने इस प्रकार संसार के विद्वानों का ध्यान आकर्षित करके प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से सेवा की।

सुपनो साचो हुओ

(सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी श्री अगरचन्दजी नाहटा के भानजे श्री हजारीमल बाठिया,– एक होनहार, मिलनसार और उत्साही युवक हैं । हाथरस मे आपकी दुकान है और कुशल व्यापारी हैं। यदाकदा आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आप राजस्थानी भाषा के अनन्य प्रेमी है। डॉ० तैस्सितोरी पर सर्व प्रथम लेख लिखने वाले हैं जो राजस्थान–भारती भाग ३ अक १ मे प्रकाशित हुआ है। आपने ही डा० तैस्सितोरी की समाधि का निर्माण करवाया है और अपने पिता स्वर्गीय श्री फूलचन्दजी बाठिया की स्मृति मे डा० तैस्सितोरी पर सर्वश्रेष्ठ लेख लिखनेवाले श्री नरेन्द्र कुमार भानावत को रू० १०१) का पुरुस्कार दिया है।

– सम्पादक, राजस्थान भारती, बीकानेर

आद–जुगाद सू आहीज बात चली आवै है कै दुनिया में मिनख री नहीं, मिनख रै गुणां री पूजा हुवै है। मिनख कित्तो ही बडो हुवो,–राजा हुवो, चाहै धनपति अथवा भणियो–पढ्यो, पिण जठै तक उणमें मिनखपणो नहीं हुवै,–मिनख रा गुण नहीं हुवै, उणरी पूछ–उणरो आदर, उत्तो नहीं हुवै जित्तो कै एक गुणी मिनख रो। राजा अपणै राज रो, धनवान अपणै धन रो, नै भणियो–पढियो अपणी विद्या रो, भला ही घमंड करो, पिण उणारो घमंड गुणीजनां रै गुण धन रै सामनै उतरतो हीज रयो है। *गुणी री पूजा उणरै मरिया पछै ही होवती रहवै है,* पिण राजमद, धनमद और विद्यामद वालां री अणू ती नै पाखडी पूजा उणांरे जीवतां हीज खतम होतो देखीजै है। अैडा सईकडा उदाहरण देखण में आवै है।

डॉ० टैसीटोरी–गुणीजना री गिणती मे सारां सूं पहली आवै जैडो अेक उदाहरण है। वो राजा नहीं हो, नै नहीं धनवान भी हो, पिण अेक गुणी विद्वान हो। उणमें मिनख रा अनोखा गुण हा। घणा ही विदेशी राजा–बादशाह, लाठ, गवर्नर अठै आया, मूछा–मरोडतां रोब जमायो, पिण आज वे कठै ? कुण पूछै उण बापडां नै ? हँसता आया नै रोवता गया। पिण एक विदेशी–गुणी डॉ० टैसीटोरी री उणरै मरियां पछै भी पूजा हुवै। कठै रो जायो–जनमियो,–कैडै कुळ रो,–कैडै डील–डौळ रं. ? इण बाता नै कोई को पूछै नीं। पूछै है उणरा गुणा नै! झुरै है उणरा कामा नै! 'काम व्हालो है चाम व्हालो नहीं'।

म्हैं टैसीटोरी ने कदे ही मिलियो–देखियो नहीं। साहित्य रा मर्मज्ञ म्हारा मामोजी श्री अगरचंदजी नाहटा, नै पछै मुनि श्री विद्याविजयजी महाराज सूं इण तपस्वी विदेशी रा गुण नै वखाण सुणिया तो उणरै प्रति भक्ति रो उद्रेक उत्पन्न हुओ। मामाजी सूं इणरै सबध री सामग्री ली और एक लेख लिखियो जिको 'राजस्थान भारती' भाग ३ अंक १ में प्रकाशित हुओ। साहित्य–जगत मे टैसीटोरी रा काम ने गुणां री जांण हुई। मुनि विद्याविजयजी तो लेख नै पढनै घणा हीज राजी हुआ। उणां म्हनै एक पत्र लिख्यो (जिको उणारै श्रुत–संस्मरण रै फुट नोट में सम्पादकजी प्रकाशित कर दियो है।) नै उणांरे कनै टैसीटोरी रै लिखियोडा पत्र, उणरा चित्र, अखबारां रा कटिंग नै दूजी जो सामग्री उणांरै कनै ही, वा संगली म्हनै भेज दी। मामाजी रै दियोडी नै इण सामग्री सूं तथा राजस्थान भारती रा सम्पादक श्री सांकरियाजी री सहायता और प्रेरणा सूं म्हारी जिज्ञासा और वधी । म्है साकरियाजी नै कयो कै थे टैसीटोरी री कबर बणावण रो प्रबध कर दो, खरचो हूँ देऊंला, और जिण बाद इन्स्टीट्यूट री तरफ सूं उणरै मृत्यु–दिवस रो जबरदस्त जलसो मनावण रो प्रबंध कर दो। श्री साकरियाजी इन्स्टीट्यूट में ओ प्रस्ताव रखियो, जिको सर्व–सम्मति सूं पास हुओ और इन्स्टीट्यूट अपणै खरचे सूं जिण ठाट–बाट सूं औ समारोह मनायो, वो बीकानेर में तो कँई, पिण सारै राजस्थान में आज तांई एक विदेशी री याददास्तो में इण तरै रो उत्सव नहीं मनीजियो सुणियो । म्हनै इण उत्साव री जित्ती कामना

Dr. Luigi Pio Tessitori-Memorial

Opening Speech delivered by *Dr. Tiberio Tiberii,* Consul of the Italian Embassy in India, under the auspices of the Sadul Rajasthani Research Institute Bikaner,

November 22, 1956

I am very glad that I had the opportunity to come to this beautiful town for t purpose of bringing the presence of the Embassy of Italy to the celebrations which are carried ou in honour of an Italian national who won fame and affection with the Indian people for his passionate interest in this country and its old culture and civilisation. I am actually proud that a fellow citizen of mine has so much distinguished himself for his learning and for his work of research into the ancient language of India as to be highly appreciated even by the best Indian scholars themselves. It is true that India has always appealed to the imagination of Italians as a wonderful land and fascinating country still I must say that with Dr.Tessitori the love and the inclination for the old Indian languages began so early in his life and manifested itself so strongly that we feel that he was born to become a scholar of the Indian culture.

It is for a great satisfaction to say that Dr. Tessitori always found in this country the warmest welcome and the most helpful assistance from Indian fellow scholars,-a circumstance which is not always to be found in a similar degree in every country and testifies of the noble character and sincere friendliness of these scholars, and there is no wonder therefore that at present Dr Tessitori is not forgotten but is still remembered and honoured after over thirty years from his demise.

I must say that in coming here and visiting the Tessitori papers exhibition, I experienced almost some surprise to see the painstaking care, the tireless interest, the continued attention with which every paper and item relating to the Italian scholar has been preserved throughout so many years down to the last latter and photograph even including a picture showing him at the age of two. The clever effort to make the exhibition was complete and interesting as possible and that to make the programme of the celebration as varied and comprehensive as possible, there is a great honour to the Sadul Rajasthani Research Institute and will be deeply appreciated by all Italians who will come to learn about it. I only regret that repeated efforts to trace in Italy any relations of Dr. Tessitori to ask them for a massage on this occasion, have failed. However the enquiries will be renewed by the Italian Embassy to acquint any of the relatives of present homage which is paid to the late Dr. Tessitori. Our ratitude and that of any of the relatives goes [illegible] the present [illegible] oration but also for

सुपनो साचो हुओ

(सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी श्री अगरचन्दजी नाहटा के भानजे श्री हजारीमल बाठिया,– एक होनहार, मिलनसार और उत्साही युवक हैं । हाथरस मे आपकी दुकान है और कुशल व्यापारी हैं। यदाकदा आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आप राजस्थानी भाषा के अनन्य प्रेमी हैं। डॉ० तैस्सितोरी पर सर्व प्रथम लेख लिखने वाले है जो राजस्थान–भारती भाग ३ अक १ में प्रकाशित हुआ है। आपने ही डा० तैस्सितोरी की समाधि का निर्माण करवाया है और अपने पिता स्वर्गीय श्री फूलचन्दजी बाठिया की स्मृति मे डा० तैस्सितोरी पर सर्वश्रेष्ठ लेख लिखनेवाले श्री नरेन्द कुमार भानावत को रू० १०१) का पुरुस्कार दिया है।

– सम्पादक, राजस्थान भारती, बीकानेर

आद–जुगाद सू आहीज बात चली आवै है कै दुनिया मे मिनख री नहीं, मिनख रै गुणा री पूजा हुवै है। मिनख कित्तो ही बडो हुवो,–राजा हुवो, चाहै धनपति अथवा भणियो–पढयो, पिण जठै तक उणमे मिनखपणों नहीं हुवै,–मिनख रा गुण नहीं हुवै, उणरी पूछ–उणरो आदर, उत्तो नहीं हुवै जित्तो कै एक गुणी मिनख रो। राजा अपणै राज रो, धनवान अपणै धन रो, नै भणियो–पढियो अपणी विद्या रो, भला ही घमड करो; पिण उणारो धमड गुणीजनां रै गुण धन रै सामनै उतरतो हीज रयो है। गुणी री पूजा उणरै मरिया पछै ही होवती रहवै है, पिण राजमद, धनमद और विद्यामद वालां री अणू ती नै पाखडी पूजा उणारे जीवता हीज खतम होतो देखीजै है। अैडा सईकडा उदाहरण देखण में आवै है।

डॉ० टैसीटोरी–गुणीजना री गिणती मे सारां सूं पहली आवै जैडो अेक उदाहरण है। वो राजा नहीं हो, नै नहीं धनवान भी हो, पिण अेक गुणी विद्वान हो। उणमे मिनख रा अनोखा गुण हा। घणा ही विदेशी राजा–बादशाह, लाठ, गवर्नर अठै आया, मूछा–मरोडता रोब जमायो, पिण आज वे कठै ? कुण पूछै उण बापडां नै ? हँसता आया नै रोवता गया। पिण एक विदेशी–गुणी डॉ० टैसीटोरी री उगरै मरियां पछै भी पूजा हुवै। कठै रो जायो–जनमियो,–कैडै कुळ रो,–कैडै डील–डौळ रो ? इण बातां नै कोई को पूछै नीं। पूछै है उणरा गुणां नै! झुरै है उणरा कामा नै! 'काम व्हालो है चाम व्हालो नहीं'।

म्हैं टैसीटोरी ने कदे ही मिलियो–देखियो नहीं। साहित्य रा मर्मज्ञ म्हारा मामोजी श्री अगरचंदजी नाहटा, नै पछै मुनि श्री विद्याविजयजी महाराज सू इण तपस्वी विदेशी रा गुण नै वखांण सुणिया तो उणरै प्रति भक्ति रो उद्रेक उत्पन्न हुओ। मामाजी सू इणरै सवध री सामग्री ली और एक लेख लिखियो जिको 'राजस्थान भारती' भाग ३ अक १ मे प्रकाशित हुओ। साहित्य–जगत मे टैसीटोरी रा काम ने गुणां री जाण हुई। मुनि विद्याविजयजी तो लेख नै पढनै घणा हीज राजी हुआ। उणा म्हनै एक पत्र लिख्यो (जिको उणांरै श्रुत–संस्मरण रै फुट नोट मे सम्पादकजी प्रकाशित कर दियो है।) नै उणारे कनै टैसीटोरी रै लिखियोडा पत्र, उणरा चित्र, अखबारा रा कटिग नै दूजी जो सामग्री उणांरै कनै ही, वा संगली म्हनै भेज दी। मामाजी रै दियोड़ी नै इण सामग्री सूं तथा राजस्थान भारती रा सम्पादक श्री सांकरियाजी री सहायता और प्रेरणा सू म्हारी जिज्ञासा और वधी । म्है साकरियाजी नै कयो कै थे टैसीटोरी री कबर बणावण रो प्रबंध कर दो, खरचो हूँ देऊंला, और जिण बाद इन्स्टीट्यूट री तरफ सूं उणरै मृत्यु–दिवस रो जबरदस्त जलसो मनावण रो प्रबध कर दो। श्री साकरियाजी इन्स्टीट्यूट मे ओ प्रस्ताव रखियो, जिको सर्व–सम्मति सूं पास हुओ और इन्स्टीट्यूट अपणै खरचे सूं जिण ठाट–बाट सूं ओ समारोह मनायो, वो बीकानेर में तो कँई, पिण सारै राजस्थान मे आज तांई एक विदेशी री याददास्तो में इण तरै रो उत्सव नहीं मनीजियो सुणियो । म्हनै इण उत्सव री जित्ती कामना

Dr. Luigi Pio Tessitori-Memorial

Opening Speech delivered by *Dr. Tiberio Tiberii,* Consul of the Italian Embassy in India, under the auspices of the Sadul Rajasthani Research Institute Bikaner, *November 22, 1956*

I am very glad that I had the opportunity to come to this beautiful town for the purpose of bringing the *presence of the Embassy of Italy to the celebrations which are carried out* in honour of an Italian national who won fame and affection with the Indian people for his passionate interest in this country and its old culture and civilisation. I am actually proud that a fellow *citizen of mine has so much distinguished himself for his learning* and for his work of research into the ancient language of India as to be highly appreciated even by the best Indian scholars themselves. It is true that India has always appealed to the imagination of Italians as a wonderful land and fascinating country still I must say that with Dr.Tessitori the love and the inclination for the old Indian languages began so early in his life and manifested itself so strongly that we feel that he was born to become a scholar of the Indian culture.

It is for a great satisfaction to say that Dr. Tessitori always found in this country the warmest welcome and the most helpful assistance from Indian fellow scholars,-a circumstance which is not always to be found in a similar degree in every country and testifies of the noble character and sincere friendliness of these scholars, and there is no wonder therefore that at present Dr. Tessitori is not forgotten but is still remembered and honoured after over thirty years from his demise.

I must say that in coming here and visiting the Tessitori papers exhibition, I [illegible] the age of two. The clever effort to make the exhibition was complete and interesting as possible *and that to make the programme of the celebration as varied and comprehensive as possible,* there is a great honour to the Sadul Rajasthani Research Institute and will be deeply appreciated by all Italians who will come to learn about it. I only regret that repeated efforts to trace in Italy *any relations of Dr Tessitori to ask them for a massage on this occasion, have failed. However* the enquiries will be renewed by the Italian Embassy to acquint any of the relatives of present *homage which is paid to the late Dr. Tessitori. Our gratitude and that of any of the relatives goes to the Sadul Rajasthani Research Institute not only for the present commemoration but also for* the noble work they have caried out to restore and practically to build the tomb of the scholar in Bikaner grave-yard. It was not without some emotion that this morning I was able to take part to the lying of wreaths of flowers on the *tomb* where *Dr. Tessitori was laid to rest on this very day in the year 1919* and to see the newly built tomb in the red sand- stone blocks and the beautiful marble inscriptions and the white marble cross of the Christian faith. I am to say therefore that *I* have not come here to speak about the *work of Dr Tessitori and to praise it which work can be* better done by other scholars as hereby present DR. Chatterji, who are qualified to speak on the subject with the authority of their knowledge, but I have come principally to convey the apprecia- [illegible] *...aly in India to the Sadul Rajasthani Research Institute* [illegible] either by his work or his presence to the success of [illegible] ns in honouring a deserving Italian, an action which however does great honour in the first place to the very persons who have *accomplished it.*

●●●

मेरी इटली यात्रा की कहानी

मैं अपनी इटली यात्रा की कहानी लिखने से पहले इसके पूर्व की पृष्ठ–भूमि को प्रस्तावना के रूप मे बताना चाहता हूँ। मेरी इटली यात्रा जिसको कभी स्वप्न मे भी नहीं सोचा था, क्यों और कैसे सम्पन्न हुई।

तैस्सितोरी के जीवन - परिचय की रचना

सन्० १६५० ई० की बात है जब मै बीकानेर गया हुआ था–सुप्रसिद्ध "साहित्य वाचस्पति" मामाजी श्री अगरचन्द जी नाहटा ने कहा–'कई वर्षो से इटली के विद्वान डा० एल० पी० तैस्सितोरी के स्वयं लिखित कुछ पत्र एवं फोटो मेरे पास रखे हुए हैं, जो उन्होने अपने श्रद्धेय गुरु शास्त्र–विशारद आचार्य स्व० श्री विजयधर्मसूरिजी को उनके पट्टधर शिष्य उपाध्याय इन्द्रविजय जी के नाम उदीने (इटली) और भारत के विभिन्न नगरो से लिखे थे। यह पत्र – साहित्य ज्यादातर अंग्रेजी में है। तुम इनको पढो, समझो और चिंतन कर इसके आधार पर डा० तैस्सितोरी का जीवन–परिचय हिन्दी मे लिख दो।" डा० तैस्सितोरी का स्वर्गवास सन् १६१६ मे बीकानेर मे हुआ था। उनकी कब्र भी गिरजाघर के आसपास कब्रिस्तान मे कहीं होगी। हिन्दी जगत अभी डा० तैस्सितोरी के कार्यो से अनभिज्ञ है। उसने भारतीय भाषाओ विशेषकर राजस्थानी, डिंगल गुजराती एव ब्रजभाषा के साहित्य एव इतिहास की जो शोध की है, वह अद्वितीय है। इन पत्रो की भी एक कहानी है। उपाध्याय श्री इन्द्रविजय जी ने यह पत्राचार–साहित्य कलकत्ता के राजस्थानी भाषा–प्रेमी श्री रघुनाथ प्रसाद सिघानिया को तैस्सितोरी का जीवन–परिचय लिखने के लिए दिया था। उपाध्यायजी जब आचार्य बन चुके थे। उनका चातुर्मास कलकत्ता मे था। श्री सिघानियां जी इसका उपयोग कर नहीं पाये और उन्होने यह सारी पत्राचार–सामिग्री व फोटो भी श्री नाहटा जी को दे दिया इस अनुरोध पर कि वे डा० तैस्सितोरी का जीवन परिचय हिन्दी जगत को दें।

मैंने इन पत्रो का गहन अध्ययन किया और उसके आधार पर डा० तैस्सितोरी का जीवन परिचय और विचारों को एक लेख के रूप मे लिपिबद्ध किया जो सादूल राजस्थानी शोध संस्थान, बीकानेर की त्रैमासिक मुख–पत्रिका – "राजस्थान भारती" के अप्रेल सन् १६५० ई० के भाग ३ अंक १ मे प्रकाशित हुआ। इस लेख के प्रकाशित होते ही इस गुदड़ी के लाल के कार्य–कलापो की जानकारी प्राप्त हुई। सभी ने मेरे लेख की सराहना कर मेरे उत्साह को बढाया। आचार्य श्री विजयधर्मसूरिजी के प्रमुख शिष्य विद्या–व्यवसायी मुनि विद्याविजय जी ने जो स्वयं डा० तैस्सितोरी के सम्पर्क मे आये हुये थे, आशीर्वाद मे मुझे लिखा– इस विदेशी किन्तु मनसा–वाचा–कर्मणा भारतीय भाषाविद के जीवन–चरित्र को प्रथम बार हिन्दी मे लिख कर आपने हिन्दी–जगत का उपकार किया है और जैन समाज, धर्म और साहित्य के प्रति डा० तैस्सितोरी की सेवाओं की सराहना कर उसके ऋण से जैन समाज को मुक्त कर दिया है। तैस्सितोरी गुरु महाराज का परम भक्त श्रावक था और उनके प्रति उसकी असीम श्रद्धा थी। डा० तैस्सितोरी ने गुरु महाराज का जीवन परिचय पुस्तक रूप मे अंग्रेजी मे लिखी और इटली से गुरु महाराज की अष्टधातु की मूर्ति बनवाकर आगरा के श्री विजयधर्मसूरि ज्ञानमंदिर बेलनगज को भेट की, जो आगरा मे आज भी सुरक्षित है। मेरे लेख के आधार पर ही सन् १६५५ मे तत्कालीन राजस्थान सरकार के जन–सम्पर्क अधिकारी श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट ने "राजस्थान के इतिहासज्ञ" लघु–पुस्तिका में डा० तैस्सितोरी का परिचय लिखकर हिन्दी जगत को पुन जानकारी दी।

डा० तैस्सितोरी की कब्र की खोज और उसका जीर्णोद्धार

यह तो सभी बताते थे कि डा० तैस्सितोरी का निधन नवम्बर सन् १६१६ मे बीकानेर में हो गया था और वहीं गिरजाघर के पास दफना दिया गया था। किस तारीख को निधन हुआ? एवं कहाँ दफनाया गया? यह किसी को मालूम नहीं था। ज्यों–ज्यों समय बीतता गया, मेरी जिज्ञासा और श्रद्धा डा० तैस्सितोरी के प्रति बढती गयी और मैंने

ही और जैडी हूँ कल्पना करतो हो, या २२ नवम्बर १९५६ तांई एक सुपने जैडी हीज बात ही । पिण जद हूँ इण उत्सव ऊपर हाथरस सू बीकानेर आयो और अपणी आंखां सूं अै सारी बातां देखी तो साचांणी म्हारो 'सुपनो साचो हुओ' देखियो। हूँ फूलियो नहीं समायो। देश–विदेशां प्रख्यात डा० सुनीतिकुमार चटर्जी जैडा गुणी उत्सव रा अध्यक्ष, इटली दूतावास रा कॉन्सल डा० तिबेरियो–तिबेरी–समाधि रा उद्‌घाटन–कर्ता, भारत सरकार री तरफ सूं वृत–चित्र री योजना, सास्कृतिक आयोजन, विद्वाना रा भाषण नै टैसीटोरी रा चित्र नै साहित्य री अनोखी प्रदर्शनी–एक–एक सूं इधकी वातां देखनै हूँ तो म्हारी सुध–बुध हीज भूल गयो। इण सारै आयोजन रो नै म्हारो सुपनो साकार बणावण रो श्रेय इन्स्टीट्यूट रा सारा कार्यकर्ता, प्रधान–मंत्री श्री अक्षयचन्दजी शर्मा, श्री लालचन्दजी कोठारी, श्री सोहनलालजी कोचर और सारा सदस्यां नै है। इणांरो जित्तो उपकार मानूं उत्तो ही थोडो है।

म्हारी मूळ प्रेरणा रा स्त्रोत पू० म्हारा मामोजी श्री अगरचन्दजी नाहटा रै प्रति कोई शब्द कहूँ, आ अजोगती दीसै। नै'नै मूं डै म्होटी बात दीसै। हूँ तो उणारो छोरू हूँ। उणांरा हाथ सदा ही म्हारै माथै है।

सुपने री अेक खास बात, जिका सुपने मे आंख खुली जठै तक और बीकानेर मे परतख देखी, निवेदन कर सुपने री बात नै इतिश्री कर दूं ला।

इण उत्सव रा सुपने नै इण भांत साकार रूप सूं दिखावण रा खरा प्रेरणादायक और म्हारी घणा दिनां री साधना नै सिद्ध करण मे अगूआ नै मूक कार्यकर्ता, राजस्थान–भारती रा संपादक श्री बदरीप्रसाद साकरिया रो बड़ो उपकृत हूँ, जिणा, अस्पताल मे मृत्यु–शय्या पर सूतोडी अपणीं जीवन–संगिनी –अर्द्धांगिनी री असाध्य रोगग्रस्त अवस्था मे भी रात–दिन इण काम नै सफल बणावण में योग दियो, इण संस्मरण री प्रगट–अप्रगट कई घटनाओं में अेक लिखण–जोग घटना है आ। टैसीटोरी दिवस रो इत्तो ठाठ–बाट सुण और साकरियाजी नै इत्ता व्यस्त देख इण उत्सव रै महत्व रो उणां अनुमान कियो ओर साकरियाजी रै काम री होड कर स्वर्ग में जायनै स्वर्ग रा देवताओं नै और टैसीटोरी नै सारो विवरण अरूबरू सुणावण सारू अर्द्धांगिनी रै साचे रूप मे बीडो उठा लियो। घणो ही प्रयत्न कियो, पिण उणा तो मानियो हीज नहीं । अठै रो मोह छोड़ उठै जायनै शांति सूं बिराज गई। अब तो उणांनै भी इण साथै श्रद्धांजलि देवण सिवाय कोई उपाव नहीं। वृद्ध साकरियाजी नै, धीरज और शांति धारण करण सिवाय कोई उपाव नहीं।

"राजस्थान-भारती" त्रैमासिक बीकानेर
डॉ० एल० पी० टैसीटोरी विशेषांक
खण्ड ५ अंक ३–४
नवम्बर, १९५७

■■■

चायपान के लिये आमंत्रित कर स्वागत किया और शुभकामनाये दीं और भारत–इटली मैत्री सुदृढ होने की कामना की। चि० प्रकाश व सौ० विनणी किरण दिल्ली विदाई देने आये थे। रात को १२ बजे हम इन्दिरा गाधी हवाई अड्डे पहुँच गये और निर्धारित समय लगभग साढे तीन बजे रात को ही "लुफ्तहसा" का विमान उड चला। विमान काफी बडा था। मेरे साथ दूसरे साथी डा० शक्तिदान कविया थे जो जोधपुर विश्वविद्यालय में राजस्थानी भाषा के प्राध्यापक हैं। उनको भी जोधपुर के प्रतिनिधि के नाते व डिंगल भाषा के विद्वान के नाते उदीने नगर निगम ने आमंत्रित किया था।

डा० शक्तिदान कविया का साथ होने से हम तीन हो गये और यात्रा आनन्ददायक बन गयी। निरन्तर आठ घण्टे उडने के बाद ११ नवम्बर को सुबह सात बजे हम लोग जर्मनी के हवाई अड्डे "फ्रेंकफर्ट" पहुँच गये। भारतीय समय के अनुसार मेरी घडी में १२ बजे दोपहर का समय था। फ्रेंकफर्ट मे पहुँच कर मैने अपनी घडी की सुईया घुमाकर सुबह सात बजे पर कर दीं। फ्रेंकफर्ट मे फिर हवाई जहाज बदलना पड़ा। दो घन्टा विश्राम कर मिलानो के लिए उड गये। वहाँ दो घन्टे में पहुँच गये। मिलानो इटली का हवाई पत्तन है। वहाँ भी विश्राम करना पडा और दोपहर दो बजे वहाँ से उडकर तीन बजे त्रिस्ते हवाई अड्डे पहुँच गये। हवाई अड्डे पर उदीने के मेयर के प्रतिनिधि हमे लेने आ गये। उदीने मे हवाई अड्डा नहीं है इसलिए हमें तिस्त्रे से उदीने की यात्रा मोटर द्वारा करनी पडी। सायकाल ५ बजे हम लोग उदीने पहुँच गये और उदीने के शानदार होटल" केस्ट्रोला" मे ठहराये गये। इसी होटल में अन्य सभी प्रतिनिधि आ रहे थे और ठहराये भी गये थे।

तैस्सितोरी की जन्म-भूमि उदीने नगर का इतिहास

उदीने इटली का प्राचीन सांस्कृतिक नगर है। इसका इतिहास भी एक हजार वर्ष से अधिक पुराना है। एक हजार वर्ष पूर्व उदीने का क्या रूप था यह बताना बहुत ही कठिन है। रोमन युग मे यह एक किले के रूप मे बना था। यहां की पहाड़ी आसपास मैदानी इलाको से घिरी हुई है। ८६६ ई० मे हंगरी ने यहा आक्रमण किया तथा राजमहल को भी नहीं बचाया जा सका। दशवीं शताब्दी के बाद उदीने मे रक्षात्मक सीमाओ का निर्माण किया गया। बारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तक व्यावसायिक गतिविधियों का विकास हुआ। १३४८ मे भारी भूकप आया। पैट्रियार्क बरट्रानडोदी सान जेनेस्को के कत्ल के पश्चात् नयी पैट्रियार्कल सीट का पुनर्निमाण किया गया। १४२० मे उदीने ने वेनेशिया के सामने आत्म–सर्मपण कर दिया। पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में टर्की ने यहाँ हमला करके सभी को आतंकित कर दिया। २७ फरवरी सन् १५७१ में जब दो विरोधी दलो (Pro. Vevetain Zamberlains & Pro. Empire Strumers) में सामंजस्य स्थापित न हो सका तो युद्ध अनिवार्य हो गया और दूसरे दल को पराजय का मुँह देखना पडा। निरन्तर ही युद्धो एवं प्राकृतिक प्रकोपो (भूकम्प व प्लेग) का सामना करने के पश्चात् सोलहवीं शताब्दी मे कला का प्रार्दुभाव हुआ, नयी नयी कलाकृतियो का विकास हुआ। सत्रहवीं शताब्दी के अंत में सेरेमिसिमा की राजनीति मे सक्रिय भाग लेने के कारण फ्रांस ने यहाँ पर आक्रमण कर दिया। विला मेंनिन की संधि के अनुसार नेपोलियन ने उदीने और Fruili को आस्ट्रिया एवं उसके शासक Franz II को सौप दिया। अठाहरवीं शताब्दी के अन्त में यहाँ पोन्टेटवाना रेलवे का निर्माण किया गया। युद्धों का सिलसिला अभी भी जारी था। १६१५ में इटली ने युद्ध की घोषणा करके अपना सैनिक पड़ाव यहीं डाल दिया। इसके पश्चात् लगातार तीन साल तक आस्ट्रिया ने अपना अधिकार जमाये रखा तथा ८ सितम्बर १६४३ को द्वितीय विश्व युद्ध मे जर्मनी ने फिर आक्रमण कर दिया। अन्ततोगत्वा मई १६४५ में उदीने को आक्रमणों से मुक्त कराया जा सका और सैन्य सामान के साथ पूरे उदीने को Gold Metal से सजाया गया।

इटली के सभी शहर सुन्दर व साफ सुथरे हैं। सड़के चौडी भी हैं। आम तौर पर लोग फुटपाथ पर चलते हैं। आधे घन्टे का सफर इटली के लोग पैदल चलकर ही तय करते हैं। उसके आगे कारों का प्रयोग करते हैं। मोटर–कारों का बाहुल्य है और सडक के किनारे लम्बे–लम्बे पार्किगं स्थल हैं।

मेरी सोयी हुई श्रद्धा–स्मृति का अंकुर पुन. प्रस्फुटित हो उठा। मैंने तत्काल मूर्ति–स्थापना का मन मे सकल्प लिया। राजस्थान एसोशियेशन कानपुर के स्वनामधन्य अध्यक्ष श्री बी० आर० कुम्भट साहब ने पीठ ठोंक दी और मूर्ति शिलान्यास का समारोह राष्ट्र–कवि श्री सोहनलालजी द्विवेदी की अध्यक्षता मे हिन्दी जगत के नायक प्रो० वासुदेवसिंह जी ने ता० २२ अगस्त १९८५ को सम्पन्न कर दिया और मूर्ति का अनावरण भी ता० २२ दिसबर १९८५ को ही रामकथा के अमर गायक प० रामकिंकरजी उपाध्याय की अध्यक्षता में भारत में इटली के तत्कालीन सांस्कृतिक दूत प्रो० फरनेन्दो बरतोलेनी ने कर दिया। मूर्ति स्थापना का समूचा समारोह राजस्थान एशोसियेशन के तत्वावधान में मानस–सगम के सहयोग से और हमारे पारवारिक ट्रस्ट, के० बुलाकीचंद फूलचंद बांठिया चैरिटेबुल ट्रस्ट, कानपुर ने पूरा किया। मूर्ति–स्थापना का समाचार भारत से इटली में डा० तैस्सितोरी के भानजे डा० गुइडो पियानो को जो तैस्सितोरी की जन्म भूमि उदीने मे रहते हैं, मिला तो उन्हें अपार हर्ष हुआ। संयोग की बात है कि डा० तैस्सितोरी की एकमात्र जीवित बहन कु० अनीटो तैस्सितोरी जो ९० वर्ष की थी, २० दिसम्बर १९८५ को मूर्ति–स्थापना पर मुझे आर्शीवाद का सदेश तार द्वारा भेजकर २३ दिसम्बर १९८५ को चिरनिद्रा मे सो गयी।

डा० तैस्सितोरी का भानजा व उसकी पत्नी सन् १९८४ मे भारत–दर्शन करने आये थे और बीकानेर में अपने मामा की समाधि का दर्शन करने आये थे। वह दर्शन कर बाँसो उछलने लगे। उन्होंने भारत के प्रति और मेरे प्रति कृतज्ञता प्रकट की *"मेरे मामाजी की समाधि श्री बांठिया जी ने बनवा दी* और उनकी यश पताका को भारत में सर्वत्र फहरा दिया"।

तैस्सितोरी के जन्म-शताब्दी समारोह के लिए आमन्त्रण

डा० गुइडो पियानो से मेरा पत्राचार १ अप्रेल १९८५ से ही प्रारम्भ हो गया था। मूर्ति–स्थापना के बाद मैंने उनको लिखा कि १९८७ मे डा० तैस्सितोरी का जन्म शताब्दी समारोह आ रहा है। हम तो भारत मे उनका जन्म शताब्दी वर्ष मनायेगे ही और यदि इटली वाले मनायें तो मैं भी उदीने (इटली) आकर तैस्सितोरी की जन्म भूमि की मिट्टी मस्तक पर लगाना चाहता हूँ। मेरी इस चिर अभिलाषा को प्रो० फरनेन्दो बरतोलेनी ने भी उदीने के मेयर को लिखा और अप्रेल १९८७ को इटली भारत मैत्री सघ के प्रो० ज्ञान गुजी फिलीपी, उदीने के मेयर प्रो० बेसनो, सास्कृतिक उपमेयर प्रो० बारबिना, रोम मे भारत के राजदूत तथा इटली विश्वविद्यालयों में इण्डोलोजी और इतिहास के प्रोफेसरों की मीटिंग उदीने मे हुई। उसमें विचार किया गया कि भारत में डा० तैस्सितोरी के लिए बहुत हो रहा है। हमे १२,१३,१४ नवम्बर १९८७ को उदीने मे डा० एल० पी० तैस्सितोरी के जन्म शताब्दी वर्ष का शानदार कार्यक्रम बनाना चाहिए। शीघ्र ही ऐसा करने का निर्णय ले लिया गया और उसी के अर्न्तगत १३ अक्टूबर १९८७ को उदीने से दिया गया तार १५ अक्टूबर १९८७ *को मुझे मिल गया।* तार का विषय इस प्रकार था–**"We are glad to welcome you to convegre Luigi *pio* Tessitori Udine 12/14 November 1987. We will provide for your board and lodging as for your journey. Our agency will let us know your address and telephone no Please send a confirmation telegram specifying report title. L Assessore Alla Cultura Prof. Guido Barbina."**

इटली-यात्रा का आरम्भ

पासपोर्ट बनवाना भी एक समस्या है, समय लगता है। किसी प्रकार ६ नबम्बर को सायकाल मेरा व पत्नी *श्रीमती जतन कुमारी बांठिया* का पासपोर्ट लखनऊ से बन गया। यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी। शाकाहारी होने के नाते खाने की विशेष तैयारिया करनी पड़ी और ८ नवम्बर की रात को मै दिल्ली एक्सप्रेस गाड़ी से दिल्ली की ओर चल पडा। स्टेशन पर कई प्रेमीजन विदाई देने आये थे। ९ नवम्बर को इटली दूतावास से वीजा प्राप्त किया और मेरा इटली से प्री–पेड टिकिट " लुफ्तहंसा " वायुयान कम्पनी का आ गया था। पत्नी का टिकट वर्ल्ड ट्रैवेल्स की मार्फत बनवाया गया। इस समस्त यात्रा के प्रबन्ध मे भाई श्री हरखचंद नाहटा का विशेष सहयोग व दिशा–निर्देशन रहा। तारीख १० नवम्बर को सायंकाल इटली के सांस्कृतिक दूत प्रो० फरनेन्दो बरतोलेनी ने हम सभी को अपने निवास स्थान पर

तैस्सितोरी जन्म-शताब्दी रामारोह

१२ नवम्बर १९८७ को तैस्सितोरी जन्म शताब्दी का मुख्य समारोह म्युनिसपैलिटी के ऐतिहारि सभागृह मे दस बजे बोलोग्ना विश्वविद्यालय के प्रो० Renato Giorgis France के सभापतित्व मे प्रारम्भ हुआ। इस मुख्य अतिथि इटली मे भारत के राजदूत महामहिम श्री अहमद मिर्जा खलील साहब थे। वे रोम से पधारे थे। उन आने में कुछ विलम्ब हो गया था। करीब डेढ़ सौ इटली के आसपास के बडे नगरों के विद्वान प्रतिनिधि इस समारं में भाग लेने आये थे। इस समारोह का आयोजन उदीने के मेयर और इटली-भारत एसोशियेशन के संयुक्त सहयं से हुआ। इटली-भारत एसोशियेशन के प्रधानमंत्री प्रो० ज्ञान गुजी फिलिपी वेनिस में Indology के प्रोफेसर हैं। व भारत मे भी कई बार आ चुके हैं। उनकी भारतीय इतिहास व साहित्य में बडी रुचि है। मुख्य समारोह तैस्सितोरी व परिचय देने के बाद शीघ्र ही समाप्त हो गया। मैंने जो तैस्सितोरी के लिए भारत मे समाधि व मूर्ति-स्थापना की थं उसे सभी ने बहुत ही सराहा।

उदीने मे एक प्राचीन कौंसिल पुस्तकालय है जिसमें एक कक्ष तैस्सितोरी की स्मृति में स्थापि किया गया है। इसमें तैस्सितोरी द्वारा संग्रहीत व सम्पादित भारतीय व अन्य पुस्तको का विशाल संग्रह है। इस कक्ष व उद्घाटन भारतीय राजदूत महामहिम श्री अहमद मिर्जा खलील साहब ने किया। मै भारत से तैस्सितोरी के बारे प्रकाशित हिन्दी भाषा में साहित्य और तैस्सितोरी के साहित्य की हिन्दी अनुवादित पुस्तकें आदि साथ ले गया था उ उदीने पुस्तकालय को महामहिम के कर-कमलों से भेंट करवायी। मेरा भारतीय भेष में पहनावा देखकर श्री अहम साहब ने मजाक में कहा कि मेरी मां भी भारतीय मारवाडी रही हैं, क्यों कि मेरे नानाजी सर मिर्जा इस्माइल जयपु मे दीवान यानि प्रधानमंत्री रह चुके हैं। उसके बाद दोपहर में एक बजे मेरे सम्मान में सभी प्रतिनिधियो के साथ एव पाँच सितारा होटल मे दोपहर का भोजन दिया गया जिसमे उदीने के मेयर, डिप्टी मेयर, और भारतीय राजदूत मिज साहब भी शामिल हुये। प्राय सभी शाकाहारी भोजन ले रहे थे। इसी दिन दूसरा सत्र शाम को साढे तीन बजे प्रारम्भ हुआ। इस के अध्यक्ष प्रो० गुइडो बारबिना थे जो उदीने के डिप्टी मेयर भी हैं और सांस्कृतिक विभाग भी उनके निर्देशन में कार्य करता है। इसमें रोम के पत्रकार प्रो० वैलेरियो पेल्लीजारी, स्टेफानो पियानो, और डा० अन्नाब्रोसोलो के भाषण भी हुये। रात को एक थियेटर हाल मे इटली के कलाकारो द्वारा केरल का कत्थकली नृत्य दो घन्टे तक प्रस्तुत किया गया। संस्कृत में स्पष्ट उच्चारण थे और नृत्य भी बडा मनोहारी था।

१३ नवम्बर को प्रो० गार्गियो टेनाटी फान्सी की अध्यक्षता में सभा का प्रारम्भ हुआ। उसमें मैंने तैस्सितोरी की "राजस्थान और राजस्थानी सेवाओं" का उल्लेख करते हुये हिन्दी मे भाषण दिया। जोधपुर के डा० शक्तिदान कविया ने तैस्सितोरी द्वारा डिंगल साहित्य और शोध का परिचय दिया और डिंगल भाषा के अद्भुत छन्द सुनाये। इसके अलावा मिलानो के प्रो० कार्लो डेला कासा और प्रो० एन्जो टुरबानी के भाषण हुए। प्रो० टुरबानी इटली के देहात के एक स्कूल में प्रधानाचार्य हैं किन्तु उनको भारतीय आध्यात्मिकता के प्रति बड़ा प्रेम है। हिन्दी के अलावा वे बँगला, गुजराती, व संस्कृत भी जानते है और भारत के समस्त मित्रों से अपना पत्राचार हिन्दी में करते हैं। दोपहर का सत्र साढे तीन बजे प्रो० कार्लो डेल कासा की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ जिसमें वेनिस विश्वविद्यालय के प्रो० *Givnisno Bocali* ने सतसई के बारे में भाषण दिया और *Prof. Giorgio Mianath* ने "रामचरित मानस" पर तथा मिलानो के प्रो० डोनाटेला डोलेइनी ने "नासिकेतोपाख्यान" पर भाषण दिया। तीसरे दिन १४ नवम्बर को उदीने विश्वविद्यालय के हाल में सभी प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था और विश्वविद्यालय के काफी छात्र-छात्राये वहाँ उपस्थित थे। यह तीसरा अधिवेशन भी शानदार रहा। इसकी अध्यक्षता प्रो० ग्युलियानो बोकाली ने की। इस अधिवेशन मे प्रस्तुत तीनों ही भाषण महत्वपूर्ण हुये। त्रिस्ते के प्रो० इनरीको फजाना ने तैस्सितोरी की राजस्थान-यात्रा के जगह-जगह के चित्र फिल्म प्रोजेक्टर से दिखाकर पूरी कहानी सुनाई। लंदन के विक्टोरिया और अलबर्ट म्यूजियम के डायरेक्टर प्रो० रोबर्ट स्केल्टन ने नागौर के राव अमरसिंह राठौर की सचित्र कहानी फिल्म प्रोजेक्टर द्वारा दिखाई और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्रो० जॉन स्मिथ ने पाबूजी के पड के साथ वीडियो कैसेट पर पाबूजी की लोक

कथा भाषण के साथ दिखायी। अन्त मे डिप्टी मेयर प्रो० गुइडी बारबीना ने तैस्सितोरी जन्म शताब्दी समारोह मे आये हुये सभी प्रतिनिधियों का आभार माना और विशेषकर मेरा जिक्र किया कि श्री बाँठिया ने भारत मे डा० तैस्सितोरी को पुनः प्रकाश में लाने मे अपना अनुपम योगदान दिया है। उदीने के मेयर की तरफ से सभी प्रतिनिधियो को धन्यवाद पत्र के साथ 'उदीने' नाम की एक बहुत सुन्दर सचित्र परिचयात्मक पुस्तक भेट–स्वरुप दी गयी। समारोह के बाद चायपान का प्रबन्ध डा० तैस्सितोरी के भानजे डा० गुइडो पियानो की तरफ से था।

तैस्सितोरी के पूर्वजों के शहर में

उसी दिन लगभग १२ बजे हम सभी प्रतिनिधियों को एक वातानुकूलित बस मे मोजीयो उदीनीस ले जाया गया जो डा० तैस्सितोरी के पूर्वजों का शहर है। यहीं उनके परिवार के पूर्व–पुरुषो की समाधियाँ एक प्राचीन गिरजाघर में एक गुम्बद के नीचे बनी हुई हैं। यह शहर मसूरी की तरह ऊँची–नीची घाटियो और खपरैल के सुन्दर ऊचे मकानो का शहर है। इस शहर के मेयर डा० लीनाराओ फोरबोस्को ने हम सभी को आमंत्रित किया था। यह शहर उदीने से ४० किलोमीटर दूर है। हम लोग २ बजे मोजियो उदीनीस पहुँच गये। मेयर ने एक शानदार होटल में हम सभी को दोपहर का भोजन कराया और राजस्थानी गीतों और चारणी दोहो को सुनने की इच्छा प्रकट की। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती जतन कुमारी ने एक मारवाड़ी लोकगीत गाकर सुनाया और डा० शक्तिदान कविया ने चारणी और दोहे सुनाये। सभी ने तालियाँ बजाकर स्वागत किया। मैने भी मेयर का स्वागत एक दोहा बोलकर किया–

"मेयर किम स्वागत करूँ हिये विकल्प अनेक।
राजस्थानी रज सूँ करूँ हूँ थारो अभिषेक।।"

भोजनोपरान्त हम सभी डा० तैस्सितोरी के पूर्वजों की समाधि के दर्शन व नमन करने गये। उस वक्त सन्ध्या हो रही थी। झिरमिर–झिरमिर वर्षा हो रही थी। इसी वातावरण मे हम लोग कब्रिस्तान पहुँचे। सभी कब्रें सुन्दर सुगन्धित रंगीन पुष्पों से आच्छादित थीं। वहाँ सैकडों कब्रें थी। गिरजाघर के पुजारी पादरी ने हमारा स्वागत किया। गिरजाघर का वह पुराना कमरा दिखाया गया जिसके लिये कहा जाता है कि अर्धरात्रि मे मरियम यहाँ आती है, बाइबिल का पाठ करती है और कमरे मे घुँघरू की आवाज बाहर वालो को सुनाई पडती है। मुझे स्वर्गिक आनन्द का अनुभव हो रहा था। मेरे मन में यह भाव उमड रहे थे कि मैं स्वर्ग में हूँ और स्वर्ग में अधर खडा हूँ या पृथ्वी पर मेरे पैर टिके हुए हैं। पाँच मिनट तक मैं सभी सासारिक झंझटो से मुक्त होकर आध्यात्मिक आनन्द–सागर मे हिलोरें लेने लगा। अपना भान भूल गया। मेरे शरीर को यह भान नहीं हो पा रहा था कि मैं जीवित हूँ या स्वर्ग मे पहुँच गया हूँ। ऐसा आनन्द मुझे हुआ जिसका वर्णन मैं नहीं कर सकता, इसीलिये यह यहाँ लिख दिया है।

बस हार्न बजा रही थी, मेरा ध्यान टूटा और फिर हम सभी बस में बैठकर महापालिका भवन की ओर चल पडे। यहाँ भी अन्तिम सत्र का प्रारम्भ मेयर ने ही कर रखा था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो० पाअलोडिकीना ने की। जिनेवा विश्वविद्यालय की इतिहास की प्रो० श्रीमती पाओला वरगारा कफरैली ने भारत और तिब्बत के प्राचीन पुरातत्व पर प्रकाश डाला और वेनिस विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग के अध्यक्ष और इटली–भारत मैत्री संघ के मंत्री प्रो० ज्ञान गुजी फिलीपी ने उदीने कौंसिल की लाइब्रेरी के सचित्र ग्रन्थ मारकण्डेय पुराण पर गवेषणात्मक भाषण दिया और उसके चित्रो को फिल्म प्रोजेक्टर से परदे पर दिखाया। अंत में मोजीयो उदीनीस के मेयर ने इस शहर की परिचयात्मक सचित्र पुस्तक प्रतिनिधियों को भेंट की और गर्व के साथ कहा कि इस शहर को यह गौरव प्राप्त है कि डा० तैस्सितोरी के पूर्वज यहाँ के ही निवासी थे और एक सौ वर्ष पहले ही यहाँ से चल कर उदीने जाकर बस गये थे। उस वक्त तक रात्रि के आठ बज चुके थे और हम सभी उदीने की ओर चल पडे। वापिस आते समय मैं मेरी धर्मपत्नी व डा० कविया तीनों डा० तैस्सितोरी के भानजे के घर रियानो रेडेल पर उतर गये।

महिला हैं। उनसे भेट की, बीकानेर की मिश्री एवं भुजिया उनको भेंट किया तथा डा० तैस्सितोरी का कलेण्डर । वे बहुत ही प्रसन्न हुई। हमारा भाषण तीन बजे होने वाला था इसलिये प्रो० फज़ाना ने अपने शिष्य श्री अलेखान्डा फोन्टावा के साथ दो हज़ार वर्ष पुराना किला देखने को भेज दिया और शाम का भोजन भी उसी विद्यार्थी के घर पर रख दिया जो त्रिस्ते से दस किलोमीटर दूर एक गाँव मे रहता था। वह बहुत ही सम्पन्न घराने का था। वह अंग्रेजी बहुत कम जानता था, फिर भी उसने अपनी टूटी-फूटी भाषा में किले का इतिहास बताया। किले की दूसरी मंजिल से समुद्र के किनारे बसा त्रिस्तेनगर बहुत ही सुरम्य लग रहा था। एक तरफ समुद्र हिलोरे ले रहा था और दूसरी तरफ युगोस्लाविया देश की सीमा दिख रही थी जो वहाँ से सिर्फ २० किलोमीटर ही दूर थी।

तीन बजे मेरा भाषण 'जैन धर्म, अहिसा और गाँधी' तैस्सितोरी की राजस्थान के प्रति की गई सेवाओ का उल्लेख करते हुए हुआ। डा० शक्तिदान कविया का भाषण डिंगल गीतो पर हुआ और डिंगल के छन्द उन्होने अपनी विशेष चारणी शैली मे गाकर सुनाये। सुनने वाले सभी प्रो० फजाना साहब के विद्यार्थी थे जिन्होंने हम दोनो का भाषण सराहा। मैंने अपना भाषण हिन्दी मे पढा और कुछ सारांश अंग्रेजी में सबको समझाया। वहाँ के विद्यार्थियो ने हमारे साथ फोटो खिचवाये। विश्वविद्यालय के अन्य प्रोफेसरों से भी हमारी मुलाकात प्रो० फजाना ने कराई। बाते करते-करते शाम हो गयी और हमको श्री फोन्टावा के घर पहुँचाने के लिये प्रो० फजाना की महिला मित्र डाक्टर अपनी मोटर लेकर आ गई और शाम पडते-पडते हम श्री फोन्टावा के घर पहुँच गये।

श्री फोन्टावा के माता-पिता बाहर गये हुए थे, अत भोजन बनाने के लिये उसने अपनी महिला विद्यार्थी साथी को बुला रखा था। पूर्ण शाकाहारी भोजन, ब्रेड मक्खन, फलो के रस व विभिन्न प्रकार के फल व सब्जियाँ उबाल कर हम लोगों के लिए तैयार कीं थीं। हम सभी ने मिल कर रात में भोजन किया और फलो का रस पिया। बाते करते करते रात के ११ बज गये। सबके साथ मैंने फोटो खींचे, श्री फोन्टावा को उनके आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया और फिर महिला डाक्टर की मोटर कार मे होटल की ओर चल पडे। प्रो० फजाना का प्रेम व सद्व्यवहार बडा ही सराहनीय रहा। उन्होने बताया कि वह जनवरी १६८८ मे भारत आवेगे।

टापुओं के नगर वेनिस में

हम लोग १७ नवम्बर १६८७ की सुबह सात बजे की रेल से वेनिस की ओर चल पडे। प्रो० फजाना स्टेशन पर हमको छोडने आये थे। उनका पुन हमने धन्यवाद ज्ञापन किया। गाडी ठीक १० बजे टापुओं के शहर वेनिस पहुँच गई और स्टेशन पर हमको लेने के लिए इटली-भारत एसोशियेशन के मंत्री प्रो० ज्ञान गुइजी फिलीपी आ गये थे। प्रो० फिलीपी वेनिस विश्वविद्यालय में इंडोलोजी के प्रोफेसर हैं। इटली में डा० तैस्सितोरी जन्म शताब्दी समारोह जो मनाया गया उसमें इनका भी प्रमुख हाथ था। उन्होंने स्टेशन से उतर कर पास ही मे "जेनिथ' होटल में हमको ठहरा दिया।

झीलो एवं टापुओं का शहर वेनिस इटली का क्या विश्व का सुन्दरतम शहर है। एक बाजार से दूसरे बाजार या अन्य स्थान पर जाने के लिए मोटर बोट का प्रयोग किया जाता है। कुछ बडे टापू लिडो जैसे भी हैं जहाँ मोटरे दोडती हैं। काँच पर विभिन्न प्रकार की मीनाकारी का काम एवं चीनी मिट्टी के प्याले तश्तरियाँ आदि सभी पर बेजोड कला-कृति का काम होता है। प्रतिदिन यहाँ हजारों विदेशी पर्यटक आते हैं और जाते हैं। होटल के कमरे का किराया बहुत ही ज्यादा है। खाने-पीने की चीजें भी अन्य जगहो की तुलना मे यहाँ पर महँगी हैं। होटल में सामान रखकर हम प्रो० फिलीपी के साथ नगर भ्रमण के लिए निकल गये। तीन बडे देशों का शिखर सम्मेलन यहीं हुआ था। जहाँ वह ठहरे थे उस होटल को भी बाहर से देखा तथा फियट मोटर कम्पनी के मालिक का आलीशान मकान भी समुद्र के किनारे देखा। एक बडा चौक देखा जहाँ हजारों कबूतरो को इटली-वासी तथा पर्यटक दाना चुगा रहे थे। वे कभी उनके कंधों पर बैठते, कभी सिर पर बैठकर अपने पंख फडफड़ा रहे थे। इसी चौक के किनारे एक प्राचीन गिरजाघर देखा जिसमें चार पीतल के घोड़ों के चेहरे सोने की तरह चमक रहे थे। बताया गया कि ये सोलह सौ वर्ष पुराने हैं।

यह गाँव उदीने से १२ किलोमीटर दूर है। यहाँ डा० गुइडो पियानो का निजी फार्म है और फार्म के बीच में उनका शानदार बँगला बना हुआ है। डा० गुइडो पियानो और उनकी धर्मपत्नी ने हमारा जोरदार स्वागत किया। श्रीमती गुइडो पियानो ने बताया कि मेरे हाथ मे मीनाकारी युक्त ये सोने की चूड़ियाँ मुझे डा० तैस्सितोरी के परिवार से ही उपहार मे मिली हैं। डा० गुइडो पियानो ने डा० तैस्सितोरी द्वारा बीकानेर से लाई हुई तलवार, ढाल, घड़ी, कवच व लोहे का टोप आदि दिखाये। डा० तैस्सितोरी के कई फोटो दिये। डा० तैस्सितोरी का जो साहित्य इटली में उपलब्ध है उसकी फोटोस्टेट प्रतियाँ भी दीं। हमने रात्रि का भोजन यहीं किया। डा० गुइडो पियानो सर्जन होते हुए भी अग्रेजी नहीं जानते हैं। बातचीत करने के माध्यम के लिये उन्होंने एक अधेड उम्र की अपनी मित्र महिला को बुला रखा था जो अग्रेजी जानती थी। डा० तैस्सितोरी के परिवार में यही भानजे का परिवार इस वक्त मौजूद है। इनसे मिलकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। मेरा वर्षो का सपना साकार हुआ। रात के करीब ११ बजे डा० पियानो के वड़े पुत्र ने अपनी मोटर से हमे हमारे आवास होटल "केस्ट्रोला" में पहुँचा दिया। तीन दिन का यह समारोह सानन्द सम्पन्न आ। अगले दिन सभी प्रतिनिधियों को अपने गंतव्य स्थान को प्रस्थान करना था।

वापसी

१५ नवम्बर को प्रात: ११ बजे प्रो० एनरिको फज़ाना ने अपने एक विद्यार्थी से मोटर का प्रबन्ध करने को कहा। उनके दो शिष्य दो मिनी फियेट मोटर कार लेकर आ गये और हम सभी त्रिस्ते के लिये उदीने की भूमि को अंतिम प्रणाम करके विदा हुए। रास्ते मे पहाडो, झरनों, नदियों और घाटियो के प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेते हुए दोपहर के दो बजे गोरजिया पहुँच गये। गोरजिया स्टेशन पर फजाना साहब का एक शिष्य बडी मोटर लेकर आ गया था। सामान की अदला-बदली की और उदीने के विद्यार्थियों से विदाई ली। गोरजिया का यह विद्यार्थी ट्राफिक पुलिस मे सुबह काम करता है और शाम को पढने के लिए मोटर से त्रिस्ते जाता है। उसने गोरजिया के एक जलपान-घर में हम सबको भोजन कराया, शहर दिखाया, साफ-सुथरे चौक मे दिन भर कबूतरों का दाना-चुगा डाला जाता है, देखा। इतवार के कारण बाजार सभी बन्द थे। गोरजिया मे कई पुराने गिरजाघर और गुफायें भी देखीं। दो घंटा विश्राम के बाद हम लोग गोरजिया से त्रिस्ते की ओर चल पड़े। सड़क समुद्र के किनारे-किनारे होती हुई त्रिस्ते पहुँचती है। गहरे नीले रंग में रँगा समुद्र का पानी हिलोरे ले रहा था। एक तरफ समुद्र, बीच में सडक, दूसरी तरफ हरी-भरी चट्टानें अडिग खडी थीं। त्रिस्ते बम्बई के मालाबार की तरह समुद्र के किनारे बसा शहर है। इटली मे सर्वत्र ओवर फ्लाई ब्रिज बने हुए हैं। इससे मोटर रुकती नहीं, दौडती चली जाती है। शाम को हम त्रिस्ते पहुँच गये और हमारे मेजबान प्रो० फजाना साहब ने हमे त्रिस्ते के पाँच सितारा होटल में ठहरा दिया। दूसरे दिन सुबह नौ बजे उन्होंने विश्वविद्यालय चलने को कहा। वहाँ मेरा "जैन धर्म" व डा० कविया का "राजस्थानी भाषा" पर भाषण होने वाला था। १६ नवम्बर को प्रात ठीक आठ बजे प्रो० फज़ाना होटल आ गये और हम सबको बाजार दिखाने ले गये। उस दिन सोमवार होने के कारण बाजार सब बन्द थे। मुझे जैतून तेल लेना था जो इटली का विश्व प्रसिद्ध है और जो छोटे बच्चों की मालिश के काम आता है। पिछले सितम्बर में मेरी पोती हुई थी। मेरी बहू ने फरमाइश की थी कि इटली से जैतून का तेल अवश्य लावें। इसलिये लेना बहुत जरूरी था। मेरी यह पोती हुई तो इसकी जन्म-कुण्डली हमारे श्रद्धेय गुरांसा श्री राम कुमार जी जैन ने बनायी तो उन्होंने उसमें लिखाया था कि दादा को यश दिलायेगी। सचमुच अक्षरशः सत्य हुआ। नवम्बर मे इटली से निमंत्रण आ गया। वहाँ जो यश व सम्मान मिला वह अपने आप मे अनुपम था। त्रिस्ते के बाजारों को देखते हुए हम टैक्सी से ग्यारह बजे त्रिस्ते विश्वविद्यालय पहुँच गये।

त्रिस्ते विश्वविद्यालय में

यह विश्वविद्यालय बहुत बडा है। ऊँची पहाड़ी पर बसा हुआ है। सभी विभाग अलग-अलग हैं। मेरा भाषण राजनीति शास्त्र विभाग के हॉल में होना था जिसमे प्रो० फजाना स्वय प्रोफेसर थे। इस विभाग की अध्यक्षा एक

था। उस समय दोनों देशों के बीच व्यापार तथा कला–कौशल का सुचारू आदान–प्रदान हो रहा था। रोमनों की विशाल नौकायें भारत के पश्चिमी तट से सुगन्धित तथा औषधीय पदार्थ, मिर्च–मसाले, मोहक चन्दन, हाथी दाँत की कृतियाँ, बारीक मलमल, रेशम, बहुमूल्य रत्न और सोने से लद कर रोम नगर की ओर प्रस्थान किया करती थीं। रोमन महिलाओं के लिये श्रंगार–सज्जा की सामग्री भारी मात्रा में यहाँ से जाती थी।

दूसरी ओर भारत भी इटली से जैतून का तेल, अँगूरी शराब, कासे, तथा पक्की मिट्टी के दोहत्थे कलश, चीनी मिट्टी तथा शीशे के बर्तन, संगमरमर आदि लिया करता था। मध्य प्रदेश तथा दक्षिण भारत मे मिले सोने के तथा चाँदी के रोमनी सिक्के तथा भिन्न प्रकार की वस्तुओ के टुकडे इस तथ्य के प्रमाण हैं । उत्तरी भारत मे मूर्ति कला की जो गान्धार शैली प्रचलित हुई थी उसमे यूनानी–रोमन शैली के साथ भारतीय प्रभाव का सम्मिश्रण था।

कोई पाँचवी शताब्दी में रोमन साम्राज्य के पश्चिमी भाग का पतन हो गया। रोम नगर और उसके आस–पास के प्रदेशों पर कैथोलिक ईसाई मत के मुखिया पोप का अधिकार हो गया। इटली कई भागो मे बँट गया जहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार की शासन प्रणाली थी। बाद मे तुर्की तथा मध्य एशिया मे इस्लामी अधिकार के कारण भारत तथा इटली के बीच समुद्री तथा भूमिमार्ग बन्द हो गया जिससे व्यापारिक तथा सास्कृतिक सम्बन्धों मे रूकावट आ गयी। किन्तु तेरहवीं शताब्दी में मध्य एशिया के कई भागों और यूरोप के कुछ भागों पर मगोल प्रमुत्व होने के कारण भूमि–मार्ग फिर से चालू हो गये।

उधर इटली के वेनिस नगर से व्यापारिक आदान–प्रदान दूर–दूर तक फैल रहा था। वेनिस तब तक एक स्वतंत्र प्रजातंत्रवादी राज्य था। वहाँ के व्यापारी यात्रियोंने साहस तथा शोर्य का परिचय देते हुए तथा अपनी जान जोखिम मे डालकर चीन तथा भारत का सफर किया। इन व्यापारी यात्रियो मे सबसे प्रसिद्ध मार्को पोलो है जिन्होने १२७१ ई० मे वेनिस से चीन के लिये प्रस्थान किया। चीन से वापसी पर उन्होंने 'इलमिलियोने" नामक पुस्तक में प्रकाशित किया जिसमे भारत के व्यक्तियो, स्थानो तथा रीति–रिवाजो का वर्णन है। उनसे प्रेरित होकर श्री निकोलोदेई कोन्ती ने सन् १४१४ ई० में फारस की खाडी को पारकर भारत की यात्रा की।

इसी प्रकार वेनिस की देखा–देखी जेनेवा, फारस, रोम आदि नगरो के कई व्यापारी यात्री भारत आने–जाने लगे। किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में आटोमान तुर्की ने कुस्तुन्तुनिया के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया तो समुद्री–भूमिमार्ग फिर भारत की ओर आने के लिये बन्द हो गए। तब प्रसिद्ध इतालवी नाविक कोलम्बस ने भारत पहुँचने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर पश्चिमी सागर की ओर से १४९२ ई० मे अमरीकी महाभूखण्ड की खोज कर डाली।

व्यापारियों के अतिरिक्त इटली के कई ईसाई मिशनरी भी मध्य काल मे भारत आए। इनके माध्यम से भारत के बारे मे भौगोलिक, भाषायी, ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा धार्मिक क्षेत्रो के वर्णन ने इतालवी जनता के ज्ञान में वृद्धि की। इनमे सर्वप्रथम पादरी आदोरी को दा पोरदेनोन हैं। पादरी रोबरतो दे नोबली तो सन्यासी बनकर कई वर्षो तक भारतीय आश्रमो में रहे। उन्होने संस्कृत तथा तमिल भाषाओ को सीखा। फिर हिन्दू धर्मशास्त्रो का अध्ययन किया। इन पादरी लोगों के अथक प्रयत्नो से भारतीय कला की अद्‌भुत कृतियाँ इटली पहुँचीं तथा इतालवी कला–कौशल के कई नमूने भारत में आये।

मुगलकाल में सम्राट अकबर तथा जहाँगीर ने इतालवी कला की मुक्त हृदय से प्रशंसा की। सम्राट अकबर को जब रोम के चर्च सान्ता मारीया माजजोरे की देवी 'मरियम' (मेदोन्ना) की मूर्ति का एक चित्र दिखाया गया तो उन्होन भारतीय कलाकारो को हूबहू वैसा ही चित्र बनाने को कहा।

इसी प्रकार भारतीय कला शैलियों के नये–नये प्रयोगों ने इटली के पुनर्जागरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया। भारत के एक साज–सज्जा से लैस हाथी को जब पुर्तगाल के राजा ने १५१४ ई० में रोम मे पोप महाशय को भेंट किया तो इस हाथी ने इतने कुतूहल को जन्म दिया कि प्रसिद्ध चित्रकार रफेल ने इसका सुन्दर चित्रण किया तथा ओरवीचीनी और सीनी ने रोम के निकट अपनी भव्य हवेली के बाहर पूरे आकार के हाथी की मूर्ति बनवा डाली।

गिरजाघर के एक ऊँचे फाटक पर एक पत्थर का शेर खुदा हुआ था जिसमें परियो की तरह दो पंख लगे हुए थे। त्रिशूल यहाँ का पुराना राज–चिन्ह है। इस प्रकार बारह बजे तक घूम कर वापिस आये तो दोपहर के भोजन के लिये प्रो० फिलीपी अपने "लीडो" ले गये।

श्रीमती लीला फिलीपी ने हमारे लिये पूर्ण शाकाहारी भोजन दाल, चावल, चपाती, उबली हुई शाक–भाजी बनायी थी। फिलीपी दम्पति के एक पुत्र व एक पुत्री बारह व चौदह वर्ष की हैं। सभी ने एक ही मेज पर बैठकर भोजन किया और ओटोमेटिक कैमरे से खाना खाते हुए फोटो खिंचवाया। शाम को पाँच बजे एक सहकारी भंडार से कुछ चाय के कप–प्लेट की खरीदारी की गई। एयर इटालिया में हडताल हो गयी थी। हमारा रोम जाने का पूरा मन था, बाकी डा० शक्तिदान कविया की अनिच्छा देखकर हमने भारत ही लौटने का निश्चय किया। फिलीपी परिवार में प्रो० कालिया भी आ गये थे। तीन चार घटे बात होती रही। प्रो० फिलीपी अच्छी हिन्दी जानते हैं। प्रो० फिलीपी 'पंचाल शोध सरथान' के आजीवन सदस्य बन गये। डा० कविया को उन्होंने एक कैमरा उपहार में दिया। रात को बारह बजे की रेलगाडी से चलकर हम प्रातः पाँच बजे मिलानो पहुँच गये और वहाँ से सीधा हवाई पत्तन पहुँच गये।

वहाँ से शाम को ७ बजे 'एयर इंडिया" विमान मे जगह मिली और ता० १६ नवम्बर १९८७ को सकुशल नई दिल्ली के इदिरा हवाई पत्तन पर पहुँच गये। किन्तु हमारा सामान पीछे छूट गया जो चार दिन बाद फ्रेंकफर्ट से सकुशल आ गया। यह हुई मेरी इटली यात्र की कहानी। मैं इसे यहीं समाप्त करता हूँ।

o o o o o o o

(उदीने [इटली] में दिनांक १३ नवम्बर १९८७ को डॉ० एल. पी. टैस्सितोरी जन्मदिवस शताब्दी के अवसर पर श्री हजारीमल बाँठिया द्वारा दिया गया भाषण)

डा० तैस्सितोरी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विहंगावलोकन

विश्व के दो प्राचीन देश भारत तथा इटली भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक क्षेत्रो में एक–दूसरे के इतने समान हैं, जितना शायद ही एशिया तथा यूरोप के दो महा–भूखण्डों के अन्य दो देश हों। इतिहास का उत्थान– पतन भी कितना मेल खाता है। जहाँ दोनों देशों के प्राचीनकाल मे उच्चकोटि की प्रजातन्त्र प्रणाली की सुयोग्य प्रशासन, व्यवस्था, विधि–विधान तथा भिन्न–भिन्न कलाओं की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की चरम सीमा थी वहाँ मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों के कारण परतन्त्रता तथा किंकर्तव्यविमूढता से उत्पन्न अस्थाई पतन की भी स्थिति आयी। *इस अवनति काल मे भी कला–कौशल तथा उच्चकोटि के साहित्य का सृजन कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में होता रहा।*

भारत तथा इटली के व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंध कोई दो हजार वर्षों से भी अधिक पुराने हैं। मौर्य तथा गुप्तकाल में जब भारत ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल तथा सामाजिक समृद्धि के स्वर्णकाल से गुजर रहा था तब इटली के रोमन साम्राज्य का प्रभुत्व उत्तर में इग्लैंड से लेकर दक्षिण में मध्य ऐशिया के कुछ भागों तक छाया हुआ

सन् १६१० में तैस्सितोरी ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा डा० पैवोलिनी के शिष्यत्व में उन्होंने संस्कृत सीखना शुरू किया था, उन्हीं के मार्गदर्शन मे डेढ वर्ष के पश्चात पीएच.डी का वह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया जिस पर कार्य करने मे भारतीय भी कतराते हैं। विषय था– 'वाल्मीकि रामायण व तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन'। यही निबन्ध बाद मे अँग्रजी मे भाषातरित हुआ जिससे डा० ग्रियर्सन आकर्षित हुए और उन्होंने एशियाटिक सोसायटी में शोधकार्य के लिये आपको आमंत्रित किया।

केवल अपनी मातृभूमि इटली मे ही नहीं, वरन् अपनी कर्मभूमि राजस्थान मे ज्ञानकोशो को उद्घाटित करने में उन्होने अकथ्य व अनथक प्रयत्न किये। उन्होने न दिन देखा न रात, न चिलचिलाती धूप और न धूल भरी आँधियों की ही परवाह की और न हड्डियो तक को जमा देने वाली सर्दी की। घोडे पर बैठे, ऊँटो पर कष्ट साध्य सवारी की और न हुआ तो पैदल ही, यह ज्ञान–पिपासु अपनी तृषा–सिंधु लिये दरदर भटकता रहा। बीहड प्रदेशो निर्जल ढाणियो, त्यक्त दुर्गो, गाँवो, कस्बो, नगरो– कोई भी तो ऐसा स्थान नही था, जहाँ का चप्पा–चप्पा उन्होने नही छान मारा हो। गाँवो में छाछ, दूध, दही, राबडी, सोगरा जो मिला खा लिया। ऐसा लगता था, जैसे अलख जगाये कोई अवधूत अपनी ध्येय–सिद्धि मे रत हो।

ग्रामवासियों से वे मारवाडी मे बाते करते। मिष्ठ और सुष्ठु, प्राचीन व समृद्ध मारवाडी से उन्हे इतना प्यार था कि बारठ देवकर्णजी को प्रेषित एक पत्र में उन्होने लिखा कि मुझे अपनी मातृभाषा इटालियन से भी कही अधिक मारवाडी से प्यार है। अपने १० मई १६१४ के एक पत्र मे उन्होने लिखा कि ' मैं जितना बन सके, भारतीयो से मिलजुल जाऊँगा।" इसी को लक्ष्य कर उन्होने अन्यत्र लिखा कि, " I am not an English to look down upon all that is not English or atleast European I have the highest respect and admiration for the Indian people." भविष्य के गर्भ की तो भगवान जानता है, पर निम्नलिखित दो उदाहरण डा० तैस्सितोरी के जीवन के अदृष्ट को सूचित करते हैं

(१) अपने एक पत्र मे उन्होने लिखा था, "मै अभी तक क्वॉरा हूँ। इस वक्त २५ वर्ष का हूँ। मे भारतीय लडकी के सिवाय किसी दूसरी से शादी नहीं करूंगा।" ऐसा माना जाता है कि उनका रुझान डिंगल साहित्य मे प्रबुद्ध किसी चारण कन्या से विवाह करना था। कौन भाग्यशालिनी वह राजस्थानी कन्या होती और कैसा होता आज से पचहत्तर वर्ष पूर्व का यह अन्तर्जातीय व अतर्देशीय अद्भुत विवाह ? निश्चय ही वे भारतीयता से तादात्म्य स्थापित करना चाहते थे और इस प्रकार दो शरीरो के साथ दो सस्कृतियों का भी सयोग होता। (२) दूसरी ओर जैनाचार्य विजयधर्म सूरि की तपश्चर्या, उनका प्रकाण्ड ज्ञान, उनकी निश्छलता, आदि ऐसे तत्व थे, जो अनायास ही उनको जैन धर्म की ओर आकृष्ट करते थे। उन्होने मासाहार और मदिरा को तिलाजलि दे दी थी। एक प्रकार से वे जैन श्रावक हो गये थे और स्वयं श्रावकगण जिन आठ अणुव्रतो का पालन नहीं करते उनका वे दृढता से पालन करते थे। अपने गुरू के प्रति समर्पित थे। उन्होने अपने एक पत्र मे लिखा कि, "मैं चाहता हूँ कि मैं अपने आपको आपके अर्पण कर दूँ।" गुरू और ज्ञान के प्रति ऐसा समर्पण विरल है। डा० तैस्सितोरी ने इटली से अपने गुरू जैनाचार्य श्री विजयधर्मसूरि की मूर्ति बनवाकर भारत मँगवाई, यह मूर्ति आजकल आगरा के जैन ग्रन्थागार में रखी हुई है। भारत मे पुरातत्ववेत्ता के रूप में उनका कार्य सदैव अविस्मरणीय रहेगा। प्राचीन सास्कृतिक केन्द्रो की खुदाई में उन्हें अमूल्य वस्तुयें हाथ लगीं। संगमरमर से निर्मित किसी अज्ञात शिल्पी की सरस्वती की दो विश्व प्रसिद्ध अद्वितीय मूर्तियाँ, टेराकोटा की सैकडों वस्तुएँ, सहस्त्रो शिलालेखो की नकलें, चित्रों, देवलियो व जैन मूर्तियो का उनका सग्रह स्पृहणीय है। आज बीकानेर म्यूजियम उनका आभारी है। उनके इसी कार्य से प्रभावित होकर तथा उनके अनुभव का लाभ लेने हेतु, भारत सरकार के तत्कालीन पुरातत्व सर्वेक्षण के अध्यक्ष सर जान मार्शल ने उन्हें एक मास के लिये शिमला बुलाया था।

लगन के धनी, उस साधक की बीकानेर में प्लूरिसी के कारण अकाल मृत्यु हो गई। बीकानेर राज्य के रेवेन्यू मेम्बर (राजस्वमंत्री) श्री रडकिन ने २६–१–१६२० को इटालियन कौंसिल, कलकत्ता को जो नोट भेजा था वह इस प्रकार है– Dr. L. P. Tessitori died on 22nd Nov. 1919, after a short illness. He first had a sore

धीरे–धीरे इटली में भारत की कई सुन्दर कला–कृतियाँ इकट्ठी होने लगीं। सन् १६०० ई० में रोम के एक कुलीन घराने ने वोर्जानो सग्रहालय में भारत की कई वस्तुओं, जैसे शैव और वैष्णव मूर्तियों, रामायण के दृश्यों के रंगीन चित्र आदि का संग्रह प्रदर्शन हेतु रखा। इसी प्रकार इटली के फ्लारेंस नगर में १८८६ ई० में श्री आनजेलो दे गू बेरनालिस ने अपने अथक प्रयासों से भारतीय अजायबघर स्थापित किया। वह स्वयं संस्कृत के विद्वान थे और उन्होंने भारत में कई वर्ष बिताये थे। उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी मे इटली में भारत सम्बन्धी अध्ययन सुचारु तथा सुव्यवस्थित ढंग से आरम्भ हो गया।

इटली के ट्यूरिन विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्राध्यापक प्रो० गासपेरे गोरेजिउचे ने महर्षि बाल्मीकि के आदि काव्य "रामायण" का कोई ३० वर्ष तक अध्ययन किया तथा १८७० ई० मे इसका अनुवाद प्रकाशित किया। श्री जोवाननी फलकिया ने १८५६ ई० में सस्कृत व्याकरण को तैयार किया। उन्होंने महाकवि कालिदास के "मेघदूत" का भी इतालवी भाषा मे अनुवाद किया। इसी श्रृंखला में डा० लुइजी पियो तैस्सितोरी का इटली के उदीने नगर में जन्म हुआ जिन्होंने सत तुलसीदास के हिन्दी ग्रन्थ "रामचरित मानस" और बाल्मीकि के संस्कृत ग्रन्थ "रामायण" पर तुलनात्मक अध्ययन कर सन् १६१० में शोध निबन्ध लिखा। यह एक अद्वितीय कार्य था। इसी कारण तुलसी के साथ तैस्सितोरी का नाम जुड़ गया। इनका जन्म शताब्दी महोत्सव समस्त भारत में श्रद्धा के साथ मनाया जा रहा है। उदीने मे मुझे इस अवसर पर आपने आने का निमंत्रण दिया उसके लिये इटली– वासियो का दिल से आभार मानता हूँ। भारत सरकार का डाक–तार विभाग भी तैस्सितोरी की स्मृति मे डाक टिकट निकालने का विचार कर रहा है।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' कहावत डा० तैस्सितोरी के जीवन पर शतप्रतिशत चरितार्थ होती है। कहते हैं कि संसार के अनेक महापुरूष बहुत कम आयुष्य लेकर इस धरती पर अवतरित हुए, पर उनके ज्योतिर्मय जीवन की जगमगाहट ही इतनी अधिक होती है कि साधारण मनुष्यो के अनेक जन्म भी उनके महत् जीवन के लिये छोटे पडते हैं। आदि शंकराचार्य का ज्वलन्त उदाहरण हमारे सम्मुख है। इसी प्रकार मात्र बत्तीस वर्ष की अल्पायु में डा० तैस्सितोरी ने साहित्यिक क्षेत्र मे जो सिद्धियाँ उपलब्ध कीं, सामान्यत वह किसी के बूते की बात नहीं है।

डा० जीओकोमो मार्गेथ, जो कि डा० तैस्सितोरी के बचपन के साथी और कालेज जीवन के सहपाठी थे, अपने इस प्रगाढ़ मित्र की प्रवृत्तियो से बडे प्रभावित थे। उन्होने जर्नल आफ उदीने' मे लिखा कि लुईजी तैस्सितोरी सब बालको की सहज प्रकृति के विरूद्ध असाधारण प्रकृति का था। वह आदर्शों और स्वप्नों के संसार में विचरण करता था तथा उस समय भी वह भारत के उन सुन्दर दृश्यों का काल्पनिक वर्णन करता था, जिन्हें उसने कभी देखा तक न था। भारत भी कैसा ? हरियाली और तेज सूर्य से प्रकाशित भारत, जिसके प्राचीन वैभव की आज अवगणना हो रही है। कभी–कभी वह अध्यात्मवादी विषयों, साहित्य तथा विज्ञान के विषय में ऐसा निमग्न हो जाता था जिनको अन्य साथी समझ भी नहीं पाते थे। वह अपने समय का सदुपयोग शोधकार्यो में व्यतीत करता था। प्राकृत और संस्कृत के ग्रन्थो का अध्ययन उसकी प्रथम सीढी थी। कालेज जीवन में उसने जर्मन व अंग्रेजी सीख ली थी और इस प्रकार प्राचीन भाषाओ के अध्ययन के द्वार खुल गये थे। इन चार भाषाओं और अपनी मातृभाषा इटालियन के साथ–साथ तैस्सितोरी ने ग्रीक, अपभ्रंश मारवाडी और गुजराती पर इतना अधिक प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था कि दूर इटली मे बैठे–बैठे भारत मे वे आचार्य प्रवर विजयधर्म सूरि और अन्याय विद्वानों से गुजराती और हिन्दी में पत्र व्यवहार करते थे।

१३ दिसम्बर, १८८७ को उदीने की कसीगनैको स्ट्रीट में डा० तैस्सितोरी का जन्म हुआ और देहावसान हुआ बीकानेर में २२ नवम्बर सन् १६१६ को। इसमें से पाँच वर्ष आप शिशु अवस्था के निकाल दीजिये, दस वर्ष प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षण के बाद कर दीजिये और चार वर्ष उच्च शिक्षण के भी निकाल दीजिये तथा तीन वर्ष सैनिक जीवन के भी निकालने के पश्चात कुल मिलाकर दस वर्ष शेष रहे। इन्हीं दस वर्षो की अल्पावधि मे उन्होंने साहित्योदधि का मंथन करके रख दिया।

महत्व इस कारण से भी है कि स्वय हमारे देश मे इस ओर किसी ने कुछ भी लिखने का साहस तक नहीं किया।

इधर वे गुजराती और मारवाडी व्याकरण के साथ–साथ रामचरितमानस की मूल बोली बैसवाडी व्याकरण' जैसे कठिन शोध कार्यो मे भी लीन थे। आधुनिक भारतीय भाषाओ मे कृदन्त का उद्भव' जैसे गभीर व क्लिष्ट विषय पर भी उन्होने कार्य प्रारम्भ किया और ये तीनो लेख क्रमश सन् १६१३ और १६१४ ई० मे 'जर्नल आफ दि रायल एसियाटिक सोसायटी' के अको मे अग्रेजी मे प्रकाशित हुए, जवकि कृदत वाला लेख जर्मनी भाषा मे जर्मन मे प्रकाशित हुआ।

भारत में :

(८) भारत मे उनकी ख्याति का प्रथम ग्रथ– "पश्चिमी राजस्थानी व्याकरण" (अपभ्रश, गुजराती एव मारवाडी उल्लेखो सहित, सन् १६१४–१६ ई०) तथा उनका अति प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक लेख पुरानी गुजराती एव पुरानी पश्चिमी राजस्थानी, जो गुजराती साहित्य परिषद की पाँचवी रिपार्ट मे मई सन् १६१५ ई० मे प्रकाशित हुआ। इस लेख ने *अनेक कांतिकारी परिवर्तन किये और भाषा–वैज्ञानिको की अद्यावधि मान्यताओ को ही उलट दिया।*

इसी बीच भिन्न–भिन्न विषयो पर उनके तीन और लेख प्रकाशित हुए। प्रथम था–'क्या धर्मदास गणी महावीर के समकालीन थे ?' यह अग्रेजी मे था और जैन साहित्य सम्मेलन जोधपुर में सन् १६१४ ई० मे पढा गया था। द्वितीय था–'परम ज्योति स्तोत्र और सिद्धसेन दिवाकर के कल्याणमंदिर स्तोत्र' इसको पुरानी बृजभाषा मे रूपांतरित किया गया था और सन् १६१३ ई० के इन्डियन एण्टीक्वेरी मे प्रकाशित हुआ था, तृतीय था– गुजराती और जयपुरी (ढूँढाडी) में "सुलेमान का न्याय" के दो जैन रूपान्तर। यह भी सन् १६१३ ई० मे इन्डियन एण्टीक्वेरी में प्रकाशित हुआ था।

(६) अपने गुरू के प्रति अनन्य भक्ति तो थी ही। डा० तैस्सितोरी ने अग्रेजी मे उनका जीवन–चरित्र बीकानेर मे रहते लिखा था, जिसे श्री वृद्धिचद्र जैन ग्रथालय ने भावनगर (गुजरात) से सन् १६१७ ई० में प्रकाशित करवाया था।

(१०–११) साहित्य व शोध केजगत मे चिराग् बने रहने के लिये उपर्युक्त कार्य ही यथेष्ट है। पर जिस डिंगल साहित्य के तीन सर्वोच्च ग्रथों का उन्होने उत्कृष्ट सपादन किया, उसने उन्हे साहित्याकाश का ध्रुव ही बना दिया। 'वचनिका राठौड रतनसिंह महेशदासोतरी, खिडिया जग्गारी कही' जब जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसायटी, बगाल' से सन् १६१७ ई० मे प्रकाशित हुई तो हिन्दी ससार और विशेषकर राजस्थान मे एक खलबली –सी मच गई, पर अपनी मृत्यु के वर्ष मे ही (सन् १६१६) मे जब 'बेलि किसन रूकमणि री प्रिथीराज राठौड री कही' लोगों के सम्मुख सुसपादित रूप मे आई तो दाँतो तले अंगुली दबाने जैसा कार्य हुआ था। इसको तो पचमवेद और उन्नीसवाँ पुराण तक कवियो और विद्वानों ने कहा है। डिगल साहिल्य के विशेषज्ञों को स्वीकारना पड़ा कि जो पैनी पहुँच डा० तैस्सितोरी की है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। यह कार्य उन्होंने आठ हस्तलिखित प्रतियो के आधार पर कठोर *श्रम* से पूर्ण किया था।

(१२) डिंगल का क्लिष्टतम ग्रंथ तो 'छंद राव जेतसी रो' है, यह भी सन् १६१७ ई० मे ही संपादित होकर प्रकाश मे आया। इसने तो डा० तैस्सितोरी की अक्षय कीर्ति में चार चाँद और लगा दिये।

उन्होंने राजस्थान के डिगल साहित्य व इतिहास के सर्वे की जो विवरणिकायें छपवाई हैं, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य था, क्योंकि इसमे शोध के इस क्षेत्र मे कई नई दिशाएँ उदघाटित हुई। जोधपुर राज्य के गद्य–साहित्य की विवरणिका (सन् १६१७) और बीकानेर राज्य के गद्य–पद्य दोनों की विवरणिकाओं (सन् १६१८) ने शोध के विस्तृत क्षेत्र को हमारे सम्मुख रख दिया।

throat and then an attack of Pleurisy.

उनके कृतित्व को दो भौगोलिक भागो मे विभाजित किया जा सकता है, पहला इटली में किया गया और दूसरा राजस्थान मे किया गया कार्य। पुन: इटली के समूचे कृतित्व को दो भागो में वर्गीकृत किया जा सकता है –(१) *अध्ययन करते समय और* (२) *अध्ययनोपरान्त।* उनके भारत के कृतित्व को इन वर्गो में सहजता से बाँटा जा सकता है :– प्रथम जैन धर्मावलबी साहित्य, द्वितीय सपादित कृतियाँ, तृतीय शोधपरक हस्तलिखित ग्रंथो की सूचियाँ, चतुर्थ, व्याकरण सबधी रचनाऐं, पचम पुरातत्व संबंधी शोधकार्य, षष्ठ अप्रकाशित साहित्य। भाषाओ की दृष्टि से उनकी रचनाएँ इटालियन अंग्रेजी, जर्मन, हिन्दी, राजस्थानी तथा गुजराती मे छपी थीं।

डा० तैस्सितोरी का कृतित्व :

कालक्रमानुसार इटली और भारत में किये गये उनके समग्र कृतित्व का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

इटली में

(१) भववैराग्य शतकम्– प्रा. ्न का यह नीति–विषयक ग्रंथ है, जिसे इस इटालियन विद्वान ने मात्र २२ *वर्ष की अवस्था में न केवल संपादित ही किया बल्कि इसे इटालियन में अनूदित कर अपनी प्रतिभा का विलक्षण* उदाहरण प्रस्तुत किया। यह ग्रथ सन् १६०६ ई० मे ' जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसायटी" इटली मे प्रकाशित हुआ था। सन् १६११ ई० में इसी ग्रन्थ का उन्होने शुद्धि पत्र छपवाया था।

(२) रामचरितमानस और रामायण– सन् १६१० ई० में उन्होने पी–एच डी. की उपाधि प्राप्त की। *उनका "रामचरितमानस और रामायण" नामक शोधप्रबध सन् १६११ ई० मे 'जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसायटी',* इटली में प्रकाशित हुआ। इस विषय की कठिनता और गुरूता का अनुमान मात्र इसी से किया जा सकता है कि विषय-साम्य के अतिरिक्त इन दोनो मे कोई साम्य नहीं है। एक सहस्त्रो छंदों मे लिखा संस्कृत का ग्रंथ है तो दूसरा शताब्दियों बाद लिखा अवधी का ग्रंथ। *भारतीय संस्कृति और सभ्यता के इन दो आधार–स्तम ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन,* भारतीय परिवेश से सर्वथा दूर एक अभारतीय द्वारा करना कितना दुर्बोध कार्य हो सकता है ?

(३) धर्मदास की उपदेशमाला :– यह ग्रंथ सन् १६१२ ई० में संपादित और अनूदित हुआ। इसे भी डा० तैस्सितोरी ने उपर्युक्त जर्नल में ही प्रकाशित करवाया था।

(४) *नासिकेतोपाख्यान– इस ग्रंथ का स्रोत ऋग्वेद मे है। मारवाड़ी मे यह 'नासकेत री कथा' से* ख्यात है। इसका रूपान्तर डा० तैस्सितोरी ने इटालियन में किया और इस प्रकार मारवाडी पर के अपने वर्चस्व-को प्रमाणित किया। यह ग्रंथ Rivdi Studi Orient में १६१३ ई० में प्रकाशित हुआ।

(५) *कर कुंडरी कथा :– कर कुंडरी कथा राजस्थानी भाषा की ढूंढाडी बोली का ग्रंथ है, जिसका* उन्होंने इटालियन मे अनुवाद व सपादन कर सन् १६१३ ई० मे The Journal of Asiatic Society, Italy में प्रकाशित करवाया था। इससे स्पष्ट होता है कि राजस्थानी की विभिन्न बोलियों का उन्हे सम्यक् ज्ञान था।

(६) हाल की सतसई :– श्रृंगारपूर्ण इस ग्रंथ का अनुवाद भी उन्होंने *अपनी मातृभाषा में किया,* जो सन् १६१४ ई० में छपा।

(७) उपर्युक्त महत्वपूर्ण कार्यो के साथ अपने मनोरंजन के लिये मीर अम्मान की हास्य कृति "आजाद *बख्त" का अनुवाद* 'कुत्तो की पूजा करने वाला व्यापारी सेठ" नामक शीर्षक से सन् १६१३ ई० में उदीने *के जर्नल में छपवाया।*

इसी बीच संत तुलसीदास पर उनके दो लेख क्रमशः १६१२ व १६१४ ई० मे प्रकाशित हुए। प्रथम था 'भक्त और कवि तुलसीदास' और दूसरा था 'तुलसीदास पर रामानुजाचार्य एवं शंकराचार्य का प्रभाव'। इन लेखों का

चुरू (राजस्थान) की "नगर श्री" संस्था मे डा० तैस्सितोरी स्वर्णपदक प्रस्थापित किया गया, जो प्रतिवर्ष राजस्थानी भाषा पर श्रेष्ठ कार्य के लिये दिया जाता है। इसके प्रथम प्राप्तकर्ता आचार्य प० बद्रीप्रसाद साकरिया थे, जिन्होने राजस्थानी हिन्दी कोष का तीन भागो मे सम्पादन किया।

डा० तैस्सितोरी द्वारा लिखित बीकानेर राज्य का इतिहास, उनके द्वारा लिखे गये शिला–लेखो की नकलें आदि अप्रकाशित सामग्री बीकानेर के राजकीय अभिलेखागार और म्यूजियम मे रखी हुई है। डा० तैस्सितोरी द्वारा संपादित कई ग्रंथों का हिन्दी मे अनुवाद हुआ है।

सन १९८५ की २२ अगस्त को डा० एल० पी० तैस्सितोरी के प्रतिमा–स्थल का शिलान्यास कानपुर के तुलसी उपवन' मोती झील मे राष्ट्रकवि श्री सोहन लाल जी द्विवेदी की अध्यक्षता मे उ० प्र० शासन के खाद्यमंत्री प्रो० बासुदेव सिंह जी ने किया और प्रतिमा का उदघाटन राजस्थान एसोसियेशन, कानपुर के तत्वावधान एव मानस संगम के सहयोग से उसके संयोजक श्री बद्रीनारायण जी तिवारी और राजस्थान एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री बी० आर० कुमंट एवं महामंत्री मदनलाल जैन एडवोकेट की प्रेरणा एव परिश्रम से ता० २२ दिसम्बर १९८५ को भारत स्थित इटली के तत्कालीन सांस्कृतिक दूत प्रो० फरनेन्दो बरतोलिनी ने भारत के सुप्रसिद्ध मानस मर्मज्ञ प० रामकिंकर जी उपाध्याय की अध्यक्षता में किया। प्रतिमा का निर्माण के० बुलाकीचद फूलचद बाँठिया चेरीटेबल ट्रस्ट, कानपुर के आर्थिक सहयोग से किया गया, जिसका कि मैं सस्थापक–अध्यक्ष हूँ।

इस वर्ष मेरे देश भारत मे भी अनेक प्रान्तों विशेषकर राजस्थान, गुजरात, बगाल, उत्तर प्रदेश दिल्ली में तैस्सितोरी की जन्म शताब्दी मनाने के लिये विविध आयोजन प्रायोजित है। बल्लभ विद्यानगर के प्रोफेसर श्री भूपतिराम साकरिया– 'डा० तैस्सितोरी व्यक्तित्व एव कृतित्व' पर एक सर्वांगीण बृहद् ग्रन्थ के लेखन का शुभारम्भ कर चुके हैं, जिसका विमोचन १३ दिसम्बर १९८८ ई० कानपुर मे होगा।

डा० तैस्सितोरी की जन्मभूमि उदीने की धरती को प्रणाम करने की मेरी बडी तीव्र इच्छा वर्षो से ही थी वह आज यहाँ आकर पूरी हुई। इसके लिए उदीने के मेयर, डिप्टी मेयर, और डा० तैस्सितोरी के भान्जे डा० गुइडो पियानों व कुमारी अन्ना ब्रोसोलो का आभार मानता हूँ जिनकी प्रेरणा से मुझे यहाँ आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इटली व भारत का पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है। दोनों देशों की मित्रता 'वसुधैवकुटुम्बकम्' को सार्थक कर रही है। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री राजीव जी की धर्म पत्नी श्रीमती सोनिया गाँधी आप ही के देश की बेटी हैं। हमारे युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव जी के नेतृत्व मे हमारा देश दिनो–दिन प्रगति कर रहा है और समस्त विश्व में "पंचशील" की भावना का प्रसार हो रहा है।

जय भारत ! जय इटली !

डा० एल० पी० तैस्सितोरी अमर रहें

जयहिन्द

उदीने, इटली
दि० १३ नवम्बर, १९८७

हजारीमल बाँठिया
५२/१६, शक्कर पट्टी,
कानपुर–२०८००१ (भारत)

० ० ० ०

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यदि उनकी अमूल्य साहित्यिक संपत्ति नष्ट नहीं हो जाती तो एक साधक के धैर्य और विशेषज्ञता के आधार पर किया गया उनका 'मुख्य भारतीय भाषाओं का कोश' विद्वानों के सम्मुख होता।

डा० तैस्सितोरी ने राजस्थान व गुजरात के सांस्कृतिक व साहित्यिक पटलो को खोलने का अद्भुत कार्य किया। वे राजस्थान और राजस्थानी के तो अविभाज्य अंग बन गये और उनके कार्यों से प्रेरित होकर हृदय में देशाभिमान तथा हमारी साहित्यिक विरासत के प्रति जो सहज अनुराग हुआ है, उसका सही मूल्यांकन आने वाली पीढ़ी ही उचित ढंग से कर सकती है।

हम भारतीय कृतघ्न नहीं हैं। उनके द्वारा हमारे साहित्य व संस्कृति के लिये की गई अनुपम सेवाओं का तो कोई प्रतिदान हो ही नहीं सकता, फिर भी उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का कार्य तो रहता ही है। इसी हेतु उनकी सेवाओं को चिरस्थायी बनाने के लिये बीकानेर के विस्तृत ईसाई कब्रिस्तान मे आचार्य प० बदरी प्रसाद साकरिया[1] ने उनकी कब्र को वहाँ के अधिकारी और उसके रजिस्टर के आधार पर शोध निकाली तो मैने (हजारीमल बाँठिया ने) अपने अर्थदान से उस पर एक ऐसी भव्य समाधि का निर्माण करवा दिया है, जो इस अभारतीय-भारतीय की अमर प्रेरणाप्रद स्मृति बनी रहेगी।

श्री रडकीन ने डा० तैस्सितोरी की मृत्यु-सूचना तो कलकत्ता के इटालियन कौन्सल को दी थी, पर साथ में यह भी लिखा था कि, **He had an ex traordinary gift for his work and it witll be almost impossible ever to find another man approaching him in his command of the dialects, while his keenness and industry were so great as to make it certain that he would have made a great name for himself in archaeological research, if he had been spared. He is buried in the small cemetry here.**

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर से प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध शोध-पत्रिका 'राजस्थान भारती' के यशस्वी सपादक आचार्य प० बदरी प्रसाद साकरिया ने डा० तैस्सितोरी की भारत में पहली बार मनाई जाने वाली पुण्य तिथि ता० २२ नवम्बर १९५६ ई० पर एक विशेषांक निकाला तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध भाषाविद् डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या की अध्यक्षता मे एक समारोह का आयोजन पुण्य तिथि पर ही तीन दिन का किया था जिसमे इटली के तत्कालीन भारत-स्थित सास्कृतिक दूत डा० टिबेरी टिबेरियो उपस्थित थे। समारोह में न केवल डा० तैस्सितोरी के जीवन व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया बल्कि मेरे द्वारा निर्मित डा० तैस्सितोरी की समाधि का यथाविधि उद्घाटन भी किया गया। इस समारोह म तैस्सितोरी के साथ काम करने वाले कई विद्वान प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, डा० जुगल सिंह जी खिच्ची, श्री उदयदान जी उज्वल आदि भी उपस्थित थे। श्री जेम्स जिनके घर डा० तैस्सितोरी की मृत्यु हुई थी, उसका सुपुत्र विलियम जेम्स भी उपस्थित था। यह सब समारोह राजस्थानी भाषा के उद्भट विद्वान पूज्य मामा जी स्व० श्री अगरचन्द्र जी नाहटा के निर्देशन मे सम्पन्न हुए। श्री नाहटा जी सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर के उस वक्त डाइरेक्टर थे, तैस्सितोरी को भारत में उजागर करने के लिये श्री नाहटा जी का ही प्रारम्भ से सहयोग और आशीर्वाद रहा। वे ही मेरे प्रेरणा स्त्रोत थे, उनका आभार मानता हूँ। उस वक्त राजस्थान सरकार ने भी डा० तैस्सितोरी पर एक विशेषांक प्रकाशित किया था।

डा० तैस्सितोरी की कब्र खोजने में मुझे बड़ी दिक्कत हुई। ईसाई-कब्रिस्तान मे कहीं उनका नाम लिखा नहीं था, किन्तु अन्त मे केथोलिक चर्च के तत्कालीन अधिकारी प्रो० आई० टिक्का जी जो मेरे कक्षा-गुरू रहे थे, उनके सहयोग से मैने गिरजे से प्राप्त रिकार्ड और नक्शे से उसे ढूंढ निकाला और टिक्का साहब की आज्ञा-पत्र प्राप्त कर मैंने फिर लाल पत्थर और मारबल से समाधि का निर्माण कराया।

१- दि० २१ मई १९९५ को श्री साकरियाजी का एक सौ वर्ष की अवस्था मे वल्लभ विद्यानगर गुजरात में स्वर्गवास हो गया।

आचार्य श्री विजयधर्मसूरी और डा० एल. पी. तैस्सीतोरी

शास्त्र विशारद जैनाचार्य श्री विजयधर्मसूरि जी एक ऐसे महान् ज्योतिर्धर आचार्य हुये है, जिन्होने बीसों विदेशी विद्वानों को जैन साहित्य और इतिहास के प्रति आकर्षित किया। इनमे जर्मनी के प्रो डा० हरमन जैकोबी - इटली के डा० एल. पी. तैस्सीतोरी और जर्मन की ही विदुषी डा चारलौटे क्रौझै (सुभद्रादेवी) आदि प्रमुख हैं। इनमे डा० तैस्सीतोरी और कुमारी डा. क्रौझे–आचार्यश्री जैन, साहित्य और इतिहास से इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे जैन धर्मानुयायी बन गये– डा तैस्सीतोरी श्रावक और डा क्रौझे श्राविका। सन् १६१४ के मार्च के महीने मे आचार्यश्री की प्रेरणा से जोधपुर में जैन साहित्य सम्मेलन हुआ था, जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध बगाली साहित्यकार एव इतिहासविद् श्री सतीशचन्द्र विद्याभूषण ने की थी। इसमे जर्मनी के प्रो डा हरमन जैकोबी भी उपस्थित थे और डा जैकोबी की राय से सन् १६१३ से ही इटली में बैठे डा तैस्सीतोरी ने पत्राचार प्रारम्भ कर दिया था। इस सम्मेलन मे पत्र–वाचन के लिये एक शोधपूर्ण निबन्ध डा. तैस्सीतोरी ने भेजा था–जिसका शीर्षक था–"क्या धर्मदास गणि भगवान् महावीर के समकालीन थे ?"

डा०. एल पी तैस्सीतोरी का जन्म उदीने (UDINE) इटली में १३ दिसम्बर, १८८७ को हुआ था। प्रारम्भ से ही डा. तैस्सीतोरी के मन मे भारतीय और जैन साहित्य के प्रति अनुराग का अकुर प्रस्फुटित हो गया था। "संत तुलसीदास कृत रामचरित मानस और वाल्मीकि कृत रामायण" पर तुलनात्मक शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत कर डा तैस्सीतोरी ने पी–एच डी की डिग्री फ्लोरेंस विश्वविद्यालय से सन् १६११ मे प्राप्त की और विश्व मे विदेशी विद्वानो में रामायण पर शोध करने वाला प्रथम शोधार्थी बना। आचार्यश्री से ज्यो–ज्यो पत्राचार होता गया डा तैस्सीतोरी का भारत आने और आचार्यश्री के दर्शन करने की उत्कंठा और उनके चरणो में बैठकर जैन साहित्य के अभ्यास और ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा बढती गई। डा तैस्सीतोरी का निधन २२ नवम्बर, १६१६ को बीकानेर (राजस्थान) मे हुआ और उसके बाद वह विस्मृत–सा हो गया। सर्वप्रथम हिन्दी जगत मे मैंने पूज्य मामाजी साहित्य मनीषी स्व अगरचन्दजी नाहटा की प्रेरणा से डा तैस्सीतोरी का जीवन परिचय उन २५ पत्रों के आधार पर लिखा जो उसने ११ अप्रैल, १६१३ से १६ दिसम्बर, १६१६ तक आचार्य श्री और उनके पट्ट शिष्य उपाध्याय इन्द्र विजय जी को लिखे थे। सन् १६५० मे मेरा यह लेख बीकानेर की शोध त्रैमासिक पत्रिका "राजस्थान भारती" मे प्रकाशित हुआ तो साहित्य–जगत में सभी ने सराहा और इस लेख का एक रि–प्रिन्ट मैने आचार्यश्री के विद्वान शिष्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी को भी भेजा था। डा तैस्सीतोरी ने आचार्यश्री के प्रथम दर्शन शिवगंज (एरनपुरा) मे किये। आप आचार्यश्री के साथ ५–७ दिन ठहरे। आप के हृदय पर आचार्यश्री के दर्शनो की बहुत गहरी छाप पडी। डा तैस्सीतोरी आचार्यश्री के दर्शन व मुलाकात कर १७ अगस्त, १६१४ को प्रातःकाल १० बजे वापिस जोधपुर चले आये। १६ अगस्त को आचार्यश्री को हिन्दी में पत्र इस प्रकार लिखा–

गुरू मुनि महाराज,

मैं परसो दस बजे कुशलतापूर्वक जोधपुर पहुँच गया हूँ। आपने और आपके पट्ट शिष्य श्री इन्द्रविजय उपाधयायजी ने तथा श्रावकों ने मेरा जो आतिथ्य व सत्कार किया, उसके लिये मैं आपको और आपके सम्बन्धी राय लोगो को अन्तःकरण से कोटिशः धन्यवाद अर्पण करता हूं।

आपके दर्शन से मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ, उसे लिखकर प्रगट नहीं कर सकता, उसका हृदय ही अनुभव कर सकता है। मेरी यह अभिलाषा है कि फिर बहुत शीघ्र ही आपका दर्शन कर कृतार्थ होऊंगा।

आपका आज्ञाकारी भक्त

"L.P. TESSITORY

Dr.L.P. Tessitory : the First Discoverer of Kalibanga

The importance of a site called Kalibanga in the Bikaner District of Rajasthan has well been recognized now. The excavations conducted at the site by the Archaeological Survey of India some years ago have revealed the existence of a pre-Harappan culture at Kalibnanga, which was succeeded by the Harppan culture.

Before Sri R.D.Banerjee discovered the site of Mohanjodaro,which was excavated under the direction of Sir John Marshall in 1921-22, Dr. L.P.Tesitory chanced upon some valuable relics,when he visited Kalibanga in April,1917. These relics included some pre-historic stone-tools, clay discs and balls and three inscribed sealings.

The discovery of the above material is inferred from Dr. Tessitory's Indian itinerary and his diary. He toured the Bikaner District between Nov.9,1915 and November 5,1919. It was on the 5th and 10th April 1917,that he surveyed the mounds of Kalibanga and noticed the antiquities of various types. In his letter to F.W.. Thomas and George *Grierson, he mentioned about the discovery in the following words.*

"From the nature of the remains litering the mound one might feel tempted to conjecture that the bone objects are pre-historical. Others are stone blades,besides *clay balls,clay discs etc.*"

Dr Tessitory very much desired to make his discovery known through J.R A S. In his words "I think that Sir John Marshall would not object to my making the discovery known." *But his hope was belied.*

Still it was Dr. Tessitory who realised the imiportance of Kalibanga much before the site was explored and subsequently excavated by the Archaeological Survey. He was right in pointing out the prehistoric nature of the sealings and other *antiquities* which he noticed in the mounds of Kalibanga.

The characters of the sealings and the inscriptions on them as shown are akin to the sealings from Harappa and Mohanjodaro.

"Jain Journal". Quarterly" Calcutta Vol. XXIII No.4. April 1989.
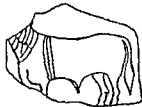
रतनसिंहजी महेशदासौत खिडिया जगा री कही (३) वेली कृष्ण रूकमणि-- राठोड पृथ्वीराज री कही, का संपादन कर सन् १६१८ में एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता से प्रकाशित कराया।

१३ दिसम्बर, १६८७ से १३ दिसम्बर १६८८ तक भारत के अनेक शहरो में डा०एल०पी०तैस्सीतोरी जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया जिनमे कानपुर, जोधपुर, लखनऊ, हाथरस और बीकानेर के समारोह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'वल्लभ संदेश' मासिक जयपुर
वर्ष १७ अंक ६, जुलाई १६८६

+o+o+o+

शास्त्र-विशारद आचार्य श्री विजयधर्मसूरिजी के पत्र

डा0 एल0 पी0 तैस्सीतोरी के नाम

शास्त्र विशारद आचार्य श्री विजयधर्मसूरिजी के अनेक विदेशी विद्वान भक्त थे। इनमें डा० एल० पी० तैस्सीतोरी का नाम प्रथम श्रेणी में है। डा० तैस्सीतोरी को राजस्थानी भाषा-साहित्य का आधुनिक पितामह कह सकते हैं किन्तु आचार्यश्री के सम्पर्क में आने से आचरण और व्यवहार मे वह जैन धर्मप्रेमी बन गया था। पूर्ण शाकाहारी हो गया। जैन साहित्य पर उसने कई निबन्ध लिखे। आचार्यश्री की जीवनी लिखी और उनकी मूर्ति इटली से मंगाई वह आज भी आगरा के बेलनगज श्रीजैन श्वेताम्वर उपाश्रय मे विद्यमान है। आचार्यश्री का डा० तैस्सीतोरी से पत्राचार हुआ। उस वक्त उपाध्यायश्री इन्द्रविजयजी (आचार्य श्री विजयेन्द्रसूरीश्वरजी) आचार्य श्री की तरफ से पत्र लिखते थे। डा० तैस्सीतोरी के पत्र आचार्य श्री के नाम राजस्थान की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है। कुछ दिन हुये डा० तैस्सीतोरी के भानजे डा०गुइडो पियानो ने इटली से आचार्यश्री के लिखे पत्रों की जीरोक्स नकल मेरे पास भेजी है। पत्र उस वक्त की परिस्थिति का बोध कराते हैं।

(१)

श्रीयुत् डा० महोदय

पत्र आपका मिला। समाचार मालुम हुये। पत्र लिखने से कुछ फायदा नहीं, स्वयं कभी आप मिलें और आपको विश्वास होवे कि मेरा कहना करेगा तव ही कहने की आवश्यकता है नहीं तो इसमें हमारा आग्रह नहीं है। आपके कथन से हम सर्वथा सहमत हैं कि दोनो ही स्वेच्छाचारी हैं। दूसरी दफे मिलना हुआ। धार्मिक वृत्ति देखने में नहीं आती। परिपार्श्वकगण नैतिक बल में हीन है विशेष परिचय होने से कुछ कार्य हो सकता है। सो इसके लिये हम स्वग प्रयत्न कर रहे हैं। गवर्नमेन्ट राज्य में भी प्रजा के दिल नही दुखाये जाते हैं। वह भी प्रजा के अंतःकरणों को देख करके ही कार्य करती है और हमारा तो अनुभव है कि देशी राज्य से गवर्नमेट राज्य हजार दर्जे अच्छा है। यह कोई स्वीकार नहीं कर सकता कि निर्दयतापूर्वक लोगों के चिंता को दुःख दे करके प्राणियों का इस प्रकार वध किया जावे।

इसके बाद तीन बार और दर्शन डा. तैस्सीतोरी ने आचार्यश्री के किये–इसके विषय में मुनि विद्याविजयजी ने अपनी पुस्तक "आदर्श साधु" नामक कृति में इस प्रकार विवरण लिखा है–

"जब आप (विजयधर्मसूरि) सादडी मे थे, उन दिनों मे डा. एल.पी तैस्सीतोरी भी आपके दर्शनार्थ आये थे। डा तैस्सीतोरी आचार्यश्री के साथ पैदल ही चलकर राणकपुर पधारे थे। तीसरी बार का मिलन उदयपुर में हुआ, जब श्री जयन्तिविजयजी की दीक्षा होने वाली थी। इस दीक्षोत्सव पर इटालियन विद्वान डा. तैस्सीतोरी भी आये थे। तैस्सीतोरी साहब आर्य पद्धति के अनुसार दीक्षा लेने वालों को दीक्षा लेने से पहले अपने उतारे मे निमन्त्रित कर ले गये और तिलक करके एक–एक स्वर्ण मुद्रिका भी दी। डा. साहब ने दीक्षा की क्रिया का सम्पूर्ण रीति से निरीक्षण किया था और सभा मण्डप मे जिसमें दीक्षा दी जानी थी, सात हजार मनुष्यो की सभा मे एक प्रभावात्मक व्याख्यान भी दिया था।

चौथी बार का मिलन डा० तैस्सीतोरी का गुजरात के तलाजा पहाड पर हुआ। महुवा में डा० तैस्सीतोरी को मान–पत्र भी दिया गया।

जिस दिन से डा० तैस्सीतोरी का पत्राचार आचार्य श्री से प्रारम्भ हुआ उसी दिन से उन्होने मांसाहार छोड़ दिया। इटली मे अंडा तो कभी–कभी स्वास्थ्य के कारण डाक्टरों की राय से ले लेते थे किन्तु भारत मे आकर डा० तैस्सीतोरी पूर्ण शाकाहारी बन गये और जीवन पर्यन्त रहे।

आचार्य श्री ने ६ जुलाई, १६१३ को स्वयं लिखित पुस्तके – अहिंसा दिग्दर्शन, जैन दीक्षा, जैन तत्व आदि पुस्तके इटली भेजीं। इस पत्र का प्रत्युत्तर डा० तैस्सीतोरी ने २३ जुलाई १६१३ को दिया, जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है–

आपने बहुत–सी वस्तुयें जो मुझे भेट की हैं, उन सब में आपका फोटू बहुत पसंद आया है जो आपकी पुस्तक अहिंसा दिग्दर्शन में लगा हुआ है। नि:सन्देह मैं उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। आपकी शान्त मूर्ति *मेरे नेत्रो में स्थापित हो गयी है। जब कभी मैं आपके पत्र और पुस्तकें पढता हूँ या उसके बारे में सोचता हूँ* तो झट आपकी शान्त मूर्ति नेत्रों के सम्मुख आ उपस्थित होती है। मैं वास्तव में सोचता हूँ कि आप जैसा शान्त एवं उदार पुरुष इस पृथ्वी पर कोई नहीं मिलेगा। मैं चाहता हूँ कि अपने आपको आपके चरणों में अर्पण कर दूँ।

डा० तैस्सीतोरी आजन्म ब्रह्मचारी रहे– इसके सम्बन्ध मे भी आपने आचार्य श्री को उपर्युक्त पत्र मे आगे जाकर लिखा– " में अभी तक क्वांरा हूँ। मैं इस वक्त २५ वर्ष का हूँ। मैं भारतीय लडकी के सिवाय दूसरी लडकी से शादी नहीं करुगां। "डा० तैस्सीतोरी का मात्र ३२ वर्ष की अल्पायु में बीकानेर मे स्वर्गवास हो गया। आप शोध कार्यो हेतु भ्रमण में इतने व्यस्त रहे कि शादी करने का असर ही नहीं आ सका। डा० तैस्सीतोरी की कब्र की खोज मैंने ही की और जिसका निर्माण भी मैंने कराकर– सुप्रसिद्ध भाषाविद् डा० सुनीति कुमार चटर्जी से २२ नवम्बर १६५६ को इटली के सांस्कृतिक दूत डा० टिबेरियो की उपस्थिति मे कराया। यह समाधि बीकानेर के सरकारी गेस्टहाउस के पास गिरजाघर के पीछे बनी हुई है।

डा० तैस्सीतोरी की जैन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा और भक्ति ने ही जैन ग्रन्थो के अध्ययन और सपादन की प्रेरणा दी। डा० तैस्सीतोरी ने 'उपदेशमाला','भववैराग्यशतक' तथा 'इन्द्रिय पराजय शतक" का इटालियन भाषा में अनुवाद कर छपाया। श्रेणिक कथा, जिन माणिक्यसूरि कृत कुम्मापुत्र कथा, नेमीचन्द्र कृत 'सट्ठीसय', सोमसूरिकृत 'पंजता सहण' पुण्याश्रावक कथाकोष, कल्याण मंदिर स्तोत्र, परम ज्योति स्तोत्र, गोडी पार्श्व स्तोत्र आदि कई जैन धर्म के सूत्रों का अध्ययन कर अंग्रेजी मे अनुवाद विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशित कराया।

डा० तैस्सीतोरी बहु–भाषा विद् थे। कई भाषायें जानते थे। किसी भी भारतीय से अंग्रेजी मे बातचीत नहीं की। राजस्थानी भाषा ,डिंगल साहित्य एवं गुजराती भाषा के उद्‌भट विद्वान थे। पुरानी राजस्थानी एवं पुरानी गुजराती का व्याकरण भी तैयार किया था। डिंगल के तीन अनुपम ग्रन्थ (१) छंद राउ जइतसी रो (२) वचनिका राठौड

(श्री हजारीमल बॉठिया डॉ० एलपी. तैस्सितोरी इटेला–इण्डिया सोसाइटी के आमन्त्रण पर दुबारा सितम्बर १६६४ मे इटली गये थे। वहाँ सोसाइटी के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री बाँठिया जी ने जो भाषण दिया उसी को यहाँ अविकल रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है। –सम्पादक)

भारतीय कला, संस्कृति एवं पुरातत्व के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान हेतु डा० एल० पी० तैस्सितोरी को श्रद्धांजलि

सभापति महोदय, मूर्द्धन्य विद्वज्जन, गण्यमान्य मित्रो,
देवियो और सज्जनो,

डा० एल० पी० तैस्सितोरी द्वारा भारत की आभिजात्य कला, भाषा शास्त्र, पुरातत्व एव जैनविद्या के क्षेत्र में सर्वप्रथम किये गये कार्य पर प्रकाश डालने हेतु विद्वानो, कला–रसिको, भारतीय विद्याविदों तथा पुरातत्वविदों की प्रतिष्ठित सभा मे दूसरी बार यहां उपस्थित होने पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इटली को निश्चय ही डा० तैस्सितोरी की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है तथापि उन्हें सच्ची मानवता एव विश्वजनीन जैन धर्म मे दीक्षित करने पर भारत को प्रसन्नता है। यह सर्वविदित है कि वे विवेक तथा करूणा की साक्षात् मूर्ति महान ज्ञानी जैन साधु आचार्य विजय धर्म सूरि के समर्पित शिष्य थे। उनके प्रभाव से डा० तैस्सितोरी विशुद्ध शाकाहारी बन गये थे।

महान विद्वान और भाषाविद्

डा० तैस्सितोरी एक धर्म–परायण विद्वान थे तथा राजस्थान और वहां के लोगो से प्रेम मानते थे। ८ अप्रैल १६१४ को भारत आने से पूर्व ही उन्होंने संस्कृत–महाकाव्य वाल्मीकीय रामायण और हिन्दी महाकाव्य तुलसीदास कृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन किया था। इस अग्रणी कार्य के लिये उन्हे फ्लोरेन्स विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया था। केवल २४ वर्ष की आयु में ही उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी एवं गुजराती आदि भाषाओं पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया था। उन्होने 'नचिकेता तथा इन्द्र की पराजय' की भववैराग्यशतक की कथा का अपनी मातृभाषा में अनुवाद किया था। प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी भाषा के ऐतिहासिक व्याकरण पर उनका विद्वतापूर्ण शोधकार्य भारतीय तथा विदेशी भाषाविदो तथा भाषाविज्ञान–वेत्ताओं द्वारा मुक्त कण्ठ से प्रशसित किया गया था। सुप्रसिद्ध भारतीय भाषाविद् डा०सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार इस शोध–लेख ने भारतीय–आर्य भाषाओं के अध्ययन में महान योगदान किया है। भारतीय भाषाओं, विशेषकर प्राचीन राजस्थानी भाषा के उनके विस्तृत ज्ञान से प्रभावित होकर बीकानेर के तत्कालीन शासक महाराजा गंगासिंह ने उन्हे राजस्थान के प्राचीन चारण–साहित्य के सर्वेक्षण एवं संग्रह का कार्य सौंपा था जिसे उन्होने अत्यंत निष्ठापूर्वक किया और इस कार्य की विस्तृत रिपोर्ट बंगाल की रायल एशियाटिक सोसाइटी को पांच भागो में प्रस्तुत की।

मूर्द्धन्य पुराविद्

बीकानेर में पांच वर्ष की दीर्घ अवधि तक रुक कर उन्होने घाटियों, रेत के टीलों, नगरो और मंदिरो, किलों तथा नगर–दुर्गो की सघन यात्राये कीं और अपने अप्रतिहत उत्साह के द्वारा राजस्थान के मरुस्थलों और शुष्क घाटियों मे घूम–धूम कर कार्य करने में आने वाली बाधाओ और तनावों की चिन्ता न करते हुये राजस्थान की पुरा–सम्पदा खोज निकाली। सरस्वती तथा दृषद्वती की सूखी घाटी मे काली बंगन में हड़प्पा–पूर्व के प्रसिद्ध केन्द्र की खोज करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। १६१७ में वे वहां ५ अप्रैल से १० अप्रैल तक रहे और काली बंगन के

मांसाहारी प्रजा भी अपने सम्मुख इस प्रकार के कृत्यों को नहीं देख सकती। यह हमारे अनुभव-सिद्ध है-राजा स्वेच्छाचारी होने से प्रजा के आवाज को बिल्कुल नहीं सुनता, उल्टा अत्याचार करने लग जाता है। भैंसे के लिये ऐसा ही है कि अभी कोई विशेष द्रव्य देवे तो वध करने के लिये तैयार है। इसका सिद्धान्त ही यह है कि किसी भी प्रकार से द्रव्य एकत्रित करना और उन्मत्तता को धारण करना दूसरा कुछ नहीं। खैर प्रयत्न करना अपना कर्तव्य है और सिद्ध होना भावी पर निर्भर है-अस्वच्छता मे बीकानेर और जामनगर एक ही जैसे हैं। दिन में ही स्त्री-पुरुष गलियो मे जंगल जाते हैं गंदगी करते हैं कोई पूंछने वाला नहीं यह भी जमाने की खूबी ही है । खूब साहित्य की वृद्धि करिये। आचार्यजी महाराज और विद्याविजय का धर्मलाभ-क्या वास्तुशास्त्र की प्रति भेजु?

मु०जामनगर

लि०इंद्रविजय भाद्रव वदि १४

(२)

श्रीयुत् डा० एल पी० टैस्सीटोरी महोदय।

आज रोज यहां पर आये है बीकानेर में बारह दिनों तक स्थिरता भयी थी। बीकानेर के राजा से आचार्यजी महाराज की मुलाकात हुई। आचार्य जी महाराज ने डेढ घंटे तक बराबर उपदेश दिया। प्रभाव अच्छा पड़ा। इस प्रान्त में दुष्काल विशेष हैं अतएव स्थान-स्थान पर आचार्यजी महाराज दुष्काल संकट निवारण के लिये उपदेश देते हैं जिससे गरीबों और पशुओं को थोडे अंशों में भी बचाव हो सकने की संभावना है। सायले,रान्पुर और धूंधके होते खंभात जाने का विचार है। खंभात में ताड-पत्रों पर लिखे बहुत पुराण ग्रन्थों का संग्रह है जिसके देखने की इच्छा है। आपने लिखा था कि सिक्के भी कोई-कोई स्थान में मिलते हैं तो क्या प्राचीन सिक्के मिलते हैं या के अर्वाचीन सो लिखना अब तो आपको कुछ शान्ति होगी क्योकि अब तो आपके देश मे भी शान्ति है इसलिये क्या इसवर्ष इस देश मे आपके आने की संभावना हो सकती है। आचार्यजी महाराज और विद्याविजय का धर्मलाभ वांचना। नवीन समाचार लिखने पत्रोत्तर भावनगर के पते पर लिखना।

लि० इंद्रविजय का धर्मलाभ
माघ शुदि १३ मु० थान काठियावाड

(३)

श्रीयुत् डा० एल० पी० टैस्सीटोरी महोदय।

आपका १७ फरवरी का पत्र मिला। समाचार मालुम किये। आपका इस समय इटली देश में जाना उचित ही है क्योकि ग्रहस्थ लोगों का इस संसार में प्रथम यही कर्तव्य है कि माता और पिता को संतोषित करना चाहिये और शास्त्र भी यही प्रतिपादन करता है कि गृहस्थो को इस नियम माने "माता-पित्रोश्च पूजक" के सिद्धान्त को निरन्तर हृदय मे धारण करना चाहिये और इसी अनुकूल प्रवृत्ति भी करनी चाहिये। हम यहां से धूंधके, धोलेरा, खंभात, बडौदा, भरूंच और सुरत होते हुये मुंबई जाने का इरादा रखते हैं तो आप स्वदेश में जावे तब एक दिन पहले बीकानेर से निकलना जिससे आपको हम रास्ते मे ही मिल जावेगे क्योकि हमारा मार्ग भी आपके मार्ग के बीच में ही है सिक्के जो बाकी आपके पास मे है जब आप मिलेगे तब देखकर के बता देगें कि किस समय के हैं और उसी समय देश में प्राप्त जितने के सिक्के आपको चाहिये दिलवा देगे कि जो भविष्य मे आपके कार्य मे आ सके और कितनी सूचनायें भी आपको करना है कि जिससे आप देश में जा करके उन सूचनाओं को काम में ला सके। आचार्यजी महाराज ने आपको धर्मलाभ कहा। विद्याविजय का भी धर्मलाभ। पत्रोत्तर निम्न स्थान करना।

मु० धोलेरा काठियावाड

'वल्लभसंदेश' मासिक जयपुर
वर्ष २१ अंक ४, अप्रैल १९९३

OOO

डा. एल. पी तैस्सितोरी को पल्लू (बीकानेर) में प्राप्त " जैन सरस्वती " की अद्वितीय मूर्ति जो अब राजकीय संग्रहालय,बीकानेर मे है।

(सौजन्य—पुरातत्व निर्देशालय, राजस्थान, जयपुर)

प्रागैतिहासिक विशेषताओं से युक्त पत्थर की फालो; मिट्टी के वलयो तथा तश्तरियो, अस्थि-निर्मित उपकरणों तथा पात्रों के खण्डो के साथ-साथ तीन पाषाण-मुद्राएं भी भूमि मे से खोद निकालीं। सिन्धु सभ्यता के सारे संसार के समक्ष प्रकाश में आने से चार वर्ष पूर्व ही यह महान खोज कर ली गयी थी पर रायल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका के द्वारा विश्व को इसकी जानकारी देने की आज्ञा न मिलने के कारण वे इस खोज का श्रेय प्राप्त नहीं कर सके। यदि उन्हे इसकी आज्ञा मिल गयी होती तो यह भारतीय सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता के बजाय इसकी खोज के सर्वप्रथम केन्द्र के आधार पर सरस्वती घाटी की सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध हुई होती। इस प्रकार भारत में आर्यों के प्रवेश का बहु-चर्चित मिथ्या सिद्धान्त सदैव के लिए शान्त हो गया होता और भारत की दो महत्वपूर्ण नदियो सरस्वती तथा सिन्धु के एक दूसरी से इतनी दूर होने तथा दोनों स्थानों पर भौतिक अवशेषो की उपलब्धि से भारतीय संस्कृति के दो खण्ड होने का सिद्धान्त भी अस्तित्व मे न आता।

कालीबगन पर अपनी रिपोर्ट मे डा० तैस्सितोरी ने प्रचुर परिमाण मे चारो ओर बिखरे हुए प्रागैतिहासिक पात्र खण्डों की दो विशाल थेवरियों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार इनमें से एक थेवरी अत्यन्त विशाल थी । इसकी सामग्री का एक बडा भाग सन् १६०० मे जोधपुर-बीकानेर रेलमार्ग पर सूरतगढ से हनुमानगढ़ को मिलाने के समय उक्त स्थल से ले जाया गया था। इसका प्रयोग मिट्टी के रूप मे किया गया था और जो ईंटे मिली थीं उन्हे नृशसता पूर्वक तोड कर प्रयोग कर लिया गया था। अब इस केन्द्र का भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा गहन उत्खनन किया गया है। उक्त दोनो थेवरियों पर तथाकथित हड़प्पन लोगो का निवास था तथापि हड़प्पन अवशेषों के नीचे की अपेक्षाकृत छोटी थेवरी में हड़प्पा-पूर्व संस्कृति के नाम से विख्यात एक प्राचीनतर संस्कृति के अवशेष देखे गये हैं जो सामग्री की प्रकृति तथा विषय वस्तु में वैदिक-पूर्व हैं। कालीबंगन के हड़प्पा-पूर्व के लोग चर्ट के फाल (**Chert blade**), ताँबे तथा काँसे की कुल्हाड़ियाँ (**celts**), ताँबे की चूडियाँ, तथा ताँबे, कौड़ी, स्टेटाइट पत्थर, कार्नीलिया एव टेराकोटा मनके (***beads***) प्रयोग मे लाते थे। यातायात के लिये वे बैलगाड़ियाँ प्रयोग मे लाते थे। इस स्थान पर प्राप्त हल की जुताई के चिन्हो से लगभग तीन सहस्र वर्ष ईसा पूर्व के खेती तथा पशुपालन पर निर्भर कृषि-आधारित अर्थ-व्यवस्था के अद्वितीय उदाहरण के प्रमाण मिले हैं। इन निवासियों की पात्र-कला पर छ प्रकार की अलंकरण-विधियाँ प्रयुक्त हुई हैं जो एक स्तरीय तथा सुसंस्कृत समाज का संकेत देती हैं। काली तथा काली एवं श्वेत रगी हुई पात्राकृतियों में फूलदान, कटोरे, आधार सहित तश्तरियाँ तथा बलिपात्र भी हैं। घरो के आन्तरिक भागो में अग्नि-वेदियो तथा कुओं से दैनिक स्नान एवं हवन अर्थात् यज्ञ पर आधारित धर्म का पता चलता है जो सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के पवित्र किनारों पर सम्पन्न किये जाने वाले वैदिक कर्मकाण्ड की विशेषताएँ हैं।

उन्होंने जिन अन्य महत्वपूर्ण स्थानो की खोज की थी उनमे पल्लू, वाडोपल, रगमहल, रतनगढ, सूरतगढ तथा भटनेर आदि भी हैं। इस प्रकार उन्होने बीकानेर के लगभग आधे क्षेत्र की खोज-बीन की थी। पल्लू बीकानेर-भटिंडा रेलमार्ग पर एक छोटा-सा गाँव है जहाँ प्राचीन मंदिरों के अनेक भग्नावशेष हैं। यह गाँव प्राचीर से घिरा था। यहाँ पुरावशेषो में लाल तथा पीले बलुहे पत्थर के शिलाखंड हैं जिनमें से कुछ पर उत्तम शिल्पकारी हो रही है। यहाँ तीर्थंकरो की अनेक जैन प्रतिमाओ के अतिरिक्त जैन सरस्वती की दो अद्वितीय प्रतिमाएं भी मिली हैं जो राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली तथा गंगा सिंह जुबली संग्रहालय बीकानेर में हैं। इनका समय ईसा की बारहवीं शती है। जैन सरस्वती की ये प्रतिमाएँ डॉ० तैस्सितोरी ने १६१६ मे उत्खनित की थीं। ये पूर्णत अक्षत हैं । इनमें से एक लन्दन की रायल अकादमी में आयोजित भारतीय कला प्रदर्शनी में रखी गयी थी।

उनके द्वारा खोजा गया एक अन्य केन्द्र रंगमहल था जो सूरतगढ से दो मील उत्तर-पूर्व मे है। इसका टीला भी बहुत ऊँचा है जहाँ बडी-बडी ईंटे, पात्रों के टुकड़े, हाथी दाँत के मनके तथा वलय बिखरे हुए हैं। ३ अप्रैल १६१६ को जब डॉ० तैस्सितोरी ने इस स्थान का निरीक्षण किया तो उन्हें बताया गया कि वर्षो पूर्व साँचे में ढली मानवकृतियों सहित दो या तीन ईंटें यहाँ के एक अवशेष मे से निकाल कर बीकानेर ले जायी गयी थीं। वास्तव में ही, तीन टेराकोटा पेनल तथा साँचे में ढला एक तोडा (**bracket**) बाद में बीकानेर के किले में मिले थे। एक पर

उदीने (इटली) प्रान्त के राज्यपाल माननीय श्री पेवीलीनो के साथ श्री हजारीमल बाँठिया दिनाक ७ सितम्बर १९६४। बीच में खडे हैं इंडिया तैस्सितोरी सोसायटी के प्रेसीडेन्ट डा. फ्रोरटो फ्रेशची।

He Was Nursed By My Mother And Father

(Major W.H.James,Bikaner)

I have been asked to write about the late Dr. Tessitori. I do not know much about the learned gentleman whom I did not have the honour to meet, but he was close friend of my father anc when he returned from Italy my father,Mr.William Harvey James, came to know that he was lying ill at his house with epedemic Influenza and brought him to his house, where he was nursed by my mother and father, but unfortunately his case was serious and inspite of medical attendance and all care he passed away

He was buried in the Christian Burial-ground

'राजस्थान भारती' त्रैमासिक, बीकानेर
खड ५ अंक ३-४
नवम्बर,१६५७

❑❑❑

बीकानेर में इटालवी विद्वान की समाधि का उद्घाटन-

(हमारे सवाददाता द्वारा)
(बीकानेर, डाक से)

भारत मे इटालवी दूतावास के सचिव डा० तिबेरियो तिवेरी ने गत २२ नवम्बर को यहाँ गिरजाघर में प्रसिद्ध इटालवी विद्वान डा० लुई पियो तैसितोरी की समाधि का उद्घाटन किया। इस समारोह का आयोजन सादूल राजस्थानी रिर्सच इन्स्टीट्यूट की ओर से किया गया।

यह उल्लेखनीय है कि डा० तैस्सितोरी ने विदेशी होते हुये भी अपने को पूरी तरह से भारत की मिट्टी में खपा दिया था। राजस्थानी सस्कृति और साहित्य की खोज और प्रकाशन मे उनकी सेवाए अमूल्य थीं।

इस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री व परिचम बगाल के विधान परिषद के अध्यक्ष डा० सुनीति कुमार चटर्जी, श्रीमती चटर्जी, श्री हजारीमल बांठिया एव सैकडो नागरिकों ने भी डा० तैस्सितोरी की समाधि पर फूल चढाये। डा० चटर्जी ने एक अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण एवं सारगर्भित भाषण देते हुये कामना की कि मानव सभ्यता की वैज्ञानिक खोज के क्षेत्र में यह स्मारक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का प्रतीक बने। उन्होंने कहा कि वह इटली के थे। परन्तु उन्होने अपनी भावना को सामूहिक बनाकर मानव जीवन के साथ खास कर भारत के राजस्थानी भद्रजनो के साथ अपना सम्पर्क कायम करके राजस्थान की मिट्टी मे अपना जीवन उत्सर्ग किया है। हमें ऐसे महा-पुरुषो का आदर्श सीखना चाहिये। हम उनके आभारी हैं। उनकी स्मृति पर श्रद्धा रखनी चाहिये। वे हमारे इतिहास के पन्नों को जीवित करने में सर्वप्रथम माने जायेगें। राजस्थानी भाषा यानी बंगला की मौसेरी भाषा है। उनके अधूरे काम को पूरा करने के लिये हमे तन, मन, धन लगा देना चाहिये।

सहायक हो सकते हैं जो इस उत्कृष्ट राजस्थान प्रेमी का जीवनन चरित्र पपूरा करने मे सहायक हो।

ऐसा लगता है कि तैसीतोरी को जितना प्रेम राजस्थानी भाषा से था उतना ही जैन साहित्य से भी था। इस बात का परोक्ष रूप में स्वयं आपने एक पत्र में उल्लेख किया है। जैन विद्वानों ने राजस्थानी साहित्य और राजस्थानी संस्कृति का सबसे अधिक संरक्षण और संवर्धन किया है। उपरोक्त जैनाचार्य से तैसीतोरी का बराबर सम्पर्क बना रहा, कई बार वे उनका दर्शन करने गये, इसके लिये कई बार आपको पैदल यात्रा भी करनी पडी। वे बराबर उनसे पत्र व्यवहार करते रहे और उनके कहने से मांस खाना भी बन्द कर दिया। आचार्य जी को तैसीतोरी ने लिखा था, 'मैं वास्तव में सोचता हूँ कि आपके जैसा शान्त एवं उदार पुरुष इस पृथ्वी पर कोई नहीं मिलेगा। मैं चाहता हूँ कि मैं अपने आपको आपके अर्पण कर दूं।' आचार्यजी भी तैसीतोरी से बहुत स्नेह रखते थे। प्रारम्भ मे आपने दो पुस्तकों की मूल्यवान पांडुलिपियां भी तेसीतोरी के पास इटली भेजी थीं। कभी–कभी पत्र व्यवहार हिन्दी और गुजराती में भी हुआ करता था। तैसीतोरी के संबंध में मुनिविद्याविजयजी लिखते हैं–'केवल ३१ वर्ष की आयु मे अपने देश में रह कर अभ्यस्त की हुई भाषायें, इसका साहित्यप्रेम तथा प्रवृत्ति देखते हुये यह कहना न होगा कि भारतवर्षीय भाषाओं के अभ्यासी पाश्चात्य विद्वानो में उसका नम्बर सर्व प्रथम है। . . . डा० तैसीतोरी जैसा विद्वान है वैसा ही मिलनसार तथा शान्त प्रकृति का भी है।'

तैसीतोरी को अपना काम करते वक्त बहुत कठिनाइयो का सामना करना पड़ा। कई बार पैदल चल कर निर्धारित जगह पर पहुंचकर भी सफलता के दर्शन नहीं होते थे। १९१४ के आरम्भ में की गयी अपनी नागौर यात्रा का वर्णन करते हुये तैसीतोरी ने लिखा है, गये हफ्ते में नागौर गया था। जाने का सबब यह था कि नागौर मे दिगम्बरों का एक बड़ा भंडार है, जिस मे आसपास १० हजार पुस्तकें हैं। ऐसा सुनने में आया था और यह भी सुना था कि वह भडार सदा ही बन्द रहता है और उस का अधिकारी भट्टारकजी हैं सो भंडार खोलने की इंकारी मे रहते हैं। इस वास्ते जोधपुर दरबार के हुक्म की चिट्ठी लेकर उधर गया, परन्तु राज्य के हुक्म होने पर भी उस भट्टारक ने कुछ नहीं दिखलाया। अफसोस की बात है कि इतनी पुस्तकें जो बेशक प्राचीन और अमूल्य है कीडों का भोजन होने वाली हैं।' परन्तु सच्चे श्रद्धावान पुरुष इन कठिनाइयों से दबते नहीं। इसी वर्ष लिखे गये एक अन्य पत्र में आप ने लिखा था, 'जितना बन सकेगा मैं भारतीयों के हृदय में मिलजुल जाऊँगा। मैं भारत में इसी लिये आया हूँ क्योकि मुझे भारत के लोगों व उनकी भाषा और साहित्य से प्रेम है। और इसी लिये जितना भी ज्यादा इस बारे में जान सकूँगा उतनी ही मुझे अधिक खुशी होगी। मैं कोई अंग्रेज नहीं हूँ जो उन सब चीजों को हेठी निगाहो से देखते हैं जो इग्लैण्ड की या कम से कम यूरोप की नहीं हैं। मेरे मन में भारतवासियों के प्रति उच्चतम आदर और सराहना के भाव हैं।'

जब भारत हर तरह से पिछड़ा और गया गुजरा माना जाता था उन दिनो लिखे यह शब्द आज भी मन को प्रसन्न करते हैं और इन के लिखने वाले के प्रति सहज ही श्रद्धा होती है।

'राजस्थान के इतिहासज्ञ'
राजेन्द्र शंकर भट्ट– जून १९५२

(सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान उदयपुर)

डा० चटर्जी का अभिनन्दन—

अगले दिन सादूल संस्कृत विद्यापीठ व राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की ओर से डा० सुनीति कुमार चटर्जी का अभिनन्दन किया गया।

अभिनन्दन पत्र के उत्तर में सुनीति बाबू ने कहा कि सीखने से भूलना कठिन है। राजस्थान के राजपूतो की वीर सतियों की शूरवीरता तथा शिल्पकला हमारे लिये एक तीर्थस्थान है। संस्कृत विद्यापीठ का भव्य भवन देखकर उन्होंनें बडी प्रसन्नता प्रकट की। भारत सरकार द्वारा नियुक्त संस्कृत आयोग का जिक करते हुये सुनीति बाबू ने कहा कि आयोग द्वारा एक प्रश्नावली तैयार की गई है वह आप लोगों के यहाँ अवश्य भेजी जायेगी। आप उसके उत्तर भारत सरकार को अवश्य भेज दें। मैं संस्कृत भाषा का प्रेमी हूँ, उसे मानता भी हूँ, जिसे मैं छोड नहीं सकता। यदि हम छोड़ देगें तो पिछड जायेगे। सस्कृत भाषा की भारत में आवश्यकता है जिसके लिये मैं सचेत हूँ। जर्मन पडितों ने भी सस्कृत को अपनाया और उसका खूब प्रचार किया। इटली के पंडितों ने १८४४ मे बाल्मिकि रामायण को इटली की भाषा में तैयार किया।

डा० चटर्जी ने यहां म्यूजियम में हाल में एक प्रदर्शनी का निरीक्षण भी किया और स्थानीय जैन कालेज छात्र संघ का उदघाटन किया।

डा० तिबेरी डूंगर कालेज में-

स्थानीय डूंगर कालेज में डा० तिबेरियो तिबेरी का छात्रों ने स्वागत किया। डा० तिबेरियो ने इटली की शिक्षा पद्धति पर प्रकाश डाला, और वहां के शिक्षित समाज की बेकारी का हाल और उसकी कमी का रास्ता भी बतलाया।

भटनागर भाषणमाला–

श्री गुणप्रकाश सज्जनालय मे २३ नवम्बर को श्री सम्पतराय भटनागर भाषणमाला का उदघाटन डा० सुनीति कुमार चटर्जी के कर कमलो से सम्पन्न हुआ।

दैनिक 'हिन्दुस्तान' दिल्ली (२८ नवम्बर १९५६) में प्रकाशित

बाँठिया फाउन्डेशन

ले० श्रीमती गुणसुन्दरी राजकुमार बाँठिया, M.A. कानपुर

जैन धर्म मानने वाली जातियों मे ओसवाल जाति का प्रमुख स्थान है। ओसवाल जाति की उत्पत्ति भगवान महावीर के सत्तर वर्ष बाद राजस्थान के ओसिया नगर मे हुई। फिर अनेक जैनाचार्य राजाओ और प्रमुख लोगों को जैन धर्म में दीक्षित कर ओसवाल जाति मे शामिल करते गये, प्रमुख गावों और प्रमुख व्यक्तियों के नामो और व्यवसायों के नाम पर ओसवाल जाति मे हजारो गोत्र हैं और आज तक पूरी संख्या ज्ञात नहीं है। इसी जाति में बाँठिया गोत्र का अपना विशिष्ट स्थान है। इस गोत्र में अनेक दानवीर, धर्मवीर, शूरवीर, कर्मवीर पुरुष हुये हैं। एक कवि कहता है–

बाँठिया कवाड थे बडे ही वीर
शाह–हरखावत साहसी औ, सधीर।।

बाँठिया गोत्र की उत्पत्ति के विषय मे विभिन्न विद्वानो के विभिन्न–विभिन्न मत हैं और बाँठियों के भाट भी अपना विभिन्न विचार रखते हैं। "भगवान पार्श्वनाथ परम्परा का इतिहास" के लेखक इतिहास प्रेमी श्री ज्ञानसुन्दर जी पृष्ठ १४६८ में बाँठिया गोत्र के विषय में इस प्रकार लिखते हैं–

"बाँठिया जाति को विक्रम सवत् ६१२ मे भावदेवसूरि ने आबू के आस–पास परमा नाम के गांव के राव माधुदेवादि को प्रतिबोध देकर जैन बनाया। उन्होंने श्री शत्रुंजय का विराट संघ निकाला, जिसमें इतने मनुष्य थे कि जंगल में बाँठ–बाँठ पर आदमी दिखने लगे और सघपति ने उदारता से बाँठ–बाँठ पर रहे प्रत्येक नर–नारी को पहरावणी दी जिससे जनता कहने लगी कि संघपति का क्या कहना है, आपने बाँठ–बाँठ पर पहरावणी दी है। बस उसी दिन से आपकी संतान बाँठिया नाम से प्रसिद्ध हुई। इस जाति मे बहुत से ऐसे नामांकित पुरुष हुये कि विक्रम सम्वत् १३४० के आस–पास में बाँठिया रत्ना शाह के संघ मे रुपयो की कावडे चल रही थीं इससे वे कवाड के नाम से प्रसिद्ध हुए।

विक्रम सम्वत् १६३१ मे बादशाह को बौहरे की जरूरत पडी, जोधपुर दरबार को कहा तो आपने मेडता के बाँठियो को बतलाये। पर उनके पास इतनी रकम न होने से कुछ चिन्ता होने लगी। एक दिन शाहजी व्याख्यान में गये थे पर वे उदास थे, व्याख्यान के बाद आचार्य ने शाहजी से उदासी का कारण पूछा तो शाहजी ने कहा जोधपुर दरबार के कहने से हम बादशाह के बोहरे तो बन गये हैं पर हमारे पास इतनी रकम नहीं है, न जाने बादशाह किस समय कितनी रकम मांग बैठे। इस पर आचार्य श्री ने कहा आपके घर मे जितने प्रकार के सिक्के हो उतनी थैली बनाकर उसमें विभिन्न सिक्के डालकर रख देना। शाहजी ने ऐसा ही किया, जब समय पाकर आचार्य श्री शाहजी के यहां गये तो उन सिक्के वाली थैलियों पर वासक्षेप डालकर कहा इन थैलियो में से किसी को उलटना नहीं, जितना दृव्य चाहो निकालते रहना। बस फिर तो था ही क्या शाहजी ने रात और दिन मे एक एक थैली से इतने रुपये निकाले कि शाहजी के घर में ऐसा कोई स्थान ही नहीं कि जहां रुपये रखे जाये अत: शाहजी के मकान के पीछे एक पशु बाधने का नौहरा था उसके अन्दर चौरासी खाडे(गद्दे) खुदवा कर उनके अन्दर से चौरासी सिक्कों के रुपये भर कर उन पर रेती डाल दी और पक्का जापता भी कर दिया।

बादशाह ने एक दिन सोचा कि अभी रकम की आवश्यकता हो जाये तो बौहरे की परीक्षा कर ली जाये कि कभी काम पड जाये तो कितनी रकम दे सके, अत बादशाह चलकर जोधपुर आया और जोधपुर नरेश को साथ लेकर मेड़ता आये। शाहजी को बुलाकर कहा कि आप हमको कितनी रकम दे सकेंगे? शाहजी ने कहा कि आप किस सिक्के में कितना रुपया चाहते हैं। बादशाह ने कहा कि आपके पास कितने सिक्के हैं? शाहजी ने कहा महाजन हैं, मुल्क में जितने सिक्के चलते हैं वे हमारे पास मिलते हैं। बादशाह ने सोचा कि महाजन लोग वाक्पटुता से ही शेखी बघारते हैं। बादशाह ने कहा कि आप एक एक सिक्के की कितनी रकम दे [illegible] हो? शाहजी ने कहा कि मेडता से दिल्ली तक एक–एक रुपयों के छकड़े से छकड़ा [illegible] [illegible]कम की जरूरत है? बादशाह को शाहजी के कहने पर विश्वास

बाँठिया फाउन्डेशन

ले० श्रीमती गुणसुन्दरी राजकुमार बाँठिया, M.A. कानपुर

जैन धर्म मानने वाली जातियों में ओसवाल जाति का प्रमुख स्थान है। ओसवाल जाति की उत्पत्ति भगवान महावीर के सत्तर वर्ष बाद राजस्थान के ओसिया नगर मे हुई। फिर अनेक जैनाचार्य राजाओ और प्रमुख लोगो को जैन धर्म में दीक्षित कर ओसवाल जाति में शामिल करते गये, प्रमुख गांवो और प्रमुख व्यक्तियो के नामो और व्यवसायो के नाम पर ओसवाल जाति में हजारों गोत्र हैं और आज तक पूरी संख्या ज्ञात नहीं है। इसी जाति मे बाँठिया गोत्र का अपना विशिष्ट स्थान है। इस गोत्र में अनेक दानवीर, धर्मवीर, शूरवीर, कर्मवीर पुरुष हुये हैं। एक कवि कहता है--

बाँठिया कवाड थे बडे ही वीर
शाह--हरखावत साहसी औ, सधीर।।

बाँठिया गोत्र की उत्पत्ति के विषय मे विभिन्न विद्वानो के विभिन्न--विभिन्न मत हैं और बाँठियो के भाट भी अपना विभिन्न विचार रखते हैं। "भगवान पार्श्वनाथ परम्परा का इतिहास" के लेखक इतिहास प्रेमी श्री ज्ञानसुन्दर जी पृष्ठ १४६८ में बाँठिया गोत्र के विषय मे इस प्रकार लिखते हैं--

"बाँठिया जाति को विक्रम सवत् ६१२ मे भावदेवसूरि ने आबू के आस--पास परमा नाम के गांव के राव माधुदेवादि को प्रतिबोध देकर जैन बनाया। उन्होने श्री शत्रुजय का विराट संघ निकाला, जिसमे इतने मनुष्य थे कि जंगल में बाँठ--बाँठ पर आदमी दिखने लगे और सघपति ने उदारता से बाँठ--बाँठ पर रहे प्रत्येक नर--नारी को पहरावणी दी जिससे जनता कहने लगी कि संघपति का क्या कहना है, आपने बाँठ--बाँठ पर पहरावणी दी है। बस उसी दिन से आपकी संतान बाँठिया नाम से प्रसिद्ध हुई। इस जाति मे बहुत से ऐसे नामांकित पुरुष हुये कि विक्रम संम्वत् १३४० के आस--पास मे बाँठिया रत्ना शाह के संघ मे रुपयों की कावडे चल रही थीं इससे वे कवाड़ के नाम से प्रसिद्ध हुए।

विक्रम सम्वत् १६३१ मे बादशाह को बौहरे की जरूरत पडी, जोधपुर दरबार को कहा तो आपने मेडता के बाँठियों को बतलाये। पर उनके पास इतनी रकम न होने से कुछ चिन्ता होने लगी। एक दिन शाहजी व्याख्यान में गये थे पर वे उदास थे, व्याख्यान के बाद आचार्य ने शाहजी से उदासी का कारण पूछा तो शाहजी ने कहा जोधपुर दरबार के कहने से हम बादशाह के बोहरे तो बन गये हैं पर हमारे पास इतनी रकम नहीं है, न जाने बादशाह किस समय कितनी रकम मांग बैठे। इस पर आचार्य श्री ने कहा आपके घर मे जितने प्रकार के सिक्के हों, उतनी थैली बनाकर उसमे विभिन्न सिक्के डालकर रख देना। शाहजी ने ऐसा ही किया, जब समय पाकर आचार्य श्री शाहजी के यहां गये तो उन सिक्के वाली थैलियों पर वासक्षेप डालकर कहा इन थैलियों मे से किसी को उलटना नहीं, जितना दृव्य चाहो निकालते रहना। बस फिर तो था ही क्या। शाहजी ने रात और दिन में एक एक थैली से इतने रुपये निकाले कि शाहजी के घर में ऐसा कोई स्थान ही नहीं कि जहां रुपये रखे जाये अत: शाहजी के मकान के पीछे एक पशु बांधने का नौहरा था उसके अन्दर चौरासी खाडे(गद्दे) खुदवा कर उनके अन्दर से चौरासी सिक्कों के रुपये भर कर उन पर रेती डाल दी और पक्का जापता भी कर दिया।

बादशाह ने एक दिन सोचा कि अभी रकम की आवश्यकता हो जाये तो बौहरे की परीक्षा कर ली जाये कि कभी काम पड जाये तो कितनी रकम दे सके, अत बादशाह चलकर जोधपुर आया और जोधपुर नरेश को साथ लेकर मेड़ता आये। शाहजी को बुलाकर कहा कि आप हमको कितनी रकम दे सकेगे? शाहजी ने कहा कि आप किस सिक्के में कितना रुपया चाहते हैं। बादशाह ने कहा कि आपके पास कितने सिक्के हैं? शाहजी ने कहा महाजन हैं, मुल्क में जितने सिक्के चलते हैं वे हमारे पास मिलते हैं। बादशाह ने सोचा कि महाजन लोग वाक्पटुता से ही शेखी बघारते हैं। बादशाह ने कहा कि आप एक एक सिक्के की कितनी रकम दे सकते हो? शाहजी ने कहा कि मेडता से दिल्ली तक एक--एक रुपयों के छकड़े से छकडा जोड दूँगा। बताइये आपको कितनी रकम की जरूरत है? बादशाह को शाहजी के कहने पर विश्वास

लोग वरमेचा, हरखावत, शाह, और मल्लावत कहलाने लगे।

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि बाँठिया गोत्र के आदि संस्थापक भावडारगच्छ के भावचन्द्रसूरि थे, पीछे खरतरगच्छ के प्रभावी आचार्यों के सम्पर्क मे आने से बाँठिया खरतरगच्छ के बन गये।

शिलालेख सग्रहो की जो पुस्तकें अब तक प्रकाश मे आयी हैं उसमे बाँठिया गोत्र के लोगो द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियो के शिलालेख इस प्रकार हैं।

बीकानेर के श्री अगरचन्द भंवरलालनाहटा द्वारा सम्पादित "बीकानेर जैन लेख सग्रह" मे बॉठिया गोत्र द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों के निम्न शिलालेख हैं–

न० ७७७ श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर, बीकानेर सम्वत् १४६४ वर्षे माघ सुदी ५ गु० श्री भावडार गच्छे पू० ज्ञा० बाँठिया गोत्र सा० जेसा भा० हिती पू० धन्ना भा० धुरलदे सहितेन पितृ निमित्तम् श्री आदिनाथ बिम्बम् कारितं प्रतिष्ठितम् श्री वीरसूरिभि । शुभम्

न० ८१२ सं० १४६६ व फागुन वदी गुरौ श्री भावडार गच्छे उप० बाठी चाँपा भा० राहण दे पु० कोला भ० तुडरदे पु० ऊजल राहे० मातृ पितृ श्रे० श्री नमीनाथ बिम्बम् प० श्री वीरसूरिभि।

न० १६१४ श्री सखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, आसाणियों की गुवाड, बीकानेर–

स० १८५३ वर्षे वैसाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौं ६ सिद्धचक्र यन्त्र प्रतिष्ठितम् वा० लालचन्द्र गणिना वृहत्खरतरगच्छे कारित श्री बीकानेर वास्तव्य बाँठिया गोत्रे नथमल मोतीचन्द्रेण श्रेयार्थ।।

बीकानेर मे रामनिवास जो रामचन्द्रजी बाँठिया का वि० सं० १६४३ का बनवाया हुआ है और पार्श्वनाथ प्रतिमा सं० १६०५ वैसाख शुक्ला १५ श्री जिनसौभाग्यसूरि द्वारा प्रतिष्ठित ह।

बीकानेर म बीदासर की बारी के बाहर "केसरीचन्द बुलाकीचन्द (बाँठिया) की तरफ से धर्मानन्द जी के उपाश्रय को भेट" यह शिलालेख एक मकान पर लगा हुआ है।

श्री पूरणचन्द जी नाहर द्वारा सम्पादित "जैन लेख सग्रह" भाग १ व ३ में बाँठिया गोत्र के तीन शिलालेख हैं–

न० ११८ श्री महावीर स्वामी मन्दिर, मानिकतल्ला कलकत्ता सं० १५३२ वर्षे वैसाखवदी ५ रवौ श्री भावडार गच्छे उपकेश ज्ञातीय बाँठिया गोत्रे व्य० भीमण भा० हलू पु० सादा भा० सुहगदे पु० नेमीचन्द .. . मातृ नेमा पुन्यार्थ समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधानाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य सताने भ० श्री भावदेव सुरिभिः।। सीरोही वास्तव्य शुभम् बहु।

न० १३५३ श्री भाडासर जी मन्दिर बीकानेर सं० १५३७ वर्षे मार्ग सुदी ५ उकेश ज्ञातीय बाहटिया गोत्रे सा० समुवट पुत्रेण सा० भालू युतेन श्री पद्मप्रभ बिम्ब कारितं तपा भ० श्री हिमसमुदसूरिपट्टे श्री हेमरत्नसूरि।

न० २४०४ श्री ऋषभदेव मन्दिर, जैसलमेर ।।ॐ।। सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदी ५ दिने श्री मदुकेश वंशे। श्री बाँठिया गोत्रे गांगा भार्या श्राविका सोहग पुत्र धाडीवाहा सा० रडिया भार्या श्राविका देवल दे पुण्यार्थ पुत्र सा० कूरा प्रमुख सार परिवार सश्रीकेण सप्तनिशत जिनवरे प्रपट्टिका कारय चक्रे! प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे। श्री वर्द्धमान सताने। श्री जिनदत्तसूरि श्री जिनचन्दसूरि श्री पतिसूरि श्री जिनेश्वरसूरि श्री जिनप्रबोधसूरि श्री जिनचन्दसूरि श्री जिनकुशल सूरि श्री जिनपद्मसूरि श्री जिनलब्धिसूरि श्री जिनचन्दसूरि श्री जिनोदयसूरि श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जेसमेरु महादुर्गे श्री देवकर्ण राउल विजय राज्ये श्री गणधर चौपड़ा प्रसादे स्वपुत्रि शुभं भूयात्।

आचार्य श्री विजयधर्मसूरि द्वारा सम्पादित प्राचीन जैन लेख संग्रह पुस्तक में भी एक लेख इस प्रकार है–

न० ६६४ रापज देरासर धातु प्रतिमा १५२२ वर्षे माधवदी ५ गुभावसरे श्री उसवशे बाँठिया गोत्रे सा० पूना सुत साह जाइता भा० श्रा० सुहासिणी पुत्ररत्नेन बाँठिया म्मा० पहिराजेन भा० प्रेमलदे पु० सा० धर्मसी सहितेन स्वपुण्यार्थ श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचन्दसूरि श्री जिनसागरसूरि पट्टे श्री जिनसुन्दरसूरि श्री

नहीं हुआ, बादशाह ने शाहजी से कहा चलिये आपके रुपयो का खजाना बतलाइये। शाहजी मकान से उठकर नौहरे में आये और अपने अनुचरो को बुलाकर तैयार रखा और बाद मे बादशाह और दरबार को बुलाया। उस नौहरे में घासफूस था, बादशाह ने कहा कि हम आपकी रकम का खजाना देखना चाहते हैं। शाहजी ने नौकरों को आज्ञा दी और वे कुसी फावडों से रेती दूर कर एक-एक सिक्के का नमूना बतलाने लगे कि बादशाह एवं दरबार देखकर आश्चर्यान्वित हो गये, सच्चे शाह तो शाह ही हैं, इन महाजनो की बराबरी ससार मे क्या राजा, क्या बादशाह कोई नहीं कर सकते। उस दिन से इन बाँठियों की जाति "शाह" हो गयी, इनके भाई हरखाजी थे उनकी सतान हरखावत के नाम से प्रसिद्ध हुई।

सुप्रसिद्ध विद्वान एवं आयुर्वेद मार्तण्ड धन्वन्तरी श्री रामलाल जी यति (श्री राम ऋद्धिसार) ने अपनी पुस्तक महाजन वंश मुक्तावली के पृष्ठ २८ मे बाँठिया गोत्र की उत्पति के विषय में इस प्रकार लिखा है

"विक्रम सम्वत् ११६७ में प्रमार राजपूत लालसिंह जी रणतंभवरगढ़ के राजा को श्री जिनवल्लभसूरी ने इस प्रकार उपदेश दिया। लालसिंह जी के पुत्र ब्रह्मदेव को जलन्धर का महाभयंकर रोग उत्पन्न हुआ। उस वक्त लालसिह जी ने गुरु से विनती की हे गुरुदेव ऐसी चिकित्सा करो जिससे मेरा पुत्र आरोग्य हो जाये। श्री जिनवल्लभसूरि ने कहा, जो तुम, जैन धर्म धारण करो और मेरे श्रावक बनो तो, पुत्र अच्छा हो सकता है, तब लालसिंह जी ने कबूल किया, तब गुरु ने उसे चामुण्डा देवी से आराम करवाया।

रणतंभवरगढ के राजा लालसिंह जी ने सात पुत्रो सहित जैन धर्म धारण किया। उसका बडा पुत्र बठयोद्धार था उसकी सन्तान बठ कहलाये। ब्रह्मदेव के वरमेचा कहलाये। लालसिंह जी के छोटे पुत्र के लालणी, शाह की खिताब उदयसिह पुत्र को भरुअच्छ के नवाब ने इनायत की, वह शाह कहलाये। मल्ले पुत्र की सन्तान मल्लावत कहलायी। हरखचन्दजी की सन्तान हरखावत कहलाये।

"बाँठिये चिम्मनसिह विक्रम सम्वत् १५०० में हुमायूँ बादशाह की फौज मे लेन-देन करने लगे, गुजरात के हमले मे सोने के बर्तन फौज के लोगो ने पीतल के भरोसे बेचा, इससे चिमनसिंह बाँठिये के पास बे-गिनती धन हो गया, इससे बहुत जगह व्यापार हो गया। चिम्मनसिह ने करोडों रुपया लगाकर जिन मंदिरों का उद्धार कराया, शत्रुजय तीर्थ की यात्रा जाते गाव-गाव प्रति आदमी प्रति, एक-एक अकबरी मोहर साधर्मियो को बांटी, पहले बंठ कहलाते थे मोहर बाटने से बाँठिया कहलाये। इनका परिवार ज्यादा बीकानेर इलाके में बसता है।

"मेडता नगर में बादशाह ने खाजे की दरगाह जाते समय द्रव्य की आवश्यकता होने से हरखावतो को बुलाकर बावन सिक्के के छ: लाख रुपया मागे, चिन्ताग्रस्त बाँठिया जी आनन्दघन जी मुनि के पास गये, मुनि ने योग सिद्धि से बावन सिक्के पूर्ण किये, बादशाह ने हरखावत को शाह पद दिया।

विद्वान त्रिपुटी मुनि महोदय "जैन परम्परा नो इतिहास" नामक गुजराती पुस्तक मे बाँठिया गोत्र की उत्पति के विषय मे इस प्रकार लिखते हैं-

" भावाचार्य गच्छ ना आद्याचार्य भावदेवसूरि ए सम्वत् ६१२ मां परमा गामना माधुदेव वगैरे ने जैन बनावी ओसवाल गोत्र मा दाखिल करया, अने-तेनु "बाँठिया गोत्र" स्थाप्यू। सम्वत् १३४० मां रत्नाशाह बाँठिया थी 'कवाड' शाखा निकली। सम्वत् १६३१ मां मेडता ना शाहजी बाँठिया थी हरखावत शाखा निकली। आ बने भाइयों परम योगी श्री आनन्दघन जी महाराज ना परम उपासक हता। ते तपागच्छ ना हता। मेडता ना हरखावत सेठ धनरूप जी अजमेर मा रहे थे ते तपागच्छ ना श्रावक छे।"

श्री सुखसम्पतराय द्वारा लिखित एव सम्पादित "ओसवाल जाति का इतिहास" में तथा जैन सम्प्रदाय शिक्षा नामक पुस्तक मे यति श्री पाल चन्द लिखते हैं कि-

"विक्रम सम्वत् ११६७ मे पंवार राजपूत लालसिंह को खरतरगच्छ पति जैनाचार्य श्री जिनवल्लभसूरि जी महाराज ने प्रतिबोध देकर उनका महाजन वंश और लालणी गोत्र स्थापित किया। लालसिंह के सात पुत्र थे जिनमे से बड़ा पुत्र बहुत बंठ (जोरावर) था, उसी से बाँठिया गोत्र कहलाया। इसी प्रकार दूसरे चार पुत्रों के नाम से उनके भी परिवार वाले

डॉ टेसीटोरी की समाधि का लेख

डॉ. एल.पी टेसीटोरी री समाधि रो निरमाण श्री सादूल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट री प्रेरणा सुं फूलचन्द जी बाँठिया री स्मृति मे वारां पुत्र हजारीमल बाँठिया ने करायो २२/११/५६

DR. L P. TESSITORI
B 18-12-1887 LAID TO REST 22-11-1919

चुरु (राजस्थान) का बाँठिया परिवार

बाँठिया गोत्र के परिवार के घरो की अधिकतम संख्या – बीकानेर में ही है। मध्य प्रदेश में व महाराष्ट्र में जहाँ बाँठिया परिवार हैं वे सब बीकानेर से ही प्रस्थान कर गये हैं। बीकानेर में बाँठियों का चौक प्रसिद्ध है – इस वक्त लगभग ८० घरो की बस्ती है। जो बांठिया परिवार बीकानेर से प्रस्थान कर गये, उनके मकानो को महेश्वरी–परिवारों ने खरीदा किन्तु अब पिछले बीस वर्षो से महेश्वरी परिवार वे ही घर बेच रहे और बांठिया–परिवार के लोग खरीद रहे हैं। आज से १०० वर्ष पहले बीकानेर मे सेठ गंभीर मल उत्तमचंद बांठिया का बडा घराना था जिनके अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठान उत्तर प्रदेश आगरा व मध्य प्रदेश में रामपुर मे थे। वे बडे जमींदार और धनाढ्य थे। उनके सन्तान न होने से उन्होने सारी सम्पत्ति अपनी पुत्री राजबाई को दे दिया। आगरा के सेठिया एव नाहटा परिवार की सारी सम्पति इसी परिवार की थी। श्रीमती राजबाई ने अपने माता पिता की स्मृति मे जयपुर में एक जैन मन्दिर बनाया और शिलालेख लगाये। (शिलालेख सं० ४८८, ६४०, तथा ७०६)। यह मन्दिर पहले तक 'बांठिया वालो का मन्दिर' नाम से प्रसिद्ध था – किन्तु पीछे सेठ चांदमल जी वीरचंद जी नाहटा ने जीर्णोद्धार कराया तब से आगरा वालो के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

बीकानेर के बाद बांठिया परिवार की बड़ी बस्ती चुरू में है। इस परिवार के आदि पुरुष जैपाल जी वि. सं १७०० में चुरु जाकर बस गये क्योकि उनकी शादी चुरू में सेठ गरबदासजी पारख की पुत्री जेवला से हुई। जैपाल जी के पाच लड़के थे। इनके नाम इस प्रकार हैं – (१) राजरूप जी (२) मोतीचंदजी (३) फतेहचदजी (४) रतनचंद जी (५) तेजपाल जी। इन्हीं पांचों भाईयो का परिवार ही चुरु मे बसा है – जिनके करीब पचास घर हैं। इन भाईयों ने शमसान भूमि मे एक तिदरी बनायी और पायचंदगच्छ का नया उपाश्रय बनाया। पहले ये सब मंदिर मार्गी थे। अब प्राय तेरा पंथी हो गये। चुरू के बांठिया परिवार प्राय सभी सम्पन्न एवं सुखी हैं। वर्तमान में सेवाभावी श्री सोहन कुमार जी बाँठिया प्रथम पंक्ति के समाजसेवी चुरु नगर में हैं।

पिछले दिनों श्री मदन लाल जी राव (भाट) लवारी से आये थे। उनकी वहियों मे बांठियों के बारे मे इस प्रकार लिखा है –

"श्री जगदेव जी पुंवार का बेटा महादेव जी पोता माधोदेवजी महाजनहोया। सं. १०११ में गोत्र बरमेचा कुवाया। सं १४१२ सु बांठिया कुवाया। संवत १२१४ मे मंडोर (जोधपुर) से कोडमदेसर आया – पुनपालजी और मेपालजी। संवत् १३८१ कोडमदेसर से मेपाल जी का माया सिह जी नागौर माहेरा भरणने गया। एक लाख बतीस हजार का सामान कपडा खरीदा। बिरखा से भीज गया जब वनस्पति–बांठो ने ओढाया जदसुं बाँठिया कहाया।

जिनहर्षसूरिभिः

महोपाध्याय श्री विनयसागरजी द्वारा सम्पादित प्राचीन शिला लेख संग्रह भाग प्रथम मे भी लेख इस प्रकार है–

नं १९७६ श्री किशनगढ पार्श्व चिन्तामणी पार्श्वनाथ मन्दिर, सं० १६८६ वैशाख सु० ८ पाली वास्तव्य उके० बाँठिया गोत्रे सा० सारंग सोहीलाल दे पु०सा० जयमल आत्मश्रेयसे कुन्थूनाथ बिंबं का० प्र० तपा० म० श्री विजयदेवसूरिभि

आचार्य बुद्धिसागरसूरिजी द्वारा सम्पादित जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह भाग प्रथम में भी एक लेख इस प्रक है–

नं० ११४५ सीमन्धर जिन नादेरासर सं० १५३६ वर्षे माघ वदी ६ भूमे श्री भावडार गच्छे उपकेश ज्ञा० बाठि गोत्रे सा० धरकण भा० माजू पु० पशामल भा० प्रीमल दे पु० नारद पदमा स्व० पुण्यार्थ श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री भव सूरिभि शनावडवा०।।

इतिहास पुरातत्वाचार्य मुनि कान्तिसागरजी द्वारा सम्पादित जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह प्रथम भाग में एक लेख इस प्रकार है –

नं० १३० नया जैन मन्दिर, नागपुर सं० १५११ वर्षे आषाढ वदी ६ श्री उकेश वंशे (बाँठिया गोत्र) शाह शाखा सा० सोभूस श्रावकेन भार्या उसली पुत्र हरीपाल करपाल युतेन श्री शान्तीनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्री जिनराजसूरि पट्टे जिनभद्रसूरि गुरुभि । श्री खरतर गच्छे।

महोपाध्याय श्री विनयसागर जी द्वारा सम्पादित प्राचीन शिलालेख संग्रह भाग–२ (अप्रकाशित) में भी बाँठि गोत्र के निम्न लेख हैं–

नं० ४८८ (दांतरी ऋषभदेव मन्दिर) संवत् १८६६ चैत्र सुदि १० दिने रविवारे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं। प्रतिष्ठि सवाई जैपुर नगर मध्ये। प० । यशविजय गणिना। कारितं बीका वास्तव्य बाठीया शार्दूलसी केनश्रेयोर्थम्।।

न० ६४०(शिलापट्ट प्रशस्ति जयपुर मन्दिर)।। श्री जिनेन्द्र प्रथमं प्रणम्य स्वस्ति प्रदातै सकलं च सा सूर्या ऋषभमस्तु कीर्त्तनादि प्रशस्ति रेषा लिखित शुभंयु ।।१।। स्वस्ति श्री संवत् १६४३ शाकि १८०८ फाल्गुन शुक्ल तृतीयाय ३ शुक्रवासरे वृष लग्ने वृजन वांरा मध्ये श्री श्री श्री १००८ श्री आदिनाथ स्वामी जिनेन्द्र प्रतिमाया' श्री सवाईजयपुरनगर मध्ये सोगा ए पा स भा जे मदी (१) भ० श्री पूज्य जी महाराज श्री हेमचन्द्रसूरिभि पार्श्वचन्द्र गच्छाधिकारिभि' श्री पूज्यजी महाराज खरतरगच्छ भ० श्री जिन मुक्तिसूरिभि बाँठिया गोत्रे सा० श्री गम्भीर मलजी वासी बीकानेर का हालवासी आगरा का तत्पुत्र बाई जवांर कुवर तत्पुत्री बाई राजकंवर तया श्री आदि जिनेन्द्र भवन कारपित्वा प्रतिष्ठा कारापिता। मारफत कान्ह्यालालजी डागा पुजाणी गोत्रे। शुभ भूयात्। उसता जहेदीलाल।।श्री।।

नं. ६ जयपुर विजय गच्छीय मन्दिर सवत् १६६३ वर्षे वैशाख शुक्ला ७ गुरु वारे जयपुर वास्तव्येन ओसवाल वशीय बांठिया गोत्रीय खेतसीदासात्मजेन हजारीमल्लेन तद्भार्या सौभाग्यवती फूलकुवर पुत्रा सुगनचन्द्र प्रभृतिना स्वमातृतप उद्यापनार्थ श्री विशतिस्थानक. पट्ट. कारित' प्रतिष्ठापितश्च खरतरगच्छीय यतिवर्य पं० श्यामलालेन विजयलालेन यतिना।

दिल्ली महरोली–मणिधारी दादावाडी के जैन मन्दिर में – जयपुर के श्री प्रतापमलजी बाँठिया ने जिनकुशलसूरि जी की मूर्ति प्रतिष्ठित कराई इसका लेख इस प्रकार है –

श्री जं०यु०प्र०भ० श्री १००८ श्री जिनकुशलसूरि मूर्ति प्रतिष्ठितं आचार्य श्री जिनधरेणेन्द्रसूरिणा श्री नथमलजी की स्मृति में श्री प्रताप मलजी बाँठिया ने स्थापित करायी वि०सं० २०१४ दीपोत्सवी प्रबन्धक श्री धनपतसिंह मसाली।

रेलदादाजी बीकनेर मे लेख

रेलदादाजी का जिर्णोद्धार कराया वि सं. १६८६ पन्ना लाल हीरालाल मोती लाल चन्दालाल बाँठिया कारापितं मारफत करमचद सेठिया चलवा नारायण सुथार ।

७. नोहरो १ बांठिये मेघराज रो।
८. घर १ बांठिये ताराचंद रो
६ घर १ निहाल चद बांठिये रो, बारणो आथण सामो
१०. घर १ सिवजीराम बांठिये रो, बारणो उगण
११. घर १ बांठिया मुहणलाल, मोतीलाल, ताराचंद, सूणे रो, बारणौ उगण सामों।
१२ नोहरो १ लूणे बांठिये रो, धोबी बगसू रै अडाणे, बारणो आथण।

श्री पूज्यों की सेवा में बांठिया परिवार

श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरी जी के सग्रहालय मे कुछ पुराने कागजो मे बीकानेर के बांठियो ने श्री पूज्यों की कुछ सेवा की जिसका वर्णन इस प्रकार मिलता है–

"संवत् १६०७ मिती पोष वदी १० आगरै श्री संघ कृत महोत्सवे श्री जिन महेन्द्रसूरीजी श्री समेतशिखर जी री यात्रा पधारतां आगरा रो श्री संघ वदायो। श्री चिंतामणि जी रै मंदिर मे सत्तर भेदी पूजा मारवाडी श्रावका पचायती श्री सघ बडे आडम्बर से करायी। लूणिया पदमसी भक्ति साचवी ढढ्ढा सा। पन्ना लाल जी मथुरा से आगकर भक्ति साचवी । बांठिया अमोलखचंदजी प्रमुख फीरोजाबाद की यात्रा करायी।"

"सं १८५५ मे श्री जिनहर्षसूरीजी सुरत से विहार कर श्री पूजा की तरफ आये।

वहा पर सं १८५५ पोष वदी ६ दिने सारगजी खीमराज रूपराज तरफ थी बीकानेर वास्तव्य बांठिया साहिबसिघ जी फलौधी वास्तव्य डाकलिया जालमचदजी ने दुकाने तेडी रू ६/– नवंगी करी दुसालौ १ रू ३० रौ ओढायो वणारसा ने चादर बाकी साधु १८ नु० १/– करी – भक्ति साचवी।

सं १८५५ मिती पोषसुदी ८ प्रभाते बीकानेर वास्तव्य बांठिया दौलत सिंहजी डागा सतोषचद जी नी तरफ थी पारख खेतसीजी ने पोतानी दुकाने तेडी रू० ५/– पगे मूकी थिरमो १ ओढायो वणारसासु चदरा दीनी प्रत्येक।

पूज्य श्री नाथूरामजी का दीक्षा महोत्सव

बांठिया परिवार सामान्यत उदार–वृत्ति के रहे हैं। इसका एक ज्वलन्त उदाहरण बीकानेर के श्री उदयचदजी बांठिया थे। पूज्य नाथूराम जी के दीक्षा–महोत्सव का समस्त व्यय भार उन्होने ने ही वहन किया। पूज्य श्री नाथूरामजी यद्यपि सरावगी खण्डेलवाल परिवार मे जन्मे थे। वे ढूढार देश के पचार गांव के निवासी तथा रूपचन्द जी बडजात्या के पुत्र थे, उनकी मां का नाम रूपादे था। घर की आर्थिक अवस्था साधारण थी। उनकी स्थानकवासी सम्प्रदाय मे दीक्षा लेने की उत्कट भावना जागृत हो गयी इसलिये वे १८ वर्ष की आयु मे बीकानेर आये, उस वक्त पूज्य श्री मनजी बीकानेर मे विराज रहे थे। उन्होंने पूज्य श्री से दीक्षा लेने की अपनी भावना बतायी और शीघ्र ही दीक्षित करने की प्रार्थना की। उस वक्त पूज्य श्री ने बीकानेर संघ रो उनकी दीक्षा–महोत्सव करने के लिए कहा। उस वक्त धर्म प्रेमी सेठ उदयचदजी बांठिया, इस वैरागी की दीक्षा का

कल्याणदासजी बांठिया कोडमदेसर से बीकानेर आया। सं. १५७५ राव कल्याण सिह जी आठ कोस सामा जाय कर बीकानेर लाया। चौथा चौधरी थरपा – चांदी की छड़ी दी व बांठिया गुवाड बसाई।

कल्याणदासजी रे खींवराजजी रे आसकरण जी रे देवराज जी रे जोरावर मल जी रे जैपाल जी। जैपाल जी रे पांच बेटा होया उणांरो परिवार चुरू मे बस गयो।"

बीकानेर व चुरू के बांठिया व्यापार निर्मित प्राय कलकत्ता में बसे हुए हैं। दो चार घर बम्बई चले गये हैं। जयपुर मे भी बीकानेर व चुरू के बाँठियों के १५ घर हैं। बीदासर में बाँठिया परिवार के ३० घर हैं। सुजानगढ में ८–१० घर हैं। श्री गंगानगर की तरफ बाँठिया परिवार पीलीबगा व संगरिया से जाकर बसे हैं। धोलीपाल में भी बाँठियो के घर हैं। भीनासर व गंगाशहर में भी बाँठिया परिवार के १५/२० घर बस गये हैं। देशनोक मे भी पांच घर हैं। देशनोक में बांठिया महिला चिकित्सालय भी है। गगाशहर में श्री रामचंदजी बांठिया का घूम चक्कर पर जैन मन्दिर भी बनवाया हुआ है। भीनासर की पींजरापोल व सडके, कुओं सब बाठिया परिवार की देन है।

चुरू के सुप्रसिद्ध भिजमिल पोद्दार की बही वि.सं १८८४ मे चुरू के घरों व हाटों की विस्तृत वर्णन है। इनमे बाठिया परिवार की दुकानें उस वक्त इस प्रकार थीं–

उतराधे दरवाजे की हाटां

१ हाट राजरूप बांठिये री।
१ हाट बांठिये आसकरण जैतरूप री
१ हाट बांठिये मोतीचंद री
१ हाट इकदरी लूणै बाठिये री
१ हाट मेघराज बांठियेरी

कटले में हाटां

१ हाट राजरूप बांठिये री
१ हाट मूहण दास बांठिया री

कटले से बाहर की हाट

१ हाट स्योजी बांठिया री

चुरू के बांठिया परिवार के घरों की संख्या
वि सं. १८८४ मीगसर सुरी १३

१. घर १ भूरसी बांठिये री, बारणो, आथण सामो
२. जमी १ भूरसी बाठिये रै घर रै दीखणादै पासै खुली पडी छै तैरी सीरदारमल भागीरथ री करैछे, बारणो आथणा।
३. घर १ मुहणदास बांठिये रो, बारणो उगण
४. घर १ जालसी बांठिये रो, बारणो उगण
५. घर १ राजरूप बाठिये रो, बारणो उतराद
६. घर १ बांठिये मेघराज रो, बारणो उगण

का कोई सामान्य, स्वतन्त्र एवं शुद्ध साधन अपनाकर स्वल्प सन्तोषी रहते हुए अपना अधिकाश समय एव श्रम साहित्य–सेवा मे लगाते हैं। मध्यकाल के अधिकांश गृहस्थ जैन पण्डित, कवि या साहित्यकार विशेषकर दिगम्बर परम्परा के प्राय. इसी कोटि के थे। उनकी श्रृंखला वर्तमान शताब्दी मे भी चलती रही है, यद्यपि गत पचास वर्षों मे उनमे शनै शनै. पर्याप्त ह्रास हुआ है। इसी वर्ग मे ऐसे महानुभाव भी हुए जो अर्थ–पुरुषार्थ मे अच्छी तरह सलग्न रहते हैं और सफल होते हुए भी अपने अवकाश, और बहुधा धन का भी सदुपयोग अपने विद्याव्यसन एव साहित्य सेवा में करते रहे।

तृतीय वर्ग में व्यावसायिक साहित्य सेवी आते हैं। लौकिक ज्ञान–विज्ञान एव साहित्य की साधना करने वाले कम से कम वर्तमान युग मे, बहुधा इसी वर्ग के हैं। इनमें से अनेक धार्मिक साहित्य का निर्माण तथा अन्य सास्कृतिक अथवा समाज सेवा के कार्य भी आजीविका या अतिरिक्त आय के साधन के रूप में करते हैं। इस युग में यही वर्ग वृद्धिन है और मुद्रित–प्रकाशित जैन साहित्य की अभिवृद्धि का तथा अनेक शिक्षा आदि स्थानो के चलते रहने का श्रेय इस वर्ग को है। द्वितीय वर्ग के नि स्वार्थ साहित्य सेवियो का स्थान इधर यही वर्ग द्रुतवेग से लेता जा रहा है। इसके अतिरिक्त श्वेताम्बर स्थानकवासी, तेरापंथी आदि सम्प्रदायो मे तो साहित्य साधना साधुवर्ग का ही दायित्व रहती आयी है, गृहस्थजनों की उसमे नगण्य सी रूचि रही। बहुत हुआ तो साधुओ की प्रेरणा से ही कभी–कभी जैनाजैन व्यावसायिक पडितो से काम लिया जाता रहा है। वर्तमान शती में अवश्य इन परम्पराओ मे भी, अनेक व्यावसायिक तथा कतिपय नि स्वार्थ साहित्य सेवी विद्वान हुए और आज भी हैं। कलकत्ता निवासी स्व श्री माहनलाल जी बाठिया ऐसे ही नि स्वार्थ साधक थे।

राजस्थान के स्व श्री छोटे लाल जी बाठिया के मारवाडी वैश्य (ओसवाल) परिवार में जन्मे और महानगरी कलकत्ता में अच्छा ऊंचा व्यवसाय जमाने मे सफलीभूत, भरे–पूरे परिवार वाले गृहस्थ सज्जन का, जिनकी प्राथमिक शिक्षा–दीक्षा भी सामान्य सी रही और जो तेरापंथ सम्प्रदाय के अनुयायी रहे, गहन सैद्धान्तिक अध्ययनमे स्वान्त सुखाय अभिरूचि होना और फिर उसका सदुपयोग विशिष्ट तकनीकी तात्विक साहित्य के निर्माण मे करना, सो भी प्रारम्भ मे मात्र अपने ही बलबूते पर, एक अत्यन्त उल्लेखनीय उपलब्धि है। उसका महत्त्व तब और भी बढ जाता है जब इस तथ्य पर ध्यान दिया जाय कि व्यावसायिक पुरूषार्थ तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वो एव लौकिक कर्तव्यो का सुरीत्या निर्वाह करते हुए और शरीर के मधुमेह, रक्तचाप, ह्रदयरोग आदि विषम व्याधियो से ग्रस्त रहते हुए भी वह जीवनके अन्त पर्यन्त अपने उक्त साहित्यक जीवनोद्देश्य की पूर्ति मे जुटे रहे। ता. ३० नवम्बर सन् १६०८ ई० में जन्मे और मात्र ६८ वर्ष की आयु मे २३ सितम्बर १९७६ में दिवंगत श्री बांठिया जी का यही संक्षिप्त परिचय है।

अपनी धुन के पक्के, सरल परिणामी मधुर स्वभावी विनम्र विद्या व्यवसायी बांठिया जी सयोग से हमारे हम उम्र थे, किन्तु जैसी विषम परिस्थितियों मे उन्होंने जितना कुछ सम्पन्न कर लिया उसके देखते हम उनके समक्ष स्वय को एक तुच्छ बौना अनुभव करते हैं। बांठिया जी ने आगमिक एव अन्य सम्बन्धित प्राकृत–सस्कृत निबद्ध सैद्धान्तिक साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया और अनेक विद्वानों एवं विज्ञासुओ से सम्पर्क साधा। कई एक अजैन जिज्ञासु विद्वानों की समस्याओ को लेकर उन्होने यह अनुभव किया कि क्रमबद्ध तथा विषयानुक्रमिक विवेचन का अभाव जैन दर्शन के यथोचित अध्ययन मे सबसे बडी बाधा है। अतएव विषय विशेष की जानकारी के लिए ग्रन्थो को बार–बार आद्योपान्त पढने की आवश्यकता न रहे, इस हेतु बाठिया जी ने सर्वप्रथम ३२ श्वेताम्बर आगम सूत्रो तथा तत्वार्थ सूत्र से जैन दर्शन के महत्वपूर्ण विषयों के क्रमवार पाठ एकत्र संकलित किये। विशिष्ट दार्शनिक आध्यात्मिक शब्दो की एक सूची भी बनायी। ऐसे शब्दो की संख्या एक हजार से अधिक हो गयी। विषय के सुष्ठु वर्गीकरण के लिए उन्होने सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण पद्धति का अध्ययन किया और बहुत कुछ उसी के आधार पर जैन वांगमय को एक सौ वर्गों मे विभक्त किया तथा प्रमुख विषयो के वर्गीकरण की रूपरेखा बनायी। मूल विषयों में से अनेक उपविषयों की सूची भी बनायी। सर्वप्रथम "तारकी जीव" विषय चुना, फिर उसे अधूरा छोडकर "लेश्या" को हाथ में लिया। फलस्वरूप १६६६ मे उनका अद्वितीय "लेश्या कोष" प्रकाशित हुआ, जिसमें मूलपाठों के साथ हिन्दी अनुवाद भी किया और प्रस्तावना मे पूरी पद्धति पर भी विशद प्रकाश डाला। कोश में यथावश्यक गंभीर सैद्धान्तिक आलोचनात्मक टिप्पणियां भी दीं। यद्यपि प्रकाशन समूल्य था प्राय समस्त प्रतियां देशी विदेशी विद्वानों, प्राच्यविद्या संस्थानों, विश्वविद्यालयो आदि में अमूल्य

समस्त प्रबन्ध करने के लिये आये। इस दीक्षा का वर्णन कवि कवियण ने एक चउढालिये में सुन्दर रूप से किया है जिसको स्वनामधन्यविद्वान स्व अगरचन्दजी नाहटा द्वारा सपादित – स्थानकवासी ऐतिहासिक काव्य संग्रह में प्रकाशित किया है। पूज्य श्री नाथूराम जी ने पचास वर्ष तक संयम पाला और उनका देवलोक वि. सं १८४६ मिती काती वदी १० को हुआ। चउढालिया इस प्रकार है–

हिवे लेस्यू सयमभार हो गुण ना रागी
मनजी पूज्य हा विचरै मरूधरे
बीकानेर वही जे हो गुण ना रागी
नाथूरा मजी आवे तिण अवसरे।। १ ।।

मनजी पूज अवसर जाण दृढ मत देखी
हां जी मुनि साधु सघ नै कहेजी
तिण अवसर तिणवार उदेचंद बाठियो
हाजी मुनि महोच्छव कराविया जी।। २ ।।

घुडला रे घूमर माल, हसानी सिणगार
हाजी मुनि सरबरां जुगाति सूं जी
रथ पायक सझ कराय, नर नारी आवे
हाजी मुनि बहुला भाव सूं जी।।
वाजिय विविध प्रकार गीतडला गावीजै
हांजी मुनि चढता भाव रा जी
सद्गुरु विराज्या छै वाज बहु समुदाये
हाजी मुनि आवै तिहा पधाराजी।। ३ ।।

सद्गुरु प्रणमैं जी पाय वंदन करीने
हां जी मुनि नाथूरामजी कहैजी
दीजे गुरुजी दीक्षा बड वेग संघनी सारवजे
हांजी मुनि संयम गृहजे।। ४ ।।
अठारे साई कारे वर्ष महीनो कहीजे
हांजी वाला मृग सिर मासनोजी
शुभ वेला शुभ तिथवार, चढत परिणाम
हां जी मुनि वेस लियां साधरोजी।। ५ ।।

– राजकुमार बाठिया
५२/१६, शक्कर मट्टी
कानपुर–२०८००१

निःस्वार्थ साहित्य-साधक श्री मोहन लाल बांठिया

अपने दैहिक, लौकिक एवं पारिवारिक स्वार्थ–साधन मे तो प्राय सब ही जन निरन्तर व्यस्त रहते हैं, किन्तु कुछ ऐसे सज्जन भी होते रहे हैं जो उससे ऊपर उठकर अपने तन, मन और धन का विनियोग संस्कृति, साहित्य और समाज की सेवा में भी प्राय निस्वार्थ भाव से करते रहते हैं। ऐसे महाभाग विरले ही होते हैं तथापि उनके कृतित्व के सुफल व्यापक और दूरगामी होते हैं। सांस्कृतिक प्रगति अनेक अंशों मे उन्हीं पर निर्भर करती है।

जैन परम्परा में साहित्य–साधको के मुख्यतया तीन वर्ग रहे हैं। प्रथम वर्ग में गृहत्यागी, निस्पृह, निष्परिग्रह साधु साध्वियां आते हैं। साधु जीवन मे एकनिष्ठ ज्ञानाराध्य को अत्यधिक सुविधा होती है। अतएव जिन मुनिराजो की इस ओर अभिरुचि होती है और जो वैसी क्षमता से भी सम्पन्न होते हैं, वे समर्पित भाव से साहित्य साधना करते ही हैं। जैन साहित्य का बहुभाग तथा श्रेष्ठ अंश भी, ऐसे ही त्यागी श्रमणों के अध्यवसाय का सुपरिणाम है। अति प्राचीन काल से वे ही उसका सृजन, विकास, सुरक्षण करते आ रहे हैं एवं द्वितीय वर्ग में निस्वार्थ साहित्य साधक गृहस्थ विद्वान आते हैं जो आजीविका

प्रभावी प्रतापी पुरुष स्व. श्री प्रतापमल जी बांठिया

ले· श्रीमती अंशु सिघवी, एम ए., कलकत्ता

बीकानेर के सुप्रसिद्ध खुशालसागर बांठिया परिवार मे जन्मे श्री प्रतापमल जी बांठिया, श्री लाभचन्दजी बाठिया के तीन पुत्रों प्रतापमल जी पूनमचंद जी व मगनमल जी में सबसे बडे थे। श्री लाभचन्दजी अपने समय के कर्मठ व्यक्तित्व के थे। श्री प्रतापमलजी का जन्म ७ ८ १८६४ मे बीकानेर मे हुआ था।

इनका बाल्यकाल प्रधानत मध्यप्रदेश के सिरौंज जिले में बीता था। इनकी शिक्षा भी वहीं हुई थी। उस समय प्रचलित पद्धति के समान ही उर्दू व फारसी के लिए मौलवी अध्यापक तथा संस्कृत व बाणिका के लिए अलग शिक्षक घर पर ही नियुक्त किये गये।

जब आपकी उम्र १२ वर्ष की थी तभी आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। तब आपको सिरोज दुकान (जो रतलाम वाले पटवों की थी) का सारा काम काज रतलाम जाकर सम्हालना पडा। उस समय उन्हें इसी दुकान का एक इचार्ज बनाने का प्रस्ताव सेठों की तरफ से आया मगर अपनी कम उम्र का हवाला देकर अपनी माता की आज्ञानुसार आप बीकानेर आ गये।

बाल-विवाह की प्रचलित प्रथानुसार आपका भी विवाह कम उम्र में हो चुका था। बीकानेर आने के पश्चात् आपने कलकत्ता जाकर कपडे का व्यवसाय किया, बाद में आप पुन बीकानेर आ गये। कुछ समय बाद आपको कोटा के धनकुबेर सेठ श्री केशरी सिह जी बाफना ने अपने विशेष मुनीम के रूप मे कार्य करने का आग्रह किया। सेठ साहब के प्रमुख के रूप में आपने अत्यन्त योग्यतापूर्वक कार्य किया।

श्री बांठिया अनुपम प्रतिभा के धनी थे तथा जिस किसी काम को अपने हाथ मे लिया उसमे अपनी विशेषता की छाप हमेशा छोडी। आपकी धार्मिक क्षेत्रो में भी रूचि थी व अपनी विद्वता व भाषण कला के बल पर आप जैन समाज में अत्यन्त लोकप्रिय थे। आपकी धाक बाईस सम्प्रदायों मे तो थी ही पर अन्य समाज के सभी कार्यो में अग्रणी रहते थे। कोटा से बीकानेर आने पर आपको मानद मजिस्ट्रेट बनाया गया। आपके फैसले सदैव उच्चकोटि के होते थे तथा महाराज गंगा सिंह जी भी उनके प्रशसको मे थे। महाराजा साहब की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर ओसवाल-समाज के मुखिया के रूप में उन्होंने जो मान पत्र पढा उसकी बडी ही सराहना की गयी।

भीनासर में हुए साधु सम्मेलन में आपका महत्वपूर्ण योगदान था। जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय समेत अनेक शिक्षा संस्थाओं से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध था। आपकी व्यक्तिगत सूझबूझ के कारण अनेक जटिल समस्याओ का समाधान करने में आप सफल रहे तथा अपनी इसी विलक्षणता के कारण आपको अनेक बार गम्भीर विवादों मे पंच बनाया गया।

आपकी पहली दो पत्नियों का देहावसान अल्पायु में ही हो गया था। आपका तीसरा विवाह जोधपुर मे हुआ उन्हीं पत्नी से आपके दो पुत्रियां व ५ पुत्र हुए। आपने अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिलवायी। आपने अपने परिवार से बाल-विवाह, पर्दा प्रथा जैसे कुरीतियों को समाप्त कर उच्च आदर्श प्रस्तुत किया जो आज भी ओसवाल समाज में एक प्रकाश स्तम्भ के समान है।

आपकी मृत्यु १५ ३ ७५ को ८१ वर्ष की आयु में हुई। अन्त समय तक भी आप एक पूर्ण जागरूक एव उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिक की भाँति ही जिये और आपके पास विभिन्न क्षेत्रों के लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते रहे।

O

ही वितरित कर दीं। सन् १९६६ में उन्होंने उसी पद्धति पर "क्रिया कोष" भी प्रकाशित कर दिया और "जीव कोष" तथा वर्तमान जीवन कोष पर कार्यारम्भ कर दिया।

एक निश्चित वैज्ञानिक पद्धति पर विषय वार व्यवस्थित बांठिया जी के उक्त वैधयिक परिभाषिक कोष ग्रन्थों का विद्वत्‌जगत में प्रभूत स्वागत एवं समादर हुआ और वे इस शैली के सन्दर्भ के ग्रन्थों मे प्राय: सर्वोत्तम मान्य किए गये। इस अति संयम एवं श्रमसाध्य योजना का सम्पादन बांठिया जी ने प्राय: स्वयं के तन–मन–धन से किया। संयोग से उन्हें पं. श्रीरचन्द्र चौरडिया जैसे उत्साही, लगनशील एवं अध्यवसायी सहायक का लाभ भी मिला। बांठिया जी को इस महत्वपूर्ण कोष परिकल्पना को क्रियान्वित करने तथा उनके सत्कार्य एवं अध्यवसाय के प्रति समुचित सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से उनके भक्त मित्रों ने १९६६ को महावीर जयन्ती के अवसर पर जैन दर्शन समिति की स्थापना की। उनके स्वयं के दिवंगत हो जाने पर अब उक्त समिति ही उनके स्वप्न को साकार करने में प्रयत्नशील है।

लगभग १९६० से ही श्री बांठिया जी अपनी परिकल्पना के विषय में हमसे पत्राचार द्वारा विचार विमर्श करते रहे। "लेश्या कोश" की कच्ची कापी भी सुझाव आदि के लिए भेजी थी। सौभाग्य से कलकत्ता के जैन सभा के निमन्त्रण पर और विशेषकर स्व. बाबू जुगमिन्दर जी जैन के स्नेहपूर्ण आग्रह से १९७२ ई. के पर्युषण पर्व मे हमारा कलकत्ता जाना हुआ। हम भाई स्व. जुगमिन्दर दास जी के निवास स्थान पर ठहरे थे। अगले दिन प्रात. ज्ञात हुआ कि एक सज्जन हमसे मिलने के लिए नीचे की मंजिल मे प्रतीक्षा कर रहे हैं। गये तो श्री बांठिया जी से स्नेह गद्‌गद् भेंट हुई और लगभग पौन घंटा चर्चा वार्ता होती रही। हृदयरोग के कारण वह जीना नही चढते थे। किन्तु अगले दिन सवेरे ही देखा कि वह ऊपर ही चले आये। बडा संकोच हुआ किन्तु अपनी विनम्रता से उन्होने अपना समाधान किया और अपनी योजना की चर्चा में तल्लीन हो गये। समय का भी कुछ ध्यान नहीं रहा। उनका स्नेह तो मिला ही, प्रेरणा भी मिली। देखो, ऐसी शारीरिक स्थिति एवं व्यापारिक उलझनों व व्यस्तताओं के बावजूद यह दीवाना अपनी नि:स्वार्थ साहित्य साधना एवं सांस्कृतिक सेवा में कैसा लीन है! श्री मोहन लाल जी बांठिया का अनेक संस्थाओं से गहरा सम्बन्ध रहा था जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं–

अध्यक्ष जैन विश्व भारती
अध्यक्ष जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय
अध्यक्ष जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा
सम्पादक जैन–भारती

विद्वत्वर्य स्व. श्री मोहन लाल जी बांठिया की पुण्य स्मृति में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

डा. ज्योति प्रसाद जैन

ज्योति निकुंज, चार बाग
लखनऊ

'स्व. श्री छोटमलजी बांठिया

श्री छोटमलजी बाँठिया का जन्म सं १९२४, धनतेरस के शुभ दिन, अमरावती मे हुआ था। आपके पिता श्री लक्ष्मीचदजी बांठिया शांत स्वभाव एवं धर्म परायणता लिए सुप्रसिद्ध थे। अपने पिता के ये गुण श्री छोटमलजी को विरासत में मिले। सहिष्णुता तथा ईमानदारी आपके सर्वप्रिय ध्येय थे। उन्होने प्रथमत अमरावती में, तत्पश्चात् नागपुर मे विदर्भ के गणमान्य उद्योगपति स्व सेठ मथुरादास जी मोहता के सान्निध्य मे अन्तिम समय तक काम किया।

मिलन–सारिता एव मृदु भाषा के कारण आज भी वे सम्पर्क पाये व्यक्तियो को याद आते हैं। छोटा हो या बडा, धनी हो या गरीब, सबसे उनका प्रेम समान था।। सुख दु ख मे वे समभागी बने तथा युवा वर्ग के अनेक व्यक्तियो को अपने गुण समुच्चय का उन्होंने लाभ दिया।

धार्मिकता की तो आप खान थे। "श्री सघ" की स्थापना के समय से ही सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में श्री सघ का कार्य करते थे। सन् १९२५ मे श्री संघ का अध्यक्ष पद भी आपने सुशोभित किया था। स्थानक के सामने ही आपका मकान होने के कारण साधु, संतों, अतिथियो को अनेक प्रकार से सुविधा रहतीथी। आपकी पत्नी श्रीमती उदीबाई भी पूर्णत धर्मपरायण होने से आपका दाम्पत्य जीवन अनेको के लिए आदर्श समान था। श्री अमरचन्दजी पुगलिया के आप मामाजी होने के कारण इस श्रद्धेय दम्पत्ति को मामाजी और मामीजी के नाम से सभी श्रावकगण पहचानते थे।

आपके निधन के बाद आपके सुपुत्र श्री हजारीमल बांठिया ने भी 'श्री सघ में उसी प्रकार से सक्रिय हिस्सा लिया है और अनेक वर्षो तक उपाध्यक्ष पद पर रहे हैं।

श्री छोटमलजी बांठिया का स्वर्गवास सवत् १९९६ मे ७५ वर्ष की आयु में हुआ।

●

गौ भक्त स्व. सेठ श्री हजारीमल, बहादुरमल, तोलाराम बांठिया

भारतीय संस्कृति मे 'गो' का प्रमुख स्थान है। वैदिक काल मे यहां गाय की पूजा होती रही है। धार्मिक दृष्टि से गाय का माता का स्थान रखा गया है। चक्रवर्ती सम्राट दिलीप ने पुत्र–रत्न की प्राप्ति के लिए गाय की सेवा की थी। रघुवंश में गौ माता के प्रति की गयी सेवा का वर्णन बडा रोमाचकारी है।

गाय ने भारत के धार्मिक तथा आर्थिक–सामाजिक जीवन मे इतना उच्च स्थान बना रखा है कि उस पवित्र गौ माता के पालन–पोषण व बचाव के लिए आज से लगभग ७० वर्ष पूर्व श्री हजारीमल जी बांठिया ने भीनासर में गौशाला के निर्माण करवाने हेतु लगभग दो हजार गज जमीन का दान दिया। यही गौशाला भीनासर मे आज भी सुविख्यात है।

सेठ श्री हजारीमल जी के पौत्र एवं श्री बहादुरमल जी के पुत्र स्वर्गीय श्री तोलाराम जी बांठिया तो गौ सेवा के परम पुजारी थे। आप जब हृदयरोग से पीडित होकर कलकत्ता का व्यवसाय अपने पुत्रो पर छोड कर बीकानेर प्रवास करने लगे तो आपने गौ सेवा का भरपूर आनन्द उठाया। आज से लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व भीनासर गांव में 'डेनिस नस्ल' की गायों का विकास एवं पालन करके गाय को आर्थिक रूप से धनी बनाने का आपका प्रयास भी प्रशसनीय था। वास्तव में भारत में अब गौ रक्षा तभी संभव हो सकेगी जबकि गाय की हम नस्ल सुधार कर उसे अधिक दूध देने वाली बना देगे। इस अर्थ–प्रधान युग में गाय के वध को रोकने का यही वास्तविक रास्ता है, जो कि स्वर्गीय श्री तोलाराम जी बांठिया आज से बीस वर्ष पूर्व ही समझ चुके थे। इसी बात से बीकानेर के वेटर्नरी कॉलेज के तत्कालीन डॉक्टर मोहन सिंह जी भी श्री बांठिया जी से बहुत प्रभावित हुए और कई बार गायो की देखरेख देखने के लिए बांठिया जी के घर जाते थे।

सीतामऊ राज्य की सेवारत बांठिया परिवार

महाराज कुमार डा. रघुवीर सिंह
सीतामऊ, मध्यप्रदेश

श्री सुजानमल जी बांठिया सीतामऊ के स्वर्गीय महाराजा श्री बहादुर सिंह जी (१८८५–१८९९ ई.) के शासनकाल मे सीतामऊ राज्य के तहसीलदार और नायब दीवान भी रहे थे। समय–समय पर आगर छावनी स्थित पोलिटिकल एजेन्सी में आवश्यक राजकीय कार्यों के सन्दर्भ मे भी इन्हे भेजा जाता था। २० वीं शती के प्रारम्भिक दशकों में वे प्रतापगढ राज्य (राजस्थान) मे भी सर्वोच्च पद पर सेवारत रहे थे। सन् १९२० ई. के अंतिम महीनों में वहां से सेवामुक्त होने के बा उन्होने कहीं कोई पद स्वीकार नहीं किया और अपने जीवन के लगभग २० वर्ष उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र श्री जसवंत सि बांठिया के साथ रहकर सीतामऊ नगर मे बिताये थे। सीतामऊ राज्य के विलय के बाद जब श्री जसवंत सिंह जी बांठि अपने पुत्रों के पास कलकत्ता चले गये तब श्री सुजानमलजी बांठिया भी उन्हीं साथ कलकत्ता चले गये थे। कलकत्ता में ही उनका स्वर्गवास हो गया।

श्री जसवंतसिंह जी बांठिया

आगरा में सेन्ट जॉन्स कॉलेज से बी.ए. परीक्षा पास कर लेने के बाद दिसम्बर १५, सन् १९१६ ई. को वे सीतामऊ में मेरे व्यक्तिगत शिक्षक के रूप मे नियुक्त हुए थे। जुलाई १, १९२० ई. को जब मैं डेली कॉलेज इन्दौर में भर्ती कर दिया गया तब वे मेरे साथ मेरे अभिभावक (गार्डियन) के रूप में वहां भेज दिये गये। डेली कॉलेज में मेरे बीमार पड जाने के कारण जब बाद में मैने डेली कॉलेज छोड दिया तब वे वापस मेरे साथ ही सीतामऊ चले आये थे। तदनन्तर दिसम्बर, १९२० ई. के अन्तिम दिनों में वे सीतामऊ राज्य से सेवामुक्त होकर जोधपुर चले गये थे, जहां लगभग पौने सात साल तक जोधपुर राज्य के वित्त विभाग मे सेवारत रहे थे।

सितम्बर १९२७ मे जब सीतामऊ राज्य में सह–न्यायाधीश का पद रिक्त हुआ तब उन्हे इस पद पर नियुक्त कर दिया और जोधपुर से सेवामुक्त होकर उन्होंने अक्तूबर ६, १९२७ ई. को यह कार्यभार सम्हाल लिया। परन्तु कोई सवा माह बाद जब मैं तथा मेरे दोनो भाईयो को इन्दौर भेज दिया गया तब श्री जसवंत सिह जी बांठिया को भी हमारे अभिभावक के रूप मे इन्दौर भेज दिया गया। अप्रैल, १९३० ई. के अन्त तक वे इसी रूप मे हम लोगो के साथ इन्दौर रहे। इन्दौर से वापस सीतामऊ लौट आने के बाद उन्होंने पुनः सह–न्यायाधीश का कार्य सम्हाल लिया था।

अक्टूबर ६, १९३० को वे नायब दीवान सीतामऊ राज्य के पद पर नियुक्त किये गये और वे इस पद पर १ जुलाई १९४५ तक कार्य कराते रहे। अपने इस कार्यकाल में उन्हें समय–समय पर स्थायी रूप से दीवान दरबार सीतामऊ का कार्यभार भी सम्हाल लेना पडता था, जुलाई १, १९४५ ई. को उन्हे पदोन्नत कर सीतामऊ राज्य का दीवान नियुक्त किया गया और जून ३०, १९४८ को सीतामऊ राज्य का नव गठित भारत में विलय होने तक वे इसी पद पर बने रहे।

स्वर्गीय सीतामऊ नरेश महाराज सर राम सिंह जी के शब्दो मे "श्री जसवंत सिंह जी बांठिया उस परिवार के हैं जिसने तीन पीढियों से सीतामऊ राज्य की सेवा की है। उन्होने अपने सेवाकाल में अपनी योग्यता, विश्वसनीयता तथा आचरण से मुझे सन्तुष्ट किया तथा साथ ही स्वयं को अपने पद के अनुरूप योग्य सिद्ध कर दिया।

our struggle for independence. This thesis is dedicated to the sacred memory of a great personality whose important part is connected with the First War of Indian Independence of 1857 in the Gwalior State. This great personlaity was the immortal martyr Sh. Amar Chand Banthia, the then Treasurer of Gwalior State.

Sh. Amar Chand Banthia was originally an inhabitant of Bikaner (Rajasthan). His ancestors had settled in Gwalior in connection with business. His grandfather's name was Sh. Khusal Chand Banthia. His father was Sh. Abir Chand Banthia who was born in 1760. His mother was Smt. Raj Kanwari, the daughter of Sh. Udai Chand Parakh, a resident of Bikaner.

Sh. Amar Chand Banthia was born in 1793 at Bikaner. He had seven brothers, named : Jalam Singh, Salam Singh, Gyan Chand, Khub Chand, Sabal Singh and Man Singh. They belonged to the Swetamber Sect of the Oswal Community. Amar Chand was married to Smt. Uma Bai in 1811 at Bikaner. Smt. Uma Bai was the daughter of Sh. Roopji Baid (Mehta). Through Scindia's request and pressure from Maharaja Dungar Singhji (Bikaner ruler) Sh. Amar Chand went to Gwalior and took up the post of the Treasurer there. Scindia wrote a letter of appreciation to Maharaj Dungar Singhji.

During 1857, when the revolutionary forces of the heroic Rani of Jhansi, Nana Saheb Peshwa, and Tantya Topey made an assault on Gwalior, Sh. Amar Chand Banthia was the Treasurer of Gwalior State. The Treasure of Gwalior was reputed as "Gangajali". The treasury was full of infinite wealth of the Scindia rulers. For this reason the Scindia rulers were reputed as "Motiwala Raja, the king of Pearls. The revolutionary forces of India had reached Gwalior, determined to root out the British power from India, but they were in dire straits for want of ration and money. The soldiers had not got their pay for many months. On June 2, 1858, Rao Saheb said to Amar Chand Banthia "I have to arrange payments to the soldiers. Will you help in it' 'In such a serious situation, the decision taken up by Amar Chand Banthia, was so daring. In order to render help to the revolutionary forces of the heroic Laxmi Bai, he took a bold decision which was most likely to lead him to the gallows. Amar Chand Banthia voluntarily cooperated Rao Saheb with the result that Rao Saheb was able to get the sufficient wealth from the Gwalior State Treasury to meet the administrative requirements As per the Gwalior Residency file in the office of the Central India Agency, Rao Saheb visited the palace on June 5, 1858, and getting the keys from Amar Chand Banthia had a look at the Gangajali Treasury Next day when Rao Saheb reached the palace early in the morning, Amar Chand Banthia was already present there to welcome him. *The soliders were paid their salaries for five months through the money received from* Scindia's Treasury.

Similar account is also avilable in connection with the forces of Maharani Laxmi Bai, when the army of Baija Bai was in distress at Narwar, the soldiers came to Gwalior, and returned with their pay and horses. Thus by dint of Banthia's cooperation, the distressed forces were relieved. The rest of the soliders were paid their salaries from the money received from Amar Chand Banthia. It was through Amar Chand Banthia that the revolutionary leaedrs could reward their soliders with pay and gratuity.

From the above mentioned account it is evident that we can not imagine the magnitutde of the crises if Amar chand had not rendered timely help to the revolutionary stalwarts of 1857. It is true that the revolutionary forces had not been paid their salaries for a long time. So, it was but natural that the subsequent dissatisfaction among them should dampen their capacity, zeal and enthusiasm in the great freedom struggle. Next, it would have been an arduous task before Rani Laxmi Bai or Rao Saheb or Tantya Topey to keep the struggling forces under control for a long period, without paying their salaries when their future prospects were dark and uncertain. In such

यह एक सुयोग ही है कि गौ सेवा का यश बांठिया परिवार की इन तीन पीढ़ियों को जाता है। स्वर्गीय श्री हजारीमल जी बांठिया, स्वर्गीय श्री बहादुर मल जी बांठिया एवं स्वर्गीय श्री तोलाराम जी बांठिया, जो कि पिता पुत्र एव पौत्र थे।

गौ सेवा अतिरिक्त भी श्री बहादुर मल जी तोलाराम जी बांठिया बहुत ही धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। आपने ओसवाल पंचायत के लिए जगह एव भवन दान मे दिया। महाप्रतापी जैन सत श्री जवाहर लाल जी महाराज के आप अनन्य भक्त थे। आपने जैन धार्मिक पुस्तक 'जवाहर किरणावली' का नि शुल्क प्रकाशन करवाया। आपने जैन स्थानकवासी धर्मार्थ औषधालय का निर्माण करवाया एवं नि शुल्क दवाओं का वितरण आरम्भ किया जो आज भी चल रहा है।

कलकत्ता मे आपके पूर्वज श्री प्रेमराज जी बांठिया ने संवत् १८६० मे व्यवसाय की नीवं रखी। मैसर्स प्रेमराज हजारीमल नाम से विख्यात यह व्यावसायिक इकाई आज भी आपके वंशज संभाल रहे हैं। स्वर्गीय श्री तोलाराम जीके ज्येष्ठ पुत्र श्री धीरेन्द्र बांठिया बडे ही होनहार एव उत्साही युवा उद्यमी हैं। आप कलकत्ता मे 'वरदान' माचिस फैक्ट्री का कार्य संचालन कर रहे हैं। यह फैक्टरी शिवाकाशी (तमिलनाडु) में स्थित है। इसके अलावा आप रेडीमेड गारमेन्ट्स का निर्माण कार्य भी सफलतम रूप मे कर रहे है।

AMAR CHAND BANTHIA

Hazari Mull Banthia,
Kanpur

Many historical facts relating to the Indian Freedom struggle have not come to light as yet. It's strange why the contribution of the grand personalities whose sacrifice laid the grand edifice of India's independence is still hidden in the obscure pages of unwritten history. Now, we have to bring to light the important successive events and lives of these great men hidden in the obsecure pages of unwritten history. The history of the Indian Independence won't be complete untill we unfold the shroud of mystery enveloping ... of

साधु–सन्यासी और फकीर अपने आध्यात्मिक प्रवचनो के दौरान भारत की दुर्दशा पर प्रकाश डालते थे। इस प्रकार जनता राजनीतिक शिक्षा प्राप्त कर रही थी। अमरचन्द बाठिया बहुत धर्मनिष्ठ थे। वह प्रातःकाल मंदिर जाते थे और शाम को साधू–सन्यासियो के प्रवचन सुनते थे। इससे उन्हें धार्मिक बातों के साथ–साथ ब्रिटिश शासन मे भारतीय जनता की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति का भी अच्छा ज्ञान हुआ और उनके ह्रदय मे ब्रिटिश साम्राज्य–विरोधी भावनायें उत्पन्न होने लगीं। धीरे–धीरे उनके मन में यह धारणा पुष्ट हुई कि अंग्रजो से भारत को स्वतंत्र कराए बिना न तो जनता के कष्टों को दूर किया जा सकता है, न ही भारत का पुनः जागरण हो सकता है। एक सन्यासी ने सन् १८५७ की क्रांति से पूर्व की एक घटना की चर्चा करते हुए अमर चन्द बाठिया को बताया था कि अंग्रेज सैनिक अधिकारियों से बंगाल के बैरकपुर स्थित ४७वीं रेजिमेंट को समुद्रपारीय सेवा के लिए बर्मा भेजने का आदेश दिया था । इन सैनिकों ने बर्मा जाने से इंकार कर दिया क्योंकि उस समय समुद्र पार जाना धार्मिक दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता था। इस पर अंग्रेज सैनिक अधिकारियो ने उन भारतीय सैनिको को तोप से उडा दिया। यह सुनकर अमरचन्द बांठिया के मन में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश बढ गया और वह उनके विरूद्ध कुछ करने की बात सोचने लगे।

सन् १८५७ की क्राति के समय उन्हे यह अवसर मिल गया। महारानी लक्ष्मी बाई उनके सेनानायक राव साहब और *तात्याटोपे आदि क्रांतिकारी ग्वालियर के रणक्षेत्र में अग्रेजो के विरूद्ध डटे हुए थे।* परन्तु *रानी लक्ष्मीबाई* की सेना के सैनिको और ग्वालियर के विद्रोही सैनिको को कई माह से वेतन नहीं मिला था और राशन आदि का भी समुचित प्रबन्ध नहीं हो पा रहा था। इससे विद्रोहियो को कठिनाईयो का सामना करना पड रहा था। ऐसे संकट के समय में ग्वालियर के राजकोष के कोषाध्यक्ष एवं १८५७ की क्रांति के मामाशाह अमरचद बांठिया ने अपने प्राणो की परवाह न करके क्रांतिकारियो की मदद की। उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई के सकेत पर ग्वालियर का सारा राजकोष विद्रोहियों के हवाले कर दिया। सेंट्रल इंडिया एजेंसी के कार्यालय मे उपलब्ध ग्वालियर रेजीडेंसी के रिकार्ड मे यह स्पष्ट लिखा गया है कि अमर चंद बांठिया से प्राप्त इस विपुल धनाशि से क्रांतिकारी सैनिकों के पांच माह के रुके वेतन भत्ते आदि का भुगतान किया गया और उन्हें पुरस्कार भी वितरित किए गए। अमरचंद बांठिया ने यह धनराशि दिनांक ५ जून १८५८ शनिवार को ग्वालियर के 'गगाजली' राजकोष से निकाल कर लक्ष्मीबाई के सेनानायक राव साहब को उपलब्ध करायी थी। उन्हीं दिनो महारानी बैजाबाई (महाराजा जीवाजी राव सिंधिया की मा) के सकटग्रस्त सैनिक भी अपने घोड़ों पर बैठ कर नरवर से ग्वालियर आ पहुँचे और इसी कोष से निकाली गयी धनराशि से अपना वेतन व भत्ता आदि प्राप्त कर नरवर वापस लौट गए। अमर चन्द बांठिया ने राजकोष से अनेक बार धनराशि निकालकर राव साहब व तात्या टोपे को दी थी।

अमरचन्द बांठिया द्वारा दी गयी इस मदद से विद्रोहियों का संकट दूर हो गया और उनका उत्साह काफी बढ गया। महारानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व मे विद्रोही सैनिको ने रणक्षेत्र में ब्रिटिश सेनानायकों सर हयूरोज और जनरल स्मिथ के दांत खट्टे कर दिए। परन्तु एक शिखण्डी ने पीछे से महारानी लक्ष्मीबाई पर वार कर दिया जिससे वह १८ जून, १८५८ को वीरगति प्राप्त कर शहीद हो गयी। लक्ष्मीबाई के आत्मोत्सर्ग के चार दिन बाद ही परम देशभक्त अमर चन्द बांठिया को, जिन्हे कुछ दिन पूर्व राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था, २२ जून, १८५८ को न्याय का ढोग रचने के बाद ब्रिग्रेडियर नैपियर ने लश्कर के सर्राफा बाजार में नीम के पेड़ से लटका कर फासी दिलवा दी। जनता मे निरंकुश ब्रिटिश राज का आतंक एवं भय जमाने के उद्देश्य से क्रांतिवीर शहीद अमरचन्द बांठिया का शव तीन दिन तक उसी पेड पर लटका रहा । ग्वालियर राज्य के ऐतिहासिक अभिलेख में इस घटना का विवरण इस प्रकार किया गया है : जिन लोगो को कठोर दंड दिया गया उनमें से एक था सिंधिया का खंजाची अमरचन्द बांठिया, जिसने विद्रोयिहों को खजाना सौंप दिया था। बांठिया को सर्राफा बाजार के नीम के पेड़ से टांग कर फांसी दी गयी और एक कठोर चेतावनी के रूप में उसका शरीर बहुत दिनों तक वहीं लटकाए रखा गया।"[1]

प्रश्न यह उठता है कि वह राजकोष अमरचन्द बांठिया की व्यक्तिगत सम्पत्ति तो थी नहीं, फिर उन्होंने उससे धनराशि निकाल कर विद्रोही क्रांतिकारियों को क्यो दी? क्या उन्हें इसका नैतिक अधिकार था ? .. उत्तर

circumstances Banthia's cooperation with the revoluationaries has significant importance of its own Amar Chand Banthia [illegible]
Treasury to meet t [illegible]
beyond dispute th[illegible] [illegible] spirit was working behind this *heroic decision*. But in the English vocabulary its direct consequence was the noose at the gallows.

The curtain of the First War of Independence of 1857 in Gwalior fell at the *sacrifice* of the *heroic queen* LaxmiBai. In the annals of Gwalior the historical day came to pass when the Treasurer of the Gwalior State Treasury Sh. Amar Chand Banthia *was hanged on dated* Twenty second June 1858 on a Neem Tree. The description of Banthia's *hanging available at Gwalior State's historical records is as follows* : 'Amar Chand Banthia, the Treasurer of Scindia, who handed over the treasury to the rebels, was one among those who were severly punished. Banthia was hanged on a *Neem* Tree at the Sarafa Bazar, and as a mark of warning his corpse was kept hanging for several *days.*"

''प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीद अमरचंद बांठिया''
कानपुर, १९८६

अमर चन्द बाँठिया

डॉ॰ विश्वमित्र उपाध्याय

हमारे देश के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अनेक महापुरुषों ने अपनी जान को हथेली पर रखकर धन तथा खाद्य–सामग्री आदि देकर क्रांतिकारी सेनाओं की मदद की थी। ग्वालियर राज के यशस्वी कोषाध्यक्ष अमरचन्द बाँठिया ऐसे ही देशभक्त महापुरुषों में से थे। उन्होने सन् १८५७ के महासमर में जूझ रहे क्रांतिवीरों को संकट के समय आर्थिक सहायता देकर मुक्ति–संघर्ष के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। अमर चन्द बांठिया बीकानेर राज्य के श्वेताम्बर जैन समुदाय के बांठिया गोत्रीय सेठ अबीरचन्द बांठिया के सबसे छोटे पुत्र थे। वे सात भाई थे। बांठिया परिवार सच्चरित्र, धर्मनिष्ठ और परिश्रमी था। अबीरचन्द बांठिया अपने परिवार को साथ लेकर व्यापार की खोज में श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समारोह में बीकानेर से ग्वालियर आए थे। वह प्रतिमा की स्थापना के बाद अपने परिवार के साथ लश्कर (ग्वालियर) के सर्राफा बाजार में स्थायी रूप से बस गए। बड़े होकर अमरचन्द बांठिया ग्वालियर रियासत क्षेत्र में कारोबार करने लगे। ईमानदारी तथा आर्थिक व्यापारिक मामलों की सूझ–बूझ के कारण अमरचन्द बांठिया का काफी नाम हुआ। तत्कालीन ग्वालियर नरेश महाराजा जयाजीराव सिंधिया ने उन्हें 'गंगाजली' राजकोष का कोषाध्यक्ष बना दिया। सुवर्ण मुद्राओं, चांदी के सिक्कों तथा हीरे–जवाहरात से भरपूर यह खजाना उसी गोरखी भवन में था जहाँ पर आज ग्वालियर कलक्ट्रेट है।

सन् १८५७ की क्रांति की अवधि में क्रांतिकारी गुप्त संगठनों द्वारा एक–दूसरे के पास सूचनाये भिजवाते थे। अनेक गुप्तचर साधु–सन्यासी और फकीर बनकर धर्म–प्रचार करते हुए सूचनाये पहुचाते थे। इसके अतिरिक्त अनेक

परीक्षाओं के लिए पाठ्य –पुस्तकें लिखी हैं। अभी हाल ही में "नामा लेखा और मुनीबी" नामक आपका बडा ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है जो हिन्दी के व्यापारिक साहित्य में अपने ढंग की अद्वितीय पुस्तक है। इस प्रकार का प्रयास अवश्य ही लेखक की लगन–शीलता और अध्यवसाय का परिचायक है। इस पुस्तक मे आपने अपने विशाल अनुभव का अच्छा प्रयोग किया है। समाज और राष्ट्र के विषय में आपके विचार बहुत उन्नत और प्रगतिशील हैं। हिन्दी की मासिक पत्रिकाओं में आपके व्यापारिक विषयों के जो लेख निकलते हैं उनमें आपकी विवेचना–पूर्ण लेखन शैली और विद्वत्तापूर्ण सामग्री रहती है। व्यापारिक विषयों पर आपकी और भी दो–चार पुस्तके निकल चुकी हैं। हिन्दी साहित्य मे आपका अच्छा नाम और सम्मान है।"

ऐसे अविस्मरणीय हिन्दी सेवी का जन्म सन् १८६४ मे अजमेर मे श्री मगनमलजी बाठिया के घर हुआ था, श्री मगनमलजी बांठिया उच्च कोटि के महाजनी मुनीम थे और मुनीम के रूप में बीकानेर से आकर अजमेर में बस गये और मुनीमी करने लगे। कस्तूरमलजी को व्यापारिक ज्ञान व अनुभव अपने पिता से विरासत मे मिला था इसी कारण आगे चलकर वे एक सफल व्यापारी बने व व्यापारिक विषयो मे प्रवीणता हासिल की थी। आप ने मेयो हाई स्कूल, अजमेर से हाईस्कूल पास किया था। कुछ दिन आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे भी शिक्षा पायी थी। सन् १६१७ मे आपने बम्बई विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी मे बी०काम० परीक्षा उत्तीर्ण की थी। आप प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम हुए थे। तत्पश्चात् उनकी नियुक्ति स्व० दानवीर युगलकिशोर जी बिडला ने अपने यहाँ बम्बई कार्यालय मे की थी। आप दस वर्षों तक बिडला ब्रदर्स के बम्बई और कलकत्ते के फार्मों मे मैनेजर के पद पर कार्य करते रहे और आपने हिन्दी में लेखन कार्य भी जारी रखा। सन् १६२७ में आप ही बिड़ला के सर्वप्रथम कर्मचारी थे जिसने लन्दन जाकर बिडला ब्रदर्स का कार्यालय खोला था। आपने पांच वर्षों तक वहाँ कार्य करके बिडला ब्रदर्स के विकास मे चार चांद लगा दिये थे। लन्दन मे बांठिया का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था, उनकी कार्यदक्षता को देखते हुए बिडलाजी बांठिया जी का अवकाश मजूर नहीं कर रहे थे। बांठियाजी मजबूर होकर इस्तीफा देकर लन्दन से भारत आ गए । भारत आकर बाठियाजी कुछ दिन कराची वाले मोहता ब्रदर्स के सिंध स्थित सुगर मिल के मैनेजर पद पर कार्य किये थे। उसके बाद इन्दौर के सेठ सर हुकुमचन्द्रजी ने भी बांठियाजी की व्यापारिक कुशाग्र बुद्धि से प्रभावित होकर अपने यहाँ बुलाया था। श्री बांठिया जी स्वतत्र विचारो के व्यक्ति थे– लेखन एवं अध्ययन मे उनकी विशेष रूचि थी अत इन्दौर की नौकरी छोडकर वे पुन अजमेर आकर बस गए। अजमेर में उन्होने "राजपुताना बुक कम्पनी" एव "बाठिया एण्ड कम्पनी" की स्थापना की थी। पर लिखने–पढने के लिए आपने जमी हुई दुकाने अपने मित्रो को दे दीं। राजस्थानी भाषा एव साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान स्व० सूर्यकरणजी पारीक ने अपनी 'निबन्धावली' में लिखा है –

"वैज्ञानिक क्षेत्र मे डॉ० निहालकरण सेठी, प्रो० पुरुषोत्तम दास स्वामी, श्री हरिगोविन्द गोकुल और श्री कस्तूरमल बांठिया का नाम उल्लेखनीय है। श्री कस्तूरमल बाठिया का व्यापारिक अनुभव बहुत विस्तृत है और आपने वाणिज्य शास्त्र का गंभीर अध्ययन देश और विदेश मे भी किया था। इन्होने महाजनी बही–खाता और बैकिंग पर बडाग्रन्थ लिखा है जो अपने विषय का हिन्दी मे एक ही ग्रन्थ है।"

पद्श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने अपने "दिवगत हिन्दी सेवी" ग्रन्थ मे श्री बाठियाजी को श्रद्धाजलि देते हुए लिखा है –

"स्व० श्री कस्तूरमल बाठिया व्यवसाय तथा वाणिज्य संबधी साहित्य–रचना के क्षेत्र मे अग्रणी स्थान रखते थे। पाश्चात्य देशो की व्यापारिक उन्नति को देखकर ही आपके मानस में व्यापारिक विषयो पर लिखने की भावना जगी थी।

आप के लेख हिन्दी के प्राय सभी प्रमुख पत्रो मे प्रकाशित होते थे। आपके द्वारा लिखित "हिन्दी बही खाता" तथा 'नामा लेखा और मुनीमी" नामक ग्रन्थो की हिन्दी जगत मे सर्वत्र प्रशंसा हुई थी।'

अजमेर के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्य सेवी स्व० श्री चाँदमल जी सीपानी 'उपमिति भव प्रपचा कथा' की भूमिका मे लिखते हैं –

बहुत स्पष्ट है कि भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने छल, लूट व अकारण हमले करके भारत पर कब्जा किया था। अंग्रेज आक्रमणकारियों ने भारत के अनेक राजाओं, नवाबों और जमीदारों के खजाने दिन–दहाड़े लूटे थे और उनके राज को अपने साम्राज्य मे जबरदस्ती मिला लिया था। अंग्रेज अधिकारी भारत के किसानों व कारीगरो का गत सौ वर्षो से निर्मम शोषण करते आ रहे थे। इन्हीं आक्रमणकारी और उपनिवेशवादी अंग्रेजो का साथ देने वाले ग्वालियर के महाराजा सिंधिया ने भी जनता का शोषण करके तथा इसी प्रकार राजाओं व नवाबों के खजाने लूट कर अपना "गंगाजली" राजकोष भरा था। वास्तव में यह कोष जनता की लूट से ही भरा गया था। इसलिए यह जनता का ही धन था। अतएव जनक्रांति में इसका उपयोग कर अमरचन्द बांठिया ने कोई अपराध नहीं किया। उन्होंने तो सही राजनीतिक समझ, उच्च नैतिकता तथा समर्पित देशभक्ति का ही परिचय दिया।

लश्कर के सर्राफा बाजार मे नीम का पेड़ आज भी परम देशभक्त अमरचन्द बांठिया की कर्तव्यनिष्ठा, उनके साहस व क्रांतिकारी विचारो, उनकी शहादत की गौरवगाथा की याद दिला रहा है। अखिल भारतीय बांठिया फाउंडेशन के कानपुर निवासी अध्यक्ष श्री हजारीमल बांठिया ने कानपुर मे अमरचन्द बांठिया की स्मृति में उनकी एक भव्य एवं प्रेरणादायक प्रतिमा स्थापित करने की योजना से राष्ट्र की ओर से भारत मां के इस वीरपुत्र को श्रद्धाजलि अर्पित की है।

१. रघुवीर सहाय का लेख,"ग्वालियर के कीर्ति–कलश, अमरचन्द्र बांठिया"
मध्य प्रदेश संदेश, स्वाधीनता विशेषांक, १५ अगस्त, १९८७

बी/५५, गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली–११००४६

(सन् सत्तावन के भूले–बिसरे शहीद–भाग–२ से साभार)

प्रथम हिन्दी वाणिज्य पुस्तक प्रणेता - स्व० कस्तूरमल बाँठिया

हजारीमल बाँठिया

आज से पचास वर्ष पूर्व भारत में अंग्रेजी बोलने व लिखने मे भारतवासी अपनी शान समझते थे। उस अंग्रेजीयत के युग मे अजमेर निवासी स्व० कस्तूरमल बांठिया ने वाणिज्य विषय की पाठ्यक्रम की पुस्तके सर्वप्रथम हिन्दी में लिखी थीं। उनके बारे में स्व० श्री भंवरमलजी सिंघी ने सन् १९३७ में 'ओसवाल नवयुवक' नामक मासिक पत्रिका के दिसम्बर अंक में लिखा था –

"व्यापार की लाइन मे व्यस्त रहते हुए भी श्रीयुत् कस्तूरमल बांठिया जी ने हिन्दी साहित्य की जो सेवा की वह स्तुत्य है। श्रीयुत बांठिया हिन्दी में व्यापारिक विषयो पर लिखने वाले पहले लेखक हैं जिनकी हिन्दी बही–खाता नामक पुस्तक बहुत प्रचलित है। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा अन्य संस्थाओं की हिन्दी

नर-पुंगव

श्री हजारीमल जी बांठिया

नागपुर

हजारीमल बाँठिया, कानपुर

लगभग तीस वर्ष पहले जब मैं कलकत्ता गया तो भाई श्री हरखचन्द नाहटा ने कहा – भाईजी आज जनसंघी नेता व सांसद श्री विमल कुमार चौरडिया आये हुए हैं, आप भी जनसंघी नेता हैं, चलें उनसे मिल आवें। उसने श्री चौरडियाजी को फोन किया – मेरे साथ समाज सेवी कार्यकर्त्ता श्री हजारीमल जी बांठिया भी आपसे मिलने आ रहे हैं। हम लोग निर्धारित समय पर उनके पास पहुँचे तो बताया भाईजी हाथरस के जनसंघी नेता हैं। श्री चौरडिया जी ने कहा – मैं तो श्री हजारीमलजी बाँठिया, नागपुर वालो को जानता हूं – वे भी बड़े समाजसेवी और धर्मिष्ठ व्यक्ति हैं। अच्छा हुआ दोनों ही हजारीमल बांठिया से मेरा परिचय हो गया और दोनों ही जैसे समाज में प्रतिष्ठित समाजसेवी और अपने–अपने शहरों में अपनी शान रखते हैं।

यह था मेरा पहला नाम का परिचय – श्री हजारीमल बांठिया, नागपुर निवासी से। पन्द्रह वर्ष पहले मैंने बांठिया फाउन्डेशन की स्थापनाकी और यह योजना बनाई कि भारत के समस्त बांठिया परिवार की एक डाइरेक्टरी तैयार की जावे। उसमें उनका संक्षिप्त परिचय व नाम पते वगैरह हो। भोपाल के बांठिया परिवार के परिचय पत्र आये तो पता चला कि श्री मानमल जी बांठिया के पिताजी का नाम भी श्री हजारीमल बांठिया है और वे नागपुर में रहते हैं और नागपुरके ओसवाल व जैन समाज में प्रमुख व्यापारी एव समाजसेवी हैं, साथ में कई धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी भी हैं। मेरी जिज्ञासा बढी और मन में संकल्प लिया – नागपुर जाकर अपने नाम राशि से अवश्य मिलना है। सन् १९९३ में संयोग से नागपुर का डिप्टी कलक्टर श्री जयन्त बांठिया (I.A.S.) था, उसके कई पत्र आये, चाचाजी आप एक बार नागपुर अवश्य पधारे। इसी वर्ष मेरा बम्बई जाना हुआ और वापिस आते वक्त मैं नागपुर ठहर गया – और काका साहब श्री हजारीमल बांठिया से उनके गांधीबाग स्थित मोहताजी की दुकान पर पहली भेंट हुई। काका साहब मोहताजी की हिंगनघाट कपडे मील की इस दुकान के मुख्य–मुनीम थे। और इस पेढी पर मोहता परिवार के फोटू तो टंगे हुए थे ही, साथ मे इनके पिताजी स्व० श्री छोटमलजी बांठिया का भी था, वे भी मोहता–फर्म पर मुख्य मुनीम रहे थे। सेठ लोग उनका बडा आदर करते थे। महाजनी हिसाब–किताब में पूरे पारंगत मुनीम थे और इनकी राय सलाह से मोहता परिवार का कारोबार खूब बढ़ा और वे श्री-संपन्न हो गये। इसी कारण मोहता परिवार ने अपने पूर्वजों के फोटूओं के साथ अपने हितैषी मुनीम छोटमलजी बांठिया को सम्मान प्रदान करने के लिए फोटू टंगवाया।

'श्री बांठियाजी ने बी.काम करने के बाद बिड़ला ब्रदर्स कलकत्ता में नौकरी कर ली थी। यहाँ आप की कार्य –कुशलता और कर्तव्य– निष्ठा से फर्म के मालिक बहुत प्रसन्न रहे और बिडला जी ने आपको ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूसर्स कं०लि० के मैनेजर बनाकर लंदन भेजा और आपने सफलता पूर्वक काम का संचालन किया और लंदन में आपको इण्डियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स का उपाध्यक्ष चुना गया और 'आर्य– भवन का मत्री बनाया। आपको व्यापारिक विषयों पर अच्छा ज्ञान था। आपके परिवार के सदस्य अभी भी कई बिडला ब्रदर्स मे उच्च–उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं। "स्व० बांठिया साहब ने जैन दर्शन पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी और अनुवाद की हैं। परन्तु उनमेसे कुछ ही उनके जीवन काल में प्रकाशित हो सकीं। पुस्तको के अलावा सैकड़ों महत्वपूर्ण लेख तत्कालीन प्रमुख मासिक पत्रो मे भी प्रकाशित होते रहे हैं। यदि उनका सकलन किया जाय तो एक बहुत ही बडी पुस्तक तैयार हो सकती है। सौभाग्य से उनकी लिखी अनूदित पुस्तको की पाण्डुलिपियाँ 'श्री जिनदत्त सूरि मण्डल' अजमेर के पास सुरक्षित होने से उनको प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत–"उपमिति–भव प्रपचा कथा" और "धूर्ताख्यान" बांठिया फाउन्डेशन, कानपुर ने प्रकाशित किया है। जर्मन के भारतीय विद्याविद् डा० जी० बुह्लर के अंग्रेजी में लिखित पुस्तक "हेमचन्द्राचार्य जीवन परिचय" का हिन्दी अनुवाद भी किया है जो चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। आप ने धार्मिक पुस्तको के अतिरिक्त वाणिज्य की भी कई पुस्तके लिखी हैं जो प्राय प्रकाशित हो चुकी हैं, निम्नलिखित हैं–

१. नामा लेखा और मुनीबी–प्रकाशक, बांठिया एण्ड कम्पनी, अजमेर मूल्य १६)
२. कंपनी व्यापार प्रवेशिका– म० भारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर–१९२४
३. व्यापारिक पत्र व्यवहार–हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद।
४. " " "– हिन्दी पुस्तक भण्डार, बम्बई।
५. रूई और उसका मिश्रण–जयाजी राव काटन मिल ग्वालियर,सन् १९२५ ।
६. स्वतत्र भारत की बही–खाता पद्धति पर विचार–बांठिया एण्ड कम्पनी, अजमेर–मूल्य ११)
७. हिन्दी बही-खाता–हरीदास एण्ड कम्पनी कलकत्ता–१९२७ ई०। मूल्य–३।)

कुशल-निर्देश', कलकत्ता, जून १९८७

आचार्य पद्मसागर सूरि

जैन देव की पेढी
पाली (राजस्थान) ३०६४०१

पाली (राजस्थान)
दि० ३०–८–८४

श्री हजारीमल जी बाँठिया
कानपुर

शुभकामना

सिद्धहस्त लेखक श्रीमान् कस्तूरमल जी बाँठिया के द्वारा अनुवादित "उपमिति–भव–प्रपचा कथा" का हिन्दी मे सार–संक्षिप्त मैंने पढा। महान साहित्य शिरोमणी श्री सिद्धर्षिगणी के पात्रों–विचारो को कथा वस्तु को इतने सुन्दर रूप से उन्होंने आयोजित किया है कि कहीं भी खालीपन नजर नहीं आता है। मैं उनको इस शुभ प्रयास के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। और भी इस प्रकार साहित्य सेवा के द्वारा जिन शासन की प्रभावना करते रहे, मेरी यही शुभकामना है।

आचार्य पद्मसागर सूरि

काका साहब सुधारवादी थे। उन दिनो तेरापंथी समाज में बाल दीक्षाएं विशेषकर होती थीं। निरे अबोध बच्चों को बहला–फुसलाकर साधु दीक्षा दे देते थे – फिर जब वे बडे होते, पचास प्रतिशत अपने घरो को लौट जाते थे। काका साहब उन दिनों बीकानेर असेम्बली के एम एल ए थे, साथ में पू लहरचंद जी सेठिया भी एम.एल.ए थे। पूज्य काका साहब 'बाल दीक्षा' न हो इसके विरोध में एक बिल का प्रस्ताव असेम्बली में लाये, जिसको समस्त भारत मे व्यापक समर्थन मिला – सभी शिक्षा–विदो एव न्याय विदो ने इसके पक्ष में राय दी। जन जागरण हुआ – तेरापंथी समाज में विशेषकर खलबली मच गयी। मुझे वे दिन अच्छी तरह याद हैं। काका साहब पर जगह-जगह से तेरापंथियो के दबाव आये– वे इस बिल को वापिस कर लें। किन्तु वे अडिग रहे। एसेम्बली में पूरा समर्थन मिला। वह बिल पास हो गया किन्तु महाराजा बीकानेर को तेरापंथी समाज ने येनकेन प्रकारेण प्रभावित कर दिया था। दीवान साहब के विशेष अनुरोध पर उनको यह बिल वापिस लेना पडा। दीवान साहब ने पूज्यकाका साहब की सूझ–बूझ और कानून की जानकारी की प्रशंसा की और कहा – बॉठिया साहब नैतिक विजय तो आपकी हो गयी है,चाहे बिल पास एसेम्बली मे न हो सका। इस बिल के कारण तेरापंथी समाज मे भी जागृति आयी और अब तो पूरा परिपक्व ज्ञान होने पर ही इस समाज में दीक्षायें होती हैं। यही कारण है कि आज इस समाज में बडे–बडे मनीषी विद्वान हैं और जैनाचार्य श्री तुलसी ने अपने समाज और समस्त भारतीय समाज को नई दिशा दी है।

काका साहब शिक्षा प्रेमी एव समाज सेवी थे। पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज साहब को अंतिम दिनो मे काका साहब ने जो सेवाये अर्पित कीं वह सदा स्मरणीय रहेगी। महाराज साहब के स्वर्गवास के बाद 'जवाहर विद्यापीठ' की स्थापना भीनासर मे की और जवाहर किरणावली के नाम से अनेक पुस्तको का प्रकाशन किया। भीनासर में स्थानकवासी साधु–सम्मेलन आपही की पूर्ण निष्ठा एव लग्न के कारण सफल हुआ। मुझे वह दिन भी याद है जब काका साहब जैन गुरुकुल पंचकूला के वार्षिक उत्सव में अध्यक्ष के नाते पधारे थे। उन दिनों पू जवाहर लाल जी महाराज साहब की समुदाय मे बीकानेर राज्य मे दो ही प्रमुख स्तम्भ थे – पूज्य बाबूजी (भैंरूदान जी सेठिया) और काका साहब। पिछले अनेक वर्षों से उत्तर प्रदेश मे प्रवास के कारण काका साहब से संपर्क कम होता गया। किन्तु पिछले दशक से 'बांठिया डाइरेक्टरी' के कारण काका साहब से कई बार मिलना हुआ। उनको बडी प्रसन्नता हुई – भारत के समस्त बॉठिया परिवार का इतिहास लिखा जा रहा है। मैने उन्हें बताया, समस्त भारत में बॉठिया गोत्र के संख्या में घर एक हजार से अधिक नहीं हैं किन्तु इस गोत्र के घरो की विशेषता है – जहा भी है वे अपने गाव मे प्रमुख हस्ती हैं। अपना विशेष प्रभाव रखते हैं। उदार वृत्ति के हैं। अपने समय के दानी और शूर–वीर जगदेव पवार के वशज होने के नाते इस गोत्र में दान देने की उदारता है। अमर शहीद अमरचदजी बॉठिया के बलिदान, दीवान जसवन्तसिंह जी बांठिया के प्रशासकीय गुणो, श्री कस्तूरमलजी बांठिया की लेखनी को समस्त भारत नहीं भुला सकता। समस्त ओसवाल समाज में ७७ दानवीर अब तक हुए हैं जिनमें भुजनगर वासी तेजपाल बॉठिया का भी नाम है। पूज्य काका साहब ने बताया – 'हमारे पूर्वज भी बाहर से आकर भीनासर मे बस गये थे। छत्ते के व्यापार मे हमारा फर्म भारत में ''मौजीराम पन्नालाल' अग्रणी था। भीनासर की पक्की सडकें भाई जी कानीराम ज़ी ने बनायी थीं। ये आगमों के ज्ञाता थे एवं साधु–साध्वियों को पढाते थे।''

अंतिम दिनों में मैं उनसे कलकत्ता मे भाई शांतिलाल के घर मिला था। पीछे भीनासर मे, जब वे रविवार को दूरदर्शन का कार्यक्रम चि सुमति के साथ देख रहे थे।

पूज्य काका साहब बडे निर्भीक सुलझे हुए विचारों के उदारतावादी मानवे थे। who's who पुस्तक, जिसमें भारत के अग्रणी पुरुषो के परिचय छपते है, मे काका साहब को आदर भाव से स्मरण किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है, चि सुमति भी उनकी यश पताका को फहराने में अग्रणी होकर कार्य कर रहा है।

समाज भूषण सेठ चंपालाल बांठिया स्मृति ग्रन्थ में प्रकाशित
१ मई १९९४

अविस्मरणीय

पूज्य काका साहब

— हजारीमल बाँठिया

पूज्य काका साहब श्री चंपालाल जी बाँठिया से मेरा संबंध बचपन से रहा है। आज से लगभग पचास वर्ष पहले भाई श्री खेमचंद जी सेठिया के साथ उनसे प्रथम बार मिला – जब मैं 'वीर पुत्र' बालोपयोगी मासिक पत्रिका (अजमेर) के संपादक–मंडल में था। मैंने भाई शांति को इसका ग्राहक बनाने के लिए अनुरोध किया तो तुरन्त शांति को बुलाया उसको पत्रिका का ग्राहक, शुल्क देकर बना दिया। कई दिनो बाद मुझे पत्र लिख कर भेजा – 'वीर पुत्र बराबर आता है – चि शांति को बहुत पसद आया है।' वह पत्र आज भी पूज्य काका साहब के हाथ का लिखा तिजोरी में सुरक्षित रखा हुआ है। उनकी जागरूकता व सत्साहित्य के प्रति लगाव इससे स्पष्ट झलकता है।

वि०स० २००० मे हम लोगो ने भारतीय मित्र परिषद् का वार्षिक उत्सव सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में बीकानेर मे मनाया। स्वनाम धन्य सेठ 'बाबूजी' भैरूदान जी सेठिया मुख्य अतिथि थे। स्वागताध्यक्ष थे श्री ज्ञानपाल जी सेठिया और प्राचीन वस्तुओं की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया मेरे पूज्य मामाजी श्री अगरचदजी नाहटा ने। इस अवसर पर आयोजित 'मनोरंजन सम्मेलन' की अध्यक्षता पूज्य काका साहब ने की। काका साहब हम दोनों के इस भव्य कार्यक्रम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने दस हजार रुपये भारतीय मित्र परिषद को देने की घोषणा कर दी जिसका मैं प्रधानमंत्री था – भाई श्री माणकचंद जी सेठिया अध्यक्ष थे।

कई दिनो बाद काका साहब ने मुझे भीनासर बुलाया और दस हजार रुपये ले जाने को कहा। मैंने विनम्रता से मना कर दिया – हम इनका क्या करेंगे ? इस वक्त तो हमारा विद्यार्थी जीवन है – यह सब काम शौक से कर रहे हैं। – कुछ दिनो बाद पढाई छोडकर रोजगार धधे वास्ते – कहा चले जावेंगे ठीक नहीं इन रुपयो की कौन देख–भाल करेगा ? सुप्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार स्व श्री शंभूदयाल जी सक्सैना जो हमारी परिषद् के परामर्शदाता थे – उनके परामर्श से हमने बालोपयोगी शिक्षाप्रद ट्रेक्ट माला प्रकाशित करने की योजना बनायी और पहली पुस्तक 'बालकों के प्रश्न' प्रकाशित की जिसके लिए रु. १५०) मैं काका साहब से लाया और उन्हें विश्वास दिलाया जैसे–जैसे ... लेते जावेंगे। ऐसे थे उदार मना–काका साहब।

एवं धार्मिक विचारो की अच्छी शिक्षा दी गई। आपने जो दुकान में लेन देन होता था उसको बंद कर और स्वतन्त्र भारत में जब लौहयुग आया तो उनको मशीनरी का व्यापार करने की ओर अग्रसर किया। तब से अब तक आप साईकिले, किर्लोसकर एंजिन, विद्युत मोटर, पंखे, सिलाई मशीन, के राजगढ जिले के अधिकृत व्यापारी हैं। आप समाज–सेवी प्राणी हैं और जीवों पर विशेष दया करते हैं।

सेठ वर्धमान मल जी बाँठिया का जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आपने दो विषयों मे एम० ए० किया। बाद में आपने एल एल०बी० किया। आजकल आप नरसिहगढ प्रथमश्रेणी न्यायालय में वकालत करते हैं। आप सतोषी वकील हैं।

सेठ पारसमल जी बाँठिया के सुपुत्र श्री हेमतकुमार बाँठिया का जन्म १२ सितम्बर १९५५ को हुआ। आपने नरसिहगढ महाविद्यालय से एम० काम० किया है। आपको भी व्यापार करने में विशेष रूचि है, और भविष्य मे आप कोई नवीन उद्योग का कार्य करना चाहते हैं।

पूज्य घेवरचंद जी म० सा०

आपका जन्म तारागढ, जो व्यावर से लगभग २० मील की दूरी पर उदयपुर रोड पर स्थित, एक मामूली छोटा कस्बा है, वहीं सवत् १९६८ मे हुआ था। आपके पिता श्री भवानी राम जी बाँठिया और माता श्रीमती नवला बहन थीं। इनके दो बडे भाई श्री सेहसमल जी बाँठिया एव श्री अमोलक चंद सा० बाँठिया थे। श्री अमोलकचंद जी सा० छोटी उम्र मे ही देवलोक हो गये। श्री मान् सेहसमलजी सा० के परिवार में चार भाई एवं दो बहिने हैं। इसके अलावा श्री घेवरचद जी म० सा० के दो बहिने भी थीं श्री केलाबाई एव छगनीबाई।

प्रारम्भिक शिक्षा– संवत् १९८० में व्यावर में श्री मान् पूनमचंद जी सा० खीवेसरा द्वारा सचालित " श्री जैन वीराश्रम" मे न्याय तीर्थ, व्याकरण तीर्थ सिंद्धातशास्त्री की परीक्षा पास कर यहीं अध्यापन कार्य चालू किया। यहां जब सवत् १९९७ में पाठशालाा बंद हो गयी तब आप श्री संवत् १९९७ में बीकानेर पधार गये जहां आपने "श्री अगरचद भैरूदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था" में १७ वर्ष तक शास्त्र लेखन एवं साधु साध्वी जी, वैरागी वैरागिनों को पढाने का कार्य किया। वहां से प्रकाशित "जैन सिद्धांत बोल संग्रह" के सम्पादक मण्डल मे रह कर उपरोक्त बोल संग्रह के ७ भागो का सम्पादन किया। इसके अलावा आचारांग सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र का अनुवाद भी आपने किया, इसके साथ ही साथ आप श्री ने वहां से प्रकाशित भगवती सूत्र के एवम् पत्रवत्रा सूत्र के थोकडो के क्रमशः ६ एवं ३ भागो का सम्पादन भी किया। इसके बाद आप श्री खीचन मे श्री किशन लाल पृथ्वीराज जी मालू के यहां सवत् २०१४ में पधारे। वहां आप श्री ने भगवती सूत्र जैसे महानग्रंथ का अनुवाद ७ भागों में किया। इसके अलावा उत्तराध्ययन दशवैकालिक आदि ग्रंथों का भी अनुवाद किया। आप श्री द्वारा सपादित एवं अनुवादित साहित्य बहुत हीं प्रामाणिक माना जाता था। हर साधु साध्वी आप द्वारा अनुवादित साहित्य देखना चाहते हैं। बीकानेर मे आपने जितना भी साहित्य का अनुवाद एवं सपादन किया वह लगभग सभी अनुपलब्ध हैं। बाकी खीचन में जिन आगमों का आपने अनुवाद किया है वह अब भी सम्यगृदर्शन कार्यालय सैलाना (म० प्र०) में उपलब्ध हैं, वहां से प्राप्त किया जा सकता है। आपका सम्पूर्ण जीवन साहित्य लेखन एवं पठन पाठन में ही गया है। इसके बाद आपकी वैराग्य की भावना जाग्रत हुई और बहुश्रुत श्रमणश्रेष्ठ श्री समर्थ मल जी म० सा० के पास विक्रम संवत् २०१६ माघ सुदी १४ को दराजोडे खीचना में दीक्षा अंगीकार की जिसे लगभग २३ साल हो गये हैं। आप संयम का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन कर रहे हैं।

आपकी प्रथम शादी केकडी में हुई तथा दूसरी शादी १९६८ मे बीकानेर मे श्रीमान् जवाहरमल जी सा० की पुत्री श्री लक्ष्मीकंवर के साथ हुई। दीक्षा की प्रेरणा में उनकी धर्मपत्नी का विशेष झुकाव रहा। उन्हीं की विशेष प्रेरणा से आप भी दीक्षा

बाँठिया, आप शिक्षा विभाग में हैं। मंगलसिंह जी के तीन पुत्र हैं शरद कुमार, प्रदीप कुमार तथा कोमलसिंह।

सेठ बिरदीचंद जी अपने जीवन भर स्टेट के हजारे का काम करते रहे। आपके सुजानमल जी और चंदनमल जी नाम के दो पुत्र हुये, इनमे चंदनमल जी का स्वर्गवास हो गया है।

बाँठिया मुंशी सुजानमल जी आप प्रतिभा सम्पन्न और कार गुजार व्यक्ति हैं। आपका अध्ययन अंग्रेजी और फारसी में हुआ। आप उन व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने अपने पैरों पर खड़ा होकर आशातीत उन्नति की है और क्रमश: अपनी योग्यता ओर बुद्धिमानी से कई जगह कामदार और दीवान रहे। आपका उस समय से राजनीतिज्ञों और अफसरों से अच्छा मेल था। आपको कई प्रशसा पत्र दिये गये हैं। आपको पिपलौदा ठिकाने से बक्षारू जागीर मिली हुई है तथा प्रतापगढ स्टेट से पेन्शन मिल रही है। इस समय आप सीतामऊ में शांति कर रहे हैं, आपका धार्मिक जीवन भी अच्छा है, उधर ओसवाल समाज मे भी आपकी काफी प्रतिष्ठा है। आपके जसवन्तसिंह जी नामक एक पुत्र हैं। आप इस समय सीतामऊ स्टेट मे नायक दीवान हैं। आपकी पढाई बी० ए० तक हुई। आपके शेरसिह जी, सवाईसिंह जी, समरथसिंह जी और विमलसिह जी नामक चार पुत्र हैं। पूरा बाँठिया परिवार स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय का अनुयायी है।

सेठ सूरजमल जी जेठमल जी बाँठिया, नरसिंहगढ़

इस परिवार के मालिको का मूल निवास स्थान बीकानेर है। लगभग संवत् १८८७ में इस परिवार के पूर्वज सेठ लाहोरी चंद जी बाँठिया के पुत्र सेठ हीराचंद जी बाँठिया किशनगढ़ होते हुये नरसिंहगढ आये और उस समय की प्रसिद्ध फर्म गणेशदास किशनाजी की भागीदारी में आपने पोद्दारे का काम आरम्भ किया। १० सालों तक पोद्दारे का काम करते रहे। पश्चात् आपने अपना साहूकारी लेनदेन आरम्भ किया। आप बड़े व्यापार चतुर तथा बुद्धिमान मनुष्य थे। नरसिंहगढ़ स्टेट में आपका अच्छा सम्मान था। आपके सूरजमल जी तथा जेठमल जी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयों ने अपने मान–सम्मान व व्यापार को विशेष उन्नत किया। कपडे के व्यापार में आपने विशेष सम्पत्ति अर्जित की। आप दोनों बन्धु नरसिंहगढ राज्य के सम्मानित व्यापारी और नगर के वजन दार पुरूष माने जाते थे। रियासत के साथ–साथ साहूकारी लेनदेन का बहुत–सा व्यवहार आपके द्वारा होता था। सेठ सूरजमल जी १९३७ मे तथा जेठ मलजी १९४२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ सूरजमल जी के मानमल जी एवं सेठ जेठमल जी के रंगलाल जी नामक पुत्र हुए।

सेठ रंगलाल जी बाँठिया – आपने अपने पिता सेठ जेठमल जी के बाद अपने खानदान की इज्जत व व्यापार को और बढ़ाया। अपने पिताजी की भाँति सरकार व जनता में आपका अच्छा सम्मान था। आपको दरबार मे प्रथम श्रेणी में बैठने का सम्मान प्राप्त था। संवत् १९८५ की अगहन सुदी १५ को ७५ साल की आयु मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लालचंद जी हुए।

सेठ लालचंद जी बाँठिया – आपका जन्म संवत् १९४२ की कार्तिक वदी में हुआ। यहां की जनता व सरकार में आप भी अच्छे सम्माननीय सज्जन माने जाते थे। दरबार में प्रथम श्रेणी में बैठने का आपको सम्मान प्राप्त था। आप नरसिंहगढ म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर व पंचायत बोर्ड के सीनियर मैम्बर थे। आपके यहां इस समय सूरजमल जेठमल के नाम से साहूकारी व्यापार होता था। संवत् २०१८ की जेठ सुदी ७ को ७६ साल की आयु मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके पारसमल जी तथा वर्धमानमल जी नामक दो पुत्र हैं। यह परिवार भी श्वे० जैन साधु मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ पारस मलजी बाँठिया का जन्म संवत् १९८७ में हुआ। आपने हाई स्कूल नरसिंहगढ़ से किया। बाद में क्रिश्चियन कालेज इन्दौर से इन्टरमीडियेट पास किया। बाद में माननीय सेठ लालचंद जी के मार्ग दर्शन में व्यापार, अनुशासन

साध्वी श्री मनीषा जी

२४ नबम्बर १६६३ को जन्मी साध्वी श्री मनीषा जी ने २१ अप्रैल १६८० को नाभा (पजाब) मे अपनी अग्रज डॉ० अर्चना जी म० के सान्निध्य मे भागवती जैनेन्द्री प्रवज्या को अंगीकार किया। आपके जीवन में व्यावहारिक व धार्मिक ज्ञान की आराधना व तप साधना निरन्तर प्रवृत्तमान है।

आप प्रबुद्ध प्रवक्ता, मिलनसार, हँसमुख, सरल व उदारवादी साध्वी रत्न हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन जनकल्याण व प्राणी मात्र की सेवा मे समर्पित है। धार्मिक कार्यक्रमों को आयोजित करने व सफल बनाने मे आपकी भूमिका सदैव प्रशंसनीय व सराहनीय होती है। आप जहां भी जाती हैं वहीं आबाल वृद्धो मे धर्म के प्रति अपूर्व जागृति पैदा करती हैं। बच्चे आपका सान्निध्य लाभ प्राप्त करके अपार संतोष व सुख का अनुभव करते हैं। आपके सान्निध्य मे बच्चों के धार्मिक शिविर आयोजित होते रहते हैं। आपने बॉठिया परिवार मे जन्म लिया है।

श्री सुधीर मुनि जी म०

२४ अप्रैल १६६६ को जन्मे श्री सुधीर मुनि जी लघुवय मे ही १३ दिसम्बर १६७६ को होशियारपुर (पंजाब) मे श्रमणसघीय व्याख्यान वाचस्पति, कविरत्न श्री सुरेन्द्र मुनि जी म० के सान्निध्य में निर्ग्रन्थ परम्परा में ऋषि पुत्र बन गये। व्यावहारिक ज्ञान के साथ–साथ आगमो का तलस्पर्शी अध्ययन जीवन मे निरन्तर गतिमान है।

आप आशुकवि, तपस्वी व ओजस्वी प्रवक्ता हैं। आपकी वाणी मे ओज, प्रवाह, और भावावेग है जो श्रोताओं के मन–मस्तिष्क को सहसा आन्दोलित कर देता है। आपके सुरीले व भावना–प्रधान गीत, भजन श्रवणकर जनता आत्मविभोर हो जाती है।

प्रखर प्रज्ञा, तीव्र स्मृति व धारणा के धनी आप जितने प्रेरणाशाली व प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हुये हैं उतने ही आप एकांत प्रिय व अल्पभाषी हैं। आपने बाँठिया परिवार में जन्म लिया है।

साध्वी श्री डॉ० अर्चना जी म० सा०

विदुषी महासती साध्वी डॉ० अर्चना जी का जन्म मेरठ में २१ जनवरी १९५५ ई० को हुआ था। आपके पिता श्री कस्तूरीलाल जी व माता श्री मती महिमा देवी जैन बॉठिया गोत्र के ओसवाल जैन थे। १५ वर्ष की आयु में ही दि० ३० नवम्बर १९७० को स्व० आ० स० आनन्द ऋषि जी से आपने दीक्षा ग्रहण की। महासती पन्नादेवी जी म० की पौत्र शिष्या महासती सरला जी म० आपकी गुराणी थीं। आपने शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत उन्नति की और "जैन दर्शन के आलोक में मध्ययुगीन सन्त काव्य" पर पी– एच० डी० की उपाधि भी बम्बई विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आपका अनेक भाषाओ पर पूर्ण अधिकार है और साहित्यिक ज्ञान--गरिमा के साथ आप जैनागमों की गहन परिज्ञाता हैं। पंजाब, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि भारत के अनेक स्थलो की आपने यात्रा की है। मानव मूल्यो के संरक्षण की दिशा मे आप सदैव आगे बढ़ती रही हैं। आपका परिवार जैनधर्म के लिये समर्पित है। आप चार भाई बहिन (डॉ० अर्चना जी म०सा०, सुभाष मुनि जी म०, मनीषा जी म०, तथा सुधीर मुनि जी म०) साधु एवं साध्वी जीवन अपना कर तप एवं वैराग्य साधना मे रत हैं।

युवा मनीषी श्री सुभाष मुनि

१६ जनवरी १९५६ को जन्मे श्री सुभाष मुनि जी ने जीवन के उषाकाल में ही ६ मई १९७५ को नाभा (पंजाब) मे श्रमण संघ के तेजस्वी संत, व्याख्यान वाचस्पति, कविरत्न श्री सुरेन्द्र मुनि जी म० के शिष्यत्व मे श्रमणीय महासम्पदा ग्रहण की। प्रवज्या स्वीकार कर लेने के पश्चात् सम्पूर्ण जीवन ज्ञान, शील व गुरू सेवा को समर्पित कर दिया। स्वाध्याय, ध्यान, विनय व सेवा आदि आभ्यन्तर तप की अहर्निश साधना– आराधना करके आपने मूर्धन्य चिंतक व विद्वान संत के रूप में पहचान स्थापित की है।

आप जैन श्रमण की आदर्श त्याग परम्परा, समन्वयवृत्ति व योगसाधना के साक्षात प्रतीक हैं। स्वभाव से निस्पृही, उदारवादी, सेवाशील, मिलनसार व प्रभावक प्रवक्ता श्रमण हैं। आपके जीवन में प्रज्ञा और मेधा का, श्रद्धा और साधना तथा भावना और तर्क का अनूठा संगम है। सेवा व शिक्षा के क्षेत्र में जागृति प्रेरणा देकर कुछ कर डालने की उत्कट ललक है। अल्पकाल में ही आपकी प्रेरणा से अनेक क्षेत्रों में स्कूल, हॉस्पिटल व डिस्पेंन्सरी आदि संस्थाये सफलता से गतिशील हैं। आपने बाँठिया परिवार में जन्म लिया है।

और इसी नाम से विख्यात हुई। एक वर्ष बीकानेर मे रहने के बाद अपनी गुरुणी के साथ ग्रामोग्राम विहार करने लगीं और जैन-सूत्रों का अभ्यास प्रारभ कर दिया। १२ वर्ष तक जोधपुर, लोहावट, और फलौधी में स्थिरवास कर अपनी पढाई की और जैन आगमो का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त कर एक विदुषी व्याख्यान-दात्री बन गई और निर्भीकता से सार्वजनिक व्याख्यान देने लगीं। श्रोतागण जो भी इनका मधुर व्याख्यान सुनते, गद्-गद् हो जाते।

साध्वी श्री चन्द्रश्री जी ने समस्त भारत का पैदल विहार कर सब तीर्थों की यात्राये की और सन् १६६५ में मेरे विशेष विनती पर हाथरस, चातुर्मास के लिये पधारीं और हमारे नवीन 'अतिथि गृह' मे चातुर्मास जो मेरे घर के पीछे है, किया। इस चातुर्मास मे खूब धर्म प्रभावना हुई और मेरी बहिन श्रीमती मीनाबाई चोपडा व मेरी धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया ने आठ दिन का उपवास (अट्ठाई) किया जिसका वर घोडा (जलूस) सब शहर की परिक्रमा लगाकर जैन-मन्दिर में "निर्वाण के लड्डू" चढाये। उस वक्त सभी नाते-रिश्तेदार पधारे थे।

हाथरस से विहार कर मध्यप्रदेश के कई शहरो में चातुर्मास संपन्न कर कलकत्ता पधारीं और वहां भी तीन यशस्वी चातुर्मास सपूर्ण किये और उसके बाद खडगपुर (प० बगाल) अपनी दो शिष्याओ के साथ पधारीं। आपने अपने उपदेश से आगरा की सेठ बाग मे स्थित "दादावाडी" का जीर्णोद्धार कराया। कंपिल में नाकोडा भैंरु की मूर्ति स्थापित कराई और एक कमरा बनवाया। महरोली दादावाडी के मन्दिर मे श्री जिनकुशलसूरि जी की मूर्ति प्रतिष्ठापित कराई और आप ही के उपदेश से खडगपुर मे नया मन्दिर का निर्माण हुआ जिसका लाभ सेठ चादमल जी गोलचा ने लिया। फलौदी मे जैन ज्ञान भडार की स्थापना की। वृद्धावस्था के कारण १२ वर्ष खडगपुर मे ही स्थिरवास किया- खडगपुर जैन समाज ने उनकी बहुत सेवा की और अंत में ५५ वर्ष की सयम यात्रा पूर्ण कर वि० स० २०४१ मिती वैशाख सुदी ३ (अक्षयतृतीया) को स्वर्ग सिधार गईं। मैं व मेरा परिवार प्रतिवर्ष उनके दर्शन करने जाते थे। अन्तिम समय में चि० सुरेन्द्र कुमार बाँठिया खडगपुर में उनके पास मौजूद थे और उसने ही उनका अंतिम संस्कार कर पुण्य अर्जित किया। इस वक्त इनकी एक शिष्या साध्वी श्री दिव्यश्री जी वृद्धावस्था के कारण वहीं स्थिरवास कर रहीं हैं।

- हजारीमल बाँठिया

श्री बागमल जी बाँठिया

सार्वजनिक एव राजनीतिक क्षेत्रों मे पर्याप्त समय तक कार्यशील रहने वाले श्री बागमल जी बाँठिया का जन्म ६ अक्टूबर सन् १९२४ ई० को हुआ। आपके पिता श्री कल्याणमल जी बाँठिया समाज के एक प्रतिष्ठित पुरुष थे। रिटायर होने के समय वे कोटा स्टेट के एकाउन्टेण्ट जनरल थे। समाज सुधार तथा खादी के प्रचार मे उनकी बहुत रुचि थी।

श्री बागमल जी के सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ स्कूल के दिनों की वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा स्काउटिंग के सेवा-कार्य से हुआ। इसके कुछ समय पश्चात् स्वाधीनता-संग्राम की गतिविधियो में भाग लेने लगे जैसे प्रभात फेरी,

परम पूज्या साध्वी श्री चन्द्रश्री जी महाराज

परम पूज्या साध्वी श्री चन्द्रश्री जी महाराज साहब का सांसारिक नाम सुन्दरबाई था, जिनका जन्म वि० स० १९६६ मिती चैत सुदी १३ (महावीर जयन्ती के दिन) रायपुर (म० प्र०) के सेठ सुगनचद जी मालू के घर हुआ था। मालू परिवार मूलत बीकानेर के थे– व्यवसाय निमित्त रायपुर आकर बस गये थे। श्री सुगनचंद जी के तीन पुत्रियां भी हुई– जिनमे सबसे छोटी सुन्दरबाई थीं। जैसा उनका नाम वैसा ही उनका रूप अत्यन्त सुन्दर था। सेठ कन्हैयालाल जी सेठ सुगनचंद जी के बडे भाई थे। सेठ कन्हैयालाल जी के पुत्र श्री रतनलाल जी हुये जो बीकानेर के सेठ कस्तूरचंद जी छाजेड के यहा ब्याहे गये थे और सेठ रतनलालजी के कोई संतान नहीं हुई और उनकी विधवा पत्नी ने अपने ही मकान में रहने वाले श्री जालमचंद जी को जो मूलत खीचन फलौधी के थे ३५ वर्ष पूर्व गोद ले लिया। श्री जालमचंद जी बडे सज्जन पुरुष हैं और इनके स्वय का भरा–पूरा परिवार है। रिश्ते मे मेरे मामा के लड़के (भाई) लगते हैं। इतने वर्षो बाद भी मुझसे मधुर रिश्ता बनाये हुये हैं।

सुन्दरबाई के माता–पिता बचपन में ही स्वर्ग सिधार गये अत तीनो बहिनों का विवाह सेठ कन्हैया लाल जी मालू जो इनके ताऊ जी थे, ने किया। मालू परिवार उस वक्त ओसवाल समाज में धनाढ्य परिवार था और धार्मिक कार्यों मे अग्रणी था। इन्हीं कारणों से सुन्दरबाई के दिल मे धार्मिकता के अंकुर प्रस्फुटित हो गये थे। सुन्दरबाई का विवाह १२ वर्ष की आयु मे बीकानेर के सेठ बुलाकीचद जी बाँठिया के साथ हो गया। बुलाकीचद जी उस वक्त अपने बडे भाई सेठ कस्तूरचद जी के साथ कल्कत्ता में "बुलाकीचन्द भैरुदान" नाम से कपड़े की फर्म चलाते थे। सुन्दरबाई के १५ वर्ष की आयु में एक पुत्री भी हुई जो जल्दी ही स्वर्ग सिधार गई। संवत् १९८० से बुलाकीचन्द जी अस्वस्थ रहने लगे और संवत् १९८१ मे 'लकवा' से ग्रस्त हो गये। मेरा जन्म भी इसी वर्ष हो गया था– और जब मै ६ महिना का हो गया मुझे गोद में खिलाते थे। श्रीमती सुन्दरबाई को इशारा किया, इसी को गोद तुम लेना। अंत मे संवत् १९८२ जेठ वदी ४ को सेठ बुलाकीचंद जी का स्वर्गवास हो गया और श्रीमती सुन्दरबाई बाल–विधवा हो गई। वैधव्य का अपार दुःख उनको झेलना पडा। श्रीमती सुन्दरबाई स्वभाव से कुछ तेज– तर्रार थीं अत परिवार मे उनकी किसी से पटी नहीं। "बुलाकीचंद भैरुदान" फर्म को बंद कर अपने हिस्से का रुपया, जेवर, चादी के बर्तन, और एक मकान और एक कोटडी बंटवारे में ले ली। उसके बाद इस फर्म का नाम 'कस्तूरचंद फूलचद' हो गया जिसमे मेरे पिताजी भागीदार बने।

श्रीमती सुन्दरबाई ने पिताजी सेठ फूलचदजी को स्पष्ट कह दिया– मुझे हजारीमल को गोद दे दो नहीं तो मैं अपना सब धन धर्म– ध्यान में खर्च कर दूँगी। एक कोटडी दीक्षा लेने से पूर्व बीकानेर के खरतरगच्छीय श्री सुगन जी महाराज के उपासरे को दान कर दी और उसपर 'सेठ केशरीचद बुलाकीचंद बाँठिया की ओर से भेट' का शिलापट्ट लगा दिया। दूसरा पत्थर गंगाशहर (बीकानेर) के जैन श्वे मन्दिर में एक कमरा बनाकर लगवाया। कमरे के निर्माण में रु० ५००) दिये। अब यह कोटडी श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ सघ के अधीन है, जिसके अध्यक्ष सेठ हीराचंद जी खजाची और मत्री श्री तनसुखराज नाहटा हैं। अंत में पिताजी को अपनी चाची श्रीमती सुन्दरबाई की बात माननी पडी और मुझे (हजारीमल) वि० स० १९८५ मिती पोह सुदी १५ को सेठ बुलाकीचंद जी के पक्ष मे गोद दे दिया। उस वक्त श्रीमती सुन्दरबाई ने बड़ा भोज, जीमनवार, भाईपा किया और मुझे गोद लेने की खुशी में बहुत रुपया और जेवर बांटा।

इसी वर्ष में खरतरगच्छीय प्रवर्तनी साध्वी श्री प्रतापश्री जी अपनी शिष्याओं के साथ बीकानेर में पधारीं और सुगन जी के उपासरे में विराजीं। श्रीमती सुन्दरबाई साध्वीयों की संगत में दिन–रात रहने लगीं और उनके मन में वैराग्य के भाव अंकुरित हो गये और वि० स० १९८५ माघ सुदी ५ (बसन्त पंचमी) को जैन–प्रवज्या, दीक्षा व्रत लगभग २० वर्ष की आयु मे अंगीकार कर लिया और साध्वी श्री ऋद्धि–श्रीजी की शिष्या घोषित हुई और इनका नाम साध्वी श्री चन्द्रश्री जी रखा गया

श्री मानमल बाँठिया

श्री मानमल बाँठिया नागपुर निवासी प्रमुख समाज सेवी श्री हजारीमल बाँठिया के सुपुत्र है। इनका जन्म १४ नवम्बर १६३२ को हुआ। जब ये अपने मा के गर्भ मे थे– उस समय सातवे माह मे इनकी माता ने अठाई की तपस्या की थी। पूरा परिवार धार्मिक संस्कारो का एव समाजसेवी है। नागपुर विश्वविद्यालय से वाणिज्य मे विशेष योग्यता के साथ १६५३ में स्नातक बने, कानून की पढाई की, बैंक के अतिरिक्त शासकीय सेवाओ मे उच्च अधिकारी के पद पर ४० वर्ष तक उल्लेखनीय सेवा की। प्रशासकीय या राजनैतिक दवाव मे अवैध कार्य न करने के कारण इन्हे कडी परीक्षा देनी पडी पर वे सदैव अन्याय के विरुद्ध सफल हुए। शासन ने इन्हे कई प्रकार से अवैध रूप से परेशान किया परन्तु वे विचलित नहीं हुए।

सामाजिक कार्य एव धर्म मे आस्था के कारण इनका काफी सम्पर्क एवं सम्मान है। औद्योगिक विकास मे इनका उल्लेखनीय योगदान है। शासन के लघु उद्योग निगम, वस्त्र निगम, हस्तशिला निगम मे उच्च पदों पर रहने के साथ ही बैतूल, राजगढ आदि पिछडे क्षेत्रो मे भी कार्य किया।

सत्य और न्याय के प्रति इन्हे विश्वास है तथा इनके तीन पुत्र, २ पुत्रिया सभी विवाहित हैं एव सफल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इनके छोटे पुत्र चि० सजय विडला जी के सतना सीमेंट मे (चार्टर्ड इजिनीयर) उच्च पद पर हैं। न्दौर मे वर्तमान में धार्मिक कार्य के अतिरिक्त समाज सेवा मे लगे हैं। पद और प्ररिद्धि से सदैव दूर रहना चाहते हैं।

धर्म-निष्ठ श्राविका श्रीमती जमनाबाई डागा

धर्म–निष्ठ, धर्म–परायणा श्राविका श्रीमती जमनाबाई डागा (धर्मपत्नी स्व० सेठ रतनलाल जी डागा, वीकानेर निवासी) का जन्म वि० स० १६७७ भादवा सुदी १४ (अनन्त चतुर्दशी) के दिन वीकानेर मे स्वनाम धन्य सेठ स्व० फूलचद जी बाँठिया के घर हुआ था। १२ वर्ष की आयु मे स० १६८६ वसत पचमी को डागाजी के साथ विवाह हुआ।

यह डागा परिवार जेसलमेरिया डागा के नाम से सुप्रसिद्ध है। इस परिवार के पूर्वज जेसलमेर मे वहा के महरावल से अनवन होने के कारण बीकानेर आकर बस गये थे। इस परिवार ने जेसलमेर मे एक विशाल जैन मन्दिर का निर्माण कर प्रतिष्ठापित किया था, जो आज भी मौजूद है। इस परिवार की खरतरगच्छीय जैन श्वेताम्बर परम्परा रही है।

श्री रतनलाल जी डागा ने कलकत्ते में प्लास्टिक के व्यवसाय मे खूब उन्नति की और धन व यश कमाया। इनके स्वर्गवास को हुये बीस वर्ष हो गये हैं और आप दादा गुरु के परम निष्ठावान भक्त थे। इस परिवार की फर्म मै० किशनचद मैरुदान डागा की बीकानेर में इतनी साख थी कि बीकानेर स्टेट ने इनको अपना मानद खजाची का पद दिया।

जलूस तथा सभायें। अन्याय के प्रति आक्रोश तथा उनके विरुद्ध आवाज उठाने की प्रवृति उनमें आरम्भ से ही थी। वे गांधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी छात्रों की भागीदारी चाहते थे।

सन् १६४१–४२ मे जब आपने वर्धा कालेज में प्रवेश लिया तब तक वर्धा स्वतन्त्रता आंदोलन का केन्द्र बन चुका था। वहां श्री बागमल जी अनेक कांग्रेसी नेताओं के सम्पर्क में आये और कांग्रेस अधिवेशन मे स्वयं–सेवक के रूप मे कार्य किया। इसी समय इन्होंने खादी पहनना एवं चरखे पर सूत कातना आरम्भ कर दिया। कालेज मे उस समय प्रधानाचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल से भी उनके अच्छे सम्बन्ध हो गये। लगभग इन्हीं दिनों बागमल जी ने गांधी जी के दर्शन वर्धा आश्रम मे किये।

सन् १६४२ मे जब "भारत छोड़ो" आन्दोलन आरम्भ हुआ तो बागमल जी ने अनेक प्रदर्शनों तथा सभाओं में भाग लिया और आन्दोलन का प्रचार किया। आप गिरफ्तारी से बचते हुए अनेक स्थानो पर गये। कोटा पहुँच कर वहां कालेज में हड़ताल कराने के प्रयत्न में १७ सितम्बर को गिरफ्तार कर लिए गये। जेल में राजनीतिक कैदियो को मिलने वाली सुविधाओं के लिए भूख हड़ताल भी की जो सफल हुई। ५ नवम्बर को आप रिहा कर दिये गये। सरकार द्वारा राजनीतिक गतिविधियों को रोकने की दृष्टि से बन्द किया गया वर्धा कालेज फरवरी मे पुनः खुल गया। सन् १६४३ में वर्धा स्टूडेन्ट्स कांग्रेस की स्थापना हुई जिसमें आप अध्यक्ष बनाये गये। इस संस्था का प्रमुख कार्य छात्रों को साम्यवादी ताकतो से मुक्त करना था। १६४३–४४ मे आप कालेज यूनियन के साहित्यिक सचिव तथा १६४४–४५ में अध्यक्ष रहे। इस अवधि मे आपने कालेज के विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया। १६४५ में आप एल–एल० बी० हेतु लखनऊ आये। वहां छात्रसंघ मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कुछ समय बाद आप लखनऊ स्टूडेन्ट्स कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित कर लिए गये। आन्दोलनो में भाग लेते समय आपको पुलिस द्वारा लाठी–चार्ज में चोट भी आयी।

इस समय केन्द्र में कांग्रेस की अन्तरिम सरकार बनी और उत्तर प्रदेश में भी असैम्बली के चुनाव हुए। लखनऊ छात्रसंघ ने कांग्रेस के पक्ष में प्रचार किया जिसके मध्य बागमल जी सर्वश्री रफी अहमद किदवई, चन्द्र भान गुप्त, त्रिलोकी सिंह, केशव देव मालवीय, व फीरोज गांधी आदि के सम्पर्क मे आये। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित से भी काफी अच्छे सम्बन्ध बने। आप इसी दौरान डॉ० राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, और आचार्य नरेन्द्र देव के सम्पर्क मे भी आये और समाजवादी विचार धारा की ओर आकर्षित हुए किन्तु कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी द्वारा समाजवाद लाने मे ढील–ढाल के कारण आपकी रुचि इस तरफ से हट गई। फिर कुछ समय तक रूसी हितो को प्राथमिकता देने वाली आर० सी० पी० आई० की सदस्यता ग्रहण की पर इस पार्टी से आपको मानसिक संतोष नहीं मिला और आपने मजदूर आन्दोलनों में भाग लेना आरम्भ कर दिया।

१६४७ मे एम काम, एल एल बी कर लेने के पश्चात् आप वापस कोटा लौट आये। १६४६ तक पत्रिकारिता का कार्य भी किया, फिर १६५० में आप ने एक साप्ताहिक पत्र "मशाल" आरम्भ किया। इसके पश्चात् १६५३ तक का समय बड़ी कठिनाई से गुजारा। १६५३ से १६६६ तक दिल्ली में पुन पत्रिकारिता की। फिर एक प्रेस लगाया किन्तु घाटे के कारण वह भी बंद करना पड़ा।

१६७१ मे पिताजी के देहावसान के कारण पुन कोटा लौट कर एक छोटा–सा धधा आरम्भ कर लिया था उसी से आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। विवाह किया ही नहीं था अत परिवार का भार शुरू से ही नहीं रहा।

१६७७ से इण्डियन एक्सप्रेस के कोटा–प्रतिनिधि के रूप मे भी आप कार्य कर रहे है। बीच मे "युगदर्पण" नाम से एक पाक्षिक पत्र भी निकाला था किन्तु अच्छे सहयोगी न मिल पाने से यह भी बंद करना पड़ा।

आपको स्वतत्रता संग्राम सेनानी के रूप मे मान्यता मिली है और सरकार ने ताम्रपत्र भी भेट किया है। आपको इस बात का दु ख है कि सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियों की भी जेल की अवधि के आधार पर श्रेणियां बना दी है

नहीं हाथरस में त्यौहार मनायेंगे या कानपुर। इस तरह डबल राखी भेज रही हूँ, जहां भी रहें शुभ मुहूर्त मे प्रेम से राखी बांध लें। मुझे दो राखी का इंतजार सदा रहता है, एक भवरीबाई का, दूसरा एडिनवर्ग (यू० के०) की श्रीमती मजू अग्रवाल– उनकी भी राखी, आज तीस वर्ष बीत गये– रक्षाबंधन से ठीक एक दो दिन पहले हाथरस व कानपुर आ जाती थी। तीसरी कानपुर की धर्मनिष्ठ बहिन श्रीमती पद्मावेन अग्रवाल का– पहले तो वह घर पधार कर राखी बाध जाती थी, किन्तु इधर दो–चार वर्ष से क्रम टूट गया, उनका बंगला दूर हो गया मेरे आने–जाने के कार्यक्रम का उनको पूरा पता नहीं रहता।

हाँ तो भवरीबाई मेरी सबसे बडी भानजी थी– बीकानेर में यह नियम रहा, लडकी का प्रथम प्रसव पीहर में ही होता है अत उसका जन्म मेरे बीकानेर स्थित 'बाँठिया भवन' कोचरों के चौक मे हुआ। पहली सतान होने के कारण नानणे व दादणे दोनों जगह सर्वत्र खुशिया छा गई। बधाइयां बटने लगीं। बीकानेर मे अक्सर पहली सतान का नाम पुत्र हो तो 'भँवरलाल' रखा जाता है और पुत्री हो तो 'भवरीबाई'। इस तरह डागा और बाँठिया दोनो परिवारों के ज्योतिषी पडित श्री धरनीधर जी ने इस बालिका का नाम 'भवरी' ही घोषित करते हुए, मेरी बहिन जमनाबाई की सास श्रीमती फूलकुमारी (धर्मपत्नी सेठ भैरुदान जी डागा) को कहा–

रतन की मा 'भवरी' का गृह नक्षत्र बहुत तेज एव शुभ है, अगर पुत्र रूप मे पैदा होती तो बाप को मालोंमाल बना देती, किन्तु जिस घर में जावेगी ससुराल पक्ष को मालामाल कर देगी। ज्योतिर्विद् पडित धरनीधर जी की भविष्यवाणी सत्य हुई।

मेरा विवाह सन् १६४० में कलकत्ता मे हुआ। उस वक्त भवरी तीन साल की रही होगी, जमनाबाई अपने साथ कलकत्ता लाई थी। भवरी बाई की शिक्षा तो साधारण ही हुई किन्तु अपनी व्यवहार कुशलता से इतना परिपक्व ज्ञान हो गया था कि मानों वे पोस्ट ग्रेजुएट विदुषी हैं। भवरी अपनी दादी व नानी दोनों की बडी दुलारी रहीं– दोनो के ही कंठ भंवरी को याद करते सूख जाते थे। अपने दादाजी के साथ बचपन में ही अनेक तीर्थों व पर्यटन केन्द्रो की यात्राएँ की थीं।

भंवरीबाई भाग्य शालिनी थी। गुरुदेव की कृपा से उसे अच्छा घर और वर मिला। इसका विवाह उस वक्त की रीति रिवाज के अनुसार बाल्यावस्था मे कलकत्ते के मूर्धन्य समाज सेवी एव साडी व्यापार के कुशल व्यापारी श्री रिखबदास जी भसाली के साथ हो गया। दो पुत्र और दो पुत्रियो को जन्म दिया। सभी समाज के प्रतिष्ठित घर–घरानो में ब्याहे गये हैं। पुत्र, पौत्र, पौत्रियां, पुत्रवधुओं, दोहित्र एवं दोहित्रियो से भरा–पूरा परिवार और हम सब परिवारी–जनो को नेत्र–अश्रुपूरित–गमगीन करके गई हैं।

भंवरीबाई एक धर्मपरायण महिला थीं– धर्म मे रुचि थी, साधु संतो की बहुत सेवा करती रहती थीं, दया व दान की प्रतिमूर्ति थीं। कई बार कम्पिल तीर्थ की यात्राये कीं, अपने पास से सदा अस्पताल में दवा के लिए रुपये देती रहती थीं। भवरी बाई की प्रेरणा से कम्पिल मे एक विशाल विकलांग शिविर लगाया गया था जिसमें वह स्वयं पूरे परिवार के साथ कम्पिल गई, अपने हाथो से विकलांगो की सेवा की।

समस्त जैन तीर्थों की यात्रा के साथ–साथ वे अर्हत सघ के आचार्य श्री सुशीलकुमार जी महाराज जब भी कलकत्ता पधारते भंसाली जी के निवास पर ही ठहरते उस वक्त भवरी बाई की सेवा सुश्रुषा देखते ही बनती थी। 'वीरायतन' परिवार से वर्षों जुड़ी रहीं। पूज्य उपाध्याय श्री अमरमुनि जी महाराज के प्रवचनों का खूब लाभ उठाया और वीरायतन को अपनी सेवाये दीं। इधर कुछ हार्ट व शुगर की शिकायत होने से भारी शरीर होने की वजह से चलने–फिरने मे असुविधा रहने लगी

श्रीमती जमनाबाई ने समस्त भारत के अनेक तीर्थों व जैनेतर तीर्थों की कई बार अपने परिवार के साथ यात्रायें की और कंपिल, वीरायतन, दादावाडी, महोरोली, आदि तीर्थों में धर्मशाला में कमरे बनवाकर समर्पित किये।

श्रीमती जमनाबाई भरा–पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आपके दो पुत्र श्री तनसुखराज डागा एवं श्री मोहनलाल डागा, पौत्र श्री मनोज, अभिषेक एव अक्षय हैं। आपके चार पुत्रियां श्रीमती भवरीबाई भंसाली, श्रीमती चंद्रावती (पुष्पा) बोथरा, श्रीमती चन्द्रा बराडिया एव श्रीमती निर्मला सुराणा सुप्रसिद्ध व्यावसायिक घरानो एवं धर्म संस्कारो से ओत–प्रोत परिवारों मे ब्याही हुई हैं।

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री तनसुखराज डागा– व्यवसाय से चार्टर्ड एकाउन्टेंट एवं इनकेव इंडस्ट्रीज लिमिटेड मे इस समय सीनियर वाइस प्रेसिडेन्ट के साथ सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं और राजगृह की "वीरायतन" जैसी विशाल आकार की सस्था के प्रधानमंत्री हैं। आपके बडे दामाद श्री रिखबदास जी भंसाली भी बडे समाजसेवी हैं और कलकत्ता की कई सस्थाओ के अध्यक्ष एव मत्री हैं। श्रीमती जमनाबाई के एक मात्र अनुज कानपुर के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हजारीमल बाँठिया हैं। एक मात्र बहिन श्रीमती मीनाकुमारी चोपडा– जो उज्जैन निवासी श्री रतन जी चौपडा को ब्याही हुई हैं। जैन जगत के जाने –माने विद्वान श्री अगरचद जी नाहटा–श्रीमती जमनाबाई के कनिष्ठ मामाजी थे।

श्रीमती जमनाबाई के निधन से बीकानेर की सुगनजी उपासरे की श्री जैन महिला मण्डल एवं वीरायतन की जैन श्राविका मण्डल की अपार क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। हम्पी (कर्नाटक) तीर्थ के योगीराज श्रीमद् सहजानन्दघनजी महाराज एव वीरायतन के गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनि जी के प्रति आपकी असीम भक्ति एवं श्रद्धा रही। इनका देहावसान १० सितम्बर को सांयकाल साढे पाच बजे हुआ। अन्तिम घडी में सारा परिवार उपस्थित था और आचार्य श्री साध्वीजी चदनाजी महाराज ने एक घटा पूर्व फोन से अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया था।

कुशल निर्देश | *राजकुमार जैन*
सितम्बर, १९९२ | ५२/१६ शक्कर पट्टी, कानपुर–१

मेरी भानजी - भंवरी बाई

मेरे दो बहिनें– बडी श्रीमती जमनाबाई डागा जिसके चार पुत्रिया और दो पुत्र– छोटी बहिन मीनाकुमारी चौपडा जिसके चार पुत्रियां और एक पुत्र। इस तरह आठ भानजी और मैं ही इनका अकेला मामा। इन भानजियो में सबसे ज्येष्ठा थी– श्रीमती भँवरीबाई भंसाली जो यकायक अपनी जीवन यात्रा पूरी करके कलकत्ता महानगर मे ता० १३ अगस्त १९९५ को शाम साढ़े सात बजे सबसे बोलती–बतलाती हृदयगति रुकने से चल बसी और अग्नि संस्कार १४ अगस्त १९९५ को दिन मे हुआ।

१४ अगस्त को प्रात टेलीफोन की घंटी बजी– और किसी सज्जन ने तपाक से सूचना दी कि श्री रिखबदास जी भंसाली की धर्मपत्नी कल रात को चल बसीं। मैंने पूछा क्या भँवरीबाई? उन्होंने हाँ कहकर फोन रख दिया। यह सुनकर अवाक रह गया– दिल और दिमाग दोनों सुन्न हो गये। विश्वास नहीं हुआ, अभी–अभी ८ अगस्त को भंवरीबाई ने स्वयं का लिखा एक नहीं दो पत्र राखी के डोरे के साथ एक हाथरस, एक कानपुर आया, लिखा मामासा आप बहुत घूमते रहते हैं। पता

श्रीमती मगनबाई बॉठिया के एक ज्येष्ठ भाई श्री अभयराज जी नाहटा का भी जवानी मे ही देहावसान हो गया– जिनके नाम से आज भी उनकी स्मृति सजोये– बीकानेर मे श्री अभय जैन ग्रथालय खडा है। एक छोटा भाई बचपन मे ही चल बसा था। अब चार भाइयो के बीच मे मगनबाई अकेली बहिन रही और मैं अकेला भानजा। श्रीमती मगनबाई बाँठिया को अपने चारों भाइयों से बडा सत्कार व प्रेम मिला और चारों भावजे भी श्रीमती मगनबाई बाँठिया के हुक्म में विनम्र रहीं। अब सिर्फ एक ही भाभी जिन्दा रही हैं।

श्रीमती मगनबाई का विवाह १२ वर्ष की अवस्था में ही श्री फूलचन्द बॉठिया के साथ हो गया। कालान्तर में दो पुत्रियों व एक पुत्र की मां बनी। मरते वक्त तीनों ही संतानों का सुख रहा–सिर्फ एक बडे दामाद श्री रतनलाल जी डागा इनके सामने जाते रहे, वही दु ख रहा।

श्रीमती मगनबाई बाँठिया साक्षर हीन महिला थीं– किन्तु, धर्मिक क्रिया– कांड के पाठ, स्तोत्र, भजन उनको कठस्थ याद थे। प्रतिदिन सामायिक मंदिर दर्शन करना उनका दैनिक कार्यक्रम था। पर्व के दिनों में सायकाल प्रतिक्रमण करने उपासरे भी जाती थी, साधु–संतो के व्याख्यान सुनने और उनकी सेवा करने मे अग्रणी थी। अपने परिवार और अपने अनुज सेठ शुभयराज जी नाहटा के साथ समस्त भारत के जेन तीर्थो की अनेक बार यात्रायें कीं और बद्रीनाथ, केदारनाथ, मूडबिद्री भी होकर आई थी। प्रतिवर्ष एक तीर्थ की यात्रा करना उनके लिए अनिवार्य–सा था। पिछले १२ वर्षो से पैर मे चोट आ जाने के बाद यात्रागमन कम हो गया। कंपिल तीर्थ पर महीनो रहीं। शत्रुंजय तीर्थ पर कई चौमासे किये और वहां जैन भवन मे एक कमरा बनवाया।

श्रीमती मगनबाई बाँठिया इस मायने मे भाग्यशाली थी कि भारत विख्यात श्री अगरचन्द जी नाहटा उनके अनुज थे, श्री भँवरलाल जी नाहटा उनके भतीजे। साहित्य, संस्कृति प्रिय समाज सेवी– मातृ भक्त श्री हजारीमल को अपने कोख से जन्म दिया और समाज सेवा मे ही श्री तनसुखराज डागा और श्री सूरजमल पुगलिया जैसे दौहित्र मिले। श्रीमती मगनबाई बाँठिया धर्म परायण महिला थीं। उनके पुण्य से ही सेठ फूलचन्द जी के स्वर्गवास के बाद बाँठिया परिवार चहुँदिस फूला–फला और समाज मे अपना एक उच्च स्थान बना लिया। हाथरस मंदिर मे मूर्ति प्रतिष्ठा कराने की उनकी भावना पूरी हुई।

सेठ फूलचन्द जी का स्वर्गवास वि० सं० २००२ पोह सुदी १२ को हो गया था– ४४ वर्ष वैधव्याता में धर्म–ध्यान की रुचि के कारण धैर्यता से जीवन बिताया– परम योगीराज श्री सहजानन्द जी महाराज की परम भक्त श्राविका बन गई थी और उन्हीं का दिया हुआ मत्र "सहजात्मस्वरुप परम गुरु" का मंत्र जपते–जपते वि० सं० २०४६ मिती काती वदी १४, तदनुसार २६ अक्टूबर १९८९ को इस नश्वर शरीर को त्याग कर और भरे–पूरे परिवार को छोडकर परलोक जा बसीं। इनके नम्र व्यवहार और धर्मपरायणता को सभी साधु–साध्वी विशेषकर खरतरगच्छ के याद करते रहते हैं। सतों में मेरी पहिचान भी मगनबाई के पुत्र होने के नाते हो गई।

हजारीमल बाँठिया

थी। तीन साल पहले परम पूज्य आचार्य श्री नानेश जी के चातुर्मास व उनके द्वारा दीक्षित साधु, साध्वी, दीक्षा महोत्सव पर सब परिवार को लेकर बीकानेर गई थीं और आने-जाने वाले यात्रियों व साधु-संतों को अहर्निश अपनी सेवाएँ दी।

भंवरीबाई की पूरे परिवार के साथ गजब की आत्मीयता थी। जो भी उससे मिलता या वह जिससे मिलती, वह सभी समझते भंवरी बाई हमारी है। बडे ठाठ-बाठ से किन्तु सादगीपूर्ण जीवन उसे पसंद था। खाने व खिलाने में आत्मीयता के साथ अपना कर्तव्य निर्वाह करती।

भंवरी बाई मेरा भी बहुत ध्यान रखती। जब भी मैं कलकत्ता जाता, 'मामासा आपको पीपल की खटाई बहुत पसंद है, आपके लिए मैंने बना रखी है। आपको चमडिया की हींगवटी बहुत पसद है, वह भी शीशी साथ लेते जाना। आपके कुर्ते के वास्ते मैंने कपड़ा ले रखा है आपको कुर्ते सिलवा दूंगी। आपके धोती जोड़े दुकान में आये हुए हैं आप उनसे ले लें। आपके लिए बैग, पर्स व बडे कलैन्डर मैंने दुकान से मंगवाकर रखे हैं आप साथ में अवश्य लेते जाना'। पूरे परिवार के दुख सुख का हाल पूछती, अपना बताती। आदर्श गृहिणी के सभी गुण जो एक महिला मे होने चाहिए वे खूब भंवरी बाई में थे। पिछले दिनों चि० मनोज डागा के विवाह मे सभी भानजिये एक साथ बैठतीं थीं- मेरे मुँह से एकाएक निकल गया "म्हारी भंवरी" तो सब भानजियो को कुछ अटपटा-सा लगा और वे एक साथ बोल उठीं, मामासा के तो बस भंवरी बाई ही लाडली भानजी है और हमारी मां साहब (नानाजी) को भी भवरी दोहिती ही ज्यादा लाड़ेसर थी।

हजारीमल बाँठिया

मेरी मां श्रीमती मगनबाई बाँठिया

मां का नाम लेने से ही मन भर जाता है- ममतामयी मां मगनबाई का मेरे ऊपर इतना स्नेह रहा- मैं उनकी सम्पूर्ण सेवा न कर सका- उनके ऋणों से कभी उऋण नहीं हो सकता। जब से मैं जन्मा- जब तक वे इस संसार में रहीं- उनका प्यार- दुलार सदा बना रहा। मैं स्कूल के नियत समय से पन्द्रह मिनट भी विलम्ब हो जाता तो वे घर के दरवाजे के बाहर आकर आने -जाने वाले जैन स्कूल के छात्रों से पूछती रहती- स्कूल की छुट्टी हो गई- हजारी क्यों नहीं अब तक आया? कुछ छात्र तो सन्तोष जनक उत्तर देते- कुछ बता देते हमें मालूम नहीं- तो उनके चेहरे पर चिंताओं की रेखाये स्पष्ट नजर आ जातीं। ऐसी ममतामयी मां इस दुनिया में अब नहीं है।

श्रीमती मगनबाई बाँठिया का जन्म वि० सं० १९६० मिगसर सुदी १५ को बीकानेर के स्वनाम धन्य सेठ शकर दान जी नाहटा की जोड़ायत श्रीमती चुन्नीबाई की रत्नगर्भा कुक्षी से बीकानेर में हुआ था। तीन भाइयों से छोटी और तीन भाइयों से बडी थी। इनमें सबसे बडी इनकी बहिन श्रीमती सोनाबाई थी जो घुड़सवारी के रईस सेठ रिखबदास जी बच्छी को ब्याही गई थीं। श्रीमती सोनाबाई जवानी के उमर मे ही दो पुत्रियां- श्रीमती गायीबाई पुगलिया और श्रीमती मनोहरीबाई सेठिया को छोडकर स्वर्ग सिधार गईं। मरते वक्त अपनी सगी बहिन श्रीमती मगनबाई बाँठिया को भोलावण दे गईं तुम इन दोनो को अपनी पुत्रियों जमना व मीना की तरह प्यार व प्रेम देना। श्रीमती मगनबाई बाँठिया ने अंत तक अपनी भाणजियों को पुत्रीवत ही समझा और उसी प्रकार स्नेह प्रदान किया।

ए० हैं तथा सुयोग्य व सुशिक्षित पतियों से गठबन्धित हैं। बहुत कम परिवारों को यह विरल सुख इस ससार में प्राप्त होता है। ऐसा लगता है कि यह बाँठिया जी के पूर्वजन्मों के संचित पुण्य कर्मों का ही सुफल है।

२४ सितम्बर १९२४ को बीकानेर (राजस्थान) में जन्मे श्री बाँठिया पर आपत्तियो का पहाड उस समय टूट पडा, जब किशोरावस्था में पितृ छाया से विहीन होना पडा, उन्हें अपना अध्ययन बीच में ही छोडकर आजीविका अर्जित करने में लगना पड़ा, सोना तपने से और दमकता है तथा संघर्षो से जूझकर उन पर वर्चस्व स्थापित करना मनुष्य की उत्कृष्ट विजय है। कोई कच्चा आदमी होता तो वह संघर्षो के पारावार में डूब जाता, पर बाँठिया जी पराङ्मुख नहीं हुए। घर की सारी जिम्मेदारियों से वे सजग थे और इसलिए द्विगुणित उत्साह व शक्ति से वे कठिनाइयों का सामना करने के लिए डट गये। नेपोलियन ने एक बार कहा था कि आल्प्स मेरे सामने बौना है और सचमुच उनके अदम्य उत्साह के सामने आल्प्स एक क्षुद्र पर्वत बनकर रह गया। श्री बाँठिया की दृढता के सामने भी आपत्तियां एक–एक कर झुकती गई और वे देश व समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। हाथरस में अपने मामा के यहा नौकरी प्रारम्भ कर इन्होने जीवकार्जन शुरु किया। उत्तम खेती, मध्यम वाणिज्य व निकृष्ट नौकरी वाली कहावत उनको सतत कचोटती थी। नौकरी करते– करते वे सदैव अन्य उपायो की शोध में थे। धीरे–धीरे, व अत्यन्त कुशलता से वे एक दशक के भीतर अपना स्वतत्र व्यवसाय करने मे सफल हो सके। आढत के धंधे के साथ हाथरस में दालमिल खोली। आज यह पौधा वट वृक्ष की भाँति हाथरस से कानपुर, कलकत्ता, बम्बई तथा दिल्ली तक पहुँच गया है। उत्तर भारत के गल्ले व तेल के प्रमुख व्यापारियों मे आज उनकी गिनती है। व्यापार धधे में अनेक ऊँचाईयां हासिल करने के कारण ही वे कानपुर जैसे उद्योग नगर के 'नगर श्रेष्ठि' बन सके, कानपुर चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज के संस्थापक अध्यक्ष बनें, हाथरस मचेन्ट्स चैम्बर के संस्थापक रहे, इण्डियन बैंक की अनेक शाखाओं के खुलवाने में विशेष योगदान दिया तथा आल इण्डिया ट्रेड डाइरेक्टरी का लेखन व सम्पादन किया।

"पिता के बाद वात्सल्यमयी माता मगनबाई का वरदहस्त सदैव उनके मस्तिष्क पर रहा "धर्मभीरु, सन्निष्ट तथा सुभाशयवाली मां की आशियों के फलस्वरूप ही यह सब कुछ प्राप्त हुआ है" — मातृभक्त श्री बाँठिया सदैव ऐसा कहते रहते हैं।

स्व० नाथूराम महियारिया कृत 'वीर सतसई' का एक दोहा हमें नई विचार सृष्टि मे ले जाता है। भक्ति और वीरता किसी के बाप की बापौती नहीं होती। यह तो जो करेगा उसी की होगी–

जे करसी उणरी हुसी, आसी विण नूतीह।
ओ न किणरे बापरी, भगती रजपूतीह।।

कवि श्री महियारिया साहित्यिक क्षेत्र की बात करना भूल गये। भक्ति और राजपूती (वीरता) की भाँति यह क्षेत्र भी ऐसा है, जहां किसी की बापौती नही चलती, यहां डिग्री धारियों का भी कोई विशेष महत्व नहीं हैं। यहां तो अन्तर की सूझ और अध्यवसाय की आवश्यकता है। कबीर, सूर, मीरा, रैदास इसी की उपज थे। आधुनिक युग मे राजस्थान के श्री अगरचन्द नाहटा, आचार्य बदरी प्रसाद साकरिया, भँवर लाल नाहटा, आदि ऐसे ही अडिग्रीधारी व्यक्तित्व हैं जिन्होंने साहित्यिक क्षेत्र मे यह अप्रतिम कार्य किया, जो कई डिग्रीधारी एक साथ मिलकर भी नहीं कर सकते। श्री बाँठिया इसी श्रेणी के पर, साहित्य को प्रोत्साहन व प्रेरणा देने का जो उन्होंने कार्य किया है, उनका अपना विशिष्ट स्थान है।

१– वे ब्रजकला केन्द्र हाथरस के संस्थापक एवं इसके उपाध्यक्ष रहे। इतना ही नही ब्रजकला केन्द्र, मथुरा की राष्ट्रीय केन्द्रीय समिति के उपाध्यक्ष भी हैं। "ब्रजधाम" के लिए प्रयत्नशील हैं।

२– अपनी ही नगरी हाथरस के प्रसिद्ध हास्य कवि "काका हाथरसी" की हीरक जयन्ती का आयोजन किया, जिसके अध्यक्ष कविवर हरवंशराय 'बच्चन' थे एवं मुख्य अतिथि थे तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री

समाजसेवी, साहित्यानुरागी व उदारमना
श्री हजारीमल बाँठिया

डेढ़ दशक पूर्व एक विशिष्ठ शोधकार्य हेतु मैं बीकानेर गया था। स्वनामधन्य श्री नाहटा जी की हवेली मे उन्हीं के पुत्र श्री विजय का मेहमान था। इतना ही नहीं स्व० नाहटा जी के गवाक्ष में बैठ कर ही अभय जैन ग्रंथालय के ग्रंथो का अवलोकन करता था कि एक दिन श्री हजारीमल बाँठिया के आगमन की सूचना हुई। पूज्यपाद आचार्य प० बदरीप्रसाद जी साकरिया के वे अंतरंग हैं और उन्हीं के श्री मुख से सुना था कि एक निखालिस व्यक्तित्व के धनी श्री हजारीमल बाँठिया अंतर–ह्रय सर्वत्र शुभ हैं। मै तब सोचता था कि आज के युग में ऐसे व्यक्ति अपवाद रूप में ही लभ्य हैं।

इतने में देखा कि नमस्ते की मुद्रा मे हाथ उठाये, चौखट पार कर एक आपाद शुभ्र व्यक्ति कमरे में प्रवेश कर गये। सफेद धोती व सफेद चोगा पहिने, उन्नत ललाट व गौर वर्ण, निरभिमानी व विनम्र तथा अधरों पर अबोध बालक–सी स्मित रेखा लिए, उन्होने मुझे अपनी भुजाओं से उठाकर गले से लगा लिया। इस प्रेम बन्धन मे उनके हृदय की स्वच्छता, नेत्र द्वार से अस्खलित झरती दिखाई दे रही थी। यही हमारी प्रथम भेंट थी। दो दिनों तक बीकानेर में उनके साथ रहा। दो बार ब्यालू पर भी आमंत्रित था। राजस्थानी के मर्मज्ञ व उद्धारक इटली के डा० तैस्सितोरी की समाधि पर भी वह मुझे ले गये तथा राजस्थान पुरातत्व संग्रहालय मे भी उनके साथ जाने का अवसर मिला। सर्वत्र मैंने उनको उसी रूप में देखा, जिसके दर्शन मुझे प्रथम बार हुए थे। मैं आह्लादित व विमुग्ध था।

'मामा ज्यारा मारका, मूंडा क्यू माणेज' वाली राजस्थानी कहावत इन पर दो रूपों में चरितार्थ होती है। मामा श्री अगरचन्द नाहटा और भानजा श्री हजारीमल बाँठिया दोनों डिग्रीधारी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति नहीं हैं। फिर भी दोनों ने साहित्य व समाज मे जो यश अर्जित किया, वह स्पृहणीय है। धन अर्जित करने में तो भानजा मामा से भी आगे बढ़ गया। अपनी सामान्य स्थिति से ऊँचा उठकर जिस प्रकार श्री बाँठिया मिल मालिक बने, वह उनके पुरुषार्थ का ही परिपाक है। स्व० नाहटा जी के व्यक्तित्व में विद्वता व अनुसंधान का जो घटाघोप था, उसके विपरीत बाँठिया जी सहज, निश्चल सरिता जैसे हैं।

मनुष्य के जीवन में उसकी अर्द्धांगिनी का विशेष महत्व है। एक प्रकार से देखा जाय तो उसके उत्थान–पतन मे पत्नी का सर्वाधिक हाथ होता है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहां पत्नियों ने जीवन के विविध क्षेत्रों में अपने पतियो का मोहभंग कर उन्हें ऊर्ध्वगामी बनाया है। बाँठिया जी के जीवन में (विवाह सन् १९४० मे सोलह वर्ष की अवस्था में) श्रीमती जतनकुमारी के जतनो (यत्नो) की जितनी सराहना की जाय, कम है। स्वयं बाँठिया जी के शब्दो मे, "इन पचास वर्षों में मैंने जो भी कार्य किया है, उसका सारा श्रेय मेरी धर्मपत्नी शक्ति स्वरूपा श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया को जाता है। उन्होंने तन, मन, धन से मेरा सहयोग किया है। कष्ट के दिनों मे सदा हिम्मत देती रही। बडे घर की बेटी हैं पर हमारे घर आकर हमारे घर को भी बडा बना दिया है। दयावान व उदारता की प्रतिमूर्ति हैं।" ऐसी देवी से बने सुमिष्ट मुक्ति का आनन्द मुझे भी मिला है।

संतान–सुख सभी माता–पिता के जीवन की श्रेष्ठ साध होती है। उसमे भी यदि उत्तम गुणो से युक्त संतानोत्पत्ति हो जाय तो स्वर्गिक आनन्द की प्राप्ति इसी लोक में हो जाती है। प्रभु कृपा से श्री बाँठिया इस क्षेत्र में सौभाग्यशाली हैं कि उनके चारों पुत्र व दोनो पुत्रियां, अपने कुल को और अधिक उज्ज्वल करने में संलग्न हैं। ये सभी सुशिक्षित ही नहीं, सुदक्ष भी हैं तथा अपने–अपने क्षेत्रों में सही दिशा में अग्रसर हैं। चारों पुत्र चार विभिन्न संकायों की डिग्री लिए हुए हैं। श्री कांतीलाल एम० ए० एम० काम० हैं तो श्री राजू इंजीनियर, श्री प्रकाशचन्द बी० एस० सी० हैं तो श्री सुरेन्द्र बी० ए०। दोनों पुत्रियां एम०

संग्रहालय' में स्थापित करवाई। पचाल जनपद के विकास के लिए काम्पिल्य–महोत्सव का आयोजन १६७८ मे किया, जिसके संयोजक श्री बाँठिया जी थे। तत्कालीन उत्तर प्रदेशीय मुख्य मंत्री श्री रामनरेश यादव ने कार्य की महत्ता को समझ कर इस महोत्सव का उद्घाटन किया था। इसी प्रकार आपकी प्रेरणा के फलस्वरूप ही 'पंचाल पुरातत्व सेमिनार' हुआ तथा 'पचाल शोध संस्थान' की स्थापना हुई, जिसके आप कार्य वाहक अध्यक्ष हैं। इसके नौ अधिवेशन हो चुके हैं।

पुरातत्व व साहित्य के क्षेत्र की भाँति आपने समाज–सेवा तथा शिक्षा के क्षेत्र में अपने सुकार्यों से यश कमाया है। हाथरस नगर पालिका के सदस्य, उपाध्यक्ष और फिर कार्यवाहक अध्यक्ष पद पर कार्य करते उसे सुन्दर बनाने के साथ–साथ श्मशान गृह का निर्माण कराया तथा विभिन्न सडकों को चौडा करवाया। कपिल–क्षेत्र मे सार्वजनिक अस्पताल का निर्माण करवाया, जिसका शिलान्यास श्रीमती जतन कुमारी बॉठिया ने सन् १६७५ मे किया था और उद्घाटन डा० चन्नारेडी ने सन् १६७६ मे किया था। कपिल में ही जैन श्वेताम्बर मंदिर तथा धर्मशाला का जीर्णोद्धार करवाया। कंपिल के विकास के लिए सडकें, पुल आदि बनवाये तथा पानी वितरण योजना को अमली जामा पहनाया। कताई मिल खुलवाया।

प्राथमिक से लेकर कालेज तक की अनेक शिक्षण सस्थाये निर्मित करवाकर तथा पुरस्कारो की स्थापना करवाकर आपने उत्तर प्रदेश में काफी नाम कमाया है।

१– तिलक–शिशु–मदिर, हाथरस की स्थापना सन् १६५८ मे की।
२– श्रीमती सुरजोबाई उच्च माध्यमिक विद्यालय, हाथरस के सस्थापक अध्यक्ष रहे।
३– श्री सेकसरिया उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रबंध समिति के सदस्य हैं तथा बागला कालेज हाथरस को स्नातकोत्तर स्तर बनाया। श्रेष्ठ राजस्थानी साहित्य के लिए अपने पिता श्री फूलचन्द बाँठिया के नाम से दो सहस्र रुपये का वार्षिक पुरस्कार स्थापित किया। इसी प्रकार ब्रज भाषा के उन्नयन के लिए 'ब्रज–शोध–सस्थान' ब्रज भाषा पुरस्कार प्रति वर्ष दिया जाता है। हिन्दी के उन्नयन के लिए 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग का ४५वां समारोह सन् १६८६ कानपुर मे करवाया और उसके स्वागत मंत्री बनाये गये।

इस देश को जातियों का महासागर कहा जाये तो कोई अतियुक्ति नहीं होगी। इन्हीं में, व्यापारिक कौशल, व्यावहारिक चातुर्य व धन–धान्य से परिपूर्ण एक ऐसी साहसी जाति है, जो चाहे तो रेत मे से भी तेल निकाल सकती है। राजस्थान मे यह ओसवाल नाम से प्रतिष्ठ है। इसमे जैन व वैष्णव दोनों होते हैं। वैसे इस जाति की प्रगति के लिए कोई कार्य करने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, फिर भी इसके संगठन हेतु श्री बॉठिया जी ने अनेक–विध प्रयत्न किये हैं।

१– उत्तर प्रदेश के जैन तीर्थो के जीर्णोद्वार एव विकास मे विशेष अभिरुचि ली।
२– श्रीमद् राजचद्र मिशन, हाथरस के संस्थापक सदस्य एवं अध्यक्ष रहे।
३– श्रीमद् राजचद्र आश्रम, हम्पी (कर्नाटक) के आध्यात्मिक सदस्य।
४– अध्यक्ष एव सस्थापक–श्री बुलाकीचद फूलचंद बाँठिया चेरीटेबल ट्रस्ट, कानपुर।
५– उपाध्यक्ष एवं चेयरमैन–अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासघ, दिल्ली तथा उ० प्र० खरतरगच्छ महासघ कानपुर।
६– ट्रस्टी– श्री जैन भवन ट्रस्ट, पालीताना (गुजरात)।
७– सयोजक एवं कोषाध्यक्ष– श्री वर्धमान जैन सार्वजनिक चिकित्सालय, कंपिल, (फर्रुखाबाद)।
८– मत्री– काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद्, कानपुर।

SHRI HAZARI MULL BANTHIA

Shri Hazari Mull Banthia is a senior businessman of Kanpur. Shri Hazari Mull Banthia is a dedicated social worker He was born at Bikaner on September 24, 1924 He has chosen Kanpur in U P. as the placce of his business and social activities.

Simple-hearted Shri Banthia lives a religious life and to the core of his heart is dedicated to serve the humanity The tastes of Shri Hazari Mull Banthia are varied He is as active in promoting literary works as he is in social and welfare works for the help of the poor He has been actively associated with Bharatiya Mitra Parishad since 1938. He traced the monument of literary Italian saint Tessitori and got it renovated at Bikaner in 1956. He has published literature on him. He got a statue of the saint constructed and installed at Kanpur on 22nd December, 1985. He was Convenor of Agarchand Nahata Abhinandan Grantha during 1976-1978 which was published very decently He has made efforts to give recognition to Kampilaji as the ancient capital of Panchal Pradesh He has keen interest in research, literature and archaeology. He is responsible for bringing out a few publications on archaeology

Shri Banthia is President of Banthia Fndation, Kanpur, Panchal Shodh Sansthan Kanpur, Bulaki Chand Phool Chand Banthia Charitable Trust. Kanpur and Kanpur Chamber of Commerce and Industries, Kanpur He is the Trustee Chairman of Jain Bhavan Palitana (Gujarat), Chairman of Madhur Oils Pvt Ltd , Kanpur, Acting Chairman of Agarchand Bhanwarlal Nahata Research Institute Bikaner, Convenor and Treasurer of Vardhaman Jain Dispensary, Kampilaji, Patron-Member of Rajasthan Association, Kanpur, Vice-Presdient of U P Marwari Sammelan and Shri Jain Swetamber Khartargachh Mahasangh, Delhi. He is Joint Seretary of Shri Marwari Library and Reading Room, Kanpur

Shri Banthia has derived inspiration to work so ardently from the famous literary figure late Shri Agarchand Nahata, who was his maternal uncle Shri Banthia is well placed in social circles

Res 52/16, Sakkarpatti, Kanpur-208 001
Phones · 362901, 364622

S.C.Jain

९– अध्यक्ष– श्री जैन श्वेताम्बर संघ, हाथरस, श्री जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस, बम्बई के खडी सभा (Standing Commitee) के सदस्य।

१०– सदस्य–वीरायतन समिति, राजगृह।

इसके अतिरिक्त विशाल मारवाडी (राजस्थानी) समाज के प्रति की गई, आपकी सेवायें भी अमूल्य हैं (१) आप अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन, कलकत्ता की महासमिति के सदस्य (२) तृतीय उत्तर प्रदेश मारवाडी सम्मेलन, अधिवेशन हाथरस के संयोजक एव स्वागत मत्री (३) संरक्षक सदस्य– राजस्थान एसोसियेशन, राजस्थान भवन, कानपुर (५) मत्री– श्री मारवाडी पुस्तकालय एव वाचनालय, कानपुर। उपाध्यक्ष– उ० प्र० मारवाडी सम्मेलन, कानपुर।

उदारमना श्री बाँठिया जी से न मालूम कितने व्यक्तियों एव संस्थाओं ने आर्थिक सहयोग ही नहीं, वरन् प्रोत्साहन व नेतृत्व प्राप्त कर अपने को सफल बनाया है। वे एक ओर लक्ष्मी के वरद् पुत्र हैं तो दूसरी ओर सरस्वती के अनन्य उपासक हैं। *वे एक कर्मठ व्यक्तित्व के धनी हैं। किसी कार्य को हाथ में लेकर रुकना उनका स्वभाव नहीं हैं। प्रतिपल उसी* मे रत वे उस समय तक थमते नहीं हैं, जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय।

उन्होंने जैन परिवार में जन्म लिया है, अतएव स्वाभाविक ही उनकी रुचि जैन धर्म व जैन समाज के उत्थान में है, पर उनमे नाम–मात्र की भी साम्प्रदायिक सकीर्णता का सर्वथा अभाव है। वे विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत– प्रोत एव सरल व धर्मभीरु व्यक्ति हैं, जो मानव सम्मान को महत्ता देते हैं।

मानवीय गुणों से लबालब, *श्री बाँठिया जी को विदेशी डाक टिकटों व पत्र–पत्रिकाएँ संग्रह करने का शौक* है। उन्हें विदेशी मित्र बनाने में भी बडी रुचि है। प्रवास भी उनका प्रिय शौक है। तीर्थाटन उनको अत्यन्त प्रिय है और जिन्होंने उन्हें उन्मुक्त हास्य का आनन्द लेते देखा है, वे कदाचित उनकी गंभीर प्रकृति से परिचित नहीं हैं। वे बहुत धीर–गंभीर भी हैं। परिवार उनको प्रिय है। वे जब घर पर होते हैं तो परिवार के सभी आबाल–वृद्ध सदस्यों के लिए समय निकाल कर मनोरंजन कर लेते हैं।

ऐसे अनुकरणीय जीवन से हम जितना बोध ले सकें उतना कम है।

प्रो० भूपतिराम साकरिया
सेवा निवृत्त–हिन्दी विभागाध्यक्ष
सरदार वल्लभ भाई पटेल विश्वविद्यालय
पो० वल्लभविद्यानगर–३८८१२०

उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। सुबोध मिन्नी जोधपुर मे प्रिंटिंग फैक्टरी का कार्य संभालते हुए राजस्थान के जूनियर चैम्बर ऑफ कामर्स के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं और भूतपूर्व अध्यक्ष भी रह चुके हैं। पुत्री उर्मिला गोलछा की शादी श्री सुरेन्द्र जी गोलछा नरसावालो से हुआ। इनके दो पुत्रियां श्रद्धा और श्रुति है।

स्वर्गीय पानमल जी मिन्नी के चार पुत्र मागी लाल जी मिन्नी, श्री रतनलाल जी मिन्नी, श्री हीरालाल जी मिन्नी, श्री कमलसिंह जी मिन्नी, तीन पुत्रिया स्वर्गीय चाइ बाई सेठिया, कल्यान बाई सेठिया, अमराव देवी मालू। आपकी पत्नी भंवरी देवी मिन्नी ज्ञानमल जी मिन्नी–वंश के वर्तमान मे सबसे ज्येष्ठ हैं। धर्म–ध्यान आत्म–साधना में लीन हैं। मागीलाल जी मिन्नी के दो पुत्र हैं: प्रेम मिन्नी बैंगलोर मे प्लास्टिक के दाने का इम्पोर्ट का व्यवसाय करते हैं, जिनकी पत्नी प्रमिला मिन्नी बैंगलोर के ओसवाल समाज मे सेवा के महत्वपूर्ण कार्य कर अपने परिवार का नाम उदीप्त कर रहीं है। द्वितीय पुत्र अशोक मिन्नी कलकत्ता श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के मत्री और समाज सेवा मे तत्पर रहते हैं। रतनलाल जी के पुत्र मनोज के दो पुत्रियां राजेश व संगीता है। रतनलाल जी मिन्नी फाइनेन्स और जमीन के कार्य करते है। हीरालाल मिन्नी कपडा चलानी और बिस्कुट का व्यवसाय करते हैं। इनके पुत्र के तीन पुत्र हैं सजय, मनीषा, पियुष कम्प्यूटर का कार्य करते हैं। पत्नी विमला मिन्नी ने कलकत्ता सांस्कृतिक क्षेत्र मे अच्छी ख्याति पाई है। कमलसिह मिन्नी एक्सपोर्ट में कमीशन ऐजेन्सी का कार्य करते हैं। आपकी स्वर्गीय पत्नी श्रीमती विमला देवी मिन्नी शिक्षा प्रेमी थी और पार्क स्ट्रीट मे मिन्नी माटेस्सरी स्कूल की सस्थापिक थी। आपने विमलादेवी कम्प्यूटर केन्द्र और जैन हास्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर मे स्व–अर्जित १० लाख रुपये की राशि से ज्यादा दानकर मिन्नी परिवार के नाम को गौरवान्वित कर दिया।

स्व० जानकीदास जी मिन्नी को ज्ञानमल जी मिन्नी के परिवार का कोहिनूर कहना अतिशयोक्ति नही होगी। वे प्रखर व्यवसायी और गणित के ज्ञाता अदम्य साहसी थे। स्वर्गीय जानकीदास जी मिन्नी का अल्पायु मे स्वर्गवास हो गया था। वे कलकत्ता श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनसभा के सस्थापक और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। उनकी मृत्यु से परिवार में अंधेरा छा गया। उनके दो पुत्र हैं सम्पतलाल जी मिन्नी मुल्तानचद जी मिन्नी, ३ पुत्रियां हैं (१) जतनदेवी बाँठिया पत्नी हजारीमल बाँठिया, (२) चेतनदेवी बाँठिया, पत्नी झवरलाल जी बाँठिया, (३) किरण देवी कोथरा पत्नी गुलाबचद जी कोथरा। आपकी धर्मपत्नी स्व० पैपा मिन्नी बीकानेर के लाभू जी कटरा के मालिक आनन्दमल जी श्री श्रीमाल की पुत्री थी। ये धर्मपरायण समझदार औरत थी।

शिखरचंद जी मिन्नी के एक पुत्र है प्रकाशचद मिन्नी, दो पुत्रिया हैं– राजुदेवी वैद और मधु सुराणा। आप उदारमना सरल परोपकारी गुणों से प्रदीप्त हैं। कलकत्ता अखिल भारतीय साधुमार्गी सघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं, सफल व्यापारी हैं। पत्नी शान्तिबाई कलकत्ता स्थानकवासी जैन सघ के सरदार सरदारमल जी कांकरिया की बहिन हैं। आप कलकत्ता स्थानकवासी जैन सभा की महिला समिति की अध्यक्षा हैं। समाज मे आपका विशिष्ट स्थान है, निष्काम सेवा मे परिवार के सुख दु ख मे सम्मिलित होकर सबके हृदय को मोह लेती हैं। आपके प्रयास और प्रेरणा से स्व० विमला मिन्नी ने इतना दान सत्कार्य किया और मिन्नी वंश को प्रतिष्ठित किया।

स्व० ज्ञानमल जी मिन्नी का वश वृक्ष इस प्रकार फैल गया कि उत्तर पूर्व पश्चिम और दक्षिण चारों दिशाओ में इनके वंशज जीविका–उपार्जन के साथ सत्कार्य कर रहे हैं। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। उनके कर–कमलो द्वारा स्थापित कलकत्ता का विशाल भवन १ और १/१, नूरमल लोहिया लेन, कलकत्ता वश के मिन्नी –व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र है। वंश प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है। सत्कार्य कर समाज में वश का नाम उज्ज्वल हो, यही जिनेश्वर देव से प्रार्थना है।

बाँठिया जी की ससुराल –

स्व० सेठ ज्ञानमल जी मिन्नी का प्रसिद्ध मिन्नी परिवार

आधुनिक विश्व में भारत की सत्य और अहिंसा की महान देन भगवान महावीर के जैन धर्म के अनुयायी राजपूताना के गौरवशाली ओसवालों का इतिहास वीरता उत्तम शौर्य त्याग द्वारा प्रदीप्त है। महाराणा प्रताप के साथ देश सेवा में सर्वस्व न्यौछावर कर भामाशाह ने महाराणा प्रताप के साथ ओसवालों का नाम भी उदीप्त कर दिया। बीकानेर में मिन्नी वंश का इतिहास करीब ४०० साल पहले का है। रानी गंगा के साथ राज्य दरबारी के रूप में जैसलमेर से आये। राज्य के खजाने का काम संभालने से इन्हें खजान्ची की पदवी भी मिली। बीकानेर राज्य के विस्तार और प्रबन्ध में इस वंश ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मिन्नी वंश में दानवीर धर्म प्रेमी स्वर्गीय सेठ ज्ञानमल जी मिन्नी का जन्म विक्रम संवत् १९४६ काती सुदी ५ ज्ञान पचमी के पुनीत दिवस पर जुड़वाँ पुत्र सेठ परमसुख दास जी मिन्नी के बीकानेर निवास पर हुआ। आपका लगन धापुबाई से हुआ जो देशनोक के प्रमुख व्यवसायी प्रताप चंदजी गोलछा की पुत्री थीं। परोपकारी सेठ ज्ञानमल जी मिन्नी ने समाज के सिवाय अन्य गरीबों की लड़कियों की शादी विवाह करवाकर गुप्त दान देकर सबका प्रेम आशीर्वाद पाया। आप पूज्य श्रीलालजी महाराज के अनन्य भक्त थे और कोई भी कार्य उनकी वन्दना नमस्कार सिवाय नहीं करते थे। आपकी पत्नी धापुदेवी मिलनसार धर्मपरायण शांति और धैर्य के गुणों से प्रदीप्त आदर्श महिला थी। अपने वृहद परिवार को एक डोर से बाँधकर परिवार की कुशल संचालिका थी। जीवन का अन्त भादवा वदी ५, २००५ में सुहागन अपने पति के कंधे पर स्वर्ग सिधारी। आपकी मृत्यु के बाद अपने परिवार को संरक्षण देते हुए उन्होंने फागुण सुदी ११ संवत् २०१६ को देह त्याग किया।

आपके चार पुत्र रत्न एवं एक पुत्री हुई जोकि (१) स्वर्गीय तोलाराम जी मिन्नी, (२) स्वर्गीय मानमल जी मिन्नी, (३) स्वर्गीय जानकीदास जी मिन्नी, (४) उदारमना शिखरचंद जी मिन्नी पुत्री स्व० सूरजदेवी सिरोहिया। स्व० तोलाराम जी मिन्नी के ज्येष्ठ पुत्र आध्यात्मिक गुणों से ओतप्रोत माणकचंद जी मिन्नी, इन्दरचंद जी मिन्नी, जयचंद लाल मिन्नी दो पुत्रियां रतनदेवी कोचर, कंचन देवी बोहरा। तोलाराम जी मिन्नी की पत्नी कमलादेवी पुनमचंद जी पुगलिया की पुत्री थी। धर्मपरायण और दान और सेवा में अग्रसर रहती थी। माणकचंद जी मिन्नी की पत्नी उमरावदेवी मिन्नी धनराज जी बैद की पुत्री ने स्थानकवासी समाज अहमदाबाद में अपने त्याग और तपस्या से मिन्नी वंश को उदीप्त किया। सुहागन पति के कंधे लेकर स्वर्ग सिधारी।

इंदरचंद जी मिन्नी की पत्नी मंदरी देवी मिन्नी बीकानेर में मुलतान वाले सेठी त्रिलोकचंद जी सेठी की पुत्री है। इनके पुत्र सुरेश मिन्नी बम्बई के पगारियों के जमाई हैं और कुशल व्यापारी है। सुभाष मिन्नी दिल्ली के जैन साहब के जमाई हैं। दो पुत्रियां सुशीला बैताला और निना छाजेड़ सर्व सम्पन्न हैं।

जयचंद लाल मिन्नी थोक साड़ियों के कुशल व्यापारी एवं श्री श्वे० स्थानकवासी जैनसभा के पूर्व मंत्री और वर्तमान ट्रस्टी हैं। आपकी पत्नी श्रीमती सिरीया देवी मिन्नी श्वे० स्थानकवासी जैनसभा कलकत्ता के संस्थापक स्व० फुसराजजी बछावत की पुत्री है। आपके दो पुत्र एवं एक पुत्री है। पुत्र विनोद मिन्नी एक्सपोर्ट का बिजनिस करते हैं और जैन सभा के

तेरापंथ सम्प्रदाय में बाँठियाओं का दीक्षा विवरण

१ तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भीखण जी भी बाँठियो से सम्बन्धित थे। उनका ससुराल "बगडी" मारवाड से बाँठियो के था। पत्नी का नाम सुगनीबाई था। वह भी दीक्षा के लिए तैयार थी लेकिन बीच में ही स्वर्गवासी हो गई।
२.मुनिश्रीलालचन्द जी सुपुत्र श्री भंवरलाल जी बाँठिया सुजानगढ, दीक्षित कार्तिक कृष्णा १० स० २००१, सुजानगढ मे कुंवारा देवलोक हो गये। आचार्य श्री तुलसी द्वारा दीक्षित।
३ मुनि श्री खूबचन्द जी सुपुत्र श्री चुनिलाल जी बाँठिया बीदासर, दीक्षित माघ कृष्णा ५, नोहर मे देवलोक, सुजानगढ मे आचार्य श्री तुलसी द्वारा दीक्षित।

विशेष जानकारी:-

मुनि श्री खूबचन्द जी ५४ की उम्र मे पुत्र–पौत्र आदि का भरा–पूरा परिवार एव अर्थ सम्पन्नता को छोडकर दीक्षित हुए। गृहस्थ में खाने–पीने, रहने सहने के हर बात के पूरे शौकीन थे। दीक्षा के बाद तपस्या एव सूर्य की आतापना से कर्म–निर्जरा करते हुए अनशन पूर्वक छापर मे स्वर्गवास।

तेरापंथ सम्प्रदाय में साध्वी बाँठियाओं का दीक्षा विवरण

१ साध्वी श्री हस्तुजी, चुरू, पति श्री गजराज जी बाँठिया, दीक्षा तिथि चैत्र शु० ८ स० १८६३, सुहागिन, आचार्य श्री रायचन्द जी की आज्ञा से साध्वी चन्दनाजी द्वारा दीक्षित, स्व० सवत् १६३६ (अग्रगण्य स० १६१५)
२ साध्वी श्री मोताजी, बीकानेर, पति श्री सरदारसिह जी बाँठिया की पुत्रवधु बाँठिया, दीक्षा तिथि वैशाख शु० ८ सं० १६०८ बीदासर, विधवा, आचार्य श्री मद्जयचार्य, स्व० बीदासर सवत् १६४० (पति का नाम उपलब्ध नहीं)
३ साध्वी श्री मोंताजी बीकानेर, बाँठिया, दीक्षा तिथि मिगसर वदि ४ सं० १६१७ बीदासर, विधवा, आचार्य श्री मद्जयाचार्य स्व० पाली कार्तिक शु० १४ सं० १६२२ (पति / पिता का नाम उपलब्ध नहीं)
४ साध्वी श्री छोंटाजी जयपुर, पिता श्री टीकमचन्द जी बाँठिया जयपुर, पति श्री हीरावत जयपुर, दीक्षा तिथि सावण शु०६ सं० १६२० चुरू, विधवा, आचार्य श्री मद्जयाचार्य स्व० छापर स० १६६० (पति का नाम उपलब्ध नहीं)
५ साध्वी श्री लिछमा जी, पति का नाम श्री ज्ञानचन्द जी बाँठिया सुजानगढ दीक्षा तिथि द्वितीय भादवा शु० ६ स० १६२८ जयपुर, विधवा, आचार्य श्री मद्जयाचार्य स्व० लाडनू आसाढ शु० ७ सं० १६८५
६ साध्वी श्री कुन्दना जी, पिता का नाम श्री केसरी चन्द्र जी बाँठिया चुरू, पति का नाम श्री मगराज जी हीरावत चुरू, दीक्षा तिथि मिगसर शु० १० सं० १६३१ लाडनू, विधवा, आचार्य श्री मद्जयाचार्य स्व० बोरावढ मिगसर सुदी ५ सु० १६६८ (अग्रगण्य सं० १६४३)
७ साध्वी श्री सरदारा जी, पिता बाँठिया चुरू, पति सुराणा चुरू, दीक्षा तिथि मिगसर शु० १० स० १६३१ लाडनू, विधवा, आचार्य श्री मद्जयाचार्य स्व० १६४७ (पिता / पति का नाम उपलब्ध नहीं)
८ साध्वी श्री सुजांजी पिता श्री भैंरुदान जी बाँठिया, जयपुर, पति श्री केसरीचन्द जी कोठारी चुरू, दीक्षा तिथि मिगसर वदी ६ सं० १६४६ चुरू, विधवा, आचार्य श्री मघराज जी की आज्ञा से साध्वी किस्तुरा जी द्वारा दीक्षित, स्व० लाडनू जेठ शु० १३ सं० १६६६
९. साध्वी श्री अणंचा जी, पति का नाम श्री कुशाल चन्द जी बाँठिया, पडिहारा, दीक्षा तिथि मिगसर वदी ३ सं० १६५३, विधवा, आचार्य आ० श्री माणक गणी, स्व० पो० मा० स० १६८७

श्री सोहन कुमार बाँठिया

बन्धु बाँठिया जी है म्हारा
बाळ गोठिया साथी
आजादी रै दिवलै री बै
सजळी राखी बाती

श्री कन्हैयालाल सेठिया

यह तो निर्विवाद सत्य है कि सोहन कुमार बाँठिया मूक समाजसेवी हैं। पदलिप्सा से कोसों दूर रहकर भी इन्होंने महत्त्वपूर्ण दायित्वों का सफलता से निर्वाह किया है। आप राजनीतिक चेतना, समाजसेवा और जनजागृति के आन्दोलनों में बहुचर्चित एवं बहुसदर्शित व्यक्ति रहे हैं।

आपको स्वनामधन्य स्मृतिशेष श्री शोभा चन्द जी बाँठिया के सुपुत्र होने का सौभाग्य मिला। मातुश्री स्व० श्रीमती मंगलादेवी की कोख से जन्म लेने वाले श्री बाँठिया ने न केवल अपना अपितु बाँठिया परिवार का नाम उजागर करने में अनेक जाज्वल्यमान कड़िया जोडी हैं। आपका जन्म सावण (दूसरा) वदी २ १९७७ वि० को चूरू राजस्थान में हुआ। चूरू एव कलकत्ता में शिक्षा पाने वाले श्री बाँठिया ने अपने जीवन की सार्थकता प्रमाणित करने में अपनी अलग पहचान बनाई है। आप सदाबहार साथी के रूप मे विशेष विख्यात रहे हैं। श्री रावतमल जी जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता इन्हे आलराउन्डर भी कहते रहे हैं।

प्रारम्भ से देखें तो श्री बाँठिया को बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के सक्रिय सदस्य, पर्दा हटाओ आन्दोलन के अगुआ, चूरू नगरपालिका के चुनाव में विजेता कांग्रेसी साथी, कलकत्ता महानगर में चूरू नागरिक परिषद के संस्थापक सदस्य, चूरू नगर को जिला मुख्यालय कायम कराने हेतु संचालित जन आन्दोलन के संचालक, फतेहपुर--चूरू रेलवे लाइन बिछवाने तथा इसपर गाड़ी शुरू करवाने हेतु प्रयत्नशील प्रहरी और चूरू में भरतिया अस्पताल बनवाने में सचेष्ट साधक के रूप में पाते है। आज भी आप चूरू पिंजरा पोल, श्री सर्व हितकारिणी सभा, चूरू नागरिक परिषद, चूरू बालिका महाविद्यालय व श्री जैन सेवा संघ के साथ अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध सर्वाधिक कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। समाज सुधार की भावना से चाहे कोई भी संस्था सहयोग मांगे, आप उदारता से सहयोग प्रदान करते हैं। आप विचारों से पक्के कांग्रेसी हैं किन्तु आपको आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन से परहेज रहा है। कोई इनसे मिले तो जाने कि आप कितने निस्पृही एवं निष्ठावान व्यक्ति हैं। आपकी वाणी में मधुरता, स्वभाव में नम्रता, हृदय में उदारता और व्यवहार में कुशलता के दर्शन होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण जब १४ जून, १९८७ को आपका कलकत्ते में सार्वजनिक अभिनन्दन हुआ तो समाज के सभी लोगों को बड़ा प्रिय लगा था। आज भी समाज ७५ वर्षीय श्री बाँठिया से अनेक अपेक्षाएँ रखता है।

विशेष जानकारी:-

बम्बई उल्हास नगर में सैकड़ो सिंघी परिवारो को प्रतिबोध देकर तेरापंथ की गुरु धारण व अनेकों को अणुव्रती बनाया।

२३ साध्वी श्री गुलाबां जी, पिता श्री हरख चन्दजी बैद भादरा, पति श्री सुगनचन्द जी बाँठिया तारानगर, दीक्षा तिथि माघ शु० ६ सं० १९९३ व्यावर में , विधवा, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान

२४ साध्वी श्री गुलाबाजी, पिता श्री पूसराज जी बाँठिया, पति श्री मानमलजी पारख, दीक्षा तिथि कार्तिक सुदी ३ सं० १९९५, सरदारशहर, पति सहित, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान (अग्रगण्य)

२५ साध्वी श्री पानकुमारी जी, पिता श्री मोतीलाल जी बाँठिया, दीक्षा तिथि कार्तिक कृष्णा ८ स० १९९९ चुरू, कुमारी, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान

२६ साध्वी श्री रायकुमारी जी, पिता श्री मोतीलाल जी बाँठिया, दीक्षा तिथि कार्तिक कृष्णा ८ सं० १९९९ चुरू, कुमारी, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान

२७ साध्वी श्री सुखदेवा जी, पिता श्री सूरजमल जी बाँठिया, दीक्षा तिथि कार्तिक कृष्णा ८ स० १९९९ चुरू, कुमारी, आचार्य तुलसी, वर्तमान

२८ साध्वी श्री जयश्री जी, पिता श्री डालचन्द जी बाँठिया चुरू, दीक्षा तिथि कार्तिक कृष्णा ८ सं० १९९९ चुरू, कुमारी, वर्तमान (अग्रगण्य)

२९. साध्वी श्री कुलप्रभा जी, पिता श्री भंवरलाल जी बाँठिया, दीक्षा तिथि मिगसर सुदी ७ सं० २०२१, बीदासर, कुमारी, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान

३०. साध्वी श्री रमावती जी, पिता श्री भंवरलाल बाँठिया, दीक्षा तिथि कार्तिक शु० ७ स० २०२३ बीदासर, कुमारी, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान

३१ साध्वी श्री कुशलविमा जी, पिता श्री हसराज जी बाँठिया, बोकरा (बिहार) दीक्षा तिथि कार्तिक ७ स० २०४६, कुमारी, आचार्य श्री तुलसी, वर्तमान

--पन्नालाल बाँठिया
निदेशक- जय तुलसी फाउन्डेशन
लाडनू

१० साध्वी श्री रतना जी पिता श्री जैतरुप जी बाँठिया, नोखा, पति श्री रामलाल जी बोथरा, सुजानगढ, दीक्षा जेठ सुदी १५, विधवा, आ० श्री डालगणी, स्व० आसाढ कृष्णा १२ सं० २००८ (अग्रगण्य सं० १९६५)

११. साध्वी श्री सुवंटाजी पति श्री मदनचंद जी बाँठिया चुरू दीक्षा पो० कृष्णा ६ सं० १९६० विधवा, आ० श्री कालूगणी, स्व० आसाढ कृष्णा ३ सं० १९७५

१२. साध्वी श्री छगनांजी पिता श्री हरकचद जी बाँठिया, लाडनूं, पति श्री रावतमल जी दूगड, लाडनूं, दीक्षा आसाढ सुदी ७ सं० १९६४, लाडनूं, विधवा, आचार्य श्री कालूगणी, स्व० जेठ सुदी ८ स० २०२३

१३ साध्वी श्री रूपाजी, पति श्री सरदारमल जी बाँठिया, चुरू, दीक्षा भादवा सुदी १५ सं० १९६६, चुरू, विधवा, आचार्य श्री कालूगणी, स्व० कार्तिक कृष्णा १३ सं० २००८, लाडनूं

१४. साध्वी श्री प्रतापांजी, पति श्री रावतमल जी बाँठिया, बीदासर, दीक्षा चैत कृष्णा ८ सं० १९७३, विधवा, आचार्य श्री कालूगणी, स्व० जेठ शु० १२ सं० २०२७ (अग्रगण्य सं० १९९७)

१५ साध्वी श्री मूलांजी पति श्री मनसुखलाल जी बाँठिया भीनासार (स्थानकवासी) दीक्षा आसोज शु० ८ सं० १९७४, विधवा, आचार्य कालूगणी की आज्ञा से मुनि श्री पृथ्वीराज जी द्वारा दीक्षित, भीनासार में , स्व० कार्तिक शु० ७ सं० २०२२ रामसिंह जी का गुढा

१६ साध्वी श्री चान्दा जी, पिता श्री मनसुखलाल जी बाँठिया (स्थानकवासी) भीनासार, दीक्षित आसोज शु० ८ सं० १९७४, कुंवारी, आचार्य श्री कालूगणी की आज्ञा से मुनि श्री पृथ्वीराज जी द्वारा दीक्षित, भीनासार में, स्व० माघ शु० ३ सं० २०२६ (अग्रगण्य सं० १९८४)

१७. साध्वी श्री मनोहरांजी, पति श्री महालचंदजी बाँठिया सुजानगढ़, दीक्षा तिथि भादवा सुदी ८ सं० १९७६ बीदासर, विधवा, आचार्य श्री कालूगणी, स्व० जेठ सुदी ६ सं० २०२० लाडनूं

१८ साध्वी श्री कमलू जी, पिता श्री मोतीलाल जी बाँठिया, जयपुर, दीक्षा तिथि सं० १९८३ माघ शु० ७ लाडनूं, विधवा, आचार्य श्री कालूगणी, वर्तमान

विशेष जानकारी:-

साध्वी श्री कमलू जी स० २००० से वर्तमान तक गुरुकुल वास में साध्वी प्रमुखा श्री झमकू जी, साध्वी श्री लाडांजी, साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभाजी, की सेवा मे रह रहे हैं और तीनों के समय में व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों में पूर्ण सहयोग। आचार्य श्री तुलसी द्वारा आमेट में श्री अमृत महोत्सव पर दिनांक १२ सितम्बर १९८६ को निष्काम सेवी सम्बोधन से सम्मानित। बीदासर मर्यादा महोत्सव पर दिनांक ३० जनवरी १९९३ को "शासन गौरव" सम्बोधन से सम्मानित। संवत् २०२३ से २०२८ तक दक्षिण यात्रा में साध्वी समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था और भी अनेक बगशीषें प्राप्त। हस्तकला, लिपीकला, आपरेशन आदि में सिद्धहस्त।

१९ साध्वी श्री लाधू जी, पिता श्री नथमल जी बाँठिया, पति श्री डालचन्द जी दफ्तरी, सरदारशहर, दीक्षा तिथि जेठ शु० ४ सं० १९८५ सरदारशहर, पति सहित आचार्य कालूगणी, वर्तमान (अग्रगण्य सं० २०२८)

२०. साध्वी श्री सुन्दरजी, पिता श्री मनसुखलाल जी बाँठिया, भीनासर, पति श्री ताराचन्द जी मालू, दीक्षा तिथि कार्तिक सुदी २ सं० १९८८, बीदासर, विधवा, आचार्य श्री कालूगणी, स्व० माघ शुक्ला १/२ सं० २०२५ नालग्राम में

२१. साध्वी श्री सन्तोंका जी, पिता श्री नथमल जी बाँठिया, सरदार शहर, दीक्षा तिथि कार्तिक शु० २ सं० १९८८, बीदासर, कुमारी, आचार्य श्री कालूगणी, स्व० सं० २०५० बीदासर

२२. साध्वी श्री सुरज कुमारी जी, पिता श्री मोतीलाल बाँठिया जयपुर, दीक्षा तिथि आषाढ़ सुदी १ सं० १९८९ लाडनूं, कुमारी, आचार्य श्री कालूगणी, वर्तमान (सं० २०१०)

सेठ बुलाकीचन्द जी का जन्म वि० स० १६४६ में हुआ। इनका पहला विवाह दस्साणी परिवार मे हुआ। पहली पत्नी के निधन के पश्चात् इनका दूसरा विवाह रायपुर (मध्य प्रदेश) के सेठ सुगनचन्द जी मालू की पुत्री सुन्दरबाई से हुआ। इनके यहां एक पुत्री भी जन्मीं, जो दो वर्ष की अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो गईं। सेठ बुलाकीचन्द जी का भी शरीर वि० सं० १६८२ में जेठ वदी ४ को शान्त हो गया। इनकी मृत्यु के उपरान्त श्रीमती सुन्दरबाई ने मुझे वि० स० १६८५ में पौष सुदी १५ दिनांक २५ जनवरी १६२६ को गोद ले लिया तथा कुछ समयोपरान्त खरतरगच्छ मे दीक्षा लेकर चन्द्रश्रीजी के नाम से साध्वी विख्यात हुईं।

मेरे चार पुत्र कान्तीलाल, राजकुमार, प्रकाशचन्द, तथा सुरेन्द्र कुमार और पुत्री श्रीमती विजया नाहर, तथा श्रीमती रेणु रैदानी जन्मे। सेठ फूलचन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती मगनबाई ने वि० सं० २०३२ मे माघ सुदी ५ दिनाक ५ फरवरी १६७६ को सुरेन्द्र कुमार को गोद ले लिया।

सेठ कस्तूरचन्द जी के परिवार में श्री रिखबचन्द जी और फतेहचन्द जी दोनो ने अच्छी उन्नति की है। श्री रिखबचन्द जी, कस्तूरचन्द फूलचन्द फर्म बन्द हो जाने के पश्चात् फूलचन्द हजारीमल मे भागीदार बने, फिर कुछ वर्ष सेठ मगनमल जी पारख के यहां बम्बई मे नौकरी कर छातो का अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया तथा सर्वश्री रिखबचन्द बॉंठिया के नाम से उसका संचालन अब इनके एक मात्र पुत्र श्री गजराज बॉंठिया कर रहे है। श्री गजराज ने उच्च शिक्षा पाई है वह मिलनसार एव लोक व्यवहार मे अत्यन्त कुशल है। इनके तीन पुत्रिया हैं। श्री रिखबचन्द के दो पुत्रियां भी है श्रीमती किरनबाई लूणावत तथा श्रीमती गुलाब बाई गोलछा।

सेठ फतेहचन्द जी बॉंठिया का जन्म दिनाक ३० जून १६१७ को बीकानेर मे हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा महाजनी विद्यालय में हुई और फिर पारिवारिक–व्यापार मे यह लग गये। इनका विवाह श्री मूलचन्द जी साड की पुत्री चांदा देवी के साथ हुआ। श्री फतेहचन्द के दो पुत्र हैं ज्येष्ठ श्री मोहनलाल बॉंठिया जिसका जन्म ५ फरवरी १६४६ को और दूसरे पुत्र श्री हंसमुखलाल बॉंठिया का जन्म ४ अप्रैल १६६१ को हुआ। मोहनलाल के एक पुत्र श्री नरेन्द्र कुमार बॉंठिया का जन्म १८ जुलाई १६६७ को और दूसरे श्री हंसमुखलाल के पुत्र श्री जितेन्द्र का जन्म २७ अगस्त १६८२ को हुआ। इनके दूसरे पुत्र श्री राहुल का जन्म ५ फरवरी १६८६ को हुआ। श्री फतेहचन्द जी सेन्चुरी मिल के छाते के काले कपडे के सोल–सेलिंग एजेन्ट रहे है। छाता बाजार में इनकी बडी धाक है। इनके दोनों ही पुत्र मिलनसार हैं और बम्बई मे अपना कपडे का कारोबार कर रहे हैं।

सेठ कस्तूरीलाल जी की एक मात्र पुत्री श्रीमती भूरीबाई गोलछा जीवित हैं जो सेठ पूनमचन्द जी गोलछा को विवाही गई। इनके सात पुत्रियां और तीन पुत्र श्री सोहनलाल जी, श्री संपतलाल जी एवं श्री शक्तिलाल जी गोलछा हैं।

-हजारीमल बॉंठिया

ओसवाल समाज मे ७७ दातार हुए, जिनमें बाँठिया गोत्र के भुजनगर निवासी तेजपाल बाँठिया हुए। बाँठिया गोत्र की कुल देवी "दादी माता" हैं, जिनका मन्दिर बीकानेर में बना हुआ है।

"बाँठिया गोत्र" की उत्पत्ति के विषय मे विभिन्न विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं, किन्तु एक तथ्य निश्चित है कि बाँठिया गोत्र के लोग उदार वृत्ति के होते हैं और जहां निवास करते हैं, अपनी एक विशेष छवि समाज मे बनाते हैं साथ ही अपने निवास क्षेत्र में वे विशिष्ट हस्ती स्वीकार किये जाते हैं।

हमारा परिवार "मल्लावत बाँठिया" है जो मल्लजी की संतान हैं। पहले बीकानेर की कोचरों की गुवाड में हमारे परिवार का एक ही घर था, पर अब उनकी संख्या सात हो गई है। हम लोग कहां से आकर बीकानेर में बसे इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है।

भाटों की बही के अनुसार हमारे परिवार मे फूलराज जी के तीन पुत्र हुए (१) धनसुख जी (२) शेरमल जी तथा (३) शिवजी जी। धनसुखजी के एक पुत्र हुआ सेरा, शेरमल जी के पुत्र हुए (१) केशरीचन्द जी (छोटामल जी) तथा (२) लक्ष्मीचन्द जी। लक्ष्मीचन्द जी की एक ही संतान पुत्र लाभचन्द जी हुए, पर लाभचन्द जी के यहां कोई संतान नहीं हुई, उनकी पत्नी जैन साध्वी बन गई। इन सब में केशरीचन्द उर्फ छोटामल जी भाग्यशाली हुए। हमारा बाँठिया परिवार इनकी ही संतान है। शिवजी तथा शेरजी के संतान न होने के कारण इन दोनो की पत्नियों ने श्री केशरीचन्द जी को वि० सं० १६१४ मे मिगसर वदी २ को गोद ले लिया।

सेठ केशरी चन्द जी बडे कर्मठ, धनपति तथा शौकीन मिजाज के थे। आपने ही हमारे परिवार के वर्तमान पुश्तैनी मकान को वि० सं० १६२२ में मिगसर वदी ११ को सरकारी खजाने में ५०१) रुपया जमाकर खरीदा। यह मकान कभी मलखत बाँठिया, चतुर्भुज, त्रिलोकचन्द तथा जालमन्द जी का था, जो बीकानेर छोड कहीं अन्यत्र चले गये थे और मकान पर सरकारी कब्जा हो गया था। सेठ केशरीचन्द जी जब पूजा ध्यान करते तो घी की जगह इत्र का दीपक जलाते थे। कसूमल रग की पगड़ी पहनते और कानों में मोती व पन्ना का भंवरिया (वाली) पहनते थे। इन्हे घुडसवारी का शौक था।

सेठ केशसरीचन्द जी के तीन पुत्र श्री किशनचन्द जी, श्री कस्तूरचन्द जी, तथा श्री गुलाबचन्द जी और [illegible] फलौधी के गोलछा परिवार में विवाही गई, ये निसंतान रहीं और [illegible] जी गोलछा को गोद लिया और स्वयं स्थानकवासी परम्परा मे जैन साध्वी बन गई। वे पचास वर्ष तक संयम पालन कर स्वर्ग सिधारीं।

सेठ किशनचन्द जी के एक मात्र पुत्र हुए श्री फूलचन्द जी और इनका एक मात्र पुत्र मैं हुआ, मेरी दो बहिने भी जन्मी, बडी श्रीमती जमनाबाई डागा तथा छोटी श्रीमती मीना कुमारी चोपडा।

सेठ कस्तूरचन्द जी के पाँच पुत्र श्री भैरुदान जी, श्री रिखबचन्द जी, श्री फतेहचन्द जी, श्री दीपचन्द जी तथा श्री उत्तमचन्द जी हुए। इनके एक पुत्री ने भी जन्म लिया जिनका नाम श्रीमती भूरीबाई गोलछा है। इस समय श्री फतेहचंद जी तथा श्री दीपचंद जी हैं और उनकी बहिन श्रीमती भूरीबाई गोलछा जो लगभग ८५ वर्ष की हैं, जीवित हैं। सेठ कस्तूरचन्द जी का विवाह रामपुरियो के परिवार में हुआ था और इनकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती लक्ष्मीबाई था। वे मेरी दादी थीं, उनका अपार स्नेह मुझे प्राप्त हुआ। दादी का स्वर्गवास वि० सं० २००३ में हुआ।

सेठ कस्तूरचंद जी
भैंरुदान
रिखबचंद
फतेहचंद
दीपचंद
उत्तमचंद
गजराज
मोहनलाल
हंसमुखलाल
रेशमा
पुत्री
पुत्री
नरेन्द्र
जितेन्द्र
राहुल
लीलमचंद
मनोहरलाल
अशोककुमार
खेमचंद
माणकचंद
प्रकाशचद
धर्मचद
लालचंद
तेजस
उज्ज्वल
सेठ भैंरुदान जी
कन्हैयालाल
माणकचद
मोतीलाल
सुन्दरलाल
जयचंद
हीरालाल
जुगराज
अशोक
सदीपकुमार
धीरज
सुरेन्द्र
पूनम
कन्हैयालाल
बंशीलाल
अबीरचंद
घेवरचंद
रामलाल
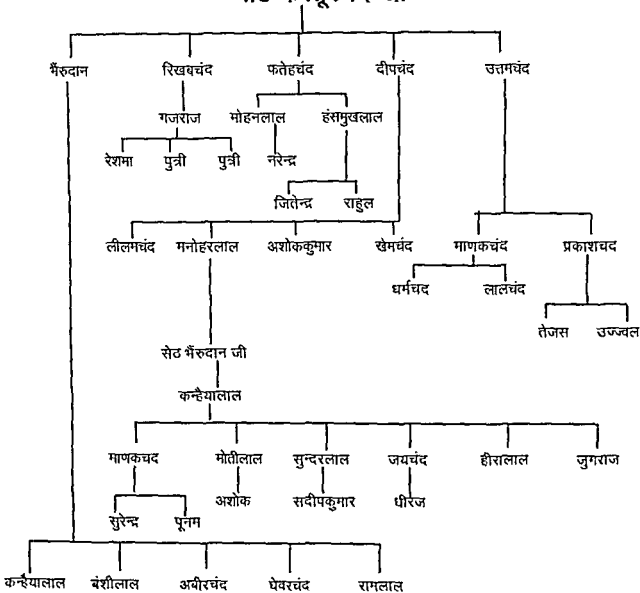
सेठ किशनचंद जी बाँठिया
वंशावली
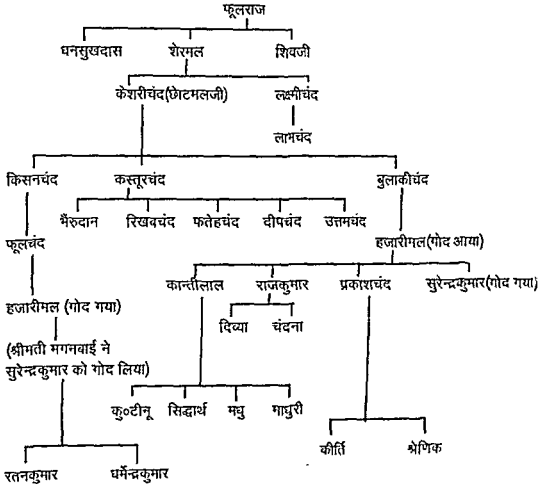
हाथरस सांस्कृतिक समारोह समिति

बसन्त के मंगल-मय पर्व पर आयोजित

सरस्वती-पूजा-समारोह में

श्री हजारीमल जी बाँठिया की दीर्घ-कालीन

साहित्य-सेवाओं के प्रति कृतज्ञता एवं विनम्रता-

पूर्वक हार्दिक अभिनन्दन करती है।

मंगल कामनाओं सहित

डा० रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी
अध्यक्ष

डा० रवीन्द्र मोहन
संयोजक

जयप्रकाश शर्मा
मन्त्री

मदनलाल आज़ाद
प्रचार मन्त्री

गिर्राज किशोर सौंखिया
प्रचार संयोजक

गिर्राज किशोर नीरव
काव्य संयोजक

सुरेश चतुर्वेदी
संचालक

संस्थापित वर्ष संवत् २०३८ वि०

शासन द्वारा पंजीकृत सं० ७९९९३

हिन्दी–साहित्य–गरिमा, उत्तर प्रदेश

संस्थापक- कृष्णकुमार गुप्त 'नवीन'

उपाधि वितरण समारोह संवत् २०४२

श्री हजारी मल जी बाँठिया आत्मज/आत्मजा

श्री लेट फूलचन्द्र जी बाँठिया मूल स्थान बीकानेर (राजस्थान)

वर्तमान निवास कानपुर

जन्म तिथि .... को साहित्यिक/सांस्कृतिक/धार्मिक/राजनैतिक/आर्थिक

क्षेत्र में राजस्थान एसोसियेशन के अध्यक्ष (संरक्षक-सदस्य)

पद से की गई उल्लेखनीय सेवाओं

के कारण श्री राष्ट्रकवि, पद्मश्री डॉ० सोहन लाल द्विवेदी की अध्यक्षता में,

मुख्य अतिथि श्री प्रो० बासुदेव सिंह जी पूर्व मंत्री उ०प्र० के समक्ष

हिन्दी साहित्य गरिमा, उत्तर प्रदेश

'नगर - श्रेष्ठ'

की उपाधि से सम्मानित / पुरस्कृत कर यह उपाधि / सम्मान पत्र प्रदान करता है।

गोपीवल्लभ सहाय
समारोह अध्यक्ष

संस्थाध्यक्ष

मुख्य अतिथि

(कृष्णकुमार गुप्त 'नवीन')
संस्थापक एवं महामंत्री
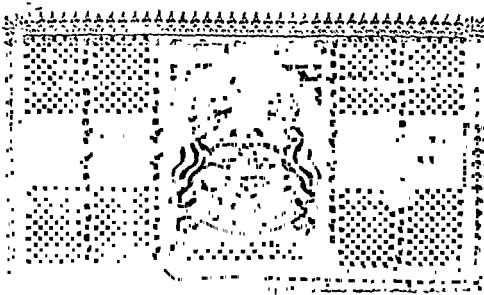
विशेष :
दिनांक : १९ जनवरी ८६

परिशिष्ट

मतु सुन्दर जात बांठिया री है हजारी मलने हमा गजी से
खोले लीया कलम खुद

स्व० श्रीमती सुन्दरबाई बाँठिया द्वारा लिखित गोदनामा

जय मानव !　　जय भारत !!　　जय आजाद जगत !!!

आजाद कमेटी द्वारा आयोजित,

गान्धी शास्त्री मेला महोत्सव

गांधी पार्क, तिराहा अलीगढ़ रोड़, हाथरस

(विशेष सहयोगी, नगर पालिका हाथरस)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कु० हजारी मल बांठिया स्थान कानपुर जिला .... ने अनुशासित रहकर आजाद कमेटी के रचनात्मक कार्यक्रमों में भाग लिया, एवं सम्मानित स्थान प्राप्त किया। इनका कार्य सराहनीय एवं प्रशंसनीय रहा। हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

दिनांक 2-1-1988

संस्थापक – मदनलाल आजाद, रामस्वरूप राजौरिया, ला० कालीचरण गुप्त, हीरासिंह आजाद, [संस्थापक आजाद कमेटी हाथरस]

परगनाधिकारी हाथरस　　अधिशासी अधिकारी नगर पालिका हाथरस　　संयोजक-निरंजनलाल उज्व्वल

महान समाज सेवी एवं साहित्य प्रेमी
माननीय श्री हजारीमल बाँठिया के
कर-कमलों में सादर समर्पित
नागरिक अभिनन्दन-पत्र

मान्यवर,

हमें आपका स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए महान गौरव तथा गरिमा का अनुभव हो रहा है, आपके पावन कार्यों से यह क्षेत्र धन्य हुआ है, हम सभी क्षेत्रवासी आपके सानिध्य व समाज-सेवा से कृतार्थ हो गये हैं, ये भाव-सुमन समर्पित करते हुए हम आनन्द-विभोर हो रहे हैं।

आपका जन्म राजस्थान प्रदेश के बीकानेर नगर के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। आपने अपनी प्रतिभा व अध्यवसाय से बाल्यकाल से अब तक के जीवन में अमूल्य समाजसेवा, त्याग एवं साहित्य प्रेमी के रूप में समाज में उच्च स्थान प्राप्त किया। आपके चार सुयोग्य पुत्र तथा दो सुपुत्रियां हैं जो बड़े ही समाजसेवी तथा उद्योगपति हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया वास्तव में देवी का स्वरूप एवं आपकी परम सहयोगिनी है। आपने अपनी जन्म-स्थली राजस्थान में ही नहीं बल्कि उ० प्र० में भी आपने अपनी समाज सेवा के ऐसे पुष्प बिखेरे हैं जो वास्तव में अविस्मरणीय हैं। अस्वस्थता समाज का अभिशाप है, इसी परिप्रेक्ष्य में आपने इस क्षेत्र में भी श्री वर्धमान जैन सार्वजनिक चिकित्सालय का शिलान्यास अपनी धर्मपत्नी श्रीमती जतनकुमारी बाँठिया के कर-कमलों द्वारा कराया जो निरन्तर पल्लवित हो रहा है। उसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री एम० चेन्ना रेड्डी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आपके ही अथक प्रयास से इस चिकित्सालय में प्रतिवर्ष नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें रोगियों को निःशुल्क आवास, भोजन तथा शल्य चिकित्सा की सुविधायें बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध कराई जाती हैं। अब आपने विकलांग लोगों की दयनीय दशा देखकर इस चिकित्सालय के माध्यम से निःशुल्क विकलांग शिविर लगाने का नया कठोर व्रत लिया है जिससे आज की पावन वेला पर चिकित्सालय में विकलांगों को निःशुल्क कृत्रिम हाथ-पैर, बैसाखी, जूते, ट्राई साइकिल, आदि प्रदान किये जा रहे हैं।

साहित्य प्रेमी,

"साहित्य ही समाज का दर्पण है" इसको ही आपने मूलमंत्र मानकर बाल्यावस्था से ही अपने मामाजी श्री अगरचन्द जी नाहटा, जिनका अभिनन्दन साहित्य प्रेमी होने के कारण भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया था, के कुशल मार्ग दर्शन में साहित्यिक कार्य किये। आपने पंचाल शोध संस्थान को स्थापित कर कम्पिल, कन्नौज, शंकिसा तथा अहिछत्रा महोत्सव पूर्ण कर इस क्षेत्र के इतिहास को पुनः जाग्रत किया। आपने निर्धन एवं सुयोग्य अनेकों छात्रों को आर्थिक सहायता देकर उनकी शिक्षा पूर्ण करायी।

त्याग मूर्ति,

एक उच्चकोटि के उद्योगपति होते हुए भी आपने अपने परिवार का कार्य अपने सुयोग्य पुत्रों पर छोड़कर, कठोर समाजसेवा का व्रत लिया है आप जाति तथा धर्म के भेदभाव की सीमाओं को तोड़कर समाज की सेवा कर रहे हैं। वास्तव में आपके त्याग, साहित्य प्रेम व समाजसेवा की प्रशंसा करना अतिश्योक्ति नहीं होगी। आपका अभिनन्दन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप चिरायु होकर अपने अभीष्ट मार्ग पर उत्तरोत्तर अग्रसर होते रहें। इस क्षेत्र में आपने जो अविस्मरणीय सेवायें की हैं उनके लिये हम समस्त नागरिक आपके अत्यन्त आभारी हैं। तथा श्रद्धावनत होकर अपनी कृतज्ञता-ज्ञापन करते है।

विमल नाथ की विमल भूमि पर, खुला सेवा का द्वार। आज हजारीमल बाँठिया करा उर से हैं आभार।।
जिसे सत-सत वर्षों तक, किया आपने भी उपकार। कम्पिल को इस पुण्य भूमि पर, अब स्वागत है सत सत बार।।

हम हैं आपके-

राजेन्द्रसिंह गंगवार (विधायक)	चन्द्रप्रकाश अग्रवाल (पिक्कीवायू)	भगवानसिंह वर्मा, प्रधानाचार्य
वीरेन्द्रस्वरूप मिश्र (प्रतिनिधि 'आज', कायमगंज)	रामशंकर भारद्वाज	डा० रक्षपालसिंह राठोर अध्यक्ष, नगरयुवक कांग्रेस(आई), कम्पिल

एवं समस्त नागरिक कम्पिल क्षेत्र

सम्मान-पत्र

उद्योग व्यापार सम्मेलन

मेला श्री दाऊजी महाराज, हाथरस

वर्ष १९८८

श्री हजारी मल जी बोथिया

आपको नगर की विशिष्ट व्यापारिक सेवा एवं नगर
की प्रगति में योगदान के लिए

उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल, हाथरस

सम्मानित करता है।

संयोजक
रघुनाथप्रसाद टालीवाल
जिला मंत्री

जिला अध्यक्ष	मेला अध्यक्ष	महामंत्री	मंत्री
डॉ० राममूर्ती शर्मा	अजयकिशोर अरोरा (एडवोकेट)	गिरीजकिशोर 'नीरव'	मदनमोहन (अपना वाले)

माननीय

सेठ हजारीमल वाटिया जी

सामाजिक एवं
व्यवसायिक क्षेत्र

प्रशस्ति पत्र

आपकी दीर्घ समर्पित
यशस्वी तपनिष्ठ तथा
मेधावी सतत सेवाओं का
हार्दिक अभिवादन स्वागत
अभिनन्दन और वन्दन
मंगल कामनाओं सहित

आपके

14 मार्च 1995

अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	संयोजक
भगवती पौरुष	विजय देव शर्मा	योगेन्द्र मोहता
एडवोकेट नोटरी रे.वार.ऐ. हाथरस	एडवोकेट	एडवोकेट

रेवेन्यू वार

उद्योग व्यापार प्रदर्शन
ला श्री दाऊजी महाराज, हाथरस

चिर युवा बाँठिया जी

सन् संवत् तो याद नहीं, पर इतना अवश्य याद है कि कड़ाके का जाड़ा था, सितम्बर का महीना था और "मानस संगम" का प्रांगण। ढीली-ढाली धोती-कुरता व लम्बा कोट पहने हमारे चरित्र-नायक टोपी ठीक करते हुए, इधर-उधर टहल रहे थे। बीच-बीच में वह भी हमारी ओर देख लेते थे, और मैं भी उनकी ओर। ऐसा लग रहा था कि हम लोग एक दूसरे को पहचानते हुए भी न पहचानने का नाटक कर रहे थे। अन्त में विजय उनकी ही हुई। वह संकोचवश कतरा रहे थे और मैं अस्तित्वहीन बड़प्पन की अस्पृश्यता से पीड़ित था। मैंने नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया। वह विनम्रता के कवच से बाहर थे। बात यह थी, स्व० कृष्णदत्त जी वाजपेयी से हम दोनों लोगों ने बिना मिले ही परिचय प्राप्त कर लिया था। एक दूसरे के सानिध्य की भी लालसा थी, पर संकोच और दम्भ आड़े आ रहा था। फिर तो उन्होंने ऐसा अपनाया, कि तुलसी की चौपाई सटीक बैठ गई-

"बिछुड़त एक प्राण हर लेई"

अब तो यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि वे मित्रता व स्नेह के स्वयं एक उदाहरण हैं।

श्रद्धेय श्री हजारीमल बाँठिया न तो साहित्यकार हैं और न आधुनिक अर्थों में किसी विद्यालय की डाक्टरेट का बोझ लादे हुए हैं, परन्तु जीवन की पाठशाला से सीखकर आज वह एक साहित्य-पोषक तथा पुरातत्ववेत्ता के रूप में पहचाने जाते हैं। पांचाल प्रदेश तथा उसके इतिहास को अतीत के गर्भ से निकाल कर, आज विद्वत्-समाज को उसपर गम्भीरता से विचार करने को मजबूर कर दिया है। सांस्कृतिक दृष्टि की उदारता तभी और उसी के लिए सम्भव होती है जिसकी पहले से ही अपनी संस्कृति में गहरी पैठ हो। जो भी विद्वान उनके सम्पर्क में आया, वह उनकी गहराई से बिना प्रभावित हुए नहीं रहा। उनके लिए कोई भी सृजनात्मक कार्य दुरूह नहीं है। पुरातत्व तथा इतिहास के वह पुरोधा हैं, उसी कारण उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को अतीत के गर्भ से निकाला, जिसने हमारी सबसे अमूल्य धरोहर रामायण पर तुलनात्मक अध्ययन कर उसे विश्व के समक्ष रखकर उसका मूल्यांकन करने को मजबूर किया। इटली का एक नवयुवक प्राची विद्वान तैस्सितोरी हमारे देश में आकर हमारी ही अमूल्य धरोहर को हमारे सम्मुख उजागर करके हमें ललकारता-सा प्रतीत होता है, कि, "ऐ भारतवासियो, अपने एव अपनी महान संस्कृति को पहचानो, तुम संसार को आज भी नेतृत्व दे सकते हो।" लगातार खोज के परिश्रम में रहते उसके स्वास्थ्य को उसका मूल्य चुकाना पड़ा और वह अल्पायु (३२ वर्ष) में ही बीकानेर की धरती में सदैव के लिए सो गया। उसी को प्रकाश में लाने का सारा श्रेय श्री हजारीमल बाँठिया जी को ही है। सच ही है कि इतिहास का रथ वह हाँकता है, जो सोचता है और सोचे हुए को करता भी है।

इन्होंने अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए कभी सोचा ही नहीं, या यूँ कहूँ कि उनके पास इस पर सोचने का समय ही नहीं था। वह अपने सामाजिक, साहित्यिक, तथा ऐतिहासिक कर्त्तव्यों में इतने लिप्त होते गये कि व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ गये। धर्म के प्रति उनकी गहरी आस्था है। वे श्वेताम्बर जैन समाज के कर्णधारों में गिने जाते हैं, पर उनकी धर्मनिष्ठा संकुचित न होकर मानव कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहती है। वह 'अनेकान्त दर्शन' की सादर मूर्ति हैं। कम्पिल के विभिन्न धर्मस्थल तथा वहाँ का अस्पताल आज उनकी कर्मठता तथा उदारता के झिलमिल सितारे हैं। हमारे जैसे निम्न व्यक्ति को अपनी उदारता के वश में कम्पिल ले जाकर जैन समागम में प्रतिष्ठित किया। हमें तो याद नहीं, उनके द्वारा कोई भी समारोह या सम्मेलन आयोजित हुआ हो जिसमें उन्होंने हमें आमंत्रित न किया हो। इसी प्रकार वह अपने छोटे से छोटे साथियों को प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करते रहते हैं।

उनका कहना है कि दूसरों को पीड़ा पहुँचाये बिना कोई रचनात्मक कार्य करते रहो। चाहे वह हिन्दी का हो, इतिहास का हो या धर्म का हो। उनकी पैठ हर विधा में है। उन्हीं के प्रयास से आज तैस्सितोरी की मूर्ति "तुलसी उपवन" कानपुर की शोभा बढ़ा रही है। उनके व्यक्तित्व के नाना अंश जो मेरी स्मृति में टंके हैं उनकी नम्बरिंग करना भी मुश्किल है, फिर उन्हें तरतीब से रखना तो बिलकुल असम्भव ही है। यह उन्हीं की प्रेरणा थी कि तैस्सितोरी की जन्म-स्थली को नमन करने के लिए हम इटली गये। इन्होंने वहां के बारे में हमें इतना विस्तार से बतला दिया था कि हमें अपने उद्देश्य में सफल होने में देर न लगी। उनके तैस्सितोरी के प्रति प्रेम ने उन्हें दो बार इटली जाने को मजबूर कर दिया। एक बार तो वह सपत्नीक गये। वहां उन्होंने अपनी खोज पर सारगर्भित भाषण दिया तथा वहां से लौटने पर बहुत छोटी परन्तु सारगर्भित पुस्तक की रचना की, जिसको पढ़कर ही आनन्द लिया जा सकता है।

अपनी कृपावश वह हमें समय-समय पर पत्र लिखकर हमारी शिथिल होती काया व मन में उत्साह भरते रहते हैं। वे सच्चे कर्मयोगी एवं पुरुषत्व के आदर्श हैं। हम अपने को उनके सानिध्य में पाकर धन्य समझते हैं। उनका पारिवारिक जीवन सुखद है, सभी उनके प्रेममय व्यक्तित्व से बँधे हुए हैं। वातावरण उनके सृजनशील कलाकार को दिनोदिन जवान बनाता है।

प्रताप कुटीर, कन्नौज

डॉ० प्रताप नारायण टण्डन

□ □ □

The International Association of

LIONS CLUBS

Be it known to all men that

Lion Hazarimal Batia

is a CHARTER MEMBER of the LIONS CLUB of

HATHRAS

in accordance with the Constitution
and By-Laws of this Association.
In witness whereof this
CERTIFICATE of MEMBERSHIP
has been issued this 24th day of April 1971.

INTERNATIONAL PRESIDENT

CLUB PRESIDENT

सेठ श्री नेमीचन्द्र जी सा० कांकरिया : संक्षिप्त जीवन परिचय

आप उदार, धार्मिक, साहित्य प्रेमी एव शिक्षा प्रेमी, गुप्त दानी सेठ श्री गुलाबचन्द्र जी साहब काकरिया के पौत्र एवं समाजसेवी, शिक्षा जगत के उदयमान नक्षत्र, व्यवसाय जगत के शहशाह, कॉटन किंग एवम उद्योगपति सेठ श्री पन्नालाल जी साहब काकरिया के सबसे कनिष्ठ पुत्र थे। आपका जन्म विक्रम सवत् १६८२ की शुभ मिति माघ सुदी सप्तमी दिनाक २१ जनवरी, १६२६ को सेठानी श्रीमती सुन्दर कवरजी काकरिया की कोख से ब्यावर नगर मे हुआ। आप अपनी दादीजी सा सेठानी सा श्रीमती हुलास कवरजी काकरिया एवम् माताजी सेठानी सा श्रीमती सुन्दर कवर जी काकरिया व अपने पूज्य पिताश्री जी की प्रेरणा–स्वरूप बचपन से ही बहुत धार्मिक विचारों वाले एवम् उदार साहित्य प्रेमी शिक्षा जगत के देदीप्यमान नक्षत्र रहे इसी कारणवश आपने अनेक धार्मिक, सामाजिक एवम् शिक्षा के क्षेत्र की सस्थाओ एवम् राजनैतिक संस्थाओ के सरक्षक, अध्यक्ष एव मन्त्री पद को अनेक वर्षो तक सुशोभित किया।

आपका शुभ लग्न रास के कामदार सेठ एवम् उटकमण्ड (नीलगिरी) व्यवसाय–सघ के सरक्षक एव अध्यक्ष, नीलगिरी जिला सिने मण्डल, नीलगिरी चाय बागान मालिक संघ के अध्यक्ष सेठ श्री छगनमल जी सा० मुथा की द्वितीय सुकन्या श्रीमती इचरज कवर जी सा० के साथ विक्रम संवत् २००१ की शुभ मिति चैत्र कृष्ण पक्ष १० को हुआ।

आपने अपने जीवनकाल मे शिक्षा जगत के महत्वपूर्ण कार्यो मे श्री जैन गुरुकुल छात्रावास एव श्री जैन गुरुकुल प्राथमिक विद्यालय का श्री गणेश किया। धार्मिक क्षेत्र मे श्री जैन जवाहर मित्र मण्डल की स्थापना कर सुसस्कृत सद् साहित्यो का प्रकाशन करवाया एवं सामाजिक क्षेत्र में बालविवाह, अहिंसा के क्षेत्र में जीव हत्या का विरोध एव अहिंसा प्रचार की स्थापना करी। राजनैतिक क्षेत्र मे महात्मा गांधी के दिशा निर्देश एवम् जैनाचार्य श्री जवाहर के सद् उपदेशो को गृहीत कर आजीवन खादी वस्त्रो को पहनने का व्रत धारण किया। स्थानीय सामाजिक सस्थाओ मे समाज सुधार, शिक्षा प्रोत्साहन के व्यवसाय जगत मे आपके पिताश्री के आदर्शों को अनुगृहण कर व्यवसाय मे प्रगति करी। आपको स्थानीय जैन सघ ने सामाजिक स्तर पर समाज शिरोमणी एवम् धर्मवीर की उपाधियो से सुशोभित किया।

आपके दो अग्रज भ्राता स्वर्गीय श्री पूनमचन्द जी सा काकरिया एव श्री प्रेमराज जी काकरिया है। आपकी लाडली छोटी बहन श्रीमती उगम कंवर जी पालावत दिल्ली निवासी हैं।

आपके दो सुपुत्र चि० ज्ञानचन्द जी काकरिया एवम् चि० नरेन्द्र कुमार जी काकरिया एवम् पुत्र–वधुएँ श्रीमती सन्तोष काकरिया एवम् श्रीमती निर्मला कांकरिया है। आपके सुपुत्र आयल मिल्स जिनिंग प्रेसिंग फैक्ट्रीज एव रसायन इण्डस्ट्रीज एव रग रसायन के व्यवसाय में रत हैं। आपकी चार पुत्रिया क्रमश श्रीमती सुशीला कुमारी जी दुगड श्रीमती किरण कुमारी जी बाँठिया, श्रीमती सरोज कुमारी जी भण्डारी एव श्रीमती प्रमिला कुमारी जी सुराणा हैं।

आपके तीन पौत्र एवम् दो पौत्रिया क्रमश. श्री ऋषभ काकरिया, अर्जित काकरिया, श्रेयान्स काकरिया कु० शीतल काकरिया, कुमारी नम्रता काकरिया हैं। आपके दोहिते एवम् दोहितीया क्रमश रजत बाँठिया धर्मेन्द्र बाँठिया नितिन भण्डारी, दिव्या सुराणा दीपिका सुराणा, दर्शना सुराणा एव दीपक सुराणा हैं।

विक्रम सवत् २०४४ मिती सावण सुदी १५ तदनुसार दिनांक ६ अगस्त १६८७ रक्षाबन्धन के दिन सायकाल पाक्षिक प्रतिक्रमण हेतु उपासना गृह की राह पर जाते हुए क्षणभर में ही आप पावन धाम पधार गये। आपका सम्पूर्ण जीवन सादगीमय उदार धार्मिक शिक्षा जगत का देदीप्यमान नक्षत्र एव सफल व्यवसायी रहा।

आपके स्वर्गवास पर अनेक राजनैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक, सामाजिक, शिक्षण क्षेत्र की अनेक सस्थाओ ने शोक सभाएँ आयोजित कर शोक व्यक्त किया।

अर्हम्

श्री पारसभाई बाँठिया

समाजसेवी अणुव्रत प्रवक्ता श्री पारसभाई बाँठिया
का जन्म राजस्थान के 'थाकडी' ग्राम में हुआ था।

आपने प्रारम्भ से ही निष्काम सेवा और त्यागपूर्ण जीवन जीया। आपने कभी अपनी ओर नहीं देखा, सारी जिन्दगी सामाजिक कार्यों मे लगाई, साथ ही पारवारिक दायित्व का भी निर्वाह भी किया। बचपन मे आपके पिता व भाईयो की मृत्यु ने आपको झकझोर दिया था। उस समय स्वतत्रता आन्दोलन जोरों से चल रहा था। उसमे आप सक्रिय रहे। सर्वोदय का कार्य आपने विनोबा जी के साथ किया। आपने कुछ महीने साबरमती आश्रम मे बिताये। बोलारम् को अपनी कर्मभूमि बनाया। उस समय आपने प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल की स्थापना की, आज वह मूर्त रूप मे खडा है। हैदराबाद ही नहीं, विश्व का जाना-माना चिकित्सालय हो गया है। बोलारम् मे साधना मंदिर की स्थापना आपने की, वह सुचारू रूप से चल रहा है। स्कूल के बच्चे हर क्षेत्र में अपना नाम कर रहे हैं। यह आपकी वृक्ष की पत्तिया खिल रहीं हैं। इसका नाम अभी "पारसभाई जैन मैमोरियल स्कूल" के नाम से जाना जाता है। आपने जैन समाज ही नहीं मानव जाति के कल्याण का कार्य किया। बोलारम् का हर व्यक्ति आपके पास कार्य लेकर आता, साथ ही समाधान पाकर जाता। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के कार्यों के लिए आपको नियुक्त किया, उसी वर्ष अचानक तीव्र हृदय विकार ने आपको उठा लिया। उस समय आपकी आयु ७२ वर्ष की थी। विश्व जैन परिषद, संवत्सरी एकीकरण, भारत जैन मण्डल, जैन सेवा संघ आदि काफी सस्थाओं के आप पदाधिकारी रह चुके हैं। भारतवर्ष को कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जो आपको न जाने या न पहचाने। आपमे एक विलक्षण शक्ति-प्रेरणा थी जो कार्यकर्ताओं को आकृष्ट करती थी। आपने जो भी कार्य हाथ मे लिया उसे पूर्ण किया। आपके कार्यों का लेखा-जोखा से संक्षिप्त ग्रथ तैयार होगा। संक्षिप्त मे इतना ही कहा जायेगा- आप "सक्रिय कर्मयोगी" आत्मविश्वास के धनी, व्यवहार कुशल, विनम्र सेवाभावी, अनुशासन प्रिय, अंतरंग स्नेही, साहित्य प्रेमी थे। काश और कुछ वर्ष उन्हे कार्य करने को मिलता तो यह हमारे समाज का सौभाग्य रहा होता। सच कहते हैं जो सबको प्यारा होता है, भगवान को भी प्यारा होता है।

आपके परिवार मे अभी पत्नी, चार पुत्र, पाँच पुत्री, पोता-पोती, दोयता-दोयती, पड़पोती पौत्रियों से भरा-पूरा परिवार है जो उनके ही आशीर्वचन और बताये मार्ग पर कार्य कर रहे हैं।

प्रस्तोती-
सौ० पुष्पा पवन बाँठिया
१३, बर्टन रोड,
बोलारम्
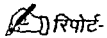
रिपोर्ट-

श्री हजारीमल बाँठिया
का
सार्वजनिक सम्मान तथा
अभिनन्दन ग्रन्थ - समर्पण - समारोह

कानपुर २५ सितम्बर, आज स्थानीय राजस्थान भवन मे कानपुर के साहित्यकार, समाजसेवी तथा विभिन्न सास्कृतिक सस्थाओ के सचालक श्री हजारीमल बाँठिया का ७२ वाँ जन्म-दिवस समारोह अत्यन्त भव्य, आकर्षक तथा आत्मीयतापूर्ण परिवेश मे सम्पन्न हुआ। समारोह मे बाँठिया जी को अपनी शुभकामनाएँ समर्पित करने हेतु नगर व प्रदेश के अतिरिक्त दिल्ली, कलकत्ता, बीकानेर, बम्बई आदि सुदूर स्थानो से उद्योगपति, संस्कृति प्रेमी तथा साहित्य प्रेमी जन पधारे।

समारोह के मुख्य अतिथि थे, म० प्र० शासन के जनशक्ति नियोजन मत्री श्री नरेन्द्र नाहटा तथा "वीरायतन" सस्था की सचालिका साध्वी चदना जी। समारोह की अध्यक्षता कानपुर के भू० पू० सांसद श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी ने की।

समारोह का प्रारम्भ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके हुआ। देवी सरस्वती को माल्यार्पण किये जाने के पश्चात् डॉ० रेनू निगम ने एक स्वागत गीत तथा मारवाड़ी भाषा मे एक गीत गाया।

फिर प्रारम्भ हुआ - बाँठिया जी को माल्यार्पण करने का सिलसिला, जिसमे समुपस्थित लगभग ३० विशिष्ट जनो ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए बाँठिया जी को शाल पहनाया, नारियल भेट किया और मोतियों के हार समर्पित किये। इनमे प्रमुख थे, मनसुख भाई कोठारी, जुगलकिशोर परसरामपुरिया, ललित कुमार नाहटा, एस० के० सेन, वी० के० पारिख, जे० एस० झवेरी, जी० एस० जौहरी, प्रो० के० एस० शुक्ला, डॉ० बी० के० गुप्त, डॉ० राष्ट्र बंधु, मनोज कपूर डॉ० प्रतापनारायण टडन, प्रो० रमेश तिवारी, डॉ० वी० पी० गौतम आदि।

समागत महानुभावों ने कहा कि यह समारोह नगर मे होने वाले समारोहो की श्रृंखला में एक अभिनव अनुभूति व्यक्त करता है। बाँठिया जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए श्रोताओ ने उनके शतायु होने की कामना की और कहा कि लक्ष्मी और सरस्वती के अपूर्व सामंजस्य के साथ बाँठिया जी के हृदय की विशालता उन्हें अनुकरणीय बनाती है। बाँठिया जी के द्वारा कम्पिल क्षेत्र मे स्थापित चिकित्सालय, वाचनालय एव पुरातत्व की दुर्लभ मूर्तियो का संग्रह तो है ही, साथ ही कानपुर में पंचाल शोध सस्थान की स्थापना, मथुरा मे ब्रजकला केन्द्र का सचालन उनकी विशेष कार्यक्षमता को प्रस्तुत करने वाले कार्य हैं। वक्ताओ ने इन गुणो के साथ बाँठिया जी के सहृदय तथा मृदुल एव व्यावहारिकतापूर्ण व्यक्तित्व की सराहना की।

समारोह के मुख्य अतिथि मा० नरेन्द्र नाहटा, जनशक्ति मंत्री, म० प्र० ने बाँठिया जी को एक व्यक्ति नहीं, वरन् संस्था बताते हुए कहा कि धर्म, समाजसेवा, साहित्य, पुरातत्व आदि के विभिन्न क्षेत्रो मे उनका योगदान संस्कार से प्राप्त है। उनका नाहटा परिवार से सम्बन्ध गर्व का विषय है। वस्तुत यह समारोह उनकी कर्मठता का सम्मान है। ऐसे कार्यक्रमों से समाज अपने गिरते हुए मूल्यों को उठाने, सुधारने का काम करता है। शार्टकट से अर्जित करने की

न्यायमूर्त्ति
स्व० उम्मेदचन्द जी ओसवाल

– हजारीमल बाँठिया

श्रीमती शान्तिदेवी ओसवाल

स्व० श्री यू०सी० ओसवाल

न्यायमूर्त्ति श्री उम्मेदचन्द जी ओसवाल का जन्म लखनऊ के प्रसिद्ध जौहरी घराने मे 18 अप्रैल 1917 को हुआ था। आपके पिता श्री रिखबदास जी जौहरी थे। श्री उम्मेदचन्द जी की छोटी आयु में ही माता–पिता का वात्सल्य उठ गया, वहीं से आपके मन में स्व–निर्माण की प्रवृत्ति जाग्रत हुई। आप बचपन से ही बड़े गम्भीर–चिन्तन तथा शान्ति एवं समझदारी से युक्त थे और शिक्षा में आपकी बहुत रुचि थी। आपने अपने पैतृक व्यवसाय को छोड़कर न्यायिक सेवा की ओर कदम बढाया। सन् 1936 मे आपका विवाह सहारनपुर के रायबहादुर श्री फूलचन्द जी गोधा की पुत्री शान्ती देवी के साथ लखनऊ मे हुआ। श्री फूलचन्द जी का अंग्रेजों के जमाने में बड़ा प्रभाव था और अंग्रेजी सरकार ने उन्हे अनेक सम्मान दिये थे। परन्तु देश की आजादी के लिए उन्होंने इनकी परवाह नहीं की और स्वाधीनता आन्दोलन मे सहयोग दिया।

सन् 1941 मे श्री उम्मेदचन्द जी का स्टेट जुडीशियल सेवा में चुनाव हो गया, तभी से वे बड़ी निर्भीकता से अपने न्यायिक कर्तव्यों का पालन करते रहे और 1962 में जनपद न्यायाधीश के पद पर प्रतिष्ठित हुए। उनकी न्यायप्रियता समस्त उत्तर प्रदेश मे प्रसिद्ध थी। इसी प्रकार न्यायाधीश के पद का उत्तरदायित्व–पूर्वक निर्वाह करते हुए 18 अक्टूबर 1985 को आपका स्वर्गवास हो गया। आप झांसी, आगरा, कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, हरदोई, गाजीपुर, कासगंज में 8 ½ वर्ष Joint L.R. रहे।

आपकी पत्नी श्रीमती शान्तिदेवी धर्म– परायणा तथा दयालु हृदया हैं। वे दया और दान की साक्षात् प्रतिमूर्त्ति हैं।

☆☆☆

समाचार पत्रों की दृष्टि में सम्मान समारोह

श्री बाँठिया जी का सम्मान समारोह

समाजसेवी तथा अ० भा० खरतरगच्छ महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कानपुर निवासी श्री हजारीमल बाँठिया की ७१ वीं वर्षगाठ के शुभ अवसर पर दिनांक २५-९-९५ को विशेष आयोजन हो रहा है। इस हेतु गठित समिति के अध्यक्ष राष्ट्र गौरव श्री नवलमल जी के० फिरोदिया हैं। इस सम्मान समारोह मे अभिनन्दन ग्रथ भेट करने के साथ ही उन्हे सम्मानजनक राशि की थैली भी भेट की जावेगी।

श्री बाँठिया जी ने करीब ६० साल तक समाज, संस्कृति एव साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की है, अत: उचित सहयोग विशेष भावना से अभिनन्दन ग्रथ के सपादक एवं कार्यक्रम के महामंत्री डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल २७-अ, साकेत कॉलोनी, अलीगढ को या क्षेत्रीय सयोजक श्री मानमल बाँठिया, २०, महावीर नगर, इन्दौर (फोन नं० ४९५५५७) को भेजने का कष्ट करे।

(अमर उजाला, कानपुर २४ सितम्बर)

Noted Writer Hazarimal Banthia to be honoured

LITTERATEUR and philanthropist Mr Hazarimal Banthia, will be felicitated at a function to be held in the Rajasthan Bhawan, Karachikhana on September 25.

Founder of the Panchal Shodh Sansthan, an organisation devoted to research on archaeological finds, Mr Banthia has setup a museum in Kampil (Farrukhabad) and also a dispensary and school there He is interested in establishing a similar museum in Kanpur city

He has authored books on poetry, stories and travelogues He has also installed statues of the great Italian Indophile Tessitory in the Tulsi Upvan at Kanpur and in Bikaner, accordig to Dr Bal Krishna Gupta

(THE PIONEER ON SUNDAY : KANPUR : SEPTEMER 24, 1995)

हाथरस के हजारीमल बाँठिया का कानपुर में सम्मान कल

अलीगढ। साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व के क्षेत्र के अलावा समाजसेवा के क्षेत्र मे भी अनुकरणीय योगदान देने वाले हाथरस निवासी हजारीमल बाँठिया को उनकी ७१ वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर २५ सितम्बर को अभिनन्दन ग्रथ द्वारा सम्मानित किया जायेगा। उनके इस सम्मान समारोह के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गठित समिति का अध्यक्ष देश के प्रसिद्ध उद्योगपति एन० के० फिरोदिया को मनोनीत किया गया है। यह समारोह कानपुर में कराची खाना स्थित राजस्थान भवन मे प्रात दस बजे आयोजित किया जायेगा।

(अमर उजाला, आगरा २४ सितम्बर सन् १९९५)

संस्कृति की आलोचना करते हुए नाहटा जी ने कहा, आज सारे देश के सामने चरित्र का गंभीर संकट है, हमने धर्म के नाम पर मात्र विघटन को बढाया है। निश्चय ही चर्चा का आधार बीती पीढी है, परन्तु उसके मूल्यो को ग्रहण करना ही हमारी आवश्यकता है। विश्वास नहीं होता कि अविश्वास के वातावरण में हम गाँधी जी, विनोबा जी को याद कर पायेगे। आपने कहा कि महावीर जी की वाणी में सबसे बडी बात है – मैं ही सही नहीं हूँ। सम्यक् ज्ञान का विस्तार उन्होंने सम्यकृत्व से किया, हम इससे विमुख हो रहे हैं। इसे समझने की जरूरत है। नाहटा – परिवार के संस्कार लेकर बाँठिया जी ने इतने कार्य किये हैं, यह अनुकरणीय है, उनका अभिनन्दन है, उनका वंदन है।

"वीरायतन" की संचालिका साध्वी चदना जी ने इस अवसर पर आशीर्वचन देते हुए बाँठिया जी के शतायु होने की कामना की। आपने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य महान है। आजकल जिस महान भारत की दुहाई दी जा रही है, उसी भारत मे पश्चिमी सभ्यता हावी हो रही है, इसको रोकना आवश्यक है।

आपने श्रीमती बाँठिया के मच पर न होने पर कटाक्ष किया और कहा कि उनका योगदान भारतीय महिला के अनुरूप है। बाँठिया जी लक्ष्मीपुत्र हैं, वैश्य समाज के है। राजस्थान से आकर उन्होंने यहां समाज के विकास मे योग दिया है। भारत की समृद्धि में व्यापारिक समाज का योगदान महत्वपूर्ण है परन्तु इसे और भी सार्थक होना चाहिए। समाज मे और भी प्रबुद्ध व्यक्ति पैदा होने चाहिए। नाहटा परिवार और बाँठिया जी ने जो कार्य किया है, वह नई पीढी के लिए अनुकरणीय है।

समारोह के अध्यक्ष श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी ने बाँठिया जी को अत्यन्त भावुक, सहृदय और व्यावहारिक व्यक्ति बताते हुए कहा कि साध्वी चदना जी के आशीर्वाद से सबकी ओर से बाँठिया जी का अभिनन्दन हो गया। आपने अभिनन्दन ग्रथ की सामग्री की चर्चा करते हुए ग्रंथ के सम्पादकगण, संयोजक सभी की मुक्त कठ से सराहना की और कहा कि ग्रथ सर्वथा महत्वपूर्ण है। सत्कर्मों, सद्गुणों से सम्मान अर्जित करना एक कठिन कार्य है, बाँठिया जी ने इसे अर्जित किया है। बाँठिया जी के मामा स्व० अगरचन्द जी नाहटा के दर्शन करके मैं धन्य हुआ था। पुरातत्व, साहित्य और प्राचीन संस्कृति के वे महान विद्वान थे। बाँठिया जी के जीवन में उन्हीं का आदर्श आया है। अन्वेषण एव विद्या के प्रति उनका समर्पण अभिनन्दनीय है। इसलिए गिरे हुए समाज मे भी सुधार हो सकता है, यदि वहाँ गुणी जनों का सम्मान होता रहे। गुणी जनो का सम्मान करके आपने पतन की गति को रोकने का प्रयास बाँठिया जी के अभिनन्दन द्वारा किया है।

अन्त मे श्री हजारीमल बाठिया ने अत्यन्त भरे हुए हृदय से कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए कहा कि मेरे सारे कार्यों का श्रेय आप सब प्रशंसको को है। पंचाल शोध संस्थान का कार्य जो बन पडा आपके सहयोग से हुआ एतदर्थ मैं आपके सम्मुख नतमस्तक हूँ। जैन श्वेताम्बर महासभा के सदस्यो द्वारा प्राप्त १ लाख रु० मे ११ हजार अपनी ओर से मिलाकर बाँठिया जी ने संस्था को दान कर दिया। इसी प्रकार वीरायतन के सदस्यों की ११ हजार रु० की भेंट मे अपनी ओर से दस हजार मिलाकर २१०००/– वीरायतन संस्था को भेंट कर दिया।

अन्त में राजस्थान एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री वी० आर० कुभट ने धन्यवाद दिया। महामंत्री डॉ० गिरिज किशोर अग्रवाल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। समारोह का कुशल संचालन करते हुए प्रधान संयोजक श्री तनसुखराज डागा ने अपने जीवन मे श्री बाँठिया जी की प्रेरणा को एक महत्वपूर्ण पक्ष बताया और अत्यन्त भावुकतापूर्ण हृदय से उनका अभिनन्दन किया। समारोह के सयोजन में डॉ० बालकृष्ण गुप्त व डॉ० राष्ट्र बन्धु का योगदान प्रशंसनीय रहा।

❖ ❖ ❖

स्थानीय कवि गीतकार सिन्दूर की अध्यक्षता मे हुए इस कवि सम्मेलन के प्रमुख आकर्षण डॉ० वीरेन्द्र तरुण रहे। स्व० काका हाथरसी के अभिन्न मित्रो मे से एक डॉ० तरुण ने अपनी एक से एक बढकर हास्य व्यग्य मिश्रित कविताएँ सुनाकर सर्वाधिक वाहवाही लूटी। हाँलाकि उन्होंने इस मामले में काका हाथरसी को भी नहीं छोडा। काका हाथरसी पर उन्होने व्यग्य किया 'जीवन भर कहते रहे सदा साथ की बात, स्वर्ग गमन के समय मे किया तरुण से घात'।

हास्य व्यग्य पर उन्होंने कई मजेदार कविताएँ बातचीत की शैली में पढीं और श्रोताओ को लोट–पोट किया।

आर्थिक तगी से ऊबकर पत्नी को समझाते हुए कवि ने कहना शुरु किया–'धीरज धर्म मित्र अरु नारी तभी पत्नी बोली यह बात तो राम के युग की है, गैस सिलेंडर आज न लाये तो रावण के साथ चली जाऊँगी। इसी तरह की तमाम हास्य प्रस्तुतिया डॉ० तरुण ने कीं जिन्हे खूब पसन्द किया गया।

हाथरस के ही सबरस मुल्तानी ने कहा– 'न जान दूगा न कश्मीर दूगा, मेरे सामने यदि पाकिस्तान आया तो छतरी की तरह तान दूगा।' स्थानीय कवि सुबोध ने भी कश्मीर पर कहा कि– 'वादियो मे फिर हवा षडयत्र की बहने लगी, देश की जनता सुलगते हादसे सहने लगी। सबरस मुल्तानी की फिल्मी पैरोडी जो कल्याणसिह व मायावती को सबोधित थी– "जब मुलायम करे तकरार हमारी गली आ जाना, जब बनानी हो सरकार हमारी गली आ जाना' भी पसद किया गया।

वीरेन्द्र आस्तिक की मायावती पर लिखी पैरोडी भी खूब पसंद की गयी– "माया ने माया फैलायी गाया मुझसे रूठ गयी, हाय मुलम्मा चौराहे पर साझे की हडिया फूट गयी"।

कवि सम्मेलन का सचालन अनिल ने किया। हरि शर्मा, सबरस, डॉ० जगदीश लवानिया बृजेश उमंग, हीरालाल सुमन, हरिपाल सिह, टकर बाबू आदि कवियो ने अपनी–अपनी कविताएँ सुनाकर श्रोताओं को रस विभोर किया।

(अमर उजाला कानपुर, २५ सितम्बर सन् १९९५)

भावी पीढ़ी महात्मा गांधी के त्यागों को मुश्किल से मानेगी - नाहटा

कानपुर २५ सितम्बर। मध्यप्रदेश के जनशक्ति एव नियोजन मंत्री ने कहा कि समाज के गिरते हुए मूल्यों से साफ जाहिर होता है कि आने वाली पीढी को यह विश्वास दिलाना मुश्किल हो जायेगा कि महात्मा गाधी ने बैरिस्टर की नौकरी छोडकर देश सेवा को अपनाया था।

श्री नाहटा आज राजस्थान भवन में आयोजित समाजसेवी हजारीमल बाँठिया के सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि आज समाज में धर्माधता, साम्प्रदायिकता व विघटनकारी तत्वो को बढावा दिया जा रहा है। देश मे गिर रहे नैतिक मूल्यों से समाज बुरी तरह आहत हो रहा है। लोग राजनीति व समाजसेवा को भी व्यवसाय से जोडने लगे हैं। उन्होंने जैन समुदाय के लोगो से ऐसी बुराइयो से बचने की जरुरत पर जोर दिया।

इस मौके पर हाथरस के प्रसिद्ध कवि डॉ० वीरेन्द्र तरुण ने श्री बाँठिया के सम्मान मे काव्य पाठ किया तथा साध्वी चंदना ने 'हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन किया। वीरायतन की सचालक साध्वी चंदना ने श्री बाँठिया को शतायु होने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज समाज में श्री बाँठिया जैसे समाजसेवियों की महती आवश्यकता है।

(अमर उजाला कानपुर, २६ सितम्बर सन् १९९५)

❖ ❖ ❖

राजस्थान भवन में हाथरसी काव्य संध्या

"हाय रे मुलम्मा काठ की हांडी चौराहे पर फूट गई"

कानपुर २४ सितम्बर। श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन समिति द्वारा बाँठिया जी के ७२ वें जन्म दिवस पर एक काव्य संध्या का आयोजन राजस्थान भवन मे किया गया। अपने किस्म की इस अनोखी काव्य निशा में हाथरस से पधारे नौ कवियो तथा कानपुर के तीन विशिष्ट कवियो ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम का सचालन आशुकवि अनिल बोहरे ने अपनी काव्यमय शैली में किया। काव्य संध्या के शुरु में काका हाथरसी को श्रद्धांजलि दी गई। काका के साथी डॉ० वीरेन्द्र तरुण ने काका के संस्मरण सुनाए। डॉ० तरुण ने हास्य और व्यग्य का अलग-अलग विश्लेषण किया तथा-

"ओरे, दाऊ बाबा
विरज के राजा।
आजा तू भारत में आजा।

सुनाकर श्रोताओ को मंत्रमुग्ध किया। उनकी ये पंक्तियां सराही गई-

"माया ने माया फैलायी
माया तुमरो रुठ गई।
हाय रे 'मुलम्मा' काठ की हांडी
चौराहे पर फूट गयी।।
भरी भीड में एक छोकरी
कैसी मिट्टी पीट गयी।।

हाथरस से ही आये कवि सवरस मुल्तानी ने हास्य की कविताएँ सुनाई तो फिल्मी पैरोडियां सुनाकर हास्य को निम्न स्तर तक ले गए।

हाथरस के हरिपाल सिह 'हरि' ने ताऊ बल्दाऊ को अपनी रचना में याद किया तो डॉ० जगदीश लवानिया ने अपने गीतो से समा बांधा।

कानपुर के कवि देवेन्द्र सफल ने एक सरस गीत प्रस्तुत किया। प्रतिष्ठित कवि सुबोध श्रीवास्तव ने अपनी सामयिक गजल के तारो से वातावरण को झकृत कर दिया। विशेष बात ये रही कि हाथरस के कवियों की इस काव्य संध्या में कानपुर के कवियों ने लाज रखी तथा स्तरीय रचनाएँ प्रस्तुत कीं। काव्य संध्या की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि प्रो० रामस्वरुप सिंदूर ने की जबकि मुख्य अतिथि सागरमल जैन थे। इस काव्य संध्या में बृजेश उमंग, हीरालाल सुमन, टकार बाबू, हरिशर्मा तथा रामस्वरुप 'सिंदूर' ने भी अपनी रचनाएँ सुनाई। आभार डॉ० बालकृष्ण गुप्त व राष्ट्रबंधु ने व्यक्त किया।

(स्वतंत्र भारत, कानपुर, २५ सितम्बर, १९९५)

राजस्थान भवन में कवि सम्मेलन

जब मुलायम करे तकरार हमारी गली आ जाना

कानपुर २४ सितम्बर। हजारीमल बाँठिया के ७२ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में आज राजस्थान भवन कमलीशाना में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हाथरस से पधारे तमाम जाने-माने कवियों ने एक से बढ़कर एक हास्य व्यंग्य मिश्रित कविताएँ सुनाकर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

स्थानीय कवि गीतकार सिन्दूर की अध्यक्षता में हुए इस कवि सम्मेलन के प्रमुख आकर्षण डॉ० वीरेन्द्र तरुण रहे। स्व० काका हाथरसी के अभिन्न मित्रों मे से एक डॉ० तरुण ने अपनी एक से एक बढकर हास्य व्यग्य मिश्रित कविताएँ सुनाकर सर्वाधिक वाहवाही लूटी। हॉलाकि उन्होने इस मामले मे काका हाथरसी को भी नहीं छोडा। काका हाथरसी पर उन्होंने व्यंग्य किया 'जीवन भर कहते रहे सदा साथ की बात, स्वर्ग गमन के समय मे किया तरुण से घात'।

हास्य व्यग्य पर उन्होने कई मजेदार कविताएँ बातचीत की शैली में पढीं और श्रोताओ को लोट–पोट किया।

आर्थिक तंगी से ऊबकर पत्नी को समझाते हुए कवि ने कहना शुरु किया–'धीरज धर्म मित्र अरु नारी तभी पत्नी बोली यह बात तो राम के युग की है, गैस सिलेंडर आज न लाये तो रावण के साथ चली जाऊँगी। इसी तरह की तमाम हास्य प्रस्तुतिया डॉ० तरुण ने कीं जिन्हे खूब पसन्द किया गया।

हाथरस के ही सवरस मुल्तानी ने कहा– 'न जान दूगा न कश्मीर दूंगा, मेरे सामने यदि पाकिस्तान आया तो छतरी की तरह तान दूगा।' स्थानीय कवि सुबोध ने भी कश्मीर पर कहा कि– 'वादियो मे फिर हवा षडयन्त्र की बहने लगी, देश की जनता सुलगते हादसे सहने लगी। सवरस मुल्तानी की फिल्मी पैरोडी जो कल्याणसिह व मायावती को संबोधित थी– "जब मुलायम करे तकरार हमारी गली आ जाना, जब बनानी हो सरकार हमारी गली आ जाना" भी पसद किया गया।

वीरेन्द्र आस्तिक की मायावती पर लिखी पैरोडी भी खूब पसद की गयी– "माया ने माया फैलायी माया मुझसे रूठ गयी, हाय मुलम्मा चौराहे पर साझे की हंडिया फूट गयी"।

कवि सम्मेलन का संचालन अनिल ने किया। हरि शर्मा, सवरस, डॉ० जगदीश लवानिया, बृजेश उमग, हीरालाल सुमन, हरिपाल सिंह, टक्कर बाबू आदि कवियो ने अपनी–अपनी कविताएँ सुनाकर श्रोताओ को रस विभोर किया।

(अमर उजाला कानपुर, २५ सितम्बर सन् १९९५)

भावी पीढ़ी महात्मा गांधी के त्यागों को मुश्किल से मानेगी - नाहटा

कानपुर २५ सितम्बर। मध्यप्रदेश के जनशक्ति एवं नियोजन मंत्री ने कहा कि समाज के गिरते हुए मूल्यो से साफ जाहिर होता है कि आने वाली पीढी को यह विश्वास दिलाना मुश्किल हो जायेगा कि महात्मा गाधी ने बैरिष्टर की नौकरी छोडकर देश सेवा को अपनाया था।

श्री नाहटा आज राजस्थान भवन में आयोजित समाजसेवी हजारीमल बाँठिया के सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि आज समाज में धर्मांधता, साम्प्रदायिकता व विघटनकारी तत्वों को बढावा दिया जा रहा है। देश मे गिर रहे नैतिक मूल्यो से समाज बुरी तरह आहत हो रहा है। लोग राजनीति व समाजसेवा को भी व्यवसाय से जोडने लगे हैं। उन्होने जैन समुदाय के लोगो से ऐसी बुराइयो से बचने की जरुरत पर जोर दिया।

इस मौके पर हाथरस के प्रसिद्ध कवि डॉ० वीरेन्द्र तरुण ने श्री बाँठिया के सम्मान मे काव्य पाठ किया तथा साध्वी चंदना ने 'हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन किया। वीरायतन की संचालक साध्वी चंदना ने श्री बाँठिया को शतायु होने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज समाज मे श्री बाँठिया जैसे समाजसेवियों की महती आवश्यकता है।

(अमर उजाला कानपुर, २६ सितम्बर सन् १९९५)

✤ ✤ ✤

राजस्थान भवन में हाथरसी काव्य संध्या

"हाय रे मुलम्मा काठ की हांडी चौराहे पर फूट गई"

कानपुर २४ सितम्बर। श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन समिति द्वारा बाँठिया जी के ७२ वें जन्म दिवस पर एक काव्य संध्या का आयोजन राजस्थान भवन में किया गया। अपने किस्म की इस अनोखी काव्य निशा मे हाथरस से पधारे नौ कवियों तथा कानपुर के तीन विशिष्ट कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओ को मंत्र मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम का संचालन आशुकवि अनिल बोहरे ने अपनी काव्यमय शैली मे किया। काव्य संध्या के शुरु मे काका हाथरसी को श्रद्धांजलि दी गई। काका के साथी डॉ० वीरेन्द्र तरुण ने काका के संस्मरण सुनाए। डॉ० तरुण ने हास्य और व्यंग्य का अलग–अलग विश्लेषण किया तथा–

"ओरे, दाऊ बाबा
विरज के राजा।
आजा तू भारत में आजा।
सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। उनकी ये पंक्तियां सराही गईं–
"माया ने माया फैलायी
माया तुमसे रुठ गई।
हाय रे 'मुलम्मा' काठ की हांडी
चौराहे पर फूट गयी।।
भरी भीड में एक छोकरी
कैसी मिट्टी पीट गयी।।

हाथरस से ही आये कवि सावरस मुल्तानी ने हास्य की कविताएँ सुनाईं तो *किल्ली पैरोडिया सुनाकर हास्य को* निम्न स्तर तक ले गए।

हाथरस के हरिपाल सिंह 'हरि' ने ताऊ बल्दाऊ को अपनी रचना मे याद किया तो डॉ० जगदीश लवानियां ने अपने गीतो से समां बांधा।

कानपुर के कवि देवेन्द्र सफल ने एक सरस गीत प्रस्तुत किया। प्रतिष्ठित कवि सुबोध श्रीवास्तव ने अपनी सामयिक *गजल के तारो से वातावरण को झंकृत कर दिया। विशेष बात ये रही कि हाथरस के कवियों की इस काव्य संध्या मे* कानपुर के कवियो ने लाज रखी तथा स्तरीय रचनाएँ प्रस्तुत कीं। काव्य संध्या की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि प्रो० रामस्वरूप सिंदूर ने की जबकि मुख्य अतिथि सागरमल जैन थे। इस काव्य संध्या में बृजेश उमंग, हीरालाल सुमन, टकर बाबू, हरिशर्मा तथा रामस्वरुप 'सिंदूर' ने भी अपनी रचनाएँ सुनाईं। आभार डॉ० बालकृष्ण गुप्ता व राष्ट्रबंधु *ने व्यक्त किया।*

(स्वतंत्र भारत, कानपुर, २५ सितम्बर, १९९५)

राजस्थान भवन में कवि सम्मेलन

जब मुलायम करे तकरार हमारी गली आ जाना

कानपुर २४ सितम्बर। हजारीमल बाँठिया के ७२ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में आज राजस्थान भवन करांचीखाना मे कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हाथरस से पधारे तमाम जाने–माने कवियों ने एक से बढ़कर एक हास्य व्यंग्य मिश्रित कविताएँ सुनाकर श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया।

श्री हजारीमल बाँठिया अभिनन्दन समारोह

पुष्पहार समर्पण द्वारा सम्मान

१ श्री पद्मचन्द नाहटा, कलकत्ता
(खरतरगच्छ महासंघ, पूर्वी क्षेत्र)
२. श्री ललित नाहटा, दिल्ली
(अ० भा० खरतरगच्छ महासंघ)
३. श्री नरेन्द्र नाहटा, भोपाल,
मंत्री जनशक्ति नियोजन मध्य प्रदेश
४ श्री रिखब जी बॉफना, जलगाँव की ओर से,
श्री जम्बू कुमार बॉफना
५ श्री मनमोहन चन्द जी बॉफना, कानपुर की ओर से
श्री प्रमोद कुमार जी बॉफना
६ श्री गंगासहाय जी गुप्ता, कानपुर इलैक्ट्रोनिक मार्केट
७ श्री विनय ओसवाल हाथरस (श्री जैन संघ)
८. श्री प्रकाश दफ्तरी, कलकत्ता (जितयशा फाउण्डेशन)
९ श्री रामप्रकाश चिदाकाश, फतेहगढ
(पंचाल शोध संस्थान, फर्रुखाबाद)
१० श्री चन्द्रप्रकाश अग्रवाल, कायमगंज
(काम्पिल्यपुर तीर्थ विकास परिषद्)
११ श्री पवन कुमार जैन, कानपुर (स्थानकवासी जैन संघ)
१२ डॉ० करुणाशंकर शुक्ल, बागरमऊ (पंचाल शोध संस्थान)
१३ श्री माणीलाल बोथरा, (श्री बीकानेर संघ)
१४ श्री शुभकरण जैन, (तेरापंथी संघ)
१५ श्री बी०आर० कुमट कानपुर (राजस्थान एसोसियेशन)
१६ श्री एस० एन० सेन गुप्ता, कानपुर, (पत्रकार संघ)
१७ श्री मनोज कपूर, कानपुर, (बुद्धिजीवी परिषद्)
१८ श्री बी० के० पारिख, कानपुर, (मारवाडी पुस्तकालय)
१९ पं० रमेश मोरोलिया कानपुर (अ०भा०मारवाड़ी सम्मेलन)
२० श्री कन्हैयालाल बाँठिया, कानपुर, (बाँठिया बिरादरी)
२१ पं० शिवदयाल शुक्ल, कानपुर
२२. सेठ मनसुखभाई कोठारी, कानपुर, (गुजराती संघ)
२३ श्री मनुभाई शाह, कानपुर, (श्री जैन श्वे०मू०पू० संघ)
२४ पं० बदरीनारायण तिवारी, कानपुर, (मानस संगम)

शुभकामना - समर्पण

१ डॉ० सागरमल जैन, निदेशक
पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी
२ प्रो० भूपतिराय साकरिया,
वल्लभविद्यानगर, गुजरात
३ श्री केशरीचन्द सेठिया, मद्रास, अध्यक्ष
जैन संघ
४ श्री विजयशंकर श्रीवास्तव, निदेशक
राजस्थान पुरातत्व संगठन, जयपुर
५ श्री सूरजमल पुगलिया, मंत्री
जैन पाठशाला, बीकानेर
६ श्री किशनचन्द बोथरा, अध्यक्ष
वूल मिलर्स एसोसियेशन, भदोही
७ श्री जे० एस० झवेरी, अध्यक्ष
श्री जैन श्वे० महासभा उ० प्र०, हस्तिनापुर
८ श्री विनय ओसवाल, मंत्री जैन संघ, हाथरस
९ डॉ० उमेशनन्दन सिन्हा, मारवाड़ी कालेज, किशनगंज
१० श्री हीरालाल बोहरा, वीरायतन, राजगृह
११ श्री क्रान्ति कुमार पारिख, नई दिल्ली
१२ श्री केदारनाथ जी जैन, मेरठ
१३ डॉ० दिवाकर शर्मा, मन्त्री हिन्दी विश्वभारती, बीकानेर

सेठ फूलचन्द बाँठिया राजस्थानी पुरस्कार

गत ३० वर्षों से यह पुरस्कार राजस्थानी विद्वानों को दिया जा रहा है। इस वर्ष रु० २०००) पुरस्कार श्री श्याम महर्षि डूँगरगढ़ को श्री नरेन्द्र नाहटा, मंत्री जनशक्ति नियोजन मध्य प्रदेश के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया।